दुर्गति-नाशिनि दुर्गा जय-जय, काल-विनाशिनि काली जय जय।
उमा-रमा-ब्रह्माणी जय जय, राधा-सीता-रुक्मिणि जय जय॥
साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, साम्ब सदाशिव, जय शंकर।
हर हर शंकर दुखहर सुखकर अघ-तम-हर हर हर शंकर॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥
जय-जय दुर्गा, जय मा तारा। जय गणेश जय शुभ-आगारा॥
जयति शिवाशिव जानकिराम। गौरीशंकर सीताराम॥
जय रघुनन्दन जय सियाराम। व्रज-गोपी-प्रिय राधेश्याम॥
रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥

(संस्करण २,२५,०००)

'सा धेनुर्वरदास्तु मे'

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेषु संस्थिता। धेनुरूपेण सा देवी मम शान्तिं प्रयच्छतु॥
देहस्था या च रुद्राणी शंकरस्य सदा प्रिया। धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥
विष्णोर्वक्षसि या लक्ष्मीः स्वाहा या च विभावसोः। चन्द्रार्कशक्रशक्तिर्या धेनुरूपास्तु सा श्रिये॥
चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च। लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे॥
स्वधा या पितृमुख्यानां स्वाहा यज्ञभुजां च या। सर्वपापहरा धेनुस्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे॥

जो समस्त प्राणियोंकी तत्त्वतः वास्तविक लक्ष्मी है और जो सभी देवताओंमें हविष्यरूपसे स्थित है, वह धेनुरूपा देवी मुझे सुख-शान्ति प्रदान करे। भगवान् शंकरके आधे अङ्गमें विराजनेवाली जो मूल रुद्राणी नामकी प्रियतमा शक्ति है, वह गोरूपा देवी मेरे पाप-तापको दूर करे। जो भगवान् विष्णुके हृदयमें विराजनेवाली पद्मालया भगवती लक्ष्मी है और जो अग्निके साथ नित्यस्थित रहनेवाली स्वाहा नामकी शक्ति है तथा जो चन्द्रमा, सूर्य एवं इन्द्रकी साक्षात् इष्ट शक्ति है, वह गौरूपा देवी मेरे लिये कल्याणदायिनी लक्ष्मी बने। जो चतुर्मुख ब्रह्माजीकी आत्मशक्तिरूपा विद्याकी अधिष्ठात्री सरस्वती देवी है और जो धनाधीश कुबेरकी लक्ष्मीरूपा शक्ति है तथा जो समस्त लोकपालोंकी ऐश्वर्यरूपा लक्ष्मी है, वह गौरूपा धेनु मेरे लिये वरदायिनी हो। जो श्रेष्ठ पितरोंकी स्वधा नामकी शक्ति है और जो यज्ञभुक् देवताओंके लिये स्वाहा नामकी सहायिका शक्ति है, वह सब पाप-तापोंको नष्ट करनेवाली कल्याणस्वरूपा गौ मुझे परम शान्ति प्रदान करे।

इस अङ्कका मूल्य ६५ रु०
वार्षिक शुल्क (भारतमें)
डाक-व्ययसहित ६५ रु०
(सजिल्द ८० रु०)
विदेश—US$10

जय पावक रवि चन्द्र जयति जय। सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय॥
जय जय विश्वरूप हरि जय। जय हर अखिलात्मन् जय जय॥
जय विराट् जय जगत्पते। गौरीपति जय रमापते॥

पन्द्रह वर्षीय शुल्क
डाक-व्ययसहित
(भारतमें) ५०० रु०
(सजिल्द ६०० रु०)

संस्थापक—ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका
आदिसम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार
सम्पादक—राधेश्याम खेमका
केशोराम अग्रवालद्वारा गोविन्दभवन-कार्यालयके लिये गीताप्रेस, गोरखपुरसे मुद्रित तथा प्रकाशित

'कल्याण' के सम्मान्य ग्राहकों और प्रेमी पाठकोंसे नम्र निवेदन

१-'कल्याण' के ६९वें वर्ष सन् १९९५ का यह विशेषाङ्क 'गोसेवा-अङ्क' आपलोगोंकी सेवामें प्रस्तुत है। इसमे ४११ पृष्ठोंमें पाठ्यसामग्री और ८पृष्ठोंमें विषय-सूची आदि है। कई बहुरंगे तथा सादे चित्र भी दिये गये हैं। फरवरी मासका अङ्क विशेषाङ्ककी जिल्दमें ही सलग्न है।

२-जिन ग्राहकोंसे शुल्क-राशि अग्रिम मनीआर्डरद्वारा प्राप्त हो चुकी है, उन्हें विशेषाङ्क तथा मार्चतकका अङ्क रजिस्ट्रीद्वारा भेजा जा रहा है तथा जिनसे शुल्क-राशि यथासमय प्राप्त नहीं होगी, उन्हें ग्राहक-संख्याके क्रमानुसार वी०पी०पी० द्वारा भेजा जायगा। रजिस्ट्रीकी अपेक्षा वी०पी०पी०के द्वारा विशेषाङ्क भेजनेमें डाक-खर्च आदि अधिक लगते हैं, अतः वार्षिक शुल्क-राशि मनीआर्डरद्वारा भेजनी चाहिये। 'कल्याण' का वर्तमान वार्षिक शुल्क डाक-खर्च-सहित ६५.०० (पैंसठ रुपये) मात्र है, जो केवल विशेषाङ्कका ही मूल्य है। सजिल्द विशेषाङ्कके लिये ७ ०० (सात रुपये) अतिरिक्त देय होगा।

३-'कल्याण'के पंद्रह वर्षीय ग्राहक भी बनाये जाते हैं। सदस्यता-शुल्क रु० ५००.०० (पाँच सौ रुपये), सजिल्द विशेषाङ्कका ६००.०० (छः सौ रुपये) मात्र है। इस योजनाके अन्तर्गत फर्म, प्रतिष्ठान आदि सभी ग्राहक बन सकते है।

४-ग्राहक सज्जन मनीआर्डर कूपनपर अपनी ग्राहक-संख्या अवश्य लिखें। ग्राहक-संख्या या पुराना ग्राहक न लिखनेसे आपका नाम नये ग्राहकोंमें लिखा जा सकता है, जिससे आपकी सेवामें 'गोसेवा-अङ्क' नयी ग्राहक-सख्याके क्रमसे रजिस्ट्री-द्वारा पहुँचेगा और पुरानी ग्राहक-संख्याके क्रमसे इसकी वी०पी० पी० भी जा सकती है। वी०पी० पी० भेजनेकी प्रक्रिया प्रारम्भ होनेके बाद जिन ग्राहकोंका मनीआर्डर प्राप्त होगा, उनका समयसे समायोजन न हो सकनेके कारण हमारे न चाहते हुए भी विशेषाङ्क उन्हें वी०पी० पी०द्वारा जा सकता है। ऐसी परिस्थितिमें आप वी०पी० पी० छुडाकर किसी अन्यको 'कल्याण'का नया ग्राहक बनानेकी कृपा करें। ऐसा करनेसे आप 'कल्याण'को आर्थिक हानिसे बचानेके साथ 'कल्याण'के पावन प्रचार-कार्यमें सहयोगी होगे। ऐसे ग्राहकोंसे मनीआर्डरद्वारा प्राप्त राशि अन्य निर्देश न मिलनेतक अगले वर्षके वार्षिक शुल्कके निमित्त जमा कर ली जाती है। जिन्होने वी०पी०पी० छुड़ाकर दूसरेको ग्राहक बना दिया है, वे हमे तत्काल नये ग्राहकका नाम और पता, वी०पी०पी० छुडानेकी सूचना तथा अपने मनीआर्डर भेजनेका विवरण लिखनेकी कृपा करे, जिससे उनके आये मनीआर्डरकी जॉच करवाकर रजिस्ट्रीद्वारा उनका अङ्क तथा नये ग्राहकका अङ्क नियमितरूपसे भेजा जा सके।

५-इस अङ्कके लिफाफे (कवर) पर आपकी ग्राहक-संख्या एवं पता छपा हुआ है, उसे कृपया जाँच लें तथा अपनी ग्राहक-संख्या सावधानीसे नोट कर लें। रजिस्ट्री अथवा वी०पी०पी० का नम्बर भी नोट कर लेना चाहिये। पत्र-व्यवहारमें ग्राहक-संख्याका उल्लेख नितान्त आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना आपके पत्रपर हम समयसे कार्यवाही नहीं कर पाते है। डाकद्वारा अङ्कोंके सुरक्षित वितरणमें सही पिन-कोड नम्बर आवश्यक है। अतः अपने लिफाफेपर छपा पता जाँच कर लें।

६-'कल्याण' एवं 'गीताप्रेस-पुस्तक-विभाग' की व्यवस्था अलग-अलग है। अतः पत्र, मनीआर्डर आदि सम्वन्धित विभागको पृथक्-पृथक् भेजने चाहिये।

व्यवस्थापक—'कल्याण'-कार्यालय, पत्रालय—गीताप्रेस—२७३००५, गोरखपुर (उ० प्र०)

श्रीऋषिकुल-ब्रह्मचर्याश्रम, चूरू (राजस्थान)

गीताप्रेस, गोरखपुर (प्रधान कार्यालय—श्रीगोविन्दभवन, कलकत्ता) द्वारा संचालित राजस्थानके चूरू नगर-स्थित इस आश्रममें बालकोंके लिये प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं वैदिक परम्परानुरूप शिक्षा-दीक्षा और आवासकी उचित व्यवस्था है। इस आश्रमकी स्थापना ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दकाद्वारा आजसे लगभग ७१ वर्ष पूर्व इस विशेष उद्देश्यसे की गयी थी कि इसमें पढ़नेवाले बालक अपनी संस्कृतिके अनुरूप विशुद्ध संस्कार तथा तदनुरूप शिक्षा प्राप्तकर सच्चरित्र, आध्यात्मिक दृष्टिसे सम्पन्न आदर्श भावी नागरिक बन सकें—एतदर्थ भारतीय संस्कृतिके अमूल्य स्रोत—वेद तथा श्रीमद्भगवद्गीता आदि शास्त्रों एवं प्राचीन आचार-विचारोंकी दीक्षाका यहाँ विशेष प्रबन्ध है। संस्कृतके मुख्य अध्ययनके साथ अन्य महत्त्वपूर्ण उपयोगी विषयोंकी शिक्षा भी यहाँ दी जाती है। विस्तृत जानकारीके लिये मन्त्री, श्रीऋषिकुल-ब्रह्मचर्याश्रम, चूरू (राजस्थान) के पतेपर सम्पर्क करना चाहिये।

व्यवस्थापक—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

श्रीगीता-रामायण-प्रचार-संघ

श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानस दोनो विश्व-साहित्यके अमूल्य ग्रन्थ-रत्न हैं। इनके पठन-पाठन एवं मननसे मनुष्य लोक-परलोक दोनोंमें अपना कल्याण-साधन कर सकता है। इनके स्वाध्यायमें वर्ण-आश्रम, जाति, अवस्था आदि कोई भी बाधक नहीं है। आजके इस कुसमयमें इन दिव्य ग्रन्थोंके पाठ और प्रचारकी अत्यधिक आवश्यकता है। अतः धर्मपरायण जनताको इन कल्याणमय ग्रन्थोंमें प्रतिपादित सिद्धान्तो एवं विचारोंसे अधिकाधिक लाभ पहुँचानेके सदुद्देश्यसे श्रीगीता-रामायण-प्रचार-संघकी स्थापना की गयी है। इसके सदस्योंकी संख्या इस समय लगभग २८ हजार है। इसमें श्रीगीताके छः प्रकारके और श्रीरामचरितमानसके तीन प्रकारके सदस्य बनाये गये हैं। इसके अतिरिक्त उपासना-विभागके अन्तर्गत नित्यप्रति इष्टदेवके नामका जप, ध्यान और मूर्तिकी पूजा अथवा मानसिक पूजा करनेवाले सदस्योकी श्रेणी भी है। इन सभीको श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्रीरामचरितमानसके नियमित अध्ययन तथा उपासनाकी सत्प्रेरणा दी जाती है। सदस्यताका कोई शुल्क नहीं है। इच्छुक सज्जन 'परिचय-पुस्तिका' निःशुल्क मँगवाकर पूरी जानकारी प्राप्त करनेकी कृपा करें एव श्रीगीताजी और श्रीरामचरितमानसके प्रचार-यज्ञमें सम्मिलित होकर अपने जीवनका कल्याणमय पथ प्रशस्त करें।

पत्र-व्यवहारका पता—मन्त्री, श्रीगीता-रामायण-प्रचार-संघ, *पत्रालय*—स्वर्गाश्रम, *पिन*—२४९३०४ (वाया-ऋषिकेश), *जनपद*—पौड़ी-गढ़वाल (उ० प्र०)।

साधक-संघ

मानव-जीवनकी सर्वतोमुखी सफलता आत्म-विकासपर ही अवलम्बित है। आत्म-विकासके लिये जीवनमें सत्यता, सरलता, निष्कपटता, सदाचार, भगवत्परायणता आदि दैवी गुणोका ग्रहण और असत्य, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, हिंसा आदि आसुरी गुणोका त्याग ही एकमात्र श्रेष्ठ और सरल उपाय है। मनुष्यमात्रको इस सत्यसे अवगत करानेके पावन उद्देश्यसे लगभग ४७ वर्ष पूर्व 'साधक-संघ' की स्थापना की गयी थी। इसका सदस्यता-शुल्क नहीं है। सभी कल्याणकामी स्त्री-पुरुषोको इसका सदस्य बनना चाहिये। सदस्योंके लिये ग्रहण करनेके १२ और त्याग करनेके १६ नियम बने हैं। प्रत्येक सदस्यको एक 'साधक-दैनन्दिनी' एवं एक 'आवेदन-पत्र' भेजा जाता है, सदस्य बननेके इच्छुक भाई-बहनोंको 'साधक-दैनन्दिनी' का वर्तमान मूल्य १.५० तथा डाकखर्च ०.५० पैसे—कुल रु० २.०० मात्र, डाकटिकट या मनीआर्डरद्वारा अग्रिम भेजकर उन्हे मँगवा लेना चाहिये। संघके सदस्य इस दैनन्दिनीमें प्रतिदिन साधन-सम्बन्धी अपने नियम-पालनका विवरण लिखते है। विशेष जानकारीके लिये कृपया नियमावली निःशुल्क मँगवाइये।

पता—*संयोजक*, 'साधक-संघ' *पत्रालय*—गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५ (उ० प्र०)।

श्रीगीता-रामायण-परीक्षा-समिति

श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानस दोनो मङ्गलमय एवं दिव्यतम ग्रन्थ हैं। इनमें मानवमात्रको अपनी समस्याओंका समाधान मिल जाता है तथा जीवनमें अपूर्व सुख-शान्तिका अनुभव होता है। प्रायः सम्पूर्ण विश्वमें इन अमूल्य ग्रन्थोंका समादर है और करोड़ों मनुष्योंने इनके अनुवादोंको भी पढ़कर अवर्णनीय लाभ उठाया है। इन ग्रन्थोके प्रचारके द्वारा लोकमानसको अधिकाधिक परिष्कृत करनेकी दृष्टिसे श्रीमद्भगवद्गीता और श्रीरामचरितमानसकी परीक्षाओंका प्रबन्ध किया गया है। दोनों ग्रन्थोंकी परीक्षाओंमें बैठनेवाले लगभग दस हजार परीक्षार्थियोंके लिये २०० परीक्षा-केन्द्रोंकी व्यवस्था है। नियमावली मँगानेके लिये कृपया निम्नलिखित पतेपर पत्र-व्यवहार करें।

व्यवस्थापक—श्रीगीता-रामायण-परीक्षा-समिति, पत्रालय—स्वर्गाश्रम, *पिन*—२४९३०४ (वाया-ऋषिकेश), जनपद—पौड़ी-गढ़वाल (उ० प्र०)।

★★★

विषय पृष्ठ-संख्या

चित्र-सूची

(रंगीन चित्र)

(सादे चित्र)

चित्र-सूची

(रंगीन चित्र)

(सादे चित्र)



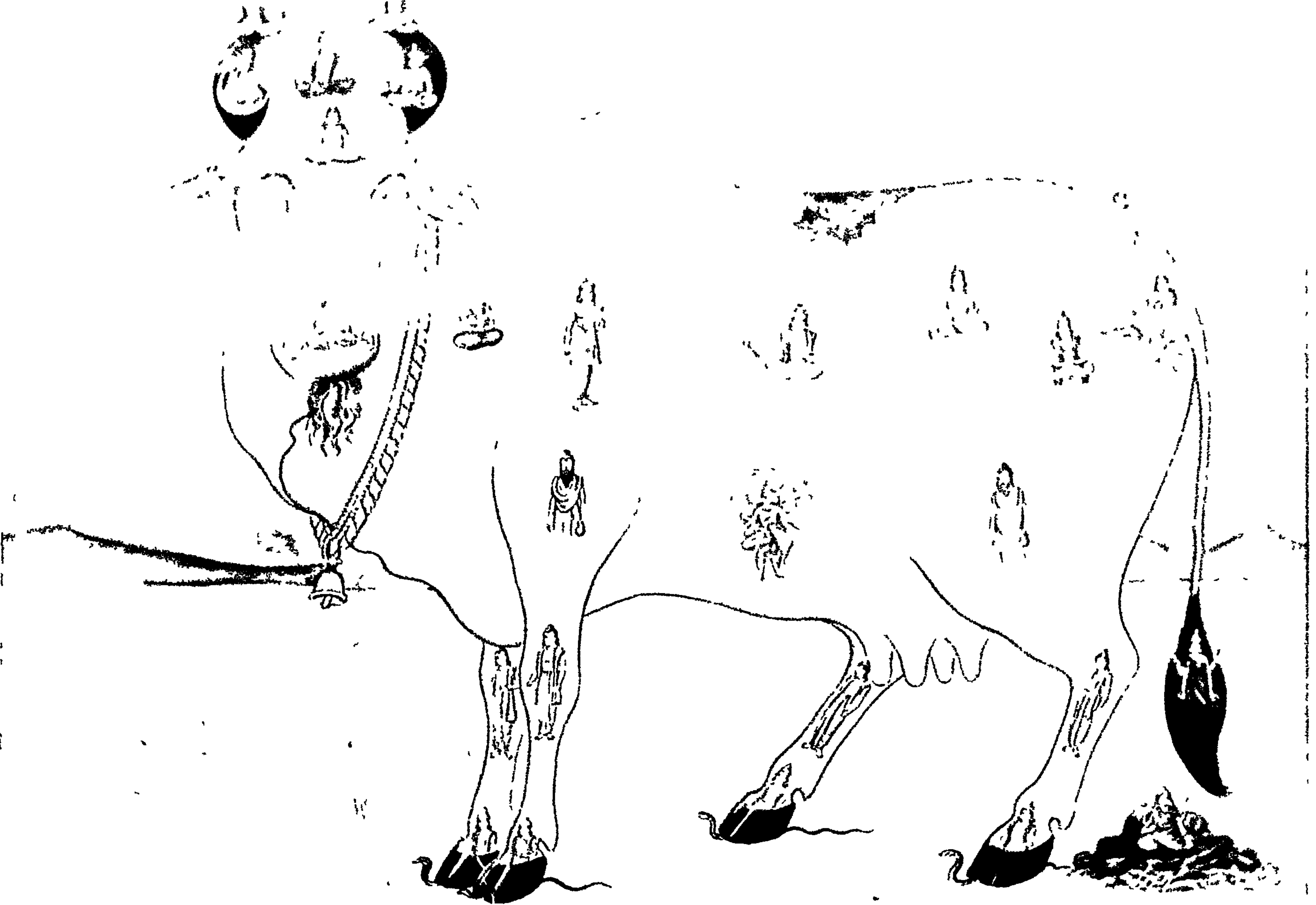
भगवान



विदेहराज जनकसे ब्रह्मज्ञानी याज्ञवल्क्यका सहस्र गोदान-ग्रहण



'निज कर बछरनि



सर्वदेवमयी गोमाता

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥



तृणोदकाद्येषु वनेषु मत्ताः क्रीडन्तु गावः सवृषाः सवत्साः।
क्षीरं प्रमुञ्चन्तु सुखं स्वपन्तु शीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः॥

वर्ष ६९ | गोरखपुर, सौर माघ, वि० सं० २०५१, श्रीकृष्ण-सं० ५२२०, जनवरी १९९५ ई० | संख्या १ | पूर्ण संख्या ८१८

सर्वतीर्थमयी मुक्तिदायिनी गोमाता

सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषु च। तद्गुह्येषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पितः॥
गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलकं कुरुते नरः। तीर्थस्नातो भवेत् सद्यो जयस्तस्य पदे पदे॥
गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम्। प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम्॥

(ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्णजन्म० २१। ९१—९३)

गौके शरीरमें समस्त देवगण निवास करते हैं और गौके पैरोंमें समस्त तीर्थ निवास करते हैं। गौके गुह्यभागमें लक्ष्मी सदा रहती हैं। गौके पैरोंमें लगी हुई मिट्टीका तिलक जो मनुष्य अपने मस्तकमें लगाता है, वह तत्काल तीर्थजलमें स्नान करनेका पुण्य प्राप्त करता है और उसकी पद-पदपर विजय होती है। जहाँपर गौएँ रहती हैं उस स्थानको तीर्थभूमि कहा गया है, ऐसी भूमिमें जिस मनुष्यकी मृत्यु होती है वह तत्काल मुक्त हो जाता है, यह निश्चित है।

★★★

गो-स्तवन

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥

'गौ रुद्रोंकी माता, वसुओंकी पुत्री, अदितिपुत्रोंकी बहिन और घृतरूप अमृतका खजाना है; प्रत्येक विचारशील पुरुषको मैंने यही समझाकर कहा है कि निरपराध एवं अवध्य गौका वध न करो।'

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः॥

'गौओंने हमारे यहाँ आकर हमारा कल्याण किया है। वे हमारी गोशालामें सुखसे बैठे और उसे अपने सुन्दर शब्दोंसे गुँजा दें। ये विविध रंगोंकी गौएँ अनेक प्रकारके बछड़े-बछड़ियाँ जनें और इन्द्र (परमात्मा) के यजनके लिये उषःकालसे पहले दूध देनेवाली हों।'

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह॥

'ये गौएँ न तो नष्ट हो न उन्हें चोर चुरा ले जाय और न शत्रु ही कष्ट पहुँचाये। जिन गौओंकी सहायतासे उनका स्वामी देवताओंका यजन करने तथा दान देनेमें समर्थ होता है, उनके साथ वह चिरकालतक संयुक्त रहे।'

गावो भगो गाव इन्द्रो म इच्छाद्गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामि हृदा मनसा चिदिन्द्रम्॥

'गौएँ हमारा मुख्य धन हो, इन्द्र हमें गोधन प्रदान करें तथा यज्ञोंकी प्रधान वस्तु सोमरसके साथ मिलकर गौओंका दूध ही उनका नैवेद्य बने। जिसके पास ये गौएँ हैं, वह तो एक प्रकारसे इन्द्र ही है। मैं अपने श्रद्धायुक्त मनसे गव्य पदार्थोंके द्वारा इन्द्र (भगवान्) का यजन करना चाहता हूँ।'

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥

'गौओ! तुम कृश शरीरवाले व्यक्तिको हृष्ट-पुष्ट कर देती हो एवं तेजोहीनको देखनेमें सुन्दर बना देती हो। इतना ही नहीं तुम अपने मङ्गलमय शब्दसे हमारे घरोंको मङ्गलमय बना देती हो। इसीसे सभाओंमें तुम्हारे ही महान् यशका गान होता है।'

प्रजावतीः सूयवसे रुशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा व स्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु॥

'गौओ! तुम बहुत-से बच्चे जनो, चरनेके लिये तुम्हें सुन्दर चारा प्राप्त हो तथा सुन्दर जलाशयमें तुम शुद्ध जल पीती रहो। तुम चोरों तथा दुष्ट हिंसक जीवोंके चंगुलमें न फँसो और रुद्रका शस्त्र तुम्हारी सब ओरसे रक्षा करे।'

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय॥

'रँभानेवाली तथा ऐश्वर्योंका पालन करनेवाली यह गाय मनसे बछड़ेकी कामना करती हुई समीप आयी है। यह अवध्य गौ दोनों अश्विदेवोंके लिये दूध दे और वह बड़े सौभाग्यके लिये बढ़े।'

गवोपनिषद्

सौदास उवाच

त्रैलोक्ये भगवन् किंस्वित् पवित्रं कथ्यतेऽनघ।
यत् कीर्तयन् सदा मर्त्यः प्राप्नुयात् पुण्यमुत्तमम्॥

सौदास बोले—'भगवन्! निष्पाप महर्षे! तीनो लोकोंमें ऐसी पवित्र वस्तु कौन कही जाती है, जिसका नाम लेनेमात्रसे मनुष्यको सदा उत्तम पुण्यकी प्राप्ति हो सके।'

[गौओंकी महिमाके गूढ़ रहस्यको प्रकट करनेवाली विद्याके महान् विद्वान् महर्षि वसिष्ठने गौओंको नमस्कार करके राजा सौदाससे इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—]

गावः सुरभिगन्धिन्यस्तथा गुग्गुलुगन्धयः।
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥

[वसिष्ठजी बोले—] 'राजन्! गौओंके शरीरसे अनेक प्रकारकी मनोरम सुगन्ध निकलती रहती है तथा बहुतेरी गौएँ गुग्गुलके समान गन्धवाली होती हैं। गौएँ समस्त प्राणियोंकी प्रतिष्ठा (आधार) हैं और गौएँ ही उनके लिये महान् मङ्गलकी निधि हैं।'

गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथा मूलं गोषु दत्तं न नश्यति॥

'गौएँ ही भूत और भविष्य हैं। गौएँ ही सदा रहनेवाली पुष्टिका कारण तथा लक्ष्मीकी जड़ हैं। गौओको जो कुछ दिया जाता है, उसका पुण्य कभी नष्ट नहीं होता।'

अन्नं हि परमं गावो देवानां परमं हविः।
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ॥

'गौएँ ही सर्वोत्तम अन्नकी प्राप्तिमें कारण है। वे ही देवताओंको उत्तम हविष्य प्रदान करती हैं। स्वाहाकार (देवयज्ञ) और वषट्कार (इन्द्रयाग)—ये दोनो कर्म सदा गौओंपर ही अवलम्बित हैं।'

गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः।
गावो भविष्यं भूत च गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः॥

'गौएँ ही यज्ञका फल देनेवाली हैं। उन्हींमें यज्ञोंकी प्रतिष्ठा है। गौएँ ही भूत और भविष्य हैं। उन्हींमे यज्ञ प्रतिष्ठित हैं अर्थात् यज्ञ गौओपर ही निर्भर है।'

सायं प्रातश्च सततं होमकाले महाद्युते।
गावो ददति वै हौम्यमृषिभ्यः पुरुषर्षभ॥

'महातेजस्वी पुरुषप्रवर! प्रातःकाल और सायकाल सदा होमके समय ऋषियोको गौएँ ही हवनीय पदार्थ (घृत आदि) देती है।'

यानि कानि च दुर्गाणि दुष्कृतानि कृतानि च।
तरन्ति चैव पाप्मानं धेनुं ये ददति प्रभो॥

'प्रभो! जो लोग (नवप्रसूतिका दूध देनेवाली) गौका दान करते है, वे जो कोई भी दुर्गम संकट आनेवाले होते हैं उन सबसे, अपने किये हुए दुष्कर्मोसे तथा समस्त पाप-समूहसे भी तर जाते है।'

एकां च दशगुर्दद्याद् दश दद्याच्च गोशती।
शतं सहस्रगुर्दद्यात् सर्वे तुल्यफला हि ते॥

'जिसके पास दस गौएँ हो, वह एक गौका दान करे। जो सौ गाये रखता हो, वह दस गौओका दान करे और जिसके पास एक हजार गौएँ मौजूद हो, वह सौ गौएँ दानमे दे दे तो इन सबको बराबर ही फल मिलता है।'

अनाहिताग्निः शतगुरयज्वा च सहस्रगु.।
समृद्धो यश्च कीनाशो नार्घ्यमर्हन्ति ते त्रयः॥

'जो सौ गौओका स्वामी होकर भी अग्निहोत्र नहीं करता, जो हजार गौएँ रखकर भी यज्ञ नहीं करता तथा जो धनी होकर भी कृपणता नहीं छोड़ता—ये तीनो मनुष्य अर्घ्य (सम्मान) पानेके अधिकारी नहीं हैं।'

कपिलां ये प्रयच्छन्ति सवत्सां कांस्यदोहनाम्।
सुव्रतां वस्त्रसंवीतामुभौ लोकौ जयन्ति ते॥

'जो उत्तम लक्षणोसे युक्त कपिला गौको वस्त्र ओढ़ाकर बछडेसहित उसका दान करते हैं और उसके साथ दूध दुहनेके लिये एक कांस्यका पात्र भी देते हैं, वे इहलोक और परलोक दोनोपर विजय पाते हैं।'

युवानमिन्द्रियोपेतं शतेन शतयूथपम्।
गवेन्द्रं ब्राह्मणेन्द्राय भूरिशृङ्गमलंकृतम्॥
वृषभं ये प्रयच्छन्ति श्रोत्रियाय परंतप।
ऐश्वर्यं तेऽधिगच्छन्ति जायमानाः पुन. पुनः॥

'शत्रुओंको संताप देनेवाले नरेश! जो लोग जवान, सभी इन्द्रियोंसे सम्पन्न, सौ गायोंके यूथपति, बड़ी-बड़ी सींगोंवाले गवेन्द्र वृषभ (साँड) को सुसज्जित करके सौ गायोंसहित उसे श्रेष्ठ श्रोत्रिय ब्राह्मणको दान करते हैं, वे जब-जब इस संसारमें जन्म लेते हैं, तब-तब महान् ऐश्वर्यके भागी होते हैं।'

नाकीर्तयित्वा गाः सुप्यात् तासां संस्मृत्य चोत्पतेत्।
सायप्रातर्नमस्येच्च गास्ततः पुष्टिमाप्नुयात्॥

'गौओंका नाम-कीर्तन किये बिना न सोये। उनका स्मरण करके ही उठे और सबेरे-शाम उन्हें नमस्कार करे। इससे मनुष्यको बल एवं पुष्टि प्राप्त होती है।'

गवां मूत्रपुरीषस्य नोद्विजेत कथंचन।
न चासां मांसमश्नीयाद् गवां पुष्टिं तथाप्नुयात्॥

'गौओंके मूत्र और गोबरसे किसी प्रकार उद्विग्न न हो—घृणा न करे और उनका मांस न खाय। इससे मनुष्यको पुष्टि प्राप्त होती है।'

गाश्च संकीर्तयेन्नित्यं नावमन्येत तास्तथा।
अनिष्टं स्वप्नमालक्ष्य गां नरः सम्प्रकीर्तयेत्॥

'प्रतिदिन गौओंका नाम ले, उनका कभी अपमान न करे। यदि बुरे स्वप्न दिखायी दें तो मनुष्य गोमाताका नाम ले।'

गोमयेन सदा स्नायात् करीषे चापि संविशेत्।
श्लेष्ममूत्रपुरीषाणि प्रतिघातं च वर्जयेत्॥

'प्रतिदिन शरीरमें गोबर लगाकर स्नान करे, सूखे हुए गोबरपर बैठे। उसपर थूक न फेंके, मल-मूत्र न छोड़े तथा गौओंके तिरस्कारसे बचता रहे।'

* * *

घृतेन जुहुयादग्निं घृतेन स्वस्ति वाचयेत्।
घृतं दद्याद् घृतं प्राशेद् गवां पुष्टिं सदाश्नुते॥

'अग्निमें घृतसे हवन करे। घृतसे ही स्वस्तिवाचन कराये। घृतका दान करे और स्वयं भी गौका घृत ही खाय। इससे मनुष्य सदा गौओंकी पुष्टि एवं वृद्धिका अनुभव करता है।'

गोमत्या विद्यया धेनुं तिलानामभिमन्त्र्य यः।
सर्वरत्नमयीं दद्यान्न स शोचेत् कृताकृते॥

'जो मनुष्य सब प्रकारके रत्नोंसे युक्त तिलकी धेनुको 'गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी' (ऋग्वेद ४। २। ५) इत्यादि गोमती-मन्त्रसे अभिमन्त्रित करके ब्राह्मणको दान करता है, वह किये हुए शुभाशुभ कर्मके लिये शोक नहीं करता।'

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृंग्यः पयोमुचः।
सुरभ्यः सौरभेय्यश्च सरितः सागरं यथा॥

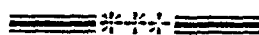
'जैसे नदियाँ समुद्रके पास जाती हैं, उसी तरह सोनेसे मढ़ी हुई सींगोंवाली, दूध देनेवाली सुरभी और सौरभेयी गौएँ मेरे निकट आयें।'

गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्॥

'मैं सदा गौओंका दर्शन करूँ और गौएँ मुझपर कृपादृष्टि करें। गौएँ हमारी हैं और हम गौओंके हैं। जहाँ गौएँ रहें, वहीं हम रहें।'

एवं रात्रौ दिवा चापि समेषु विषमेषु च।
महाभयेषु च नरः कीर्तयन् मुच्यते भयात्॥

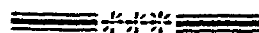
'जो मनुष्य इस प्रकार रातमें या दिनमें, सम अवस्थामें या विषम अवस्थामें तथा बड़े-से-बड़े भय आनेपर भी गोमाताका नामकीर्तन करता है, वह भयसे मुक्त हो जाता है।'



गो-प्रदक्षिणा

गवां दृष्ट्वा नमस्कृत्य कुर्याच्चैव प्रदक्षिणम्। प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा॥
मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः। वृद्धिमाकांक्षता नित्यं गावः कार्याः प्रदक्षिणाः॥

'गोमाताका दर्शन एवं उन्हें नमस्कार करके उनकी परिक्रमा करे। ऐसा करनेसे सातों द्वीपोंसहित भूमण्डलकी प्रदक्षिणा हो जाती है। गौएँ समस्त प्राणियोंकी माताएँ एवं सारे सुख देनेवाली हैं। वृद्धिकी आकांक्षा करनेवाले मनुष्यको नित्य गौओंकी प्रदक्षिणा करनी चाहिये।'



गोमती-विद्या

गोमतीं कीर्तयिष्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम्। तां तु मे वदतो विप्र शृणुष्व सुसमाहितः॥
गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः। गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम्॥
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्। पावनं सर्वभूताना रक्षन्ति च वहन्ति च॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि। ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमे प्रयोजिताः॥
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्। गावः पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम्॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः। (ॐ) नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च॥
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः। ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा स्थितम्॥
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति। देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभिः सकलं जगत्॥
धार्यते वै सदा तस्मात् सर्वे पूज्यतमाः सदा। यत्र तीर्थे सदा गावः पिबन्ति तृषिता जलम्।
उत्तरन्ति पथा येन स्थिता तत्र सरस्वती॥
गवां हि तीर्थे वसतीह गङ्गा पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्मस्तासा प्रणाम सततं च कुर्यात्॥

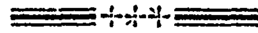
(विष्णुधर्मोत्तरपु०, द्वि० ख० ४२। ४९—५८

[जलाधिनाथ वरुणके पुत्र पुष्कर-द्वीपके स्वामी सर्वशास्त्रोके ज्ञाता पुष्कर भगवान् परशुरामके पूछनेपर इस विद्याव उपदेश करते हुए उनसे कहते हैं—] हे विप्रवर! अब मैं गोमती-विद्याका वर्णन कर रहा हूँ, यह गोमती-विद्या समस पापोंका समूल उन्मूलन करनेवाली है, इसे आप पूर्णतया एकाग्रचित्त होकर सुने—

गौएँ नित्य सुरभिरूपिणी—गौओकी प्रथम उत्पादिका माता एव कल्याणमयी, पुण्यमयी, सुन्दर श्रेष्ठ गन्धवाली हैं वे गुग्गुलके समान गन्धसे संयुक्त हैं। गायोपर ही समस्त प्राणियोंका समुदाय प्रतिष्ठित है। वे सभी प्रकारके परम कल्या अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्षकी भी सम्पादिका हैं। गाये समस्त उत्कृष्ट अन्नोके उत्पादनकी मूलभूता शक्ति हैं औ वे ही सभी देवताओंके भक्ष्यभूत हविष्यान्न और पुरोडाश आदिकी भी सर्वोत्कृष्ट मूल उत्पादिका शक्ति हैं। ये सभ प्राणियोको दर्शन-स्पर्शादिके द्वारा सर्वथा शुद्ध निर्मल एव निष्पाप कर देती हैं। वे दुग्ध, दधि तथा घृत आदि अमृतम पदार्थोंका क्षरण करती हैं तथा उनके वत्सादि समर्थ वृषभ बनकर सभी प्रकारके भारी बोझा ढोने और अन्न आि उत्पादनका भार वहन करनेमें समर्थ होते हैं। साथ ही वेदमन्त्रोंसे पवित्रीकृत हविष्योंके द्वारा स्वर्गमे स्थित देवताओंतकक ये ही परितृप्त करती हैं। ऋषि-मुनियोके यहाँ भी यज्ञो एवं पवित्र अग्निहोत्रादि कार्योमे हवनीय द्रव्योके लिये गाओंवे ही घृत, दुग्ध आदि द्रव्योंका प्रयोग होता रहा है (अतः वे गायोका विशेष श्रद्धा-भक्तिसे पालन करते रहे हैं)। जह कोई भी शरणदाता नहीं मिलता है वहाँ विश्वके समस्त प्राणियोके लिये गायें ही सर्वोत्तम शरण-प्रदात्री बन जाती हैं पवित्र वस्तुओंमें गायें ही सर्वाधिक पवित्र हैं तथा सभी प्रकारके समस्त मङ्गलजात पदार्थोकी कारणभूता हैं। गाये स्वा प्राप्त करनेकी प्रत्यक्ष मार्गभूता सोपान हैं और वे निश्चित रूपसे तथा सदासे ही समस्त धन-समृद्धिकी मूलभूत सनात कारण रही हैं। लक्ष्मीको अपने शरीरमे स्थान देनेवाली गौओको नमस्कार। सुरभीके कुलमे उत्पन्न शुद्ध, सरल एव सुगन्धियुक्त गौओंको नमस्कार। ब्रह्मपुत्री गौओंको नमस्कार। अन्तर्बाह्यसे सर्वथा पवित्र एवं सुदूरतक समस्त वातावरणको शुद्ध एवं पवित्र करनेवाली गौओको बार-बार नमस्कार।

वास्तवमें गौएँ और ब्राह्मण दोनो एक कुलके ही प्राणी है, दोनोमे विशुद्ध सत्त्व विद्यमान रहता है। ब्राह्मणोंमे वेदमन्त्रोकी स्थिति है तो गौओंमें यज्ञके साधनभूत हविष्यकी। इन दोनोके द्वारा ही यज्ञ सम्पन्न होकर विष्णु आदि

गौओंसे होकर समस्त जगत्‌के प्राणियोंका अभ्युत्थान होता है। यह सारा विश्व शुद्ध सत्त्वसे परिपूर्ण देवता, ब्राह्मण, गौ, साधु-संत-महात्मा, तथा पतिव्रता, सती-साध्वी, सदाचारिणी नारियोंके पुण्योंके आधारपर ही टिका हुआ है। ये ही धर्मात्मा सारे सम्पूर्ण विश्वको सदा धारण करते हैं, अतः वे सदा पूजनीय एवं वन्दनीय हैं। जिस जलराशिमें प्यासी गायें जल पीकर अपनी तृषा शान्त करती हैं और जहाँ जिस मार्गसे वे जलराशिको लाँघती हुई नदी आदिको पार करती हैं, वहाँ-वहाँ गङ्गा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती आदि नदियाँ या तीर्थ निश्चित रूपसे विद्यमान रहते हैं। गौ-रूपी तीर्थमें गङ्गा आदि सभी नदियाँ तथा तीर्थ निवास करते हैं और गौओंके रजःकणमें सभी प्रकारकी निरन्तर वृद्धि होनेवाली श्री, शान्ति एवं पुष्टिका निवास रहता है। गायोंके गोबरमें साक्षात् भगवती लक्ष्मी निरन्तर निवास करती हैं और इन्हे प्रणाम करनेसे चतुष्पाद धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः बुद्धिमान् एवं कल्याणकामी पुरुषको गायोको निरन्तर प्रणाम करना चाहिये।



गौओंके लिये नमस्कार

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः। बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः॥

'हे अवध्य गौ! उत्पन्न होते समय तुम्हें नमस्कार और उत्पन्न होनेपर भी तुम्हे प्रणाम। तुम्हारे रूप (शरीर), रोम और खुरोंको भी प्रणाम।'

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥

'श्रीमती गौओंको नमस्कार। कामधेनुकी संतानोको नमस्कार। ब्रह्माजीकी पुत्रियोको नमस्कार। पावन करनेवाली गौओको नमस्कार।'

पञ्च गावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ। तासां मध्ये तु या नन्दा तस्यै देव्यै नमो नमः॥

सर्वकामदुघे देवि सर्वतीर्थाभिषेचिनि। पावनि सुरभिश्रेष्ठे देवि तुभ्यं नमो नमः॥

'क्षीरसमुद्रके मथे जानेपर उसमेंसे पाँच गौएँ प्रकट हुई, उनमेंसे जो नन्दा नामकी श्रेष्ठ गौ है, उस देवीको बारंबार नमस्कार है। हे श्रेष्ठ सुरभिदेवी! तुम समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली तथा समस्त तीर्थोंमें स्नान करनेवाली हो। अतः हे पवित्र करनेवाली देवि! तुम्हें बार-बार नमस्कार है।'

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजङ्गमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्॥

'जिस गौसे यह स्थावर-जंगम अखिल विश्व व्याप्त है, उस भूत और भविष्यकी जननी गौको मैं सिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।'

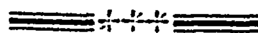
गोशुश्रूषा

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः। तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥

द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्यं सुखप्रदः। अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥

दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां व्युष्टिं तथाश्नुते।

'जो पुरुष गौओंकी सेवा करता है और सब प्रकारसे उनका अनुगमन करता है, उसपर संतुष्ट होकर गौएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओंके साथ मनसे भी कभी द्रोह न करे, उन्हें सदा सुख पहुँचाये, उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदिके द्वारा उनका पूजन करता रहे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौओंकी सेवा करता है, वह समृद्धिका भागी होता है।'



विश्वरूप

[श्रीमद्भगवद्गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको अपने विश्वरूपका दर्शन कराया। सम्पूर्ण विभूतियोसहित चराचर जगत्, त्रिभुवन-त्रैलोक्य और सारे देवी-देवताओके दर्शन अर्जुनको भगवान् श्रीकृष्णमे हुए।

अपने शास्त्रोंके अनुसार हिन्दूधर्ममे तैतीस करोड़ देवता माने गये हैं। सम्पूर्ण विश्व—चराचर-जगत्के जड-चेतन सभी अवयवोंके अधिष्ठातृ देवता होते हैं और इन सभी देवी-देवताओंका निवास गौ मातामे होनेके कारण गौ विश्वरूप है। इतना ही नहीं, यहाँतक कहा गया है कि 'गावो विश्वस्य मातरः' अर्थात् गाय चराचर जगत्की माता है यानी अखिल विश्वका आधार गौ माता ही है। यही कारण है कि केवल गौकी पूजा एव सेवासे सम्पूर्ण देवी-देवताओका आराधन हो जाता है।

अतः यहाँ वेदो, स्मृतियों तथा पुराणोंमे उपलब्ध गौके विश्वरूपका वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है, साथ ही गोमहिमा और गोसेवाकी महिमाका भी दिग्दर्शन कराया गया है—सम्पादक]

गौका विश्वरूप

[सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः]

वेदोंमें

प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्रः शिरो अग्निर्ललाटं यम· कृकाटम्॥
सोमो राजा मस्तिष्को द्यौरुत्तरहनुः पृथिव्यधरहनुः॥
विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता रेवतीर्ग्रीवा· कृत्तिका स्कन्धा घर्मो वहः॥
विश्वं वायुः स्वर्गो लोकः कृष्णद्रं विधरणी निवेष्यः॥
श्येनः क्रोडोऽन्तरिक्षं पाजस्यं बृहस्पतिः ककुद् बृहतीः कीकसा.॥
देवानां पत्नीः पृष्टय उपसदः पर्शव.॥
मित्रश्च वरुणश्चांसौ त्वष्टा चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू॥
इन्द्राणी भसद् वायुः पुच्छं पवमानो वालाः॥
ब्रह्म च क्षत्रं च श्रोणी बलमूरू॥

प्रजापति और परमेष्ठी इसके (गौके) सींग, इन्द्र सिर, अग्नि ललाट और यम गलेकी सधि है। नक्षत्रोके राजा चन्द्रमा मस्तिष्क, द्युलोक ऊपरका जबड़ा और पृथ्वी नीचेका जबड़ा है। बिजली जीभ, मरुत् देवता दाँत, रेवती नक्षत्र गला, कृत्तिका कंधे और ग्रीष्म ऋतु कंधेकी हड्डी है। वायु देवता इसके समस्त अङ्ग हैं, इसका लोक स्वर्ग है और पृष्ठवंशकी हड्डी रुद्र है। श्येन पक्षी (बाज) इसकी छाती, अन्तरिक्ष इसका बल, बृहस्पति इसका कूबड और बृहती नामके छन्द इसकी छातीकी हड्डियाँ हैं। देवाङ्गनाएँ इसकी पीठ और उनकी परिचारिकाएँ पसलीकी हड्डियाँ है। मित्र और वरुण नामके देवता कधे हैं, त्वष्टा और अर्यमा हाथ हैं तथा महादेव इसकी भुजाएँ हैं। इन्द्रपत्नी इसका पिछला भाग है, वायु देवता इसकी पूँछ और पवमान इसके रोये हैं। ब्राह्मण और क्षत्रिय इसके नितंव और वल जाँघे हैं।

धाता च सविता चाष्ठीवन्तौ जङ्घा गन्धर्वा अप्सरस· कुष्ठिका अदितिः शफा·॥
चेतो हृदयं यकृन्मेधा व्रत पुरीतत्॥
क्षुत्कुक्षिरिरा वनिष्ठुः पर्वता प्लाशय॥

विधाता और सविता घुटनेकी हड्डियाँ हैं, गन्धर्व पिडलियाँ, अप्सराएँ छोटी हड्डियाँ और देवमाना अदिति खुर हैं। चित्त हृदय, बुद्धि यकृत् और व्रत ही पुरीतत् नामकी नाडी है। भूख ही पेट, देवी सरस्वती आँते आर पर्वत भीतरी भाग हैं।

क्रोधो वृक्कौ मन्युराण्डौ प्रजा शेप॥
नदी सूत्री वर्षस्य पतय. स्तनाः स्तनयित्नुरूधः॥
विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम्॥

देवजना गुदा मनुष्या आन्त्राण्यत्रा उदरम्॥
रक्षांसि लोहितमितरजना ऊबध्यम्॥
अभ्रं पीबो मज्जा निधनम्॥
अग्निरासीन उत्थितोऽश्विना॥
इन्द्रः प्राङ् तिष्ठन् दक्षिणा तिष्ठन् यमः॥

क्रोध गुर्दे मन्यु (अंड) अण्डकोश और प्रजा जननेन्द्रिय है। नदी गर्भाशय, वर्षाके अधिकारी देव स्तन हैं तथा गर्जनाद करनेवाले बादल ही दुग्धकोष हैं। विश्वव्यापिनी शक्ति चमड़ी, ओषधियाँ रोयें और नक्षत्र इसके रूप हैं। देवगण गुदा, मनुष्य आँतें एवं यक्ष पेट हैं। राक्षस रुधिर एवं दूसरे प्राणी आमाशय हैं। आकाश स्थूलता और मृत्यु मज्जा है। बैठनेके समय यह अग्निरूप है और उठते समय अश्विनीकुमार। पूर्वकी ओर खड़े होते समय इन्द्र और दक्षिणकी ओर खड़े होनेपर यमराज है।

प्रत्यङ् तिष्ठन् धातोदङ् तिष्ठन्त्सविता॥
तृणानि प्राप्तः सोमो राजा॥

पश्चिमकी ओर खड़े होते समय विधाता और उत्तरकी ओर खड़े होते समय यही सविता देवता है। घास चरते समय यही नक्षत्रोंका राजा चन्द्रमा है।

मित्र ईक्षमाण आवृत्त आनन्दः॥
युज्यमानो वैश्वदेवो युक्तः प्रजापतिर्विमुक्तः सर्वम्॥
एतद्वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्॥
उपैनं विश्वरूपाः सर्वरूपाः पशवस्तिष्ठन्ति य एवं वेद॥
(अथर्व० ९। ७। १—२६)

देखते समय यह मित्र देवता है और पीठ फेरते समय आनन्द है। हल अथवा गाड़ीमें जोतनेके समय यह (बैल) विश्वेदेव, जोत दिये जानेपर प्रजापति और जब खुला हुआ रहता है उस समय यह सब कुछ बन जाता है। यही विश्वरूप अथवा सर्वरूप है और यही गोरूप भी है। जिसको इस विश्वरूपका यथार्थ ज्ञान होता है उसके पास विविध आकारके अनेक पशु रहते हैं।

इस सूक्तमें गौका तथा बैलका विश्वरूप बताया गया है। जिस प्रकार भगवद्गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने अपने विश्वरूपका वर्णन किया है उसी प्रकार गौके भी विश्वरूपका इस सूक्तमें वर्णन है। संस्कृतके प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान् ग्रिफिथ महोदय कहते हैं कि इस सूक्तमें आदर्श बैल और गायकी प्रशंसा की गयी है।

इस सूक्तपर कई दृष्टियोंसे विचार किया जा सकता है, परंतु यहाँ केवल एक-दो मुख्य बातें बतलानी हैं। सम्पूर्ण सूक्तके सभी अंशोंपर विचार करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। इस सूक्तके विचारणीय अंश नीचे दिये जाते हैं—

(१) ब्राह्मण और क्षत्रिय विश्वरूपिणी गौके नितंब हैं। (मन्त्र ९)
(२) गन्धर्व पिंडलियाँ और अप्सराएँ छोटी हड्डियाँ हैं। (मन्त्र १०)
(३) देवता इसकी गुदा है, मनुष्य आँतें और अन्य प्राणी आमाशय है। (मन्त्र १६)
(४) राक्षस रक्त एवं इतर मनुष्य पेट है। (मन्त्र १७)

उपर्युक्त मन्त्रोंमें यह भाव दिखलाया गया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा इतर लोग अर्थात् वैश्य, शूद्र, निषाद, गन्धर्व, देवता, अप्सराएँ, मनुष्यमात्र, राक्षस एवं अन्य सब प्राणी गो-रूप ही हैं। सम्पूर्ण जनता हृदयसे समझे कि हम सब मनुष्य गोमाताके ही अङ्ग हैं—इसीलिये इन मन्त्रोंकी अवतारणा की गयी है। इस प्रकार हमलोग गोमाताके शरीरके साथ अपनी एकरूपता देखना सीखें। गौके शरीरको कष्ट होनेपर वह कष्ट हमींको होगा—यह भाव मनमें धारण करें। यदि कोई मनुष्य गौको कष्ट देता है या उसे काटता है या और किसी भी तरहसे दुःख देता है तो वह केवल गौको ही दुःख देता है तथा गौके दुखी रहनेपर भी हम सब सुखी रह सकते हैं—यह हीन भाव मनसे हटा दें। गौका हमारे साथ अवयवी और अवयवका सम्बन्ध है। हम गौके ही अङ्ग हैं; इसलिये जो दुःख गौको मिलता है, वह हमींको मिलता है—ऐसा मानना चाहिये और इसी भावनासे गौका पालन तथा रक्षण करना चाहिये। दूसरे शब्दोंमें स्वयं अपने ऊपर दुःख आनेपर जिस लगनके साथ उसका प्रतिकार किया जाता है उसी तीव्रताके साथ गौके कष्टोंको दूर करनेकी चेष्टा होनी चाहिये।

गौ एक निरा दूध देनेवाला पशु ही नहीं है, प्रत्युत वह अपने कुटुम्बका हकदार है, या यों कहिये कि मालिक

है और हम उसके परिवारके लोग हैं—यह भाव सदा मनमे जीवित और जाग्रत् रहना चाहिये।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, निषाद, राक्षस आदि सभी जातिके लोगोमें यह विचार जाग्रत् रहना चाहिये। ऐसा होनेसे सम्पूर्ण जगतीतलपर गोमाताकी पूजा होने लगेगी।

यह सम्पूर्ण जगत् ही गोरूप अर्थात् गायका ही रूप है, इसलिये गौके साथ किसी एक पदार्थकी तुलना हो ही नहीं सकती। अन्य सभी पदार्थोंको विविध उपमाएँ दी जा सकती हैं; केवल गौ ही ऐसा प्राणी है, जो अनुपम है, क्योकि वह प्राणीमात्रकी निरूपम माता है, मानव-वशोका पालन करनेवाली है और मानवमात्र उसके अवयव हैं। पाठक यदि विचार करेंगे और गौके उपकारोका मनन करेंगे तो वेदका यह कथन ठीक तरहसे उनकी समझमे आ सकता है।

यहाँ प्रश्न यह हो सकता है कि उपर्युक्त वर्णनसे वेदने किस बातकी शिक्षा दी है? इस प्रश्नके उत्तरमें निवेदन है कि वेदने इस सूक्तके द्वारा अहिसाका उत्तमोत्तम उपदेश दिया है। मनुष्य तो क्या, कोई भी प्राणी अपने-आपकी हिंसा कदापि नहीं करेगा। सिह या अन्य हिंसक जन्तु दूसरे जीवोंको मारकर खा जाते हैं। राक्षस भी मनुष्यादि प्राणियोंको खा जाते हैं। परंतु दूसरेके मासपर निर्वाह करनेवाले ये क्रूर प्राणी अत्यधिक भूख लगनेपर भी अपनी ही देहके अवयवोंको कभी काटकर नहीं खाते।

अतः इस स्वाभाविक प्रवृत्तिको लेकर ही वेद मनुष्योंको इस सूक्तके द्वारा गाय और बैलके माससे पूर्णतया निवृत्त करना चाहता है। यह बात उपर्युक्त वर्णनसे स्पष्ट हो जाती है।

जब सम्पूर्ण हृदयसे मनुष्य अपने-आपको गौके शरीरके अवयव मानने लगेगे तब वे लोग गौ या बैलका मांस किस तरह खा सकेगे, क्योकि कोई भी जीव अपने शरीरका मांस नहीं खाता। औरोकी तो बात ही क्या, निरे आमिषभोजी अथवा नरमासभोजी मनुष्य भी अपने शरीरका मांस नहीं खाते। इसलिये जो मनुष्य अपने-आपको गौके शरीरका अवयव मानेगा, वह गोमास-भक्षणसे पूर्णतया निवृत्त होगा ही।

देखिये, कितनी प्रवल युक्तिसे वेदने लोगोंको—मांसभोजी राक्षस-श्रेणीके लोगोको भी निरामिषभोजी वनानेका यत्न किया है। यह इतनी प्रबल युक्ति है कि यदि इस प्रकारका विचार मनमे सदाके लिये स्थिर हो जाय तो कभी कोई गोमांस खाये ही नहीं। इतनी प्रवल युक्ति देनेपर भी कई पाश्चात्त्य विद्वान् यह मानते हैं कि वैदिक कालमे गोमांस खानेकी प्रथा थी और बैलका भी मांस खाया जाता था। उन लोगोसे हमारी प्रार्थना है कि वे इस प्रवल युक्तिका अधिक विचारपूर्वक मनन करें और इसके बाद अपना मत स्थिर करे।

गौ मुझसे भिन्न नही, मैं उसके शरीरका एक भाग हूँ, इसलिये मुझे जिस प्रकार अपनी रक्षा करनी चाहिये, उसी प्रकार गौकी भी रक्षा अवश्य करनी चाहिये—यह कितना उच्चतम उपदेश है। पाठक इस उपदेशका महत्त्व समझे।

दुराचारी मनुष्य भी जिस समय किसी स्त्रीको 'माँ' कहता है, उस समय उसकी दृष्टिमे तत्काल पवित्रता आ जाती है। किसीको माता कहनेका तात्पर्य ही यह है कि उसे पवित्रताकी दृष्टिसे देखा जाय।

गौको माता कहनेका अर्थ यही है कि उसे हम पवित्र एवं पूज्य दृष्टिसे देखे। 'गौ हमारी परम पूजनीय, वन्दनीय एव पालनीय माता है'—यह भाव हमे हर समय जाग्रत् रखना चाहिये। पाठक इस सूक्तका मनन इसी दृष्टिसे करे। इन्द्रादि देवगण जीवित और जाग्रत् गोमाताके देहमे हैं। जहाँ इन्द्रादि देव रहते हैं, वहीं स्वर्ग है अर्थात् गो ही स्वर्गलोक है—यही भाव पूर्वोक्त सूक्तके चतुर्थ मन्त्रमे कहा गया है।

गौको माता कहनेवाले कुछ लोग गौके शरीरमे नाना देवताओका निवास मानते हैं, किंतु यह सब मानते हुए भी उनका आचरण ऐसा होता है मानो वे यह कुछ भी नहीं मानते। इसका कारण उनका धर्मविषयक अज्ञान ही है। यदि वेदका यह उपदेश उनके मनमे जाग्रत् रहेगा तो वे गौकी रक्षा भलीभाँति कर सकेगे। गौके जिस गौरवका वर्णन इस सूक्तमे हुआ है, वह गौरव जिस कालमे जनताके मनोंमें रहा होगा, उस कालमे गौका वध असम्भव था—इस बातको अधिक विस्तारसे कहनेकी आवश्यकता नहीं है।

वेदोंके समान ही विभिन्न स्मृति-पुराणोंमें भी गौके विराट्‌रूपके द्वारा अलग वर्णन मिलते हैं। उनमेंसे कुछको यहाँ दिया जा रहा है—

बृहत्पराशरस्मृतिमें

शृंगमूले स्थितो ब्रह्मा शृंगमध्ये तु केशवः।
शृंगाग्रे शंकरं विद्यात् त्रयो देवाः प्रतिष्ठिताः॥
शृंगाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च।
सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः॥
ललाटाग्रे स्थिता देवी नासामध्ये तु षण्मुखः।
कम्बलाश्वतरौ नागौ तत्कर्णाभ्यां व्यवस्थितौ॥
स्थितौ तस्याश्च सौरभ्याश्चक्षुषोः शशिभास्करौ।
दन्तेषु वसवश्चाष्टौ जिह्वाया वरुणः स्थितः॥
सरस्वती च हुंकारे यमयक्षौ च गण्डयोः।
ऋषयो रोमकूपेषु प्रस्रावे जाह्नवीजलम्॥
कालिन्दी गोमये तस्या अपरे देवतास्तथा।
अष्टाविंशतिदेवानां कोट्यो लोमसु ताः स्थिताः॥
उदरे गार्हपत्योऽग्निर्हृदये दक्षिणस्तथा।
मुखे चाहवनीयस्तु सभ्यावसथ्यौ च कुक्षिषु॥
एवं यो वर्तते गोषु ताडनक्रोधवर्जितः।
महतीं श्रियमाप्नोति स्वर्गलोके महीयते॥

(५। ३८—४१)

गौओंके सींगोंके मूलमें ब्रह्माजी और दोनों सींगोंके मध्यमें भगवान् नारायणका निवास है। सींगके शिरोभागमें भगवान् शिवका निवास जानना चाहिये। इस प्रकार ये तीनों देवता गौके सींगमें प्रतिष्ठित हैं। इसके अतिरिक्त सींगके अग्रभागमें चर तथा अचर सभी तीर्थ विद्यमान रहते हैं। इसी प्रकार सभी देवता गौके शरीरमें निवास करते हैं, अतः गौ सर्वदेवमयी है। गौके ललाटके अग्रभागमें देवी पार्वती तथा नासिकाके मध्यमें कुमार कार्तिकेयका निवास है। गौके दोनों कानोंमें कम्बल और अश्वतर नामके दो नाग निवास करते हैं और उस सुरभी गौके दाहिनी आँखमें सूर्य और बायीं आँखमें चन्द्रमाका निवास है। दाँतोंमें आठों वसु और जिह्वामें भगवान् वरुण प्रतिष्ठित हैं। गौके हुंकारमें भगवती सरस्वती निवास करती हैं और गण्डस्थलों (गालों)-में यम और यक्ष निवास करते हैं। गौके सभी रोमकूपोंमें ऋषिगणोंका निवास है तथा गोमूत्रमें भगवती गङ्गाके पवित्र जलका निवास है और गोमय (गोबर)-में भगवती यमुना तथा सभी देवता प्रतिष्ठित हैं। अट्ठाईस करोड देवता उसके रोमकूपोंमें स्थित हैं। गौके उदर-देशमें गार्हपत्य अग्निका निवास है और हृदयमें दक्षिणाग्निका निवास है। मुखमें आहवनीय नामकी अग्नि तथा कुक्षियोंमें सभ्य एवं आवसथ्य नामक अग्नियाँ निवास करती हैं। इस प्रकार गायके शरीरमें सभी देवताओंको स्थित समझकर जो कभी उनके ऊपर क्रोध तथा प्रताडना नहीं करता है वह महान् ऐश्वर्यको प्राप्त करता है और स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

पद्मपुराणमें

गोमुखे चाश्रिता वेदाः सषडङ्गपदक्रमाः॥
शृंगयोश्च स्थितौ नित्यं सहैव हरकेशवौ।
उदरेऽवस्थितः स्कन्दः शीर्षे ब्रह्मा स्थितः सदा॥
वृषध्वजो ललाटे च शृंगाग्र इन्द्र एव च।
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषोः शशिभास्करौ॥
दन्तेषु गरुडो देवो जिह्वाया च सरस्वती।
अपाने सर्वतीर्थानि प्रस्रावे चैव जाह्नवी॥
ऋषयो रोमकूपेषु मुखतः पृष्ठतो यमः।
धनदो वरुणश्चैव दक्षिणं पार्श्वमाश्रितौ॥
वामपार्श्वे स्थिता यक्षास्तेजस्वन्तो महाबलाः।
मुखमध्ये च गन्धर्वा नासाग्रे पन्नगास्तथा॥
खुराणा पश्चिमे पार्श्वेऽप्सरसश्च समाश्रिताः।
गोमये वसते लक्ष्मीर्गोमूत्रे सर्वमङ्गला॥
पादाग्रे खेचरा वेद्या हम्भाशब्दे प्रजापतिः।
चत्वारः सागराः पूर्णा धेनूनां च स्तनेषु वै॥
गां च स्पृशति यो नित्यं स्नातो भवति नित्यशः।
अतो मर्त्यः प्रपुष्टैस्तु सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
गवा रजः खुरोद्धूतं शिरसा यस्तु धारयेत्।
स च तीर्थजले स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

(सृष्टिखण्ड ५७। १५६—१६५)

छहों अङ्गों, पदों और क्रमोंसहित सम्पूर्ण वेद गौओंके मुखमें निवास करते हैं। उनके सींगोंमें भगवान् श्रीशंकर और श्रीविष्णु सदा विराजमान रहते हैं। गौओंके

उदरमें कार्तिकेय, मस्तकमें ब्रह्मा, ललाटमें महादेवजी, सींगोंके अग्रभागमे इन्द्र, दोनों कानोंमे अश्विनीकुमार, नेत्रोंमें चन्द्रमा और सूर्य, दाँतोमे गरुड, जिह्वामें सरस्वती देवी, अपान (गुदा)-मे सम्पूर्ण तीर्थ, मूत्रस्थानमे गङ्गाजी, रोमकूपोंमें ऋषि, मुख और पृष्ठभागमे यमराज, दक्षिण पार्श्वमें वरुण और कुबेर, वाम पार्श्वमें तेजस्वी और महाबली यक्ष, मुखके भीतर गन्धर्व, नासिकाके अग्रभागमे सर्प, खुरोंके पिछले भागमे अप्सराएँ स्थित है। गायके गोबरमे लक्ष्मी, गोमूत्रमें सर्वमङ्गला भगवती पार्वती, चरणोके अग्रभागमें आकाशचारी देवता, रँभानेकी आवाजमे प्रजापति और थनोंमें भरे हुए चारो समुद्र प्रतिष्ठित है। जो मनुष्य प्रतिदिन स्नान करके गौका स्पर्श करता है, वह सब प्रकारके पापोंसे मुक्त हो जाता है। जो गौओके खुरसे उड़ी हुई धूलिको सिरपर धारण करता है वह मानो तीर्थके जलमें स्नान कर लेता है और सभी पापोसे छुटकारा पा जाता है।

भविष्यपुराणमें

शृंगमूले गवां नित्यं ब्रह्मा विष्णुश्च संस्थितौ।
शृंगाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च॥
शिवो मध्ये महादेवः सर्वकारणकारणम्।
ललाटे संस्थिता गौरी नासावंशे च षण्मुखः॥
कम्बलाश्वतरौ नागौ नासापुटसमाश्रितौ।
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुर्भ्यां शशिभास्करौ॥
दन्तेषु वसवः सर्वे जिह्वायां वरुणः स्थितः।
सरस्वती च कुहरे यमयक्षौ च गण्डयोः॥
संध्याद्वयं तथोष्ठाभ्यां ग्रीवायां च पुरन्दरः।
रक्षांसि ककुदे द्यौश्च पार्ष्णिकाये व्यवस्थिता॥
चतुष्पात्सकलो धर्मो नित्यं जंघासु तिष्ठति।
खुरमध्येषु गन्धर्वाः खुराग्रेषु च पन्नगाः॥
खुराणां पश्चिमे भागे राक्षसाः सम्प्रतिष्ठिताः।
रुद्रा एकादश पृष्ठे वरुणः सर्वसन्धिषु॥
श्रोणीतटस्थाः पितरः कपोलेषु च मानवाः।
श्रीरपाने गवां नित्यं स्वाहालंकारमाश्रिता॥
आदित्या रश्मयो बालाः पिण्डीभूता व्यवस्थिताः।
साक्षाद्गङ्गा च गोमूत्रे गोमये यमुना स्थिता॥
त्रयस्त्रिंशद् देवकोट्यो रोमकूपे व्यवस्थिताः।
उदरे पृथिवी सर्वा सशैलवनकानना॥
चत्वारः सागराः प्रोक्ता गवां ये तु पयोधराः।
पर्जन्यः क्षीरधारासु मेघा बिन्दुव्यवस्थिता॥
जठरे गार्हपत्योऽग्निर्दक्षिणाग्निर्हृदि स्थितः।
कण्ठे आहवनीयोऽग्निः सभ्योऽग्निस्तालुनि स्थितः॥
अस्थिव्यवस्थिताः शैला मज्जासु क्रतवः स्थिताः।
ऋग्वेदोऽथर्ववेदश्च सामवेदो यजुस्तथा॥
(उत्तरपर्व ६९। २५—३७)

गौओके सींगकी जड़मे सदा ब्रह्मा और विष्णु प्रतिष्ठित है। सींगके अग्रभागमे चराचर समस्त तीर्थ प्रतिष्ठित हैं। सभी कारणोके कारणस्वरूप महादेव शिव सींगोके मध्यमे प्रतिष्ठित हैं। गौके ललाटमे गौरी, नासिकाके अस्थिभागमें भगवान् कार्तिकेय और नासिकाके दोनो पुटोमे कम्बल तथा अश्वतर—ये दो नाग प्रतिष्ठित हैं। दोनो कानोमे अश्विनीकुमार, नेत्रोमे चन्द्र और सूर्य, दाँतोमे आठो वसुगण, जिह्वामे वरुण, कण्ठदेशमें सरस्वती, गण्डस्थलोमे यम और यक्ष, ओष्ठोमे दोनो सध्याएँ, ग्रीवामे इन्द्र, ककुद् (मौर)-मे राक्षस, पार्ष्णि-भागमे आकाश और जघाओमे चारो चरणोसे धर्म सदा विराजमान रहता है। खुरोके मध्यमे गन्धर्व, अग्रभागमे सर्प एव पश्चिम-भागमे राक्षसगण प्रतिष्ठित हैं। गौके पृष्ठदेशमे एकादश रुद्र, सभी सधियोमे वरुण, श्रोणितट (कमर)-मे पितर, कपोलोमे मानव तथा अपानमे स्वाहा-रूप अलंकारको आश्रित कर श्री अवस्थित हैं। आदित्यरश्मियाँ केश-समूहोमे पिण्डीभूत हो अवस्थित हैं। गोमूत्रमे साक्षात् गङ्गा और गोमयमे यमुना स्थित हैं। रोमसमूहमे तैंतीस करोड़ देवगण प्रतिष्ठित हैं। उदरमे पर्वत और जगलोके साथ पृथ्वी अवस्थित है। चारो पयोधरोमे चारो महासमुद्र स्थित है। क्षीरधाराओमे पर्जन्य नामक देवता एव क्षीरबिन्दुओमे मेघ नामक देवता अवस्थित हैं। जठरमे गार्हपत्याग्नि, हृदयमे दक्षिणाग्नि, कण्ठमें आहवनीयाग्नि और तालुमें सभ्याग्नि स्थित हैं। गौओंकी अस्थियोमे पर्वत और मज्जाओमे यज्ञ स्थित है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद—ये सभी वेद भी गौओंमें ही प्रतिष्ठित है।

ब्रह्माण्डपुराणमें

(गोसावित्री-स्तोत्र)

[illegible] देवाधिदेव भगवन्! आपके सामने मैं प्रणत हूँ। पूर्वकालमें भगवान् व्यासदेवने जिस गोसावित्री-स्तोत्रको कहा था, उसीको मैं सुनाता हूँ। यह गौओंका स्तोत्र समस्त पापोंका नाश करनेवाला, सम्पूर्ण अभिलषित वस्तुओंको देनेवाला, दिव्य एवं समस्त कल्याणोंका करनेवाला है। गौके सींगोंके अग्रभागमें साक्षात् जनार्दन विष्णुस्वरूप भगवान् वेदव्यास रमण करते हैं। उसके सींगोंकी जड़में देवी पार्वती और सींगोंके मध्यभागमें भगवान् सदाशिव विराजमान रहते हैं। उसके मस्तकमें ब्रह्मा, कंधेमें बृहस्पति, ललाटमें वृषभारूढ भगवान् शंकर, कानोंमें अश्विनीकुमार तथा नेत्रोंमें सूर्य और चन्द्रमा रहते हैं। दाँतोंमें समस्त ग्रहगण, जीभमें देवी सरस्वती तथा वक्षःस्थलमें एवं पिंडलियोंमें सारे देवता निवास करते हैं। उसके खुरोंके मध्यभागमें गन्धर्व, अग्रभागमें चन्द्रमा एवं भगवान् अनन्त तथा पिछले भागमें मुख्य-मुख्य अप्सराओंका स्थान है। उसके पीछेके भाग (नितंब)-में पितृगणोंका तथा भृकुटिमूलमें तीनों गुणोंका निवास बताया गया है। उसके रोमकूपोंमें ऋषिगण तथा चमड़ीमें प्रजापति निवास करते हैं। उसके थूहेमें नक्षत्रोंसहित द्युलोक, पीठमें सूर्यतनय यमराज, अपानदेशमें सम्पूर्ण तीर्थ एवं गोमूत्रमें साक्षात् गङ्गाजी विराजती हैं। उसकी दृष्टि, पीठ एवं गोबरमें स्वयं लक्ष्मीजी निवास करती हैं; नथुनोंमें अश्विनीकुमारोंका एवं होठोंमें भगवती चण्डिकाका वास है। गौओंके जो स्तन हैं, वे जलसे पूर्ण चारों समुद्र हैं; उनके रँभानेमें देवी सावित्री तथा हुंकारमें प्रजापतिका वास है। इतना ही नहीं, समस्त गौएँ साक्षात् विष्णुरूप हैं, उनके सम्पूर्ण अङ्गोंमें भगवान् केशव विराजमान रहते हैं।

स्कन्दपुराणमें

गौ सर्वदेवमयी और वेद सर्वगोमय हैं। गायके सींगोंके अग्रभागमें नित्य इन्द्र निवास करते हैं। हृदयमें कार्तिकेय, सिरमें ब्रह्मा और ललाटमें वृषभध्वज शंकर, दोनों नेत्रोंमें चन्द्रमा और सूर्य, जीभमें सरस्वती, दाँतोंमें मरुद्गण और साध्य देवता, हुंकारमें अङ्ग-पद-क्रमसहित चारों वेद, रोमकूपोंमें असंख्य तपस्वी और ऋषिगण, पीठमें दण्डधारी महाकाय महिषवाहन यमराज, स्तनोंमें चारों पवित्र समुद्र, गोमूत्रमें विष्णु-चरणसे निकली हुई, दर्शनमात्रसे पाप नाश करनेवाली श्रीगङ्गाजी, गोबरमें पवित्र सर्वकल्याणमयी लक्ष्मीजी, खुरोंके अग्रभागमें गन्धर्व, अप्सराएँ और नाग निवास करते हैं। इसके सिवा सागरान्त पृथ्वीमें जितने भी पवित्र तीर्थ हैं सभी गायोंके देहमें रहते हैं। विष्णु सर्वदेवमय हैं, गाय इन विष्णुके शरीरसे उत्पन्न हुई है, विष्णु और गाय—इन दोनोंके ही शरीरमें देवता निवास करते हैं। इसीलिये मनुष्य गायोंको सर्वदेवमयी मानते हैं।

(आवन्त्यखण्ड, रेवाखण्ड अ० ८३)

महाभारतमें

यदा च दीयते राजन् कपिला ह्यग्निहोत्रिणे।
तदा च शृंगयोस्तस्या विष्णुरिन्द्रश्च तिष्ठतः॥
चन्द्रवज्रधरौ चापि तिष्ठतः शृंगमूलयोः।
शृंगमध्ये तथा ब्रह्मा ललाटे गोर्वृषध्वजः॥
कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषी शशिभास्करौ।
दन्तेषु मरुतो देवा जिह्वायां वाक् सरस्वती॥
रोमकूपेषु मुनयश्चर्मण्येव प्रजापतिः।
निःश्वासेषु स्थिता वेदाः सषडङ्गपदक्रमाः॥
नासापुटे स्थिता गन्धाः पुष्पाणि सुरभीणि च।
अधरे वसवः सर्वे मुखे चाग्निः प्रतिष्ठितः॥
साध्या देवाः स्थिताः कक्षे ग्रीवायां पार्वती स्थिता।
पृष्ठे च नक्षत्रगणाः ककुद्देशे नभःस्थलम्॥
अपाने सर्वतीर्थानि गोमूत्रे जाह्नवी स्वयम्।
अष्टैश्वर्यमयी लक्ष्मीर्गोमये वसते सदा॥
नासिकायां सदा देवी ज्येष्ठा वसति भामिनी।
श्रोणीतटस्थाः पितरो रमा लाङ्गूलमाश्रिता॥
पार्श्वयोरुभयोः सर्वे विश्वेदेवाः प्रतिष्ठिताः।
तिष्ठत्युरसि तासां तु प्रीतः शक्तिधरो गुहः॥
जानुजङ्घोरुदेशेषु पञ्च तिष्ठन्ति वायवः।
खुरमध्येषु गन्धर्वाः खुराग्रेषु च पन्नगाः॥
चत्वारः सागराः पूर्णास्तस्या एव पयोधराः।

(आश्वमेधिकपर्व, वैष्णवधर्मपर्व, अध्याय ९२)

[भगवान् श्रीकृष्णने राजा युधिष्ठिरसे कहा—] राजन्!

जिस समय अग्निहोत्री ब्राह्मणको कपिला गौ दानमें दी जाती है, उस समय उसके सींगोके ऊपरी भागमे विष्णु और इन्द्र निवास करते हैं। सीगोंकी जड़में चन्द्रमा और वज्रधारी इन्द्र रहते हैं। सींगोके बीचमे ब्रह्मा तथा ललाटमे भगवान् शंकरका निवास होता है। दोनों कानोंमें अश्विनीकुमार, नेत्रोमे चन्द्रमा और सूर्य, दाँतोंमे मरुद्गण, जिह्वामें सरस्वती, रोमकूपोमें मुनि, चर्ममें प्रजापति एवं श्वासोंमें षडङ्ग, पद और क्रमसहित चारों वेदोका निवास है।

नासिका-छिद्रोमें गन्ध और सुगन्धित पुष्प, नीचेके ओठमे सब वसुगण तथा मुखमे अग्नि निवास करते हैं। कक्षमें साध्य देवता, गरदनमें पार्वती, पीठपर नक्षत्रगण, ककुद्के स्थानमे आकाश, अपानमे सारे तीर्थ, मूत्रमे साक्षात् गङ्गाजी तथा गोबरमे आठ ऐश्वर्योसे सम्पन्न लक्ष्मीजी रहती हैं। नासिकामे परम सुन्दरी ज्येष्ठा देवी, नितम्बोंमे पितर एवं पूँछमे भगवती रमा रहती हैं। दोनो पसलियोंमे सभी विश्वेदेव स्थित हैं और छातीमे प्रसन्नचित्त शक्तिधारी कार्तिकेय रहते है। घुटनो और ऊरुओमे पाँच वायु रहते हे, खुरोके मध्यमे गन्धर्व और खुरोके अग्रभागमे सर्प निवास करते हैं। जलसे परिपूर्ण चारो समुद्र उसके चारो स्तन हें।



गोस्तु मात्रा न विद्यते

एक बार देवी-देवता, ऋषि-मुनि एवं ऋतुओमे वाद-विवाद होने लगा। आपसमे सभी एक-दूसरेसे अपनेको बड़ा एवं महान् मानते थे। आपसमें निर्णय न होनेपर वेद भगवान्के न्यायालयमें सभी उपस्थित हुए। अपनी-अपनी प्रतिष्ठाके अभिलाषी देवतादि भगवान् वेदके न्यायकी प्रतीक्षा करने लगे। भगवान् वेदके आदेशपर सभीने अपना-अपना मत प्रकट किया। किसीने कहा कि मैंने अपने सत्कर्तव्यसे समाजको ऊपर उठाया। किसीने कहा कि मैंने अपने कर्मसे लोगोका उत्थान किया आदि।

इसका निर्णय देते हुए अथर्ववेद भगवान्ने कहा कि संसारमें केवल एक ही सबसे महान् एवं श्रेष्ठ है। उसीको चाहे गाय कहो या ऋषि या एक धाम या आशीर्वाद। अथवा संसारमें एक ऋतु या एक ही पूजनीय देव मानो जो समाजका सर्वप्रकारेण उत्थानकारी है। वैदिक मन्त्रमें प्रश्न इस प्रकार है—

को नु गौः क एकऋषिः किमु धाम का आशिषः।
यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुः कतमो नु सः॥

(अथर्व० ८। ९। २५)

इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है—सम्पूर्ण धरातल एक ही विश्वरूपी गौ है। सम्पूर्ण विश्वमे व्याप्त एक ही परमात्मा, परमेश्वर, परब्रह्म श्रीराम सबके ज्ञाता ओर द्रष्टा ऋषि हैं। क्योकि—

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ पर ब्रह्माभिधीयते॥

(श्रीरामपूर्वतापिन्युपनिषद् म० ६)

सब विश्व मिलकर एक ही धाम है। एक ही स्थान है। सबके लिये एक ही आशीर्वाद है, जो मन्त्रको कल्याणके लिये ही दिया जाता है। एक ही ऋतु वह है, जो मानवोमे शुभकर्म करनेके लिये अखण्ड उत्साह-रूपसे रहती है। यथा—

एको गौरेक एकऋषिरेकं धामैकधाशिषः।
यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुर्नाति रिच्यते॥

(अथर्व० ८। ९। २६)

स्वतन्त्र-रूपसे भी वेदभगवान्ने पञ्चपरोपकारियोंमे श्रेष्ठ गायको ही माना है। अर्थात् गाय जीवोंके हर पहलुओमे लाभकारी है। यथा—

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्व. पशुपते नमस्ते।
तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावय·॥

(अथर्व० ११। २। ९)

हे पशुओंके स्वामी श्रीरामजी! ऐसे पशुओंको उत्पन्न करनेवाले देव! आपको चारो प्रहरमें साष्टाङ्ग एवं

[illegible] है। [illegible] उन्हें [illegible] नियुक्त किये गये [illegible] और [illegible]—इन पाँचों [illegible] प्रथम स्थानपर [illegible] है। [illegible] सभी सेवन करते हैं [illegible] उस गौकी देखभाल [illegible] श्रीरामजी हैं। इस गौके [illegible] गोशाला है और यही [illegible] है।

[illegible] वर्णन है कि एक बार इन्द्र भगवान्ने [illegible] की—'हे पोषण करनेवाले [illegible] शत्रु-दलपर आक्रमण करनेवाले वीरवर! हमारे [illegible] प्रमुख स्थान देकर नियुक्त कीजिये और हमें [illegible] कीजिये जिससे हम सभी सुखी रहें। [illegible] समझाइये। वैदिक मन्त्र इस प्रकार है—

[illegible] धिके गोअग्रा पृषन् विष्णवेव्ययाव। कर्ता न स्वस्तिमत॥

(ऋ० १।९०।५)

[illegible] भी प्रार्थना की कि हमें उस प्रकारकी [illegible] कीजिये, जिस प्रकार कि गायको प्रमुख स्थान [illegible] आगे करके स्वयं अनुचर बनकर चलनेसे हम [illegible]। यथा—

[illegible] मतिवा रभेमहि सं वाजेभि पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः।
स देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि॥

(ऋ० १।५३।५)

[illegible] भगवान्का निर्देश है कि यदि किसीको इस मनुष्य-शरीरमें सब प्रकारका वैभव प्राप्त करना है तो गौ माताको प्रमुख-रूपसे सेवा करे। सायण भाष्यकारने भी इसको स्वीकार करते हुए लिखा है कि—'स्तोतृभ्यो दानार्थमग्रे प्रमुखान एव गावो०' अर्थात् गायोंका दान, गायोंकी पूजा-स्तुति प्रमुखरूपसे करनी चाहिये, क्योंकि दानोंमें गोदान प्रमुख है। इसीसे सभी देवता गौ माताके साथ अपनी पूजा करानेके लिये विविध अङ्गोंपर निवास करने लगे। गौ माताके मल-मूत्रकी महानता समाजमें सर्वकालमें विद्यमान रहे, इस उद्देश्यसे स्वयं श्रीलक्ष्मीजी भी गोबर एवं गोमूत्रमें वास करने लगीं।

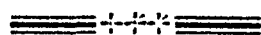
यजुर्वेदका निम्न मन्त्र निर्देश करता है कि जिस ब्रह्मविद्याद्वारा मनुष्य परम सुखको प्राप्त करता है, उसकी सूर्यसे उपमा दी जा सकती है, उसी प्रकार द्युलोककी समुद्रसे तथा विस्तीर्ण पृथ्वीकी इन्द्रसे उपमा दी जा सकती है, किंतु प्राणीमात्रके अनन्त उपकारोंको अकेली सम्पन्न करनेवाली गौकी किसीसे उपमा नहीं दी जा सकती, गौ निरुपमा है, वास्तवमें गौके समान उपकारी जीव मनुष्यके लिये दूसरा कोई भी नहीं है—

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमꣳ सरः।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते॥

(यजुर्वेद २३।४८)

अतएव मानवोंको गौ माताकी सेवा करनेके लिये वेद भगवान्का आदेश हुआ। जो व्यक्ति सब प्रकारसे अपना कल्याण चाहता हो वह वेद भगवान्के आदेशका पालन करे। अस्तु!!

(मानसप्राज्ञ पं० श्रीरामराघवदासजी शास्त्री 'पुजारी')



जीवनदान सर्वश्रेष्ठ दान है

[illegible] प्रदानाद्धि नान्यद्दानं विशिष्यते। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देयं प्राणाभिरक्षणम्॥
अहिंसा सर्वदेवेभ्यः पवित्रा सर्वदायिनी। दानं हि जीवितस्याहुः प्राणिनां परमं बुधाः॥

(वायुपुराण ८०।१७-१८)

[illegible] बढ़कर और कोई भी उत्तम दान नहीं है, इसलिये सब प्रकारके प्रयत्नोंसे सबको प्राणदान देना चाहिये। अहिंसा सब [illegible] देनेवाली है और परम पवित्र है। प्राणियोंको जीवनदान सर्वश्रेष्ठ दान है।

गौकी महिमा

महाभारतमें

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत॥
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥
गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः॥
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ।
गावो यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखम्॥
अमृतं ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च।
अमृतायतनं चैताः सर्वलोकनमस्कृताः॥
तेजसा वपुषा चैव गावो वह्निसमा भुवि।
गावो हि सुमहत् तेजः प्राणिनां च सुखप्रदाः॥
निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पाप्मं चास्यापकर्षति॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम्॥
इत्येतद् गोषु मे प्रोक्तं माहात्म्यं भरतर्षभ।
गुणैकदेशवचनं शक्यं पारायणं न तु॥

(अनुशासनपर्व, दानधर्मपर्व ५१। २६—३४)

[महर्षि च्यवनने राजा नहुषसे कहा—] अपनी मर्यादासे कभी च्युत न होनेवाले हे राजेन्द्र! मैं इस संसारमे गौओंके समान दूसरा कोई धन नहीं देखता हूँ। वीर भूपाल! गौओंके नाम और गुणोका कीर्तन तथा श्रवण करना, गौओंका दान देना और उनका दर्शन करना—इनकी शास्त्रोंमें बड़ी प्रशंसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण पापोंको दूर करके परम कल्याणकी प्राप्ति करानेवाले हैं। गौएँ सदा लक्ष्मीकी जड हैं। उनमें पापका लेशमात्र भी नहीं है। गौएँ ही मनुष्योको सर्वदा अन्न और देवताओको हविष्य देनेवाली हैं। स्वाहा और वषट्कार सदा गौओमें ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएँ ही यज्ञका संचालन करनेवाली तथा उसका मुख हैं। वे विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहनेपर अमृत हीं देती हैं। वे अमृतकी आधारभूत हैं। सारा संसार उनके सामने नतमस्तक होता है। इस पृथ्वीपर गौएँ अपनी काया और कान्तिसे अग्निके समान हैं। वे महान् तेजकी राशि और समस्त प्राणियोको सुख देनेवाली हैं। गौओका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, उस स्थानको शोभा बढ़ा देता है और वहाँके सारे पापोको खींच लेता है। गौएँ स्वर्गकी सीढी हैं। गौएँ स्वर्गमे भी पूजी जाती हैं। गौएँ समस्त कामनाओको पूर्ण करनेवाली देवियाँ हैं। उनसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है। भरतश्रेष्ठ! यह मैंने गौओका माहात्म्य बताया है। इसमें उनके गुणोका दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। गौओके सम्पूर्ण गुणोका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।

× × ×

तुल्यनामानि देयानि त्रीणि तुल्यफलानि च।
सर्वकामफलानीह गावः पृथ्वी सरस्वती॥
मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।
वृद्धिमाकांक्षता नित्यं गावः कार्या प्रदक्षिणाः॥
संताड्या न तु पादेन गवां मध्ये न च व्रजेत्।
मङ्गलायतनं देव्यस्तस्मात् पूज्याः सदैव हि॥
प्रचोदनं देवकृतं गवां कर्मसु वर्तताम्।
पूर्वमेवाक्षरं चान्यदभिधेयं ततः परम्॥
प्रचारे वा निवाते वा बुधो नोद्वेजयेत गाः।
तृषिता ह्यभिवीक्षन्त्यो नरं हन्युः सबान्धवम्॥
पितृसद्मानि सततं देवतायतनानि च।
पूयन्ते शकृता यासां पूतं किमधिकं ततः॥
घासमुष्टिं परगवे दद्यात् संवत्सरं तु यः।
अकृत्वा स्वयमाहारं व्रतं तत् सार्वकामिकम्॥

(अनुशासनपर्व, दानधर्मपर्व, अ० ६९)

[भीष्मजीने कहा—युधिष्ठिर!] गाय, भूमि और सरस्वती—ये तीनो समान नामवाली हैं—इन तीनो वस्तुओंका दान करना चाहिये। इन तीनोके दानका फल भी समान ही है। ये तीनो वस्तुएँ मनुष्योकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करनेवाली हैं। गौएँ सम्पूर्ण प्राणियोकी माता कहलाती हैं। वे सबको सुख देनेवाली हैं। जो अपने अभ्युदयकी इच्छा रखता हो, उसे गौओको सदा दाहिने करके चलना चाहिये।

[illegible] न [illegible], इनके [illegible] गोबर न निकले। वे [illegible] होती हैं, अतः इनकी सदा ही पूजा करनी चाहिये। देवताओंने भी यज्ञके लिये भूमि जोतने [illegible] था। अतः पहले यज्ञके [illegible] श्रेयस्कर माना गया है। [illegible] लिये बैलोंको जोतना या डंडे आदिसे [illegible] निषिद्ध है। विद्वान् पुरुषको चाहिये कि जब गौएँ [illegible] हों अथवा किसी उपद्रवशून्य [illegible] उन्हें उद्वेगमें न डाले। जब गौएँ प्याससे [illegible] अपने स्वामीकी ओर देखती हैं ([illegible] उन्हें पानी नहीं पिलाता है), तब वे रोषपूर्ण दृष्टिसे बन्धु-बान्धवोंसहित उसका नाश कर देती हैं। जिनके [illegible] देवताओंके मन्दिर और पितरोंके श्राद्धस्थान [illegible] होते हैं, उनसे बढ़कर पावन और क्या हो सकता है? जो एक वर्षतक प्रतिदिन स्वयं भोजनके पहले दूसरेकी गायको एक मुट्ठी घास खिलाता है, उसका वह व्रत समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाला होता है।

भविष्यपुराणमें

क्षीरोदतोयसम्भूता याः पुरामृतमन्थने।
पञ्च गावः शुभाः पार्थ पञ्चलोकस्य मातरः॥
नन्दा सुभद्रा सुरभिः सुशीला बहुला इति।
एता लोकोपकाराय देवानां तर्पणाय च॥
जमदग्निभरद्वाजवसिष्ठासितगौतमाः ।
जगृहुः कामदाः पञ्च गावो दत्ताः सुरैस्ततः॥
गोमयं रोचना मूत्रं क्षीरं दधि घृतं गवाम्।
षडङ्गानि पवित्राणि संशुद्धिकरणानि च॥
गोमयादुत्थितः श्रीमान् बिल्ववृक्षः शिवप्रियः।
तत्रास्ते पद्महस्ता श्रीः श्रीवृक्षस्तेन स स्मृतः।
बीजान्युत्पलपद्मानां पुनर्जातानि गोमयात्॥
गोरोचना च माङ्गल्या पवित्रा सर्वसाधिका।
गोमूत्राद् गुग्गुलुर्जातः सुगन्धिः प्रियदर्शनः।
आहारः सर्वदेवानां शिवस्य च विशेषतः॥
यद्बीजं जगतः किंचित् तज्ज्ञेयं क्षीरसम्भवम्।
दधिजातानि सर्वाणि मङ्गलान्यर्थसिद्धये।
घृतादमृतमुत्पन्नं देवानां तृप्तिकारणम्॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति॥
गोषु यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोषु देवाः प्रतिष्ठिताः।
गोषु वेदाः समुत्कीर्णाः सषडङ्गपदक्रमाः॥

(उत्तरपर्व, अ० ६९)

[भगवान् श्रीकृष्णने युधिष्ठिरसे कहा—पार्थ!] समुद्र-मन्थनके समय क्षीरसागरसे पाँच लोकोंकी मातृस्वरूपा कल्याणकारिणी जो पाँच गौएँ उत्पन्न हुई थीं, उनके नाम थे—नन्दा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला और बहुला। ये सभी गाएँ समस्त लोकोंके कल्याण तथा देवताओंको हविष्यके द्वारा परितृप्त करनेके लिये आविर्भूत हुई थीं। फिर देवताओंने इन्हें महर्षि जमदग्नि, भरद्वाज, वसिष्ठ, असित और गौतम मुनिको समर्पित किया और उन्होंने इन्हें प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण किया। ये सभी गौएँ सम्पूर्ण कामनाओंको प्रदान करनेवाली कामधेनु कही गयी हैं। गौओंसे उत्पन्न दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र और रोचना—ये छः अङ्ग (गोषडङ्ग) अत्यन्त पवित्र हैं और प्राणियोंके सभी पापोंको नष्ट कर उन्हें शुद्ध करनेवाले हैं। श्रीसम्पन्न बिल्व-वृक्ष गौओंके गोबरसे ही उत्पन्न हुआ है। यह भगवान् शिवजीको अत्यन्त प्रिय है। चूँकि उस वृक्षमें पद्महस्ता भगवती लक्ष्मी साक्षात् निवास करती हैं, इसीलिये इसे श्रीवृक्ष भी कहा गया है। बादमें नीलकमल एवं रक्तकमलके बीज भी गोबरसे ही उत्पन्न हुए थे। गौओंके मस्तकसे उत्पन्न परम पवित्र 'गोरोचना' समस्त अभीष्टोंकी सिद्धि करनेवाली तथा परम मङ्गलदायिनी है। अत्यन्त सुगन्धित गुग्गुल नामका पदार्थ गौओंके मूत्रसे ही उत्पन्न हुआ है। यह देखनेसे भी कल्याण करता है। यह गुग्गुल सभी देवताओंका आहार है, विशेषरूपसे भगवान् शंकरका प्रिय आहार है। संसारके सभी मङ्गलप्रद बीज एवं सुन्दर-से-सुन्दर आहार तथा मिष्टान्न आदि सब-के-सब गौके दूधसे ही बनाये जाते हैं। सभी प्रकारकी मङ्गल-कामनाओंको सिद्ध करनेके लिये गायका दही लोकप्रिय है। देवताओंको परम तृप्त करनेवाला अमृत नामक पदार्थ गायके घीसे ही उत्पन्न हुआ है। ब्राह्मण और गौ—ये दो नहीं हैं, अपितु एक ही कुलके दो पहलू या रूप हैं। ब्राह्मणमें तो मन्त्रोंका निवास है और गौमें हविष्य स्थित है; इन दोनोंके संयोगसे ही विष्णुस्वरूप यज्ञ सम्पन्न होता है—(यज्ञो वै विष्णुः)। गौओंसे ही यज्ञकी

प्रवृत्ति होती है और गौओंमें सभी देवताओंका निवास है। छहो अङ्ग—शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष और पद, जटा, शिखा, रेखा आदि क्रमोंके साथ सभी वेद गौओंमे ही सुप्रतिष्ठित है।

पद्मपुराणमें

[ब्रह्माजीने कहा—नारद!] पहले भगवान्‌के मुखसे महान् तेजोमय पुंज प्रकट हुआ। उस तेजसे सर्वप्रथम वेदकी उत्पत्ति हुई। तत्पश्चात् क्रमशः अग्नि, गौ और ब्राह्मण—ये पृथक्-पृथक् उत्पन्न हुए। मैने सम्पूर्ण लोको और भुवनोंकी रक्षाके लिये पूर्वकालमे एक वेदसे चारो वेदोंका विस्तार किया। अग्नि और ब्राह्मण देवताओंके लिये हविष्य ग्रहण करते हैं और हविष्य (घी) गौओंसे उत्पन्न होता है; इसलिये ये चारो ही इस जगत्‌के जन्मदाता हैं। यदि ये चारों महत्तर पदार्थ विश्वमें नहीं होते तो यह सारा चराचर जगत् नष्ट हो जाता। ये ही सदा जगत्‌को धारण किये रहते हैं, जिससे स्वभावतः इसकी स्थिति बनी रहती है। ब्राह्मण, देवता तथा असुरोंको भी गौकी पूजा करनी चाहिये; क्योकि गौ सब कार्योंमे उदार तथा वास्तवमे समस्त गुणोकी खान है। वह साक्षात् सम्पूर्ण देवताओंका स्वरूप है। सब प्राणियोंपर उसकी दया बनी रहती है। प्राचीन कालमे सबके पोषणके लिये मैंने गौकी सृष्टि की थी। गौओकी प्रत्येक वस्तु पावन है और समस्त संसारको पवित्र कर देती है। गौका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी—इन पञ्चगव्योका पान कर लेनेपर शरीरके भीतर पाप नहीं ठहरता। इसलिये धार्मिक पुरुष प्रतिदिन गौका दूध, दही और घी खाया करते हैं। गव्य पदार्थ सम्पूर्ण द्रव्योमे श्रेष्ठ, शुभ और प्रिय हैं। जिसको गायका दूध, दही और घी खानेका सौभाग्य नहीं प्राप्त होता, उसका शरीर मलके समान है। अन्न आदि पॉच रात्रितक, दूध सात रात्रितक, दही बीस रात्रितक और घी एक मासतक शरीरमे अपना प्रभाव रखता है। जो लगातार एक मासतक बिना गव्यका भोजन करता है उस मनुष्यके भोजनमे प्रेतोको भाग मिलता है; इसलिये प्रत्येक युगमे सब कार्योंके लिये एकमात्र गौ ही प्रशस्त मानी गयी है। गौ सदा और सब समय धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चारों पुरुषार्थ प्रदान करनेवाली है।

जो गौकी एक बार प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करता है, वह सब पापोसे मुक्त होकर अक्षय स्वर्गका सुख भोगता है। जैसे देवताओके आचार्य बृहस्पतिजी वन्दनीय हैं, जिस प्रकार भगवान् लक्ष्मीपति सबके पूज्य हैं, उसी प्रकार गौ भी वन्दनीय और पूजनीय है। जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर गौ और उसके घीका स्पर्श करता है, वह सब पापोसे मुक्त हो जाता है।

गौएँ दूध और घी प्रदान करनेवाली हैं। वे घृतकी उत्पत्ति-स्थान और घीकी उत्पत्तिमे कारण हैं। वे घीकी नदियाँ हैं, उनमे घीकी भँवरे उठती हैं। ऐसी गौएँ सदा मेरे घरपर मौजूद रहें। घी मेरे सम्पूर्ण शरीर और मनमे स्थित हो। 'गौएँ सदा मेरे आगे रहे। वे ही मेरे पीछे रहे। मेरे सब अङ्गोको गौओका स्पर्श प्राप्त हो। मैं गौओके बीचमे निवास करूँ।' इस मन्त्रको प्रतिदिन सध्या और प्रातःकालमे शुद्ध भावसे आचमन करके जपना चाहिये। ऐसा करनेसे उसके सब पापोका क्षय हो जाता है तथा वह स्वर्गलोकमें पूजित होता है। जैसे गौ आदरणीय है वैसे ब्राह्मण, जैसे ब्राह्मण हैं वैसे भगवान् श्रीविष्णु। जैसे भगवान् श्रीविष्णु हैं वैसी ही श्रीगङ्गाजी भी हैं। ये सभी धर्मके साक्षात् स्वरूप माने गये हैं। गौएँ मनुष्योंकी बन्धु हैं और मनुष्य गौओके बन्धु है। जिस घरमे गौ नहीं है, वह गृह बन्धुरहित है—

घृतक्षीरप्रदा गावो घृतयोन्यो घृतोद्भवाः।
घृतनद्यो घृतावर्तास्ता मे सन्तु सदा गृहे॥
घृतं मे सर्वगात्रेषु घृतं मे मनसि स्थितम्।
गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च॥
गावश्च सर्वगात्रेषु गवां मध्ये वसाम्यहम्।
इत्याचम्य जपेन्मन्त्रं सायं प्रातरिद शुचिः॥
सर्वपापक्षयस्तस्य स्वर्लोके पूजितो भवेत्।
यथा गौश्च तथा विप्रो यथा विप्रस्तथा हरिः॥
हरिर्यथा तथा गङ्गा एते न ह्यवृषा स्मृताः।
गावो बन्धुर्मनुष्याणां मनुष्या बान्धवा गवाम्॥
गौश्च यस्मिन् गृहे नास्ति तद्बन्धुरहितं गृहम्।

(सृष्टिखण्ड ५७। १५१—१५६)

अग्निपुराणमें

गावः पवित्रा माङ्गल्या गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः॥
शकृन्मूत्रं परं तासामलक्ष्मीनाशनं परम्।
गवां कण्डूयनं वारि शृङ्गस्याघौघमर्दनम्॥

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिश्च रोचना।
षडङ्गं परमं पाने दुःस्वप्नाद्यादिवारणम्॥
रोचना विषरक्षोघ्नी ग्रासदः स्वर्गगो गवाम्।
यद्गृहे दुःखिता गावः स याति नरकं नरः॥
परगोग्रासदः स्वर्गी गोहितो ब्रह्मलोकभाक्।
गोदानात् कीर्तनाद्रक्षां कृत्वा चोद्धरते कुलम्॥
गवां श्वासात् पवित्रा भूः स्पर्शनात् किल्बिषक्षयः।

[भगवान् धन्वन्तरि आचार्य सुश्रुतसे कहते हैं—हे सुश्रुत!] गौएँ पवित्र एवं मङ्गलमयी हैं। गौओंमें सम्पूर्ण लोक प्रतिष्ठित हैं। गौओंका गोबर और मूत्र अलक्ष्मी (दरिद्रता)-के नाशका सर्वोत्तम साधन है। उनके शरीरको खुजलाना तथा उनका शृंगोदक [शृंगोदकसे स्नान करना] समस्त पापोंका मर्दन करनेवाला है। गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत और गोरोचना—यह 'षडङ्ग' पीनेके लिये उत्कृष्ट वस्तु तथा दुःस्वप्न आदिका निवारण करनेवाला है। गोरोचना विष और राक्षसोंका [राक्षसजन्य कष्टोंका] विनाश करती है। गौओंको ग्रास देनेवाला स्वर्गको प्राप्त होता है। जिसके घरमें गौएँ दुःखित होकर निवास करती हैं, वह मनुष्य नरकगामी होता है। दूसरेकी गायको ग्रास देनेवाला स्वर्गी और गोहितमें तत्पर रहनेवाला ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है। गोदान, गो-माहात्म्य-कीर्तन और गोरक्षणसे मानव अपने कुलका उद्धार कर देता है। यह पृथ्वी गौओंके श्वाससे पवित्र होती है। उनके स्पर्शसे पापोंका क्षय होता है।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्॥
एकरात्रोपवासश्च श्वपाकमपि शोधयेत्।
सर्वाशुभविनाशाय पुराचरितमीश्वरैः॥
प्रत्येकं त्र्यहाभ्यस्तं महासान्तपनं स्मृतम्।
सर्वकामप्रदं चैतत् सर्वाशुभविमर्दनम्॥
कृच्छ्रातिकृच्छ्रं पयसा दिवसानेकविंशतिम्।
निर्मलाः सर्वकामाप्त्या स्वर्गगाः स्युर्नरोत्तमाः॥
त्र्यहमुष्णं पिबेन्मूत्रं त्र्यहमुष्णं घृतं पिबेत्।
त्र्यहमुष्णं पयः पीत्वा वायुभक्षः परं त्र्यहम्॥
तप्तकृच्छ्रव्रतं सर्वपापघ्नं ब्रह्मलोकदम्।
शीतैस्तु शीतकृच्छ्रं स्याद् ब्रह्मोक्तं ब्रह्मलोकदम्॥
गोमूत्रेणाचरेत् स्नानं वृत्तिं कुर्याच्च गोरसैः।
गोभिर्व्रजेच्च भुक्तासु भुञ्जीताथ च गोव्रती॥
मासेनैकेन निष्पापो गोलोकी स्वर्गगो भवेत्।
विद्यां च गोमतीं जप्त्वा गोलोकं परमं व्रजेत्॥
गीतैर्नृत्यैरप्सरोभिर्विमाने तत्र मोदते।

एक दिन गोमूत्र, गोमय, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि और कुशोदकका सेवन एवं एक दिनका उपवास चाण्डालको भी शुद्ध कर देता है। पूर्वकालमें देवताओंने भी समस्त पापोंके विनाशके लिये इसका अनुष्ठान किया था। इनमेंसे प्रत्येक वस्तुका क्रमशः तीन-तीन दिन भक्षण करके रहा जाय तो उसे 'महासान्तपन-व्रत' कहते हैं। यह व्रत सम्पूर्ण कामनाओंको सिद्ध करनेवाला और समस्त पापोंका विनाश करनेवाला है। केवल दूध पीकर इक्कीस दिन रहनेसे 'कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत' होता है। इसके अनुष्ठानसे श्रेष्ठ मानव सम्पूर्ण अभीष्ट वस्तुओंको प्राप्तकर पापमुक्त हो स्वर्गलोकमें जाते हैं। तीन दिन गरम गोमूत्र, तीन दिन गरम घृत, तीन दिन गरम दूध और तीन दिन केवल गरम वायु पीकर रहे। यह 'तप्तकृच्छ्र-व्रत' कहलाता है, जो समस्त पापोंका प्रशमन करनेवाला और ब्रह्मलोककी प्राप्ति करानेवाला है। यदि इन वस्तुओंको इसी क्रमसे शीतल करके ग्रहण किया जाय, तो ब्रह्माजीके द्वारा कथित 'शीतकृच्छ्र' होता है, जो ब्रह्मलोकप्रद है। एक मासतक गोव्रती होकर गोमूत्रसे प्रतिदिन स्नान करे, गोरससे जीवन चलाये, गौओंका अनुगमन करे और गौओंके भोजन करनेके बाद भोजन करे। इससे मनुष्य निष्पाप होकर स्वर्गोंमें भी सर्वश्रेष्ठ लोक गोलोकको प्राप्त करता है। 'गोमती-विद्या' के जपसे भी उत्तम गोलोककी प्राप्ति होती है। उस लोकमें मानव विमानमें अप्सराओंके द्वारा नृत्य-गीतसे सेवित होकर प्रमुदित होता है।

गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलगन्धिकाः॥
गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम्।
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्॥
पावनं सर्वभूतानां क्षरन्ति च वहन्ति च।
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि॥
ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमेषु योजिताः।
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्॥
गावः पवित्रं परमं गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः॥

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति॥
देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभिः सकलं जगत्।
धार्यते वै सदा तस्मात् सर्वे पूज्यतमा मताः॥
पिबन्ति यत्र तत् तीर्थं गङ्गाद्या गाव एव हि।

(२९२। १—२२)

गौएँ सदा सुरभिरूपिणी हैं। वे गुग्गुलके समान गन्धसे संयुक्त हैं। गौएँ समस्त प्राणियोंकी प्रतिष्ठा हैं। गौएँ परम मङ्गलमयी हैं। गौएँ परम अन्न और देवताओके लिये उत्तम हविष्य हैं। वे सम्पूर्ण प्राणियोको पवित्र करनेवाले दुग्ध और गोमूत्रका वहन एवं क्षरण करती हैं और मन्त्रपूत हविष्यसे स्वर्गमें स्थित देवताओंको तृप्त करती हैं। ऋषियोके अग्निहोत्रमे गौएँ होमकार्यमे प्रयुक्त होती हैं। गौएँ सम्पूर्ण मनुष्योंकी उत्तम शरण हैं। गौएँ परम पवित्र, महामङ्गलमयी, स्वर्गकी सोपानभूत, धन्य और सनातन (नित्य) हैं। श्रीमती सुरभिपुत्री गौओंको नमस्कार है। ब्रह्मसुताओको नमस्कार है। पवित्र गौओको बारंबार नमस्कार है। ब्राह्मण और गौएँ एक ही कुलकी दो शाखाएँ हैं। एकके आश्रयमें मन्त्रकी स्थिति है और दूसरीमें हविष्य प्रतिष्ठित है। देवता, ब्राह्मण, गौ, साधु और साध्वी स्त्रियोके बलपर यह सारा ससार टिका हुआ है, इसीसे वे परम पूजनीय हैं। गौएँ जिस स्थानपर जल पीती हैं, वह स्थान तीर्थ है। गङ्गा आदि पवित्र नदियाँ गोस्वरूपा ही हैं।

बृहत्पराशरस्मृतिमें

अनादेयतृणान्यत्त्वा स्त्रवन्त्युदिनं पयः।
तुष्टिदा देवतादीनां पूज्या गावः कथ न ताः॥
स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं
संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम्।
ता एव दत्तास्त्रिदिवं नयन्ति
गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्॥
यस्याः शिरसि ब्रह्मास्ते स्कन्धदेशे शिवः स्थितः।
पृष्ठे नारायणस्तस्थौ श्रुतयश्चरणेषु च॥
या अन्या देवताः काश्चित् तस्या लोमसु ताः स्थिताः।
सर्वदेवमया गावस्तुष्येत् तद्भक्तितो हरि·॥
हरन्ति स्पर्शनात् पापं पयसा पोषयन्ति याः।
प्रापयन्ति दिवं दत्ताः पूज्या गाव कथं न ता.॥
यत्खुराहतभूमेर्य उत्पद्यन्ते रजःकणा·।
प्रलीनं पातकं तैस्तु पूज्या गाव· कथं न ताः॥
शकृन्मूत्रं हि यस्यास्तु पीतं दहति पातकम्।
किमपूज्यं हि तस्या गोरिति पाराशरोऽब्रवीत्॥

मनुष्योके व्यवहारके अयोग्य—सामान्य तृण-पत्ती-घास आदिको चरकर जो गौ निरन्तर प्रतिदिन दूधका प्रस्रवण करती है तथा उस दूधसे घी-दही आदिका निर्माण होकर देवता भी [आहुतियोंसे] सतुष्ट होते है, भला ऐसी वे गाये पूज्य कैसे नहीं हैं? अर्थात् वे सब प्रकारसे पूज्य हैं। स्पर्श कर लेने मात्रसे ही गौएँ मनुष्यके समस्त पापोको नष्ट कर देती हैं और आदरपूर्वक सेवन किये जानेपर अपार सम्पत्ति प्रदान करती है, वे ही गाये दान दिये जानेपर सीधे स्वर्ग ले जाती हैं, ऐसी गौओके समान और कोई भी धन नहीं है। जिसके सिरपर ब्रह्माजीका निवास है, स्कन्धदेशपर भगवान् शिव विराजमान रहते हैं, पृष्ठभागपर भगवान् नारायण स्थित रहते हैं और चारो वेद उस गौके चारो चरणोंमें निवास करते हैं, शेष अन्य सभी देवगण गौओके रोम-समूहमे स्थित रहते हैं, इसलिये गौएँ सर्वदेवमयी हैं, ऐसी उन गौओंकी सेवा-भक्तिसे भगवान् श्रीहरि सर्वथा प्रसन्न हो जाते हैं। जो गाये स्पर्श करनेसे सव पापोंका हरण कर लेती हैं और अपने दूधसे सवका पालन-पोषण करती हैं, दान करनेपर सीधे स्वर्गकी प्राप्ति करा देती हैं, भला ऐसी वे गौएँ कैसे पूजनीया नहीं हैं? जिन गायोंके खुरोंसे आहत होनेके कारण पृथ्वीसे जो धूलिकण उत्पन्न होते हैं उनके छूते ही सभी पाप ध्वस्त हो जाते हैं, ऐसी (महिमामयी) वे गाये कैसे पूजनीया नहीं हैं? अर्थात् सर्वथा पूजनीया ही है। जिसके गोबर या मूत्र [पञ्चगव्य] का पान करनेसे सारे पाप भस्म हो जाते हैं. उन गायोंसे प्राप्त कौन-सा द्रव्य है जो अपूज्य है अर्थात् सब कुछ पूज्य ही है—ऐसा महर्षि पराशरजीका कहना है।

एकत्र पृथिवी सर्वा सशैलवनकानना।
तस्या गौर्ज्यायसी साक्षादेकत्रोभयतोमुखी॥

यज्ञैर्विविधैश्चैवं वर्णैः पाल्याः सुपूजिताः।
पालयन् पूज्यमानाः स प्रेत्येह च मोदते॥

[illegible] लोकमें, यज्ञ तथा [illegible] सम्पूर्ण [illegible] [इसकी प्रदक्षिणासे सारे विश्वकी प्रदक्षिणा हो जाती है।] इस प्रकार यथोक्त-विधिसे ब्राह्मण आदि सभी वर्णोंके द्वारा पालित-पोषित एवं पूजित होनेपर [गायोंकी कृपासे] वह इस लोक तथा परलोकमें सुखपूर्वक निवास करता है।

गावो देया सदा रक्ष्याः पाल्याः पोष्याश्च सर्वदा।
ताडयन्ति च ये पापा ये चाक्रोशन्ति ता नराः॥
नरकाग्नौ प्रपच्यन्ते गोनिःश्वासप्रपीडिताः।
सस्यनाशेन शृङ्गेण ता दण्डेन निवर्तयेत्॥
गच्छ गच्छेति ताः ब्रूयात् मा भैरिति वारयेत्।
समेत्य गां नमस्कृत्य कुर्यात् तां च प्रदक्षिणम्॥
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

गौओंका सदा दान करना चाहिये, सदा उनकी रक्षा करनी चाहिये और सदा उनका पालन-पोषण करना चाहिये। जो मनुष्य उन्हें डाँटते तथा मारते-पीटते हैं वे [illegible] दुःखभरे निःश्वाससे पीडित होकर घोर नरकाग्निमें पकाये जाते हैं। [यदि कोई मारनेवाली गाय घरमें आ गयी हो तो] उसे [illegible] डंडेसे हटा दे और उससे यह [illegible], जाओ चली जाओ। गायको [illegible] उन्हें प्रणाम करे और उनकी प्रदक्षिणा करे, इस प्रकार करनेसे उसने मानो समस्त सप्तद्वीपवती पृथ्वीकी ही परिक्रमा कर ली।

तृणोदकादिसंयुक्तं यः प्रदद्यात् गवाह्निकम्॥
सोऽश्वमेधसमं पुण्यं लभते नात्र संशयः।
गवां कण्डूयनं स्नानं गवां दानसमं भवेत्॥
[illegible]: गोशतदानस्य भवतो गां प्रपाति यः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि आसमुद्रं सरांसि च॥
गवां शृङ्गोदकस्नानकला नार्हन्ति षोडशीम्।
पातकानि कुतस्तेषां येषां गृहमलंकृतम्॥
सततं बालवत्साभिर्गोभिः श्रीभिरिव स्वयम्।
ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम्॥
तिष्ठन्त्येकत्र मन्त्रास्तु हविरेकत्र तिष्ठति।
गोभिर्यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभिर्देवाः प्रतिष्ठिताः॥
गोभिर्वेदाः समुद्‌गीर्णाः षडङ्गाः सपदक्रमाः।
सौरभेयास्तु यस्याग्रे पृष्ठतो यस्य ताः स्थिताः॥
वसन्ति हृदये नित्यं तासां मध्ये वसन्ति ये।
ते पुण्यपुरुषाः क्षोण्यां नाकेऽपि दुर्लभाश्च ते॥
ये गोभक्तिकरा नित्यं विद्यन्ते ये च गोप्रदाः।

(अध्याय ५)

जो गौओंको भोजनके लिये प्रतिदिन जल और तृणसहित कुछ भोजन प्रदान करता है, उसे अश्वमेधके समान फलकी प्राप्ति होती है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। गौओंको खुजलाना तथा उन्हें स्नान कराना भी गोदानके समान फलवाला होता है। जो भयसे दुःखी (भयग्रस्त) एक गायकी रक्षा करता है, उसे सौ गोदानका फल प्राप्त होता है। पृथिवीमें समुद्रसे लेकर जितने भी बड़े तीर्थ—सरिता-सरोवर आदि हैं, वे सब मिलकर भी गौके सींगके जलसे स्नान करनेके षोडशांशके तुल्य भी नहीं होते। जिनके घर साक्षात् स्वयं लक्ष्मीस्वरूपा सवत्सा गौओंसे अलंकृत हैं उनके पाप-ताप भला कैसे टिक सकते हैं? ब्राह्मण और गौएँ वस्तुतः एक ही कुलकी वस्तुएँ हैं, जिन्हें दो भागोंमें विभक्त कर दिया गया है, एक ओर तो ब्राह्मणमें मन्त्र स्थित हैं और दूसरी ओर गौमें हविष्य स्थित है, गौओंसे ही यज्ञकी पूर्ति होती है और गौओंमें ही देवताओंकी प्रतिष्ठा होती है तथा गौओंसे ही पद, क्रम एवं व्याकरण आदि छः अङ्गोसहित सभी वेद अभिव्यक्त हुए। गौएँ जिनके आगे, पीछे, हृदयके सामने नित्य निवास करती हैं और गौओंके बीचमें ही जो निवास करते हैं तथा जो गौओंकी नित्य भक्ति करते हैं, उपासना करते तथा प्रतिदिन गौओंका दान करते हैं ऐसे पुण्यात्मा पवित्र पुरुष पृथिवीपर भी दुर्लभ हैं और स्वर्गमें भी दुर्लभ हैं।

गोसेवाकी महिमा

विष्णुधर्मोत्तरपुराणमें

(क)

गवां कण्डूयनान्मर्त्यः सर्वं पापं व्यपोहति।
तासां ग्रासप्रदानेन महत्पुण्यमवाप्नुयात्॥
तासां च प्रचरं कृत्वा तथैव सलिलाशयम्।
स्वर्गलोकमुपाश्नन्ति बहून्यब्दगणानि तु॥
तासां प्रचारभूमिं तु कृत्वा प्राप्नोति मानवः।
अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्॥
तासामावसथं कृत्वा नगराधिपतिर्भवेत्।
तथा लवणदानेन सौभाग्यं महदश्नुते॥

[भगवान् हंस कहते हैं—हे ब्राह्मणो!] गौओंके शरीरको खुजलानेसे या उनके शरीरके कीटाणुओंको दूर करनेसे मनुष्य अपने समस्त पापोंको धो डालता है। गौओंको गोग्रास दान करनेसे महान् पुण्यकी प्राप्ति होती है। गौओंको चराकर उन्हे जलाशयतक घुमाकर जल पिलानेसे मनुष्य अनन्त वर्षोंतक स्वर्गमें निवास करता है। गौओके प्रचारणके लिये गोचरभूमिकी व्यवस्था कर मनुष्य निःसंदेह अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त करता है। गौओके लिये गोशालाका निर्माणकर मनुष्य पूरे नगरका स्वामी बन जाता है और उन्हें नमक खिलानेसे मनुष्यको महान् सौभाग्यकी प्राप्ति होती है।

आतुरां पङ्कलग्नां वा चौरव्याघ्रभयार्दिताम्।
मोचयित्वा द्विजश्रेष्ठास्त्वश्वमेधफलं लभेत्॥
तासामौषधदानेन विरोगस्त्वभिजायते।
विप्रमोच्य भयेभ्यश्च न भयं विद्यते क्वचित्॥
क्रीत्वा चण्डालहस्ताच्च गोमेधस्य फलं लभेत्।
गोपकस्त्वस्य चान्यस्य क्रीत्वा हस्तात् तथैव च॥
कृत्वा शीतातपत्राणं तासां स्वर्गमवाप्नुयात्।

हे ब्राह्मणो! विपत्तिमें या कीचड़में फँसी हुई या चोर तथा बाघ आदिके भयसे व्याकुल गौको क्लेशसे मुक्त कर मनुष्य अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त करता है। रुग्णावस्थामें गौओको ओषधि प्रदान करनेसे स्वयं मनुष्य सभी रोगोसे मुक्त हो जाता है। गौओंको भयसे मुक्त कर देनेपर मनुष्य स्वयं भी सभी भयोंसे मुक्त हो जाता है। चण्डालके हाथसे गौको खरीद लेनेपर गोमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है तथा किसी अन्यके हाथसे गायको खरीदकर उसका पालन करनेसे गोपालकको गोमेधयज्ञका ही फल प्राप्त होता है। गौओकी शीत तथा धूपसे रक्षा करनेपर स्वर्गकी प्राप्ति होती है।

उत्थितासूत्थितस्तिष्ठेद्विष्ठितासु च विष्ठितः॥
भुक्तवत्सु तु चाश्नीयाज्जले पीते पिबेत्तु च।
गोमूत्रेणाचरेत् स्नानं गोपुरीषात् तथा यवैः॥
शरीरयात्रां कुर्वीत गोरसैरथ वा द्विजा.।
एतद्धि गोव्रतं मासात् सर्वकल्मषनाशनम्॥
एकां गां धारयेन्मासं दद्यात् तस्यास्तथा यवान्।
गोमयात् तान् समश्नीयान्मासमेकमतः शुचि.॥
मासान्ते तां तथा धेनुं दद्याद्विप्राय भक्तिमान्।
व्रतमेतत् समुद्दिष्टं सर्वकल्मषनाशनम्॥
राजसूयाश्वमेधाभ्या व्रतमेतत् तथाधिकम्।
व्रतेनानेन चीर्णेन कामानिष्टानवाप्नुयात्॥
विमानेनार्कवर्णेन ब्रह्मलोकं च गच्छति।
विनापि गोप्रदानेन व्रतमेतन्महत् फलम्॥
त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा शक्तिं ज्ञात्वा तथा स्वकाम्।
गवां निर्हारनिर्मुक्तैर्वृत्तिं कृत्वा तथा यवैः॥
पापमोक्षमवाप्नोति पुण्य च महदश्नुते।

गौओंके उठनेपर उठ जाय और बैठनेपर बैठ जाय। गौओके भोजन कर लेनेपर भोजन करे और जल पी लेनेपर स्वयं भी जल पीये। गोमूत्रसे स्नान करे और हे ब्राह्मणो! अपनी जीवनयात्राका गोदुग्धपर अथवा गोमयसे नि.मृत जौ-द्वारा निर्वाह करे। इसीका नाम 'गोव्रत' है। एक माहतक ऐसा करनेवाले गोव्रतीके सम्पूर्ण पाप सर्वथा नष्ट हो जाते हैं। किसी एक गौका पालन करते हुए उसे जो खिलाता रहे और उसके गोबरसे जौ निकालकर उसे धोकर उसका सेवन करे तो इस प्रकार एक महीनेतक करनेसे वह अत्यन्त पवित्र हो जाता है। एक महीना बीत जानेपर उस गायको भक्तिपूर्वक किसी ब्राह्मणको दान कर दे यह भी [illegible] प्रकारका 'गोव्रत' कहा गया है, जो सभी पापोंको नष्ट कर

[illegible] है। [illegible] अर्थात् [illegible] हैं। [illegible] अभीष्ट [illegible] समान [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] और [illegible] पानेसे [illegible] है और [illegible] पुण्यकी [illegible] होती है।

[illegible] गोमूत्र[illegible] सर्वकल्मषनाशनम्॥
[illegible] [illegible]देशान्नात्र कार्या विचारणा।
[illegible] च पवित्रं च तदलक्ष्मीविनाशनम्॥
[illegible] हि [illegible] भूमि· शुद्धिमवाप्नुयात्।
[illegible] यत्र वेश्म यत्र तिष्ठन्ति धेनव.॥
[illegible] नि[illegible] पर नीराजनं भवेत्।
[illegible] [illegible] पुण्य दु.स्वप्नाघविनाशनम्॥
[illegible] तु तासां गङ्गा प्रतिष्ठिता।
[illegible] गाव. सर्वतीर्थमयास्तथा॥
[illegible] [illegible]मानि पुण्यानि पवित्राणि तथा द्विजा·।

हे [illegible]! गायके [illegible] उत्पन्न धूलि समस्त [illegible] नष्ट कर देनेवाली है। वह धूलि चाहे तीर्थकी हो [illegible] आदि निकृष्ट देशोंकी ही क्यों न हो। [illegible] करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। [illegible] सब प्रकारकी मङ्गलकारिणी, पवित्र [illegible] अलक्ष्मीको नष्ट करनेवाली [illegible] पृथिवी भी शुद्ध हो [illegible] हैं वह स्थान, वह घर सर्वथा [illegible] कोई दोष नहीं रहता। उनके [illegible] नीराजनके समान है। [illegible] पुण्यदायक है और उससे समस्त [illegible] भी नष्ट हो जाते हैं। गौओंके गरदन [illegible] भगवती गङ्गाका निवास है। [illegible] और [illegible] हैं। उनके [illegible] भी बड़े [illegible] और [illegible]।

[illegible] शुचि स्थानं प्रकीर्तितम्॥
[illegible] गोमयेनोपलेपयेत्।
गोमये तु सदा लक्ष्मीः स्वयमेव व्यवस्थिता॥
गोमूत्रे च तथा गङ्गा दधिक्षीरघृतेषु च।
सदा व्यवस्थितं सोमं रोचनायां सरस्वती॥
विष्णुर्यज्ञ· समाख्यात· स च गोषु प्रतिष्ठितः।
तस्माद् गावो विनिर्दिष्टा विष्णुरेव पुरातनैः॥
पूज्यास्तास्तु नमस्कार्याः कीर्तनीयाश्च तास्तथा।
तासामाहारदानं च कार्यं शुश्रूषणं तथा॥
शुश्रूषणेनेह गवां द्विजेन्द्राः
प्राप्नोति लोकानमलान् विशोकान्।
तस्मात् प्रयत्नेन गवा हि कार्यं
शुश्रूषणं धर्मपरैर्मनुष्यैः॥
(तृतीयखण्ड, अ० २९१)

गायके गोमयसे उपलिप्त स्थान सब प्रकारसे पवित्र स्थान कहा गया है। इसलिये यज्ञशाला और भोजन बनानेके स्थानको गोमयसे लीपना चाहिये। गोबरमें तो साक्षात् लक्ष्मी अपने स्वरूपमें विराजमान रहती हैं। गोमूत्रमें भगवती गङ्गा तथा गोदधि, गोदुग्ध और गोघृतमें सोम तथा गोरोचनामें भगवती सरस्वती सर्वदा प्रतिष्ठित रहती हैं। यज्ञको भगवान् विष्णुका स्वरूप माना गया है और वह सर्वाङ्गतया गौओंमें ही प्रतिष्ठित है, इसलिये गौओंको भी प्राचीन आचार्योंने विष्णुका स्वरूप ही माना है। वे गौएँ सभी प्रकार पूजनीय, कीर्तनीय और नमस्करणीय हैं। उन्हे सदा भोजन देना चाहिये और उनकी सेवा भी करनी चाहिये। हे ब्राह्मणो! गायोंकी सेवासे मनुष्य निर्मल और दुःख तथा शोकरहित श्रेष्ठ लोकोंको प्राप्त करता है। इसलिये धर्मपरायण मनुष्योंको बहुत प्रयत्नपूर्वक गायोंकी सेवा अवश्य करनी चाहिये।

[ख]

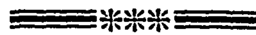
[राजनीति एवं धर्मशास्त्रके सम्यक् ज्ञाता पुष्करजी बोले—] हे भृगुनन्दन परशुरामजी! राजाको गोपालनका कार्य अवश्य करना चाहिये। क्योंकि गायोंकी संगति परम पवित्र है और सम्पूर्ण लोक गायोंमें ही प्रतिष्ठित हैं। गायें ही यज्ञका विस्तार करती हैं और गायें ही विश्वकी माता हैं। गौओंका गोबर और मूत्र सम्पूर्ण अलक्ष्मीका नाश करनेवाला कहा गया है। इसलिये उन दोनोंका प्रयत्नपूर्वक

आश्रय लेना चाहिये, सेवन करना चाहिये, क्योंकि भगवती लक्ष्मी उनमें निवास करती हैं। गोबर और गोमूत्रके रहस्यके जाननेवालेको किसी प्रकार उद्विग्न, खेद-खिन्न होनेकी आवश्यकता नहीं है। इसलिये गायो, गोकुल, गोमय आदिपर थूक-खखार नहीं छोड़ना चाहिये। गायोकी धूलि सब प्रकारसे पवित्रकारिणी और समस्त विघ्नो तथा अलक्ष्मीको दूर करनेवाली है। गायोंके शरीरको खुजलानेसे मनुष्यके सभी पाप-ताप दूर हो जाते हैं। गौओंका शृंगोदक गङ्गाजलके तुल्य है। गोमूत्र, गोमय, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत तथा गोरोचना—यह 'गोषडङ्ग'के नामसे कहा जाता है, जो सब प्रकारसे कल्याण—मङ्गलका विस्तार करनेवाला है और पृथक्-पृथक् भी यह परम पवित्र और शुद्धिकारक है। हे भार्गवजी! गोमूत्र, गोमय, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत और कुशोदक—यह पञ्चगव्य स्नानीय और पेयद्रव्योमे परम पवित्र कहा गया है। ये सब मङ्गलमय पदार्थ भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस आदिसे रक्षा करनेवाले, परममङ्गल तथा कलिके दुःख-दोषोंका नाश करनेवाले हैं। गोरोचना भी इसी प्रकार राक्षस, सर्पविष तथा सभी रोगोको नष्ट करनेवाली एवं परम धन्य है। जो प्रातःकाल उठकर अपना मुख गोघृतपात्रमें रखे घीमें देखता है उसकी दुःख-दरिद्रता सर्वदाके लिये समाप्त हो जाती है और फिर पापका बोझ नहीं ठहरता।

'गायोंको भोजनका ग्रास देनेसे महान् पुण्यकी प्राप्ति होती है। अपने घरमे जितनी गौओको रख सके रखे, पर अत्यन्त सुखपूर्वक ही रखे, उनमेंसे किसीको भी भूखी-प्यासी न रखे। हे परशुरामजी! जो व्यक्ति अपने घरमे गौओंको दुःखी रखता है उसे नरककी ही प्राप्ति होती है, इसमें कोई संदेह नहीं। किसी दूसरेकी गायको भोजन देकर मनुष्य महान् पुण्यका भागी होता है। पूरे जाड़े भर किसी दूसरेकी गायको ग्रास प्रदान करनेवाला व्यक्ति ६०० वर्षोतक श्रेष्ठ स्वर्गका उपभोग करता है और भोजनके समय पहले ही यदि ६ मासतक गोग्रास निकालकर उन्हे नित्य प्रदान करता है तो वह स्वर्ग-सुखको प्राप्त करता है। जो एक वर्षतक सायंकाल तथा प्रातःकाल देवताओके निमित्त बने सात्त्विक भोजनके प्रथम भागको नित्य निरालस्य होकर गायोको प्रदान करता है और द्वितीय अवशिष्ट भागका जो स्वयं भोजन करता है वह हे परशुरामजी! एक मन्वन्तरपर्यन्त गौओंके लोकमे निवास करता है। जो गौओके चलनेके मार्गमे, चरागाहमे जलकी व्यवस्था करता है, वह वरुणलोकको प्राप्तकर वहाँ दस हजार वर्षोतक विहार करता है और जहाँ-जहाँ उसका आगे जन्म होता है वह वहाँ सभी आनन्दोसे परितृप्त रहता है। गोचरभूमिको हल आदिसे जोतनेपर चौदह इन्द्रोपर्यन्त भीषण नरककी प्राप्ति होती है। हे परशुरामजी! जो गौओके पानी पीते समय विघ्न डालता है, उसे यही मानना चाहिये कि उसने घोर ब्रह्महत्या की। सिंह, व्याघ्र आदिके भयसे डरी हुई गायकी जो रक्षा करता है और कीचड़में फँसी हुई गायका जो उद्धार करता है, वह कल्पपर्यन्त स्वर्गमे स्वर्गीय भोगोका भोग करता है। गायोको घास प्रदान करनेसे वह व्यक्ति अगले जन्ममें रूपवान् हो जाता है और उसे लावण्य तथा महान् सौभाग्यकी प्राप्ति होती है। गायोको औषध प्रदान कर मनुष्य सर्वथा नीरोग हो जाता है। यदि मनुष्य गायकी विपत्तिमें ओषधि, नमक, जल प्रदान करता हे, भोजन प्रदान करता है, तथापि वह गाय यदि मर भी जाय तो सहायक व्यक्तिको पाप नहीं लगता और न उसे यमयातना भोगनी पडती है[१]।'

१-गवा ग्रासप्रदानेन पुण्य सुमहदश्नुते। यावत्य· शक्नुयाद् गाव. सुख धारयितु गृहे॥
धारयेत् तावतीर्नित्यं क्षुधितास्तु न धारयेत्। दु.खिता धेनवो यस्य वसन्ति द्विजमन्दिरे॥
नरकं समवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा। दत्त्वा परगवे ग्रास पुण्यं सुमहदश्नुते॥
शैशिरं सकलं काल ग्रास परगवे तथा। दत्त्वा स्वर्गमवाप्नोति सवत्सरशतानि षट्॥
अग्रभक्तं नरो दत्त्वा नित्यमेव तथा गवाम्। मासषट्केन लभते नाकलोकं समायुतम्॥
साय प्रातर्मनुष्याणामशन देवनिर्मितम्। तत्रैवमशनं दत्त्वा गवा नित्यमतन्द्रितः॥
द्वितीय यः समश्नाति तेन सवत्सरान्नर·। गवा लोकमवाप्नोति यावन्मन्वन्तर द्विज॥
गवा प्रचारे पानीयं दत्त्वा पुरुषसत्तम.। वारुण लोकमासाद्य क्रीडत्यब्दगणायुतम्।

हे परशुरामजी! गायोंको बेचना भी कल्याणकारी नहीं है। गायोंका नाम लेनेसे भी मनुष्य पापोंसे शुद्ध हो जाता है। गौओका स्पर्श सभी पापोंका नाश करनेवाला तथा सभी प्रकारका सौभाग्य एवं मङ्गलका विधायक है। गौओंका दान करनेसे अनेक कुलोंका उद्धार हो जाता है। मातृकुल, पितृकुल और भार्याकुलमें जहाँ एक भी गौ निवास करती है वहाँ रजस्वला और प्रसूतिका आदिकी अपवित्रता भी नहीं आती और पृथिवीमें अस्थि, लोहा होनेका, धरतीके आकार-प्रकारकी विषमताका दोष भी नष्ट हो जाता है। गौओके श्वास-प्रश्वाससे घरमे महान् शान्ति होती है। सभी शास्त्रोंमें गौओके श्वास-प्रश्वासको महानीराजन कहा गया है। हे परशुराम! गौओको छू देनेमात्रसे मनुष्योंके सारे पाप क्षीण हो जाते हैं। जो एक महीनेतक गौओंको जौ आदिके आहारसे प्रतिदिन संतुष्ट करता है वह जो कुछ भी अभिलषित पदार्थ हो उसे प्राप्त करता है। और गो नामकी विद्याको सायं-प्रातःकाल पढ़ते हुए मनुष्य गोलोक प्राप्त करता है इसमें कोई संदेह नहीं। सभी लोकोंके उ गौओंका लोक गोलोक प्रतिष्ठित है। जहाँ गौएँ स आकाशचारियोंके ऊपर निवास करती हैं वहाँ गौएँ वि विमानोके ऊपर अप्सराओंसे घिरी रहती हैं। जिन विमा किंकिणीका जाल लगा रहता है और वीणा-मुरज अ वाद्य बजते रहते हैं वहाँ गोलोकमें सभी कामनाओंकी पूर्ति नदियोंका जल बहता है और दूध, खीर, घी कीचड़के रू बहता है। जहाँकी पुष्करिणियोंमें वैदूर्य मणिके कमल खि रहते हैं, जहाँ जल अत्यन्त निर्मल होता है और सुवर्णक निर्मित बालुकाएँ होती हैं, हे भृगूत्तम! वहाँ मनमें संक करते ही सिद्धि उपस्थित हो जाती है। गायोंकी भक्ति कर मनुष्य उन्हीं लोकोमें जाता है।



गोभक्तके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है

गोषु भक्तश्च लभते यद् यदिच्छति मानवः। स्त्रियोऽपि भक्ता या गोषु ताश्च काममवाप्नुयुः॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवाप्नुयात्। धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात्॥
विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम्। न किंचिद् दुर्लभं चैव गवां भक्तस्य भारत॥

(महा०, अनु० ८३। ५०—५

गोभक्त मनुष्य जिस-जिस वस्तुकी इच्छा करता है, वह सब उसे प्राप्त होती है। स्त्रियोंमें भी जो गौओंकी भ हैं, वे मनोवाञ्छित कामनाएँ प्राप्त कर लेती हैं। पुत्रार्थी मनुष्य पुत्र पाता है और कन्यार्थी कन्या। धन चाहनेवालेको ध और धर्म चाहनेवालेको धर्म प्राप्त होता है। विद्यार्थी विद्या पाता है और सुखार्थी सुख। भारत! गोभक्तके लिये यहाँ कु भी दुर्लभ नहीं है।



परां तृप्तिमवाप्नोति यत्र यत्राभिजायते॥
गवां प्रचारभूमिं तु वाहयित्वा हलादिना। नरकं महदाप्नोति यावदिन्द्राश्चतुर्दश॥
गवां पानप्रवृत्तानां यस्तु विघ्नं समाचरेत्। ब्रह्महत्या कृता तेन घोरा भवति भार्गव।
सिंहव्याघ्रभयत्रस्तां पङ्कमग्नां जले गताम्॥
गामुद्धृत्य नरः स्वर्गे कल्पभोगानुपाश्नुते। गवां यवसदानेन रूपवानभिजायते॥
सौभाग्यं महदाप्नोति लावण्यं च द्विजोत्तम। औषधं च तथा दत्त्वा विरोगस्त्वभिजायते॥
औषधं लवणं तोयमाहारं च प्रयच्छतः। विपत्तौ पातकं नास्य भवत्युद्बन्धनादिकम्॥
(विष्णुधर्मो०, खण्ड २, अ० ४२)

ब्रह्मा-विष्णु-महेशद्वारा कामधेनुकी स्तुति

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्। त्वं तीर्थं सर्वतीर्थाना नमस्तेऽस्तु सदानघे॥
शशिसूर्यारुणा यस्या ललाटे वृषभध्वजः। सरस्वती च हुंकारे सर्वे नागाश्च कम्बले॥
क्षुरपृष्ठे च गन्धर्वा वेदाश्चत्वार एव च। मुखाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावराणि चराणि च॥

(स्कन्द०, ब्रह्म०, धर्मारण्य० १०। १८—२०)

'हे निष्पापे! तुम सब देवताओकी माता, यज्ञकी कारणरूपा और सम्पूर्ण तीर्थोकी तीर्थरूपा हो। हम तुम्हे सदा नमस्कार करते हैं। तुम्हारे ललाटमे चन्द्रमा, सूर्य, अरुण और वृषभध्वज शंकर हैं, हुंकारमे सरस्वती, गलकम्बलमे नागगण, खुरोंमे गन्धर्व और चारों वेद तथा मुखाग्रमे चर एव अचर सम्पूर्ण तीर्थ विराजमान हैं।'

***

भगवान् शंकरकी विलक्षण गोनिष्ठा

साक्षात् शंकर ही नीलवृष हैं

एक बार भगवान् शंकरसे ब्रह्मतेजसम्पन्न ऋषियोका कुछ अपराध हो गया। ऋषियोने घोर शाप दे दिया, जिसके भयसे त्रस्त होकर शंकरजी गोलोक पहुँचे और पवित्र ब्राह्मणोके ही दूसरे रूप सुरभि माताका स्तवन करने लगे। उन्होने कहा—

सृष्टिस्थितिविनाशानां कर्त्र्यै मात्रे नमो नमः॥
या त्वं रसमयैर्भावैराप्याययसि भूतलम्।
देवानां च तथा संघान् पितृणामपि वै गणान्॥
सर्वैर्ज्ञात्वा रसाभिज्ञैर्मधुरास्वाददायिनी।
त्वया विश्वमिदं सर्वं बलस्नेहसमन्वितम्॥
त्वं माता सर्वरुद्राणां वसूनां दुहिता तथा।
आदित्यानां स्वसा चैव तुष्टा वाञ्छितसिद्धिदा॥
त्वं धृतिस्त्वं तथा तुष्टिस्त्वं स्वाहा त्वं स्वधा तथा।
ऋद्धिः सिद्धिस्तथा लक्ष्मीर्धृतिः कीर्तिस्तथा मतिः॥
कान्तिर्लज्जा महामाया श्रद्धा सर्वार्थसाधिनी।

'सृष्टि, स्थिति और विनाश करनेवाली हे माँ! तुम्हे बार-बार नमस्कार है। तुम रसमय भावोंसे समस्त पृथिवीतल, देवता और पितरोको तृप्त करती हो। सब प्रकारके रसतत्त्वोंके मर्मज्ञोने बहुत विचार करनेपर यही निर्णय किया कि मधुर रसका आस्वादन प्रदान करनेवाली एकमात्र तुम्हीं हो। सम्पूर्ण चराचर विश्वको तुम्हींने बल और स्नेहका दान

मणिमय आँगनमें मनोहर मुखकमल प्रतिबिम्बित हो जाता और विस्मयित नेत्रोंसे उसकी ओर देखने लगते। कभी उसे पकड़नेके उद्देश्यसे उसके सिरपर हाथ रख देते। हाथका व्यवधान आनेमें प्रतिबिम्ब लुप्त हो जाता, श्यामसुन्दर आश्चर्यभरी मुद्रामें जननीकी ओर देखने लगते।

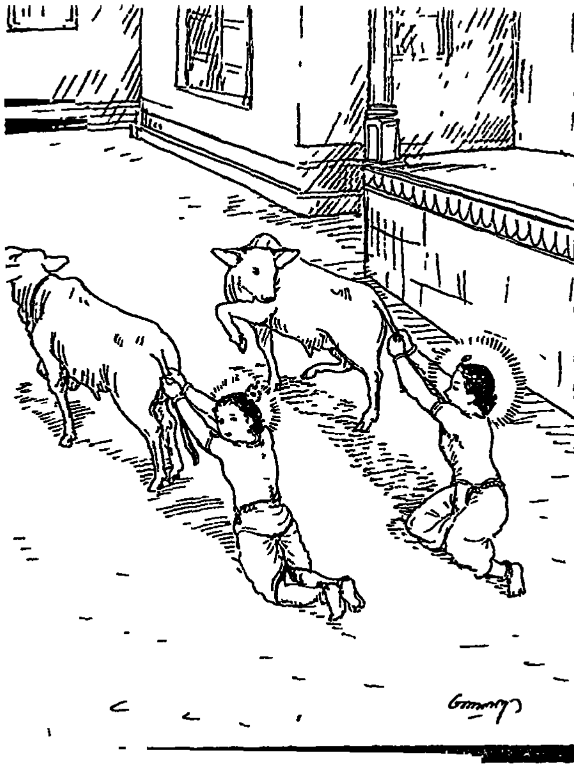
इस प्रकार बाललीलाधारी गोलोकविहारीकी अभिनव रिङ्गणलीला प्रारम्भ हुई तथा प्रतिक्षण नयी-नयी होकर बढ़ चली। यह कोई प्राकृत शिशुका स्वभावजात घुटुरुन तो था नहीं कि जिसकी निश्चित सीमा हो। यह तो स्वयं भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन श्याममुन्दर श्रीकृष्णके चिदानन्दमयस्वरूपभूत रससागरका एक तरङ्ग-विशेष था। चन्द्रकलाकी भाँति जिस अनुपातसे वात्सल्य-स्नेहवती माता यशोदा एवं अन्य व्रजसुन्दरियोंकी भावनाएँ बढ़ रही थीं, उसी अनुपातसे उस अचिन्त्य-अनन्त चिन्मय-रस-सार-सुधा-समुद्रमे सरल वक्र और तीक्ष्ण तरङ्गें उठ रही थीं। बालकृष्णके घुटरू चलनेका समाचार विद्युत्की तरह समस्त गोष्ठमे फैल चुका था। यूथ-की-यूथ भाग्यवती व्रज-वनिताएँ प्रतिदिन नन्दद्वारपर एकत्र हो जातीं तथा उस अनुपम लीलारस-सुधाका अतृप्त पान करके बलिहार जातीं। सबका अलग-अलग हृदय था, सबकी अपनी-अपनी भावनाएँ थीं, सभी अपनी भावनाके अनुरूप लीलाका रस लेती थीं। रस लेती-लेती रसके तीव्र स्रोतोमे वे बह जातीं, न जाने किन-किन मधुमय अभिलाषाओंको अन्तस्तलमें छिपाये रहतीं। इन सबका प्रतिबिम्ब श्यामसुन्दरके हृदयपर पड़ता एवं सबकी रुचिके अनुकूल सर्वसुखदायिनी अत्यन्त मनोहारिणी लीलाका प्रकाश होता। श्यामसुन्दरमें कितना ज्ञान हुआ है, इसका रस लेनेवालीके लिये वैसी ही लीला होती। गोपी पूछती—नीलमणि! तेरा मुख कहाँ है? उत्तरमें नीलमणि मनोहर मुखपर अपनी अँगुली रख देते। आँख कहाँ है? नीलमणि काजल लगे हुए नयनकमलोंको दोनों कर-कमलोंकी नन्ही-नन्ही अँगुलियोंसे मूँदकर गोपीकी ओर मुँह करके बैठ जाते। अच्छा लल्ला! नाक क्या वस्तु है? नन्दनन्दन प्राणायामकी मुद्रामें नाकका स्पर्श करते।

वाह वाह! मेरे प्राण-धन! अच्छा इस बार कान और चोटी तो मुझे दिखा दे। श्रीकृष्ण चटपट कानोंको छूकर दोनों हाथोंसे शिखाके स्थानको दबाकर सिर हिलाने लगते। गोपी आनन्दमें डूब जाती—

क्वाननं क्व नयनं क्व नासिका
क्व श्रुतिः क्व च शिखेति केलितः।
तत्र तत्र निहिताङ्गुलीदलो
वल्लवीकुलमनन्दयत् प्रभुः॥

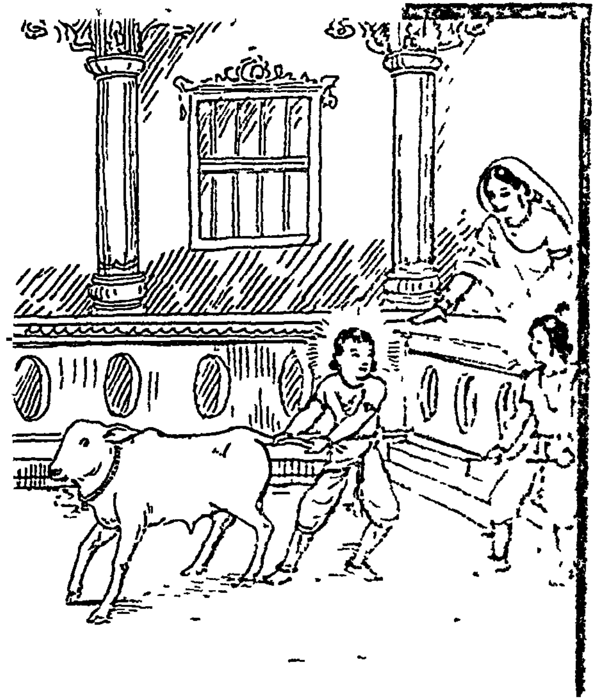
कोई गोपी देखना चाहती यशोदानन्दनमें खड़े होनेकी शक्ति आयी है या नहीं। उसके लिये व्रजेन्द्रनन्दन धीरे-धीरे उठ खड़े होते। चार-पाँच पग चलकर गिर पड़ते। किसी व्रजवनिताके मनमें आता, यह सलोना साँवरा बोल सकता है या नहीं? उसके मनोरथकी पूर्तिके लिये दोनों भाई परस्पर अस्फुटस्वरमें कुछ बोल जाते; गोपीका हृदय आनन्दसे उछलने लगता। इस तरह लीलामयके लीलारसप्रवाहसे समस्त व्रज प्लावित हो गया। फिर भी व्रजवनिताओंकी आँखें तृप्त नहीं होतीं। उत्तरोत्तर मधुरातिमधुर लीला देखनेकी चाह बढ़ती ही जाती। अतः एक ही साथ सबको वात्सल्य-रस-सिन्धुमें डुबो देनेके उद्देश्यसे एक अत्यन्त मधुर बाललीलाका आस्वादन करनेकी इच्छा श्यामसुन्दरके मनमें जाग्रत् हुई। इच्छाकी देर थी, अचिन्त्यलीलामहाशक्तिने तत्क्षण व्रजराजनन्दनको उसी साजसे सजा दिया और लीला प्रारम्भ हो गयी।

व्रजराज गोशालामें बछड़ोंकी सँभाल करने गये हैं और व्रजरानी अपने प्राणधन ललनके लिये भोजन बनानेमें संलग्न हैं। राम-श्याम दोनों भाई आँगनमें खेल रहे हैं। अबतक दोनों भाई मैया एवं बाबाकी गोदमें चढ़कर ही द्वारदेश एवं गोशाला आदिमें जाते थे। आज स्वतन्त्ररूपसे दोनों भाई तोरणद्वारकी ओर चल पड़े। कभी खड़े होकर कुछ डग चलते, कभी घुटनोंके बल। इस तरह बाहर चले आये। आम्रकी शीतल छायामें कुछ गोवत्स विश्राम कर रहे थे। धीरे-धीरे उनके पास जा पहुँचे। बछड़ेकी सुकोमल पूँछको देखकर आश्चर्यचकित-से होकर विचारने लगे, यह क्या है? फिर दोनों भाइयोने अपने नेत्रकमलोंको किञ्चित् नचाकर मानो कुछ परामर्श-सा किया और धीरेसे एक ही साथ पूँछको दोनों हाथोंसे मुट्ठी बाँधकर पकड़ लिया। अचानक पूँछ खिंच जानेसे बछड़ा उठ खड़ा हुआ तथा भागने लगा। अचिन्त्यलीलामहाशक्तिने इसी क्षण श्यामसुन्दरकी स्वाभाविक अनन्त असीम सर्वज्ञतापर



बाललीलोचित मुग्धताकी यवनिका गिरा दी। दोनों भाई बछड़ेसे खिंचे जाते हुए भयभीत हो उठे। जिसके अनन्तानन्त ज्ञानभण्डारके एक क्षुद्रतम कण-ज्ञानसे समस्त विश्वमे कर्तव्याकर्तव्य-ज्ञानका सञ्चार होता है, वे भगवान् श्रीकृष्ण यह ज्ञान भूल गये कि पूँछ छोड़ देनेसे ही बछड़ेका सम्बन्ध छूट जायगा, बल्कि उन्होंने तो अपनी रक्षाके लिये और भी अधिक शक्ति लगाकर पूँछको जकड़ लिया तथा माँ-माँ! बाबा-बाबा! पुकारकर रोने लगे! उसी क्षण समस्त व्रजवनिताओंकी हृदय-वीणापर माँ-माँ, बाबा-बाबाकी करुणामिश्रित स्वरलहरी झंकृत हो उठी, क्योंकि उनके हृत्तन्तु सर्वथा श्याममय होकर निरन्तर श्यामसुन्दरसे ही जुडे रहते थे। अतः जो जहाँ जिस अवस्थामें थीं, चल पड़ीं। इतनी शीघ्र कैसे आ पहुँचीं, यह किसीने नहीं जाना, पर सभी आ पहुँचीं। सबने देखा, भयभीत गोवत्स धीरे-धीरे भाग रहा है तथा उसकी पूँछ पकड़े नीलमणि एवं दाऊ माँ-माँ, बाबा-बाबाकी पुकार करते हुए खिंचे चले जा रहे हैं। अचिन्त्यलीला-शक्तिके महान् प्रभावसे कुछ क्षण सभी किंकर्तव्यविमूढ़-सी हो गयीं। इसी समय उपनन्द-पत्नीने शीघ्रतासे बछड़ेके आगे जाकर उसे थाम लिया। इतनेमें नन्दरानी एवं नन्दराय भी आ पहुँचे। 'बेटा नीलमणि! दाऊ! पूँछ छोड़ दे, पूँछ छोड दे' कहते हुए दोनोंने हाथमें पकड़कर पूँछ छुड़ा दी। नन्दरानीने नीलमणि एव दाऊको अपनी गोदमे ले लिया, दोनोका मुख चूमने लगीं। इधर व्रजसुन्दरियोमे हँसीका स्रोत उमड़ पड़ा, बाललीलाविहारीकी इस अद्भुत अभूतपूर्व ललित लीलाको देखकर सभी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयीं। एक ग्वालिन बोली—'नीलमणि! अरे दाऊ! तुम दोनों भला इस बछड़ेसे भी दुर्बल हो! अरे, पूँछ पकड़कर बछड़ेको रोक लेते या पूँछ पकडे-पकडे सारे व्रजमें घूम आते, यह बछडा तुम्हे व्रजमे घुमा लाता। हमलोग अपने-अपने घरहीपर तुम्हे देखकर निहाल होतीं, बछड़े भी निहाल होते।' यो कहते-कहते ग्वालिनकी आँखोमें प्रेमके आँसू छलछल करने लगे।

श्यामसुन्दर हँसने लगे, मानो सकेतसे कह रहे हैं—'एवमस्तु।' इसके पश्चात् भक्तवाञ्छाकल्पतरु व्रजराजनन्दनने बछडोंको अपने करस्पर्शका योगीन्द्र-मुनीन्द्र-दुर्लभ आनन्द देते हुए इस परम सुन्दर लीलाका अनेको बार प्रकाश किया।



दोनो भाई बछडोंकी पूँछ पकड लेने, बछड़ा भागा

पूँछ पकड़े बैठे घिसटते हुए चले जाते; फिर पूँछ छूट जाती तो किसी दूसरेकी पकड़ लेते; दूसरेकी छूटनेपर तीसरेकी। कभी एक साथ ही तीन-चार बछड़ोंकी पूँछ पकड़ते, बछड़े कूदते और श्यामसुन्दर हँसने लगते। कितने ही बछड़े स्वाभाविक एवं परवश श्यामसुन्दरके इच्छानुसार उन्हें खींच ले जाते। आगे-आगे करस्पर्शके आनन्दसे चौकड़ी भरता हुआ बछड़ा और पीछे-पीछे पूँछमे टँगे हुए आनन्दकन्द पूर्णतम स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण एवं दाऊजी। गोपियाँ इस परम मनोहर लीलाको देखकर आनन्दसे हँसती हँसते आत्मविस्मृत हो जातीं। उनका गृह, गृह-कार्य, सब कुछ छूट जाता—

यर्ह्यङ्गनादर्शनीयकुमारलीला-
वन्तर्व्रजे तदबला. प्रगृहीतपुच्छैः।
वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ
प्रेक्षन्त्य उज्झितगृहा जहृषुर्हसन्त्यः॥*

(श्रीमद्भा० १०। ८। २४)

× × ×

दही बिलोती हुई एक व्रजसुन्दरी धीमे-धीमे गा रही है—

वत्सकृष्णौ बलबलितविलासौ
खेलत इह सखि! सखिकृतहासौ॥ ध्रु०॥
तर्णकपुच्छधृतिव्यापृतिनौ
प्रणयकलितकलिकलने कृतिनौ॥

(श्रीगोपालचम्पू)

'सखि! देख, दाऊको साथ लिये बालकृष्ण खेल रहा है। कुछ सखा भी साथ हैं, सभी उसकी मधुमयी लीला देख-देखकर हँस रहे हैं। अरी! देख बहन! उसी दिनकी तरह आज भी दोनो पुनः बछडेकी पूँछ पकडे हैं। सचमुच बहन! ये दोनो अब बडे चञ्चल हो गये हैं, लोगोंको खिजाना सीख गये हैं। अहा! उस दिन मैयासे कलह करते हुए तुमने इन्हें देखा नहीं? ओह! इनका प्रेम-कलह अद्भुत ही है, इस कलामे ये दोनो ही बड़े प्रवीण हो गये है।'

व्रजसुन्दरियाँ अन्य समस्त कर्म, समस्त उपासनाएँ भूल गयीं। उनके लिये तो अब सम्पूर्ण उपासनाओंका सारसर्वस्व एक यशोदानन्दन ही बन गये है। सारा दिन, सारी रात उनकी आँखोके सामने बाललीला-रसमत्त परमानन्दकन्द नन्दनन्दनकी नयनाभिराम नित्य नयी छटामयी छवि ही नाचती रहती है। दिनका अधिकांश भाग वे नन्दद्वारके समीप खड़ी रहकर बिता देतीं। गुरुजनोंकी बारंबारकी प्रेरणासे घर लौटतीं, पर मन तो नन्दनन्दनके पास ही रह जाता। अन्यमनस्क ही रहकर गृहकार्यमें लगतीं किंतु ठीकसे कर नहीं पातीं। दूध दुहने बैठती तो आँखोके सामने गायोके थनकी जगह नन्दनन्दन दीखते; धानका छिलका उतारने बैठतीं तो ऊखलमे, मूसलमें, यहाँतक कि धानके कणोमे श्यामसुन्दर दीखते, दही बिलोतीं तो दीखता मनमोहन नीलमणि मथानीको पकड़े खड़े हैं, घर लीपने बैठतीं तो हाथ चलता नहीं, क्योकि उन्हें सर्वत्र व्रजेन्द्रनन्दन नाचते-थिरकते दीखते; उनके छोटे बालक रोने लगते, गोपियाँ लोरी देनेका विचार करतीं, पर आँखोसे बच्चा नहीं दीखता, यशोदानन्दन दीखते, वस्त्र धोने बैठतीं तो जलमें, जलपात्रमे, वस्त्रके धागोमे, मानो श्यामसुन्दर समाये हों—यह दीखने लगता और वे चकित-सी, मुग्ध-सी होकर बैठी रह जातीं; झाड़ू देने जातीं तो दीखता, मै तो नन्दरायजीकी गोशालामें बैठी हूँ, गो-रजमें लिपटे नन्दनन्दन सामने खेल रहे हैं; बस फिर, झाड़ू हाथमें ही रह जाता। इस प्रकार वे अधिकांश समय भावाविष्ट रहतीं। लीलाशक्तिकी प्रेरणासे जब आवेश कुछ शिथिल होता, तो किसी प्रकार गृहकार्यका समाधान कर पातीं। पर उस समय भी उनका मन तो रसराजशिरोमणि यशोदानन्दनके लीला-रस-सुधा-सागरमें ही डूबा रहता तथा वाणी निरन्तर उन्हींका ललित लीलागान करती रहती, ऐसा प्रतीत होता कि मानो उनके अन्तर्हृदयका सरस रस-स्रोत ही सुरीले शब्द बनकर झर रहा हो—

* जब राम और श्याम दोनो कुछ और बड़े हुए, तब व्रजमें घरके बाहर ऐसी-ऐसी बाललीलाएँ करने लगे, जिन्हें गोपियाँ देखती ही रह जातीं। जब वे किसी बैठे हुए बछड़ेकी पूँछ पकड लेते और बछड़े डरकर इधर-उधर भागते, तब वे दोनो और भी जोरसे पूँछ पकड़ लेते और बछड़े उन्हें घसीटते हुए दौड़ने लगते। गोपियाँ अपने घरका काम-धंधा छोड़कर यही सब देखती रहतीं और हँसते-हँसते लोट-पोट हो जातीं।

या दोहनेऽवहनने मथनोपलेप-
प्रेङ्खेङ्खनार्भरुदितोक्षणमार्जनादौ ।
गायन्ति चैनमनुरक्तधियोऽश्रुकण्ठ्यो
धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तयानाः॥
(श्रीमद्भा० १०। ४४। १५)

हरिलीला गावत गोपीजन अति आनँद भरि निसिदिन जाई।
बालचरित्र बिचित्र मनोहर कमलनैन ब्रजजन सुखदाई॥
दोहन मथन खँडन गृहलेपन मंडन सुत-पति-सेवा।
चारि जाम अवकास नही पल सुमिरत कृष्ण देवदेवा॥
भवन भवन प्रति दीप बिराजत कर कंकन पग नूपुर बाजे।
परमानंद घोष कौतूहल निरखि भाँति सुरपति जिय लाजे॥

आज वह व्रजसुन्दरी भी इसी तरह विशेषरूपसे भावाविष्ट होकर गा रही है। उसके मानस-नेत्रोंके सामने कभी गोवत्सपुच्छधारी श्यामसुन्दरकी, और कभी माताके साथ कमनीय कलहमें संलग्न यशोदानन्दनकी छबि आ रही है। गोपी भावनाके स्रोतमें डूब रही है और इधर उसके प्राणधन श्यामसुन्दर सचमुच ही वत्सपुच्छधारणकी लीलामे मत्त हैं—

खेलत मदनसुंदर अंग।
जुवति जन मन निरखि उपजत बिबिध भाँति अनंग॥
पकरि बछरा पूँछ ऐंचत अपनि दिसि बरजोर।
कबहुँ बच्छ लै भजत हरि को जुवति जन की ओर॥
देखि परबस भए प्रीतम भयो मन आनद।
मनहिं आकुल भई ब्याकुल गई लाज अमद॥
कोउ देखत गहत कोऊ हँसत छाड़त गेह।
करत भायो अपने मन को प्रगट करि निज नेह॥
अति अलौकिक बाललीला क्योहुँ जानि न जाय।
मुग्धता सो महारस सुख देत रसिक मिलाय॥

यह नियम है कि मिथ्या प्रापञ्चिक मानसिक कल्पनाएँ भी यदि प्राणशक्तिका पर्याप्त बल पा ले तो मूर्तिमती एवं सत्य बनकर प्रत्यक्ष दीखने लग जाती हैं। फिर गोपीकी कल्पना तो सत्यके भी सत्य परमपरात्पर पुरुषोत्तम साक्षात् भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन परमानन्दघन श्रीकृष्णके सम्बन्धकी है! तथा श्रीकृष्णमय बने हुए प्राणोके बलपर श्रीकृष्णको गोपीकी ओर खींच लानेके लिये दौड रही हैं। अतः विलम्व ही क्या था, श्याममुन्दर मधुरातिमधुर आकर्षणसे युक्त उस भावनाके सूत्रमें वँधे हुए, खिंचे हुए-से ग्वालिनके घर आ पहुँचे। ग्वालिनने देखा—श्यामसुन्दर खडे है, पर अकेले हैं। वास्तवमे श्यामसुन्दर अकेले ही आये थे, दादा दाऊ एवं साथियोसे परामर्श करके सवको द्वारपर ही छोड़ दिया था, अकेले भीतर घुसे थे। अस्तु,

ग्वालिनके आनन्दका पार नहीं। उसने सोचा, स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ? निर्णय करनेके उद्देश्यसे उसने वाहरको ओर झरोखेसे झाँका, कुछ सखाओके साथ दाऊ अतिशय शान्त मुद्रामे छिपे-से खडे हैं, स्पष्ट था अपने अनुजके किसी संकेतकी प्रतीक्षामे खडे हैं। ग्वालिन समझ गयी—स्वप्न नहीं है, सत्य है, किसी मधुर गुप्त अभिसन्धिसे मेरे प्राणधन मेरे घर आये हैं। श्यामसुन्दरकी भोली चितवनकी ओर ग्वालिन देखने लगी। अधिक देरतक धैर्य न रख सकी, उसी क्षण दौड पड़ी और गोद उठाकर हृदयसे लगा लिया—

बालदसा गोपाल की सब काहू को भावै।
जाके भवन मे जात है सो लै गोद खिलावै॥
स्यामसुँदर मुख निरखि कै अबला सचु पावै।
लाल लाल कहि ग्वालिनी हँसि कंठ लगावै॥

श्यामसुन्दरका स्पर्श-सुख पाकर ग्वालिनी मानो समाधिस्थ-सी हो गयी, सारी सुध-बुध खो बैठी। गोदमे बैठे हुए अन्तर्यामीने ग्वालिनके अन्तरमे झाँककर देखा। अन्तर्हृदयके तार झन-झन कर रहे हैं—

प्रणयकलितकलिकलने कृतिनौ।

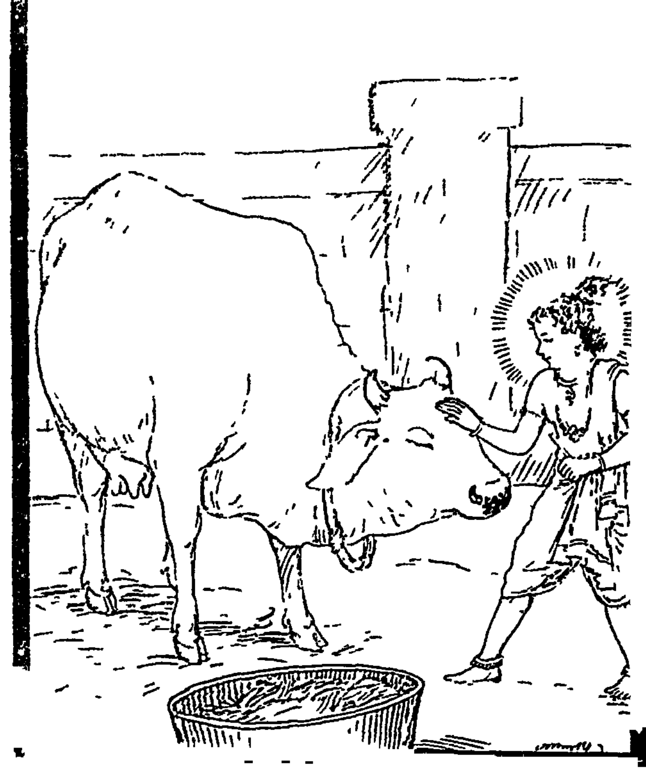
राम-श्याम प्रणय-कलहमें वडे ही चतुर हैं, वडे ही चतुर हैं। उस झनकारकी ओटमे एक लालसा छिपी है—कभी श्यामसुन्दर मुझे खिझाते, मैं रोष करती, वे झगड़ते, ऐसे प्रणय-कलहका सौभाग्य मुझे भी मिलता।

नीलमणि ग्वालिनका यही मनोरथ तो पूर्ण करने आये थे। वे चुपचाप गोदसे उठ खड़े हुए। ग्वालिन प्रस्तर-मूर्तिकी तरह निश्चल वैठी थी। श्यामसुन्दर अपने नुकोमलतम करपल्लवोसे धीरे-धीरे ताली वजाने लगे। ताली वजते ही गोपमण्डलीके सहित दाऊ भीतर आ गये। नीलमणिने माखनगृहकी ओर संकेत कर दिया। वे सब चुपचाप बिना

छिपकर गलके भीतर जा पहुँचे। इधर स्वयं नीलमणि गोशालाकी तरफ चल पड़े। गोशालामें वहुत-से बछड़े वँधे थे। गायें रँभा रही थीं। आज अभीतक दुही नहीं गयी थीं। दुहता कौन? ग्वालिन तो आधी रातमें भावाविष्ट थी; तबसे दधि-भाण्डमें मथानी डालकर बिलो रही थी, दो-चार वार मथानी घुमाती, फिर ठहरकर गीत गाती, फिर कुछ देर मथती, फिर गाने लगती; उसे यह ज्ञान ही नहीं था कि कव प्रभात हुआ।

श्यामसुन्दरको देखकर बछड़े अपने सिर हिलाने लगे, गायें हम्बारव करने लगीं। श्यामसुन्दरने एक वार चञ्चल दृष्टिसे सब तरफ देखा कि कोई देख तो नहीं रहा है। फिर एक बछड़ेको खोल दिया। बछड़ा जाकर माँका दूध पीने लगा। उसके पश्चात् एक-एक करके वहाँ जितने बछड़े थे सबको उन्मुक्त कर दिया; सभी अपनी-अपनी माँके थनोंसे हुमक-हुमककर दूध पीने लगे। यशोदानन्दनके मनोहर मुखारविन्दपर एक अनिर्वचनीय उल्लास छा गया। अपने इस कौतुकको देखकर वे आनन्दमे भर गये और गाय तथा बछड़ोकी ओर परम आह्लादभरे नेत्रोंसे देखने लगे। गाय एवं बछड़ोकी दशा भी आज विचित्र ही है। गायोने दूध पीते हुए बछड़ोको चाटनेकी वात तो दूर, देखना-तक छोड़ दिया। वे एकटक श्यामसुन्दरकी ओर देख रही हैं। बछड़े भी कुछ क्षण तो थनमे मुँह लगाकर दूध पीते, पर फिर पीना छोडकर श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाते। श्यामसुन्दर उन्हे पुचकारकर अपने नन्हे-नन्हे हाथोंको उठाकर शैशवोचित सरलतावश संकेत करते कि 'रे वत्सो! पी लो, पी लो, ग्वालिनीके आनेके पहले-पहले ही सारा दूध आज पी डालो।' सचमुच आज श्रीकृष्णकी अचिन्त्यलीला-महाशक्तिकी प्रेरणासे ही बछड़े दूध पीते रहे, अन्यथा सभी दूध पीना छोड़कर श्रीकृष्णको ही देखने रह जाते।

परमानन्दसुन्दर यशोदानन्दन एक गायके कुछ और निकट जाकर खड़े हो गये। गायने अपनी गर्दन वढ़ायी। यशोदानन्दन एक वार कुछ भयभीत-से हो गये, पर गायकी अनिन्द्य शान्तमुद्रा देखकर उन्हें साहस हो आया। लगे गायकी गर्दनको सहलाने। गायने गर्दन फैला दी।



यशोदानन्दनने देखा—गाय बड़ी सूधी है, मारेगी नहीं। यह सोचकर वे धीरेसे उसके थनके पास बैठ गये। बछड़ा पहलेसे ही थन छोड़कर, अलग हटकर श्यामसुन्दरकी ओर देखने लगा था। श्यामसुन्दरने थन दवाकर दूधकी धार निकालनी चाही। धार निकली तथा उससे श्यामसुन्दरका वायाँ कधा भींग गया। श्यामसुन्दरके आनन्दकी सीमा न थी। दूसरी वार दवाया। इस बार भी धार निकली। श्यामसुन्दरने चाहा था कि मुँहमें ही गिरे, पर धारने चिबुकका ही अभिषेक किया। तीसरी वारकी चेष्टामें यशोदानन्दन सफल हुए, दूधकी उज्ज्वल धार मुँहमें गिरी। दूधकी घूँट पीकर हर्षोत्फुल्ल नेत्रोंसे नन्दनन्दनने पीछे मुँह फिराकर देखा तो दीखा—दाऊ एक स्तम्भकी ओटमें छिपे संकेत कर रहे है कि 'कन्हैया! जल्दी भाग जा।' उनसे कुछ ही दूरपर ग्वालिन दिव्य प्रेमसागरमे डूबती-उतराती खड़ी-खड़ी यशोदानन्दनकी ओर देख रही है। उसकी आँखोसे दर-दर प्रेमाश्रु वहकर उसके वक्षःस्थलको भिगो रहे हैं।

यशोदानन्दन उठकर भागे; पर ग्वालिनी पथ रोके

खड़ी थी। बहुत चेष्टा करनेपर भी आखिर, श्यामसुन्दर ग्वालिनीके द्वारा पकड़ ही लिये गये। ग्वालिनीके अन्तर्हृदयमे तो आनन्दकी बाढ़ आ रही थी, पर बाहरसे वह गम्भीर होकर बोली—'अरे नटखट! यह तुमने क्या किया, सारे बछड़ोंको खोलकर सारा दूध पिला दिया। और दाऊ!' कहकर ग्वालिनी लपकी तथा बड़ी तेजीसे उसने दाऊको भी पकड़ लिया। वे पास ही खड़े थे, अनुजके पकडे जानेसे स्नेह-परवश होकर पास चले आये थे कि देखे ग्वालिनी क्या करती है—उन्हें कल्पना भी नहीं थी कि यह मुझे भी पकड़ लेगी। वे तो समझे हुए थे कि हमलोगोके माखन खानेकी बात अभी ग्वालिनी जानती ही नहीं। जो हो, ग्वालिनी दोनोंका हाथ पकड़े हुए द्वारपर चली आयी और सब साथी भाग निकले।

अन्यान्य व्रजसुन्दरियाँ यह अनुपम दृश्य देखनेके लिये एकत्र हो गयीं। ग्वालिनी बायें हाथसे यशोदानन्दनको एवं दाहिने हाथसे दाऊको पकड़े खड़ी है। श्यामसुन्दर तरह-तरहकी बातें बना रहे हैं। पहले तो अपनेको निर्दोष सिद्ध करने लगे, फिर छोड़ देनेके लिये कातर प्रार्थना की। पर जब ग्वालिनने न छोडा तो उसीपर सारा दोष मढ़कर उससे झगड़ा करने लगे। कहने लगे—'इसीने तो मुझे बुलाया था; मैं जब आया तो मुझे गोदमें लेकर सो गयी, इसे सोयी देख मैं इसकी गोशालामें खेलने चला गया। बछड़े दूध पी गये तो मै क्या करता।' ग्वालिनी छोटे-से यशोदानन्दनमे इतनी बुद्धि देखकर चकित रह गयी। अन्तर्हृदयका प्रेमसागर उमड़ पड़ा; ग्वालिनीके सारे अङ्ग शिथिल हो गये; हाथ ढीले पड़ने लगे; पर श्यामसुन्दर उसकी प्रेमभरी मुट्ठीसे बिना उसकी इच्छाके निकल नहीं सकते थे। ग्वालिनीने यशोदानन्दनके मुखारविन्दकी ओर देखा, उसपर प्रस्वेद-कण छा रहे हैं। प्रस्वेद-कणोंपर दृष्टि जाते ही ग्वालिनीने हाथ छोड़ दिया। श्यामसुन्दर एवं दाऊ भाग निकले। ग्वालिनी बावली-सी होकर भीतर चली गयी। लगातार छः पहर बीत गये, ग्वालिनी देख रही है—गायोके थनसे दूधकी धार निकल रही है और यशोदानन्दन पी रहे हैं।

प्रतिदिनका अभ्यास है कि उषःकालसे कुछ पहले ही वे उठ पड़ती हैं, अपने कोटि-कोटि प्राणोपम नयनमनोऽभिराम नित्यनवसुन्दर नीलमणिकी ललित लीलाएँ गाती हुई दही मथती हैं। अभ्यासवश ठीक उसी समय उन्हे बाह्यज्ञान हुआ, नयन-मन-चोर नीलमणिको देखनेके लिये उसके प्राण व्याकुल हो गये। पर अभी तो रात थी। प्रभातमे तीन घड़ीका विलम्ब था। तीन घड़ियाँ तीन कल्प-सी बीतीं। आखिर प्रभात हुआ। पर इस समय जानेपर नन्दरानी पूछेगी, क्यो आयी है, तो क्या उत्तर दूँगी? समाधान न पाकर ग्वालिनीके प्राण छटपटा उठे। उसकी व्याकुलतासे द्रवित होकर अन्तर्यामीने तुरंत उपाय वता दिया—'उलाहनेके बहाने चली जा।' फिर देर क्या थी, ग्वालिनी चल पडी।

विद्युत्-वेगसे नन्दरानीके घर जा पहुँची। नन्दरानीने पूछा—'इतने सबेरे कैसे आयी, बहन?' ग्वालिनी उत्तर देने जा रही थी कि यशोदानन्दन शय्यासे उठकर आँखे मलते हुए वहीं चले आये। आज यह पहला ही अवसर है कि यशोदानन्दन अपने-आप निद्रा त्यागकर शय्यासे उठकर बाहर आये हैं। ग्वालिनीकी दृष्टि श्यामसुन्दरके विधि-हर-मुनि-मोहन वदनारविन्दपर पडी। फिर क्या था—

भूली री उराहने को दैयो।
परि गए दृष्टि स्यामघन सुदर चक्रित भई चितैयो॥
चित्र लिखी-सी ठाढी ग्वालिन को समुझै समुझैयो।
चत्रभुज प्रभु गिरिधर मुख निरखत कठिन भयो घर जैयो॥

कुछ देर निश्चल खड़ी रहकर विक्षिप्त-सी गाती हुई ग्वालिनी पीछेकी ओर लौट पड़ी। श्यामसुन्दरके मनोहर मुखारविन्दपर मधुर मन्द मुसकान है और मैयाके मुखपर अत्यन्त आश्चर्य! ग्वालिनी गाती जा रही है—

तव सूनुर्मुहुरनयं कुरुते।
अकुरुत किं वा व्यञ्जितमुरु ते॥
मुञ्चति वत्सान् भ्राम भ्रामम्।
साचिव्यं व. कुरुते कामम्॥
असमयमोचनमसुखनिधानम्।
कः किं कुरुते न यदि निदानम्॥
विना निदानं कुरुते स्वामिनि।
क्रोशं न किमिव कुरुपे भामिनि!॥
([illegible])

'अरी नन्दरानी! तुम्हारा यह लाडिला बार-बार अनीति करता है। इसने क्या किया है? यह तुम्हें अच्छा लगा

मालूम है। यह चलता-फिरता बछड़ोंको खोल देता है और मैं समझती हूँ कि तुमलोगोंकी सलाहसे ही सब कुछ करता है। यदि तुम्हारा संकेत न हो तो और असमयमें ही बछड़ोंको खोल देनेका अप्रिय कार्य कौन कर सकता है? यदि कहो कि यह तुम्हारी सलाहसे ऐसा नहीं करता तो फिर तुम उसे डाँटती क्यों नहीं।'

× × ×

दिन कुछ चढ़ चुका है। यशोदानन्दन व्रजवनिताओंके आँगनमें खेलते हुए घूम रहे हैं—

कण्ठे रुरोर्नखमनुत्तमहेमनद्धं
श्रोणौ महार्हमणिकिङ्किणिदाम बिभ्रत्।
मन्दं पुराद्बहिरुपेत्य करोति खेला-
माभीरनीरजदृशां भवनाङ्गनेषु॥

(श्रीआनन्दवृन्दावनचम्पू)

गलेमें उत्कृष्ट सोनेसे मँढा हुआ व्याघ्रनख है, कटिदेशमें अतिशय मूल्यवान् मणियोंसे युक्त करधनी पहने हैं। चुपचाप धीरेसे अपने घरसे बाहर आकर यशोदानन्दन व्रजसुन्दरियोंके भवनोंमें जाकर उनके आँगनोंमें खेलते हैं।

खेलते-खेलते अपनी गोशालामें चले गये। वहाँ जाकर—

धेनु दुहत देखत हरि ग्वाल।
आपुन बैठि गए तिन कें ढिग, सिखवौ मोहि कहत गोपाल॥
कालि देहौं गोदोहन सिखवै, आज दुही सब गाय।
भोर दुहौ जिन नंद दुहाई, उन सों कहत सुनाय सुनाय॥
बड़ो भयो अब दुहत रहौंगो आप आपनी धेनु निबेर।
सूरदास प्रभु कहत सौंह दै मोहि लीजिए टेर॥

—अतिशय मनोयोगसे गायोंका दुहा जाना देखने लगे। व्रजनरेश नन्दराय पास ही दोहनीके दूधकी सँभाल कर रहे हैं। चञ्चल नन्दनन्दन पिताकी दृष्टि बचाकर गोशालामें दूर जा निकले। एक बूढ़ा ग्वाला मन्द-मन्द स्वरमें श्यामसुन्दरकी लीला गाता हुआ गाय दुह रहा है। श्यामसुन्दरको देखते ही गाय जोरसे रँभा उठी। ग्वालेने दृष्टि फिराकर देखा। देखते ही उसकी पलकें पड़नी बंद हो गयीं। गोपका रोम-रोम आनन्दसे नाच उठा। यह गोप व्रजनरेश नन्दरायजीको अतिशय प्रिय था; क्योंकि वह उनका बालसखा था। किसी दैवी प्रेरणासे इसने व्याह नहीं किया था, आजीवन एकाकी नन्दरायजीके पास रहा। नन्दरायजी इसे मित्र ही नहीं, बड़े भाईके रूपमें देखते थे। श्यामसुन्दरके जन्म-दिनके समयसे यह गोप अर्द्धविक्षिप्त-सा रहता; अवश्य ही गायोंकी सेवा जैसे करता था, वैसे ही करता रहा। आज मानो उसके समस्त जीवनकी तपस्याका फल देनेके लिये नन्दनन्दन एकान्तमें उसके सामने चले आये।

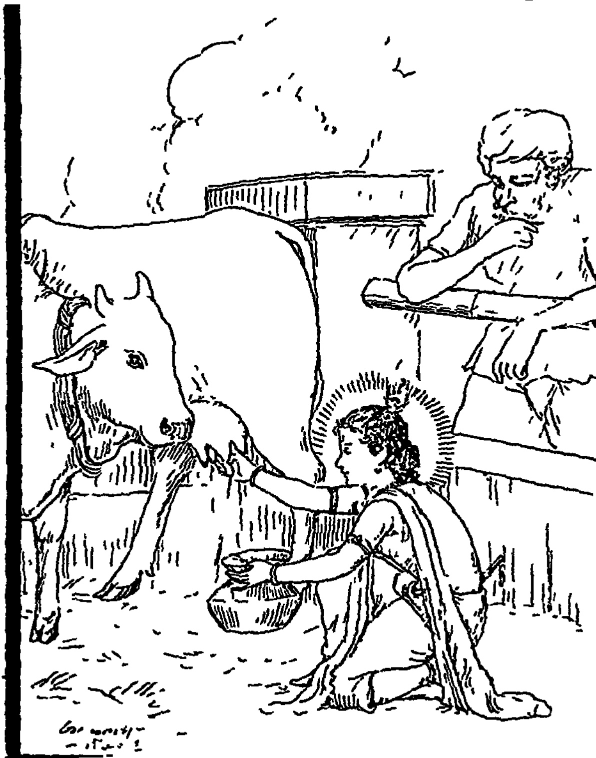
नन्दनन्दन उसके पास बैठ गये। बायें हाथसे उसके दाहिने कंधेको तथा दाहिने हाथसे उसके चिबुकको स्पर्श करके बोले—'ताऊ! मुझे भी दुहना सिखा दो!' इस मधुर कण्ठध्वनिमें न जाने क्या जादू भरा है, वृद्ध गोप रो पड़ा। गोपके हाथसे दोहनी नीचे गिर पड़ी तथा नन्दनन्दनको छातीसे चिपटाकर वह बेसुध हो गया। बाह्यदृष्टिमें तो एक-दो क्षण ही बीते, पर वस्तुतः गोपकी दृष्टिमें अनन्त कल्पोंतक वह नन्दनन्दनको हृदयसे लगाये अनिर्वचनीय परमानन्दका रस लेता रहा। इधर नन्दनन्दन अपनी छोटी-छोटी अँगुलियोंसे उसकी आँखें पोछ रहे हैं तथा कह रहे हैं—'क्यों ताऊ! मुझे नही सिखा दोगे?'

गोपकी भावसमाधि शिथिल हुई, पर आज तो सभी गायें दुही जा चुकी हैं। गोप बोला—'मेरे लाल! कल सिखा दूँगा।' नन्दनन्दनका मुखारविन्द परमोल्लाससे जगमगा उठा। बोले—'ताऊ! बाबाकी सौंह है; कल अवश्य सिखला देना, भला! मेरे आनेतक कम-से-कम एक गाय बिना दुहे हुए अवश्य रखना।' गोप एकटक अपने प्राणधनकी ओर देख रहा था। यशोदानन्दन फिर बोले—'ताऊ! अब तो मैं सयाना हो गया, अपनी गायें अपने-आप दुह लूँगा।' गोप प्रस्तरमूर्तिकी तरह निश्चल था। नन्दनन्दन फिर बोले—'अच्छा ताऊ! आज सन्ध्याको सिखा दो तो कैसा रहे?' वृद्ध गोपने कुछ कहना चाहा, पर शब्द कण्ठसे बाहर नहीं निकले। व्रजराजनन्दन चटपट बोल उठे—'नहीं, ताऊ, सायंकाल तो मैया आने नहीं देगी; कल ही सिखा देना, कल तुम गोशाला दुहने जब आओ तो मुझे पुकार लेना।' यह कहकर यशोदानन्दन कुछ सोचने-से लगे। फिर बोले—'नहीं, पुकारनेकी आवश्यकता नहीं, मैं अपने-आप ही आ जाऊँगा; पर तुम भूलना मत, ताऊ!' वृद्ध गोपने कठिनतासे पुचकारका एक शब्द करके

यह सूचित कर दिया कि 'मेरे लाल, ऐसा ही करूँगा।' नन्दनन्दन उल्लसित होकर बाबाके पास लौट गये।

दूसरे दिन जितना शीघ्र हो सकता था, यशोदानन्दन गोपके पास पहुँचे। उनकी आँखोमें उत्कण्ठा भरी थी। आज दाऊ भी साथ हैं। श्यामसुन्दर कुछ परामर्श करके उन्हें साथ ले आये हैं। आते ही गोपकी दोहनी उन्होने थाम ली तथा अतिशय उत्सुक होकर बोले—'चलो ताऊ, गाय कहाँ है? सिखा दो।' अग्रज दाऊ भी प्रार्थनामिश्रित स्वरमें बोले—'हाँ-हाँ, ताऊ, इसे आज अवश्य सिखा दो।'

वृद्ध गोपने श्यामसुन्दरका मुख चूमकर उनके हाथोंमें एक छोटी-सी दोहनी दे दी। श्यामसुन्दर दुहनेकी मुद्रामें गायके थनके पास जा बैठे। गोपने श्यामसुन्दरकी अँगुलियोंको अपनी अँगुलियोंमे पकड़कर थनको दबाना सिखाया। ठीक उसके कथनानुसार वे दबाने लगे। दूधकी धारा गिरने लगी, पर वह दोहनीपर न गिरकर कभी श्यामसुन्दरके पेटपर और कभी पृथ्वीपर गिरती। श्यामसुन्दर दोहनीको कभी धरतीपर रख देते, कभी घुटनोंमें दबा लेते।



इस क्रियामें एक-दो धारें दोहनीमे, एक-दो श्यामसुन्दरके श्रीअङ्गपर और एक-दो धरतीपर गिरतीं। फिर भी कुछ दूध दोहनीमे एकत्र हो गया। हर्षोत्फुल्ल मुखसे दोहनी लेकर वे उठ खड़े हुए तथा नाच-नाचकर दाऊको दिखाया कि 'देखो, मैं दुहना सीख गया।' दाऊ एवं वृद्ध गोप दोनों ही यशोदानन्दनके हर्षोत्फुल्ल मुखको देख-देखकर मुग्ध हो गये। इस तरह गो-दोहनकी आधी शिक्षा समाप्त हुई।

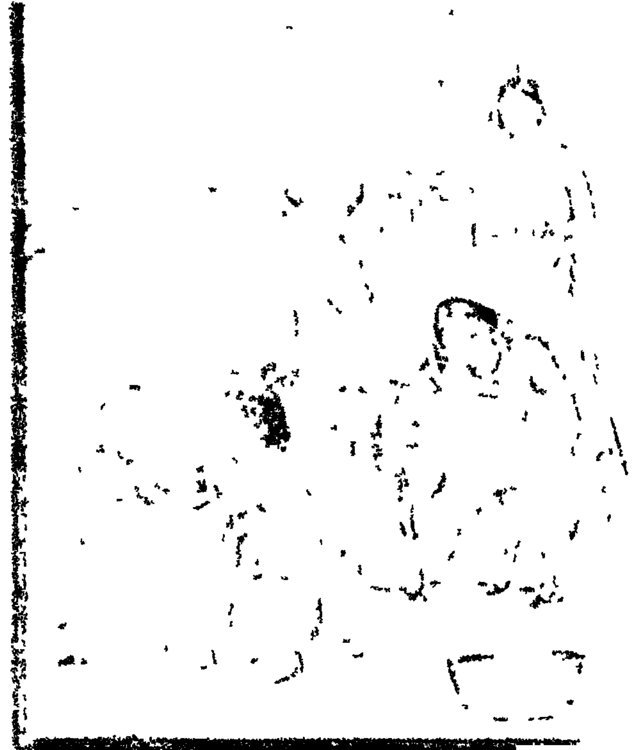
तीसरे दिन प्रातःकाल उठते ही श्यामसुन्दर माताका आँचल पकड़कर प्रार्थना करने लगे—

> दे मैया री दोहनी, दुहि लाऊँ गैया।
> माखन खाय वल भयो, तोहि नंद दुहैया॥
> सेदुर काजरि धूमरी धौरि मेरी गैया।
> दुहि लाऊँ तुरतहि तव, मोहि कर दे धैया॥
> ग्वालन के सँग दुहत हौं, बूझौ वल भैया।
> सूर निरखि जननी हँसी, तव लेत वलैया॥

नन्दरानी समझाने लगी, पर श्यामसुन्दरने एक भी नहीं सुनी। किसी तरह मनुहार कर-करके माताने माखन खिलाया, शृंगार किया तथा गोदोहनकी वात भुला देनेकी चेष्टा की। माँके अनुरागभरे हृदयमें यह भय था कि मेरा नीलमणि अभी निरा अबोध शिशु है, कहीं दुहते समय कोई गाय लात न मार दे। पर आज तो हठीले मोहन मचले हुए हैं। नन्दरानी अन्तमे गोद लेकर, कोटि-कोटि प्राणोंका प्यार देकर बोली—'मेरे प्राणधन नीलमणि! पहले अच्छी तरह बाबाके पास जाकर दुहना सीख ले, तव मैं दोहनी दूँगी और तू दूध दुह लाना।' माँकी वात सुनकर तत्क्षण नन्दनन्दन बाबाके पास दौड गये। उनकी धोती पकड़कर बार-बार हठ करने लगे—

> बाबाजू! मोहि दुहन सिखावो।
> गाय एक सूधी-सी मिलवो, हौंहुँ दुहौं बलदाउ दुहावो॥

व्रजराज अपने हठीले लालकी मुखभंगिमा देखकर मुग्ध हो गये। गोदमे लेकर शुभ मुहूर्तमें सिखा देनेकी बात कहने लगे, पर व्रजदुलारे आज किसीकी वातपर माननेवाले न थे। पास ही उपनन्द खड़े थे। उनके परामर्शसे यह निश्चित हुआ कि नारायणका स्मरण करके नीलमणिकी साध पूरी कर दी जाय। फिर तो श्यामसुन्दरके उल्लासका



और कहतीं—

हे कृष्ण मातृकुचचूचुकचूषणेऽपि
नालं यदेतदधरोष्ठपुटं तवासीत्।
तेनाद्य ते कतिपयेषु दिनेष्वकस्मात्
कस्माद् गुरोरधिगतः कलवेणुपाठः॥

(श्रीआनन्दवृन्दावनचम्पू)

'प्यारे कन्हैया! तुम्हारे ये कोमल अधर तो मातृ-स्तनपानमें भी समर्थ न थे, फिर भला इने-गिने दिनोमे ही तुमने इतनी मधुर वंशी बजानेकी शिक्षा किस गुरुसे सीख ली।' इस प्रकार व्रजाङ्गनाओंका आग्रह देखकर श्यामसुन्दर वंशी बजाते और वे मुग्ध हो जातीं।

श्यामसुन्दर दिनभर दो कार्योंमें व्यस्त रहते—एक वंशी बजाना और दूसरा सखाओंके साथ विविध क्रीडा करना। अब विशेषतः गाय एवं गोवत्सोंके साथ ही क्रीडा होती थी। कभी दो, चार, छः गोवत्सोंको अथवा गायोको पकड़ लेते; उनको अपने अधीन करके नचाते तथा स्वयं उनके साथ नाचते! कभी उनके सींगोंको पकड़कर खेलते। कभी गाड़ीमे जुते हुए बैलोके सींग पकड़कर उनसे विविध क्रीडा करते। नन्दरानी, नन्दराय स्नेहवश भयभीत हो जाते। बार-बार मना करते, पर श्रीकृष्ण एक नहीं सुनते। साथमे दाऊका प्रोत्साहन था। दोनों भाई परामर्श करके बहुत दूर निकल जाते। जननी व्याकुल होकर ढूँढ़ने जाती तो दोनो भाई व्रजकी सीमाके बाहर वनके पास बछड़ा चराते हुए गोपशिशुओंके साथ खेलते मिलते। अपने कोटि-कोटि-प्राणप्रतिम नीलमणिको कण्ठसे लगाकर जननी इतनी दूर अकेले आनेके लिये मना करतीं। नीलमणि कहते—

मैया री! मै गाय चरावन जैहौं।
तूँ कहि महरि नदबाबा सो, बड़ो भयो न डरैहौ॥
श्रीदामा लै आदि सखा सब, अरु हलधर सँग लैहौं।
दह्यो भात काँवरि भरि लैहौ, भूख लगै तब खैहौ॥
बंसीवट की सीतल छैयाँ खेलत मे सुख पैहौ।
परमानददास सँग खेलौ जाय जमुनतट न्हैहौ॥

लालकी बात सुनकर जननीका हृदय आनन्दसे उछलने लगा। एक दिन था, नन्दरानी अपने प्राणधनको दुलराती हुई नाना मनोरथ करती थीं—कब मेरा नीलमणि बकैयाँ चलेगा, कब डगमग करते हुए धरतीपर पैर रखेगा, कब मुझे माँ-माँ कहकर पुकारेगा, कब माखन माँगेगा, कब गाय दुहने बैठेगा और वह दिन कब होगा, जब मैं माथेपर तिलक करके अपने नीलमणिको गाय चराने वन भेजूँगी। नन्दरानीके ये सभी मनोरथ पूर्ण हुए। गाय चरानेका मनोरथ भी मानो नीलमणिकी इस बातसे ही पूर्ण हो गया। पर अभी नीलमणिके तो दूधके भी दाँत नहीं उतरे हैं, यह भला वनमे गोचारण करने कैसे जायगा—इस भावनासे मया अपने लालको तरह-तरहसे समझाने लगी कि 'मेरे लाल! अभी कुछ दिन बाद गाय चराने भेजूँगी।' नन्दराय भी समझाते, पर चञ्चल श्यामसुन्दर भाग ही जाते। इसीलिये इस भयसे कि खेलते-खेलते पता नहीं किसी दिन किधर जा निकले, नन्ददम्पतिने परस्पर परामर्श करके यह निश्चय किया—

यदि गोसङ्गावस्थानं विना न स्यातु पारयतस्तर्हि व्रजसदेशदेशे वत्सानेव तावत्सञ्चारयतामिति।

(श्रीगोपालचम्पू)

सचमुच ये राम-कृष्ण दोनो अब बडे चञ्चल हो गये हैं तथा विशेषतः इन्हे गायोका सङ्ग बडा प्रिय है। 'यदि गायोके संग बिना ये नहीं रह सकते तो अच्छा यह है कि व्रजके निकट रहकर ये छोटे बछडोको चराया करें।'

उपनन्दने भी यही सम्मति दी। अतः ज्योतिषियोंको बुलाकर पुण्यतिथि—पुण्यमुहूर्त निश्चय कर लिया गया। व्रजमें बात फैलते क्या देर लगती? सुनते ही सबने निश्चय किया कि हम भी अपने-अपने बच्चोको उसी दिनसे वत्सचारणके लिये भेजेगे।

मङ्गलमय प्रभात हुआ। आज यशोदानन्दन वत्सचारण प्रारम्भ करेगे। नन्दरानीके आनन्दका क्या कहना? माताने तरह-तरहके वस्त्राभूषणोसे अपने हाथो लालको सजाया, पर स्नेहभरे हृदयमे तुरंत ही आशङ्का उठी—इसका सौन्दर्य तो पहलेसे ही भुवन-मन-मोहन है। मैंने इसको सजाकर और भी सुन्दर बना दिया। कहीं नजर न लग जाय! जननीने उसी क्षण लालके विशाल भालपर काजलकी टेढ़ी रेखा खींच दी। इष्टदेव नारायणको मनाया। ब्राह्मणोंको स्वर्ण-दान किया और श्यामसुन्दरके लिये सबसे आशीर्वाद लिये। बड़ी सुखी हैं नन्दरानी आज। पर जब श्यामसुन्दर [illegible]

तयार हुए, तव तो वात्सल्य-स्नेहने जननीके मनमें शङ्काओंके



पहाड़ खड़े कर दिये। वे डर गयीं—कहीं जंगलमें मेरे कन्हैयाका अनिष्ट न हो जाय। इसे कोई वन्य कीट-पतङ्ग न काट ले। कहीं यह गिर न पड़े। नन्दरानीकी आँखोमें आँसू छलक आये। उन्होने दाऊको समीप बुलाकर उनके हाथमे कन्हैयाका हाथ पकड़ाकर कहा—'बेटा! तुम बडे हो, यह कन्हैया वडा चञ्चल है; अपने इस छोटे भाईकी सँभाल रखना, भला।'

वत्स चरावन जात कन्हैया।
उबटि अग अन्हवाय लाल कों फूली फिरत मगन मन मैया॥
निज कर करि सिगार विविध विधि, काजल-रेख भाल पर दीन्हीं।
दीठि लागिये के डर जसुमति इष्टदेव सौ विनती कीन्हीं॥
विप्र बुलाय दान करि सुवरन सवकी सुखद असीसे लीन्हीं।
कर पकराइ नयन भरि अँसुवन सकल सँभार दाउए दीन्हीं॥

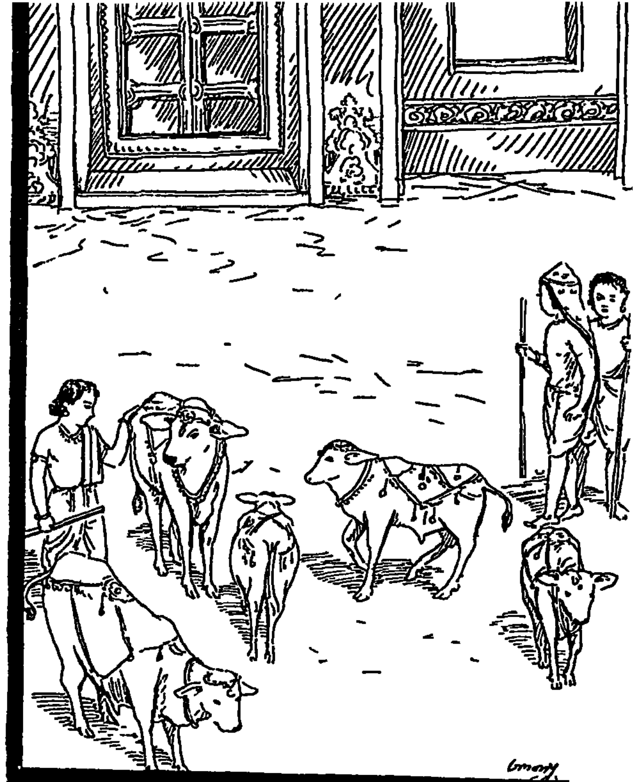
नन्दरायजी निर्निमेष नयनोंसे अपने पुत्रका शृंगार और यशोदाकी प्रेमदशा देख रहे हैं। हृदयका आनन्दरस पानी वनकर आँखोकी राह वाहर आना चाहता है, पर मङ्गल-मुहूर्तकी स्मृति बाँध लगा देती है। मन-ही-मन नन्दराय आजके पुण्यप्रभातको धन्यवाद दे रहे हैं। सब ओर आनन्द छाया है।

आजु ब्रज छायो अति आनंद।
बत्स चरावन जात प्रथम दिन नंदसुवन सुखकंद॥

माताके वात्सल्यपूर्ण हाथोसे सजकर नीलमणि आँगनमें खड़े हुए। नन्दरायने अपने पुत्रके हाथमें एक छोटी-सी लाल छड़ी पकड़ा दी—'तनुतरां लोहितयष्टिकामेकां करे धारयित्वा' (श्रीआनन्दवृन्दावनचम्पू)। सब बालगोपाल समीप आकर खड़े हो गये।

सोहत लाल लकुट कर राती।
सूथन कटि चोलना अरुन रँग पीतांबर की गाती।
ऐसेहि गोप सबै बनि आए, जो सब स्याम सँगाती॥

नन्दरायकी आज्ञासे आज गोवत्सोंका भी सुन्दर शृंगार किया गया है। वे तोरणद्वारके बाहर सुन्दर सजे हुए सिर उठाये खड़े हैं, मानो नन्दनन्दनकी प्रतीक्षा कर रहे हों।



सचमुच नन्दनन्दनके आते ही वे सभी आनन्दमें भरकर कूदने लगे। नन्दनन्दन दौड़कर उनके पास जा पहुँचे। उनके बीच खड़े होनेपर वे पुनः शान्त हो गये। तदनन्तर

यशोदानन्दनने सब गुरुजनोंको प्रणाम किया और वत्सचारणके लिये प्रस्थान किया—

चले हरि बत्स चरावन आज।
मुदित जसोमति करत आरती साजे सब सुभ साज॥
मंगलगान करत ब्रजबनिता, मोतिन पूरे थाल।
हँसत हँसावत बत्स-बाल सँग चले जात गोपाल॥

आज नन्दद्वारसे लेकर वनतक समस्त गोपोके गृह सजाये गये हैं। सबके द्वारपर मङ्गलकलश हैं। घर-घर मङ्गलगीत गाये जा रहे हैं। अपने गृहके सामने आनेपर सभी व्रजाङ्गनाएँ नन्दनन्दनकी आरती उतार रही हैं। आगे-आगे गोवत्स चल रहे है तथा उनके पीछे ग्वालसखाओंके बीचमे कंधेपर छींका रखे हुए नन्दनन्दन हैं। उन गोवत्सोंपर, ग्वालसखाओं एवं नन्दनन्दनपर व्रजाङ्गनाएँ पुष्प बरसा रही है और उन सबको अपनी प्यारभरी चितवनसे निहाल करते हुए नन्दनन्दन वनकी ओर चले जा रहे हैं—

गोबिद चलत देखियत नीके।
मध्य गुपाल-मंडली मोहन काँधन धरि लिये छीके॥
बछरा-बृंद घेरि आगे दै ब्रजजन सृग बजाए।
मानहुँ कमल-सरोवर तजि कै मधुप उनींदे आए॥

परस्पर हँसते-खेलते एवं गोवत्सोको उछलाते-कुदाते सबने वनमें प्रवेश किया। तृण-लताङ्कुरोंसे अत्यन्त शोभित हरित वनभूमिपर बछड़ोंको चरनेके लिये छोड दिया। एवं परस्पर खेलमे संलग्न हो गये। कुछ देर सखाओंके साथ खेलकर फिर नन्दनन्दनने गोवत्सोसे खेलनेका विचार किया। श्यामसुन्दर अपने सुकोमलतम हाथोंसे हरी-हरी दूब तोड़ते तथा बछड़ोके मुँहमे जाकर देते। बछड़ा अपना मुख श्यामसुन्दरके हाथोंपर रख देता तथा धीरे-धीरे दूब चरने लग जाता। उसे चरते देखकर सभी गोवत्स श्यामसुन्दरको चारों ओर घेरकर खडे हो जाते और उनके हाथसे दूब चरनेकी चेष्टा करते। श्यामसुन्दर भी अतिशय प्यारसे क्रमशः सबके मुँहमें हरी-हरी दूब देते। ग्वालसखाओंकी मण्डली श्यामसुन्दरके हाथोमे तोड़-तोड़कर दूब देती और वे उन्हें खिलाते जाते। उस दिन दोपहरतकका समय श्यामसुन्दरने सखाओके साथ दूब तोड़-तोड़कर बछड़ोंको खिलानेमें ही विताया। जब



बछड़े तृणसे तृप्त हो गये तो उन्हे जलाशयके समीप ले जाकर पानी पिलाने लगे। एक वछड़ेने जल-पान नहीं किया। बाललीला-रसमत्त श्यामसुन्दरने सोचा—अच्छा, अपने हाथोंसे इसे जल पिला दूँ; सम्भवतः यह जलाशयमें जानेमे डरता है। यह सोचकर अपने करकमलोंकी छोटी-सी अञ्जलि बनायी तथा जलाशयसे जल भरकर बछडेके मुँहके पास ले गये। छोटी-सी अञ्जलि मुँहतक पहुँचते-पहुँचते खाली हो गयी। श्यामसुन्दर कुछ उदास-से हो गये। दो-चार बार ऐसा करनेपर भी जव सफल नहीं हुए तो अपना पीताम्बर भिगोया। श्यामसुन्दर वछड़ेके सामने अञ्जलि बाँधे रहे एव दाऊ ऊपरसे भीगे पीताम्वरको निचोडने लगे। जल अञ्जलिमे गिरने लगा, पर वछड़ा जलकी धारासे चिहुँक्कर अलग कूद गया। नन्दनन्दन एवं सभी सखा हँस पडे।

जलसे तृप्त हुए वछड़ोको एक वृक्षकी शीतल छायामें बैठाया। फिर उनसे खेलने लगे। एक बछड़ेके पास गये, उसके सारे अङ्गोको सहलाया; उसके गलेमें अपनी दोनों भुजाएँ डाल दीं, पश्चात् गोवत्सके कपोलपर अपना कपोल

रखा। फिर कानके पास मुँह लगाकर वोले—'क्यों रे वत्स! मातासे मिलना चाहता है? अच्छी वात है, मिला दूँगा।' इस तरह उससे वहुत देरतक वातें करते रहे; वछड़ा श्रीकृष्णके करस्पर्श, कपोलस्पर्शका योगीन्द्र-मुनीन्द्र-दुर्लभ आनन्द पाकर निहाल हो रहा है एवं उसे सुखी देखकर श्रीकृष्ण भी सुखसागरमे निमग्न हो रहे हैं—

×× मातरं मिलितुमिच्छसि? मेलयिष्यामीति तत्कर्णे मिथः कपोलमेलनपूर्वकवृथावर्णनेन च तमुपचर्य्य सुखमुपलव्धवान्। (श्रीगोपालचम्पू)

ऐसे ही अनेक कौतुकोसे वछड़े एवं गोपवालकोंको सुखी कर जननीके द्वारा भेजी हुई छाकका सबने मिलकर भोजन किया। भोजनके वाद विश्राम, विश्रामके बाद वंशीवादन एवं नृत्य आदि हुए। पर अब दिन अधिक ढल चुका था। अतः यशोदानन्दन बछड़ोंको एकत्र कर व्रज लौटे। जननी-जनक एकान्त मनसे वनकी ओर नेत्र लगाये प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने हृदयधनको आते देखकर दोनों ही दौड़ पड़े। मार्गमें ही मिलन हुआ, यशोदाने अपने प्राणधनको हृदयसे लगा लिया, अपनी गोदमें नीलमणिको लिये घर पहुँची। बछड़ोंको नन्दरायजी स्वयं उनकी माताओंके पास पहुँचा आये। वनके विविध दृश्योका एवं अपने खेलोंका वर्णन राम-श्याम एवं सखा करने लगे। व्रजराज, व्रजरानी एवं व्रजाङ्गनाएँ बड़े चावसे सुनने लगीं। यह प्रथम दिनका वत्सचारण हुआ। (क्रमशः)



महर्षि वसिष्ठकी गोसेवा

ब्रह्मशक्तिके मूर्तिमान् स्वरूप तपोनिधि महर्षि वसिष्ठजीके उज्ज्वल चरित्रसे हमारे धर्मशास्त्र, इतिहास और पुराण भरे पड़े हैं। इनकी सहधर्मिणी अरुन्धती पतिव्रताओंका आदर्श हैं, जो सप्तर्पिमण्डलके पास ही इनकी सेवामे लगी रहती हैं। व्रह्माजीके मानसपुत्र महर्षि वसिष्ठजीने 'भूतलमें भगवान् श्रीरामका आविर्भाव होगा' यह समझकर सूर्यवंशका कुलगुरु-पद स्वीकार किया और भगवान् श्रीरामको अपने शिष्यरूपमे पाकर महर्पिने अपनेको धन्य माना। यहाँ आकर इन्होंने अपनेको सर्वभूतहितमे लगाये रखा। जब कभी अनावृष्टि हुई, दुर्भिक्ष पड़ा तव इन्होंने अपने तपोवलसे वर्पा करायी और जीवोकी अकालमृत्युसे रक्षा की। इन्हीके उपदेशके वलपर राजर्षि भगीरथ देवनदी गङ्गाको लानेमें समर्थ हुए।

महर्षि वसिष्ठजी महान् तपस्वी थे, एवं क्षमाकी तो वे साक्षात् मूर्ति ही थे। जव विश्वामित्रजीने इनके सौ पुत्रोंका संहार कर दिया, उस समय यद्यपि इन्होने वड़ा शोक प्रकट किया, परंतु सामर्थ्य होनेपर भी विश्वामित्रके किसी प्रकारके अनिष्टका चिन्तन नहीं किया, वल्कि अन्तःकरणके क्षणिक शोकाकुल होनेपर भी ये अपनी निर्लेपता और असंगताको नहीं भूले।

महर्षि वसिष्ठ योगवासिष्ठके उपदेशकके रूपमें ज्ञानकी साक्षात् मूर्ति हैं। उनका जीवन भगवान् श्रीरामके प्रेममें निमग्न है। वे आज भी सप्तर्षियोंमें स्थित रहकर सारे जगत्के कल्याणमें लगे हुए हैं।

तपोवन-संस्कृतिके जीवन्त-स्वरूप महर्षि वसिष्ठजीकी गोमातामे कितनी भक्ति थी यह सर्वविदित ही है। किस प्रकार उन्होंने शबला गौके प्रभावसे राजर्षि विश्वामित्रजीका सेनासहित विशिष्ट आतिथ्य किया था, यह बात भी वाल्मीकि आदि रामायणोंमें प्रसिद्ध ही है। वे स्वयं अपने हाथों नित्य गौकी सेवा करते थे। अपने आश्रममें देवी अरुन्धती एवं स्वयं वे नित्य गौकी पूजा करते थे। गौकी कितनी अनन्त महिमा है तथा गोसेवा क्या है, उसका क्या फल है, वे भलीभाँति जानते थे। इसलिये नित्य वे गायोंका सांनिध्य चाहते थे। गोतत्त्ववेत्ताओके तो महर्षि वसिष्ठ आद्य आचार्य ही हैं। महाभारतमें राजा सौदासको उन्होने जिस गोतत्त्व और गोसेवाका उपदेश दिया है, वैसा अद्भुत वर्णन अन्यत्र दीखता नहीं, महर्षि गोमहिमाका वर्णन करते हुए कहते हैं—

'राजन्! गौएँ ही मनुष्यों किंवा समस्त प्राणियोंके जीवनका अवलम्ब हैं, गौएँ कल्याण-मङ्गलका परम निधान है। पहलेके लोगोंका ऐश्वर्य गौपर अवलम्बित था और आगेकी उन्नति भी गौपर ही अवलम्बित है। गौएँ ही सब समय पुष्टिका साधन हैं—

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥
गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी।

(महाभा०, अनु० ७८। ५-६)

महर्षि वसिष्ठजीने अनेक प्रकारसे गोमहिमा तथा उनके दान आदिकी महिमा बताते हुए मनुष्योके लिये एक महत्त्वपूर्ण उपदेश तथा एक मर्यादा स्थापित करते हुए कहा—

नाकीर्तयित्वा गाः सुप्यात् तासां सस्मृत्य चोत्पतेत्।
सायंप्रातर्नमस्येच्च गास्ततः पुष्टिमाप्नुयात्॥
गाश्च संकीर्तयेन्नित्यं नावमन्येत तास्तथा।
अनिष्टं स्वप्नमालक्ष्य गां नरः सम्प्रकीर्तयेत्॥

(महाभा०, अनु० ७८। १६, १८)

अर्थात् 'गौओका नामकीर्तन किये बिना न सोये। उनका स्मरण करके ही उठे और सबेरे-शाम उन्हें नमस्कार करे। इससे मनुष्यको बल और पुष्टि प्राप्त होती है। प्रतिदिन गौओंका नाम ले, उनका कभी अपमान न करे। यदि बुरे स्वप्न दिखायी दें तो मनुष्य गोमाताका नाम ले।'

इसी प्रकार वे आगे कहते हैं कि जो मनुष्य श्रद्धापूर्वक रात-दिन निम्न मन्त्रका बराबर कीर्तन करता है वह सम अथवा विषम किसी भी स्थितिमें भयसे सर्वथा मुक्त हो जाता है और सर्वदेवमयी गोमाताका कृपा-पात्र बन जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्॥

(महाभा०, अनु० ७८। २४)

अर्थात् 'मैं सदा गौओंका दर्शन करूँ और गौएँ मुझपर कृपा-दृष्टि करें। गौएँ हमारी हैं और हम गौओंके हैं। जहाँ गौएँ रहें, वहीं हम रहें, चूँकि गौएँ हैं इसीसे हमलोग भी हैं।'

इस प्रकार महर्षि वसिष्ठजीने हमारे लिये गोसेवाका कितना सुन्दर उपदेश दिया है। त्रिकालदर्शी महर्षिने जीवोके उद्धारके लिये ही गोसेवा-व्रतका आदर्श सामने रखा और बताया कि यदि मनुष्य गौकी सच्ची सेवा करे तो उसका सर्वविध कल्याण निश्चित ही है।

महर्षि वसिष्ठकी गोसेवा सभी इतिहास-पुराणों तथा काव्योंमें प्रसिद्ध ही है। शबला, नन्दिनी आदिकी कथाएँ भी सम्पूर्ण भारतीय साहित्यमें प्रसिद्ध हैं। नन्दिनी इन्हींकी कामधेनुकी पुत्री थी, जिसकी सेवासे दिलीपकी पत्नी सुदक्षिणाके गर्भसे महाराज रघुका जन्म हुआ और उसीके कारण 'सूर्यवश'का नाम 'रघुवश' प्रसिद्ध हुआ। कालिदासके 'रघुवंश' ग्रन्थमें मूलरूपसे यही कथा व्याप्त है। या यों कहिये कि इसी कथाके कारण कालिदास प्रसिद्ध हुए और उनके काव्योका सर्वत्र प्रचार-प्रसार हुआ। उन्होंने सभी पंडितों तथा प्रारम्भिक सस्कृत विद्यार्थियोको गोसेवा करनेकी सलाह दी। यह सब कालिदासने महर्षि वसिष्ठकी गो-सेवासे एवं उनके ग्रन्थोसे प्राप्त किया।

महर्षि वसिष्ठका मुख्य ग्रन्थ योगवासिष्ठ है, जिसको आधार बनाकर स्वामी विद्यारण्यने पञ्चदशी ग्रन्थके मध्य-खण्डमे पञ्चप्रदीप-प्रकरण लिखा। वह प्रदीप गायोंके घीसे ही प्रदीप्त होता है, उसीके आधारपर गोस्वामीजीने ज्ञानदीपकका प्रकरण लिखा। मुख्य प्रसंग है—*'सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई'* से प्रारम्भ होकर *'एहि विधि लेसै दीप'* और *'दीप सिखा सोइ परम प्रचडा'* पर समाप्त होता है। इस दीपशिखाको कालिदासने बडे आदरसे अपने रघुवंश ग्रन्थमे स्थान दिया है। लिखा है—'सचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिवरा सा।' जिससे अन्य कवियोने उनका नाम दीपशिखाका कवि रख दिया है। और यह दीपशिखा गौके घीसे ही जलती है। शबला गायके इतिहाससे तो सभी पुराण, वाल्मीकिरामायण एवं दूसरे भी रामायण भरे पडे हैं, जिनका कुछ संक्षिप्त अंश यहाँ दिया जा रहा है—

एक बार क्षत्रिय राजा विश्वामित्र अपनी सारी सेनाके साथ वसिष्ठजीके आश्रमसे गुजरे। उनके साथ उनकी चतुरंगिणी सेना थी, जिसमें लाखो सैनिक थे। शबला कामधेनु थी

फलतः उसने सभी लोगोंके लिये स्वादिष्ट भोजन उत्पन्न कर दिया, जिसे ग्रहणकर सेनासहित विश्वामित्र तृप्त हो चकित हो गये और सोचने लगे महर्षि वसिष्ठने ऐसी सामर्थ्य कहाँसे प्राप्त कर ली। क्योंकि उनके पास कोई अन्य धन नहीं दीखता। जब पता लगा कि यह सब शबलाका ही दिव्य विलक्षण प्रभाव है, तब उन्होंने उसे वसिष्ठजीसे माँगा और कहा कि मैं इसके बदले आपको पर्याप्त धन दूँगा। पर महर्षि वसिष्ठ तैयार नहीं हुए। तब राजाने उस शबलाको जबर्दस्ती घसीटकर ले जानेके लिये अपने सिपाहियोंको आज्ञा दी। वे लोग उसे घसीटने लगे। शबलाने उस समय रोकर महर्षि वसिष्ठसे कहा कि आपने मुझे इसे क्यो दे दिया? इसपर वसिष्ठजीने कहा—'मैंने तुम्हे नहीं दिया, यह राजा बलवान् है। मेरी बात नहीं मानता और तुम्हे बलपूर्वक घसीटता है। तुम्हारी जो इच्छा हो करो, मैं तुम्हे जानेको नही कहता।' इसपर शबलाने अपने शरीरसे अनन्त संख्यामें यवन, खस, पह्लव, हूण आदि सैनिकोको उत्पन्न किया, जिन्होंने महर्षि विश्वामित्रकी सेनाको नष्ट कर दिया। इसका वर्णन महर्षि वाल्मीकिने अपनी रामायणमे बड़े रमणीय एवं आकर्षक शब्दोमे किया है—

तस्य तद् वचन श्रुत्वा सुरभिः सासृजत् तदा।
तस्या हुंभारवोत्सृष्टाः पह्लवाः शतशो नृप॥
नाशयन्ति बलं सर्व विश्वामित्रस्य पश्यतः।
स राजा परमः क्रुद्धः क्रोधविस्फारितेक्षणः॥
पह्लवान् नाशयामास शस्त्रैरुच्चावचैरपि।
विश्वामित्रार्दितान् दृष्ट्वा पह्लवाञ्शतशस्तदा॥
भूय एवासृजद् घोराञ्छकान् यवनमिश्रितान्।
तैरासीत् संवृता भूमिः शकैर्यवनमिश्रितैः॥
प्रभावद्भिर्महावीर्यैर्हेमकिंजल्कसंनिभैः।
तीक्ष्णासिपट्टिशधरैर्हेमवर्णाम्बरावृतैः॥
निर्दग्धं तद्बलं सर्वं प्रदीप्तैरिव पावकैः।

(वाल्मीकिरामा० १। ५४। १८—२३)

अर्थात् 'महर्षि वसिष्ठजीके आदेशानुसार उस गौने उस समय वैसा ही किया। उसके हुंकार करते ही सैकड़ों पह्लव जातिके वीर पैदा हो गये। वे सब विश्वामित्रके देखते-देखते उनकी सारी सेनाका नाश करने लगे। इससे राजा विश्वामित्रको बड़ा क्रोध हुआ। वे रोषसे आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। उन्होंने छोटे-बड़े कई तरहके अस्त्रोंका प्रयोग करके उन पह्लवोंका संहार कर डाला। विश्वामित्रद्वारा उन सैकड़ों पह्लवोको पीडित एवं नष्ट हुआ देख उस समय उस शबला गौने पुनः यवनमिश्रित शक जातिके भयंकर वीरोंको उत्पन्न किया। उन यवनमिश्रित शकोंसे वहाँकी सारी पृथ्वी भर गयी। वे वीर महापराक्रमी और तेजस्वी थे। उनके शरीरकी कान्ति सुवर्ण तथा केसरके समान थी। वे सुनहरे वस्त्रोंसे अपने शरीरको ढँके हुए थे। उन्होने हाथोमें तीखे खड्ग और पट्टिश ले रखे थे। प्रज्वलित अग्निके समान उद्भासित होनेवाले उन वीरोंने विश्वामित्रकी सारी सेनाको भस्म करना आरम्भ किया।'

महर्षि वसिष्ठजीकी गोसेवा कैसी थी और गोमाताकी शक्ति कितनी प्रबल होती है अथवा हो सकती है उसकी कल्पना भी कठिन है। यह बात इस घटनासे स्पष्ट हो जाती है। अतः अत्यन्त श्रद्धा-भक्तिसे गौओकी सेवा करनी चाहिये। क्योकि गोमाता तो सबके लिये समान फलदायिनी हैं। वे अपने सेवकको समस्त पाप-तापसे मुक्त कर महर्षि वसिष्ठके समान ज्ञानी, पूज्य, वन्द्य, यशस्वी, तेजस्वी एवं सब प्रकार समृद्धिशाली, शक्तिसम्पन्न और सुखी बना सकती हैं।

वेदमें गौका जुलूस

यया द्यौर्यया पृथिवी ययापो गुपिता इमाः। वशां सहस्रधारां ब्रह्मणाच्छावदामसि॥
शतं कंसाः शतं दोग्धारः शतं गोप्तारो अधि पृष्ठे अस्याः। ये देवास्तस्यां प्राणन्ति ते वशां विदुरेकधा॥

अर्थात् जिस गौके द्वारा द्यु, पृथिवी एवं जलमय अन्तरिक्ष—ये तीनों लोक सुरक्षित हैं, उस सहस्रधाराओंसे दूध देनेवाली गौकी हम प्रशंसा करते हैं। सौ दोहनपात्र लिये सौ दुहनेवाले तथा सौ संरक्षक इसकी पीठपर सदा खड़े रहते हैं। इस गौसे जो देव जीवित रहते हैं, वे ही सचमुच उस गौका महत्त्व जानते हैं। (अथर्ववेद १०। १०। ४-५)

भगवान् व्यासदेवकी दृष्टिमें गोसेवा

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्॥

भगवान् वेदव्यास वेदोंके भावपूर्वक विभाजन करनेवाले हैं और महाभारत तथा सभी पुराण, उपपुराणों, बृहद् व्यासस्मृति आदि स्मृतियो तथा वेदान्त-दर्शन, योगदर्शन आदि सभीके निर्माता है और आजका सम्पूर्ण विश्वसाहित्य इन्हींका उच्छिष्ट है। इसलिये '**व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्**' की परम्परासे प्रसिद्धि है। इन्होंने अपने समग्र साहित्यमे गोसेवाको प्रमुख माना है और उसे यज्ञ, तप, धर्म, दान आदिका मूल माना है। स्कन्दपुराण, भविष्यपुराण, पद्मपुराण, अग्निपुराण तथा महाभारतके अधिकांश भाग गो-महिमासे भरे पड़े हैं। बृहद्धर्मपुराण तथा विष्णुधर्मोत्तर, शिवधर्मोत्तर पुराणोमे भी गो-महिमा भरी पड़ी है। धर्मको वृषभ (बैल)-रूप माना गया है—

वृषो हि भगवान् धर्मो यस्तस्य कुरुते ह्यलम्।
वृषलं तं विदुर्देवास्तस्माद् धर्म न लोपयेत्॥

—इत्यादि श्लोकोंमें गाय और बैलको थोड़ा भी कष्ट देना महान् पाप माना गया है।

पुराणोमें अनेक जगह '**गोमती-विद्या**' और '**गो-सावित्रीस्तोत्र**'का उल्लेख प्राप्त होता है। वे भगवान् व्यासदेवकी रचनाएँ हैं। इनमें उन्होने कहा है—'संसारकी रक्षाके लिये वेद और यज्ञ ही दो श्रेष्ठ उपाय हैं और इन दोनोंका संचालन गायके दूध, घी और बैलोके द्वारा उत्पन्न किये व्रीहिसे निर्मित चरु, पुरोडाश, हविष्य आदिसे ही सम्पन्न होता है। मूलतः ब्राह्मण, वेद और गौ—ये तीनों एक ही हैं। यज्ञकी सम्पन्नताके लिये ब्राह्मण और गौ—ये दोनो अलग-अलग रूपमें दीखते हैं। ब्राह्मणोंके पास तो वेद, मन्त्र और यज्ञ करानेकी बुद्धि और विधियाँ हैं तथा उन्हीं यज्ञोंके लिये हविष्यकी सारी सामग्री गौके उदरमें संनिहित है—

ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम्।
एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति॥

उनके कथनानुसार गायोंसे सात्त्विक वातावरणका निर्माण होता है। गाये अत्यन्त पवित्र हैं, इसलिये जहाँ रहती हैं, वहाँ कोई भी दूषित तत्त्व नहीं रहता। उनके शरीरसे दिव्य सुगन्धयुक्त वायु प्रवाहित होती है और सब प्रकारका कल्याण-ही-कल्याण होता है—

गावः पवित्रं परमं गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपान गावो धन्याः सनातना॥

अर्थात् गौएँ स्वर्ग जानेकी सीढ़ी है। गाएँ सब प्रकारकी कल्याणमयी हैं। देवता तथा मनुष्य सबको भोजन देनेवाली भी गौएँ ही हैं—

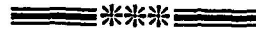
'अन्नमेव परं गावो देवाना हविरुत्तमम्।'

अर्थात् गौएँ समस्त प्राणियोको खिलाने-पिलाने एव जिलानेवाली है।

भगवान् वेदव्यासने वेदान्तदर्शनमे—'क्षीरवद्धि' इस सूत्रमे दिखाया है कि परमात्मा गायके दूधकी तरह शरीरमें स्थित है। बाहर दिखायी नहीं पड़ता, परतु शास्त्रीय विधानसे उसका साक्षात्कार किया जा सकता है। इस प्रकार और भी दूसरे सूत्रोंमे गायके दूधकी उपमा दी गयी है। उनका महाभारतका सम्पूर्ण वैष्णवधर्म-पर्व गो-उपासनासे ही सम्बन्धित है। इनके पिता पराशरजीने 'कृषिपराशर' ग्रन्थ लिखा था, जिसमे गाय-बैलोके द्वारा उत्पन्न अन्नको भी श्रेष्ठ कहा है और यह भी बतलाया है कि खेतीके कामोंमें गायोंको बहुत आरामसे प्रयुक्त करना चाहिये। उन्हे सदा सुख देना चाहिये। उन्हे सदा गोशालाओमे रखना चाहिये। बीमार होनेपर ओषधिकी व्यवस्था करनी चाहिये। गोशालाओंमें किसी प्रकारका भय नहीं होना चाहिये। बारहो महीना उसमें शीत, वर्षा और गर्मीसे रक्षाके लिये साधन होने चाहिये। जिससे उन्हे तथा उनके बच्चोको कष्ट न हो। ये बातें भविष्यपुराणके उत्तरपर्व, मध्यमपर्व एव महाभारतके वैष्णवधर्म-पर्व एव वृहद् व्यासस्मृतिमे भी कही गयी हैं।

मध्यमपर्वमे विस्तारसे कहा गया है कि सभी गाँवोंमें गोचरभूमि रहनी चाहिये। गोचरभूमि गाँवके चारों ओर कम-से-कम एक हजार हाथके परिमाणमें होनी चाहिये। उसमे पीपल आदिके या दूसरे फलदार वृक्ष रखे जा सकते

हैं। उसे कभी भूलकर भी न जोतना चाहिये एवं न खेती-खलिहानके काममें ही लाना चाहिये। आस-पासमें वन-उपवन रहे तो और उत्तम है। पर बड़े खेदकी बात है कि आज गोचरभूमिकी व्यवस्था प्रायः नहीं रह गयी है। इससे गायोंको बड़ा कष्ट हो गया है। उनकी स्वच्छन्दता मिट गयी है। इसलिये भारतमें निवास करनेवाले सभी धर्मात्मा लोगोंसे प्रार्थना है कि गोचरभूमिकी व्यवस्था पुनः प्रवर्तित करें और भविष्य आदि पुराणोमें व्यासनिर्दिष्ट-पद्धतिसे सकल्पपूर्वक दश दिक्पालो आदिका आवाहन-पूजन-स्थापन कर उसे गौओके लिये उत्सर्ग कर दे। इससे गौओका तो कल्याण होगा ही, सभी प्राणियोंमें भगवद्भावना एवं समताकी स्थापना भी होगी। अन्यथा गौ आदि अन्य प्राणियोंकी सर्वथा उपेक्षा कर मनुष्य केवल अपना कल्याण करनेमें कभी सक्षम नहीं हो सकता। केवल मानवतावादी संगठन न बनाकर प्राणिनिकायका कल्याण देखना चाहिये और गौओंका तो सर्वाधिक; क्योकि उनमें सभी देवताओं और तीर्थोका निवास है तथा वे भगवान्‌को सर्वाधिक प्रिय हैं। गौओंकी प्रसन्नतासे सभी देवता, ऋषि, भगवान् भी प्रसन्न होंगे। तभी राष्ट्रका कल्याण होगा। यही भगवान् व्यासदेवके समस्त वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, महाभारत आदिमें प्रदिष्ट गोसेवा-धर्मके प्रतिपादन-पद्धतिका संक्षिप्त सारांश है।



भगवान् आदिशंकराचार्यकी दृष्टिमें गोसेवाका महत्त्व

आचार्य शकरकी सम्प्रदाय-परम्परामे प्रतिदिन पढे जानेवाले ये श्लोक बहुत प्रसिद्ध हैं—

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं
शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥
श्रीशंकराचार्यमथास्य पद्म-
पादं च हस्तामलक च शिष्यम्।
तं त्रोटकं वार्तिककारमन्या-
नस्मद्गुरुं संततमानतोऽस्मि॥
नारायणसमारम्भां शंकराचार्यमध्यगाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥

—इन श्लोकोमे भगवान् नारायणसे लेकर आचार्य शकर एवं उनके शिष्योतककी परम्पराका उल्लेख हुआ है। प्रायः ये सभी-के-सभी अनन्य गोभक्त थे। भगवान् नारायण या कृष्णका आवास ही गोलोकधाम है। उन्होने कृष्णरूपमें अवतीर्ण होकर सर्वोपरि गोसेवाका अद्भुत आदर्श रखा। जिनके लिये कहा गया है—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दोग्धा गोपालनन्दनः॥

इसीलिये उनका गोविन्द, गोपालनन्दन आदि नाम भी पड़ गया। गोवर्धन-पर्वत ही उनका मुख्य भ्रमण-रमणका विहार-स्थल था।

भगवान् आदिशंकराचार्यने प्रायः अपने सभी ग्रन्थोंमें गोमहिमाका गान किया है। वे अद्वयवादी ब्रह्मद्रष्टा थे और ब्रह्मसाक्षात्कारको ही सर्वोपरि उपलब्धि मानते थे। इस ब्रह्मोपलब्धिमें भी गोसेवाको सर्वोपरि साधन मानते थे। उपनिषदोके अनुसार सत्यकाम जाबालको गोसेवासे अतिशीघ्र परमात्मसाक्षात्कार हो गया था। वह जब अपने आचार्य हारिद्रुमत गौतम (हरे वृक्षोंके जंगलमें रहकर गौओंकी सेवा करनेवाले) के पास पहुँचा तो उन्होंने उसे गौ चरानेका ही आदेश दिया और कहा कि जब गौओंकी संख्या एक हजार हो जाय तब वापस आ जाना। उसके साथ चार सौ गौएँ और कुछ साँड़ भी थे। कुछ दिनमें जब उनकी संख्या एक हजार हुई तो वह उन्हें लेकर आचार्यके आश्रमकी ओर चला तो उसकी सात्त्विक श्रद्धासे प्रभावित होकर ब्रह्मविद्याने भी गौ अर्थात् साँड़का रूप धारण कर लिया और उसे ब्रह्मतत्त्वका उपदेश दिया तथा कहा—'ब्रह्म दिव्य प्रकाशसे युक्त होता है। अर्थात् दिव्य विशुद्ध ज्ञानात्मक है।' यह वर्णन विस्तारसे भगवत्पाद शंकराचार्यने अपने शांकरभाष्यमें लिखा है। भगवान् आदिशंकराचार्यके मूल वचन इस प्रकार हैं—

तमेतं श्रद्धातपोभ्यां सिद्धं वायुदेवता दिक्सम्बन्धिनी तुष्टा सत्यृषभमनुप्रविश्यर्षभभावमापन्नानुग्रहाय।

अथ हैनमृषभोऽभ्युवादाभ्युक्तवान् सत्यकाम ३ इति सम्बोध्य तमसौ सत्यकामो भगव इति ह प्रतिशुश्राव प्रतिवचनं ददौ। प्राप्ताः सौम्य सहस्रं स्मः, पूर्णा तव प्रतिज्ञा, अत प्रापय नोऽस्मानाचार्यकुलम्।

यहाँ आचार्यकी भावना या शब्दावली इतनी पवित्र है, जिसकी ठीकसे कल्पना या इयत्ता नहीं मापी जा सकती। भाव यह है कि सत्यकामकी जिज्ञासा, गोसेवाकी चरम परिणति मूर्तिमती श्रद्धा ही ब्रह्मविद्याके रूपमे गौ (वृषभ, ऋषभ या साँड़) में प्रविष्ट हुई, जो हिन्दूशास्त्रोमे साक्षात् धर्मका मूर्तिमान् विग्रह माना गया है। उसने सत्यकामसे कहा—सत्यकाम! देखो, मैं तुम्हें ब्रह्मज्ञानका उपदेश दे रहा हूँ। ब्रह्म चतुष्पाद और षोडशकला अर्थात् सोलह कलाओसे संयुक्त है। उसके पूर्व दिशाका जो पाद है वह विशुद्ध ज्ञानमय और प्रकाशस्वरूप है, ये सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि आदि इसीसे प्रकाशित होते है[1]। और आगे उसीने हंस, मद्गु आदिसे ब्रह्मके सच्चिदानन्दस्वरूपका पूर्ण उपदेश कराया तथा आश्रमपर आते ही सत्यकामसे आचार्यने कहा—सत्यकाम! तुम्हारे मुखपर ब्रह्मतेज विराजमान है, जिससे निश्चय ही तुम्हे परमात्माकी पूर्णतया प्राप्ति हो गयी है।

आचार्यने यह भी लिखा है कि ब्रह्मवेत्ता ही ज्ञानके प्रसादसे पूर्ण प्रसन्नचित्त और मुखपर तेजयुक्त प्रतिभासित होता है—'प्रसन्नेन्द्रियः प्रहसितवदनश्च निश्चिन्तः कृतार्थो ब्रह्मविद्भवति' (छान्दोग्य० ४। ९। २ का भाष्य)।

इसी प्रकार वेदान्तदर्शन 'उपसंहारदर्शनान्नेति चेन्न क्षीरवद्धि।' (२। १। १४) के भाष्यमें आचार्यने लिखा है कि जैसे गोदुग्ध विना किसी अन्य वस्तुके आश्रय लिये दहीके रूपमे विवर्तित होता है इसी प्रकार जैसे मकड़ीको जाला बुननेमे अपने मुँहके लारकी आवश्यकता होती है,[2] किसी बाह्य उपकरणकी आवश्यकता नहीं, वैसे ही परमात्मा स्वय ससारके रूपमे विवर्तित हुआ है। उसे किसी बाह्य उपकरणकी आवश्यकता नहीं होती। आचार्यके मूल वचन इस प्रकार है—

क्षीरवद् द्रव्यस्वभावविशेषादुपपद्यते। यथा हि लोके क्षीर जल वा स्वयमेव दधिहिमभावेन परिणमतेऽनपेक्ष्य बाह्य साधनं तथेहापि भविष्यति। ननु क्षीराद्यपि दध्यादिभावेन परिणममानमपेक्षत एव बाह्य साधनमौष्ण्यादिकम्।

(वेदान्तदर्शनका शाङ्करभाष्य २। १। २४)

इसी प्रकार इनके अनुयायियोने रत्नप्रभा, न्यायनिर्णय, भामती, वेदान्त-कल्पतरु, परिमल एवं आभोग आदि टीकाओमे गो-क्षीरका विस्तारसे विवरण लिखा है। भगवद्गीतामे 'ब्राह्मणे गवि हस्तिनि' मे 'गवि' पदपर आचार्यने तथा भाष्योत्कर्ष दीपिकाकारने पर्याप्त प्रकाश डाला है। आचार्य शकरभगवत्पादके अन्य ग्रन्थोंमे भी गोमहिमाकी चर्चा है। विस्तारभयसे सबका सग्रह नहीं किया गया है। श्रद्धालु लोग स्वयं अन्वेषण कर सकते है। आचार्यकी दृष्टिसे इस प्रकार सबको गोसेवा आदिके द्वारा भगवत्प्राप्ति या परमात्मसाक्षात्कार एव सुख-समृद्धिमे पूर्ण अधिकार है।

गौको दाहिने रखे

पवित्रमग्र्यं जगतः प्रतिष्ठा दिवौकसा मातरोऽथाप्रमेया.।
अन्वालभेद् दक्षिणतो व्रजेच्च दद्याच्च पात्रे प्रसमीक्ष्य कालम्॥

गौ सबसे अधिक पवित्र, जगत्का आधार और देवताओंकी माता है। उसकी महिमा अप्रमेय है। [illegible] स्पर्श करे और उसे दाहिने रखकर चले तथा उत्तम समय देखकर उसका सुपात्र ब्राह्मणको दान करे।

१-यदादित्यगत तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥ (गीता १५। १२)

२-यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधय· सम्भवन्ति। यथा सत· पुरुषात् केशलोमानि [illegible]
(मुण्डक [illegible])

महर्षि च्यवनकी गो-निष्ठा

पूर्वकालकी बात है एक बार महर्षि च्यवन अभिमान, क्रोध, हर्ष और शोकका त्याग करके महान् व्रतका दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए बारह वर्षतक जलके अंदर रहे। जल-जन्तुओंसे उनका बड़ा प्रेम हो गया था और वे उनके आस-पास बड़े सुखसे रहते थे। एक बार कुछ मल्लाहोंने गङ्गाजी और यमुनाजीके जलमें जाल बिछाया। जब जाल खींचा गया, तब उसमें जल-जन्तुओंसे घिरे हुए महर्षि च्यवन भी खिंच आये। जालमें महर्षिको देखकर



मल्लाह डर गये और उनके चरणोंमें सिर रखकर प्रणाम करने लगे। जालके बाहर खींचनेसे, स्थलका स्पर्श होनेसे और त्रास पहुँचनेसे बहुत-से मत्स्य कलपने और मरने लगे। इस प्रकार मत्स्योंका बुरा हाल देखकर ऋषिको बड़ी दया आयी और वे बारंबार लंबी साँस लेने लगे। मल्लाहोंके पूछनेपर मुनिने कहा—'देखो, ये मत्स्य जीवित रहेंगे, तो मैं भी रहूँगा, अन्यथा इनके साथ ही मर जाऊँगा। मैं इन्हें त्याग नहीं सकता।' मुनिकी बात सुनकर मल्लाह डर गये और उन्होंने काँपते हुए जाकर सारा समाचार महाराज नहुषको सुनाया।

मुनिकी संकटमय स्थिति जानकर राजा नहुष अपने मन्त्री और पुरोहितको साथ लेकर तुरंत वहाँ गये। पवित्र-भावसे हाथ जोड़कर उन्होंने मुनिको अपना परिचय दिया और उनकी विधिवत् पूजा करके कहा—'द्विजोत्तम! आज्ञा कीजिये, मैं आपका कौन-सा प्रिय कार्य करूँ ?'

महर्षि च्यवनने कहा—'राजन्! इन मल्लाहोंने आज बड़ा भारी परिश्रम किया है। अतः आप इनको मेरा और मछलियोंका मूल्य चुका दीजिये।' राजा नहुषने तुरंत ही मल्लाहोंको एक हजार स्वर्ण-मुद्रा देनेके लिये पुरोहितजीसे कहा। इसपर महर्षि च्यवन बोले—'एक हजार स्वर्णमुद्रा मेरा उचित मूल्य नहीं है। आप सोचकर इन्हें उचित मूल्य दीजिये।'

इसपर राजाने एक लाख स्वर्णमुद्रासे बढ़ते हुए एक करोड़, अपना आधा राज्य और अन्तमें समूचा राज्य देनेकी बात कह दी, परंतु च्यवन ऋषि राजी नहीं हुए। उन्होंने कहा—'आपका आधा या समूचा राज्य मेरा उचित मूल्य है, ऐसा मैं नहीं समझता। आप ऋषियोंके साथ विचार कीजिये और फिर जो मेरे योग्य हो, वही मूल्य दीजिये।'

महर्षिका वचन सुनकर राजा नहुषको बड़ा खेद हुआ। वे अपने मन्त्री और पुरोहितसे सलाह करने लगे। इतनेहीमें गायके पेटसे जन्मे हुए एक फलाहारी वनवासी मुनिने राजाके समीप आकर उनसे कहा—'महाराज! ये ऋषि जिस उपायसे संतुष्ट होंगे, वह मुझे मालूम है।'

नहुषने कहा—'ऋषिवर! आप महर्षि च्यवनका उचित मूल्य बतलाकर मेरे राज्य और कुलकी रक्षा कीजिये। मैं अगाध दुःखके समुद्रमें डूबा जा रहा हूँ। आप नौका बनकर मुझे बचाइये।'

नहुषकी बात सुनकर मुनिने उन लोगोंको प्रसन्न करते हुए कहा—'महाराज! ब्राह्मण सब वर्णोंमें उत्तम हैं। अतः इनका कोई मूल्य नहीं आँका जा सकता। ठीक इसी प्रकार गौओंका भी कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता। अतएव इनकी कीमतमें आप एक गौ दे दीजिये।'

महर्षिकी बात सुनकर राजाको बड़ी प्रसन्नता हुई और

उन्होंने उत्तम व्रतका पालन करनेवाले महर्षि च्यवनके पास जाकर कहा—'महर्षे! मैंने एक गौ देकर आपको खरीद लिया है। अब आप उठनेकी कृपा कीजिये। मैंने आपका यही उचित मूल्य समझा है।'

च्यवनने कहा—'राजेन्द्र! अब मैं उठता हूँ। आपने मुझे उचित मूल्य देकर खरीद लिया है। मैं इस संसारमें गौओंके समान दूसरा कोई धन नहीं समझता'—

कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥
गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः॥
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ।
गावो यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखम्॥
अमृतं ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च।
अमृतायतनं चैताः सर्वलोकनमस्कृताः॥
तेजसा वपुषा चैव गावो वह्निसमा भुवि।
गावो हि सुमहत्तेजः प्राणिनां च सुखप्रदाः॥
निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किञ्चित् परं स्मृतम्॥
इत्येतद् गोषु मे प्रोक्तं माहात्म्यं भरतर्षभ।
गुणैकदेशवचनं शक्यं पारायणं न तु॥

(महा०, अ० ५१। २७—३४)

वीरवर! गायोंके नाम और गुणोंका कीर्तन करना-सुनना, गायोंका दान देना और उनके दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है। ऐसा करनेसे पापोका नाश और परम कल्याणकी प्राप्ति होती है। गाये लक्ष्मीकी मूल हैं, उनमें पापका लेश भी नहीं है। वे मनुष्योंको अन्न और देवताओको उत्तम हविष्य देती हैं। स्वाहा और वषट्कार नित्य गायोमें ही प्रतिष्ठित हैं। गौएँ ही यज्ञका संचालन करनेवाली और उसकी मुखरूपा हैं। गाये विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दूहनेपर अमृत ही प्रदान करती है। वे अमृतकी आधार हैं। समस्त लोक उनको नमस्कार करते है। इस पृथिवीपर गाये अपने तेज और शरीरमे अग्निके समान हैं। वे महान् तेजोमयी और समस्त प्राणियोको सुख देनेवाली हैं। गोओका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतासे साँस लेता है वह स्थान चमक उठता है और वहाँका सारा पाप नष्ट हो जाता है। गाये स्वर्गकी सीढ़ी हैं और स्वर्गमे भी उनका पूजन होता है। वे समस्त कामनाओको पूर्ण करनेवाली देवियाँ है। उनसे बढ़कर और कोई भी नहीं है। राजन्! यह जो मैंने गायोका माहात्म्य कहा है सो केवल उनके गुणोके एक अंशका दिग्दर्शनमात्र है। गौओंके सम्पूर्ण गुणोंका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।

तदनन्तर मल्लाहोने मुनिसे उनकी दी हुई गौको स्वीकार करनेके लिये कातर प्रार्थना की। मुनिने उनकी दी हुई गौ लेकर कहा—'मल्लाहो! इस गोदानके प्रभावसे तुम्हारे सारे पाप नष्ट हो गये। अब तुम इन जलमें उत्पन्न हुई मछलियोके साथ स्वर्गको जाओ।'

देखते-ही-देखते महर्षि च्यवनके आशीर्वादसे वे मल्लाह तुरंत मछलियोंके साथ स्वर्गको चले गये। उनको इस प्रकार स्वर्गको जाते देख राजा नहुषको बड़ा आश्चर्य हुआ। तदनन्तर राजा नहुषने महर्षिकी और गोजातिकी पूजा की और उनसे धर्ममें स्थित रहनेका वरदान प्राप्त करके वे अपने नगरको लौट आये और महर्षि अपने आश्रमको चले गये। (महा०, अनु० ५०-५१)

गोबरसे चौका लगाना चाहिये

लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमङ्गला।
गोमयालेपनं तस्मात् कर्तव्यं पाण्डुनन्दन॥

(स्कन्द०, अव०, रेवा० ८३। १०८)

गोबरमें परम पवित्र सर्वमङ्गलमयी श्रीलक्ष्मीजी नित्य निवास करती हैं, इसलिये गोबरसे लेपन करना चाहिये।

महाराज ऋतम्भरकी गो-सेवा

[गोसेवा-व्रतसे पुत्रप्राप्ति और रामनाम-स्मरणसे गोहत्या-पापका नाश]

ऋतम्भर नामके एक राजा थे। उनके कई स्त्रियाँ थीं, पर उनके कोई संतान नहीं थी। एक दिन अकस्मात् जावालि मुनि आ पहुँचे। राजाने स्वागत-सत्कारके वाद संतानके लिये उपाय पूछा। मुनिने गायोकी महिमाका गान करते हुए कहा—

'विष्णोः प्रसादो गोश्चापि शिवस्याप्यथवा पुनः।'

भगवान् विष्णु, गौ और भगवान् शङ्करकी कृपासे पुत्रकी प्राप्ति हो सकती है।

राजाने आदरपूर्वक मुनिसे पूछा—'मुने! गौकी पूजा किस प्रकार की जानी चाहिये और उससे क्या फल होगा।' मुनिने कहा—'महाराज! गो-सेवाका व्रत लेनेवाले पुरुपको गाय चरानेके लिये स्वयं प्रतिदिन जगलमे जाना चाहिये। गायको जौ खिलाकर उसके गोवरमे जितने जौ निकले उनको चुनकर संग्रह करना चाहिये और पुत्रकी इच्छा करनेवाले पुरुपको वही जौ खाने चाहिये। जव गौ जल पी चुके तभी उसे भी पवित्र जल पीना चाहिये। गौ जव ऊँची जगहपर रहे तव उससे नीची जगहमे रहना चाहिये। निरन्तर गौके शरीरसे मच्छर और डाँसोको हटाना चाहिये और उसके खानेके लिये अपने हाथो घास लानी चाहिये। इस प्रकार यदि तुम गोसेवा-व्रतका पालन करोगे तो गौ माता तुम्हें निश्चय ही धर्मपरायण पुत्र देगी।'

पुत्रकामी धर्मात्मा राजा ऋतम्भरने मुनिके आज्ञानुसार गो-सेवाव्रत ग्रहण कर लिया। एक दिन वनमे राजा प्रकृतिकी शोभा देख रहे थे कि इसी वीच दूसरे वनसे आकर एक सिंहने गौको मार डाला। उस समय गौने वड़े कातर-स्वरसे डकारनेकी ऊँची आवाज की। राजाने दौड़कर देखा और अपनी गौ माताको सिंहके द्वारा निहत जानकर वे विकल होकर रोने लगे। तदनन्तर धैर्य-धारण करके वे जावालि मुनिके पास आये और सारी घटना सुनाकर उनसे इस पापसे छूटनेका और पुत्रप्रद व्रतकी पूर्तिका उपाय पूछा। मुनिने कहा—'पापोंका नाश करनेके लिये शास्त्रोंने भाँति-भाँतिके प्रायश्चित्त बतलाये हैं। नियमानुसार उनका अनुष्ठान



करनेसे पाप नष्ट हो जाते हैं। परंतु—

द्वयोर्वै निष्कृतिर्नास्ति पापपुञ्जकृतोस्तयोः।
मत्या गोवधकर्तुश्च नारायणविनिन्दितुः॥
गवां यो मनसा दुःखं वाञ्छत्यधमसत्तमः।
स याति निरयस्थानं यावदिन्द्राश्चतुर्दश॥
योऽपि देवं हरिं निन्देत् सकृद्दुर्भाग्यवान् नरः।
स चापि नरकं गच्छेत् पुत्रपौत्रपरीवृतः॥
तस्माज्ज्ञात्वा हरिं निन्दन् गोषु दुःखं समाचरन्।
कदापि नरकान्मुक्तिं न प्राप्नोति नरेश्वर॥

(पद्म०, पाताल० १९। ३३—३६)

'जान-बूझकर गो-वध और भगवान् नारायणकी निन्दा करनेवाले—इन दोनों महान् पापियोका निस्तार नहीं हो सकता। जो नराधम मनमे भी गायोके दुःख होनेकी इच्छा कर लेता है, उसे चौदह इन्द्रोंके कालतक नरकमें

रहना पड़ता है। जो अभागा मनुष्य एक बार भी भगवान् हरिकी निन्दा करता है, वह अपने पुत्र-पौत्रोके साथ नरकमें जाता है। इसलिये राजन्! जो मनुष्य जान-बूझकर भगवान्‌की निन्दा और गायोंको दुःख देता है, उसका नरकसे छुटकारा कभी नहीं हो सकता।'

परंतु अज्ञानसे किये हुए गो-वधका प्रायश्चित्त है। तुम राजा ऋतुपर्णके पास जाओ, वे तुम्हे उचित परामर्श देंगे।

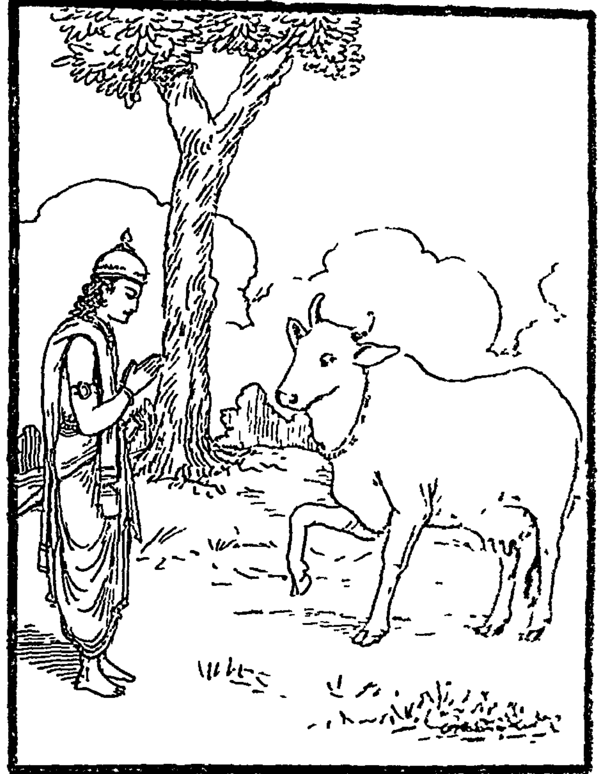
जाबालि मुनिके आज्ञानुसार राजा ऋतम्भर समदृष्टिसम्पन्न श्रीराम-भक्त राजा ऋतुपर्णके पास गये और सारी कथा सुनाकर उन्होंने उपाय पूछा। प्रतापवान् धर्मविद् बुद्धिमान् ऋतुपर्णने हँसते हुए कहा—'महाराज! कहाँ शास्त्रवेत्ता मुनि और कहाँ मैं। आप उन्हें छोड़कर मुझ पण्डिताभिमानी मूर्खके पास क्यो आये? परंतु यदि मेरे ही प्रति आपकी श्रद्धा है तो मैं निवेदन करता हूँ, आप आदरपूर्वक सुनिये—

भज श्रीरघुनाथं त्वं कर्मणा मनसा गिरा।
नैष्कापट्येन लोकेशं तोषयस्व महामते॥
संतुष्टो दास्यते सर्वं तव हृत्स्थं मनोरथम्।
अज्ञानकृतगोहत्यापापनाशं करिष्यति॥

(पद्म०, पाताल० १९। ४६-४७)

'महामते! अब आप कपट छोड़कर तन, मन, वचनसे सर्वलोकेश्वर भगवान् श्रीरामका भजन कीजिये और उनको संतुष्ट कीजिये। वे संतुष्ट होकर आपके हृदयकी समस्त कामनाओंको पूर्ण कर देगे और आपके इस अज्ञानकृत गो-हत्या-पापको भी नष्ट कर देगे।'

महाराज ऋतुपर्णसे आदेश प्राप्त करके गो-सेवाव्रती राजा ऋतम्भर भगवान् श्रीरामके भजन-स्मरणसे पवित्रात्मा होकर पुनः व्रतपालनमे लग गये। वे प्राणिमात्रके हित-साधनमे लगकर निरन्तर भगवान् श्रीरामचन्द्रके नामका स्मरण करते हुए गो-सेवाके लिये महान् वनमें चले गये। कुछ दिनोके बाद उनकी सेवासे सतुष्ट होकर कृपामयी देवी



कामधेनुने प्रकट होकर उन्हे अभीष्ट वर दिया और फिर वे अन्तर्धान हो गयीं। उसी वरके फलस्वरूप नरेन्द्र ऋतम्भरके घर परम भक्त सत्यवान् नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। (पद्म०, पाताल० १८। १९)

हलका धर्म्याधर्म्य-विचार

हलमष्टगवं धर्म्यं षड्गवं वृत्तिलक्षणम्। चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं गोजिघांसुमत्॥
× × ×। द्विगवं वाहयेत् पादं मध्याह्नन्तु चतुर्गवम्॥
षड्गवं तु त्रियामाहेऽष्टभिः पूर्णं तु वाहयेत्। न याति नरकेष्वेवं वर्तमानस्तु वै द्विजः॥ (पाराशरस्मृति अ० २)

आठ बैलोंका हल धर्मका, छः बैलोका हल जीविका करनेवालोका, चार बैलोका हल निर्दयीका और दो बैलोंका हल गोहत्यारेका है। दो बैलवाले हलको चौथाई दिन, चार बैलवाले हलको आधा दिन, छः बैलवाले हलको तीन पहर और आठ बैलवाले हलको दिनभर जोतनेसे द्विज नरकमे नहीं जाते।

जबालापुत्र सत्यकामको गोसेवासे ब्रह्मज्ञान

एक सदाचारिणी ब्राह्मणी थी, उसका नाम था जवाला। उसका एक पुत्र था सत्यकाम। जव वह विद्याध्ययन करने योग्य हुआ, तव एक दिन अपनी मातासे कहने लगा—'माँ! मैं गुरुकुलमें निवास करना चाहता हूँ, गुरुजी जव मुझसे नाम और गोत्र पूछेगे तो मै अपना कौन गोत्र वतलाऊँगा?' इसपर उसने कहा कि 'पुत्र! मुझे तेरे पितासे गोत्र पूछनेका अवसर नहीं प्राप्त हुआ, क्योकि उन दिनो मैं सदा अतिथियोकी सेवामें ही व्यस्त रहती थी। अतएव जव आचार्य तुमसे गोत्रादि पूछें, तव तुम इतना ही कह देना कि मैं 'जवाला'का पुत्र 'सत्यकाम' हूँ।' माताकी आज्ञा लेकर सत्यकाम हारिद्रुमत गौतमऋषिके यहाँ गया और वोला—'मै श्रीमान्‌के यहाँ ब्रह्मचर्यपूर्वक सेवा करने आया हूँ।' आचार्यने पूछा—'वत्स! तुम्हारा गोत्र क्या है?'

सत्यकामने कहा—'भगवन्! मेरा गोत्र क्या है, इसे मैं नहीं जानता। मैं 'सत्यकाम जावाल' हूँ, बस, इतना ही इस सम्वन्धमे जानता हूँ।' इसपर गौतमने कहा—'वत्स! ब्राह्मणको छोडकर दूसरा कोई भी इस प्रकार सरल भावसे सच्ची बात नहीं कह सकता। जा, थोड़ी समिधा ले आ। मैं तेरा उपनयन-संस्कार करूँगा।'

सत्यकामका उपनयन करके चार सौ दुर्वल गायोंको उसके सामने लाकर गौतमने कहा—'तू इन्हे वनमे चराने ले जा। जवतक इनकी संख्या एक हजार न हो जाय, इन्हें वापस न लाना।' उसने कहा—'भगवन्! इनकी संख्या एक हजार हुए विना मैं न लौटूँगा।'

सत्यकाम गायोको लेकर वनमें गया। वहाँ वह कुटिया वनाकर रहने लगा और तन-मनसे गौओंकी सेवा करने लगा। धीरे-धीरे गायोकी संख्या पूरी एक हजार हो गयी। तव एक दिन एक वृषभ (साँड) ने सत्यकामके पास आकर कहा—'वत्स! हमारी संख्या एक हजार हो गयी है, अव तू हमें आचार्यकुलमे पहुँचा दे। साथ ही ब्रह्मतत्त्वके सम्वन्धमें तुझे एक चरणका मैं उपदेश देता हूँ। वह ब्रह्म 'प्रकाशस्वरूप' है, इसका दूसरा चरण तुझे



अग्नि बतलायेगे।'

सत्यकाम गौओको हाँककर आगे चला। संध्या होनेपर उसने गायोंको रोक दिया और उन्हें जल पिलाकर वहीं रात्रि-निवासकी व्यवस्था की। तत्पश्चात् काष्ठ लाकर उसने अग्नि जलायी। अग्निने कहा—'सत्यकाम! मैं तुझे ब्रह्मका द्वितीय पाद बतलाता हूँ; वह 'अनन्त' लक्षणात्मक है, अगला उपदेश तुझे हंस करेगा।'

दूसरे दिन सायंकाल सत्यकाम पुनः किसी सुन्दर जलाशयके किनारे ठहर गया और उसने गौओंके रात्रि-निवासकी व्यवस्था की। इतनेमें ही एक हंस ऊपरसे उड़ता हुआ आया और सत्यकामके पास बैठकर बोला—'सत्यकाम!' सत्यकामने कहा—'भगवन्! क्या आज्ञा है?' हंसने कहा—'मैं तुझे ब्रह्मके तृतीय पादका उपदेश कर रहा हूँ, वह 'ज्योतिष्मान्' है, चतुर्थ पादका उपदेश तुझे मुद्ग

(जलकुक्कुट) करेगा।'

दूसरे दिन सायंकाल सत्यकामने एक वटवृक्षके नीचे गौओके रात्रिनिवासकी व्यवस्था की। अग्नि जलाकर वह बैठ ही रहा था कि एक जलमुर्गने आकर पुकारा और कहा—'वत्स! मैं तुझे ब्रह्मके चतुर्थ पादका उपदेश करता हूँ, वह 'आयतनस्वरूप' है।'

इस प्रकार उन-उन देवताओसे सच्चिदानन्दघन-लक्षण परमात्माका बोध प्राप्तकर एक सहस्र गौओंको लेकर सत्यकाम आचार्य गौतमके यहाँ पहुँचा। आचार्यने उसकी चिन्तारहित, तेजपूर्ण दिव्य मुखकान्तिको देखकर कहा—'वत्स! तू ब्रह्मज्ञानीके सदृश दिखलायी पडता ह।' सत्यकामने कहा—'भगवन्! मुझे मनुष्येतरोसे विद्या मिली है। मैंने सुना है कि आपके सदृश आचार्यके द्वारा प्राप्त हुई विद्या ही श्रेष्ठ होती है, अतएव मुझे आप ही पूर्णरूपसे उपदेश कीजिये।' आचार्य बड़े प्रसन्न हुए और बोले—'वत्स! तूने जो प्राप्त किया है, वही ब्रह्मतत्त्व है।' तदनन्तर आचार्यने उस सम्पूर्ण तत्त्वका पुनः ठीक उसी प्रकार उपदेश किया। (छान्दोग्य० ४। ४—९)



गोसंरक्षक सम्राट् दिलीपका गोप्रेम

महाराज दिलीप और देवराज इन्द्रमे मित्रता थी। देवराजके बुलानेपर दिलीप एक बार स्वर्ग गये। वहाँसे लौटते समय मार्गमें कामधेनु मिली, किंतु दिलीपने पृथ्वीपर आनेकी आतुरताके कारण उसे देखा नहीं। कामधेनुको उन्होंने प्रणाम नहीं किया। इस अपमानसे रुष्ट होकर कामधेनुने शाप दिया—'मेरी संतान यदि कृपा न करे तो यह पुत्रहीन ही रहेगा।'

महाराज दिलीपको शापका कुछ पता नहीं था। किंतु उनके कोई पुत्र न होनेसे वे स्वयं, महारानी तथा प्रजाके लोग भी चिन्तित एवं दुखी रहते थे। पुत्र-प्राप्तिकी इच्छासे महाराज रानीके साथ कुलगुरु महर्षि वसिष्ठके आश्रमपर पहुँचे। महर्षिने उनकी प्रार्थना सुनकर आदेश दिया—'कुछ काल आश्रममे रहो और मेरी होमधेनु नन्दिनीकी सेवा करो।'

महाराजने गुरुकी आज्ञा स्वीकार कर ली। महारानी सुदक्षिणा प्रातःकाल उस गौकी भलीभाँति पूजा करती थीं। आरती उतारकर नन्दिनीको पतिके संरक्षणमें वनमे चरनेके लिये बिदा करतीं। सम्राट् दिनभर छायाकी भाँति उसका अनुगमन करते, उसके ठहरनेपर ठहरते, चलनेपर चलते, बैठनेपर बैठते और जल पीनेपर जल पीते[1]। संध्या-कालमे जब सम्राट्के आगे-आगे सद्यःप्रसूता, बालवत्सा (छोटे



दुधमुँहे बछड़ेवाली) नन्दिनी आश्रमको लौटती तो [illegible]

१-स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्धधीरः। जलाभिलाषी जलमाददाना छायेव तां [illegible] [illegible]

देवी सुदक्षिणा हाथमे अक्षत-पात्र लेकर उसकी प्रदक्षिणा करके उसे प्रणाम करतीं और अक्षतादिसे पुत्र-प्राप्तिरूप अभीष्ट-सिद्धि देनेवाली उस नन्दिनीका विधिवत् पूजन करतीं[१]। अपने वछड़ेको यथेच्छ पयःपान करानेके बाद दुह ली जानेपर नन्दिनीकी रात्रिमें दम्पति पुनः परिचर्या करते, अपने हाथोंसे कोमल हरित शष्प-कवल खिलाकर उसकी परितृप्ति करते और उसके विश्राम करनेपर शयन करते। इस तरह उसकी परिचर्या करते इक्कीस दिन बीत गये।

एक दिन वनमें नन्दिनीका अनुगमन करते महाराज दिलीपकी दृष्टि क्षणभर अरण्यकी प्राकृतिक सुषमामे अटक गयी कि तभी उन्हे नन्दिनीका आर्तनाद सुनायी दिया। वह एक भयानक सिंहके पंजोमे फँसी छटपटा रही थी। उन्होने आक्रामक सिहको मारनेके लिये अपने तरकशसे तीर निकालना चाहा, किंतु उनका हाथ जडवत् निश्चेष्ट होकर वहीं अटक गया, वे चित्र-लिखे-से खडे रह गये और मन्त्र-रुद्ध भीषण भुजंगकी भाँति विफल आक्रोशसे भीतर-ही-भीतर छटपटाने लगे, तभी मनुष्यकी वाणीमे सिंह वोल उठा—'राजन्! तुम्हारे शस्त्र-सधानका श्रम उसी तरह व्यर्थ है जैसे वृक्षोंको उखाड़ देनेवाला प्रभजन पर्वतसे टकराकर व्यर्थ हो जाता है[२]। मैं भगवान् शिवके गण निकुम्भका मित्र कुम्भोदर हूँ। भगवान् शिवने सिहवृत्ति देकर मुझे हाथी आदिसे इस वनके देवदारुओकी रक्षाका भार सौंपा है। इस समय जो भी जीव सर्वप्रथम मेरे दृष्टिपथमे आता है वह मेरा भक्ष्य वन जाता है। इस गायने इस संरक्षित वनमे प्रवेश करनेकी अनधिकार चेष्टा की है और मेरे भोजनकी वेलामे यह मेरे सम्मुख आयी है, अतः मैं इसे खाकर अपनी क्षुधा शान्त करूँगा। तुम लज्जा और ग्लानि छोडकर वापस लौट जाओ।

किंतु परदुःखकातर दिलीप भय और व्यथासे छटपटाती, नेत्रोसे अविरल अश्रुधारा वहाती नन्दिनीको देखकर और उस सध्याकालमें अपनी माँकी उत्कण्ठासे प्रतीक्षा करनेवाले उसके दुधमुँहे वछडेका स्मरण कर करुणा-विगलित हो उठे। नन्दिनीका मातृत्व उन्हें अपने जीवनसे कहीं अधिक मूल्यवान् जान पड़ा और उन्होंने सिंहसे प्रार्थना की कि वह उनके शरीरको खाकर अपनी भूख मिटा ले और बालवत्सा नन्दिनीको छोड़ दे—

स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं
देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद।
दिनावसानोत्सुकबालवत्सा
विसृज्यतां धेनुरियं महर्षेः॥
(रघु० २। ४५)

सिंहने राजाके इस अद्भुत प्रस्तावका उपहास करते हुए कहा—'राजन्! तुम चक्रवर्ती सम्राट् हो। गुरुको नन्दिनीके बदले करोड़ों दुधार गौएँ देकर प्रसन्न कर सकते हो। इस तुच्छ प्राणीके लिये अपने स्वस्थ-सुन्दर शरीर और यौवनकी अवहेलना कर जानकी बाजी लगानेवाले सम्राट्! लगता है, तुम अपना विवेक खो बैठे हो—

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्॥
(रघु० २। ४७)

यदि प्राणियोंपर दया करनेका तुम्हारा व्रत ही है तो भी आज यदि इस गायके बदलेमें मैं तुम्हें खा लूँगा तो तुम्हारे मर जानेपर केवल इसकी ही विपत्तिसे रक्षा हो सकेगी और यदि तुम जीवित रहे तो पिताकी भाँति सम्पूर्ण प्रजाकी निरन्तर विपत्तियोंसे रक्षा करते रहोगे[३]। इसलिये तुम अपने सुखभोक्ता शरीरकी रक्षा करो। स्वर्ग-प्राप्तिके लिये तप त्याग करके शरीरको कष्ट देना तुम-जैसे अमित ऐश्वर्यशालियोंके लिये निरर्थक है। स्वर्ग? अरे, वह तो इसी पृथ्वीपर है। जिसे सांसारिक वैभव-विलासके समग्र साधन उपलब्ध हैं, वह समझो कि स्वर्गमें ही रह रहा है। स्वर्गका काल्पनिक आकर्षण तो मात्र विपन्नोके लिये ही है, सम्पन्नोंके लिये नहीं[४]।

१-प्रदक्षिणीकृत्य पयस्विनीं तां सुदक्षिणा साक्षतपात्रहस्ता। प्रणम्य चानर्च विशालमस्या. शृगान्तर द्वारमिवार्थसिद्धेः॥
२-अल महीपाल तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात्। न पादपोन्मूलनशक्ति रहः शिलोच्चये मूर्च्छति मारुतस्य॥
३-भूतानुकम्पा तव चेदिय गौरेका भवेत् स्वस्तिमती त्वदन्ते। जीवन् पुन. शश्वदुपप्लवेभ्य· प्रजाः प्रजानाथ पितेव पासि॥
४-तद्रक्ष कल्याणपरम्पराणा भोक्तारमूर्जस्वलमात्मदेहम्। महीतलस्पर्शनमात्रभिन्नमृद्धं हि राज्य पदमैन्द्रमाहुः॥
(रघुवंश २। २१, ३४, ४८, ५०)

भगवान् शंकरके अनुचर सिंहकी बात सुनकर अत्यन्त दयालु महाराज दिलीपने उसके द्वारा आक्रान्त नन्दिनीको देखा जो अश्रुपूरित कातर नेत्रोंसे उनकी ओर देखती हुई प्राणरक्षाकी याचना कर रही थी।

राजाने क्षत्रियत्वके महत्त्वको प्रतिपादित करते हुए उत्तर दिया—'नहीं सिंह! नहीं, मैं इसे तुम्हारा भक्ष्य बनाकर नहीं लौट सकता। मैं अपने क्षत्रियत्वको क्यों कलंकित करूँ?' क्षत्रिय संसारमे इसलिये प्रसिद्ध हैं कि वे 'क्षत'—विनाश या विपत्तिसे औरोंकी रक्षा करते हैं। राज्यका भोग उनका लक्ष्य नहीं। उनका लक्ष्य तो है लोक-रक्षासे कीर्ति अर्जित करना। निन्दासे मलिन प्राणो और राज्यको तो वे तुच्छ वस्तुओंकी तरह त्याग देते है—

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः
क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।
राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः
प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा ॥

(रघु० २। ५३)



इसलिये तुम मेरे यशःशरीरपर दयालु होओ—मेरे भौतिक शरीरको खाकर उसकी रक्षा करो; क्योकि यह शरीर तो नश्वर है, मरणधर्मा है। इसलिये इसपर हम-जैसे विचारशील पुरुषोंकी ममता नहीं होती। हम तो यशः-शरीरके पोषक हैं—

किमप्यहिंस्यस्तव चेन्मतोऽहं
यशःशरीरे भव मे दयालुः।
एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां
पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु॥

(रघु० २। ५७)

सिंहके स्वीकृति दे देनेपर राजर्षि दिलीपने शस्त्रोको फेक दिया और उसके आगे अपना शरीर मांसपिण्डकी तरह खानेके लिये डाल दिया[1] और वे उसके आक्रमणकी प्रतीक्षा करने लगे, तभी आकाशसे विद्याधर उनपर पुष्पवृष्टि करने लगे। नन्दिनीने कहा—'हे पुत्र! उठो!' यह मधुर दिव्य वाणी सुनकर राजाको महान् आश्चर्य हुआ और उन्होने वात्सल्यमयी जननीकी तरह अपने स्तनोसे दूध बहाती हुई नन्दिनी गौंको देखा, किंतु सिंह दिखलायी नहीं दिया[2]। आश्चर्यचकित दिलीपसे नन्दिनीने कहा—'हे सत्पुरुष! तुम्हारी परीक्षा लेनेके लिये मैंने ही मायासे सिंहकी सृष्टि की थी। महर्षि वसिष्ठके प्रभावसे यमराज भी मुझपर प्रहार नहीं कर सकता तो अन्य हिंसक सिंहादिकी क्या शक्ति है। मैं तुम्हारी गुरुभक्तिसे और मेरे प्रति प्रदर्शित दयाभावसे अत्यन्त प्रसन्न हूँ। वर माँगो। तुम मुझे दूध देनेवाली मामूली गाय मत समझो अपितु सम्पूर्ण कामनाएँ पूरी करनेवाली कामधेनु जानो[3]।' राजाने दोनो हाथ जोडकर वंश चलानेवाले [illegible]

१-स न्यस्तशस्त्रो हरये स्वदेहमुपानयत् पिण्डमिवामिषस्य॥

२-उत्तिष्ठ वत्सेत्यमृतायमान वचो निशम्योत्थितमुत्थितः सन्। ददर्श राजा जननीमिव स्वां गामग्रतः प्रस्रविणीं न सिंहम्॥

३-भक्त्या गुरौ मय्यनुकम्पया च प्रीतास्मि ते पुत्र वर वृणीष्व । न केवलाना पयसां प्रसूतिमवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्॥

(रघु० [illegible])

याचना की—

वंशस्य कर्तारमनन्तकीर्तिं
सुदक्षिणायां तनयं ययाचे॥
(रघु० २। ६४)

नन्दिनीने 'तथास्तु' कहकर उन्हें पत्तेके दोनेमें अपना दूध दुहकर पी लेनेकी आज्ञा दी—

दुग्ध्वा पयः पत्रपुटे मदीयं
पुत्रोपभुङ्क्ष्वेति तमादिदेश॥
(रघु० २। ६५)

राजाने निवेदन किया—'माँ! बछड़ेके पीने तथा होमादि अनुष्ठानके बाद बचे हुए ही तुम्हारे दूधको मै पी सकता हूँ।'

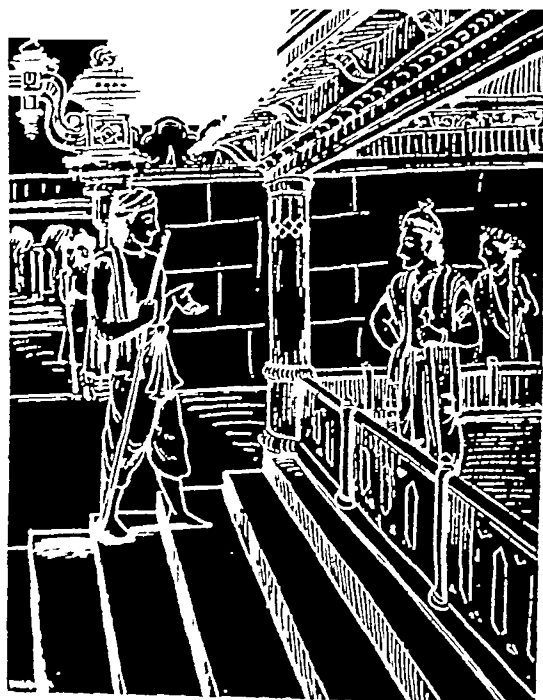
राजाके धैर्यने नन्दिनीके हृदयको जीत लिया। वह प्रसन्नमना धेनु राजाके आगे-आगे आश्रमको लौट आयी। राजाने बछड़ेके पीने तथा अग्निहोत्रसे बचे दूधका महर्षिकी आज्ञा पाकर पान किया, फलतः वे रघु-जैसे महान् यशस्वी पुत्रसे पुत्रवान् हुए और उनकी गोभक्ति तथा गोसेवा सभीके लिये एक महानतम आदर्श बन गयी। इसीलिये आज भी गोभक्तोंकी परिगणनामें महाराज दिलीपका नाम बड़े ही श्रद्धाभाव एवं आदरसे सर्वप्रथम लिया जाता है।

(डॉ० श्रीदादूरामजी शर्मा, एम्० ए० (संस्कृत, हिन्दी), पी-एच्०डी०)

राजा विराटकी गोसम्पदा और पाण्डुपुत्र सहदेवकी गो-चर्या

गौ भारतकी राष्ट्रिय समृद्धि और सम्पदाकी विशिष्ट प्रतीक रही है। तपोवन-संस्कृतिकी यह महत्त्वपूर्व अङ्ग थी। गृहस्थोंकी ही नहीं आश्रममें रहनेवाले ऋषियोंकी समृद्धिका परिचय भी उनके यहाँ रहनेवाली गौओंकी संख्यासे मिलता है। उपनिषदोंमें ऐसी अनेक कथाएँ हैं, जिनमें राजा शास्त्रार्थमें विजयी ऋषियोको अनेक सोनेसे मढ़ी सींगोंवाली गायें देनेकी घोषणा करते थे। महाभारतमें मत्स्यदेशके राजा विराटके गोहरणकी कथामें इसका ऐतिहासिक प्रमाण मिलता है कि गोसम्पदाको कितना महत्त्व दिया जाता था तथा राजाओके यहाँ उनके रक्षणकी व्यवस्था क्या थी।

राजा विराटका मत्स्यदेश अपनी विशाल गोसम्पदाके लिये प्रसिद्ध था। यह सम्पदा इतनी विशाल थी कि दूसरे राष्ट्रोंकी आँख इसपर लगी रहती थी। द्रौपदीसहित पाँचो पाण्डव अपने वनवासके तेरहवें वर्षमें छद्म-वेषमें राजा विराटके यहाँ रह रहे थे। इधर दुर्योधन अपने गुप्तचरोंद्वारा चारों ओर उनकी खोज करवा रहा था। इसी क्रममें दुर्योधनने राजा विराटके यहाँ भी गुप्तचरोको भेजा और राजा विराटके गोधनका अपहरण करनेकी योजना बनायी। दुर्योधनको यह सम्भावना थी कि यदि पाण्डव वहाँ छिपे होंगे तो निश्चय ही वे अपने मित्र विराटके गोधनकी रक्षाके लिये बाहर आयेंगे। यदि उनका पता नहीं भी लगेगा तो गायोंकी विशाल सम्पदा हमारे हाथ लगेगी ही। अतः उन्होंने मत्स्यदेशपर चढ़ाई कर दी। और विशाल गोसम्पदाका अपहरण कर लिया, परंतु पाण्डवोके सहयोगसे राजा विराटने पुनः उसे प्राप्त कर लिया।



सहदेव ग्वालोंका परम उत्तम रूप बनाकर विराटकी

सभामें गये। वहाँ उन्होने पाण्डवोकी गोसमृद्धि और उसकी व्यवस्थाका राजा विराटको जो परिचय दिया है उससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि राजाओके यहाँ गायोके संरक्षण और उनके पालनकी विशेष व्यवस्था थी और उसके लिये पृथक् विभाग हुआ करता था। महाभारतके उल्लेखसे ज्ञात होता है कि विराटके यहाँ गौओके रहनेका स्थान राजभवनके निकट ही था—

गोष्ठमासाद्य तिष्ठन्तं भवनस्य समीपत·।

(विराटपर्व १०। २)

विराटके समक्ष सहदेवने अपना परिचय दिया कि वे पाण्डवोके यहाँ गोसंरक्षक थे। उनका काम गौओंकी गणना और उनकी देखभाल करना था। पाण्डवोकी गौओकी विशाल संख्या, उनका वर्गीकरण, गणना और देखभालकी व्यवस्थाका परिचय उन्होने राजा विराटके समक्ष इस रूपमे दिया—'युधिष्ठिरके पास गौओके आठ लाख वर्ग थे और प्रत्येक वर्गमे सौ-सौ गाये थीं। इनसे भिन्न प्रकारकी गायोके एक लाख वर्ग तथा तीसरे प्रकारकी गायोके इनसे दूने अर्थात् दो लाख वर्ग थे। पाण्डवोंकी इतनी गायोका मैं गणक तथा निरीक्षक था। वे लोग मुझे 'तन्तिपाल' कहा करते थे। गायोकी मुझे इतनी सूक्ष्म पहचान है कि चारो ओर दस योजनकी दूरीमे जितनी गाये हो उनकी भूत, वर्तमान, भविष्यमे जितनी संख्या थी, है और होगी, उसे बतला सकता हूँ। गौओके सम्बन्धमे तीनो कालोमें होनेवाली कोई ऐसी बात नहीं है जो मुझे ज्ञात न हो। महाराज युधिष्ठिर मेरे इन गुणोंसे भलीभाँति परिचित थे, इसलिये वे मुझपर सदा संतुष्ट रहते थे। जिन-जिन उपायोसे गौओकी सख्या शीघ्र बढ़ जाती है और उनमे कोई रोग नहीं होता, वह सब मुझे ज्ञात है। इसके अतिरिक्त उत्तम लक्षणवाले उन बैलोकी भी मुझे पहचान है, जिनके मूत्रको सूँघ लेनेमात्रसे वंध्या स्त्री भी गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है—

ऋषभाश्चापि जानामि राजन् पूजितलक्षणान्।
येषां मूत्रमुपाघ्राय अपि वन्ध्या प्रसूयते॥

(विराट० १०। १४)

सहदेवद्वारा कथित विवरणमे ज्ञात होता है कि उस युगका गोलक्षण और सरक्षण-विज्ञान अत्यन्त विकसित था और वड़े राजाओके यहाँ इसकी विशेष व्यवस्था थी। राजा विराटके राज्यमे भी एक लाख गाये थीं। इनमे कुछ तो एक ही रंगकी थीं और कुछ मिश्रित रंगकी। ये सभी भिन्न-भिन्न गुणोसे युक्त थीं। विराटने अपनी सम्पत्तिका परिचय इन शब्दोमे दिया है—

शतं सहस्राणि समाहितानि
सवर्णवर्णस्य विमिश्रितान् गुणैः।

(विराटपर्व १०। १५)

विराटने सहदेवको पशुपालकोके साथ इन गौओके संरक्षणका भार सौंपा। गोपाल पशुपालनमे ही नहीं, युद्धकलामे भी निपुण होते थे। जव कोरवोके मित्र त्रिगर्तोंकी सेनाने गौओकी वस्तीपर आक्रमण किया और गौओको हरकर ले जाने लगे तव गोपालोने अस्त्र-शस्त्रोसे वीरतापूर्वक युद्ध किया। युद्धमे उन्होने परशु मुसल, भिन्दिपाल, मुद्गर तथा कर्षण नामक विचित्र अस्त्रोका प्रयोग किया। पहली वार तो वे अश्व-सैनिकोको मार भगानेमे सफल हुए, किंतु सैनिकोंकी शरवर्षाके आगे वे टिक नहीं सके। त्रिगर्तराज गौओका अपहरण करके ले जाते हैं। विराट उन्हें छुडानेके लिये जाते है, किंतु वंदी वना लिये जाते हैं। विराटके युद्धके लिये जाते ही कौरव उत्तर दिशासे मत्स्यदेशपर आक्रमण कर देते है और वहाँकी साठ हजार गौओका अपहरण कर लेते हैं। अर्जुन भीषण युद्धद्वारा कौरवोंको विराट् सेनापर विजय प्राप्त करके गौओंको मुक्त करते हैं। यहीं पाण्डवोका अज्ञातवास समाप्त होता है और वे अपना छद्मवेष त्यागकर अपने असली रूपमे प्रकट होते हैं।

महाभारतका यह गोहरण-आख्यान महाभारतकालीन गोसम्पदाके महत्त्व तथा गोरक्षण-व्यवस्थाका ऐतिहासिक प्रमाण है। गौ राष्ट्रकी महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति समझी जाती थी तथा उसकी अस्मिता और गरिमाका प्रश्न इससे जुड़ा हुआ था।

(डॉ० श्रीजगदीश्वरप्रसादजी, डी० लिट्०)



संत नामदेवजीकी गोनिष्ठा

परम गोभक्त संत नामदेवजीने लोगोको ईश्वर-भक्तिका सच्चा मार्ग दिखाया। ईश्वर-कृपासे समस्त भारतके लोगोंके कल्याणार्थ जब संत नामदेव यात्रापर निकले, उस समय उनके साथ ज्ञानेश्वर, सोपानदेव, निवृत्तिनाथ, बहन मुक्ताबाई, साँवता माली, गोरा कुम्हार, चोखामेला, सेना नाई, नरहरि सुनार, गोणाबाई आदि संत महात्मा अमृत-रस बरसाने महाराष्ट्रसे चल पड़े। धीरे-धीरे संत नामदेवकी कीर्ति समस्त भारतमें फैलने लगी। जब यह संत-मण्डली भारत-भ्रमण करते हुए दिल्ली पहुँची, उस समय दिल्लीमें मुगल-शासन था। बादशाहको सूचना मिली कि नामदेव संत-मण्डलीके साथ दिल्ली पहुँच गया है। वह लोगोंको हरिनाम-संकीर्तन सिखाता है। बादशाहने सिपाही भेजकर सारी संत-मण्डलीको बुला लिया। बादशाहने नामदेवको मुसलमान बनानेकी बात सोचकर कठिन परीक्षा ली। यह सोचकर कि हिंदू गायकी कुर्बानीसे ठिकाने आते हैं, बादशाहने गाय मँगवाकर, कसाईसे उसका सिर कटवा दिया। यह दृश्य देखकर सब दाँतों-तले अँगुली दबाकर रह गये। शान्त एवं गम्भीर वातावरणको चीरती हुई बादशाहकी आवाज आयी—'नामदेव! यदि तुम सच्चे फकीर हो तो इसे (गायकी ओर ईशारा कर) जीवित करो। तभी हिंदूपर तुम्हारा प्रेम माना जायगा और यदि गाय जीवित नहीं हुई तो तुम्हारे संतपनको ढोग मानकर तुम्हारा सिर कलम कर दिया जायगा।'

नामदेवजीने कहा—'मुझमे कोई शक्ति नहीं जो प्रभुको स्वीकार होता है, वही होता है। इस संसारसे सभीको एक दिन जाना है।'

बादशाहने कहा—'नामदेव! तुम इस्लाम-धर्म स्वीकार करो तो तुम्हें छोड़ दिया जायगा।'

नामदेव बोले—'नहीं-नही ऐसा नहीं हो सकता।' इस उत्तरसे बादशाह क्रोधसे तमतमा उठा और उसने आदेश दिया कि इसे मतवाले हाथीके नीचे कुचलवा डालो। मतवाला हाथी नामदेवपर वार करता, परंतु भगवान् विट्ठलकी कृपासे वे बच जाते। अब नामदेवजीके एक हाथमें वीणा थी, दूसरेमें करताल तथा पैरोंमें बेड़ियाँ। नामदेवजी द्रवित-हृदयसे भगवान्‌को पुकारने लगे—

विनती सुनहु जगदीश हमारी।
तेरो दास आस मोहि तेरी, इत करो कान मुरारी॥
दीनानाथ दीन ह्वे टेरत, गाईहि क्यों नहिं जिवाओ।
आछे सबे अंग है याको, मेरे यशहिं बढ़ाओ॥
जो कहु याके कर्मन में, नहिं जीवन लिखो विधाता।
तौ नामदेव की आमुर्दा सो, होहु प्रभुहि तुम दाता॥

हे प्रभो! शीघ्र आओ। गायको जीवन देकर धर्मकी रक्षा करो। नामदेवजीकी आँखोंसे अविरल अश्रुधारा बह रही थी। नामदेव बार-बार यही कहते रहे कि 'मुझमें कोई शक्ति नहीं, जो प्रभु करता है वही होता है।' इस घटनाके समय गोणाबाई भी वहाँपर थीं। अपने पुत्रकी ऐसी दशा उनसे देखी नहीं गयी। बोलीं—'हे नामदेव! तू विट्ठलका नाम छोड़कर अल्लाहका नाम ले।'

नामदेव बोले—'ऐसा उपदेश करनेवाली तू मेरी माता नहीं, मैं तेरा पुत्र नहीं।' कहा जाता है कि निश्चित समय बीतनेसे पूर्व भक्तवत्सल आनन्दकन्द भगवान् विट्ठल अपने वैकुण्ठसे गरुडपर चढ़कर वहाँ आये और उन्होने मृत गायको जीवित कर दिया। बछड़ा गायका दूध पीने लगा। गाय नामदेवको चाटने लगी। वात्सल्यमूर्ति भगवान् विट्ठलका मधुर एवं सुरीला बोल सुनायी दिया—'नामदेव! तुम धन्य हो। धर्म और प्यारी गायकी रक्षा-हेतु अपने प्राणोंको न्योछावर करनेवाले नामदेव! धन्य हो।' फिर भगवान् अन्तर्धान हो गये।

बादशाह शर्मसे पानी-पानी हो गया, नामदेवजीके आगे झुक गया, क्षमा माँगने लगा और नामदेवजीका आदर-सम्मान करने लगा। 'गुरु ग्रन्थसाहिब'में यह घटना पृष्ठ ६३० पर वर्णित है। वह पद्य यहाँ दिया जा रहा है—

सुलतानु पूछै सुनुबे नामा। देखउ राम तुमारे कामा॥
नामा सुलताने बाधिला। देखउ तेरा हरी बीठुला॥
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ। नातरु गरदनि मारउ ठांइ॥
बादिसाह ऐसी किउ होइ। बिसमिलिकी आर्न जीवै कोइ॥

मेरा कीआ कछू न होइ। करिहै रामु होइहै सोइ॥
यादिसाहु चढ़िओ अहंकारि। गजहसती दीनो चमकारि॥
रुदनु करै नामेकी माइ। छोडि रामकी न भजेहि खुदाइ॥
न हउ तेरा पूंगडा न तू मेरी माइ। पिडु पड़ै तउ हरिगुन गाइ॥
करै गजिंदु सुडकी चोट। नामा उबरै हरिकी ओट॥
काजी मुलां करहि सलामु। इनि हिंदूमे राम लिआ मानु॥
बादिसाह बेनती सुनेहु। नामे सरभरि सोना लेहु॥
मालु लेउ तउ दोजकि परउ। दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ॥
पावहु वेड़ी हाथहु ताल। नामा गावै गुन गोपाल॥
गंग जमुन जउ उलटी बहै। तउ नामा हरि करता रहै॥
सात घड़ी जब बीती सुणी। अजहु न आइओ त्रिभवनधणी॥
पारवंतण बाज बजाइला। गरुड़ चड़े गोबिद आइला॥
अपने भगत परि की प्रतिपाल। गरुड़ चड़े आये गोपाल॥
कहहित धरणि इ कोडि करउ। कहहि तले करि ऊपरि धरउ॥
कहहि तमुई गऊ देउ जीआइ। सभु कोई देखै पतीआइ॥
नामा प्रणवै सेलमसेल। गऊ दुहाई बछरा मेलि॥
दुधहि दुहि जब मटुकी भरी। ले बादिसाहके आगे धरी॥
बादिसाहु महलमहि जाइ। अउघटकी घट लागी आइ॥
काजी मुला बिनती फुरमाइ। बखसी हिंदू मै तेरी गाइ॥
नामा कहै सुनहु बादिसाह। इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ॥
इस पतीआका इहै परवानु। साचि सीलि चालहु सुलितानु॥
नामदेउ सभरहि आसमाइ। मिलि हिंदू सभ नामे परि जाहि॥
जउ अबकी बार न जीवै गाइ। त नामदेवका पतीआ जाइ॥
नामेकी कीरति रही ससारि। भगत जनां लेउ धरिआ पारि॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु। नामे नाराइन नाही भेदु॥

संत नामदेवजी महाराजने गायकी बहुत सेवा की। स्वयं उनके घरपर गाय थी। जिसका दूध वे प्रभुको पिलाकर धन्य होते थे। एक बार जब गाय ब्यायी तो उसका दूध स्वयं नामदेवजीने भगवान् विट्ठलको पिलाया—

दूध कटोरे गड़व पानी। कपिला गाइ नामै दुहि आनी॥
दूधु पीउ गोविंदे राह। दूध पीउ मेरो मनु पतिआइ॥
नाहीं त घरको बापु रिसाइ॥
सोइन कटोरी अमृत भरी। लै नामै हरि आगे धरी॥
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै। नामे देखी नराइनु हसे॥
दूधु पीजाइ-भगतु घरि गहआ। नामे हरि का दरसनु भइआ॥

नामदेवजीकी वाणीमें जगह-जगह गायका वर्णन मिलता है। भक्तकी भगवान्को प्राप्त करनेकी जो व्याकुलताकी तीव्रता एवं आतुरता होती है, उसे नामदेवजीने यों व्यक्त किया—

मोहि लागती तालावेली। बछरे बिनु बापरो गाइ अकेली॥
पानीया बिनु मीनु तलफै। ऐसे रामनाम बिनु बापरो नामा॥

नामदेवका कहना है कि हरिनामके विषयमें मेरी तालावेली (व्याकुलता) उसी प्रकारकी है, जिस प्रकार गायका बछडा गायसे बिछुड़कर व्याकुल होता है, जिस प्रकार मछलीको पानीसे बाहर निकालनेपर व्याकुलता होती है और पानीके बिना वह अपने प्राण भी त्याग देती है। यहाँ नामदेवने अपनी भगवान्के प्रति व्याकुलताकी उपमा बहुत ही सुन्दर ढंगसे गाय और उसके बछड़ेसे की है।

हिंदू और मुसलमानोंको गायका महत्त्व समझाते हुए वे कहते हैं—

पाडे तुमरी गाहत्री लोधे का खेत खाती थी।
लेकरि ठेगा टगरी तोरी लागत लागत जाती थी॥

गायके लिये क्या हिदू क्या मुसलमानका खेत। उनके लिये सारी धरती एक है। गाय दूध देते समय भी कोई भेदभाव नहीं करती। उसका दूध बिना भेदभाव सब सेवन करते हैं तो तुम यह भेद क्यो करते हो? डंडा मारकर उसकी टाँगे क्यो तोड़ते हो?

नामदेवजी महाराजने अपनी वाणीमे गोदानकी महत्तापर प्रकाश डालते हुए कहा है—

गौ शत लक्ष विप्र को दीजै। मन वच्छित सब पुरवै कामा॥
कोटि गऊ जो दान दे नहि नाम समाना।

इस प्रकार संत नामदेवजी महाराजने विट्ठलकी भक्तिके साथ ही गोसेवा करनेका महत्त्वपूर्ण संदेश लोगोंमें विस्तरित किया। उनके त्याग, वैराग्यमय, भक्तिमय जीवन-दर्शनमें गौका विशिष्ट स्थान था। यहाँतक कि उन्होंने गौमाताकी रक्षाके लिये अपनी कुर्बानीकी प्रतिज्ञा कर ली, तत्पश्चात् विट्ठल भगवान्की कृपासे गाय जीवित हो उठी। धन्य हैं गोसेवक नामदेवजी! उनका गोप्रेम अतुल्य है, अनुपम है। किंतु, विडम्बना है कि आज गोमाताकी स्थिति बड़ी ही दयनीय है। हजारों गोभक्तोंकी कुर्बानियोंपर भी गोमाताके प्रति सुधार

नहीं हो सका है। हमारे गोमांसाहारी मुसलमान भाइयोंको हमारी नहीं, तो अपने काजी मुल्लाओकी बात तो माननी ही चाहिये, जिन्होंने कुछ सोच-समझकर और देख-सुनकर ही कहा होगा—'*बखसी हिंदू मै तेरी गाइ॥*'

यह हमारे समाजकी भी कमी है कि वह अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिये ऐसा करता है। सरकार आश्वासन देती है, परंतु पूर्ण गोवध और गोरक्षापर स्पष्ट कुछ नहीं कहती। सरकारको सारे राष्ट्रके लिये एक-जैसा कानून बनाना चाहिये। पूर्ण गोवधबंदीकरण कानून बने। गायके चमड़े, गोमांस आदिके निर्यातपर पूर्ण पाबंदी लगे। गॉव तथा शहरोके बाहर गोचरभूमि जरूर छोड़ी जाय। शहरोंके बाहर जहाँ जल और चारेकी भरपूर मात्रा उपलब्ध हो वहाँ गोशाला खोली जाय। बूढ़ी तथा अपंग गायोके लिये अलग गोसदनोंकी व्यवस्था की जाय। गायोंकी नस्लमें सुधार तथा उनकी देखभालके लिये योग्य चिकित्सकोंका भी उचित प्रबन्ध हो। इन सब कार्योंको करने तथा करवानेके लिये केवल सरकारके भरोसे ही रहना नहीं होगा, क्योकि सरकार तो कानून बना देगी, पर इसको सुचारु रूपसे लागू करनेके लिये गोभक्त लोगोंको, समाजसेवी तथा गो-गोविन्दप्रेमी संस्थाओंको ही आगे आना होगा।

(श्रीगिककुमारजी)



बालक शिवाजीकी गोभक्ति

एक समय शिवाजी, जब वे आठ-दस वर्षके बालक थे, अपने पिता राजा शाहाजीके दर्शनके लिये पूनासे बीजापुर गये थे। वहाँ पहुॅचनेपर राजा शाहाजीने अपने पुत्रसे शाही दरबारमें चलनेको कहा। बालक शिवाजी अत्यन्त मातृ-पितृ-भक्त थे। बचपनसे ही उनके अन्तः-करणपर रामायण-महाभारतादि ग्रन्थोंके सुननेसे ऐसे सुसंस्कार जम गये थे कि वे माता-पिताकी आज्ञा अस्वीकार नहीं कर सकते थे, किंतु यह प्रसंग ऐसा था कि एक ओर शाही दरबारमें जानेके लिये उनकी अन्तरात्मा उनको मना कर रही थी और दूसरी ओर उनके पिता चलनेको आग्रह कर रहे थे। वे धर्मसंकटमें पड़ गये। अन्तमे उस बुद्धिमान् और तेजस्वी बालकने स्पष्ट किंतु नम्र शब्दोंमें अपनी आन्तरिक व्यथा अपने पितासे निवेदन कर दी। उन्होंने कहा—'पिताजी! हमलोग हिंदू है। रास्तेमें आते-जाते समय हमारी आँखोंके सामने गोमाता कट जाती हैं। गोमांसका विक्रय होता है। यह घृणित तथा दुस्सह दृश्य देखकर मन क्षुब्ध हो जाता है और जी चाहता है कि गोहत्या करनेवालेके गर्दन उड़ा दें। हम क्षत्रिय जीते हुए यह गोहत्याका दृश्य देखते हैं, इससे तो मरना अच्छा! धिक्कार है हमारी क्षत्रियताको!! गोवधिकोपर तत्काल शासन करना अथवा गोप्राण-रक्षणमें आत्मार्पण करना—इन दोमेंसे एक अवश्य होना चाहिये, किंतु ऐसा करनेमें मुझे आपकी अप्रसन्नताका डर है, नहीं तो कसाईको देखते ही मैं उसका सिर उड़ा देता।'

बालक शिवाजीके सच्चे हिंदू-अन्तःकरणकी यह व्यथा बादशाहके कानोंतक पहुँची। बादशाह उस तेजस्वी बालकको देखनेके लिये बहुत उत्सुक हुए। इसलिये उन्होंने कसाइयोंको आज्ञा दी कि 'गोहत्या तथा मांस-विक्रीका सब व्यवहार शहरसे दूर एक अलग मुहल्लेमें हो। इसके विरुद्ध बर्ताव करनेवाले अपराधी समझे जायँगे।' इतना हो जानेपर शिवाजी अपने पिताके साथ दरबारमें जाने लगे। बादशाहने यह हुक्म निकाल तो दिया था, किंतु कसाइयोने इसपर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। हुक्म तोड़नेवाले कुछ निकल आये। यह देखकर शिवाजीने दरबारमें आना-जाना फिर बंद कर दिया। पूछताछ होनेपर शाहाजी महाराजने बादशाहसे सब कारण बता दिया। इसपर बादशाहने दूसरा कड़ा हुक्म निकाला कि 'कसाई और कलालोंकी सब दूकानें शहरके दक्षिण एक कोसकी दूरीपर होनी चाहिये। यदि कोई बेचनेवाला इस

हुक्मको तोड़कर शहरमें गोमांस या दारू बेचने आयेगा और उसे कोई हिंदू मार देगा तो वह हिंदू अपराधी नहीं समझा जायगा और उसे किसी प्रकारका दण्ड नहीं मिलेगा।'

इतनी कड़ी आज्ञा होनेपर भी एक दिन एक कसाई अभिमान और हठवश एक गायको रस्सीसे बाँधे लिये जा रहा था। गाय आगे जाना नहीं चाहती, डकराती थी और इधर-उधर कातर नेत्रोंसे देखती थी। कसाई उसे डंडेसे बार-बार पीट रहा था। इधर-उधर दुकानोपर जो हिंदू थे, वे मस्तक झुकाये यह सब देख रहे थे। उनमें इतना साहस नहीं कि कुछ कह सके। मुसल्मानी राज्यमे रहकर वे कुछ बोलें तो पता नहीं क्या हो। लेकिन लोगोंकी दृष्टि आश्चर्यसे खुली-की-खुली रह गयी। बालक शिवाकी तलवार म्यानसे निकलकर चमकी, वे कूदकर कसाईके पास पहुँचे और गायकी रस्सी उन्होंने काट दी। गाय भाग गयी एक ओर। कसाई कुछ बोले इससे पहले तो उसका सिर धड़से कटकर भूमिपर लुढकने लगा था।

जब मृत कसाईके रिश्तेदारने बादशाहके सामने इस मामलेको पेश किया, तब पहले कसाईका ही गुनाह समझकर बादशाहने उसकी फरियाद खारिज कर दी



और एक बार फिर कसाइयोको शहरमे मांस बेचनेसे मना कर दिया।



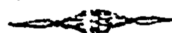
गौ माता

(श्रीहरीशजी 'मधुर')

गौ माता! अभिनन्दन तेरा!

तुम जग-जीवनकी जननी हो,
दूध-दही देनेवाली।
तुम गोकुलकी भी गरिमा हो,
मोहनकी हो तुम प्यारी॥
तेरे सबल पुत्र हे माता!
हैं जीवनके भाग्य-विधाता।
कृषकोंके नयनोंके तारे,
मिटा रहे हैं कष्ट हमारे॥
धरती जोते, पानी ढोते,
वाहक बनकर बोझा ढोते।
फैलाते हैं गौरव तेरा,
गौ माता! अभिनन्दन तेरा॥

तुमसे जीवन हैं हम पाते,
दूध, दही, घी, मक्खन खाते।
सन,तृण, तेल, अन्न, पट पाते,
वदलेमें हैं क्या दे पाते॥
तुम घूम-घूम तिनके चरती हो,
दुख सहती पर दुख हरती हो।
नहीं किसीसे कुछ कहती हो,
जगमें जीवन भर देती हो॥
पर तेरी सुधि जब हैं लाते,
नयन अश्रुसे हैं भर आते।
करते हैं हम वन्दन तेरा,
गौ माता! अभिनन्दन तेरा॥



गोस्वामी तुलसीदासजीकी दृष्टिमें गोसेवा और उसका रहस्य

गोस्वामीजीने अपने सम्पूर्ण साहित्यमे गौकी निरन्तर चर्चा की है। वे काशीको भी गायका रूप मानते हुए बड़ी सुन्दर पद-रचना करते हुए लिखते हैं—

सेइअ सहित सनेह देह भरि, कामधेनु कलि कासी।
समनि सोक-संताप-पाप-रुज, सकल-सुमंगल-रासी॥
मरजादा चहुँ ओर चरनबर, सेवत सुरपुर-बासी।
तीरथ सब सुभ अग रोम सिवलिंग अमित अबिनासी॥
अंतरऐन ऐन भल, थन फल, बच्छ बेद-बिस्वासी।
गलकंबल बरुना बिभाति जनु, लूम लसति, सरिताऽसी॥
दडपानि भैरव बिषान, मलरुचि-खलगन-भयदा-सी।
लोलदिनेस त्रिलोचन लोचन, करनघंट घंटा-सी॥
मनिकर्णिका बदन-ससि सुंदर, सुरसरि-सुख सुखमा-सी।
स्वारथ परमारथ परिपूरन, पंचकोसि महिमा-सी॥
बिस्वनाथ पालक कृपालुचित, लालति नित गिरिजा-सी।
सिद्धि, सची, सारद पूजहिं मन जोगवति रहति रमा-सी॥
पंचाच्छरी प्रान, मुद माधव, गव्य सुपंचनदा-सी।
ब्रह्म-जीव-सम रामनाम जुग, आखर बिस्व-बिकासी॥
चारितु चरति करम कुकरम करि, मरत जीवगन घासी।
लहत परमपद पय पावन, जेहि चहत प्रपंच-उदासी॥
कहत पुरान रची केसव निज कर-करतूति कला-सी।
तुलसी बसि हरपुरी राम जपु, जो भयो चहै सुपासी॥

(विनय-पत्रिका २२)

इस पदमें* गङ्गाके अनुकूल गायको उत्तरकी ओर मुख करके खड़ा किया गया है, उसका गलकम्बल और मुख वरुणा नदीके पास और पूँछ अस्सीके पास माना गया है। मुख्य काशी वरुणा और अस्सीके बीच मानी जाती है इसीलिये इसका दूसरा नाम वाराणसी भी है। इस पदका एक-एक अक्षर बहुमूल्य तथा निरन्तर मननीय है।

यद्यपि इसमें सभी काशीके मुख्य देवताओ और पवित्र तीर्थोंका वर्णन संनिविष्ट है, परंतु उसका मुख्य तत्त्व है गो-दुग्ध, जिसे ज्ञानियोंके समान सामान्य प्राणी भी समान-रूपसे परमसुखदायक निर्वाणके रूपमें प्राप्त कर लेता है—

लहत परमपद पय पावन, जेहि चहत प्रपंच-उदासी॥

मानसमें ज्ञानदीपकका, जिसका मुख्य आधार श्रद्धारूपी गौ ही है, उस प्रकरणमें गोस्वामी तुलसीदासजीके वेदान्त-ज्ञान-सम्बन्धी श्रमका अनुमान होता है। वे वहाँ लिखते हैं—

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौं हरि कृपाँ हृदयँ बस आई॥

(रा०च०मा० ७। ११७। ९)

---

* पदका अर्थ हिन्दी होनेसे सरल ही है फिर भी विशेष सुविधाके लिये उसका संक्षिप्त एवं सरल अर्थ दिया जा रहा है। विशेष जानकारीके लिये विनयपीयूष, सिद्धान्ततिलक आदि टीकाएँ देखनी चाहिये—

इस कलियुगमे काशीरूपी कामधेनुका प्रेमसहित जीवनभर सेवन करना चाहिये। यह शोक, संताप, पाप और रोगका नाश करनेवाली तथा सब प्रकारके कल्याणोकी खान है। काशीके चारो ओरकी सीमा इस कामधेनुके सुन्दर चरण हैं। स्वर्गवासी देवता इसके चरणोकी सेवा करते हैं। यहाँके सब तीर्थस्थान इसके शुभ अङ्ग हैं और नाशरहित अगणित शिवलिङ्ग इसके रोम हैं। अन्तर्गृही (काशीका मध्यभाग) इस कामधेनुका ऐन (थनोंके ऊपरका भाग जिसमे दूध भरा रहता है) है। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—ये चारो फल इसके चार थन हैं, वेद-शास्त्रोपर विश्वास रखनेवाले आस्तिक लोग इसके बछड़े हैं, विश्वासी पुरुषोंको ही इसमे निवास करनेसे मुक्तिरूपी अमृतमय दूध मिलता है, सुन्दर वरुणा नदी इसकी गलकम्बलके समान शोभा बढ़ा रही है और असी नामक नदी पूँछके रूपमे शोभित हो रही है। दण्डधारी भैरव इसके सींग हैं, पापमे मन रखनेवाले दुष्टोको उन सींगोंसे यह सदा डराती रहती है। लोलार्क (कुण्ड) और त्रिलोचन (एक तीर्थ) इसके नेत्र हैं और कर्णघण्टा नामक तीर्थ इसके गलेका घण्टा है। मणिकर्णिका इसका चन्द्रमाके समान सुन्दर मुख है, गङ्गाजीसे मिलनेवाला पाप-ताप-नाशरूपी सुख इसकी शोभा है, भोग और मोक्षरूपी सुखोसे परिपूर्ण पञ्चकोसीकी परिक्रमा ही इसकी महिमा है। दयालु-हृदय विश्वनाथजी इस कामधेनुका पालन-पोषण करते हैं और पार्वती-सरीखी स्नेहमयी जगज्जननी इसपर सदा प्यार करती रहती हैं; आठों सिद्धियाँ, सरस्वती और इन्द्राणी शची इसका पूजन करती हैं, जगत्का पालन करनेवाली लक्ष्मी-सरीखी इसका रुख देखती रहती हैं। 'नमः शिवाय' यह पञ्चाक्षरी मन्त्र ही इसके पाँच प्राण हैं। भगवान् विन्दुमाधव ही आनन्द हैं। पञ्चनदी (पञ्चगङ्गा) तीर्थ ही इसके पञ्चगव्य (दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र) हैं। यहाँ ससारको प्रकट करनेवाले रामनामके दो अक्षर 'रकार' और 'मकार' इसके अधिष्ठाता ब्रह्म और जीव हैं। यहाँ मरनेवाले जीवोका सब सुकर्म और कुकर्मरूपी घास यह चर जाती है, जिससे उनको वही परमपदरूपी पवित्र दूध मिलता है, जिसको संसारके विरक्त महात्मागण चाहा करते हैं। पुराणोमें लिखा है कि भगवान् विष्णुने सम्पूर्ण कला लगाकर अपने हाथोसे इसकी रचना की है। हे तुलसीदास! यदि तू सुखी होना चाहता है तो काशीमें रहकर श्रीरामनाम जपा कर।

अर्थात् श्रद्धा ही सब धर्मोंकी जननी होती है। यदि वह पूर्ण सात्त्विकी श्रद्धा है तो वह धेनु तथा गौका रूप धारण कर लेती है और वह धेनु या गौ यदि निरन्तर हृदयमे वास करती है तथा सभी प्रकारके जप-तप, यम-नियम, आचार-विचार, ज्ञान-विज्ञान सबका अहर्निश तृणके रूपमे सेवन करती है अर्थात् व्यक्ति सदा शास्त्र, वेद आदिमें निर्दिष्ट नियमोंका पालन करता है तो सद्भावना, शुभ-भावनाके योगसे गायका दूध विशुद्ध धर्मके रूपमे उस गायके स्तनोसे नीचे उतरता है। फिर उसी दूधसे दही और घृतके रूपमे निकला हुआ ज्ञान-तत्त्व तीनों अवस्थासे ऊपर उठकर नित्यसमाधिमें स्थित होकर समस्त विश्वमे एकमात्र परब्रह्मका भान होते हुए अखण्ड दीपज्योतिका काम करता है—

सोहमस्मि इति बृत्ति अखंडा। दीप सिखा सोइ परम प्रचडा॥
आतम अनुभव सुख सुप्रकासा। तब भव मूल भेद भ्रम नासा॥

(रा०च०मा० ७। ११८। १-२)

यहाँ सारा संसार और उसकी मूल अविद्या भी नष्ट हो जाती है। यही योगवासिष्ठ, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, पञ्चदशी, जीवन्मुक्तिविवेक आदि वेदान्त, योग-ग्रन्थोंका निष्कर्ष है।

भगवान्‌के अवतारके कारणोका भी जहाँ श्रीगोस्वामीजी निर्देश करते हैं, वे कहते हैं—

गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपासिधु मानुष तनु धारी॥

(रा०च०मा० ५। ३९। ३)

इसमें ध्यान देनेकी बात है कि इसमें 'गो' और 'धेनु' शब्द दो बार आया है। यह गोभक्तिका ही कारण है। यह बडी विचित्र बात है। टीकाकार लोग इसमे किसी एकका पुनरुक्ति होनेके कारण 'पृथ्वी' अर्थ भी ले सकते हैं; क्योंकि पृथ्वी भी गायका रूप धारणकर भगवान्‌के पास जाती है—

'सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल भय सोका॥'

(रा०च०मा० १। १८४ छं०)

तथा—

धेनु रूप धरि हृदयँ बिचारी। गई तहाँ जहँ सुर मुनि झारी॥

(रा०च०मा० १। १८४। ७)

इसी तरह और भी वे लिखते हैं—

जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥

(रा०च०मा० १। १२१। ६-७)

यहाँ भी धेनुका नाम मुख्य होनेके कारण बीचमें आया है। किंतु सभी स्थानोमे गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी भगवान्‌को नहीं भूलते। वे भलीभाँति जानते हैं कि भगवान् ही गौ-ब्राह्मण और पृथ्वीके क्लेश दूर करनेमे समर्थ हैं। इसीलिये गोवत्सका धर्म-रूप प्रसिद्ध है और पृथ्वी धेनुरूप धारणकर ही भगवान्‌के पास प्रार्थना करने जाती है। भगवान् भी नाम-जप और प्रार्थना आदिसे ही प्रसन्न होते हैं। गोस्वामीजी लिखते हैं—

नाम रामको अंक है सब साधन हैं सून।
अंक गएँ कछु हाथ नहिं अंक रहें दस गुन॥

(दोहावली १०)

अतः तीव्रगतिसे नामजपपूर्वक ही गोसेवा और गोरक्षार्थ प्रयास करना चाहिये। साथ ही गौको पशु न समझकर सर्वदेवमयी धेनु—साक्षात् भगवान्‌का स्वरूप मानकर उसकी सेवा-शुश्रूषा, पूजा करनी चाहिये। भागवतकारने भी लिखा है—

प्रत्युद्गमप्रश्रयणाभिवादनं
विधीयते साधु मिथः सुमध्यमे।
प्राज्ञैः परस्मै पुरुषाय चेतसा
गुहाशयायैव न देहमानिने॥

(श्रीमद्भा० ४। ३। २२)

अर्थात् यदि किसी व्यक्तिके हृदयमें भगवान्‌की स्थितिको समझकर उसका स्वागत सेवा-शुश्रूषा दण्ड-प्रणाम आदि कर्मोंका आचरण किया जाता है तब तो वह सफल होता है, ऐसा ही महात्मा लोग कहते हैं न कि देहाभिमानी पशु, मनुष्य आदिकी दृष्टिसे। तुलसी पीपल, शालग्राम आदिमे भी इसी दृष्टिसे पूजा की जाती है। अतः इसी दृष्टिसे अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति और निष्ठापूर्वक तन-मन और धनसे गोसेवा करनी चाहिये। यही सभी शास्त्रों, संतो, गोस्वामी तुलसीदास, व्यास, वसिष्ठ आदिका मत है।

गोधन

(भगवत्पूज्यपाद अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन श्रीब्रह्मानन्द सरस्वतीजी महाराजका उपदेश)

धर्मशास्त्रमें गोधनका विशेष माहात्म्य बतलाया गया है। लिखा है—

सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्।

हिंदू-संस्कृति इस भावनासे परिपूर्ण है कि—

यद्गृहे दुःखिता गावः स याति नरकं नरः।

किंतु जबसे पाश्चात्त्योंकी सभ्यता-संस्कृतिका हमारी सभ्यता-संस्कृतिके साथ सम्मिश्रण हुआ है, तबसे भारतीय शिक्षा-विधानके लोप होनेसे अधिकांशतः शास्त्र-पुराणादिकी अनभिज्ञताके कारण गो-ब्राह्मणादिके प्रति शास्त्रीय धार्मिक बुद्धिका लोप-सा हो गया है।

गोवंश आज व्यावहारिक उपयोगिताकी दृष्टिसे भौतिक तुलापर तौला जा रहा है; किंतु स्मरण रहे कि आजका भौतिक विज्ञान गोवंशकी उस सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमोत्कृष्ट उपयोगिताका पता ही नहीं लगा सकता, जिसे भारतीय शास्त्रकारोंने अपनी दिव्यदृष्टिसे प्रत्यक्ष कर लिया था। गोवंशकी धार्मिक महानता उसमें जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म कारणरूप तत्त्वोंकी प्रखरताके कारण है, उनकी खोज और जानकारीके लिये आधुनिक वैज्ञानिकोंके भौतिक यन्त्र सदैव स्थूल ही रहेंगे। यही कारण है कि आजका प्रौढ विज्ञानवेत्ता भी गोमाताके लोम-लोममें देवताओंके निवासका रहस्य और प्रातः गोदर्शन, गोपूजन, गोसेवा आदिका वास्तविक तथ्य समझनेमें असफल रहता है। गोधनका धार्मिक महत्त्व भावजगत्से सम्बन्ध रखता है और वह या तो ऋतम्भरा प्रज्ञाद्वारा अनुभवगम्य है अथवा शास्त्रप्रमाणद्वारा जाना जा सकता है, भौतिक यन्त्रोंद्वारा नहीं।

धर्मशास्त्र तो गोधनकी महानता और पवित्रताका वर्णन करता ही है, किंतु भारतीय अर्थशास्त्रमे भी गोपालनका विशेष महत्त्व है। कौटिलीय अर्थशास्त्रमें गोपालन और गोरक्षणका विस्तृत विवरण मिलता है। जिस भूमिमे खेती न होती हो, उसे गोचर बनानेका आदेश अर्थशास्त्रका ही है। इस प्रकार गोधन 'अर्थ' और 'धर्म' दोनोंका प्रबल पोषक है। अर्थसे ही काम (कामनाओं) की सिद्धि होती है और धर्मसे ही मोक्षकी। अतएव गोधनसे अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—चारोंकी प्राप्ति होती है। इसीलिये भारतीय जीवनमें गोधनका इतना ऊँचा माहात्म्य है। जो हिंदू धर्मशास्त्रपर विश्वास रखते हैं, उन्हें चाहिये कि चतुर्वर्ग-फल-सिद्ध्यर्थ शास्त्रविधानके अनुसार गोसेवा करते हुए गोधनकी वृद्धि करें और जो धर्मशास्त्रपर आस्था नहीं रखते, उन्हें चाहिये कि 'अर्थ' और 'काम' की सिद्धिके लिये अर्थशास्त्रके नियमोके अनुसार गोपालन करते हुए गोवंशकी वृद्धि करनेका प्रयत्न करें।

प्रत्यक्षवादियोके लिये इससे अधिक गोमाताकी दयालुता हो ही क्या सकती है कि वह सूखे तृण भक्षण करके जन्मभर उन्हें दुग्ध-घृत-जैसे पौष्टिक द्रव्य प्रदान करे। इतनेपर भी यदि वे गोमाताके कृतज्ञ न हुए, तब तो उनमें मानवताका लेश भी नहीं माना जा सकता। गोमाताके द्वारा मानव-समाजको जो लाभ है, उसे पूर्णतया व्यक्त करनेके लिये सहस्रों पृष्ठोंकी कई पुस्तकें लिखनी होंगी। संक्षेपमें यही कहा जा सकता है कि गोमातासे मानव-समाजको जो लाभ है, उससे मानवजाति गोमाताकी सदा ऋणी रहेगी।

वध आदि हिंसक उपायोंद्वारा गोवंशका ह्रास करना धार्मिक और आर्थिक दोनो दृष्टियोंसे राजा-प्रजा दोनोंके लिये हानिकर है। अतएव ऐसी भयंकर प्रथाओंको सर्वथा रोकनेका प्रयत्न सभीको करना चाहिये। जबतक केन्द्रीय सरकार इसके लिये संकल्प नहीं ले लेती, तबतक संतोषजनक परिणाम असम्भव-सा प्रतीत होता है। इसके लिये देशव्यापी यथेष्ट प्रयत्न होना चाहिये।

साथ-ही-साथ प्रत्येक गृहमें गोपालनकी प्राचीन प्रथाको बढ़ानेका प्रयत्न भी सभी सद्गृहस्थोंको करना चाहिये। धनी-मानी लोगों, श्रीजनों, सेठ-साहूकारों आदिको चाहिये कि गोशालाओंकी वृद्धि करे, जहाँसे आदर्श हृष्ट-पुष्ट गौओं और बैलोंकी प्राप्ति हो सके। गोचरभूमिके सम्बन्धमें आजकलकी व्यवस्था अत्यन्त शोचनीय है। इस सम्बन्धमें मनुजीने लिखा है—'प्रत्येक गाँव और नगरके चारों ओर प्रचुर मात्रामे गोचरभूमि छोड़नी चाहिये।' सभी समर्थ किसानों, श्रीमन्तों और सेठ-साहूकारोंको अपने-अपने केन्द्रोंमें गोचरभूमियोंका यथोचित प्रबन्ध करना चाहिये और गोधनकी वृद्धिका सदैव ध्यान रखना चाहिये। इसीमें भारत और भारतीय सभ्यताका गौरव तथा सच्चा स्वार्थ निहित है।

***

गोवंश भारतीय जीवनका मूलाधार

(ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज)

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥

(ऋग्वेद ८। १०१। १५)

गाय धर्म एवं संस्कृतिकी प्रतीक

गाय वैदिक कालसे ही भारतीय धर्म और संस्कृति-सभ्यताकी प्रतीक रही है। स्वयं वेद गायको नमन करता है—'**अघ्न्ये! ते रूपाय नमः।**'

'**रूपायाघ्न्ये ते नमः।**'

(अथर्व०, शौन० १०। १०। १, पैप्प० १६। १०७। १)

'हे अवध्य गौ! तेरे स्वरूपके लिये प्रणाम है।' ऋग्वेद (१। १५४। ६) के अनुसार 'जिस स्थलपर गाय सुखपूर्वक निवास करती है, वहाँकी रज तक पवित्र हो जाती है, वह स्थान तीर्थ बन जाता है।' हमारे जन्मसे मृत्युपर्यन्त सभी संस्कारोंमें पञ्चगव्य और पञ्चामृतकी अनिवार्य अपेक्षा रहती है। गोदानके बिना हमारा कोई भी धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता। व्रत, जप, उपवास सभीमें गौ और गोप्रदत्त पदार्थ परमावश्यक हैं। गाय अपनी उत्पत्तिके समयसे ही भारतके लिये पूजनीय रही है। उसके दर्शन, पूजन, सेवा-शुश्रूषा आदिमें आस्तिक जन पुण्य मानते हैं। किसी पूज्य-से-पूज्य व्यक्तिकी भी विष्ठा पवित्र नहीं मानी जाती, किंतु गोमूत्र गङ्गाजलके समान पवित्र माना गया है और गोमयमें साक्षात् लक्ष्मीका निवास कहा गया है। चान्द्रायणादि महाव्रतों एवं यज्ञोंमें पञ्चगव्य पीनेका विधान है, जिसमें गोमय-गोमूत्र मिश्रित रहते हैं। शास्त्रोंके अनुसार हमारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग, मांस-मज्जा, चर्म और अस्थिमें स्थित पापोंका विनाश पञ्चगव्यके पानसे होता है। गाय सर्वदेवमयी है—

'**सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः।**'

गायके शरीरमें सभी देवताओंका निवास है, अतः गाय सर्वदेवमयी है।

भारतीय सस्कृति यज्ञ-प्रधान है। वेदसे लेकर रामायण, महाभारतादि इतिहास-ग्रन्थोंतक सर्वत्र यज्ञको ही सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यज्ञके आधार हैं, मन्त्र और हवि, जिनमें मन्त्र ब्राह्मणके मुखमे निवास करते हैं तो हवि गायके शरीरमे। हविके अभावमे यज्ञकी कल्पना भी सम्भव नहीं। इसीसे गाय भारतीय धर्म और संस्कृतिकी मूलाधार रही है। धर्मग्लानिको दूरकर धर्मसंस्थापनके उद्देश्यसे अवतरित भगवान् एवं भगवद्विभूतियोंने सदैव गो-ब्राह्मणोंकी रक्षाको ही सर्वोच्च प्राथमिकता दी है—

'**विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।**'

आनन्दकन्द, मदनमोहन भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने तो यही कामना की है—

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे सर्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

अर्थात् 'गाये मेरे आगे हो, मेरे पीछे हो, गायें मेरे सब ओर हो, मैं गायोके मध्य वास करूँ।'

चक्रवर्ती नरेन्द्र दिलीपने गोरक्षाके लिये अपना कमनीय-कान्त युवा शरीर ही सिंहके लिये अर्पण कर दिया और कहा कि क्षतसे त्राण करनेके कारण ही 'क्षत्रिय' शब्द संसारमे रूढ हुआ है, यदि मैं नन्दिनी गौकी रक्षा नहीं कर सका तो 'क्षत्र'-शब्दार्थके विपरीत आचरणके कारण राज्य एवं प्राणियोकी निन्दासे मलीमस प्राणोसे मुझे कोई प्रयोजन नहीं—

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।
राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा॥

दिलीपने सिंहसे यह भी कहा था कि 'जितनी कृपा आप मेरे भौतिक शरीरपर कर रहे हैं, उतनी कृपा मेरे यशः-शरीरपर क्यों नहीं करते? मेरे देखते-देखते यदि नन्दिनी गौकी हत्या हुई तो सूर्यवंशकी कीर्तिमे कलङ्ककी कालिमा लग जायगी।'

श्रीरामचन्द्र राघवेन्द्रके कमल-से कोटिगुणित सुकोमल चरणारविन्दोमे गो-ब्राह्मण-रक्षणार्थ ही दण्डकवनके कण्टक चुभे थे। भक्तोंके हृदयमे उन्हीं दण्डक-कण्टकाङ्कित पादारविन्दको स्थापित करके भगवान् [illegible]—

स्मरतां हृदि विन्यस्य विद्धदण्डककण्टकैः।
स्वपादपल्लवं रामो ह्यात्मज्योतिरगात् प्रभुः॥

भगवान् श्रीकृष्ण तो गोचारण और गोपालनके आदर्श ही हैं। उनकी गोपाङ्गनाएँ उनके नलिनसुन्दर चरणारविन्दोंमें तृण, अंकुर आदिके गड़ जानेकी कल्पनासे ही संतप्त हो उठती हैं—

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त गच्छति॥

अर्थ-व्यवस्थाकी रीढ़

धर्म और संस्कृतिका प्रतीक होनेके साथ-साथ गाय भारतकी कृषिप्रधान अर्थव्यवस्थाकी भी रीढ़ है। देशमे सदैवसे गोधनको ही 'धन' माना जाता रहा है। प्राचीन कालमें तो किसी भी वस्तुका मूल्याङ्कन गौके द्वारा ही होता था। हमारे यहाँ गोपालन पश्चिमी देशोकी भाँति केवल दूध और मांसके लिये नहीं होता। अमृततुल्य दूधके अतिरिक्त खेत जोतने एवं भार ढोनेके लिये बैल तथा भूमिकी उर्वरता बनाये रखनेके लिये उत्तम खाद भी हमें गायसे ही प्राप्त होती है, जिसके अभावमे हमारे राष्ट्रकी अर्थव्यवस्थाका शकट किसी प्रकार चल नहीं सकता।

भारतीय कृषिकी यह अनिवार्य अपेक्षा है कि देशमें पर्याप्त संख्यामे उत्तम बैल उपलब्ध हों। इस समय देशमे उनकी जो स्थिति है, वह उत्कृष्टता और संख्या दोनों दृष्टियोंसे असंतोषजनक है। द्वितीय पञ्चवर्षीय योजनाके अनुमानानुसार देशमे ३९ करोड़ ५२ लाख एकड़ भूमिमे खेती होती है। १९२७ के 'रायल कमीशन' की कृषिसम्बन्धी रिपोर्टके अनुसार प्रति एक सौ एकड़ भूमिके लिये २० (बीस) बैलोकी आवश्यकता है। 'कैटल मार्केटिंग रिपोर्ट—१९४६, के अनुसार उक्त हिसाबसे ८ करोड़, ६ लाख, ५ हजार बैलोंकी आवश्यकता है। १९६१ की पशु-गणनाके अनुसार देशमें केवल ६ करोड़, ८६ लाख, ९१ हजार, ६१४ कार्यक्षम बैल उपलब्ध हैं। इस प्रकार देशमें एक करोड़से अधिक बैलोंकी कमी है, जिससे कृषि-उत्पादन उत्तरोत्तर कम होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष १० प्रतिशत बैल सेवानिवृत्त हो जाते हैं, जिनकी पूर्तिके लिये एक करोड़ नये बैलोंकी प्रतिवर्ष आवश्यकता होती है। यह पूर्ति वर्तमान गोधनसे ही सम्भव है, भले ही उनकी दुग्धोत्पादनकी क्षमता कितनी ही कम क्यों न हो। इसी संदर्भमें भारत-सरकारकी 'मानव तथा पशु -भोजन-विशेषज्ञ समिति'-ने अपनी रिपोर्टमें कहा है कि—'चूँकि बैलोंकी वर्तमान संख्याको कृषिके लिये बनाये रखना आवश्यक है और प्रजननके द्वारा उनकी पूर्ति करना भी अनिवार्य है, अतः प्रजननयोग्य गौओंकी संख्या कम करना हितकर नहीं हो सकता, भले ही उनमेंसे अधिकांशकी दूध देनेकी क्षमता कितनी भी कम क्यों न हो।'

ट्रैक्टरोंका प्रयोग

ट्रैक्टर उक्त समस्याका हल नहीं है। स्व० लालबहादुर शास्त्रीके अनुसार 'देशमें लाखों एकड़ भूमि ऐसी है, जहाँ ट्रैक्टरोंका प्रयोग हो ही नहीं सकता। अमेरिकामें ट्रैक्टरोंसे खेती हो सकती है, क्योकि वहाँ एक किसानके पास कम-से-कम १४ एकड़ भूमिका औसत है, जब कि भारतमें एक एकड़ भूमिका औसत है। ऐसी दशामें हमें भारतमें खेतीके लिये लंबे समयतक बैलोंपर निर्भर रहना पड़ेगा।' (भाषण, हैदराबाद १९६५)

केन्द्रीय गोसवर्धन-परिषद्के अध्यक्ष श्री उ० न० ढेबरके शब्दोंमें '१९६५ के ताजे ऑकड़ोंसे पता चलता है कि देशमें कुल ४० हजार ट्रैक्टर है, जिनमें २० हजार बेकार पड़े हैं। इससे प्रकट होता है कि इस देशमें ट्रैक्टरोकी कितनी कार्यक्षमता है और ट्रैक्टरसे खेती करना कितना लोकप्रिय हो सकता है। जो लोग ट्रैक्टरसे खेती करनेके लिये उतावले हो रहे हैं, उन्हें इस सम्बन्धमें शान्तिसे विचार करना चाहिये।' (भाषण, हैदराबाद १९६५)

देशमें कृषि और अन्य कार्योमें संलग्न बैलोंकी संख्या लगभग सात करोड़ है। उनके द्वारा बिना किसी अन्य सहायताके ३ करोड़ हॉर्स पॉवर शक्ति पैदा होती है, जिसे उत्पन्न करनेके लिये मध्यम प्रकारके ४० लाख ट्रैक्टरोंकी आवश्यकता होगी। इन ४० लाख ट्रैक्टरोंको प्राप्त करने और चलानेमें कितना धन खर्च होगा, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

सर अलबर्ट हॉवर्डने अपने (An Agricultural Testament) में ट्रैक्टरसे खेती करनेकी हानि भी

दिखायी है। आपने लिखा है—'घोड़े और बैलके बदले बिजलीकी मोटर और तेलवाले इंजनोसे खेती करनेमें एक हानि यह है कि इन मशीनोंसे गोबर और मूत्र नहीं मिलता। फलतः ये मिट्टीकी उर्वरता बनाये रखनेमे किसी कामके नहीं हैं' (उल्टे उनके तेल और धुएँसे खेतकी उर्वराशक्तिको नुकसान पहुँचता है, पृष्ठ १८)। इसके अतिरिक्त कृषि-विशेषज्ञोंके मतानुसार भी ट्रैक्टर सर्वत्र और सदैव उपयोगी नहीं होते, बंजरभूमिको तोड़ने एवं कृषियोग्य बनानेमे अथवा ऊबड़-खाबड़ भूमिके लिये भले ही वे उपयोगी हो।

उपर्युक्त स्थितिमें भारतमे कृषिके लिये ट्रैक्टरोका प्रयोग न तो सम्भव है और न उपयोगी ही। इस प्रकार भारतीय कृषिके लिये गायकी संतति बैल ही रह जाते हैं। १९२९ में भारतीय कृषि रायल कमीशनने भी लिखा है कि 'गाय और बैल अपनी दृढ़ पीठपर हमारी अर्थव्यवस्थाका सम्पूर्ण भार उठाये हुए हैं।'

गोमय और गोमूत्र

आर्थिक एवं व्यावहारिक दृष्टिसे अमृततुल्य दूध एवं बैलके पश्चात् गोबर और गोमूत्रका स्थान है। भूमिकी उर्वरता और उत्पादन-शक्ति बनाये रखनेके लिये उत्तम खादकी अनिवार्य अपेक्षा सर्वमान्य है। वृद्धता अथवा रोगके कारण गाय यदि दूध और बछडे देने योग्य न रहे तो भी खाद तो वह जबतक जीवित रहती है, देती ही है। डॉ० बॉयलरने गायके गोबरका विश्लेषण करके बतलाया है कि एक टन सूखा गोबर १५५ रत्तल 'सलफेट अमोनिया' (Sulphate Ammonia) की खादके बराबर है।' उन्हींके अनुमानानुसार भारतमे गोवंशसे प्राप्त होनेवाले गोबरसे ही एक करोड़ रुपयेके मूल्यकी खाद प्रतिदिन प्राप्त हो सकती है। यह केवल सूखे गोबरके मूल्यका अनुमान है, जो वर्षमें ३६० करोड़ रुपयेका होगा। डॉ० बॉयलर अंग्रेजी शासनकालमे भारतीय कृषिकी उन्नतिकी जाँच करने कृषि-निष्णातोंका कमीशन लेकर भारत आये थे और तेरह मासतक भारतमे दौराकर उन्होने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी।

डॉक्टर इकल्सनने 'दुधारू ढोर और दुग्ध-उत्पादन' (Dairy cattles and milk-production) नामक पुस्तकमें बताया है कि 'एक हजार रत्तल वजनकी गाय वर्षमें ८ हजार रत्तल मूत्र और १८ हजार रत्तल गोबर देती हैं। ८ हजार रत्तल मूत्रकी खादका मूल्य १३६० रुपया और १८ हजार रत्तल गोबरकी खादका मूल्य १३१० रुपया होता है।' उनका कहना है कि 'यह ठीक है कि व्यवहारमें प्रायः इसका ध्यान नहीं रखा जाता कि पशुओंके गोबर और मूत्रमें उपजाऊ गुणवाले पदार्थ अधिक होते हैं। इनके आँकड़ोमे ८००० रत्तल मूत्रमे जितना नाइट्रोजन होता है, लगभग उतना ही गोबरमे हैं' (यह दिखाकर उक्त बात स्पष्ट की गयी है—पृष्ठ ४८१)।

इकल्सनकी गवेषणाको ध्यानमें रखकर यह कहा जा सकता है कि एक करोड रुपयेसे अधिक मूल्यकी खाद प्रतिदिन गोवंशके मूत्रसे ही मिल सकती है। इसके अतिरिक्त गायके गोबर और गोमूत्रकी एक मात्रा पौधोंके कचरेकी ५ से १० मात्रातकको कम्पोस्टमे परिणत कर सकती है। यदि कम्पोस्ट खादके लिये गोबरमे अच्छा है तो यह बात हमारी बुद्धिमे सहज ही बैठ सकती है कि गाय खाद देनेमात्रसे ही अपनी उपयोगिता सिद्ध कर देती है।

कृत्रिम रासायनिक खाद

कृत्रिम रासायनिक खादसे प्रारम्भमे भले ही उत्पादनमें कुछ वृद्धि दिखायी दे, पर स्वल्पकालमे ही उससे भूमिकी उत्पादनशक्तिका ह्रास हो जाता है और वह प्रायः ऊसर बन जाती है। इस भावी सकटकी गम्भीरतापर हमें अवश्य विचार करना चाहिये।

सर अलवर्ट हार्वर्डने इस विषयमे जो खोज की है, वह ऑखे खोल देनेवाली है। वे भारत-सरकारके इकॉनॉमिक बॉटनिस्ट (Economic Botanist) बनकर भारत आये और 'पूसा कृषि-गवेषणा परिषद्' मे काम करने लगे। अपने दीर्घकालीन अनुभवको आपने ग्रन्थरूपमें उपस्थित किया है जो 'ऐन एग्रीकल्चरल टेस्टामेण्ट' (An Agri-cultural Testament) नामसे प्रकाशित है। इस ग्रन्थमें आपने लिखा है कि 'फसलोंके रोग भूमिके अस्वस्थ और रोगी होनेके कारण होते हैं और भूमिके रोगी होनेका कारण है प्राकृतिक खाद, गोबर या हरी खादका न मिलना। [illegible] गोबर तथा हरी खाद ही भूमिकी प्राकृतिक [illegible] रासायनिक खाद भूमिको जीवांश (ह्यूमस) [illegible] करती।' आप लिखते हैं कि 'वे रासायनिक [illegible] संतुष्ट नहीं रख सकते। इनके उपयोगसे [illegible]

कभी संतुलन नहीं हो सकेगा। पृथ्वी माताका प्राकृतिक खादका अधिकार छीन लेनेसे वह विद्रोही हो गयी है, उसने हड़ताल कर रखी है। कृषिका उत्पादन घट रहा है। जिस क्षेत्रने ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain) जैसे देशकी प्रजाको खिलाया और जहाँसे वहाँकी मशीनोको कच्चा माल दिया जाता है, उसकी जाँच बताती है कि निस्संदेह वहाँकी भूमि अव भार वहन करनेमें असमर्थ हो रही है। भूमिकी उपज विशेषकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, कनाडा, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंडमें द्रुतगतिसे घट रही है।'

डॉक्टर हॉवर्डके निष्कर्षोसे यह स्पष्ट है कि रासायनिक खादका उपयोग करनेसे केवल यही हानि नहीं कि भविष्यमें उससे उपज कम होगी, अपितु यह भी कि उससे भूमिका स्वास्थ्य बिगड़ेगा। फलस्वरूप अस्वस्थ भूमिसे अन्न और चारा भी दूषित उत्पन्न होगा, जिससे मनुष्यो और पशुओके स्वास्थ्यपर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। भारतीय कृषिकी उन्नतिके लिये रासायनिक खादका उपयोग कभी हितकर नहीं हो सकता। इसके साथ ही रासायनिक खादमें काम आनेवाला गन्धक और मशीनोंका विदेशोंसे आयात करना पड़ता है, जो भारतकी अर्थ-व्यवस्थापर एक बड़ा भार है। अतः भारतकी कृषि-अर्थव्यवस्थाकी उन्नतिके लिये गोवंशका सम्यक् संरक्षण और संवर्धन परमावश्यक है, जिसे हम किसी प्रकार आँखोंसे ओझल नहीं कर सकते।

गो-दुग्ध

कृषिके लिये बैल, उत्तम खादके अतिरिक्त गाय हमें शरीर और मस्तिष्कको पुष्ट करनेके लिये अमृततुल्य दुग्ध भी प्रदान करती है। हमारे देशकी अधिकांश जनता आज भी शाकाहारी है। अतः दूध ही भारतकी अधिकांश जनताका सर्वश्रेष्ठ पौष्टिक आहार है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे गो-दुग्ध, गोदधि, गोतक्र अत्यावश्यक है। उससे अनेक प्रकारके रोग दूर होते हैं। इसी प्रकार आयुर्वेद एवं आधुनिक विज्ञानके अनुसार भी शरीर-स्वास्थ्य एवं रोगनिवृत्तिके लिये गायके दूध, दही, मट्ठा, मक्खन, घृत, मूत्र, गोबर आदिका अत्यन्त उपयोग है।

किंतु दूधकी जो मात्रा आज हमारे देशमे उपलब्ध है, वह बहुत ही निराशाजनक है। भारतमे प्रतिव्यक्ति दूधकी खपत केवल ४.७५ औंस है, जबकि अमेरिका, डेन्मार्क, स्विट्जरलैंड आदि देशोंमें प्रतिव्यक्ति ५० औंस तक है। भोजनविशेषज्ञोके मतानुसार एक व्यक्तिको प्रतिदिन कम-से-कम १३ औंस दूध चाहिये। ऐसी स्थितिमें देशमें एक भी गायकी हत्या होना कदापि उचित नहीं माना जा सकता। यद्यपि देशके वर्तमान गोधनकी दुग्धोत्पादन-क्षमता बहुत क्षीण है, तथापि हमें यह नही भूलना चाहिये कि देशमे आज जितने परिमाणमें दूधका उत्पादन होता है और जितनी भी संख्यामे बैल तैयार होते हैं, वे सब हमें इन्हीं गौओसे ही उपलब्ध होते हैं। इस सम्बन्धमें 'मनुष्य तथा पशुभोजन-कमेटी' (Human Nutrition vis-a-vis Animal Nutrition in India) की निम्नलिखित सम्मति विचारणीय है—

'उक्त तथ्योंसे विदित है कि दुधारू पशुओं और विशेषतः गायोंके दूध देनेकी क्षमता बहुत क्षीण है। यह न्यायसंगत नहीं मालूम होता कि दो पौंड या इससे कम प्रतिदिन दूध देनेवाले पशुओंका पालन-पोषण किया जाय। सामान्य दृष्टिसे देखे तो ऐसे पशुओंका निष्कासन कर देना चाहिये, परतु ऐसा करनेसे पहले यह समझ लेना चाहिये कि इस प्रकारकी नीतिका क्या भयंकर परिणाम होगा? यदि दो पौंडसे कम दूध देनेवाले ऐसे पशुओको बेकार समझकर नष्ट कर दिया गया तो उसके परिणामस्वरूप हमारी वर्तमान दुधारू गायोकी ९० प्रतिशत संख्या नष्ट हो जायगी। इसका फल यह होगा कि हमें इस समय जो ९.७ मिलियन टन दूध प्राप्त हो रहा है, उसमेंसे ७ मिलियन टन दूधसे हाथ धोना पड़ेगा।'

उपर्युक्त तथ्योंको ध्यानमें रखते हुए यदि हमें देशमें दूधका वर्तमान उत्पादन कायम रखना है और उसमें वृद्धि करनी है तो एक भी गायकी हत्या होना कदापि उचित नहीं माना जा सकता। हाँ, संतुलित आहार आदि साधनोंसे उसकी दुग्धोत्पादन-क्षमता बढ़ानेका प्रयास ही अधिक उपयोगी हो सकता है। अनुभवी विशेषज्ञोंने अब इस तथ्यको स्वीकार कर लिया है कि गायको पर्याप्त मात्रामें संतुलित आहार देनेमात्रसे उसका दुग्धोत्पादन लगभग ४०—५० प्रतिशत बढ़ाया जा सकता है। अतः कम दूध देनेवाली गायोकी दुग्धोत्पादन-क्षमता बढ़ानेके लिये अनुभूत प्रयोग करना देशके सर्वविध हितमें है (अच्छे साँड़ोंके

साथ सम्बन्ध कराने और गो-संतानोंको गौका सम्पूर्ण दूध पिलानेसे दो-तीन पीढ़ियोंमें ही आशातीत गोवंशकी उत्तम स्थिति और दुग्धवृद्धि हो सकती है)। भारत-सरकारद्वारा प्रस्ताव-संख्या एफ २५-८। ४७ एल, दिनांक १९ नवम्बर १९४७ के अन्तर्गत गोरक्षण एवं गोसंवर्धन-विशेषज्ञ समितिकी निम्नलिखित सिफारिश उपर्युक्त तथ्योंके प्रमाणित करनेके लिये निःसंदेह पर्याप्त है—

'इस समितिकी रायमें किसी भी अवस्थामें भारतमें गोहत्या होना वाञ्छनीय नहीं है। कानूनद्वारा गोहत्या बंद हो जानी चाहिये। भारतकी सुख-समृद्धि अधिकांशतः गोवशके ऊपर निर्भर है। भारतकी आत्माको तबतक संतोष नहीं होगा, जबतक पूर्णतया गोहत्या बंद नहीं हो जायगी और गोवंशकी वर्तमान दीन-हीन दशाको सुधारा नहीं जायगा।'

अनुपयोगी पशुओंका हौआ

सम्पूर्ण गोवंशकी हत्यापर प्रतिबन्धके विरुद्ध गोहत्याके समर्थकोंकी ओरसे देशमें अनुपयोगी पशुओकी संख्याका हौआ खड़ा किया जाता है। इस सम्बन्धमे पहली बात तो यह है कि गोवंशके पशुओकी विविध उपयोगिता देखते हुए, जैसा कि विस्तारसे दिखाया जा चुका है, देशमे कोई अनुपयोगी पशु है ही नहीं। हमारे यहाँ गोपालन दुग्ध, बैल और खादके लिये किया जाता है। अतः केवल दूध और बैल-शक्तिकी दृष्टिसे गोवंशकी उपयोगिता निश्चित करना ठीक नहीं है। किंतु सरकारी निष्णातोने सदैव केवल दुग्धोत्पादन और बैल-शक्तिको लेकर ही अनुपयोगी पशुओकी संख्या बढा-चढ़ाकर प्रस्तुत करनेका प्रयत्न किया है। इतनेपर भी सन् १९५१ की पशुगणना-रिपोर्टके अनुसार तथाकथित अनुपयोगी पशुओकी संख्या २.५ प्रतिशत अर्थात् लगभग ४० लाख थी। देशके ७ लाख गॉवोमे फैले ये पशु एक मोटे अनुमानके अनुसार गोबर और गोमूत्रके रूपमे प्रतिपशु ४८ रुपये वार्षिक आय देता है जब कि विशेषज्ञोंद्वारा निर्मित गोसदन-योजनाके अनुसार ऐसे एक अनुपयोगी पशुके पालनपर ३६ रुपये प्रतिवर्ष खर्च आता है। इस प्रकार तथाकथित अनुपयोगी पशु भी वास्तवमें अनुपयोगी नहीं है।

दूसरी बात यह कि गोहत्यापर प्रतिबन्धसे अनुपयोगी गायोंकी संख्याका कोई सम्बन्ध नहीं है। सरकारी आँकड़ोंको देखनेसे पता चलता है कि जिन राज्योंमें गोहत्या बंद है, वहाँ अनुपयोगी पशुओकी संख्या उन राज्योंकी तुलनामें बहुत कम है, जिनमे गोहत्या जारी है। उदाहरणके लिये जम्मू और कश्मीरमें केवल ०.७७ प्रतिशत निरुपयोगी पशु हैं। राजस्थानमें १.२२ प्रतिशत, बिहारमे १.९२ प्रतिशत, मध्यप्रदेशमें १.५१ प्रतिशत, मैसूरमे २.१५ प्रतिशत, पंजाबमें ०.७ प्रतिशत और उत्तरप्रदेशमे ०.७८ प्रतिशत अनुपयोगी पशु हैं, यद्यपि इन प्रदेशोंमे गोहत्यापर पूर्ण अथवा आंशिक प्रतिबन्ध है। जबकि जिन प्रदेशोमे गोहत्यापर प्रतिबन्ध नहीं है, उनमें यह संख्या आसाममे ४.३६ प्रतिशत, मद्रासमें ५.२८ प्रतिशत, आन्ध्रप्रदेशमे ३.३४ प्रतिशत और बंगालमे २.४७ प्रतिशत है। इन आँकडोसे सिद्ध होता है कि गोहत्या-बंदीके साथ अनुपयोगी पशुओंकी संख्याका कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस प्रकार गोहत्या-बंदीसे देशमें अनुपयोगी पशुओंकी बढ़ोत्तरीके कारण उत्पन्न आर्थिक संकटकी बात सर्वथा निराधार सिद्ध होती है। 'दातार-कमेटी' की रिपोर्ट, जिसमें सभी सरकारी पशु-निष्णात सम्मिलित थे, की पूर्ण गोहत्या-बंदीके लिये सिफारिश तथा प्रोफेसर भाभाके ये शब्द कि 'आज जिस स्थितिमे हम हैं, उसमे गोहत्या बंद होनी चाहिये, क्योंकि इससे देशको हानि है' एवं संविधानकी ४८ वीं धारा उपर्युक्त निष्कर्षकी पुष्ट साक्षी हैं।

गो-संवर्धन

इसमे संदेह नहीं कि गोहत्या-बंदीके साथ-साथ गायोकी दुग्धोत्पादन-क्षमता बढ़ाने, नस्ल-सुधार एवं गोबर और गोमूत्रके समुचित उपयोगकी व्यवस्थाके लिये गोसंवर्धनका सबल प्रयास अपेक्षित है। किंतु गोहत्यापर प्रतिबन्धके अभावमे गोसंवर्धनकी बात गोरक्षाकी दृष्टिसे विशेष महत्त्वकी नहीं, क्योंकि गोहत्याके चलते सरकारद्वारा प्रस्तावित गोसंवर्धन भी उसके मुर्गा-मुर्गी-संवर्धन, मछली-संवर्धन और शूकर-संवर्धनकी तरह ही केवल अर्थ-मांसप्राप्तिके लिये ही होगा। अतः सम्पूर्ण गोवंशकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगे बिना गोसंवर्धनकी बात केवल धोखाधड़ी ही है।

गौ माताकी सेवा सर्वोपरि धर्म है

(ब्रह्मलीन जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजके सदुपदेश)

अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज महान् उच्चकोटिके अद्भुत विद्वान्, घोर त्यागी, तपस्वी, शास्त्रानुसार जीवन व्यतीत करनेवाले विलक्षण महापुरुष थे। आपने अपने समस्त जीवनभर बड़ी अद्भुत गोभक्ति की थी और गोरक्षामें खुल करके भाग लिया था तथा गोरक्षार्थ समस्त भारतमें घूम-घूमकर प्रचार किया था और गोरक्षार्थ नाना प्रकारके कष्ट झेले थे। आप जीवनभर गोदुग्धका पान करते रहे। आपका यह नियम था कि आप कहीं भी जा रहे हों यदि रास्तेमें पूज्या गौ माता आती या सामने खड़ी दिखलायी पड़ती थी तो झटसे उसे आप अपने सीधे हाथपर लेते थे और उसे मन-ही-मन बड़ी श्रद्धा-भक्तिके साथ प्रणाम किया करते थे। गोभक्षकोंसे स्पर्श कराना, गोभक्षकोंको देखना और गोभक्षकोंकी वायुका स्पर्श हो जाना भी बड़ा पाप मानते थे और इनसे बिलकुल दूर रहा करते थे। वे गौ माताको पूज्या, प्रातःस्मरणीया और अपने प्राणोंसे भी प्यारा समझा करते थे और गौ माताकी ओर पैर करके कभी नहीं वैठते थे तथा गोरक्षार्थ प्राण दे देना महान् परम सौभाग्य समझा करते थे।

कुछ समय पूर्व भक्त श्रीरामशरणदासजीने श्रीस्वामीजीके श्रीचरणोंमें बैठ करके गोरक्षा-सम्बन्धी जो महत्त्वपूर्ण सदुपदेश प्राप्त किये थे, संक्षेपमें उन्हें यहाँ दिया जा रहा है—

पूज्या गौ माताकी अद्भुत महिमाको समझो

प्रश्न—पूज्य महाराजजी! गौ माताकी रक्षा कैसे हो और धर्मप्राण भारतसे गोहत्याका काला कलंक कैसे मिटे?

उत्तर—गोहत्या बंद करनेकी बात करनेसे पहले पूज्या गौ माताकी अद्भुत विलक्षण महिमाको समझो और गोहत्या कैसे बंद हो फिर इसपर विचार करो तथा जो गोहत्यारे हैं अथवा जो गोहत्याके समर्थक हैं, उनसे अपना सम्बन्ध-विच्छेद करो। तभी कुछ हो सकेगा अन्यथा नहीं। परम पूज्या प्रातःस्मरणीया गौ माताकी बड़ी ही अद्भुत महिमा है। 'गौ मातामें ३३ करोड़ देवी-देवताओंका वास है'—यह कोई कपोलकल्पित बात नहीं है। गौ माताकी रक्षामें हँसते-हँसते बलिदान हो जानेपर निश्चितरूपसे बड़ी महान् उत्तम गति प्राप्त होती है। इनकी रक्षामें प्राण दे देनेवालोको श्रीगोलोकधामकी प्राप्ति होती है, इसमें तनिक भी संदेह करनेकी आवश्यकता नहीं है। गौ माता जहाँ हमारी पूज्या है वहीं वह साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्पर ब्रह्म भगवान् श्रीकृष्णकी भी पूज्या है और परम इष्टदेवी है। भगवान् श्रीराम-कृष्णके इस धराधामपर अवतार लेनेका एकमात्र कारण पूज्य गौ-ब्राह्मणोंकी रक्षा करना है, यह एक विलकुल सत्य वात है। पूज्या गौ माताके विना हिन्दू-जाति, हिन्दूधर्म, हिन्दूसभ्यता-संस्कृतिकी कभी भी रक्षा नहीं हो सकती। याद रखो—पूज्या गौ माताके कारण ही हिन्दू-जातिका अस्तित्व बचा हुआ है और हिन्दू-जाति दिखलायी पड़ रही है। यदि पूज्या गौ माता समाप्त कर दी गयी तो हिन्दू-जाति भी सदा-सर्वदाके लिये समाप्त हो जायगी, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। पूज्या गौ माताका घृत और पूज्य ब्राह्मणोंद्वारा उच्चारित वेदमन्त्र दोनों ही यज्ञमें काम आते हैं और यज्ञ हिन्दू-जातिका प्राण है।

धर्मप्राण भारतमें एक ऐसा सुन्दर समय था और ऐसा भी स्वर्णयुग था जब कि भारतके हिन्दुओंके घर-घरमें पूज्या गौ माताओंकी पूजा-आरती हुआ करती थी। साक्षात् परब्रह्म परमात्मा भी भगवान् श्रीराम-कृष्णके रूपमें अवतार लेकर आते थे और स्वयं अपने हाथोंसे उनकी सेवा-शुश्रूषा किया करते थे तथा नंगे पाँवों जंगल-जंगल जाकर गायोंको चराया करते थे और अपना गोपाल नाम रखाते थे। भारतके बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राट्तक पूज्या प्रातःस्मरणीया गौ माताकी अपने हाथोंसे सेवा करनेमें और उनकी रक्षाके लिये हँसते-हँसते अपने प्राणतक दे देनेमें बड़े गर्व तथा महान् गौरवका अनुभव किया करते थे। घर-घरमें गोदुग्धकी

नदियाँ बहा करती थीं और पूज्या गौ माता निर्भय होकर विचरा करती थीं और सारा भारत तथा सारा हिन्दूसमाज परम गोभक्त था।

मुसलमानी कालमें जब भारतके और हिन्दू-जातिके महान् दुर्दिन आये तो मुसलमानोने भारतमें प्रवेश किया और यहाँकी धर्म-संस्कृतिको मिटाना प्रारम्भ कर दिया। हमारे परम पवित्र देव-मन्दिर तोड़ डाले गये, पर हमने फिरसे मन्दिर बना डाले। मुसलमानोने गौको मारना चाहा, पर हमने अपने प्राण देकर भी उसे बचा लिया। उन्होने अत्याचार किये और बड़े-बड़े जुल्म ढाये, पर लाख प्रयत्न करनेपर भी वे हमारी श्रद्धाको, भावनाको और गौओंके प्रति श्रद्धा-विश्वासको हमारे हृदयसे, मनसे नहीं मिटा सके और हम पुनः पहले-जैसे बनकर और छाती तानकर खड़े हो गये। देशका महान् दुर्भाग्य तो तब सामने आया जब कि हिन्दुओंके अंदर ही कुछ पथभ्रष्ट मनुष्योने समाजको दिग्भ्रमित कर डाला और गौको एक सामान्य पशुकी संज्ञा दे दी।

जबतक हिदू गायको पूज्य और ३३ करोड़ देवी-देवताओंका दिव्य मन्दिर मानता रहा, तबतक इसके लिये मरता रहा, परतु जब गायको उसने केवल कोरा दूध देनेवाला पशु बताकर सामने खड़ा कर दिया तब हिन्दुओने झटसे गोरक्षासे मुँह मोड़ लिया। हमारी जिस पवित्र भावनाको औरंगजेब, महमूद गजनवी, तैमूरलंग नहीं खतम कर सके उसी परम पवित्र भावनाको, श्रद्धाको हिन्दुओमे ही उत्पन्न होनेवाले कुछ नेताओने अपने ही हाथो समाप्त कर डाला, इससे बढ़कर महान् घोर दुःखकी बात और क्या होगी!

गौ माताकी अद्भुत महिमा

महामहिमामयी गौ हमारी माता है। उसकी बड़ी ही अद्भुत महिमा है। वह सभी प्रकारसे पूज्य है। समस्त वेद, शास्त्र, पुराण, रामायण, भागवत, महाभारत आदि गोमाताकी महिमासे भरे पड़े हैं। गोमाताकी रक्षा और सेवासे बढ़कर कोई दूसरा महान् पुण्य नहीं है। हिंदुओको हमारी आगे कथित बातोंपर अवश्य ही ध्यान देना चाहिये और इन बातोंका मनोयोगसे पालन करना चाहिये—

१-गोमाताको कभी भूलकर भी भैंस, बकरी आदि अन्य पशुओंकी भाँति साधारण पशु नहीं मानना चाहिये। वह सामान्य पशु नहीं है। उसके शरीरमें ३३ करोड़ देवी-देवताओंका वास है। गोमाता परब्रह्म श्रीकृष्णकी परमाराध्या है और गोमाता भवसागरसे पार लगानेवाली साक्षात् देवी है, यह मानना चाहिये।

२-हमें अपने स्थानपर गोमाताको रखना चाहिये और उसकी तन, मन, धनसे सेवा करनी चाहिये।

३-प्रातःकाल उठते ही श्रीभगवत्स्मरण करनेके पश्चात् यदि सबसे पहले गोमाताके दर्शन करनेको मिल जाय तो इसे अपना परम सौभाग्य मानना चाहिये। गोमाताका प्रातः-काल नित्य दर्शन करना चाहिये।

४-गोमाताको देखते ही बड़ी श्रद्धा-भक्तिके साथ प्रणाम करना चाहिये।

५-यदि रास्तेमे जाते समय कहीं गोमाता आती हुई दृष्टिमें पड़ जाय तो उसे अपने दाहिनेसे जाने देना चाहिये।

६-जहाँतक हो सके गोमाताका ही दूध पीना और गोघृतका प्रयोग करना चाहिये। विदेशोसे आये डिब्बोंका दूध कभी नहीं पीना चाहिये। कोटोजम नामक नकली घी जो बहुत चला है, उसमे सूअरकी चर्बीका प्रयोग होता है। उसे भूलकर भी कभी प्रयोगमे नहीं लाना चाहिये। गायकी और सूअरकी चर्बीसे बनाया गया साबुन कदापि काममें नहीं लेना चाहिये, बडा घोर पाप लगता है।

७-गोमाताको न कभी मारना चाहिये और न उन्हें सताना चाहिये। उन्हे किसी भी प्रकारका कष्ट नहीं देना चाहिये, नहीं तो २१ पीढ़ी घोर नरकमें जाती है।

८-गोमाताकी ओर कभी भूलकर भी न तो पैर करके बैठना चाहिये ओर न कभी पैर करके सोना चाहिये। गोमातासे पैरका स्पर्श कभी नहीं होना चाहिये और गोमाताके ऊपर कभी थूकना नहीं चाहिये, इससे महान् पाप लगता है।

९-गोमाताको घरपर रखकर कभी भूखी-प्यासी नहीं रखना चाहिये तथा उसे गर्मीकी धूपमें नहीं बाँधना [illegible] जाड़ेके दिनोमे उसे सर्दीमे नहीं बाँधना चाहिये। [illegible] भूखी रखता है ओर जो गायको [illegible]

गायको धूपसे तथा सर्दीसे नहीं वचाता और गर्मी-सर्दीसे रक्षा नहीं करता, उसका कभी श्रेय नहीं होता है। गायको पूरा भरपेट खिलाना चाहिये और स्वच्छ पानी पिलाना चाहिये। गायकी खूब सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिये और खूब प्रसन्न रखना चाहिये। गायें लोकमाता हैं।

१०-नित्यप्रति भोजन वनाते समय सबसे पहले गायके लिये रोटी वनानी चाहिये। गोग्रास निकालना चाहिये और गायको नित्यप्रति रोटी खिलानी चाहिये। गोग्रासका बड़ा महत्त्व है।

११-गौओके लिये चरणि बनानी चाहिये और उसमे नित्यप्रति पवित्र ताजा ठंडा जल भरना चाहिये, जिसे पीकर गाय-वैल प्रसन्न हों और तुम्हारी २१ पीढ़ी तर जाय। यह हमारा-तुम्हारा कर्तव्य है।

१२-अनाथ गायोके लिये अपनी ओरसे हरी-हरी घासकी गठिया मोल लेकर डाल देनी चाहिये, जिससे गायें पेट भरकर खायँ और सुखकी साँस ले।

१३-भूलकर भी कभी अपनी गाय गोभक्षकोंको नहीं वेचनी चाहिये। गायोंको यवनोके हाथ बेचना पाप मानना चाहिये। उनकी रक्षा और पोषणका ध्यान उस समय भी रखना चाहिये।

१४-गाय उसी ब्राह्मणको दान देना चाहिये जो वास्तवमें गायको पाले और गायकी रक्षा-सेवा करे। यवनोंको और कसाईको न वेचे। अनधिकारीको गायका दान देना घोर पाप करना है।

१५-गायको कभी भूलकर भी अपनी जूठी वस्तु नहीं खिलानी-पिलानी चाहिये। गाय माता साक्षात् जगदम्बा हैं। इन्हें जूठी वस्तु खिला-पिलाकर भला कौन सुखी रह सकता है?

१६-धर्मप्राण भारतकी पूज्या गायोको कृत्रिम गर्भाधान नहीं कराना चाहिये, यह महान् घोर पाप है और अक्षम्य अपराध है। विदेशी साँड़ जो वास्तवमें साँड़ नहीं होते और जो गाय-भैंसे आदिको मिलाकर वर्णसकर जानवर होते हैं, उन वर्णसंकरोंके वीर्यको विदेशोसे मँगाकर और उस वीर्यको मुर्गीके अंडेके साथ गायके गर्भाशयमे चढ़ाना तथा उस घोर पापको नस्ल-सुधार वताना घोर पाप करना है और अपनी इक्कीस पीढ़ियोंको घोर नरकोमें ढकेलना है। भारतीय गायोंकी नस्लके सुधारके नामपर उनका नस्ल-संहार करना है। इस घोर पापसे बचना चाहिये।

१७-नित्यप्रति गायके परम पवित्र गोबरसे रसोईघरको लीपना और पूजाके स्थानको भी गोमाताके गोबरसे लीपकर शुद्ध करना चाहिये।

१८-गायके दूध, गायके घी, गायका दही, गायके गोबर और गोमूत्र—इन पाँचोंके द्वारा तैयार किये गये पञ्चगव्यके द्वारा मनुष्योंके अस्थिगत पाप भी दूर हो जाते हैं। इसलिये समय-समयपर पञ्चगव्यका सेवन करते रहना चाहिये। गायके गोबरमें लक्ष्मीजीका, गोमूत्रमें गङ्गाजीका वास है। इसके अतिरिक्त इनका दैनिक जीवनमें प्रयोग करनेसे पापोंका नाश और गोमूत्रके औषधरूपमें सेवनसे रोगाणु नष्ट होते हैं।

१९-जिस देशमें गोमाताके रक्तका एक भी बिन्दु गिरता है, उस देशमें किये गये योग, यज्ञ, जप, तप, भजन-पूजन, दान-पुण्य आदि सभी शुभ कर्म निष्फल हो जाते हैं और सब धर्म-कर्म भी व्यर्थ हो जाते हैं। आज इस धर्मप्राण भारत देशमें नित्यप्रति हजारों गौएँ काटी जाती हैं, इससे बढ़कर भला घोर पापकी पराकाष्ठा और क्या होगी? धर्मप्राण भारतसे यदि गोहत्याका काला कलंक नहीं मिटाया गया तो फिर भारतका स्वतन्त्र होना किस कामका? यदि भारत वास्तवमें स्वतन्त्र हो गया तो फिर स्वतन्त्र भारतमें यह गोहत्या क्यों? इस स्वतन्त्रताका राग अलापना कोरा धोखा देना है और कुछ नहीं है।

२०-यदि तुम नित्यप्रति गोमाताकी पूजा-आरती, परिक्रमा किया करो तो यह बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है। पर यदि तुम नित्यप्रति ऐसा न कर सको तो वर्षमें एक बार गोपाष्टमीके दिन तो कम-से-कम अवश्य ही तुम्हें व्रत रखकर गोमाताकी श्रद्धा-प्रेमसे पूजा करनी ही चाहिये और उस दिन गोमाताकी आरती, परिक्रमा आदि करनी चाहिये एवं गोमाताको मिष्टान्नादि खिलाना चाहिये।

२१-गाय यदि बीमार हो, लँगड़ी-लूली हो गयी हो, अपाहिज हो गयी हो तो उसकी तन-मन-धनसे सदा सेवा-शुश्रूषा करनी चाहिये और उसको ओषधि देनी चाहिये तथा

उसकी देख-भाल तत्परतासे करनी चाहिये।

२२-गोरक्षार्थ यदि प्राण भी दे देने पडे तो सहर्ष दे देनेसे निश्चित रूपसे श्रीगोलोकधामकी प्राप्ति होती है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं करना चाहिये।

२३-गोमाता यदि किसी खड्डेमें गिर गयी हो, किसी कूएँमें गिर गयी हो अथवा किसी दलदलमे फँस गयी हो तो सब काम छोड़कर सबसे पहले गोमाताको निकालनेका और बचानेका प्राणपणसे प्रयत्न करना चाहिये। यह सबसे बडा योग है, यज्ञ है, जप-तप है, पूजा-पाठ है तथा दान-पुण्य है, इसे स्मरण रखना चाहिये।

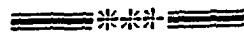
२४-जो गोमाताके बछड़ोंको—बैलोको हलोमे जोतकर उन्हे बुरी तरहसे मारते-पीटते हैं, सताते है, काँटी चुभाते है, गाड़ीमें जोतकर उनके ऊपर उनकी सामर्थ्यसे बाहर बोझा लादते हैं, उन्हें घोर नरककी प्राप्ति होती है और उनके किये हुए दान-पुण्य सब निष्फल हो जाते है। ऐसा कभी नहीं करना चाहिये।

२५-जो जल पीती और घास खाती गायको हटाते हैं, वे पापके भागी बनते हैं। गायको कभी भूलकर भी यदि वह जल पी रही हो अथवा घास खा रही हो तो नहीं हटाना चाहिये।

२६-यदि तीर्थयात्रा करनेकी इच्छा हो और मन करता हो, परतु शरीरमे बल न होनेके कारण और पासमे धन न होनेके कारण असमर्थता हो तो चिन्तित होनेकी आवश्यकता नहीं है। पूज्या गोमाताके दर्शन करो, गोमाताकी पूजा करो और सर्वतीर्थमयी गोमाताकी परिक्रमा करो। गो-माताको मधुर पक्वान्न, गुड या मीठी रोटी खिलाओ, इस तरह सब प्रकारसे उसकी सेवा करो। बस, घर बैठे तैंतीस करोड देवी-देवताओका पूजन हो गया, कारण जिस गोमातामे समस्त देवताओका निवास हैं। इसलिये तुम्हें घर वैठे ही समस्त तीर्थोकी यात्राका सुफल प्राप्त हो जायगा। यह वडा ही सरल और सुलभ साधन है, इसे करनेसे न चूको।

२७-जो लोग गोरक्षाके नामपर, गोशालाओंके नामपर रुपये-पैसे इकट्ठा करते हैं और उन रुपयोको गोरक्षामें न लगाकर स्वय ही खा जाते हें, उनसे वढकर पापी और दूसरा कौन होगा। इससे वचना चाहिये। गोमाताके निमित्त आये हुए पैसोमेसे एक पाई भी कभी भूलसे भी अपने काममे मत लगाओ और जितना वने अपनी ओरसे गोहितमें तन-मन-धन लगाते रहो। पर गोके हकका द्रव्य और स्वत्व कभी भूलकर भी मत लो। इसीमे भलाई है। गोमाताके नामपर पैसा खानेवालोको नरकका कीडा वनना पडता है।

तात्पर्य यह है कि भारतमे रहनेवाले प्रत्येक भारतीय और हिदूमात्रका गोमाताकी सेवा करनेमे ही सब प्रकारसे श्रेय और कल्याण है।



गोविंदकी गैया

आठों जाम सेवामें दिलीप-से महीप रहे,
पायो पुचकार-प्यार कुँवर कन्हैयाको।
दूध-घृत-अमृत सों पोषत हमारो तनु,
जाको साँड वन्यो डाँड भारतकी नैयाको॥
गो-धन रखैयाहीको साँचो धनवान जानो,
नीको सनमानो धेनु-धनके चरैयाको।
गौर करो गायकी गुहारपर दौर परो,
कष्ट हरो भैया। भोरी गोविंदकी गयाको॥

(एक स्वान्तःसुखाय)

——-ॐॐॐ-——

संस्कृतिकी दृष्टिसे गौका महत्त्व

(ब्रह्मलीन योगिराज श्रीदेवराहा बाबाजी महाराजकी अमृत-वाणी)

भारतीय संस्कृतिकी दृष्टिसे गौका महत्त्व तो गायत्री और गङ्गासे भी बढ़कर है। गायत्रीकी साधनामे कठिन तपस्या अपेक्षित है। गङ्गासेवनके लिये भी कुछ त्याग करना ही पड़ता है, परंतु गौका लाभ तो घर बैठे ही मिल जाता है। दुःखकी बात यह है कि आज गौको साधारण पशु समझकर उसकी उपेक्षा की जा रही है और लोग उसका महत्त्व नहीं समझ पा रहे हैं। यदि वाक् गायत्री है, प्राण गङ्गा है तो मन गौ है। मनकी शुद्धिके बिना न तो कोई साधना हो सकती है और न भौतिक उपलब्धिका सुख ही प्राप्त हो सकता है। मनुष्यकी सम्पूर्ण क्रियाओंका मूल मन है और गौ मनकी शुद्धिका मूल हेतु है। मानव-जीवनसे पशु-जगत्का यों भी घनिष्ठ सम्बन्ध है, फिर दिव्य पशु तो मानव-जीवनकी आधारशिला है। वेदमें सामान्य और दिव्य पशुओका पर्याप्त विवेचन हुआ है। गौ और गौकी संतान दोनो ही दिव्य पशु हैं।

ऋग्वेदमे गौको वृषभ कहा गया है। वृषभ गौका ही पुँल्लिङ्ग-रूप है। वेदमें सबसे अधिक वर्णन गौका हुआ है। जिस प्रकार गायत्री और गङ्गा प्रतीक और स्थूल दोनो ही रूपोमें विश्व-विज्ञान और मानव-जीवनका प्रतिनिधित्व करती हैं, उसी प्रकार गौका भी महत्त्व है। उषाकी रश्मियोंको गौके ही रूपमे चित्रित किया गया है। मेघका भी गौके रूपमे मूर्तीकरण हुआ है। मेघ-रूप गौसे ही विद्युत्-रूप बछड़ेका जन्म होता है। बडे-बड़े सुन्दर रूपकों और उपमानोंसे वेदमे गौकी महिमा गायी गयी है। अथर्ववेदमें लिखा है—'**विश्वरूपा धेनुः कामदुघा मेऽस्तु**' (४। ३४। ८)। भारतीय संस्कृति कर्म-प्रधान है। यज्ञ भी कर्मका ही एक रूप है। जिस प्रकार यज्ञचक्र गौके बिना सम्भव नहीं, उसी प्रकार कर्मचक्रको भी सुन्दर, सुखद और अनुकूल बनानेके लिये गौकी आवश्यकता है। गौके पाँचो गव्योंका उपयोग जिस प्रकार यज्ञमें होता है, उसी प्रकार मानव-जीवनमें भी पञ्चगव्यका बहुत उपयोग है। वेदमें गौकी इतनी महिमा है कि देवताओंकी माता अदितिको 'धेनु' कहा गया है और देवताओंको गोजात बताया गया है। यत्र-तत्र गौके दूध और घीकी आहुतिको 'इडा' कहा गया है। वाजसनेयी संहितामें गौको चित्, मन, धी तथा दक्षिणा आदि अनेक नामोंसे अभिहित किया गया है और उसे हर प्रकारसे पूज्य माना गया है—

चिदसि मनासि धीरसि दक्षिणासि क्षत्रियासि यज्ञियास्यदितिरस्युभयतः शीर्ष्णी। सा नः सुप्राची सुप्रतीच्येधि मित्रस्त्वा यदि बध्नीतां पूषाध्वनस्पात्विन्द्रायाध्यक्षाय॥ अनु त्वा माता मन्यतामनु पिताऽनु भ्राता सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्यः। सा देवि देवमच्छेहीन्द्राय सोमं रुद्रस्त्वा वर्त्तयतु स्वस्ति सोमसखा पुनरेहि॥ (यजुर्वेद ४। १९-२०)

अर्थात् 'हे सोमक्रयणी गौ! तुम चिदात्मा हो, बुद्धिस्वरूपा हो, मनःस्वरूपा हो, दक्षिणारूप हो, दाताकी कष्टसे रक्षा करनेवाली हो, यज्ञसम्बन्धिनी होनेसे यज्ञके योग्य हो, देवमाता अदितिस्वरूपा हो, पृथ्वी और स्वर्ग दोनो ओर सिर रखनेवाली, अर्थात् दिव्य और भौम भोगोको देनेवाली हो। तुम हमारे लिये पूर्वमुखी, पश्चिममुखी होओ। सूर्य दक्षिण पादसे तुमको बाँधे। पूषा देवता यज्ञके स्वामी इन्द्र देवताकी प्रसन्नताके लिये मार्गमें तुम्हारी रक्षा करें। हे वाणीरूपी गौ! सोम लानेमें प्रवृत्त तुमको तुम्हारी पृथ्वी माता आज्ञा दे, स्वर्ग पिता आज्ञा दे, सहोदर भाई ईश आज्ञा दे, एक यूथ (समूह) में प्रकट होनेवाला आत्मप्रतिबिम्ब सखा आज्ञा दे। हे दिव्यगुणयुक्त सोमक्रयणि! तुम इन्द्रके लिये सोमलता लानेको जाओ। रुद्र देवता तुमको पुनः हमारी तरफ लौटावे, सोमको लेकर तुम क्षेमपूर्वक फिर हमारे पास आ जाओ। (इन मन्त्रोंद्वारा वाणीरूपी गौकी स्तुति की गयी है।)

अथर्ववेदमें तो '**रूपायाघ्न्ये ते नमः**' कहकर गौकी देववत् पूजाका विधान है। ऋग्वेदमे उस स्थलको भी परम पवित्र माना गया है जहाँ गाय निवास करती है। सभी प्रमुख स्मृतियो और पुराणोंमे गौकी महिमाका गान है। यह सब प्रशस्ति किसी कारण-विशेषसे की गयी है और इसमें कारण-विशेष यही था कि मानव-जीवनमे गौसे बढ़कर कोई दूसरा पदार्थ नहीं है। गौकी महिमाका सबसे अधिक वर्णन महाभारतके अनुशासनपर्वमे हुआ है। श्रुतिको उद्धृत करते हुए भीष्म कहते हैं—

गौर्मे माता वृषभः पिता मे
दिवं शर्म जगती मे प्रतिष्ठा।

(महाभा०, अनु० ७६। ७)

ऊर्जस्विन्य ऊर्जमेधाश्च यज्ञे
गर्भोऽमृतस्य जगतोऽस्य प्रतिष्ठा।
क्षिते रोहः प्रवहः शश्वदेव
प्राजापत्याः सर्वमित्यर्थवादः॥

(महाभा०, अनु० ६। १०)

गायत्री और गङ्गाकी भाँति गौका सम्बन्ध सूर्य और चन्द्रमासे है—इसलिये सौर्य और सौम्य विशेषण गौके लिये प्रयुक्त हुए हैं तथा उशीनरसे लेकर चक्रवर्ती दिलीपतकके गो-प्रेमका वर्णन पुराणों एवं महाभारतमे हुआ है। वेदमे सूर्यकी एक प्रमुख किरणका नाम कपिला है। इसलिये महाभारतमें कपिला गौकी बहुत प्रशंसा की गयी है। यज्ञमे जिस सोमकी चर्चा है वह कपिलासे ही प्राप्त होता है—'यज्ञैराप्यायते सोमः स च गोषु प्रतिष्ठितः।' कपिला गौकी उत्पत्ति और स्वरूपका विवेचन महाभारतमे हुआ है। महाभारतकार कहते हैं—

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥
गावो भूतं च भव्यं च गावः पुष्टिः सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथा मूलं गोषु दत्तं न नश्यति॥
अन्नं हि परमं गावो देवानां परम हविः।
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ॥
गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः।

(महाभा०, अनु० ७८। ५—८)

दूध, घी और दहीके अतिरिक्त गौका मूत्र और गोबर भी इतने उपयोगी माने गये हैं कि महाभारतमें स्पष्ट कहा गया है कि 'गवां मूत्रपुरीषस्य नोद्विजेत कदाचन।' फिर आगे लिखा है—'गोमयेन सदा स्नायाद् गोकरीषे च संविशेत।' धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थोकी सिद्धि गौसे सम्भव है—

गावो महार्थाः पुण्याश्च तारयन्ति च मानवान्।
धारयन्ति प्रजाश्चेमा हविषा पयसा तथा॥
गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः।
तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥
द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्यं [illegible]।
अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥

(महा०, अनु० ८१। [illegible])

गौका गोबर श्रीयुक्त होता है, [illegible] आख्या अनुशासनपर्वके ८१ वे अध्यायमे आती है। [illegible] कृषिके लिये उपयोगिताका उल्लेख भी महाभारतमें है—

धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा।
एतासां तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च।
ततो यज्ञाः प्रवर्तन्ते हव्यं कव्य च सर्वशः॥

(अनुशा० [illegible])

गौके सम्बन्धमे एक विशेष बात लक्ष्य करनेकी [illegible] भी है कि पृथिवीके अर्थमे भी 'गौ' शब्दका प्रयोग अनेक वार हुआ है। इसी प्रकार 'गौ' शब्दका अर्थ इन्द्रिय भी है। इसलिये गो-तत्त्वका विचार पृथिवी और इन्द्रियोंके [illegible] किया जाता है। किसी इन्द्रियवान् प्राणीका जीवन-[illegible] पित्त है—यह तथ्य प्राय: सभी ओषधि-विज्ञानोंमें [illegible]। इसी प्रकार पृथिवीका मूलाधार तत्त्व सुवर्ण है, जिसे [illegible] पृथिवीका पित्त बताया गया है। सुवर्ण वास्तवमें [illegible] अग्नितत्त्व है और पित्त प्राणिशरीरका अग्नितत्त्व है—'अग्निर्हि देवताः सर्वाः सुवर्णश्च तदात्मकम्।' [illegible] पृथ्वी वसुमती कहलाती है। पौराणिक [illegible] स्वर्णको गङ्गाके माध्यमसे अग्निपुत्र बताया गया है। [illegible] सदर्भमे इस रहस्यको भलीभाँति [illegible] विज्ञानके प्रयोगोंसे यह सिद्ध किया गया है कि [illegible] जितनी पित्तकी मात्रा है—उतनी किसी [illegible] उपलब्ध नहीं है। पृथिवीके [illegible] सर्वसुलभ नहीं हैं। इसी प्रकार [illegible] लिये भी श्रम और साधना आवश्यक है। [illegible] शरीरी वसुमती गौ मातासे [illegible] किया जा सकता है। मानव-[illegible] उपयोगिताका इससे बड़ा प्रमाण [illegible]

अत: मानवमात्रको गौकी [illegible] हुए उसकी प्राण-पणसे सेवा करनी [illegible] है तथा सर्वसेव्य है। [प्रेषक—[illegible]

स्वराज्य एवं गो-रक्षा

(गोलोकवासी संत पूज्यपाद श्रीप्रभुदत्त ब्रह्मचारीजी महाराज)

गोहत्या जहँ होहि तहाँ शुभ करम न होवे।
गोहत्याते मनुज सकल पुन्यादिक खोवे॥
गोतन-मन्दिर माहिँ यसैं सुरगन मिलि सवई।
गोमाता तन कटै भगे सुर तहँते तवई॥
गोहत्या करि जगतमहँ, यश कोई नहिं पाइयो।
गोहत्या जिहि राजमहँ, होवै सो मिटि जाइयो॥

आज गोरक्षाका प्रश्न एक आवश्यक विचारणीय प्रश्न बन गया है। आज ही नहीं, यह प्रश्न सनातन है, गो हमारी दृष्टिमें पशु नहीं वह पृथ्वी माता भू देवीका प्रतीक है। भू माताकी पूजा हम गौके ही रूपमे करते है। भूमिपर जब-जब भी विपत्ति पडी, तव-तब वह गौका रूप बनाकर भगवान्‌के निकट गयी। गौ हमारे इहलोक और परलोकके आहारकी अधिष्ठात्री देवी है। हमें इस लोकमें भोजन और परलोकमे पुण्य गोमाताकी ही कृपासे प्राप्त होता है। गौ स्वयं तृण खाकर दूध देती है, जिससे अनेक स्वादिष्ट, पौष्टिक पदार्थ बनते हैं, गौओके बच्चे वैल खेती करके हमे खाद्यान्न देते हैं। इस प्रकार रोटी, दाल, भात और साग तो हमे गौ माताके पुत्र वछड़ोसे ही मिलता है। और दूध, दही, घी, मक्खन तथा खोयाके अनेक पदार्थ प्रत्यक्ष गौ मातासे मिलते हैं। यह तो इस लोककी वात हुई। अब परलोककी सुन लीजिये।

गर्भाधान-सस्कारसे लेकर दाह-संस्कारतक ऐसा एक भी संस्कार नहीं जिनमे गोदानकी आवश्यकता न पड़ती हो। हम हिन्दुओका विश्वास हैं कि मरनेपर जो वैतरणी नदी पार करनी पडती है वह गौकी पूँछ पकडकर ही पार की जा सकती हैं। अत: प्रत्येक धर्मप्राण हिन्दू मरते समय अव भी कम-से-कम एक गौका दान तो करता ही है। इस प्रकार गो इस लोकमे भी हमारा उपकार करती है और मरनेपर हमे वैतरणीसे भी पार करती हैं। ऐसी गौको जो मारता है, वह अपने इहलोक तथा परलोकके समस्त सुकृतों-पुण्यकर्मोको नष्ट करता है। जिस राज्यमे गौका वध होता हैं, वह राज्य आध्यात्मिकतासे दूर हटता जाता है, वहाँके निवासियोको मानसिक शान्ति नहीं होती, वे आध्यात्मिकतासे हीन, अशान्त, संशयालु तथा भोगी होते हैं। जो राष्ट्र गौरक्षामें प्रमाद करता है, वह इस संसारमें यश और श्रीसे हीन हो जाता है।

भारतने गौके महत्त्वको आजसे नहीं, अनादि कालसे समझा है। वेदोंमें, उपनिषदोमे, पुराणोंमें सर्वत्र गौकी ही महिमा गायी गयी है। जबतक भारतीय शासन रहा, तबतक गोवध हत्याके समान अपराध माना जाता था। जब विधर्मी विदेशी आततायी आक्रमणकारी लोगोंने इस देशपर आक्रमण किये, तब उन्होंने हिन्दूधर्मको नष्ट करनेके अनेक उपाय किये। जैसे यहाँके धार्मिक ग्रन्थोंको जलवा देना, मन्दिरोको तोड़ना, बलपूर्वक लोगोका धर्म-परिवर्तन कर लेना इत्यादि। उन्होंने केवल हिन्दुओंकी धार्मिक भावनापर आक्रमण करनेके लिये गौका वध करना आरम्भ कर दिया। पीछे जब वे यहाँ बस गये और इसी देशके हो गये तो उनमेंसे अनेक राजाओने राजाज्ञा निकालकर गोवध बंद कराया था, जिनमें हुमायूँ, अकबर, बहादुरशाह तथा अन्य कई राजाओंका नाम विशेष उल्लेखनीय है, इसके अनन्तर मराठा तथा सिक्खोंका राज्य हुआ, ये राजा तो केवल गो-ब्राह्मणके रक्षार्थ ही उदय हुए थे, इनके राज्यमें तो सर्वथा गोवध बंद था ही।

अँगरेजोने हिन्दुत्वको मिटानेका प्रयत्न तो किया, किंतु बहुत छिपकर शनैः-शनैः किया। अँगरेजी राज्यमें गोवध होता था, किंतु नियमित संख्यामें नियमके भीतर होता था। इसे मिटानेके लिये आरम्भसे ही बड़े-बड़े प्रयत्न किये गये। लोकमान्य तिलक, महामना मालवीयजी, महात्मा गाँधी, स्वामी हासानन्दजी आदि महानुभावोंने गोहत्या रोकनेके बहुत प्रयत्न किये। कॉग्रेसके साथ 'गोरक्षा-सम्मेलन' होते थे, महात्मा गाँधीजीने खिलाफतके आन्दोलनमें सहयोग देते हुए कहा था कि 'मैं मुसलमानोंके इस आन्दोलमें इसलिये सहयोग देता हूँ कि वे मेरी गौकी रक्षा करें।' उन दिनों प्रायः सभी मुसलमानोंके मौलवीयोने व्यवस्था दी थी कि गोवध करना इस्लाम-धर्ममें आवश्यक नहीं। उन दिनों सभी मुसलमान नेता गोरक्षाका समर्थन करते थे। कॉग्रेसी नेता तो यहाँतक कहा करते थे कि विदेशी वस्त्रोंको इसलिये मत पहिनो कि इनमे गौकी चरवी लगती है। कुछ तो यहाँतक कहते थे कि अँगरेजोंसे इसलिये असहयोग करना चाहिये

कि ये गोहत्या कराते हैं। उन दिनों काँग्रेसी नेताओंकी गोभक्ति और गोरक्षाके विचारोंको सुनकर सभीको पूर्ण विश्वास था कि जिस दिन स्वराज्यकी घोषणा होगी, उसी दिन गोहत्या-बंदीकी भी घोषणा हो जायगी। लोग कहा भी करते थे कि गोवध-बंदीकी बाते अभी क्यों करते हो, हत्याकी जड़ तो ये अँगरेज हैं, जिस दिन ये अँगरेज चले जायँगे, उस दिन एक लेखनीकी नोकसे गोवध बंद हो जायगा।

भगवान्‌ने वह दिन दिखाया, स्वराज्य हो गया, अँगरेज भारतसे चले गये, हमें आशा थी अब गोवध बंद हो ही जायगा। इसलिये सरकारके पास इतने तार और पत्र आये कि उनकी गणना ही नहीं हो सकी, केवल उनकी तौल की गयी। छः दिनतक पोस्ट ऑफिसमें इतने अधिक तार आये कि उन्हे लेना कठिन हो गया।

तब तो शासकोंकी आँखे खुलीं, उन्होने कहा—'हम गोरक्षाके लिये एक समिति बनाते हैं। तुम आन्दोलन मत करो। उस समितिमे हम गोरक्षाके समर्थकोंको रखेगे।' समिति बनी, उसमे ६ सरकारी और ७ अ-सरकारी आदमी रखे गये। उस समितिने सुझाव दिया कि दो वर्षमे सर्वथा गोवध बंद कर दिया जाय। उपयोगी पशुओका वध तो तत्काल बद हो और दो वर्षमे बूढ़ी, टेढी, लूली, लँगड़ी गौओके लिये गो-सदन बने।

समिति सरकारने ही स्थापित की थी, अतः उसके सुझाव माननेको सरकार बाध्य थी, इसलिये सबको विश्वास हो गया कि दो वर्षमें यह गोवध-रूपी भारतके भालका कलक अवश्य ही दूर हो जायगा। सब निश्चिन्त थे, आन्दोलन करनेकी आवश्यकता ही नहीं समझी। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, सरकारकी कूटनीति आगे आने लगी। अन्तमे सरकारने सभी प्रान्तीय सरकारोके पास एक गुप्त परिपत्र भेजा। आन्दोलनके समय भारतीय सविधानमे एक धारा स्वीकार की गयी थी, जिसमे स्पष्ट स्वीकार किया गया था कि सभी प्रकारकी गौओका वध रोकना भारत सरकारकी नीति होगी। जब आन्दोलन ढीला हो गया तो सरकारने प्रान्तीय सरकारोको आदेश दिया कि उस धाराका अर्थ उपयोगी गौके वधोको रोकनेसे है, अतः पूर्ण गोवध बंद न किया जाय। जहाँ बद कर दिया हो, वहाँ उसपर पुनः विचार हो। उससे स्पष्ट हो गया कि सरकार गौओको काटनेके पक्षमे है। ऐसा भी मत व्यक्त किया गया कि १०० मेंसे ६० दुबली गौएँ अनुपयोगी हैं। अनुपयोगीका अर्थ कम दूध देनेवाली, पतली, लूली, लँगडी, बूढी, छोटी और न जाने क्या?

हमारे पश्चिमी सभ्यतामे पले हुए नेताओका सुझाव था कि लोगोंके खानेकी आदतोमें परिवर्तन करके धार्मिक क्रान्ति करके फालतू गोवंशको कटवा दिया जाय। उनके मांसके उपयोगसे अन्नकी बचत होगी; उनके चर्म, हड्डी, आँतें, सींग आदिको बेचकर विदेशी डालर कमाये जायँ।

इन सब बातोको सुनकर हमारी आँखे खुलीं कि सरकार गोवध बंद न करानेके लिये कटिबद्ध है।

आज स्वराज्यको हुए इतना समय हो गया। गोवधको रोकना तो दूर रहा, उत्तरोत्तर बढता ही गया। बंबई सरकार तो सबसे अधिक बढ़ गयी। उसने कसाईखानोंकी उन्नति कैसे हो, इसके लिये एक समिति तक बना डाली।

सरकारको गोवध-बंदीके नामसे चिढ़ है। इसका कहना है, गोरक्षा न कहकर गोसंवर्धन कहो। अर्थात् गौओंका पालन करो, उनका दूध बढाओ उनकी जाति सुधारों, वंश-वृद्धि करो, अनुपयोगी गौओको कटा दो। अर्थात् जो करना हो सब तुम्हीं करो, सरकार तो गौ काटनेका ही काम करेगी। गौओंमे उपयोगी-अनुपयोगीका भेद करके लोगोमे भाँति-भाँतिके भ्रम फैलाये जाते हैं। लोगोंको उलटी-सीधी बातें बताकर पथ-भ्रष्ट किया जाता है, अनेक शंकाएँ उठाकर गोवधका अप्रत्यक्ष रीतिसे समर्थन किया जाता है। यहाँपर हमे उन्हीं सब शंकाओंका समाधान करना है—

१-पहली बात तो यह कही जाती है कि गोवध-बंदीके लिये 'नियम' बनानेकी क्या आवश्यकता है? कसाइयोको गौएँ तो हिन्दू ही बेचते हैं। हिन्दू कसाइयोको गौएँ देना बंद कर दें तो अपने-आप गोहत्या बंद हो जायगी। लोगोंको समझाओ कि घर-घर गौ रखें, कसाइयोके हाथ गौ न बेचें।

हम कहते हैं—यदि समझानेसे ही माननेवाले हो तो आप एक-एक उपदेशक रख दे। लोगोको शिक्षा दे, कोई लड़ाई न करे, चोरी न करें, नियम-भङ्ग न करे, सबका भाग दे दें। फिर फौज, पुलिस, न्यायालय—इन सबको समाप्त कर देना चाहिये। नियम तो उन्हीं लोगोंके लिये होता है, जो उस नियमके भयसे अपराध न करें। जब

चोरी, जारी, लड़ाई सबके लिये नियम है तो गो-हत्या न करनेका नियम क्यो न हो?

२-कुछ लोग कहते हैं गौ तो पशु है, उसको मारनेपर दण्डकी क्या आवश्यकता?

—हम तो गौको पशु नहीं मानते हैं। हम तो गौको माता कहते हैं। भारतीय संस्कृतिमें गौको देवता माना गया हैं। हम लोग प्रतीक-उपासक हैं। जैसे सभी जानते हैं—मन्दिरोंकी प्रतिमाएँ पाषाणकी होती हैं किंतु हम उनमें देवत्वकी भावना करते हैं। भारतीय दण्ड-विधानमें एक नियम है जो मूर्तिको कोई दूसरे पाषाणसे तोड़ देता है, तो उसे दण्ड इसीलिये दिया जाता है कि उसने मूर्ति-पूजाकी भावनाको ठेस पहुँचायी। जब पाषाणकी मूर्तिको न तोड़नेका नियम है तो जिस गौमे हम तैंतीस कोटि देवताओंका वास मानते हैं, उसे जो छुरीसे काटकर हमारी भावनाओंपर आघात करता है तो उसे दण्ड क्यों न दिया जाय? उनके लिये नियम-कानून क्यों न बनाया जाय?

३-कुछ लोग कहते हैं—हमारे घरकी गौ है, हम उसे काटते हैं, इसमें दूसरोका क्या है, इसके लिये कानून बनानेकी क्या आवश्यकता? हम कहते हैं, माताके पेटमे उसीका बच्चा है। उसे वह पैदा होते ही मार देती है तो उसे दण्ड क्यों दिया जाता है? हम स्वतन्त्र हैं आत्महत्या करनेके लिये, किंतु जो आत्महत्या करता है या करनेका प्रयत्न करता है तो उसे दण्ड क्यों दिया जाता है? जब हम स्त्री, पुत्र, भाई, बन्धु तथा अपने-आपकी हत्या करनेमें स्वतन्त्र नहीं, तो गौ जो हमारी सदासे पूजनीय है उसके मारनेमे क्यो स्वतन्त्र हो सकते हैं? तब इनके वधपर प्रतिबन्ध होना चाहिये।

४-कुछ लोग कहते हैं, ये सब भावुकताकी बाते हैं, तर्कसे ये बातें सिद्ध नहीं होतीं। पशुने जबतक दूध दिया, कामका रहा, बच्चा पाला-पोसा तबतक तो ठीक है किंतु जब अनुपयोगी हुआ उसे मारकर उसकी हड्डी, चर्म, आँत आदिका उपयोग करो।

हम कहते हैं कि भावनाके बिना तो कोई काम होता नहीं। राष्ट्रिय ध्वजमे भावनाके अतिरिक्त और क्या है! भावना निकाल देनेपर वस्त्रका टुकड़ा मात्र है। महापुरुषोकी समाधियोपर पुष्प क्यो चढ़ाते हैं। मन्दिरोंमें भावना ही तो है, अपने स्वजनोंकी भस्मको इतना व्यय करके त्रिवेणीमे ले जाते हैं, इसमें भावना ही तो है। भावनाके बिना मानवता नहीं, गौके प्रति हमारी भावना ही है। वह भावना सौ दो सौ या हजारो-लाखोंकी नहीं, अपितु करोड़ों-करोड़ हिन्दुओंकी भावना है, प्रजातन्त्रीय सरकारको इतने लोगोंकी भावनाकी रक्षा करनी ही पड़ेगी।

५-कुछ लोग कहते हैं कि यदि बूढ़ी, टेढ़ी, गौएँ काटी न भी जायँ तो वे मारी-मारी फिरेंगी, हरे-भरे अन्नके खेतोंको खा जायँगी, अन्न और चारेको बरबाद करेंगी, अतः ऐसी गौकी रक्षाका आग्रह व्यर्थ है।

हम कहते हैं—यह लोगोंका भ्रम है। जहाँ भी नियमसे गोवध बंद है, वहाँ ऐसी कोई समस्या नहीं, अतः यह कल्पना निर्मूल है। जो किसान पशु रखता है, वह दो बूढ़े भी रख सकता है। यदि ऐसे कुछ पशु हों भी तो उनका पालन करना सरकारका कर्तव्य है। सरकार उसके लिये गोसदन बनवाये।

६-कुछ लोग कहते हैं—पहले अनुपयोगी पशुओके लिये गोसदन बनवाओ, गोचरभूमि छुड़वाओ, जब उनका प्रबन्ध हो जाय तभी कानून बनानेकी बात करो, इसके पहले करोगे तो अनुपयोगी पशु कहाँ जायँगे।

हम कहते हैं—गौ तो कभी अनुपयोगी होती ही नहीं। वह दूध और बच्चे न भी दे, तो उसके गोबर-मूत्रसे ही इतनी आय हो सकती है कि उतना चारा वह खा भी नहीं सकती। पहले प्रबन्ध करके गोवध-बंदीका नियम बनावें तो कभी हो ही नही सकता 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी'। अँगरेज भी तो यही कहते थे कि पहले स्वराज्यकी योग्यता प्राप्त कर लो तब स्वराज्य माँगो। यदि योग्यताकी कसौटी उन्हींपर छोड़ दी जाती तब तो भारत कभी स्वतन्त्र होता ही नहीं। पहले गोवध-बंदीका नियम बनाओ, फिर जो-जो असुविधाएँ आवें उनके निवारणका प्रयत्न करो।

७-कुछ लोग कहते हैं—'गौओंको इतना उपयोगी बना लो कि उन्हे काटनेका साहस ही न हो। विदेशोंमे गौ मन-मन भर दूध देती हैं। ऐसी गौएँ यहाँ हो जायँ तो उन्हें कौन काटेगा?'

हम विदेशी लोगोंकी भाँति गौका पालन नहीं करते। दूसरे देशोंमे गौ केवल दूधके लिये पाली जाती है। उसके बछड़े तो खानेके ही काममे आते हैं। खेती वहाँ घोड़ोंसे या ट्रैक्टर आदि अन्य साधनोंसे होती है। किंतु हमारे

ूर्वजोंने एक गौसे ही दोनों काम ले लिये। गौका दूध ीओ, उसके बच्चे बैलसे खेती करके अन्न उपजाओ। त्रदेशोंमें बछड़ोको, बूढ़ी गौओको तथा कम दूध नेवालियोंको मारकर खा जाते हैं। केवल दूधके ही लिये ो गौ पाली जाती है उसके बछड़े खेतीके सर्वथा नुपयोगी होते हैं। हमें तो गौसे दूध भी लेना है, उसके छडोंसे खेती भी करनी है, अपनी भावनाकी रक्षा भी रनी है। यह तभी सम्भव होगा जब गोवध-बदीका जनियम बन जाय। रही उपयोगी-अनुपयोगीकी बात? सो साईको सबसे अधिक आय हृष्ट-पुष्ट युवती गौके वधसे ोता है, हरियाने आदिसे अच्छी-से-अच्छी दूध देनेवाली ौको कलकत्ते ले जाते हैं। जबतक वह दूध देती है, बतक ग्वाला उसे रखता है। जिस दिन दूध देना बंद रती है उसी दिन उसे निकालनेकी चिन्ता करता है, लकत्ते-जैसे बड़े नगरमे ऐसी दूध न देनेवाली गौको खनेका न स्थान है, न ग्वाला वर्षभर उसे खिलाकर उसके गले ब्यानतक प्रतीक्षा कर सकता है। कसाई उसके यहाँ ाता है, एक दूधकी गौ देकर दो बिना दूधकी गौ उससे जाता है। इसलिये जबतक नियम, कानून नहीं बनता, बतक न गोसंवर्धन हो सकता है, न गोवशकी वृद्धि हो कती है, न जाति-सुधार तथा दुग्धोन्नति हो सकती है।

८-कुछ लोग कहते है—यदि गौओका वध बंद कर या गया तो चर्मका अभाव हो जायगा।

यह विचार करनेकी बात है, गौ तो एक ही बार रेगी, एक बार ही चर्म देगी, उसे छूरीसे काटकर चर्म ले ो या अपनी मौतसे मरनेके अनन्तर ले लो। मरे हुए शुओके चर्मसे ही सब काम चलते थे और उन्हींके जूते ादि सब व्यवहारमें लाते थे। जितनी गौएँ हैं एक दिन सब रेंगी, उनके चर्म तुम्हे मिलेंगे ही।

इसपर कुछ लोग कहते है कि काटे हुए पशुका चर्म ोमल होता है, मरे हुए पशुका अत्यन्त कठोर होता है, सके कोमल जूते, बैग आदि न बन सकेंगे।

हमारा कहना है कि जिस विज्ञानने अणुबम-जैसी स्तुका आविष्कार कर लिया, क्या वह ऐसी कोई ोषधिका आविष्कार नहीं कर सकता जिससे मृतका चर्म ोमल हो जाय, मैंने सुना है जर्मनीमे ऐसे चर्मको मुलायम नानेके लिये कार्यालय हैं। हम कहते है न हो कोमल चर्म, कठिनतासे ही काम चलाया जाय, या कागद-गत्ता अथवा प्लास्टिककी वस्तुओंसे काम चले, किंतु चर्म कोमल हो, इसलिये गौ माताके गलेपर छुरी चले यह उचित नहीं।

९-कुछ लोग कहते हैं जो गौएँ इधर-उधर फिरती रहती हैं अन्न और बाजारके सामानको बिगाडती हैं, जहाँ जाती हैं वहाँ मार खाती हैं, भूखो मर जाती हैं, इससे अच्छा यही है कि एक दिनमे उन्हे काटकर उनका भी दुःख दूर कर दिया जाय और उनके कोमल चर्म, मांस, हड्डी, नस, आँत, सीग आदिसे आय बढ़ायी जाय।

यदि गोवधपर प्रतिबन्ध लग जाय और स्थान-स्थान-पर गोसदन खुल जायँ तो ऐसी गौएँ कहीं मिलेंगी ही नहीं। मान लो ऐसी गौएँ भी हों और वे भूखों मरती भी हों, तो मैं यह अच्छा समझूँगा कि वे भूखो अपनी मौतसे तो भले ही मरे किंतु वे कसाईकी छुरीसे न कटे।

१०-कुछ लोग कहते हैं—केवल गोवध न करनेका नियम बनानेसे ही काम न चलेगा। यदि ऐसी ही दशा रही तो फिर कसाईखानेमे तो गौ कटेंगी नहीं, घरोमे लुक-छिपकर और भी अधिक गोवध होगा, इसलिये कानून बनाना व्यर्थ है।

हम कहते हैं, लोग लुक-छिपकर चोरी करते हैं। लोगोको ठगते हैं। फिर चोरी करनेपर दण्ड देनेके नियम क्यो बने है? लुक-छिपकर जो गोवध करे उसे कडे-से-कडा दण्ड देना सरकारका धर्म है। जो सरकार इतनी निर्वल हो कि अपने नियमका दृढतासे पालन नहीं करा सकती उसे शासन करनेका क्या अधिकार है? फिर नियममे अपवाद हो ही जाता है। बिना नियम गोवध बंद हो ही नहीं सकता।

११-कुछ लोग कहते है—कुछ जातियोमें गोवध करना धर्म है। हमारी सरकार धर्म-निरपेक्ष है, वह दूसरेके धर्ममे कैसे हस्तक्षेप कर सकती है। ऐसा नियम वनानेसे उसकी अन्ताराष्ट्रिय ख्याति नष्ट होगी। इसीलिये गोवध-बदीका नियम बनाना सरकारके नीतिके विरुद्ध है।

जहाँतक मुसलमान और ईसाइयोंके धर्मग्रन्थोंमें हमने सुना है, किसीके यहाँ गोवध करना धर्म नहीं, आवश्यक नहीं। आसाम प्रान्तकी कुछ जातियाँ ऐसी वतायी जाती थीं, किंतु हमने आसाममे स्वयं जाकर देखा वहाँ कोई भी ऐसी जाति नही जिसके यहाँ गोवध करना धर्म हो। इसके विरुद्ध

हिन्दुओके यहाँ गौका वध न करना धर्म है, उनके जीवन-मरणका प्रश्न है, उनकी संस्कृति तथा परस्पर रक्षाका प्रश्न हैं, तो ऐसी दशामें गोवध कराते रहना हिन्दुओके धर्ममें प्रत्यक्ष आघात करना है, सरकारकी धर्मनिरपेक्षताकी नीति स्वयं ही नष्ट होती है। करोड़ों-करोड़ हिन्दुओकी धर्म-भावनापर आघात पहुँचाना क्या यही धर्म-निरपेक्षता है? यह तो धर्मद्वेषता है।

१२-कुछ लोग कहते हैं कि राज्यमें बहुतसे लोग नहीं चाहते कि गोवध-बंदीका कानून बने तो उनके भावोके विरुद्ध कानून सरकार कैसे बनावे?

हम कहते है, बहुतसे लोग तो मद्यनिषेध-नियम बनानेके विरुद्ध हैं और बहुतसे लोग और भी न जाने किस-किस बातके विरुद्ध हैं फिर सरकार इनके लिये नियम क्यों बनाती है, गोवधके पक्षमे तो बहुत ही कम लोग होंगे।

१३-कुछ लोग कहते है यह प्रश्न तो प्रान्तोंका है, प्रान्तीय सरकार चाहे तो अपने यहाँ नियम बना ले, केन्द्रीय सरकारको नियम बनानेकी क्या आवश्यकता है?

प्रान्तीय सभी सरकारें नियम बना लें, तब तो गोवध बंद हो ही जायगा, किंतु प्रान्तीय सरकारोंको तो केन्द्रीय सरकार बाध्य करती रहती है, तुम सर्वथा गोवध-बंदीका नियम मत बनाओ। मान लो उन्हें केन्द्रीय सरकार स्वतन्त्रता भी दे दे और उनमेंसे एक-दो भी नियम न बनावे तो सब व्यर्थ है। क्योकि जो उत्तरप्रदेशमें न कटी, बंबई या मद्रासमें जाकर कट गयी। गौकी रक्षा तो इससे नहीं हुई। इसलिये जबतक केन्द्रीय सरकार नियम बनाकर सम्पूर्ण देशमें गोवध-बंदीका आदेश नहीं देगी तबतक गौकी रक्षा नहीं हो सकती।

१४-कुछ लोग कहते हैं, हम गोवध-बंदीका कानून बना दे तो अमेरिका आदि देश जिन्हें यहॉसे बछड़ोकी काटी हुई गौकी खाले, ऑति आदि भेजी जाती हैं, वे हमसे अप्रसन्न हो जायँगे, फिर हमे वे जो उन्नतिके नामपर सहायता देते हैं, उसे बंद कर देंगे।

हम कहते हैं कि इससे बढ़कर मूर्खताकी दूसरी बात कोई हो नहीं सकती, कि अपनी माताको कटाकर दूसरे देशोंकी प्रसन्नता प्राप्त करें। दूसरे देशवाले चाहें कि हम सब ईसाई बन जायँ तो क्या उन्हें प्रसन्न करनेके लिये हमारी सरकार हमें ईसाई बननेका आदेश देगी? हमें अपनी ओर देखना चाहिये, अपना हित-अनहित स्वयं ही अपनी दृष्टिसे सोचना चाहिये।

१५-कुछ लोग कहते हैं—मुसलमान अल्प संख्यामें हैं, हमें उनकी भावनाओंका आदर करना चाहिये। जिससे उन्हें दुःख न हो, ऐसा काम करना चाहिये।

आदर करते-करते ही हम आधे देशसे हाथ धो बैठे। भारतका बहुत-सा भाग हिन्दुत्वका विरोधी बन गया, अब भी हम वोटोंके लिये, अल्प स्वार्थके लिये अपनी गौको कटवावें यह कितनी बुद्धिमानी होगी?

ये बातें अब तो गौण हैं, यथार्थ बात तो यह है कि यह हमारा विशुद्ध धार्मिक प्रश्न है, धर्मका पालन घाटा सहकर भी किया जाता है, अतः गोवध बंद करनेसे कितना भी घाटा हो—यद्यपि घाटा नहीं और लाभ भी होगा, तब भी हमें उसे बंद करना ही पड़ेगा। गोवध बंद करनेमें चाहे जितनी अडचनें हों, करोड़ो-करोड़ हिन्दुओंकी धार्मिक भावनाका आदर करना ही पड़ेगा। जो सरकार गोवधका समर्थन करेगी, उसे प्रोत्साहन देगी वह भारतमें कभी टिक नहीं सकती। अतः गोवधपर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाना चाहिये। गोवध-बंदीका नियम-कानून केन्द्रीय सरकारको शीघ्र-से-शीघ्र बनाना चाहिये। यदि सरकार ऐसा न करे तो इसके विरुद्ध जनमत तैयार करके प्रबल आन्दोलन करना चाहिये।

कैसे भी हो धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक सभी दृष्टिसे गोरक्षा आवश्यक है, चाहे जैसे हो, हमारे देशसे गोवध बंद होना चाहिये। इसके लिये सभी भारतीय नर-नारियोंको सभी प्रकारका बलिदान करना चाहिये।

भगवान् नन्दनन्दन गोपालके पादपद्मोंमें प्रार्थना है कि वे शीघ्र भारतसे गोवध बंद करा दें। गोमाताकी जय।

गोकी रक्षा होइ जाइ सब धारे चितमे।
गोवध होवे बन्द होइ आनन्द जगतमे॥
गौ के हित सब त्याग करें तन, मन, धन देवे।
लोक और परलोक माहिं अक्षय फल लेवे॥
गोपालक गोविन्द प्रभु, गैयनिकी रक्षा करो।
गोवध करिकें बन्द अब, भारत माँ के दुख हरो॥

[प्रेषक—डॉ० श्रीविद्याधरजी द्विवेदी]

⁂

गो-महिमा और गोरक्षाकी आवश्यकता

(ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका)

गोरक्षा हिंदूधर्मका एक प्रधान अङ्ग माना गया है। प्रायः प्रत्येक हिंदू गौको माता कहकर पुकारता है और माताके समान ही उसका आदर करता है। जिस प्रकार कोई भी पुत्र अपनी माताके प्रति किये गये अत्याचारको सहन नहीं करेगा, उसी प्रकार एक आस्तिक और सच्चा हिंदू गोमाताके प्रति निर्दयताके व्यवहारको नहीं सहेगा; गोहिंसाकी तो वह कल्पना भी नहीं सह सकता। गौके प्राण बचानेके लिये वह अपने प्राणोंकी आहुति दे देगा, किंतु उसका बाल भी बॉका न होने देगा। मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामके पूर्वज महाराज दिलीपके चरित्रसे सभी लोग परिचित हैं। उन्होंने अपने कुलगुरु महर्षि वसिष्ठकी बछिया नन्दिनीकी रक्षाके लिये सिंहको अपना शरीर अर्पण कर दिया, किंतु जीते-जी उसकी हिंसा न होने दी। पाण्डवशिरोमणि अर्जुनने गोरक्षाके लिये बारह वर्षोतक वनवासकी कठोर यातना स्वीकार की।

परंतु हाय! वे दिन अब चले गये। हिंदूजाति आज दुर्बल हो गयी है। हम अपनी स्वतन्त्रता, अपना पुरुषत्व, अपनी धर्मप्राणता, ईश्वर और ईश्वरीय कानूनमे विश्वास, शास्त्रोके प्रति आदरबुद्धि, विचार-स्वातन्त्र्य, अपनी संस्कृति एवं मर्यादाके प्रति आस्था—सब कुछ खो बैठे हैं। आज हम आपसकी फूट एवं कलहके कारण छिन्न-भिन्न हो रहे हैं। हम अपनी संस्कृति एवं धर्मपर किये गये प्रहारों और आक्रमणोको व्यर्थ करनेके लिये संघटित नही हो सकते। हम अपनी जीवनी-शक्ति खो बैठे हैं। मूक पशुओंकी भॉति दूसरोंके द्वारा हॅंके जा रहे हैं। राजनीतिक गुलामी ही नहीं, अपितु मानसिक गुलामीके भी शिकार हो रहे हैं। आज हम सभी बातोंपर पाश्चात्त्य दृष्टिकोणसे ही विचार करने लगे हैं। यही कारण है कि हमारी इस पवित्र भूमिमे प्रतिवर्ष लाखो-करोडोकी संख्यामे गाय और बैल काटे जाते हैं और हम इसके विरोधमे अँगुलीतक नहीं उठाते। आज हम दिलीप और अर्जुनके इतिहास केवल पढते और सुनते हैं, उनसे हमारी नसोमें जोश नहीं भरता। हमारी नपुंसकता सचमुच दयनीय है।

हम सरकारके मत्थे अपनी धार्मिक भावनाओंको कुचलनेका दोष मँढ़ते हैं, हम अपने मुसलमान भाइयोपर गायके प्रति निर्दयताका अभियोग लगाते हैं, किंतु अपने दोष नहीं देखते। गौओके प्रति हमारी आदरबुद्धि केवल कहनेभरके लिये रह गयी है। हम केवल वाणीसे ही उसकी पूजा करते है। हमीं तो अपनी गौओ और बैलोको कसाइयोके हाथ बेचते हैं। हमीं उनके साथ दुष्टता एवं क्रूरताका बर्ताव करते हैं—उन्हें भूखों मारते हैं, उनका सारा दूध दुह लेते हैं, बछड़ेका हिस्सा भी छीन लेते हैं, बैलोपर बेहद बोझा लाद देते हैं, न चलनेपर उन्हे बुरी तरहसे पीटते हैं, गोचरभूमियोका सफाया करते जा रहे हैं और फिर भी अपनेको गो-रक्षक कहते हैं और विधर्मियोको गोघातक कहकर कोसते हैं। हमारी वैश्य-जातिके लिये कृषि और वाणिज्यके साथ-साथ शास्त्रोंने गोरक्षाको भी प्रधान धर्म माना है, परंतु आज हमारे वैश्य भाइयोने गोरक्षाको अनावश्यक मानकर छोड़ रखा है। हमारी गोशालाओका बुरा हाल है और उनके द्रव्यका ठीक-ठीक उपयोग नहीं होता। उनमे परस्पर सहयोगका अभाव है। सारांश सब कुछ विपरीत हो गया है।

दूसरी जातियाँ अपने गोधनकी वृद्धिमें बड़ी तेजीके साथ अग्रसर हो रही हैं। दूसरे देशोमें क्षेत्रफलके हिसाबसे गौओकी संख्या भारतकी अपेक्षा कहीं अधिक है और प्रतिमनुष्य दूधकी खपत भी अधिक है। वहाँकी गौएँ हमारी गौओकी अपेक्षा दूध भी अधिक देती हैं। कारण यही है कि वे गौओंको भरपेट भोजन देते है, अधिक आरामसे रखते हैं, उनकी अधिक सँभाल करते हैं और उनके साथ अधिक प्रेम और कोमलताका बर्ताव करते हैं। अन्य देशोमें गोचरभूमियोका अनुपात भी खेतीके उपयोगमे आनेवाली भूमिकी तुलनामें कहीं अधिक है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यद्यपि हम अपनेको गोपूजक और गोरक्षक कहते हैं, वस्तुतः आज हम गोरक्षामे बहुत पिछड़े हुए हैं। गोजातिके प्रति हमारे इस अनादर एवं उपेक्षाका परिणाम भी प्रत्यक्ष ही है। अन्य देशोकी अपेक्षा हम भारतीयोकी औसत आयु बहुत ही कम है और अन्य देशोंकी तुलनामें हमारे यहाँके बच्चे बहुत अधिक संख्यामें मरते हैं। यही नहीं, अन्य

लोगोंकी अपेक्षा हमलोगोंमे जीवट भी वहुत कम है। कहना न होगा कि दूध और दूधसे वने हुए पदार्थोकी कमी ही हमारी इस शोचनीय अवस्थाका मुख्य हेतु है। इससे यह वात प्रत्यक्ष हो जाती हे कि किसी जातिके स्वास्थ्य एवं आयु-मानके साथ गोधनका कितना घनिष्ठ सम्वन्ध है। अस्तु,

हमारे शास्त्र कहते हैं कि गायसे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—चारों पुरुपार्थोकी सिद्धि होती है। दूसरे शब्दोंमें धार्मिक, आर्थिक, सांसारिक एवं आध्यात्मिक—सभी दृष्टियोंसे गाय हमारे लिये अत्यन्त उपयोगी है। पुराणोंमे लिखा है कि जगत्में सर्वप्रथम वेद, अग्नि, गौ एवं ब्राह्मणोंकी सृष्टि हुई। वेदोंसे हमे अपने कर्तव्यकी शिक्षा मिलती है, वे हमारे ज्ञानके आदिस्रोत हैं। वे हमें देवताओंको प्रसन्न करनेकी विद्या—यज्ञानुष्टानका पाठ पढ़ाते हैं। गीतामें भी कहा है—

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥
देवान् भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥
इष्टान् भोगान् हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः॥
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति॥
(३। १०—१६)

'प्रजापति ब्रह्माजीने कल्पके आदिमें यज्ञसहित प्रजाओंको रचकर उनसे कहा कि 'तुमलोग यज्ञके द्वारा वृद्धिको प्राप्त होओ और यह यज्ञ तुमलोगोंको इच्छित भोग प्रदान करनेवाला हो। तुमलोग इस यज्ञके द्वारा देवताओंको उन्नत करो और वे देवता तुमलोगोंको उन्नत करें। इस प्रकार निःस्वार्थभावसे एक दूसरेको उन्नत करते हुए तुमलोग परम कल्याणको प्राप्त हो जाओगे। यज्ञके द्वारा वढाये हुए देवता तुमलोगोंको विना माँगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे।' इस प्रकार उन देवताओंके द्वारा दिये हुए भोगोंको जो पुरुष उनको विना दिये स्वयं भोगता है, वह चोर ही है। यज्ञसे वचे हुए अन्नको खानेवाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापोंसे मुक्त हो जाते हैं और जो पापीलोग अपना शरीर पोषण करनेके लिये ही अन्न पकाते है, वे तो पापको ही खाते हैं। सम्पूर्ण प्राणी अन्नसे उत्पन्न होते हैं, अन्नकी उत्पत्ति वृष्टिसे होती है, वृष्टि यज्ञसे होती है और यज्ञ विहित कर्मोंसे उत्पन्न होनेवाला है। कर्मसमुदायको तू वेदसे उत्पन्न और वेदको अविनाशी परमात्मासे उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञमें प्रतिष्ठित है। हे पार्थ! जो पुरुष इस लोकमें इस प्रकार परम्परासे प्रचलित सृष्टिचक्रके अनुकूल नहीं बरतता अर्थात् अपने कर्तव्यका पालन नहीं करता, वह इन्द्रियोंके द्वारा भोगोमे रमण करनेवाला पापायु पुरुष व्यर्थ ही जीता है।'

ऊपरके वचनोंसे यह प्रकट होता है कि (१) यज्ञकी उत्पत्ति सृष्टिके प्रारम्भमे हुई और (२) यज्ञ हमारे अभ्युदय (लौकिक उन्नति) एवं निःश्रेयस (परम कल्याण) दोनोंका साधन है। यज्ञसे हम जो कुछ चाहें प्राप्त कर सकते हैं। लौकिक सुख-समृद्धि तथा ऐहिक एवं पारलौकिक भोग हमें देवताओंसे प्राप्त होते हैं। देवता भगवान्की ही कलाएँ—भगवान्की ही दिव्य चेतन विभूतियाँ हैं, जो मनुष्यों एवं मनुष्योंसे निम्न स्तरके जीवोंकी लौकिक आवश्यकताओंको पूर्ण करते हैं—हमारे लिये समयानुसार घाम, चाँदनी, वर्षा आदिकी व्यवस्था करके हमारे वनस्पतिवर्गका और उनके द्वारा हमारे जीवनका पोषण करते हैं। वे ही हमें रहनेके लिये पृथ्वी, हमारी प्यास बुझानेके लिये जल, हमारे भोजनको पकाने तथा हमारा शीतसे त्राण करनेके लिये अग्नि, साँस लेनेके लिये वायु तथा इधर-उधर घूमनेके लिये अवकाश प्रदान करते हैं। सारांश, वे ही इस संसारचक्रकी व्यवस्था करते हैं, जीवोंके कर्मोकी देख-रेख तथा उनके अनुसार शभाशुभ फलभोगका विधान करते हैं तथा हमारे जीवन-मरणका नियमन करते हैं। इन भगवत्कलाओंको प्रसन्न रखने—इनका आशीर्वाद, सहानुभूति एवं सद्भाव प्राप्त करनेके लिये और आदान-प्रदानके सिद्धान्तको चालू रखनेके लिये जो जगच्चक्रके परिचालनके लिये आवश्यक एवं अनिवार्य है—यज्ञानुष्ठानके द्वारा इनकी आराधना करना मनुष्यमात्रका परम कर्तव्य है। जवतक भारतमें यज्ञ-यागादिके द्वारा देवताओंकी आराधना

होती थी, तबतक यह देश सुखी एवं समृद्ध था, समयपर यथेष्ट मात्रामें वर्षा होती थी तथा बाढ़, भूकम्प, दुष्काल एवं महामारी आदि दैवी संकटोसे यह प्रायः मुक्त था। जबसे यज्ञ-यागादिकी प्रथा लुप्तप्राय हो गयी, तभीसे यह देश अधिकाधिक दैवी प्रकोपोका शिकार होने लगा है।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यज्ञसे अभ्युदय एव निःश्रेयस दोनों सिद्ध होते है। संसार-चक्रका परिचालन करनेवाले भगवत्कलारूप देवताओंकी प्रसन्नताद्वारा वह हमारी सुख-समृद्धिका साधन बनता है और निष्कामभावसे केवल कर्तव्यबुद्धिपूर्वक किये जानेपर वह भगवत्प्रीतिका सम्पादन कर भगवत्प्राप्ति अथवा मोक्षरूप जीवनके परम लक्ष्यकी प्राप्तिमें सहायक होता है। यही नहीं, यज्ञ-दान-तपरूप कर्मको भगवान्‌ने अवश्यकर्तव्य, अनिवार्य बताया है—**'यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्'** और यज्ञादिकी परम्पराका विच्छेद करनेवालेको पापी—अघायु कहकर उसकी गर्हणा की है। इस यज्ञचक्रको चलानेके लिये ही वेद, अग्नि, गौ एवं ब्राह्मणोंकी सृष्टि हुई है। वेदोमें यज्ञानुष्ठानकी विधि बतायी गयी है—**'कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि०'** एवं ब्राह्मणोंके द्वारा वह विधि सम्पन्न होती है। अग्निके द्वारा आहुतियाँ देवताओंको पहुँचायी जाती हैं—**'अग्निमुखा हि देवा भवन्ति'** और गौसे हमें देवताओको अर्पण करने योग्य हवि प्राप्त होता है। इसीलिये हमारे शास्त्रोमें गौको **'हविर्दुघा'** (हवि देनेवाली) कहा गया है। गोघृत देवताओका परम प्रिय हवि है और यज्ञके लिये भूमिको जोतकर तैयार करने एवं गेहूँ, चावल, जौ, तिल आदि हविष्यान्न पैदा करनेके लिये गो-संतति—बैलोकी परम आवश्यकता है। यही नहीं, यज्ञभूमिको परिष्कृत एवं शुद्ध करनेके लिये उसे गोमूत्रसे छिड़का जाता है और गोबरसे लीपा जाता है तथा गोबरके कंडोंसे यज्ञाग्निको प्रज्वलित किया जाता है। यज्ञानुष्ठानके पूर्व प्रत्येक यजमानको देहशुद्धिके लिये पञ्चगव्यका प्राशन करना होता है और यह गायके दूध, गायके दही, गायके घी, गोमूत्र एवं गायके ही गोबरसे तैयार किया जाता है—इसीलिये इसे 'पञ्चगव्य' कहते हैं। इसके अतिरिक्त गायका दूध और उससे तैयार होनेवाले पदार्थ सबके स्वादिष्ट एवं पोषक आहार हैं। दूधमे पकाये हुए चावलको—जिसे आधुनिक भाषामें खीर कहते हैं—संस्कृतमें परमान्न (सर्वश्रेष्ठ भोजन) कहा गया है और घीको हमारे यहाँ सर्वश्रेष्ठ रसायन माना गया है—'आयुर्वै घृतम्।' इतना ही नहीं, घृतरहित अन्नको हमारे शास्त्रोमे अपवित्र कहा गया है। घी और चीनीसे युक्त खीरका भोजन ब्राह्मणोके लिये विशेष तृप्तिकारक होता है और देवताओंको आहुति पहुँचानेके लिये हमारे यहाँ दो ही मार्ग माने गये हैं—अग्नि और ब्राह्मणोंका मुख। बल्कि भगवान्‌ने तो कहा है कि मैं अग्निके द्वारा यज्ञमे घीसे चूती हुई आहुतियोका भक्षण करके उतना प्रसन्न नहीं होता, जितना ब्राह्मणोके मुखमे पड़ी हुई आहुतियोसे सतुष्ट होता हूँ—

नाहं तथाद्मि यजमानहविर्विताने
श्च्योतद्घृतप्लुतमदन् हुतभुङ्मुखेन।
यद्ब्राह्मणस्य मुखतश्चरतोऽनुघासं
तुष्टस्य मय्यवहितैर्निजकर्मपाकैः॥

(श्रीमद्भा० ३। १६। ८)

तात्पर्य यह कि दोनो प्रकारसे देवताओकी तृप्तिके लिये तथा सर्वोपरि भगवत्प्रीतिके लिये भी गौकी परमोपयोगिता सिद्ध होती है।

भारत-जैसे कृषिप्रधान देशमे आर्थिक दृष्टिसे भी गायका महत्त्व स्पष्ट ही है। जिन लोगोने हमारे ग्रामीण जीवनका विशेष मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया है, उन सबने एक स्वरसे हमारे जीवनके लिये गौकी परमावश्यकता बतायी है। गोधन ही हमारा प्रधान बल है। गोधनकी उपेक्षा करके हम जीवित नहीं रह सकते। अतः हमारे गोवंशका संख्या एव गुणोकी दृष्टिसे जो भयानक ह्रास हो रहा है, उसका बहुत शीघ्र प्रतीकार करना चाहिये और हमारी गौओकी दशाको सुधारने, उनकी नस्लकी उन्नति करने और उनका दूध बढाने तथा इस प्रकार देशके दुग्धोत्पादनमे वृद्धि करनेका भी पूरा प्रयत्न करना चाहिये। गायो, बछड़ो एवं बैलोका वध रोकने तथा उनपर किये जानेवाले अत्याचारोंको बंद करनेके लिये कानून बनाने होगे और विधर्मियोको भी गौकी परमोपयोगिता बतलाकर गोजातिके प्रति उनकी सहानुभूति एवं सद्भावका अर्जन करना चाहिये। जिस देशमें कभी दूध और दहीकी एक प्रकारसे नदियाँ बहती थीं, उस देशमें असली दूध मिलनेमे कठिनता हो रही है—यह कैसी विडम्बना है।

आध्यात्मिक दृष्टिसे भी गायका महत्त्व कम नहीं है। गायके दर्शन एव स्पर्शसे पवित्रता आती है, पापोंका नाश

होता है, गायके शरीरमें तैंतीस करोड़ देवताओंका निवास माना गया है। गायके खुरोंसे उड़नेवाली धूलि भी पवित्र मानी गयी है। महाभारतमें महर्षि च्यवन राजा नहुपसे कहते हैं—

मैं इस ससारमें गौओंके समान दूसरा कोई धन नहीं ममझता। गौओंके नाम और गुणोका कीर्तन करना-सुनना, गौओंका दान देना ओर उनका दर्शन करना—इनकी शास्त्रोंमें बडी प्रशंसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण पापोको दूर करके परमकल्याण देनेवाले हैं। गौएँ लक्ष्मीकी जड़ हैं, उनमें पापका लेश भी नहीं है, गौएँ ही मनुष्यको अन्न और देवताओको हविष्य देनेवाली है। स्वाहा और वपट्कार सदा गौओंमें ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएँ ही यज्ञका संचालन करनेवाली और उसका मुख हैं। वे विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहनेपर अमृत ही देती हैं। वे अमृतका आधार होती हैं। और सारा संसार उनके सामने मस्तक झुकाता है। इस पृथ्वीपर गौएँ अपने तेज और शरीरमें अग्निके समान है। वे महान् तेजकी राशि और समस्त प्राणियोको सुख देनेवाली हैं। गौओंका समुदाय जहाँ निर्भयतापूर्वक बैठकर साँस लेता है, उस स्थानकी श्री बढ़ जाती है और वहाँका सारा पाप नष्ट हो जाता है। गौएँ स्वर्गकी सीढ़ी हैं, वे स्वर्गमें भी पूजी जाती हैं। गौएँ समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली देवियाँ है, उनसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है। राजन्! यह मैंने गौका माहात्म्य वतलाया है, इसमे उनके गुणोंके एक अंशका दिग्दर्शन कराया गया है। गौओंके सम्पूर्ण गुणोंका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।*

ब्रह्माजी भी इन्द्रसे कहते हैं—

'हे वासव! गौओको यज्ञका अङ्ग और साक्षात् यज्ञरूप बतलाया गया है। इनके बिना यज्ञ किसी तरह नहीं हो सकता। ये अपने दूध और घीसे प्रजाका पालन-पोषण करती हैं तथा इनके पुत्र (बैल) खेतीके काम आते और तरह-तरहके अन्न एवं बीज पैदा करते हैं, जिनसे यज्ञ सम्पन्न होते हैं और हव्य-कव्यका भी काम चलता है; इन्हींसे दूध, दही और घी प्राप्त होते हैं। ये गौएँ बड़ी पवित्र होती हैं और बैल भूख-प्यासका कष्ट सहकर अनेक प्रकारके बोझ ढोते रहते हैं। इस प्रकार गोजाति अपने कर्मसे ऋषियों तथा प्रजाओंका पालन करती रहती है। उसके व्यवहारमें शठता या माया नहीं होती, वह सदा पवित्र कर्ममें लगी रहती है।'†

इस प्रकार सभी दृष्टियोंसे गाय हमारे लिये बड़े ही आदर और प्रेमकी वस्तु है, हमें सब प्रकारसे उसकी रक्षा एवं उन्नतिके लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिये।

---

*गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धन किञ्चिदिहाच्युत॥
कीर्तन श्रवण दान दर्शनं चापि पार्थिव। गवा प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥
गावो लक्ष्म्या. सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।
स्वाहाकारवपट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ। गावो यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखम्॥
अमृत ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च। अमृतायतन चैताः सर्वलोकनमस्कृताः॥
तेजसा वपुषा चैव गावो वह्निसमा भुवि। गावो हि सुमहत्तेजः प्राणिनां च सुखप्रदाः॥
निविष्ट गोकुल यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्। विराजयति तं देशं पाप चास्यापकर्षति॥
गाव. स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः। गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किञ्चित् पर स्मृतम्॥
इत्येतद् गोपु मे प्रोक्त माहात्म्यं भरतर्षभ। गुणैकदेशवचन शक्यं पारायणं न तु॥
(अनुशासन० ५१। २६—३४)

† यज्ञाङ्गं कथिता गावो यज्ञ एव च वासव। एताभिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथंचन॥
धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा। एतासां तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च। ततो यज्ञाः प्रवर्तन्ते हव्य कव्यं च सर्वशः॥
पयो दधि घृतं चैव पुण्याश्चैताः सुराधिप। वहन्ति विविधान् भारान् क्षुत्तृष्णापरिपीडिताः॥
मुनींश्च धारयन्तीह प्रजाश्चैवापि कर्मणा। वासवाकूटवाहिन्यः कर्मणा सुकृतेन च॥
(अनुशासन० ८३। १७—२१)

गोरक्षा—अलौकिक वस्तु

[महात्मा गाँधीजीके विचार]

हिंदुस्थानमे अनगिनत पशुधन हैं, जिनकी तरफ हमने ध्यान न देकर गुनाह किया है। गोरक्षा मुझे मनुष्यके सारे विकास-क्रममें सबसे अलौकिक वस्तु मालूम हुई है। गायका अर्थ मैं मनुष्यसे नीचेकी सारी गूँगी दुनिया करता हूँ। इसमे गायके बहाने इस तत्त्वके द्वारा मनुष्यको सम्पूर्ण चेतन सृष्टिके साथ आत्मीयताका अनुभव करानेका प्रयत्न है। मुझे तो यह भी स्पष्ट दीखता है कि गायको ही यह भेदभाव क्यो प्रदान किया गया होगा। हिदुस्थानमें गाय ही मनुष्यका सबसे अच्छा साथी, सबसे बडा आधार था। यही हिंदुस्थानकी एक कामधेनु थी। वह सिर्फ दूध ही नहीं देती थी, बल्कि सारी खेतीका आधारस्तम्भ भी वही थी। गाय दया-धर्मकी मूर्तिमत कविता है। इस गरीब और शरीफ जानवरमें हम केवल दया ही उमड़ती देखते हैं। यह लाखो, करोडो हिदुस्थानियोको पालनेवाली माता है। इस गायकी रक्षा करना ईश्वरकी सारी मूक सृष्टिकी रक्षा करना है। जिस अज्ञात ऋषि या द्रष्टाने गोपूजा चलायी, उसने गायसे सिर्फ शुरुआत की, इसके सिवा और कोई ध्येय हो नहीं सकता है। इस पशुसृष्टिकी फरियाद मूक होनेसे और भी प्रभावशाली है। गोरक्षा हिंदू-धर्मकी दुनियाको दी हुई एक कीमती भेट है।

गोमाता जन्म देनेवाली माँसे कहीं बढकर है। माँ तो साल, दो साल दूध पिलाकर हमसे फिर जीवनभर सेवाकी आशा रखती है। पर गोमाताको तो सिवा दाने और घासके कोई सेवाकी आवश्यकता ही नहीं। माँकी तो हमें उसकी बीमारीमे सेवा करनी पड़ती है। परंतु गोमाता स्वयं केवल जीवनपर्यन्त हमारी अटूट सेवा ही नहीं करती, बल्कि उसके मरनेके बाद भी हम उसके चर्म, हड्डी, सींग आदिसे अनेक लाभ उठाते है, यह सब मैं जन्मदात्री माताका दर्जा कम करनेको नहीं कहता, बल्कि यह दिखानेके लिये कहता हूँ कि गोमाता हमारे लिये कितनी पूज्य है।

हमारे ढोरोंकी दुर्दशाके लिये अपनी गरीबीका राग हम नहीं अलाप सकते। यह हमारी निर्दय लापरवाहीके सिवा और किसी भी बातकी सूचक नहीं है। हालाँकि हमारे पिजरापोल हमारी दयावृत्तिपर खड़ी हुई संस्थाएँ हैं तो भी वे उस वृत्तिका अत्यन्त भद्दा अमल करनेवाली सस्थाएँ ही हैं। वे आदर्श गोशालाओ या डेयरियोमे और समृद्ध राष्ट्रिय संस्थाओके रूपमे चलनेके बजाय केवल लूले, लॅगडे ढोर रखनेके धर्मादा खाते बन गये हैं। गोरक्षाके धर्मका दावा करते हुए भी हमने गाय और उसकी सतानको गुलाम बनाया है और हम खुद भी गुलाम बन गये हैं।

सवाल यह किया जाता है कि जब गाय अपने पालन-पोषणके खर्चेसे भी कम दूध देने लगती है या दूसरी तरहसे नुकसान पहुँचानेवाला बोझ बन जाती है, तब बिना मारे उससे कैसे बचा जा सकता है? इस सवालका जवाब थोड़ेमे इस तरह दिया जा सकता है कि जानवरोके पालन-पोषणका विज्ञान सीखकर गायकी रक्षा की जा सकती है। आज तो इस काममें पूरी अंधाधुंधी चलती है। हिदू गाय और उसकी सतानकी तरफ अपना फर्ज पूरा करके उसे बचा सकते है। अगर वे ऐसा करे तो हमारे जानवर हिदुस्थान और दुनियाके गौरव बन सकते हैं। आज इससे बिलकुल उलटा हो रहा है।

हिंदुस्थानके सारे पिजरापोलोका पूरा-पूरा सुधार किया जाना चाहिये। आज तो हर जगह पिंजरापोलका इंतजाम ऐसे लोग करते हैं जिनके पास न कोई योजना होती है और न ये अपने कामकी जानकारी ही रखते हैं।

ऊपर बतायी हुई बातोके पीछे एक खास चीज है। यह है अहिसा, जिसे दूसरे शब्दोमे प्राणीमात्रपर दया कहा जाता है। अगर इस सबसे बड़े महत्त्वकी बातको समझ लिया जाय तो दूसरी सब बातें आसान बन जाती हैं। जहाँ अहिंसा है वहाँ अपार धीरज, भीतरी शान्ति, भले-बुरेका ज्ञान, आत्मत्याग और सच्ची जानकारी भी है। गोरक्षा कोई आसान काम नहीं है। उसके नामपर देशमे बहुत पैसा बरबाद किया जाता है, फिर भी अहिंसाका भान न होनेमे हिंदू गायके रक्षकके बजाय उसके नाश करनेवाले बन जाते

हैं। गोरक्षाका काम हिंदुस्थानसे विदेशी हुकूमतको हटानेके कामसे भी ज्यादा कठिन है।

मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हम भैंसके दूध-घीका कितना पक्षपात करते हैं! असलमें हम निकटका स्वार्थ देखते हैं। दूरके लाभका विचार नहीं करते हैं। नहीं तो यह साफ है कि अन्तमे गाय ही ज्यादा उपयोगी है। गायके घी और मक्खनमें एक खास तरहका पीला रंग होता है, जिसमें भैंसके मक्खनसे कहीं अधिक कैरोटिन यानी विटामिन 'ए' रहता है। उसमें एक खास तरहका स्वाद भी है। मुझसे मिलने आनेवाले विदेशी यात्री सेवाग्राममें गायका शुद्ध दूध पीकर खुश हो जाते हैं। और यूरोपमें तो भैंसके घी और मक्खनके बारेमें कोई जानता ही नहीं। हिंदुस्थान ही ऐसा देश है, जहाँ भैंसका दूध, घी इतना पसंद किया जाता है। इससे गायकी बरबादी हुई है। इसीलिये मैं कहता हूँ कि हम सिर्फ गायपर ही जोर न देंगे तो गाय नहीं बच सकेगी।

गोरक्षाके प्रश्नका जैसे-जैसे मैं अधिक अध्ययन करता हूँ, वैसे-वैसे मेरा यह मत दृढ़ होता जाता है कि गाँवो और उनकी जनताकी रक्षा तभी हो सकती है, जब कि ऊपर बतायी हुई दिशामें निरन्तर प्रयत्न किया जाय।

× × ×

प्रत्येक किसान अपने घरमें गाय, बैल रखकर उनका पालन भलीभाँति और शास्त्रीय पद्धतिसे नहीं कर सकता। गोवंशके ह्रासके अनेक कारणोंमें व्यक्तिगत गोपालन भी एक कारण रहा है। यह बोझ व्यक्तिगत किसानकी शक्तिके बिलकुल बाहर है।

हमारी आबादी बढ़ती जा रही है और उसके साथ किसानकी व्यक्तिगत जमीन कम होती जा रही है। नतीजा यह हुआ कि प्रत्येक किसानके पास जितनी चाहिये उतनी जमीन नहीं है। ऐसा किसान अपने घरमें या खेतपर गाय, बैल नहीं रख सकता।

इस हालतमें क्या किया जाय? यही कि जितना प्रयत्न पशुओको जीवित रखने और उन्हें बोझ न बनने देनेका हो सकता है उतना किया जाय। इस प्रयत्नमें सहयोगका बड़ा महत्त्व है। सहयोग अथवा सामूहिक पशुपालन करनेमें अनेक लाभ है। मेरा तो विश्वास है कि हम अपनी जमीनको भी जब सामूहिक पद्धतिसे जोतेंगे तभी उससे पूरा फायदा उठा सकेंगे। गाँवकी खेती अलग-अलग सौ टुकड़ोंमें बँट जाय, इसके बनिस्पत क्या यह बेहतर नहीं होगा कि सौ कुटुंब सारे गाँवकी खेती सहयोगसे करें और उसकी आमदनी आपसमें बाँट लिया करें। और जो खेतीके लिये सच है, वह पशुओंके लिये भी सच है।

यह दूसरी बात है कि आज लोगोंको सहयोगकी पद्धतिपर लानेमें कठिनाई है। कठिनाई तो सभी सच्चे और अच्छे कामोमे होती है। गोसेवाके सभी अंग कठिन है, कठिनाइयाँ दूर करनेसे ही सेवाका मार्ग सुगम बन सकता है। यहाँ तो मुझे इतना ही बताना था कि व्यक्तिगत पद्धति गलत है, सामूहिक सही है। व्यक्ति अपने स्वातन्त्र्यकी रक्षा भी सहयोगको स्वीकार करके ही कर सकता है। अतएव सामूहिक पद्धति अहिंसात्मक है।

[प्रेषक—श्रीरामकुमारजी जालान]

गो-सेवा

जो मनुष्य प्रतिदिन जौ आदिके द्वारा गौकी पूजा करता है, उसके पितृगण और देवता सदा तृप्त होते हैं। जो सदाचारी पुरुष नियमपूर्वक प्रतिदिन गायोंको खिलाता है, वह सच्चे धर्मके बलसे सारे मनोरथोंको प्राप्त करता है। जो व्यक्ति गौओंके शरीरसे गंदगी, मच्छर आदिको हटा देता है, वह तथा उसके पूर्वज लोग कृतार्थ होते हैं। यहाँतक कि 'यह भाग्यशाली संतान हमारा उद्धार कर देगी' ऐसा सोचकर वे उस अत्यन्त उत्सवमय कार्यके लिये आनन्दसे नाचने लगते हैं। इसलिये गौओंको कभी हेय दृष्टिसे नहीं देखना चाहिये, मारना तो बहुत ही कोसों दूर है। (पद्मपु०, पाताल०, अ० १८)

[प्रेषक—श्रीअरविन्दजी मिश्र]

गोरक्षाके उपाय

(नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार)

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥

गौका महत्त्व

गोरक्षण, गोपालन और गोसंवर्धन भारतवर्षके लिये नया नहीं है। यह भारतवर्षका सनातन धर्म है। हमारी आर्य-संस्कृतिके अनुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थोके साधनका मूल हमारी 'सर्वदेवमयी' यह गोमाता है। हमारे अपौरुषेय वेदोंने गौकी बडी महिमा गायी है और उसे 'अघ्न्या' (अवध्या) बतलाया है। वैदिक वाङ्मयमें सवा सौसे अधिक बार 'अघ्न्या' पदका प्रयोग हुआ है। अथर्ववेदमे तो पूरा 'गोसूक्त' ही है। उपनिषदोमे भी 'गोमहिमा' है। महाभारतके अध्याय-के-अध्याय गो-महिमासे भरे पडे हैं। रामायण, इतिहास, पुराण और स्मृतियोंमे गोमाहात्म्य भरा है। गौके रोम-रोममें देवताओका निवास माना गया है। उसे 'सुरभि', 'कामधेनु', 'अर्च्या' (पूज्या), 'विश्वकी आयु', 'रुद्रोकी माता', 'वसुओकी पुत्री' कहा गया है और 'सर्वदेवपूज्या' माना गया है। गोपूजा, गोभक्ति, गोमन्त्र आदिसे महान् लाभ बतलाये गये हैं। वह यहाँ सर्वप्रकारसे अभ्युदय करती है और परलोकमे वैतरणी पार कराती है। 'वृषोत्सर्ग' का अत्यन्त माहात्म्य है। गोचरभूमि छोड़ना बड़ा भारी पुण्य माना गया है। गौका यह आध्यात्मिक तथा धार्मिक महत्त्व चाहे आज किसीकी समझमे न आये, पर है वह निर्विवाद ही। आध्यात्मिक जगत्का यह रहस्य भौतिक साधनोसे सबकी समझमे नहीं आ सकता। श्रद्धालु पुरुष शास्त्र-प्रमाणसे तथा अन्तर्दर्शी महात्मा ऋतम्भरा प्रज्ञाके द्वारा अनुभवसे ही इसे जान सकते हैं। ऋषि-मुनियोने उस महत्त्वको समझा था और उसका स्वरूप शास्त्रोंमे सँवारकर हमारे लिये रख दिया है।

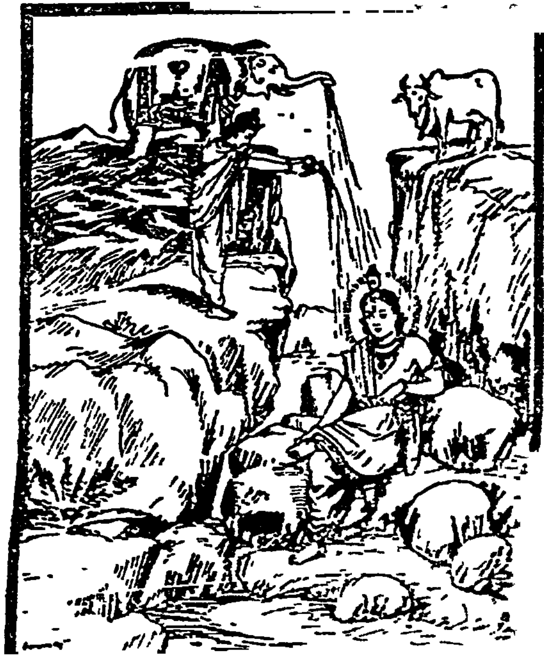
गोसेवा सांस्कृतिक और धार्मिक कर्तव्य है

गोसेवा और गोवंशकी उन्नति भारतीय संस्कृतिके अभिन्न अङ्ग है। हिंदू, बौद्ध, जैन, सिक्ख सभी धर्मावलम्बियोके लिये गोरक्षा धार्मिक दृष्टिसे मुख्य कर्तव्य है। अतएव गोरक्षाका आध्यात्मिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण भी बडे महत्त्वका है जो कदापि उपेक्षणीय नहीं हे।

इसका सांस्कृतिक महत्त्व भी सर्वविदित है। भारतवर्षमे अत्यन्त प्राचीन कालसे ही बड़े-बडे महापुरुषोद्वारा गोसेवन और गोपालन होता चला आया है। रघुवशी महाराज दिलीप नन्दिनी गौके लिये अपने प्राण देनेको प्रस्तुत हो गये थे। राजा नृगने असंख्य गाये दान दी थीं। भगवान् श्रीरामका अवतार ही 'गोब्राह्मणहितार्थ' हुआ था। उन्होने दस सहस्र करोड गाये विद्वानोको विधिपूर्वक दान की थीं—

'गवा कोट्ययुतं दत्त्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वकम्।'
(वा० रा० १। १। ९५)

भगवान् श्रीकृष्णका बाल्यजीवन गोसेवामे वीता। उन्होने स्वयं वनोमे घूम-घूमकर गोवत्सोको चराया। इसीसे उनका नाम 'गोपाल' पडा। कामधेनुने अपने दूधसे तथा देवराज इन्द्रने ऐरावतकी सूँडके द्वारा लाये हुए आकाशगङ्गाके



जलसे भगवान् श्रीकृष्णका अभिषेक करके उनको 'गोविन्द'

नामसे सम्बोधित किया था। द्वारकामे वे पहले-पहल व्यायी हुई, दुधार, वछड़ोंवाली, सीधी, शान्त, वस्त्रालङ्कारोसे समलंकृत तेरह हजार चौरासी गायोका प्रतिदिन दान करते थे। (देखिये श्रीमद्भागवत १०। ७०। ९)

प्राचीन कालकी गोसम्पत्ति

युधिष्ठिरके यहाँ गायोंके दस हजार वर्ग थे, जिनमें प्रत्येकमे आठ-आठ लाख गाये थीं। लाख-लाख, दो-दो लाख गायोंके तो और भी वहुतसे वर्ग थे।

तस्याष्टशतसाहस्रा गवां वर्गाः शतं शतम्॥
अपरे शतसाहस्रा द्विस्तावन्तस्तथा परे।

(महा०, विराट० १०। ९-१०)

इस गो-विभागकी सारी व्यवस्थाका भार सहदेवपर था। वे गोविज्ञानके महान् पण्डित थे। नन्द-उपनन्दादिके पास असंख्य गौएँ थीं और वे उनका भलीभाँति रक्षण, पालन और सवर्धन करते थे। पिछले बौद्धकालीन भारतमें कितने व्यापकरूपमे गोपालन होता था, इसके लिये यहाँ एक ही प्रमाण पर्याप्त होगा। धनंजय सेठने अपनी कन्याके विवाहमें कुछ गायें देनेकी इच्छासे अपने सेवकोंसे कहा—'जाओ, छोटा गोकुल खोल दो और एक-एक कोसके अन्तरपर नगारा लिये खड़े रहो। एक सौ चालीस हाथकी चौड़ी जगह बीचमे छोड़कर दोनों ओर आदमी खड़े कर दो, जिसमे गायें फैल न सके। जब सब लोग ठीक हो जायँ, तब नगारा वजा देना।' सेवकोने ऐसा ही किया। जब गाये एक कोस पहुँचीं तब नगारा बजा, फिर दो कोस पहुँचनेपर फिर बजा, तीन कोसकी लंवाई और एक सौ चालीस हाथकी चौड़ाईके मैदानमे इतनी गाये भर गयी कि वे एक-दूसरेके शरीरको रगडती हुई चलीं। तब धनंजयने कहा—'वस दरवाजा वंद कर दो।' सेवकोने दरवाजा वंद किया, परंतु वंद करते-करते भी ६०,००० गाये, ६०,००० वैल और ६०,००० बछड़े तो निकल ही गये। अव अनुमान कीजिये, इस छोटे गोकुलमें कितनी गायें रही होंगी। इसी प्रकार गोपालकोंका यह पशुधन गोकुलोंमे लाखों-करोड़ोकी संख्यामें था। गायोके वड़े व्यापारी गौतम कहलाते थे, जिनके पास लाखोंकी संख्यामे गोओके दल-के-दल होते थे। यह थी हमारी गोसम्पत्ति, और यह था हमारा गोपालन। गायको अब भी गाँवोंके लोग 'धन' कहते हैं। बड़े ही दुःखकी वात है कि उसी गोपालकोके देशमें आज स्वराज्यके बाद भी निर्बाध गोवध जारी है और गोरक्तसे भारतकी पवित्र भूमि लाल हो रही है।

गोवध बंद होना ही चाहिये

गायको कसाईके हाथसे बचानेकी बड़ी आवश्यकता है। कहना न होगा कि गोवध दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। इसमें प्रधान कारण हैं—चमड़े, हड्डी, सूखे मांस और रक्त तथा आँत-ताँत आदिका व्यापार एवं गोमांसकी अनिवार्य और बेहद माँग। चमड़ेकी रफ्तनी बढ़ती जा रही है। सन् १९१३-१४ मे जहाँ २९ लाख खालें गयी थीं, वहाँ सन् ३८-३९ में ४८ लाख खालें गयीं (मार्केटिंग ऑफ हाइड्स रिपोर्ट, पृष्ठ ४०)। इसी रिपोर्टमें आगरा, बंगलोर, बरेली, बंबई, कलकत्ता, ढाका, दिल्ली, जबलपुर, कराची, लाहौर, मद्रास, पेशावर और पूना—इन बड़े शहरोके कसाईखानोमें काटी जानेवाली गाय-भैसोंकी संख्याका विवरण देते हुए लिखा है कि सन् १९३२-३३ में जितने पशु मारे गये थे, सन् १९३७-३८ में उनकी संख्यामें २१.२ प्रतिशतकी वृद्धि हो गयी। यह युद्धपूर्वका वर्णन है। सन् १९४२ में ६६ लाख गाय-भैसें सरकारी रिपोर्टके अनुसार काटी गयी थीं। युद्धकालमे जहाँ जहाजोंकी कमीके कारण चमड़े आदिकी रफ्तनी घटी, वहाँ फौजोके लिये गोमांसकी आवश्यकता अत्यधिक बढ़ गयी और उसके लिये दूध देनेवाली गाभिन गायो और बछड़ियोका भी अबाध वध हुआ, जो करोड़से भी ऊपर पहुँच गया!! ऐसा विशेषज्ञोंका अनुमान है। अन्यत्र प्रकाशित हिसारके जज साहेब श्रीलायक अली महोदयके उस विचित्र फैसलेको देखिये, जिसमें उन्होंने बिना परमिटके बेकानूनी तौरपर उपयोगी गायों और वछड़ियोंको फौजके लिये ले जानेवाले अपराधियोंको छोड़ते हुए फौजोके लिये गोमांसकी आवश्यकताका बड़ी ही दर्दभरी भाषामें वर्णन किया है। यह उदाहरण एक दाने चावलसे पके भातको परखनेकी तरह पर्याप्त है। इस अबाध गोवधको वंद करानेके लिये लोकमतको जाग्रत् करके प्रबल आन्दोलन करनेकी आवश्यकता है। यह आन्दोलन केवल हिन्दुओंका ही नहीं रहना चाहिये। मुसलमान, ईसाई

तथा अन्य मतावलम्बी सज्जनोमे भी सहृदयता तथा प्रेमसे इस बातका प्रचार करना चाहिये कि गौ देशके प्रत्येक मनुष्यके लिये आवश्यक है और गौके न रहनेसे हिन्दू-मुसलमान सभीको समान रूपसे कष्ट होगा, जिससे वे भी इस आन्दोलनमें शामिल हों तथा सरकारको कानून बनाकर गोवध रोकनेके लिये बाध्य कर दें।

हिन्दुओंमें इस बातका खूब प्रचार हो जाना चाहिये कि एक भी गाय कसाईके हाथ जाय नहीं। गाय न मिलेगी तो कसाईखाने आप ही बंद हो जायँगे। जबतक हिन्दू गाय बेचते-बिकवाते हैं, तभीतक कसाईखाने चलते हैं!

जिन पशु-मेलोंमें कसाइयोंको गाये मिलती है, उन मेलोंको या उनमें गो-विक्रयको कानूनन चेष्टा करके बंद कराना चाहिये। लोकमत जाग्रत् करने, जनताको प्रभावपूर्ण रीतिसे समझाने तथा सरकारको बार-बार सुझानेसे ऐसा होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

बलिया जिलेके गङ्गातटपर लगनेवाले एक मेलेसे हजारों गायें प्रतिवर्ष कसाइयोंके हाथ जाती थीं। श्रीराघवप्रसादजी नामक एक गो-भक्त सज्जनके विशेष उद्योग और उसीमे लग जानेसे वहाँ गौका बिकना कतई बंद हो गया। ऐसा और जगह भी हो सकता है। यह प्रयत्न भी होना चाहिये कि मेलोंमें बिकनेके लिये गौएँ आयें ही नहीं।

सरकारने इधर 'भारत-रक्षा-कानून' के अनुसार उपयोगी गायोंके मारनेपर कुछ प्रतिबन्ध लगाये है। परंतु वे अस्थायी हैं। भरपूर चेष्टा करके धारा-सभाओमे नये बिल लाकर उन्हे उचित और आवश्यक संशोधनके साथ स्थायी कानून बनवा लेना चाहिये और प्रत्येक प्रान्तमें उनपर ठीक-ठीक अमल होता है या नहीं, इसकी ओर गोसेवकको तथा 'गो-रक्षिणी संस्थाओं' को एवं म्युनिसिपलिटीके सदस्योको विशेषरूपसे नजर रखनी चाहिये। ऐसा पता लगा है कि इस समय प्रतिबन्धोके रहते हुए भी प्रतिबन्धके विरुद्ध गायोकी हत्या होती है। इसमे हमारी अवहेलना और गो-हत्यारोका स्वार्थ ही प्रधान कारण है।

जबतक स्थायी कानून न वने, तवतक भारतके सभी प्रान्तोमें वर्तमान कानूनके लागू करानेकी और उसपर पूरा-पूरा अमल हो—इसकी सार्वजनिक समितियो, गो-रक्षा-संस्थाओ तथा जिम्मेवार पुरुषोको व्यवस्था करनी चाहिये। वर्तमान भारत-रक्षा-कानूनकी धारा ८१ के अनुसार—ववई, मद्रास, बिहार, युक्तप्रान्त, उडीसा, आसाम, वगाल आर सिंधमे एक वर्षसे तीन वर्षतकके वछड़े-वछड़ी, पाड़े-पाडी, तीनसे दस वर्षतकके काममे आने लायक वैल, गाभिन होने तथा काम देने लायक गाय और सभी आयुकी दुधार और गाभिन गाय (कुछ प्रान्तोमे दो वर्षतककी मादा भेड़-बकरी भी) वध नहीं की जा सकती। इनका वध करना, वधमे सहायता पहुँचाना और वधके लिये ले जाना अपराध माना जाता है और इस अपराधके लिये तीन सालतककी सख्त कैद और पशु जब्त करनेकी सजा नियत की गयी है। पजाव तथा सीमाप्रान्तमे भी यह कानून लागू कराना चाहिये और जिन प्रान्तोमे लागू है, उनमे निम्नलिखित दो काम करने चाहिये। ऐसा किया जायगा तो वहुत-से दुधार उत्तम पशुओके प्राण बच जायँगे और चेष्टा करनेवाले पुण्यके भागी होगे।

(क) जहाँ किसी कसाईखानेमे इस कानूनके विरुद्ध पशु मारे जाते हो, वहाँके इससे सम्वन्धित महकमेके स्थानीय अधिकारियोंको सूचना देनी चाहिये और समाचारपत्रोमे घटना ठीक सत्यरूपमे जरूर प्रकाशित करानी चाहिये।

(ख) सभा करके इसका शान्तिपूर्ण विरोध करना चाहिये और सरकारके ऊँचे अधिकारियोका भी इसकी तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहिये।

स्थायीरूपसे कानून वनानेके लिये जगह-जगह सभाएँ करनी चाहिये। विभिन्न भाषाओके समाचारपत्रोमे लगातार लेख निकालने चाहिये। गोहित-सम्वन्धी स्वतन्त्र समाचार-पत्र भी निकलना चाहिये और लोगोको आवश्यकता पडनेपर गोवध बंद करानेके लिये आवश्यक त्यागके लिये भी तैयार रहना चाहिये।



न तो पशुओंको खाना और न पशुओका शिकार ही करना। यह हमारा जरथुश्ती नेक धर्म है। (फिरदौसी)



अब तो चेतें

[आचार्य श्रीविनोबाभावेजीका संदेश]

'हिन्दुस्थान किसानोंका मुल्क है। खेतीका शोध भी हिन्दुस्थानमें ही हुआ है। गाय-बैलोंकी अच्छी हिफाजतपर हिन्दुस्थानकी खेती निर्भर है। हिन्दुस्थानी सभ्यताका नाम ही 'गोसेवा' है, लेकिन आज गायकी हालत हिन्दुस्थानमें उन देशोसे कहीं अधिक खराब है, जिन्होने गोसेवाका नाम नहीं लिया था। हमने नाम तो लिया पर काम नहीं किया। जो हुआ सो हुआ। लेकिन अब तो चेते।'

***

गोरक्षाके लिये क्या करना चाहिये?

[महामना पण्डित श्रीमदनमोहनजी मालवीयका संदेश]

'यदि हम गौओंकी रक्षा करेंगे तो गौएँ भी हमारी रक्षा करेगी। गाँवकी आवश्यकताके अनुसार प्रत्येक घरमे तथा घरोके प्रत्येक समूहमें एक गोशाला होनी चाहिये। दूध गरीव-अमीर सवको मिलना चाहिये। गृहस्थोको पर्याप्त गोचरभूमि मिलनी चाहिये। गौओको विक्रीके लिये मेलोंमें भेजना बिलकुल बंद कर देना चाहिये; क्योंकि इससे कसाइयोंको गाये खरीदनेमे सुविधा होती है। किसानोंकी स्थितिके सुधारके लिये दिये जानेवाले इन सुझावों तथा अन्य ऐसे सुझावोंको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये ग्राम-पंचायतोंका निर्माण होना चाहिये।'

***

बैलोंके बिना हमारी काश्तकारी नहीं चल सकती

[देशरत्न डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसादजीका संदेश]

देशरत्न डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादजी महान् गोभक्त थे। आपने 'विहार-प्रान्तीय गोशाला-पिंजरापोल-सम्मेलन'के समय पटनामें कहा था—'मवेशियोसे हमारी जितनी आमदनी होती है और उनसे जो काम हमको मिलता है, उसकी मजदूरी इतनी होती है कि उन सबको जोड़ा जाय तो मालूम होगा कि मुल्कमे इतनी आमदनीका दूसरा कोई जरिया नहीं है, जितनी आमदनी हमको मवेशियोसे होती है।

देशमें जितना चावल होता है उसकी कीमत मवेशियोंसे हुई आमदनीका १/३ और गेहूँकी कीमत १/६ है। इसीसे समझ सकते हैं कि किस तरह देशमे फैले हुए जानवर मेंहकी बूँदोकी भाँति काम कर रहे हैं।

गाय दूध देती है, वैल हल जोतते हैं और बोझा ढोनेका काम करते हैं। दोनों घास आदिका चारा खाते हैं और इस चारे आदिकी कीमत दूध वगैरहके रूपमें वापस देते हैं, मरनेपर कीमती चमड़ा देते हैं और हड्डी आदि सब कुछ फिर जमीनमें खादके रूपमें वापस जाता है। इन सबका रुपयोंमें दाम लगाया गया है। सर आर्थर आलवरने हिसाब लगाकर बतलाया था कि इन सबकी कीमत करीब १९,००,००,००,००० रुपये होती है।'

मवेशियोंकी उपयोगिताका उल्लेख करते हुए आपने अपने भाषणमें एक समय कहा था—'हमारे देशमें गायें ऐसी होनी चाहिये जो अपनी जिंदगीमे काफी दूध दें। खेती और दूसरे कामोके लिये मजबूत और मेहनती बछड़े दें, अपने मल-मूत्रसे काफी खाद दें और मर जानेपर अपने चमडे, चर्बी, हड्डी और मांस वगैरहसे ही दूसरी अन्य जरूरी कीमती चीजे दे, तभी गाय ऐसी बन सकती है कि उसका पालन मुनाफेका कारण हो।'

'मरे ढोरोंकी हड्डियाँ जमा करके विदेशोंमें चली जाती हैं जो कि खाद बनकर जमीनकी उर्वरता बढ़ा सकती थीं

उससे देश वञ्चित हो जाता है। ...मांस और हड्डीकी खाद बहुत अच्छी बन सकती है। चर्बीका इस्तेमाल भी होता है।'

'इस प्रकार यदि हम पूरा हिसाब लगा कर देखें और जो कुछ मवेशियोसे उनके जीते रहनेके समय और मर जानेके बाद मिल सकता है उसका ठीक उपयोग करें, तो मवेशी रखनेमें नुकसान नहीं होगा।'

'जहाँ प्राकृतिक सभ्यतामें जो हम लेते है उसे किसी-न-किसी रूपमें वापस कर देते हैं और फिर उसे पैदा कर लेते हैं, वहाँ आधुनिक सभ्यतामे हम संचित द्रव्यको खर्च करते ही चले जाते हैं और उसे फिर हम किसी ऐसे रूपमें वापस नहीं करते कि वह फिरसे अपने पूर्व-रूपमें हमें मिल सके।'

दूर-दूरसे अच्छी नस्लोंके जानवरोको लाकर दूसरी जगह पालनेके विषयमें उन्होंने यह कहा है कि 'जिस आबोहवा और खुराकमें जो पला है उसीमे वह सबसे ज्यादा तरक्की कर सकता है।'

गोबरकी खादका महत्त्व बताते हुए उनका कहना है कि 'इस बातको भी सभी मानते हैं कि यदि काफी मिकदारमे (मात्रामें) गोबर वगैरहसे बनी खाद दी जाय, तो रासायनिक खादकी बिलकुल जरूरत नहीं होती है। गोबरकी खादसे नफाके बदले नुकसानका किसी हालतमे डर नहीं है। यह भी देखा गया है कि ऐसी चीजें जो इस वक्त बुहारनेमें फेंक दी जाती हैं, या जो गंदगी पैदा करती हैं और सेहतको नुकसान पहुँचाती हैं, उन सबका इस्तेमाल अगर ठीक तरहसे किया जाय तो नुकसानके बदले उनसे फायदा उठाया जा सकता है।'

जानवरोंको खली देनेके सम्बन्धमे आपने एक समय कहा था—'आज खलीका बहुत बड़ा हिस्सा खादके रूपमें खर्च होता है। मैं समझता हूँ यह गलत है, क्योंकि अगर उसी खलीको जानवरोको दिया जाय तो जानवर ज्यादा स्वस्थ और मजबूत होगे, बैल ज्यादा काम कर सकेंगे। इसके अलावा उनके पेटोके कारखानोमे वह खली फिर खाद बनकर जमीनको भी वापस मिल जायगी।'

नसल-सुधारके सम्बन्धमे आपने कहा है कि 'ऐसी नसल चुनी जाय जो दूध भी दे और अच्छे बछडे भी दे। अंग्रेजोको अपनी सेनाके लिये मास तथा व्यापारके लिये चमडा चाहिये। वही प्राप्त करनेके लिये उन्होने एकाङ्गी (केवल दूध या केवल बछड़ेवाली) नस्लकी उपयोगिताका प्रचार करके हमारे देशके लोगोंको भुलावेमे डाला है।'

मोटर ट्रैक्टरो आदि मशीनोके जरियेसे खेती करनेके सम्बन्धमे आपका विचार है—

'मैं समझता हूँ कि जो हालत आजकल हिन्दुस्तानकी है, उसमे इस तरहकी कलोंसे थोड़ी दूरतक हम काम चला सकते हैं। मगर बैलोकी जरूरत तो हमेशा रह जायगी। बैलोके बिना हमारी काश्तकारी नहीं चल सकती।'



गोवध मनुष्य-वधके समान

[राजर्षि श्रीपुरुषोत्तमदासजी टण्डनके विचार]

२२ जनवरी, सन् १९५६ ई० में कलकत्तेमें आयोजित 'सर्वदलीय गोरक्षा-सम्मेलन' मे राजर्षि श्रीपुरुषोत्तमदासजी टण्डनने गोरक्षाके सम्बन्धमें जो विचार व्यक्त किये, उसका सारांश यहाँ प्रस्तुत है—

राजर्षि टण्डनने शास्त्र, पुराण और हिन्दूधर्मका हवाला देते हुए बताया कि गौ यद्यपि पशु है, किंतु हिन्दू जाति और गौका सम्बन्ध अनादिकालसे माता-पुत्रका रहा है।

आज पाश्चात्त्य सभ्यतामे रँग गये मानसकी आलोचना करते हुए आपने दुःख प्रकट किया कि 'हिन्दू जाति अपनी जड़पर ही कुठाराघात करनेको आमादा हो गयी है। जो नेता विदेशोंके उदाहरण देकर हमे समझाना चाहते हैं वे अपनी जाति और देशके मर्मस्थलपर चोट पहुँचा रहे हैं। कोई भी उदाहरण अथवा तर्क हमे अपनी मातृभक्तिमे विलग नहीं कर सकता।'

आपने बिहार, उत्तरप्रदेश और पंजाब सरकारको

बधाई देते हुए कहा कि कलकत्ता और बंबईमें अंग्रेजी राज्यकालसे भी अधिक गोवध हो रहा है और गौ-जातिपर अकथनीय अत्याचार हो रहा है। आपने इस बातपर खेद प्रकट किया कि 'केन्द्रीय सरकार संविधानकी दुहाई देकर एक केन्द्रीय अधिनियम बनानेमें असमर्थता प्रकट कर रही है।'

महात्मा गाँधीके वाक्यको दुहराते हुए आपने कहा कि "प्रत्येक भारतीय उनके इस कथनका समर्थन करता है कि 'गोवध मनुष्य-वधके समान है।"

आपने उस व्यापार-नीतिकी भर्त्सना की जिसके द्वारा गौ, बछड़ेके चमड़ेसे डालर कमानेकी चेष्टा की जाती है। विदेशियोको गो-मांस देना जरूरी है, इसलिये देशमें गोवधको आवश्यक बतलानेवालोकी निन्दा की।

आपने कलकत्तेके व्यवसायियोंको भी चेतावनी दी कि वे लोग गौ-बछड़ेके चमड़ेका निर्यात-व्यवसाय कर पैसेके सामने मनुष्यताको कलंकित कर रहे हैं। हर गोभक्तसे आपने गोचर्मसे बने सामानोंका बहिष्कार करनेकी अपील की। बंगाल-सरकारसे जनताके मनोभाव समझकर शीघ्र ही उपयुक्त अधिनियम बनानेकी प्रार्थना की।

बंगालकी गोहत्याका उल्लेख करते हुए श्रीटण्डनजीने कहा कि 'यह पाप यहाँ पराकाष्ठापर पहुँच चुका है और यह देशके लिये महान् कलंक और अभिशाप है। वर्षमें तीन लाखसे अधिक अच्छी-अच्छी गाये यहाँ काट दी जाती है। यही हालत बंबईकी है। यदि यही क्रम जारी रहा, इसी तरह गौका ह्रास होता रहा तो देशकी अमूल्य निधिसे हाथ धोना पड़ेगा। औरोके लिये रुपये-पैसे, सोना-चाँदीका बहुत मूल्य हो परंतु भारतका तो 'गौ' ही प्रधान धन है। यहाँ तो गोधनका ही माहात्म्य है। लाख-लाख गौओंके दानका प्रकरण शास्त्र एवं पुराणोंमे आता है। गोदान यहाँका प्रधान धार्मिक कर्तव्य है। इस गोधनकी रक्षा सब प्रकारके प्रयत्नसे होनी चाहिये।' चमड़ेके वस्तुओंके बहिष्कारके लिये जोर देते हुए टण्डनजीने इन वस्तुओंके निर्माणमें किस नृशंसता एवं निर्दयताके साथ निरीह गायें तथा उनके गर्भके बछडेतक मारे जा रहे हैं, इसका हृदयद्रावक चित्र खींचा, जिससे उपस्थित लोगोंकी आँखोंमें आँसू आ गये। आपने कहा कि 'फैशनके फेरमे पड़कर जो चमड़ेकी वस्तुएँ ही इस्तेमाल करते है वे गोहत्याके उतने ही जिम्मेदार है जितने कि गोमांस खानेके।' वस्तुतः अधिकांश गाये इसी चमड़ेकी वस्तुओंके लिये ही काटी जाती हैं। श्रीटण्डनजीने महिलाओंका आह्वान करते हुए जोरदार शब्दोमें कहा कि 'चमड़ेके बैग, बिस्तर-बंद, बक्से तथा जूतियोंका पहनना छोड़ दे और अपने पति तथा पुत्रोको भी इसके लिये तैयार करें।' [प्रेषक—श्रीशिवकुमारजी गोयल]

***

परम अध्यात्मकी प्रतीक गौ

[योगिराज श्रीअरविन्दके विचार]

(श्रीदेवदत्तजी)

पृथ्वीपर मूर्तिमन्त गौ जिस परम शक्तिकी प्रतीकस्वरूपा है, उसकी व्याख्या वेदोमें भी साध्य नहीं है। गौ विश्वकी माता है, यह पार्थिव जगत्मे जितना सत्य है उससे भी अधिक इसका महत्त्व आध्यात्मिक दृष्टिसे है। ऋग्वेदोक्त 'गोभिः श्रीणीत मत्सरम्' (९। ४६। ४) का आशय है कि जो कुछ भी गौंसे सम्बन्धित है वह सब कुछ इस परम आनन्दमय सोममे निहित है।

'गौ' वैदिक शब्द है, अतः वेदोंमें निहित परम ज्ञानको अभिव्यंजित करनेकी प्रणालीका अनुसरण करके इसके अर्थकी झलकमात्र पायी जा सकती है। गौके अर्थको समझनेके लिये वेदोके अर्थको अभिव्यक्त करनेकी प्रणालीका ध्यान रखना होगा। वैसे भी वैखरी वाणीमें वेदार्थको अभिव्यक्त करना और उसका साधारणीकरण एक जटिल प्रक्रिया है। निघण्टुकारने अपना ग्रन्थ 'गौ' शब्दसे ही प्रारम्भ किया है और 'गौ', 'ग्मा', 'ज्या', 'क्ष्मा', 'क्षोणी', 'क्षिति' आदिको पृथ्वी-नामधेय माना है। पुराणोंके

अनुसार पापका भार बढ़नेपर पृथ्वी गौका स्वरूप धारण करके भगवान् विष्णुके पास जाकर गुहार लगाती है। यह इसका भी प्रतीक है कि पृथ्वी तत्त्वमयी भूमा गौके रूपमें ही अपनेको पूर्णतया अभिव्यक्त कर सकती है और भगवान् भी गौकी गुहारको परम आदरके साथ सुनते है। पृथ्वीकी अभिव्यक्ति-हेतु इला और अदिति देवियोके नाम भी व्यवहृत हैं। 'गौ' शब्द किरण, प्रकाश, इन्द्रियका अर्थ बोध कराता है और परा-पश्यन्ती-वैखरीवाक्का वाचक भी है। इस विषयमे अथर्ववेदमें कहा गया है—

नैतां ते देवा अददुस्तुभ्य नृपते अत्तवे।
मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो जनाद्याम्॥

(अथर्ववेद ५। १८। १ ब्रह्मगवी सूक्त)

यहाँ राजासे निवेदन किया गया है कि 'हे राजन्! देवताओद्वारा प्रदत्त ब्राह्मणकी वाणीकी प्रतीक यह गौ खा डालने अर्थात् अवरुद्ध करने-हेतु नहीं है। यह गौ अर्थात् वाणी अनाद्या अर्थात् कभी न खायी जा सकनेवाली है। इसका वह अन्त करनेकी इच्छा न करे।'

गौरूपा वाणीको चतुष्पदा भी कहा जाता है। वह मूलाधारमे परा, नाभिमे पश्यन्ती, हृदयमे मध्यमा और जिह्वासे उच्चरित होकर वैखरी कही जाती है। यह सदा रक्षणीया है। वाणी 'यज्ञाग्नि' और 'अघ्न्या' है। सदा शुद्ध और पालनीया है। भूमि, वाणी, किरण—इन्हे असहाय समझकर नष्ट करनेसे कालकी दुर्गति होती है।

'गौ' अमोघ शक्तिदायिनी है, और 'देवजूतैः' (अथर्व० ५। १८। ८) यह पद परमात्मासे प्रेरिता सत्यमयी अभिव्यक्तिका बोधक है। इसे ऋत-स्वरूपा कहा गया है। 'सत्यं ऋतं बृहत्' की अवधारणासे युक्त होनेके कारण प्रतीकार्थमे गौको वेद भी कहा जाता है।

गौ अर्थ, काम, धर्म-मोक्षकी धात्री होनेके कारण कामधेनु है। इसका अनिष्ट-चिन्तन ही पराभवका कारण है।

'गु' और 'गावः'—ये दोनो संज्ञाएँ वैदिक मन्त्रोमे 'गो' और 'किरण'—इन दोनो अर्थोमे प्राप्त होती हैं। भारतीय चिन्तनमे सत्ता और चेतना एक-दूसरेके प्रतिरूप है। अदिति वह अनन्त सत्ता है जो सप्त नाम-धामके साथ देवमाताके रूपमे वर्णित की गयी है। वेद अदितिको अनन्त चेतना, आद्या ज्योति और 'गौ' भी मानते हैं।

वैदिक ऋषियोके स्तवनमे उषाकी स्तुतिमे गौका आध्यात्मिक रूप प्रकट होता है। वेदमे गौ इतनी अमूल्य विभूतियोकी धारिका और वाहिका है कि इन्द्र और बृहस्पति भी देवशुनि सरमा और आङ्गिरस आदि ऋषियोकी सहायतासे खोयी हुई गौओको पुनः प्राप्त करते है। वैदिक मन्त्रद्रष्टा ऋषियोने आध्यात्मिक उषाको 'गोमती' भी अभिहित किया है। वह संसारके लिये ज्योतिकी रचना करती है—

ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः॥ (ऋग्वेद १। ९२। ४)

आध्यात्मिक ज्योतिर्मयी उषा गौ अर्थात् दिव्य चेतनाकी प्रसारिका किरणोकी माता है। महर्षि वसिष्ठने गौको देवकार्यमे भाग-ग्रहणकारिणी माना हैं। इससे जहाँ वह अवरुद्ध है वह स्थान खुल जाता है और गौ मनुष्योको दे दी जाती है। गौ अपने आध्यात्मिक वैभवमे इतनी अलकृत और व्यापक है कि वह वैदिक ऋचाओके बहुत बडे भागको समाहित कर लेती है।

वेदोमे गौओको खोजना और उन्हे पुनः प्राप्त करना इन्द्रका कार्य वर्णित किया गया है। यह कार्य आङ्गिरस ऋषियोकी सहायतासे अग्नि और सोमके मन्त्रो तथा यज्ञके द्वारा सम्पन्न होता है। श्रीअरविन्दकृत भाष्यके अनुसार गो उषाकी छिपी हुई किरण है और अन्धकारसे उनकी मुक्ति अन्धकारमे हुए सूर्यके उदय होनेके कारण होती हैं। यह उच्चतर ज्योतिर्मय लोक 'स्वः' की विजय है। सूर्य प्रतीक है दिव्य ज्योतिदायिनी शक्तिका। स्वः दिव्य शक्तिका लोक है। वेद गौको आङ्गिरस ऋषियोके कार्यका, साधनाका फल भी वर्णित करते हैं। इस फलका सम्बन्ध पहाडियोंके तोडे जाने और गौकी मुक्तिसे है। 'गौ' आध्यात्मिक उषाकी किरण अर्थात् प्रसारिका शक्ति है।

तद् देवानां देवतमाय कर्त्वमश्रथ्नन् दृळ्हाव्रदन्त वीळिता।
उद् गा आजदभिनद् ब्रह्मणा वलमगूहत् तमो व्यचक्षयत् स्व ॥

(ऋ० २। २४। ३)

उपर्युक्त मन्त्र पणियो (अर्थात् अन्धकारके स्वामियो)-से गौको लाने और समाजके लिये ज्योतिको प्राप्त करनेका कथन करता है। इन्द्र अन्धकारमेंसे गो-रूपी किरणोंको

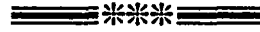
दुहता भी है। वेदका इन्द्रके विषयमें कथन है कि—

तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत् पश्यति चक्षसा सूर्यस्य गवामसि गोपतिरेक इन्द्रः॥ (ऋ०७। ९८। ६)

श्रीअरविन्दने अपने वेदार्थमें इस प्रमेयको सर्वतोभावेन सिद्ध कर दिया है कि वेदोंमे वर्णित गौ, पणियोकी गौ परम आध्यात्मिक प्रकाशकी गौ है। वेदमें परमदेवके लिये जिस 'सत्यं ऋतम् बृहत्' तत्त्वकी कल्पना की गयी है उसका आधार गौ है। 'गोदा इद् रेवतो मदः'—इन्द्र पूर्ण रूपोंको बनानेवाला, भरपूर दूध देनेवाली गौके समान, उसका परम आनन्दमय सोम रससे प्राप्त आनन्द गौका दाता है (ऋ० १। ४। १-२)। क्योकि गौ ज्ञान-स्वरूप है। 'इमा या गावः स जनास इन्द्रः' (ऋ० ६। २८। ५, अथर्व० ४। २१। ५)।

गौ तथा सूर्यकी महिमाको वेदोके मन्त्रद्रष्टा ऋषि एक कथानकके माध्यमसे हमे प्रदान करते हैं। उषा वह देवी है जो गौके बाड़ेकी तरह अन्धकारको खोल देती है। देवोका सर्वश्रेष्ठ कार्य वह माना गया जिसने दृढ़ स्थानोंको ढीला किया, कठोरको मृदु किया। फिर बृहस्पति गौको हाँक लाते हैं। अन्धकारको दूर करके 'स्वः' को प्रकाशित कर देते हैं। वेदमें इन्द्रको वृषभ भी कहा गया है। जो वज्रको अपना साथी बनाकर ज्योतिके द्वारा अन्धकारमेंसे किरणोंको दुहते हैं। वह वज्र (स्वर्ण अश्मा) है जिसमें 'स्वः' की ज्योति रहती है—'युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो निर्ज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत्॥' (ऋ० १। ३३। १०)

गौको चुरानेवाले 'पणि' को श्रीअरविन्दके भाष्यमे अन्धकारकी शक्तियोंका ही प्रतीक माना गया है। जिसे उषा खोल देती है 'व्रजस्य तमसो द्वारो०' (ऋ० ४। ५१। २)। पणियोकी इस परम गुप्त निधिकी विमुक्ति परम ज्योतिकी मुक्ति है।



भगवान् श्रीकृष्णकी गोचारणलीला

(गोलोकवासी परमभागवत पं० श्रीरामचन्द्रडोंगरेजी महाराज)

श्रीकृष्णब्रह्मके गोचारणकी, लोकोत्तर अद्भुत लीलाकी और परमपूज्या गोमाताकी बड़ी ही दिव्य विलक्षण महिमा है। शास्त्र घोषणा करते हुए कहते हैं—'गावो विश्वस्य मातरः' (विष्णुधर्मोत्तर० २। ४२। २) 'गौ समस्त विश्वकी माता है।'

साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्पर ब्रह्मका उस पूज्या गोमाताकी रक्षा करनेके लिये ही भगवान् श्रीकृष्णके रूपमें अवतार हुआ। भगवान् श्रीकृष्णको गोमाता अपने प्राणोसे भी प्यारी है। भगवान् श्रीकृष्ण उनके अनन्य भक्त हैं। श्रीकृष्ण जब कुछ बड़े हुए तो वे घुटुरुनके बल चलकर गायोंकी पूँछ पकडकर खड़े होने लगे। एक दिन भगवान् श्रीकृष्णने अपनी मैया श्रीयशोदासे इस प्रकार वार्तालाप किया—

श्रीकृष्ण—मैया!

श्रीयशोदा—हॉ, बेटा कन्हैया!

श्रीकृष्ण—मैया! मैं तुझे एक बात सुनाता हूँ।

श्रीयशोदा—सुना, बेटा! क्या सुनाता है?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं पहले एक बहुत बड़ा आदमी था।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू बहुत बड़ा आदमी कब था?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं अपने पहले जन्ममें बहुत बड़ा आदमी था।

श्रीयशोदा—अच्छा बेटा! तू पहले जन्ममें कितना बडा आदमी था?

श्रीकृष्ण—हॉ, मैया, मै बहुत बड़ा आदमी था और मैं एक बहुत बड़ा राजा था!

श्रीयशोदा—अच्छा बेटा कन्हैया! तो तू पहले जन्ममें कौन-सा बड़ा राजा था?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं पहले जन्ममें एक महाराजा था और मेरा नाम उस समय महाराजा रामचन्द्र था।

श्रीयशोदा—अच्छा, कन्हैया बेटा! तो तू ही पहले जन्ममें महाराजा रामचन्द्र था? अच्छा तो बतला अब बात क्या है?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं उस समय बहुत बड़ा राजा

रामचन्द्र था, और मै पूज्या गोमाताका बड़ा भारी भक्त था। उन्हें पालता, उनकी सेवा करता और उनका दान भी करता था। मैंने वन जानेके समय हजारो गौओको त्रिजट ब्राह्मणको दानमे दिया था (वाल्मीकीय रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग ३२)। राज्यकालमें भी मैंने खूब गोदान और गोसेवा की, किंतु राजा होनेके कारण मैं अपनी इन पूज्या गोमाताकी पूरी तरहसे सेवा नहीं कर सका और इनकी सेवाकी लालसा मुझे लगी ही रह गयी।

श्रीयशोदा—तो बेटा! अब तू क्या करना चाहता है?

श्रीकृष्ण—मैया! अब मै गायोका ही नौकर बन करके आया हूँ और अब मैं गायोंकी खूब सेवा करना चाहता हूँ।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तो अब तू गायोकी खूब सेवा किया कर, तुझे गायोंकी सेवा करनेसे रोकता कौन है?

श्रीकृष्ण—मैया! अब अपनी पूज्या गायोका नौकर बनकर और गायोंका सेवक बनकर इन गायोकी खूब जी भर करके सेवा करूँगा।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू इन पूज्या गायोकी और पूज्य ब्राह्मणोंकी कृपासे ही तो हमारी इस वृद्धावस्थामें उत्पन्न हुआ है। भला, तुझे इनकी सेवा करनेसे कौन रोक सकता है? बेटा कन्हैया! तू अब इन गायोंकी खूब सेवा कर।

श्रीकृष्ण—मैया! अब मैं जंगलोंमे, वनोमे गायें चरानेके लिये जाया करूँगा।

श्रीयशोदा—अच्छा बेटा कन्हैया! अपने घरके पुरोहितजी महाराजको बुलाकर और उनसे शुभ मुहूर्त दिखाकर तब तुझे गाय चरानेके लिये शीघ्र ही भेजूँगी।

तदनन्तर पुरोहितजी महाराजको नन्दरायके गृहमें बुलाया गया और शुभ मुहूर्त दिखाया गया। जब वह शुभ दिन समीप आ पहुँचा, तब भगवान् श्रीकृष्णने अपनी मैया श्रीयशोदासे कहा—'मैया! मेरे गोचारणका अब शुभ दिन निकट आ गया है और अब मैं गायोंको चरानेके लिये जाऊँगा।'

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! यदि तू जंगलमें, वनोमें गाये चरानेके लिये जायगा तो बेटा! तेरे इन छोटे-छोटे कोमल पैरोमे जंगलोके—वनोके काँटे चुभेगे और उन नुकीले काँटोके चुभनेसे तुझे बड़ा भारी कष्ट होगा, इसलिये कन्हैया बेटा! तेरे लिये इन कोमल पैरोमे काँटे न चुभे, इसके लिये मैं छोटी-छोटी जड़ीदार जूतियाँ बनवाये देती हूँ। जब वे बनकर आ जायँगी, तब तू उन्हें पहनकर गायोंको चरानेके लिये जाया करना।

श्रीकृष्ण—मैया! तू यह क्या कहती है? क्या मैं अपने इन पैरोमें जूते पहनकर तब गायोको चरानेके लिये जाया करूँगा?

श्रीयशोदा—हाँ बेटा कन्हैया! तू जंगलमें जूते पहनकर तब गाये चराने जाया करना।

श्रीकृष्ण—ना मैया! मैं अपने इन पैरोमे जूते पहनकर गायोको चरानेके लिये कभी नहीं जाऊँगा।

श्रीयशोदा—बेटा! तो और तू क्या पहनकर जायगा?

श्रीकृष्ण—मैया! मैं कुछ भी नहीं पहनूँगा! मैं तो नंगे पाँव ही जाऊँगा।

श्रीयशोदा—बेटा! तू जूते क्यों नहीं पहनेगा?

श्रीकृष्ण—यदि तू मेरे पैरोके लिये जूते बनवाती है तो तू मेरी इन परमपूज्या गायोके लिये भी जूते बनवा दे।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू बड़ा भोला है। तू कुछ बावला भी दीखता है। भला कहीं गायोके लिये जूता-जूती बन सकती है?

श्रीकृष्ण—तो मैया! मैं नौकर और गायोका सेवक, तो अपने पैरोमें सुन्दर जड़ीदार रेशमी जूते पहनकर जाऊँ और जो पूज्या गौ माता हमारी मालिक और प्रातःस्मरणीया परम इष्टदेवी है, वे नंगे पाँवो जगलोमे जायँगी, क्या ऐसा करना उचित होगा? मैया! भला ऐसा कैसे हो सकता है? यह तो मैया! मर्यादाके सर्वथा विरुद्ध बात होगी।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तू तो मनुष्य है और छोटा-सा बालक है और तेरे पैर छोटे-छोटे कोमल-कोमल हैं। तुझे नंगे पाँवों जंगलोमे जानेसे बड़ा भारी कष्ट होगा और तेरे इन पाँवोंमे जंगलो और वनोंके नुकीले काँटे चुभेगे। गाये तो पशु हैं। भला ये गाये जूती कैसे पहन सकती हैं?

श्रीकृष्ण—मैया! तू मेरी पूजनीया प्रातःस्मरणीया

परम इष्टदेवी गौं माताको पशु वताती हे? पूजनीया गौं माता कहीं पशु होती है माँ। क्या श्रीतुलसी महारानी सामान्य घास होती हैं? पतितपावनी श्रीगङ्गाजी महारानी क्या कहीं सामान्य जलकी नदी होती हैं? क्या कल्पतरु सामान्य वृक्ष और चिन्तामणि पत्थर है? मैया। तैंने आज हमारी गया मैयाको पशु कैसे वता दिया? उन्हे पशु कैसे कह दिया?

श्रीयशोदा—वेटा कन्हैया। यदि ये गायें पशु नहीं हैं तो वता फिर वे क्या है?

श्रीकृष्ण—मैया। सभी कामनाओंको देनेवाली यह पूज्या गौ माता तो साक्षात् कामधेनु है। यह हमारी परमपूज्या इष्टदेवी हैं। इसके रोम-रोममे तैंतीस करोड़ देवी-देवताओंका निवास है। इस देवीके मूत्रमें श्रीगङ्गाजीका वास हैं और गोवरमे श्रीलक्ष्मीजी महारानीका निवास है। शास्त्र गोमाताको समस्त विश्वकी माता वता रहे हैं, 'गावो विश्वस्य मातरः', फिर भला गोमाता पशु कैसे हो सकती हे? पूज्या गोमाता तो हमें इस भवसागरसे पार लगानेवाली माता हैं। इसकी रक्षासे और सेवा करनेसे इसकी कृपा प्राप्त होती हे और पूज्या गोमाताकी कृपासे इसके लोक—श्रीगोलोकधामकी प्राप्ति होती है। पूज्या गोमातासे वढ़कर भला और कौन देवता है?

श्रीयशोदा—अच्छा वेटा कन्हैया। यदि यह वात है तव तो फिर तू अपने नंगे पॉवों ही गायोको चरानेके लिये जंगलोंमें जाया कर। अव मैं तुझे कभी भी मना न करूँगी।

वस, अव क्या था? साक्षात् अनन्तकोटि व्रह्माण्डनायक जगन्नियन्ता परव्रह्म परमात्मा नन्दनन्दनके रूपमे—छोटे-से वालकके रूपमें जंगलोंमे गाये चरानेके लिये जाने लगे और गायोंकी अपनी हाथोंसे सेवा करने लगे। श्रीकृष्ण-व्रह्म गायोंको चरानेके लिये जाते समय अपने हाथमें डंडे नहीं रखते थे और कोई शस्त्र नहीं रखते थे। वे अपने हाथमे केवल वंशी लिये हुए ही गायें चराने जाते थे। इस महान् अद्भुत दृश्यको देखनेके लिये वड़े-वडे पूज्य देवी-देवता अपने-अपने लोकोंको छोड़-छोड़कर व्रजमे चले आते और यह अद्भुत दृश्य देखकर आश्चर्य-चकित रह जाते थे। जो परात्पर व्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण वड़े-वड़े महान् योगियोके समाधि लगानेपर भी ध्यानमे नहीं आते, वे ही साक्षात् परात्पर व्रह्म श्रीकृष्ण पूज्या गोमाताके पीछे-पीछे नंगे पाँवों जंगलोमें, वनोमें अपने हाथमें वंशी लिये घूम रहे हैं, इससे वढ़कर आश्चर्यकी वात भला और क्या होगी? इससे बढ़कर पूज्या गौ माताकी अद्भुत महत्ताका जीता-जागता ज्वलन्त उदाहरण और प्रत्यक्ष प्रमाण भला और क्या हो सकता है?

समस्त विश्वका पेट भरनेवाला श्रीकृष्णब्रह्म गोमाताके माखनका भूखा

भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक एवं परब्रह्म परमात्मा हैं। वे विश्वके कर्ता-पालक एवं धारणकर्ता हैं। समस्त जीवोंका भरण-पोषण करनेवाले भी वे ही हैं। चींटीसे लेकर हाथीपर्यन्त जीवमात्रको खिलाने-पिलानेवाले वे ही है। जो आस्तिक और भक्त है, उनके लिये तो वे ही साक्षात् योगक्षेमवाहक हैं—

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

(गीता ९। २२)

वे प्रभु ही उन्हे खिलाते-पिलाते हैं और उनका सब प्रकारसे वे प्रभु श्रीकृष्ण योग-क्षेम वहन करते हैं। परंतु जो घोर नास्तिक हैं और जो ईश्वरको नहीं मानते उन घोर नास्तिकोंका भी भरण-पोषण करते हैं तथा उन्हें भी वे खिलाते-पिलाते है और उनका पेट भरते हैं, क्षुधा शान्त करते हैं। समस्त जगत्की क्षुधा शान्त करनेवाले वे ही परात्पर व्रह्म श्रीकृष्ण अपनी मैया श्रीयशोदाजीसे एक दिन वोले—

श्रीकृष्ण—मैया।

श्रीयशोदा—हाँ बेटा कन्हैया।

श्रीकृष्ण—मैया! आज तो मुझे बड़ी भूख लग रही है।

श्रीयशोदा—अच्छा कन्हैया वेटा! तुझे भूख लगी है?

श्रीकृष्ण—हॉ मैया। मुझे वड़ी भूख लगी है।

श्रीयशोदा—वेटा कन्हैया। यदि तुझे भूख लगी है तो फिर घरमें खाने-पीनेकी कमी क्या है? खूब मेवा-मिष्टान्न और सव प्रकारके वड़े-वडे सुस्वादु पदार्थ तैयार हैं, जो भी

तेरा जी चाहे, वह तू खूब खा। बेटा! तुझे मना कौन करता है?

श्रीकृष्ण—ना मैया, मेरी भूख तेरे इन मेवा-मिष्टान्न आदिसे शान्त नहीं होगी और नहीं मिटेगी।

श्रीयशोदा—फिर बेटा! तू क्या खाये-पीयेगा? मैं वही तुझे मँगाकर खिलाऊँ-पिलाऊँगी।

श्रीकृष्ण—मैया! मैं तो गायोका दूध-दही-माखन-मलाई-मिश्री खाऊँगा, तब मेरी भूख मिटेगी।

श्रीयशोदा—बेटा कन्हैया! तैने यह बात क्या कही? घरमें खूब गायोका दूध-दही-माखन-मलाई, मिश्री आदि भरे पड़े हैं। चाहे जितना खाओ, तुझे रोकता कौन है? फिर तू बाहर क्यों जायगा?

श्रीकृष्ण—ना मैया, मै अपने घरके दूध-दही-माखन-मलाईसे अपनी भूख नहीं मिटाऊँगा। मैं तो गोपियोके घरपर जाकर उनके घरोकी गायोके भी माखन-मलाई-मिश्री खाकर अपनी भूख मिटाऊँगा।

श्रीयशोदा—अच्छा कन्हैया बेटा! यदि तू नहीं मानता है तो तू गोपियोके घरोमे ही जाकर और उनके घरोंकी गायोके दूध-माखन-मलाई-मिश्री खाकर अपनी भूख मिटा ले, पर तू बेटा! भूखा मत रह।

बस, फिर क्या था—'अब तो साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्पर ब्रह्म, सबकी भूख मिटानेवाला भगवान् श्रीकृष्ण गोपियोके घरोमे जा-जाकर और उनके घरोकी गायोका दूध-दही-माखन-मलाई और मिश्री खा-खाकर अपनी भूख मिटाने लगा।'

परिणाम

और इसी गोदुग्धका पानकर भगवान् श्रीकृष्णने दिव्य गीतामृतका प्रवचन किया—'दुग्धं गीतामृतं महत्।' गौओंने स्वदुग्धसे अभिषिक्तकर उन्हे गोविन्द—गौओका इन्द्र बनाया। उनके ध्यान-स्मरणसे कलियुग समाप्त होकर सतयुग होता है—'कलौ कृतयुगस्तस्य... ...हृदये यस्य गोविन्दः।' 'गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा' यही उनका सर्वोत्तम मन्त्र है। वस्तुतः गो-गोविन्द सदा एक साथ हैं।

जाको ध्यान न पावे जोगी। सो व्रजमे माखन को भोगी॥

कैसी हैं वे महाभागा श्रीगोपिकाएँ, जिनके घरोमे जा-जाकर श्रीकृष्णब्रह्म माखन-मिश्री माँग-माँगकर खा रहे हैं! कैसी है वह पूज्या गोमाताओंकी अद्भुत विलक्षण महिमा, जिनके माखन-मिश्रीपर, दूध-दहीपर श्रीकृष्णब्रह्म रीझ रहा है और अपनी भूख मिटा रहा है। धन्य हैं ये श्रीगोपिकाएँ और धन्य हैं ये गोमाताएँ!

बोलो गोमाताकी जय!



गोपालन, गोपाल और गो-महिमा

(श्रीराधाकृष्णजी श्रोत्रिय, 'साँवरा')

गोकुलेश गोविन्द प्रभु, त्रिभुवनके प्रतिपाल। गो-गोवर्धन-हेतु हरि, आपु बने गोपाल॥ १ ॥
द्वापरमें दुइ काज-हित, लियौ प्रभुहि अवतार। इक गो-सेवा, दूसरौ भूतल कौं उद्धार॥ २ ॥
गोप-वेश रुचिकर लगत, गो-गोपी गो-बाल। सँग सोभित गोधन विपुल, विहरत वन नँदलाल॥ ३ ॥
गो-संवर्धन काज-हित, धरि गोवर्धन हाथ। गो-गोपन रक्षा करी, रक्षक गोपीनाथ॥ ४ ॥
जिन चरननकी धूरि कौ, ब्रह्मादिक ललचात। वे ही गउअन सँग फिरैं, गो-रज रंजित गात॥ ५ ॥
गउअनके सँग जात जब, मधुवन बाल मुकुन्द। गो-वृन्दनके सिन्धु ज्यों, बह्यो जात गोविन्द॥ ६ ॥
लीलाधर लीला करन, जब गोचारण जात। गो-परिकर गो-गोष्ठकी, गो-रज लिपटत गात॥ ७ ॥
लीला मात्र न जानिये, है अति मरम विशाल। गो-विभूति गोलोककी, गोपालक गोपाल॥ ८ ॥
इष्टदेव प्रभु सबहिके, जिनकी गउएँ सेव। तिनकी सेवा सौं स्वयं, चार पदारथ लेव॥ ९ ॥
जिनके सेवक है स्वयं गोकुलेश गोपाल। उनकी सेवासे कहौ, क्यों न कटैं भवजाल॥ १० ॥



गोसेवा ही सच्ची राष्ट्र-सेवा एवं सर्वोत्तम भगवदाराधना है

(अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु निवृत्त शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज)

भारतीय संस्कृतिकी सच्ची रीढ़ गो-संस्कृति ही है। स्वतन्त्रताप्राप्तिका मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृतिकी सारसर्वस्व' प्राणभूता गोमाताकी आराधना ही थी। पर स्वतन्त्रता प्राप्त होते ही राजनीतिके नामपर धर्म और संस्कृतिके सर्वथा विरुद्ध नेताओके मनमें कोई एक पाश्चात्त्य अनुकृतिरूपा पिशाचिनी प्रविष्ट हो गयी, जिसका प्रत्यक्ष प्रचण्ड नग्न ताण्डव आज सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। बस केवल लूट-पाट, डाका, हत्या तथा महान् अनर्थकी विभीषिका सर्वत्र व्याप्त है। सुख, शान्ति, सद्भावना, परस्पर प्रेमका व्यवहार इस राजनीतिके द्वारा सर्वथा लुप्त कर दिया गया। आज सदाचार, सद्विचार, भगवद्भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सत्संगका प्राय: सर्वथा लोप-सा हो रहा है और विश्वके नित्य सच्चे स्वामी भगवान्‌परसे श्रद्धा, विश्वास, आस्था उठ चुकी है। यहाँतक कि संत, महात्मा, भक्त और धर्मात्माओंकी भी महान् उपेक्षा एवं कभी-कभी हत्या भी कर दी जाती है। भारतमें वृहस्पति, शुक्र, कौटिल्य, सोमदेव, चंडेश्वर आदिके अनेक धर्म एवं ईश्वर-सापेक्ष श्रेष्ठ प्राचीन राजनीति-ग्रन्थ आज भी विद्यमान हैं। रामायण, महाभारत, मनुस्मृति तथा विष्णुधर्मोत्तर आदि पुराणोंमें राजनीति और कला-विज्ञान आदिका भंडार भरा पड़ा है, जिनके सामने विश्वका सारा नवीन ज्ञान-विज्ञान कौड़ी-मूल्यका नहीं है। पर देशका दुर्भाग्य है कि देशके कर्णधारोंने उनपर किये गये शोधपूर्ण पाश्चात्त्योंके ग्रन्थोंपर भी दृष्टिपात नहीं किया। रामचरितमानस-जैसे विश्वके सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थसे भी वे पूर्णरूपसे परिचित नहीं हैं। अव सोचिये कि ऐसे लोग क्या कर सकते हैं, जो कर सकते हैं, वही कर रहे हैं। इन्हें गोमाताका ध्यान कहाँसे होगा?

गोमाता विशुद्ध सत्त्वमयी भगवती पृथ्वीकी प्रतिमूर्ति है, समग्र धर्म, यज्ञ, सत्कर्म और विश्वसंचालनका आधार है और सूधेपन तथा वात्सल्यकी तो सीमा ही है। इसके दर्शन, स्पर्श, वन्दन, अभिनन्दन आदिसे सारे पाप-तापका शमन होकर परम कल्याण एवं सुख, शान्ति, आनन्दका संचार होता है तथा सव प्रकारके मङ्गलमय अभ्युदयका आगमन होता है, यह सबका हृदय जानता है। इसलिये यह निरन्तर पूजनीय, वन्दनीय एव अभिनन्दनीय है। वेदसे लेकर रामचरितमानसतककी प्रत्येक पंक्तिमें इसीकी ही सर्वाधिक महिमा भरी पड़ी है।

आजकल एक बात विशेष ध्यान देनेकी है। एक तो सामान्य जनताकी गोपालनकी प्रवृत्ति कम होती जा रही है तथा जो लोग गोपालन करते है वे भी स्वार्थवश दूधके लोभमे [विदेशी] जर्सी गायको रखना चाहते हैं जो वास्तवमें गाय ही नहीं है। इसका पालन गोसेवा नहीं है। गोबर, गोमूत्र और गायोंका आवास स्वास्थ्यप्रद माना जाता है जो विदेशी गायोंमें नहीं है। गौ माताके जो लक्षण अपने शास्त्रोमें बताये गये हैं वे लक्षण केवल भारतवर्षकी देशी गायोमें ही उपलब्ध हैं। भारतीय गायोंका विशिष्ट लक्षण है उनका गलकम्बल और पीठका ककुद्, इसलिये गोदान आदिमे भी जर्सी गायोंको देना धनका अपव्यय मात्र है। गौ माताकी सेवासे जो भी आध्यात्मिक और आर्थिक लाभ है, वह देशी गौकी सेवासे ही है। आजकल दूध बढ़ानेके लिये देशी गायोका जर्सी आदि विदेशी साँड़ोंसे सम्पर्क कराया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप देशी गौकी नस्ल ही समाप्त होती जा रही है।

'कल्याण'के प्रस्तुत विशेषाङ्कमें हमारे पाठकोंने गोमहिमाकी समग्र बातोको ध्यानसे पढ़ा होगा, पढ़ेंगे। सभी शास्त्रो एवं अपने-अपने धर्मग्रन्थोके आकर्षक दिव्य वचन भी प्रमाण-रूपमे देखे होंगे। यहाँ उस सम्बन्धमें अब कुछ भी अधिक लिखना पिष्ट-पेषण-जैसा होगा। हम तो यहाँ हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध, ईसाई—सभी भाइयोंसे यही प्रार्थना करेंगे कि आपके सभी धर्मग्रन्थोमें गोमाताका अपार आभार स्वीकार किया गया है। आप सभी लोग गोसेवक हैं। अत: ताजिया, दुर्गापूजा तथा विभिन्न चुनावों आदि-जैसे उत्सवोंमें खर्च होनेवाले तीन-चार दिनोंके अंदर अरबों-खरबों रुपयेमेंसे कुछ या अधिक-से-अधिक कटौती कर प्रत्यक्ष संतस्वरूपा तथा दूध, घी आदि प्रदान करनेवाली भारतीय गोमाता [फ्रिजियन आदि नहीं] की सेवामें लगायें।

यह कोई कठिन बात नहीं होगी; प्रत्युत इससे आप अपना एवं दूसरोंका लोक-परलोक सुधार लेंगे।

गौओंकी उपेक्षासे आज पृथ्वी नरक बन गयी है। पर पूरा विश्वास कीजिये इन देवता-देवियो और उत्सवोकी जगह सच्ची महामहिमामयी देवी गोमाताकी सेवासे साक्षात् स्वर्ग या गोलोक ही इस भूमण्डलपर उतर जायगा तथा सच्चे सुख, शान्ति, आनन्द और कल्याणकी मधुमयी सुधाधारा निरन्तर प्रवाहित होने लगेगी। सब लोगोंके विचार बदल जायँगे। परस्पर सौहार्दका वातावरण उपस्थित होकर प्रतिक्षण दिव्य ज्ञान-विज्ञान एवं भक्तियोग आदिके चमत्कारपूर्ण प्रचार-प्रसार सर्वत्र दीखने लगेंगे। सभी प्रकारकी विद्याएँ, विशुद्ध बुद्धि एवं धर्म-पुण्यके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग प्रस्फुटित होने लगेंगे। 'वृषो हि भगवान् धर्मः।' जब साक्षात् धर्मरूप वृषभ चतुष्पादसे सम्पन्न होकर पृथ्वीपर विचरण करेगा, तब पूर्ण सत्ययुग आ जायगा एवं सभी जितेन्द्रिय होकर भक्त, संत, धर्मात्मा, महात्मा एवं विद्वान् बन जायँगे। किसीको किसी वस्तुका स्वप्नमे भी अभाव नहीं होगा। परिपूर्ण परमानन्दकी व्याप्ति एवं प्राप्ति होने लगेगी। इससे अधिक क्या चाहिये। सर्वत्र कृतार्थता और कृतकृत्यता ही दीखेगी। सभीसे करबद्ध प्रार्थना है कि आप हमारी इस अभ्यर्थनाको स्वीकार करें।



अनाद्या अवध्या गौ

(वीतराग स्वामी श्रीनन्दनन्दनानन्दजी सरस्वती, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, भूतपूर्व संसद्-सदस्य)

'**मा गामनागामदितिं वधिष्ट**' (ऋग्वेद)। विश्वके पुस्तकालयमें ऋग्वेद सर्वप्राचीन अथवा सर्वप्रथम ग्रन्थ है। नित्य अपौरुषेय ज्ञान विश्वके जीवमात्रको आदेश देता है कि गौ अदिति तथा अनागा है, इसका वध न करो। 'गो' शब्द वाणी तथा पृथ्वीवाचक भी है और समस्त मौलिक, दिव्य तथा पारमार्थिक जगत्का सार है। 'दितिर्वै नाशः' 'दिति'नाम नाशका है, 'अदिति' अविनाशी अमृतत्वका नाम है। गौको अदिति कहकर वेदने अमृतत्वका प्रतीक बताया है। अमृतत्व स्वयं अमृत होकर औरोको अमृत होनेका मार्गदर्शक और प्रेरक है। इसकी रक्षा और वृद्धिसे समस्त विश्व सुरक्षित और समृद्ध होगा। इस कारण भारतीय संस्कृतिके प्राचीन चिन्तकोने इसको सदा पूज्य और अपने तथा विश्वके जीवनका केन्द्र मानकर इसकी सदा पूजा और रक्षा मातृसदृश की। भारतीय जीवनके सभी विभागोंमें गौका अनुपम मातृस्थानीय सहयोग है, इसलिये 'गावो विश्वस्य मातरः' कहा गया है।

श्रीमद्भगवद्गीतामें विष्णु, जीवन और कर्मको यज्ञ-रूप कहा गया है—

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति॥

(३। १६)

यज्ञके बिना जीवनको सर्वथा निरर्थक माना गया है। विश्व-कल्याणका प्रमुख साधन यज्ञ है। गौ और ब्राह्मणको यज्ञका मुख्यतम अङ्ग कहा गया है। दोनोंका एक कुल है—'एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति।' यज्ञ मन्त्र (ब्राह्मण) और हवि (गौ) की समष्टि है। इनके विरोधी विश्वके तथा जीवनके शत्रु हैं। सर्वजगन्नियन्ता परमेश्वरको भी इसी कारण गो-ब्राह्मणरक्षक कहा गया है। द्वापरान्तमें परब्रह्मके परिपूर्णावतार गोपाल ही थे। वृन्दावन, भाण्डीरवन, कामद आदि क्षेत्रोमे गौओंके पीछे सर्वथा निरावरण वनमें विचरण करते हुए श्रीभगवान्के मुखसे गौके चरणरजसे पवित्र होनेकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा निकली है।

अनुव्रजाम्यहं नित्यं पूयेयेत्यङ्घ्रिरेणुभिः।

गोचरणरज उड़-उडकर परब्रह्मके श्रीअङ्गको पूत करती है, जिससे परब्रह्म अपनेको धन्य मानते हैं। इस कारण कोई भी विवेकशील प्राणी गौके द्वारा पवित्र होनेके अतिरिक्त और क्या सौभाग्य समझ सकता है? गोकुल परब्रह्मका घर है। नन्दबाबा, वृषभानु आदि दूसरे गोपालधुरन्धर बडी मात्रामे गोदुग्ध और मक्खनका प्रसारकर विश्वको हृष्ट-पुष्ट और समृद्धिशाली बनानेमे सहायक थे। श्रीकृष्णने ११ वर्षकी अवस्थामें मुष्टिक, चाणूर, कुवलयापीड हाथी

और कंसका वध गोरसके अद्भुत चमत्कारके प्रमाण हैं।

दर्शनशास्त्रमें 'गो' नाम इन्द्रियोका और वासुदेव नाम अन्तरात्माका आश्रयण करता है और भगवान् वासुदेव इन्द्रियोका आप्यायन करते हैं, इसीलिये वे वासुदेव कहलाते हैं। वासुदेव परब्रह्म और उसकी शक्तियाँ—ये विश्वके पालक हैं। इनकी रक्षासे धर्मरक्षा और विश्व-रक्षा स्वाभाविक सिद्ध है। महात्माओंने धर्मरक्षाको ही समाज, राष्ट्र और विश्वरक्षाका साधन माना है। कुछ लोगोंने धर्मरक्षा और गोरक्षाको राष्ट्रके लिये अहितकर कहकर इसका कड़ा विरोध किया, कुछ राजनीतिज्ञ इस्लाम आदि दूसरे मतावलम्बियोंको प्रसन्न करनेके लिये गोरक्षाका पूर्ण विरोध कर रहे हैं। गोरक्षापर भारतवासियो और हिंदू जातिके किसी पक्षका भी मतभेद न होनेसे सभीने इसका समर्थन किया, तव भी देश और हिंदू जातिको विभाजन-दुर्भाग्यका प्रमाण मिला और हिंदू गोरक्षाके मोर्चेपर कितने ही वर्षोंसे विफल होता आ रहा है। हिंदू जाति कटी-फटी और असहाय सभी मोर्चोपर विफल हो रही है, परंतु परमपूज्य शंकराचार्यके नवावतार अनन्तश्री करपात्री स्वामीजी महाराजने सम्पूर्ण गोवध-वंदीके लिये सर्वथा शान्त और अहिंसक धर्मयुद्धका सूत्रपात किया, किंतु हिंदू जातिके दुर्भाग्यसे लाखोंकी जेलयात्रा और प्राण-त्यागके बाद भी तथा अनन्तश्री जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी निरंजनदेवतीर्थके ऐतिहासिक अनशन और जेलयात्राके वाद भी सरकारने गोरक्षाके राष्ट्रिय कलंकको चालू रखा।

सभी राजनीतिक दल हिंदू-जागरण और एकात्मतासे त्रस्त हैं। गोरक्षामे असफल हिंदू-धर्म सभी मोर्चोपर अरक्षित, सभी राष्ट्रविरोधी, समाज-विरोधी, धर्म-विरोधी व्यक्तियों—गठवन्धनों और दानवीय अत्याचारका शिकार बन रहा है। कुछ हिंदू युवकोंमें जीवन और जागरणके लक्षण दीख रहे है। यदि स्वाध्याय और धार्मिक जागरणका वातावरण बना तो सम्भव है, यह अर्धसुप्त जर्जरित हिंदू सिंह जग उठे। हिंदू रिजर्व फोर्स अभी मैदानमे नहीं आयी। हनुमान्, परशुराम, व्यास आदि महाशक्तियाँ उपयुक्त अवसरकी वैसे ही प्रतीक्षामें है, जैसे कि बाबर, अकबर और औरंगजेबके शासन-अत्याचारमें समर्थ स्वामी रामदास, वीर मराठा, वीर छत्रसाल, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवा, राणा लाजसिंह आदि मोर्चा सँभालने और हिंदुओंको जीवनदान देनेके लिये पूर्ण दलबलसे प्रकट हुए थे। '**धर्मो जयति नाधर्मः**', '**विष्णुर्जयति नासुराः**' का दृढ़ विश्वास आस्तिक वर्गकी शाश्वत शक्ति और विभूति है। आजका हिंदू उस विभूतिका स्वागत एवं प्रयोग करेगा तो उसके जीवित एवं विजयी होनेमें संदेह नहीं—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

गौ माताकी जय हो, गोपाल कृष्णकी जय हो, बजरंगबलीकी जय हो, जगदम्बाकी जय हो, धर्मवीरोकी जय हो।

आर्य-साहित्यमें गो-गौरव

(श्रीरामानन्दजी द्विवेदी)

गोकी वड़ी महिमा वताता आर्य-जन-साहित्य है।
गो-रोम-रोम निवास करते देवता सव नित्य हैं॥
गो-पुच्छ द्वारा झाड़नेसे रोग भग जाते सभी।
गो-मूत्र गो-मयके विना शुचिता नहीं होती कभी॥
तव एक गोका मूल्य-अंकन वृहद राज्याधिक्य था।
गो ही नहीं वछड़े वृपभ सवका उचित आतिथ्य था॥

गोके लिये थे गोत्र जिससे श्रेष्ठ गो-रक्षा बने।
कश्यप, भरद्वाजादि सव मिल गोत्रके कक्षा बने॥
परम्परासे गोत्र अवतक वंश-परिचय दे रहा।
गो-एपणा प्राचीन आर्योका सदान्वेषण रहा॥
सव तुच्छ है पुत्रैषणा वित्तैषणा दारैषणा।
सुर-असुर-वन्दित मोक्षदायिनि लोक-ख्यात गवेषणा॥

(गो-भारती)

गोमहिमा

(अनन्तश्रीविभूषित दक्षिणाम्नायस्थ शृंगेरी-शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीभारतीतीर्थजी महाराज)

हम सभी भारतीयोंके लिये गाय पूजनीय है। उसकी पूजासे अति विशिष्ट फलकी प्राप्ति होती है और उसकी अवमाननासे भारी अनर्थकी प्राप्ति होती है, यह बात भी सर्वसामान्यको अच्छी तरह ज्ञात है।

जैसा कि कहा जाता है कि संतानरहित महाराज दिलीपने पुत्रकी कामनासे भगवान् वसिष्ठकी शरण ली। इसपर भगवान् वसिष्ठने उनसे इस प्रकार कहा—'राजन्! बहुत पहलेकी बात है कि एक बार जब आप इन्द्रकी राजधानीसे उनसे मिलकर पृथ्वीपर लौट रहे थे तो आपको मार्गमें कल्पतरुकी छायामें विश्राम करती हुई कामधेनु मिली। वह प्रदक्षिणाके योग्य थी, किंतु आप उसे बिना नमस्कार किये चले आये। इस अपमानसे दुःखी होकर उसने आपको निःसंतान रहनेका शाप दे दिया। इसलिये अबतक आपको पुत्रमुख-दर्शनका सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। अब तो आप उसकी पुत्री नन्दिनीकी आराधनासे अपना अभीष्ट प्राप्त कर सकते हैं।' तदनन्तर महर्षिकी आज्ञाको शिरोधार्यकर राजा दिलीपने उस नन्दिनीकी भक्तिपूर्वक महान् सेवाकर उसकी कृपासे 'रघु' नामक कुलदीपक पुत्रको प्राप्त किया। इसी कथाका, बड़ी श्रद्धासे महाकवि कालिदासने अपने रघुवंश महाकाव्यमें बड़े सुन्दर ढंगसे वर्णन किया है।

श्रुति गायको 'अघ्न्या' कहकर श्रद्धेय और अवध्य बताती है। श्रुतिका प्रत्यक्ष वचन है—'मा गामनागामदितिं वधिष्ट।' इस श्रुतिका तात्पर्य यह है कि गाय निरपराधिनी है, निर्दोष है तथा पीडा पहुँचाने योग्य नहीं है और अखण्डनीय है, अतः इसकी किसी प्रकार भी हिंसा न करो, तनिक भी कष्ट न पहुँचाओ। इस श्रुतिसे यह स्पष्ट है कि गाय किसी भी प्रकार दण्ड देने योग्य या पीडा पहुँचाने योग्य नहीं है।

देवीके नामोमे 'गोमाता'का भी उल्लेख हुआ है। इसलिये गाय साक्षात् देवी है, यह स्पष्ट प्रतीत होता है।

गौ न केवल अदृष्ट-रूप सौभाग्य-संवर्धनकारिणी होनेके कारण पूजनीय है, प्रत्युत उसके द्वारा प्रत्यक्ष भी हमारे महान् उपकार सम्पन्न होते हैं। जैसे कि हम देवताओंकी पूजामे गायके ही दूधका उपयोग करते हैं, अन्य किसी दूसरे प्राणीका नहीं। गोदुग्ध पीनेसे वुद्धिकी भी वृद्धि होती है। यज्ञोमे देवताओकी आहुतियोंके लिये प्रायः दुग्ध, दधि, घृत आदि गव्य पदार्थोका प्रयोग होता है। गायका घी, दूध, दही, गोमय तथा गोमूत्रको शास्त्रोक्त विधिसे तैयार कराकर सेवन किया जाय तो वह सभी प्रकारके पापोको नष्ट कर देता है, शास्त्रोंमे कहा गया है—

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्॥

'जो मेरे शरीरकी हड्डियोमे पाप प्रविष्ट हो गया है, वह सब पञ्चगव्यके पानसे उसी प्रकार नष्ट हो जाय जैसे अग्नि सूखे लकड़ियोंको जलाकर भस्म कर देती है।'

अतएव शास्त्रीय विधानोके निर्देशक पापोंके उपशमनके लिये पञ्चगव्य-पान करनेका विधान बतलाते हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण गौओका पालन करते थे और उनकी पूजा भी करते थे। गायोकी रक्षाके लिये उन्होने गोवर्धन पर्वतको ऊपर उठाकर अपने हाथपर धारण किया था। श्रेष्ठ लोग जो आचरण करते हैं, सामान्य व्यक्तियोंके लिये वही आदर्श एवं उदाहरण बन जाता है। भगवान् श्रीकृष्णने बड़े ही आदर एवं प्रीतिसे गायोंकी परिपालना एवं गोपरिचर्या की थी, अतः हमलोगोको भी उनके आदर्शको ध्यानमे रखकर गायोंकी सेवा अवश्य करनी चाहिये। इसलिये गायोको किसी भी व्यक्तिको किसी भी समय किसी प्रकारका कष्ट नहीं देना चाहिये।

गौका दान सभी दानोमे सर्वोत्तम है तथा सर्वोत्कृष्ट फल उत्पन्न करता है, यह सभी शास्त्र बार-बार घोषित करते हैं। गायोकी महिमा अपार है, इसीलिये गोदानकी विशेषता बतलायी गयी है।

इस प्रकार श्रुति-स्मृति, इतिहास तथा पुराणोंकी एकवाक्यताके कारण यह निष्कर्ष निकलता है कि गाय सदा पूजनीय है, इसलिये उसका किसी प्रकार कभी भी तनिक भी अनिष्ट नहीं करना चाहिये।

गौ माताकी अपूर्व महिमा

(पद्मश्री डॉ० श्रीकृष्णदत्तजी भारद्वाज)

वैदिक ऋचाओंके आविर्भावसे आजतक गौ माताकी महिमाके प्रति स्तवाञ्जलियाँ प्रस्तुत होती रही हैं और उसकी सुरक्षाके प्रति सभी सत्त्व-गुण-सम्पन्न व्यक्ति जागरूक रहते आये हैं—

'मा गामनागामदितिं वधिष्ट'

(ऋक्संहिता ८। १०१। १५)

सृष्टिमें सहस्रों जीव-जन्तु हैं, किंतु जितना आदर-सम्मान गौ माताने पाया है उतना किसी अन्य पशुने नहीं।

गौंके उपकारोंको मानव कभी भुला नहीं सकता।

गौकी गणना शुद्ध शाकाहारी जीवोंमें होती है; क्योंकि वह घास-फूस खाकर ही उदर-पूर्ति कर लेती है।

देव-पूजामें जो पञ्चामृत वनाया जाता है, उसमे मधु और मिश्रीके अतिरिक्त दूधके साथ घी और दही गायसे प्राप्त होते हैं। एवं अन्य शरीर-शोधक धार्मिक विधियोमें जव पञ्चगव्यका प्रयोग किया जाता है तव तो घी, दूध, दहीके साथ गोमय (गोवर) तथा गोमूत्रका भी मिश्रण किया जाता है।

'गो'-शव्दके साथ कई अन्य शव्दोके व्यवहारसे गायकी महत्ता स्वयं सिद्ध है। दिग्दर्शनार्थ गोप=ग्वाला, गोपी=ग्वालिन, गोकुल=गायोंका समूह, गोविन्द=श्रीकृष्ण, गोष्ठी=सभा अथवा वार्तालाप, गव्यूति=दो कोसकी दूरी, गवाक्ष=झरोखा, गोस्तनी=दाख या मुनक्का, गो-ग्रास=अपने भोजनसे पहले गायको दिया जानेवाला भोजन।

यदि प्रचुर जलमे कुछ अशुद्धि हो जाय तो उसकी शुद्धि जाननेके लिये शास्त्रकी आज्ञा है कि 'शुचि गोतृप्तिकृत् पय:' अर्थात् यदि वह जल इतना है कि एक गायकी प्यास वुझा सकता है तो वह जल पवित्र माना जायगा।

गौ माता परम आदरणीय है। किसी भी प्रकारसे उसका अनादर निन्दनीय माना गया है। उसका उत्पीडन तो आसुरी अथवा राक्षसी वृत्ति है। कविकुल-गुरु कालिदासने रघुवंशमे लिखा है कि एक बार महाराज दिलीप स्वर्लोकमें देवराज इन्द्रके आराधनसे निवृत्त होकर जब भूलोककी ओर आ रहे थे तब वे मार्गमें कल्पवृक्षकी छायामें बैठी कामधेनुका प्रदक्षिणापूर्वक सम्मान करना भूल गये। उनका चित्त अपने ही घरकी वातोंमें व्यस्त था। कामधेनुने राजाके इस व्यवहारको अपना अपमान समझा और कहा कि 'मेरी इस अवज्ञाके दुष्प्रभावसे तुम्हारे प्रासादमे राजकुमारका जन्म नहीं होगा। मेरी संतानकी आराधनासे ही यह दोष दूर होगा और तुम्हें पुत्ररत्नकी प्राप्ति हो सकेगी।' महर्षि वसिष्ठने ध्यानस्थ होकर महाराजको लगे शापकी बात जान ली और अपनी नन्दिनी नामकी गौकी सेवा करनेके लिये महाराजको आदेश दिया। महाराज दिलीपने महारानी सुदक्षिणाके साथ २१ दिनतक नन्दिनीकी आराधना करके उससे पुत्र-प्राप्तिका आशीर्वाद प्राप्त किया था। दिलीपके पुत्र-रत्न थे रघु।

गोसेवाका अनन्त फल

गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः। तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान्॥
द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्यं सुखप्रदः। अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत्॥
दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां व्युष्टिं तथाश्नुते। (महा०, अनु० ८१। ३३—३५)

जो पुरुष गौओंकी सेवा और सव प्रकारसे उनका अनुगमन करता है उसपर संतुष्ट होकर गौएँ उसे अत्यन्त दुर्लभ वर प्रदान करती हैं। गौओके साथ मनसे भी कभी द्रोह न करे, उन्हें सदा सुख पहुँचाये, उनका यथोचित सत्कार करे और नमस्कार आदिके द्वारा उनका पूजन करता रहे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय और प्रसन्नचित्त होकर नित्य गौओंकी सेवा करता है, वह समृद्धिका भागी होता है।

गावो विश्वस्य मातरः

(अनन्तश्रीविभूषित द्वारकाशारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज)

भारतीय संस्कृतिमें यज्ञोंका बहुत महत्त्व है, क्योकि भारतीय संस्कृतिका दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक है, यह समग्र विश्वको लेकर चलती है, यज्ञ भी कर्ताके साथ-साथ वायुमण्डलको दूर-दूरतक पवित्र एवं आधुनिक भाषामे कीटाणुरहित करते है, ऐसे प्रयोग आजके परिप्रेक्ष्यमें और भी सारगर्भित हो गये है, आज जबकि पर्यावरणको शुद्ध करने एवं बचानेवाले उपाय स्वयं भी प्रदूषित करते हैं, अतः ऐसे मनमानी-रहित शास्त्रीय विधि-विधानोसे युक्त प्रयोगोंकी नितान्त आवश्यकता है, जो कि शत-प्रतिशत पर्यावरणकी रक्षा करनेमें समर्थ हैं। इनमें गायका स्थान प्रमुखतम है। गायका इतना महत्त्वपूर्ण स्थान इसी बातसे अवगत होता है कि समस्त प्राणियोको धारण करनेके लिये पृथ्वी गोरूप ही धारण करती है। जब-जब पृथ्वीपर द्रोही असुरोंका भार बढ़ता है, तब-तब वह देवताओके साथ श्रीमन्नारायणकी शरणमे गोरूप ही धारण करके जाती है, वह यह अनुभव करती है—

गिरि सरि सिधु भार नहिं मोही। जस मोहि गरुअ एक पर द्रोही॥

उसकी इस व्यथाको जानकर भगवान् उसके भारको दूर करनेके लिये विविध अवतार धारण करते हैं। भगवान् पूर्णब्रह्म मर्यादापुरुषोत्तम रामभद्रका अवतार सूर्यवशमे, त्रेतायुगमे हुआ था, उनके पूर्वज राजा दिलीपको वंशावरोधका संकट आ पड़ा था। महाकवि कालिदासने अपने रघुवश महाकाव्यमे राजा दिलीपका वर्णन किया है। देवासुरसंग्राममे देवराज इन्द्रके निमन्त्रणपर राजा दिलीपने देवोको विजय दिलायी थी। वे जब इस सहयोगसे निवृत्त हुए तब उन्हे स्मरण हुआ कि गृहस्थधर्मके नियमानुसार उन्हे ऋतुस्नाता धर्मपत्नीके सामने जाना चाहिये। राजा दिलीप शीघ्रतासे राजधानी अयोध्याकी ओर आने लगे। रास्तेमें कल्पवृक्षके नीचे खड़ी कामधेनुको न देख पानेसे प्रणाम न कर सके। कामधेनुने कहा 'जिस लिये मेरी अनदेखी कर पूज्य-व्यतिक्रम तुम कर रहे हो, उस फलकी प्राप्ति मेरी संततिकी सेवा किये बिना नहीं होगी।' आकाशगङ्गाकी हर-हर ध्वनिके कारण यह भी दिलीप सुन न सके। बहुत दिन व्यतीत हो जानेपर जब चिन्ता हुई, तब उन्होने अपने कुलगुरु महर्षि वसिष्ठसे, उनके आश्रमपर जाकर निवेदन किया, तब वसिष्ठजीने शापवाली बात बतायी और कहा—'कामधेनु तो इस समय लोकपाल वरुणके यहाँ दीर्घकालीन यज्ञमे गयी है। उसकी कन्या नन्दिनी आश्रममें है, उसकी सेवासे तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होगा।'

राजा दिलीपने गुरु वसिष्ठजीके बताये नियमानुसार सेवा की। सेवासे प्रसन्न हुए नन्दिनीसे वर प्राप्त किया, फलस्वरूप एक बालक हुआ, जिसका नाम 'रघु' रखा। रघुके कारण ही सूर्यवश 'रघुवश' नामसे प्रसिद्ध हुआ। यदि दिलीपने गोसेवा न की होती तब वशावरोध तो हो ही गया था। रघुके बाद अज, अजके बाद दशरथ और दशरथके चार पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न हुए।

कृष्णावतारमे कृष्णने इन्द्रकी पूजा न करके गोवर्धनकी पूजा गोपोसे करवायी तो इन्द्रने क्रोधके वशीभूत होकर प्रलयकालीन मेघोसे वर्षा करवायी, पर श्रीकृष्णके प्रभावसे वह वर्षा कुछ बिगाड न सकी। श्रीकृष्णने गोवर्धनको ही छत्रवत् धारण कर लिया। उस समय कामधेनु आयी। उसने श्रीकृष्णका अपने थनोसे निकलनेवाली दुग्धधारासे अभिषेक किया और कहा कि 'जिस प्रकार देवोके राजा देवेन्द्र है, उसी प्रकार आप हमारे राजा 'गोविन्द' है।'

इन दो पूर्णावतारोमे गायका सम्बन्ध प्रमुख रूपमें सिद्ध होता है। सनातन धर्मके शास्त्रीय विधानोंमें सर्वत्र गायका प्रथम स्थान है। भूमि पूजनके योग्य तभी मानी जाती है जब वह गोबरसे लीपी गयी हो। यज्ञ-कुण्ड और स्थण्डिल आदि अग्नि-स्थापनके स्थान, पञ्चभू-संस्कारोंसे संस्कृत किये जाते हैं, जिनमे 'गोमयेनोपलिप्य' वाक्य आया हुआ है। गौका पञ्चगव्य आयुर्वेदकी दृष्टिसे तथा शास्त्रीय दृष्टिसे अत्यन्त उपयोगी है। रक्षाबन्धनके दिन ब्राह्मणगण श्रावणीकर्म करते हैं, उस दिन हेमाद्रिकृत स्नान-सकल्प करते हैं। उसमे पञ्चगव्य-प्राशन भी अनिवार्य-रूपसे होता है। पञ्चगव्य-प्राशन द्विजातिगण समन्त्रक करते हैं और द्विजातिसे भिन्न लोग अमन्त्रक। आयुर्वेदिक दृष्टिसे शरीर-शोधनमें उदरगत विकारोंके प्रशमनके लिये यह निरापद प्रयोग है। गायका मूत्र ओषधियोंके शोधनमें प्रमुख रूपसे

हैं। गोमूत्रका प्रयोग ग्रामोमें सामान्यजन भी किया करते हैं। लीवर, तिल्ली, पाचन-यन्त्रोमें विकार होनेपर इनके सुधारके लिये गोमूत्रका प्रयोग सफलता देता है। गोवरका प्रयोग भी शोथादि विकारोंके शमनके लिये किया जाता है। भगवान् धन्वन्तरि अमृत-कलश हाथमे लिये क्षीर-समुद्रसे निकलकर सारभूत वात कहते हैं—

अच्युतानन्दगोविन्दनामस्मरणभेषजात् ।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्य वदाम्यहम्॥

गायके गोवरकी क्षमता आजके वैज्ञानिकोने भी पहचानी है। गायके गोवरमें आणविक दुष्परिणामोको अवरुद्ध करनेकी शक्ति है। ये दुष्परिणाम गोवरसे लिपे-पुते मकानोमें अन्य स्थानोकी तुलनामें कम प्रतिशतमे होते हैं।

शास्त्रोको देखे तो गायकी महिमाके विषयमे एक पूरा ग्रन्थ ही बन जायगा। अतः आवश्यकता है इसके वैज्ञानिक महत्त्वको समझनेकी। इस दिशामे समस्त वैज्ञानिक एकमतेन कहते हैं कि पर्यावरणके संरक्षणकी दृष्टिसे गायका कोई विकल्प नहीं है। गाय अपने श्वास-प्रश्वासके द्वारा अनगिनत कीटाणुओसे क्षेत्रको शुद्ध करती है। विश्वके प्रायः सभी जीवोका मल-मूत्र अत्यन्त विपाक्त होता है। धार्मिक दृष्टिकोणसे भी कई ऐसे उपपातक हैं, जिनके प्रायश्चित्तमें पञ्चगव्य-प्राशनका विधान किया गया है। मन्त्रकी जागृतिके लिये पुरश्चरणके योग्य भूमिमे गोशाला (गोष्ठ) को लिया गया है। अधिक क्या, जपसंख्याके लिये गायके गोवरमें सिन्दूरादि मिलाकर गोली वनायी जाती है। गौरी भगवती जो सौभाग्यकी अधिष्ठात्री देवी है, उनकी मूर्ति गोवरकी ही वनती है, चाहे छोटा-से-छोटा पूजन-कार्य हो या वड़े-से-वड़ा यज्ञादि।

गायके प्रति वर्तमानमे जो व्यावसायिक दृष्टिकोण स्थिर किया जा रहा है, वह अदूरदर्शितापूर्ण है। पाश्चात्य तौर-तरीकोका अन्धानुकरण करके डेयरीफार्म आदिमें अधिक दुग्ध-उत्पादनके व्यामोहमे नित नये प्रयोग गोवशको, जो निरन्तर कम होता जा रहा है, भविष्यमे उसकी पारम्परिक विभिन्न क्षेत्रोमें होनेवाली नस्लोके रूप, क्षमता, विशेपता आदि गुणोंका विलय करनेवाले होंगे। गायोंका संकरीकरण, उन्हे जरसी वनाना स्थायी लाभदायक नहीं है और भारतीय भावनापर कुठाराघात अत्यन्त ही स्पष्ट है कि हमें जन्म देनेवाली माँ जहाँ हमें कुछ ही समयतक स्तनपान करानेसे जीवनभरके लिये पूज्या माँ बन जाती है, वहीं जो जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त हमें दूध दे वह माँ न हो सके, पशु ही समझी जाय, इससे वढ़कर विडम्बना और क्या हो सकती है। इस स्वतन्त्र भारतमे मनुष्योंके लिये बहुत बड़ा जो कलंक बना हुआ है वह है, निरन्तर बढ़ती हुई संख्यामें प्रत्येक सूर्योदयतक गायोका बूचड़खानोमें कट जाना। इस कलंकको दूर करना नितान्त आवश्यक है। गायसे चारों पुरुषार्थोकी सिद्धि होती है। वह जन्मसे लेकर मरणपर्यन्त उपयोगी है। मरनेके बाद भी उसका मृत शरीर काम आता है। कैसी भी बूढ़ी गाय क्यों न हो, वह ईंधन तो देती ही है, जो पर्यावरण-शोधनमें काम आता है।

पृथ्वीको धारण करनेवालोंमें गायका प्रमुख स्थान माना गया है। राजा पृथुसे, जिनके नामके कारण भूमिका नाम पृथ्वी पड़ा, पृथ्वीने कहा कि 'सभी अपना-अपना वत्स निश्चित करके मुझसे अपना-अपना प्राणधारक दूध ले ले।' तदनन्तर देव-गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, दैत्य, दानव, पितृगण और मनुष्यादिकोने अपना-अपना वत्स नियुक्त कर पृथ्वीसे अपना-अपना प्राणधारक पय प्राप्त किया।

गायको तृण खिलानेका बहुत ही पुण्य बताया गया है—कहा है—तीर्थस्थानोंमे जानेसे, ब्राह्मणोंको भोजन करानेसे जो पुण्य प्राप्त होता है तथा सभी व्रतों और उपवासोमें एवं तपस्याओमें जो पुण्य स्थित है, महादान देनेमें जो पुण्य है, श्रीहरिकी पूजामे जो पुण्य है, पृथ्वीकी परिक्रमामें जो पुण्य है तथा समस्त सत्यवाक्योमे—शास्त्रीय वेद-वाक्योमे जो पुण्य है और मनुष्यको समस्त यज्ञोंमें यज्ञ-दीक्षा ग्रहण कर जो पुण्य अर्जित होता है—वे सभी पुण्य केवल गायोंको तृण खिलानेभरसे तत्क्षण ही मिल जाते हैं। यथा—

तीर्थस्थानेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्रभोजने।
सर्वव्रतोपवासेषु सर्वेष्वेव तपःसु च॥
यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने।
भुवः पर्यटने यत्तु सत्यवाक्येषु सर्वदा॥
यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु दीक्षया च लभेन्नरः।
तत्पुण्यं लभते सद्यो गोभ्यो दत्त्वा तृणानि च॥

गायें मेरे आगे हों, गायें मेरे पीछे हो, गायें मेरे हृदयमें स्थित रहें और गायोंके बीचमे ही मैं सदा निवास करूँ—

गावो मे ह्यग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

गोविन्दकी गाय

(दण्डी स्वामी श्री १०८ विपिनचन्द्रानन्द सरस्वतीजी 'जज स्वामी')

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

भगवान् श्रीकृष्णको गौ अत्यन्त प्रिय है। भगवान्ने गिरिराज धारण करके इन्द्रके कोपसे गोप-गोपी एव गायोंकी रक्षा की। अभिमान भंग होनेपर इन्द्र एवं कामधेनुने भगवान्को उपेन्द्र-पदपर अभिषिक्त किया और भगवान्को 'गोविन्द' नामसे विभूषित किया। गौ, ब्राह्मण तथा धर्मकी रक्षाके लिये ही भगवान् भूतलपर पधारते हैं—

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥
(रा० च० मा० १। १९२)

कृष्णलीलामे कुछ बड़े होते ही भगवान्ने गोवत्स-चारणके लिये यशोदा मैयासे आज्ञा मॉगी। मैयाने कहा—'बेटा! अभी तुम छोटे हो, पुरोहितजीसे मुहूर्त दिखायेगे, तब तुम जाना।' गोपाष्टमीपर मुहूर्त निकला। मैयाने प्रातःकालसे ही समस्त मङ्गल-कार्य किये और भगवान्को नहला-धुलाकर भलीभाँति सुसज्जित किया। सिरके ऊपर मोट-मुकुट, गलेमें माला तथा पीताम्बर धारण कराया। हाथमे बेंत तथा नरसिंहा दिया, फिर जब चरणोमे छोटी-छोटी जूतियॉ पहनाने लगीं, तब ठाकुरजी बोले—'मैया! मैं इनको नहीं पहनूँगा, यदि तू मेरी सारी गौओको जूती पहना दे तो मैं इनको पहन लूँगा, जब गैया धरतीपर नंगे पाँव चलेगी तो मै भी नगे पाँव जाऊँगा।' समस्त व्रजलीलामें भगवान्ने पदत्राण नहीं पहने, सिले हुए वस्त्र नहीं पहने और न कोई शस्त्र उठाया। फलस्वरूप भूदेवी भगवान्के नंगे पैरोको निष्कण्टक एवं कोमल स्पर्श ही प्रदान करती थीं और अपनेको सौभाग्यशालिनी मानती थीं।

भगवान्ने गोमाताकी रक्षाके लिये क्या-क्या नहीं किया। उन्हे दावानलसे बचाया, ब्रह्माजीसे छुड़ाकर लाये, इन्द्रके कोपसे रक्षा की। 'गोधनकी सौं' शपथ प्रचलित करायी। 'मणिधरः क्वचिदागणयन् गाः' वह अपने गलेमे पहनी हुई मणिमालाके मनकोसे गायोकी गिनती करके नन्दग्रामसे गोचारणके लिये चलते थे। वंशीकी ध्वनिसे प्रत्येक गायको नाम ले-लेकर पुकारते थे। समस्त गायें उनसे आत्मतुल्य प्रेम करती थीं।

श्रीमद्भागवतके अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण गायोंके समूहके पीछे-पीछे चलते थे। इस विषयपर हृदय-प्रदेशमें एक नया भाव समुद्भूत हुआ है, जो इस प्रकार है—गायोंसे एक भक्तने बातचीत की—

भक्त—गोमाता! तुम अपने इष्टदेवके आगे-आगे क्यो चलती हो? उनके तो पीछे-पीछे चलनेका विधान है।

गौ—आप भूल करते हैं। अधिष्ठान तो सदा पीछे ही रहता है।

भक्त—यह तो तुमने वेदान्तकी बात कह दी। चर्चा भक्त और भगवान्की है।

गौ—भगवान् मेरे इष्टदेव और संरक्षक हैं। भगवान्के द्वारा सुरक्षित एव संचालित हम सब अपने गन्तव्य स्थानपर बिना भय और संकोचके शीघ्र पहुँच जाती हैं तो मैया हमारा दूध निकालकर, उबालकर, शीघ्र लालाको पिला देती है। भगवान् यदि हमसे आगे चलेंगे तो हमको अपने विवेक-पुरुषार्थ एवं बलका प्रयोग करके उनका अनुगमन करना पड़ेगा, तब भय है कि हम कहीं मार्गमें पानी एव घास देखकर विचलित हो जायँ, परंतु उनके द्वारा हाँके जानेपर हम निष्कण्टक राजमार्गपर निर्भय चली जाती हैं।

भक्त—यह तो आप ठीक कहती हैं, परंतु आगे-आगे चलनेपर तुम भगवान्के रूप-माधुर्यके दर्शनसे तो वञ्चित रह जाती हो।

गौ—भक्तजी! आप बड़े भोले हैं, भगवान् जब पीछे चलते हैं तो कभी-कभी मेरी पीठपर हाथ लगा देते हैं। कभी बेंतसे मधुर स्पर्श कर देते हैं और हम अपना मुँह मोड़कर उनका दर्शन करके परमानन्दमें मग्न हो नेत्र बंद करके चलती रहती हैं। यदि भगवान् आगे चलेंगे तो हम उनके मुखारविन्दके दिव्य दर्शन और स्पर्श-सुखसे वंचित रह जायँगी। यदि भगवान्ने कभी गरदन मोड़कर हमारी

ओर देखा भी तो हमारे इष्ट प्रियतमको इसमें कितना श्रम होगा। यह विचारणीय है।

भक्त—तुम्हारे सौभाग्यकी बात तो अलौकिक है, परंतु तुम्हारा इस प्रकार चलना धर्म-विरुद्ध है। बड़ोंके आगे नहीं, पीछे चला जाता है।

गौ—धर्मशास्त्रके अनुसार मैं मुमूर्षु जीवोंको वैतरणी पार करा देती हूँ, वह मेरी पूँछ पकड़कर सरलतासे तर जाते हैं। मुझमें और मेरी पूँछमे यह शक्ति भगवान्‌के स्पर्शसे ही प्राप्त होती है।

भक्त—गोमाता! तुम्हारी बात तो अकाट्य है। फिर भी श्रेष्ठ पुरुषोंको अपना पृष्ठ-अङ्ग दिखाते हुए चलना अनुचित है।

गौ—शास्त्रानुसार मेरा गोबर और मूत्र पवित्र है, परंतु मेरा मुँह जूठा एवं अपवित्र है। अब बताओ कि मैं अपने इष्टकी ओर पवित्र अङ्ग करूँगी अथवा अपवित्र? (यह सुनकर भक्तका सिर श्रद्धासे झुक जाता है।)

भारतवर्षमें सनातनधर्मियोंका अधिदेववाद मौलिक सिद्धान्त है। जल, स्थल, नक्षत्र, दिशा, देश, पत्र, पुष्प आदि सबमें अधिदेवका वास बताया जाता है। वेद कहते हैं—

'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।'

भगवान् श्रीकृष्णने गीताके दसवें अध्यायमें अपनी विभूतियोंका सविस्तार वर्णन किया है। अतएव गङ्गा, गीता, गायत्री, गोविन्द एवं गौ हमारी संस्कृतिकी आधारशिलाके प्रतीक हैं। इस सम्बन्धमें एक यह कथानक है कि सृष्टि-रचनाके समय जब गौका निर्माण हुआ, तब उसे देखकर सब देवता उसके रोम-रोममे प्रविष्ट हो गये। लक्ष्मीजीको गौके गुह्य-स्थान और गोबरमें निवास मिला। इससे हमारे देशमें गोसेवा और गोदानका विशेष महत्त्व है। राजा दिलीपकी गोसेवा सुप्रसिद्ध है। सत्यकाम जाबालने गोसेवा करके ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त किया था। (छान्दोग्य-उपनिषद्)

एक कथामें वर्णन है कि एक ऋषि जलमें डुबकी लगाये समाधिस्थ पड़े थे। वे एक मछुवेके जालमें फँस गये। बाहर निकालनेपर उन्हें देख सभी भयभीत हो गये। सूचना मिलनेपर देशका राजा उपस्थित हुआ, उसने ऋषिकी पूजा एवं स्तुति की तथा सादर राज्यमें चलनेका आग्रह किया। ऋषिने कहा—इस मछुवेको मेरे बराबर तौलकर धन दे दो, तब हम चल सकते हैं। यह सुनकर राजाने ऋषिको तराजूके एक पलड़ेमें बिठाया और दूसरे पलड़ेमें वह प्रचुर धन-धान्य-सोना-चाँदी आदि रखता गया, परंतु वह सब हलका रहा और ऋषिके भारका पलड़ा भारी रहा। निराश होकर राजाने ऋषिसे ही समाधानकी प्रार्थना की। ऋषि बोले—यह सब हमारे बराबर नहीं हो सकते। अमूल्य धन होनेसे एक गौ अवश्य हमारे समान हो सकती है। तब राजाने प्रसन्न होकर मछुवेको धन-धान्यसहित एक गौ देकर संतुष्ट किया और ऋषिको अत्यन्त आदरपूर्वक अपने राजभवनमें ले गया।

गौके प्रति आध्यात्मिक दृष्टिके अतिरिक्त एक लौकिक एवं आर्थिक दृष्टि भी है। भारतवर्ष एक कृषि-प्रधान देश रहा है। यहाँपर बैलोंसे खेती होती थी और गायके दूध, दही, घी, मक्खन,मट्ठेसे समस्त प्राणियोंका पोषण होता था। गोबरमें मिट्टी आदि मिलाकर मकानोंपर पलस्तर एवं फर्शकी सफाई की जाती थी। गोमूत्रसे संजीवनी-बटी आदि आयुर्वेदिक ओषधियाँ बनायी जाती हैं।

आजकल भारतमें बड़े-बड़े उद्योग-धंधोंका प्रचलन है। अतः इस समय तो गायका पालना एवं उसके दूध, दही, घी आदिका प्रयोग करना देशवासियोंके लिये अत्यन्त हितकारी तथा आवश्यक है। विदेशोंमें जहाँ गोमांस खानेकी सामान्य रीति है, वहाँ भी गोपालन एवं उसके दूधके संरक्षणपर स्वास्थ्य, आर्थिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिसे पर्याप्त ध्यान दिया जाता है, जबकि अपने देशमें उसके आध्यात्मिक दृष्टिकोणको छोड़, उससे लौकिक लाभ प्राप्त करनेकी भी उपेक्षा हो रही है।

भारतवर्षमें नगरोमे गाय रखना आज सचमुच एक समस्या बन गयी है। गायके चारे एवं भूमिकी कमी है। इसकी उचित व्यवस्था होना आवश्यक है। नगरसे बाहर अच्छी-अच्छी गौशालाओंकी स्थापनाका प्रबन्ध किया जाना चाहिये। वहाँ अच्छी नस्लकी गाय और बछड़े पैदा कराये जायँ। गायोंको पर्याप्त दाना-चारा मिले। उनकी स्वच्छता,

सेवा और चिकित्साकी उचित व्यवस्था हो। नगरके जो लोग गाय पालना चाहें, वे अपनी गाय गौशालामें रख दे और उनके पालनका खर्चा दें। इन दूध देनेवाली गायोंके अतिरिक्त एक ऐसा अन्य विभाग भी होना चाहिये, जहाँ लूली, लँगड़ी, अपाहिज, बूढ़ी गायें रह सके और उनपर होनेवाला खर्च दानी-मानी सज्जनोंसे प्राप्त किया जाय। वर्तमान भारतीय संविधानकी धारा ४८ में गोसंवर्धनकी आज्ञा निर्धारित है। उसका पालन उत्साहपूर्वक किया जाना चाहिये।

दुर्भाग्यकी बात है कि देशवासियोकी कथनी और करनीमें बहुत अन्तर आ गया है। हम 'गोमाताकी जय' के नारे जोरसे लगाते हैं, परंतु क्रिया करते समय अपने धर्म, सत्य और कर्तव्यको भूल जाते हैं। एक छोटा-सा उदाहरण देते हैं—

सन् १९८१ में हमको काशीमे कुछ लंबे समयतक रहनेका अवसर मिला। उन दिनो श्रद्धेय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी भूतलपर विराजमान थे। उनके दर्शनके लिये हम रिक्शेमे बैठकर केदारघाट जा रहे थे। एक गाय रास्तेमे बैठी थी, जब वह रिक्शाकी घंटी बजानेसे नहीं उठी तो रिक्शेवालेने पैरसे मारकर उसे उठा दिया। यह देखकर पासके दूकानदारोंने हल्ला किया, हाय-हाय गौके लात मारता है। इस घटनासे हमारे चित्तपर बड़ा प्रभाव पड़ा कि काशी हिन्दू-संस्कृतिका गढ़ है, देखो! यहाँ गौका कितना सम्मान है। दो-चार दिन पीछे हमे दशाश्वमेध-घाटकी सब्जी-मंडीमे जानेका अवसर मिला तो वहाँ देखा—एक गाय किसी दूकानदारकी गोभीका फूल उठाकर ले जा रही थी तो दूकानदारने लाठी मारकर उससे अपना फूल छीन लिया। यह देखकर हमको विचार हुआ कि लोग समझते हैं कि गायको पैर लगाना पाप है, पर उसे लाठीसे मारना पाप नहीं है। गोवध होना अवश्य आपत्तिजनक है, परंतु गायके द्वारा हमारे गोभीके फूलका खाया जाना उससे भी अधिक कष्टदायक है। अतएव हमारी गायें जबतक गली-कूचोमें मल खाती हुई और दूकानदारोंद्वारा प्रताड़ित होकर घूमती हैं, तबतक उनकी केवल जय-जयकार करना निरर्थक है। जो लोग उनके दूधका उपयोग कर उन्हें खानेके लिये सडकपर खुला छोड़ देते हैं, तो उनकी गोसेवा विडम्बना नहीं तो क्या है।

हमारी संस्कृतिमे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चार पुरुषार्थ है। शास्त्रका आदेश है कि पुरुषार्थ काम और अर्थ, धर्म-नियन्त्रित हो तथा धर्म मोक्षोन्मुख हो, परन्तु आजकल प्रायः अर्थ-नियन्त्रित धर्म तथा कामोन्मुख मोक्ष देखनेमें आता है। अर्थलाभ अथवा यशलाभके लिये धर्म-कार्यमे प्रवृत्ति होती है, एव मोक्षके साधन ज्ञान और भक्तिका विनियोग प्रायः कामकी पूर्तिमे ही किया जाता है। अतएव गोसेवाका धार्मिक प्रश्न आर्थिक दृष्टिको सम्मुख रखकर हल करना आवश्यक है। उदाहरणार्थ, हमारा एक परिचित किसान था। वह बैलसे खेती करता था। उसका एक बैल बूढा हो गया। उस बूढे बैलका मूल्य दूसरा किसान ढाई सौ रुपये देता था, जबकि उसी बैलकी कीमत चार सौ रुपये देकर एक कसाई खरीदना चाहता था। ऐसी परिस्थितिमे उस किसानके सामने बडा धर्मसंकट उपस्थित हुआ। बात हमारे पास आयी तो हमने कहा कि तुम वह बैल कसाईको मत बेचो। ढाई सौ रुपयेमे ही दूसर किसानको दे दो, शेष एक सौ पचास रुपये हमसे सहायतारूपमें लेकर अपना धर्म और अर्थ दोनो ही साधो। उसने ऐसा ही किया, परंतु यह समस्या एक-दो व्यक्तियोंकी ही नहीं है, सारे देशकी है। जो व्यक्तिगत सद्भावनासे हल नहीं की जा सकती। इस विषयपर गम्भीरतासे विचार करनेकी आवश्यकता है। देशके धर्म और संस्कृतिके सरक्षको, मनीषियो एवं विशेषकर गोविन्दके भक्तोंको विचार करके ऐसा मार्ग प्रशस्त करना चाहिये, ऐसी शुभ योजना बनाकर जनताके सामने रखनी चाहिये, जिससे गोसेवाके लिये उत्साह बढ़े और उसके द्वारा धर्म और अर्थ दोनो पुरुषार्थोंकी सिद्धि सहजमे ही सुलभ हो सके, तभी गोविन्दकी गायकी सेवा भगवान्की प्रसन्नताकी हेतु बन सकेगी।

———※※※———

गौकी तात्त्विक मीमांसा और गो-संरक्षणकी महत्ता

(अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्द सरस्वतीजी महाराज)

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

(महाभारत, अनुशा० ८०। ३)

'गो' शब्द गाय, पृथ्वी, सरस्वती, सूर्य तथा सूर्यरश्मिके अर्थमें प्रयुक्त है।

तुल्यनामानि देयानि त्रीणि तुल्यफलानि च।
सर्वकामफलानीह गावः पृथ्वी सरस्वती॥

(महाभा०, अनु० ६९। ४)

'गाय, भूमि और सरस्वती—ये तीनो समान नामवाली हैं—इन तीनोंका दान करना चाहिये। इन तीनोके दानका फल भी समान ही है। ये तीनो वस्तुएँ मनुष्योंकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करनेवाली हैं।'

प्राप्त्या पुष्ट्या लोकसंरक्षणेन
गावस्तुल्याः सूर्यपादैः पृथिव्याम्।
शब्दश्चैक. संततिश्चोपभोगा-
स्तस्माद् गोदः सूर्य इवावभाति॥

(महाभा०, अनु० ७१। ५४)

'प्राप्ति, पुष्टि तथा लोकरक्षा करनेके कारण गौएँ इस पृथ्वीपर सूर्यकी किरणोंके समान मानी गयी हैं। एक ही 'गो' शब्द धेनु और सूर्य-किरणोंका बोधक है। गौओंसे संतति और उपभोग प्राप्त होते हैं; अतः गोदान करनेवाला मनुष्य किरणोंका दान करनेवाले सूर्यके ही समान समझा जाता है।'

'गौरिति पृथिव्या नामधेयम्', 'आदित्योऽपि गौरुच्यते'

(निरुक्त २। २)

इसी प्रकार चन्द्र, स्वर्ग, दिशा, जल, नव (९) संख्या, वृषभ, माता और इन्द्रादि चौवीस अर्थोमें 'गो' शब्द प्रयुक्त है। निरुक्त (३। ९) के अनुसार उक्षा (सेक्ता-सींचनेवाला, सोम), वशा (आदित्यरश्मियोंका प्रकार-विशेष), मही (पृथ्वी) आदि 'गो' शब्दके विविध अर्थ हैं।

'पृथ्वी' सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वरकी सत्प्रधान अभिव्यक्ति है। 'सूर्य' उसकी चित्प्रधान अभिव्यक्ति है। 'चन्द्र' उसकी आनन्दप्रधान अभिव्यक्ति है। गोवंशमें परमेश्वरकी त्रिविध शक्तियोंका संनिवेश है। गौ 'स्वर्ग'-तुल्य सुखप्रद है। गोरस आदिके द्वारा यह सबको सुख देती हैं। गोसेवा और गोदानके फलस्वरूप मिलनेवाले आभूत-सम्प्लव जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक और गोलोकरूप अक्षय्य लोकोकी प्रतिष्ठा गौके रोम-रोममें है—

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।

(महाभा०, अनु० ५१। ३३)

रोम्णि रोम्णि महाभाग लोकाश्चास्याऽक्षयाः स्मृताः।

(महाभा०, अनु० ७३। ३६)

गो-सेवाके फलस्वरूप प्राची-प्रतीची आदि दसों दिशाओंमें गोसेवककी कीर्ति फैलती है तथा दिशाओंका आधिपत्य प्राप्त होता है। इससे परिलक्षित होता है कि गौमे दसो दिशाओंकी प्रतिष्ठा है। 'जल' जीवन है। 'जल' रस है। गोमूत्र सर्वजलोमे श्रेष्ठ है। गोरस सर्वरसोंमें श्रेष्ठ है। गोरस यज्ञमे प्रयुक्त होकर पर्जन्य बनकर जन-जीवन सिद्ध करता है।

गौएँ ही सर्वोत्तम अन्नकी प्राप्तिमें कारण हैं। वे ही देवताओंको उत्तम हविष्य प्रदान करती हैं। स्वाहाकार (देवयज्ञ) और वषट्कार (इन्द्रयाग)—ये दोनों कर्म सदा गौओपर ही निर्भर हैं।

निःसंदेह गौएँ यज्ञफलरूपा है। उन्हींमे यज्ञोकी प्रतिष्ठा है। गौएँ ही भूत और भविष्य हैं। उन्हींकी रक्षा, प्रतिष्ठा और सेवाके अनुसार भूत और भविष्यकी सिद्धि है। उन्हींमें यज्ञ प्रतिष्ठित है—वे स्वयं यज्ञस्वरूपा हैं।

अन्नं हि परमं गावो देवानां परमं हविः।
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ॥
गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः।
गावो भविष्यं भूतं च गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः॥

(महाभा०, अनुशा० ७८। ७-८)

गोभक्तोको धनदकी नव निधियोंका स्वामित्व सुलभ होता है। सेवकके प्रति वात्सल्यसम्पन्न होनेके कारण तथा मातृवत् दुग्धपानसे सुपुष्ट करनेवाली होनेके कारण गौ 'माता' है।

'गो'शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनोंमें प्रयुक्त होता है। 'गो' गायरूपसे विष्णुपत्नी भूदेवीका आधिदैविक रूप

होनेसे प्रतिष्ठा है और माता है। 'गो' वृषभरूपसे धर्मका आधिदैविक रूप होनेसे विश्वकी प्रतिष्ठा है और वह सबका पिता है।

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।
वृद्धिमाकांक्षता नित्यं गावः कार्याः प्रदक्षिणाः॥

(महाभा०, अनुशा० ६९। ७)

गौर्मे माता वृषभ पिता मे दिवं शर्म जगती मे प्रतिष्ठा।

(महाभा०, अनुशा० ७६। ७)

गौएँ सम्पूर्ण प्राणियोकी माता हैं। वे सबको सुख देनेवाली हैं। जो अपने अभ्युदयकी इच्छा रखता हो, उसे गौओको सदा दाहिने करके चलना चाहिये।

गौएँ मेरी माता हैं। वृषभ (बैल) मेरे पिता हैं। वे दोनो मुझे स्वर्गसुख तथा ऐहिक सुख प्रदान करे। गौएँ ही मेरा आधार हैं।

गो-सेवा और गोरस-सेवनसे प्रज्ञाशक्ति और प्राणशक्ति पुष्ट होती है। इन्द्रियोमें अनुपम बलका सचार होता है। जैसे इन्द्रियोंको प्रयोक्ता, प्रेरक और प्रकाशक जीवेश्वरकी अपेक्षा है, वैसे ही गौओको गोपालकी अपेक्षा है। इन्द्रियोसे प्रत्यक्, प्रत्यगात्मा और अन्तरात्मा रहते हुए जैसे इन्द्रियोके प्रयोक्ता, प्रेरक और प्रकाशक जीवेश्वर होते हैं, वैसे ही गायोके पीछे रहते हुए गोपाल उनके प्रयोक्ता, प्रेरक और प्रकाशक होते हैं। इन्द्रियाँ जैसे अनुग्राहक देवोंसे अधिष्ठित होनेसे देवमयी होती है, वैसे ही गौएँ प्रत्यङ्गमें प्रतिष्ठित अनुग्राहक देवोंसे अधिष्ठित होनेसे देवमयी हैं—

शृङ्गमूले स्थितो ब्रह्मा शृङ्गमध्ये तु केशवः।
× × ×
सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौः॥

(बृहत्पराशरस्मृति ३। ३२, ३५)

'गो' पद 'वाक्' और वाग्देवी सरस्वतीके अर्थमे भी विनियुक्त है। गोघृत आदि गोरससे वागिन्द्रियका पोषण होता है। इस दृष्टिसे गोकी वाग्रूपता सिद्ध है। ब्रह्मविद्याकी अधिष्ठात्री होनेसे सरस्वती वाग्देवी हैं। ब्रह्माणी होनेसे सरस्वती बुद्धिकी अधिष्ठात्री हैं। गोरस-सेवनसे सत्त्वगुण उद्दीप्त होता है। सत्त्वोद्रेकके कारण बुद्धि विशद होती है। इस दृष्टिसे गोकी 'सरस्वती' संज्ञा है:

'गो' पद जहाँ वागर्थमें प्रयुक्त होता है, वहाँ चन्द्र-अर्थमें भी 'गो' की वाग्रूपता सिद्ध की जा चुकी है। रसात्मक सोमकी ओषधि (अन्न)-रूपता वेद और व्यवहार-सिद्ध है। 'गो' की यज्ञरूपता, यज्ञकी पर्जन्यरूपता और पर्जन्यकी अन्नरूपताके कारण 'गो' की अन्नरूपता है। गोरस साक्षात् सोमरस और अन्न है।

यज्ञैरवाप्यते सोमः स च गोषु प्रतिष्ठितः।

(महाभा०, अनुशा० ७७। १४)

उक्त रीतिसे 'गो' की अन्नरूपता और चन्द्ररूपता सिद्ध है। वाक्से निष्पन्न पद 'नाम' है। मनके अनुग्राहक देव चन्द्र हैं। मनसे निष्पन्न पदार्थ रूप है। नाम और रूप अधिभूत हैं। आधिभौतिक रीतिसे जगत् नाम-रूपात्मक है। वाक् और मन—अध्यात्म हैं। आध्यात्मिक रीतिसे जगत् वाङ्मय और मनोमय है। वाक्के अनुग्राहक देव अग्नि हैं। आधिदैविक रीतिसे जगत् अग्नि-सोमात्मक है। इस प्रकार 'गो' की विश्वरूपता सिद्ध है। इसी अभिप्रायसे 'गो' को विश्वकी प्रतिष्ठा कहा गया है—

'गर्भोऽमृतस्य जगतोऽस्य प्रतिष्ठा।'

(महाभा०, अनुशा० ७६। १०)

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत्॥

(महाभा०, अनुशा० ७८। ५)

'एतद्वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्'

(अथर्व० ९। ७। १। २५)

'गो' शब्द आत्मार्थक भी है। 'दुहन्ति सप्तैकाम्' (ऋग्वेद ८। ७२। ७)। 'आत्मबुद्धिसे गोदान करनेवाला गोदानका अक्षय्य फल प्राप्त करता है।'

या वै यूयं सोऽहमद्यैव भावो
युष्मान् दत्त्वा चाहमात्मप्रदाता।

(महाभा०, अनुशा० ७६। १३)

आत्मा सच्चिदानन्द हैं। यह अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमयको सत्ता (अस्तित्व), चित्ता (चेतना) और प्रियता (आनन्द) प्रदायक हैं। अभिप्राय यह है कि अन्नमयादिकोश आत्माकी सत्ता, चिति और प्रियताके अभिव्यञ्जक हैं। गौएँ गोरसप्रद होकर अन्नमयादिकी पोषक हैं। तैत्तिरीयोपनिषद्में परोवरीयक्रमसे (उत्तरोत्तर उत्कृष्टक्रमसे) अन्नमयादिकी आत्मरूपताका

उल्लेख है। आत्माभिव्यञ्जक अन्नमयादिकी अभिव्यञ्जक होनेसे 'गो' आत्मा है।

'गो' नाम 'ओम्'-तुल्य स्मरण करने योग्य है। दोनोंका अर्थ भी तुल्य ही है। ग्+अ+उ=गो। अ+उ+म्=ओम्। गो और ओम्में 'अ', 'उ'के योगसे निष्पन्न ओकी एकरूपता है। ओङ्कारगत 'म्' के स्थानपर गोपदमें गकार है। प्रणवगत 'अ' का अर्थ 'वैश्वानर', 'उ' का अर्थ 'हिरण्यगर्भ' और 'म्' का अर्थ प्राज्ञेश्वर है। 'गो' गत 'अ' का अर्थ वैश्वानर और 'उ' का अर्थ हिरण्यगर्भ है। 'ग्' का अर्थ गणेश और शेष रहनेवाला अर्थात् शेष है। प्रलयमे शेष रहनेके कारण उपनिषदोने गणेशको अव्याकृत-संज्ञक 'प्राज्ञेश' माना है—

अनिर्वाच्योऽप्रमेयः पुरातनो गणेशो निगद्यते।
स आद्यः सोऽक्षरः सोऽनन्तः सोऽव्ययो महान् पुरुषः॥

(गणेशोत्तरतापिन्युपनिषद् २। ४)

अनिर्वचनीया सैव माया जगद्बीजमित्याह।
सैव प्रकृतिरिति गणेश इति प्रधानमिति च मायाशबलमिति च॥

(गणेशोत्तर० ४। २)

प्रणवगत मकारके स्थानपर गकारका तथा तृतीयत्वके स्थानपर प्रथमत्वका व्यत्यास 'गो' नामके संकीर्तन, जप और स्मरणादिकी सर्वसुलभताके अभिप्रायसे है।

गाय सूर्य-चन्द्रके अंशसे प्रादुर्भूत है तथा प्रजापतिकी पुत्री है—**'प्राजापत्याः', 'सौर्यास्तथा सौम्याः'** (महा०, अनु० ७६। १०-११)। 'सूर्य' अग्निरूपसे भोक्ता है। 'चन्द्र' अन्नरूपसे भोग्य है। 'गो' चेतन होनेसे भोक्ता है और गोरसरूपसे भोग्य है।

'गच्छत्यनेन' के अनुसार 'गो' नाम अन्वर्थक है। गायको घूमना बहुत ही प्रिय है। गोष्ठ, गोष्ठी, वात्सल्यादि शब्द गोमहिमाके द्योतक हैं। दृतिकण्ठ और ककुद्पृष्ठ (गलकम्बल-लड़ली और कूबड़से युक्त) सुपुष्ट गायोंको सुपात्रके प्रति सविधि देनेका अद्भुत माहात्म्य है। मरणासन्न व्यक्तिके निमित्त गोदान उसे वैतरणी (भवसिन्धु) से तारनेवाला माना गया है।

ध्यान रहे, विश्वमें परम्परासे गोमांस-सेवन करनेवाली यवनादि जितनी भी जातियाँ हैं, उनके पूर्वज श्रीवसिष्ठजीकी नन्दिनी नामक गौके श्रीविग्रहसे विश्वामित्रके चंगुलसे नन्दिनीकी रक्षाके लिये उसके संकल्पसे उत्पन्न किये गये थे।

इस भौतिकवादी युगमे व्यक्तिका माता, पिता, गुरु, पुत्र और शिष्यादिसे भी सम्बन्ध शिथिल होता जा रहा है। उपयोगिताके आधारपर ही व्यक्ति किसीसे सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। यद्यपि भगवान्ने गौको यावज्जीवन और मरणोपरान्त भी उपयोगी बनाकर भेजा है, परंतु वह उपयोगिता भौतिकवादियोंके गले उतरे, इसके लिये प्रयास अपेक्षित है। ईश्वरीय मङ्गलमय विधानमे संस्कारसे वस्तु और व्यक्तिकी उपयोगिता बढ़ानेका पथ भी प्रशस्त है। ऐसी स्थितिमे बिहार, बंगाल, उडीसा आदिकी गायोंको देशी उत्तम कोटिके साँडोके द्वारा उन्नत करना आवश्यक है। ट्रैक्टर, भैंसा और ऊँट आदिने बैलोकी उपयोगिता क्षीण कर दी है। अडा आदि दूषित पदार्थ, जरसी गाय, भैस और बकरी आदिने गायोकी उपयोगिता क्षीण कर दी है। साथ ही गोचरभूमिकी अल्पता, महँगाईकी प्रबलता और गोभक्षकोसे प्राप्त प्रलोभनकी प्रचुरता तथा शहरकी स्वच्छता आदिके नामपर एवं गोपालनमें प्रतिबन्धता आदिके कारण भी गोसेवा और रक्षामें न्यूनता छाती जा रही है। ऐसी स्थितिमें प्रत्येक तहसीलमे धनी-मानी गोभक्तोंके सहयोगसे एक गोशाला गोवंशको उन्नत करने तथा यावज्जीवन उनकी उपयोगिता सिद्ध करनेकी भावनासे खोलनेकी आवश्यकता है और दूसरी रुग्ण, घायल, अङ्गहीन और वृद्ध होनेके कारण अनुपयोगी समझे जानेवाले गाय, बैल, बछिया, बछड़े आदिकी सेवाकी दृष्टिसे खोलनेकी आवश्यकता है तथा सुचारुरूपसे इनके संचालनकी आवश्यकता है। अराजक और शोषक तत्त्वोंसे इन गोशालाओंको सुरक्षित रखनेकी आवश्यकता तो है ही। परलोकमे आस्था अभिव्यक्त करनेवाले तथा देहनाशसे आत्माके अनाशको युक्तियुक्त ढंगसे सिद्ध करनेवाले ग्रन्थोंकी रचना और उनके प्रचार-प्रसारकी आवश्यकता है। जिनके अभावमें हर हिंदू नास्तिकताके ताण्डवनृत्यका ग्रास हो रहा है।

भारत स्वतन्त्र है, फिर भी दिन-प्रति-दिन गोहत्या बढ रही है। जब गोवंश ही शेष नही रहेगा, तब 'गोहत्या बंद हो' यह घोष भी व्यर्थ ही सिद्ध होगा। यदि केवल गोहत्यारे विधर्मियोंका गोहत्यामें हाथ हो तो उन्हे कठोरतम दण्ड दिया जाय। यदि केवल सरकार गोहत्यारी

हो तो उसे रसातलमें पहुँचा दिया जाय। यदि गोरक्षक और गोपूजक हिंदू गोहत्यारे हो तो उन्हे भी कठोरतम दण्ड दिया जाय। परतु जब तीनो ही गोहत्यारे हों तो कौन किसको दण्ड दे।

ध्यान रहे, विदेशी दुर्नीति, सरकारकी तुष्टीकरणकी रीति और व्यापारियोंकी अर्थलोलुपतासे भरी हुई दृष्टि—इन तीनों हेतुओंसे भारतमे गोहत्या हो रही है। गो, द्विज, सुर, सत और भूदेवीका हृदय भारतपर संकटकी स्थिति जिन राजनेताओके द्वारा उत्पन्न की जा रही है, उन्हें सावधान रहना चाहिये, इन्हींकी रक्षाके लिये भगवान् अवतरित होते हैं, ऐसा ध्यान रखना चाहिये।

गाय 'अघ्न्या' है। इसका वध सर्वथा अनुचित है।

अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति।
महच्चकाराकुशलं वृषं गां वाऽऽलभेत् तु यः॥

(महाभा०, शान्ति० २६२। ४७)

'श्रुतिमें गौओको अघ्न्या (अवध्य) कहा गया है। ऐसी स्थितिमें कौन उन्हें मारनेका विचार करेगा? जो पुरुष गाय और बैलोको मारता है, वह महान् पाप करता है।'

हिन्दुओंके कर्णधार कहे जानेवाले अधिकांश राजनेता ही हिंदुओके सर्वनाशमे और शेष देशको भी खण्ड-खण्ड करनेमे तुले हैं। जब रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं, मार्गदर्शक ही भटक और भटका रहे हैं, तब क्या किया जाय। जब नरहत्या अवैध होनेपर भी नर गाजर-मूलीकी तरह आये दिन काटे जाते हैं, तव आंशिकरूपसे वध गोवध कैसे बद किया जाय।

इस सदर्भमे यथाशीघ्र प्रभावशाली और सफल कार्यक्रम प्रस्तुत करनेकी आवश्यकता है।

ऊर्जस्विन्य ऊर्जमेधाश्च यज्ञे
गर्भोऽमृतस्य जगतोऽस्य प्रतिष्ठा।
क्षिते रोह. प्रवहः शश्वदेव
प्राजापत्याः सर्वमित्यर्थवादा॥
गावो ममैनः प्रणुदन्तु सौर्या-
स्तथा सौम्या· स्वर्गयानाय सन्तु।
आत्मानं मे मातृवच्चाश्रयन्तु
तथानुक्ताः सन्तु सर्वाशिषो मे॥

(महाभा०, अनुशा० ७६। १०-११)

'गौएँ उत्साहसम्पन्न, शक्ति और बुद्धिसे युक्त, यज्ञमें प्रयुक्त होनेवाले अमृत-स्वरूप हविष्यके उत्पत्तिस्थान, इस जगत्की प्रतिष्ठा (आश्रय), पृथ्वीपर बैलोंके द्वारा खेती उपजानेवाली, ससारके अनादि प्रवाहको प्रवृत्त करनेवाली और प्रजापतिकी पुत्री हैं। यह सब गौओकी प्रशसा है।

सूर्य और चन्द्रमाके अशसे प्रकट हुई वे गाएँ हमार पापोका नाश करे। हमे स्वर्गादि उत्तम लोकोकी प्राप्तिमे सहायता दे। माताकी भाँति शरण प्रदान करें। जिन इच्छाओका इन मन्त्रोद्वारा उल्लेख नहीं हुआ है और जिनका हुआ है, वे सभी गोमाताकी कृपासे पूर्ण हों।'

पूज्या गोमाता साक्षात् श्रीनारायण हैं

(माध्वगौडेश्वराचार्य गोसेवी श्रीअतुलकृष्णजी महाराज)

पूज्या गोमाता कोई साधारण पशु नहीं है। गोमाताएँ हमारी पूज्या और प्रातःस्मरणीया हैं। ये जगदम्बा है। श्रीकृष्ण परब्रह्म भी पूज्या गोमाताको अपनी पूज्या माता मानकर अपने हाथोंसे उनकी सेवा करते है, पूजा करते हैं, आरती करते हैं और उन्हें अपने प्राणोसे भी प्यारी मानते हैं। गोरक्षा करनेके लिये ही निराकार परब्रह्म श्रीकृष्णके रूपमे प्रकट होते हैं। पूज्या गोमाता साक्षात् श्रीनारायण है। इनमे तथा श्रीनारायणमे कोई अन्तर नहीं है। जो श्रीनारायण हैं वही साक्षात् पूज्या गोमाता हैं। आज जो इस ऋषि-मुनियोके देश धर्मप्राण भारतमे नित्यप्रति हजारो-लाखोंकी संख्यामे गोमाताएँ धडाधड़ काटी जा रही है, यह इस प्रकारसे वड़ा भारी घोर पाप किया जा रहा है। इस गोहत्यासे वढकर और कोई दूसरा घोर पाप नहीं है।

याद रखो, यह पूज्या गोमाता जो आज इस धर्मप्राण भारत देशमे धडाधड़ काटी जा रही हैं यह गोमाता नहीं काटी जा रही हैं अपितु यह तो साक्षात् श्रीनारायण

निरन्तर छुरी चल रही है और एक प्रकारसे यह साक्षात् हमारे श्रीनारायण ही काटे जा रहे हैं। पूज्या गोमाताओंको आर्थिक दृष्टिसे देखना और बूढ़ी, लँगड़ी-लूली, अपाहिज तथा अनुपयोगी आदि बताकर इन्हें काटनेकी बातें करना और काटनेकी सलाह देना तथा इनके काटनेका किसी भी प्रकारसे समर्थन करना—यह तो एक बड़ा ही घोर पाप है और यह अक्षम्य अपराध है। हमारे पूज्य साक्षात् भगवान् श्रीवेदने पूज्या गोमाताकी बड़ी भारी स्तुति की है। वेदोंमे इन्हें अघ्न्या बताया गया है—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय
मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥
(ऋ० ८। १०१। १५)

जिस पूज्या गोमाताकी साक्षात् वेद भगवान् स्तुति कर रहे हैं और गुणगान कर रहे हैं तथा जिसे 'अघ्न्या' बता रहे हैं वह पूज्या गाय क्या कोई साधारण पशु है। यदि पूज्या गोमाता साक्षात् श्रीनारायण नहीं होतीं तो क्या हमारे साक्षात् वेद भगवान् कभी गायकी इस प्रकारसे स्तुति करते? हमारे भगवान् श्रीवेदने तो पूज्या गोमाताकी हत्या करनेवाले पापात्माको प्राणदण्ड देनेका आदेश दिया है—

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥
(अथर्ववेद १। १६। ४)

'गोहत्यारोको सीसेकी गोलीसे मार देना चाहिये' ऐसा वेद भगवान्ने आदेश दिया है।

जबतक हमारी पूज्या गोमाताकी इस देशमे हत्या होती रहेगी, तबतक भला इस देशमें सुख-शान्तिकी क्या आशा? जिस देशमें, जिस भूमिमे पूज्या गोमाताके रक्तका एक बिन्दु भी गिरता है, उस भूमिमें किये गये योग, यज्ञ, जप तप, दान, पुण्य, भजन-पूजन आदि सब-के-सब शुभ कर्म व्यर्थ हो जाते हैं और निष्फल हो जाते हैं। यदि देशमें सुख-शान्ति चाहते हो तो इस गोहत्याके काले कलंकको अविलम्ब बंद करानेका भरसक प्रयत करो।

गायकी रक्षाके लिये ही साक्षात् अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परमात्मा गोविन्दके रूपमें प्रकट हुआ करते हैं।

गोदुग्धकी विलक्षण महिमा

याद रखो, पूज्या गोमाताका दुग्ध कोई अन्य पशुओंके दूधकी भाँति साधारण दुग्ध नहीं है। गोदुग्धकी बड़ी अद्भुत विलक्षण महिमा है। गोदुग्ध साक्षात् अमृत है, इसमें तनिक भी संदेह करनेकी आवश्यकता नहीं है। आप भले ही कितने ही कालोंतक खूब योग करें, साधना करें और नाना प्रकारकी घोर तपस्या करें इनमें आपको सफलता मिले या न मिले संदेह हो सकता है, पर यदि आप यह सब योग-साधना, तपस्या आदि कुछ भी न करें बस खाली ६ महीनेतक श्रद्धा-भक्तिपूर्वक नित्यप्रति पूज्या गोमाताकी अपने हाथोंसे सेवा कर गोमाताका गोदुग्ध-पान करें तो आपको गोदुग्धके अमृत-पान करनेसे स्वतः ही समाधि लगने लगेगी। यह गोदुग्ध-पान करनेकी अद्भुत विशेषता है। गोदुग्धमें यह दिव्य गुण है और गोदुग्धकी ऐसी अद्भुत विलक्षण महिमा है।

आजके बहुतसे भारतीय हिन्दू अपनी पूज्या प्रातः-स्मरणीया गोमाताकी और उसके दुग्धकी अद्भुत विलक्षण महिमाको भुलाकर, अमृतके समान उस गोदुग्धको छोड़कर भैंस-बकरीके दुग्धको महत्त्व दे रहे हैं, पी रहे हैं तथा डिब्बेका दूध पी रहे हैं और चायकी चुसकी ले रहे हैं, यह हमारे घोर अधःपतनका प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं तो और क्या है। जिस गोमाताके परम पवित्र अमृतके समान गोदुग्धका पान करनेसे अनेक प्रकारके रोग-शोक स्वतः ही शान्त हो जाते हैं और जिस गोमाताके गोदुग्धके पान करनेसे अनायास ही समाधि लगने लगती है तथा प्राणीकी बुद्धि सात्त्विक और निर्मल होकर प्रभु-भजनमें संलग्न होने लगती है, लोक-परलोक दोनो बन जाते हैं, उसी गोमाताको काटकर आज उनके गोमांसके डिब्बे विदेशोंको भेज-भेजकर डालर कमाये जा रहे हैं और उस रुपयेसे देशोन्नतिका स्वप्न देखा जा रहा है यह कैसे आश्चर्यकी और कैसे घोर दुःखकी बात है?

गोवध-वारण हमारा पवित्र कर्तव्य है

(अनन्तश्रीविभूषित ऊर्ध्वाम्नाय श्रीकाशी-सुमेरुपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीचिन्मयानन्द सरस्वतीजी महाराज)

'गो' का अर्थ गाय, पृथ्वी, इन्द्रिय, किरण तथा रत्न आदि होता है। पृथ्वीको धारण करनेवाली विप्र, वेद, सती आदि सात वस्तुओंमें गौका उल्लेख सर्वप्रथम है। अघ्न्या, रोहिणी, माहेन्द्री, इज्या, कल्याणी, दोग्ध्री, शतौदना, घटोध्नी, पावनी, बहुला, भद्रा, अदिति, जगती, इन्द्राणी, अर्च्या, ज्योतिः, कामदुघा, विश्रुता, चन्द्रा, वशा, पर्जन्यपत्नी, आतिथेयी, यज्ञपदी, विश्वायुः, सावित्री, सरस्वती आदि गौके प्रसिद्ध पर्याय हैं।

'गौ' का यौगिक अर्थ गतिशील है—'गच्छति इति गौः'—जो चलती है—गतिशील है, वह गौ है। सम्पूर्ण संसार गतिशील होनेसे गोरूप है। विश्वकी आध्यात्मिकी और आधिदैविकी अभिव्यक्ति गौ है। इसकी रक्षासे विश्वरक्षा और इसकी हत्यासे विश्वहत्या सुनिश्चित है। गोरस आदिसे विश्वका पोषण करनेवाली गौकी जहाँ लौकिक उपयोगिता है, वहाँ गोसेवा, गोदान और गोरक्षा आदिके फलस्वरूप गोलोक आदिको देनेवाली गौकी पारलौकिक उपयोगिता भी शास्त्रसिद्ध है।

'एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्' (अथर्ववेद, शौनकसंहिता ९। ७। १। २५) के अनुसार गौ विश्वरूप—सर्वरूप है। उपनिषदोमे त्रिगुणको धेनु, गोमयको विद्या, गोमूत्रको उपनिषद् और वत्सको स्मृति माना गया है—

विद्याशक्तिः समस्तानां शक्तिरित्यभिधीयते।
गुणत्रयाश्रया विद्या सा विद्या च तदाश्रया॥
गुणत्रयमिदं धेनुर्विद्याभूद् गोमयं शुभम्।
मूत्रं चोपनिषत्प्रोक्तं कुर्याद् भस्म ततः परम्॥
वत्सस्तु स्मृतयश्चास्य तत्सम्भूत तु गोमयम्।

(बृहज्जाबालोपनिषद् ३। १—३)

आर्यभूमि, सनातनभूमि, हिन्दुभूमि, वैदिकभूमि, देवभूमि, यज्ञभूमि, कर्मभूमि, अवतारभूमि—इस भारतमे गोवंशकी उपेक्षा और हत्या महान् आश्चर्य और अपराध है। यह स्पष्ट ही लोकहत्या है। गोरस यज्ञमे प्रयुक्त होकर सुवृष्टिके द्वारा सर्वोपकारक सिद्ध होता है। विदुरनीतिके अनुसार गोसेवकको दो घड़ीके पश्चात् गायकी खोज-खबर लेनी ही चाहिये। तभी गौओकी सेवा और सुरक्षा सम्भव है। सांकर्यदोषसे गोवंशको बचानेके लिये जरसी साँडोंके सम्पर्कमे आनेसे देशी गौओको बचाना बहुत ही आवश्यक है। विदेशी दुरभिसंधि और उसके ग्रास-लाञ्छित राजनेताओंके कारण दिन-प्रति-दिन हिन्दुओंकी मानसिकता विकृत होती जा रही है। जिसके फलस्वरूप देशी गोवंशकी योजनाबद्ध हत्या हो रही है। गोहत्या स्वतन्त्र भारतके लिये दुर्भाग्यपूर्ण अभिशाप है।

समृद्ध गोशालाओके माध्यमसे गोसेवा और गोसरक्षण जहाँ आवश्यक है, वहाँ बूचडखाने आदिके माध्यमसे होनेवाली गोवंशकी हत्याका पूर्ण निवारण भी आवश्यक है। उशीनर, विष्वगश्व, नृग, भगीरथ, मान्धाता, मुचुकुन्द, भूरिद्युम्न, नल, सोमक, पुरूरवा, भरत और श्रीरामके राज्यमें पूर्ण पोषण और सरक्षणको सम्प्राप्त गाएँ तथा श्रीकृष्णचन्द्रके द्वारा पालित-पोषित गौएँ आज यान्त्रिकविधाका आलम्बन लेकर प्रतिवर्ष लाखोकी संख्यामे काटी जा रही हैं, यह जघन्य अपराध है, महापाप है। इससे देशको मुक्त करना हमारा पूर्ण कर्तव्य है। गोवंशकी एक इकाईकी हत्या भी हमें असह्य है।

गो-ग्रास-दानकी महिमा

बैलोंको जगत्का पिता समझना चाहिये और गौएँ संसारकी माता हैं। उनकी पूजा करनेसे सम्पूर्ण पितरों और देवताओंकी पूजा हो जाती है। जिनके गोबरसे लीपनेपर सभा-भवन, पौंसले, घर और देवमन्दिर भी शुद्ध हो जाते हैं, उन गौओंसे बढ़कर और कौन प्राणी हो सकता है? जो मनुष्य एक सालतक स्वयं भोजन करनेके पहले प्रतिदिन दूसरेकी गायको मुट्ठी भर घास खिलाया करता है, उसको प्रत्येक समय गौंकी सेवा करनेका फल प्राप्त होता है।

(महा०, आश्वमेधिकपर्व, वैष्णवधर्म०)

गोसेवासे ही सुखकी प्राप्ति

(जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीश्यामनारायणाचार्यजी)

आज देश दुःखी है—प्रजा दुःखी है तथा संत-महात्मासहित सारा चराचर जगत् दुःखी है। इसका एकमात्र कारण है गोमाताका दुःखी होना। जबसे भारत एवं अन्यान्य देशोंमे गोवध होने लगा है, तबसे समस्त विश्वकी प्रजा—जीव-जन्तु दुःखी रहने लगे हैं। राजाका धर्म होता है प्रजाकी रक्षा करना, परंतु आजका शासक प्रजाको दुःखी देखकर चुप लगाकर बैठ जाता है, क्योंकि शासकमें स्वयं देशके प्रति निष्ठा, सद्भावना एव समझदारी नहीं है कि मुझे क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये। गोमाताकी सेवा करना तो अलगकी बात है।

गोसेवाकी शिक्षा स्वयं श्रीरामजी अयोध्यावासियोको देते हुए कहते है—'मैं इस रामावतारमें 'गोसेवा' नहीं कर सका। लोगोंने मुझे महाराज श्रीदशरथजीका पुत्र समझकर गोसेवा नहीं करने दिया, इसलिये में गोसेवाके लिये ही अगला कृष्णावतार धारण करूँगा।' आगे भगवान् श्रीकृष्णकी लीलामे सबसे अधिक गोसेवाका ही वर्णन किया गया है। लाखो संत-महात्माओने गोरक्षाके लिये अपने प्राणोकी आहुति दे दी, परंतु आजतक 'गोवध' बंद नहीं हो सका। लोग कहते है—मुसलमान बहुत बुरे हैं। गायोका वध करते हैं, परंतु मुसलमानोसे कहीं अधिक आज देशका अधिकतर हिन्दू दोषी हैं। अपने घरके माता-पिता जब वृद्धावस्थाको प्राप्त हो जाते हैं, तब उनको घरसे बाहर कर देते हैं क्या? भले हों, बुरे हों, कैसे भी हो, परंतु माता-पिताकी सेवा करनी ही पड़ेगी। आज प्रायः हर जगह यही हो रहा है। किसीने पाँच हजारकी गौ खरीदी, और दो साल बाद दूध कम देनेके कारण उसने गोमाताको तीन हजारमे ही बेच दिया। उसी गायको दूसरे साल दूसरे सज्जनने दो हजारमें बेच दिया। इसी प्रकार धीरे-धीरे वह गोमाता ज्यो-ज्यो जीर्ण होती गयी, त्यो-त्यों उसे कम दामोमें बेचते हुए एक दिन कसाईके हाथो बेचकर वधका शिकार बना दिया। आज देशका प्रत्येक हिन्दू अपने-अपने घरोमें एक-एक गौ रखनेका तथा किसी भी हालतमे गौको न बेचनेका संकल्प करे तो स्वतः ही वह सुखी हो जायगी। गोसेवासे अपुत्री पुत्रको, धनहीन व्यक्ति धनको प्राप्त करता है तथा किसी भी कामनासे गौकी सेवा करनेवाला मनोऽभिलषित फलको प्राप्त करता है। गौ-सेवासे सत्यकाम जाबाल आदिको ब्रह्मज्ञान-प्राप्तिकी बात प्रसिद्ध ही है।

गौसे हमारा आध्यात्मिक सम्बन्ध भी है। मरनेके बाद गौ वैतरणी पार कराती है। इसलिये गौ सदैव पूज्या है। गौका दूध सात्त्विक है और बुद्धि-बलको बढ़ानेवाला है तथा इसके अलावा सभी जानवरोंका दूध रजोगुणी है जो मन-बुद्धिमे विकार उत्पन्न करता है। परीक्षाकी दृष्टिसे देखें तो सैकड़ों गायोके बीचमें आपकी गाय बँधी हो तो उस समय अपने गायके बछड़ेको खोल दीजिये, वह बछड़ा सैंकडो गायोके बीचमें भी अपनी माँको ढूँढ़ लेगा। भैंसका पाडा दस भैंसोंके बीचमें बँधी अपनी माँको नहीं ढूँढ़ पायेगा। गाय भयंकर गर्मीमे भी जंगलोमें चरकर आती है। उसे तनिक भी गर्मी नहीं लगती। भैंस माघके महीनेमें भी थोड़ी-सी गर्मी पड़ी, उसी वक्त चाहे गंदा पानी-कीचड़ क्यो न हो, उसमें जाकर लोटने लगेगी। इस प्रकार हर दृष्टिसे गो माता पूज्या है। गौकी सेवासे ही सुख-शान्ति प्राप्त हो सकती है।

गौओंका दूध जूठा नहीं होता

गौओंका दूध बछड़ोंके पीनेसे जूठा नहीं होता। जैसे चन्द्रमा अमृतका संग्रह करके फिर उसे बरसा देता है, उसी प्रकार ये रोहिणी गौएँ अमृतसे उत्पन्न दूध देती हैं। जैसे वायु, अग्नि, सुवर्ण, समुद्र और देवताओंका पीया हुआ अमृत—ये वस्तुएँ उच्छिष्ट नहीं होतीं, उसी प्रकार बछड़ोंके पीनेपर उन बछड़ोंके प्रति स्नेह रखनेवाली गौ भी दूषित या उच्छिष्ट नहीं होती। (तात्पर्य यह कि दूध पीते समय बछड़ेके मुँहसे गिरा हुआ झाग अशुद्ध नहीं माना जाता।)

(महाभा०, अनु० ७७। २४—२६ $\frac{1}{2}$)

गोमहिमा

(अनन्तश्रीविभूषित तमिलनाडुक्षेत्रस्थ काञ्चीकामकोटिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीजयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज)

सनातन वैदिक धर्म ही हमारा धर्म है। इसका मूल ग्रन्थ है वेद। इसकी घोषणा है 'मातृदेवो भव'।

प्रत्येक व्यक्तिके जीवनमें चार माताएँ होती हैं—पहली है जन्मदात्री जननी, दूसरी गोमाता, तीसरी भूमाता और चौथी है जगन्माता परमेश्वरी।

बच्चोंको माताके दूधके स्थानपर विराजता है गोमाताका दूध। यह बालोंसे लेकर बूढ़ोतक सभीका पूर्णाहार होता है। गायोंके शरीरमें चौदह लोक विराजते हैं। 'गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश'—यह स्मृतिवाक्य इसकी उद्घोषणा करता है। सूर्यवंशके महाराज दिलीपने भी गोसंरक्षण करके ही पुत्रलाभ प्राप्त किया, यह एक पौराणिक कथा है। जब विश्वामित्र महर्षि वसिष्ठके दर्शन करने आये थे तब दैवी गौ कामधेनुने स्वादिष्ट भोजका प्रबन्ध कर दिया।

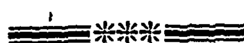
अत: गायोंकी महिमा अवर्णनीय होती है। गाय सभी देवताओंका निवास-स्थान है। गायोंका शरीर खासकर इसका पृष्ठ-भाग श्रीमहालक्ष्मीजीका निवास-स्थान है। श्रीमहालक्ष्मी तो आर्थिक सम्पत्तिकी अधिष्ठात्री देवता होती हैं। अत: गायोंकी हिंसा होती है तो वह रुष्ट हो उठेगी और आर्थिक सम्पत्तिकी हानि कर डालेगी।

बूढ़ी माताओंके समान ही बूढ़ी गायोंकी भी सेवा-शुश्रूषा करना हमारा कर्तव्य है। गोहत्या माने मातृहत्या ही है। जबतक गायोंके दूध-दही-घीके खाने-पीनेकी रीति थी, तबतक मनुष्यको 'कैन्सर'से पीडा नहीं थी, क्योंकि गायोंकी हर वस्तु कृमिनाशक शक्तिसे भरपूर होती है। इसीलिये घरोंके अंदर-बाहर भी गोमयसे शुद्धि कर देते थे।

'पञ्चगव्यप्राशनं महापातकनाशनम्।' यह है स्मृति-घोषणा। पञ्चगव्य है सर्वपापविनाशक। गायकी खादसे उत्पन्न किये जानेवाले खाद्य भी सात्त्विक थे। अत: किसीको भी गायोंकी हिंसा नहीं करनी है। इस जगत्‌में जैसे शिशुओंके, अङ्गहीनोंके, बूढ़ोंके, विधवाओंके रक्षणालय होते हैं, वैसे ही गायोंके भी संरक्षणालय होने चाहिये। अत: हर एकको चाहे वह नगरवाला हो या ग्रामवाला हो गायकी महिमा समझ लेना है, समझानेके लिये जहाँ-तहाँ पशु-संरक्षणालयोंकी स्थापना अनिवार्य है।

'कल्याण'का 'गोसेवा'-विशेषाङ्क इसकी ओर जनताका ध्यान आकर्षित करनेमें सफल विराजे।

नारायणस्मृति:।



यतो गावस्ततो वयम्

(स्वामी श्रीओंकारानन्दजी महाराज, सदस्य बदरी-केदार-मन्दिर-समिति)

नि:स्वार्थ सेवाभावकी चूडान्त आदर्श 'गौ' की सार्वभौमिक उपादेयताको परिभाषित करना पुरुषके पौरुषसे परे है, क्योंकि स्वयं अपौरुषेय वेद भी जिसका गुणानुवाद गा रहे हैं—

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नम:।
बालेभ्य: शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नम:॥
यया द्यौर्यया पृथिवी ययापो गुपिता इमा:।
वशां सहस्रधारां ब्रह्मणाच्छावदामसि॥

(अथर्व० १०। १०। १, ४)

'हे अवध्य गौ! जन्म लेते समय तुम्हारा वन्दन और जन्म हो जानेपर भी तुम्हे प्रणाम। तुम्हारे स्वरूप, रोम और खुरोंको भी नमस्कार। जिसने द्युलोक, पृथ्वी और जलोंको सुरक्षित रखा है, उस सहस्रों धाराओंसे दूध देनेवाली गौको लक्ष्यमे रखकर हम स्तोत्रका पाठ करते हैं।'

यूय गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृह कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥

(अथर्व० ४। २१। ६)

'गौओ! तुम दुर्बल शरीरवाले व्यक्तिको हृष्ट-पुष्ट कर

देती हो एवं निस्तेजको देखनेमें सुन्दर बना देती हो। इतना ही नहीं, तुम अपने मधुर शब्दसे हमारे घरोंको मङ्गलमय बना देती हो। इसी कारण सभाओंमे तुम्हारा यशोगान होता रहता है।'

भारतीय संस्कृति और दर्शनके केन्द्र-विन्दु उपनिषद्का यह आख्यान जिसमें विश्वजित्-यज्ञमें सर्वस्व दान करनेवाले वाजश्रवाके पुत्रने जब अपने पिताको देखा कि वे ब्राह्मणोंको दक्षिणामें बूढ़ी गाये दे रहे हैं, तब नचिकेताकी आस्तिक्य-बुद्धि अपने पिताके हितमे जाग्रत् हो जाती है और वह सोचता है—

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥
(कठ० उप० १। ३)

'जो जल पी चुकी हैं, घास खा चुकी हैं, जिनका दूध भी दुह लिया गया है तथा जिनमें बच्चा जन्म देनेकी सामर्थ्य नहीं रही, ऐसी गायोका दान करनेसे वह दाता उस निम्नलोकमे जाता है जो आनन्दसे सर्वथा शून्य है।'

गौके प्रति विचार-मन्थन इस तीव्र अभिव्यक्तिके फलस्वरूप पिताके क्रोधकी परवाह किये विना नचिकेताने पूछ ही लिया—'कस्मै मां दास्यसीति' मुझे आप दक्षिणार्थ किसे देंगे? और प्रत्युत्तरमे पिताने कहा—'मैं तुझे मृत्युको दूँगा।' कठोपनिषद्का यह लंवा आख्यान और उसके प्रमुख पात्र नचिकेताका गौ-विषयक चिन्तन गोदान तथा गोसेवाकी महिमाको प्रकट करता है। महाभारतमें भगवान् वेदव्यास तो यहाँतक कहते हैं कि—

गोकुलस्य तृषार्तस्य जलान्ते वसुधाधिप।
उत्पादयति यो विघ्नं तमाहुर्ब्रह्मघातकम्॥
(महा०, आश्व०, वैष्णव०)

'जो प्याससे व्याकुल गायोंको जल पीनेसे रोकता है, उसे ब्रह्मघातक कहा जाता है।'

'यद्गृहे दुःखिता गावः स याति नरकं नरः' की भावनामें श्रद्धा करनेवाली हिन्दू-संस्कृति इस सिद्धान्तपर विश्वास करती है कि गोरक्षा ही एकमात्र देशोन्नतिका मूल साधन है।

प्राचीन कालमे धन ही समृद्धिका सूचक था। जिसके पास जितना अधिक गोधन होता था, वह उतना ही यशस्वी माना जाता था। श्रीमद्भागवतमें कहा गया है—

धेनूनां रुक्मशृङ्गीणां साध्वीनां मौक्तिकस्रजाम्।
पयस्विनीनां गृष्टीनां सवत्सानां सुवाससाम्॥
ददौ रूप्यखुराग्राणां क्षौमाजिनतिलैः सह।
अलंकृतेभ्यो विप्रेभ्यो बद्वं बद्वं दिने दिने॥
(१०। ७०। ८-९)

तात्पर्य यह कि भगवान् श्रीकृष्ण प्रतिदिन संध्या-तर्पण और गुरुजन-पूजनोपरान्त सद्यः-प्रसूता दुधारू, बछड़ोवाली, सौम्य, शान्त गौओंका दान करते। उस समय उन्हें सुन्दर वस्त्र और मोतियोकी माला पहना दी जाती। सींगमे सोना और खुरोमे चाँदी मढ़ दी जाती। वे ब्राह्मणोंको वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित करके रेशमी वस्त्र, मृगचर्म और तिलके साथ प्रतिदिन तेरह हजार गौएँ इस प्रकार दान करते।

वाल्मीकीय रामायणके अनुसार भगवान् रामने वन जानेके पूर्व विनोदमें त्रिजट नामक ब्राह्मणको अपना डंडा घुमाकर फेंके गये हजारों गायोंके झुंडके मध्य आनेवाली सभी गाये दान कर दी थीं—

स तीर्त्वा सरयूपारं दण्डस्तस्य कराच्च्युतः।
गोव्रजे बहुसाहस्रे पपातोक्षणसंनिधौ॥
(वा० रा०, अयो० ३२। ३८)

महाभारतके विराट-पर्वके आख्यानसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि धर्मराज युधिष्ठिर कितने निष्ठावान् गोसेवी थे। अज्ञातवासके उन दिनोंमें कीचककी मृत्युके पश्चात् जब दुर्योधन पाण्डवोके अन्वेषणके लिये सम्मति चाहता है तो कौरव-पक्षके वरिष्ठ नायक पितामह भीष्म अपना मन्तव्य स्पष्ट करते हुए कहते हैं—

गावश्च बहुलास्तत्र न कृशा न च दुर्बलाः।
पयांसि दधिसर्पींषि रसवन्ति हितानि च॥
(महा०, विराट० २८। २२)

जिस जनपदमें युधिष्ठिर निवास कर रहे होंगे, वहाँ गायोंकी संख्या बहुत बढ़ी होगी, वे गौएँ न तो कमजोर होंगी और न दुर्बल; बल्कि वे पूर्ण स्वस्थ होंगी तथा उनके दुग्धादि पदार्थ भी सुमधुर एवं लाभप्रद होंगे।

इस संक्षिप्त विवेचनसे ही हम तात्कालिक भारतकी समृद्धिका किंचित् आकलन कर सकते है।

परमात्माने मानवको बौद्धिक एवं आत्मिक गुणोसे सम्पन्न कर धरतीपर इस आशासे भेजा है कि वह सृष्टिको सौन्दर्य प्रदान करनेमें उसकी कल्पनाको साकार बनायेगा, पर कैसी विडम्बना है कि अपने स्वार्थ-साधनोमे उलझकर अपनी हठ-बुद्धिके कारण वह न केवल संसारको कुरूप बना रहा है वरन् अपनेको अमानवीय घोषित करनेमे गौरवका अनुभव कर रहा है। आज हमने वैदेशिक सभ्यताके अंधानुकरण और अपनी ही दुर्बलताओके कारण 'मानव-मात्रकी धाय—गाय' को आदर देनेमें कमी कर दी। तभी हम दिग्भ्रान्त पथिककी भाँति इधर-उधर दीख रहे हैं। अपनी संस्कृतिके प्रति निष्ठावान् न होना सत्य-सनातन धर्मके लिये भारी आघात सिद्ध हुआ। हम अपनी ही आस्थासे टूट गये तो ससार पथ-भ्रष्ट क्यो न होगा!

हम भारतीय ही थे, जिन्होने कभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का यह उद्घोष कि 'हम समस्त पृथ्वीको आर्य (सुसंस्कृत) बनायेंगे' कहकर समूचे विश्वको न केवल ज्ञान दिया वरन् संसारमें फैलकर उसे सुसस्कृत भी बनाया, पर विडम्बना है कि आज हम भारतीय सस्कृतिके सर्वथा प्रतिकूल चलकर स्वयं ही अपने पॉवोपर कुल्हाडी मारनेकी उक्तिको चरितार्थ कर रहे है। गौके सम्मानके आदर्शने ही हमे समस्त मानव-जातिमे गौरवमय स्थानपर प्रतिष्ठित किया था।

इस नश्वर शरीरके प्रति अपनी आस्था एव स्पृहाकी अवहेलना प्रकट कर सिहके समक्ष अपने शरीरको मांसके पिण्डकी भॉति पटककर गौकी रक्षा करनेवाले रघुवश महाकाव्यके महानायक महाराज दिलीपकी भावनामे छिपे रहस्यको हमे समझना होगा।

महाराज जनकका विमान यमराजकी सयमनीपुरीके निकटसे होकर जा रहा था। विमान अभी आगे बढनेको ही था कि नरककी यन्त्रणाओंको भोगते हजारो नारकीयोके करुण स्वर जनकको सुनायी दिये—'राजन्! आप यहॉसे न जायॅ, आपके शरीरको स्पर्शकर आनेवाली वायुसे हमे शान्ति मिल रही है।' इस करुण पुकारको सुनकर महाराज जनकने अपने जीवनभरके पुण्य प्रदान कर समस्त नारकीय जीवोको मुक्त किया। अन्तमे जब जनकने धर्मराजसे पूछा—'मैने कौन-सा ऐसा पाप किया था जो मुझे नरकद्वारतक लाया गया?'

यमराजने कहा—'राजन्! तुम्हारा तो समस्त जीवन पुण्योसे भरा पडा है, परतु—

एकदा तु चरन्तीं गा वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्॥

(पद्म०, पाता०)

'एक बार तुमने चरती हुई गायके कार्यमे विघ्न डाला था, उसी पापके कारण तुम्हे नरकका द्वार देखना पडा।'

इस उपाख्यानसे महर्षि व्यासदेव मानवमात्रको उद्बोधित करना चाहते हैं कि गौकी सेवामे विश्वास न करनेवालोका इहलोक ही नहीं परलोक भी बिगड जाता है।

अपनी जीवन-यात्राके लिये न्यूनतम पदार्थ स्वीकार कर परोपकारके लिये अधिकतम त्याग करनेकी अपरिग्रही भावनाका परम आदर्श है गौ। उसके गोबर, मूत्र, सींग, त्वचा, खुर, हड्डियॉ, बाल—सभी किसी-न-किसी रूपमे उपयोगी हैं ही। कौटिल्यके अर्थशास्त्रमे गोपालन और गो-संरक्षणका व्यापक वर्णन मिलता है। गोधनका धार्मिक महत्त्व तो ऋतम्भरा प्रज्ञाद्वारा ही अनुभवगम्य है, पर गोसंरक्षण अर्थकी वृद्धिमे प्रमुख भूमिका निभाता है। गोधन 'अर्थ' और 'धर्म' दोनोका प्रबल पोषक है। अर्थसे 'काम'की सिद्धि होती है और 'धर्म'से मोक्षकी।

गौ, विप्र, वेद, सती, सत्यवादी, निर्लोभी और दानी—इन सप्त महाशक्तियोके बलपर पृथ्वी टिकी है, तब फिर गौके माहात्म्यको कहाँतक समझा जाय! इन सातोंमे भी गौको मुख्य बतलानेके लिये उसका प्रथम परिगणन किया गया है—

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही॥

वेद-शास्त्र-पुराण और महर्षियोंकी ये वाणियाँ—ये वचन हमे गौके सम्मानके प्रति कितना आकृष्ट कर पाते हैं, यह कहना तो कठिन कार्य है क्योंकि हम [illegible] कहे गये धम्मपद कुरान बाइबिल और गुरुग्रन्थसाहब

आदि धर्मग्रन्थोंकी भाषा सुननेमें आना-कानी कर रहे हैं तो राष्ट्रपिताके ये शब्द कि 'गोरक्षा आज जिस ढंगसे हो रही है उसे देखकर मेरा हृदय एकान्तमें रोता है' या ये शब्द कि *'गाय कहूँ या तुमको माय?'* क्या हमारे लिये मात्र अरण्य-रोदन नहीं होंगे?

तथापि निराशावादी दृष्टिकोण मनुकी संतानोंको शोभा नहीं देता, अतः आइये महर्षि वसिष्ठके शब्दोंमें अपनी निष्ठा प्रकट करते हुए हम भी कहें—

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृंग्यः पयोमुचः।
सुरभ्यः सौरभेय्यश्च सरितः सागरं यथा॥
गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्॥

'नदियाँ जिस प्रकार समुद्रमें जा मिलती हैं, उसी प्रकार सुनहरी शृंगोवाली और दूध देनेवाली गौएँ मुझे प्राप्त हों। ऐसा हो कि मैं नित्य गौओंको देखूँ और गौएँ मेरी ओर देखें, कारण, गौएँ हमारी हैं और हम गौओंके हैं, 'गौएँ हैं, इसीसे हमलोग भी हैं।'



गोमाता भारतकी आत्मा है

(अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रीजी महाराज)

गौ समस्त प्राणियोंकी परम श्रेष्ठ शरण है, यह सम्पूर्ण विश्वकी माता है—'सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्', 'गावो विश्वस्य मातरः।' यह निखिलागमनिगमप्रतिपाद्य सर्ववन्दनीया एवं अमितशक्तिप्रदायिनी दिव्यस्वरूपा है। कोटि-कोटि देवताओंकी दिव्य अधिष्ठान है। इसकी पूजा समस्त देवताओंकी पूजा है। इसका निरादर समस्त देवताओंका निरादर है। यह भारतीय संस्कृतिकी प्रतीक-स्वरूपा है। परम दिव्यामृतको देनेवाली सकलहितकारिणी तथा सम्पूर्ण विश्वका पोषण करनेवाली है। इसकी आराधनासे सकल देववृन्द एवं विश्वनियन्ता भगवान् श्रीसर्वेश्वर अतिशय प्रसन्न होते हैं। तभी तो वे व्रजराजकिशोर 'गोपाल' एवं 'गोविन्द' बनकर व्रजके वनोपवनोंमें, गिरिराजकी मनोरम घाटियोंमें तथा कालिन्दीके कमनीय कूलोंपर नंगे चरणों असंख्य गोसमूहोंके पीछे-पीछे अनुगमन करते हुए उनकी सेवामें निरत रहा करते थे। अग्निपुराण (२९२।१८) में कहा गया है—

गावः पवित्रं परमं गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः॥

'गायें परम पवित्र, परम मङ्गलमयी, स्वर्गकी सोपान, सनातन एवं धन्यस्वरूपा हैं।'

गवां हि तीर्थे वसतीह गङ्गा
पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्म-
स्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात्॥
(विष्णुधर्मो० २। ४२। ५८)

'गौ-रूपी तीर्थमें गङ्गा आदि सभी नदियों तथा तीर्थोंका आवास है, उसकी परम पावन धूलिमें पुष्टि विद्यमान है, उसके गोमयमें साक्षात् लक्ष्मी है तथा इन्हें प्रणाम करनेमें धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः गोमाता सदा-सर्वदा प्रणाम करने योग्य है।'

शास्त्रोंमें स्थल-स्थलपर गौकी गरिमा, महिमा एवं सर्वोपादेयता निर्दिष्ट की गयी है। गौका दर्शन, स्पर्श और अर्चन परम पुण्यमय है। गायके स्पर्शमात्रसे आयु बढ़ती है। भगवान् व्रजेन्द्रनन्दन श्रीश्यामसुन्दरने गाण्डीवधारी अर्जुनको महाभारतके अनुशासन-पर्व (५१। २७। ३२) में इस प्रकार उपदेश किया है—

कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥
निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्।
विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति॥

'गोमाताकी पुण्यमयी महिमाका कीर्तन, श्रवण, दर्शन एवं उसका दान सम्पूर्ण पापोंको दूर करता है। निर्भय होकर जिस भूमिपर गाय श्वास लेती है वह परम शोभामयी है, वहाँसे पाप पलायित हो जाता है।'

भगवान् मनुने गोदानका फल कितना उत्कृष्ट बताया है—

'अनडुहः श्रियं पुष्टां गोदो ब्रध्नस्य विष्टपम्'

अर्थात् 'बैलको देनेवाला अतुल सम्पत्ति तथा गायको देनेवाला दिव्यातिदिव्य सूर्यलोकको प्राप्त करता है।'

जिस भारतके धर्म, संस्कृति और विविध शास्त्र तथा सर्वद्रष्टा तत्त्वज्ञ ऋषि-मुनियो एवं आप्त महापुरुषोंके अनेक उपदेश गोमाताकी दिव्य महिमासे ओत-प्रोत हैं, जिस भारतकी पुण्य वसुन्धरा सदा-सर्वदासे गौके विमल यशसे समग्र विश्वमें अपनी दिव्य धवलिमा आलोकित करती आयी है, जिस भारतमे अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक, सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर भी 'गोपाल' बनकर गोमहिमाकी श्रेष्ठता, सर्वमूर्द्धन्यता बतलाते हैं, उस पवित्र भारतकी दिव्य अवनि गोदुग्ध, गोदधि, गोघृतके स्थानपर गोमाताके रक्तसे रंजित की जा रही है। हमारी जनतन्त्र सरकार प्रतिदिन हजारों-हजार गायोंको विविध प्रकारसे निर्दयतापूर्वक भीषण यान्त्रिक यातनाओंके द्वारा मौतके घाट उतारती है। कैसा अकल्पनीय घोर अत्याचार है। जहाँ शास्त्र इस प्रकारका सदेश देता है—'अन्तकाय गोघातकम्' अर्थात् गोघातकको प्राणदण्ड दिया जाना चाहिये। और अथर्ववेदका कहना है—

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा॥

'यदि तू हमारी गौ, घोड़े एवं पुरुषोंकी हत्या करता है तो हम सीसेकी गोलीसे तुझे बींध देंगे, जिससे तू हमारे वीरोंका वध न कर सके।'

—वहाँ हत्याकी तो बात दूर रही गौकी ताड़ना, उसे अपशब्द कहना, पैरसे आघात करना, भूखी रखना तथा कठोरतासे हाँकना आदिका भी शास्त्रोमें निषेध किया गया है। इस सम्बन्धमें वेदादि निखिल शास्त्रोंका एक स्वरसे महान् उद्घोष है, किंतु महाघोर दुःखका विषय है कि उसके सर्वथा विपरीत आचरण करनेवाली हमारी सरकार भारतकी सस्कृति और धर्मको ठुकराकर मदान्धतासे गोहत्याके जघन्यतम कृत्यमे संलग्न है। क्या उसे अतीतका इतिहास स्मरण नहीं है? हिरण्यकशिपु, रावण, कुम्भकर्ण, शिशुपाल तथा कंसादिका अभिमान चूर-चूर होकर विनष्ट हो गया। उनके अत्याचारका भीषण परिणाम उन्हें भोगना पड़ा। अतएव सत्ताके महामदमे आकर सन्मार्गको नहीं छोड़ बैठना चाहिये।

अहिसाके पोषक भारतके शीर्षस्थ नेता लोकमान्य तिलक और महात्मा गाँधीके उपदेशोको विस्मरण कर सरकारका स्वेच्छाचारिताका अवलम्ब लेना देशकी महान् प्रतिष्ठाको गहरी खाईमे डालना है। भारतकी सम्पूर्ण जनताकी इस पवित्र माँगकी सरकार उपेक्षा करती जा रही है। यह लोकतन्त्रका महान् उपहास और स्वार्थपरताका प्रत्यक्ष उदाहरण है। सरकार नाना प्रकारके तर्कहीन हेतु बता-बताकर भ्रान्त धारणामे डालकर स्वार्थ-सिद्धिके चक्करमे है, किंतु यह भारतकी धर्मप्राण जनता धर्मके महत्त्वको भली प्रकार जानती है और अपनी गोमाताकी रक्षाके लिये सर्वस्व बलिदान करनेमें कभी पीछे नहीं रहेगी।

सरकारको अव भी देशकी समृद्धि तथा प्रतिष्ठाको ध्यानमें रखते हुए सम्पूर्ण गोवधपर प्रतिवन्ध लगा देना चाहिये। धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आदि सभी दृष्टियोंसे गोमाता परमोपकारिणी है, इसका विनाश राष्ट्रका विनाश है। यह भारतकी अतुलनीय अमूल्य सम्पत्ति है, अतः इसकी रक्षा राष्ट्रकी रक्षा है।

गवां सेवा तु कर्तव्या गृहस्थैः पुण्यलिप्सुभिः।
गवां सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥

अर्थात् प्रत्येक पुण्यकी इच्छा रखनेवाले सद्गृहस्थको गायोंकी सेवा अवश्य करनी चाहिये, क्योंकि जो नित्य श्रद्धा-भक्तिसे गायोकी प्रयत्नपूर्वक सेवा करता है उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही वृद्धिको प्राप्त होती है और नित्य वर्धमान रहती है।

'मैं यह चाहता हूँ कि लोग बलिकी अपेक्षा दयाको अधिक महत्त्व दें तथा यह समझें कि जोशमे आकर बलिदान समर्पण करनेकी अपेक्षा परमात्माका अधिकाधिक ज्ञान ही प्रथम वाञ्छनीय है।'—(होसिया ६। ६)

गायकी महत्ता और आवश्यकता

(श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)

गाय विश्वकी माता है—'गावो विश्वस्य मातरः।' सूर्य, वरुण, वायु आदि देवताओंको यज्ञ, होममें दी हुई आहुतिसे जो खुराक, पुष्टि मिलती है, वह गायके घीसे ही मिलती है। होममें गायके घीकी ही आहुति दी जाती है, जिससे सूर्यकी किरणें पुष्ट होती हैं। किरणें पुष्ट होनेसे वर्षा होती है और वर्षासे सभी प्रकारके अन्न, पौधे, घास आदि पैदा होते हैं, जिनसे सम्पूर्ण स्थावर-जंगम, चर-अचर प्राणियोंका भरण-पोषण होता है*।

हिन्दुओंके गर्भाधान, जन्म, नामकरण आदि जितने संस्कार होते हैं, उन सबमें गायके दूध, घी, गोबर आदिकी मुख्यता होती है। द्विजातियोंको जो यज्ञोपवीत दिया जाता है, उसमें गायका पञ्चगव्य (दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र) का सेवन कराया जाता है। यज्ञोपवीत-संस्कार होनेपर वे वेद पढ़नेके अधिकारी होते हैं। अच्छे ब्राह्मणका लड़का भी यज्ञोपवीत-सस्कारके बिना वेद पढ़नेका अधिकारी नहीं होता। जहाँ विवाह-संस्कार होता है, वहाँ भी गायके गोबरका लेप करके शुद्धि करते हैं। विवाहके समय गोदानका भी बहुत माहात्म्य है। पुराने जमानेमें वाग्दान (सगाई) के समय बैल दिया जाता था। जननाशौच और मरणाशौच मिटानेके लिये गायका गोबर और गोमूत्र ही काममें लिया जाता है, क्योंकि गायके गोबरमें लक्ष्मीका और गोमूत्रमें गङ्गाजीका निवास है।

जब मनुष्य बीमार हो जाता है, तब उसको गायका दूध पीनेके लिये देते हैं; क्योंकि गायका दूध तुरंत बल, शक्ति देता है। अगर बीमार मनुष्यको अन्न भी न पचे तो उसके पास गायके घी और खाद्य पदार्थोंकी अग्निमें आहुति देनेपर उसके धुएँसे उसको खुराक मिलती है। जब मनुष्य मरने लगता है, तब उसके मुखमें गङ्गाजल या गायका दही देते हैं। कारण कि कोई मनुष्य यात्राके लिये रवाना होता है तो उस समय गायका दही लेना माङ्गलिक होता है। जो सदाके लिये यहाँसे रवाना हो रहा है, उसको गायका दही अवश्य देना चाहिये, जिससे परलोकमे उसका मङ्गल हो। अन्तकालमें मनुष्यको जैसे गङ्गाजल देनेका माहात्म्य है, वैसा ही माहात्म्य गायका दही देनेका है।

वैतरणीसे बचनेके लिये गोदान किया जाता है। श्राद्ध-कर्ममें गायके दूधकी खीर बनायी जाती है; क्योंकि पवित्र होनेसे इस खीरसे पितरोंकी बहुत ज्यादा तृप्ति होती है। मनुष्य, देवता, पितर आदि सभीको गायके दूध, घी आदिसे पुष्टि मिलती है। अतः गाय विश्वकी माता है।

गायके अङ्गोंमें सम्पूर्ण देवताओका निवास बताया गया है। गायकी छाया भी बड़ी शुभ मानी गयी है। यात्राके समय गाय या साँड़ दाहिने आ जाय तो शुभ माना जाता है और उसके दर्शनसे यात्रा सफल हो जाती है। गाय महान् पवित्र होती है। उसके शरीरका स्पर्श करनेवाली हवा भी पवित्र होती है। उसके गोबर-गोमूत्र भी पवित्र होते हैं। जहाँ गाय बैठती है, वहाँकी भूमि पवित्र होती है। गायके चरणोकी रज (धूल) भी पवित्र होती है।

गायसे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—इन चारोंकी सिद्धि होती है। गोपालनसे, गायके दूध, घी, गोबर आदिसे धनकी वृद्धि होती है। कोई भी धार्मिक कृत्य गायके बिना नहीं होता। सम्पूर्ण धार्मिक कार्योंमें गायका दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र काममें आते हैं। कामनापूर्तिके लिये किये जानेवाले यज्ञोंमें भी गायका घी आदि काममें आता है। वाजीकरण आदि प्रयोगोंमे भी गायके दूध और घीकी मुख्यता रहती है। निष्कामभावसे गायकी सेवा करनेसे मोक्ष होता है। गायकी सेवा करनेमात्रसे अन्तःकरण निर्मल होता है। भगवान् श्रीकृष्णने भी बिना जूतीके गायोंको चराया था, जिससे उनका नाम 'गोपाल' पड़ा। प्राचीन कालमें ऋषिलोग वनमें रहते हुए अपने पास गायें रखा करते थे। गायके दूध-घीका सेवन करनेसे उनकी बुद्धि बड़ी विलक्षण होती थी,

* अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजा॥ (मनु० ३। ७६)

जिससे वे बड़े-बडे ग्रन्थोंकी रचना किया करते थे। आजकल तो उन ग्रन्थोंको ठीक-ठीक समझनेवाले भी कम हैं। गायके दूध-घीसे वे दीर्घायु होते थे। गायके घीका एक नाम 'आयु' भी है। बड़े-बड़े राजालोग भी उन ऋषियोके पास आते थे और उनकी सलाहसे राज्य चलाते थे।

गाय इतनी पवित्र है कि देवताओंने भी उसको अपना निवास-स्थान बनाया है। जिसका गोबर और गोमूत्र भी इतना पवित्र है, फिर वह स्वयं कितनी पवित्र होगी। एक गायका पूजन करनेसे सब देवताओंका पूजन हो जाता है, जिससे सब देवताओंको पुष्टि मिलती है। पुष्ट हुए देवताओंके द्वारा सम्पूर्ण सृष्टिका संचालन, पालन, रक्षण होता है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न—आजकल प्राय: लोग गायके घीसे यज्ञ, होम आदि नहीं करते तो भी वर्षा होती ही है—इसका कारण क्या है?

उत्तर—प्राचीन कालसे जो यज्ञ, होम होते आये हैं, उनका संग्रह अभी बाकी है। उसी संग्रहसे अभी वर्षा हो रही है। परंतु अभी यज्ञ आदि न होनेसे वैसी व्यवस्था नहीं रही है, इसलिये कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि हो रही है। वर्षा भी बहुत कम हो रही है।

प्रश्न—वर्षा अग्निमें आहुति देनेसे ही होती है या कर्तव्यका पालन करनेसे होती है?

उत्तर—कर्तव्य-पालनके अन्तर्गत यज्ञ, होम, दान, तप आदि सब कर्म आ जाते हैं। गीताने भी यज्ञ आदिको कर्तव्य-कर्मके अन्तर्गत ही माना है। अगर मनुष्य अपने कर्तव्यका पालन करेंगे तो सूर्य, वरुण, वायु आदि देवता भी अपने कर्तव्यका पालन करेंगे और समयपर वर्षा करेंगे।

प्रश्न—विदेशोंमें यज्ञ आदि नहीं होते, फिर वहाँ देवतालोग वर्षा क्यों करते हैं?

उत्तर—जिन देशोंमें गायें नहीं हैं अथवा जिन देशोंके लोग यज्ञ आदि नहीं करते, वहाँ भी अपने कर्तव्य-कर्मका पालन तो होता ही है। वहाँके लोग अपने कर्तव्यका पालन करते हैं तो देवता भी अपने कर्तव्यका पालन करते हैं अर्थात् वहाँ वर्षा आदि करते हैं।

प्रश्न—ट्रैक्टर आदि यन्त्रोंसे खेती हो जाती है, फिर गाय-बैलकी क्या जरूरत है?

उत्तर—वैज्ञानिकोंने कहा है कि अभी जिस गतिसे तेल खर्च हो रहा है, ऐसे खर्च होता रहा तो लगभग चालीस वर्षोंमें ये तेल आदि सब समाप्त हो जायँगे, जमीनमें तेल नहीं रहेगा। जब तेल ही नहीं रहेगा, तब यन्त्र कैसे चलेंगे? उस समय गाय-बैल ही काम आयेंगे।

प्रश्न—तेल नहीं रहेगा तो उसकी जगह कोई नया आविष्कार हो जायगा, फिर गायोंकी क्या आवश्यकता?

उत्तर—नया आविष्कार हो अथवा न हो, पर जो चीज अभी अपने हाथमें है, उसको क्यों नष्ट करें? जो चीज अभी हाथमें नहीं है, भविष्यपर निर्भर है, उसको लेकर अभीकी चीजको नष्ट करना बुद्धिमानी नहीं है। जैसे, गर्भके बालककी आशासे गोदके बालकको समाप्त करना बुद्धिमानी नहीं है, प्रत्युत घोर पाप, अन्याय है। गायोंकी परम्परा तो चलती रहेगी, पर आविष्कारोंकी परम्परा भी चलती रहेगी—इसका क्या भरोसा? अगर विश्वयुद्ध छिड जाय तो क्या आविष्कार सुरक्षित रह सकेंगे? पीछेको कदम तो उठा लिया और आगे जगह मिली नहीं तो क्या दशा होगी? इसलिये आगे आविष्कार होगा—इस विचारको लेकर गायोंका नाश नहीं करना चाहिये, प्रत्युत प्रयत्नपूर्वक उनकी रक्षा करनी चाहिये।

प्रश्न—भैंसे और ऊँटके द्वारा भी खेती हो सकती है, फिर गाय-बैलकी क्या जरूरत?

उत्तर—खेतीमें जितनी प्रधानता बैलोंकी है, उतनी प्रधानता अन्य किसीकी भी नहीं है। भैंसेके द्वारा भी खेती की जाती है, पर खेतीमें जितना काम बैल कर सकता है, उतना भैंसा नहीं कर सकता। भैंसा बलवान् तो होता है पर वह धूप सहन नहीं कर सकता। धूपमें चलनेमें वह जीभ निकाल देता है, जबकि बैल धूपमें भी चलता रहता है। कारण कि भैंसेमें सात्त्विक बल नहीं होता, क्योंकि बैलमें सात्त्विक बल होता है। बैलोंकी अपेक्षा भैंसे कम भी होते हैं। ऊँटसे भी खेती की जाती है, पर ऊँट भैंसोंसे भी कम होते हैं और बहुत महँगे होते हैं। ऐसे कोई हरेक आदमी ऊँट नहीं खरीद सकता। आजकल तो संख्यामें अच्छे-अच्छे जवान बैल मारे जानेके कारण बैल

भी महँगे हो गये हैं, तो भी वे ऊँट-जितने महँगे नहीं हैं। यदि घरोंमें गायें रखी जायँ तो बैल घरोंमे ही पैदा हो जाते हैं, खरीदने नहीं पड़ते। विदेशी गायोंके जो बैल होते हैं, वे खेतीमें काम नहीं आ सकते, क्योंकि उनके कंधे न होनेसे उनपर जुआ नहीं रखा जा सकता। अतः अपने देशकी गायोंका पालन करना चाहिये, उनकी विशेषरूपसे रक्षा करनी चाहिये।

बैलोंसे जितनी बढ़िया खेती होती है, उतनी ट्रैक्टरोंसे नहीं होती। देखनेमें तो ट्रैक्टरोसे और रासायनिक खादसे खेती जल्दी हो जाती है, पर जल्दी होनेपर भी वह बढ़िया नहीं होती। बैलोंसे की गयी खेतीका अनाज बड़ा पवित्र होता है। गोबर-गोमूत्रकी खादसे जो अन्न पैदा होता है, वह बड़ा पवित्र, शुद्ध, निर्मल होता है।

खेतका और गायका घनिष्ठ सम्बन्ध है। खेतमें पैदा होनेवाले घास आदिसे गायकी पुष्टि होती है और गायके गोबर-मूत्रसे खेतकी पुष्टि होती है। विदेशी खाद डालनेसे कुछ ही वर्षोंमे जमीन खराब हो जाती है अर्थात् उसकी उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है। परंतु गोबर-गोमूत्रसे जमीनकी उपजाऊ शक्ति ज्यों-की-त्यों बनी रहती है। विदेशोंमें रासायनिक खादसे बहुत-से खेत खराब हो गये हैं, जिनको उपजाऊ बनानेके लिये वे गोबर काममे ले रहे हैं।

प्रश्न—गायके दूधकी क्या महिमा है?

उत्तर—गायका दूध जितना सात्त्विक होता है, उतना सात्त्विक दूध किसीका भी नहीं होता। हमारे देशकी गायें सौम्य और सात्त्विक होती हैं, इसलिये उनका दूध भी सात्त्विक होता है, जिसको पीनेसे बुद्धि तीक्ष्ण होती है और स्वभाव सौम्य, शान्त होता है। विदेशी गायोका दूध तो ज्यादा होता है, पर उनके दूधमे उतनी सात्त्विकता नहीं होती तथा उनमें गुस्सा भी ज्यादा होता है। अतः उनका दूध पीनेसे मनुष्यका स्वभाव भी क्रूर होता है। विदेशी गायोंके दूधमे घी कम होता है और वे खाती भी ज्यादा हैं।

भैंसके दूधमें घी ज्यादा होनेसे वह शरीरको मोटा तो करता है, पर वह दूध सात्त्विक नहीं होता। गाड़ी चलानेवाले जानते ही हैं कि गाड़ीका हार्न सुनते ही गायें सड़कके किनारे हो जाती हैं, जब कि भैंस सड़कमें ही खड़ी रहती है! इसलिये भैंसके दूधसे बुद्धि स्थूल होती है। सैनिकोंके घोडोंको गायका दूध पिलाया जाता है, जिससे वे घोड़े बहुत तेज होते हैं। एक बार सैनिकोने परीक्षाके लिये कुछ घोड़ोंको भैंसका दूध पिलाया, जिससे घोड़े खूब मोटे हो गये। परंतु जब नदी पार करनेका काम पड़ा, तब वे घोड़े पानीमे बैठ गये। भैंस पानीमें बैठा करती है, इसलिये वही स्वभाव घोड़ोमें भी आ गया।

ऊँटनीका दूध भी निकलता है, पर उस दूधका दही, मक्खन होता ही नहीं। उसका दूध तामसी होनेसे दुर्गतिमे ले जानेवाला होता है। स्मृतियोंमे ऊँट, कुत्ते, गधे आदिको अस्पृश्य बताया गया है। बकरीका दूध नीरोग करनेवाला एवं पचनेमें हल्का होता है, पर वह गायके दूधकी तरह बुद्धिवर्धक और सात्त्विक बात समझनेके लिये बल देनेवाला नहीं होता।

गायके दूधसे निकला घी 'अमृत' कहलाता है। स्वर्गकी अप्सरा उर्वशी राजा पुरूरवाके पास गयी तो उसने अमृतकी जगह गायका घी पीना ही स्वीकार किया—'घृतं मे वीर भक्ष्यं स्यात्' (श्रीमद्भा० ९। १४। २२)।

प्रश्न—गायके गोबर और गोमूत्रकी क्या महिमा है?

उत्तर—गायके गोबरमें लक्ष्मीजीका और गोमूत्रमें गङ्गाजीका निवास माना गया है। इसलिये गायके गोबर-गोमूत्र भी बड़े पवित्र हैं। गोबरसे लिपे हुए घरोंमें प्लेग, हैजा आदि भयंकर बीमारियाँ नहीं होतीं। इसके सिवाय युद्धके समय गोबरसे लिपे हुए मकानोपर बमका उतना असर नहीं होता, जितना सीमेंट आदिसे बने हुए मकानोंपर होता है।

गोबरमे जहर खींचनेकी विशेष शक्ति होती है। काशीमें कोई आदमी साँप काटनेसे मर गया। लोग उसकी दाह-क्रिया करनेके लिये उसको गङ्गाके किनारे ले गये। वहाँ एक साधु रहता था। उसने पूछा कि इस आदमीको क्या हुआ? लोगोने कहा कि यह साँप काटनेसे मरा है। साधुने कहा कि यह मरा नहीं है, तुमलोग गायका गोबर ले आओ। गोबर लाया गया। साधुने उस आदमीकी नासिकाको छोड़कर पूरे शरीरमें नीचे-ऊपर गोबरका लेप कर दिया। आँखें मीचकर, उनपर कपड़ा रखकर उसके ऊपर भी गोबर रख दिया। आधे घंटेके बाद गोबरका फिर

दूसरा लेप किया। कुछ घटोमें उस आदमीके श्वास चलने लगे और वह जी उठा! अगर किसी अङ्गमे बिच्छू काट जाय तो जहाँतक विष चढ़ा हुआ है, वहाँतक गोवर लगा दिया जाय तो विष उतर जाता है। हमने सुना है कि शरीरमे कोई भी रोग हो, जमीनमें गहरा गड्ढा खोदकर उसमे रोगीको खड़ा कर दे और उसके गलेतक वह गड्ढा गोबरसे भर दे। लगभग आधे घंटेतक अथवा जितनी देरतक रोगी सुगमतापूर्वक सहन कर सके, उतनी देरतक वह गड्ढेमें खड़ा रहे। जबतक रोग शान्त न हो जाय, तबतक प्रतिदिन यह प्रयोग करता रहे।

आजकल गोबरसे गैस पैदा की जाती है। उस गैससे बिजली भी पैदा की जाती है, जिसको कई जगह काममें लिया जाता है। गैस निकलनेके बाद गोबरकी तेजी कम हो जाती है और वह खेतोंमें देनेके लिये बढ़िया खाद हो जाती है।

संखिया, भिलावा आदि बडे-बड़े जहरोंकी शुद्धि भी गोमूत्रसे ही होती है। सोना, चाँदी आदि धातुएँ भी गोमूत्रसे शुद्ध की जाती हैं। भस्म बनाते समय उन धातुओंको तपाकर तेलमें, गायके दूधकी छाछमें और गोमूत्रमे बुझाकर शुद्ध किया जाता है।

छोटी बछड़ीका गोमूत्र प्रतिदिन तोला-दो-तोला पीनेसे पेटके रोग दूर होते हैं। यकृत्-पीडामे भी गोमूत्रका सेवन बड़ा लाभदायक होता है। एक सतको दमारोग था। उन्होंने छोटी बछडीका गोमूत्र प्रातः खाली पेट एक तोला प्रतिदिन लेना शुरू किया तो उनका रोग बहुत कम हो गया। छातीमे, कलेजेमें दर्द होता हो तो एक बर्तनमे गोमूत्र लेकर उसको गरम करे। उस बर्तनपर एक लोहेकी छलनी रखकर उसपर कपड़ा या पुरानी रुई रख दे। वह कपड़ा या रुई गरम हो जाय तो उससे छातीपर सेक करता रहे। इससे दर्द दूर हो जाता है। गोमूत्रसे स्नान करनेसे शरीरकी खुजली मिटती है।

—इस प्रकार गोबर और गोमूत्रसे अनेक रोग दूर होते हैं।

प्रश्न—गोरक्षासे क्या लाभ हैं?

उत्तर—गायकी रक्षासे मनुष्य, देवता, भूत-प्रेत, यक्ष-राक्षस, पशु-पक्षी, वृक्ष-घास आदि सबकी रक्षा होती है। पृथ्वीपर कोई भी ऐसा स्थावर-जंगम प्राणी नहीं है, जो गायसे पुष्टि न पाता हो। गाय अर्थ, धर्म, काम और मोक्षको सिद्ध करनेवाली, लोक-परलोकमे सहायता करनेवाली और नरकोसे उद्धार करनेवाली है।

गोरक्षाके लिये बलिदान करनेवालोकी कथाओंसे इतिहास, पुराण भरे पडे है। वड़े भारी दुःखकी बात है कि आज हमारे देशमें पैसोके लोभसे प्रतिदिन हजारोंकी संख्यामे गायोंकी हत्या की जा रही है! अगर इसी तरह गोहत्या होती रही तो एक समय गोवंश समाप्त हो जायगा। जब गायें नहीं रहेंगी, तब देशकी क्या दशा होगी, कितनी आफते आयेंगी—इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। जब गाये खत्म हो जायँगी और जमीनसे तेल निकलना बद हो जायगा, तब खेती कैसे होगी? खेती न होनेसे अन्न तथा वस्त्र (कपास) कैसे मिलेगा? लोगोंको शरीर-निर्वाहके लिये अन्न, जल और वस्त्र मिलना भी मुश्किल हो जायगा। राजस्थानके गाँवोंमे मैंने देखा है कि पहले वहाँ बैलोंके द्वारा जमीनसे पानी निकाला जाता था। फिर वहाँ बिजली आनेसे बिजलीसे पानी निकलने लगा और बैलोको लोगोंने बिक्री कर दिया। अब अगर बिजली बंद हो जाय तो पानी भी बंद हो जाता है और लोग दुःख पाते हैं।

गोरक्षासे सब तरहका लाभ है—इस बातको धर्मप्राण भारतवर्ष ही समझ सकता है, दूसरे देश नहीं समझ सकते; क्योकि उनके पास गहरी धार्मिक और पारमार्थिक बातोंको समझनेके लिये वैसी बुद्धि नहीं है और वैसे शास्त्र भी नहीं हैं। जो लोग विदेशी सस्कृति, सभ्यतासे प्रभावित हैं तथा केवल भौतिक चकाचौंधमें फँसे हुए हैं, वे भी गायका महत्त्व नहीं समझ सकते। वे ऋषि-मुनियोंकी बातोंको तो मानते नहीं और स्वयं जानते नहीं! ऋषि-मुनियोंने, राजा-महाराजाओंने, धर्मात्माओंने गोरक्षाके लिये बड़े-बड़े कष्ट सहे तो क्या वे सब बेसमझ थे? क्या समझ अब हो आयी है?

प्रश्न—लोगोंमे गोरक्षाकी भावना कम क्यों हो रही है?

उत्तर—गायके कलेजे, मांस, खून आदिसे बहुत-सी अँग्रेजी दवाइयाँ बनती हैं। उन दवाइयोंका सेवन करनेसे गायके मांस, खून आदिका अंश लोगोंके पेटमें चला जाता

हैं, जिससे उनकी बुद्धि मलिन हो गयी है और उनकी गायके प्रति श्रद्धा, भावना नहीं रही है।

लोग पापसे पैसा कमाते हैं और उन्हीं पैसोंका अन्न खाते हैं, फिर उनकी बुद्धि शुद्ध कैसे होगी और बुद्धि शुद्ध हुए बिना सच्ची, हितकर बात अच्छी कैसे लगेगी?

स्वार्थबुद्धि अधिक होनेसे मनुष्यकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, बुद्धि तामसी हो जाती है, फिर उसको अच्छी बातें भी विपरीत दीखने लगती हैं*। आजकल मनुष्योंमें स्वार्थ-भावना बहुत ज्यादा बढ़ गयी है, जिससे उनमें गोरक्षाकी भावना कम हो रही है।

गायके मांस, चमड़े आदिके व्यापारमे बहुत पैसा आता हुआ दीखता है। मनुष्य लोभके कारण पैसोंकी तरफ तो देखता है, पर गोवंश नष्ट हो रहा है, परिणाममें हमारी क्या दशा होगी, कितने भयंकर नरकोंमें जाना पड़ेगा, कितनी यातना भोगनी पडेगी—इस तरफ वह देखता ही नहीं! तात्पर्य है कि तात्कालिक लाभको देखनेसे मनुष्य भविष्यपर विचार नहीं कर सकता; क्योंकि लोभके कारण उसकी विचार करनेकी शक्ति कुण्ठित हो जाती है, दब जाती है। लोभके कारण वह अपना वास्तविक हित सोच ही नहीं सकता।

प्रश्न—गायमे सब देवताओंका निवास है, फिर वे गायकी हत्या क्यों होने देते हैं?

उत्तर—गायमें देवताओंका निवास पवित्रताकी दृष्टिसे कहा गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि देवता गायमें साक्षात् रूपसे निवास करते हैं। जैसे दियासलाईमें अग्नि रहती है, पर उसको रुईके भीतर रख दिया जाय तो उससे रुई नहीं जलती; क्योंकि अग्नि दियासलाईमें अप्रकटरूपसे, निराकार-रूपसे रहती है। परमात्मा सम्पूर्ण प्राणियोंके हृदयमें रहते हैं, फिर भी प्राणी मरते हैं; क्योंकि परमात्मा निर्लिप्तरूपसे, अप्रकटरूपसे रहते हैं। ऐसे ही गायके शरीरमें सम्पूर्ण देवता अप्रकटरूपसे, निर्लिप्तरूपसे रहते हैं। जैसे परमात्माको सम्पूर्ण प्राणियोंके हृदयमें विद्यमान कहनेका तात्पर्य है कि हृदय पवित्र और परमात्माका उपलब्धि-स्थान है, ऐसे ही देवताओंको गायके शरीरमें विद्यमान कहनेका तात्पर्य है कि गाय महान् पवित्र है।

प्रश्न—गोसेवासे क्या लाभ है?

उत्तर—जैसे भगवान्‌की सेवा करनेसे त्रिलोकीकी सेवा होती है, ऐसे ही निष्कामभावसे गायकी सेवा करनेसे विश्वमात्रकी सेवा होती है; क्योंकि गाय विश्वकी माता है। गायकी सेवासे लौकिक और पारलौकिक—दोनों तरहके लाभ होते है। गायकी सेवासे अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष—ये चारों पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं। रघुवंश भी गायकी सेवासे ही चला था।

प्रश्न—गोरक्षाके लिये क्या करना चाहिये?

उत्तर—गायोंकी रक्षाके लिये उनको अपने घरोंमें रखना चाहिये और उनका पालन करना चाहिये। गायके ही दूध-घीका सेवन करना चाहिये, भैंस आदिका नहीं। गायोंकी रक्षाके उद्देश्यसे ही गोशालाएँ बनानी चाहिये, दूधके उद्देश्यसे नहीं। जितनी गोचर-भूमियाँ हैं, उनकी रक्षा करनी चाहिये तथा सरकारसे और गोचर-भूमियाँ छुड़ाई जानी चाहिये। सरकारकी गोहत्या-नीतिका कड़ा विरोध करना चाहिये और वोट उनको ही देना चाहिये, जो पूरे देशमें पूर्णरूपसे गोहत्या बंद करनेका वचन दें।

खेती करनेवाले सज्जनोंको चाहिये कि वे गाय, बछड़ा, बैल आदिको बेचें नहीं। गाय और माय बेचनेकी नहीं होती। जबतक गाय दूध और बछड़ा देती है, बैल काम करता है, तबतक उनको रखते हैं। जब वे बूढ़े हो जाते हैं, तब उनको बेच देते हैं—यह कितनी कृतघ्नताकी, पापकी बात है! गाँधीजीने 'नवजीवन' अखबारमें लिखा था कि 'बूढ़ा बैल जितना घास (चारा) खाता है उतना गोबर और गोमूत्र पैदा कर देता है अर्थात् अपना खर्चा आप ही चुका देता है।'

बंबईके देवनार-कसाईखानेमें मैंने देखा है कि वहाँ अच्छे-अच्छे, जवान-जवान बैल ट्रकोंमें भरकर लाये जाते हैं और खड़े कर दिये जाते हैं। दूरतक सींग-ही-सींग दीखते थे। ऐसे बैलोंको मशीनोंके द्वारा बड़ी बुरी तरहसे मारते हैं।

---

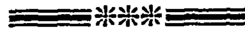
*अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता। सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥ (गीता १८। ३२)
'तमोगुणसे घिरी हुई जो बुद्धि अधर्मको धर्म और सम्पूर्ण चीजोंको उल्टा ही मानती है, वह तामसी है।'

जीते-जी उनका चमड़ा उतारा जाता है, क्योंकि जीते हुएका चमड़ा उतारा जाय तो वह बहुत नरम होता है। जो गायो और बैलोको बेचते हैं, उनको यह हत्या लगती है। अतः अपनी पूरी शक्ति लगाकर हर हालतमें गायोंकी रक्षा करना, उनको क़त्लखानोंमें जानेसे रोकना तथा उनका पालन करना, उनकी वृद्धि करना हमारा परम कर्तव्य है।

उपसंहार

स्वराज्य-प्राप्तिसे पहले जितनी गोहत्या होती थी, उससे बहुत गुना अधिक गोहत्या आज होती है। चमड़ेके निर्यातमे भारतका मुख्य स्थान है। पशुओको निर्दयतापूर्वक बड़ी तेजीसे नष्ट किया जा रहा है। गायोका तो वंश ही नष्ट हो रहा है। पैसोके लोभसे बड़ी मात्रामें गोमांसका निर्यात किया जा रहा है। रुपयोके लोभसे बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो गयी है कि पशुओके विनाशको 'मास-उत्पादन' माना जा रहा है। भेड-बकरियों, मछलियो, मुर्गियों आदिका तो पालन और संवर्धन किया जा रहा है, पर जिनका गोबर-गोमूत्र भी उपयोगी होता है, उन गायोंकी हत्या की जा रही है। खुदमे तो अक्ल नहीं और दूसरेकी मानते नहीं—यह दशा हो रही है।

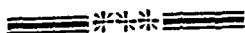
रुपयोसे वस्तुएँ श्रेष्ठ हैं, वस्तुओंसे पशु श्रेष्ठ हैं, पशुओसे मनुष्य श्रेष्ठ हैं, मनुष्योंमे भी विवेक श्रेष्ठ है और विवेकसे भी सत्-तत्त्व (परमात्मतत्त्व) श्रेष्ठ है। परंतु आज सत्-तत्त्वकी उपेक्षा हो रही है, तिरस्कार हो रहा है और असत्-वस्तु रुपयोको बड़ा महत्त्व दिया जा रहा है। रुपयोके लिये अमूल्य गोधनको नष्ट किया जा रहा है। गायोसे रुपये पैदा किये जा सकते हैं, पर रुपयोंसे गाये पैदा नहीं की जा सकतीं। गायोकी परम्परा तो गायोंसे ही चलती है। जब गाये नहीं रहेगी, तब रुपयोंसे क्या होगा? उल्टे देश निर्बल और पराधीन हो जायगा। रुपये तो गायोंके जीवित रहनेसे ही पैदा होगे। गायोको मारकर रुपये पैदा करना बुद्धिमानी नहीं है। बुद्धिमानी तो इसीमे है कि गायोकी वृद्धि की जाय। गायोकी वृद्धि होनेसे दूध, घी आदिकी वृद्धि होगी, जिनसे मनुष्योका जीवन चलेगा, उनकी बुद्धि बढ़ेगी। बुद्धि बढनेसे विवेकको बल मिलेगा, जिससे सत्-तत्त्वकी प्राप्ति होगी। सत्-तत्त्वकी प्राप्ति होनेपर पूर्णता हो जायगी अर्थात् मनुष्य कृतकृत्य, ज्ञात-ज्ञातव्य और प्राप्त-प्राप्तव्य हो जायगा।



सच्ची गोसेवा स्वर्ग या गोलोकको पृथ्वीपर प्रत्यक्ष उतार लायेगी

(काशी षोडशी (शक्ति) पीठाधीश्वर अनन्तश्रीविभूषित जगद्गुरु दण्डी स्वामी श्रीलक्ष्मणाचार्यजी महाराज, एम्० ए०, डी० लिट्०)

भारतीय सिद्धान्त है कि जीवन्मुक्ति प्राप्त किये बिना मृत्यु होनेपर विभिन्न योनियों तथा नरकोमें भटकना पडता है। गौ माता ही एकमात्र इससे त्राण दिलानेवाली शक्ति है। अतः जीवनके अन्तिम क्षणोमे गोदानकी परम्परा है। वेद-शास्त्र ही ईश्वरके संविधान या सच्चे कानून हैं और वे ही वास्तवमे सच्ची भारतीयताके मूर्तिमान् रूप हैं। धर्मात्मा लोग काशी, प्रयाग आदि मुक्ति-क्षेत्रोंका सदा सेवन करते हैं और मोक्षमें ही सुख देखते हैं, जो गोमाताके ही हाथमे है। इसलिये विचारशील भारतीय बन्धुओंको अब भी होशमें आ जाना चाहिये और गोमाताकी महिमाको ध्यानमें रखते हुए, इस विनाशमयी विभीषिका, अभारतीय शिक्षा-दीक्षा तथा विचारमुक्त राजनीतिके ज्ञान आदिमे दूर हटकर गीता, रामायण, भागवत आदिका ही पठन-मनन करना चाहिये और तदनुसार भगवान् राम-कृष्णके समान ही गोमाताकी अहर्निश सेवा करते हुए राम-कृष्ण ही बन जानेका प्रयत्न करना चाहिये। यही जीवन्मुक्ति है। आपकी सच्ची गोसेवा भगवान् श्रीकृष्णके गोलोकको भगवान् श्रीकृष्णके साथ-साथ इस धराधामपर प्रत्यक्ष उतार लायेगी। आप स्वयं श्रीकृष्ण बनकर उनकी गोसेवा और उनके ज्ञानका निरन्तर आनन्द प्राप्त करते रहेंगे। यही भगवान्के शाश्वत संविधान, वेदके सारभूत भगवान् श्रीकृष्णकी वाणी, भगवती गीता आदिका भी सारभूत अमृतमय संदेश है—'दुग्धं गीतामृतं महत्।'



हमारी गोमाता

(गोभक्त-शिरोमणि महाकवि महात्मा श्रीरामचन्द्रजी वीर[1])

सनातन वैदिक धर्मका प्राण गोमाताका वंश है। गोमाताकी महिमा वेदों, पुराणों और समस्त धर्मग्रन्थोंमें हम पढ़ते हैं। वैष्णव, शैव, शाक्त और बौद्ध, जैन तथा आर्यसमाजमें गोमाताका जय-जयकार किया गया है।

भगवान् कृष्णका परम प्रिय गोकुल और गोवर्धन पर्वत था। भगवान् कृष्णका नाम गोपाल, गोविन्द कहा जाता है। रावणकी लंकामें विभीषण तथा उनके अनुयायियोंको छोड़कर समस्त राक्षस मांसाहारी थे, किंतु लंकामें कभी भी गोहत्या नहीं हुई। रावणकी आज्ञासे लंकामें गोमाताके वंशकी रक्षा की जाती थी।

हमारा आर्यावर्त जिसे भारत और हिन्दुस्थान कहते हैं, यहाँ और नेपालमें गोमाताकी पूजा की जाती है।

गोमाताका दूध पीनेसे अनेक रोगोंका नाश होता है। गोमाताके दूध-दही-घी और छाछके सेवनसे शरीर स्वस्थ और सबल होता है। महामारी प्लेग जब भारतके गाँवोंमें फैलती थी, तब हमारे पूर्वज गायके गोबरसे अपने घरोंके प्राचीरोंपर चार अंगुल चौड़ी बड़ी रेखा लीप देते थे।

गोमाताका मूत्र पीनेसे अनेक रोगोंका नाश होता है। मैंने अनेक रोगियोंको कई मासतक गोमूत्र पिलाकर महारोगसे मुक्त किया है। गोमाताके मूत्रके पीनेसे पाण्डुरोग, पीलिया मिट जाता है, किंतु पंद्रह दिनोंतक प्रतिदिन एक पाव गोमूत्र पीना चाहिये।

गोमाताकी रक्षाके लिये और जरासंधसे मथुरा, वृन्दावन तथा गोकुलको बचानेके लिये हमारे भगवान् श्रीकृष्ण द्वारका चले गये थे। भगवान् कृष्णको इसीलिये 'रणछोड़' कहा गया।

भगवान् श्रीरामके पूर्वज महाराज दिलीपने गुरुदेव वसिष्ठ महाराजकी गाय नन्दिनीकी रक्षाके लिये अपने-आपको सिंहके आगे अर्पित कर दिया था। मुगल-सम्राट् बाबरने मरनेके पूर्व अपने पुत्र हुमायूँको कहा था कि 'गाय और गायके वंशकी तुम सदा इज्जत और हिफाजत करना।'

रुस्तम खाँ पठान थे और वे भगवान् कृष्णके भक्त होकर रसखान बन गये। हिन्दी-कविताके इतिहासमें रसखानका नाम अमर रहेगा। रसखान मुसलमान होकर भी गोमाताके भक्त थे। उन्होंने अपने कवित्तमें कहा था—

> जो पसु हौ तौ कहा बसु मेरो,
> चरौ नित नन्दकी धेनु मँझारन॥

अहा! रसखान धन्य थे, जो नन्द महाराजकी गायोंके साथ पशु बनकर घास चरनेकी इच्छा रखते थे।

हिन्दुओंके अन्तिम सम्राट् पृथ्वीराज महाराजने मुहम्मद गोरीको अनेक बार पराजित करके भगा दिया था; किंतु देशद्रोही जयचन्दके षड्यन्त्रसे मुहम्मद गोरीने अपनी सेनाके आगे सैकड़ों गायें खड़ी करके पृथ्वीराज महाराजको छल-बलसे पकड़कर अफगानिस्तान ले जाकर मार डाला था। महाराज पृथ्वीराज, गोमाताको मेरा बाण न लग जाय इसी उद्देश्यसे युद्धमें शिथिल हो गये और पकड़े गये।

महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज महान् गोभक्त थे। शिवाजी महाराजने सोलह वर्षकी किशोरावस्थामें बीजापुरमें एक गोहत्यारे कसाईका सिर काट डाला था और रक्तमें रँगी हुई तलवार लेकर वे बीजापुरके नवाबके सामने जाकर खड़े हो गये थे, नवाब शिवाजीसे भयभीत हो गया था। सन् १८५७ में अंग्रेजोंके विरुद्ध गोभक्त मंगल पाण्डेने 'गोमाताकी जय' बोलकर कई अंग्रेजोंके सिर काट डाले थे।

नामधारी सिक्खोंके नेता रामसिंहजीने अनेक गोहत्यागृह—कसाईखानोंके पास जाकर सैकड़ों कसाइयोंको काट डाला था और वे अंग्रेजोंद्वारा पकड़े जाकर अनेक नामधारी सिक्खोंके साथ तोपोंके गोलोंसे मारे जाकर

१-पिछले वर्षोंमे लेखक महोदयने गोहत्या-वंदीके लिये बिहार आदि कितने ही स्थानोमे लबी अवधितक अनशन-व्रत किया, जिसके फलस्वरूप कुछ प्रदेशोमें आशिक रूपसे गोहत्या बद भी हुई। सन् १९२९ से इनकी यह प्रतिज्ञा है कि जबतक सम्पूर्ण भारतमें गोहत्या वंद न होगी वे अन्न-लवण ग्रहण नहीं करेगे।

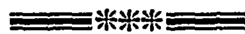
अमर हो गये। सिक्खोंके महान् नेता गुरु गोविन्दसिंह महाराजने कहा था—

नमो उग्रदन्ती जयंती सवैया
नमो योग योगेश्वरी योग मैया।
यही देहु आज्ञा तुरुक को खपाऊँ
गौ मातका दुख सदा मै मिटाऊँ॥

आर्यसमाजके जन्मदाता महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराजने 'गोकरुणानिधि' नामकी पुस्तकमें गोमाताकी महिमाका बहुत अधिक वर्णन किया है। सन् १९२२ में बकराईदके दिन दिल्लीके दस हजार कसाई कुँजड़े हाजी काजी एक गायको लेकर दिल्लीके सदर बाजारसे बाजे बजाते हुए कुर्बानी करनेके जोशमे उछलते जा रहे थे। तब पहलवान लोटनसिंह जाट एक गलीसे निकलकर अपने पैंतीस जाट जवानोके साथ आकर गोहत्यारोंको कूट-पीटकर गायको छुड़ा ले गये।

भारतमें स्वराज्य हुए ४७ वर्ष हो गये, अब भी बंबईमें प्रतिदिन दो हजार बैल काटे जाते हैं। कलकत्तेमें गोहत्या चालू है। टेंगरा और मटियाबुर्जके कसाईखानोंमें प्रतिदिन तीन हजारसे अधिक गाय-बैल-बछड़े काटे जाते हैं और गोमांस अरब आदि देशोंको भेजा जाता है।

गोहत्याके महापापके मुख्य कारण हमारे देशके कुछ हिन्दू भाई हैं जो अब बैलोको छोड़कर ऊँटो और ट्रैक्टरोंसे खेतोंको जोतने लगे हैं। गायोको उन्होंने बेच डाला है और भैंस रखने लगे हैं, फलस्वरूप गाय-बैलोका संहार बहुत अधिक हो गया और अब वह समय आ गया है कि भारतमें गोमाताका वंश दिखायी नहीं देगा। विदेशी गायोंको जो शुद्ध गाय नहीं है, पालकर हमारे देशवासी भारतकी गोमाताके साथ अन्याय कर रहे हैं। हरियाणा, हांसी, हिसारकी गाये बहुत विख्यात थीं। हरियाणाकी लाखों गाये कलकत्ते ले जाकर काट दी गयीं। अब हरियाणामे भैंस-ही-भैंस दिखायी दे रही हैं। राजस्थानके बालोतराके बैल और गाय बहुत प्रसिद्ध थे। सौराष्ट्रकी गिर जातिकी गाये बहुत अधिक दूध देती हैं और वे बड़े आकारकी होती हैं। हमें—प्रत्येक हिंदूको—किसानोंको इस बातको समझना चाहिये और घर-घरमे गाये रखकर उनकी रक्षा करनी चाहिये।



'गो' शब्दके निर्वचन एवं उसके नाना अर्थ

(पूज्य श्रीअनिरुद्धाचार्य वेंकटाचार्यजी महाराज)

'गो' शब्दके नाना निर्वचनों, व्युत्पत्तियों एवं उसके नाना अर्थोंका रहस्यके साथ प्रतिपादन वेदकी कठ, मैत्रायणी आदि शाखाओं एवं वेदके ताण्ड्य, जैमिनीय, शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थोंमें किया गया है। वहाँ 'गम्लृ गतौ' धातु, 'गो-वय तिरोभावे' वैदिक धातु एवं 'गै शब्दे' धातुसे 'गो' शब्दका निर्वचन किया गया है। जैसे—

सामवेदके 'ताण्ड्य' ब्राह्मणमे 'गो' शब्दका निर्वचन 'गोवय तिरोभावे' धातुसे इस श्रुतिमें किया गया है—

गवा वै देवा असुरान् एभ्यो लोकेभ्योऽनुदन्त। यद्वै तद्देवा असुरान् एभ्यो लोकेभ्यो 'गोवयन्' तद्गोर्गोत्वम्।

अर्थात् देवोंने 'गवा'—गो-प्राण एवं गो-प्राणी—इन दोनोंसे किंवा तीनो लोकोंसे असुरोको भगा दिया। जो उन देवोने गो-प्राण एवं गो-प्राणीसे असुरोको 'गोवयन्'-तिरोहित कर दिया, वही 'गो' का गोत्व है। अर्थात् असुरोका विनाश 'गो' का गोत्व है—गोपना है।

'यद्वै तद्देवा असुरान् एभ्यो लोकेभ्यो 'गोवयन्' तद्गोर्गोत्वम्'।

'गो' शब्दके इस निर्वचनके अर्थके रहस्यका आकलन श्रुतिमे निर्दिष्ट देव, असुर एवं 'गो'—इन तीनोंके स्वरूपके यथार्थ ज्ञान बिना कठिन है, अतः यहाँ तीनोंके स्वरूपका प्रतिपादन प्रस्तुत है—

इन तीनोमेसे देव एवं असुर—इन दोनोंका स्वरूप इस प्रकार है—वेदमे 'प्राणा वाव देवताः' इस श्रुतिके आधारसे (१) ऋषि, (२) पितर, (३) देव, (४) असुर, (५) गन्धर्व, (६) मनुष्य एवं (७) पशु-भेदसे सात प्रकारके इन प्राणोको देवता कहा गया है। इनके पीत शुक्ल एवं कृष्ण आदि भिन्न-भिन्न रंग हैं। इनमें शुक्ल वर्ण देव एवं कृष्ण

प्राण असुर हैं। देवोंका आवास सूर्यमण्डल है। असुरोंका आवास पृथिवी-मण्डल है। देवोंकी संख्या तैंतीस एवं असुरोंकी संख्या निन्यानबे है। सूर्यकी एक-एक शुक्ल रश्मिमें सभी देव एवं भूच्छायाकी प्रत्येक कृष्ण रश्मिमें सभी असुर निवास करते हैं।

इन उभय देव एवं असुरोंसे विश्वके इन सभी उच्चावच पदार्थोंका निर्माण होता है। निर्माणके समय स्व-स्व जागरण एवं परस्वापके लिये देवासुर-युद्ध होता है। जिस पदार्थमें देवोंकी विजय अर्थात् देवोंका जागरण एवं असुरोंकी पराजय—स्वाप हो जाता है वह पदार्थ देवमय होता है। जिस पदार्थमें असुरोंकी विजय अर्थात् जागृति एवं देवोंकी पराजय—स्वाप हो जाता है, वह पदार्थ असुरमय हो जाता है।

विश्वके पदार्थोंमें देव देवभावोंका संचार करते हैं एवं असुर असुरभावोंका संचार करते हैं।

'सत्यं श्रीर्ज्योतिरमृतं सुराः' ये देव-भाव हैं एवं **'असत्यं पाप्मा तमो मृत्युरसुराः'**—ये असुर-भाव हैं। अर्थात् (१) सत्य, (२) श्री, (३) ज्योति, (४) अमृत—ये देव-भाव हैं तथा (१) असत्य, (२) पाप्मा, (३) तम एवं (४) मृत्यु—ये असुर-भाव हैं। देवमय पदार्थोंके उपयोगसे हमारे अध्यात्म, शरीर, मन, बुद्धि, प्राण एवं आत्मामें देव-भावोंका संचार होगा। एवं असुरमय पदार्थोंके उपयोगसे हमारे अध्यात्म, शरीर, मन, बुद्धि, प्राण एवं आत्मामें आसुर भावोंका संचार होगा। इसलिये शास्त्रोंमें खाद्याखाद्य, पेयापेय एवं गम्यागम्य आदि व्यवस्थाएँ हैं।

'गो'-तत्त्व

जिस तत्त्वके द्वारा अर्थात् प्राणके द्वारा देवगण पदार्थोंसे असुरोंका तिरोभाव कर देते हैं, वही तत्त्व 'गो' कहलाया है। अर्थात् 'गो', प्राण एवं उससे उत्पन्न 'गो'—प्राणी—दोनों 'गो' हैं।

यह 'गो'-प्राण असुरोंका प्रबल विरोधी है। कारण कि यह सौर प्राण है। अर्थात् सूर्य-सम्बन्धी प्राण है। **'आदित्या वा गावः'** यह ऐतरेय ब्राह्मणकी श्रुति इसमें प्रमाण है। अर्थात् 'गो'-प्राणीका जन्म आदित्य प्राणसे हुआ है। अतः 'गो' आदित्या कहलायी है। इसलिये असुर-विनाशिनी जो शक्ति सूर्यमें है, वही शक्ति गो-प्राण एवं गो-प्राणीमे भी है, अतः गोमाताके श्वास-प्रश्वास, गोमूत्र, गोमय, गोदुग्ध, दधि, गोस्पर्श आदिमें वे सभी शक्तियाँ संनिहित हैं जो गो—प्राण एवं सूर्यमें हैं।

'गो' शब्दका 'गम्लृ गतौ' धातुसे निर्वचन शतपथ ब्राह्मणकी कण्डिकामें इस प्रकार किया गया है—**'इमे वै लोका गौः। यद्धि किंचन गच्छति इमांल्लोकान् गच्छति।'** —इस श्रुतिके आधारसे 'गो' शब्दका निर्वचन **'गच्छति इति गौः'** है। तथा **'गम्यते इति गौः'** इस प्रकार भी अर्थ किया गया है। जो गतिशील है वह 'गो' है। अथवा जो गतिसे प्राप्त किया जाता है वह भी 'गो' है। श्रुति कहती है कि ये तीनों लोक गतिशील होनेसे गो कहलाते हैं। ये गतिसे प्राप्त भी किये जाते हैं, अतः 'गो' हैं।

अथर्ववेदकी 'पिप्पलाद' शाखाका प्रतिपादन है कि गतिशील कोई भी पदार्थ 'गो' कहलाता है जैसे **'अथ गोर्वै सार्पराज्ञी'** अर्थात् यह 'गो' प्राण एवं 'गो' प्राणी—ये दोनों गमनशीलोंमे रानी हैं। दोनों अभिन्न हैं। दोनों गतिशील हैं, अतः दोनों 'गो' हैं।

'अथ इयं पृथिवी वै सार्पराज्ञी'

अर्थात् यह पृथिवी भी गतिशीलोंकी रानी है, अतः 'गो' है। पृथिवीकी गतिशीलताका वर्णन खगोलविद् विद्वान् श्रीआर्य भट्टने 'आर्यभट्टि' में इस प्रकार किया है—

अनुलोमगतिर्नौस्थः
पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भानि तद्वत्
समपश्चिमगानि लंकायाम्॥

गतिशील नौकामें बैठा हुआ और सीधा जाता हुआ पुरुष तटस्थ अचल स्थिर वृक्ष आदि वस्तुओंको विलोम—पीछे जाती हुई जैसे देखता है, वैसे ही गतिशील पृथिवीपर बैठा हुआ पुरुष अचल भूमण्डल, तारा-मण्डलको लंकामें पश्चिम जाता हुआ देखता है। इसलिये यह पृथिवी भी गतिशील होनेके कारण 'गो' है।

'अथ वाग्वै सार्पराज्ञी।' अर्थात् यह 'वाक्' भी गमनशीलोंमें रानी है। अतः वह भी 'गो' है। न्यायदर्शनमें तरंग-वीचि-न्यायसे 'वाक्' की गतिशीलताका वर्णन किया

गया है।

'गच्छति इति गौः' इस निर्वचनसे निष्पन्न 'गो' शब्दके 'अनेकार्थ', 'तिलक' आदि कोशोंमें दिये गये हैं, वे सभी अर्थ गतिशील होनेसे 'गो' कहलाते हैं।

वज्र (विद्युत्), जल, बैल, धेनु, वाक्, दिक्, बाण, पृथिवी, किरण, सुख, स्पर्श, सत्य, वह्नि, अक्षि, अक्षमातृका, स्वर्ग, चन्द्र, लोम—ये सब गतिशील होनेसे 'गो' हैं।

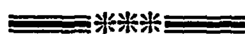
'शाश्वत' कोश कहता है कि नाक, स्वर्ग, वृषभ, चन्द्र—इनका वाचक 'गो' शब्द पुंलिंग है। वाक्, भूमि, दिक् एवं धेनु—इनका वाचक 'गो शब्द' स्त्रीलिंग है। रश्मि, चक्षु, बाण, स्वर्ग, वज्र, जल एवं लोम—इनका बोधक 'गो' शब्द स्त्रीलिंग एवं नपुंसक लिंग दोनोमें है।

'गैं शब्दे' धातुसे 'गो' शब्दका निर्वचन 'मैत्रायणी' संहिताके निम्न मन्त्रमें इस रूपमे उपलब्ध है—

गातुमविदाम इति तद् आमां गोत्वम्।

शब्दोके उच्चारणके लिये जिनसे सामर्थ्य प्राप्त होता है, वही उनका गोत्व है।

'छान्दोग्योपनिषद्' कहता है कि 'अन्नमयं हि सौम्य मनः, तेजोमयी वाक्, आपोमयाः प्राणाः।' जैसे अन्नसे मनन करनेमे मन समर्थ होता है, जैसे जलसे प्राण प्रबल होते हैं, वैसे ही घृतरूप तेजसे 'वाक्' को सामर्थ्य प्राप्त होता है, जिससे वह शब्दोच्चारमे समर्थ होती है। यही कारण है कि सामवेदके गानके प्रथम घृतपानका विधान है।



वैदिक आर्योंका कृषि-कर्म तथा पशु-पालन

(पद्मभूषण आचार्य श्रीबलदेवजी उपाध्याय)

वैदिक संहिताओं तथा ब्राह्मणोमें उस कालके प्राचीन वैदिक आर्योंके आर्थिक जीवनका विशिष्ट वर्णन उपलब्ध होता है। उनके देखनेसे ज्ञात होता है कि वैदिक आर्योंमें कृषि-कर्मका प्रचार तथा प्रसार विशेष रूपसे होता था। ऋग्वेद तथा इतर संहिताओमें खेतके लिये 'उर्वर' तथा 'क्षेत्र' शब्द साधारण रूपसे प्रयुक्त किये गये हैं। खेत दोनो प्रकारके होते थे—उपजाऊ (अप्नस्वती) तथा पड़ती (आर्तना[1])। खेत बिलकुल एक चकला ही नहीं होता था, बल्कि उसे नाप-जोखकर अलग-अलग टुकड़ोमें बाँट दिया करते थे, जो विभिन्न कृषकोंकी जोतमे आते थे। खेतपर किसी जातिका अधिकार नहीं होता था, वह वैयक्तिक अधिकारका विषय था। इसकी पुष्टिमें कुछ मन्त्रोंका प्रमाण दिया जा सकता है, जिसमें अपालाने अपने पिताके खेतको अपने सिरके समान कोटिमे उल्लिखित किया है[2]। 'राजा ही उस समय खेतका तथा भूमिका एकमात्र स्वामी है'—यह कल्पना वैदिक युगमे प्रबल नहीं जान पड़ती। वैदिक कालमें कृषि-कर्म आजके समान ही होता था। खेतोको हलोसे जोतकर बीज बोनेके योग्य बनाया जाता था। हलका साधारण नाम 'लाँगल' या 'सीर' था, जिसके अगले नुकीले भागको फाल कहते थे।

फाल (फार) बड़ा ही नुकीला तथा चोखा होता था। हलकी मूँठ बडी चिकनी होती थी। इसे 'सोमसत्सरु' नामसे अथर्ववेदमे कहा गया है (३। १७। ३)। हल जोतनेवाला हलवाहा 'कीनाश' शब्दके द्वारा निर्दिष्ट है। उसके हाथमे बैलोको हाँकनेके लिये जो पैना होता था उसको 'तोद' या 'तोत्र' नामसे पुकारते थे। शतपथ ब्राह्मणमे चार ही शब्दोमे कृषि-कर्मकी पूरी प्रक्रियाका वर्णन कर दिया गया है। ये शब्द हैं—कर्षण (जोतना) वपन (बोना), लवन (काटना) तथा मर्दन (माड़ना)। मर्दनके बाद चलनी (तितऊ) अथवा सूप (शूर्प) से अनाजको भूसेसे अलग किया जाता था (ऋ० १०। ७१। २)। ऐसा करनेवाले व्यक्तिको 'धान्यकृत्' कहते थे।

बोये जानेवाले अनाजोंके जो नाम मन्त्रोंमें मिलते हैं वे इस प्रकार हैं—व्रीहि (धान), यव (जौ), मुद्ग (मूँग)

१-ऋग्वेद १। १२७। ६। २-ऋग्वेद ८। ९१। ५।

गोधूम (गेहूँ), नीवार (जंगली धान), मसूर, तिल तथा खीरा (उर्वारु या उर्वारुक)। तैत्तिरीय संहितामें सफेद तथा काले धानमें अन्तर किया गया है। धानके तीन प्रकार मुख्यरूपसे बताये गये हैं—कृष्ण (काला), आशु (जल्दी जमनेवाला) तथा महाव्रीहि (अर्थात् बड़े दानोंवाला धान)। इन वेदोंमें 'आशु' 'साठी' नामक धानको लक्षित करता है। क्योकि यह धान साठ ही दिनोंमे पककर तैयार हो जाता है। इन धानोंके नामसे उस युगके प्राणियोंके भोजनोंके प्रकारका भी निर्देश हो जाता है।

आजकलकी भाँति उस समय भी किसानोंके सामने हानि पहुँचानेवाले कीड़ोंसे खेतीको बचानेकी समस्या उपस्थित थी। अवर्षण तथा अतिवर्षणसे भी खेतीको हानि पहुँचती थी, परंतु कीड़ोसे इनकी अपेक्षा अधिक। अथर्ववेदमें बहुत-से कीड़ोंके नाम दिये गये हैं, उनसे रक्षाके लिये अनेक मन्त्र एवं उपाय सुझाये गये हैं। उस समय भी टिड्डियोंसे बड़ी हानि होती थी। टिड्डीका वाचक शब्द है—'मटची'*। कभी-कभी ये पूरा-का-पूरा देश साफ कर डालती थीं। एक बार टिड्डियोंके कारण पूरा कुरु-जनपद नष्ट हो गया था, जिस घटनाका उल्लेख छान्दोग्य-उपनिषद्में मिलता है—'मटचीहतेषु कुरुषु' (छा० १। १०। १)। वैदिक कालीन कृषिके इस संक्षिप्त विवरणसे पता चलता है कि आजकी हमारी कृषि-पद्धति वैदिक ढंगपर ही चल रही है।

वैदिक आर्य लोग कृषि-कर्मके लिये वृष्टिपर विशेष अवलम्बित रहते थे। वृष्टिके देवताका इसी कारण वेदमे प्राधान्य माना गया है। ये देवता इन्द्र थे, जो अपने वज्रके द्वारा वृष्टिको रोकनेवाले दैत्यको (जिसका नाम वृत्र था और जो अपनी प्रबल शक्तिके द्वारा मेघोंके गर्भमें होनेवाले जलको रोक देता था) वज्रसे मारकर छिपे हुए जलको वर्षा देता था तथा नदियोंको प्रगतिशील बनाता था। वैदिक देवता-मण्डलमें इन्द्रकी प्रमुखताका रहस्य आर्योंके कृषिजीवी होनेकी घटनामें छिपा हुआ है। उस समय खेतोंकी सिंचाईका भी प्रबन्ध था। एक मन्त्रमें दो प्रकारके जलका नाम निर्दिष्ट है—'खनित्रिमा' (खोदनेसे उत्पन्न होनेवाला) तथा 'स्वयंजा' (अपने-आप होनेवाला नदी आदिका जल)।

या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति
खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः।

(ऋ० ७। ४९। २)

वैदिक आर्योंके जीवन-निर्वाहके लिये कृषिका इतना अधिक महत्त्व तथा उपयोग था कि उन्होंने 'क्षेत्रपति' नामक एक स्वतन्त्र देवताकी सत्ता मानी है तथा उनसे क्षेत्रोंके शस्यसम्पन्न होनेकी प्रार्थना की है। इस प्रकारका एक प्रसिद्ध मन्त्र है जिसमें कहा गया है कि हमारे फार (हलके नुकीले अग्रभाग) सुखपूर्वक पृथ्वीका कर्षण करें। हलवाले (कीनाश) सुखपूर्वक बैलोंसे खेत जोतें। मेघ मधु जलसे हमारे लिये सुख वर्षाएँ तथा इन्द्र भगवान् (शुनासीर) हमलोगोंके लिये सुख उत्पन्न करें। यह प्रार्थनावाला मन्त्र इस प्रकार है—

शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः।
शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्॥

(ऋ० ४। ५७। ८)

पशु-पालन

कृषिके महत्त्वपूर्ण होनेके लिये पशु-पालन वैदिक आर्योंके लिये प्रधान साधन था। कृषीबल समाजके लिये पशुओंकी और विशेषतः गाय-बैलोंकी कितनी महत्ता होती है, इसे प्रमाणोंसे सिद्ध करनेकी जरूरत नहीं है। हल जोतनेके लिये बैल ही प्रधान साधन है। वही खींचकर हलको आगे बढ़ाता है। आज तो हल खींचनेवाले बैलोकी संख्या दो है, परंतु उस युगमें बैलोंकी संख्या चार, छः, आठ, बारह अथवा चौबीसतक होती थी, जिससे हलके भारी तथा बड़ा आकार होनेका अनुमान भलीभाँति किया जा सकता है। वैदिक कालमें वैश्य लोग ही अधिकतर खेती किया करते थे; क्योकि उनका चिह्न 'अष्ट्रा' बतलाया गया है। अष्ट्रा, तोद तथा तोत्र—ये तीनों शब्द हलवाहेके

* शाकरभाष्यमे 'मटची'का अर्थ 'ओला'तथा'पत्थर' किया गया है, परतु लेखकके अनुसार कन्नड भाषामे टिड्डीको 'मेडिची' कहते हैं जो वेदमे प्रयुक्त मटचीका ही अपभ्रश है। अतः लेखक महोदयकी दृष्टिमे भाषाशास्त्रके अनुरूप यही अर्थ समीचीन है।

पैनेके लिये आते हैं और ये तीनो ही वैश्यके चिह्न वतलाये गये हैं। कृषिकर्मके लिये बैलोंकी लंबी सख्या होती थी, इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि गायोकी बडी संख्या होती थी, जिनका पालन-पोषण वैदिक आर्य बडे प्रेम तथा उत्साहसे करते थे। वैदिक आर्योमें यज्ञ करनेकी प्रथा थी, जिसके लिये दूधसे बने हुए खीरका हवन किया जाता था। उस युगमें गायका दूध आर्योके भोजनालयोकी एक प्रधान वस्तु होता था। सोमरसके मिलानेमें दूध काममें आता था तथा खीर बनानेके काममे भी नितान्त उपयोगी था। इससे दही और घी तैयार किया जाता था।

प्राचीन कालमें किसी व्यक्तिकी धन-सम्पत्तिका माप उसके पास होनेवाली गौओकी संख्यासे होता था। यज्ञोंमें ऋत्विजोंके लिये दक्षिणा-रूपमें गाय ही देनेका विधान था। यहाँतक कि 'दक्षिणा' शब्द अनेक स्थलोंपर गौका पर्यायवाची बन गया था। राजा लोग प्रसन्न होकर ब्राह्मणोको सौ या हजार गायोंका दान किया करते थे। उस युगमें गायोंका उपयोग ऊपर बताये गये प्रकारसे भी अतिरिक्त सिक्केके रूपमे किया जाता था। वैदिक कालमें सिक्कोंका प्रचलन बहुत ही कम था। अतः लेन-देन, व्यवहार-बट्टा, क्रय-विक्रयके कार्यके लिये विनिमयका मुख्य माध्यम गाय ही थी। गायके बदले वस्तुएँ खरीदी जाती थीं। पदार्थोका मूल्य गायके ही रूपमें विक्रेताको दिया जाता था। इस विषयका उल्लेख ऋग्वेदके अनेक मन्त्रोमें किया गया है। एक मन्त्र (३। २४। १०) में वामदेव ऋषिका कथन है कि कौन मनुष्य ऐसा है जो मेरे इन्द्रकी इस मूर्तिको दस गायोंसे खरीद रहा है। अन्य मन्त्रोमें भी सौ, हजार या दस हजार भी गायें इन्द्रको खरीदनेके लिये पर्याप्त नहीं मानी गयी हैं। एक मन्त्र इस प्रकार है—

महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम्।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ॥
(ऋ० ८। १। ५)

भारतमे ही नहीं, पश्चिमी देशोंमे भी प्राचीन कालमे सम्पत्तिकी परम्पराका आधार गाय ही थी। लैटिन भाषाका 'पेकुस' (Pecus) शब्द जिसका अर्थ सम्पत्ति है और जिससे अंग्रेजीका 'पैक्यूनियरी' (Pecuniary) शब्द वनता है, भाषा-शास्त्रकी दृष्टिमे संस्कृत पशुः (पशुन्) शब्दसे सम्वन्ध रखता है। (संस्कृतमें मुख्य पशु गौ ही है)। इस प्रकार खेती, भोजन तथा द्रव्य-विनिमयका मुख्य साधन होनेके कारण वैदिक आर्योके लिये गाय नितान्त उपादेय तथा आवश्यक वस्तु थी। वैदिक कालमें गायके गौरवका रहस्य इसी सामाजिक अवस्थाकी सत्तामे अन्तर्निहित है। इसी कारण वैदिक आर्यलोग गौको अघ्न्या (न मारने योग्य) नामसे पुकारते थे तथा उसे समधिक श्रद्धा एवं आदरकी दृष्टिसे देखते थे।

वैदिक कालमे गाये दिनमे तीन वार दुही जाती थीं—प्रातःकाल (प्रातर्दोह), दोपहरसे कुछ पहले (सगव) और सायंकाल (सायंदोह)। तीन वार वे चरनेके लिये चरागाहमे भेजी जाती थीं। वैदिक कालमे गाये भिन्न-भिन्न रंगोंकी होती थीं—लाल (रोहित), सफेद (शुक्ल), चित्रित (चितकबरी) तथा काली। चरागाहमे वे गोप या गोपालकी देख-रेखमे चरती थीं। गायोके सजग रहनेपर भी वे कभी-कभी संकट तथा विपत्तिमे पड जाती थीं, कभी वे कुओं या गड्ढोमे गिर जातीं तो कभी अङ्ग-भङ्ग हो जाता। कभी वे भूल जाया करतीं और कभी दस्यु या पणि लोग उसे चुरा लिया करते थे। इन विपत्तियोंसे पशुओंकी रक्षा करनेवाले वैदिक देवताका नाम 'पूषन्' था, जो इसीलिये 'अनष्ट-पशु' (गोरक्षक) विशेषणसे विभूषित किया गया है। उस युगमे गायोकी संख्या इतनी अधिक होती थी कि उनको पहचानके लिये उनके कानोके ऊपर नाना प्रकारके चिह्न वनाये जाते थे। जिन गायोके कानोके ऊपर ८ (आठ) का चिह्न बना होता था वे अष्टकर्णी कहलाती थीं। मैत्रायणी-संहितामे निर्दिष्ट चिह्न ये हैं—वंशी (कर्करिकर्ण्यः), हँसुआ (दात्रकर्ण्यं), खम्भा (स्थूणाकर्ण्यः)। कभी-सभी गायोके कान छेदे भी जाते थे (छिद्रकर्ण्यः)। गायोके कानोंको चिह्नित करनेकी यह प्रथा वहुत दिनोतक भारतमे प्रचलित रही, क्योंकि पाणिनिके सूत्रोमे ऐसे चिह्नोंका उल्लेख मिलता है (अष्टा० ६। ३। ११५)।

गायोंकी भिन्न-भिन्न अवस्थाओंके द्योतक अनेक नाम वैदिक ग्रन्थोमें मिलते हैं, जिनसे आर्योंका इन पशुओंके साथ

गाढ़ परिचय अभिव्यक्त होता है। सफेद रंगकी गायको 'कर्की' शब्दसे पुकारते थे, बच्चा देनेवाली जवान गायको 'गृष्टि', दूध देनेवाली गायको 'धेना' या 'धेनु', बाँझ गायको 'स्तरी' या धेनुष्टरी, बच्चा देकर बाँझ होनेवाली गायको 'सूतवशा' तथा अकालमें ही गिरकर गर्भ नष्ट होनेवाली गायको 'वेहत्' कहते थे। वह गाय जिसका अपना बच्चा मर जानेसे नये बछड़ोंके द्वारा मनानेकी आवश्यकता होती थी, 'निवान्या' या केवल 'वान्या' शब्दसे अभिहित की जाती थी। वैदिक ऋषियोंको गायका अपने बछड़ेके लिये रँभाना कानोंको इतना सुखद प्रतीत होता था कि वे देवताओंको बुलानेके लिये प्रयुक्त अपने शोभन गानोकी इससे तुलना करनेमें कभी तनिक भी नहीं सकुचाते थे—

अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः।
इन्द्रं सोमस्य पीतये॥ (ऋ० ९। १२। २)

वैदिक समाजमें बैलोंका उपयोग अनेक प्रकारसे किया जाता था। वे हल जोतनेके लिये तथा बोझवाली गाडी खींचनेके लिये नियमतः काममें लाये जाते थे। वैदिक ग्रन्थोंमें बैलोंकी भिन्न-भिन्न अवस्थाओंको सूचित करनेके लिये अनेक शब्द पाये जाते हैं। बैलके लिये प्रयुक्त साधारण शब्द हैं—उक्षा=सेचनक्षम वृष। ऋषभ= जवान बैल।

शुक्ल यजुर्वेदसंहिताके १८ वें अध्यायकी दो कण्डिकाओं (२६ तथा २७) के अन्तर्गत गाय तथा बैलोंके विभिन्न नाम निर्दिष्ट किये गये हैं। उनका यहाँ निर्देश किया जा रहा है—षण्मासात्मक कालका वाचक शब्द है 'अवि' और इसी शब्दकी सहायतासे भिन्न-भिन्न अवस्थावाले गाय तथा बैलके शब्द वेदमें उपलब्ध होते हैं—

(१) डेढ़ वर्षके बछड़ेका नाम—त्र्यवि, डेढ़ वर्षवाली बछियाका नाम—त्र्यवी।

(२) दो वर्षके बछड़ेका वाचक शब्द है—दित्यवाट्।

(३) दो सालकी बछियाका नाम है—दित्यौही।

(४) ढाई सालके बछड़ेका नाम है—पञ्चावि।

(५) ढाई सालकी बछियाका नाम है—पञ्चावी।

(६) तीन सालके वत्सका नाम है—त्रिवत्स।

(७) तीन सालकी बछिया—त्रिवत्सा।

(८) साढ़े तीन सालका वत्स—तुर्यवाट्।

(९) साढ़े तीन सालकी बछिया—तुर्यौही।

(१०) चार सालका बछड़ा—पष्ठवाट्।

(११) चार सालकी गौ—पष्ठौही।

महीधर भाष्यके द्वारा ये शब्द व्याख्यात हैं। इनके द्वारा गायके प्रति अपूर्व प्रेमका परिचय मिलता है। वैदिक युगमें गायोंके प्रति जो आदर-बुद्धि चली वह आजतक निर्विघ्न-रूपसे चलती आ रही है। आज भी गाय हमारे लिये सत्कार, आदर तथा पवित्रताकी प्रतीक है।

भरद्वाज ऋषि अपने एक मनोज्ञ मन्त्रमें कहते हैं—गाय भग देवता है, गाय ही मेरे लिये इन्द्र है,गाय ही सोमरसकी पहली घूँट है, ये समग्र गायें इन्द्रकी प्रतिनिधि हैं। मैं हृदयसे, मनसे इसी इन्द्रको चाहता हूँ—

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान्
गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।
इमा या गावः स जनास इन्द्र
इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्॥

(ऋग्वेद ६। २८। ५)

गोरक्षाके दस साधन

१-बूचड़खानोंको हर तरहके उचित उपाय करके बंद करवाना चाहिये। २-गौओंकी उत्तम वंश-वृद्धिके उपाय करने चाहिये। ३-गौओंके लिये पर्याप्त चारे-दानेकी व्यवस्था होनी चाहिये। ४-घासके लहलहाते मैदान गौओंके लिये सर्वत्र खुले होने चाहिये। ५-प्रत्येक सद्गृहस्थको अपने घरमें गौ अवश्य रखनी चाहिये और उसका प्रेमके साथ पालन करना चाहिये। ६-कोई भी हानिकारक वस्तु गौओंको कभी नहीं खिलानी चाहिये। ७-बैलोंके काम और चारे-दानेपर विशेष ध्यान रखना चाहिये। ८-गौओंकी तंदुरुस्ती और स्वच्छतापर विशेष ध्यान देना चाहिये। ९-उत्सवोंपर गौओंका विशेष पूजन होना चाहिये। १०-गो जातिके लिये हृदयमें अगाध प्रेम होना चाहिये।

गोरक्षा-प्रश्नावली

१-गौको विश्वमाता क्यों कहा जाता है?

२-गौके विश्वरूपमें, शरीरमें, अङ्ग-प्रत्यङ्गमें देवताओंका निवास बताया है। इस ढंगसे गौके अतिरिक्त अन्य प्राणियोंमें वास नहीं है। ऐसा क्यों है? इसका हमारे साथ आध्यात्मिक भावोंके अतिरिक्त क्या कोई भौतिक विज्ञान-दृष्टिसे भी सम्बन्ध है या नहीं?

३-'यतो गावस्ततो वयम्' शास्त्रमें ऐसा क्यो कहा है?

४-गौके श्वासोंमें चारो वेद षडङ्ग-पदक्रमसहित विराजमान बताये गये हैं। उसका क्या श्वासके साथ गान होता है या श्वासके साथ मूर्तिवत् शब्दाक्षर प्रवाहित होते हैं? ऋषि मन्त्रद्रष्टा कहलाते हैं तो वे मन्त्र-दर्शन कहाँ करते थे? गौके श्वासोंसे सुखी अवस्थामे वेद प्रस्रवित होता है तो दुखी श्वासोमें क्या प्रस्रवित होता है?

५-छान्दोग्योपनिषद्में वर्णित सत्यकाम जाबालने गोसेवा करके जो ब्रह्मवेत्तापद प्राप्त किया था, उसके साथ गौके श्वासोमें स्थित वेदोका सम्बन्ध है या नहीं?

६-सायंकालमे गौके चरणोंसे उठी धूलिके कारण चारों दिशाएँ पवित्र होती हैं, क्या इसलिये गोधूलि-वेला शुभकामोंमें शुभ मानी जाती है? प्रातःकाल जब गौ घरसे जंगलमें चरने जाती है, उस समयको भी गोधूलि-वेला क्यों नहीं माना गया? गोधूलि तो भौतिक वस्तु है, अतः क्या भौतिक विज्ञानसे यह बात सिद्ध होती है?

७-क्या सब गोजाति ही कामधेनु है या वह अन्य कोई गौ-विशेष होती है, गौमें कामधेनुत्व हमारी तपस्यासे आता है या नहीं?

८-क्या भारतीय नस्लकी गाये ही वास्तविक गौ हैं? विदेशी नस्लके साँड़ोसे वर्णसंकरीकरण होनेसे क्या भारतीय गायोकी नस्ल समाप्त नहीं हो रही है?

९-गौके गोबर-मूत्र परम पावन, प्राशनीय और देवपूजन, पितृश्राद्ध, हवनादिमे अनिवार्य आवश्यक हैं। जब कि सभी अन्य प्राणियोके मल-मूत्र धर्मशास्त्रानुसार अपावन हैं, तो ये ही पावन क्यों हैं?

१०-भैंस भी दूध, दही, घी, गोबर-मूत्र देती है और भैंसे खेती तथा बोझ ढोनेके लिये हैं। आर्थिक दृष्टिसे, कुछ कम-ज्यादा भले हो, परंतु भैंसका महत्त्व भी है। अतः इसे गौके सदृश महत्त्व क्यो नहीं दिया गया?

११-यावदस्या गोपतिर्नोपशृणुयादृच· स्वयम्।
चरेदस्य तावद् गोपु नास्य श्रुत्वा गृहे वसेत्॥
यो अस्या ऋच उपश्रुत्याथ गोष्वचीचरत्।
आयुश्च तस्य भूतिं च देवा वृश्चन्ति हीडिताः॥
वशा चरन्ती बहुधा देवाना निहितो निधिः।
आविष्कृणुष्व रूपाणि यदा स्थाम जिघांसति॥
आविरात्मानं कृणुते यदा स्थाम जिघांसति।
अथो ह ब्रह्मेभ्यो वशा याञ्च्याय कृणुते मन ॥
(अथर्ववेद १२। ४। २७—३०)

क्या उपर्युक्त मन्त्रोका सम्बन्ध गौके श्वासमें स्थित वेद-मन्त्रोंसे भी है?

१२-गौका आर्थिक महत्त्व रहते हुए भी उसे केवल आर्थिक दृष्टिसे ही देखना क्या पाप नहीं है?

१३-पद्मपुराणमें गौके दूध, दही, घी, गोबर तथा मूत्रका सेवन न करनेवाले मानवको मास-पिण्डवत् कहकर निन्दनीय क्यों ठहराया गया है?

१४-गो-स्पर्श करना एव गो-पुच्छका शरीरपर फेरना लाभकारी क्यो बताया गया है?

१५-गौके मासको मुस्लिम-धर्ममें रोग-रूप कहा है। बादशाह हुमायूँ गोमाससे घृणा करते थे, इसका क्या रहस्य है?

१६-सुना है, अमेरिकाने नये अनुसधानद्वारा जिस खेतमे गौ बैठे, चले, फिरे (यानी गोधूलि, गोचरण-अङ्ग-स्पर्शसे) और गोबर-मूत्र गिरनेसे, खेतोंमें उपजे पदार्थोंमें अनेक लाभ माने हैं, जो अन्य खादोंमें नहीं; यह कहाँतक सत्य है और क्यो है?

१७-सुना है, जर्मनीके फील्ड मार्शलने कहा कि गौके स्तनोको मुँहमे लेकर दुग्धपान करना विशेष लाभकारक है। गौ शरीरको चाटते हुए प्रेमपूर्वक दूध देती है और यह लाभदायक है, यह कहाँतक ठीक है और कैसे है?

१८-इसी ढंगसे गोवध चालू रहा तो भविष्यमें भारतमें गोधन कितने वर्षोंतक बना रहेगा? क्या गो-दर्शन दुर्लभ हो जायगा?

१९-जिस संकटमयी स्थितिमें महर्षिगण भगवान्‌से प्रार्थना किया करते थे, क्या वैसी स्थिति आज उपस्थित नहीं है?

२०-कलकत्ताके भूतपूर्व प्रधान न्यायाधीश सर जॉन उडरफने 'तन्त्र-सिद्धान्त'में शास्त्रीय आधारपर लिखा है कि 'जहाँ गोवध हो वहाँ मन्त्र-तन्त्र कैसे सफल हों!' इसका शास्त्रीय प्रमाण कहाँ है तथा बुरा प्रभाव कैसे होता है?

२१-वर्तमान स्थितिमें भगवान्‌का अवतार होकर गोरक्षा करनेके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय गोवध-बंदीका है क्या? जब कि जनतामे मानवताहीन दानवताका प्रसार हो रहा है। कायरता, निराशा और हृदयहीनता घर कर चुकी है।

२२-सन् १८५७ ई० से भारतमें गोवध चालू है। जब गत वर्षोंके राजनैतिक आन्दोलनोंसे सफलता न मिली, तो अब कैसे मिलेगी? इस प्रकार समय निकल जानेपर क्या गोवंशका लोप नहीं हो जायगा?

२३-गौ-सेवासे संतानकी प्राप्ति कैसे होती है? गौको चक्रवर्ती सम्राट् क्यों चराते थे?

२४-गौ-द्वारा वैतरणी पार लँघानेका क्या रहस्य है?

२५-'सद्यः शक्तिकरं पयः,' 'भोजनान्ते पिबेत् तक्रम्' का क्या रहस्य है?

२६-'आयुर्वै घृतम्', 'घृतं वै अग्निः' का क्या रहस्य है?

२७-और क्या उपर्युक्त प्रश्नोंपर गो-सम्मेलनोंमें विचार होकर जनताका अज्ञान दूर किया जायगा?



गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्

तृणानि खादन्ति वसन्त्यरण्ये पिबन्ति तोयान्यपरिग्रहाणि।
दुह्यन्ति वाह्यन्ति पुनन्ति पापं गवां रसैर्जीवति जीवलोकः॥
तुष्टास्तु गावः शमयन्ति पापं दत्तास्तु गावस्त्रिदिवं नयन्ति।
संरक्षिताश्चोपनयन्ति वित्तं गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्॥
शष्पं समश्नाति ददाति नित्यं पापापहं मित्रविवर्धनं च।
स एव चाऽऽर्यः परिभुज्यते च गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्॥
तृणानि शुष्कानि वने चरित्वा पीत्वापि तोयान्यमृतं स्त्रवन्ति।
यद्रोमयाद्याश्च पुनन्ति लोकान् गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किंचित्॥

गौएँ जंगलमें निवास करती हैं, तृणोंका भक्षण करती हैं और बिना किसीके अधिकृत क्षेत्रका जल अथवा गङ्गा, नदी, तालाबका जल पीती हैं, वे दूध देती हैं, भार वहन करती हैं, पापोंको दूर करती हैं, गायोंके इस गोरस (दूध-दही)आदिपर सारा विश्व—प्राणिसमुदाय टिका है—जीवनयापन करता चला आ रहा है। प्रसन्न होनेपर गायें सारे पाप-तापको धो डालती हैं और दान देनेपर गायें सीधे स्वर्गलोकको ले जाती हैं। ये ही विधिपूर्वक पालन करनेपर वैभव-धन या समृद्धिका रूप धारण कर लेती है। ऐसी गायोके समान संसारमें कोई भी सम्पत्ति या समृद्धि नहीं है। गौएँ सामान्य घास चरती हैं और बदलेमें दूध-दही, गोमय आदि निरन्तर कुछ-न-कुछ देती ही रहती हैं, लेती भी कुछ नहीं। ये पापको दूर करती हैं और मित्रोंका संवर्धन करती हैं। बैल भी सबसे सीधा देवता है और अन्न-उत्पादन कर सबको खिलाता-जिलाता रहता है। उसीके द्वारा जो अन्न उत्पन्न किया जाता है उससे संसार जीता है। गायके तुल्य ही सजातीय गोधन अर्थात् बैलके समकक्ष कोई सम्पत्ति नहीं है। जंगलमें रूखे-सूखे तृणोंका भक्षणकर साधारण जलका पान कर गौएँ दुग्धरूपी अमृतका क्षरण करती हैं और जिसकी गोबर-गोमूत्र आदि वस्तुएँ संसारको पवित्र कर डालती हैं, ऐसी गौओंके समान और अन्य कोई सम्पत्ति नहीं है।



गो-जननी आदिगौ 'सुरभी' का आख्यान

[सिद्धिप्रद सुरभि-मन्त्र और स्तोत्र]

एक बार देवर्षि नारदके पूछनेपर भगवान् नारायणने उन्हें बतलाया कि गौओंकी अधिष्ठात्री आदिजननी सुरभी गोलोकमें प्रकट हुई। वह गौओकी अधिष्ठात्री देवी, गौओंकी आदि, गौओंकी जननी तथा सम्पूर्ण गौओंमें प्रमुख थीं। मुने! समस्त गौओसे प्रथम वृन्दावनमें उन सुरभीका ही जन्म हुआ है। अतः मैं उनका चरित्र कहता हूँ, सुनो।

एक समयकी बात है—राधापति कौतुकी भगवान् श्रीकृष्ण श्रीराधाके साथ गोपाङ्गनाओसे घिरे हुए पुण्य वृन्दावनमें गये। कौतूहलवश थक जानेके बहाने सहसा किसी एकान्त स्थानमे बैठ गये और उन स्वेच्छामय प्रभुके मनमें दूध पीनेकी इच्छा हो गयी। उसी क्षण उन्होंने अपने वामभागसे लीलापूर्वक सुरभी गौको प्रकट कर दिया। उस गौके साथ बछड़ा था। सुरभीके थनोमें दूध भरा था। उसके बछड़ेका नाम 'मनोरथ' था। उस सवत्सा गौको सामने देखकर श्रीदामाने एक नूतन पात्रमे उसका दूध दुहा। वह दूध जन्म और मृत्युको दूर करनेवाला एक दूसरा अमृत ही था। स्वयं गोपीपति भगवान् श्रीकृष्णने उस स्वादिष्ट दूधको पिया। फिर हाथसे वह भांड गिरकर फूटा और दूध धरतीपर फैल गया। गिरते ही वह दूध सरोवरके रूपमे परिणत हो गया। उसके चारों ओरकी लंबाई और चौड़ाई सौ-सौ योजन थी। वही यह सरोवर गोलोकमें 'क्षीरसरोवर' नामसे प्रसिद्ध है। गोपिकाओं और श्रीराधाजीके लिये वह क्रीडा-सरोवर बन गया। सभी वहाँ मनोरञ्जन करने लगीं। अमूल्य रत्नोंद्वारा उस परिपूर्ण सरोवरके घाट बने थे। भगवान् श्रीकृष्णकी इच्छासे उसी समय अकस्मात् असंख्य कामधेनु गौएँ प्रकट हो गयीं। जितनी वे गौएँ थीं, उतने ही गोप भी उस सुरभी गौके रोमकूपसे निकल आये। फिर उन गौओसे बहुत-सी संताने हुईं, जिनकी संख्या नहीं की जा सकती। यों उन सुरभी देवीसे गौओकी सृष्टि कही जाती है, जिससे जगत् व्याप्त है।

मुने! उस समय भगवान् श्रीकृष्णने देवी सुरभीकी पूजा की थी। तत्पश्चात् त्रिलोकीमे उस देवीकी दुर्लभ पूजाका प्रचार हो गया। दीपावलीके दूसरे दिन भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे देवी सुरभीकी पूजा सम्पन्न हुई थी—यह प्रसंग मैं अपने पिता धर्मके मुखसे सुन चुका हूँ। महाभाग! देवी सुरभीका ध्यान, स्तोत्र, मूल मन्त्र तथा पूजाकी विधिका क्रम मैं तुमसे कहता हूँ, सुनो। 'ॐ सुरभ्यै नमः' सुरभी देवीका यह षडक्षर मन्त्र है। एक लाख जप करनेपर यह मन्त्र सिद्ध होकर भक्तोंके लिये कल्पवृक्षका काम करता है। ध्यान और पूजन यजुर्वेदमें सम्यक् प्रकारसे वर्णित हैं। 'जो ऋद्धि, वृद्धि, मुक्ति और सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करनेवाली हैं, जो लक्ष्मीस्वरूपा, श्रीराधाकी सहचरी, गौओंकी अधिष्ठात्री, गौओंकी आदिजननी, पवित्ररूपा, भक्तोंके अखिल मनोरथ सिद्ध करनेवाली हैं तथा जिनसे

यह सारा विश्व पावन बना है, उन भगवती सुरभीकी मैं उपासना करता हूँ। कलशमें तथा गायके मस्तक, गौओके बाँधनेके स्तम्भ, शालग्रामकी मूर्ति, जल अथवा अग्निमें देवी सुरभीकी भावना करके द्विज इनकी पूजा करे। दीपमालिकाके दूसरे दिन पूर्वाह्नकालमें भक्तिपूर्वक पूजा होनी चाहिये। जो भगवती सुरभीकी पूजा करेगा, वह जगत्‌में पूज्य हो जायगा।'

एक समयकी बात है, वाराहकल्प बीत रहा था। देवी सुरभीने दूध देना बंद कर दिया। उस समय त्रिलोकीमें दूधका अभाव हो गया था। तब देवता अत्यन्त चिन्तित होकर ब्रह्मलोकमें गये और उनकी स्तुति करने लगे। तदनन्तर इन्द्रने ब्रह्माजीकी आज्ञा पाकर देवी सुरभीकी स्तुति आरम्भ की—

इन्द्रने कहा—'देवीको नमस्कार है। महादेवी सुरभीको बार-बार नमस्कार है। जगदम्बिके! तुम गौओंकी आदिकारण हो, तुम्हें नमस्कार है। श्रीराधा-प्रियाको नमस्कार है। देवी पद्मांशाको बार-बार नमस्कार है। श्रीकृष्ण-प्रियाको नमस्कार है। गौओंको उत्पन्न करनेवाली देवीको बार-बार नमस्कार है। सबके लिये जो कल्पवृक्षस्वरूपा हैं तथा क्षीर, धन और बुद्धि प्रदान करनेके लिये सदा तत्पर रहती हैं, उन भगवती सुरभीको बार-बार नमस्कार है। शुभा, सुभद्रा और गोप्रदा नामसे शोभा पानेवाली देवीको बार-बार नमस्कार है। यश, कीर्ति और धर्म प्रदान करनेवाली देवीको बार-बार नमस्कार है*।'

इस प्रकार स्तुति सुनते ही जगज्जननी भगवती सुरभी संतुष्ट और प्रसन्न हो उस ब्रह्मलोकमे ही प्रकट हो गयीं। वह सनातनी देवी देवराज इन्द्रको परम दुर्लभ अभीष्ट वर देकर गोलोकको चली गयीं। देवता भी अपने-अपने स्थानोको चले गये। नारद! अब विश्व सहसा दूधसे परिपूर्ण हो गया। दूधसे घृत बना और घृतसे यज्ञ सम्पन्न होने लगे तथा उनसे देवता सतुष्ट हुए।

जो मानव इस महान् पवित्र स्तोत्रका भक्तिपूर्वक पाठ करेगा, वह गोधनसे सम्पन्न, प्रचुर सम्पत्तिवाला, परम यशस्वी और पुत्रवान् हो जायगा। उसे सम्पूर्ण तीर्थोंमे स्नान करने तथा अखिल यज्ञोमे दीक्षित होनेका फल सुलभ होगा। ऐसा पुरुष इस लोकमे सुख भोगकर अन्तमें भगवान् श्रीकृष्णके धामको प्राप्त होता है। वह वहाँ चिरकालतक रहकर भगवान्‌की सेवा करता रहता है। पुनः इस संसारमें उसे नहीं आना पड़ता। वह ब्रह्मलोकमें ब्रह्माजीका पुत्र होकर वहीं निवास पाता है।† (देवीभागवत)

═══✻✻✻═══

गोदावरीकी उत्पत्ति-कथा

उन दिनोकी बात है, जब महर्षि गौतम ब्रह्मगिरिके आश्रममें रहते थे। अनावृष्टिके कारण घोर अकाल पड़ा। अन्नके बिना चारों ओर हाहाकार मच गया। उस समय मुनिवर श्रीवसिष्ठजी कुछ मुनियोके साथ गौतमके आश्रमपर पहुँचे। महर्षि गौतमने उनका सादर अभिनन्दन किया और अन्न देकर उनके प्राणोंकी रक्षा की। वे प्रतिदिन प्रातःकाल अन्नके बीज मैदानमें बो देते। बीज उनके तपके प्रभावसे संध्याके पूर्व ही बढ़कर फल दे देते। अन्न एकत्रित कर लिया जाता। वही ऋषियोंके आहारके काम आता।

बारह वर्षके बाद पुनः वृष्टि हुई। तप्त वसुन्धरा शीतल हो गयी। सर्वत्र हरियाली दीखने लगी। उस समय कैलास पर्वतपर महासती श्रीपार्वतीने श्रीशंकरजीसे कहा—'आप

---

* पुरन्दर उवाच—
नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः। गवा बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके॥
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः। नमः कृष्णप्रियायै च गवा मात्रे नमो नमः॥
कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परे। क्षीरदायै धनदायै बुद्धिदायै नमो नमः॥
शुभायै च सुभद्रायै गोप्रदायै नमो नमः। यशोदायै कीर्तिदायै धर्मदायै नमो नमः॥
(देवीभागवत ९। ४९। २४-२७)

† ब्रह्मवैवर्तपुराणके प्रकृतिखण्ड अध्याय ४७ मे यही आख्यान प्राय. यथावत् वर्णित है।

गङ्गाजीको सिरपर और मुझे अपने अङ्कमे रखकर मेरा अपमान करते हैं।' परंतु श्रीशंकरजीने उनकी बातपर कोई ध्यान नहीं दिया।

खिन्न होकर श्रीपार्वतीजीने अपने आज्ञाकारी पुत्र श्रीगणेशजीके पास जाकर अपनी व्यथा-कथा कह सुनायी। माताके दुःखसे दुखित होकर श्रीगणेशजी अपने बडे भाई कार्तिकेयके साथ दीन ब्राह्मणके वेशमे महर्षि गौतमकी कुटियापर पहुँचे। वहाँपर उन्होने ऋषियोसे कहा—'ऋषियो! दुर्भिक्ष समाप्त हो गया। पृथिवी अन्न-जलसे पूरित हो गयी है। अब आप लोगोंका इस आश्रमपर अधिक समयतक ठहरना उचित नहीं है।'

ब्राह्मण-वेषधारी श्रीगणेश और कार्तिकेयकी यह बात ऋषियोके मनमें बैठ गयी। वे चलनेके लिये तैयार हो गये। उस समय महर्षि गौतमने कहा—'दुष्कालके समय अन्न देकर मैंने आपलोगोके प्राणोंकी रक्षा की है। अब मेरी इच्छाके विपरीत आपलोगोका जाना उत्तम नहीं है। यहाँ कुछ समयतक और रहनेके लिये मैं आपलोगोंसे अनुरोध करता हूँ।'

गौतमकी बात सुनकर ऋषियोने अपने जानेका विचार छोड़ दिया।

तब श्रीगणेशजीने श्रीकार्तिकेयजीसे कहा—'आप गौतम ऋषिके खेतमें गायका रूप धारण करके चले जायँ। ऋषिकी दृष्टि पड़ते ही आप गिर पडें, जैसे मृत्यु हो गयी हो।' कार्तिकेयने वैसा ही किया। गायके वेषमे वे गौतम ऋषिके खेतमें जाकर खेती नष्ट करने लगे। गौतमने इन्हे देखा, बस, वे मृत्युतुल्य हो धराशायी हो गये।

यह दृश्य देखते ही ऋषिगण वहाँसे चलनेकी तैयारी करने लगे। गौतमके आग्रह करनेपर ऋषियोने कहा—'गायकी मृत्युसे यह पापस्थली हो गयी है। अतः नृपश्रेष्ठ भगीरथकी भाँति यदि आप श्रीगङ्गाजीको यहाँ लाकर गायको जीवित और इस स्थानको पवित्र करे तो हमलोग यहाँ रह सकते हैं।'

ऋषियोंकी बात सुनकर महर्षि गौतम श्रीगङ्गाजीको लानेके लिये त्र्यम्बक पर्वतपर जाकर तपस्या करने लगे। अन्तमे प्रसन्न होनेपर श्रीशकरजीने उन्हें श्रीगङ्गाजीको देनेका वचन दिया। तव गौतमने पुनः कहा—'भगवन्! ये गङ्गाजी गायका उद्धार करके सागरमे मिले और मेरे नामको भी प्रसिद्ध करे।' श्रीशंकरजीने कहा—'यह गङ्गा गौतमी और गोदावरीके नामसे प्रसिद्ध होगी तथा अत्यन्त पुण्य देनेवाली होगी।'

इतना कहकर श्रीशंकरजीने श्रीगङ्गाजीको महर्षि गौतमके हाथो दे दिया। गौतम प्रसन्नचित्त हो [illegible] लौटे। वहाँपर श्रीगङ्गाजीकी तीन धार हो गयी। एक धार मृत गौको जीवित कर दक्षिणकी ओर सागरमे मिल गयी।



दूसरी धार पृथिवीको वेधकर पातालमें और [illegible] आकाश-मार्गसे स्वर्गको चली गयी। [illegible] मिलनेवाली पुण्यतोया गङ्गा गोदावरी और [illegible] प्रसिद्ध है।

(ब्रह्मपुराणान्तर्गत [illegible])

गोकृते स्त्रीकृते चैव गुरुविप्रकृतेऽपि वा। हन्यन्ते ये तु गजेन्द्र शक्रलोकं व्रजन्ति ते॥

गोरक्षा, अबला स्त्रीकी रक्षा, गुरु और ब्राह्मणकी रक्षाके लिये जो प्राण दे देते हैं, [illegible] इन्द्रलोक (स्वर्ग) में जाते हैं। (महा०, आश्व०, वैष्णव०)

गौका अग्रपूजासे सम्मान

(श्रीजगन्नाथजी वेदालङ्कार)

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥

इस स्वस्ति-बोधक श्लोकका आशय यह है कि पृथ्वीतलके सभी राजा न्यायपूर्ण मार्गसे सब प्रजाओंका पालन करें, गौओं और ब्राह्मणोंका सदा-सर्वदा कल्याण हो तथा समस्त प्राणी सुखी रहें।

प्राचीन कालमें गौओंका अग्रपूजासे सम्मान किया जाता था। उन्हें सब प्रकारकी सुख-सुविधा प्रदान की जाती थी।

अथर्ववेदके सूक्त ६। २७। ३ से लेकर ६। २८। १-२ तक कहा गया है कि 'शिवो गोभ्य उत पुरुषेभ्यो नो अस्तु।' 'परि गां नयामः।' 'परीमे गामनेषत।' अर्थात् मनुष्य अपने लिये ही नहीं गो-देवताओके लिये भी कल्याणकारी बने। वे गौओंको चरनेके लिये बाहर ले जायँ, जिससे वे संतुष्ट रहे, चरकर पूर्णतया तृप्त हो जायँ, नीरोग रहें। वे मनुष्यो और गौओंको समानरूपसे सुखी रखे। गायोंको सर्वप्रथम मान्यता मिले—इस प्रकारकी बुद्धि हमें प्राप्त हो। गौको अग्रभागमें रखनेका अर्थ उसका मुख्यतया सत्कार करना है। प्राणियोंको अग्रपूजाका मान देते हुए सर्वप्रथम मान गौओंको देना चाहिये। उन्हें प्रमुख स्थान दें, तभी मानवजातिका कल्याण होगा। सभी प्रकारके धनों और अन्नोंमे गोरसका स्थान प्रमुख है। खाने-पीनेमें दूध, दही, घी, छाछ आदि गव्य पदार्थ प्रमुख रहने चाहिये। इसके लिये अग्रपूजाका स्थान गौको देना चाहिये।

गौओके चरनेके लिये गोचरभूमिकी प्रथा अत्यन्त प्राचीन है। अथर्ववेदमें कहा गया है—

एता एना व्याकरं खिले गा विष्ठिता इव।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम्॥
(७। १२०। ४)

अर्थात् 'गोचरभूमिपर बैठी हुई गायोके समान इन-इन मनोवृत्तियोंको मैं अलग-अलग करता हूँ। जो पुण्यकारक सुविचाररूप लक्ष्मियाँ हैं वे आनन्दसे मेरे अंदर रहें। जो पापी वृत्तियाँ हैं उनका मैं नाश कर चुका हूँ।' इस मन्त्रमें गोचरभूमिमें गौओंके बैठनेका उल्लेख है। गोचरभूमिमें गौओंको रहने देना है और अन्य पशुओंको वहाँसे दूर करना है। गोचरभूमिमें केवल गौएँ ही चरती रहें, अन्य पशु वहाँका घास न खायें। गोचरभूमिपर जल-सिंचनकी उत्तम व्यवस्था करनी चाहिये। उसपर जल-सिंचन करे, जिससे पर्याप्त मात्रामें जल मिलकर उत्तम घास जमे, जो गौओंको खानेके लिये मिले। वेद कहता है—गौएँ जौके खेतकी ओर जाती हैं—

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा।
मर्य इव स्व ओक्ये॥ (ऋ० १। ९१। १३)

'हे सोमदेव! हमारे अन्तःकरणमे तू जिस प्रकार गौएँ जौके खेतोंमें आनन्दपूर्वक संचरण करती हैं और मानव अपने निजी घरमे सुखी होता है, वैसे ही रमण कर।'

इसके अतिरिक्त गायोंको घास और पानी शुद्ध मिलना चाहिये। उनके लिये उत्तम प्याऊ बनाने चाहिये।

ऋग्वेद (१। ७। ३) में गौओंको चरनेके लिये पहाड़ोपर भेजनेका निर्देश किया गया है। पर्वत भी गोचरभूमि है। पर्वत गायोंका संरक्षण करनेवाला है। 'गोभिरद्रिमैरयत्।' अर्थात् अनेक गौएँ साथ लेकर उन्हें पर्वतपर चरानेके लिये जाना उचित है। पर्वतको गोत्र कहा गया है। वह गौओंका संरक्षक है।

हमारी गौएँ जिधर पानी पीती हैं, उन नदियोंकी स्तुति की जाती है। गौओके कारण नदियोंका महत्त्व बढ़ जाता है। हमारी गौएँ जहाँ पानी पीती हैं, वे दिव्य जल-प्रवाह पवित्र हों।

'अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः।
सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः।'
(ऋ० १। २३। १८, अथर्व० १। ४। ३)

'उन नदियोंको मैं हविर्भाग देता हूँ। जलके अंदर

अमृत है—'अप्सु अन्तः अमृतम्', जलोंमें ओषधि गुण है—'अप्सु भेषजम्।'

गोमाता पूज्य है

यजुर्वेद (३। २०)में कहा गया है कि 'हे गौओ! तुम पूज्य हो, मैं भी तुम्हारी-जैसी पूज्यता प्राप्त करूँ— महस्थ महो वो भक्षीय यूयं महः स्थ पूज्यन्पाः स्थ। अतो वो [illegible] पूज्यानां प्रसादात् अहमपि महो भक्षीय पूज्यत्वं सेवेय।'

पश्वे तोकाय शं गवे। (ऋ० ८। ५। २०) अर्थात् हमारे पशु, संतान और गौके लिये सब प्रकारकी शान्ति प्राप्त हो।



गाय धरतीके लिये वरदान है

(योगिराज श्रीबलिराजसिंहजी)

वेदों, पुराणों, स्मृतियो, श्रीमद्भागवत, महाभारत तथा अन्यान्य ग्रन्थोंमें गोमहिमापर प्रचुर साहित्य उपलब्ध होता है। गोमातामें समस्त देवताओं, ऋषियो, मुनियों और तीर्थोंका निवास बताया गया है। गोरक्षाके लिये ईश्वरको स्वयं अवतार लेना पड़ता है। गाय धरतीके सदृश मानी जाती है। राक्षसोंके अत्याचारसे पीडित होकर धरतीद्वारा गायका रूप धारण कर परमात्माकी गुहार लगानेकी घटना धर्मग्रन्थोंमे वर्णित है। गोमहिमा अनन्त है, जिसके पीछे परमब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णके स्वरूपमें विचरण करता है।

गोदुग्धसे चमत्कारी उपचार

हमारे यहाँ गायको माता और दुग्धको अमृत माना जाता है और इसका चमत्कारी प्रभाव आज भी दिखायी पड़ता है। घटना सम्भवत: १९४५ के आस-पासकी है। काशीके प्रख्यात वैद्य पं० राजेश्वरदत्त शास्त्रीके यहाँ बिहारके एक सम्पन्न जमींदार अत्यन्त क्षीण अवस्थामें अपनी पत्नीको लेकर उपचारके लिये आये। उनकी पत्नी ३० वर्षकी आयुमें ही सूखकर काँटा हो गयी थीं। पूरा शरीर झँवरा गया था और वे भयानक पीडासे बेचैन थीं। जमींदारने बताया कि कई वर्षोसे वे उपचारके लिये चारों ओर दौडकर थक गये, किंतु कोई लाभ नहीं हुआ। किसीको इनके रोगका थाह नहीं लगता। यह सुनकर वैद्यजीने मुस्कराते हुए कहा—'अच्छा अब आप शान्त हो जायँ।' इतना कहकर वैद्यजीने उनकी पत्नीकी नाड़ी देखी। कुछ देर विचार किया और जमींदारको एकान्तमें बताया कि इन्हें कैंसर हुआ है, किंतु घबरानेकी कोई बात नहीं है। भगवान्का नाम लेकर धैर्य और परहेजसे यदि दवा करेंगे तो छः माहमें ठीक हो जायँगी। इनकी दवा और भोजन केवल काली (श्यामा) गायका दूध और काली तुलसीकी पत्ती होगा। अत: ये जितना खा-पी सके वही दूध और पत्ती दीजिये। यदि स्वाद बदलनेकी इच्छा हो तो मूँगकी दालका रस और जौकी रोटी दे सकते हैं। साथमें कोई भी दवा लेना गोदुग्ध और तुलसीका अपमान होगा और उससे हानि भी हो सकती है। गाय और तुलसी दोनों हमारी माताएँ हैं। वैद्यजीकी बतायी दवापर पूर्ण विश्वास रखते हुए वे अपनी पत्नीके साथ वापस लौट आये और तदनुसार ही गोदुग्ध और तुलसीका सेवन करने लगे। धीरे-धीरे समय बीतता गया।

छः माह बाद जमींदार अपनी पत्नीके साथ [illegible] वाराणसीमे वैद्यजीके यहाँ आये तो स्वस्थ, सुन्दर एवं प्रसन्न महिलाको देखते ही वे पहचान गये और स्वयं हर्षित होकर बोल पड़े—'देखा न गोदुग्ध और तुलसीका चमत्कार।' जमींदारने बताया—उन्होने काली तुलसीका एक बड़ा बगीचा ही लगवा दिया था और चार-पाँच काली गायें रख ली थीं। महीनेभर सेवन करते-करते उनकी पत्नी पूर्ण स्वस्थ हो गयीं। जमींदारने श्रद्धापूर्वक वैद्यजीको बहुत आग्रहपूर्वक कुछ देना चाहा और ग्रहण करनेकी प्रार्थना की, किंतु वे बोले—'मैंने अपने औषधालयसे [illegible] कोई दवा दी नहीं तो पैसे किस बातके लूँ। हाँ, [illegible] आपपर कृपा की है, अत: यह धन किसी [illegible] दे दीजिये।'

वैद्य पं० शास्त्रीके दुग्धचमत्कारकी [illegible] घटनाकी चर्चा वाराणसीके बुजुर्ग [illegible]

कैंसरपर सम्पूर्ण विश्वमें रिसर्च हो रहा है और अभीतक यह रोग असाध्य ही माना जाता है, किंतु शास्त्रीजीने पचासों वर्ष पूर्व गोदुग्धके वलपर सफलता प्राप्त की थी। इसमें निश्चित ही गोमहिमाके साथ ही उनकी आस्था एवं परोपकारी भावना जुड़ी हुई थी।

गोघृतके चमत्कार

श्यामा गायके घृतके प्रयोगसे मैंने स्वयं अनेक दुःखी व्यक्तियोंको रोगमुक्त होते देखा है। इससे गठिया, कुष्ठरोग, जले तथा कटे घावके दाग, चेहरेकी झाँई, नेत्र-विकार, जलन, मुँहका फटना आदिपर आश्चर्यजनक लाभ होता है।

इसी प्रकारकी एक घटना और है। कुछ वर्ष पूर्व एक व्यक्तिको गठिया रोग हो गया। रुग्ण व्यक्ति स्वयं सम्पन्न थे और उनके यहाँ सौभाग्यसे एक श्यामा गाय भी थी। उस गायको एक माहतक हरे चारेके अतिरिक्त ढाई-ढाई सौ ग्रामकी मात्रामें गेहूँ, गुड़, कच्ची गरी, कच्ची मूँगफली, आमा हल्दी, चना, सफेद दूब, बेलकी पत्ती, महुआ, सेंधा नमक, सफेद नमक तथा अजवाइन और मेथी ५०-५०ग्राम प्रतिदिनके हिसाबसे एक माहतक खिलाया गया। गर्मीका समय था, अतः गायको अत्यन्त स्वच्छ वातावरणमें रखकर दोनों समय नहलाया-धुलाया जाता था। प्रातः और सायं थोड़ा गुड़ खिलाकर तीसरे दिनसे निकाले गये उक्त गायके दूधसे ग्रामीण पद्धतिके अनुसार गोहरीकी आँचपर मिट्टीके पात्रमें पकाये गये दूधसे दही तैयार कर उसका घी निकाला गया और इसी घीकी मालिशसे हफ्ते भरमें गठिया गायब हो गया। इस घटनासे आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता हुई और उस घीका प्रयोग कई लोगोंपर किया गया। जिसमें शत-प्रतिशत सफलता मिली। मेरे एक मित्रकी ऑपरेशनके दौरान नाकमें हफ्तों नली पड़नेके कारण आवाज चली गयी थी। प्रयास करनेके वावजूद १५-२० दिन वाद भी वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। मजवूर होकर वे अपनी बातें कागजपर लिख देते थे। तीन-चार दिन गलेमें उक्त घीकी मालिश करते ही उनकी आवाज खुलने लगी और ८-१० दिनमें वे पूर्ववत् बोलने लगे।

तीसरी घटना एक युवकसे सम्बन्धित है। प्रिंटिंग मशीनसे दवकर उसके बायें हाथकी हथेली तथा कई अंगुलियाँ वुरी तरह फट गयीं। अँगूठा तो कटकर अलग हो गया। तत्परतासे ऑपरेशन एवं दवाके बाद दो-ढाई माहमें जब उसका हाथ ठीक हो गया तो चमड़ेके तनाव और ऑपरेशनके दागसे उसकी अंगुलियाँ खुल नहीं पाती थीं और पूरी हथेली बदसूरत लग रही थी। इस घीकी मालिशसे महीने भरमें ही शेष चारों अंगुलियाँ और हथेली पूर्ववत् हो गयीं और ऑपरेशनका दाग एक सामान्य रेखाके रूपमें शेष रह गया।

इसी प्रकार एक और घटना है। वाराणसी नगरके एक सम्भ्रान्त परिवारकी सुशील एवं सुन्दर कन्याके गलेमें जगह-जगह सफेद दाग हो जानेसे पूरा परिवार चिन्तित था। लड़की स्वयं हीन भावनाके कारण उदास दिखायी देती थी। उनके आग्रहपर उस लड़कीको श्यामा गायका वही घृत लगानेके लिये दिया गया। महीना बीतते-बीतते सफेद दागके स्थानपर लाली आने लगी और दूसरे माहमें उसकी त्वचा एक रंगकी हो गयी। उसे देखकर कोई कह नहीं सकता कि गलेमें कभी कोई दाग था।

इसी प्रकार जोड़ोंमें दर्द, नेत्र-सम्बन्धी विकार, चोट, सूजन, फोड़े-फुंसी आदि अनेक विकारोंसे पीडित अनेक लोगोंका उक्त घृतसे उपचार किया गया, जिसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई।

गोमूत्र एवं गोमयके दिव्य गुण

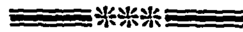
आयुर्वेदिक ग्रन्थोंमें गायकी बड़ी महिमा गायी गयी है। धार्मिक अनुष्ठानोंमें पञ्चगव्यका प्रयोग सर्वविदित है। गायका गोबर इतना पवित्र माना जाता है कि उससे लीपे बिना पूजा अथवा यज्ञस्थल पवित्र नहीं होता। गोबरमें रोग-निवारणके आश्चर्यजनक गुण पाये जाते हैं। इसकी गन्धसे हानिकारक विषैले जीव-जन्तु मर जाते हैं। गोमूत्रके बारेमें 'भावप्रकाश' कहता है कि यह चरपरा, कड़ुआ, तीक्ष्ण, गर्म, खारा, कसैला, हल्का, अग्निप्रदीपक, मेधाके लिये हितकर, कफ, वात, शूल, गुल्म, उदर, खजुली, नेत्ररोग, मुखरोग, किलास, आमवात-रोग, बस्तिरोग, कोढ़, खाँसी, श्वाँस, सूजन, कामला एवं पांडुरोग-नाशक है। कानमें डालनेसे कानका दर्द दूर हो जाता है।

अंग्रेजी दवाओंसे प्रथम चरणमें फाइलेरियाको कुछ दिनोंके लिये भले दबा दिया जाय, किंतु पतले धागेकी तरह लंबे इसके कीड़ोंको केवल गोमूत्रसे ही समाप्त किया जा सकता है। ज्ञातव्य है कि ये कीड़े शरीरके

भीतर रातमें डोलकर पीडा पहुँचाते हैं और पीलपाँव आदिको उभारकर शरीरको विकृत तथा स्वास्थ्यको चौपट कर देते हैं। फाइलेरियासे पीडित कई व्यक्तियोने चालीस दिनतक लगातार गोमूत्र पीकर फाइलेरियासे मुक्ति पायी है, यह मेरा अपना अनुभव है।

यह सत्य है कि गोवंशसे सम्पूर्ण भारत उऋण नहीं हो सकता, क्योंकि अनादिकालसे इसपर हमारा भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन आधारित रहा है, किंतु इधर कुछ दशकोंसे वैज्ञानिक प्रयोगोंके कारण कृषिका मशीनीकरण हो गया और बाजारू डिब्बे-बंद घृत और दूधसे लोग अब काम चलाने लगे। ऐसी दशामें हमें गोवंश अर्थहीन-सा प्रतीत होने लगा।

नास्तिकता, स्वेच्छाचरण एवं धर्मदर्शनके प्रति [illegible]भाव होनेके कारण गायके धार्मिक एवं पारम्परिक मूल्योंको लोग भूल गये। यही कारण है कि आज गोवंशपर कुठार उठानेमें कोई हिचक और भय नहीं रह गया। गोवंशकी रक्षाके लिये आन्दोलन और सत्याग्रह करनेवालोंकी भी कमी नहीं है, किंतु इसमे पूर्ण सफलता तभी मिलेगी, जब सम्पूर्ण मानव-समाज गोमहिमाकी जानकारी प्राप्त कर लेगा। प्राणी जब यह जान जायगा कि गाय धरतीके लिये वरदान है तो उसकी रक्षामें वह स्वयं तत्पर होगा। किसीके उपदेश, आदेशकी आवश्यकता नहीं होगी।



गौ भारतीय संस्कृतिका मेरुदण्ड

(डॉ० श्रीयुद्धसेनजी चतुर्वेदी)

गौ हमारी संस्कृतिका प्राण है। यह गङ्गा, गोमती, गायत्री, गीता, गोवर्धन और गोविन्दकी भाँति पवित्र है। गोपालन, गोसेवा, गो-दान हमारी संस्कृतिकी महान् परम्परा रही है। गोसेवा सुख और समृद्धिका मार्ग प्रशस्त करती है। यह लक्ष्मी-प्राप्ति, विद्या-प्राप्ति और पुत्र-प्राप्तिका साधन है। गो-दर्शन, गोस्पर्श, गो-पूजन तथा गो-स्मरणसे मनुष्यके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत आदि सभी पदार्थ अति पावन, आरोग्यप्रद, आयुवर्धक और शक्तिवर्धक हैं।

गौके समान इस संसारमे कोई क्षमाशील प्राणी नहीं है। गौ अपने अमृतमय गोरसका पान कराकर इस भौतिक जगत्में हमारा कल्याण करती है और मृत्युके पश्चात् भी हमारे कल्याणका मार्ग प्रशस्त करती है। परलोकगामी गोदायी पथिक गौ माताकी पूँछ पकड़कर वैतरणी पार कर लेता है। महाभारतके अनुशासनपर्व (५१। ३३) में लिखा है—

गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः।
गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम्॥

'गौएँ स्वर्गकी सीढ़ी है, गौएँ स्वर्गमे भी पूजनीय हैं। गौएँ समस्त मनोवाञ्छित वस्तुओंको देनेवाली हैं। अतः गौओंसे बढ़कर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।'

गौसे चारों पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी सिद्धि होती है। गौ सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी है। गोदर्शनसे समस्त देवताओके दर्शन और समस्त तीर्थोंका पुण्य-लाभ प्राप्त होता है। जहाँ गौएँ निवास करती हैं, वहाँ सर्वत्र सुख और शान्तिका वास होता है। गौके शरीरमे ३३ कोटि देवता निवास करते हैं। गौके खुरसे उडनेवाली धूल भी अत्यन्त पवित्र है। श्रीकृष्ण गाय चराकर संध्या-समय जब घर लौटते हैं तो गोरजसे अलकृत उनके मुखकी अलौकिक शोभा देखने योग्य होती है।

गौएँ सर्वदा लक्ष्मीकी मूल हैं। गौमें पापकी स्थिति नहीं होती। गौ और मनुष्यमे परस्पर बन्धुत्वका सम्बन्ध है। गौ-विहीन गृह बन्धुशून्य गृह है—

गावो बन्धुर्मनुष्याणां मनुष्या बान्धवा गवाम्॥
गौश्च यस्मिन् गृहे नास्ति तद् बन्धुरहितं गृहम्।

(पद्म०, सृष्टि० ५०। [illegible])

समुद्र-मन्थनके समय प्राप्त होनेवाले रत्नोंमें कामधेनुका भी उल्लेख है, जो गोधनकी श्रेष्ठताको [illegible] है। पुराणोमे लिखा है कि सर्वप्रथम वेद, अग्नि, गौ और ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति यज्ञ-चक्र चलानेके [illegible]। ब्राह्मणद्वारा यज्ञानुष्ठान सम्पादित किये जाते हैं, [illegible] देवताओंको आहुतियाँ दी जाती हैं—'[illegible]

भवन्ति' तथा गौ ही हमें देवताओंको अर्पित करने योग्य हवि प्रदान करती है। गौके घृतसे देवताओंको हवि दी जाती है तथा गो-संतति (बैलों) द्वारा भूमिको जोतकर गेहूँ, चावल, जौ, तिल आदि हविष्यान्नका उत्पादन किया जाता है। यज्ञभूमिको गोमूत्रसे शुद्ध करके गोबरके कंडोंद्वारा यज्ञाग्निको प्रज्वलित किया जाता है। यज्ञ प्रारम्भ करनेसे पूर्व शरीर-शुद्धिके लिये पञ्चगव्य लेना होता है, जो गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र और गोबरसे बनाया जाता है।

अग्निपुराणमें लिखा है कि गायमें सब देवताओंका निवास होनेसे इसका दान अत्यन्त पुण्यकारी है। पौराणिक आख्यानों आदिसे स्पष्ट होता है कि प्राचीन कालसे ही सम्माननीय अतिथियोंकी गोदानद्वारा अभिनन्दन करनेकी परम्परा प्रतिष्ठित थी। अक्रूरके व्रजमें पहुँचनेपर श्रीकृष्णने उनका मधुपर्क, पवित्र अन्न तथा गौ भेंट करके अभिनन्दन किया (श्रीमद्भा० १०। ३८। ३८-३९)। इसी प्रकार सुदामाके द्वारकापुरी पहुँचनेपर श्रीकृष्णने उनका स्वागत 'गौ' भेंट करके किया। इतना ही नहीं जनकपुरीमें राजा बहुलाश्वने श्रीकृष्णका सम्मान उन्हें मधुपर्कके साथ-साथ गाय और बैल भेंट करके किया। हिंदू-विवाहमें कन्या-पक्षके लोग वरको कन्यादानके बाद उपहारस्वरूप आज भी गोदान करना अच्छा समझते हैं।

महाभारतमें लिखा है कि अनेक पुण्योंके प्रभावसे गोलोककी प्राप्ति होती है। गोलोकमें न कोई अनिष्ट होता है, न कोई व्याधि होती है और न किसी प्रकारकी कोई आपत्ति आती है।

भगवान् श्रीकृष्णने 'गोविन्द' और 'गोपाल' बनकर गोवर्धनको धारण किया और गौ-गोपोंकी रक्षा की। श्रीकृष्णका गौओंके साथ अभिन्न सम्बन्ध है। गौएँ भी अपनेको श्रीकृष्ण-के सम्पर्कमें आकर धन्य समझती हैं। वे उन्हें स्नेहमयी दृष्टिसे निहारती हैं। वंशीकी टेर सुनकर चाहे वे कितनी भी दूर क्यों न हों दौड़कर उनके पास पहुँचकर चारों ओरसे उन्हें घेरकर खड़ी हो जाती हैं। व्रजके भक्त कवियोंने लिखा है—

'गोविन्द गिरि चढ़ गाय बुलावत।
गायँ बुलाई धूमर-धौरी टेरत वेणु बजाय॥'

गोविन्दको गायोंके बीच रहना ही रुचिकर लगता है। छीतस्वामीने लिखा है—

आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत गाय
गोविन्द को गायन बिच रहिबौ ही भावै।
गायन के संग धावै गायन मे सचुपावै
गायन की खुर रज अंग लपटावै॥
गायन सों बृज छायौ वैकुण्ठ हूँ कौ
सुख बिसराय कै गायन हेतु गिरि कर लै उठायो।
'छीत स्वामी' गिरिधारी विट्ठलेश वपुधारी
गोपन कौ वेष धारें गायन में आवै॥

गौओंके सम्मानकी गाथाएँ हमारे इतिहासमें भी भरी पड़ी हैं। सम्राट् दिलीपने गौकी रक्षाके लिये अपने प्राणोंकी आहुति देनेमें भी संकोच नहीं किया। महर्षि वसिष्ठ, महर्षि जमदग्नि, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप, पंजाब-केसरी महाराजा रणजीतसिंह—सभी महान् गो-भक्त थे। मुसलमान सेनानायक जब यह अनुभव करते थे कि वे यहाँके वीर राजपूत योद्धाओंसे मोर्चा न ले सकेंगे तो अपनी सेनाके आगे गायें कर देते थे। वीर राजपूत पराधीनता स्वीकार कर लेते थे, लेकिन गौओंपर कभी शस्त्र नहीं उठाते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वतीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि गौकी हत्या पूर्णतः त्याज्य है, क्योंकि इससे राजा और प्रजा दोनोंका समूल नाश हो जाता है।

उपर्युक्त दृष्टान्तोंसे यह स्पष्ट होता है कि गौ हमारी सभ्यता और संस्कृतिकी मेरुदण्ड है। गौविहीन भारतीय संस्कृतिकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। गौ हमारी राष्ट्र-लक्ष्मी है। वह हमारी समृद्धिकी आधारशिला है। गौने हमें जीवनदायिनी शक्ति दी है, हमें आरोग्य, आनन्द और शान्ति प्रदान की है। गौ हमारी सारी आर्थिक योजनाओं और सारी आध्यात्मिक शक्तियोंकी स्रोत है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि गौ तो हमारी कल्याणकारिणी माता है। कैसी विडम्बना है कि जिस गौको हम कामधेनु, अवध्या और वन्दनीया मानते हैं, उसीका वध करनेमें हमें आज तनिक भी संकोच नहीं होता! कितने दुःखका विषय है कि आज भौतिकवादी चकाचौंधसे हम इतने भ्रमित हो गये हैं कि हमें अपने कर्तव्योंका भी ज्ञान नहीं रहा। हमें यह भलीभाँति समझ लेना चाहिये कि गौके बिना हम शून्य हैं, अतः हमें उसे सदा नमस्कार करना चाहिये, सदा उसकी सेवा करनी चाहिये।

***

भारतीय संस्कृतिकी मूलाधार—गौ

(योगी श्रीआदित्यनाथजी)

गौ प्राचीन कालसे ही भारतीय धर्म और संस्कृति-सभ्यताकी मूलाधार रही है। भारतीय संस्कृतिने प्राचीन कालसे ही गोभक्ति, गोपालनको अपने जीवनका सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य माना है। वेद-शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण तथा इतिहास गौकी उत्कृष्ट महिमाओंसे ओत-प्रोत हैं। स्वयं वेद गायको नमन करता है—

'अघ्न्ये ते रूपाय नमः'।

हे अवध्या गौ! तेरे स्वरूपको प्रणाम है। ऋग्वेदमें कहा गया है कि जिस स्थानपर गाय सुखपूर्वक निवास करती है, वहाँकी रजतक पवित्र हो जाती है, वह स्थान तीर्थ बन जाता है। हमारे जन्मसे मृत्युपर्यन्त सभी संस्कारोंमें पञ्चगव्य और पञ्चामृतकी अनिवार्य अपेक्षा रहती है। गोदानके बिना हमारा कोई भी धार्मिक कृत्य सम्पन्न नहीं होता। गौ अपनी उत्पत्तिके समयसे ही भारतके लिये पूजनीय रही है। उसके दर्शन, पूजन, सेवा-शुश्रूषा आदिमें आस्तिक जन पुण्य मानते हैं। व्रत, जप, उपवास सभीमें गौ और गोप्रदत्त पदार्थ परमावश्यक है। गायका दूध अमृत-तुल्य होता है जो शरीर और मस्तिष्कको पुष्ट करता है। गोमूत्र गङ्गाजलके समान पवित्र माना जाता है और गोबरमे साक्षात् लक्ष्मीका निवास है। शास्त्रोंके अनुसार हमारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग, मांस-मज्जा-चर्म और अस्थिमें स्थित पापोंका विनाश पञ्चगव्य (गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र एवं गोमय) के पानसे होता है। आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञानके अनुसार भी शरीर-स्वास्थ्य एवं रोग-निवृत्तिके लिये गायके दूध, दही, मट्ठा, मक्खन, घृत, मूत्र, गोबर आदिका अत्यन्त उपयोग है।

गायके शरीरमें सभी देवताओंका निवास है। अतः गौ सर्वदेवमयी है। पुरातन कालसे ही भारतीय संस्कृतिमें गाय श्रद्धाका पात्र रही है। भगवान् श्रीरामने यौवनमें प्रवेश करते समय अपने जीवनका लक्ष्य 'गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्यास्य सुखाय च' के पवित्र संकल्पकी पूर्तिके लिये ही उद्घोषित किया था। गायके प्रति भारतीय भावना कितनी श्रद्धा और कृतज्ञतासे ओत-प्रोत थी, यह इस श्लोकसे स्पष्ट होता है—

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

पुराणोंमें पद-पदपर गौकी अनन्त महिमा गायी गयी है। भारतीय संस्कृति ही नहीं, अपितु सारे विश्वमें गौका बडा सम्मान था। जैसे हम गौकी पूजा करते हैं, उसी प्रकार पारसी लोग साँड़की पूजा करते हैं। मिस्रके प्राचीन सिक्कोंपर बैलोंकी मूर्ति अङ्कित रहती है। ईसासे कई वर्ष पूर्व बने हुए पिरामिडोंमें बैलोंकी मूर्ति अङ्कित है।

भारतीय संस्कृति यज्ञ-प्रधान है। वेद, रामायण महाभारत आदि धार्मिक तथा ऐतिहासिक ग्रन्थोंमे यज्ञको ही सर्वोच्च स्थान दिया गया है। यज्ञ करनेसे पृथिवी, जल, वायु, तेज, आकाश—इन पञ्चभूतोंकी शुद्धि होती है। पञ्चभूतोके सामञ्जस्यसे मानव-शरीर बना है। अतः शरीरको सुरक्षित रखनेके लिये पञ्चभूतोका शुद्ध रूपोंमें उपयोग आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। यज्ञ करनेसे जो परमाणु निकलते हैं, वे बादलोको अपनी ओर खींचते हैं। जिससे वर्षा होती है। यज्ञमें गायके सूखे गोबरका प्रयोग किया जाता है। इस सूखे गोबरसे एक प्रकारका तेज निकलता है, जिससे लाखो विषैले कीट तत्क्षण ही नष्ट हो जाते हैं। गौके सूखे गोबरको जलानेसे मक्खी-मच्छर आदि मर जाते हैं। गौके दूध, दही और घी आदिमें वे सब पौष्टिक पदार्थ वर्तमान हैं जो अन्य किसी दुग्धादिमे नहीं पाये जाते। गोमूत्रमें कितने ही छोटे तथा बड़े रोगोंको दूर करनेकी शक्ति है, इसके यथाविधि सेवन करनेसे सभी प्रकारके उदर-रोग, नेत्ररोग, कर्णरोग आदिको मिटाया जा सकता है। कई संक्रामक रोग तो गौओंके स्पर्श की हुई वायु लगनेसे ही निवृत्त हो जाते हैं। गौके सम्पर्कमें रहनेसे चेचक-जैसे रोग नहीं होते। धर्म और संस्कृतिकी पोषक होनेके साथ-साथ गाय भारतकी कृषि-प्रधान अर्थ-व्यवस्थाकी भी रीढ़ है। कौटिल्य-अर्थशास्त्रमें गोपालन और गोरक्षणको बहुत महत्त्व दिया गया है। जिस भूमिमें खेती न होती हो उसे गोचर बनानेका सुझाव अर्थशास्त्रमें ही है। गौ धर्म और अर्थकी प्रबल पोषक है [illegible]

मोक्षकी प्राप्ति होती है तथा अर्थसे कामनाओकी सिद्धि होती है। इस प्रकार गौसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी प्राप्ति होती है। इसीलिये प्राचीन कालसे ही गौका भारतीय जीवनमें इतना ऊँचा महत्त्व है। हमारे देशमे गोपालन पश्चिमी देशोकी भाँति केवल दूधके लिये नहीं होता है, प्रत्युत अमृततुल्य दूधके अतिरिक्त खेत जोतनेके लिये एवं भार ढोनेके लिये बैल तथा भूमिकी उर्वरता बनाये रखनेके लिये उत्तम खाद भी हमें गायसे प्राप्त होती है, जिसके अभावमें हमारे राष्ट्रकी अर्थव्यवस्थाका सकट किसी प्रकार दूर नहीं किया जा सकता। हमारे देशमें लाखो एकड़ भूमि ऐसी है जहाँ ट्रैक्टरोंका उपयोग ही नहीं किया जा सकता।

आज गौको व्यावहारिक उपयोगिताकी दृष्टिसे भौतिक तुलापर तौला जा रहा है। हमे याद रखना चाहिये कि आजका भौतिक विज्ञान गौकी इस सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमोत्कृष्ट उपयोगिताका पता ही नहीं लगा सकता, जिसे भारतीय शास्त्रकारोंने अपनी दिव्य दृष्टिसे प्रत्यक्ष कर लिया था। गौकी धार्मिक महानता उसमें जिन सूक्ष्मातिसूक्ष्म-रूप तत्त्वोंकी प्रखरताके कारण है, उनकी खोज तथा जानकारीके लिये आधुनिक वैज्ञानिकोके भौतिक यन्त्र सदैव स्थूल ही रहेंगे। यही कारण है कि इक्कीसवीं सदीकी ओर अग्रसर 'गैढ' विज्ञानवेत्ता भी गोमाताके लोम-लोममें देवताओंके निवास-रहस्य और प्रातः गोदर्शन, गोपूजन, गोसेवा आदिका वास्तविक तथ्य समझनेमें असफल रहा है। गौका धार्मिक महत्त्व भाव-जगत्से सम्बन्ध रखता है और वह शास्त्र-प्रमाणद्वारा शुद्ध भारतीय संस्कृतिके दृष्टिकोणसे ही जाना जा सकता है। इन सब विशेषताओंके कारण गौको भारतीय संस्कृतिका मूलाधार कहा गया है।

मा हिंस्यात् सर्वाभूतानि

(स्वामी श्रीविज्ञानानन्दजी सरस्वती)

भारतीय सस्कृतिका मूल वेद है, इसलिये विश्वभरकी संस्कृतियोमें वह सर्वप्राचीन संस्कृति है। एकमात्र आर्य संस्कृति ही वैदिक कालसे लेकर आजतक अविच्छिन्न-रूपमे चलती चली आ रही है, यह इसकी विशेषता है। विश्वमें कितनी ही नवीन संस्कृतियाँ उत्पन्न हुई तथा धर्म-मजहब उत्पन्न हुए और कालके मुखमें समा गये, इनकी कोई गिनती नहीं है। इस आर्य-हिन्दू-संस्कृतिपर भी समय-समयपर बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ आती रहीं और उत्थान-पतन भी होता रहा, परंतु फिर भी वह आजतक जीवित है।

खेदकी बात है कि आज अदूरदर्शी अपने ही लोगोंको भारतीय धर्म-संस्कृतिमे न्यूनता दृष्टिगोचर होने लगी है और वे अन्य धर्मोकी ओर आकृष्ट होते देखे जाते हैं। यदि हिन्दूधर्मकी वास्तविकता तथा वैज्ञानिकताका यथार्थ रहस्य ज्ञात हो जाता तो सम्भवतः उन्हे ऐसी भ्रान्ति नहीं होती। परंतु—'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।' इस भगवद्वाक्यका हमे सदा स्मरण रखना चाहिये तभी हमारा कल्याण हो सकता है, अन्यथा नहीं।

इस संदर्भमें हमें पशुहिंसाके विषयमें कुछ विचार करना है, जो इस युगके लिये नितान्त आवश्यक है। हिन्दू-संस्कृतिमें गौका स्थान बहुत ऊँचा है। वैदिक कालके आर्यलोग मुख्य रूपसे गो-सेवक और गो-भक्त ही थे। गो-दुग्ध ही प्रधान पेय पदार्थके रूपमें आर्योको अति प्रिय था। दूधसे पर्याप्त मात्रामें घी भी बनाते थे, जो यज्ञादिक कार्योंमें उपयोग करते थे और खानेके काममें भी आता था। गो-पालनसे बैल भी मिल जाते थे जो हल जोतने तथा बोझ ढोनेके लिये गाड़ीमें जोत दिये जाते थे। आज भी मनुष्य बैलोंका ऐसे कार्योंमें उपयोग करते हैं। गो-पालनसे हमें पर्याप्त मात्रामें गोबर भी मिल जाता है जो खेतके खादके रूपमें काम आता है।

गोधन आर्योंका प्रधान धन माना जाता था। वेदमें गायको 'अघ्न्या' नामसे कहा गया है, जिसका अर्थ है अवध्य, अर्थात् जो वधके योग्य नहीं है। बैलको वेदमें 'अघ्न्य' कहा है यथा—'गवां यः पतिरघ्न्यः' (अथर्व० ९।४।१७)। यहाँ बैलको गायका पति 'अघ्न्य' कहा गया है।

बृहदारण्यकोपनिषद् (६। ४। १८)मे एक प्रसंग आया है, जिसमे आर्य लोगोमें बैलका मांस खानेका भ्रम उत्पन्न हो जाता है। जो इस प्रकार है—

'अथ य इच्छेत् पुत्रो मे पण्डितो विगीतः समितिंगमः शुश्रूषितां वाचं भाषिता जायेत सर्वान् वेदाननुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति माँसौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयाता-मीश्वरौ जनयित वा औक्षेण वार्षभेण वा।'

—इस बृहदारण्यकोपनिषद्के मन्त्रमें **'मांसौदन'** और **'औक्षण'** शब्दोंको देखकर साधारण व्यक्तियोकी तो बात ही क्या बड़े-बड़े विद्वानोंको भी भ्रम हो जाता है कि प्राचीन कालमें आर्यलोग गो-मांसका उपयोग करते थे, जो वस्तुतः सरासर भ्रमात्मक है, असत्य है। इस मन्त्रका अर्थ इस प्रकार है कि—'जो पुरुष यह चाहता हो कि मेरा पुत्र जगत्में विख्यात पण्डित उत्पन्न हो और विद्वानोकी सभामे निर्भीक होकर प्रगल्भतापूर्वक संस्कृत वाणी बोलनेवाला हो, वेद-शास्त्रोंको पढ़नेवाला तथा वेदके रहस्योको जाननेवाला हो, पूर्ण आयु—सौ वर्षतक जीनेवाला हो, ऐसी संतान चाहनेवाले माता-पिताको चाहिये कि 'मांस' (ओषधि या फल-विशेषके गूदे) को घृतसिक्त करके गौके दूधसे खीर पकाये और उसके साथ 'उक्षा'—सोम ओषधि और 'ऋषभ'—ऋषभक ओषधिको मिलाकर पकाये और उसका सेवन करे।'ऐसा करनेसे बलवान् तथा मेधावी पुत्र उत्पन्न होता है।

जहाँ वेदमें गायको 'अघ्न्या' और बैलको 'अघ्न्य' अर्थात् अवध्य कहा है, वहाँ बैलके मांस खानेका स्वप्न देखना तो असंस्कृत मस्तिष्कवालेकी निराली सूझ ही हो सकती है, वैदिकोंकी नहीं। वेद-भाष्यकार सायणाचार्यने ऋग्वेदके (१। १६४। ४३) मन्त्रके भाष्यमें 'उक्षा' शब्दका अर्थ 'सोम' नामक ओषधि ही बताया है। यथा—'सोम उक्षाऽभवत्।' सोम-रूप ओषधिका नाम उक्षा है। ऋषभ भी चिकित्सा-शास्त्रका ऋषभक नामक ओषधि ही है। अतः उक्त श्रुति-वाक्योमें मांस-भक्षणकी गन्धतक नहीं है।

ऋग्वेदमें भी एक मन्त्र आता है, जिसमें लोगोको गो-वधकी बात सूझती है। मन्त्र यह है—

कर्हि स्वित् सा त इन्द्र चेत्यासदघस्य यद्भिनदो रक्ष एषत्।
मित्रक्रुवो यच्छसने न गाव पृथिव्या आपृगमुया [illegible]॥

(ऋ० १०। ८९। १४)

अर्थात्—'हे इन्द्र! जिस अस्त्र-वज्र [illegible] फेककर तुमने पापी राक्षसको मारा था वह [illegible] योग्य है? निश्चय ही जैसे पशुको मारनेवाला [illegible] पीडित करके हनन करता है, वैसे ही तुम्हारा [illegible] मित्रद्रोही दुष्ट शत्रुओंको भी युद्धमे पीडित करके [illegible] लिये सुला दे। क्योंकि युद्धमे विपक्षी शत्रुओंको अस्त्रोंसे पीडित करके ही मारा जाता है।'

यहाँ विचारणीय यह ह कि मन्त्रमे 'न' शब्द आया है, 'न'कार शब्द उपमा वाचक है, उपमाने विधि नहीं वनायी जाती है। अतः उक्त मन्त्रमें गो-वधका अर्थ निकालना सरासर भ्रम है, अवैदिकता मात्र है। यदि वैसा ही अर्थ होता तो उसी ऋग्वेदमे गोमास-भक्षणका निषेध क्यो किया जाता? देखिये वेद-मन्त्र क्या कहता है—

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधान।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥

(ऋ० १०। ८७। १६)

अर्थात् 'जो सर्वभक्षी दानवीय वृत्तिवाला मनुष्य मनुष्यका, घोड़ेका और गायका मांस भक्षण करता हो, खाता हो तथा दूधकी चोरी करता हो, उसके सिरको कुचल देना चाहिये।' इस प्रमाणसे जब वेदने ही गा, घोड़े तथा नर-मांस-भक्षणका निषेध किया है तब वही वेद गो-मांस-भक्षणका विधान कैसे कर सकता है। अर्थात् कदापि नहीं कर सकता, यह निश्चित है। मनु महाराजने कहा है—

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित्।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत्॥

([illegible])

इस श्लोकमे जीवहत्या तथा मांस-भक्षण [illegible] जहाँ निषेध किया गया है वहाँ मांस-भक्षण [illegible] बैलोंको मारना मांस-भक्षियोंके ललकार्य [illegible] नहीं तो और क्या हो सकते हैं? अतः वेद [illegible] ग्रन्थोंमे कहीं भी गाय-बैलोंके मांस-भक्षण [illegible] है। इस विषयमें हमारे वैदिक विद्वानोंने [illegible] किया है और यही निष्कर्ष निकाला है कि [illegible]

कालमें आर्य लोग गो-वध नहीं करते थे और न वे उनका मांस ही भक्षण करते थे। अतः इस विषयमें प्रचलित ये वातें अनर्गल और भ्रमात्मक मात्र हैं, यथार्थ नहीं। इसलिये देशभरमें गो-वध-निषेधका आन्दोलन भी चलाया गया था, पर भारत सरकार इस ओर कतई ध्यान नहीं देती। इससे पता चलता है कि देश तो स्वतन्त्र हो गया, पर गुलामी अभी नहीं गयी, यह बड़े आश्चर्यकी बात है। कृषि-प्रधान देशमें गाय-बैलोंका उपयोग कितना महत्त्वपूर्ण है, इसका अनुभव सभी कर सकते हैं। अतः कहा जा सकता है कि '**मा हिंस्यात् सर्वाभूतानि**' यही हिन्दूधर्मका महान् आदर्श है।

ईश्वरका प्रत्यक्ष स्वरूप—गोमाता

(डॉ० श्रीसत्यस्वरूपजी मिश्र)

गोसेवा ईश्वर-सेवा है। गोसेवासे ही ईश्वरसेवाका अभ्यास होता है एवं अनुभव होता है। सनातन आर्य-परम्परामें गायको गोमाता कहा गया है। किसी अन्य प्राणीके लिये इस प्रकारका विशेषण नहीं है। इस तत्त्वका अनुभव करनेके लिये गोसेवा ही माध्यम है। पुराणोंमें, शास्त्रोंमे, गोसेवाकी भूयसी प्रशंसा है। इसका सम्यक् बोध नहीं होनेसे यह वात अतिशयोक्ति-जैसी प्रतीत होती है, परंतु ईश्वरकी कृपासे गोमाताके स्वरूपका अनुभव हो जानेसे यह भ्रम चला जाता है। सनातन आर्यलोग यज्ञके सम्यक् विधानके लिये गोमाताकी सेवा करते थे। यजुर्वेदका प्रथम मन्त्र—'इषे त्वोर्जे त्वा ..' इत्यादि गोसेवामें ही प्रयुक्त मन्त्र है। ऋग्वेदमे गोमाताको अघ्न्या (अवध्या) कहा गया है।

प्राचीन समयमे जब आर्यलोग भारतसे वाहर ईरान तथा विभिन्न यूरोपीय देशोंमें गये थे तो गोसेवा भी वैदिक धर्मके साथ वहाँ ले गये थे, संस्कृतमें 'गो' शब्दका अर्थ 'गाय' तथा 'पृथ्वी' है। फारसियोके प्राचीन धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता'में भी गोका रूप 'गाउस' मिलता है जिसका अर्थ 'गाय' तथा 'पृथ्वी' है। यूरोपकी कई भाषाओमें गायका प्रतिरूप मिलता है। जो कि तुलनात्मक भाषा-विज्ञानकी दृष्टिसे 'गो' शब्दके साथ सम्पृक्त है। यथा—अंग्रेजी काव (Cow) मध्य अंग्रेजी कू (cū) तथा काउ (Cou), प्राचीन अंग्रेजी कू (Cū), प्राचीन आइसलैण्डिक कूइर (Kyr̄), डच कोए (Koe), स्वीडिश एवं डेनिश को (Ko), जर्मन कू (Kuh), प्राचीन आइरिश बो (bo), वेल्श वुव (buw), लैटिन वोस (bos), ग्रीक वोउस (bous) तथा रसियन गोविआदो (govıado)

गोमाताके माहात्म्यके विषयमें अनेक पौराणिक कथाएँ सुप्रसिद्ध हैं, जैसे राजा दिलीपको सुरभिका शाप तथा महर्षि वसिष्ठके आश्रममें सुरभिकी पुत्री नन्दिनीकी सेवासे पुत्र-प्राप्ति तथा रघुवंशके प्रतिष्ठाता रघुका जन्म इत्यादि कथाएँ गोमाहात्म्यसे परिपूर्ण हैं। जिसे पढ़कर-जानकर तथा सुनकर भी सबके मनपर इसका दृढ़ प्रभाव नहीं होता। कुछ लोग इसको कहानी मानकर इसपर विश्वास नहीं करते हैं। कुछ लोगोंके मनपर इसका क्षणिक प्रभाव पड़ता है। बहुत कम भाग्यवान् पुरुष हैं जिनके मनपर इनका दृढ़ प्रभाव पड़ता है। मेरे मनपर भी इसका दृढ़ प्रभाव नहीं था। परंतु ईश्वरकी कृपासे दो घटनाओंका मुझपर विशेष प्रभाव पडा और गोमाताके स्वरूप तथा माहात्म्यका किंचित् आभास भी मुझे हुआ। उन दोनों घटनाओंका उल्लेख यहाँ कर रहा हूँ—

सन् १९८८ के नवम्बर मासकी २१ तारीखकी घटना है। मेरी पत्नी उस समय वाराणसीके एक अस्पतालमें चिकित्सा करा रही थीं, परंतु दैवयोगसे दो दिन बाद उन्होंने अपना पार्थिव शरीर छोड़ दिया। जब मैं उनको दूध पहुँचानेके लिये अपने एक विद्यार्थीके घर गया था तो उनके दरवाजेके सामने जब पहुँचा तो दरवाजा बंद था तथा उसके सामने एक गाय खड़ी सूर्य-किरणका सेवन कर रही थी। उसका हटाना मेरे लिये असम्भव था। मैं अपने दुपहिया वाहनसे गया था तथा उसके इतना निकट पहुँच गया था कि उसके हिलनेपर मेरे फ्लास्कके टूटने तथा दूधके गिरनेका डर था। मैंने मन-ही-मन सोचा कि गाय तो गोमाता है। ईश्वर-स्वरूपिणी है तथा इसके शरीरमें विभिन्न

देवताओका निवास है। अतः ये मेरी प्रार्थना सुनेगी एवं मेरे लिये रास्ता छोड़ देंगी। ऐसा सोचकर मैंने उसे मन-ही-मन प्रणाम किया और रास्ता छोड़नेके लिये प्रार्थना की। कुछ ही क्षणोंमें गाय वहाँसे हट गयी। इस घटनाका मेरे मनपर बहुत गम्भीर प्रभाव पड़ा तथा उसके प्रकृत स्वरूपका मुझे किंचित् बोध भी हुआ।

इसके लगभग दो महीने बाद एक दूसरी घटना घटी। वाराणसीमें गङ्गातटपर अस्सीघाटपर संगमेश्वरजीका प्रसिद्ध मन्दिर है। मैं गङ्गास्नान करके नित्य उनका दर्शन करता हूँ। कभी-कभी गायें मन्दिरके भीतर प्रवेश कर जाती हैं तथा शिवजीके ऊपर चढ़ाये गये फूल, बेलपत्ती आदि खा जाती हैं। एक दिन एक गाय मन्दिरमें प्रवेश कर फूल-पत्तियाँ आदि खा रही थी। उसका एक पैर शिवलिंगके ऊपर था। मुझे अच्छा नहीं लगा। मेरे मुँहसे निकल गया—अरे गोमाता! 'शिवलिङ्ग'से तो पैर हटा लो।' गायने तत्क्षण ही शिवलिङ्गसे अपना पैर हटा लिया। इस घटनासे गोमाताके माहात्म्यमें मेरा विश्वास अधिक दृढ हो गया।

गोमाता ईश्वरका प्रत्यक्ष स्वरूप है। इसका प्रमाण है गोमाताका स्वाभाविक निष्काम भाव, उसके भोजनकी सात्त्विकता तथा सभीके प्रति समदृष्टि। मनुष्य स्वार्थवश उसके बछडेको दूध पीनेसे रोककर भी उसका दूध दुह लेता है, किंतु गोमाता अपने वत्सकी भी परवा न कर उसे सहज ही दूध उपलब्ध करा देती है। उसका मनुष्य [illegible] अपने बच्चेके प्रति समभाव ही नहीं अपितु वह इतनी कल्याणकारिणी और परोपकारी है कि अपने वत्सकी भी उपेक्षा कर देती है। पशुरूपमे शरीर धारण करके भी इसका सहज स्वभाव एक ब्रह्मज्ञानीके तुल्य है। उसके मल-मूत्रको शास्त्रमे पवित्र माना गया है। गोबर तथा गोमूत्र भी मनुष्यके लिये विशेष कल्याणकारी है। इससे स्पष्ट है कि देवमयी गोमाता ईश्वरका ही प्रत्यक्ष स्वरूप है।



अमृतस्य नाभिः

(प्रो० श्रीरामाश्रयप्रसादसिंहजी)

भारतीय संस्कृति मानवेतर प्राणियोमे गायको सर्वाधिक महत्त्व देती है। गाय उसी प्रकार रक्षणीया है, जिस प्रकार हम भूमि और राष्ट्रकी रक्षा करते हैं। भूमि, राष्ट्र तथा गौकी रक्षा आर्यत्वकी रक्षा है, हिन्दुत्वकी रक्षा है और रक्षा है मनुष्यके अंदरके शुचित्वकी, उसके भीतरके मानुष-भावकी।

गाय, गङ्गा, गीता और गायत्री—ये चारो हिन्दू-धर्म-भवनके चार सुदृढ़ स्तम्भ हैं। इनसे निर्मित हिन्दू-धर्म-भवनके मध्य गोविन्द भगवान् विराजमान हैं। हर आस्तिक हिन्दूकी अन्तिम लालसा होती है कि उसके मरते समय गोदान किया जाय, अन्तिम साँसके निकलनेके पूर्व मुँहमे गङ्गाका जल डाला जाय, गीताका पाठ हो और गायत्रीका जाप हो।

गो-दुग्ध अमृत है, गङ्गा-जल पवित्र एवं तारक है, गीता निष्कामकर्मद्वारा ब्राह्मी स्थितितक पहुँचा देती है और गायत्री-मन्त्र हमारी बुद्धिको पवित्र एवं परिष्कृत करता है, विवेकको पुष्ट करता है तथा परमात्माके पावन [illegible] प्रेमका द्वार खोलता है। अतः गाय गङ्गा गीता और गायत्री—ये चारो शब्द हिन्दू-संस्कृतिके आधार-स्तम्भ हैं। इनको सबलरूपमे पाकर ही हमारी यह उदार एवं उदात्त आर्य-संस्कृति विश्वमे अपना विशिष्ट एव श्रेष्ठ स्थान बनाये हुए है। पर विडम्बना यह है कि आज हमारी ही गलतियोके कारण, अपनी ही भूलोके कारण इन चारोंकी बडी दयनीय स्थिति हो गयी है। गङ्गा प्रदूषित हो गयी है, गीताका अध्ययन-अध्यापन समाप्तप्राय हो गया है [illegible] चकाचौंधके वातावरणने गायत्रीके जपको भी भुला दिया है और निरीह एवं निर्दोष गाय हमारी [illegible] शिकार बनकर कत्लगाहों एवं कसाई-घरोंमें [illegible] रही है। आर्यत्वका, हिन्दुत्वका ऐसा [illegible] समय भी न हुआ था, जब हम [illegible]

स्वतन्त्रता-प्राप्तिके पश्चात् हमारी उदात्त संस्कृतिकी यात्रामें जो गिरावट आयी है, जो पतन हुआ है, उसे देखकर शर्मसे हमारा माथा झुक जाता है। क्या हो गया है इस राष्ट्रको, क्या हो गया है हमारे सोच और चिन्तनको! गायोका वध जिस रूपमें आज भारतमें हो रहा है, उससे गोवंशके सर्वनाशकी तथा राष्ट्रके पतनकी भयंकर समस्या उपस्थित हो गयी है। गाय हमारी कृषि-संस्कृतिकी आधारशिला रही है। प्राचीन कालसे ही ऋषि-संस्कृति और कृषि-संस्कृति दोनोंकी आधारशिला गाय ही रही है। ऋषियोंके आश्रम गायोंसे सुशोभित रहते थे। गोसेवा कर गोदुग्धसे अपनी मेधाको पवित्र कर आश्रमो एवं गुरुकुलोंके छात्र गार्हस्थ्य-जीवनमें प्रवेश करते थे और अपने चरित्रकी धवलतासे मानवताके पथका विस्तार करते थे तथा वे 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावनाको एवं 'सर्वभूतहिते रताः' के भावको विकसित करते थे। गोसेवा हमारे पूर्वज ऋषियोंकी सबसे वड़ी देन है। गोवंशके संवर्धन एवं संरक्षणके लिये ही हमारे भगवान् श्रीकृष्ण गोकुलमे आते हैं और गोसेवा करके अपना 'गोपाल' नाम सार्थक करते हैं। गोवर्धन पर्वतद्वारा व्रजकी रक्षा करके गोसंवर्धनका मूलमन्त्र प्रदान करते हैं।

प्राचीन भारत गोसंस्कृतिपर आधारित था। ब्राह्ममुहूर्तमें ही नर-नारी जागकर गोवंशकी सेवा शुरू करते, सानी-पानी देते, नारियाँ गोरसमन्थन करतीं, दूध-दहीका वितरण होता। सारा वातावरण गोरसमय हो उठता। जन-समूह गोरससे पवित्र एवं पुष्ट होता, प्राण और प्रकाशका नवागमन होता और कृषि-संस्कृतिके लिये सामग्री तैयार होती। गायका वछड़ा वैल वनकर खेत जोतता, गायका गोवर उत्कृष्ट खाद वनकर कृपिको समृद्ध करता, गोमूत्र कीटनाशक वनता, अनेक वीमारियोंसे त्राण दिलाता। गायका दूध, गायका दही, गायका मक्खन लंवी आयुके लिये, स्वस्थ जीवनके लिये अमृत है। सभी प्रकारके 'विटामिन' सम्मिलित रूपमें भी गो-दुग्धकी वरावरी नहीं कर सकते। गाय दरवाजेकी शोभा ही नहीं, वह श्रीसम्पदा है, लक्ष्मी है, धरतीकी भाँति पूज्या है। जिस वात्सल्य-रसकी इतनी महिमा और चर्चा है, वह गायका अपने वछड़ेके प्रति अहैतुक स्नेहको देखकर ही है। सचमुच गाय हमारी माँ है। वह माँ और मातृभूमिकी भाँति पूज्या और रक्षणीया है। आदरणीया और सम्माननीया है।

ऋग्वेदमें एक मन्त्र मिलता है, जिसमें गायको अमृतकी नाभि और अमरत्वका केन्द्र माना गया है। पूरा मन्त्र इस प्रकार है—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥

(ऋग्वेद ८। १०। १५)

इसका तात्पर्य है—प्रत्येक चेतनावाले विचारशील मनुष्यको मैंने यही समझाकर कहा है कि निरपराध अहन्तव्या गौको कभी मत मार, क्योंकि वह रुद्र देवोंकी माता है, वसुदेवोंकी कन्या है और आदित्यदेवोंकी बहन तथा घृतरूप अमरत्वका केन्द्र है।

इसीसे मिलता-जुलता एक मन्त्र अथर्ववेदमें भी मिलता है—

मातादित्यानां दुहिता वसूनां प्राणः प्रजानाममृतस्य नाभिः।
हिरण्यवर्णा मधुकशा घृताची महान् भर्गश्चरति मर्त्येषु॥

(अथर्ववेद ९। १। ४)

'गौ आदित्योकी माता, वसुओंकी बेटी, प्रजाओंका प्राण, अमृतकी नाभि, हिरण्यवर्ण, घृताक्त मधुकशा है। इसीको पाकर महान् तेज मर्त्योंमें, प्राणियोंमें विचरण करता है।'

इन दोनों मन्त्रोंमें गौकी महिमाका उद्घाटन है और बतलाया गया है कि यह अघ्न्या है, अहिंसनीया है, मधुकशा है, स्वर्णवर्णवाली एवं स्नेहमयी है। प्राणियोंमें महान् तेज इसीके दूधके माध्यमसे आता है। गौका अर्थ वाणी और भूमि भी होता है। वाणी और भूमि (राष्ट्रदेवी) की ही भाँति गौ पालनीया एवं रक्षणीया है। गायके अंदर अग्नि एवं वायुके अंश हैं। इसलिये गोदुग्ध नियमित रूपसे पीनेवालेमें आग्नेयता एवं प्राणवत्ता मिलती है। गायका दूध पीनेवाले स्फूर्तिसम्पन्न एवं तेजस्वी होते हैं। ऐसी स्फूर्ति भैंस या अन्य पशुओंके दूधमें नहीं होती। इसीलिये प्राचीन कालमें ऋषियोंके आश्रमोंमें गायें होती थीं, उनकी सेवा होती थी। उनके दूधसे ऋषि और ब्रह्मचारी शिष्य अप्रतिम मेधाशक्तिसे युक्त होते थे। वे विप्र बनते थे, प्रकृष्ट प्रज्ञाके

धनी होते थे।

गायको मारनेका अर्थ है अमृतत्वकी समाप्ति, स्फूर्ति, तेज एवं प्राणवत्ताकी समाप्ति। यही कारण है कि हमारे पूर्वज ऋषियोंने यह नियम बना दिया कि प्रत्येक सद्गृहस्थके घर एक गाय हो और भोजन बननेके पश्चात् गोग्रास निकालकर ही परिवारके सदस्य भोजन करे। गायकी पूजा, गायकी आरती, गोप्रदक्षिणा, गोग्रास देना, गोदान करना तथा गायको धूप-दीप दिखाना इत्यादि हिन्दू-धर्मका अङ्ग बन गया। गायमें तैंतीस करोड़ देवता निवास करते हैं। गायकी एक परिक्रमा कर देनेसे एक साथ तैंतीस करोड़ देवताओंकी परिक्रमा हो जाती है। ऐसी महिमा है गायकी! ब्राह्मण, गौ और वाणी—इन तीनोंमें तेज और ओजकी प्रधानता है। आर्य-संस्कृतिमे गायकी जो इतनी महिमा है, वह इसके इन्ही तेजस्वी गुणोंके कारण है। इसीलिये प्राचीन भारतमें घर-घर गायकी पूजा होती थी और आज भी कुछ स्थानोंमे गायकी घर-घरमें पूजा होती है। हमारे पूर्वज ऋषियोने इसीलिये घोषणा की कि गाय अघ्न्या है, इसे नहीं मारना चाहिये। यह धर्म, संस्कृति एवं प्राणकी भाँति तथा मातृभूमिकी भाँति रक्षणीया है, वन्दनीया है, सेवनीया है।

किंतु आज भारतमें गोवंशकी हत्या जिस रूपमे होती है, उससे लगता है कि हमारे अंदर राक्षसत्व प्रविष्ट हो गया है। प्रतिदिन हजारो गायें मारी जा रही हैं, काटी जा रही हैं और विदेशी मुद्राके लोभमें विदेशोंमें गोमांस भेजा जा रहा है। यह कृतघ्नता और क्रूरताकी पराकाष्ठा है। क्या अपनी वृद्धा माता या वृद्ध पिताको हम धनके लालचमें बेच सकते हैं, उन्हे कत्लगाहमें कसाईके हाथों कट [illegible] जानेके लिये भेज सकते हैं? गायकी हिंसासे गोवंशके नाशकी भयकर समस्या उपस्थित हो गयी है। गोबरकी खाद सर्वोत्तम खाद है, बैल और हलसे जोते गये खेतकी उर्वराशक्ति नष्ट नहीं होती। आज डी० ए० पी०, यूरिया आदि रासायनिक खादोने तथा ट्रैक्टरकी गहरी जोताईने हमारे खेतोंकी उर्वराशक्ति मिटा दी है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी भारत-भू अन्नपूर्णा बनी रहे, यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी और प्राणवान् बने रहे तो हमे गायोको अच्छी तरहसे पालना होगा, उनकी रक्षा करनी होगी, उनकी सेवा करनी होगी और उनकी हत्याको सर्वांशमे रोकना होगा। हम अहिंसक तरीकेसे सरकारपर और अपने नेताओपर दबाव डालें कि गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगे। यदि आवश्यकता हो तो संविधानमें भी संशोधन लाकर हम इस अनुचित पापमय, गोवंश-विनाशी गोहत्याके कुकर्मको रोकें। ध्यान रहे, अमृतके केन्द्र और मधु प्रदान करनेवाली गायकी हत्या अपनी संस्कृति और अपने धर्मकी हत्या है, अपने आर्यत्व एव अस्तित्वकी हत्या है। जय गोमाता! जय भारत!!

स्वप्नमें गोदर्शनका फल

स्वप्नमें गौ अथवा साँड़के दर्शनसे कल्याण-लाभ एवं व्याधि-नाश होता है। इसी प्रकार स्वप्नमे गौके थनको चूसना भी श्रेष्ठ माना गया है। स्वप्नमें गौका घरमें ब्याना, बैल अथवा साँड़की सवारी करना, तालाबके बीचमें घृत-मिश्रित खीरका भोजन भी उत्तम माना गया है। इनमेंसे घीसहित खीरका भोजन तो राज्य-प्राप्तिका सूचक माना गया है। इसी प्रकार स्वप्नमें ताजे दुहे हुए फेनसहित दुग्धका पान करनेवालेको अनेक भोगोंकी तथा दहीके देखनेसे प्रसन्नताकी प्राप्ति होती है। जो बैल अथवा साँड़से युक्त रथपर स्वप्नमें अकेला सवार होता है और उसी अवस्थामें जाग जाता है, उसे शीघ्र धन मिलता है। स्वप्नमें दही मिलनेसे धनकी, घी मिलनेसे यशकी और दही खानेसे यशकी प्राप्ति निश्चित है। इसी प्रकार यात्रा आरम्भ करते समय दही और दूधका दीखना शुभ शकुन माना गया है। स्वप्नमे दही-भातका भोजन करनेसे कार्य-सिद्धि होती है तथा बैलपर चढ़नेसे द्रव्य-लाभ होता है एवं व्याधिसे छुटकारा मिलता है। इसी प्रकार स्वप्नमें [illegible] गौका दर्शन करनेसे कुटुम्बकी वृद्धि होती है। स्वप्नमें सभी काली वस्तुओंका दर्शन निन्द्य माना गया है, केवल कृष्णा गौका दर्शन शुभ होता है। (पं० श्रीराजेश्वरजी शास्त्री सिद्धान्ती)

संसारकी श्रेष्ठतम पवित्र वस्तु गौ

(श्रीश्यामनारायणजी शास्त्री, रामायणी)

भगवान्के अवतारका मूल प्रयोजन गौकी रक्षा है। लोक-परलोकका सुधार एवं स्वार्थ और परमार्थ—इन दोनोंकी सिद्धि गौके द्वारा होती है। भगवान्की स्तुति करते हुए देवताओने प्रथम स्थान गौका ही माना है—

गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता॥

(रा० च० मा० १। १८६ छं०)

पृथ्वी, संत, देव, विप्र—ये सभी इसी गौके पूरक तत्त्व हैं। इनमें मुख्य तत्त्व तो गौ ही है; क्योंकि पृथ्वी गौका पोपण करती है एवं उसे धारण करती है और पृथ्वीको धर्म-कर्मद्वारा संत पोषण देते हैं। धर्म-कर्मके समस्त मन्त्र ब्राह्मणोद्वारा प्रयुक्त किये जाते हैं और समस्त प्रयोज्य मन्त्रोंके लक्ष्य देवगण हैं, जिनसे विश्वके समस्त प्राणियोंका पोषण होता है, वे देवगण मन्त्रोके अधीन हैं, मन्त्र ब्राह्मणोके अधीन हैं और ब्राह्मणोंको भी हव्य-कव्य, पञ्चगव्यादि समस्त वस्तुएँ गौके द्वारा ही प्राप्त होती हैं। संक्षेपमें समस्त विश्व देवाधीन, समस्त देव मन्त्राधीन, समस्त मन्त्र ब्राह्मणाधीन और समस्त ब्राह्मण-कर्म गौके अधीन हैं, इसी कारण ब्राह्मणोंसे भी बढ़कर गौकी महिमा निगमागम तथा पुराणादिकोंमें गायी गयी है। इसीलिये 'गावस्त्रैलोक्यमातरः' कहा गया है। इतना ही नहीं महाभारतके अनुशासनपर्वमे तो यहाँतक मिलता है—

धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा।
एतासां तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च।
ततो यज्ञाः प्रवर्तन्ते हव्यं कव्यं च सर्वशः॥
अमृतायतनं चैताः सर्वलोकनमस्कृताः।

(८३। १८-१९, ५१। ३०)

ये अपने दूध-घीसे प्रजाका भी पालन-पोषण करती हैं। इनके पुत्र (बैल) खेतीके काम आते हैं तथा नाना प्रकारके धान्य एवं बीज उत्पन्न करते हैं। उन्हींसे यज्ञ सम्पन्न होते हैं और हव्य-कव्यका भी सर्वथा निर्वाह होता है। ये अमृतकी आधारभूत हैं। सारा संसार इनके सामने नतमस्तक होता है।

भारत तो कृषि-प्रधान देश है, इसलिये इसके कृषि-कर्ममे गौ एवं गोवत्सका परमोपयोग सहज ही सिद्ध है।

आज धर्म-प्रधान भारतवर्षमें जितनी उपेक्षा एवं दुर्दशा गौकी हो रही है, उतनी विश्वभरमें और कहीं नहीं है। जबकि लौकिक एवं पारलौकिक प्रत्येक दृष्टिकोणसे मानवके जीवनमें गौकी परमोपयोगिता है। आज भारतमें जितनी गोहत्या हो रही है, उतनी अन्यत्र कहीं नहीं। इसी कारण सुसम्पन्न होते हुए भी देशवासियोंको नाना प्रकारके कष्ट उठाने पड़ रहे है। इसका मूल कारण गोहत्याका पाप ही है। इसकी सर्वोपयोगिता राष्ट्रभरके हितमें कितनी है, इसपर कुछ विचार प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

आयुर्वेदिक दृष्टिकोणसे

गौसे प्राप्त होनेवाले पञ्चगव्य (दुग्ध, दधि, घृत, गोमूत्र और गोबर) की अनन्त महिमा गायी गयी है—

गव्यं पवित्रं च रसायनं च
पथ्यं च हृद्यं बलबुद्धिदं स्यात्।
आयुःप्रदं रक्तविकारहारि
त्रिदोषहृद्रोगविषापहं स्यात्॥

अर्थात् पञ्चगव्य परम पवित्र रसायन है, पथ्य है, हृदयको आनन्द देनेवाला है और बल तथा बुद्धि प्रदान करनेवाला है। यह आयु प्रदान करनेवाला, रक्तके समस्त विकारोको दूर करनेवाला, कफ, वात तथा पित्तजन्य तीनों दोषो, हृदयके रोगों और तीक्ष्ण विषके प्रभावको भी दूर करनेवाला है।

पञ्चगव्य-पानके बिना यजमानको यज्ञ करनेका अधिकार या यज्ञ-मण्डपमें प्रवेश करनेका भी अधिकार नहीं प्राप्त होता। इससे कायिक, वाचिक, मानसिक पाप-ताप-संताप दूर हो जाते हैं। विशेष बात तो यह है कि इसके प्राशन-मात्रसे ही शरीरके चर्म एवं अस्थिगत सारे पाप नष्ट हो जाते हैं—

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्वग्निरिवेन्धनम्॥

गौके पञ्चामृत-पानसे समस्त वैदिक कर्म सम्पन्न होते

हैं। पञ्चगव्य एवं पञ्चामृत-सेवनसे शरीरगत समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। इससे अधिक और क्या कहा जाय?

गोमूत्र—किसी भी औषधका अमृतीकरण गोमूत्रसे किया जाता है। परम विलक्षणता यह है कि कैसा भी विष क्यों न हो गोमूत्रमें मात्र तीन दिनतक पड़े रहनेपर शुद्ध हो जाता है। आयुर्वेदमे स्पष्ट वर्णन किया गया है कि—

'गोमूत्रे त्रिदिनं स्थाप्य विषं तेन विशुद्ध्यति।'

(क) गोमूत्रको कानमे डालनेसे समस्त कर्ण-रोग दूर होते हैं।

(ख) प्रातः बासी मुख एक तोला गोमूत्र-सेवनसे कैंसरतकका नाश होता है।

(ग) प्रथम ब्यायी गौके प्रथम बार दूध (खील) निकालकर बिना रोक-टोकके पी लेनेपर जीवनभरके लिये दमाका रोग नष्ट हो जाता है।

(घ) गोमूत्रमे छोटी हर्रे २४ घटे भिगोकर छायामे सुखाकर गोघृतमें भूनकर चूर्ण बनाकर दोपहर और सायंकाल भोजनके पश्चात् एक-एक तोला लेनेपर समस्त उदर-रोग नष्ट हो जाते हैं।

(ड) उदरके समस्त विकृत कीटाणुओको नष्ट करनेके लिये सर्वोत्तम औषध गोमूत्र है।

संक्षेपमे गोमूत्र कीटाणुनाशक, अग्निदीपक, पित्तहारक, बुद्धिवर्धक तथा पाचक है। यह तीक्ष्ण, उष्ण, क्षार, कटु और लघु स्वभाववाला है।

इसकी परम पवित्रता तो इतनेसे ही समझी जा सकती है कि गङ्गाजी जहाँ जग-पावनी कही जाती है, वहीं वे गौ माताके मूत्रमे निवास करती है, वे ही क्या **'मूत्रे गङ्गादयो नद्यः'** समस्त नदियाँ निवास करती है और तो और फिर भगवान्‌पर भी संकट आनेपर गोमूत्रसे ही उनकी रक्षा की जाती है। पूतनाद्वारा विषलिप्तस्तन-पान करानेपर कहा गया है—

गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।
रक्षां चक्रुश्च शकृता द्वादशाङ्गेषु नामभिः॥

(श्रीमद्भा० १०। ६। २०)

गोमय (गोबर)—गोमाताका गोबर कीटाणु-नाशक, पोषक, कान्तिप्रद, दुर्गन्धिनाशक, शोषक, वीर्यवर्धक, रसयुक्त तथा परम पवित्र है।

(क) गौके कंडे (गोबर)को सुखा-जलाकर मंजन करनेसे समस्त दन्तरोग नष्ट होते हैं।

(ख) आज यूरोपीय विज्ञानवेत्ता भी मानते हैं कि गोबरमे प्लेग, हैजेके कीटाणुओंको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति है।

(ग) भूमिकी उर्वराशक्तिको बढ़ानेके लिये गोबर परम उपयोगी तत्त्व है। इससे बढकर संसारमें दूसरी कोई खाद नहीं है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोणसे गौका महत्त्व

विज्ञानकी दृष्टिसे मांस मानवके लिये अप्राकृतिक भोजन है। साथ-ही-साथ अनेको रोगोंका उत्पादक है। इसका परम प्रमाण है मांसाहारी देशोंके मानवोंमें नाना प्रकारके रोगोकी वृद्धि। मांसाहारमे जब शरीर ही रोगी हो जायगा तो उसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंश मन कैसे स्वस्थ रह सकेगा? गोदुग्ध जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त स्वस्थ एव अस्वस्थ सभीके लिये परम पौष्टिक आहार तथा औषध है। अमेरिकामे अनुसंधानद्वारा पता लगाया गया है कि विटामिन 'बी' तो गौके पेटमे सर्वदा ही रहता है। इस कारण उसका दूध ही क्या गोमूत्र तक भी पूर्ण पोषक है।

आधिदैविक दृष्टिकोणसे

एकमात्र गोसेवा करनेसे समस्त देवी-देवता सन्तुष्ट हो जाते हैं, क्योकि गौके शरीरमे सभी देवताओंका निवास है। कहा भी गया है—

हरिहर, विधि, शशि, सूर्य, इन्द्र, वसु साध्य, प्रजापति, सब सन्त।
गिरा, गिरिसुता, गंगा, लक्ष्मी, ज्येष्ठा, कालिन्दी भगवन्त।
ऋषि, मुनि, ग्रह, नक्षत्र, तीर्थ, यम, विश्वेदेव, पितर सबहीं।
गो माताके अग अग मे, रहे विराजे देवता सभी।

विचार कीजिये कि जब एकमात्र गौकी सेवासे ही समस्त देवोकी सेवा एवं प्रसन्नता हो जाती है तो फिर प्राणीको लोक-परलोक क्या नहीं मिल सकता? कितना सुलभ साधन है!

पृथ्वीधारक शक्तियोंमें गौका ही प्रथम स्थान है। ये शक्तियाँ सात हैं—

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही॥

आर्थिक दृष्टिकोणसे

गाय अपने दूध, दही, घी, मक्खन आदिसे बननेवाले उत्तम एवं श्रेष्ठ भोज्य पदार्थोंके रूपमें पूरे राष्ट्रको शक्ति, ऊर्जा तथा जीवनीशक्ति प्रदान करती है। अपनी जननी तो माँके रूपमें केवल बाल्यकालमें ही पोषण करती है, किंतु गौ माँ तो जन्मसे मृत्युपर्यन्त हमें दूध पिलाती है, हमारा पोषण करती है। अपने शरीरको निचोड़कर अपने बछड़े आदिकी भी उपेक्षा कर हमें पौष्टिकता प्रदान करती है। इस प्रकार यह जननीसे बढ़कर त्याग करती है, यह सर्वथा परोपकारकी मूर्ति है।

आज रासायनिक खादोंके द्वारा यद्यपि अधिक अन्न उपजाओकी योजनामे हमारे राष्ट्रको कुछ बाह्य एवं स्थूल सफलता दीख रही है, किंतु विचार-दृष्टिसे देखा जाय तो रासायनिक खादोंसे खेतोंकी पूरी उर्वराशक्ति खींचकर कुछ लाभ अन्नका मिल जाता है, परंतु उर्वराशक्तिके शिथिल होते ही खेतीकी सहज उत्पादन-शक्ति कालान्तरमें समाप्त हो जाती है। इसके विपरीत गौकी खादसे वह शक्ति सदा सुरक्षित रहती है, साथ ही रासायनिक खादोंकी अपेक्षा व्यय भी कम होता है। और राष्ट्रमे गोसेवाका पुण्य होनेसे धन, जन, सुख, समृद्धि सभी एक साथ बढ़ते हैं। महाभारत (अनु० ५१। २६) में गौके तुल्य कोई धन ही नहीं माना गया—

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत।

समस्त शास्त्र, पुराण, वेदोपनिषदादि जिसकी अनन्त महिमाका गुणगान करते हैं, जो गौ माता धन-सम्पत्तिकी मूल एवं परम निष्पाप, हव्य-गव्यकी दाता हैं, लोक-परलोककी समस्त समस्याओंका एक साथ ही समाधान करती हैं, उनके प्रति हमारा कर्तव्य क्या होना चाहिये? इसपर हमे गम्भीरतासे विचार करना चाहिये। आज विश्वमें अमेरिका एवं यूरोप समृद्ध माने जाते हैं, ये दोनों राष्ट्र गौकी सेवा पूर्णरूपमें करते हुए गौके ऋणी एवं कृतज्ञ हैं। किंतु इस दिशामें गौ और गोविन्दके प्रेमी हमारे भारतकी स्थिति गोसेवासे विरत हो जानेसे परम दयनीय हो गयी हैं।

वर्तमान समयमें गौकी करुणार्द्र पुकार कौन सुनेगा?

गौ माताके साथ—गोधनके साथ आज भारतीय शासनका क्या व्यवहार हो रहा है? क्या यह किसीसे छिपा है? स्वतन्त्रता-प्राप्तिके पूर्वसे ही गोवध बराबर होता चला आ रहा है। लाखों संतों, आचार्यों, महापुरुषों, विद्वानों, गोभक्तों एवं समाज-सेवकोने गोवध-आन्दोलनमें बलिदान किया, जेलोंमे गये, अनेकों यातनाएँ सहीं, किंतु गोहत्याका काला कलंक इस देशसे अबतक नहीं मिटाया जा सका। प्रतिदिन कई हजार गोवध सूर्योदयके पूर्व नित्य ही होते जा रहे हैं। क्या गौ माताके साथ राष्ट्रका यही कर्तव्य है?

गौ सारी जवानी हमारे घरका थोड़ा-सा बेकार घास-भूसा खाकर हमें अमृत प्रदान करती, अपने बछड़ोंके द्वारा खेती कराती, बैलगाड़ी-सवारी आदि ढोनेमें रात-दिन अथक परिश्रम करती-कराती है, पर वाह रे गोभक्तो! जब वह बेचारी बूढ़ी हो जाती है और तुम उसके ही दूध-दहीसे हृष्ट-पुष्ट हो जाते हो, जवान होते हो तब तुम्हारा क्या यही कर्तव्य होता है कि तुम अपनी उस गौ माताको कसाईके हाथमें बेंच दो? यह कैसी गोभक्ति है? कसाई जब उसे बूचड़खानेकी ओर घसीटता है और वह तुम्हारी ओर कातर करुणार्द्र-दृष्टिसे देखती है तथा तुम उसकी सहायता करनेके लिये आगे नहीं बढ़ते, क्या तुम्हारी आत्मा उस समय काँपती नहीं? क्या तुम उस मूक माँकी भाषाको नहीं समझ पाते? वास्तवमें वह चिल्ला-चिल्लाकर यही कह रही है कि हमने तुम्हें तो अपने जीवनका सर्वस्व अपने बछड़ेसे भी छीनकर खिलाया, पिलाया, जिलाया, पुष्ट किया और उस त्याग-तपस्याका बदला तुम हमें यही दे रहे हो? क्या तुम्हारा अपनी गौ माताके साथ यही कर्तव्य है?

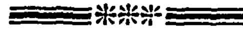
आज पर्यावरण-प्रदूषणकी बात बड़े जोर-शोरसे चल रही है, पर इन महानुभावोंने इसपर कभी विचार ही नहीं किया कि विशुद्ध पर्यावरणके मूलमें गौका ही अस्तित्व है। गौ घर-घर रहेगी तो उसके गोमूत्र-गोबर मात्रसे ही समस्त राष्ट्रका प्रदूषण दूर किया जा सकता है। इससे उत्तम साधन समस्त राष्ट्रके प्रदूषणको दूर करनेका और क्या हो सकता है?

मत्स्य-पालन, मुर्गी-पालन, सूअर-पालन राष्ट्रमें किया जा रहा है फिर सर्वोपयोगी गौ-पालन क्यो नहीं हो सकता? गोवध क्यो? इसने किसका क्या बिगाड़ा है? फिर इसपर ऐसा अत्याचार क्यो? क्या यह इस राष्ट्रकी समस्या नहीं है? अगर है तो हमारी आस्थाके साथ इतना अन्याय क्यों? गोरक्षामें समस्त ही राष्ट्रका हित निहित है।

ध्रुव सत्य

जबतक समस्त भारत देशमे जन-जनके मानसमे गोपालन, गोभक्ति पूर्ण रूपसे नहीं जाग्रत् होगी, तबतक इस राष्ट्रका कल्याण सर्वतोभावेन नहीं हो सकता। इसे चाहे अभी समझें या राष्ट्रकी पूरी दुर्दशा हो जानेके बाद ही समझें। आज कितनी दयनीय स्थिति इस देशकी हो रही है? क्या यह किसीसे छिपा है? इतना गिरा हुआ मानवताका आदर्श इस राष्ट्रका कभी नहीं [illegible] सामने दिखायी दे रहा है। इसका मूल कारण [illegible] उपेक्षा ही है। जबतक गोवध बंद न [illegible] सुसमृद्ध नहीं हो सकता, चाहे लाखों [illegible] रहे। भगवान्से प्रार्थना यही है कि वे हमें सद्बुद्धि [illegible] करे, जिससे क्षुद्र स्वार्थका परित्याग कर [illegible] उपयोगिताको समझकर हम सभी राष्ट्रके कल्याण [illegible] ओर अग्रसर हो सके। अन्तमे यही राष्ट्रके लिए [illegible] कामना है—

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ता
न्याय्येन मार्गेण मही महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यो शुभमस्तु नित्यं
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥



गौ माता

(श्रीमती चन्द्रकला गौर)

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

(महा०, अनु० ८०। ३)

'गाये सदा मेरे आगे रहे, गायें सदा मेरे पीछे रहे, गायें मेरे चारों ओर रहें और मैं गायोके बीचमे ही निवास करूँ।'

पदार्थोंमें माँ वसुन्धराका, मानवतामें जननीका, सरिताओंमे भागीरथीका, देवोंमें भगवान् पद्मनाभ विष्णुका, नक्षत्र-मण्डलमें भगवान् बृहस्पतिका, ऋषियोमे अगस्त्यका, देवियोंमे भगवती दुर्गाका तथा वृक्षोमे सहकार (आम) का जो स्थान है, वही स्थान पशु-परम्परामें गौ माताका है। भारतीय संस्कृतिमें इस प्राणीको मातृत्वका गौरव प्रदान करके इसका जो माहात्म्य दर्शाया गया है वह उसके सहज औदार्यका अंशमात्र है। व्यवहारमे वह मानवकी अर्थसिद्धिका द्वार है। वह सागरके गर्भसे उद्भूत चतुर्दश रत्नोंकी शृंखलाकी एक विलक्षण कड़ी है। उसके भौतिक शरीरसे निकलती हुई स्वेदकी एक-एक बूँद तथा मालिन्यका एक-एक कण भी पवित्रताका एक उत्कृष्ट निदर्शन है और आरोग्यका [illegible] अप्रतिम मूल मन्त्र है।

वैदिक परम्परासे अद्यावधि-पर्यन्त हम और हमारे पूर्वज प्रत्येक मङ्गलकारी अनुष्ठानमें उपासनाके [illegible] गोधनका आश्रय लेते चले आ रहे हैं। इसकी [illegible] सिर झुकाकर राधावल्लभ भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र [illegible] कहलाये। महाराज दिलीपने नन्दिनीकी कृपा [illegible] पाकर रघुकुलके विस्तारको आगे बढ़ाया। [illegible] महाराज दिलीपपर अनुग्रह न किया होता तो [illegible] आदित्यवंशकी कुल-परम्परा दिलीपतक [illegible] हो चुकी होती और भगवान् रामका [illegible] सूर्यवंशका शृंगार न बन पाता। [illegible] गया होता और फिर महाकवि कालिदास [illegible] इस सूर्यप्रभववंशने [illegible] दिखायी पड़ता।

हमारे शास्त्रों एवं मनीषियोंने [illegible] एवं प्राणियोंको [illegible]

सबकी पृष्ठ-भूमिमें विश्व-मङ्गलकी पावन भावना अवश्य निहित रही है। पशुत्वकी जड़तासे मातृत्वकी चोटीतक गायको पहुँचानेका श्रेय समाज अथवा शास्त्रोंको नहीं अपितु इस भोली-भाली मूर्तिमे पायी जानेवाली अद्भुत गुणसम्पदाको है। साहित्य एवं व्यवहारमें मनुष्यकी सज्जनताकी उपमा गायकी नैसर्गिक सरलतासे दिया जाना एक सामान्य बात है। यह पशु नहीं परोपकारका प्रतिमान हैं, मानदण्ड है—

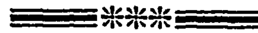
'परोपकाराय दुहन्ति गावः।'

वह करुणाकी प्रतिमूर्ति एवं त्यागकी पराकाष्ठा है। वाणीसे विहीन होकर भी अपनी जिस प्राकृतिक वत्सलतासे वह बछड़ेके लिये अपने हृदयका रक्त उड़ेलनेको तत्पर रहती है वह वात्सल्य वाग्विलसित, किंतु स्वार्थ-लोलुप मानव-समाजमे अलभ्य नहीं तो दुर्लभ अवश्य है।

तृणोंके आहारपर जीवन धारण कर मानवमात्रके लिये अलौकिक सुधारसका सम्प्रदान करना गौ माताके ही उपयुक्त है। जब हम पशु-समुदायको आहार, निद्रा, भय एवं मैथुनका विशेष्य मात्र स्वीकार करते हैं तो हमारे अन्तश्चक्षु सम्भवतः इस तथ्यसे अनभिज्ञ रह जाते हैं कि जो त्याग एवं निःस्वार्थ-सेवनकी भावना मनुष्यमें वर्षोकी तपस्याके पश्चात् भी बड़ी कठिनतासे प्रवेश कर पाती है, वही एक माँके रूपमे गोधनमे सहज विद्यमान रहती है। आध्यात्मिक रूपसे एतावता वह हम लुब्ध मानवोंसे कहीं उच्चतर है।

ज्ञानकी सार्थकता आचरणकी पवित्रतामे है—यदि ज्ञानके पश्चात् भी हमारे आचरणमें माधुर्य नहीं तो वह ज्ञान दो कौड़ीका और यदि ज्ञानके अभावमें भी एक पशुमें त्यागकी विलक्षण महिमा विद्यमान है तो उसके लिये अक्षर-ज्ञानकी आवश्यकता ही क्या?

गौ माताकी महिमाका एक वैज्ञानिक आधार भी है। विज्ञानके प्रयोगोने यह सिद्ध कर दिया है कि गोदुग्धके समस्त तत्त्व मानव माँके दुग्धके तत्त्वोंके ठीक समान होते हैं और माँके दुग्धके अभावमें अमृतरूप गो-दुग्धका सेवन मनुष्य सद्योजात अवस्थासे लेकर वार्धक्य अथवा मृत्युके पूर्व क्षणोंतक कर सकता है। इस निरीह गौ माताका दूध शिशु-पालन-हेतु दुहते समय हम यह भूल जाते है कि इस माँकी अपनी संतति भी परिपालनकी अपेक्षा करती होगी, किंतु करुणामयी, परोपकारकी साक्षात् मूर्ति वह गौ माता अपने वत्सकी उपेक्षा करते हुए भी बिना किसी ननु-नचके अमृतमयी दुग्ध-धारासे हमें पूर्ण आप्लावित कर देती है। दूधसे हमारा पात्र भर देती है। कितना महान् त्याग है! कितना सहज स्वाभाविक परोपकारका भाव है! पर गायके प्रति हम कैसा व्यवहार करते हैं? क्या इसपर कभी सोचा है हमने? यदि नहीं तो फिर आज ही संकल्प ले कि 'विश्वजननी गौके पालन-पोषण तथा रक्षणमें चाहे प्राणोंकी भी बलि देनी पड़े, हम पीछे नहीं हटेगे।'



वंशीधरसे

(श्रीनारायणदासजी चतुर्वेदी)

वंशीधर! वंशीवट बीच निज वंशी आप
कहिये बजाने फिर कब जुट जायँगे?
सार्थक 'गोपाल' नाम कब कीजियेगा नाथ?
गो-विघातकोंके दल कब लुट जायँगे?
होगी धर्म-स्थापना 'नरायण' बताओ कब?
दीन जन कब दीनतासे छुट जायँगे?
आँखें खोल निद्रा छोड़ साहसके साथ जरा,
सोते हुए भारतीय कब उठ जायँगे?

सर्वहितकारी धन—गाय

(स्वामी श्रीअच्युतानन्दजी महाराज)

विश्वके प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेदमे एक मन्त्र आया है—

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय॥

(ऋ० १। १६४। २७, अथर्व० ९। १०। ५)

पूज्यपाद ब्रह्मलीन महर्षि मेँहीँ परमहंसजी महाराज अपने सत्संगमें इस वेद-मन्त्रका पाठ करके लाखों धर्मप्रेमियोंको सम्बोधित करते थे और कहा करते थे कि 'गाय अपनी मातासे भी श्रेष्ठ है, माताका दूध बच्चे थोड़े दिनतक पीते हैं, परंतु गौ माताका दूध जीवनभर पीते हैं। गायके बछड़ेसे खेतीका काम करते हैं—हलमे जोतते हैं, गाड़ी चलाते हैं। गायके गोबरसे घरद्वारकी लिपाई करते हैं। खेतमें खादका काम उसके गोबरद्वारा होता है। गोबरके खादसे खेतमे उर्वरा-शक्ति बढ़ती है। परंतु आधुनिक कृत्रिम खादसे जमीनकी जीवनी-शक्ति घटती है। इसलिये सबको चाहिये कि गायका पालन अवश्य करे। बूढ़ी गाय और बैलको नहीं बेचना चाहिये। जिस तरह बूढे माता-पिताका पालन करते हैं, उसी प्रकार बूढ़ी गाय और बूढे बैलका भी पालन करना चाहिये।'

गोवंश-ह्राससे देशकी आर्थिक समृद्धिमे व्यवधान उत्पन्न होगा। यह ध्रुव निश्चित है कि गरीब-से-गरीब लोग जितनी आसानीसे बैलद्वारा खेती कर सकते हैं, उतनी आसानीसे किसी यन्त्रसे नहीं कर सकते। गोपालनसे यह लाभ है कि खेती करनेके लिये उसके बछडेसे हल चला सकते हैं, उसके दूधसे जीवन-निर्वाह कर सकते हैं। विचार कीजिये कि गाय खाती है घास और देती है अमृततुल्य दूध। इसीलिये गायका पालन सर्वहितकारी जानकर सबोको करना चाहिये।

आजकल ट्रैक्टरद्वारा भी खेतीका काम हो रहा है। परंतु वह सर्वसाधारणको सुलभ नहीं है। ट्रैक्टरका दाम बहुत अधिक है। जिसका उपयोग कोई गरीब किसान नहीं कर सकता। परंतु यह हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि मजदूर भी गायका पालन घास-भूसा खिलाकर आसानीसे कर लेते हैं और उसके बछडेसे अपनी जमीन नहीं रहनेपर भी [illegible] जमीनको जोतकर अन्न उपजाते हैं।

आयुर्वेदमें अनुपानके रूपमे गायके दूध, मक्खन मूत्र, गोबर, घी, छाछ आदिके प्रयोग निर्दिष्ट हैं। गोमूत्रसे कठिन-से-कठिन उदर-रोगोकी चिकित्सा की जाती है। चर्मरोगोमे गोमूत्रका उपयोग किया जाता है। इसलिये स्वास्थ्यकी दृष्टिसे भी गोपालन अति आवश्यक है। भगवान् श्रीकृष्ण गायके महान् रक्षक थे। वे गाय चराते थे। वे गोपालन करके संसारके समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत कर गये हैं। वृन्दावन, गोकुल, व्रज आदि ऐतिहासिक स्थान भी हमलोगोको गोपालनकी स्मृतिका बोध कराते हैं। भगवान् श्रीरामके गुरु महाज्ञानी मुनि वसिष्ठजीकी कामधेनु नन्दिनीकी कथासे हम उपदेश पाते हैं कि प्राचीन कालके ऋषि-मुनि भी गोरक्षक और गोपालक थे। सारे विश्वमें गायके समान उपयोगी जानवर कहीं भी उपलब्ध नहीं है। [illegible] भारत सरकारको भी चाहिये कि देशके हर क्षेत्रमें गोचरभूमि और गोशालाका प्रबन्ध करे, ताकि साधारण समाजको विशेष लाभ प्राप्त हो। पौराणिक इतिहास बतलाता है कि राजा नृग नित्यप्रति करोडो गाय दान करते थे। उस समय गायका पालन विशेष रूपसे किया जाता था। जो कोई गायका पालन करते हैं वे लक्ष्मीका आदर करते हैं। क्योंकि गायके गोबरमें लक्ष्मीका निवास है। गोमूत्रमे गङ्गाका निवास है।

हमारे गुरुदेव मेँहीँ परमहंसजी महाराज जीवनभर गायके दूधका ही उपयोग करते रहे। वे [illegible] विशेष ख्याल रखते थे। गायके खानेका [illegible] पुआल आदिकी व्यवस्था भरपूर करवाते थे। [illegible] स्थित महर्षि मेँहीँ-आश्रममे अभी भी अच्छी [illegible] पाली जाती हैं। आश्रममे एक गोशाला भी है। [illegible] करनेपर यह निश्चित होता है कि आध्यात्मिक उन्नति और शारीरिक उन्नति एवं लाभके लिये गोपालन सभी वर्गोंके लोगोंको अवश्य करना चाहिये।

गो-महिमा

(डॉ० श्रीरघुवीरजी आर्य)

अखिल विश्वमें गौके सदृश उपकारी अन्य कोई भी प्राणी नहीं है। यह वह अनुपम विभूति है, जिसकी हमारे वेदोंने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। आर्य हिन्दू-जातिने अनादिकालसे निरन्तर गोभक्ति, गोपालन, गोसेवा, गोपूजा एवं गो-सत्कारको अपने जीवनका सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य समझा है। इस जातिके वेद, शास्त्र, स्मृतियाँ, पुराण और इतिहास गौके प्रति उत्कृष्ट भावनाओंसे ओत-प्रोत हैं। आर्योंके पवित्र हृदयोंमें पापनाशिनी धेनु-माताका माहात्म्य दृढ़तापूर्वक अङ्कित है, हजारो-लाखोने गोरक्षार्थ अपना सर्वस्व न्योछावर किया है। अपने प्राणोंतककी बलि चढ़ायी है, संसारके सब प्रकारके कष्ट-क्लेश, आपद्-विपद् झेलकर भी गोरक्षा की है। राजाओंने राज्य त्यागे हैं, योगियोंने योगानन्द छोड़ा है, युग-पुरुषोने नंगे पाँव वन-वन घूम-फिरकर गौओंको चराया है, गौका अनुसरण करते हुए वे गौके बैठनेपर बैठे हैं, चलनेपर चले हैं, चारा चरनेपर भोजन किया है, पानी पीनेपर पानी पिया है, सोनेपर सोये हैं और जागनेपर जागते रहे हैं। ऐसे महामानवोंकी गोभक्ति प्रशंसनीय, श्लाघनीय एवं अनुकरणीय है।

यद्यपि विधर्मियोंने आर्य-हिन्दुओंकी इन उदात्त भावनाओंका कदाचित् दुरुपयोग ही किया है, अनुचित लाभ ही उठाया है, परंतु आर्योंने अपने सर्वस्व, राज्य-लक्ष्मी, धन-ऐश्वर्य तथा मान-प्रतिष्ठा आदि सबकी प्रत्यक्ष हानिको समक्ष देखते हुए भी गोमातापर आँच नहीं आने दी। एक समय था जब कि समस्त भू-मण्डलपर आर्योंका अखण्ड चक्रवर्ती राज्य था। तब वेदानुकूल निर्मित उनके विधि-विधानके अनुसार सर्वत्र गो-पूजा प्रचलित थी। यदि कोई यातुधान प्रमादवश मर्यादाका उल्लंघन करके कहीं गो-घात-जैसा अक्षम्य अपराध कर बैठता तो प्राणदण्ड पाता था।

परंतु वर्तमान समयका यह एक भारी अभिशाप है कि पाश्चात्य-पद्धतिसे जो भी व्यक्ति अंग्रेजीके चार अक्षर पढ़ जाता है, वह सर्वप्रथम वेदपर ही वार करनेका दुष्प्रयास करना आरम्भ कर देता है। यह भी भाग्यकी विडम्बना ही है कि पाश्चात्य-पद्धतिका अनुसरण करनेवाले हमारे तथाकथित भारतीय विद्वान् प्रायः अपनी सम्पूर्ण शक्ति, समग्र तत्त्व-ज्ञान, समूची विद्या तथा समस्त युक्ति-भण्डार, इस प्रयासपर व्यय कर देना ही अपने लिये, अपनी जातिके लिये, अपने धर्मके लिये तथा अपनी सभ्यता-संस्कृति-साहित्य एवं परम्पराओंके लिये श्रेयस्कर समझने लग जाते हैं कि येनकेनप्रकारेण वेदको हेय, वैदिक ज्ञानको अपरिपूर्ण, वैदिक सभ्यताको अपरिपक्व, वैदिक संस्कृतिको संकुचित, वैदिक साहित्यको अकिंचन तथा वैदिक परम्पराओंको त्याज्य सिद्ध करना है।

वेद जो (क) अगणित स्थानोंपर गौको अघ्न्या (न मारने योग्य) और अदिति (न काटने योग्य) के नामोसे पुकारता है,

वेद जो (ख) गोघातकोंको प्राणदण्ड देनेकी आज्ञा देता है,

वेद जो (ग) राजाको आदेश देता है कि गोघातकोंका अन्न-जल, ओषधि-उपचार बंद करके सर्वस्व छीनकर उन्हें देश-निष्कासनका दण्ड दे,

वेद जो (घ) गोघातको मानव-हत्याके समान दण्डनीय अपराध घोषित करता है,

वेद जो (ङ) गौके दूधको अमृतके समान और दुर्बल शरीरवाले व्यक्तियोंको हृष्ट-पुष्ट बना देनेवाला स्वीकार करता है,

वेद जो (च) गौकी महिमाको बड़ी-बड़ी सभाओंमें गाये जानेका वर्णन करता है,

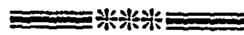
वेद जो (छ) यातुधानों (गोघातकों) के लिये सीसेकी गोलीसे बींध डालनेकी मर्यादा स्थिर करता है,

वेद जो (ज) गौकी कोई उपमा नहीं मानता, 'गोस्तु मात्रा न विद्यते' (यजु०२३।४८) उसका कोई मूल्य, कोई मात्रा और कोई परिमाण नहीं मानता अर्थात् गौके समान कोई भी नहीं है ऐसा बताता है,

वेद जो (ज्ञ) गौको रुद्रोंकी माता, वसुओंकी पुत्री, आदित्योंकी बहिन तथा घी-दूधरूप अमृतका केन्द्र मानता है और उसका वध न करनेकी आज्ञा देता है,

—उसी वेदमें गोवध तथा गोमांस-भक्षणकी कल्पना करना कितनी मूर्खता है, कितनी घृणित कल्पना है। वेदके ज्ञानके अभावमे मन्त्रोंका मनमाना अर्थ लगानेसे ही गो-हत्याको बल मिला है और सरकारके लिये मार्ग प्रशस्त हो गया है। सरकार कतलखानोंमें गाय कटवाकर गोमांस और चमड़ेका विदेशोंमें व्यापार कर रही है, यह कितनी लज्जाकी बात है।

गोहत्याके इस सुनियोजित षड्यन्त्रको बंद करनेके लिये गोभक्तोंद्वारा समय-समयपर कितने आन्दोलन हुए, कितने बलिदान हुए, कितने संत-महात्माओंका रक्त भूमिपर गिरा यह एक लंबा इतिहास है, यह तथ्य किसीसे कैसे छिपा रह सकेगा। कुछ सफलता तो मिली पर वह नाममात्र-सी है, तथापि प्रयत्न तो आज भी दृढ रहना ही चाहिये। यह सत्यका मार्ग है, न्यायका मार्ग है। एक-न-एक दिन पूर्ण सफलता मिलेगी ही। इस कार्यमें गो-गोविन्दकी कृपा अवश्य ही प्राप्त होगी। अत: पूर्ण श्रद्धा-भक्तिपूर्वक गोसेवाके कार्यमें जुट जाना चाहिये।



विश्वकी सर्वाधिक कल्याणमयी एवं पवित्रतम वस्तु—गौ

(स्वामी श्रीदत्तात्रेयानन्दजी (योगनाथ स्वामी))

वैदिक धर्म एवं संस्कृतिमें गौ (गाय) का अत्यधिक महत्त्व है। ऋग्वेद (८। १०१। १५) में गौकी इस प्रकार प्रशंसा की गयी है—'गौ अमृतकी नाभि है। देवयजनमे गोदुग्ध, गोदधि और गोघृत अतीव आवश्यक है। गौ रुद्रोकी माता, वसुओंकी पुत्री तथा आदित्योकी बहिन है।' 'वेदमें गौका वैशिष्ट्य-वर्णन करते हुए कहा गया है कि **'गावो विश्वस्य मातरः'**—गाय विश्वकी माता है। ऐसा भी कहा गया है कि 'गायकी पीठमे ब्रह्मा, गलेमे विष्णु, दोनो पार्श्वभागमें समस्त देवगण, मुखमे रुद्र, नेत्रोमें सूर्य-चन्द्र, रोमकूपोंमें ऋषि-मुनिगण और गोमूत्रमें गङ्गा आदि नदियाँ स्थित हैं।'

श्रुति कहती है कि **'आयुर्वै घृतम्।'** गायका घी आयुकी वृद्धि करनेवाला है, बुद्धिवर्धक है। आगे कहा है कि 'गायका दही स्वादिष्ट एवं रुचिवर्धक होता है, गोमूत्र और गोमय अनेक रोगोके जन्तुओकी शक्तिका समूल नाशक है। जहाँ गोशाला होती है, वहाँकी हवा कीटाणुरहित शुद्ध होती है। वह स्थान देवमन्दिर-जैसा है। वैदिक यज्ञ-यागमें, देवपूजनमें, पञ्चामृत एव पञ्चगव्यका उपयोग अवश्य किया जाता है।

गौको त्यागमूर्ति कहा गया है, क्योंकि उसके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग दूसरेके उपयोगमें आते हैं। इस महागुणसे गौ 'सर्वोत्तम माता' कही गयी है। 'देवीभागवत' (९। ४९। २४) मे कहा गया है—

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नम।
गवा बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके॥

गौ वस्तुत: जगन्माता है। महाभारतके अनुशासनपर्वमें भीष्मपितामह महाराज युधिष्ठिरको 'गौका माहात्म्य' सुनाते हुए कहते हैं—'मातर· सर्वभूतानां गाव सर्वसुखप्रदा।' —अर्थात् गौ सभी सुखोको देनेवाली है और वह सभी प्राणियोकी माता है।

महाभारत (अनु० ७४। ३-४)मे आया है कि 'जो उच्छृङ्खलतावश मांस बेचनेके लिये गायकी हिंसा करते या गोमांस खाते हैं तथा जो स्वार्थवश कसाईको गाय मारनेकी सलाह देते हैं, वे सभी महान् पापके भागी होते हैं। गौकी हत्या करनेवाला, गोमांस खानेवाला तथा गोहत्याका अनुमोदन करनेवाला, गौके देहमें जितने रोएँ होते हैं उतने वर्षोतक घोर नरकमे पडा रहता है।'

धर्मग्रन्थोमें स्पष्ट निर्देश है कि—[illegible] गौको भूखी-प्यासी मत रखो। [illegible] लातसे—किसी भी प्रकारसे [illegible] रखनेपर लक्ष्मीदेवी, [illegible] देव-देवियोंकी प्रसन्नता [illegible]

गोमहिमाको बताते हुए अग्निपुराणमे कहा गया है—

'गावः पवित्रा माङ्गल्या गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः।'

गौएँ पवित्र और मङ्गलदायिनी हैं और समस्त लोक गौओंमें ही प्रतिष्ठित हैं।

पारसियोंके महान् धर्मगुरु 'जरथुस्त्र' यश्न (४५। २) में कहते हैं कि 'ईश्वर मनुष्य-जातिके लिये अभ्युदय तथा गौओका हित करनेके लिये आवश्यक बुद्धि, सदाचार तथा दृढ़ता प्रदान करें।' 'बंदीदाद' ग्रन्थमें गोमहिमा वर्णित है।

इस्लामधर्मके 'हदीस'में कहा गया है कि 'गायके गोश्त (मांस) से बीमारियाँ होती हैं तथा गायका दूध दवाई और गायका घी रसायन है।'

पैगम्बर मुहम्मद साहब 'नाशियातहादी' ग्रन्थमें कहते हैं कि 'गायका दूध और घी तुम्हारी तंदुरुस्तीके लिये बहुत जरूरी है, किंतु गायका गोश्त (मांस) नुकसान करनेवाला है।' ईसाई 'पीटर डी लावेल' सूरत (गुजरात) से अपने पत्रमें लिखता है कि 'खंबातके नवाबका आदेश है कि यदि कोई मुसलमान भी गोहत्या करता है, गोमांस खाता है तो उसे फाँसीपर चढ़ा दिया जाय।' मुगल शहंशाहोंके गोहत्या न करनेके सख्त फरमान जाहिर थे।

'स्वामी रामतीर्थ' कहते थे कि 'गोमांसाहारी व्यक्ति साक्षात् राक्षस है, मांसाहारी व्यक्ति जंगम कब्रिस्तान है।'

गौ दैवी सम्पदा है

(श्रीवन्दीकृष्णजी त्रिपाठी, साहित्यशास्त्री, शास्त्ररत्न, विधि-वाचस्पति, एडवोकेट)

गौ दैवी सम्पदाकी प्रथम निधि है। यह व्यक्तिको स्वावलम्बन प्रदान करती है। व्यक्तिके पास प्रकृति-प्रदत्त शरीर तो है ही और भूमिपर वह जन्म लेता है, अतः व्यक्ति अपने शरीर तथा थोड़ी-सी भूमिके साथ बस देवविग्रह-स्वरूप एक गौ रख ले तो फिर उसे अपने जीवनयापन—सार्थक जीवनयापन-हेतु किसी अन्य सहारेकी आवश्यकता नहीं है। वह अपना सम्पूर्ण जीवन आरामसे परमधर्म 'परोपकार' करते हुए भवबन्धनसे मुक्त रहकर मुक्तिभाक् हो जाता है अर्थात् पूर्णत्व प्राप्त कर लेता है।

गौका गोरस—दूध, दही, मट्ठा, घी, मलाई आदि अनेक पदार्थोंके रूपमें तथा विविध रसोसे व्यक्तिकी क्षुधा शान्त कर सकता है। गोमूत्र उसे आधि-व्याधिसे दूर रख सकता है। गोबर उसे शुचिताके साथ-साथ अग्नि तथा भोज्य पदार्थके पाचनका साधन, उसकी भूमिको उर्वराशक्ति प्रदान कर सकता है और उसकी संततियाँ उसके लिये तमाम आवश्यक वस्तुएँ सुलभ करानेमें निरन्तरता प्रदान करनेके साथ-साथ उसके लिये आवश्यक होनेपर वाहनकी व्यवस्था भी प्रदान कर सकती हैं। इस प्रकार गौ सर्वार्थसिद्धिका एक सम्पूर्ण साधन तथा भारतीय संस्कृतिका मूलाधार है, भारतीय दर्शनका आध्यात्मिक मूल है।

गोधनसे धनी व्यक्तिके लिये 'परोपकार' कोई अतिरिक्त साधना नहीं रह जाती है, क्योकि एक गाय जितनी सामग्री प्रदान करती है वह व्यक्ति अकेले अपने निजके प्रयोगमें खर्च नहीं कर सकता। वह यदि किसी समष्टिके साथ है तो उसे वह दूसरोंको देगा ही—देना ही पड़ेगा। यही तो परोपकार है। गाय रखने तथा उसकी सेवामात्रसे ही परोपकारकी साधना स्वयमेव सिद्ध हो जाती है। गोमाता व्यक्तिको अपरिग्रही और परोपकारी बना देती है।

जीवके इतने महान् पुरुषार्थकी साधिका होनेके बाद भी गौका स्वरूप स्वयंमें कितना शान्त, कितना निश्चिन्त, कितना सौम्य तथा कितना प्रसन्न होता है कि उसे देखकर ही व्यक्तिका चित्त शान्त और प्रफुल्लित हो उठता है। गौओंकी स्वाभाविक चालमें एक अजीब-सा मोहक गाम्भीर्य होता है जो कि हमें बिना आतुर हुए अपने कार्योंको पूर्ण करनेकी प्रेरणा प्रदान करता है।

गौ और पृथ्वी एक-दूसरेके पूरक हैं। पृथ्वी जीवोंका आधार है और गौ जीवोंका जीवनाधार है। इस प्रकार गौ और पृथ्वीका तादात्म्य है। गौके गोबर तथा मूत्र पृथ्वीकी

उर्वराशक्तिकी अभिवृद्धि करते हैं और यह अभिवृद्धि भी स्वाभाविक होती है। इसमे स्थायित्व एवं निरन्तरता होती है। अतः यह पृथ्वीको अत्यन्त प्रिय होता है। पुराणो तथा शास्त्रोमें गौको पृथ्वीका जीवन्त रूप माना गया है।

गौकी प्रकृति, उसके द्वारा प्राप्त नैसर्गिक एवं स्वाभाविक स्वावलम्बन, उसका पृथ्वीके साथ तादात्म्य तथा उसके सौम्यादि गुणोके खान होनेके कारण ही भारतीय मनीषा, समाज एवं संस्कृतिमें गौका इतना महत्त्व है और इसे सभी दृष्टिसे संरक्षणीय तथा अघ्न्य माना गया है। गौकी प्रकृति एवं स्वरूपका तात्त्विक विवेचन तथा उसका अनुशीलन हमारे अध्यात्मके रहस्यका भेदन करनेमे सार्थक माध्यम बनता है और हम सृष्टिकी प्रक्रियाको उसकी पूर्णतामे समझ सकनेमे सक्षम होते हैं।

अध्यात्मको यदि थोड़ी देरके लिये [illegible] भी आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टिसे गौका [illegible] बहुत महत्त्व है। विज्ञानकी चरमोत्कर्षकी अवस्थामें [illegible] व्यक्ति निजमें अत्यन्त अपूर्ण होता है, किंतु गौका [illegible] हमे बरबस पूर्णता प्रदान करता है जो कि [illegible] दर्शनकी मूलभूत अवधारणा है। व्यष्टिसे समष्टि बनती है। अतः व्यष्टिकी आवश्यकतासे समष्टिकी आवश्यकताएँ भिन्न नहीं होतीं। मात्र गौकी संख्याकी वृद्धि समष्टिकी आवश्यकताएँ पूरी करेगी, यह तो सामान्य अनुभवकी बात है।

अतः हमे सर्वात्मना सर्वभावेन निरन्तर गौका सान्निध्य एव गोसेवाको अपनी दिनचर्याका अङ्ग बनाना चाहिये क्योंकि अन्य आसुरी सम्पदाएँ तो हमें अशान्त ही कर सकती हैं।



गो-गरिमा

(श्रीमहावीरप्रसादजी 'मधुप')

गो सब जगकी माता है यह निश्चय है।
गो सर्व-विभव-दात्री है, परम सदय है॥
गो-भक्ति पतितको भी पावन कर देती।
गो-सेवा करती पाप-ताप सब क्षय है॥ १॥

गो-पावन-तनमें देव सभी रहते हैं।
ऐसा सब वेद-पुराण ग्रन्थ कहते हैं॥
माँके समान करते न समादर गोका।
वे मूढ दुखोंकी ज्वालामें दहते हैं॥ २॥

गो घास-फूस तृण-पात स्वयं चरती है।
पर दुग्ध अमृत-सा वह प्रदान करती है॥
गो प्राणिमात्रका करती पालन-पोषण।
गो निबलोंको कर सबल रोग हरती है॥ ३॥

गो है जिस घरमें, है आराम वहाँपर।
गो है जिस घरमें, है सुरधाम वहाँपर॥
गो है जिस घरमें, श्री-सुख-शान्ति वहाँ है।
गो है जिस घरमें, है बस राम वहाँपर॥ ४॥

गोकी सेवासे सुप्त भाग्य जग जाते।
गो-सेवासे सब दैन्य-दुःख भग जाते॥
गोकी सेवासे दनुज देव बन जाता।
गो-सेवासे धन-धान्य ढेर लग जाते॥ ५॥

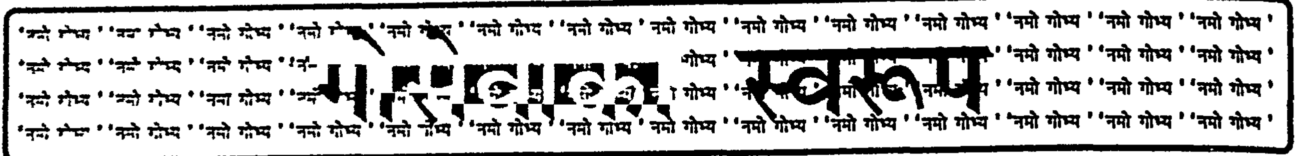
था समय, मान पाती थी गो भारतमें।
घर-घर पूजी जाती थी गो भारतमें॥
गो-सेवक थे सब भारतके नर-नारी।
सुख-बादल बन बरसी थी गो भारतमें॥ ६॥

गो-वध-कारण गिर रहा, देश दिन-दिन है।
गो-वध-कारण बढ रहा क्लेश दिन-दिन है॥
हम दीन-हीन, बल-क्षीण हुए जाते हैं।
गो-वध-कारण घट रहा शेष दिन-दिन है॥ ७॥

गो-वधिक नहीं कुछ भी विचार करते हैं।
भारी पातकसे तनिक नहीं डरते हैं॥
कितना जघन्य अपराध कि जिससे पलते।
उसके गलपर ही हाय छुरी धरते हैं॥ ८॥

गो-सेवाका फिर भाव जगे जन-जनमें।
गो-प्रेम प्रकट हो फिर मानव-जीवनमें॥
गो-रक्षा-हित तन मन धन भेंट चढ़ा दें।
सब जुट जायें दृढ़तासे गो-पालनमें॥ ९॥

फिर तनिक कष्ट [illegible]।
फिर नहीं किसीको भी दुख-दैन्य सतावे।
सच कहता हूँ, उपहास न इसे [illegible]
यह पिछड़ा भारत फिर [illegible]॥ १०॥



गोसेवाकी नीति

भारतीय संस्कृतिमें गायका एक विशिष्ट स्थान रहा है। संस्कृतिके मङ्गल-प्रभातसे ही गाय राष्ट्रके जीवनमे महत्त्वपूर्ण हिस्सा लेती रही है। सांस्कृतिक और धार्मिक दोनों दृष्टियोंसे भारतीय समाजमे गाय परिवारके एक विशिष्ट सदस्यके रूपमें प्रतिष्ठित रही है। आज देशकी गिरी और बिगड़ी हुई हालतमें भी गाय अपना वही योगदान दे रही है। गायको हम कैसे सँभालते हैं तथा कैसे उसका संरक्षण और संवर्धन करते हैं, इसपर ही भारतके भावी आर्थिक जीवनका विकास अवलम्बित रहेगा। भारतके आर्थिक ढाँचेमें कृषिका जो स्थान है, कृषिके विकासमें गायका वही स्थान है।

गाँधीजी आजीवन गायके वारेमे चिन्तित रहे। विनोवाजीकी प्रेरणा, मार्गदर्शन एवं प्रयाससे 'अखिल भारत कृषि-गोसेवा-संघ' आज इस ओर प्रयत्नशील है कि गायके शास्त्रीय विकास और बुनियादी महत्त्वको लोग समझें।

१-गोसेवाकी दृष्टि—विनोवाजीने कहा कि 'गोसेवा-संघ'की नीति 'सेवा' शव्दमे निहित है। गाय एक उदार प्राणी है, वह हमारी सेवा और प्रेमको पहचानती है तथा हमें अधिक-से-अधिक लाभ देनेके लिये तैयार रहती है, इसलिये हमे उसकी सेवा करनी है। सेवासे दो वातें गृहीत है—एक तो हम विना उपयोगके किसीकी सेवा नहीं कर सकते और दूसरे सेवा किये विना हम उपयोग लेगे तो वह गुनाह होगा और हमें वह गुनाह हरगिज नहीं करना है।

गायकी वछड़ीका पूरा उपयोग करना है, गायकी दूध देनेकी शक्ति वढ़ानी है। मजवूत बछड़े देनेकी शक्ति वढ़ानी है। उससे जुताईमे भी जितनी मदद मिल सके, लेनी है। गोवर और गोमूत्रका खादके रूपमें अच्छे-से-अच्छा उपयोग करना है। इसके लिये अधिक-से-अधिक शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त करना है तथा प्राप्त ज्ञानका उपयोग करना है। गायको समयपर उचित मात्रामें चारा-दाना देना, उसके रहनेकी अच्छी व्यवस्था करना, काम लेनेमे उसपर ज्यादती न करना, साफ-सफाई रखना, बीमारीका इलाज करना, उसके सुख-दुःखका पूरा ख्याल रखना और बूढ़ी होनेपर ठीकसे उसका भरण-पोषण करना—इतनी बातें सेवामें आती हैं।

ऊपरकी नीतिके अनुसार यह बात स्पष्ट है कि हम गोवंशका शास्त्रीय संवर्धन करना चाहते हैं और उसकी हत्या कतई बंद करना चाहते हैं। हम यह मानते हैं कि गाय धर्मशास्त्रके साथ-साथ अर्थशास्त्रमें भी टिकनी चाहिये और जब अर्थशास्त्रमें भी टिकेगी, तभी उसका पूरा पालन हो सकेगा। इस दृष्टिसे जीवनभर गायको स्वावलम्बी बनानेका हमारा प्रयास रहेगा। शास्त्रीय गोसंवर्धन और सम्पूर्ण गोवंश-हत्या-बंदी ही हमारी नीति रहनी चाहिये। गायसे हमारा मतलब गाय, बैल, बछड़े अर्थात् पूरे गोवंशसे है।

२-राष्ट्रिय संयोजनमें गायका सर्वोपरि महत्त्व है—भारतके आर्थिक संयोजनमें पिछले अनुभवोंके आधारपर अब कृषिको ही सर्वप्रथम स्थान दिया जा रहा है। साथ ही स्थायी कृषि-विकासकी योजनाओंमें गोपालनको प्रथम स्थान देना जरूरी हो गया है। गायसे ही हमें खेतीके लिये अच्छे बैल प्राप्त होते हैं। समाजके स्वास्थ्यको बलवान् बनानेके लिये गोमाता हमें शुद्ध और स्वास्थ्यप्रद दूध प्रदान करती है। गोबरकी खाद खेतोंको अधिक उपजाऊ बनाती है। अब तो गोबर-गैससे बिजली भी पैदा की जा रही है, जो कई तरहकी मशीनोंको संचालित कर सकती है। गोमूत्र अद्वितीय खादके रूपमें सिद्ध हुआ है, गोमूत्र अमोघ औषध है एवं आणविक शक्तिके निर्माणमें सहायक हो ऐसा शोध चल रहा है। मृत्युके वाद भी गायकी हड्डी और चमड़ा स्थानिक ग्रामोद्योगोंके लिये इस्तेमाल किया जा सकता है। इस प्रकार हमारे राष्ट्रिय संयोजन, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रोंमें गायका सर्वोपरि महत्त्व स्पष्ट है।

३-सम्पूर्ण गोवंशकी हत्या बंद हो—भारतीय अर्थशास्त्रमें गाय, बैल सभी समान-रूपसे उपयोगी हैं एवं

भारतीय संस्कृतिमे सवका समान आदर है। अतः वैल और साँड़सहित पूरे गोवंशकी हत्या वद होनी चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि भारतीय संविधानमें संशोधन किया जाय। आजके कानूनमे सुप्रीम कोर्टके निर्णयके अनुसार वूढ़े वैल या साँड़का संरक्षण उपयोगी होनेतक है। वूढ़े अनुपयोगी वैलके क़तलकी इजाजत है। डॉक्टरके झूठे सर्टिफिकेटसे जवान वछड़ेतक कटते हैं। वैलके नामपर गाये भी कटती हैं। इस छूटके कारण संरक्षणके पूरे कानून वेकार हो रहे हैं। गोवश-हत्या बंदीका केन्द्रीय तथा स्टेट कानून बने ऐसी भारत सरकार एवं प्रदेश-सरकारोंसे हमारी माँग रही है।

कुछ लोगोंका ख्याल है कि 'सेक्युलर स्टेट' मे गोवंश-हत्या-बंदीका कानून नहीं वन सकता, क्योकि ऐसा कानून बननेपर गाय और बैलकी हत्या करनेवाले मुसलमान भारतमें कैसे रह सकेंगे? ऐसा कहनेवाले, ऐसा समझनेवाले इस्लामका अपमान करते हैं। कुरानमें गोकुशी—गोहत्या करना आवश्यक विधि नहीं है। इतिहास साक्षी है कि अकबर एवं अनेक मुगल बादशाहोंके राज्योमे गोवंशकी हत्या पूर्णतः बंद थी। बहादुर शाह जफरके राज्यमें तो ईदपर पहरा रहता था, ताकि कोई गायका कतल न कर दे। कश्मीर-जैसे मुस्लिम प्रधान प्रदेशमें भी गोवंशकी हत्या पूर्णरूपसे वद है। बगाल-केरल छोड़कर प्रायः सारे भारतमे कहीं भी ईदपर गोहत्या नहीं होती।

भारतका भी अपना समाजवाद है। भारतके समाजवादमे यह माना गया है कि मानव-वंशके अंदर गोवंशका समावेश करें और जिस गायके दूधपर हमारे बच्चे पलते हैं, उसे कृतज्ञताके तौरपर रक्षा दे एवं उसका क़तल न करे।

गोरक्षाके सम्बन्धमे गाँधीजीने कहा है कि 'गोरक्षा' भारतकी विश्वको देन है। बापूजीके कहनेका गहराईसे चिन्तन किया जायगा तो ध्यानमे आयेगा कि कितनी वडी नैतिक एवं आध्यात्मिक बात बापूजीने कही है। गोरक्षाकी भावनाके पीछे 'कृतज्ञता'-भावनाकी रक्षा है। जीवनभर जिसने सेवा की, उसके प्रति अन्तिम दिनोंमें कृतज्ञता रखना ही मानवकी श्रेष्ठ भावना है। जिस समाजमे कृतज्ञताकी जगह 'कृतघ्नता' की भावना बढ़ती है, वह समाज कभी शान्तिसे नहीं रह सकता। 'गोरक्षा' मानवताके रक्षणकी बुनियाद है।

'गोवध चालू रहना या गोवध वद होना' इसपर सारे देशकी गोसंवर्धन-नीतिअवलम्बित है। [illegible] गोवध एव गो-भक्षण चालू रहता है तो [illegible] पशुओंका विकास अधिक किया जायगा [illegible] कतलके लिये मिलता रहे। जैसे दूध-प्रधान [illegible] नर पशु कतलके लिये मिलते रहेंगे। परन्तु [illegible] हत्या-वदी हो जाय तो गोसवर्धनकी नीति अनुकूल [illegible] होगी। गोवध-वदीके वाद सर्वाङ्गी नसलका ही [illegible] होगा, जिसमें नर और मादा दोनों उपयोगी हों। [illegible] दुधार हो और वछड़ा खेतीके जोत-लायक [illegible] ऐसी नसल तैयार करनी होगी। इसे ही सर्वाङ्गी नसल [illegible] हैं, इसमे नर और मादा दोनोका संरक्षण होता है।

४-खेती और गोपालन अभिन्न है—[illegible] है कि खेती और गाय, दोनोंकी जोड़ी है। दोनों एक-दूसरेसे अभिन्न हैं। दोनो एक सिक्केके दो पहलू हैं। दोनों एक-दूसरेके पूरक हैं। खेतीको बैलोंकी जोड़ मिल जानेसे [illegible] जुताई अच्छी होती है। गोवर और गोमूत्रमे कचरा मिलाकर वड़ी तादादमे कम्पोस्ट खाद वनायी जा सकती है, जिससे खेतीकी उपज वढती है और भूमिकी उपजाऊ-शक्ति [illegible] रहती है। खेती गायको चारा-दाना देती है। गाय [illegible] घास-चारा खाकर उत्तम-से-उत्तम दूध देती है। [illegible] दिव्य गुण है कि वह अखाद्यको खाद्य बना देती है। किसानका ग्रामीण जीवन गाय-बैलोंके सहारे ही [illegible] है। उसे सालभर आमदनीके साधन मिल जाते हैं। [illegible] सन् १९४१ से १९४६ तक ६ जिलोंमे 'केवल खेती' और 'गोपालनके साथ खेती'—दोनो प्रकारके प्रयोग किये गये थे। उस वारेमे उत्तरप्रदेशकी सरकारने 'गोपालन और खेती' नामसे एक पर्चा (नं० १९९) निकाला था। [illegible] है कि इस प्रयोगसे ५ वर्ष वाद यह सिद्ध हुआ कि [illegible] साथ खेती करनेवालोंकी आय प्रति एकड़ रु० [illegible] जवकि विना गोपालनके केवल खेती [illegible] आय प्रति एकड रु० ५१ ७६ आयी।

कई जगह यह सवाल उठाया [illegible] मनुष्योंको खिलायें या गायको खिलायें। [illegible] होता है कि यह सवाल ही गलत है। [illegible] भी खिलाते हैं, वह अपने लिये [illegible] मेहरवानी नहीं करते। [illegible]

कई गुना अधिक लाभ गायसे मानवको मिलता है। जैसे खेतमें बीज बोनेको धूल-मिट्टीमें अनाज फेंकना नहीं कहा जायगा, वैसे ही गायको खिलाना भी बीज बोनेके समान तथा उससे कहीं अधिक लाभदायी है। जैसे गायसे खेतीको लाभ है, वैसे ही गायको भी खेतीसे लाभ है। गाय सुखमय जीवन खेतपर ही बिता सकती है। जहाँ खेती नहीं है, वहाँ चारा-दाना महँगा होगा। वहाँ अच्छी-से-अच्छी गायका भी आजके अर्थशास्त्रमें पालन करना कठिन होता है। वर्धाके आस-पास दो-चार जगहोंमे जहाँ खेतीके लिये काफी जमीन थी, परंतु जमीने उपजाऊ नहीं थीं, वहाँ गोशालाएँ खड़ी की गयीं। उसका नतीजा यह हुआ कि वहाँकी जमीने उपजाऊ बन गयीं। संघकी निश्चित राय है कि खेती और गोपालन एक-दूसरेके पूरक हैं। वे साथ-साथ चलने चाहिये, यानी हर किसानके पास गायें होनी चाहिये और हर ग्वालेके पास खेतीकी जमीन। इसी अनुभवसे संघने गोपालनके साथ-साथ कृषिका काम भी हाथमें लिया है। और 'गोसेवा-संघका नाम भी 'कृषि-गोसेवा-संघ' कर दिया है। भगवान् श्रीकृष्णने भी गीतामें कृषिके साथ गोसेवाको जोड़ा है 'कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यम्'। श्रीकृष्ण गोपालक थे तो भैया बलराम—हलधर किसान।

५-गोसंवर्धन-नीति—गोसंवर्धनकी आज जो नीति चल रही है, वह केवल दूध बढ़ानेके लक्ष्यको लेकर है। इस कारण बैल-शक्तिकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। वास्तवमे होना यह चाहिये कि करोड़ो किसान रख सके, ऐसी सर्वाङ्गी गाये पैदा की जानी चाहिये, जो १,००० से २,००० लीटरतक एक बेंतमें दूध दे और उत्तम बैल दें। संवर्धन-नीतिमे इस बातका भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जो सर्वाङ्गी नसलें हैं यानी अधिक दूध और उत्तम बैल दे सकती हैं—जैसे, हरियाणा, थारपारकर, गीर, कांकरेज, कांगायम, देवनी आदि। इन नसलोको सिलेक्टिव ब्रीडिंगसे शुद्ध रूपमें संवर्धन करना चाहिये एवं जो कम दूधवाली बिना नसलकी गायें हैं, उनको क्रास करके सर्वाङ्गी गाय बनाना चाहिये।

(अ) गोसंवर्धनका लक्ष्य सर्वाङ्गी हो—प्रथम यह तय करना आवश्यक है कि भारतमें गोविकासका लक्ष्य क्या हो? विदेशमें दूध और मांसका लक्ष्य रखकर गोसंवर्धन किया जाता है। भारतको दूध और खेती-जोतकी आवश्यकता है। आज भी हमारी ७५ प्रतिशत खेती बैलोंपर निर्भर है। निकट भविष्यमें भी बैलोंकी आवश्यकता है। इसलिये हमारे गोसंवर्धनका लक्ष्य सर्वाङ्गी नसल तैयार करना होना चाहिये, यानी बछड़ी अधिक दुधार हो और बछड़ा खेती-जोतके लायक उत्तम बैल बने।

जो देश गायको कतल करते हैं और उसे खाना जायज मानते हैं, उन देशोंमे एकाङ्गी पशु चल सकते हैं। लेकिन भारत-जैसा देश, जो गोरक्षाको धर्म मानता है, गायके उपकारोको स्मरण रखते हुए कृतज्ञतापूर्वक गोहत्या-निरोध कानून बनाना चाहता है, उस देशमें नर-मादा दोनों उपयोगी होंगे, तभी गोरक्षा हो सकेगी।

(आ) विदेशी रक्त बैल-शक्तिके लिये कम उपयोगी—आज क्रासब्रीडिंगके जो प्रयोग चल रहे हैं उनमें ऐसा अनुभव आ रहा है कि बछड़ियोंमें दूध बढ़ जाता है, पर बछड़ोंमें जोत (ड्राफ्ट) की शक्ति घट जाती है। भारतको दूध भी चाहिये और जोत-शक्ति भी। इसलिये आवश्यक है कि विदेशी रक्तकी अपेक्षा भारतीय रक्त ही दिया जाय, जिससे बछड़ोकी जोत-शक्ति कायम रह सके। किसी भी हालतमे बैल-शक्तिका घटना भारतके लिये अनुकूल नहीं हो सकता है। समतल भूमि और शहरोकी सड़कोंपर सम्भव है क्रास बैल काम दे सके, पर देहातोमें खेतीमें मुश्किलसे काम देंगे, ये कड़ी धूपको बरदाश्त भी नहीं करते।

(इ) अपग्रेडिंग (भारतीय नसलोंसे क्रास करना)—भारतकी आबहवाके अनुकूल नसल तैयार करनी हो तो सिलेक्टिव ब्रीडिंग या अपग्रेडिंगका सहारा लेना चाहिये। आज भी सर्वाङ्गी नसलोके उत्तम साँड़ मिल सकते हैं। उनको नजरअंदाज नहीं करना चाहिये। उनका सीमेन भी संग्रह करके नसल बढ़ानी चाहिये।

विदेशी नस्लोसे ब्रीडिंगको क्रास-ब्रीडिंग कहते हैं और भारतीय नस्लोंके क्रासको अपग्रेडिंग कहते हैं। महाराष्ट्रके सतारा जिलेमें धोकमोड क्षेत्रमें पिछले अनेक वर्षोंसे अपग्रेडिंगका कार्य होता आया है। इसके बहुत ही अच्छे परिणाम आये है। 'खिलार' को 'थारपारकर' से अपग्रेड किया गया। इस अपग्रेड नसलका नाम खिलारधारी रखा। खिलारका दूध ४-५ लीटर था तो खिलारधारीका अधिकतम

१४-१५ लीटर तक बढ़ा है। घृतांशका प्रतिशत भी अधिक है, बैल खेतीके लिये उत्तम होते हैं। अतः जहाँतक अपग्रेडिंगसे काम चलता हो, वहाँ अपग्रेडिंग ही किया जाय, क्रास-ब्रीडिग न किया जाय।

(ई) मान्य नसलोंपर क्रास-ब्रीडिंगको पूर्णतया रोका जाय—भारतमें कुछ नसलें प्राचीन समयसे चलती आ रही हैं। हजारों वर्षोंके प्रयत्न एवं जलवायुके कारण कुछ नसले स्थिर हुई हैं। इनमे कुछ स्थायी गुण देखे गये हैं। इन नसलोमे गीर, थारपारकर, हरियाणा, कांकरेज, ओगोल, कागायम, देवनी आदि प्रमुख हैं। इनमें अधिकाश नसले सर्वाङ्गी हैं। इन मान्य नसलोंका विकास भारतीय नसलोसे सिलेक्टिव ब्रीडिग या अपग्रेडिगके जरिये किया जाय। इससे उनके स्थायी गुणोंको आँच आये विना दूध और बैलशक्ति दोनोंकी वृद्धि हो सकेगी।

आज हमारे पास हरियाणा, थारपारकर, कांकरेज, ओंगोल आदिकी २,००० से २,५०० लीटरतक प्रति व्याँत दूध देनेवाली और उत्तम बैल देनेवाली गायें मौजूद हैं। जिससे यह स्पष्ट होता है कि दो ढाई हजार लीटरतक दूध और उत्तम बैल पैदा करना सम्भव है। विशेषज्ञोको अपनी शक्ति इसमें लगानी चाहिये। मान्य नसलोपर क्रास-ब्रीडिग करके उनके स्थायी गुणोंको नष्ट करना गोवश तथा देश दोनोके लिये हानिप्रद है।

६- गाय बनाम भैंस—आज भारतमे गाय और भैंसके सम्बन्धमें दुविधा चल रही है कि किसको तरक्की दी जाय। हम कुछ ऐसे पशोपेशमे पड़े हैं कि इधर गायको भी बढ़ावा देते हैं, उधर भैंसको भी बढावा देते हैं। नतीजा यह होता है कि न पूरी तरहसे गाय बढ़ पाती है न भैंस। एक बात समझ लेनी चाहिये कि भारतमे हमारे पास इतनी जमीन नहीं है कि हम गाय और भैंस दोनोंको साथ-साथ पाल सके।

पशुओसे राष्ट्रको दो अपेक्षाएँ हैं। पहली—अन्न-उत्पादन अर्थात् खेती-जोतकी और दूसरी दूधकी। दूधकी आवश्यकता भैंस पूरी कर सकती है, ऐसा थोड़ी देरके लिये यदि मान ले तो भी सारे देशकी खेती-जोतकी तथा परिवहनकी आवश्यकता भैंससे पूरी नही हो सकती, यह तथ्य है। हम सोचते हैं कि ट्रैक्टरसे पूरी खेती कर ली जाय तो भी आनेवाली कई पीढ़ियोंतक खेतीके लिये बैलोकी आवश्यकता रहेगी ही। अगर तेलके स्रोत कम होने [illegible] आधार रहेगा।

वहुत विचार करने तथा अनुभवसे [illegible] है कि गोवंशमे ये दोनो काम पूरे हो सकते हैं। [illegible] खेती-जोतका प्रश्न है, बैलसे आज [illegible] हो ही रही है। शास्त्रीय सवर्धनमे बैल-[illegible] ओर ध्यान देगे तो जोत-शक्तिमे जो कमी [illegible] पूरी हो सकती है। जहाँतक दूधका सवाल है, [illegible] सिद्ध हो चुका है कि भैंसके मुकावले गायमे दूध [illegible] शक्ति वहुत अधिक है। आजकी गायें दूध कम देती हैं [illegible] सही हैं। परतु अच्छे संवर्धनके वाद गायोका दूध [illegible] वढ सकता है। आज प्रत्यक्ष अनुभव भी यही है। [illegible] जो कमी है, वह एक ही वातकी है कि गोदुग्धमे [illegible] प्रतिशत कम है। भैंसके दूधमे सबसे [illegible] घृताशका अधिक होना है। जब हम यह मान लेते हैं कि गायमे दूध भैंसके मुकावले डेढ या दुगुना हो सकता है तो यह भी मान लेना चाहिये कि गायके दूधमे [illegible] प्रतिशत कम होनेपर भी टोटल घी भैंसके मुकावले कम नहीं रहेगा। सब दृष्टिसे राष्ट्रकी शक्ति गोपालन-[illegible] लगेगी तभी देश आगे वढ सकेगा। आज तो गाय-भैंस [illegible] ही बेतहाशा कट रहे है। बैलोंकी संख्या इतनी कम [illegible] है कि दोनोकी आवश्यकता है। 'गोसेवा-संघ' ने [illegible] क़तल-बदीकी माँगके साथ ही भैंस-[illegible] भी माँग की है।

७-अन्त्योदय (किसानकी गायको बढ़ावा देना)—भारतमे दूधकी उपलब्धिका प्रश्न [illegible] तीन-चार हजार लीटरवाली [illegible] है करोड़ो गाये जो प्रति व्याँत ५०० [illegible] देनेवाली हैं उनका संवर्धन करके [illegible] से २,००० लीटर तक दूध बढ़ाया जाय। [illegible] अन्त्योदयका सिद्धान्त [illegible] कम दूध देनेवाली हैं, [illegible] उनका दूध चार गुना [illegible] विशाल और [illegible] उठाना प्रथम [illegible]

[illegible]

मेवा चली है। शहरोंको दूध-सप्लाई करनेके अलावा गोसवर्धनका कोई लक्ष्य नहीं माना जाता। पशुपालनमें होनेवाला अधिकांश खर्च केवल शहरोंकी सेवाके निमित्त हो रहा है। देहातके किसानकी, उसकी खेतीकी, उसमें भी अन्तिम किसानकी, कहीं कोई पूछ नहीं है। क्या हम आशा करें कि हमारे विशेषज्ञ और राजनेता सही दिशामें सोचना आरम्भ करेंगे एवं गिरी हुई करोड़ों गायोंको उठायेंगे?

८-शहरोंमे दुधारु पशुओंको हटाना—गोवंशके पतनके कारणोंकी जाँच करनेसे पता चलता है कि उत्तम दुधार नसलोंका विनाश बड़े-बड़े शहरोंमें हो रहा है। बड़े-बड़े शहरोंमे दूधके लिये लोग अच्छी-से-अच्छी गायें ले जाते हैं और दूध कम होते ही वे गाये कसाईके हाथ बेच दी जाती हैं। इस तरहसे भारतका उत्तम-से-उत्तम गोधन इन शहरोकी बलिवेदीपर नष्ट हो रहा है। 'गोसेवा-संघ' ने राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्रप्रसादजीकी अध्यक्षतामें सन् १९४९ में इस विषयकी जाँचके लिये एक समिति नियुक्त की थी। उस समितिने कलकत्ता और बंबई दो जगहकी जाँच की। जाँचमें यह पाया गया कि बड़े शहरोंमें गायोंकी हालत बहुत बुरी रहती है। न उनके निवासके लिये पूरा स्थान होता है, न दिनमें घूमनेका स्थान होता है। बछड़े-बछड़ियोको मार दिया जाता है, क्योंकि उन्हें खिला-पिलाकर बड़े करनेमें जितना खर्च होता है, उतनी उनकी कीमत नहीं आती। कृत्रिम उपायोंसे गायोंका इतना दूध निकाला जाता है कि गाय जल्दी गरमाती ही नहीं। अक्सर दूध बंद होनेके बाद गाय कसाईके हाथ बेच दी जाती है। सूखी गायको ब्यानेतक पाँच-छः महीने रखने-खिलानेमें जितना खर्च होता है, उससे कम कीमतमे नयी गायें खरीद लेते हैं और पुरानी कसाईको बेच देते हैं। इस तरह देशकी उत्तम-से-उत्तम दुधार गायें और उनकी संतान नष्ट कर दी जाती है।

इस विनाशको रोकनेके लिये संघकी स्पष्ट राय है कि बड़े शहरोंमें दुधार पशुओंका रखना कतई बंद कर देना चाहिये। जिन लोगोंके पास बहुत कुछ खुली जमीन हो और जो लोग दूध सूखनेपर भी गायका पालन करनेमें समर्थ हों, ऐसे कुछ लोगोंको अपवादके तौरपर गायें रखनेकी इजाजत दी जा सकती है। शहरवालोंको चाहिये कि शहरोंमें पशु रखनेके बदले देहातोंसे दूध शहरोमें लानेका इंतजाम कर लें। जैसा आज 'गोसंवर्धन-गोरस-भण्डारों'मे होता है। मोटर आदिसे सौ-डेढ़-सौ किलो मीटर दूरसे दूध लाया जा सकता है। गाय-भैंस तो वहीं रहने चाहिये, जहाँपर खेतीकी जमीन हो और गोबर-गोमूत्रके खादका उपयोग हो सकता हो। जहाँ चारा-पानी सस्ता हो और जहाँ सूखे जानवरको पालनेमें आसानी हो, ऐसे स्थानोपर गाय रखनेसे गाय बचेगी, खुली हवामें फिरनेवाली गायका दूध भी स्वास्थ्यकर मिलेगा, खेतीको अच्छी खाद मिलेगी, खेतीकी उन्नति होगी और अनाजकी उपज बढ़ेगी। खेतोमें घूमनेवाली गायोंका स्वास्थ्यप्रद दूध भी मिल सकेगा। यही ऐसा तरीका है, जिसमें गाय और शहरवाले, दोनोंका लाभ है, दोनों बच सकते हैं। यही 'गोसंवर्धन-गोरस-भण्डार-योजना' है।

९-बूढ़े तथा अनुत्पादक पशु—बूढ़े पशुओंके लिये दूर जंगलोंमें जहाँ पर्याप्त चारा-पानी हो वहाँ गोसदन कायम किये जायँ। वहाँ साँड़ न रखा जाय। इससे बेकार पशुओंकी उत्पत्ति रुक जायगी। गोसदनोंपर जो खर्च होगा वह कहाँसे आये यह सवाल रहता है। आज बड़े-बड़े शहरोंमें व्यापारियोंने स्वयं प्रेरणासे व्यापारपर धर्मादाके नामसे गोरक्षणके खर्चके लिये लाग-बाग लगा रखी है, उन लाग-बागोंको कानूनी बना दिया जाय। जिन शहरोंमें ये लागें न हों वहाँ भी लगायी जा सकती हैं। जहाँ स्थानीय 'गोरक्षण-संस्था' चलती हो, वहाँ आधी आमदनी उसे दी जाय तथा आधी गोसदनोंके लिये रहे। जहाँ 'गोरक्षण-संस्थान' चलता हो, वहाँकी पूरी आमदनी गोसदनोंके लिये रहे। इस तरीकेसे काफी हदतक स्थायी व्यवस्था हो सकती है। इस व्यवस्थाके बाद भी सरकारी सहायताकी जरूरत रहेगी तो उतनी सहायता सरकारको देनी होगी। आज कम्पोस्ट जैविक खादोंका महत्त्व बढ़ रहा है। गोबर-गोमूत्रके खादकी पूरी कीमत मिली तो गोसदन स्वावलम्बी हो सकते हैं।

१०-गाँव-गाँव गोसदन—हर प्रकारसे गाँव स्वावलम्बी बने, ग्रामसभा सक्षम बने। ग्रामसभा तभी अच्छी बन सकती है जब गाँवका जो उत्तम गोधन है और जिनसे आर्थिक लाभ होता हो ऐसे पशु किसान-गोपालकोंके पास रहें और जो गायें बूढ़ी हैं या जवान होनेपर आर्थिक दृष्टिसे कमजोर हो गयी हैं, उनकी सँभालका कार्य गाँवके गोसदन करें। गोसदनमें गोबर-गोमूत्रके कम्पोस्ट खादकी उत्तम व्यवस्था हो। इस खादसे खर्चकी कमी पूरी हो सकती है। पूरी कोशिश की

जाय तो गोसदन स्वावलम्बी भी हो सकते हैं। यह संत विनोबाजीका नया सुझाव था। इस योजनाके अनुसार ग्रामसभा गाँवके बेकार पशुओंको सँभाल सकेगी। इससे 'गोहत्या-बंदी' सफल होगी और 'गोसंवर्धन' बढ़ेगा।

११-पशु-खाद्यका निर्यात बंद हो—विदेशी मुद्रा आयोजित करनेके लोभमें भारतसे बड़ी मात्रामे पशु-खाद्योका खासकर खलीका विदेशोंमें निर्यात होता है। देशमे जितने पशु हैं, उनके लिये भी पशु-खाद्यकी कमी है, यह निर्विवाद बात है। परंतु मनुष्यका स्वार्थ उसे कहाँ-से-कहाँ ले जाता है, इसकी कोई सीमा नहीं। कृषि-मन्त्रालयके एक सचिव कहते हैं कि पशु-खाद्योकी बहुत कमी है, इसलिये निर्यात बद होना चाहिये। उधर प्रोडक्शन सचिव कहते हैं कि खलीका निर्यात जरूरी है, नहीं तो खलीके भाव गिर जायँगे। उसका असर उत्पादकोंपर पड़ेगा और परिणाम-स्वरूप मूँगफली एवं तिलहनोका उत्पादन कम हो जायगा। तथाकथित बुद्धिमान् लोग अनुकूल-प्रतिकूल मनमानी दलीले देते रहते हैं। निर्यातसे केवल शहरी व्यापार और कारखानेवालोका स्वार्थ सधता है, ग्रामवासी मरते हैं।

वास्तविक स्थिति यह है कि पशु-खाद्योंकी देशमे कमी है, निर्यात बंद हुआ तो भारतके पशुओको वह खाद्य मिलेगा। देशकी गायोंको खली मिलेगी तो दूध बढ़ेगा, खाद उत्तम मिलेगी, गोबर-गैस बढ़ेगी। कुल मिलाकर निर्यातके मुकाबले अधिक ही लाभ होगा।

१२-चारे-दानेकी प्लानिंग हो—गोसवर्धनके लिये उत्तम साँड़के उत्तम बीजकी आवश्यकता है, ऐसा सभीका मानना है, परंतु उससे भी अधिक आवश्यकता पशुके खाद्योके बढ़ानेकी है। यदि खाना पूरा न मिलेगा तो नसल-सुधारका सारा कार्यक्रम व्यर्थ जायगा। बिना खुराकके शरीरमे दूध भी नहीं बनता है। आज जो भी गाये जैसी भी हैं उनका नसल-सुधार किये बिना पर्याप्त खाना देगे तो दूध बढ़ जायगा और बैल-शक्ति भी बढ़ जायगी। हमारा अनेक वर्षोका अनुभव है कि खुराक अच्छी मिलनेपर यहाँ 'गोपुरी'मे तीन गुनातक दूध बढ़ा है। चारे-दानेके बढ़ाये बिना गोसंवर्धन असम्भव है।

सारे देशमें 'मनुष्य-खाद्यों' के लिये प्लानिंग किया जाता है ताकि इसी जमीनमेंसे आवश्यक खाद्य-पदार्थ मिल जायँ। उसी प्रकार 'पशु-खाद्यों' यानी चारे-दानेका भी प्लानिंग, अनाजके प्लानिंग [illegible] खेतीमें ऐसे ही बीज बोये जायँ जिनसे [illegible] चारा मिल सके।

१३-गोदुग्धकी खरीद उचित भावमें हो—[illegible] खासकर सरकारी-गैरसरकारी एव [illegible] आधारपर दूध खरीदनेके भाव निश्चित किये [illegible] परिणाम यह होता है कि गोदुग्धको [illegible] मिलता है और भैंसके दूधको गोदुग्धसे [illegible] है। परिणाम यह होता है कि गोपालकको गाय [illegible] पालनी पडती है। आज हम देख रहे हैं कि [illegible], गुजरात, उत्तरप्रदेश आदि जहाँ-जहाँ भी [illegible] दूध खरीदनेके भाव रखे गये हैं, वहाँ-वहाँ [illegible] पास गाये समाप्त हुई हैं और भैंसे बढ़ी हैं।

घृतांशके आधारपर भाव रखनेमे [illegible] है कि दूधमे घृताशको ही हम सबसे [illegible] और बाकी तत्त्वो (पाउडर) को गौण। यह [illegible] तरीका है। वास्तविक पोषणकी दृष्टिसे [illegible] घृताशकी कीमत एक तिहाई और बाकीके [illegible] (एस०एन०एफ०) की कीमत दो-तिहाई [illegible] राष्ट्रिय योजनामे राष्ट्रको देशका पोषण [illegible]। इसलिये यह तय करना आवश्यक है कि गोदुग्धको [illegible] प्रकार भी भैंसके दूधसे कम भाव न मिले। [illegible] कि इस दृष्टिकोणको महाराष्ट्र सरकारने [illegible]। '[illegible] कृषि उद्योग-संस्थान उरलीकांचन'के [illegible] काम हुआ। महाराष्ट्र सरकारकी ओरसे साढ़े [illegible] घृतांश और साढ़े आठ प्रतिशत एस०एन०एफ० [illegible] सॉलीडस १३ प्रतिशतके गोदुग्धको और [illegible] तथा ९ प्रतिशत एस०एन०एफ० कुल [illegible] दूध दोनोका खरीद-भाव समान देने [illegible] योजना चली। उसका परिणाम यह हुआ है कि [illegible] काफी मात्रामें गोपालन बढ़ा है। [illegible] स्व० मणिभाईका दावा था कि दूध-[illegible] चलती रही तो दस सालमे [illegible] हो जायगा। सर्वत्र गायें [illegible]। [illegible] दावा सफल हुआ है। [illegible] रहा है।

उचित यही है कि गोदुग्ध और भैंसके दूधके भाव समान हों। उत्पादन-खर्चकी दृष्टिसे यह माना जा सकता है कि गोदुग्धके उत्पादनका खर्च कुछ कम आता है। इसलिये गोदुग्धके भाव भैंसके दूधके मुकावले दस प्रतिशत तक कम रखे जा सकते हैं। परंतु पिछले ४० वर्षोंमें गायके साथ भारी अन्याय हुआ है। गोदुग्धको अधिक भाव देने चाहिये यह बात विशेषज्ञ भी कहने लगे हैं। वे समझ गये हैं कि गोदुग्धको अधिक भाव नहीं मिलेगे तो उनके सारे कार्यक्रम असफल हो जायँगे।

खुशीकी वात है कि भैंसके हिमायती, राष्ट्रिय डेरी विकास वोर्डके अध्यक्षने भी इस तथ्यको माना है कि आज दूध-खरीदीकी जो नीति है उसमें गायके प्रति भारी अन्याय हो रहा है। इसलिये उन्होंने प्रथम कदमके तौरपर यह स्वीकार किया है कि गोदुग्ध और भैंसके दूधके खरीद-भावमे १०-१५ प्रतिशतसे अधिक अन्तर न हो।

१४-गोदुग्ध-प्रसार—दुनियाका यह नियम है कि जिस वस्तुकी माँग वढ़ती है वह दुनियामें अधिक पैदा होने लगती है और जिसकी माँग घटती है उस वस्तुका धीरे-धीरे लोप होता जाता है। यदि हम चाहते हैं कि गायका हमारे परिवारमें स्थान हो तो उसे अपने नित्यके जीवनमें स्थान देना चाहिये, यानी अपने घरमें गाय रखकर गोपालन करना चाहिये। ऐसा सम्भव न हो सके तो कम-से-कम इतना आग्रह तो रख ही सकते है कि अपने घरमें केवल गोदुग्धका ही इस्तेमाल करें। वड़े शहरोंमें गोदुग्ध उपलब्ध होनेमे कठिनाई है फिर भी माँग वढ़नेपर गोदुग्ध मिलने लगेगा। गोरस-भण्डारोंमें यह अनुभव आ रहा है कि गोदुग्धकी कमी नहीं है। गोदुग्धके ग्राहक कम होनेसे गोदुग्धका उत्पादन नहीं वढ़ा सकते हैं। 'वाराणसी-मथुरा-गोरस-भण्डारो' का यही अनुभव है।

गायका दूध स्वास्थ्यके लिये सर्वोत्तम है यह निर्विवाद सत्य हैं। डॉक्टर-वैद्य वीमारोंके लिये गोदुग्धका सेवन ही हितकर वताते हैं। वच्चों, स्त्रियो और वूढ़ोंके लिये तो गोदुग्ध अमृत है। 'अन्ताराष्ट्रिय स्वास्थ्य-संस्था'ने भी एक रायसे निर्णय दिया है कि मानव-स्वास्थ्यके लिये गोदुग्ध सर्वोत्तम है। उनमे साढ़े तीन-चार प्रतिशत घृतांशकी मात्रा है और यह मात्रा मानवके लिये पर्याप्त है। उससे अधिक घृतांश मानवके लिये हितकारी नहीं है। आज सारी दुनियाकी ओर नजर दौड़ायेगे तो देखेगे कि अमेरिका, इंग्लैंड, यूरोप, एशिया आदि वड़े-से-वड़े विकसित देशोंमें केवल गायें ही रखी जाती हैं एवं गोदुग्ध-गोघृतका ही इस्तेमाल होता है। विदेशवाले भारतसे गायें और साँड़ ले गये हैं। वे चाहते तो भैंस भी ले जा सकते थे। परंतु उन्होंने मानवके लिये गोदुग्धको ही हितकारी माना। हमलोग दूधके गुणोंको न देखकर भैंसके दूधके घृतांशपर मोहित हैं। जय-जयकार गोमाताका करते है और बढ़ावा भैंसको देते हैं। इस प्रकारकी हमारी ढुलमुल निष्ठा ही गोहत्याको बढ़ा रही है। गोरक्षा चाहनेवाले हर भाई-बहनको इसपर गहराईसे विचार करना चाहिये। १९२४ में राष्ट्रपिता गाँधीजीने गोरक्षाका काम सँभाला। उसी दिन गोरक्षाकी पहली शर्त रखी थी कि अपने घरमें घी-दूध गायका ही इस्तेमाल करें। आज भी इस शर्तका अमल हो तो देखते-देखते घर-घरमें गायें पलने लगेंगी एवं मानवका शरीर-स्वास्थ्य सुधरेगा, आपसी सद्भाव बढ़ेगा। गोहत्या बंद होगी।

गोग्रास—भारतीय संस्कृतिने गायको कामधेनु माना है। मानवके जीवनमें गायसे अधिक सहयोग देनेवाला अन्य कोई प्राणी नहीं है। खेती जोतकर अनाज देती है, उत्तम खाद देती है, गोबर-गैस-प्लान्टसे भोजन पकानेका गैस देती है, गोमूत्रके रूपमें उत्तम औषध देती है। माता सालभर दूध पिलाती है, पर गोमाता वच्चेको और माँको भी जीवनभर दूध पिलाती है। सनातन भारतने इस माताके उपकारोंको स्मरण करके इसे परिवारमे स्थान दिया, अवध्य माना और अपने भोजनसे पहले गोमाताके लिये गोग्रास निकालनेका धर्म प्रचारित किया।

आजकी परिस्थितिमें गोग्रास देनेके लिये हर घरमें गायें मिलना सम्भव नहीं। गोग्रासके लिये यदि गाय न मिले तो गोग्रासके रूपमें हर परिवारको रोजाना कम-से-कम १० नये पैसे निकालना चाहिये और साल भरके बाद जिस गोरक्षण-संस्थामें, आपको गायकी सेवा होती दीखे, उसे समर्पित कर देना चाहिये। इसे धर्मका ही रूप, गोसेवाका ही रूप और गोरक्षाका ही एक रूप समझना चाहिये। इससे आप गोसंवर्धन-जैसे पुण्य-कार्यमे भागी बन सकेंगे।

मन्त्री

—अ०भा० कृषि-गोसेवा-सघ

गो-सेवा-विमर्श

(श्रीशिवनाथजी दुबे, एम्०कॉम०, एम्०ए०, साहित्यरत्न, धर्मरत्न)

प्रजापति ब्रह्माकी सृष्टिमे 'गौ' एक आदर्श प्राणी है। शास्त्रो एवं पुराणोके अनुसार धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—इन चारों पदार्थोको प्रदान करनेवाली एकमात्र गाय ही है। विश्वमें कलियुगके प्रभावसे प्राय: सभी वस्तुओका प्रभाव लुप्त-सा होता जा रहा है, परंतु गौ माता एव गो-सेवाका प्रभाव वर्तमान समयमे भी लुप्त नहीं हो सका है। यदि भक्तिपूर्वक गो-सेवा की जाय तो वह अपने भक्तकी सभी इच्छाएँ पूर्ण करनेमे सक्षम है। वेदोमें मानवके लिये यज्ञानुष्ठान बताया गया है। देववृन्दको आहुतियाँ प्राप्त होती हैं अग्निरूपी मुखसे—'अग्निमुखा हि देवा भवन्ति' एव देवगणको अर्पित करने योग्य हवि प्राप्त होता है गायसे। इसीलिये गायको हविको देनेवाली 'हविर्दुघा' कहा गया है।

यज्ञ-वेदीको पवित्र तथा स्वच्छ करनेके लिये गोबरकी आवश्यकता होती है पवित्र यज्ञाग्निको प्रज्वलित करने-हेतु गोबरके उपले (कंडे) अपेक्षित होते हैं। यज्ञमें जौ, चावल, तिल इत्यादि जिस हविष्यान्नकी आवश्यकता होती है, उसे उत्पन्न करनेके लिये बैल (गौकी संतान) की जरूरत पडती है। यज्ञमें पञ्चगव्यका महत्त्व सर्वविदित ही है।

आध्यात्मिक दृष्टिसे गायका महत्त्व वर्णनातीत है। प्रजापति ब्रह्मा, जगत्-पालक विष्णु एवं देवाधिदेव महादेवद्वारा भी गायकी स्तुति की गयी है— हे पापरहिते! तुम सभी देवताओंकी जननी हो। तुम यज्ञकी कारणरूपा हो, तुम समस्त तीर्थोंकी महातीर्थ हो, तुमको सदैव नमस्कार हैं, यथा—

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे॥

(स्कन्द०, ब्रह्म०, धर्मारण्य० १०। १८)

वेदने तो गायके रूपको अखिल ब्रह्माण्डका रूप बतलाया है, 'एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्।' गायके विश्वरूपका उल्लेख ब्रह्माण्डपुराण, महाभारत, पद्मपुराण, अथर्ववेद, भविष्यपुराण तथा स्कन्दपुराण आदिमे मिलता है। अथर्ववेदके अनुसार गायके रोम-रोममे देवताओंका निवास है।

श्रीमद्भगवद्गीतामे आनन्द-कन्द भगवान् श्रीकृष्णने अपने दिव्य-स्वरूपोंका वर्णन करते हुए '[illegible] कामधुक्' कहा है। महाभारतके [illegible] कारण गाय ही हैं तथा गायमें ही यज्ञ [illegible]—

गावो यज्ञस्य हि फल गोषु यज्ञा: प्रतिष्ठिता: ।

गो-सेवासे श्रेष्ठतम महान् पुत्रकी प्राप्ति [illegible] कुल-गुरु-वसिष्ठद्वारा महाराज दिलीपको [illegible] भक्तियुक्त सेवाका आदेश हुआ। गो-सेवाके [illegible] ही राजा दिलीपके पुत्र रघु हुए। [illegible] जावालिके आदेशानुसार भक्ति-भावनासे गो-[illegible] परिणास्वरूप सत्यवान् नामक पुत्रकी प्राप्ति [illegible]।

गोचर-गोमूत्रकी खाद (उर्वरक) से [illegible] अन्नरूपी लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है। गो-सेवासे [illegible] प्राप्ति होती है—

गवा सेवा तु कर्तव्या गृहस्थै: पुण्य[illegible] ।
गवां सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धते[illegible]॥

स्वप्न-विज्ञानके अनुसार यदि गायका [illegible] तो वह महान् कल्याणकारी तथा [illegible] ज्योतिष विज्ञानके अनुसार यदि यात्रामें [illegible] पड जाय अथवा अपने बच्चेको दूध पिलाती हुई [illegible] आ जाय या दिखायी पड जाय तो यात्रा [illegible] गो-सेवामे व्यायाम भी होता है, जो [illegible] लाभदायक है। गृहविज्ञानके अनुसार गोबर [illegible] पवित्रता प्रदान करनेवाला है। ग्रामवासी [illegible] अपने आवासको गोबरसे लीपकर [illegible]

ऋषिकुलो एव गुरुकुलोंमें [illegible] साथ गो-सेवा भी अनिवार्य होती [illegible] (आश्रम) की अपनी गायें हुआ [illegible] विद्यार्थियोको अनिवार्य-[illegible] वे आभीरजन (हेमन्त [illegible]

[illegible]

[illegible]

लोकमें जाने समय मार्गमें यमदूतोंद्वारा होनेवाले आक्रमणसे गायें जीवोंकी रक्षा करती हैं, इसलिये गायोंको गोग्रास देना चाहिये। प्रातःकाल उठकर गौ माताको प्रणाम करना चाहिये। इससे अन्नपूर्णा भगवती प्रसन्न होती हैं तथा धन-धान्य-सम्पदा प्राप्त होती है। गोग्रास देनेसे गृहस्थाश्रमी जन आन्तरिक सुखका अनुभव करते हैं। पवित्रतासे बनाया हुआ भोजन गोग्रासके लिये उत्तम होता है। गोग्रासका मन्त्र निम्न प्रकार है—

सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः॥

आधुनिक कृषि-यन्त्रोंकी अपेक्षा गौकी संतान अर्थात् बैल कृषि-कार्यके लिये अत्यधिक लाभदायक है। कृषि-कार्यकी दृष्टिसे खेत जोतना एवं खाद देना—ये दोनो ही महत्त्व रखते हैं। यन्त्रसे खाद नहीं प्राप्त की जा सकती, खेत जोते जा सकते हैं। आधुनिक कृषि-विज्ञानद्वारा प्रस्तुत रासायनिक उर्वरक (खाद) की अपेक्षा गाय एवं बैलके गोबरकी खाद उत्कृष्ट है। रासायनिक उर्वरकोंकी तुलनामें गाय तथा बैलकी खादसे जो अन्नोत्पादन होता है, वह अधिक सुस्वादु एवं पौष्टिक होता है। कृषि-अर्थशास्त्रके अनुसार कृषि-कार्यमें कोई भी कृषि-यन्त्र बैलका स्थान नहीं ग्रहण कर सकता है। भारतकी सभी कृषि-योग्य भूमि ट्रैक्टरोंसे जोतने योग्य नहीं है।

आधुनिक कृषि-यन्त्रोंसे सर्वाधिक क्षति यह होगी कि कृषि-कार्यमें मशीनयुगके दोषोंका प्रवेश हो जायगा और भारतीय कृषक भी उन दोषोंसे प्रभावित हो जायगा। बहुतसे मजदूरों एवं कृषकोंको बेकारीकी समस्याका सामना करना पड़ेगा।

गायके दूधमें जो पोषक तत्त्व पाये जाते हैं, वे किसी अन्य (भैंस या बकरी) के दूधमें सुलभ नहीं होते। माँके दूधके पश्चात् गो-दुग्धका ही स्थान है। आयुर्वेदमें गो-दुग्ध, गो-दधि एवं गो-नवनीतको बालक, युवा, वृद्ध तथा रोगी—सभीके लिये कल्याणकारी और अमृतके सदृश उपयोगी कहा गया है—

जरासमस्तरोगाणां शान्तिकृत् सेविनां सदा।
तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः॥

गायको 'माता'का स्थान प्रदान किया गया है। गायके अतिरिक्त किसी भी पालतू जानवरको 'माता' नहीं कहा जाता। गायको माता इसलिये कहा जाता है कि यह जीवित रहनेपर तो सभी प्रकारसे उपकारिणी है ही, मरणोपरान्त भी गायकी हड्डी, चमड़ा, खुर, सींग इत्यादि उपयोगी होते हैं। गौ माता अपनी सभी संतानोंका समान-रूपसे हित करती है। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई—किसी भी जाति या सम्प्रदायका व्यक्ति क्यों न हो, गोदुग्ध एवं अन्य वस्तुएँ समान-रूपसे तथा बिना किसी भेद-भावके उन्हें सुलभ होती हैं। अस्तु, गाय हमारे देशकी एक अमूल्य सम्पत्ति है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थ गोमहिमासे भरे हुए हैं। अग्नि, भविष्य, मत्स्य, पद्म इत्यादि पुराणोंमें गायोंकी चिकित्सा, गोदुग्धादिकी विशेषताएँ, पञ्चगव्यसे लाभादि स्थान-स्थानपर वर्णित हैं। '**धनं च गोधनं धान्यं स्वर्णादयो वृथैव हि**' हमारे अर्थशास्त्रका यही मूलाधार रहा है। अमेरिकाके 'होर्ड्स डेयरीमैन' नामक पत्रके सम्पादककी निम्नाङ्कित पंक्तियोंसे गायकी चिरन्तन ज्योतिकी महिमा परिलक्षित होती है—

'गाय हमारे दुग्ध-जगत्की देवी है। वह भूखोंको खिलाती है, नग्नोंको पहनाती है एवं मरीजोंको उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती है। उसकी ज्योति चिरन्तन है।'

परंतु यह एक महान् दुर्भाग्यकी बात है कि आर्यावर्तकी इस पावन धरतीपर पूर्णरूपेण गोवध-निषेध नहीं हो सका। हमारे सनातन धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय आदि सभीने उच्च-स्वरसे गो-वधका विरोध किया। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि किसीने भी गो-वधका समर्थन नहीं किया। प्रत्येक दृष्टिसे गो-वधपर शत-प्रतिशत नियन्त्रण अनिवार्य है। गो-वध भारतके लिये महान् अपराध, महान् पाप एवं महाकलंक है। गो-वधसे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृतिकी छवि धूमिल होती है।

भगवान् श्रीकृष्णका नाम 'गोपाल' है। गायोंकी सेवा करना एवं वन-वन भ्रमण कर गायोंको चराना उनकी दिनचर्याका मुख्य कार्य रहा है।

अस्तु, भारतवर्षके उज्ज्वल भविष्यका पुनर्निर्माण गो-सेवा, गोवंशकी रक्षा एवं गोमाताके आशीर्वादपर ही आधारित है।

भारतीय संस्कृति एवं विचारधारामें गोसेवा

(श्रीसुरेशकुमारजी चौरसिया)

भारतीय संस्कृतिका मूलाधार वास्तवमे गौ माता ही है। गौको सर्वदेवमयी बतलाया गया है। अथर्ववेदमें उसे रुद्रोंकी माता, वसुओंकी दुहिता, आदित्योकी स्वसा और अमृतकी नाभि-संज्ञासे विभूषित किया गया है—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसाऽऽदित्यानाममृतस्य नाभि.।

गोसेवासे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारो तत्त्वोकी प्राप्ति सम्भव है। आज भी गौ माताका दिव्य प्रभाव कहीं-न-कहीं देखने-सुनने-पढनेको अवश्य ही मिल जाता है।

भारतीय शास्त्रोके अनुसार गौमें तैतीस कोटि देवताओका वास है। उसकी पीठमें ब्रह्मा, गलेमें विष्णु ओर मुखमें रुद्र आदि देवोंका निवास है। यथा—

पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णुर्मुखे रुद्रः प्रतिष्ठितः।

यही कारण है कि सम्पूर्ण देवी-देवताओकी आराधना केवल गौ माताकी सेवासे ही हो जाती है।

गोसेवा भगवत्प्राप्तिके अन्यतम साधनोमेसे एक है। इससे भगवान् शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। यह बड़ी ही विचित्र बात है कि भगवान् जहाँ मनुष्योंके इष्टदेव हैं, वहीं गौ उनकी भी इष्टदेवी है। अतएव गोसेवासे लौकिक लाभ तो मिलते ही हैं, पारलौकिक लाभकी प्राप्ति भी हो जाती है।

प्राचीन कालसे ही भारतीय जन-मानस गोमहिमासे प्रभावित रहा है। पद्मपुराणके सृष्टिखण्ड (४५। १३०) मे उल्लेख है कि ब्रह्माने प्राचीन कालमे बिना किसी भेदभावके सबके पोषणके लिये ही गौको उत्पन्न किया था—

अस्य कायो मया सृष्टः पुरैव पोषणं प्रति।

भारतीयोंके सम्पूर्ण संस्कार ही गोमय-गोमूत्र-गोघृत तथा गोक्षीरद्वारा सम्पन्न किये जाते हैं। गोघृत विना यज्ञ सम्पन्न हो नहीं सकता। पुराणादि शास्त्रोमें गोधनकी महिमापर विशेष बल दिया गया है। गायके गोवरमें अष्ट ऐश्वर्ययुक्त लक्ष्मी सदा ही निवास करती हैं—

अष्टैश्वर्यमयी लक्ष्मीर्गोमये वसते सदा।

गायें पवित्र, मङ्गलकारक होती हैं। [illegible] लोक प्रतिष्ठित हैं। गाये यज्ञका विस्तार करती हैं। [illegible] पापोका विनाश करती हैं—

गाव. पवित्रं माङ्गल्यं गोषु लोका [illegible]।
गावो वितन्वते यज्ञं गाव [illegible]॥

गायोको नियमित ग्रास देनेमात्रसे [illegible] प्राप्ति हो जाती है। यथा—

गवां ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके [illegible]॥

अत: गो-पालन-रक्षण करना [illegible] कहा गया है कि जिस घरमे गाय नहीं है, [illegible] नहीं होती और जो वालकोसे भरा-पूरा न हो [illegible] नहीं है, अपितु श्मशान है—

यत्र वेदध्वनिध्वान्त न च गोभिरलङ्कृतम्।
यत्र वालैः परिवृतं श्मशानमिव तद् गृहम्॥

([illegible])

प्रात:काल और यात्रा-समय गोदर्शनसे [illegible] सफलता मिलती है। गौ मनुष्योको [illegible] है। ऋग्वेदमे गौको अघ्न्या कहा गया है, [illegible] प्रजाओको भाग्यवान् और धनवान् बनाती है। [illegible] भी कहा गया है कि गौओके दानसे बढ़कर [illegible] नहीं, अत: गायका दान सबसे बड़ा दान है।

शास्त्रोमे उल्लेख है कि [illegible] दीर्घायुष्य प्राप्त होते हैं। गाय जब [illegible] समस्त पाप-तापोको दूर कर देती है। [illegible] वह अक्षय स्वर्गलोकको प्राप्त कराती है [illegible] पालन-पोषण किये जानेपर [illegible] है; अत: गायोंसे बढ़कर और [illegible] गोधन ही वास्तवमें [illegible] धन है—

तुष्टास्तु गाव. [illegible]
दत्तास्तु [illegible]
संरक्षितास्चोपनयन्ति [illegible]
गोभिर्न तुल्यं [illegible]

गाये जहाँ जलपान करती हैं अथवा जिस जलमें संतरण करती हैं, वहाँ सरस्वती निवास करती है—

यत्र तीर्थे सदा गावः पिबन्ति तृषिता जलम्।
उत्तरन्त्यथवा येन स्थिता तत्र सरस्वती॥

जो भी व्यक्ति गायकी सेवा-शुश्रूषा करता है, वह सभी पापोंसे छुटकारा पा जाता है।

यदि हम प्राचीन भारतीय इतिहासके दर्पणमें झाँककर देखे तो पता चलता है कि गोसेवासे ही भगवान् श्रीकृष्णको भगवत्ता, महर्षि गौतम, कपिल, च्यवन, सौभरि तथा आपस्तम्ब आदिको परम सिद्धिकी एवं महाराज दिलीपको रघु-जैसे चक्रवर्ती पुत्रकी प्राप्ति हुई थी। महर्षि च्यवन और आपस्तम्बने अपना मूल्य गायसे लगाया था।

गोसेवासे ही अहिंसा-धर्मको सिद्ध कर भगवान् महावीर एव गौतम बुद्धने अपने महान् धर्मोको सम्पूर्ण विश्वमे फैलाया था।

वेदोसे लेकर सभी पुराणों तथा अन्यान्य धर्मशास्त्रोंमें धर्मको वृषका ही रूप माना गया है। शास्त्रोंका यह उद्घोष है कि गाय विशुद्ध एवं अक्षय लक्ष्मीको देनेवाली है। गौएँ वेद एवं शुद्ध ज्ञान-विज्ञानकी जननी हैं और पवित्रताओकी मूल स्रोत तथा सीमा हैं।

महाभारतकारने कहा है—'गोधनं राष्ट्रवर्धनम्।' प्राचीन कालमे जिसके पास जितनी अधिक गौएँ होती थीं, वह उतना ही अधिक धनी माना जाता था। गोपालचम्पूमें उल्लेख है कि नन्दबाबाके पास नौ लाख गौएँ थीं। महाभारतमे भी मत्स्यराज विराटके पास साठ हजार गौएँ होनेका प्रमाण मिलता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन समयमें गोधनका कितना महत्त्व था।

कालिदासने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ रघुवंशमें महाराज दिलीप एवं सिंहके वृत्तान्तमें घड़ेके समान स्तनवाली करोड़ों गायोंके देनेका उल्लेख किया है—

'गाः कोटिशः स्पर्शयता घटोघ्नीः।' (२। ४९)

राजा नृगके सम्बन्धमें भी आया है कि उन्होने असंख्य गायोंका दान दिया था। भगवान् श्रीरामने भी दस सहस्र करोड़ गायोका दान दिया था। इसी तरह महान् योगीश्वर श्रीकृष्णने भी तेरह हजार चौरासी गौएँ प्रतिदिन दान करनेका नियम बना लिया था।

वस्तुतः हमारे राष्ट्रका वैभव-वर्धन तो गोधनके विकास, उसकी रक्षा तथा वृद्धिसे ही जुड़ा हुआ है।

निःसंदेह गोसेवामें सबका हित और कल्याण निहित है। किंतु आज दुर्भाग्य है कि गोवंशकी रक्षापर समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। राष्ट्रकविने सखेद एक स्थानपर लिखा है—

है भूमि वन्ध्या हो रही, वृष-जाति दिन-दिन घट रही,
घी दूध दुर्लभ हो रहा, बल वीर्य की जड़ कट रही।
गोवंश के उपकार की सब ओर आज पुकार है,
तो भी यहाँ उसका निरंतर हो रहा संहार है॥

हमारी इस पवित्र भूमिपर प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ोंकी संख्यामें गाय और बैल काटे जाते हैं और हम सभी मूकदर्शक बनकर चूँ तक भी आवाज नहीं उठाते। गौके प्रति हमारी आदर-बुद्धि केवल कहने भरके लिये ही मात्र रह गयी है। गो-धन ही हमारा प्रधान बल है। गो-धनकी उपेक्षा करके वस्तुतः हम जीवित नहीं रह सकते।

विष्णुधर्मोत्तरपुराणका तो यहाँतक कहना है कि अपनी आत्मासे भी अधिक गायकी रक्षाका ध्यान रखना चाहिये। गायकी श्वास-वायुसे घर पवित्र होता है, गायके स्पर्शसे पाप दूर होते हैं। अतः गोसेवामें सबका हित और कल्याण निहित है।

गोसेवाका स्वरूप

(श्रीज्ञानसिंहजी चौधरी, राज्य-मन्त्री-कृषि एवं सिंचित क्षेत्रीय विकास)

भारतीय संस्कृतिका मूलाधार गौ माता ही है और गोसेवासे धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्षरूप चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध होते हैं। भगवत्प्राप्तिके अन्यतम साधनोंमेंसे गोमाताकी सेवा भी एक साधन है। इस कठिनतम युगमें मानवका गौ माताके प्रति सेवा-भाव अत्यन्त ही पुनीत कार्य होगा। मैं इस विशेषाङ्कके लिये अपनी हार्दिक शुभ कामनाएँ दे रहा हूँ।

भक्ति, मुक्ति और शक्तिका स्रोत गोसेवा

(स्वामी श्रीयजरगयली ब्रह्मचारी)

वेदोंका उद्घोष, पुराणोंकी पुकार और स्मृतियोकी ललकारका समवेत स्वर अनादिकालसे गोसेवाका आदेश, उपदेश और संदेश सुनाता चला आ रहा है।

वेद प्रभुसम्मित भाषामे, स्मृतियाँ सुहृद्-सम्मित शैलीमे तथा पुराण और काव्यग्रन्थ कान्तासम्मित सरस सुझावके रूपमें गोसेवाकी उपयोगिता तथा आवश्यकताका अनुमोदन करते हैं।

भारतीय जीवनमे गोमहिमा इतने भीतरतक समा गयी है कि वेदोंके सारभाग उपनिपदोको हम गौकी संज्ञा देते हैं; स्मृतियोको हम गौका दूध मानते हैं ओर पुराणों तथा काव्यग्रन्थोको हम गोघृत-जैसा तुष्टि, पुष्टि और सर्वतोमुखी इष्ट-अभीष्टकी सिद्धिका हेतु मानते हैं। तभी तो 'शब्दा धेनवः' की सूक्ति-सदुक्ति सर्वत्र प्रचलित है।

आत्मदर्शन (मुक्ति) की प्रेरणा देते हुए बृहदारण्यक-उपनिषद्में याज्ञवल्क्यने मैत्रेयीसे कहा है—

'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।'

यद्यपि आत्मसाक्षात्कार जो मानव-जीवनका चरम लक्ष्य है—मुण्डकोपनिषद्ने बलहीनके लिये उसे दुर्लभ बताया है। यथा—

'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः' (मुण्डक० ३।२।४)

परंतु गोसेवासे अर्जित ऊर्जा (शक्ति) इस बलहीनताकी न्यूनताका निवारण सद्यः कर देती है, तभी तो छान्दोग्योपनिषद्-के कथनानुसार सत्यकामको केवल गोसेवाके कारण ही विशुद्ध बुद्धिकी प्राप्ति और देव-दुर्लभ आत्मसाक्षात्कारकी उपलब्धि सहज सुलभ हो जाती है।

गोसेवाके प्रभावसे 'सत्यकाम' आप्तकाम, पूर्णकाम होकर ओजस्वी-तेजस्वी-स्थिति प्राप्त कर लेता है। केवल गोचारणके द्वारा ही उसे ब्रह्मज्ञान—आत्मज्ञानकी अनुभूति हो जाती है। जिस समय गौओंको लेकर वह गुरुजीके पास आया, उस समय उसके तेजको देखकर गुरुजीको भी कहना पड़ा—

'ब्रह्मविदिव वै सोम्य भासि को नु [illegible]

([illegible])

हे सोम्य! तू ब्रह्मवेत्ता-सा जान पड़ता है, [illegible] उपदेश दिया है?

भक्तिके क्षेत्रमे भगवान्‌को गौ, गोप [illegible] सर्वाधिक प्रिय हैं। तभी तो नारदभक्तिसूत्र ([illegible]) में '[illegible] व्रजगोपिकानाम्' का उदाहरण देकर [illegible] सराहना की गयी है।

गोचारणमे सदा संग रहनेके कारण, गोप [illegible] अभिन्न-जैसे हो गये थे। एक दिन जब '[illegible] मे श्रीदामा नामक गोपसे खेलमे हारे हुए कृष्ण [illegible] आनाकानी करते हैं, तब गोसेवक श्रीदामा [illegible] धमकीसे भगवान् कृष्ण भी घबरा जाते हैं [illegible] ऊपर बिठा लेते हैं। यथा—

दूरि करौ गइया श्रीदामा [illegible]
हारि गये दाँव [illegible]।
नाहिन अधीन हम तुम्हरे [illegible],
जाति-पाँति एकै [illegible]।
खट्ठु खेल तुमसे [illegible],
दाँव देन [illegible]।
[illegible] के स्वामी [illegible]
[illegible]।

यह है भगवान्‌का गौ और गो-[illegible] उदाहरण। जिन भगवान्‌का [illegible] दुर्लभ है, गोचारणमे [illegible] भगवान् तिक्कीघोड़ा बनकर [illegible] अपने सिरके ऊपर बिठाकर [illegible]

कृषि-प्रधान देश भारतमे '[illegible] ही माना जाता है। [illegible] दूध सबसे अच्छा [illegible] दूध तो सबसे [illegible] हुआ कि गोधन [illegible]

हैं। जब लोगोंने गायके दूधके विषयमें पूछा तब उन्होंने गायके दूधको दूध न मानकर उसे साक्षात् अमृत बताया।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थोंकी सिद्धि भी गोसेवासे होती है। 'गो' धर्मका साक्षात् स्वरूप तो है ही, गोसेवासे अर्थलाभकी भी अनेकों सूक्तियाँ ग्रामीण अञ्चलोंमें आज भी प्रचलित हैं। यथा—

'जो जानौं पिय सपति थोरी, राखौं गाय बैल की जोरी'

कामकी पूर्तिमें भी गोसेवाका महत्त्व सराहनीय है। गोसेवासे ही महाराज दिलीपको पुत्रप्राप्ति और वसिष्ठजीको अष्टसिद्धियोंकी उपलब्धि सुलभ हुई। गोसेवासे ही सत्यकाम जाबालको मोक्षधर्मकी प्राप्ति हुई।

किंबहुना 'हिंदू' कहलानेका अधिकारी भी वही है, जिसकी श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति-अनुरक्ति गोवंशके संरक्षण, संवर्धन और गोसेवामें है।



गो-सेवासे ऐहिक तथा आमुष्मिक कल्याण

(डॉ० स्वामी श्रीमहाचैतन्यजी नैष्ठिक, एम्०ए०, पी-एच्०डी०, ज्योतिषाचार्य, श्रीगीता-रामायण-विशारद)

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

(शुक्ल यजु० २२। २२)

'हे परमात्मदेव! हमलोगोंके राष्ट्रमें यज्ञ-देवोपासनादि-समन्वित उत्तम कर्मशास्त्र, ब्रह्मवर्चस्वी-तेजस्वी ब्राह्मण तथा लक्ष्यवेधक, महारथी और अस्त्र-शस्त्रमें निपुण क्षत्रिय एवं राष्ट्रमें प्रभूत दूध देनेवाली गायें, सुपुष्ट कन्धोवाले भार-वहनमें सक्षम बलशाली बैल और वेगवान् अश्व उत्पन्न हो। स्त्रियाँ सुन्दरी, दक्ष, संस्कार-सदाचारसम्पन्न, बुद्धिमती हों तथा इस राष्ट्रमें युवक वीर, जयी, रथी तथा सभाके लिये उपयुक्त सभासद् सिद्ध हों। पर्जन्य (मेघ) यथासमय प्रचुर वृष्टि करें और ओषधियाँ एवं फसलें फलवती होकर पकें—अन्न और फल पर्याप्त सुलभ हों। हमारे योग-क्षेम चलते रहें—अप्राप्तकी उपलब्धि और उपलब्धकी रक्षा होती रहे।'

भारतवर्ष एक धर्मपरायण आध्यात्मिक देश है, जहाँ मानवके जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त समस्त क्रिया-कलापोंके मूलमें ऐहिक तथा आमुष्मिक कल्याण-प्राप्तिकी अभिलाषा निहित रहती है, साथ ही यहाँके जनमानसका विश्वास है कि प्रत्येक वर्ण और समुदायके नर-नारियोंको धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष-रूप पुरुषार्थचतुष्टयको सहज ही प्राप्त करा देनेवाली होनेसे गोसेवाका माहात्म्य सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि है। भारतीय धर्मशास्त्रोंके पन्ने-पन्ने और पंक्ति-पंक्तिपर भगवत्सेवा, पूजा-उपासना, व्रत-उपवास, त्याग-तपस्या, दान-दया, सत्य-अहिंसा, सेवा-संयम, तीर्थ-दर्शन और गङ्गा-स्नान आदिके करने-करानेका माहात्म्य उल्लिखित है और यह भी वर्णित है कि उक्त समस्त कल्याणमूलक क्रिया-कलापोंके अनुष्ठानसे जो-जो पुण्य प्राप्त होता है, वह सब पुण्य केवल गोसेवा करनेसे सहज ही उपलब्ध हो जाता है। यथा—

तीर्थस्नानेषु यत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्रभोजने।
यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने॥
भूमिपर्यटने यत्तु सत्यवाक्येषु यद् भवेत्।
तत्पुण्यं प्राप्यते सद्यः केवलं धेनुसेवया॥

वर्तमान बदलती हुई परिस्थितियोंमें भारतवर्षसे भिन्न भौतिक दृष्टिप्रधान पाश्चात्त्य प्रत्यक्षवादी जो किसी वस्तु, व्यक्ति और जीवका मूल्याङ्कन उसकी उपादेयताके अनुपातसे करते हैं, उन्होंने भी व्यापक अध्ययन और विश्लेषणके अनन्तर जो निष्कर्ष दिया है वह धर्मप्राण गोभक्त भारतवर्षके लिये अतिशय गौरवका विषय है। उनका मन्तव्य है कि मानवके स्वच्छन्द भोगवाद, विस्फोटक अस्त्र-शस्त्रोंकी होड़ एवं प्राकृतिक असंतुलनके रहते मानव-जातिपर, चारों ओरसे प्रलयंकारी घनघोर घन घिरते-गहराते जा रहे हैं, ऐसी घोर संक्रमणकालीन संकटकी घड़ीमें गोपालन और

गोसंरक्षण ही जीवित रहनेका प्रमुख आधार सिद्ध होगा। गायको समूची विश्व-मानव-जातिका सर्वाधिक उपयोगी तथा उपकारी पशु घोषित करते हुए अमेरिका-स्थित 'मिसूरी स्टेट डेयरी' के कमिश्नर ई० जी० वेनेट कहते हैं कि भले ही तूफान, ओला, अनावृष्टि या फिर बाढ़का प्रकोप कहर ढाये और हमारी फसलोंको नष्ट करके हमारी जीवित रहनेकी आशाओंपर पानी फेर दे, फिर भी इसके बावजूद जो भी शेष बच रहेगा, उसीसे गाय हमारे लिये जीवनदायिनी पौष्टिक आहार तैयार कर देगी। उन हजारों-हजार बच्चोंके लिये तो गाय साक्षात् जीवन ही है, जो दूधरहित वर्तमान नारीत्वकी रेतपर पड़े हुए हैं। मिस्टर वेनेट आगे कहते हैं कि हमारे ऊपर दुर्भाग्यका हाथ तो होना ही चाहिये, कारण कि हमलोग वर्षोंसे अपने धर्म और कर्मसे गिर गये हैं। हम जानते हैं कि गाय हमारे लिये एक मित्रके रूपमें है, जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ है और उसकी कृतज्ञतामें कभी कोई कमी नहीं आयी है। वह हमारी पाई-पाई चुका देती है और हमारी रक्षा करती हे।

भारतीय धर्मशास्त्रोंके प्रणेता तपःपूत दिव्य-द्रष्टा ऋषियों-महर्षियोंने तो सृष्टिके उषाकालमें ही 'सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्', 'गावः प्रतिष्ठा भूतानाम्' कहकर गोसेवा और गोपालनका महत्त्व प्रकट कर दिया था। 'मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः' कहकर गायको सम्पूर्ण प्राणियोंकी माता तथा 'धनं च गोधनं धान्यं स्वर्णादयो वृथैव हि' बताकर गोवंशको अर्थशास्त्रका मूलाधार निश्चित किया था। महाभारतके अनुशासनपर्वके अन्तर्गत एक कथा आती है जिसमे महर्षि च्यवन राजा नहुषको उपदेश करते हुए कहते हैं कि—'गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत' अर्थात् मैं इस संसारमें गायके समान कोई दूसरा धन नहीं समझता। इस प्रकार महर्षि च्यवनने राजा नहुषसे अपना मूल्य गायके बराबर स्वीकार करके गायके महत्त्वको राज्य तथा संसारके सभी पदार्थोसे अधिक निरूपित किया था। वस्तुतः गाय मानवको सभी प्रकारके मनोऽभिलषित भोग और ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली है। गोसेवासे लक्ष्मीकी तो सहज ही प्राप्ति हो जाती है। यथा—

गवां सेवा तु कर्तव्या गृहस्थैः पुण्यलिप्सुभिः।
गवां सेवापरो यस्तु तस्य श्रीर्वर्धतेऽचिरात्॥

ऐहिक कल्याणकी दृष्टिसे [illegible] ही प्राप्ति नहीं होती, अपितु आरोग्य और [illegible] ही प्राप्ति हो जाती है। अनेकानेक [illegible] यह सिद्ध हो गया है कि [illegible] गायोंद्वारा स्पर्श की हुई वायुके लगनेसे [illegible] जाते हैं। आयुर्वेदमे बतलाया गया है कि [illegible] करनेसे समस्त प्रकारके रक्तदोष, [illegible] कर्णरोग नष्ट हो जाते है। गोमय [illegible] विषाक्त कीटाणुओंको नष्ट कर देता है। [illegible] गोघृतका सेवन शरीरको न केवल [illegible] एवं पुष्टि-प्रदायक है, बल्कि मानवको [illegible] मेधासे सयुक्तकर प्रज्ञावान् बना देता है। [illegible] प्रादुर्भाव हो जाता है। धर्मशास्त्रोंमे उल्लेख [illegible] पञ्चगव्यका सेवन करनेसे मानवकी [illegible] उसी प्रकार हो जाता है, जैसे प्रज्वलित अग्नि [illegible] हो जाता है। यथा—

यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।
प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्॥

महाभारतके अनुशासनपर्वमे उल्लेख [illegible] जो एक वर्षतक प्रतिदिन भोजन [illegible] गायको एक मुट्ठी घास खिलाता है, [illegible] पुण्य-प्रतापसे उसके समस्त पाप और [illegible] हैं, पुत्र, यश, धन, सम्पत्ति यहाँतक कि [illegible] कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। [illegible] रघुवश महाकाव्यके अध्ययनसे [illegible] हो जाता है कि पुत्राभिलाषासे गोसेवा [illegible] पुत्रकी प्राप्ति हो जाती है। [illegible] महाराज दिलीपको गोसेवा करनेका [illegible] परिणाम-स्वरूप महाराज दिलीपके [illegible] पराक्रमी चक्रवर्ती सम्राट् उत्पन्न हुए। [illegible] उल्लेख मिलता है कि [illegible] देवमाता अदितिके उदरसे [illegible] यह व्रत [illegible] लेकर द्वादशीपर्यन्त [illegible]

आमुष्मिक [illegible] है कि गोसेवा [illegible]

असिपत्रादि नरकोंसे सहज ही पार करा देती है। मार्गशीर्ष मासके शुक्ल पक्षकी एकादशीको मोक्षदा एकादशी तथा वैतरणी-एकादशी कहा जाता है। इस व्रतके दिन गोसेवा और गोपूजनके समय प्रार्थना की जाती है कि 'हे गोमाता! तुम्हारी कृपासे मैं असिपत्रवन आदि घोर नरकोंको तथा वैतरणी नदीको पार कर जाऊँगा, मैं तुम्हें बारंबार नमन-वन्दन करता हूँ।' यथा—

असिपत्रादिक घोरं नदीं वैतरणीं तथा।
प्रसादात् ते तरिष्यामि गोमातस्ते नमो नमः॥

गोसेवा वैतरणी नदी और घोर नरकोंसे तो रक्षा करती ही है, वह साक्षात् परब्रह्म परमात्माकी भी सहज ही प्राप्ति करा देती है। प्रत्येक प्राणीके परम प्राप्तव्य, परमाराध्य और परम इष्टदेव तो एकमात्र अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड-नायक परब्रह्म परमेश्वर ही हे, परंतु यह कितने रहस्यकी बात है कि उन्हीं आनन्दकन्द सच्चिदानन्द परमात्माकी आराध्या, सेव्या और पूजनीया गोमाता है। गोसेवाके लिये लालायित परमात्माने सगुण-साकार-रूपमें 'गोविन्द' और 'गोपाल' नाम धारण करते हुए गोसेवा तथा गोपूजा की है। उन्होने अपने आचरण और उपदेश दोनोंके ही द्वारा गोसेवा करनेका अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। पद्मपुराणके अनुसार गोलोकविहारी भगवान् श्रीकृष्ण गायोके प्रति अपनी भक्ति-भावना व्यक्त करते हुए कहते हैं—

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
गावश्च सर्वगात्रेषु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

अस्तु, उपर्युक्त विवेचनसे यह बात निष्पन्न हो जाती है कि 'भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव' की भव्य भावनाके अनुरूप गोसेवासे ऐहिक और आमुष्मिक कल्याणकी सहज ही उपलब्धि हो जाती है। गोसेवासे जहाँ सर्वदेवमयी गौ माता प्रसन्न होती हैं, वहीं धर्मशास्त्र और भगवदाज्ञाका पालन भी होता है और भगवान्के प्रसन्न होनेपर भला लोक-परलोकका ऐसा कौन-सा सुख है जो गोसेवकको सुलभ न हो सके। 'भुक्ति-मुक्ति' गोसेवक पुरुषके चरणोंकी दासी बन जाती है। इस प्रकार गोसेवा पुरुषार्थचतुष्टयकी प्राप्ति करानेमे जितना उपकारक साधन है उतना दूसरा कोई नहीं है। अतः हम-आप—सबको तन, मन, धनसे गोसेवा और गोरक्षणमे सतत संनद्ध रहना चाहिये।

गोसेवाकी महिमा

(श्रीदेवेन्द्रकुमारजी पाठक 'अचल', रामायणी, साहित्येन्द्रशेखर, साहित्यप्रभाकर, आयुर्वेद-विशारद)

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः।
गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके॥
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः।
नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः॥

(देवीभा० ९। ४९। २४-२५)

परम दयामयी, वात्सल्यमयी, सुर-नर-मुनि-सेवित गोमातासे कोई भी उऋण नहीं है। गोमाता करुणावरुणालय है, निर्विकार है, निर्मद एवं निरहंकार है। अपने परम प्रिय सेवकको जितना मधुर दूध प्रदान करती है उतना ही मधुर दूध गोभक्षकको भी देती है। जिस गोमातामें प्रतिशोधाङ्कुर लेशमात्र भी अङ्कुरित नहीं होता, उस माँके समान प्रातः-स्मरणीय और कौन हो सकता है? जननी जन्म देनेके अनन्तर कुछ कालतक ही दुग्धपान कराती है; किंतु आदरणीय गोमाता जीवनके अन्तकालतक अमृतमय दुग्ध-पान कराती है। अतः ऐसी महिमामयी एवं परोपकारिणी गोमाताकी अवश्य सेवा करनी चाहिये। उनकी परिक्रमा करनी चाहिये। वे सदा सबके लिये वन्दनीय हैं। गौएँ मङ्गलका स्थान हैं, दिव्य हैं। स्वयं ब्रह्माजीने इन्हे दिव्य गुणोंसे विभूषित किया है। जिसके गोबरसे घर और देवताओके मन्दिर भी शुद्ध होते हैं, उन गौओंसे बढ़कर अन्य किसे समझा जाय। गौओके मूत्र-गोबर, दूध, घी, दही—ये पाँचों वस्तुएँ परम पवित्र हैं। गौएँ सम्पूर्ण जगत्को पवित्र करती हैं। गोमाताका सेवक कभी दुःखी एवं दरिद्री नहीं होता। भगवती विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी उस स्थानपर स्वाभाविक रूपसे उपस्थित रहती हैं, जहाँपर गोवंशको सदा सम्मान मिलता है। धन-सम्पत्ति, संतति-सुख, स्वास्थ्य एवं सद्गुण

विना प्रयासके गोभक्तके साथ रहते हैं।

गोसेवासे गोसेवक निष्पाप हो जाता है। गोखुरसे उड़ती हुई धूलिसे आच्छादित आकाश पृथ्वीको ऊसर होनेसे बचाता है। गोपालनव्रत स्वार्थ नहीं वरन् परमार्थ है।

भगवती सुरभीके अंशसे उत्पन्न गायको पशु कहनेवालोंको पाप घेरता है। इनमें देवत्व और मातृत्वका दर्शन करते हुए श्रद्धा समर्पित करनी चाहिये। गौकी सेवासे भगवान् वासुदेव 'गोपाल' कहलाये। आशुतोष शंकरने भी सेवा करके गोमाता सुरभीकी अनुकूलता प्राप्तकर वरदान प्राप्त किया।

गोमाता मन-वचन एवं कर्मसे सम्माननीय, पूजनीय एवं आदरणीय है। इन्हें अपमानित करनेका अर्थ होता है देवताओंका कोपभाजन बनना। इनके प्रति अपशब्द कहना और सुनना भी नहीं चाहिये। गोमाताका छोटा-सा अपराध भी वंश-विनाशकी शक्ति रखता है। गौओको हाँकते-जोतते पीडित नहीं करना चाहिये। यदि वे भूखी-प्यासी होकर देखती है तो उत्पीडकके सम्पूर्ण वंशको नष्ट कर देती हैं—

प्रचारे वा निवाते वा बुधो नोद्वेजयेत गा.।
तृषिता ह्यभिवीक्षन्त्यो नरं हन्युः सबान्धवम्॥

(महा०, अनु० ६९। १०)

गौके सेवक भी जिस भूमिपर [illegible] — भूमि भी समस्त तीर्थोंद्वारा अभिनन्दित [illegible] सेवासे, पञ्चगव्य-प्राशनसे तथा [illegible] स्नानका फल प्राप्त होता है। गाय [illegible] अथवा जिस जलसे पार होती है वहाँ [illegible] होती हैं—

यत्र तीर्थे सदा गावः पिबन्ति तृषिता [illegible]।
उत्तरन्त्यथवा येन स्थिता तत्र सरस्वती॥

गोसेवा बडी-से-बड़ी दुस्तर विपत्तियोंसे [illegible] है। ज्योतिषशास्त्रमे ग्रहोंकी विपरीत [illegible] ही प्रमुख उपाय बताया गया है। आजका [illegible] माताकी जय बोलता हुआ भी कसाइयोंके [illegible] बेचनेमे लज्जित नहीं होता। लोभ और [illegible] ग्रस्त होकर वे गोहत्याके हेतु बन जाते हैं। [illegible] स्वप्नमे भी गो-अपराधसे भयभीत रहता है। जो [illegible] पञ्चगव्यसे पाप-ताप हरती, यागादिकोंमे [illegible] दानीके यज्ञ-दोप हरती एवं अन्तिम अवस्थामें [illegible] उद्धार करती हैं, ऐसी माताकी तथा उनके [illegible] यशोगाथाका कौन गान कर सकता है [illegible] नहीं।

सच्ची सुख-शान्तिका मूल उपाय—गोसेवा

(श्रीबलरामजी सैनी, एम्०कॉम०)

प्राचीन भारतीय इतिहास इस बातका साक्षी है कि अल्पकालिक गोसेवासे ही भगवान् श्रीकृष्णको भगवत्ता, महर्षि गौतम, कपिल, च्यवन, सौभरि तथा महर्षि आपस्तम्ब आदिको परम सिद्धिकी प्राप्ति एवं महाराज दिलीपको रघु-जैसे चक्रवर्ती पुत्रकी प्राप्ति हुई थी। इसीके आधारपर सम्पूर्ण विश्वमे गोत्रोंका चलन भी हुआ। महर्षि च्यवन एवं आपस्तम्बने अपना मूल्य लगानेके समय स्वयंको सम्पूर्ण पृथ्वी तथा स्वर्गलोकके सम्पूर्ण साम्राज्यसे भी अधिक मूल्यवान् माना, किंतु जब तत्कालीन नरेशोंद्वारा उनके मूल्यके रूपमें एक गायको उपस्थित किया गया तो वे तत्काल प्रसन्न हो गये। अतः गोसेवाका महत्त्व अत्यधिक है।

भगवान् महावीर एवं गौतम बुद्धने भी गोसेवासे ही अहिसा-धर्मको सिद्धकर अपने [illegible] विश्वमे फैलाया था। अहिंसाका [illegible] है। गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीने भी [illegible] प्राप्ति-हेतु गायको सर्वोत्तम साधन [illegible] है—

सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। [illegible]
जप तप ब्रत जम नियम अपारा। [illegible]
तेइ तृन हरित चरै जब गाई। [illegible]

इसीका घृत स्वर्ग-प्राप्तिका [illegible] देवताओंको तृप्त [illegible] तैयार होता है। वस्तुतः गाय [illegible] है। उनके शरीरमे [illegible] मुनियोंसहित सम्पूर्ण तीर्थोंके [illegible]

संसारमें भला ऐसी कौन-सी सिद्धि है, जिसकी प्राप्ति न हो?

बड़े खेदकी बात है कि समस्त धर्मो-पुण्यों, सुख-सम्पत्तिके भण्डार एवं समस्त फलदायिनी गौ माताका वर्तमानमें घोर तिरस्कार हो रहा है। इसके परिणाम-स्वरूप देशमें ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्वमें रक्तपात, हिंसा और उपद्रव आदिकी भयावह स्थिति उत्पन्न हो गयी है।

वेदोंसे लेकर सभी पुराणों तथा अन्यान्य धर्मशास्त्रोंमें धर्मको वृष (साँड) का ही रूप माना गया है। परंतु इसका वर्तमान राजनीतिमें कोई स्थान नहीं है। जबकि प्राचीन परम्परामें धर्मके विना राजनीति विधवा मानी गयी है। आज विश्वके समस्त राजनीतिज्ञ धर्मके वास्तविक स्वरूपको न समझकर दिशाविहीन, किंकर्तव्यविमूढ़, हतप्रभ एव ज्ञान-बुद्धिसे शून्य होकर देश-प्रदेशकी जनभावनाओंके साथ जनताका और अपना भी अहित ही कर रहे हैं। निःसंदेह इसमें विश्वरूप-धर्म और विश्वधारिणी गौ माताकी उपेक्षाके साथ-साथ अनीश्वरवादिता एवं देवता आदिके प्रति अश्रद्धाका भाव ही प्रधान कारण है।

समस्त शुभ कर्मोका फल षड्वर्ग-संयम, मन, बुद्धि एवं आत्माकी परिशुद्धि तथा नित्य पराशान्तिकी प्राप्ति ही कही गयी है और वह गोसेवासे शीघ्र एवं अनायास ही प्राप्त हो जाती है। शास्त्रोंका यह उद्घोष है कि गाय विशुद्ध एवं अक्षय लक्ष्मीको देनेवाली है। उससे विश्व कल्याण-मङ्गलोंसे सुरक्षित होता है। गौएँ वेद एवं शुद्ध ज्ञान-विज्ञानकी जननी हैं और पवित्रताओकी मूल स्रोत तथा सीमा हैं।

भारतके ऋषि-मुनि सदासे सभी शास्त्रोंमें गोसेवा तथा वृषभस्वरूप भगवान् धर्मका सरंक्षण ही सार्वभौम सुख-शान्तिका सर्वाधिक सुगम एवं कल्याणकारी उपाय बतलाते रहे हैं। पाठकोंसे प्रार्थना है कि वे इस बातको जीवनमें उतारकर गोमती-विद्या, गो-सावित्री-स्तोत्र तथा मानसके ज्ञानदीपक आदि प्रसङ्गोंका ध्यानसे पठन-मनन कर स्वल्प गोसेवाद्वारा भी सर्वोत्तम पुरुषार्थ एवं मोक्ष-प्राप्ति-हेतु अग्रसर हों।

गौके प्रति हमारा कर्तव्य

(श्रीरामनिवासजी लखोटिया)

यह निर्विवाद है कि गौकी महिमाका वर्णन प्राचीनतम कालसे भारतमें रहा है और विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों, मनीषियो, संतों और चिन्तकोंकी वाणी एवं साहित्यमें गोरक्षाके लिये बहुत कुछ कहा गया है और लिखा गया है। सविधानमे भी गो-हत्यापर प्रतिबन्ध लगानेकी भावना व्यक्त की गयी है। भारतवर्षके अधिकांश व्यक्ति गोमाताकी महिमाके बारेमे सुनते आ रहे हैं या जानते हैं या विश्वास रखते हैं। फिर भी यह एक बड़ा आश्चर्य है कि अधिकांश गोमाताके प्रेमी हिन्दू, जैन, सिख आदि गौकी रक्षाके प्रति अपना कर्तव्य निभानेमें उदासीन हैं। यही कारण है कि महात्मा गाँधी, विनोबा भावे और देशके अन्य महान् नेताओंके सत्प्रयत्नोके बावजूद अभीतक पूर्णरूपसे भारतवर्षमें गोहत्या बंद नहीं हो सकी है। प्रस्तुत लेखमें गौके प्रति हमारे विभिन्न कर्तव्य क्या हैं और क्या होने चाहिये, इसपर संक्षिप्त विवेचन किया है। यदि हम अपने कर्तव्योंका पूर्ण निष्ठाके साथ पालन करे तो हम गो-रक्षा करनेमें और उसकी हत्याको रोकनेमें सक्षम हो सकेंगे और भारत देशके बारेमें यह कहा जा सकेगा कि यहाँ पुनः दूधकी नदियाँ बह रही हैं। आज आवश्यकता है हमें जागरूक होनेकी। आजके वर्तमान आर्थिक संकटके समयमें गौके प्रति हमारे कर्तव्योका पुनः मूल्याङ्कन करना आवश्यक है।

गौकी धार्मिक महिमा

हमारा यह कर्तव्य है कि हम स्वयं गौके महत्त्वको समझें और उसे अपने परिवार, स्वजनों एवं मित्रोंको भी समझायें। ऋग्वेद (८। १०। १५) में गौके लिये कहा गया है—'गाय रुद्रोंकी माता, वसुओंकी पुत्री और आदित्योंकी भगिनी है। गाय अमृततुल्य दूध और घीका एक मात्र स्रोत है।' गो-पालनके कारण ही भगवान् श्रीकृष्णको 'गोपाल' कहते हैं। विद्वानोंका यह कहना है कि गोवध नहीं किया जाना चाहिये; क्योंकि वह मानवकी सेवा करती है। वेदोने 'गावो विश्वस्य मातरः' कहा है अर्थात् गौ सारे विश्वकी माता

है, क्योकि विना किसी भेदभावके वह सवका भरण-पोपण करती है। गोमाता हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और अन्य धर्मके माननेवालोंका—सवका समान-रूपसे कल्याण करती है।

पशुधनकी उपयोगिता

गौकी सही उपयोगिता हम पूरे गोवंशकी उपयोगितासे ही आँक सकते हैं। यह निर्विवाद है कि गायका दूध माँके दूधके जैसा होता है। हजरत मोहम्मद पैगम्बरने भी गायके बारेमे अपने निम्न विचार रखे है—'तुम गायका दूध पीनेके पाबंद हो जाओ। गायके दूधमे सभी तरहके पौधोंका सत्व है। गायका दूध हमेशा पीयें, यह दवा है। उसका घी बीमारी दूर करता है। उसके गोश्तसे बचो, चूँकि उसका गोश्त बीमारी है।' दूध ही नही गायका घी भी स्वास्थ्यवर्धक है। इसमें 'कैरोटीन' बहुत अधिक मात्रामें होता है तथा इसमे अनेक औषधीय तत्त्व हैं। गायका गोबर और दूध भी बहुत गुणकारी है। गायका गोबर शुद्ध, रोगाणुनाशक, ओषधिगुणसम्पन्न है। खाद तथा जैविक गैस और दूषित परमाणुओके प्रभावको रोकनेके लिये इसका प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार गायका मूत्र धार्मिक अनुष्ठानोंमे तो काम आता ही है, उसका ओषधिकी दृष्टिसे महत्त्व भी बहुत है। वह रोगाणुनाशक एवं कीटनियन्त्रक है। गायके दूध, दही, घी, मूत्र और गोबरके रसके मिश्रणको आजकी भाषामे स्वास्थ्यप्रद टॉनिक कहते हैं। धार्मिक कार्योंमें यही 'पञ्चगव्य' की संज्ञासे अभिहित होता है।

इन्हीं गुणोंके कारण महात्मा गाँधीने गायके सम्बन्धमे कहा था—'मैं गायको सम्पन्नता और सौभाग्यकी जननी मानता हूँ।' गायसे प्राप्त होनेवाले विभिन्न पदार्थोका उपयोग हमें समझना चाहिये और अन्य व्यक्तियोको भी समय-समयपर समझाना हमारा कर्तव्य है। गोधन हमारी राष्ट्रिय सम्पत्ति है और इसकी सुरक्षा एवं संवर्धन हमारा राष्ट्रिय कर्तव्य है। वास्तविक अर्थोंमें गोवंश आज भी हमारी अर्थव्यवस्थाका मूल आधार है। गोवंशसे जहाँ दूध, घी, अनाज, अन्य खाद्य-सामग्री, खाद, ईधन, सिंचाई और यातायातके साधन प्राप्त होते हैं, वहीं पर्यावरणकी भी सुरक्षा होती है। महर्षि दयानन्दके कथनानुसार तो 'गायकी हत्या करके एक समयमें केवल २० व्यक्तियोको ही भोजन दिया जा सकता है, जबकि यदि गाय [illegible] कम-से-कम २०,००० लोगोंको [illegible] तृप्ति प्रदान कर सकती है।'

गोवंशकी उपलब्धता

यह एक चिन्ताका विषय है कि [illegible] हजार जनसख्याके पीछे गाय और [illegible] प्रतिदिन घट रही हैं। १९५१ मे १,००० [illegible] पीछे ४३० गाय और बैल हुआ करते थे। [illegible] संख्या घटकर ४०० रह गयी और १९८[illegible] २७१ हो गयी थी। इसके विपरीत दुनियाके [illegible] जो धार्मिक दृष्टिसे गौंको माँ नहीं करते, वहाँ [illegible] बहुत है। जैसे अर्जेनटाइनामे १,००० के पीछे [illegible] और बैल होते हैं, आस्ट्रेलियामे यह संख्या [illegible] ९१९ और ब्राजीलमे ७२८ है। यदि हमने अपने [illegible] पालन नहीं किया और सरकारको गोवध-[illegible] नहीं किया तो हमारे देशमे गाय और [illegible] प्रतिदिन और भी कम होती जायगी।

संवैधानिक जानकारी

हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम भारतीय [illegible] वर्णित दिशा-निर्देशके महत्त्वको समझे। [illegible] निर्देशात्मक धारा ४८ मे यह स्पष्ट वर्णन है कि [illegible] यह कर्तव्य होगा कि वह देशमे उपयोगी, [illegible] एव भारवाले गोवश-प्राणियोंका संरक्षण और [illegible] कोई भी लोकतान्त्रिक सरकार इसके विरुद्ध [illegible] करेगी। परतु यह दुर्भाग्यका विषय है कि [illegible] सर्वोच्च न्यायालयने 'बिहार सरकार [illegible] कुरेशी' मुकदमेमे अपना निर्णय देते [illegible] धारा ४८ की जो व्याख्या की है, [illegible] कि किसी भी आयुकी गायकी तो [illegible] है, किंतु बूढ़े बैलो और साँडोंको [illegible] दिया गया है। अतः सर्वोच्च [illegible] कानून उनकी हत्यापर कानूनी [illegible] भी वैध है। आज इस [illegible] गया है। इसलिये हमारा [illegible] किसी प्रकार सर्वोच्च [illegible] लिये रखवाये। वस्तुतः [illegible] गया था, उसने गुल[illegible]

सर्वोच्च न्यायालयमें पुनर्विचार-हेतु मामलेको लानेके लिये विशेष प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है और इसमें जो व्यक्ति सक्षम हैं, उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि वे अपनी तरफसे उस बारेमें पूर्ण चेष्टा करें।

गोरक्षा-हेतु जागरूकता

भारतमें अनुमानतः २,५०० गोशालाएँ हैं। इनकी स्थापना तो अहिंसा, करुणा, जीवदया और सेवाकी भावनासे ही हुई है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि उनका संचालन भी नैतिक भावनासे हो। हम यह देखें कि गोशालाएँ और गोसदन निष्काम सेवा, अध्ययन और प्रशिक्षणके केन्द्र भी बनें। कई बार यह देखनेमें आता है कि कुछ गोशालाओंकी भूमि बेचकर वहाँ कालोनी बनाने और दुकान आदि बनानेकी प्रवृत्ति उनके प्रबन्धक कर रहे हैं। ऐसी प्रवृत्तिको रोकना हमारा कर्तव्य है। गोशालाकी जमीन बेचकर धनके ब्याजसे गोशालाएँ चलाना बिलकुल उचित नहीं है। बल्कि गोशालाओकी जमीनपर फल-फूलके बाग-बगीचे, प्रशिक्षण-केन्द्र, संशोधन-केन्द्र, गोदुग्ध-विक्रीकेन्द्र और अन्य सहायक रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलानी चाहिये। गो-सदनोंके सचालनके लिये स्वैच्छिक गोसेवकोंका विशेष महत्त्व है। इसलिये हमें सरकारसे विशेष निवेदन करना चाहिये कि वह स्वैच्छिक गोसेवकोंकी 'सलाहकार-समिति' स्थानीय शासनके अन्तर्गत स्थान-स्थानपर कायम करे।

प्रत्येक समृद्ध उच्चस्तरीय मध्यम वर्गके परिवारके गोप्रेमी व्यक्तिको कम-से-कम एक गायका पालन अवश्य करना चाहिये या जो गाय गोसदन या गोशालामें रहती है उसके भरण-पोषणका बेड़ा उठाना चाहिये। भारतवर्षमे जितने व्यक्ति इस कार्यको करनेके लिये सक्षम हैं, यदि वे अपना कर्तव्य निभा लें तो कोई भी गाय कभी भी कसाईके हाथ नहीं बिक सकती। स्वतः ही फिर हम गोवधको रोकनेमे सक्षम हो सकेंगे। बड़े नगरोंमे व्यक्तिगत गाय पालना सम्भव नहीं है। इसलिये गोशालाओं एवं पिंजरापोलोंके माध्यमसे व्यक्तिगत गायें भी पाली जा सकती हैं।

हमें भारत सरकारके केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलके सदस्यों, सांसदों और सम्बन्धित प्रशासनिक अधिकारियोंसे सतत सम्पर्क करके जितनी गोसेवी संस्थाएँ हैं, उनकी एक स्थायी समिति कायम करानी चाहिये। इसके कार्योंकी जानकारी सभी जागरूक स्वयंसेवी गोसेवकोंको दी जानी चाहिये। केन्द्रीय सरकारसे हमे यह निवेदन करना चाहिये कि एक 'अखिल भारत-गोसंवर्धन आयोग' स्थापित करे और उसके अन्तर्गत गोपालनके लिये सहायता और मार्गदर्शन प्रदान हो, अनुसंधान और प्रशिक्षणकी प्रवृत्तिका संचालन हो तथा गोशालाओंको नस्ल-सुधार आदिके लिये सहायता प्रदान की जाय। यही नहीं, आयोग पशु-ऊर्जाके उपयोगके लिये समुचित तकनीक आदि विकसित करनेमें शोध-संस्थाओंका सहयोग करे।

गोपालन एवं आयकर कानून

गोशालाओं और गोसेवाभावी व्यक्तियोंको चाहिये कि निरन्तर पत्र लिखकर सरकारको 'गोपालन-उद्योग' अर्थात् 'डेयरी फार्मिंग' के लिये आयकरमें छूटका प्रावधान करनेके लिये कहें। हमें यह जानना चाहिये कि इस प्रकारकी छूट आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ८० जेजेके अन्तर्गत ३१-३-८६ तक मिलती रही थी। फिर वित्त-अधिनियम १९८५ के द्वारा १-४-८६ से यह छूट मिलनी बंद हो गयी। लेकिन 'मुर्गी-पालन-व्यवसाय'को प्रोत्साहन-हेतु कुल आयमें $\frac{1}{3}$ भाग करमुक्त छूट १-४-९० से पुनः धारा ८० जेजेके अन्तर्गत मिलती है। इससे 'मुर्गी-पालन-व्यवसाय'को तो प्रोत्साहन मिल रहा है, परंतु वही छूट जो 'दुग्ध-उद्योग' के लिये भी बराबर मिलती थी वह अब नहीं मिल रही है। इसलिये मुर्गी-पालनको मिलनेवाली छूटके बराबर तो धारा ८० जेजेके अन्तर्गत 'गोदुग्ध-उत्पादन-उद्योग' के लिये भी मिलनी चाहिये।

उपसंहार

गायकी धार्मिक महिमा जो वेदों और प्राचीन ग्रन्थोंमें है, केवल उसीका गुणगान करनेसे हम अपने कर्तव्यका निर्वाह नहीं कर सकेंगे, बल्कि बराबर घटती हुई गोवंशकी संख्या और गोहत्याको रोकनेके लिये तथा जीवित गायोंके संवर्धन और संरक्षण आदिके लिये यह नितान्त आवश्यक है कि हम स्वयं गौके प्रति अपने कर्तव्योंके लिये जागरूक बनें और गोरक्षा, गो-संरक्षण आदिके लिये हम अपने कर्तव्यका निर्वाह करें, तभी सच्चे अर्थोंमें हम गोभक्त कहलानेके हकदार हो सकेंगे।

जो गोसेवा नहीं करता वह श्रीविहीन हो जाता है

(श्रीमहन्त नारायण गिरिजी)

'गावो विश्वस्य मातरः' कहकर वेद विश्व (सब) की माताके रूपमे गौ माताकी वन्दना करता है।

ऋग्वेदके एक मन्त्रमें रुद्रोंकी माता एवं वसुओकी दुहिता, आदित्योंकी स्वसा तथा अमृतकी नाभि कहकर गौ माताका स्तवन किया गया है। गौ अमृतकी अग्रजा है। सागर-मन्थनसे सर्वप्रथम पाँच गौएँ प्रादुर्भूत हुई। क्षीरसागरसे प्राप्त नन्दा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला तथा बहुला नामक इन गौओको लोकमाता कहकर देवताओद्वारा पाँच महर्षियों—जमदग्नि, भरद्वाज, वसिष्ठ, असित तथा गौतमको इसीलिये प्रदान कर दिया गया कि ब्राह्मण और गौ एक ही कुलके दो भाग हैं। अतः गौएँ महाभाग महर्षियोको दी गयीं।

देव-तृप्ति तथा लोक-पालनके लिये आविर्भूत गौ माताके सींगोंके अग्रभागमे समस्त तीर्थों, मध्यमे सभी कारणोके कारण-स्वरूप देवाधिदेव भगवान् सदाशिव तथा सींगोंकी जड़मे ब्रह्मा-विष्णुका निवास है। गोमाताके नेत्रोमे प्रकाशस्वरूप भगवान् सूर्य, ज्योत्स्नाके अधिष्ठाता देव चन्द्रमाका निवास है और चारों चरणोमे सत्य-अहिसा-दया तथा शान्तिरूप चतुष्पाद धर्मदेवताका अधिष्ठान है। वृषभ ही साक्षात् गोरूपधारी धर्म है।

भगवान् श्रीकृष्ण राजा युधिष्ठिरसे कहते हैं—हे युधिष्ठिर! गोवत्सद्वादशी-व्रतसे कुल तथा गोत्र एवं १८ अक्षौहिणी सेनाके विनाशका महापातक नष्ट हो जायगा और गौ माताकी कृपासे हृदयको शान्ति भी मिल जायगी।

गौके इस स्वरूपका ज्ञान होनेसे ही सर्वज्ञ ब्रह्म गोविन्द, गोपाल तथा गोरक्षक बने। भगवान् सदाशिवको प्रसन्न करनेवाला बिल्वपत्र भी गौकी देन है। गोमयसे ही श्रीवृक्ष या बिल्ववृक्षकी उत्पत्ति हुई। उस बिल्ववृक्षमे पद्महस्ता भगवती श्रीकी नित्यस्थिति है।

यज्ञकी हवि और मन्त्र-ऋचाएँ (वेद) दोनो ही गौके अङ्गोंमे अवस्थित हैं। यज्ञकी प्रवृत्ति गौसे ही संरक्षित है, क्योंकि यज्ञमें प्रतिष्ठित ब्रह्म स्वयं ही गौमे निवास करते हैं, इसीलिये ऋग्वेदने गौको 'अघ्न्या' [illegible]

गौ सभी देवोकी माता है। [illegible]
गोरस ही नहीं अन्न भी गौसे ही प्राप्त हुआ। [illegible]
गोपुत्रोंके सहारे हुई, गोमयने भूमि उर्वरा बनायी। [illegible]
वसुन्धराकी देन अन्न पहले गोग्रास-[illegible]
करनेका यही रहस्य है—

त्वदीय वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।

गोसेवा करके ही गौतम [illegible]
गोसेवा करके महर्षि जमदग्निको परशुराम-[illegible]
पुत्रकी प्राप्ति हुई। गोसेवक गुरुवर वसिष्ठने [illegible]
दिलीपको गोसेवासे ही पुत्रवान् बनाया। [illegible]
महाराज दिलीपद्वारा सेवित हुई। [illegible]
रघुवंश चला और उनके ही कुलमें भगवान् [illegible]
अवतरित हुए। नन्द बाबाकी गोसेवासे ही भगवान् [illegible]
उनके पुत्र बने।

गोसेवासे मनुष्यमे प्रजा-पालनके [illegible]
करते है। आचार्य व्याडिके अनुसार [illegible]
सरस्वती, मङ्गल, सौहार्द, सौजन्य, कीर्ति, [illegible]
शान्ति श्रीके लक्षण है और गौ [illegible] है। [illegible]
सेवा नहीं करता वह श्रीविहीन हो जाता है। [illegible]
उपेक्षासे ऐश्वर्यहीनता आती है तो [illegible]
करनेसे विनाश ही सम्भव है।

भारत आज भिखारी बन गया है [illegible]
यहाँ गोवध होने लगा। गौ हिन्दुओंमें [illegible]
जानकर गाओंको सेनाके आगे [illegible]
चौहानको पराजित करके भी [illegible]
छीन सका। आज भी वे अमर हैं। [illegible]
है कि परमपूज्या गौओंका [illegible]

जहाँ स्वप्नमें भी [illegible]
नष्ट हो जाते हैं वहाँ [illegible]
है। बाहरसे आने [illegible]
ताकि हिन्दू [illegible]

मुगलकालमें अंग्रेज आये तो दोनोंको अपमानित करनेके लिये गाय और सूअर दोनोंका ही भक्षण करने लगे। गायकी चर्बीयुक्त कारतूस पाकर भारतीय भड़क उठे। गाय ही हमारी स्वतन्त्रताकी जननी है। वही स्वावलम्बी भारतकी भी जननी बन सकती है। उसी गायकी रक्षाके लिये गुरु गोविन्दसिंहने कहा कि—

यही देह आज्ञा तुर्क को खपाऊँ
गौ घातका दुख जगतसे हटाऊँ।
आस पूर्ण करो तुम हमारी
मिटे कष्ट गौअन छुटे खेद भारी॥

आज स्वतन्त्र कहलाकर भी भारत तुष्टीकरणमें गौ माताकी रक्षासे विरत है, यह महान् विडम्बना है। महान् लज्जाका विषय है।

[प्रे०—श्रीशिवकुमारजी गोयल]

गोग्रासससे सर्वार्थसिद्धि

(वैद्य श्रीधनाधीशजी गोस्वामी, आयुर्वेदाचार्य)

पृथ्वीके सप्त आधारभूत स्तम्भोंमें गौ प्रमुख स्तम्भ है। गोसेवा और गोवंशकी उन्नति भारतीय संस्कृतिके अभिन्न अङ्ग हैं। गोसेवाकी नाना विधाओमें गोग्रासका मुख्य स्थान है। गायके निमित्त श्रद्धा-भक्तिपूर्वक दिया गया खाद्यपदार्थ गोग्रास कहलाता है। गोग्रास ग्रहण करनेके लिये गौ मातासे इस प्रकार प्रार्थना की जाती है—

सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः॥
सुरभी वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता।
प्रतिगृह्णातु मे ग्रासं सुरभी मे प्रसीदतु॥

गोमात्रकी अधिष्ठातृदेवता कामधेनु-स्वरूपा सुरभी गोवंशकी जननी मानी गयी है। रूढार्थक कामधेनुका निवास गोलोकमें और यौगिक अर्थपरक कामधेनु शब्द गोमात्रका बोधक है। गोसेवासे श्रेय तथा प्रेय—ये दोनों सिद्ध होकर लोक-परलोक सुधरते हैं। गोरससे राजा, रंक, स्त्री, पुरुष, स्वस्थ, रुग्ण तथा आबाल-वृद्ध सभीका पोषण होता है। गोमाता अपने गोबर और गोमूत्रसे अपवित्रको भी पवित्र करके पर्यावरणको भी शुद्ध बनाती है। पञ्चगव्यका सेवन करनेसे त्वचासे अस्थिपर्यन्त शारीरिक धातुओके रोग तथा विषाणुओंका विनाश होकर नवीन जीवनी-शक्ति प्राप्त होती है।

रसायन तथा व्याधिनिवारणार्थ उपयोगमें आनेवाले दोषाविष्ट खनिज धातुओं, शृंगिक विष, धतूरा, कुचिला, संखिया, भिलावा आदि विषैले पदार्थोका शोधन गोबर तथा गोमूत्रसे होकर वे अमृततुल्य बनते हैं और कष्टसाध्य रोगोंका उपशमन करनेमें सक्षम हो जाते हैं। तीर्थस्नान, दान, वेदाध्ययन, व्रतोपवास, सेवा आदिसे जो-जो पुण्य प्राप्त होते हैं, वे सब गोग्रासरूप सेवासे प्राप्त हो जाते हैं। गायके घृतादिसे सम्पन्न किये गये यज्ञ-यागादिकोंसे ऊर्ध्वलोकस्थ देवादिकोंकी तृप्ति होती है। दूध, दही, घी आदि गोरसोंसे भूमण्डलके प्राणियोंका भरण-पोषण होता है। गोरसों तथा कृषिकर्मके द्वारा अधोलोकके वैभवादिक बढ़ानेसे गाय तीनों लोकोकी माता मानी गयी है, इसीलिये '**गावो विश्वस्य मातरः**' कहा गया है। पञ्चमाताओंमें गौको प्रधान माता स्वीकार किया गया है। गोग्रासकी परिसीमामें गोसेवाके उन सभी रूपोको समाहित किया जा सकता है, जिनसे गोमाता संतुष्ट हों। यथा—हरा-सूखा चारा-दाना खिलाना, जल पिलाना, शरीरको खुजलाना, मक्खी-मच्छर आदिसे रक्षा करना, रुग्णावस्थामें औषधोपचारसे गौकी सेवा करना इत्यादि। गोचारण, गोरक्षण, गोचरभूमिकी व्यवस्था करना आदि—ये सभी गोसेवाके ही रूप हैं। इस प्रकारकी गोसेवासे समस्त मनोरथोंकी पूर्ति होती है। प्रतिदिन गोग्रास देनेवालेके आँगनमें अष्टसिद्धियाँ तथा नव निधियाँ लोटती रहती हैं।

गृहस्थके घरमे पाँच स्थान हिंसाके माने गये हैं—चूल्हा जलाने, चक्की पीसने, झाड़ू देने, धान कूटने तथा जलके स्थानमें प्रतिदिन अनेकशः जीव गृहस्थके न चाहते हुए भी मरते हैं, अतः शास्त्रोंमे इन्हें '**पञ्चसूना**' कहा गया

है। हमारे दूरदर्शी कृपालु ऋषियोने इन पापोंके निवारणार्थ पञ्चमहायज्ञोंका विधान किया है—ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और मनुष्ययज्ञ (अतिथि-सत्कार)। इन महायज्ञोंके नित्यप्रति करनेसे उपर्युक्त पञ्चसूनाजनित पापोंका परिहार हो जाता है। इन पञ्चमहायज्ञोंके सम्पादनमें गौंकी प्रमुख भूमिका रहती है। गोरसके विना एक भी यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता तथा मानवको सुसंस्कृत बनानेवाले पोडश संस्कार पञ्चगव्य, पञ्चामृत तथा गोदानके विना पूर्ण नहीं होते, अतः गोपालन तथा गोसेवा मानवमात्रके लिये नितान्त आवश्यक है। रामराज्यमें सेवासे प्रसन्न हुई गौएँ अपने सेवकोंको आवश्यकतानुसार दूध दिया करती थीं—

मनभावतो धेनु पय स्रवहीं॥

(मानस ७। २३। ५)

श्रीद्वारकाधीशजीकी राजधानी द्वारकामें घर-घर गोसेवाको लोग तन-मन-धनसे किया करते थे। भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं गौओकी सेवा किया करते थे। और हृष्ट-पुष्ट ब्यायी हुई गायोको सजा-सजाकर प्रतिदिन तेरह हजार चौरासी गाये दानमें दिया करते थे। (श्रीमद्भा० १०। ७०। ८-९)

भगवान् श्यामसुन्दर वनमें गोचारण करते समय हरी-हरी सुकोमल घासके कवल उन्हें दिया करते थे। गायें भी उनके हाथका ग्रास लेनेको लालायित रहती थीं। गाये बहुत समझदार होती हैं, वे सेवकका हाथ पहचानती हैं। सेवककी गंध, स्पर्श तथा बोलीसे चित्रलिखित-सी हो जाती है तथा उसके हाथका परोसा चारा बड़े चावसे खाती हुई बड़े आनन्दका अनुभव करती है। भगवान् श्रीकृष्ण गोसेवासे जितने शीघ्र प्रसन्न होते हैं, उतने अन्य किसी सेवासे नहीं। यहाँतक कि अपनी सेवासे भी नहीं।

गौओके शरीरमें खाज आनेपर जवतक वे शान्तिका अनुभव न करें तबतक खुजलाना चाहिये।

हरी-हरी सुकोमल घासके ग्रास तृप्तिपर्यन्त देनेसे सेवकको समस्त सिद्धियाँ स्वतः प्राप्त हो जाती हैं। गौकी प्रदक्षिणा करनेसे सभी पापोका विनाश हो जाता है तथा देवगण मनोवाञ्छित सिद्धि प्रदान करते हैं। [illegible] होनेपर हृदय पवित्र तथा निर्मल हो [illegible] भगवान् विराजमान हो जाते हैं।

गोग्रासकी महिमा अतुलनीय है। [illegible] गोग्रासका पुण्य न लेनेसे [illegible] होती है। एक वार स्वर्गमें जाते हुए [illegible] विमानको नरकके आगेसे ले जाया गया [illegible] नारकीय पापी जनोंका आर्तनाद सुन [illegible] समस्त पुण्य उन्हें अर्पण कर दिया और उनकी [illegible] करवायी। राजाने धर्मराजसे अपने [illegible] पूछा—धर्मराजने शंकाका समाधान करते हुए [illegible] एक वार एक चरती हुई गायका निवारण [illegible] वञ्चित कर दिया था, अतः यहाँ आना पड़ा। [illegible] प्रत्येक विधान मङ्गलमय होता है। यदि आप [illegible] तो कोटि-कोटि नारकीय जीवोंका उद्धार कैसे [illegible]

इक्ष्वाकुवंशके चक्रवर्ती सम्राट् [illegible] नन्दिनी गौकी इक्कीस दिनतक [illegible] गोचारणके द्वारा सेवा करके पुत्र-प्राप्तिका [illegible] किया—

आस्वादवद्भिः कवलैस्तृणानां
कण्डूयनैर्दंशनिवारणैश्च [illegible]।
अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्याः
सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत्॥
[illegible]

भाव यह है कि एकछत्र सम्राट् दिलीप [illegible] मीठी-मीठी कोमल घासके ग्रास देकर [illegible] मच्छरों तथा डाँसोंका निवारण करके [illegible] प्यास लगनेपर मधुर शीतल जल [illegible] अनुकूल अनुगमन करते हुए [illegible]

अतः [illegible] गोसेवा तथा गोदान [illegible] यातनागार—नरकोंसे मुक्ति [illegible] प्राप्ति होती है। [illegible] [illegible] वन्दन।

———

कृषि-विकासमें गोवंशका योगदान

(डॉ० श्रीयलरामजी जाखड़, कृषि-मन्त्री)

गाय हमारी संस्कृतिसे अतीत कालसे सम्बद्ध है। इसे माताकी संज्ञा इसलिये दी गयी है कि यह हमारे जीवनका केन्द्र-विन्दु रही है। ठीक माँ जिस भाँति वच्चोंकी देख-रेख, भरण-पोषण करती है, उसी भाँति गाय हमारे विकासमे भागीदार है। दूध और उससे वनी वस्तुओंके अतिरिक्त हमारे आर्थिक जीवनमें गोवंशकी वड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका और योगदान हैं।

यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत कृषि-प्रधान देश है और यहाँके लगभग ७० प्रतिशत लोग खेतीपर ही निर्भर रहते हैं। यह कहना असंगत न होगा कि खेतीका मूलाधार गोवंश ही है। इतिहास साक्षी है कि जवतक गोवंशका विकास, संवर्धन तथा उसकी पूजा होती रही, तवतक हम आर्थिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिसे विकासके सर्वोच्च शिखरपर आरूढ रहे। गोवंशके प्रतापसे ही भारतकी भूमि सोना उगलती थी तथा विश्वमें 'सोनेकी चिड़िया' कहलानेका इसे ही गौरव प्राप्त था। वैदिक धर्म तथा भारतीय संस्कृतिकी चार आधारशिलाएँ—गौ, गङ्गा, गीता एवं गायत्रीमें भी गौका स्थान हर प्रकारसे सर्वोच्च माना गया है। यह कहनेमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि गोवंश हमारी अमूल्य धरोहर है, जिसके विकासपर हमारा विकास भी आधारित है।

कृषिके विकासमें गोवंशका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है और भविष्यमें रहेगा भी। इस संदर्भमें गत वर्षोंमें किये गये शोध तथा परीक्षणोंके आधारपर कई आँकड़े सामने आये हैं। पंजावमें किये गये शोध-कार्यने स्पष्ट किया है कि डेरी-उद्योग किसानके दिये अन्न-उत्पादनकी अपेक्षा अधिक लाभकर है। सन् १९८९ में प्रकाशित किये गये आँकड़ोंके अनुसार डेरी-उद्योगसे प्रति हैक्टेयर रु० ४५४८ की उत्पत्ति (Return) हुई, जो कि धान-गेहूँ रु० २४४३, मूँगफली-गेहूँ रु० १८७०, गेहूँ-कपास रु० १७९८ तथा मक्का-गेहूँ रु० १७८८ की अपेक्षा कहीं अधिक थी। इसी दिशामें और अधिक परीक्षण करनेपर ज्ञात हुआ कि भैंस-वंश-फार्मिंगकी अपेक्षा गौ-वंश-फार्मिंगमें अधिक लाभ हुआ। आँकड़ोंके अनुसार डेरी-उद्योगके अन्तर्गत भी गौ-वंशपर आधारित फार्मिंगमे प्रति रु० १०० की लागतपर रु० ११७ की आय हुई, जब कि भैंस-वंश-फार्मिंगमें रु० ११४ की आय हुई। इससे स्पष्ट होता है कि यद्यपि भैंस भारतीय डेरी-उद्योगमें प्रमुख इकाई है तथापि गायका योगदान किसानके लिये आर्थिक दृष्टिसे अपेक्षाकृत अधिक है। यह हमारे लिये एक गर्वकी बात है।

गौ-वंशका योगदान एक साधारण किसानके जीवन-स्तरके उठानेमें वहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। श्वेत-क्रान्तिका लक्ष्य केवल गोवंशको वढ़ाना और इसकी उत्पादकताका वर्धन करना ही नहीं था, वरन् राष्ट्रके पिछड़े हुए समाज—कृषक-समाजके उत्थानपर केन्द्रित था। श्वेत-क्रान्तिको इतने थोड़ेसे समयमे लानेका श्रेय किसानोंद्वारा अपनायी सहकारिता तथा कृषि-वैज्ञानिकोके सतत शोध-कार्य और उपलब्धियोंको ही है। इनके प्रयत्न दुग्ध-उत्पादनमें अधिक प्रभावशील रहे हैं अन्न-उत्पादनकी अपेक्षा। आज हम दुग्ध-उत्पादनमें विश्वमें दूसरी श्रेणीपर आ गये हैं। प्रथम श्रेणीमें अभी भी अमेरिका ही है। दुग्ध-उत्पादन पिछले वर्ष ६ करोड़ टनसे भी अधिक हुआ है जो कि अमेरिकासे केवल लगभग ०.७ करोड़ टन कम है। यदि हमारी प्रगति-दर इस दिशामें लगभग ५.५ प्रतिशत भी रही तो भी हमारा देश इस शताब्दीके अन्ततक लगभग ७.८ करोड़ टन दुग्ध-उत्पादन करके अमेरिकासे भी आगे निकल जायगा और



समुद्र-मन्थनसे कामधेनुकी उत्पत्ति



कौरवोंद्वारा मत्स्यराज विराटकी गौओंका हरण



महर्षि च्यवनका मूल्य—एक गौ



गौका जुलूस

भारत उस समय दुग्ध-उत्पादनमें विश्वमें प्रथम होनेका कीर्तिमान स्थापित करेगा। यह सब कुछ गौ-वंशकी ही देन होगी, इसमें कोई संदेह नहीं।

गोवंश ऊर्जाका अनन्त स्रोत हैं। आज दुनियाके तथाकथित विकसित देश निकट भविष्यमे उत्पन्न होनेवाले ऊर्जा-संकटसे चिन्तित हैं। अनुमान है कि पेट्रोल और डीजल तथा मिट्टीके तेलके भंडार २०-२५ वर्षोंमे समाप्त हो जायँगे। लेकिन हमारे देशमें ऐसी स्थिति नहीं आयेगी, यदि हम अपने गोवंशकी रक्षा कर ले। हमारे देशकी कृषिको ९० प्रतिशत ऊर्जा आज भी गोवशसे मिल रही है। ग्रामोमें खेतोंकी जुताई, गन्ना-पेराई, रहँट चलाना तथा परिवहनका अधिकांश काम बैलोद्वारा किया जाता है। यदि यह ऊर्जा पेट्रोल तथा डीजलसे प्राप्त करें तो १०० गुनी अधिक विदेशी मुद्रा खर्च करके उसे तेल-उत्पादक देशोंमे प्राप्त करना होगा, जिसमें मूल्यका बढ़ाना तथा अन्य कई शर्तें लगभग उनकी इच्छापर निर्भर होंगी। हम उनपर आश्रित होगे। इसके अतिरिक्त जब हम कुल उपभोगकी १० प्रतिशत ऊर्जा पेट्रोल-डीजल आदिसे प्राप्त करनेमे पर्यावरणकी इस चिन्ताजनक स्थितिमें फँसे हैं तो यदि १०० प्रतिशत ऊर्जा डीजलसे प्राप्त की जायगी तो देशमें पर्यावरणकी क्या स्थिति होगी, यह तो उन्हींको पता होगा जो ऐसे पर्यावरणमें श्वास लेंगे।

गोबर मल नहीं है खाद है, जिसका मूल्य भारतीय किसान भलीभाँति जानता है। कृषि-वैज्ञानिकोने अन्वेषण करनेके उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला है कि गोबरके सेन्द्रिय खादके प्रयोगसे भूमिकी उर्वराशक्ति बढ़ती है। इसके विपरीत रासायनिक खादके प्रयोगसे उस समय तो फसल अच्छी हो जाती है, किंतु भूमिकी उर्वराशक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है। फलस्वरूप हर वर्ष अधिकाधिक खाद तथा कीटनाशक दवाइयोंकी आवश्यकता होती है, जिससे खाद्यान्नोके उत्पादनकी लागत बढती चली जाती है और किसानको अन्तमें मिट्टीकी उत्पादन-क्षमताकी हानि होती है। गोबरसे खाद बनानेकी अब ऐसी विधि उपलब्ध है जिससे खाद मात्रामे कई गुना अधिक एवं बढ़िया बनती है। एक गाय अथवा [illegible] रु० ४०-५० की [illegible] देता [illegible]। [illegible] गोबर-गैस संयन्त्रोंसे ईंधन और [illegible] तथा जनरेटर चलाकर बिजली [illegible] प्रकार निर्धन किसानको [illegible] आमदनीमें वृद्धि करनेका श्रेय गोवंशको [illegible]।

इधर भारत सरकारने गौ-[illegible] क्षेत्रमे कई ठोस कदम उठाये हैं। [illegible] गवर्नमेंट कौन्सिल ऑफ गौ-[illegible] स्थापना की थी और यह योजना [illegible] (पूना), अमृतसर, इंदौर और अहमदनगरमें [illegible] है और दुग्ध-उत्पादनकी [illegible] संकर-जातिकी बछियाँ पैदा करनेमें [illegible]। '[illegible] गो-रक्षक-मण्डली', जिसने वर्ष १९८६ ई० में [illegible] शताब्दी मनायी थी, की दो संस्थाएँ [illegible] विकासके लिये तथा दूसरी चारे और [illegible] लिये राष्ट्रिय स्तरपर चल रही हैं और [illegible] हैं। 'साबरमती-आश्रम-गोशाला' जिसकी [illegible] वर्ष १९१५ ई० मे विद्याद (अहमदाबाद) में [illegible] था और जो अब 'राष्ट्रिय डेरी-विकास-बोर्ड' [illegible] कार्यरत है, सुचारु रूपसे चल रही है। [illegible] पैदा होता है उसमें ४८ [illegible]।

दुग्ध-उत्पादनमें भारतीय गाय [illegible] करनेकी क्षमता रखती है। भारतीय [illegible] सदा रहेगा। गौ-सेवा हमारी संस्कृति [illegible] सिखायी है, इसका एक ठोस [illegible] कृषिका सर्वांगीण विकास [illegible] बढ़ाना होगा। वर्तमानकी १८० [illegible] प्रतिदिनकी मात्राको [illegible] होगा जो कि संतुलित [illegible] आवश्यक है। गौ-दुग्ध-[illegible] हमारे किसानकी आमदनी [illegible] नागरिकको स्वास्थ्य रखता है [illegible] गौ-संवर्धन [illegible]



गोधनका अर्थशास्त्र

(श्रीचोथमलजी गोयनका)

किसी भी प्रकारका गोवंश—बूढ़ा, अपंग, अनुत्पादक, लूला, लँगड़ा और अंधा देश और पालकपर भार-स्वरूप नहीं है। उसे अनुपयोगी कहना ठीक नहीं है। भारतीय पुराणोंमें स्थान-स्थानपर दर्शाया गया है—'लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमङ्गला।' (स्कन्द०, अव०, रेवा० ८३। १०८) अर्थात् गोबरमें परम पवित्र सर्वमङ्गलमयी श्रीलक्ष्मीजीका नित्य निवास है, जिसका अर्थ यही है कि गोबरमे सारी धन-सम्पदा समायी हुई है। इसी विशेषताके कारण गायको कामधेनुकी संज्ञा दी गयी है। भारतमे गोवंश और पशुओंकी निर्मम हत्याएँ प्रतिसूर्योदयके साथ बढ़ती ही जा रही हैं। सरकारद्वारा निर्धारित गरीबीकी रेखासे नीचे लोगोंकी संख्या भी बढ़ती ही जा रही है, इससे स्पष्ट है कि यान्त्रिक खेती, रासायनिक खाद और कीटनाशक जहरीली औषधियोंके प्रयोगसे स्वास्थ्य और आर्थिक स्थितिमे कोई सुधार नहीं हो पाया, बल्कि हानि ही हुई है और होती ही जा रही है। जिससे यह स्पष्ट प्रमाणित हो जाता है कि गोवंशकी अवहेलना करके, आधुनिक तकनीकसे कोई लाभ, कोई विकास नहीं हो पाया, हानि ही हुई है। धरतीके लिये रासायनिक खाद उसका प्राकृतिक आहार नहीं है। इससे शुरूमें तो उत्पादन बढ़ता है, किंतु बादमें चाहे कितनी ही मात्रामें रासायनिक खाद डाले, उत्पादन घटता ही जाता है, धरतीकी उर्वरा-शक्ति कमजोर होती जाती है। कुछ समय पश्चात् धरती पूर्णतः बंजर हो जाती है। इसके अलावा सभी खाद्य-पदार्थोंमे जहरका समावेश, खेतीकी लागतमें वृद्धि, स्वास्थ्यकी हानि, महँगाई-करोंमें वृद्धि और अन्ततः गरीबी—ये हैं रासायनिक खाद और जहरीली कीटनाशक औषधियोंके दुष्परिणाम। रासायनिक और जहरीली कीटनाशक औषधियोंके कारखानोंकी स्थापनामे अरबों रुपयोंकी लागत आती है, जिसका आर्थिक भार भी देशकी जनतापर ही पड़ता है।

यदि गोवंशकी अवहेलना न होती, उनकी निर्मम हत्याएँ न की जातीं, उनके गोबर-गोमूत्रका समुचित उपयोग सही और आधुनिक ढंगसे किया जाता, उसके गुणोके विषयमें शोध की जाती, उनके उपयोगके लिये नयी तकनीक विकसित की जाती, तो आज कृषि-उत्पादनकी स्थिति ही बहुत भिन्न होती, देशमें महँगाई नहीं बढ़ती, क्योकि किसान जो साथ-साथ गोपालक भी हैं, उन्हें खेती करनेमें कोई लागत ही नहीं लगानी पड़ती, उसका उत्पादन अपने परिश्रम और प्राकृतिक सूत्रोसे स्वतः ही होता। खेतीमें लागत न आनेके कारण अनाज और अन्य उत्पादन महँगे नहीं होते। सरकारको किसी प्रकारकी कोई आर्थिक सहायता, खादपर अथवा अनाजपर नहीं देनी पड़ती, जनतापर करोका बोझ नहीं पड़ता, जिसके परिणामस्वरूप गरीबी और महँगाई दोनों ही नियन्त्रणमें रहते और विकासके साथ-साथ देशमें समृद्धि भी बढ़ती।

गोबरकी खाद धरतीका प्राकृतिक आहार है, इससे धरतीकी उर्वराशक्ति बनी रहती है, यदि गोबरकी कम्पोस्ट खाद तैयार करके उपयोगमें लाया जाय तो उर्वराशक्ति धीरे-धीरे बढ़ती ही रहती है, घटती नहीं, यही कारण है कि लाखों वर्षोंसे भारतकी धरतीकी उर्वराशक्ति अभी भी बनी हुई है, जब कि विकसित देशोंमें सिर्फ पिछले ६०-७० वर्षोंसे रासायनिक खादके उपयोगसे लाखों हेक्टेयर भूमि बंजर और अनुत्पादक हो गयी है। वहाँकी सरकार, वहाँके लोग रासायनिक खाद और जहरीली कीटनाशक औषधियोंके प्रयोगके घातक परिणामोंसे अच्छी तरह परिचित हो गये हैं। वे रासायनिक खादका त्याग करके गोबरकी खाद तथा अन्य आर्गेनिक खादका उपयोग कर रहे हैं। हमारे देशमें अभी भी हम रासायनिक खादके प्रभावसे भ्रमित हो रहे हैं।

गोबरकी कम्पोस्ट खादके विषयमें पिछले १०-१२ वर्षोसे, इसके उपयोगके द्वारा बहुत अच्छी तरह प्रमाणित हो चुका है कि यह खाद किसी भी प्रकारसे रासायनिक खादसे कम प्रभावशाली नहीं है। इस खादमें रासायनिक खादकी तुलनामें नाईट्रोजन, फास्फोरस और पोटैशियमकी

मात्रा कम नहीं है। नाईट्रोजन ० ५-१.५ प्रतिशत, फास्फोरस ०.५-०.९ प्रतिशत और पोटैशियम १ २-१.४ प्रतिशत रहता है। यह अनुपात गोवरकी कम्पोस्ट खादको कई बार प्रसिद्ध शोध-शालाओंमे शोध कराकर जाँच लिया गया है। इस कम्पोस्ट खादके बनानेकी विधिको नॅडेप खादके नामसे जाना जाता है। इस खादको बनानेकी विधि भी है, जो बहुत ही सरल है। प्रत्येक किसान और गोपालक अपने ही घरपर अथवा खेतमे, इसे बना सकता है, सिवाय परिश्रमके इसमें कोई लागत नहीं आती है। इस खादको बनानेके लिये १० फुट लंबा, ६ फुट चौड़ा और ३ फुट ऊँचा एक टंकी अथवा हौद बनाना होता है, जिसमे १८० घनफुट गोवरकी कम्पोस्ट खाद तैयार होती है। एक टंकी भरनेके लिये सिर्फ १०० किलोग्राम गोबर, लगभग १५०० किलोग्राम खेतके तथा अन्य वानस्पतिक व्यर्थ पदार्थ जैसे सूखे पत्ते, डंठल, टहनियाँ, जड़े आदि एवं खेतके हरे झाड-झंखार, खेतीकी या नाले आदिकी सूखी, छनी हुई मिट्टी १७५० किलोग्राम तथा पानी लगभग १५००-२००० लीटर मौसमके अनुसार आवश्यकता होती है। इन पदार्थोकी कोई भी लागत नहीं आती, यह सब किसानको खेतीमें ही और पशुओसे उपलब्ध हो जाता है। इस मिश्रणको गोवर, मिट्टीसे लेप कर टंकीको बंद कर दिया जाता है। ९०-१२० दिनतक सामग्री उसी टंकीमे पड़ी रहती है और कम्पोस्ट खाद तैयार हो जाती है। खादसे तैयार होनेपर उसे उपयुक्त छलनीसे छाना जाता है, उसका वजन लगभग तीन टन होता है। १०० किलोग्राम गोबरसे तीन टन गोवरकी कम्पोस्ट खाद तैयार होती है। आजके वर्तमान भावोंके अनुसार एक बोरी यूरिया-खाद ५० किलोकी कीमत लगभग ढाई सौ रुपयेसे भी अधिक है। एक गायके वार्षिक गोवरसे लगभग ८० टन खाद एक वर्षमें तैयार हो सकती है, जिसकी कीमत आजके रासायनिक खादके भावोके अनुसार लगभग ४०,००० रुपयेकी होती है। एक गायसे मासिक आय लगभग ३२०० रुपयेकी हो सकती है, सिर्फ उसके गोवरसे।

ऊपरके विवरणसे बहुत स्पष्ट है कि किसी भी प्रकारका निकम्मा कहा जानेवाला गोवंश सिर्फ अपने गोबरसे अपने पालकको जो कुछ वह खाता है, उससे अधिक आय दे देता है, [illegible] समुचित उपयोग किया जाय। [illegible] अनुपयोगी मानकर उनको [illegible] देना, देशकी आर्थिक व्यवस्थाके [illegible] है, यह प्रमाणित हो जाता है।

गायके गोबरमे कितनी [illegible] अनुसंधान रूसियाने करके अनुभव [illegible] गोबरका लेप मकानोंके बाहर दीवालों और [illegible] देनेसे बाहरसे रेडियेशनकी किरणें [illegible] सकतीं। यह अनुसंधान किया जा चुका है [illegible] प्रमाणित वर्णन विश्वकी विज्ञान पत्रिका [illegible] बहुत वर्षों पहले एक लेखमें आया था। [illegible] घीसे हवन करके उसके बारेमें अनुसंधान [illegible] जहाँ-जहाँ जितनी दूरीमे उस हवनके धुएँका [illegible] उतने दायरेमें किसी भी प्रकारके कीटाणु [illegible] नहीं रहे। वे क्षेत्र कीटाणुओं और [illegible] मुक्त हो गये।

गोमूत्र खेतीके लिये बहुत उपयोगी [illegible] धरतीको बिना किसी प्रकारकी हानि [illegible] कीटाणुनाशक शक्ति होती है। गोमूत्रका [illegible] कई बीमारियोंमे औषधके रूपमे और [illegible] लिये किया जाता है। गोमूत्रकी उपयोगिता [illegible] एक अच्छा विषय है।

गोवरसे गैस मुख्यसे प्राप्त होती है, [illegible] जन-साधारणको हो चुकी है। [illegible] रोशनीके लिये किया जाता है। [illegible] गोबर-गैसके [illegible] अबतक नहीं हो पाये [illegible] ईंधन और रोशनी लोगोंको मुफ्त [illegible] ईंधनके लिये जो [illegible] होता और वन [illegible] विद्युत्-[illegible] होकर [illegible] [illegible] समृद्धि होगी। [illegible]

मिलता जिनके कारण उनकी आँखोंमें बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, और वे कमजोर हो जाती हैं, उससे छुटकारा मिलता। गोबरकी कोई लागत नहीं आती, गैससे निकला हुआ गोबर खेतीके लिये ज्यादा प्रभावशाली होता है, क्योंकि इसमेंसे गैस निकल जानेसे धरतीकी उर्वराशक्ति बढ़ानेमें यह ज्यादा समर्थ हो जाता है।

गोवंशका समुचित उपयोग करनेसे जो आय होती है, उसमें गाय-बैलके भरण-पोषणका खर्च निकालनेके पश्चात् भी बचत ही रहेगी, ऐसी स्थितिमें गायका दूध और बैलका परिश्रम उनके पालकोंको मुफ्तमें प्राप्त होगा, जिससे उनके परिवारोंमें समृद्धि आयेगी, उनके रहन-सहनका स्तर ऊँचा होगा, उनके बालकोंको पीनेके लिये दूध मिलेगा। क्योंकि उस दूधकी लागत नहीं आयेगी तभी भारतके गरीब परिवार दूधका उपयोग कर पायेंगे। उपर्युक्त विवरणसे बहुत स्पष्ट है कि गोवंश किसी भी स्थितिमें अनुपयोगी है ही नहीं, मरनेके पश्चात् भी अपने पालकको बोनसके रूपमें चमड़ा, हड्डी तथा अन्य जन-उपयोगी वस्तु अपने शरीरके द्वारा छोड़ जाता है, ऐसे पशुकी हत्या अज्ञानता है।

देशके उच्च और उच्चतम न्यायालयोंके न्यायाधीशोंने गोवंशकी हत्या निषेध करनेके विषयमें जो निर्णय दिये हैं उनका प्रमुख आधार यही है कि अनुत्पादक, अनुपयोगी गोवंश पालक और देशपर आर्थिक रूपमें भार हैं। इसलिये ऐसी स्थितिमें उनकी हत्या करके उनको उपयोगमें लाना आर्थिक दृष्टिकोणसे उचित है, न्यायिक रूपसे मान्य है। ऐसे गलत निर्णय इसलिये हुए हैं कि आजतक गोवंशके गोबरकी अर्थनीतिके बारेमें व्यापक और प्रमाणित रूपमें कोई विस्तृत जानकारीकी दलील नहीं दी गयी।

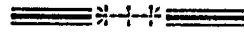
भारत सरकारकी हिंसक नीतिके द्वारा समृद्धि प्राप्त करना, विदेशी मुद्रा कमानेकी बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाना, शेखचिल्लीके कल्पनाओंके समान ही है। ऐसी हिंसात्मक योजनाएँ अभीतक सभी पूरी तरह असफल ही नहीं हुई हैं बल्कि उनके घातक परिणाम हुए हैं और हो रहे हैं।

भोले-भाले मेढकोंको मार कर उनकी टाँगोंको विदेशी मुद्रा प्राप्त करनेके लिये निर्यात करनेका कार्यक्रम बनाया गया था, जिसके घातक परिणाम सबके सामने हैं। जहाँ खेतीमें मेढक रहते थे वहाँका सारा पर्यावरण मेढकके न रहनेसे असंतुलित हो गया। खेतीके लिये जो घातक कीटाणु थे वे मेढकोंके आहार थे। मेढकोंके न रहनेसे खेतीमें बीज डालनेपर उन कीटाणुओंने अंकुर ही खा लिये, सारी खेती चौपट हो गयी और मजबूर होकर मेढकोंको वहाँपर संरक्षण देकर उनका पुनः उत्पादन करनेकी व्यवस्था करनी पड़ी, कई वर्षोंतक उस क्षेत्रमें सामान्य खेती नहीं हो पायी। पर्यावरणको स्वच्छ और संतुलित रखनेके लिये प्रकृतिका अपना नियम होता है, उसमे छेड़-छाड़ करनेसे उसके दुष्परिणाम होते ही हैं, इसी प्रकार कई प्रकारके सरकारके हिंसात्मक परीक्षण विदेशी मुद्रा कमानेके लोभमें बुरी तरह असफल हुए हैं, देशको और जनताको बहुत बड़ी आर्थिक हानि उठानी पड़ी है।

प्राचीन भारत, गोवंशके कारण कितना समृद्ध था, इसका एक उदाहरण गौतम बुद्धके कालका दिया जा रहा है। उस समय जिसके पास अधिक-से-अधिक संख्यामें गोवंश होता था, उसीको नगर-श्रेष्ठी (नगर-सेठ) की उपाधि दी जाती थी। ऐसे ही एक नगर-सेठने पाटलिपुत्र (पटना) में मगध देशके राजा बिंबिसारको अपने घरमें भोजनके लिये आमन्त्रित किया। जितने बड़े और प्रतिष्ठित व्यक्तिको घरमें भोजन आदिके लिये आमन्त्रित किया जाता है, उसकी प्रतिष्ठाके अनुकूल व्यवस्था भी की जाती है, यह परम्परा सदासे रही है, आज भी है। इसी परम्पराके अनुकूल उस नगर-सेठने अपने घरमें, रात्रिका अंधकार दूर करनेके लिये, स्थान-स्थानपर ऐसे रत्न लगा दिये जो कि अँधेरेमें प्रकाशित होते हैं और सम्राट् बिंबिसारको रत्नोंकी रोशनीमें भोजन कराया। इससे यह सिद्ध होता है कि उस समयका भारत कितना समृद्ध था। एक-एक श्रेष्ठीकी गौशालामें एक लाखसे भी अधिक गोवंश रहता था, यह भी कल्पनाकी बात नहीं है, इतिहासद्वारा प्रमाणित है।

यूरोपके बाजारोंमें गोबरके आर्गेनिक खादसे उपजाये गये साग, फल, अनाज, रासायनिक खादसे उपजाये गये साग, फलों और अनाजोंसे दुगुनीसे तिगुनी कीमतपर बिक रहे हैं, फिर भी इनकी माँग बढ़ती ही जा रही है। वहाँके किसान तथा अन्य उत्पादक आर्गेनिक खादका

प्रयोग ही बढ़ाते जा रहे हैं। भारतकी ही एक चाय-उत्पादक कंपनीको गोबरकी खादसे चाय-उत्पादन करके देनेके लिये सामान्य कीमतसे ढाई गुनी कीमतपर आर्डर मिला है। अन्य खरीददार बहुत बडे आर्डर देनेको तैयार हैं, परंतु गोबरके खादकी उपलब्धि आवश्यक मात्रामे न होनेके कारण यहाँके चाय-उत्पादक गोबरकी खादसे उपजायी गयी चाय अधिक मात्रामे उन्हें देनेमें असमर्थ हैं। [illegible] उसकी आवश्यकताका [illegible] बातोंको देखते हुए, [illegible] किसानोंको अपनी मनोवृत्ति एवं [illegible] होगा तभी हम गोबरका [illegible] इसी लाभकी पृष्ठभूमिमें [illegible] कार्य भी सम्पन्न हो जायगा।



गौसे अनन्त लाभ

(स्वामी श्रीदयानन्दजी सरस्वती)

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे॥
(यजु० ३६। ८)

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरने इस सृष्टिमे जो पदार्थ बनाये हैं, वे निष्प्रयोजन नहीं, किंतु एक-एक वस्तु अनेक-अनेक प्रयोजनोके लिये रची है। इसलिये उनसे वे ही प्रयोजन लेना न्याय है अन्यथा अन्याय। पक्षपात छोडकर देखिये, गाय आदि पशु और कृषि आदि कर्मोंसे सब संसारको असंख्य सुख होते हैं या नहीं?

जो एक गाय न्यून-से-न्यून दो सेर दूध देती हो और दूसरी बीस सेर, तो प्रत्येक गायके ग्यारह सेर दूध होनेमे कुछ भी शंका नहीं। इस हिसाबसे एक मासमें सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम-से-कम छ: महीने और दूसरी अधिक-से-अधिक अठारह महीनेतक दूध देती है, तो दोनोंका मध्यभाग प्रत्येक गायका दूध देनेमे बारह महीने होते हैं। इस हिसाबसे बारह महीनोका दूध ९९ मन होता है। इतने दूधको औटाकर प्रतिसेरमे एक छटाँक चावल और डेढ़ छटाँक चीनी डालकर खीर बनाकर खाये, तो प्रत्येक पुरुषके लिये दो सेर दूधकी खीर पुष्कल होती है। क्योकि यह भी एक मध्य भागकी गिनती होती है। अर्थात् कोई भी दो सेर दूधकी खीरसे अधिक खाये और कोई न्यून, इस हिसाबसे एक प्रसूता गायके दूधसे एक हजार नौ सौ अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून-से-न्यून ८ और अधिक-से-अधिक १८ बार [illegible] मध्यभाग १३ बार आया तो पचीस हजार [illegible] मनुष्य एक गायके जन्मभरके दूधमात्रसे [illegible] सकते हैं। इस गायकी एक पीढ़ीमें [illegible] बछडे हुए, इनमेंसे एकको मृत्यु [illegible] तो भी बारह रहे। उन छ: बछियोंके दूधमात्रसे [illegible] एक लाख चौवन हजार चार सौ [illegible] हो सकता है। अब रहे छ: बैल, [illegible] साखमे २०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती है [illegible] जोडी ६०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती है [illegible] कार्यका मध्य भाग आठ वर्ष है। [illegible] अन्न उत्पन्न करनेकी शक्ति एक [illegible] इतने (४,८०० मन) अन्नसे प्रत्येक [illegible] भोजनमे मिले तो २,५६,००० मनुष्योंका [illegible] होता है। दूध और अन्नको मिलाकर [illegible] ४,१०,४४० मनुष्योंका पालन [illegible] अब छ: गायकी पीढ़ी-पर-पीढ़ी [illegible] देखा जाय, तो असंख्य मनुष्योंका [illegible] इसके मांससे अनुमान है कि [illegible] एक बार तृप्त हो सकते हैं। [illegible] प्राणियोंको मारकर [illegible] क्यो नहीं? (गो-[illegible]



गोसंवर्धन एवं समृद्धि

(श्रीपरसरामजी मदेरणा, अध्यक्ष राजस्थान विधान-सभा)

भारतमें गायकी महत्ताका वर्णन वैदिक कालसे होता आ रहा है। गाय भारतीय जीवनका अभिन्न अङ्ग है। हमारे शास्त्रोंमें गायकी मुक्तकण्ठसे महिमा गायी गयी है—

'मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः।'

'गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः।'

'यद्गृहे दुःखिता गावः स याति नरकं नरः।'

'रूपं वै विश्वरूपस्य सर्वरूपं गोरूपम्॥'

'गावो विश्वस्य मातरः।'

—अर्थात् शास्त्रोंमें गायको जन्मभूमि और जननीके समान स्थान दिया गया है। पृथ्वीको भी गायके रूपमें माना गया है। वेदोंमें गायके प्रकरणपर विभिन्न प्रसंगोंमें विभिन्न कथाएँ कही गयी हैं। ऋग्वेदमें पणियोंद्वारा गायोंकी चोरी करनेकी बात आती है और उनको मुक्त करनेवालेकी स्तुति तथा इन्द्रके द्वारा गायोंको राक्षसोंसे मुक्त करानेकी बार-बार प्रशंसा की गयी है। इन वर्णनोंसे यह प्रतिपादित होता है कि गाय हमारे जीवनका आधार है। हर पवित्र कार्य तथा संस्कारके बाद पञ्चगव्य जिसमें गोमूत्र, गोबर, गायका दूध, घी, दही शामिल होता है, लेना अनिवार्य होता है।

प्राचीन कालमें गाय ही सम्पत्तिका आधार थी। गायको ब्राह्मणके समान ही पूजनीय माना गया है। गरुडपुराणमें मृत्युके बाद वैतरणी पार करनेका माध्यम गायको ही माना गया है। गायके शरीरमें तैंतीस कोटि देवताओंका निवास है, अतः यह पूजनीय है। जन्म देनेवाली स्नेह, वात्सल्य एवं ममतामयी माँ तो कुछ वर्षोंतक ही अपनी संतानको दुग्धपान कराती है, परंतु प्रकृतिकी साक्षात् सजीव-रूपधारिणी माँ गाय जीवनभर अपने दुग्धसे हमारे स्वास्थ्यकी रक्षा करती है।

वेद, उपनिषद्, पुराण तथा सभी स्मृति-शास्त्रोंमें गो-पालन, गो-सेवा एवं गोदानको बार-बार निर्देशित किया गया है। आज भी व्यावहारिक और आर्थिक मान्यताओं—जैसे कृषि, उद्योग, ग्रामीण परिवहन तथा स्वदेशी आदिकी दृष्टिसे भी गायकी उपयोगिता सिद्ध ही है। सदासे ही गायकी उपयोगिता बनी हुई है और सर्वदा उसकी प्रासंगिकता भी स्वतःसिद्ध है।

भारत एक कृषि-प्रधान देश है, इसलिये भी गायका हमारे देशकी आर्थिक स्थितिको सुदृढ़ करनेमें सदैव महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विदेशी शासनके दौरान भी गोवंशके सहारे ही इस देशका गरीब कृषक जीवित रहा है। ऐसी स्थितिमे भारत-जैसे कृषि-प्रधान देशमें गोमूत्र तथा गोबरकी खाद जहाँ खेतोंको उपजाऊ करनेमें एवं खाद्यान्नका उत्पादन बढाने तथा जमीनकी उर्वराशक्तिको बरकरार रखनेमें अत्यन्त उपयोगी है, वहीं दूसरी ओर आज जिस विदेशी रासायनिक खाद एवं कीटनाशकोंका प्रचुर मात्रामें उपयोग किया जा रहा है, इनके उपयोगके परिणामस्वरूप एक कालावधितक तो उत्पादन बढ़ता है, परंतु धीरे-धीरे भूमिकी नैसर्गिक उर्वरा-शक्ति नष्ट ही नहीं होती, बल्कि रासायनिक खादसे उत्पादित खाद्यान्नों, फलों और सब्जियोंमें कई प्रकारके विषकी मात्रा भी बढ़ती जा रही है, जिससे उनके स्वाद, उपयोग एवं संरक्षणमें गिरावटको आम आदमी अनुभव करने लगा है। इस प्रकारके उत्पादोंका उपयोग करनेवालोके स्वास्थ्यमें गिरावट आ रही है तथा तरह-तरहके रोग पैदा हो रहे हैं। वैज्ञानिक इस सम्बन्धमें बार-बार चेतावनियाँ दे रहे हैं कि रासायनिक खादोंका उपयोग सीमित किया जाय। वे गायके गोबर तथा मूत्रकी खादकी उपयोगिताको अधिकृत रूपसे उजागर कर रहे हैं। अतः हमें अपनी विदेशी मानसिकताको शीघ्र ही बदलना होगा।

गायके गोबरसे घरोंको लीपने-पोतनेसे रोगाणु नष्ट होते हैं तथा वातावरण स्वच्छ एवं स्वास्थ्यप्रद रहता है, आजके विज्ञानने इस तथ्यको स्वीकार कर लिया है। आयुर्वेद-चिकित्सा-शास्त्रमें गोमूत्रको रोगनाशक माना गया है तथा गोमूत्रका उपयोग अनेक आयुर्वेदिक औषधियों-जैसे संजीवनी-वटी आदिमें किया जाता है।

शाकाहारकी उपयोगिताको अब पश्चिमके लोग भी समझ गये हैं। आयुर्वेद-चिकित्सा-पद्धतिमें तो यह सिद्धान्त

पहलेसे ही प्रतिपादित है। ऐलोपैथिक चिकित्सा-विज्ञानने भी अव इसे स्वीकार कर लिया है कि मनुष्य शाकाहार तथा गायका दुग्ध सेवन करके अधिक दिनोतक सुखी एवं स्वस्थ-जीवन विता सकता है। इसलिये पाश्चात्त्य देशोंके लोग मांसाहारके वजाय शाकाहार अपनानेके लिये स्वत: ही आगे आ रहे हैं, इससे गायके दूधकी महत्ता स्वत: ही प्रतिपादित होती है।

आजके युगमे आम आदमी मानसिक रूपसे तनावग्रस्त है, लोग मानसिक श्रमकी तुलनामें शारीरिक श्रमसे वचनेकी कोशिश करते हैं, इसीका परिणाम है कि हृदयरोग भीषण रूपसे घर-घरमे फैला हुआ है, लेकिन ऐसे लोगोके लिये गायका दूध तथा घी वहुत उपयोगी है, क्योकि गायके दूधमें विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रामे होता है। इसमे चर्वीकी मात्रा कम होती है। गायका दूध माताके दूधके वाद पूर्णतया सुपाच्य और परिपूर्ण भोजन है। गायके दूधमे अन्य खनिज, विटामिन आदि भी प्रचुर मात्रामें होते हैं, जो भोजनके लिये जरूरी माने जाते हैं। कोई मनुष्य चाहे तो जीवनभर गायके दूधपर निर्भर रहकर अपने-आपको स्वस्थ रख सकता है। इसी प्रकार गायका दूध-दही आदि तथा उससे वने पदार्थ अन्य पशुओके दूध आदिकी तुलनामें अधिक स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यवर्धक होते हैं।

आज बढ़ती हुई जनसंख्या एवं औद्योगीकरणके प्रसारके परिणाम-स्वरूप दिन-प्रति-दिन ऊर्जाका संकट गहराता जा रहा है। लेकिन गायके गोवरसे खाद ही नहीं गैस-प्लांटमें ऊर्जाका उत्पादन भी सस्ता, सुलभ तथा दैनिक जीवनके लिये उपयोगी है, गैस-प्लाटमें उपयोग किये गये गोबरकी उर्वरा-शक्ति बढ़ जाती है। लेकिन यह गोवशकी वृद्धिसे ही सम्भव है। गोबर-गैस-प्लांटका प्रसार होनेसे ही ईंधनके लिये वनोकी कटाईपर नियन्त्रण होने तथा पर्यावरण-संरक्षणकी सम्भावनाएँ हैं। देशमे बिजलीकी कमी है ओर बड़े-बड़े विद्युत्-उत्पादन-केन्द्रोकी स्थापनाके पश्चात् भी यह कमी प्रतिवर्ष बनी रहती है। अधिकाधिक गोवर-गैस-प्लांटकी स्थापनासे विद्युत्की कमीकी पूर्ति आसानी तथा सस्तेमें की जा सकती है।

क्या हम यह मान लें कि वेद-शास्त्रोने विना किसी कारणके, केवल [illegible] अथवा हमारे जीवनमे [illegible] भी है? भारतीय सस्कृतिको [illegible] प्रकृतिके उन सभी तत्त्वोंको [illegible] उनकी पूजाका प्रावधान रखा गया है, [illegible] मनुष्य न केवल अपना शरीर [illegible] सहयोगसे जीवनकी रक्षा की जाती है। वे तत्त्व हैं—[illegible] आकाश, अग्नि, जल, वायु और [illegible] वनस्पति, वृक्ष, नदी, पहाड आदि-आदि [illegible] हमारा जीवन ही सम्भव नहीं है। [illegible] प्राकृतिक एव पारिस्थितिक सतुलन [illegible] माध्यम है, जिसमे सृष्टिके कार्य सुचारु [illegible] और प्राणिजगत्को प्रकृतिके कोपका भाजन नहीं [illegible] लेकिन आज इस पूजनीय भावके अभाव एव [illegible] ऊहापोहमे असतुलित तरीके-से प्रकृतिका [illegible] दोहन करनेका ही परिणाम है कि हमारे सामने [illegible] गिरावटकी भीषण समस्या मुँह वाये खड़ी है। [illegible] भारतीय सस्कृतिकी मान्यताओंके अनुसार [illegible] जीनेका अभ्यस्त हो जाय एव प्रकृतिसे [illegible] छाड़ नहीं करे तो उसके जीवनके अस्तित्वको [illegible] उत्पन्न नहीं हो सकता। प्राकृतिक संतुलन और [illegible] सरक्षणकी दृष्टिसे हमारे अस्तित्वको [illegible] भी जीवनमे गायका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है।

गोवशका आर्थिक दृष्टिसे मूल्याङ्कन [illegible] निकलता है कि जन्मसे मृत्युपर्यन्त, [illegible] अथवा कृत्य ऐसा नहीं है जो अनुपयोगी [illegible] प्रतिकूल हो। इस प्रकार [illegible] आज भी हमारे जीवनके लिये [illegible] गायके चर्म, सींग तथा [illegible] उपयोगकी अनेक वस्तुओंके [illegible] निर्मित जूते एवं चर्म [illegible] गायकी हड्डियोंसे भी [illegible] अधिक [illegible] उपयोग अन्य [illegible] स्थिति गोवंशकी [illegible]

कोई संदेहकी गुंजाइश नहीं है। खेतीके लिये भी ट्रैक्टरोंके अधिक उपयोगसे जो सम्भावित हानियाँ हो रही हैं, उसपर गम्भीर चिन्तनकी आवश्यकता है।

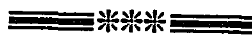
यदि थोडी देरके लिये आध्यात्मिक एवं धार्मिक पक्षको छोड़ भी दे और हम वैज्ञानिक तथा आर्थिक आधारोंकी तुलनामें भी तोलें तो गोवंशका वध तर्कसम्मत तथा वैज्ञानिक नहीं है। यह भी तर्क दिया जाता है कि अनुपयोगी गोवंशकी रक्षा करना आर्थिक दृष्टिसे उचित और लाभप्रद नहीं है। लेकिन ये सभी तर्क तथ्योंके विपरीत हैं। वेदों, पुराणो, शास्त्रो एवं संस्कृतिमें जब गायको मॉका स्थान दिया गया है तो उसकी अनुपयोगिताका प्रश्न कौन-सी नैतिकता एवं न्याय है। क्या वृद्ध माता-पिताको भी इसी दृष्टिसे देखा जायगा? गोंडा, चित्रकूट तथा बनारसकी गोशालाओमे प्रत्यक्ष रूपसे परीक्षण करनेपर यह तथ्य पूरी तौरसे प्रमाणित हुआ है कि गोवंश किसी भी दशामें अनुपयोगी नहीं होता। केवल दुधार गायें ही उपयोगी हैं, यह कथन भी सर्वथा सत्य नहीं है। गोवंशके केवल गोबर एवं मूत्र तथा उनके खुरोंसे रौंदी हुई मिट्टीसे इतनी खाद पैदा की जा सकती है कि उसको व्यापारिक दृष्टिसे बेचकर जो लाभ कमाया जा सकता है, उससे गोसंरक्षण तथा अपना भरण-पोषण भलीभाँति किया जा सकता है। इस प्रकार यह तथाकथित अनुपयोगी गोवंश भी जीवित रहकर आर्थिक लाभमें योगदान कर सकता है, क्योकि अनुपयोगी गोवंश प्रत्यक्ष ही नहीं अप्रत्यक्ष-रूपमें लाभ भी पहुँचाता है। गोचरभूमिपर चरनेसे उस भूमिकी उत्पादन-क्षमता बढ़ती है। प्रकृतिमे कई प्रकारके ऐसे बीज होते हैं, जिन्हें उगनेके पूर्व उपचारित करनेकी आवश्यकता पड़ती है, इस प्रकारके बीज फल अथवा फलीके साथ गायके पेटमें जाकर स्वतः ही उपचारित होकर गोबरके साथ उसी गोचर-भूमिपर पुनः वितरित हो जाते हैं। यह बात वास्तविक परीक्षणोंसे सिद्ध की जा चुकी है। ऐसी स्थितिमें गोवंशकी रक्षा करना न केवल धार्मिक दृष्टिसे अपितु आर्थिक दृष्टिसे भी सर्वथा उचित है। भगवान् कृष्णने भी अपने जीवनमें इस बातको सिद्ध कर बताया कि भारतके लोगोंका जीवन गोवंशसे जुड़ा हुआ है। गोवंश केवल हिन्दुओंका ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानव-समाजका पोषक है।

आज गायके महत्त्वको समझकर ही हम उसकी प्रतिष्ठाको पुनः स्थापित करें यह समयकी माँग है। इसलिये सम्पूर्ण भारतमें गोवध-निषेध लागू कर उसका न केवल संरक्षण और संवर्धन करें, अपितु उससे होनेवाले आर्थिक लाभोंसे देशके विकास तथा जन-जनके स्वास्थ्यका भी संरक्षण करें। अन्तमें ऐसी महिमामयी एवं सर्वदा सर्वथा उपयोगी गोमाताको प्रणाम कर विराम लिया जाता है—

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे॥

'हे निष्पापे गौ! तुम सभी देवताओंकी माता हो, यज्ञकी आधारभूता हो और तुम्हीं सभी तीर्थोंकी तीर्थरूपा हो, अतः तुम्हें बार-बार नमस्कार है।'

(प्रे०—श्रीजगदीश प्रसादजी शर्मा)



गो-गौरव

(कविसम्राट् प० श्रीअयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध')

भारत-अवनी अन्न बहुत-सा है उपजाती।
इसीलिये है कनक-प्रसविनी मानी जाती।
इसी अन्नसे तीस कोटि मानव पलते हैं।
दीन तम-भरे सदन मध्य दीपक बलते हैं।
गोसुत-गात-विभूतिसे अन्नराशि उद्भूत है।
भारतीय गौरव सकल गो-गौरव-संभूत है॥



गोमाताके अनन्त दिव्य गुण

(श्रीपरमानन्दजी मित्तल, राष्ट्रिय महामन्त्री भारतीय गोवंश-रक्षण-सवर्धन-परिषद्)

बाल्यकालमें मैंने महर्षि च्यवन और महाराज नहुषकी कथा तथा उनके बीच हुआ संवाद पढ़ा था, जो इस प्रकार है—

महर्षि च्यवन अभिमान, क्रोध, हर्ष और शोकका त्याग करके महान् व्रतका दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए एक बार बारह वर्षतक जलके अंदर रहे। जल-जन्तुओसे उनका बड़ा प्रेम हो गया था और वे उनके आस-पास बड़े सुखसे रहते थे। एक बार कुछ मल्लाहोंने गङ्गाजी और यमुनाजीके जलमें जाल बिछाया। जब जाल खींचा गया, तब उसमेसे जल-जन्तुओंसे घिरे हुए महर्षि च्यवन भी खिंच आये। जालमें महर्षिको देखकर मल्लाह डर गये और उनके चरणोमें सिर रखकर प्रणाम करने लगे। जालके बाहर खींचनेसे तथा स्थलका स्पर्श होने और त्रास पहुँचनेसे बहुतसे मत्स्य कलपने और मरने लगे। इस प्रकार मत्स्योंका बुरा हाल देखकर महर्षिको बड़ी दया आयी और वे बारंबार लंबी साँस लेने लगे। मल्लाहोंके पूछनेपर महर्षिने कहा—'देखो ये मत्स्य जीवित रहेगे तो मैं भी जीवित रहूँगा। अन्यथा इनके साथ ही मर जाऊँगा, मैं इन्हे त्याग नहीं सकता।' मुनिकी बात सुनकर मल्लाह डर गये और उन्होंने काँपते हुए जाकर सारा समाचार महाराज नहुषको सुनाया।

मुनिकी संकटमय स्थिति जानकर राजा नहुष अपने मन्त्री और पुरोहितको साथ लेकर तुरंत वहाँ गये। पवित्र भावसे हाथ जोड़कर उन्होने मुनिको अपना परिचय दिया और उनकी विधिवत् पूजा करके कहा—'द्विजोत्तम! आज्ञा कीजिये, मैं आपका कौन-सा प्रिय कार्य करूँ?' महर्षि च्यवनने कहा—'राजन्! इन मल्लाहोंने आज बड़ा भारी परिश्रम किया है। अत: आप इनको मेरा और मछलियोंका मूल्य चुका दीजिये।' राजा नहुषने तुरंत ही मल्लाहोंको एक हजार स्वर्णमुद्रा देनेके लिये पुरोहितजीसे कहा। इसपर महर्षि च्यवन बोले कि 'एक हजार स्वर्णमुद्रा उचित मूल्य नहीं है। आप सोचकर इन्हें उचित मूल्य दे।'

इसपर राजाने एक हजार स्वर्णमुद्रासे बढ़ाकर एक लाख तथा एक लाखसे बढ़ाकर एक करोड स्वर्णमुद्राएँ, अपना आधा राज्य और अन्तमें समूचा राज्य देनेकी बात कह दी, परंतु च्यवन ऋषि राजी नहीं हुए। उन्होने कहा "आपका आधा या समूचा राज्य मेरा उचित मूल्य है' ऐसा मैं नहीं समझता। आप ऋषियोके साथ विचार कीजिये और फिर जो मेरे योग्य हो, वही मूल्य दीजिये।"

महर्षिका वचन सुनकर राजा नहुषको बडा खेद हुआ। वे अपने पुरोहित और मन्त्रीसे सलाह करने लगे। इतनेहीमें गायके पेटसे जन्मे हुए एक फलाहारी वनवासी मुनिने राजाके समीप आकर उनसे कहा कि 'महाराज! ये ऋषि जिस उपायसे संतुष्ट होगे वह मुझे मालूम है।'

राजा नहुषने कहा—'ऋषिवर! आप महर्षि च्यवनका उचित मूल्य बताकर मेरे राज्य और कुलकी रक्षा कीजिये। मैं अगाध समुद्रमे डूबा जा रहा हूँ। आप नौका बनकर मुझे बचाये।'

नहुषकी बात सुनकर मुनिने उन लोगोको प्रसन्न करते हुए कहा—'महाराज! ब्राह्मण सब वर्णोमे उत्तम हैं। अत: इनका कोई मूल्य नहीं आँका जा सकता। ठीक इसी प्रकार गौओका भी कोई मूल्य नहीं लगाया जा सकता। अत: इनकी कीमतमे आप एक गौ दे दीजिये।'

मुनिकी बात सुनकर राजाको बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होने उत्तम व्रतका पालन करनेवाले महर्षि च्यवनके पास जाकर कहा—'महर्षे! मैंने एक गौ देकर आपको खरीद लिया है। अब आप उठनेकी कृपा कीजिये। मैंने आपका यही उचित मूल्य समझा है।'

च्यवन ऋषिने कहा—'राजेन्द्र! अब मैं उठता हूँ। आपने मुझे उचित मूल्य देकर खरीद लिया है। मैं इस संसारमे गायोंके समान दूसरा कोई धन नहीं समझता।'

वीरवर! गायोके नाम और गुणोका कीर्तन करना, सुनना, गायोका दान देना और उनका दर्शन करना बहुत प्रशंसनीय समझा जाता है। ऐसा करनेसे पापोंका नाश और

परम कल्याणकी प्राप्ति होती है। गायें लक्ष्मीकी जड़ हैं, उनमें पापका लेशमात्र भी नहीं है। वे मनुष्योंको अन्न और देवताओंको उत्तम हविष्य देती हैं। स्वाहा और वषट्कार नित्य गायोमें ही प्रतिष्ठित हैं। गायें ही यज्ञका संचालन करनेवाली और उसकी मुखरूपा है। गायें विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती हैं और दुहनेपर अमृत ही प्रदान करती हैं। वे अमृतकी आधार हैं। समस्त लोक उनको नमस्कार करता है। इस पृथ्वीपर गायें अपने तेज और शरीरमें अग्निके समान हैं। वे महान् तेजोमयी और समस्त प्राणियोंको सुख देनेवाली हैं। गौओका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतासे साँस लेता है वह स्थान चमक उठता है और वहाँका सारा पाप नष्ट हो जाता है। गाये स्वर्गकी सीढ़ी हैं और स्वर्गमें भी उनका पूजन होता है। वे समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली देवियाँ हैं, उनसे बढ़कर और कोई भी नहीं है। राजन्! यह जो गायोंका माहात्म्य कहा है यह तो केवल उनके गुणोंके अंशका दिग्दर्शनमात्र है। गौओंके सम्पूर्ण गुणोका वर्णन तो कोई कर ही नहीं सकता।'

इस प्रकार एक गायका मूल्य एक करोड़ स्वर्णमुद्रा तथा समूचे राज्यसे भी अधिक है, यह जानकर मुझे तब बहुत आश्चर्य हुआ था। गायके सम्बन्धमे मेरी जिज्ञासा उत्तरोत्तर बढती गयी और ज्यो-ज्यों मैंने गायको निकटसे देखना आरम्भ किया, मैंने गायमे अनेक दिव्य गुणोके दर्शन किये, जिनसे मेरा समाधान हो गया कि गाय वस्तुतः अमूल्य है। उसकी तुलना किसीसे नहीं की जा सकती।

गौ जीवनके चरम लक्ष्यकी प्राप्ति करानेवाली है— हजारो वर्ष साधना एवं गवेषणा करके हमारे आर्ष मनीषियोंने यह अनुभव किया कि सभी प्राणियोके जीवनका चरम लक्ष्य परम पिता परमात्माको पाना है। प्राणी जबसे परम पितासे अलग हुआ है और उनको भूला हुआ है, तभीसे दुःखी है। परम पिताको प्राप्त करानेमे गुरु, गाय, गङ्गा, गीता एवं गायत्री—ये पाँच परम सहायक हैं। प्राचीन कालमें ब्रह्मचारी जब गुरुकुलमे प्रवेश पाने आता था तो प्रवेशसे पहले गुरु उसको कुछ माह गोचारण करनेकी आज्ञा देते थे। गायोंके सांनिध्यमें रहकर ब्रह्मचारीकी चित्तवृत्ति शान्त हो जाती थी और उसे ब्रह्मविद्या ग्रहण करनेकी पात्रता प्राप्त हो जाती थी। जिनके अन्तःकरण किसी संतकी कृपासे निर्मल हुए हैं, वे जब सेवाभावसे गायके सम्पर्कमे आते हैं तो उनके अन्तःकरणमें परमात्माके स्मरणका स्फुरण स्वतः होने लगता है। यह सम्पूर्ण सृष्टि परमात्माकी रचना है। जिसने परमात्माको पा लिया उसने सब कुछ पा लिया।

गौके रोम-रोमसे सात्त्विक विकिरण—गाय स्वभावसे सात्त्विक, सौम्य एवं संतोष करनेवाली होती है। वह सात्त्विक बल, ओज एवं स्फूर्तिसे परिपूर्ण होती है। गाय स्वभावसे धीर एवं गम्भीर है। उसका गुण तथा स्वभाव सात्त्विक है। उसके रोम-रोमसे सात्त्विक विकिरण होता है। उसके प्रभाव-क्षेत्रमें आनेसे मनुष्यकी चित्तवृत्ति शान्त होती है। सात्त्विक मन और बुद्धिसे ही परमात्माकी प्राप्ति की जा सकती है।

गौ यज्ञीय दैवी-संस्कृतिका मूर्तरूप है—लोक-कल्याणके लिये किया गया प्रत्येक कार्य यज्ञरूप ही है। यज्ञाग्नि अर्पित सामग्रीकी सुगंधको सैकड़ों गुना बढ़ाकर सारे वातावरणमें फैला देती है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण-मुक्त होता है तथा वर्षा पुष्टिकारक होती है। इस वर्षासे सिंचित खाद्यान्न एवं वनस्पति भी पौष्टिक एवं आरोग्यकारक होती है। कम ग्रहण करना तथा समाजको अधिक देना, इस आचरणको सिखानेवाली हमारी भारतीय सनातन संस्कृतिको दैवी संस्कृति कहा गया है। गाय घास, भूसा, छिलका, चूनी, चोकर तथा खली आदि ऐसी सामान्य वस्तुएँ ग्रहण करती है जो मनुष्यके ग्रहण करनेके योग्य नहीं है और कम मूल्यवान् होती है, किंतु बदलेमें अमृत-जैसा दूध, सहोदर-जैसे बैल, अत्यन्त उपयोगी और ओषधिरूप गोमय तथा गोमूत्र देती है।

गायका दूध सात्त्विक एवं आरोग्यकारी है—गायके गुण और स्वभावके अनुरूप उसका दूध भी शरीरको स्फूर्ति, तेज एवं सात्त्विक बलसे परिपूर्ण करनेवाला, बुद्धिको कुशाग्र एवं सात्त्विक बनानेवाला तथा हमारे जन-जीवनके आरोग्यका आधार है। परमात्मतत्त्वको प्राप्त करनेकी साधना सात्त्विक मन-बुद्धिसे ही हो सकती है। गायका

दूध, दही, मक्खन, घी तथा छाछ—ये सभी मन और बुद्धिको सात्त्विक बनानेवाले हैं। गायके दूधका कोई विकल्प नहीं है। यह एक दिव्य पदार्थ है।

गौ मनःकामनाओंको पूर्ण करनेवाली है—भगवान्ने गायको लोक-कल्याणके लिये ही बनाया है। वह सभीका हित चाहती है। भगवान् ऐसे प्राणीको परोपकारके लिये आशीष देनेका सामर्थ्य प्रदान करता है। गायमे भी वह सामर्थ्य है। कुछ वर्ष-पूर्व एक दिन एक सज्जन जो वेशभूषासे मुसलमान दीख रहे थे, 'श्रीगणपति-गंगा-गोशाला, बृजघाट'में एक ट्रक भूसा लेकर आये। उन्होंने अपनेको एक नवाब खानदानका मुसलमान बताया। उनसे पूछा गया कि 'वे भूसा किस उद्देश्यसे और किसकी प्रेरणासे गोशालामें लाये।' उनके कथनानुसार 'उनकी खानदानी जायदादका एक मुकदमा लंबे अरसेसे चल रहा था। जायदादके सम्बन्धमें मुस्लिम कानून बहुत पेचीदा हैं और उस मुकदमेका उनको अपनी जिंदगीमे फैसला होनेकी कोई उम्मीद नहीं थी। बहुत ही परेशान थे। उन्होने अपने एक हिन्दू मित्रसे अपनी इस परेशानीके हल होनेका उपाय पूछा।' उनके मित्रने उन्हें सलाह दी कि 'वे गोसेवा करें, उसका आशीष लें तो उनका काम बन सकता है।' उन्होंने पूछा कि 'सेवा किस तरह करे' तो उनके मित्रने बताया कि 'गायोके लिये भूसा या हरा चारा दें।' उन्होने कहा कि 'यदि उनका मुकदमा उनके हकमे हो जाय तो वे गोशाला जाकर गायोंको एक ट्रक भूसा देगे। उनका कहना था कि जिस दिनसे उन्होंने यह इरादा किया, मुकदमा उनके हकमें जाने लगा और उनके हकमे फैसला हो गया। इसलिये अपना इरादा पूरा करनेके वास्ते वे यह भूसा लेकर आये हैं।'

इस प्रकारकी अन्य भी अनेक घटनाएँ घटी हैं। इस घटनासे केवल यह ही पता नहीं चलता कि गोसेवाका इरादा करनेमात्रसे मनुष्यकी मनःकामना पूर्ण होती है, बल्कि यह भी पता चलता है कि गाय आशीष देनेमे अथवा मनःकामना पूर्ण करनेमें हिन्दू, मुस्लिम अथवा ईसाईमे कोई भेद नहीं करती। लौकिक कामनाओंकी पूर्ति तो साधारण बात है। सच्ची गोसेवासे तो ब्रह्मज्ञान तथा भगवत्प्राप्ति भी सहज हो जाती है।

गौ प्रेम और त्यागकी मूर्ति—गाय जिस परिवारमे रहती है, उस परिवारसे अत्यन्त प्रेम करती है। परिवारके प्रत्येक सुख-दुःखका अनुभव करती है। मेरे एक पड़ोसी रेलवेमे एक वडे पदपर कार्यरत थे। काफी वड़ा आवास मिला हुआ था। गाय रखे हुए थे। वडे प्रेम और श्रद्धाभावसे उसकी सेवा करते थे। उनका युवा पुत्र वीमार पड गया। उसके स्वास्थ्यमें कोई सुधार नहीं हो रहा था, अतः उसे अस्पतालमे भर्ती कराना पडा। जवसे वह लडका वीमार पड़ा था, गाय सुस्त रहती थी। जिस दिन उसे अस्पताल ले जाया गया गायने ठीकसे चारा खाना छोड दिया। कई दिन बाद जब वह अस्पतालसे स्वस्थ होकर वापस घर आया तो गायने उसके कंधेपर अपना मुँह रखकर उसे प्यार किया और उसके पश्चात् ही फिर ठीकसे चारा खाना आरम्भ किया।

मनकी बात या तो भगवान् जानते है या गाय जानती है—एक संतने अपने प्रवचनमे शास्त्रोसे उद्धरण देकर बताया कि मनकी बात दो ही जानते हैं, भगवान् और गाय। मुझे मेरे एक परिचित महानुभावकी एक आपवीती घटनाकी याद आ रही है। वे अपने माता-पिताके साथ एक गाँवमें रहते थे। वे तथा उनके भाई नौकरीके लिये वाहर चले गये। माता-पिता वृद्ध हो गये थे। गायका पालन उनके लिये कठिन हो गया था। एक दिन उन्होने अपनी गायको नित्यकी भाँति चारा खिलाकर और पानी पिलाकर हाथ जोड़कर मन-ही-मन कहा—'अब हम वृद्ध हो गये हैं, तुम्हारी सेवा करने योग्य नहीं रहे, अतः अव तुम कहीं चली जाओ।' और गायको खोल दिया। गाय सायंकालतक घूमघाम कर घर तो आ गयी, किंतु बडे सकोचके साथ। अगले दिन वृद्ध दम्पतिने पुनः वही किया। अवकी वार गाय घर वापस नहीं आयी।

गौको संकट अथवा अनिष्टका पूर्वाभास रहता है—सन् १९६६ की घटना है, उन दिनो हमारे घरमें दो गाये रहती थीं। अगस्त १९६६ ई० के आरम्भसे ही दोनोंकी आँखोसे अश्रुधारा वहती थी। वे चारा बहुत ही कम ग्रहण करने लगी थीं। पानी भी कम ही पीती थीं। मुझे लग

शायद वे बीमार हैं। पशु-चिकित्सकको दिखाया। देखकर वे बोले कि कोई बीमारी नहीं है। हमलोगोंको समझमें ही नहीं आ रहा था कि क्या बात है, किंतु गौ माता तो आगन्तुक घटनाकी विभीषिकासे शोकग्रस्त थी। मेरा भाई देश-सेवाके कार्यमें दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें उसका देहावसान हो गया। गौ माताको इस घटनाका पहले ही आभास हो गया था, इसीलिये वे दुःखी रहती थीं और उनकी आँखोंसे आँसू झरते रहते थे। हम सभी इस घटनाके सम्बन्धमें पहले कुछ भी नहीं जान सके, किंतु गौ माताको भूत-भविष्यकी सभी बातोंकी जानकारी रहती है।

गाय रक्षा करनेवालेकी रक्षा करती है—प्रेम, दया, करुणा, सहनशीलता-जैसे दिव्य गुणोंकी अधिष्ठात्री गौ माता ठीक माँकी तरह है। वह स्वभावसे अति कोमल है। उसकी रक्षा करनेका दायित्व शासन एवं समाजका है। जो व्यक्ति उसकी रक्षा करता है, उसके उपकारको वह कभी भूलती नहीं। जब कभी रक्षा करनेवालेके प्राण संकटमें होते हैं, वह अपने सूक्ष्म और दिव्य शरीरसे उसके पास उपस्थित होकर उसकी रक्षा करती है। राजस्थानमें एक व्यक्ति कुआँ खोदनेका कार्य करता था। कुआँ खोदकर जलके स्रोतसे जल निकालकर देनेका काम वह ठेकेपर करता था। एक बार उसे कुआँ खोदनेका एक ठेका मिला। खुदाईका सामान लेकर वह कुआँ खोदने जा रहा था। मार्गमें उसने देखा कि एक गाय भूखी, प्यासी और बेहाल पड़ी हुई है। उसको दया आयी, वह वहाँ रुक गया और खुदाईका सामान गायके पास रखकर उसने पासके कुएँसे पानी लाकर उस गायको पिलाया। उसके बाद कुछ दूर जाकर वह गायके लिये चारा लाया और उसको खिलाया। गायकी दशामें सुधार हुआ और वह खड़ी हो गयी तथा वहाँसे चली गयी।

कुआँ खोदनेवाला नियत स्थानपर पहुँचकर कुआँ खोदने लगा। २ दिनके बाद जब वह कुआँ खोद रहा था और कुएँके लगभग मध्यमें उतरा हुआ था कि बहुत जोरका अंधड़ आया और कुएँके आस-पास रखी सारी मिट्टी कुएँमें गिर गयी। कुआँ ऊपरसे पट गया, किंतु उसके द्वारा की गयी गोमाताकी सेवाका ऐसा चमत्कार हुआ कि कुआँ मिट्टीसे पट जानेपर भी वह व्यक्ति जीवित बचा रहा। बादमें लोगोंद्वारा उसे निकाल लिया गया।

इसी प्रकारकी अन्य अनेक सत्य घटनाएँ सुनने और पढ़नेमे आती हैं, जिनसे गायके दिव्य गुणोंका पता चलता है। आधुनिक विज्ञानके लिये गायकी इस दिव्य शक्ति एवं गुणका रहस्य बना हुआ है।

गाय वैतरणी पार करानेवाली है—मेरी माताजी गत वर्ष बहुत बीमार हुईं। वे अत्यन्त कष्टमें थीं। रात्रिमें वे कह रही थीं, अब मेरे जानेका समय आ गया है। मेरे मुँहमें गङ्गाजल डाल दो, उस समय मुझे ध्यान आया कि उनसे गोदानका संकल्प करा लिया जाय; क्योंकि उनकी इच्छा थी कि वे गोदान करें। मैंने उनसे गोदानका संकल्प कराया और उनके हाथोंसे गौका दान करवाया। मैंने देखा उसके पश्चात् धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य सुधरने लगा और वे स्वस्थ हो गयीं। मृत्युके अनन्तर गोदानके प्रतिफलमें गाय किस प्रकार उस व्यक्तिको वैतरणी पार करा देती है यह लोकमें विश्रुत ही है। शास्त्रोंमें इसका विशेष माहात्म्य निरूपित है।

गायका गोबर मल नहीं मलशोधक है—जगत्के प्राणियोंमें गाय ही एक ऐसा प्राणी है, जिसका उच्छिष्ट मल नहीं, अपितु मलशोधक है। जिन खेतोंमें गायके गोबरकी खादका प्रयोग होता है, उनमें उगी फसलोंपर विनाशकारी कीटोंका आक्रमण नहीं होता। अतः वहाँ कीटनाशकोंके छिड़कावकी आवश्यकता नहीं। यज्ञकी वेदीको पवित्र करनेके लिये तथा आवास-गृहोंको सभी प्रकारके प्रदूषणोंसे मुक्त करनेके लिये हजारों वर्षोंसे हमारे देशमें गायके गोबरसे उन्हें लीपा जाता है। गायके गोबरका लेप केवल प्रदूषणसे ही नहीं, अपितु आणविक विकिरणसे भी रक्षा करता है। इसकी खाद श्रेष्ठतम उर्वरक है। प्रदूषणरहित ईंधनके रूपमें भी इसका प्रयोग किया जाता है। गोबर-गैस संयन्त्रके माध्यमसे प्रदूषणरहित खाना पकानेकी गैस प्राप्त होती है तथा उस गैससे जेनेरेटर सैट चलाकर विद्युत् भी उत्पन्न होती है। ईंधनके रूपमें जलनेके पश्चात् जो राख बचती है वह भी एक श्रेष्ठ मलशोधक है। मलकी दुर्गन्ध दूर करनेके लिये शौचालयों तथा कूड़ेके ढेरोंपर उसका

छिड़काव किया जाता है। बर्तनोंकी सफाईके लिये वह प्रदूषणरहित क्लीनिंग पाउडर है। किसान भाई राखका प्रयोग खेतोंमें खाद और कीटनाशकके रूपमे करते हैं।

गोमूत्र एक अद्भुत औषध है—आयुर्वेद अनेक रोगोंमें गोमूत्रको औषधके रूपमें प्रयोग करनेका विधान करता है। जिगर, पीलिया, रक्तचाप, मधुमेहमें यह विशेष उपयोगी है। कुछ लोग गोमूत्र-मिश्रित गोलियाँ बनाकर अनेक रोगोमें उसका सेवन करते हैं।

गौ माताके अनन्त दिव्य गुणोंमेसे कुछ गुणोकी चर्चा ऊपर की गयी है। मैं यहाँ यह बताना उपयुक्त समझता हूँ कि उपर्युक्त गुणोंका दर्शन मैंने शुद्ध भारतीय प्रजातिको गायोंमें किया है। विदेशी प्रजाति—जैसे आस्ट्रियन, जर्सी, फ्रिजियन अथवा इन नस्लोके साथ वर्णसंकर हुई भारतीय प्रजातिकी गायोंमें ये गुण उस मात्रामे नहीं पाये जाते।



आर्थिक समृद्धिका प्राण गोधन

(गोलोकवासी श्रीविश्वम्भरप्रसादजी शर्मा)

'गावो विश्वस्य मातरः'—गायको विश्वकी माता कहकर सम्मानित किया गया है। गोवंश न केवल धार्मिक दृष्टिसे भारतमें पूजनीय है, अपितु आर्थिक दृष्टिसे भी वह हमारी आर्थिक समृद्धिका मुख्य स्रोत है। देशकी लगभग ८० प्रतिशत जनता कृषिजीवी है और कृषि पूर्णतया गोवंशपर अवलम्बित है। पाश्चात्य विचारधाराके कारण भ्रमित लोग यह समझते हैं कि भारतमें जो करीब १९ करोड़ गोवंश है वह निकम्मा और देशके ऊपर भाररूप है। इस तथ्यसे इनकार नहीं किया जा सकता कि इन पशुओंकी दूध देनेकी और भार ढोनेकी क्षमता विश्वमें सबसे कम है। शताब्दियोंके उपेक्षापूर्ण व्यवहारके कारण भारतीय गोवंश इस स्थितिको पहुँचा है। लेकिन वैज्ञानिक अनुसंधानोंसे पता चलता है कि भारतीय गोवंशमें उत्पादनकी क्षमता है और समुचित सेवा-शुश्रूषासे इसे बढ़ाया जा सकता है। वर्तमान हीन अवस्थामे भी गोवंशका हमारी आर्थिक समृद्धिमें उल्लेखनीय योगदान है। भारत सरकारने कुछ वर्षों-पूर्व अधिक क्षमताशील गोवंशके पशुओंकी रक्षाके लिये जो विशेष समिति गठित की थी, उसकी रिपोर्टमें इस प्रकारका उल्लेख है—

'प्राचीन कालसे गोवंश हमारे देशकी अर्थव्यवस्थामें विशेष योगदान देता आ रहा है। उनसे जमीन जोत कर तैयार करनेमें, कुओंसे पानी खींचनेमे, ग्रामीण क्षेत्रकी परिवहन-सम्बन्धी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेमें और अन्य प्रयोजनोंके लिये चालन-शक्ति (मोटिव पावर) मिलती रही है, उन्होंने मनुष्योको पोषण—आहारके लिये दूध एवं दूधसे तैयार अन्य सामग्री तथा जमीनोंके लिये खाद प्रदान की है। अतः हमारे देशकी अर्थव्यवस्थामे गोवंशका सबसे अधिक महत्त्व रहा है।'

भारतके सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री और महात्मा गांधीजी-के अनन्य भक्त श्रीसतीशचन्द्रदास गुप्तने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतमें गाय' मे अपने पुष्ट तर्कोंद्वारा बड़े-बड़े विद्वानोके इस मतको निर्मूल कर दिया कि 'भारतका गोवंश पृथ्वीपर एक बोझ है तथा भूमि-उपजमे मनुष्योंके भोजनमें हिस्सा बँटाता है जो मनुष्योंके लिये हानिकारक है।'

उक्त पुस्तकमे पूर्व जर्मनीमे बाल्टिक समुद्रके निकट एक रेतीली बंजरभूमिको अनुपयोगी गोवंशके सहयोगसे ऐसा चमत्कार करके दिखाया गया कि वह भूमि भी पूर्ण उपजाऊ बन गयी तथा उसपर रहनेवाले बीमार अपग पशु भी स्वस्थ और उत्पादक बन गये। उस जमीनमें पहले हरा चारा पैदा किया गया, जिसे खाकर पशु स्वस्थ हुए और कृषिका उत्पादन बढ़ा तथा पशुओकी नसलका भी सुधार हुआ।

स्पष्ट है कि गोवंशकी रक्षा करने और उनकी हत्यापर प्रतिबन्ध लगानेका प्रश्न धार्मिक और सांस्कृतिक होनेकी अपेक्षा आर्थिक महत्त्व अधिक रखता है।

गोहत्या-वंदीके लिये जव कभी माँग की जाती है तव यह कहा जाता है कि देशमें अनुपयोगी गायोंकी बहुत वड़ी संख्या है और देश उनका भार उठानेमे असमर्थ है। गाँधीजीके सामने भी यह प्रश्न था। परंतु उन्होंने स्पष्ट-रूपमें इन पशुओकी रक्षाका दायित्व सरकारका माना। जो गाय-वैल जीवनभर हमारी सेवा करते हैं और देशको अपने श्रम तथा तपश्चर्यासे समृद्ध बनाते हैं, उन्हें अनुपयोगी हो जानेपर कसाइयोके हाथ बेच देना कितना बड़ा अन्याय है।

गोमूत्र और गोबरके वैज्ञानिक गुण भी उल्लेखनीय हैं। इनसे अनेक रोगोका शमन होता है। Beast and men in India नामक पुस्तकमें लिखा है—बहुत-से देशोंके देहाती औषधालय गोबरका पुलटिसके रूपमें महत्त्व जानते हैं, किंतु भारतमें गौकी पवित्रताके कारण गोबरका प्रयोग शुद्धिके लिये भी बताया जाता है। इसके प्रयोगमें प्रतिष्ठा भी है एवं इसमें फोड़े आदिके ऊपर बाँधनेके पुलटिसके रूपमें आकर्षण है।

गौसे चिकित्सा

आर्य-चिकित्सा-विभागमें गोबरका महत्त्वपूर्ण योग है। गायका गोबर चर्मके ऐसे हिस्सेपर, जिसमें सूजन आ गयी हो या बदरंग हो गया हो लगाया जाता है। यह खिलाया भी जाता है। गोमूत्रके प्रयोगके लाभपर देश और विदेशमें काफी शोध हुआ है। मानवके अनेक रोगोंका गोमूत्रद्वारा शमन होता है। गोमूत्रमें जीवाणुओंका नाश करनेकी अद्भुत शक्ति है। अमेरिकाके डॉक्टरोंकी वैज्ञानिक शोधके अनुसार हृदयकी गति बंद होनेवाले रोगोमें गोमूत्रका प्रयोग अत्यन्त लाभकारी है। लेकिन हमारे ऋषि-मुनि तो सव प्रकारके रोगोंका शमन करनेके लिये पञ्चगव्य (जिसमें दूध, दही, गोमूत्र, गोबर और घृत होता है) का उपयोग वताते हैं।

हमारे देशकी गरीबीको दूर करने और लाखों वेरोजगारोंको काम दिलानेकी दृष्टिसे भी गोपालनका भारी महत्त्व है। देशमें यदि गोवंशकी हत्या पूर्णतया बंद हो जाय तथा गोसंवर्धनका कार्यक्रम विधिवत् चलाया जाय तो निःसंदेह लाखों लोगोंको काम मिल सकेगा और गोपालनकी रुचि बढ़ेगी। दुग्ध-व्यवसायकी यह विशेषता है कि इससे छोटे किसानोंको जल्दी आय होने लगती है। गायका दूध हाथों-हाथ बिक जाता है। गोदुग्ध सर्वश्रेष्ठ पौष्टिक आहार है। गोदुग्धमे सबसे अधिक विटामिन होते हैं। गोदुग्धके उपयोगसे मनुष्यका शरीर और मस्तिष्क दोनों बलवान् बनते हैं। संसारके प्रायः सभी वैज्ञानिकोंने गोदुग्धको गुणकारी माना है और उसके उपयोगपर बल दिया है।

महर्षि स्वामी दयानन्दजीने गोवंशके आर्थिक महत्त्वको अपनी 'गोकरुणा-निधि' पुस्तकमें प्रदर्शित करते हुए लिखा है कि 'एक गोवंशके दुग्ध तथा अन्नसे असंख्य मनुष्योंका पालन हो सकता है और इसके मांससे अनुमान है कि केवल ८० मांसाहारी मनुष्य एक बारमें तृप्त हो सकते हैं।' उन्होंने दुःखके साथ लिखा—'देखो, तुच्छ लाभके लिये लाखों प्राणियोंको मार असंख्य मनुष्योंकी हानि करना महापाप क्यों नहीं?' गोहत्याको राष्ट्रिय अभिशाप मानते हुए उन्होंने लिखा कि 'गौ आदि पशुओंके नाशसे राजा और प्रजा दोनोंका विनाश हो जाता है।'

स्वतन्त्र भारतमें गोहत्या क्यों?

गोवंशके राष्ट्रिय और आर्थिक महत्त्वको देखते हुए मुसलमान बादशाहोंने अपने शासनकालमें सैकड़ों वर्षतक कानूनसे गोहत्या बंद रखी। खेद है कि स्वतन्त्र भारतमें अभीतक गोहत्या जारी है। यद्यपि संविधानमें गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगाना राज्यका कर्तव्य निर्देशित किया गया है, परंतु इस निर्देशका देशमें सर्वत्र पालन नहीं हुआ।

कानूनद्वारा गोहत्या बंद हो जानेसे भी गोरक्षाका उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा। जो गाय और बैल बूढ़े तथा अनुपयोगी हैं, उनके भरण-पोषणका उत्तरदायित्व जनताको भी उठाना होगा। उनके लिये जगह-जगह गोसदन स्थापित करने होंगे। गोशालाओंको इस दिशामें विशेष रूपसे सक्रिय बनाना होगा। गोरक्षणके साथ गोसंवर्धनपर भी योजनाबद्ध रूपसे अमल करना होगा ताकि देशमें दुग्धका उत्पादन बढ़े और खेतीके लिये उत्तम बैल तथा दुधार गौएँ उपलब्ध हो सकें। जनता और सरकार दोनोंके संयुक्त प्रयासके बिना राष्ट्रकी इस महान् समस्याको नहीं सुलझाया जा सकता है।

एक बड़े दुर्भाग्यकी बात यह है कि अनेक राज्योंमें

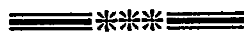
गोहत्या-बंदी कानून होनेपर भी उनका पालन नहीं हो रहा है। जिन राज्योंमें गोवध-बंदी कानून है, वहाँके पशु दूसरे राज्योंमें ले जाये जाकर कत्ल कर दिये जाते है। अनुमान है कि देशमें प्रतिदिन ४० हजार गोवंश कट जाता है।

केरल और बंगाल सरकारोंकी ज़िद

भारतके प्रायः सभी प्रमुख राज्योंमें गोहत्या-बंदी कानून हैं। केरल और प० बंगाल अपनी जिदपर अड़े हैं। उन्होंने न तो भारत सरकारका आग्रह माना न विनोबाजीके आमरण अनशनकी परवाह की। प० बंगाल तो गोहत्याका सबसे बड़ा केन्द्र है। हरियानाकी दुधार गौएँ, बछड़े और बछड़ियाँ लाखोंकी संख्यामें टेंगरा कसाईखानेमे कटते रहे हैं।

गोहत्या-बंदीके प्रश्नको शासक-दलने राजनीतिका रंग दे दिया है। अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थके लिये शासनारूढ दल भारतके व्यापक हितकी अवहेलना कर रहा है। देशके मतदाता भोले हैं, राजनीतिज्ञोके कुचक्रमें फँस जाते हैं। जबतक जनता गोहत्याके समर्थकोंको मत देना बंद नहीं करेगी, तबतक गोहत्या बंद न होगी। अतः चुनावके समय गोभक्त जनताको संगठित होकर गोहत्याके समर्थकोंके खिलाफ मतदान करना चाहिये।

सरकारकी दुर्नीतिके कारण आज गायका हमारे जीवनमें कोई लगाव नहीं रह गया है। सरकारने गोचर-भूमियाँ तुड़वा दीं, पशु-खाद्यका निर्यात जारी कर दिया है, गोशालाओंके ऊपर तरह-तरहके टैक्स लगा दिये हैं। सरकारी डेयरियोमें गायका दूध नहीं लिया जाता, भैंसका लिया जाता है। इस कारण देशमें गोपालन अनार्थिक वनता जा रहा है। सरकारने अव विदेशी साँडोसे देशी गायोका प्रजनन कराना शुरू कर दिया है। पहले ग्रामोंमे वलिष्ठ साँड (विजार) रहते थे। उनसे गाये फलती थीं। आज गायोको कृत्रिम रेतन-केन्द्रोमें ले जाना पड़ता है। जहाँ प्रायः जर्सी आदि विदेशी साँडोके वीर्यकी पिचकारी देकर गायोको गाभिन किया जाता है। विदेशी नस्लकी गाये भले ही थोड़ा दूध अधिक दे, परंतु न तो वह दूध भारतकी गायोके दूधके समान उपयोगी एव पौष्टिक होता है और न उसके बछड़े खेतीके काम आते हैं। लेकिन सरकार देशमें दूधका उत्पादन वढ़ानेके लिये क्रास ब्रीडिग (संकर प्रजनन) पर सारी शक्ति लगा रही है। इस कारण देशमे खेतीके लिये बैलकी कमी होती जा रही है। उनकी कीमत बढ़ गयी है और इन गायोका सारा दूध शहरोंमे सरकारी डेयरियोंद्वारा ले जाया जाता है। अतः क्रास ब्रीडिंग हानिकारक है और इसके विरुद्ध जनमत जाग्रत् होना चाहिये। हमे अपनी देशी गायोकी ही नस्लको सुधारना चाहिये। उनसे हमें उत्तम दूध भी मिलता है और उनके बछडे भी वढ़िया वैल होते हैं।



गोग्रास-दानका अनन्त फल

योऽग्रं भक्तं किंचिदप्राश्य दद्याद् गोभ्यो नित्यं गोव्रती सत्यवादी।
शान्तोऽलुब्धो गोसहस्रस्य पुण्यं संवत्सरेणाप्नुयात् सत्यशीलः॥
यदेकभक्तमश्नीयाद् दद्यादेकं गवां च यत्। दशवर्षाण्यनन्तानि गोव्रती गोऽनुकम्पकः॥

(महाभा०, अनुशा० ७३। ३०-३१)

जो गोसेवाका व्रत लेकर प्रतिदिन भोजनसे पहले गौओको गोग्रास अर्पण करता है तथा शान्त एवं निर्लोभ होकर सदा सत्यका पालन करता रहता है, वह सत्यशील पुरुष प्रतिवर्ष एक सहस्र गोदान करनेके पुण्यका भागी होता है। जो गोसेवाका व्रत लेनेवाला पुरुष गौओपर दया करता और प्रतिदिन एक समय भोजन करके एक समयका अपना भोजन गौओंको दे देता है, इस प्रकार दस वर्षोंतक गोसेवामे तत्पर रहनेवाले पुरुषको अनन्त सुख प्राप्त होते हैं।



गोबर एक जीवनोपयोगी वस्तु

(श्रीपुरुषोत्तमदासजी झुनझुनवाला, अध्यक्ष—भारतीय गोवश-रक्षण-संवर्धन-परिषद्)

परमात्माने अपने ही अंश हम जीवधारियोके लिये कई अमूल्य एवं जीवनोपयोगी वस्तुएँ दी हैं, जैसे—जल, वायु, मिट्टी, अग्नि तथा प्रकाश आदि। गायके माध्यमसे प्राप्त गोवर भी उन अमूल्य वस्तुओंमेंसे एक है।

गोवर मल नहीं है, मलशोधक है—सभी प्राणधारियोके उच्छिष्टोमेंसे गोवर ही एक ऐसा विशिष्ट पदार्थ है जो मल नहीं है, अपितु मलशोधक है। ऐश्वर्यकी देवी लक्ष्मीको पवित्रता पसंद है और गोबर शुचिताकारक है। गोबरके विना भूमि पवित्र नहीं होती। भूमिको गोबरके लेपसे पवित्र करके ही देवी लक्ष्मीका आह्वान किया जाता है। गोबरसे पवित्र की गयी भूमिपर देवी लक्ष्मीका प्राकट्य होता है।

गोबर पञ्चगव्यका अंश है—शरीर, मन, बुद्धि और अन्तःकरणकी शुद्धिके लिये आयुर्वेदमें पञ्चगव्यका बड़ा महत्त्व वतलाया गया है। पञ्चगव्य गायके दूध, दही, घृत, गोमूत्र तथा गोवरसे तैयार किया जाता है। शास्त्रोक्त विधिसे बनाये गये पञ्चगव्यके सेवन करनेसे शरीर, मन, बुद्धि और अन्तःकरणके विकार समाप्त हो जाते हैं।

कूड़े-कचरेको शोधकर खाद बनानेकी गोबरमें क्षमता— गोबरमे ऐसी क्षमता है कि यदि कूड़े-कचरेके ढेरपर गोबरका घोल बनाकर डाला जाय तो वह कूड़ा-कचरा तीन-चार माहमें उपयोगी खाद बन जाता है। गोवर्धन केन्द्र पुसद (यवतमाल) मे इसका सफल प्रयोग करनेसे ज्ञात हुआ कि एक किलोग्राम गोबरसे तीस किलोग्राम उपयोगी खाद तैयार हुई। इसका सफल प्रयोग अन्य स्थानोंपर भी किया गया है।

प्रदूषण एवं आणविक विकिरणसे बचावके लिये गोबर रक्षा-कवच है—हमारे देशमें हजारों वर्षोसे यज्ञकी वेदी तथा आवास-गृहको गोबर एवं पीली मिट्टीसे लीपनेकी परम्परा रही है। गोवरके लीपनेसे सभी हानिकारक कीटाणु-विषाणु नष्ट हो जाते हैं। वायु-प्रदूषण एवं आणविक विकिरणसे रक्षा होती है। जापानमें नागासाकी तथा हिरोशिमामें अणुबमके विस्फोटके बाद जो आणविक विकिरण हुआ उसके कारण हजारों लोग अपंग हो गये तथा उनकी संतति भी अपंग होने लगी। आणविक विकिरणसे बचनेके लिये जापानमें गोबरके महत्त्वको समझा गया। यहाँतक कि वहाँपर अनेक लोग अपने ओढ़नेकी चादरको, गोबरके घोलको छानकर उसके पानीमें भिगोनेके पश्चात् सुखाकर ओढ़ते है।

सूखे तेलके कुओंमें पुनः तेल लाने तथा समुद्रमें जहाजसे रिसे तेलोंको जज्ब करनेकी क्षमता गोबरमें है—अमेरिकाके वैज्ञानिकोने दुधार गायके गोबर, खमीर और समुद्रके पानीको मिलाकर एक ऐसा उत्प्रेरक पदार्थ बनाया है जो केवल बंजरभूमिको ही हरा-भरा नहीं कर देता, बल्कि सूखे तेलके कुओंमें उसे डालनेसे पुनः तेल आना आरम्भ हो जाता है। समुद्रमें जहाजोंसे रिसे तेलको वह अपनेमे जज्ब कर लेता है, जिससे समुद्रका जल प्रदूषणरहित हो जाता है।

गोबरकी राखसे मलकी दुर्गन्ध समाप्त—गोबरकी राखका कोई विकल्प नहीं—गोबरके कंडों (उपलों) को ईधनके रूपमें जलानेके पश्चात् जो राख शेष रह जाती है वह भी अपनेमें एक उत्कृष्ट मलशोधक है। गाँवोंमें जहाँ फ्लशके शौचालय नहीं हैं, करोड़ों लोग अपने परम्परागत शौचालयोमें मलकी दुर्गन्ध समाप्त करनेके लिये मलपर इस राखका छिड़काव करते हैं। छिड़काव होते ही मलकी दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है और कालान्तरमें यह मल भी खादके रूपमें परिवर्तित हो जाता है।

गोबरकी राखसे बर्तनोंकी सफाई—करोड़ों रुपयेकी बचत—भारतके गाँवों, कस्बों तथा शहरोंमें रहनेवाले करोड़ों लोग भी अपने बर्तनोंकी सफाई गोबरकी राखसे करते हैं। यदि यह सफाई किसी क्लीनिंग-पाउडरसे की जाय तो लाखों टन पाउडर लगेगा, जिसका मूल्य करोड़ों रुपये होगा। क्लीनिंग-पाउडरसे की गयी सफाईमें सफाई

करनेवालेके हाथोंमें चर्मरोग होनेका अंदेशा रहता है। इसके अलावा थोड़ी मात्रामें जो पाउडर बर्तनोंमे लगा रह जाता है, वह मनुष्यके शरीरमें जाकर नुकसान पहुँचाता है, साथ ही इससे पवित्रता नहीं आती। गोबरकी राख बिना मूल्यके लोगोंको मिल जाती है और किसी प्रकारसे हानिकारक भी नहीं है। यह अत्यन्त पवित्र मानी जाती है॥

गोबरकी राख खाद तथा कीटनाशकके रूपमें— गोबरकी राखका उपयोग हमारे किसान भाई अपने खेतोमे खाद और कीटनाशकके रूपमें भी अनेक वर्षोंसे करते आये हैं। खेतमें राख पड़नेसे दीमक आदि कीडे नहीं पनपते तथा फसल अच्छी होती है।

गोबर एक सस्ता एवं श्रेष्ठ उर्वरक— सन् १९०४ मे भारतकी उन्नत कृषि-पद्धतिका अध्ययन करने ब्रिटेनसे भारत आये कृषि-वैज्ञानिक सर एलबर्ट होवर्डने अपने शोध-ग्रन्थ 'एन एग्रीकल्चरल टेस्टामेन्ट' में लिखा है कि पूसा (बिहार) के आस-पासके गाँवोंमें उपजनेवाली फसले सभी प्रकारके कीटोंसे गजबकी मुक्त थीं। किसानोकी अपनी परम्परागत कृषि-पद्धतिमें कीटनाशक-जैसी चीजोके लिये कोई स्थान था ही नहीं। भारतीय कृषि-पद्धतिका ज्ञान और उसमें मेरी दक्षता ज्यों-ज्यो बढ़ती गयी, मेरी फसलोमे भी त्यों-त्यो रोग कम होते चले गये। मुझे दो प्रोफेसर मिले थे। एक थे वे अनपढ़ किसान और दूसरे थे स्वयं पौधोके महामारी रोग। इन नये प्रोफेसरोसे पाँच सालतक ट्यूशन पढ़नेके बाद मैंने जान लिया कि उन सभी पौधोंपर जिनकी जड़ोंके लिये वहाँकी मिट्टी अनुकूल है, कीडे आदिका आक्रमण नगण्य होता है। नुकसान पहुँचानेवाले कीट, बैक्टीरिया तथा महामारी रोग उन्हीं पौधोंपर जाकर लगते हैं जिनकी मिट्टी रुग्ण है। स्वस्थ भूमिमें उगनेवाले पौधोपर ये फटकते भी नहीं। जाहिर है कि पौधोंकी रुग्णता भूमिकी रुग्णताका ही परिणाम है। भूमिकी रुग्णता क्या चीज है? यह उसकी उर्वराशक्तिका ह्रास है जो उसे उसके वाजिब हिस्सेसे वञ्चित रखनेके कारण हुआ है। भूमिका वह वाजिब हिस्सा क्या है? गोबर, वनस्पति तथा प्राणियोंके अवशेष जो गोबरकी खादमें होते हैं, वही उसका वाजिब हिस्सा है। यह उसे मिलना चाहिये, तभी भूमि स्वस्थ रह सकती है। जिससे पौधे स्वस्थ होंगे तथा प्राणी भी स्वस्थ रहेंगे।

अगस्त-सितम्बर सन् १९९३ मे भारत सरकारकी ओरसे देशमें जैविक खादसे खेतीका जायजा लेनेके लिये ६ व्यक्तियोकी एक समितिका गठन किया गया। समितिके लोग कानपुर, नागपुर, वर्धा, भोपाल, इन्दौर, बंबई, पाँडिचेरी, मद्रास आदि स्थानोमें गये और उन्होने जाँच करनेके बाद पाया कि इन सभी स्थानोपर जो किसान रासायनिक उर्वरकोके बजाय जैविक खादका प्रयोग कर रहे हैं, खेतीमे उनकी लागत कम, फसल नीरोग और अच्छी है। कीडोंका प्रकोप नहींके बराबर है। कहीं इधर-उधरमे थोड़े-बहुत कीड़े आ भी गये तो नीम या गोमूत्रका घोल बनाकर फसलोपर छिड़काव करके उससे छुटकारा पा लिया गया।

गोबरकी खादका प्रयोग कीजिये—अन्न, जल तथा वायुको विषैला होनेसे बचाइये— गोबर तथा गोमूत्रसे भूमिकी उर्वरा-शक्ति बढ़ती है। फसल सशक्त होती है, उसे कीटनाशकोकी आवश्यकता नहीं पडती। विदेशोके प्रभाव, निहित स्वार्थोके दबाव तथा गोबर और गोमूत्रके अभावके कारण हमारे देशमे कृषिमे रासायनिक खाद तथा कीटनाशकोका प्रयोग किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्यान्न, फल और सब्जियोकी पौष्टिकतामे कमी आयी है तथा वह विषैली हो गयी है। उनकी उत्पादन-लागतमे भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। विश्व-स्वास्थ्य-सगठनकी रिपोर्टके अनुसार भारतीय माताओके स्तनोके दूधमे अन्तर्राष्ट्रिय मानकसे २१ गुना विष पाया गया है। कीटनाशकोका विष भूमिमे व्याप्त होकर अपना प्रभाव आनेवाले कई वर्षोतक रखता है। यह विष पानीके साथ मिलकर पृथ्वीके तलके नीचे जलके स्रोतोतक पहुँच जाता है। फलस्वरूप हमको पेयजल भी जहरीला मिल रहा है। जल-ससाधन-मन्त्रालयने १९८६ ई० के अपने परीक्षणमे बताया कि लगभग सभी प्रान्तोमे पानीमे नाइट्रेट नाइट्राइटकी मात्रा इतनी बढ़ गयी है कि पानी पशुओंके पीने योग्य भी नहीं रहा है। जलप्रदूषणकी यह चेतावनी इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाने भी दी है। रासायनिक खाद तथा कीटनाशकोंके प्रयोगसे

भूमिकी उर्वराशक्तिका लगातार ह्रास हो रहा है। परिणाममें प्रतिवर्ष इन दोनों वस्तुओंकी प्रति एकड़ मात्रा बढ़ानी पड़ती है, जबकि उत्पादन उस अनुपातमें नहीं बढ़ता है। तुलनात्मक ऑकड़े इस प्रकार हैं—

वर्ष	एक हैक्टेयरमे रासायनिक खादकी प्रयोग-मात्रा	उत्पादन-वृद्धिका प्रतिशत
१९६०-६१	१ ९ किलोग्राम	६१.३७
१९८७-८८	५१.२० किलोग्राम	८.३०

भारतीय कृषि-अनुसंधान-परिषद्‌द्वारा किये गये परीक्षणोंसे ज्ञात हुआ है कि रासायनिक खादके प्रयोग करनेसे भूमिकी उर्वराशक्ति २०-२५ वर्षोंमें समाप्तप्राय हो जाती है। रासायनिक खाद तथा कीटनाशकोंके प्रयोगसे मिट्टीके सूक्ष्म जीवाणु दिनोंदिन कम होते जाते हैं। मिट्टीकी नमी—आर्द्रता-क्षमता घटती जाती है। मिट्टीका स्वभाव वदल जाता है। एक मद्यसेवीकी भॉति उसे दिनोदिन अधिक पानी और अधिक खुराक चाहिये। पंजाब कृषि-विश्वविद्यालयके एक अध्ययन-दलने पाया है कि रासायनिक खादके इस्तेमालके परिणामस्वरूप पंजाबमें पानीका अकाल पड़नेकी सम्भावना गहरी होती जा रही है। भारत-सरकारके कृषि-अनुसंधान-परिषद्‌के सेवा-निवृत्त महानिदेशकने चेतावनी दी है कि यदि रासायनिक खादपर आधारित कृषि-पद्धति ही चलती रही तो कुछ वर्षोंमें ही पंजावका क्षेत्र मरुस्थल हो जायगा।

वर्ष १९५१-५२ से १९९१-९२ तक हमारा देश विदेशोसे १८,१०९ करोड़ रुपयेकी रासायनिक खादका आयात कर चुका है। वर्ष १९९४-९५ मे यह आयात लगभग ३,४०० करोड रुपयेका होगा। १९९२-९३ मे रासायनिक खादपर ६,५७७ करोड़ रुपयेकी सब्सीडी दी गयी थी।

रासायनिक खाद तथा कीटनाशकोके उत्पादन एवं प्रयोग-प्रक्रिया—इन दोनोंमें वायु एवं जलका भारी प्रदूषण होता है। यदि हमे अन्न, जल एवं वायुके प्रदूषणसे वचना है तो रासायनिक खाद एवं कीटनाशकोंका प्रयोग धीरे-धीरे कम करके गोबरकी जैविक खादका प्रयोग बढ़ाना होगा।

पैंतीस ग्राम गोबरसे एक एकड़ भूमि उपजाऊ बनी—कुछ समय पूर्व न्यूजीलैंडके कृषि तथा पशु-वैज्ञानिक पीटर प्रोक्टर भारत आये और उन्होने एक आश्चर्यजनक प्रयोग किया। उन्होनें दुधार गायके गोबरको मृत गायके सींगमें भरकर सर्दीसे पूर्व जमीनमें गाड़ दिया। पॉच-छः माह बाद निकालकर उसे हवा-बंद डिब्बेमे रख दिया। उसमेंसे ३५ ग्राम गोबरको निकालकर १० लीटर पानीमें मथनीसे खूब मिलाया और उसका छिड़काव एक एकड़ भूमिपर कराया, जिससे वह भूमि उपजाऊ और हरी-भरी हो गयी। आप भी यह प्रयोग करके देखिये।

गोबरसे बिजली, ईंधन तथा प्रकाश

गोबर-गैस संयन्त्रसे वायो-गैस, बिजली और खाद—अरबों रुपयेका उत्पादन—जहाँपर गोबरकी जिस मात्रामे उपलब्धता हो, उसीके अनुसार छोटे अथवा बड़े 'गोबर-गैस संयन्त्र' लगाये जा सकते हैं। गोबर-गैस संयन्त्रसे ईंधनके रूपमें प्रयोग करने योग्य गोबर-गैस प्राप्त होती है। विशेष रूपसे गोबर-गैसके प्रयोगके लिये बनाये गये चूल्हेके माध्यमसे ईधनके रूपमें गोबर-गैसका प्रयोग होता है। प्रकाशके लिये गोबर-गैसके हंडे पेट्रोलियम गैसके हंडोंकी तरह बिजलीके बल्ब-जैसा ही प्रकाश देते हैं। बडे गोबर-गैस-संयन्त्रके साथ विशेष रूपसे गोबर-गैसको प्रयोगमें लानेवाले बिजली जनरेटर सेट भी लगाये जा सकते है जो गोबर-गैससे ही चलते हैं। उसमें मात्र २०% डीजलका उपयोग होता है। यह साधारण जनरेटर सेट जिसमें केवल डीजलका ही प्रयोग होता है बहुत ही कम प्रदूषणकारी है। जबकि गोबरसे चलनेवाले जनरेटर सेटमे प्रदूषण नहींके बराबर है। जनरेटर सेटसे उत्पन्न हुई बिजलीसे बिजलीद्वारा चलाये जानेवाले मोटर तथा पंखे आदि चलाये जा सकते हैं। गोबर-गैस-संयन्त्रसे बनी खाद गुणवत्ताकी दृष्टिसे भी श्रेष्ठतर होती है।

गोबरके कंडे-ईंधनके रूपमें अरबों रुपयेका बचत, प्रदूषणसे मुक्ति—ग्रामों और छोटे कस्बोंमें निवास करनेवाले भाई और वहने दूध उवालने तथा खाना बनानेके लिये आज भी कंडोका उपयोग करते हैं। जो गोबर सूख जाता है वह

जलानेके काम आता है। कंडोकी आग मंदी एवं प्रदूषणरहित होती है। उससे निकलनेवाला धुआँ हानिकारक नहीं होता, जब कि कोयलेका धुआँ प्रदूषणकारी होता है। जर्मनीके कृषि-पशु-वैज्ञानिक भारतमें आये और तीन माहतक गाँवोंमें रहे। इसके पश्चात् उन्होंने एक पुस्तक लिखी—'भारतमें गाय क्यों पूजनीय है?' इस पुस्तकमें गायके महत्त्वको बताते हुए उन्होने गोबरके महत्त्वका भी एक पक्ष उजागर किया है। उन्होने लिखा है कि 'गोबरके बदले कोयला अथवा लकड़ी जलाना पड़े तो हमें क्रमशः साढ़े तीन करोड़ टन कोयला अथवा छः करोड़ अस्सी लाख टन लकड़ीकी आवश्यकता होगी, जो कई अरब रुपये मूल्यका होगा। पर्यावरणकी चिन्ता करनेवाले लोगोंको यह भी विचार करना चाहिये कि साढ़े तीन करोड़ टन कोयला फूँकनेसे पर्यावरणपर उसका कैसा प्रभाव पड़ेगा और ६ करोड़ ८० लाख टन लकड़ीके लिये पेड़ोको काटे जानेसे हमारे पर्यावरणकी रक्षा किस प्रकार हो सकती है?

गोबरसे त्वचा-रक्षक साबुन, शुद्ध धूपबत्ती तथा शीत-ताप-अवरोधक प्लास्टरका उत्पादन—श्रीनारायणराव देवराव पंढरी पाण्डे उपनाम नॅडेप काकाने गोबरसे न केवल कम्पोस्ट खाद बनानेकी नवीन पद्धतिका आविष्कार किया है, बल्कि गोबरसे एक ऐसा अंगराग भी तैयार किया जो साबुनकी टिकियाके रूपमें है और त्वचाके रोगोंमे ओषधिका काम करता है। उन्होंने गोबरसे धूपबत्ती तैयार की है। इसे जलानेसे वातावरण शुद्ध हो जाता है। गोबरसे ही एक प्लास्टर भी तैयार किया है, जिसे छत तथा दीवारोपर लगानेसे शीत और तापका प्रभाव कम हो जाता है।

श्रीवेणीशंकर एन० वसुने अपनी पुस्तक 'डंग इज गोल्ड माईन' में लिखा है कि गोबरसे हमे सस्ता और श्रेष्ठ जैविक खाद तथा जैविक खादसे पौष्टिक एवं स्वादिष्ट खाद्यान्न, सब्जियाँ और फल कम लागतपर मिलते हैं। हमारी भूमिकी उर्वराशक्ति बराबर बनी रहती है। सस्ता ईंधन मिलता है। मुफ्तमे उपयोगी राख मिलती है। यदि हम गोबरकी उपयोगिताको समझ ले तो हमारे देशसे बीमारी, गरीबी तथा बेरोजगारी स्वयं समाप्त हो जायगी। आयुर्वेदमें तो अनेक मूल्यवान् भस्मो तथा औषधोका निर्माण केवल गोबरके कंडोकी मंदी एवं प्रदूषण-रहित आगसे ही किया जाता है। प्रसूतिका स्त्रियोके शरीरकी सेकाई भी मंद-मंद प्रदूषण-रहित गोबरके कडोंकी आगसे ही की जाती हैं। किंतु दुर्भाग्य है कि आज गायके दूध तथा घीकी तरह गायका गोबर भी दुर्लभ होता जा रहा है। हमारा देश रासायनिक खाद और कीटनाशकोके फेरमें जबसे पड़ा है, गरीब और कर्जदार होता जा रहा है। भाग्यकी कैसी विडम्बना है और बुद्धिका कैसा दिवालियापन है कि मांस-निर्यातके लिये दूध, ऊर्जा तथा गोबरके स्रोत गोवंशकी हत्या करवायी जा रही है और निर्यातसे अर्जित विदेशी मुद्रासे रासायनिक खाद एवं कीटनाशकोका आयात किया जा रहा है। हम गोबरमे वास करनेवाली लक्ष्मीको पहचाने और प्रकट करे। इससे सभी कामनाओको पूर्ण करनेवाली गोमाताकी प्रतिष्ठा फिरसे स्थापित होगी तथा गोवंशकी रक्षा हो सकेगी। उसकी दुआओसे तथा गोवंश-आधारित कृषि-पद्धतिसे हम और हमारा देश फिरसे समृद्ध बनेगा। हम आरोग्यवान् होंगे और बलवान् होंगे।

———※※※———

गावो मे मातरः सर्वाः पितरश्चैव गोवृषाः। ग्रासमुष्टिं मया दत्तं प्रतिगृह्णीत मातरः॥
इत्युक्त्वानेन मन्त्रेण गायत्र्या वा समाहितः। अभिमन्त्र्य ग्रासमुष्टिं तस्य पुण्यफलं शृणु॥
यत् कृतं दुष्कृतं तेन ज्ञानतोऽज्ञानतोऽपि वा। तस्य नश्यति तत् सर्वं दुःस्वप्नं च विनश्यति॥

[गोमाताके सामने घास रखकर इस प्रकार कहना चाहिये—] 'संसारकी समस्त गौएँ मेरी माताएँ और सम्पूर्ण वृषभ मेरे पिता हैं। गोमाताओ! मैंने तुम्हारी सेवामें यह घासकी मुट्ठी अर्पण की है, इसे स्वीकार करो।' यह मन्त्र पढ़कर अथवा गायत्रीका उच्चारण करके एकाग्रचित्तसे घासको अभिमन्त्रित करके गौको खिला दे। ऐसा करनेसे जिस पुण्यफलकी प्राप्ति होती है, उसे सुनो! उस पुरुषने जान-बूझकर या अनजानमे जो-जो पाप किये होते हैं, वह सब नष्ट हो जाते हैं तथा उसको कभी बुरे स्वप्न नहीं दिखायी देते। (महाभा०, आश्वमेधिकपर्व, वैष्णवधर्म०)

———※※※———



राष्ट्र-विकासमें गोवंशका महत्त्वपूर्ण योगदान

(श्रीशरदकुमारजी साधक)

भारतकी गाय केवल दुधार पशु नहीं है अपितु यह लौकिक एवं पारलौकिक सारी कामनाएँ पूरी करनेवाली कामधेनु है। इससे लाखों परिवारोका पालन-पोषण होता है। 'डेयरी इंडिया १९८७' की रिपोर्टके अनुसार देशके ४९ हजार 'ग्रामीण दुग्ध-उत्पादन-सहकारी-संगठनों'के लगभग पचास लाखसे ज्यादा ग्वाला-परिवार प्रतिदिन ८० लाख टन दूध बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं। सन् १९८७ में दुग्ध-उत्पादन चार करोड़ टनके आस-पास रहा, जो बढ़कर लगभग पाँच करोड़ ४९ लाख टन हो गया है। दुग्ध-उत्पादनमें ग्वाला-परिवारके अलावा सरकारी और निजी डेयरियाँ तथा गोभक्तोकी बड़ी जमात सक्रिय है। भारतीय अर्थव्यवस्थामे पशुधनका १५ हजार करोड़ रुपयेका योगदान माना जाता है। उसमें ७० प्रतिशत दूध तथा उसके उत्पादोंका हिस्सा है। पशुधनकी अपेक्षित साज-सँभाल हो तो गोरस-उत्पादोमे भारी वृद्धिकी सम्भावना है। समुचित साज-सँभाल तथा संतुलित दाना-पानी देनेकी व्यवस्था कर वाराणसी-स्थित 'रामेश्वर गोशाला' तथा इस प्रकारके अन्य संस्थानोंने सिद्ध कर दिखाया है कि १ लीटर ८०० ग्राम दूध देनेवाली गायें ४ लीटरतक दूध देने लगीं। उनकी बछिया ७ लीटर तथा उसकी भी बछिया ११ लीटर दूध देनेवाली हुई। जहाँ औसत भारतीयके लिये १०० ग्राम दूध दुर्लभ है, वहाँ ५०० ग्राम तक दूध सहज सुलभ हो सकता है तथा दुग्ध-उत्पादोमे लगकर लाखों परिवार अपनी रोजी-रोटी चला सकते हैं।

माना जाता है कि देशमे ४ करोड़ ६ लाख ७० हजार हल तथा १ करोड़ ३० लाख बैलगाड़ियाँ है और उनसे जुड़े तीन करोड़ लोगोंका जीवनयापन होता है। यदि हलोंकी जगह ट्रैक्टर ले लें तो उसके लिये २ लाख ८ हजार करोड़ रुपयोकी पूँजी अपेक्षित होगी, जो कर्जमें आकण्ठ डूबे हमारे देशके लिये जुटा पाना मुश्किल है। इस समय ट्रैक्टरोंसे जितनी जुताई होती है, उतनी तो भैंसे कर देते हैं। बैल उनसे ८ गुनी अधिक जुताई कर रहे हैं। खेतीमें लगभग ५ करोड़ रुपयेकी पशु-शक्ति लगती है। इसी तरह ट्रक और मालगाड़ियाँ जितना माल ढोती हैं, उससे अधिक ही बैलगाड़ियोंसे ढुलाई होती है। वे ऊबड़-खाबड़ रास्तोंपर जाती हैं और घरके दरवाजेतक माल पहुँचाती हैं। ढुलाईमें पशु-शक्तिका उपयोग होनेसे २५ अरब रुपयेकी डीजलकी बचत होती है।

दुनियाकी २.५ प्रतिशत जमीन भारतके पास है, किंतु पशु १६ प्रतिशत हैं। उनकी शक्तिका पूरा-पूरा उपयोग हो तो बेरोजगारी दूर करनेमें भारी मदद मिल सकती है। दुनियाकी १२ प्रतिशत कृषिभूमि भारतमें है और उसमें भी १८ प्रतिशत भूमि कृषि-योग्य है। जो किसान केवल खेतिहर हैं और उर्वरकोंका इस्तेमाल कर मालामाल होनेकी कोशिशमें हैं, उनपर *'चार दिनोंकी चाँदनी फिर वही अँधेरी रात'* की कहावत चरितार्थ होती है। जिन किसानोंके पास गोवंश है और उनके गोबर-गोमूत्रका उपयोग खादमें हो रहा है, उनकी आमदनी तथाकथित उन्नत कृषि करनेवाले किसानोंसे डेढ़ गुनी होती है। प्रसिद्ध भू-रसायन-विशेषज्ञ डॉ० एच०एच० कोड़ने कहा भी है कि आधुनिक कृषिसे रोग तथा कीटाणु बढ़ते हैं, क्योंकि उर्वरकोंका इस्तेमाल बढ़ा है, वहीं परम्परागत कृषिसे जमीनकी उर्वराशक्ति कायम रहती है। उपज स्वादिष्ट होती है और पशु तथा मानवकी क्षमताका पूरा उपयोग होता है। किंतु आज वैसा नहीं होनेके कारण भारतकी करोड़ों-करोड़की आबादीमें अधिकांश लोग गरीब हैं और उनमें भी आधे लोग दरिद्र-रेखासे नीचे हैं। बड़े उद्योगोंके भरोसे गरीब परिवारोंका जीवन-स्तर ऊँचा उठेगा, यह कहना कठिन ही नहीं असम्भव-सा ही लगता है। किंतु गोपालनकी मिक्स फार्मिंगसे तत्काल उन्हें लाभ पहुँचानेकी गारंटी दी जा सकती है। योजना-आयोगको इस बारेमें गम्भीरतासे सोचना चाहिये।

'केन्द्रीय यान्त्रिकी अनुसंधान, भोपाल'ने बैलोंकी उत्पादकता बढ़ाने तथा किसानोंका श्रम कम करने-हेतु एक पशु-चालित ट्रैक्टर बनाया हैं। वह हलके मुकाबले ३-४

गुना अधिक कार्य करता है। इसी तरह पंक्चररहित बैलगाड़ियाँ निर्मित हुई हैं, जिससे बैलोंपर भार कम पड़ता है और परिवहनकी क्षमता बढ़ी है। 'नेशनल इंस्टीट्यूट फार ट्रेनिंग इन इंडस्ट्रीयल इंजीनियरिंग (नाईटी) बंबई'ने ऐसा उपकरण बनाया है, जिससे रहँटके साथ बैलके घूमनेपर विद्युत्-धारा उत्पादित होती है। उस उपकरणके सहारे दो बैल एक हार्सपावर अर्थात् ७८६ वाट बिजली पैदा कर सकते हैं। भारतके नेताओंने स्वयं नैरोबीके ऊर्जा-सम्मेलनमें स्वीकार किया था कि 'भारतमें हमारे सभी बिजलीघरों, जिनकी अधिष्ठापित क्षमता २२ हजार मेगावॉट है, से अधिक शक्ति पशु प्रदान करते हैं। यदि उनको हटा दिया जाय तो बिजली-उत्पादनपर और २,५४० अरब डालरकी पूँजी-निवेश करनेके अतिरिक्त कृषि-अर्थ-व्यवस्थाको खाद और सस्ते ईंधनकी हानि होगी।' गोबर-गैस, नॅडेप खाद, चारा काटनेकी बैल-चालित मशीनसे मिलनेवाले लाभोंको कौन नही जानता? विभिन्न रूपोंमें पशुओंसे ४० हजार मेगावॉटके बराबर निष्पन्न ऊर्जासे देशको २७ हजार करोड़ रुपयेका लाभ है। आधे टन वजनकी गाय दिन-रातमें १२०० वॉट गर्मी देती है। जर्मनीके विद्युत्-अभियन्ता-संघने २० गायोंसे एक बड़ा मकान गर्म रखनेका प्रयोग किया और उससे वर्षमें ३ हजार लीटरसे अधिक तेलकी बचत की।

विदेशोंमें जहाँ इस तरह ऊर्जा-स्रोतके रूपमें गायोंको बढ़ावा मिल रहा है, वहाँ गोभक्त कहलानेवाले भारतदेशमे गोहत्या बढ़ रही है, यह कितने दुःखकी बात है। 'भारतीय चमड़ा-अनुसंधान-संस्थान' के अनुसार एक करोड़ आठ लाख गोवंशका वध १९८७मे हुआ। १९९३ तक उसमें और वृद्धि ही हुई होगी, क्योंकि ८वीं पञ्चवर्षीय योजनाकी पुस्तकके अनुसार देशमें ३,६०० कतलखाने हैं। नये आधुनिकतम कतलखानोंको भी लाइसेस दिये जा रहे हैं। सरकार इस योजनावधिमे ५०० करोड़ रुपयेका मांस निर्यात करना चाहती है, यह कितनी वड़ी त्रासदी है। इसे देखकर रघुवंशकी वह उक्ति याद आती है, जिसमे गायकी रक्षाके लिये अपने-आपको समर्पित करनेवाले राजा दिलीपसे सिंहने कहा—

'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्॥'

अर्थात् 'हे राजन्! तुम मुझे बड़े ही मूर्ख मालूम पड़ते हो, क्योंकि बहुत थोड़ी-सी नगण्य चीजके लिये तुम बहुत बड़ी चीजको छोड़ दे रहे हो। छोटी-सी चीजके लिये बहुत लुटा देनेवाले तुम विचारमूढ नहीं तो और क्या हो।' वास्तवमें यह विचारमूढता ही है, जो वृहद् बंबई नगरपालिकाद्वारा संचालित देवनार-कतलखानेमे प्रतिवर्ष १८० करोड़ रुपये मूल्यका पशुधन काटा जा रहा है। यदि वह कटना बद हो जाय तो ३ लाख ७० हजार टन अनाज, १० लाख टन चारा, ३० लाख टन खाद, २० करोड़ ५८ लाख ५७ हजार टन दूध और ९ लाख ८० हजार लोगोंको रोजगार मिल सकता है। अतः ग्राम एव राष्ट्रविकासके लिये अधिष्ठान-रूप गोवंशका सार्थक उपयोग करें, ताकि कुपोषण रुके, पौष्टिक अनाज प्राप्त हो सके, स्वस्थ पर्यावरण उपलब्ध हो सके, स्थानीय उद्योग बढे और चतुर्विध पुरुपार्थ-रूप सम्पत्ति प्राप्त हो सके।



रात हो या दिन, अच्छा समय हो या बुरा, कितना ही बड़ा भय क्यों न उपस्थित हुआ हो, यदि मनुष्य निम्नाङ्कित श्लोकोंका कीर्तन करता है तो वह सब प्रकारके भयसे मुक्त हो जाता है—

गावो मामुपतिष्ठन्तु हेमशृङ्गयः पयोमुचः। सुरभ्यः सौरभेय्यश्च सरितः सागर यथा॥
गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा। गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्॥

'जैसे नदियाँ समुद्रके पास जाती हैं, उसी तरह सोनेसे मढ़े हुए सींगोवाली दुग्धवती, सुरभि और सौरभेयी गौएँ मेरे निकट आवें। मैं सदा गौओंका दर्शन करूँ और गौएँ मुझपर कृपादृष्टि करें। गौएँ मेरी हैं और मैं गौओंका हूँ, जहाँ गौएँ रहें, वहाँ मैं भी रहूँ।' (महा०, अनु० ७८। २३-२४)



गोवंशकी उपेक्षा क्यों?

(श्रीलक्ष्मीनारायणजी मोदी, प्रबन्धन्यासी भारतीय गोवश-सवर्धन-प्रतिष्ठान)

गोवंश-संवर्धन क्या साम्प्रदायिक है?

जव कोई गोवंशकी वात करता है तो भारत सरकारकी एक ही मनःस्थिति बनती है कि 'यह तो साम्प्रदायिक प्रश्न है।' आइये, विचार करें कि 'यह विज्ञानका विषय है या आर्थिक एवं सामाजिक उन्नतिका केन्द्र-बिन्दु है या संकीर्ण साम्प्रदायिकताका ?'

इस संदर्भमें श्रीअब्दुल गफ्फारकी कविताके कुछ अंश उद्धृत किये जा रहे हैं—

गायने मानव-जीवनको नव-रूप प्रदान किया है,
इसीलिये ऋषियोने इसको 'माँ' का नाम दिया है॥
आर्य सस्कृतिका गौरव हम नहीं सिमटने देगे,
शीश भले कट जाये लेकिन गाय नहीं कटने देगे॥
मेहनत-कश किसानके मनमें खुशियाँ यह भर देती,
श्रमके साथी बैलोको भी यही जन्म है देती॥
किसी जातिका नहीं, धर्मका नहीं यह हर घरका है,
गौ-हत्याका प्रश्न समूची मानवता भरका है॥
गौ-हत्या करनेवाला सभ्यता उचाट रहा है,
गाय काटनेवाला अपनी माँको काट रहा है॥
माँके हत्यारोंको खुलकर दड दिलाना होगा,
इसकी रक्षाका घर-घरमे अलख जगाना होगा॥
वसुधाके वैभवका दर्शन नहीं चटकने देगे,
शीश भले कट जाये लेकिन गाय नहीं कटने देगे॥
जिस आँगनमे गाय नहीं अपशकुन माना जाता,
गोदान तो भारत-भूमिपर महादान कहलाता॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख सभी अव आगे वढकर आओ,
भाल भारतीसे कलंकका ये टीका हटवाओ॥

गाँवमे जो खेती करते हैं या गाड़ी चलाते हैं, वे सभी धर्मोके व्यक्ति हैं और वे अपने पशुधनको अच्छी तरहसे पालते हैं। मुझे एक वार भोपालके पास गॉवोंमे जानेका अवसर मिला और वहाँ कई मुसलमान किसानोसे मुलाकात हुई, उनके विचार गोसवर्धनसे जुड़े थे और एक भी व्यक्ति नहीं चाहता था कि उनका पशुधन वूचड़खानोमें पहुँचे।

गोवंशका योगदान

गोवंशका योगदान मुख्यतः चार प्रकारका है—(१) पशुशक्ति, (२) गोमूत्र-गोबर, (३) दूध और (४) मरणोपरान्त चमड़ा तथा अन्य अवयवोंका उपयोग।

भारत-जैसे कृषि-प्रधान देशके लिये गोवंश आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्थाका केन्द्र-बिन्दु रहा है और इसीलिये भारतको 'सोनेकी चिड़िया' की संज्ञा दी गयी थी। जबसे गोवंशका ह्रास प्रारम्भ हुआ तबसे आर्थिक दशा बिगड़ने लगी और भारत विदेशी तथा अपने घरेलू ऋण-चक्रमें फँस गया है। अब भी हमारी बहुत-सी समस्याओंका समाधान गोवंशके उचित उपयोगसे सम्भव है।

पशु-शक्ति या यान्त्रिकी उपकरण

खेतीके कार्य—जुताई, निराई, बुवाई, कटाई, पानी खींचनेके लिये, वाहन एवं ग्रामोद्योगके लिये बैल न केवल व्यावहारिक है, बल्कि सामयिक भी है और रहेगा भी। प्रश्न यह उठता है कि किस प्रकार किसानोंको जिन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, उससे बचाया जा सके और बैलोंका उपयोग भी बढ़े?

जब किसानोंको अपने खेत जिसकी लंबाई-चौड़ाई १०० मीटर हो तो उसे नंगे पाँव कड़ी धूपमें करीब ६५ कि० मी० एक जुताईके लिये चलना पड़ता है और जब वह तीन-चार बार जुताई कर लेता है तब कहीं खेत बोनेके लिये तैयार होता है। इस मेहनतसे बचनेके लिये 'केन्द्रीय कृषि-यान्त्रिकी अनुसंधान-संस्थान भोपाल'ने एक तिपहिया संयन्त्र बनाया है, जिसकी उपयोगिता यह है कि किसान ट्रैक्टरकी भाँति उसपर बैठकर अपने बैलोंद्वारा खेतीके सभी कार्य एव खेतकी जुताई, निराई और बुवाईतकके कार्य कर सकेगा। इस सयन्त्रको मैने स्वयं भोपाल जाकर देखा है और जब इस संयन्त्रका खेतमें व्यवहारके लिये बैलोंकी जोड़ी लगायी गयी तभी हरियाणाके दो किसान वहाँ सौभाग्यवश आ गये। दोनोंने बारी-बारीसे मेरे सामने ही खेतकी जुताई कर वड़े स्पष्ट रूपसे कहा कि यह सयन्त्र बहुत उपयोगी है।

बड़े दुःखकी बात है कि एक ओर भारत सरकार ट्रैक्टरोके प्रचारके लिये हजारों रुपयेका अनुदान देती है, पर इस पशुचालित संयन्त्रके प्रचार-प्रसारके लिये उसने कोई योजना नहीं बनायी है।

'इंस्टीट्यूट ऑफ इक्नोमिक ग्रोथ दिल्ली'ने एक विशेष अध्ययनसे पाया है कि देशमे करीब ८ करोड़ बैल खेतीके कार्योमें लगे हैं, उनके बदले हमें २ करोड़से अधिक ट्रैक्टरोंकी आवश्यकता होगी। २ करोड़ ट्रैक्टरोंकी लागतका अनुमान ४० खरब रुपये है। ८ वीं पञ्चवर्षीय योजना कुल ८० खरब रुपयोकी है फिर इतनी बड़ी धनराशि कहाँसे उपलब्ध होगी?

२ करोड़ ट्रैक्टरोंके लिये पेट्रोलियम पदार्थ आयात भी करना होगा, उसका मूल्य २० अरब अमेरिकन डालरके लगभग होगा, जबकि आज भारत केवल छः अरब डालरका पेट्रोलियम पदार्थ आयात करता है। विदेशी ऋण भी करीब ९१ अरब डालरका पहले ही चढ़ा हुआ है। फिर यदि हम चाहें तब भी देशके पास इतनी विदेशी मुद्रा नहीं होगी और न ही प्रत्येक वर्ष पेट्रोलियम पदार्थ आयात करनेके लिये ऋण मिल सकेगा।

भारतमें पेट्रोलियम पदार्थका भूमिगत एवं सागरके नीचेका भण्डार केवल २५-२६ वर्षोंके लिये पर्याप्त है। जैसा कि आजकी खपतके हिसाबसे बताया जाता है। अतः आनेवाले युगमें भी पशु-शक्तिका व्यवहार हितकर रहेगा।

जहाँतक बैलगाड़ियोका प्रश्न है, कुछ वर्षोंतक सरकारी आँकड़ेसे जानकारी मिलती थी कि देशमे डेढ़ करोड़ बैलगाड़ियाँ हैं, लेकिन ५ मार्च, १९९४ को हुए एक सम्मेलनमें भारत सरकारके एक उच्च अधिकारीने जानकारी दी कि बैलगाड़ियोंकी संख्या बढ़कर ढाई करोड़ हो गयी है। इससे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान यन्त्रीकरणके युगमें भी बैलगाड़ियोकी उपयोगिता तेजीसे बढ़ रही है।

सरकारी आँकड़ोके अनुसार बैलोका उपयोग वर्षमे ५० से १०० दिनका ही हो पाता है। इस उपयोगको बढ़ानेके लिये भोपाल-स्थित अनुसंधानशालाने एक ऐसा उपकरण बनाया है, जिसके द्वारा बैलोको एक ही स्थानपर घुमाकर ८०० से १००० चक्करकी गति मिल जाती है। इस गति और शक्तिके माध्यमसे नाना प्रकारके ग्रामीण उद्योग बिना बिजली, बिना डीजल खर्च किये सम्भव कर दिखाया है। मुख्यतः कार्य—चारा काटना, अन्न निकालना, आटा-चक्की, दाल-चक्की, खराद, चारेके गट्ठर बाँधना आदि है।

बैलचालित तेलघानीका प्रचार तो बहुत पहलेसे ही था और इसका सबसे बड़ा लाभ होता था गाँवमे ही तेल निकलना। खलीका व्यवहार पशुओंके आहारकी पौष्टिकता बढ़ानेमे सहायक भी होता था।

गोबर एवं गोमूत्रके उपयोग अभीतक खाद या उपले बनाकर जलाने और कभी-कभी गोबरका लेप करनेतक ही सीमित रहा। यद्यपि ऋषियोंने बहुत स्पष्ट रूपसे संकेत दिया था कि 'ऐश्वर्यकी देवी महालक्ष्मीजीका वास गोबरमे है,' लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे वैज्ञानिकोने इसे ढकोसला ही समझा।

अमेरिकाके जेम्स मार्टिनने दुधार गायका गोबर, खमीर और समुद्रके पानीको मिलाकर एक ऐसा उत्प्रेरक बनाया है, जिसके व्यवहारसे बंजरभूमि हरी-भरी, सूखे तेलके कुओमे दुबारा तेल तथा समुद्रकी सतहपर बिखरे तेलको सोखा जा सकेगा।

यह निश्चित बात है कि यदि भारतमे भी गोबरके उपयोगके लिये अनुसधान होगा तो बहुत-सी आश्चर्यजनक जानकारियाँ प्राप्त होगी।

केनियासे एक पुस्तिका आयी है, जिसमे जानकारी मिलती है कि 'गोबरसे तरल खाद बनाकर उसका व्यवहार करनेसे पौधोको बहुत लाभ मिलता है। इस विधिमे गोबरको किसी मोटे कपड़ेमे बाँधकर पानीके ड्रममे लटका देते हैं। १५-२० दिनोमे गोबरके तत्त्व पानीमे आ जाते हैं और इस पानीका व्यवहार कई गुना अधिक लाभदायक पाया गया है। इसी प्रकार हरी पत्तियोंको भी पानीमे डुबोकर २०-२५ दिन रखनेपर एक काला-सा द्रव तैयार होता है, जिसका व्यवहार भी अत्यन्त लाभदायक है।'

सेन्द्रिय खाद अथवा रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक

जहाँतक सेन्द्रिय खाद बनानेका विषय है इस कार्यमें श्रीनारायण देवराव पांढरी पांडेका २५ वर्षका श्रम बहुत महत्त्वपूर्ण है। उन्होने नॅडेप-विधिकी खोजकर वैज्ञानिको एव किसानोंको चकित कर दिया है कि किस प्रकार केवल एक किलो गोबरसे ३० किलो अच्छी किस्मकी खाद बनती है। यदि इस विधिका पूरे देशमे प्रयोग किया जाय तो इसे

रासायनिक उर्वरकोंकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

रासायनिक उर्वरकोंके व्यवहारसे किसानोंकी भूमि एक शराबीकी तरह हो जाती है। उसे हर वर्ष अधिक मात्रामें उर्वरक चाहिये और उर्वरकके व्यवहारसे फसलमें कीट भी अधिक लगते हैं। इन कीटोंको नष्ट करनेके लिये कीटनाशक दवाओंका व्यवहार भी बढ़ता जा रहा है। उर्वरकका कुछ हिस्सा पानीमे मिलकर भूमिगत जलको प्रदूषित करता है और कुछ हिस्सा हवामे उड़कर ओजोनकी परतको खराब करता हैं। भारत सरकारके डॉ० बी०के० हांडाने परीक्षण कर पाया हैं कि देशमे करीब-करीब सभी प्रान्तोंमे भूमिगत जल इतना प्रदूषित हो गया है कि मनुष्यों एवं पशुओंके लिये भी उपयुक्त नहीं रहा। कीटनाशकोंका दुष्प्रभाव यह भी हो रहा है कि साढ़े तीन सौसे अधिक कीट ऐसे उत्पन्न हो गये हैं जिनपर इन दवाओका कोई असर नहीं होता। कीटनाशक मानवो एवं पशुओके शरीरमें जमते जाते हैं और वे मल-मूत्रके द्वारा बहुत कम मात्रामें बाहर निकलते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि मनुष्योंमे नपुंसकता बढ़ रही है और भावी संतानके लिये बड़ी संख्यामे विकलाङ्ग होनेका खतरा भी मँडराने लगा है।

दीपावलीके बाद करीब-करीब सभी घरोमे गोबरधनकी पूजा की जाती है। दीपावलीका पर्व महालक्ष्मीजीकी आराधनाके लिये पूरे देशमें बड़ी धूमधामके साथ मनाया जाता है और तुरंत बाद गोबरधनकी पूजा की जाती है। जरा-सा पदच्छेद कर देखे तो यह 'गोबर' एवं 'धन' दो शब्दोंका एकीकरण है।

इस पूजाके द्वारा भी प्रतिवर्ष एक संकेत दिया जाता है कि गोबरमे धन है, ऐश्वर्यकी देवी महालक्ष्मीजीका वास है गोबरमें, इसे ढूँढ़ो और समृद्धि पाओ, लेकिन अधिकतर लोग पूजा तो कर लेते हैं परंतु कभी यह नहीं सोचते कि इस पूजाका असली संकेत क्या है और इसके लिये कुछ करना है। इसी प्रकार दशहरेके अवसरपर भी गोबरका एक आकार बनाकर पूजा की जाती है। एक तरफ रुपया और दूसरी तरफ चावल आदि रखे जाते है। बच्चोंसे कहा जाता है कि रुपया ढूँढो। जिस बच्चेको रुपया मिलता है वह बड़ा प्रसन्न होता है। यह पूजा इस बातकी प्रतीक हैं कि गोबरमें अपरम्पार धन हैं इसे ढूँढो, इसका उचित व्यवहार करो।

अफ्रीकामें गोबरका प्रयोग मरुस्थलके रोकनेमें भी किया गया है। थोड़ी-थोड़ी दूरपर छोटे-छोटे गड्ढे खोदकर उनमें गोबर भर देते है ताकि वहाँ सूक्ष्म कीटाणु पनप सके और भूमिकी उर्वरा-शक्ति अच्छी हो तथा मरुस्थलका बढ़ना रुक सके।

कलकत्तेके एक सज्जनने गोमूत्रको कड़ाहीमें उबालकर जो बचा द्रव्य है उसकी गोली बनायी है और उन्हे इसका लाभ मधुमेहसे पीडित व्यक्तियोंको मिला है।

रासायनिक उर्वरक

रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओंका अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। ज्यों-ज्यों उर्वरककी मात्रा बढ़ाते हैं, त्यों-त्यों फसलो एवं फलोंमें कीड़े अधिक लगते हैं और इस प्रकार इन जहरीली दवाओंका अंश हमारे शरीरमें जमता रहता है।

उर्वरकोंकी खपत १९८०-८१ में केवल ५५ लाख टन थी जो १९९१-९२ में बढ़कर लगभग १ करोड़ २५ लाख टन हुई। इसी दौरान गेहूँका उत्पादन ५ करोड़ ३० लाख टनसे बढ़कर ७ करोड़ ४० लाख टन हुआ। अर्थात् उर्वरकोंकी खपत बढ़ी ढाई गुना, पर गेहूँका उत्पादन केवल ५० प्रतिशत ही बढ़ा। इसी प्रकार कीटनाशकोंके व्यवहारमें भी भारी वृद्धि हुई है। किंतु कीटनाशकोंकी खपत बढ़ानेपर भी खाद्यान्नको कीटोंद्वारा जो नुकसान होता था, उसमें कमी नहीं हुई।

उर्वरक एवं कीटनाशक कारखानोंसे भीषण प्रदूषण होता है। इस संदर्भमें पर्यावरण-मन्त्रालयकी नीतिका पैरा ८.३ काफी महत्त्वपूर्ण है, जिसे उद्धृत किया जा रहा है—

जबकि कस्बों और उद्योगोंसहित विशिष्ट स्रोतोंसे होनेवाले प्रदूषणकी ओर ध्यान दिया गया है, लेकिन कीटनाशकों, नाशीकीटों, उर्वरक आदि-जैसे कृषि-निवेशोंसे होनेवाले गैर स्थानीय प्रदूषणकी ओर ध्यान नहीं दिया गया। यह स्थिति दिनों-दिन बिगड़ती जा रही है और इससे न केवल हमारे जल-निकाय प्रदूषित हो रहे हैं, बल्कि उपमृदा, जल-संस्थान भी प्रदूषित हो रहे हैं और इससे मानव-जातिका स्वास्थ्य भी प्रभावित होगा। कीटनाशकोके प्रयोगसे सम्बन्धित एक दीर्घावधि-नीति सम्बन्धित मन्त्रालयके सहयोगसे तैयार की जायगी, जिसमें पर्यावरण-रूपसे स्वीकार्य कीटनाशकों विशेपकर जैव कीटनाशकों और गैर स्थायी जैव अवक्रमणीय कीटनाशकोके प्रयोगसे तथा हानिकारक विषाक्त और स्थायी कीटनाशकोंको धीरे-धीरे समाप्त करना शामिल है और इस

नीतिके प्रभाव कार्यान्वयनके लिये सम्बन्धित मन्त्रालयके सहयोगसे आधारभूत समझकर उपलब्ध कराया जायगा। उर्वरकोके प्रयोगके बारेमे भी इस तरहकी नीति बनाये जानेकी आवश्यकता है।

उर्वरकोके व्यवहारसे खेतोकी उत्पादकता २० वर्षोमे नगण्य हो जाती है, इसका प्रमाण भी भारतीय कृषि-अनुसधान परिषद्को अपने परीक्षणसे मिला है, जिसकी तालिका निम्न है—

मक्काका प्रति उत्पादन कुतलमे
(लाल एवं माथुर—१९८८)

वर्ष	१—१२	१३—१८	१९—२४	२५—२८
एनपीके	३१.७	३२ ३	८.२	१ २
कंपोस्ट	२२.७	२५ ९	२७ ५	२५ ९

उर्वरको एव कीटनाशकोके व्यवहारसे मिट्टीके सूक्ष्म जीवाणु भी दिनोदिन कम होते हैं। इन जीवाणुओके बिना किसी प्रकारकी उपज कर पाना असम्भव है। उर्वरकोके व्यवहारसे भूमिकी आर्द्रता कम होती जाती है, जिस प्रकार शराबीको थोडे-थोड़े दिनोमे मदिराकी मात्रा बढानी पड़ती है उसी प्रकार मिट्टीका स्वभाव भी शराबीके जैसा हो जाता है। उर्वरकोकी मात्रा बढ़ानेपर भी उत्पादकतामे सुधार नहीं होता। जबकि सेन्द्रिय खादके द्वारा उत्पादकता बढती जाती है या उच्च स्तरपर स्थिर रहती है। प्रारम्भमे जब उर्वरकोका व्यवहार किया गया था तो एक किलो उर्वरक डालनेपर १५ किलो अन्न मिलता था, पर अब यह घटकर केवल ६ किलो रह गया है और यह अनुपात तेजीसे घट रहा है।

खर-पतवार-नाशक दवाके व्यवहारके कारण एक ऐसा पौधा पनप रहा है जो देखनेमे गेहूँ-जैसा लगता है पर उसमे कोई दाना नहीं पड़ता। यह पौधा आस्ट्रेलिया, मैक्सिको तथा अन्य देशोमे भी उत्पन्न हो गया है, जिसके कारण वहाँ बडी चिन्ता है। उर्वरकोके व्यवहारसे खाद्यान्नमें प्रोटीनकी मात्रा कम हो जाती है, स्वाद बिगड जाता है तथा मानव एव पशुओ—सभीको पौष्टिक तत्त्व कम मिलते हैं। उर्वरकोके कारण खेतोमें पानीकी खपत कई गुना अधिक बढानी पडी जिसके कारण नयी-नयी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। विशेषकर भूमिगत जलका स्तर दिनोदिन कम हो रहा है।

उर्वरक कीटनाशक एवं खर-पतवार-नाशक दवाओके बदले जब सेन्द्रिय खादके आधारपर खेती करते हैं तो निम्न लाभ मिलते हैं—

(१) भूमिका प्राकृतिक रूप बना रहता है।
(२) भूमिके सूक्ष्म जीवाणु बढते हैं।
(३) सिचाईके लिये पानी बहुत कम लगाना पडता है।
(४) खेत एव गाँवके कूड़े-कचरेका भी उपयोग होता हैं।
(५) किसानो और बैलोको अधिक काम मिलता है।
(६) पर्यावरणमे सुधार होता हैं, खाद्यान्न पौष्टिक एव सुस्वादु होता है।
(७) कीटनाशकोके जहरका अश हमारे शरीरमे नहीं जमता।
(८) गाँवका धन एव ससाधन गाँवमे रहता है।
(९) ग्रामीणोको रोजगार मिलता हैं।
(१०) विदेशी मुद्राकी बचत होती है।
(११) देश सम्पन्नताकी ओर बढता है।

दूध-शाकाहार एवं मांसाहार

गायके दूधकी तुलना माँके दूधके समान आजके वैज्ञानिक भी मानते हैं।

वर्तमानमे मांसका निर्यात करीब साढे तीन अरब रुपयोंका हो रहा है, जिसे बढाकर १० अरब करनेकी योजना चल रही है। आर्थिक दृष्टिसे भी यदि जाँचे तो यह अनुमान किया गया है कि जब १ करोडकी विदेशी मुद्रा मिलती है तो देशको १५ करोडका नुकसान उठाना पडता है। पर न तो सरकार इस प्रकारके होनेवाले घाटेकी जाँच करवाती है और न ही ध्यान देती है।

डॉक्टर एवं आहार-विशेषज्ञ दुनियामें पुकार-पुकार कर कह रहे है कि भोजनमे रेशोंको बढाओ जो कि शाकाहारके द्वारा ही सम्भव है। चूँकि मांस और अंडोंमें तो रेशा होता ही नही। अमेरिकामें जॉन रॉबिन्सने एक पुस्तक 'डायट फॉर ए न्यू अमेरिका' लिखी है। इस पुस्तककी न जाने कितनी लाख प्रतियाँ बिक चुकी है और कम-से-कम १० लाखसे अधिक व्यक्ति इस पुस्तकको पढ़कर शाकाहारी हो गये है।

मांसाहारके विषयमे जॉन रॉबिन्सने बड़े महत्त्वपूर्ण तथ्य उजागर किये हैं, जिनमेंसे कुछ निम्न हैं—

(१) विश्वमे यदि सभी मांसाहारी [illegible]

विश्वका पेट्रोलियम पदार्थका भंडार केवल १३ वर्षोके लिये पर्याप्त होगा और यदि सभी शाकाहारी हो जायँ तो यह भण्डार २६० वर्षोंके लिये उपलब्ध रहेगा।

(२) एक किलो गेहूँके उत्पादनमें करीव २४० लीटर पानी लगता है जवकि एक किलो मांसके उत्पादनमें २४,००० लीटर पानी लगता है।

(३) गेहूँसे एक किलो प्रोटीनके लिये करीब साढे तीन डॉलर (११५ रुपये) खर्च होते हैं और इतना ही प्रोटीन मांससे प्राप्त करनेके लिये तीस डॉलर अर्थात् १० गुणा अधिक खर्च होता है।

(४) मांस-आधारित आहारमे कीटनाशक दवाओके अंश ५५% पाये गये है जबकि सब्जियोमे केवल ६% रहते हैं।

विश्व-स्वास्थ्य-सगठनने जो जानकारी दी है उनके आधारपर मासके खानेसे कैंसर, हृदय-रोग, गठिया आदि रोग होते हैं।

चारा

भारत सरकारकी अनेक समितियोने यह जानकारी दी है कि देशमें पशुधनकी संख्या अधिक होनेके कारण जो चारा उपलब्ध है वह आवश्यकताके अनुपातमें बहुत कम है। पर दुर्भाग्य है कि जो चारेके साधन देशमे उपलब्ध हैं उनका प्रवन्धन भी नही किया जाता। जिसका ब्योरा निम्न है—

चीनी मिलोमे जितना गन्ना-पिराई होता है, उसका एक तिहाई भाग खोईके रूपमे निकलता है। इस खोईको भापके द्वारा हल्का वनाकर पशुओके लिये चारा वना दिया जाता है। इस विधिका वड़े पैमानेपर मैक्सिको एव क्यूवामे भी व्यवहार होता है, लेकिन उल्टी दिशामें काम करनेकी प्रक्रियाके अनुसार भारत सरकार इस खोईको जलाकर विजली पैदा करनेके लिये अनेको सुविधाएँ दे रही है, पर चारा बनानेके लिये कोई वात भी नहीं करता।

पहले गाँवमे तेलकी घानी हुआ करती थी, जो खली वचती थी उसे पशुओको खिलाते थे। अव तेलकी घानियाँ प्रायः समाप्त हो गयी हैं और तेल निकालनेके लिये वड़े-बड़े कारखाने लग गये हैं। इन कारखानोंमे जो खली निकलती है उसका निर्यात कर दिया जाता है, जिसकी मात्रा २५ लाख टनतक पहुँच गयी है। खलीके निर्यातसे देशको करीब ६१० करोड़ रुपयेकी विदेशी मुद्रा मिलती है, पर यदि यही खली हमारी गायोंको खिलायी गयी होती तो अतिरिक्त दूध हमे प्राप्त होता, उसका मूल्य ५ रुपये प्रति लीटरके हिसाबसे करीब ७५ अरब मिलता और यदि इस दूधके पदार्थ बनाकर निर्यात किये जाते तो हमे डेढ़ खरब रुपयेके बराबर विदेशी मुद्रा मिलती।

खाद्यान्नकी कटाईके लिये ऐसे यान्त्रिकी उपकरण विदेशोंसे मँगाये गये, जिनके द्वारा ऊपरकी बालियॉ तो काट ली जाती है, पर भूसा खेतमे छोड़ देते है। यह भूसा पशुओके लिये अति आवश्यक आहार है, पर करोड़ों टन या तो जला देते है या फिर खेतोमे ही सड़नेके लिये छोड़ देते हैं।

सामाजिक वनीकरणके कार्यक्रममें भी ऐसे वृक्षोंको सम्मिलित नहीं किया गया जिनसे हरा चारा भी मिल सके।

कैसी विडम्बना है कि इंग्लैडमे गायोकी हड्डीका चूरा तथा मांसके कुछ पदार्थ दूध बढ़ाने एवं शरीरको मोटा करनेके लिये खिलाये गये, जिसके कारण बहुत-सी गायोमे 'पागलपन' का रोग हो गया।

हैदराबादमें इस प्रकारके मिश्रण बनानेकी एक योजना चल रही है, जिसका प्रतिकार न्यायमूर्ति श्रीलोढ़ाजीने मुख्य मन्त्रीको पत्र लिखकर किया है।

गोशालाओंका दायित्व

अभीतक गोशालाओके कार्यक्रममे यही रहा है कि वे दूध देती तथा बूढ़ी गायोको अपने यहॉ पाल सकें लेकिन उन्होने शायद ही ऐसा कोई कार्य किया हो जिसके द्वारा बैलोकी उपयोगिता बढ़ सके। अतः किसी भी गोशालाको ट्रैक्टरका व्यवहार नहीं करना चाहिये, बल्कि उसकी जगह बैलोकी शक्तिका ही व्यवहार कर क़िसानोको भी प्रेरणा देनी होगी कि वे भी बैलोका अधिकाधिक उपयोग करें। आज सवसे बड़ी विडम्वना यह है कि भैंसका दूध महँगा बिकता है और गायका दूध सस्ता। जबकि होना यह चाहिये था कि गायका दूध महँगा होता और भैंसका दूध सस्ता।

गोशालाओमें गोवर और गोमूत्र निकलता है, उसका व्यवहार नॅडेप-पद्धतिके आधारपर सेन्द्रिय खाद बनाकर किसानोंमे जागरूकता पैदा करे।

गोबरकी तरल खादका परीक्षण एवं व्यवहार खासकर चारे तथा पेड़ोके लिये दिखाये। पञ्चगव्य बनाकर अपने कर्मचारियो एव अतिथियोको दे ताकि सभी नीरोग रहें। गोमूत्रका व्यवहार कीट-नियन्त्रणके लिये किसानोको दिखाये। दूधसे बने उत्तम व्यञ्जन, दहीसे मक्खन एव घीकी जानकारी दे। जो मक्खन दहीके बिलोनेसे निकलता है उसमे कुछ ऐसे सूक्ष्म जीवाणु होते है जो न केवल पाचनशक्तिको बढ़ाते है, बल्कि उनका व्यवहार कैंसर-जैसे रोगोसे भी बचा सकता है। इसी प्रकार तक्र (मट्ठा) के गुणोका भी प्रचार करे और हो सके तो बिक्रीकी भी व्यवस्था की जाय।

अपनी आवश्यकताओके लिये भारवाहनका कार्य बैलगाड़ियोके प्रयोगसे करे एव खेती तथा चारेके उत्पादनके लिये बैलचालित सुधरे उपकरणोका व्यवहार करे। साथ-साथ जल-सिंचाईके लिये भी बैलचालित रहँट या अन्य उपकरणोका व्यवहार दिखाये। बैलोकी शक्तिका व्यवहार चारा काटने, आटा-चक्की तथा अन्य ग्रामीण उद्योगोके लिये प्रदर्शन करायें और जहाँ आवश्यकता हो वहाँ इन उपकरणोकी उपलब्धि करायी जाय।

गोशालाओमे तेलघानी लगाकर शुद्ध तेल ग्राहकोको दे एव खलीका व्यवहार पशुओके लिये करे। ताकि उनकी भी पौष्टिक तत्त्वोकी आवश्यकता पूर्ण हो सके।

गोशालाओमें भारतीय प्रजातियोके गाय, बैल, साँड रखे जायँ, संकर कदापि नहीं। क्योकि संकर गायोके बछड़े न तो खेतीके लिये और न ही भार-वहनके लिये उपयुक्त होते हैं।

खेतीमे रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकोके बदले सेन्द्रिय खाद, नीम एवं गोमूत्रका व्यवहार करें।

जब फसलकी कटायी होती है उस समय चारा सस्ता मिलता है, परंतु चारेको रखनेमे भण्डारणकी कमीके कारण रख नहीं पाते। गट्ठर बाँधनेकी मशीन बन गयी है, जिसके व्यवहारसे भंडारमें स्थानकी आवश्यकता एक तिहाईसे भी कम हो जाती है और इस प्रकार अधिकाधिक चारा रखा जा सकता है।

घासके बीज बहुत हल्के होते है और उन्हे बोनेमे काफी कठिनाई होती हैं। बहुत बड़ा भाग हवामे उड़कर बेकार हो जाता हैं। मिट्टी और गोबरके साथ मिलाकर गोलियाँ बनानेका एक बहुत सहज उपाय 'भारतीय चरागाह-अनुसधान-संस्थान, झाँसी'ने बताया है, उसका प्रयोग करे और साथ-साथ किसानोको भी ये गोलियाँ उपलब्ध करायें ताकि परती भूमिका भी व्यवहार किया जा सके।

भू-जलका स्तर दिनोदिन कम होता जा रहा है, जिसके कारण गहरे नलकूप लगानेकी योजनाएँ बन रही हैं। 'कृषि-विश्वविद्यालय इंदौर'ने एक बड़ी सरल विधि बनायी हैं, जिसके उपयोगसे हर खेतकी मिट्टी और वर्षाके जलका सरक्षण सम्भव है और इसका सबसे बडा लाभ है कि कुओ और नलकूपोका जल-स्तर बना रहता हैं। इस विधिको अपनाकर किसानोको भी दिखाये।

गाय-बैलोको जब कोई बीमारी होती है तो उन्हे पाश्चात्त्य दवाएँ अधिक दी जाने लगी है, किंतु मनुष्य और मुर्गियोमे तो इन दवाओका इतना कुप्रभाव हो गया है कि उनका कोई असर नहीं होता और छोटी-सी बीमारी भी घातक सिद्ध होने लगी है। वह दिन दूर नहीं जब पशुओमे भी इन दवाओका असर नगण्य हो जाय। अत: यह आवश्यक है कि आयुर्वेदिक एवं देशी औषधियोका व्यवहार अधिकाधिक किया जाय।

गोशालाओको पर्याप्त रूपसे मासाहार तथा अडोके दुष्परिणामका साहित्य रखकर बाँटना चाहिये और साथमे दूध और दूधके पदार्थोंके लाभोका विवरण भी रखना चाहिये ताकि लोग मासाहार और अंडोका व्यवहार न करें और दूध एव दूधके पदार्थोका व्यवहार बढ़ाये।

यदि गोशालाओमे भी भारतीय नस्लोकी गाय नहीं रखी गयी, विदेशी साँडोंके द्वारा प्रजनन कराया गया तो भारतीय नस्ले समाप्त हो जायँगी और फिर पाश्चात्त्य पद्धतिको अपनाना पड़ेगा, जिसके अन्तर्गत गोमासका उत्पादन बढ़ेगा और जो गाय थोड़ा भी कम दूध देगी वे भी बूचड़खाने जायँगी, जहाँतक बछड़ोका प्रश्न है, वे तो कुछ ही सप्ताहमे बूचड़खानोमे अपना जीवन समाप्त करेंगे ताकि लोगोको मुलायम मांस जिसे 'व्हील' (Veal) कहते हैं, बड़ी मात्रामे उपलब्ध हो।

═══※※※═══

गोधन (बैल) बनाम ट्रैक्टर

[एक अमरीकीका दृष्टिकोण]

(श्रीबलभद्रदास और छायादेवी दासी)

[प्रस्तुत लेख अमेरिकासे, The International Society for Cow protection के प्रबन्ध-निदेशकद्वारा प्राप्त हुआ है, जिसमें कृषि-क्षेत्रमें ट्रैक्टर और बैलोंकी तुलनात्मक उपयोगिताका विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा प्रयोगों एवं अनुभवद्वारा यह सिद्ध किया गया है कि विदेशोमें भी ट्रैक्टरकी अपेक्षा बैलोंद्वारा की गयी खेती ही कृषिभूमिके लिये सर्वोत्तम है, अतः इस लेखमें कृषिभूमिकी उर्वरता बनाये रखनेके लिये बैलोंद्वारा खेती करनेपर जोर दिया गया है।-सम्पादक]

क्या आपने कभी इसपर विचार किया है कि एक छोटे-से ट्रैक्टरके निर्माणमें आपको कितनी खनन-प्रक्रियाएँ करानी पड़ती हैं? और लोहा, कोयला, चूना-पत्थर, मैगनीज, निकल, ताँबा, बाक्साइड, टीन तथा जस्ते-जैसी कितनी ही बहुमूल्य धातुओंका ट्रैक्टरके बनानेमें उपयोग करना पड़ता है? ये धातुएँ धरतीसे प्राप्त होती हैं। इन्हें प्राप्त करनेके लिये धरती माताको खोदना पड़ता है। इस खनन-प्रक्रियामें धरती माताको आपद्वारा किये-कराये गये कितने अत्याचार सहन करने पड़ते हैं, क्या इसपर कभी आपका ध्यान गया? इन खानोंमें काम करनेवाले हजारों मजदूरों, कामगारों तथा कारीगरोंके लिये स्वयमेव नारकीय परिस्थितिका निर्माण हो जाता है और इसके जिम्मेदार भी आप ही हैं। यह तो हुआ ट्रैक्टर-निर्माणका पहला कदम।

इसके पश्चात् क्रम आता है इन धातुओंको गलानेवाले संयन्त्रोंका, जहाँ इन कच्ची धातुओंको तोड़ा, पीसा और खौलाया जाता है। इन विशालकाय कारखानो और फैक्टरियोंमें महान् नारकीय दृश्य तथा बड़े पैमानेपर गंदगी-ही-गंदगी दृष्टिगोचर होती है। इससे बडी मात्रामें प्रदूषण फैलता है। गलानेवाले संयन्त्रोंके पश्चात् हम उन फैक्टरियोको देखते हैं, जहाँ ट्रैक्टर्सके एक-एक पुर्जेको जोड़कर ट्रैक्टर बनाये जाते हैं। यहाँकी कार्य-प्रणाली तो और भी अधिक गंदगी फैलानेवाली होती है।

जब ट्रैक्टर जुट-जुटाकर तैयार कर लिया गया तथा पार्किंग-स्थलपर बगैर टायरोके तैयार खड़ा हो गया तो अब प्रश्न उठता है कि इन टायरोको बनानेवाला पदार्थ आया कहाँसे? पता चला कि लोग उष्ण कटिबन्धीय देशोंमे पहुँचे और उन्होंने कामगारोको कुछ थोड़ेसे पैसे देकर रबरके सुन्दर वृक्षोपर कुल्हाड़ियाँ चलवा दीं, परिणामस्वरूप लेटेक्सके रूपमें उन सुन्दर वृक्षोंका वनस्पति-क्षीर उनके रक्तके समान बह निकला और फिर उसीसे टायर बनाया गया।

अब हमारा ट्रैक्टर पार्किंग-स्थलपर अपने टायरोंपर खड़ा है। अब हम सोचें कि यह चलेगा किससे? इसे चलानेके लिये तो आपको पेट्रोल अथवा डीजल ही लेना पड़ेगा और वह वस्तु इतनी कठिन होती जा रही है कि शायद इसकी प्राप्तिके लिये तो युद्धतक करना पड़ जाय। जहाज आपका पेट्रोल समुद्र पार करके लायेगा तो वह आधा पेट्रोल समुद्रमें छलका भी सकता है।

आज अमेरिकामें अन्य उद्योगोंकी अपेक्षा कृषि-उद्योगमें ही अधिक पेट्रोल काममें लिया जाता है, वह भी उसकी फार्म मशीनरीपर जो कि सम्पूर्ण ऊर्जा-उपयोगका लगभग $\frac{3}{५}$ हिस्सा है।

जो तेल बचता है वह रिफाइनरी अर्थात् परिष्करण-शालाको भेज दिया जाता है। यदि आपने कभी किसी ऐसे नगरके मध्यसे यात्रा की है जिसमें रिफाइनरी है तो आप वहाँकी बदबूभरी हवासे भी परिचित होंगे, वहाँका तो पानी भी इतना अधिक गंदा हो जाता है कि आप उसे कभी भी पीना पसंद नहीं करेंगे।

अब हमारे कृषकके पास उसका ट्रैक्टर स्टील बेल्टेड रेडियल टायर्स तथा पेट्रोलके साथ तैयार है। वह अपना इंजन चालू करता है और सोचता है कि इस ट्रैक्टरसे मैं ५० बैलोंके बराबर काम कर लूँगा, तब वह अपने बैलोंकी तरफ देखता है और कहता है कि 'अब मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं है, मेरे पास मेरा ट्रैक्टर है, मेरा पेट्रोल है, अब तुम्हारा स्थान कसाईखाना है।' इस प्रकार जब आप

ट्रैक्टरको जन्म देते हैं तो उसका सीधा मतलब हुआ गाय-बैलोंको कसाईखाने भेजना और तब आप अपनेको गाय-बैलोंकी हत्याके पापका भागी बनाते हैं।

जो लोग कसाईखानेमें काम करते हैं, उनकी हालत बहुत खराब होती है। अमेरिकी सरकार भी स्वीकार करती है कि कसाईखानोंका काम कारखानो या खदानोके कामसे भी अधिक भयंकर और नैतिक पतन करनेवाला है।

किंतु अमेरिकाका किसान यह सब कहाँ सोचता है, वह तो सोचता है कि अब मुझे उन बैलोको कुछ भी खिलाना नहीं पड़ेगा, अब उनकी खुराकका हिस्सा मेरी बचत होगी। और यह सोचकर वह अपने बैल कसाईखानेको बेच देता है।

तब वह अपने हरवाहोंकी ओर देखता है, जो पहले उसके बैल हॉकते थे तथा फल-सब्जियाँ और अन्न उगाते थे, अब वह उनसे कहता है—'भाई! अब तो मैं अपने बैल बेंच चुका हूँ, उन्हें मरवा चुका हूँ। अब मेरे पास मेरा ट्रैक्टर है, इसलिये मेरे पास तुम्हारे लिये कोई काम ही नहीं है, अब तुम जाओ, फैक्टरियोंमें अपने लिये काम ढूँढ़ो, मशीनें बनाओ।'

अब कृषक अपने ट्रैक्टरको खेत जोतनेके लिये निकालता है और उसका पेट्रोलभक्षक एंजिन चालू होकर वायुमण्डलको प्रदूषित करने लगता है। उसके भारीभरकम स्टीलबेल्टेड टायर धरतीको दबाने लगते हैं, जिससे पौधोंकी जड़ोंको बढ़ने-फैलनेमें कठिनाई होती है। अब उसके पास इस वसुंधरा—धरतीको उर्वर बनानेवाली गोबरकी खाद भी नहीं है, इसलिये मजबूरीमें वह महँगे रासायनिक उर्वरकोंका उपयोग करता है जो प्राकृतिक गैसकी बड़ी लागतसे बनाये जाते है। ऐसी फसलोके उगाये जानेसे धरतीका जैविक पदार्थ अपने-आप कम हो जाता है, जो नमीका भण्डार होता है। ऊपर-ऊपरकी मिट्टी पानीके बहावके द्वारा नदियोंमें बह जाती है और जो कमजोर मिट्टी रह जाती है, वह कमजोर पौधे ही उगाती है, इसलिये इनमे खर-पतवार उग आते हैं, साथ ही कीड़े तथा बीमारियाँ भी लग जाती हैं। इसलिये किसानको कीटनाशकोंका उपयोग करना पड़ता है जो धरतीसे नीचे उतरकर पानीकी अन्तर्धाराओंको प्रदूषित कर देते हैं।

सारे ससारमें उर्वरक खादोंका उपयोग जो १९५० में केवल १४ मिलियन टन था, वह १९८९ मे १४३ मिलियन टन तक पहुँच चुका है अर्थात् सीधा दस गुनेसे भी अधिक। सम्पूर्ण भूमण्डलपर नाइट्रस आक्साइडकी मात्रा बढ़ जानेसे ६ प्रतिशत ऊष्मा बढ़ चुकी है। तो फिर इसका विकल्प क्या है? गाय अपने सम्पूर्ण प्रजननकालमे ५० प्रतिशत अर्थात् आधे तो नर-बछड़ोंको ही जन्म देती है। गौ-संरक्षणके लिये, जबतक हम बैलोंको काम नहीं देंगे कि हम उनसे कौन-सा और कैसा काम ले, हम उन्हें कतलसे नहीं बचा पायेंगे। पशुओके प्रति केवल दया-भाव बतलानेसे काम नहीं चलेगा।

गौ माताके उदरकी फैक्ट्रीसे उत्पन्न होनेवाले हमारे बैल भगवान् कृष्णद्वारा बतलाये और दिये गये हमारे ट्रैक्टर्स हैं। इस फैक्ट्री अर्थात् गायद्वारा न तो किसी प्रकारका प्रदूषण होता है और न ही काम करनेकी नारकीय स्थितियाँ बनती हैं, इनका सारा कार्यकलाप प्रकृतिके नियमोंके अनुसार चलता है, जिसकी व्यवस्था स्वयं भगवान् कृष्णने की है।

बैल तो सदाचारके सिद्धान्तोका प्रतीक है तथा गाय माँ वसुंधरा—धरतीकी प्रतिनिधि है। जब भी गाय और बैल प्रसन्नता तथा प्रफुल्लताकी मुद्रामे दिखायी दे तो समझ लो कि सम्पूर्ण विश्वके मानवमात्र भी उसी परिपूर्ण प्रसन्न-मुद्रामें हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि कृषि-क्षेत्रमें बैल ही अन्नोत्पादनमे सहायता करता है और गाय अमृतके समान दूध देती है जो कि संसारकी समस्त भोज्य-सामग्रीमें एक करामाती चमत्कार है। मानवसमाज भी इन दो प्रमुख पशुओका लालन-पालन पूरी सावधानीके साथ करता है, जिससे कि वे सर्वत्र प्रसन्नतापूर्वक विचरण कर सकें।

इस बैलरूपी ट्रैक्टरसे कहीं भी रंचमात्र प्रदूषणका भय नहीं है, क्योंकि ये स्वयं अपनी भोजनरूपी ऊर्जाका भण्डार यानी जौ, जई और घास खुद पैदा कर सकते हैं तथा इनके लिये हमारे द्वारा दिया गया दाना, भूसा, छिलका, खली भी उपयोगी है; क्योंकि यही सब गोबर-गोमूत्रके रूपमे प्राप्त होता है। गोबर-गोमूत्र हमारे लिये कितने उपयोगी हैं यह बात छिपी नहीं है। गोबरसे तो ऊर्जा भी निकाली जा सकती है, जो एक स्वच्छ एवं सस्ता ईंधन

है। वायोगैस निकल जानेके वादका अवशेष पदार्थ तो सर्वश्रेष्ठ उर्वरक तथा धरतीको सँवारनेवाली वस्तु है। वधगृहोंसे निकलनेवाले उपोत्पादनोंको जैविक पदार्थोंके वनाने-हेतु उपयोगमे लेनेकी कोई जरूरत नहीं है।

हर एकको किसी दूसरेपर निर्भर होना पड़ता है। किंतु हम किसपर निर्भर रहते हैं, इसीपर हमारे जीवनकी गुणवत्ता निर्भर करती है। श्रीमद्भगवद्गीतामें भगवान् कृष्णने कहा है—'अपने हर क्रियाकलापमें केवल मुझपर ही निर्भर रहो और हमेशा मेरे संरक्षणमें अपना हर कार्य करो। इस प्रकारकी भक्तिमय सेवामें मेरे प्रति अपनी कर्तव्यनिष्ठ चेतना सदा वनाये रखो।'

चूँकि हम सव अपने गोसंरक्षण अन्ताराष्ट्रिय संघके अन्तर्गत किसान हैं, हम अपने आपसे ही पूछते हैं कि हम अपनी सम्पूर्ण निर्भरता कृष्णपर कैसे रख सकते हैं? यदि हम ट्रैक्टरपर निर्भर होते हैं तो इसका अर्थ होगा कि हम मानव-निर्मित व्यवस्थापर निर्भर होते हैं। ट्रैक्टरको बनानेके लिये ही तो खदानों, गलानेवाले संयन्त्रों, फैक्टरियों, रिफाइनरीज तेल-कूपो आदिका सहारा लिया जाता है जो कि अनर्थकारी तथा अनुचित लाभ उठानेवाले घोरतम शोषणकारी उद्योग हैं।

ऊर्जाके हमारे दोनों प्रमुख स्रोत प्राकृतिक गैस और तेल हैं एवं हम अपनी तकनीकी-प्रगतिके लिये भी इन दोनोंपर ही पूरी तरह निर्भर हैं। न्यू हैम्पशायर विश्वविद्यालयके काम्पलेक्स सिस्टम्सके अनुसंधान-केन्द्रपर किये गये वैज्ञानिक अध्ययनसे यही निष्कर्ष निकला है कि सन् २०२० तक तेल और प्राकृतिक गैसके भण्डार जो हमारी घरेलू आवश्यकताओंकी पूर्ति करते हैं लगभग समाप्त हो जायँगे। यदि कृषि-तकनीकीके आधार वदले नहीं गये तो तेल-भण्डारका १० प्रतिशत और प्राकृतिक गैसका ६० प्रतिशत जो संयुक्तराज्य अमेरिकामें खर्च किया जाता है, उसे खाद्य-उत्पादनके काममें लेना पड़ेगा। समस्याकी जटिलता इसीलिये बढ़ गयी है, क्योकि कृषि-तकनीकीका आधार ही प्राकृतिक गैस तथा तेल है और इनका स्थान कोयला ले नहीं सकता है और ईधन तथा ऊर्जाका विकल्प तेल और गैसके स्थानपर कोयलेको ही माना जाता है।

एक ऐसी कृषि-पद्धति जो भूमिगत ईधनपर इस प्रकारसे निर्भर है, वह हमेशाके लिये क्या कुछ लंबे समयतकके लिये भी चल नहीं पायेगी।

हर समाजमें जीवन-यापनकी समस्याएँ प्राय: एक समान ही हैं—भोजन कहाँसे मिले? रहनेके लिये घर कैसे मिले? मैं अपना निर्वाह किस प्रकारसे करूँ? इन आवश्यकताओंकी पूर्ति किस प्रकारसे की जाती है, बस यही सब निर्धारित करता है किसी भी समाजकी जीवन-शैलीको।

अत: यदि हम अपने जीवनकी आवश्यकताओंकी पूर्ति बैलोंकी शक्तिका उपयोग करते हुए धरतीसे सहयोग बनाये रखकर करते हैं तथा ट्रैक्टरद्वारा धरतीका शोषण नहीं करते हैं तो तभी हम सद्भावनापूर्वक शान्तिमय जीवन जी सकते हैं। परिणामस्वरूप तभी यह धरती विपुल उत्पादन भी देगी और यदि हम धरतीके स्रोतोंपर वर्तमान-जैसा बलात्कार तथा लूट-खसोट करते रहे और अपनी जरूरी तथा गैरजरूरी आवश्यकताओंका दोहन करते रहे—अविवेकपूर्ण दोहन करते रहे तो हमें हर प्रकारके दु:ख झेलने पड़ेंगे, चाहे वह हवाका प्रदूषण हो अथवा पीनेके पानीका या भूक्षरण अथवा रेगिस्तानीकरणका हो अथवा अनेकों जीव-जन्तुओं तथा पशु-पक्षियोके विलोपी-करणका ही क्यों न हो।

किंतु यदि हमने बैलोपर निर्भर रहते हुए उन्हें काममें लेना जारी रखा तो इसका अर्थ होगा कि हम धरतीके साथ सहयोग कर रहे हैं और परिणामस्वरूप हम भगवान् कृष्णद्वारा दी गयी व्यवस्थापर चल रहे हैं। हम यह सोचकर संतुष्ट भी हो सकते हैं कि कृष्ण हमारा ध्यान रखते हुए हमारी रक्षा भी कर रहे हैं। इसके अलावा हमारी आध्यात्मिक प्रगतिके लिये भी हमारे इस प्रकारके अच्छे सम्वन्ध निहायत जरूरी हैं। किसी ट्रैक्टरके साथ तो किसी भी प्रकारके जीवन्त-सम्बन्धका विकसित करना कठिन ही नहीं असम्भव भी है।

गोसंरक्षण-हेतु वनाये गये 'अन्ताराष्ट्रिय गोरक्षण-संघ' के प्रवन्ध-निदेशकका तो यहाँतक कहना है कि 'मैंने स्वयं ट्रैक्टरोंद्वारा खेती की है, इसके एंजिनसे उठनेवाली हृदयविदारक गर्जना तो मेरे कान ही फोड़ देती थी, डीजलसे छोड़ी गयी वदबू भी दम घोंटती थी। वास्तविकता

तो अब यह है कि ट्रैक्टरका विचार आते ही मेरा सिर दर्दसे फटने लगता है। इन सब विकारोंके अलावा ट्रैक्टरमे जो सबसे बुरी बात है, वह है उसपर घंटो बैठे रहकर अपनी हड्डी-हड्डीको चकनाचूर कर लेना, मेरे लिये यह सब मन, मस्तिष्क, आत्मा तथा शरीरको भारी कष्ट देनेवाला अनुभव है। मेरा तो यह साफ-साफ कहना है कि ट्रैक्टरका उपयोग करना यानी सारे शरीर और मन तथा आत्माको ही चकनाचूर कर लेना है। दिनभर कार्य करनेके बाद जब मैं ट्रैक्टरकी सीटपरसे उतरता था तो मुझे लगता था कि जैसे मैं किसी लोहेके जानवरके ऊपर बैठकर अब नीचे उतर रहा हूँ।'

'ट्रैक्टरकी निर्भरता कोई ऐसी निर्भरता नहीं है जिससे किसी प्रकारका आध्यात्मिक लाभ मिले। इसलिये अब तो मैं केवल गीता और व्रज नामवाले दो बैलोंपर निर्भर हूँ। ये दो सशक्त तथा चुस्त-दुरुस्त भूरे रंगके स्विस बैल ही मेरे सहारे हैं और ये दो जीवित हस्तियाँ कृष्णके ही अङ्ग-प्रत्यङ्ग रूप हैं। स्वामी महाराज श्रीभक्तिवेदान्त, जो हमारे आध्यात्मिक गुरु तथा इस्कान (अन्ताराष्ट्रिय कृष्ण-चेतना) नामक अन्ताराष्ट्रिय संगठनके संस्थापक है, उन्होंने तो हमें यहाँतक कहा है कि बैल तो मानवमात्रका पिता है, क्योंकि वह मानवमात्र तथा अपने साथी पशुओंके लिये भी खेतोसे अन्नोत्पादन करता है—उसका अपना वही तरीका है जैसा कि एक पिताका अपने बच्चोंके प्रति है।'

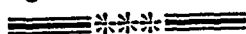
यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि क्या आजकल ट्रैक्टरोंकी अपेक्षा बैलोंसे खेती करना अकुशलताका प्रमाण नहीं है? तो उत्तरमें कहना है कि नहीं भाई—बिलकुल नहीं। सत्य तो यह है कि ट्रैक्टर बनाम बैलोंद्वारा खेती किये जानेपर जितने भी अध्ययन आजतक किये गये हैं, उन्होने यही सिद्ध किया है कि फसलोंकी हर इकाईपर आनेवाली कीमतोंके आधारपर तो पशुओंद्वारा खेती करना ही फायदेमंद पड़ता है, विशेष कर भारतमें।

यह ठीक है कि एक ३५ हार्सपावरका ट्रैक्टर एक बैलकी जोड़ीकी अपेक्षा दस गुनी जुताई कर सकता है, किंतु ट्रैक्टरके खरीदनेमें बैलोकी अपेक्षा बीस गुना धन अधिक लगाना पड़ेगा। यदि ट्रैक्टरको एक वर्षमें ९०० घंटोसे अधिक नहीं चलाया गया तो ट्रैक्टरपर प्रतिघंटेका खर्च बैलोकी अपेक्षा काफी अधिक आयेगा। इसका अर्थ यही हुआ कि ट्रैक्टर केवल बहुत बड़े-बड़े खेतोंपर ही बैलोकी अपेक्षा बेहतर कार्य कर सकता है।

आजकी ट्रैक्टर-तकनीकीके द्वारा काम तेजीसे तो किया जा सकता है; परंतु कृषि-भूमिके लिये इसके परिणाम सुखद नहीं हैं। बैल जो धरतीके साथ सामञ्जस्यपूर्वक कार्य करता है, वह धीरे-धीरे कार्य करता है, किंतु उसके परिणाम आगे चलकर बेहतर सिद्ध होते हैं। बैलकी गति धीमी होनेसे धरतीकी जोती हुई जमीन तथा उसके अन्य प्रतिभाशाली गुण, जो सबके लिये मुफ्तमें प्राप्त होनेवाले वरदान हैं, सभीको मुफ्तमे मिलते रहते हैं। इससे जीवनमे सादगी आती है, मनको शान्ति मिलती है, अतः मनुष्य आध्यात्मिक चिन्तनकी ओर अपना मन अवस्थित कर सकता है।

हर समाजको इस प्रकारकी स्वतन्त्रता है कि वह अपने जीवनकी आवश्यकताओकी पूर्ति किस प्रकारसे करे। ट्रैक्टरका उपयोग करनेसे तत्कालका समाधान तो मिल सकता है, जिसे प्रेयस् कहते हैं, किंतु इसके लंबे समयके परिणामो यानी श्रेयस्के बारेमे गम्भीरतासे विचार किया जाना चाहिये। क्या हम यह पसंद करेगे कि भावी पीढ़ियोके लिये हम सारे पर्यावरणको ही प्रदूषित करके रख दें? क्या हम धरतीके संतुलनको ही नष्ट करना चाहते हैं? क्या हम यही चाहते हैं कि गायोके सुन्दर-सुन्दर बछडे-बछड़ियाँ कतलघरोंमें कतल-हेतु भेजे जाते रहें, क्योंकि उनके लिये हमारे पास कोई काम ही नहीं है? क्या हम यह पसंद करेगे कि जो लोग अच्छे सात्त्विक माध्यमोंसे अपनी रोजी-रोटी कमा लेते थे, अब वे नारकीय परिस्थितियोकी अनर्थकारी फैक्टरियोमे भेज दिये जायँ और वह भी केवल इसीलिये कि अब बैलोंकी जगह ट्रैक्टर्स आ गये हैं। जरा इस परिस्थितिपर गम्भीरतासे सोचिये और विचार कीजिये कि हम क्या चाहते हैं— बैल या ट्रैक्टर।

[अनु०, वी० आर० ठाकुर, एडवोकेट]



हमारा गोधन

(श्रीपरिपूर्णानन्दजी वर्मा)

जिसमे लेशमात्र भी हिंदुत्व है वह अपने देश ही नहीं, संसार भरकी गोमाता तथा गोवंशको पूजनीय, उपासनीय तथा रक्षणीय मानेगा, पर आजकलके युगमें जब धर्म भी आर्थिक तराजूपर तौला जा रहा है, गोभक्त भारतके नये विचारवाले इसका आर्थिक पहलू भी जानना चाहेंगे। हम हिन्दुओंमें कितना पतन होता जा रहा है इसकी प्रत्यक्ष मिसाल तो हिन्दू-मन्दिरोंमें पूजित मूर्तियोंका हिन्दूद्वारा ही चोरी और चुपचाप, चोरीसे विदेशी बाजारमें गैर हिन्दुओंके हाथ वेच देना भी है। हमने स्वयं अपनी विदेश-यात्राओंमें हिन्दू युवकोंको विदेशोंमें गो-मांस खाते देखा है और जब मैंने ऐसोसे पूछा कि 'इतना अनुचित कार्य क्यों करते हो? तो उत्तर मिला कि 'देशी गाय मना है, विदेशी नहीं।' मैं सर पटककर भी उन्हें समझा न सका। वैसे ही जैसे लन्दनमें एक मुस्लिम भोजनालयमें हमने शुक्रवारके दिन सूअरका मांस विकते देखकर पूछा कि 'अपने धर्मके विरुद्ध यह निकृष्ट काम क्यों कर रहे हो' तो उत्तर मिला—'यह तो व्यापार है। हम खाते नहीं, खिलाते हैं।' जब मनोवृत्ति इतनी गिर जाय तो आस्था और विश्वास कहाँतक टिक सकेगें।

भारतमें सभी प्रदेशोंमें गोवधपर प्रतिबन्ध नहीं है। उत्तरप्रदेशमे १९५५ से ही इसकी कानूनन सख्त मनाही है, पर पड़ोसी पश्चिम बंगाल हो या सुदूर केरल, वहाँ यह जघन्य प्रथा अभी भी चालू है। उत्तरप्रदेशके विहारसे सटे नौवतपुर आदि सरहदोंपर नित्य हजारोंकी संख्यामें गाय-बछड़े, वैल छिपकर पशिचमी वंगाल और फिर उधरसे बांगलादेश तथा पाकिस्तान भेजे जाते हैं। इन सरहदोंपर ऐसे केन्द्र वन गये हैं जहाँ चुपचाप गोहत्या कर मांसके पैकेट भी वाहर जाने लगे हैं। विहार तथा उत्तरप्रदेशके कई पशु-मेले ऐसे व्यापारके केन्द्र बन रहे हैं। इन मेलोमें देशी गाय ८००-१००० रुपयेमे विकती हैं तथा विदेशी वाजारमें ३०,००० से ३५,००० रुपयेतक एकका दाम लगता है। शासनकी सख्तीके वावजूद यह व्यापार चल रहा है। हमारे गोधनका कितना ह्रास हो रहा है, इसका हमें अभी अनुमान भी नहीं है।

केन्द्रीय तथा कम-से-कम ६ प्रादेशिक सरकारें गोवंशकी वृद्धि तथा उनकी नस्लमे सुधारके लिये प्रयत्नशील हैं। १९९०-९१ में देशमें ऐसे १७८ केन्द्र थे, और भी बढ़ रहे हैं, जिनमें गोवंशका कटना मना होनेपर भी चोरी-छिपे गोवध होनेकी भी शिकायत है। पशुधनकी रक्षाके लिये भारतमें १९८४-८५ में १४,९०० पशु-चिकित्सालय थे, १९९१-९२ में इनकी संख्या २०,३१० हो गयी थी। पशु-रक्षणके लिये चल-चिकित्सालयोंकी संख्या भी इसी अवधिमें १८,४०० से बढ़कर १९,३२० हो गयी थी। यद्यपि यह आवश्यकतासे कम संख्या है तथा अनेक प्रदेश पशु-संरक्षणमें जितनी रुचि लेनी चाहिये नहीं ले रहे हैं। फिर भी इस प्रकारके प्रबन्धसे किसानोंको काफी लाभ पहुँच रहा है।

दुग्ध-उत्पादनमें वृद्धिके लिये १९९४ के वर्षमें ही २०० से अधिक दुग्ध-विकास डेयरी सहकारी संस्थाएँ हैं, जो वैज्ञानिक—आधुनिक ढंगसे काम कर रही हैं तथा इनको मिलाकर ३१ दिसम्बर, १९९१ को देशमें दुग्ध-उत्पादन (गोधन) के लिये ६४,२०० सहकारी दुग्ध-विकास केन्द्र थे, जिनके द्वारा देशके ७९ लाख फार्मके किसान-परिवार लाभ उठा रहे थे—जबतक इनकी संख्या ८ गुनी अधिक न हो जायगी, समूचे कृषक-वर्गको लाभ नहीं होगा।

गोधन

१९८७ तकके ऑकड़े जो १९९३ में मईके महीनेमें प्रकाशित हुए थे, उसके अनुसार देशमें १९ करोड़ ९७ लाख गाय-बैलकी संख्या थी, भैंसें ७ करोड़ ७० लाख थीं। इस संख्यासे एक बात प्रकट है—१९५१-१९६१ के बीचमें दूध देनेवाली भैंसोंकी संख्या गौसे अधिक हो रही थी जिसमें अब रुकावट आयी है तथा गोवंश बढ़ रहा है। उदाहरणके लिये उत्तरप्रदेशके तीन जिलोंकी मिसाल है—सरकारी आँकड़ेके अनुसार १९६१ में आगरामें २,७४,१४४ गायें तथा ९,१०,२६८ भैंसें थीं, उसी वर्ष

मेरठमें ५,५५,६३७ गौएँ तथा ८,४४,८१० भैंसे तथा लखनऊमें ६,३०,३२८ गौएँ तथा ६,५६,०६७ भैंसे थीं। धीरे-धीरे गोवंशकी वृद्धि होती गयी है। १९८७ मे देशमे ४ करोड़ ५७ लाख भेड़े तथा ११ करोड २ लाख बकरियाँ थीं। इस संख्यासे प्रकट है कि देशके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये तथा पोषणके लिये असली आधार गौ ही है। भारतमे सबसे अधिक गौ तथा गोवंश उत्तरप्रदेशमें है। १९७८ में कुल पशु-धन ५,२३,४५,००० था तथा १९८८ मे ६,००,७५,००० था, जिसमे गोवंशकी स्थिति इस प्रकार थी—

	१९७८	१९८८
गोजातीय	२,५७,५३,०००	२,६३,२३,०००
दूध दे रही गौ	६५,७५,०००	६८,३०,०००
दूध न दे रही	२९,८२,०००	२५,८४,०००

—इसी अवधिमे दूध देनेवाली भैसोकी संख्या ७२,१७,००० से बढ़कर ८९,५७,००० हो गयी थी। इस संख्यासे प्रकट है कि हमारे प्रदेशमें, जैसा अन्य प्रदेशोमे है, गोवंश महिष-कुलसे कहीं कम है। १९८८ मे महिष-कुलकी संख्या १,८२,३९,००० थी। इस अवधिके बादके सरकारी ऑकडे अभी प्राप्त नहीं हैं। पर हमे चिन्ता होनी चाहिये कि हमारा गोवंश अभी भी महिष-वंशसे कम क्यो है? दूध देनेवाली भैसोंकी संख्या १९७८ में ३९,६७,००० तथा १९८८ में ५४,२६,००० थी। गौके दूधसे बढ़कर पोषक तथा पवित्र और कोई दूध नहीं है, यह तो विज्ञानसे सिद्ध है। अतः गोवंशकी बिना आशातीत वृद्धि किये न तो प्रदेशका स्वास्थ्य सुधरेगा, न मस्तिष्कको वह रस मिलेगा जिससे उसकी असली पुष्टि होती है।

गो-रक्षक

गो-रक्षा तथा सेवा आध्यात्मिक विषयसे उठकर शासकीय विषय कौटिल्यके अर्थशास्त्रमे मिलता है, जिसमे 'गो-घातक' को दण्डनीय कहा गया है। सम्राट् अशोकने पशु-हत्याके साथ ही गो-हत्याकी सख्त मनाही की थी। गोवंशकी प्रतिष्ठा तो भारतमे यूनानी नरेश सेल्यूकसने (ईसवी-पूर्व ३००-२८१) भी की थी। उसने अपने सिक्कोपर सींगवाला बैल बनवा रखा था। गो-रक्षाको देशव्यापी अभियान बनानेका कार्य तो मौर्य साम्राज्यके पतनके बाद शुंग ब्राह्मण शासकोंने अपने ३५ वर्षके शासनमे किया था। पर, नीतिशास्त्रमे भी इसे सम्मिलित करनेका कार्य सातवी सदीमे शुक्रने शुक्रनीतिमे किया था। भारतमे एकमात्र अकबर महान् ऐसा नरेश था (सन् १५४२-१६०५) जिसने गो-हत्या करनेवालोंको प्राणदण्डकी सजा घोषित कर दी थी और कई लोग इस अपराधमे मारे गये थे। अकबरके हिन्दू राजपूत-पत्नी जोधाबाईके पुत्र तथा दो हिन्दू-क्षत्रियाणियोंके पति जहाँगीरने इस आदेशको रद्द किया था। वह कट्टर हिन्दू-विरोधी था।



राजस्थानके मरुप्रदेशकी अर्थव्यवस्थाका मूलाधार—गाय

(श्रीभँवरलालजी कोठारी)

अनेक विविधताओको अपनेमे समेटे हुए मरुप्रदेश राजस्थानका अपना एक विशिष्ट स्थान है। यहाँ एक ओर अरावलीकी पहाडियॉ हैं, चम्बलकी घाटियाँ हैं, वन हैं और बीहड़ हैं तो दूसरी ओर थार मरुस्थलका वीरान क्षेत्र है, रेतीले धोरोकी धरती है, लूणी-जैसी सूखी नदियॉ हैं, पानीको तरसते पेड़-पौधे हैं। पर इस बाह्य विषमतामे भी यहॉ एक आन्तरिक समता व्याप्त है। मरु-क्षेत्रमे पानीका अभाव है, पर यहाँकी दूध-घीकी मन्दाकिनीका [illegible] प्रवाह अनेक कस्बो, नगरो और महानगरोंको भी [illegible] करता है। अक्सर बरसात नहीं होती, पर मामूली बूँदा-बॉदीसे ही शुष्क रेतीली धरतीमे 'मतीरे'-जैसा [illegible] हुआ पौष्टिक पानीदार फल उपजता है। 'सेवण', '[illegible]' जैसा पौष्टिक चारा, 'खेजडी', 'बोरटी'-जैसे [illegible] कल्पतरु-सदृश चारा-वृक्ष और 'फोग', '[illegible]' [illegible]

जैसी दुधार कामधेनुके समान उत्कृष्ट गौकी नस्ले इस प्रदेशको प्रकृतिकी अनूठी देन हैं।

'गोधन' आज भी हमारे गाँव और गरीबका जीवनाधार है। यह ऊर्जा, रासायनिक उर्वरक, जहरीले कीटनाशक तथा पर्यावरण-प्रदूषणके विश्वव्यापी संकटसे मुक्ति दिलानेवाला अमोघ उपाय है और स्वावलम्बन, स्वदेशी और विकेन्द्रित अर्थव्यवस्थाकी कुंजी है। ग्रामोदय तथा सर्वोदयकी लक्ष्य-प्राप्ति एवं ग्राम-राज एवं राम-राजकी स्थापनाके स्वप्नको साकार करनेवाली संजीवनी-शक्ति 'गोधन' ही है।

इस यथार्थको व्यवहारमें बदलनेके लिये 'गो-ग्राम-विकास-योजना' के कुछ बिन्दु कार्य-योजनाके रूपमें यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

१-गोहत्या-वंदी प्रभावी कानूनके साथ-साथ गोपालन एवं गोसंवर्धन-हेतु प्रत्येक ग्राम-पंचायत, तहसील, जिला और प्रान्त-स्तरपर चार-पॉच सौ एकड़से लेकर चार-पॉच हजार हैक्टेयरतकके गोसदन जलस्रोतोंके निकट सक्रिय गोशालाओं एवं 'गो-ग्राम-विकास-परिषदों' की देख-रेखमें संस्थापित तथा संचारित किये जायँ, जिनमें—

(१) पंचायत, तहसील, जिला, प्रान्त अथवा क्षेत्रके बूढ़े, वीमार गोवंशके संरक्षण एवं प्रजनन-योग्य गोवंशके संवर्धनके अलग-अलग नस्लोके अनुसार विभाग हो।

(२) चरागाहोंका विकास, चारा-वृक्षारोपण एवं हरे चारेका उत्पादन, भण्डारण तथा सुलभ मूल्योंपर गोपालकोंको वितरणकी समुचित व्यवस्था हो।

(३) आस-पासके कस्वों, नगरोमे गोरस-भंडारोंके मार्फत दूध-वितरणकी और घी, मक्खन, पनीर आदि गोरस-निर्मित पदार्थोके विक्रेन्द्रित स्तरपर उत्पादन-वितरणकी अनुकूल सुविधाएँ हो।

(४) गोवर-गोमूत्रसे वायोगैस, ऊर्जा, जैविक उर्वरक, रासायनिक विषाक्ततासे मुक्त कीटनाशक तथा शुद्ध आयुर्वेदिक ओषधियॉ, वीजोंको उपचारित और संस्कारित करनेकी विधियों आदिपर वैज्ञानिक पद्धतिसे कार्य, शोध, अनुसंधान-प्रयोग, परीक्षण आदि कृषि-विश्वविद्यालयों तथा पशुपालन महाविद्यालयोको साथ जोड़कर प्रोत्साहित करनेका विभिन्न स्तरोपर उपक्रम हो।

२-राज्य-स्तरपर भारतीय देशी अच्छी नस्लके बछड़े, बछड़ियॉ, सॉड़, गाये, बैल आदिकी उपलब्धि सुलभ कराने तथा नस्ल बिगाड़नेवाले नकारा, वृद्ध, बीमार सॉंड़ोको प्रजनन-कार्यसे हटानेकी व्यवस्था की जाय।

३-गायके अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र एवं ग्राम-आधारित विकेन्द्रित स्वरोजगार-मूलक स्वावलम्बी व्यवस्थापर महाविद्यालयो और विश्वविद्यालयोंमें अध्ययन, अध्यापन तथा शोध-अनुसंधानका समुचित प्रबन्ध कराया जाय।

४-साथ ही पश्चिमी राजस्थानके थार मरुस्थलीय जैसलमेर जिलेके सीमाञ्चल-क्षेत्रमे सेवण-जैसी पौष्टिक घासके हजारो किलोमीटरमें फैले प्रकृति-प्रदत्त चरागाहमें ४-५ हजार हैक्टेयर भूमि राज्य-सरकारसे प्राप्त कर वहाँ उपलब्ध राजस्थान नहरके जलसे छिड़काव-पद्धतिद्वारा सेवण-चरागाहका विकास किया जाय। चारा-वृक्षोंका व्यापक वृक्षारोपण, चारा-भण्डारण, सुलभ मूल्योंमें चारा-उपलब्धि एवं गोपालन, गो-संवर्धनकी आधुनिकतम सुविधाओंसे युक्त गो-बस्तियाँ बसायी जायँ।

इस हेतु प्रान्तीय स्तरपर 'गो-रक्षण-संवर्धन-बोर्ड' अथवा 'गो-ग्राम-विकास-परिषद्' या निगमका गठन अत्यावश्यक है। जिसमें सरकारी अधिकारियोंके साथ गोसेवा, विकास, शोध, अनुसंधान आदि कार्योमें संलग्न स्वयंसेवी संस्थाओंके प्रतिनिधियों अथवा विशेषज्ञोंको प्रमुखतासे स्थान दिया जाय।

यह एक व्यापक प्रयोगात्मक कार्य होगा। इससे हजारों गायोंके लिये गोसदनोंकी एवं नस्ल सुधारनेकी समुचित व्यवस्था हो सकेगी। गोरस-गोमयके अधिकतम उपयोगसे गोधनपर आधारित प्रदूषण-मुक्त, स्वावलम्बी, स्वदेशी अर्थव्यवस्थाको मूर्तरूप देने और गोपालनको लाभकारी उद्योग बनाकर, बिना अधिक लागतके लाखों लोगोंको गोबर-गोमूत्रके आधारपर स्वरोजगार, रासायनिक विषाक्ततासे युक्त प्रदूषणसे मुक्ति मिलेगी और गौपर आधारित सात्त्विक संस्कृतिकी पुनःस्थापना की जा सकेगी। साथ ही थार मरु-क्षेत्रका रूपान्तर कर सीमाञ्चलकी सुरक्षा भी की जा सकेगी।

***

गाय एवं गोवंश

(श्रीदीनानाथजी झुनझुनवाला)

यह हार्दिक प्रसन्नताकी बात है कि गीताप्रेसद्वारा वर्ष १९९५ई० मे 'गोसेवा-अङ्क'का प्रकाशन किया जा रहा है। प्रसन्नता इसलिये है कि आज हमारे देशमे गोसेवा, गोपूजा, गोरक्षा आदिपर पुनर्विचार करनेकी आवश्यकता है। आज गाय, गोवंश एवं गोदुग्ध-उत्पादन-लाभ आदिपर भारतमें ही नहीं अपितु विश्वमे इतने शोध-कार्य हो रहे हैं कि इसके महत्त्वका प्रकाशन आवस्यक हो गया है।

गाय, गङ्गा, गीता एवं गायत्री हमारे देशमें प्राचीन कालसे ही सभ्यता एवं संस्कृतिके प्रतीक रहे हैं। ये चारो चीजे हमारे तन-मनमे बसी है। गायका दूध हमारे तन-मनको पुष्ट करता है, गङ्गा हमारे तन-मनको निर्मल करती है, गीता हमें सोद्देश्य एवं सार्थक जीवन जीनेकी कला बताती है, गायत्री-मन्त्र सूर्यकी उपासनाका मन्त्र है और भगवान् भास्कर ही जीवमात्रके जीवनके स्रोत हैं।

हमारे देशकी सभ्यता एवं संस्कृतिसे गाय क्यों जुड़ी है इसपर विचार करनेकी आवश्यकता है। आजके शिक्षित वर्गको केवल श्रद्धा-विश्वासकी बात समझमें नहीं आती। उसे तार्किक ढंगसे गायकी उपयोगिता बतानेसे समझमें आयेगी। हमारे शास्त्रकारोंने हर उपयोगी चीजको धार्मिक कहा है। तार्किक दृष्टिसे गायके महत्त्वको समझनेके लिये हमें देखना है कि समाजमें गायका योगदान क्या है? गाय क्या खाकर हमें क्या देती है।

दुनियामें गाय ही एक ऐसा प्राणी है, जिसकी सभी चीजें उपयोगी हैं। गायका दूध, गोबर, मूत्र सभी लाभकारी हैं। ये उपयोगी चीजें हमें तब सुलभ होती हैं जब गाय उन चीजोको खाती है, जिनका उपयोग मनुष्य नहीं करता। जैसे चावल, गेहूँ इंसान खाता है, परंतु गाय उसका भूसा खाती है। इंसान तेलका सेवन करता है, जबकि गाय खली खाती है। मनुष्य दाल खाता है, परंतु दालका छिलका एवं चूनी गाय खाती है। इस प्रकार तार्किक दृष्टिसे देखें तो समाजमे वही आदमी महान् होता है जो समाजसे लेता कम तथा देता ज्यादा है। ठीक इसी प्रकारसे गाय उन चीजोंको ग्रहण करती है जो मनुष्यके लिये सेवन योग्य नहीं है और बदलेमे अमृत-तुल्य दूध देती है। गायको माताकी श्रेणीमें इसलिये भी रखा गया कि माँका दूध तो मनुष्य एक-दो वर्ष ही पी सकता हे, जबकि गायके दूधका सेवन जीवनपर्यन्त करता हे।

आज विज्ञानकी उपलब्धि आश्चर्यजनक है। नित्य नये आविष्कार हो रहे हैं। विज्ञानने हमे बहुतसे भौतिक साधन सुलभ कराये हैं। यदि विज्ञान ऐसा यन्त्र बना देता जिसमें एक ओरसे भूसा-खली डाली जाती और दूसरी ओरसे दूध निकलता तो गायका महत्त्व कम हो जाता। क्या विज्ञान ऐसा कर सकता है? ईश्वरने कैसी आश्चर्यजनक अनुकम्पा मनुष्य-मात्रपर कर रखी है कि लोक-कल्याणके लिये ऐसा जीव हमें दिया जो बेकार एव अनुपयोगी पदार्थका सेवन कर सबसे उत्तम अमृत-तुल्य पदार्थ—दूध हमे सुलभ कराता है।

विज्ञानने हमे रासायनिक खाद दी। इन रासायनिक खादके कारण जमीनकी उर्वरा-शक्ति कमजोर होने लगी एव ऊसर होनेके स्पष्ट प्रमाण मिलने लगे। अब वैज्ञानिकोंको गोबरकी खादकी याद आयी। आज विज्ञान भी इस बातको स्वीकार करता है कि गोबरकी खादका प्रयोग जमीनकी उर्वराशक्तिको बनाये रखता हे तथा जिस जमीनमें ऊसर होनेके संकेत दीख रहे हो उन्हे भी उर्वर बनाये रखनेके लिये गोबरकी खाद ही सर्वोत्तम ह।

गायका गोवर हमे पवित्रता प्रदान करता है। आयुर्वेदमें पञ्चगव्यका माहात्म्य दिया गया है। हर प्रकारके [illegible] पञ्चगव्यके सेवनका विधान है तथा धार्मिक कृत्यमें [illegible] प्रयोग होता है। आयुर्वेदके अनुसार पञ्चगव्यके [illegible] सेवनसे शरीरमे व्याप्त मन्द विषका प्रभाव [illegible] ओषधियोके प्रयोगके कारण गिरता हुआ [illegible] रूपसे ठीक हो जाता है। आयुर्वेदके अनुसार [illegible] नियमित और नियमपूर्वक सेवनसे कम या [illegible] बीमारी नहीं होती। हृदय ठीक [illegible]

पाचन-शक्ति ठीक रहती है। स्नायु-दौर्बल्य तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग नहीं होते। संक्रामक रोगोंसे भी रक्षा करनेकी इसमें असाधारण क्षमता है। शरीरकी रोग-प्रतिरोधक शक्तिको वढ़ाकर यह मनुष्यको स्वस्थ रखनेमें पूर्ण सक्षम है।

पूजा-स्थलको गोबरसे लीपनेका विधान है। विज्ञानने यह प्रमाणित किया है कि गोबर-लेपनके उपरान्त वह स्थल पवित्र हो गया और भूमिके विकार नष्ट हो गये। ऐसे भी प्रमाण मिले हैं कि गोमूत्रके प्रयोगसे शाक-सब्जीमें कीड़े-मकोड़े नहीं लगते और गोमूत्रके प्रयोगसे उत्पादित शाक-सब्जी किसी भी प्रकारसे हानिकारक नहीं होती। कारण, रासायनिक दवाओंके प्रयोगसे शाक-सब्जीके स्वास्थ्यपर हानिकारक असर होनेके स्पष्ट प्रमाण मिले हैं। यही कारण है कि विदेशोंमें शाक-सब्जीका विक्रय जहाँ भी होता है, वहाँ स्पष्ट अक्षरोंमें लिखा होता है कि इसमें रासायनिक दवाओंका प्रयोग किया गया है। बिना रासायनिक दवाओंके प्रयोगवाली सब्जी कम-से-कम डेढ़े दाममें ऊँचे भावसे बिकती है।

आजका शिक्षित समाज भले ही धार्मिक मान्यताओको पूरी तरह स्वीकार न करे, परंतु उसके व्यावहारिक पक्षको तो उसे स्वीकार करना ही होगा। गाय न केवल जीवित अवस्थामें ही वरन् मरनेके बाद भी उसके हर अङ्ग उपयोगी हैं। चमड़ेसे जूते, सींगसे कई प्रकारके खिलौने, हड्डीसे खाद आदि कई उपयोगी चीजें बनती हैं।

गायका बछड़ा हमारी कृषिका प्रमुख अङ्ग है। आज भी हल-बैलसे खेती होती है। खेतकी जुताईसे लेकर बैलका गोबर एवं मूत्रतक खेतीके काम आता है। इस प्रकार गायकी महान् उपयोगिताके कारण ही वह हमारे देशमें हमारी सभ्यता एवं संस्कृतिकी प्रतीक हो गयी। आज आवश्यकता है गोशालाओंके सुचारु रूपसे संचालनकी, गोरक्षा करनेकी और गोहत्या बंद करनेकी। इस पुनीत कार्यके लिये समाजके स्वयंसेवी आगे आयें और सभ्यता एवं संस्कृतिके प्रतीक गाय एवं गोवंशकी रक्षा करें।

गोशालाएँ जितनी ही समृद्ध होंगी मनुष्य भी उतना ही पुष्ट होगा। गाय एवं गोशालासे मनुष्यकी पुष्टता जुड़ी है। बच्चोंको कुपोषणसे बचानेके लिये एवं नीरोग तथा बलिष्ठ मनुष्य तैयार करनेके लिये गोसेवाकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

गोमय पदार्थोंका आधुनिक उपयोग और उसकी सुरक्षा

(डॉ० श्रीराज गोस्वामी, डी०लिट्०)

भारतमें ८९% गाय एवं ६९% भैंसका उपयोग दूधके लिये होता है। पर पर्याप्त संरक्षणके अभावमें ५८% गायें ही दूध देती हैं। देखा गया है कि गायके दूध एवं घीमें जीवनके सभी आवश्यक खाद्य तत्त्व पाये जाते हैं। रूसके विश्वविख्यात शिरोविचके शोधोंसे यह निष्कर्ष निकला है कि गायके दूधमें रेडियो-विकिरणसे सुरक्षाकी सर्वाधिक क्षमता है। जिन घरोंमे गायके गोबरसे लीपा जाता है, उनपर रेडियो-विकिरणका प्रभाव नहीं होता। यदि घरकी छतपर गायका गोबर लीप दिया जाय तो घरके अंदर रेडिएशन (विकिरण) का घुसना कठिन हो जाता है। यदि बिजली चमक कर गोबरमें गिर जाय तो उसका दूषित प्रभाव वहींपर समाप्त हो जाता है। यही नहीं यदि गोघृत आगमें डालकर धुआँ किया जाय तो वायुमण्डलमें रेडिएशनका प्रभाव बहुत कम हो जायगा। गोघृतका हवन किया जाय तो कार्बनडाईऑक्साइडके बढ़ते खतरेसे बचा जा सकता है।

कृषि भारतीय जीवनकी रीढ़ है और कृषिकी रीढ़ है वृषभ। विडम्बना यह है कि यह रीढ़ आज बड़ी मात्रामें अपने मूलके साथ कट रही है। भूमाताके लिये यदि गोमाताकी रक्षा नहीं हुई तो हमारी कृषि नष्ट हो जायगी, जिससे भारतवर्षकी मूल व्यवस्था एवं समाज-रचना बिखर जायगी। 'वृक्ष लगाओ' आन्दोलनको आज प्रोत्साहन मिला है। भूमिके संरक्षणमें वृक्षोंकी महत्ता तो आजके लोगोंकी

समझमे आ रही है; किंतु गाय और उससे प्राप्त होनेवाले पदार्थोंके अप्रतिम लाभकी ठीक जानकारी न होनेके कारण आज उसकी सर्वथा उपेक्षा हो रही है। यदि केवल खादको ही लीजिये तो रासायनिक खादोसे किस प्रकार भूमिकी उर्वराशक्ति समाप्त होती जा रही है, इसपर लोगोंका ध्यान नहीं है।

पौधोंको एक यूनिट नाइट्रोजनके स्थानपर ५०% यूनिट कार्बनकी आवश्यकता है। रासायनिक खादकी अपेक्षा सेन्द्रिय खादके उपयोगसे दो गुनासे भी अधिक कार्बन उपलब्ध होता है। यदि ठीक पद्धतिसे कम्पोस्ट खाद तैयार की जाय तो भारतके खाद्यकी समीक्षा हल हो सकती है। इस तरह खादके लिये जो पैसे विदेशोको भेजने पड़ते हैं, वह नहीं भेजने पडेगे। नॅडेप कम्पोस्ट-पद्धतिसे विकसित सेन्द्रिय खाद चार गुना प्रभावशाली है। यह कृषि-भूमिको सभी पोषक तत्त्व देकर उर्वरता और उत्पादन बनाये रखती है।

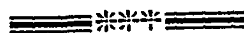
गोबर-गैस प्लांटकी योजना बड़े रूपसे हाथमें लें तो ईंधनके लिये जो पेट्रोलियम पदार्थ विदेशोसे आयात करने पड़ते हैं, वह नहीं करने होंगे। इससे देशको करोडो रुपयेकी बचत होगी। गॉवोमे रोजगार प्राप्त होगा, जिससे अभावग्रस्त लाखो भारतीयोको नवजीवन प्राप्त होगा।

देशकी कुल ६०% करोड़ एकड कृषि-भूमिको प्रतिवर्ष २५० करोड टन सेन्द्रिय खादकी आवश्यकता है। देशमें प्रतिवर्ष ५० करोड़ टन गोबर निर्यात होता है, जिसमे ४०% यानी १५ करोड टनसे जो खाद वनती है, उससे शहरी कम्पोस्टको छोड़कर ८७ करोड टन खाद तैयार होती है। यह हमारी आवश्यकताकी केवल ३७% है। दूसरी ओर रासायनिक फर्टिलाइजरोपर आज अरवो रुपया व्यय हो रहा है, इसीके साथ भूमिकी उर्वरा-शक्ति नष्ट होनेका संकट भी बना हुआ है।

डॉ० अग्रवालका कहना है कि पीले रंगका कैरोटीन नामक द्रव्य केवल गायके घीमें है। कैरोटीन तत्त्वकी कमीसे ही मनुष्योको मुँह, फेफड़ो, मूत्राशयोकी झिल्लीमें और अन्य प्रकारके कैंसर हो जाते हैं। कैरोटीन तत्त्व शरीरमे पहुँचकर विटामिन 'ए' तैयार करता है। यह त्वचा और आँखोके लिये आवश्यक है। इससे रतौंधी रोग दूर होता है। यदि गायके चारेमें अधिक हरा चारा दिया जाय तो वहुत अधिक मात्रामे विटामिन 'ए' प्राप्त किया जा सकता है।

गायका गोवर एवं गोमूत्र, खुजली एव दाद आदि त्वचा-रोगोसे वचाता है। गोवरसे लीपे स्थानपर मक्खी नहीं आती। गोमूत्र औषध है। जिगर तथा तिल्ली आदि रोगोंके निदानमे भी साधक है। गोमूत्र कीटनाशक होनेके कारण फसलपर लगे कीटोको भी छिडकाव करनेपर नष्ट कर देता है। वस्तुतः गो अमृतकुण्ड है। पञ्चगव्य-सेवनसे मनुष्य सदैव निरोगी जीवन व्यतीत कर सकता है। रक्तके विषाणुओंपर पञ्चगव्यके प्रयोगसे विजय प्राप्त की जा सकती है। साराश यह है कि गौ, गङ्गा, गायत्री एव गोपालके चार 'ग' कारसे युक्त सिद्ध मन्त्र सव मनोरथोंको सिद्ध करनेवाला है।

रासायनिक खाद एव कीटनाशक पेस्टीसाइडकी बुराइयाँ सामने आयी है, जमीने खराव होने लगी है, खाद्यान्न विषाक्त होने लगे हैं, प्रदूषण बढ़ रहा है, मानव-जीवन खतरेमे आ गया है। किसान एवं देशके हितचिन्तक चिन्तित हैं। ऐसे समयमें तारणहार केवल सेन्द्रिय खाद ही है। गैस प्लाटके शोधके कारण गोवरसे खाद भी मिल जाता है और खाना भी पक जाता है। कुल मिलाकर गोबरकी उपयोगिता और उसका मूल्य इतना वढ गया है कि बूढ़ा पशु भी भार-रूप नहीं रहा। जितना चारा खाता है, उससे अधिक मूल्यका खाद दे देता है। आर्थिक-सामाजिक एवं सांस्कृतिक सभी दृष्टियोसे गाय, वैल उपयोगी ही नहीं अनिवार्य हो गये हैं।



ब्राह्मणकी गौ चुरानेवाले, बाँझ गायको हलमें जोतनेके लिये नाथनेवाले और पशुओंका हरण करनेवालेके लिये राजाको चाहिये कि उसका आधा पैर कटवा दे। (मनु० ८। ३२५)



गोबरमें लक्ष्मीजीका निवास

एक बार मनोहर रूपधारिणी लक्ष्मीजीने गौओंके समूहमें प्रवेश किया। उनके सौन्दर्यको देखकर गौओंको वड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होने उनका परिचय पूछा।

लक्ष्मीजीने कहा—'गौओ! तुम्हारा कल्याण हो। इस जगत्‌में सब लोग मुझे लक्ष्मी कहते हैं। सारा जगत् मुझे चाहता है। मैंने दैत्योंको छोड़ दिया, इससे वे नष्ट हो गये। इन्द्र आदि देवताओंको आश्रय दिया, तो वे सुख भोग रहे है। देवताओं और ऋषियोंको मेरी ही शरणमें आनेसे सिद्धि मिलती है। जिसके शरीरमें मैं प्रवेश नहीं करती, उसका नाश हो जाता है। धर्म, अर्थ और काम—ये मेरे ही सहयोगसे सुख देनेवाले हो सकते हैं। मेरा ऐसा प्रभाव है। अब मैं तुम्हारे शरीरमें सदा निवास करना चाहती हूँ। इसके लिये स्वयं तुम्हारे पास आकर प्रार्थना करती हूँ। तुमलोग मेरा आश्रय ग्रहण करो और श्रीसम्पन्न हो जाओ।'

गौओंने कहा—'देवि! बात तो ठीक है, पर तुम बडी चञ्चला हो। कहीं भी जमकर रहती नहीं। फिर तुम्हारा सम्बन्ध भी बहुतोके साथ है। इसलिये हमको तुम्हारी इच्छा नहीं है। तुम्हारा कल्याण हो। हमारा शरीर तो स्वभावसे ही हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर है। हमें तुमसे कोई काम नहीं है। तुम जहाँ इच्छा हो, जा सकती हो। तुमने हमसे बातचीत की, इसीसे हम अपनेको कृतार्थ मानती है।'

लक्ष्मीजीने कहा—'गौओ! तुम यह कह क्या रही हो? मैं बड़ी दुर्लभ हूँ और परम सती हूँ, पर तुम मुझे स्वीकार नहीं करतीं! आज मुझे यह पता लगा कि 'बिना बुलाये किसीके पास जानेसे अनादर होता है'—यह कहावत सत्य है। उत्तम व्रतचारिणी धेनुओ! देवता, दानव, गन्धर्व, पिशाच, नाग, मनुष्य और राक्षस बड़ी उग्र तपस्या करनेपर कहीं मेरी सेवाका सौभाग्य प्राप्त करते हैं। तुम मेरे इस प्रभावपर ध्यान दो और मुझे स्वीकार करो। देखो, इस चराचर जगत्‌में मेरा अपमान कोई भी नहीं करता।'

गौओंने कहा—'देवि! हम तुम्हारा अपमान नहीं करतीं। हम तो केवल त्याग कर रही हैं, सो भी इसलिये कि तुम्हारा चित्त चञ्चल है। तुम कहीं स्थिर होकर रहती नहीं। फिर हमलोगोंका शरीर तो स्वभावसे सुन्दर है। अतएव तुम जहाँ जाना चाहो, चली जाओ।'

लक्ष्मीजीने कहा—'गौओ! तुम दूसरोंको आदर देनेवाली हो। मुझको यों त्याग दोगी, तो फिर संसारमें सर्वत्र मेरा अनादर होने लगेगा। मैं तुम्हारी शरणमें आयी हूँ, निर्दोष हूँ और तुम्हारी सेविका हूँ। यह जानकर मेरी रक्षा करो। मुझे अपनाओ। तुम महान् सौभाग्यशालिनी, सदा सबका कल्याण करनेवाली, सबको शरण देनेवाली, पुण्यमयी, पवित्र और सौभाग्यवती हो। मुझे बतलाओ मैं तुम्हारे शरीरके किस भागमें रहूँ?'

गौओंने कहा—'यशस्विनी! हमे तुम्हारा सम्मान अवश्य करना चाहिये। अच्छा, तुम हमारे गोबर और मूत्रमें निवास करो। हमारी ये दोनों चीजें बड़ी पवित्र हैं।'

लक्ष्मीजीने कहा—'सुखदायिनी गौओ! तुमलोगोंने मुझपर बड़ा अनुग्रह किया। मेरा मान रख लिया। तुम्हारा कल्याण हो। मैं ऐसा ही करूँगी।' गौओके साथ इस प्रकार प्रतिज्ञा करके देखते-ही-देखते लक्ष्मीजी वहाँसे अन्तर्धान हो गयीं (महा०, अनु०, अध्याय ८२)।

मांस-भक्षणके दोष

(१) मांसभक्षण भगवत्प्राप्तिमें बाधक है, (२) मांसभक्षणसे ईश्वरकी अप्रसन्नता होती है, (३) मांसभक्षण महापाप है, (४) मांसभक्षणसे परलोकमें दुःख प्राप्त होता है, (५) मांसभक्षण मनुष्यके लिये प्रकृतिविरुद्ध है, (६) मांसभक्षणसे मनुष्य पशुत्वको प्राप्त होता है, (७) मांसभक्षण मनुष्यकी अनधिकार चेष्टा है, (८) मांसभक्षण घोर निर्दयता है, (९) मांसभक्षणसे स्वास्थ्यका नाश होता है और (१०) मांसभक्षण शास्त्र-निन्दित है।

(श्रीजयदयालजी गोयन्दका)

आयुर्वेदशास्त्रमें गौद्वारा चिकित्साकी महत्त्वपूर्ण बातें

(डॉ० श्रीअखिलानन्दजी पाण्डेय, आयुर्वेदाचार्य)

आयुर्वेद अत्यन्त प्राचीन शास्त्र है। विशेषकर यह अथर्ववेदमे विस्तारसे वर्णित है। आयुर्वेद शाश्वत एवं अनादि है।

आयुर्वेदकी दृष्टिसे गौ हमारी माता है। भारतीय संस्कृतिकी रीढ़ है। इसका स्थान सर्वोपरि है। सृष्टिकालसे ही गोमहिमा सुविख्यात है।

अथर्ववेदमें गौमें देवताओंका निवास माना गया है। वेदने गायके रूपको सम्पूर्ण विश्व-ब्रह्माण्डका रूप माना है—

एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्।

पुराकालमे ऋषिकुल और गुरुकुलके आश्रममे गाये होती थीं। ब्रह्मचारियोंको गोमाताकी सेवामें कठोर परिश्रम करना पड़ता था। गौ माताकी सेवामे उन्हे व्यायामसे अधिक परिश्रम पडता था। जिससे स्वास्थ्य बहुत ही उत्तम होता था। किसी प्रकारकी व्याधि नहीं होने पाती थी। शरीर पूर्णरूपसे नीरोग रहता था।

गोदुग्ध—विश्वमे गोदुग्धके सदृश पौष्टिक आहार अन्य कोई है ही नहीं, इसे अमृत कहा गया है। बाल्यावस्थामें दुग्ध तीन सालतक बाल्यजीवनका मुख्य आधार है। मातृविहीन बालक दुग्धपानसे जीवित रहता है। जन्मसे मृत्युपर्यन्त किसी भी अवस्थामे दुग्ध निषिद्ध नहीं है। स्वास्थ्यकी दृष्टिसे दुग्धको पूर्णाहार माना गया है। शरीर-संवर्धन-हेतु इसमे प्रत्येक तत्त्व विद्यमान हैं। मानवकी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक शक्ति बढ़ानेवाला गोदुग्ध ही है। प्राचीन कालमें ऋषि-मुनि गोदुग्ध पीकर तृप्त होते, तपस्या करते तथा गोसेवामें रत रहते थे। सुश्रुतसंहितामे दुग्धको सभी प्राणियोका आहार बताया गया है। चरक-संहितामें गोदुग्धको जीवनी-शक्तियोमे सर्वश्रेष्ठ रसायन कहा गया है—

प्रवर जीवनीयानां क्षीरमुक्तं रसायनम्॥

सुश्रुतने भी गोदुग्धको जीवनीय कहा है। (सुश्रुत०, अ० ४५)

गोदुग्ध जीवनके लिये उपयोगी, जराव्याधिनाशक रसायन, रोग और वृद्धावस्थाको नष्ट करनेवाला, क्षतक्षीण-रोगियोके लिये लाभकर, बुद्धिवर्धक, बलवर्धक, दुग्धवर्धक तथा किंचित् दस्तावर है और क्लम (थकावट), चक्कर आना, मद, अलक्ष्मी, श्वास, कास (खाँसी), अधिक प्यास लगना, भूख, पुराना ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त—इन रोगोंको नष्ट करता है। दुग्ध आयु स्थिर रखता है, आयुको बढ़ाता है।

गोदधि—यह उत्तम, बलकारक, पाकमे स्वादिष्ट, रुचिकारक, पवित्र, दीपन, स्निग्ध, पौष्टिक और वातनाशक है। सब प्रकारके दहियोमे गोदधि अधिक गुणदायक है—

उक्तं दध्नामशेषाणा मध्ये गव्यं गुणाधिकम्॥

(भावप्र०, पूर्व० ६५। १०)

गोतक्र—गायका मट्ठा—यह त्रिदोषनाशक, पथ्योंमें उत्तम, दीपन, रुचिकारक, बुद्धिजनक, बवासीर और उदर-विकारनाशक है।

गायका मक्खन—यह हितकारी, वृष्य, वर्णकारक, बलकारक, अग्निदीपक, ग्राही, वात-पित्त-रक्तविकार, क्षय, बवासीर, अर्दित और कासको नष्ट करता है। बालकोंके लिये अमृततुल्य लाभकारी है।

गोघृत—यह कान्ति और स्मृतिदायक, बलकारक, मेध्य, पुष्टिकारक, वात-कफ-नाशक, श्रमनिवारक, [illegible] हृद्य, अग्निदीपक, पाकमे मधुर, वृष्य, [illegible] रखनेवाला, हव्यतम, बहुत गुणोंवाला है और [illegible] इसकी प्राप्ति होती है।

गोमूत्र एवं गोमय—यह कटु, तीक्ष्ण और उष्ण [illegible] है तथा क्षारयुक्त होनेसे वातवर्धक नहीं होता। [illegible]

अग्निदीपक, मेध्य, पित्तजनक तथा कफ-वात-नाशक होता है। शूल, गुल्म, उदररोग, आनाह, विरेचन-कर्म, आस्थापन, वस्ति आदि व्याधियोंमें गोमूत्रका प्रयोग करना चाहिये।

आयुर्वेदशास्त्रानुसार सम्यक्-रूपसे गोमूत्र-सेवनसे कुष्ठादि अन्य चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। गोमयको स्वच्छता प्रदान करनेवाला पवित्र माना गया है। अधिकांश भारतीय जन अपने घरोंको गोबरसे लीपकर शुद्ध करते है। गोबर कीटाणुनाशक होता है। शरीर-शुद्धिकरण-हेतु पञ्चगव्यका प्रयोग होता है।

आयुर्वेदकी दृष्टिसे गौ तथा गव्य पदार्थोंकी अद्वितीय महिमा है। गोसेवासे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। गोसेवासे समस्त पुण्य अविलम्ब प्राप्त होते हैं। आयुर्वेदके उत्थानके लिये गोरक्षण अति आवश्यक है। इससे पीडित रोगियोंके रोगका निवारण होगा, भारतीय संस्कृतिका पुनरुत्थान होगा और जनता स्वास्थ्य-लाभ कर सकेगी।



गोषडङ्गका चिकित्सामें उपयोग

(डॉ० श्रीसीतारामजी जायसवाल, आयुर्वेद-शास्त्री)

गायके दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्रका एक निश्चित अनुपातमें मिश्रण पञ्चगव्य कहलाता है। ये पॉचों तथा गायसे प्राप्त होनेवाली गोरोचना—ये छः पदार्थ गोषडङ्ग कहलाते हैं। आयुर्वेदिक ग्रन्थोंमें इनके कोटिशः उपयोग निर्दिष्ट हैं। यहाँ संक्षेपमें कुछका निर्देश किया जाता है—

(१) गो-दधिका उपयोग

दधि (दही) उष्ण, अग्निको प्रदीप्त करनेवाला, स्निग्ध, कुछ कषाय, गुरु तथा विपाकमें अम्ल होता है। मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि तथा कृशतामें इसका उपयोग प्रशस्त है। यह बल एवं शुक्रको बढ़ाता है (भावप्रकाश, पूर्व० १५। १-२)।

१-लघु गङ्गाधर चूर्ण—नागरमोथा, इन्द्रजौ, बेलकी मज्जा (गूदी), लोध्र, मोचरस एवं धायका फूल—इन छः द्रव्योंका चूर्ण बनाकर दधिके साथ गुड़ मिलाकर पीनेसे यह सभी प्रकारके अतिसार एवं प्रवाहिकाको रोकनेमे सर्वोत्तम है। (आरोग्य-प्रकाश)

२-अजमोदादिचूर्ण—अजमोदा, मोचरस, शुण्ठी, धायका पुष्प—इन चार द्रव्योंको पीसकर चूर्ण बनाकर गौके दहीमें चूर्णको अच्छी तरह फेटकर सेवन करनेसे वह गङ्गाकी धाराके समान प्रवाहित अतिसारको भी रोकनेमें समर्थ है। (शार्ङ्गधरसंहिता)

३-तक्रारिष्ट—अजवाइन, आमला, काली मिर्च—प्रत्येक १२-१२ तोला, पाँचों नमक—प्रत्येक ४ तोला इनका चूर्ण बनाकर मिट्टीके एक प्यालेमें डालकर उसमें तक्र ६ सेर ६ छटॉक २ तोला डाल दें और पात्रका मुख बंद कर संधानके निमित्त एक माहके लिये रख दें। बादमें छानकर सेवन करें।

मात्रा और अनुपात—डेढ़ तोलासे ढाई तोला प्रातः-सायं जल मिलाकर लें।

गुण और उपयोग—यह उत्तम दीपन तथा पाचन करनेवाला है तथा शोथ, गुल्म, अर्श, कृमि, प्रमेह, अतिसार और उदर-रोगको नष्ट करता है। (भावप्रकाश)

(२) गो-दुग्धकी विशेषताएँ

अन्य दुग्धोंकी अपेक्षा गौका दूध विशेष रूपसे रस एवं विपाकमें मधुर, शीतल, दुग्धको बढ़ानेवाला, स्निग्ध वात-पित्तनाशक तथा रक्तविकारनाशक, गुरु और बुढ़ापेके समस्त रोगोंका शामक है, यह सर्वदा सेवन-योग्य है। काली गौका दुग्ध वात-नाशक तथा अधिक गुणवान् होता है। पीली (लाल) गौका दुग्ध वात तथा पित्त-शामक होता है। श्वेत गौका दूध कफकारक तथा गुरु होता है और लाल एवं चितकबरी गौका दूध वातनाशक होता है।

गौका धारोष्ण दुग्ध बलकारक, लघु, शीत, अमृतके समान, अग्निदीपक, त्रिदोषशामक होता है। प्रातःकाल पिया हुआ दूध वृष्य, बृंहण तथा अग्निदीपक होता है, दोपहरमें

पिया हुआ दूध बलवर्धक, कफनाशक, पित्तनाशक होता है और रात्रिमें पिया हुआ दूध बालकके शरीरको बढ़ाता है, क्षयका नाश करता है, बूढ़ोंके शरीरमे तेज उत्पन्न करता है। पथ्य है, अनेक विकारोंको शान्त करता है। इसलिये दूध प्रतिदिन पीना चाहिये। (भावप्रकाश, पूर्वखण्ड १४)

पञ्चमूली पय—छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, गोखरू—इन क्षुद्रपञ्चमूलसे यथाविधि साधित दूधको पीनेसे ज्वरका रोगी, कास, श्वास, शिरःशूल, पार्श्वशूल, प्रतिश्याय (जुकाम)—इनसे छूट जाता है। क्षीरपाकका विधान यह है—

यदि प्रमाणका निर्देशन न हो तो सामान्यतः औषधसे आठ गुना दूध और दूधसे चार गुना जल डालकर पकाना चाहिये। जब जल उड़ जाय और दूध रह जाय तो उतार ले और छान ले। यह दूधको सिद्ध करनेकी विधि है। इस परिभाषाके अनुसार क्षुद्रपञ्चमूल २ तोला, दूध १६ तोला, जल ६४ तोला लेकर पकावे। संस्कृत होनेपर छान ले। वात-पित्तका नाशक होनेसे यहाँ स्वल्प पञ्चमूल लिया है। (चरकसंहिता)

त्रिकण्टकादिपय—गोखरू, बलामूल, छोटी कटेरी, गुड़, सोंठ—इनसे साधित गौका दूध मलबन्ध और मूत्रबन्धको नष्ट करता है। शोथ और ज्वरको हरता है। इसमें गुड़को छोड़कर शेष द्रव्योंके कल्कसे यथाविधि दूधको सिद्ध करना चाहिये, पश्चात् वस्त्रसे छानकर गुड़ डालकर रोगी पीवे। (चरकसंहिता)

(३) गौका घृत

गौका घृत विशेष रूपसे नेत्रके लिये उपयोगी है। यह वृष्य, अग्निदीपक, रस एवं विपाकमे मधुर, शीत तथा तीनों दोषोका शामक है और मेधा, लावण्य, कान्ति, ओज तथा तेजकी वृद्धि करनेवाला, अलक्ष्मी, पाप तथा भूतबाधा-नाशक है। गुरु, बलवर्धक, पवित्र, आयु बढ़ानेवाला, कल्याणकारक, रसायन, उत्तम गंधवाला, देखनेमें मनोहर तथा सब घृतोमें अधिक बलवान् है। (भावप्रकाश, पूर्व० १८। ४-६)

हिंग्वादि घृत—हींग, सरसों, बालवच, सोठ, मरीच एवं पीपल २-२ कर्ष, गोघृत १ प्रस्थ तथा गोमूत्र ४ प्रस्थ मिलाकर घृत सिद्ध करे। इसका पान, नस्य एवं अभ्यङ्ग करनेसे देवग्रहसे मुक्ति प्राप्त होती है। (अष्टाङ्ग-हृदय अ० ५)

पञ्चगव्य घृत—गोबरका स्वरस, गोदुग्ध, गौका दही, गोमूत्र तथा गोघृतको मिलाकर सिद्ध करे। यह घृत अपस्मार, ज्वर, उन्माद तथा कामलाको शान्त करता है।

पञ्चकोलादि घृत—पीपल, पिपलामूल, चव्य, चित्रा (चित्रकमूल) तथा सोठ और जौखार १-१ पल, गोमूत्र १ प्रस्थ (सेर) तथा गोदुग्ध एक सेर मन्द अग्निपर पका ले और फिर छान ले। यह घृत रसवाही स्रोतोंको शुद्ध करता है और गुल्म-ज्वर, उदर-रोग, ग्रहणी-रोग, पीनस, श्वास-कास, मन्दाग्नि, शोथ तथा उद्गारको नष्ट करता है। इस घृतका नाम 'षट्पल घृत' भी है। (अष्टाङ्ग-हृदय राजयक्ष्मादि चिकित्सा)

(४) गोमय (पुरीष)

सामान्यतया गोमय कटु, उष्ण, वीर्यवर्धक, त्रिदोष-शामक तथा कुष्ठघ्न, छर्दिनिग्रहण, रक्तशोधक, श्वासघ्न और विषघ्न है।

उपयोगिता—विषोंमे गोमय-स्वरसका लेप एवं अञ्जन किया जाता है। गायका गोबर तिमिर-रोगमें नस्य-रूपमें प्रयुक्त होता है। विजौरा नीबूकी जड, घी और मनःशिलाको गौके गोबरके रसमे पीसकर लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढ़ती है तथा पिटिका (बालतोड़) और व्यङ्गकी बढ़ती कालिमापर इसका लेप करनेसे लाभ होता है।

(५) गोमूत्र

गौका मूत्र कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, खारा, तिक्त, कषाय लघु, अग्निदीपक, बुद्धिवर्धक, पित्तकारक तथा वात-कफ-नाशक है और शूल, गुल्म, उदररोग, आनाह, कण्डु नेत्र-रोग, मुख-रोग, किलास, वातरोग, वस्तिरोग, कुष्ठ, कास श्वास, शोथ, कामला तथा पाण्डुरोगको नष्ट करता है; केवल गोमूत्र पीनेसे कण्डु, किलासरोग (श्वित्र) शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, अतिसार, वातव्याधि, मूत्रावरोध, कास, कुष्ठ, उदररोग, कृमिरोग तथा पाण्डुरोग नष्ट हो जाता है। यह विशेष रूपसे प्लीहोदर, श्वास, कास, शोथ, मलरोध, शूल, गुल्म, आनाह, कामला तथा पाण्डुरोगको नष्ट करता है। यह कषाय तथा तीक्ष्ण है, कानमें डालनेसे कर्ण-शूलको नष्ट करता है। (भावप्रकाश पूर्व० [illegible])

गोमूत्रासव—गौका मूत्र १६ सेर, चित्तामूल, सोंठ, मरिच, पीपलका चूर्ण, मूत्रका दशमांश तथा मधु १ तोला मिलाकर घृतस्निग्ध भाण्डमें धर दे, १५ दिन पश्चात् संधान हो जानेपर श्वित्ररोगी पीये और सब आहार-विहार आदि कुष्ठ रोगीके समान करे।

हरताल १ शाण (२४ रत्ती), बाकुचीके बीज ४ शाण (१२ माशा) को गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे श्वेत कुष्ठ नष्ट होता है। (बृहन्निघण्टुरत्नाकर)

प्रबोधाञ्जन—शिरीषके बीज, पिप्पली, कृष्णमरिच, सेंधा नमक, लहसुन, मनःशिला और वच—इन द्रव्योंको समान मात्रामें लेकर गोमूत्रमे पीस ले और वर्तिका बना ले। इस वर्तिकाको पानीमें घिसकर नेत्रोमें अञ्जन करनेसे बेहोशीका रोग नष्ट होता है। खदिरकी छाल, नीम और जामुनकी छाल अथवा कुरैयाकी छाल तथा सैन्धवको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अरुषिका (सिरका छाजन) रोग नष्ट होता है। (शार्ङ्गधरसहिता)

(६) गोरोचना

गोरोचना रसमे तिक्त, वीर्यमे शीत, मङ्गलकारी, कान्तिकारक और विष, निर्धनता (दारिद्र्य), ग्रहदोष, उन्माद, गर्भस्राव-दोष तथा रक्त-रोग इत्यादिका नाशक है।

गोरोचना गौ तथा बैलके पित्ताशयके पित्त नामक द्रव्य पदार्थका सुखाया हुआ द्रव्य है। यह बालकोंमें श्वास या हब्बा-डब्बा या पसली चलना नामक रोगकी परमौषध है। मात्रा आधासे एक रत्ती दूध आदिमें घोलकर पिलाया जाता है।

स्वर्णक्षीरा (सत्यानासी—भड़भाँड़) की जड़, कासीस, वायविडङ्ग, मैनसिल, गोरोचना और सैन्धव—इन छः द्रव्योंको समान मात्रामें लेकर जलमें पीसकर लेप करनेसे श्वित्र (श्वेतकुष्ठ-फुलबहरी) (White leprosy Leucoderma) रोग नष्ट होता है। (वृन्दमाधव एवं चक्रदत्त)

मैनसिल, भुना तूतिया, कस्तूरी, जटामासी, श्वेत चन्दन तथा गोरोचना १-१ तोला और सबसे दशमांश कर्पूर मिलाकर पीसा गया अञ्जन 'अशीति गुण' कहलाता है अर्थात् इस अञ्जनमें ८० गुण हैं। (अष्टाङ्ग-हृदय नेत्र-रोग)

इस प्रकार गोदुग्ध तथा गोमय आदि पदार्थोंके बहुतसे उपयोग हैं। किन्हीं योग्य वैद्य आदिके उचित परामर्शपूर्वक इनका यथोचित सेवन तथा पथ्य-सेवनसे अवश्य ही विलक्षण लाभ होता है। न केवल काय-चिकित्सा अपितु अनेकों मन-बुद्धि-सम्बन्धी रोगोंके भी ये परमौषध हैं।



छुई-मुई काया—दूधकी माया

(श्रीमती सुनीता मुखर्जी)

भारतवासियोंको इस बातका सबक सीखना चाहिये कि विदेशोंमें सभी जगह गोदुग्धकी डेयरीका विकास हुआ है, परंतु हमारे यहाँ गाय बेचकर भैंस खरीदी जा रही है जिसके असरसे नयी पीढ़ी आलसी और मंद-बुद्धि होती जा रही है। गायका तो मूत्र भी अमृत-समान है। शरीर सुडौल, सुन्दर और चुस्त बनाना हो तो गायका दूध ही पीये। यहाँ संक्षेपमे दुग्ध-चिकित्साके कुछ प्रयोग दिये जा रहे हैं।

जिगरमें विकार—पाचन-संस्थानके सभी दोष गोदुग्धसे दूर किये जा सकते है। भारतकी देखा-देखी रूसने दूध-चिकित्सा करके सारे यूरोपमें इसका प्रचार किया है। 'कुछ मत खाइये और केवल दूध पीते रहिये। शहदका जी भरके प्रयोग करें। जिगर तिल्ली, गुर्दे आदि सही काम करने लगेंगे।'

जुकाम—कुछ डॉक्टर जुकाम-नजलामें दूधकी मनाही कर देते हैं, जबकि जुकाममें पेटको स्वच्छ रखनेका काम दूध आसानीसे कर देता है। जुकाममें दूषित पानी नाकसे बहने दे और दूधमें शहद घोलकर पीते रहें। भोजन सादा करें, आँतों और नस-नाड़ियोंकी पूरी सफाई कर डालें। तीसरे दिनसे सब विकार अपने-आप दूर होने लगेंगे। गोलियाँ खाकर जुकाम हर्गिज न रोकें, नहीं तो दूषित पानी नाकसे बहनेकी बजाय खूनमें जहरकी तरह घुल जायगा। बुखार अलग तडपायेगा।

डिप्थीरिया—आम बोलीमे इसे पसली चलना या हव्वा-डब्बा भी कहा जाता है। बच्चोंका यह रोग जानलेवा भी होता है। इससे बच्चेका दम घुटता रहता है और आँखे बाहर निकल आती हैं। बुखार जोरोंका रहता है। २ चम्मच गुनगुने दूधमें $\frac{1}{2}$ चम्मच घी और एक चम्मच शहद मिलाकर बच्चेको चटाना शुरू कर दें। गले और सीनेकी सफाई होते ही बच्चा सुखकी साँस लेने लगेगा। घीसे दुगुनी मात्रामे शहद डाले। गायका गुनगुना घी बच्चेके सीने और गलेपर भी मलें। इससे कफ पिघलकर हट जायगी और श्वास-नली सहज हो जायगी।

तपेदिक—जो लोग तपेदिकके रोगीको दूध पीनेसे रोकते है वास्तवमें वे दूधकी शक्तिको नहीं पहचानते। यूनान, रूस, फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन, अरब और स्विटजरलैंडके विख्यात डॉक्टरोने प्रयोगोंके बाद साबित कर दिया है कि दूधसे तपेदिकका भी सही इलाज किया जा सकता है। ५० ग्राम मिश्री और १० ग्राम पिपली पीस-छानकर २५० ग्राम दूधमें उतना ही पानी मिलाकर काढ़ा तैयार कर लें। दूध बच जानेपर इसे उतार लें और १०-१५ ग्राम गोघृतमें २०-२५ ग्राम शहद घोल लें। इसे इतना फेटे कि दूधपर झाग पैदा हो जाय। इसको चूसते रहे और मनमें विश्वास पैदा करें कि आप अब स्वस्थ होनेकी राहपर चल पड़े हैं। फेफड़ोमें छेद भी होगे तो धीरे-धीरे भरने लगेंगे।

थकावट—चाहे कोई ५० कोस पैदल चलकर आया हो और उसका रोम-रोम दुख रहा हो तो उसके गाढ़े दूधमे ढेर सारी मलाई डालकर पीनेको दे। इसके साथ ही परातमें गुनगुना पानी डालकर २ चम्मच नमक डालें। इस पानीमे घुटनोंतक पाँव और टाँगे मल-मलकर धोये। सारी थकान निकल जायगी।

धतूरेका विष—गायके दूधमे गायका ही घी मिलाकर पिलाते रहे। गोघृत-जैसा विषनाशक अमृत शायद ही कोई दूसरा हो।

नकसीर—एक कप उबले दूधमें गुनगुने-से-गुनगुने [illegible] डालें और कुछ पल नसवारकी तरह सूँघें। जब दूध गुनगुना रह जाय तो मिश्री घोलकर पिये। इससे रक्तका दबाव [illegible] रहेगा और नकसीर भी नहीं फूटेगी। यदि एक [illegible] निराहार पेट खाते रहे और दूधमें गाजरका रस पीते [illegible] नकसीर फूटनेकी नौबत नहीं आयेगी।

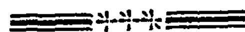
नाभि फूलना—बच्चेकी नाभि फूलने लगे तो [illegible] कोई गोघृत ही चुपड़ा करता है। आप गर्म घीमें हल्दीकी चुटकी भुरककर रूईका फाहा तह कर लें और सुहाना गर्म रह जानेपर नाभिपर रखकर ऊपरसे पट्टी लपेट दें। नाभि सिकुड़कर सहज-रूपमे आ जायगी।

नासूर—यह हड्डीतक पहुँच जानेवाला फोड़ा है। जिसके मवादकी बदबूसे डॉक्टर और सगे-सम्बन्धी भी रोगीसे दूर रहना चाहते है। पुराने गायके घीद्वारा नासूर जल्द सूखेगा। पहले नीम-पत्तोंके काढेसे फोड़ा साफ करे। उसके बाद कपडेकी बत्ती बनाकर गोघृतमें तर करके नासूरमे डाल दे। दिनमे ३ बार नहीं तो २ बार बत्ती बदल दे। डेढ़-दो महीनोमें फोड़ेकी जड़ें सूख जायँगी और घाव भरने लगेगा। दूधमे घी डालकर पिलाते भी रहे, ताकि शरीर निर्विष रहे।

पेटमे कीड़े—कड़वी कसैली दवाएँ खानेके बजाय दूधमे शहद मिलाकर पीना शुरू कर दे। इससे धीरे-धीरे पुराने कीड़े मर जायँगे नये पैदा नहीं होंगे।

छाले फूलना—छाले चाहे गर्मीके उबालमे पड़े हों या आगसे जलनेपर—दोनो स्थितिमे गो-दुग्धकी मलाई या घी लेप दीजिये, जलन भी शान्त होगी, छाले फटनेपर घाव भी भर जायँगे।

एक कप पानीमे २ चम्मच दूध डालकर रोज चेहरा मल लिया करें, मुखड़ेपरसे छावँ हट जायगी और चेहरा भी दमकने लगेगा। दूधकी मलाई लगानेसे ओंठ [illegible] फटनेकी नौबत ही नहीं आयेगी। तेज धुकानसे [illegible] मालिश करनेसे भी शरीर स्वस्थ रहता है।



आज भारतका मुख्य प्रश्न है पर्याप्त परिमाणमे दूधका मिलना और गो-वंशको सुधारना। —[illegible]



गोमूत्र तथा गोबरसे रोग-निवारण

(वैद्य श्रीबालकृष्णजी गोस्वामी, आयुर्वेदाचार्य)

सनातन धर्ममें गायको माताके समान सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। गाय सदैव कल्याणकारिणी तथा पुरुषार्थ-चतुष्टयकी सिद्धि प्रदान करनेवाली है। मानवजातिकी समृद्धि गायकी समृद्धिके साथ जुड़ी हुई है। गोमाताका हमारे उत्तम स्वास्थ्यसे गहरा सम्बन्ध है। गाय आधिदैविक, आधिदैहिक एवं आधिभौतिक तीनों तापोंका नाश करनेमें सक्षम है। इसी कारण अमृततुल्य दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमय तथा गोरोचना—जैसी अमूल्य वस्तुएँ प्रदान करनेवाली गायको शास्त्रोंमें सर्वसुखप्रदा कहा गया है।

गोमूत्र

गोमूत्र मनुष्यजाति तथा वनस्पति-जगत्को प्राप्त होनेवाला दुर्लभ वरदान है। यह धर्मानुमोदित, प्राकृतिक, सहज प्राप्य, हानिरहित, कल्याणकारी एवं आरोग्यरक्षक रसायन है। स्वस्थ व्यक्तिके स्वास्थ्यरक्षण तथा आतुरके विकार-प्रशमन-हेतु आयुर्वेदमें गोमूत्रको दिव्यौषधि माना गया है। आयुर्वेदाचार्योंके मतसे गोमूत्र कटु-तिक्त तथा कषाय-रसयुक्त, तीक्ष्ण, उष्ण, क्षार, लघु, अग्निदीपक, मेधाके लिये हितकर, पित्तकारक तथा कफ और वात-नाशक है। यह शूल, गुल्म, उदररोग, अफरा, खुजली, नेत्ररोग, मुखरोग, कुष्ठ, वात, आम, मूत्राशयके रोग, खाँसी श्वास, शोथ, कामला तथा पाण्डुरोगको नष्ट करनेवाला होता है। सभी मूत्रोंमें गोमूत्र श्रेष्ठ है। आयुर्वेदमें जहाँ 'मूत्र' शब्दका उल्लेख है वहाँ गोमूत्र ही ग्राह्य है।

स्वर्ण, लौह आदि धातुओ तथा वत्सनाभ, धत्तूर तथा कुचला-जैसे विषद्रव्योंको गोमूत्रसे शुद्ध करनेका विधान है। गोमूत्रद्वारा शुद्धीकरण होनेपर द्रव्य दोषरहित होकर अधिक गुणशाली तथा शरीरके अनुकूल हो जाता है।

आधुनिक दृष्टिसे गोमूत्रमें पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नेशियम, क्लोराइड, यूरिया, फास्फेट, अमोनिया, क्रिएटिनिन आदि विभिन्न पोषक क्षार विद्यमान रहते हैं।

रोग-निवारण-हेतु विभिन्न विधियोंद्वारा गोमूत्रका सेवन किया जाता है, जिनमें पान करना, मालिश, पट्टी रखना, नस्य, एनिमा और गर्म सेक करना प्रमुख है। पीने-हेतु ताजा तथा मालिश-हेतु २ से ७ दिन पुराना गोमूत्र उत्तम रहता है। बच्चोंको ५-५ ग्राम तथा बड़ोंको रोगानुसार १० से ३० ग्रामतककी मात्रामें दिनमें दो बार गोमूत्रका पान करना चाहिये। इसके सेवनकालमे मिर्च-मसाले, गरिष्ठ भोजन, तंबाकू तथा मादक पदार्थोंका त्याग करना आवश्यक है। व्याधिविनाशार्थ गोमूत्रका प्रयोग निम्न रोगोंमें विशेष उल्लेखनीय है—

(१) यकृत्के रोग—जिगरका बढ़ना, यकृत्की सूजन तथा तिल्लीके रोगोंमें गोमूत्रका सेवन अमोघ ओषधि है। पुनर्नवाके क्वाथमें समान भाग गोमूत्र मिलाकर पीनेसे यकृत्की शोथ तथा विकृतिका शमन होता है। इस अवस्थामें गोमूत्रका सेक भी लाभप्रद है। गर्म गोमूत्रमें कपड़ा भिगोकर प्रभावित स्थानपर सेक करना चाहिये।

(२) विबंध—जीर्ण विबंध या कब्ज होनेपर गोमूत्रका पान करना चाहिये। प्रातः-सायं ३-३ ग्राम हरड़के चूर्णके साथ इसका सेवन करनेसे पुराना कब्ज नष्ट हो जाता है।

(३) बवासीर—अर्श अत्यन्त कष्टदायक तथा कृच्छ्रसाध्य रोग है। गोमूत्रमें कलमीशोरा २-२ ग्राम मिलाकर पीनेसे बवासीरमें बहुत लाभ होता है। गर्म गोमूत्रका स्थानीय सेक भी फायदा पहुँचाता है।

(४) जलोदर—पेटमें पानी भर जानेपर गोमूत्रका सेवन हितकारी है। ५०-५० ग्राम गोमूत्रमें दो-दो ग्राम यवक्षार मिलाकर पीते रहनेसे कुछ सप्ताहोंमें पेटका पानी कम हो जाता है। जलोदरके रोगीको गोदुग्धका ही पान करवाना चाहिये।

(५) उदावर्त—उदरमें वायु अधिक बननेसे यह विकार उत्पन्न होता है। प्रातःकाल आधा कप गोमूत्रमें काला नमक तथा नीबूका रस मिलाकर पीनेसे गैसरोगसे कुछ दिनोंमें ही छुटकारा मिल जाता है। इस-व्याधिमें गोमूत्रको पकाकर प्राप्त किया गया क्षार भी गुणकारी है। भोजनके प्रथम ग्रासमें आधा चम्मच गोमूत्र-क्षार तथा एक

चम्मच गोघृतको मिलाकर भक्षण करनेसे वायु नहीं बनती।

(६) मोटापा—यह शरीरके लिये अति कष्टदायक तथा बहुतसे रोगोंको आमन्त्रित करनेवाला विकार है। स्थूलतासे मुक्ति पाने-हेतु आधा गिलास ताजा पानीमें चार चम्मच गोमूत्र, दो चम्मच शहद तथा एक चम्मच नीबूका रस मिलाकर नित्य पीना चाहिये। इससे शरीरकी अतिरिक्त चर्बी समाप्त होकर देह-सौन्दर्य बना रहता है।

(७) चर्मरोग—खाज, खुजली, कुष्ठ आदि विभिन्न चर्मरोगोके निवारणहेतु गोमूत्र रामबाण ओषधि है। नीम-गिलोयके क्वाथके साथ दोनो समय गोमूत्रका सेवन करनेसे रक्तदोष-जन्य चर्मरोग नष्ट होते हैं। जीरेको महीन पीसकर गोमूत्रसे संयुक्त कर लेप करने या गोमूत्रकी मालिश करनेसे चमड़ी सुवर्ण तथा रोगरहित हो जाती है।

(८) पुराना जुकाम—विजातीय तत्त्वोके प्रति असहिष्णुतासे बार-बार जुकाम होता रहता है। नासारन्ध्रोंमे सूजन स्थायी हो जानेसे पीनस बन जाता है। इस अवस्थामें गोमूत्रका मुखद्वारा सेवन तथा नस्य लेनेसे रोगमुक्ति हो जाती है। फूली हुई फिटकरीका चौथाई चम्मच चूर्ण आधा कप गोमूत्रमे मिलाकर पीनेसे जुकाम ठीक हो जाता है। यह प्रयोग श्वास रोगको भी नष्ट करनेमें समर्थ है।

(९) शोथ—शरीरकी धातुपात-क्रियामें विषमता होनेसे शोथ उत्पन्न होता है। पुनर्नवाष्टक क्वाथके साथ गोमूत्रका सेवन शोथको दूर करता है। इस रोगमे घी तथा नमकका प्रयोग नहीं करना चाहिये। शोथपर गोमूत्रका मर्दन भी लाभकारी सिद्ध हुआ है।

(१०) उदरमें कृमि—इस रोगके होनेपर आधा चम्मच अजवायनके चूर्णके साथ चार चम्मच गोमूत्रका एक सप्ताहतक सेवन करना चाहिये। बच्चोको इसकी आधी मात्रा पर्याप्त है।

(११) संधिवात—जोड़ोंका नया तथा पुराना दर्द बहुत कष्टकारक होता है। महारास्नादि क्वाथके साथ गोमूत्र मिलाकर पीनेसे यह रोग नष्ट हो जाता है। सर्दियोंमें सोंठके १-१ ग्राम चूर्णसे भी इसका सेवन किया जा सकता है। दर्दके स्थानपर गर्म गोमूत्रका सेंक भी करना चाहिये।

(१२) हृदयरोग—गोमूत्रमें स्थित विभिन्न खनिज पदार्थ हृदयहेतु रसायनका कार्य करते हैं। इसके सेवनसे रक्तका प्रवाह नियमित तथा पर्याप्त मात्रामें होता रहता है। गोमूत्रका नित्य सेवन हृदयाघातसे शरीरकी रक्षा करता है।

(१३) कफ-वृद्धि—सीमासे अधिक बढ़े हुए कफका नाश करने-हेतु गोमूत्र प्रभावशाली ओषधि है। इसका सेवन करनेसे विभिन्न कफज-विकार यथा—तन्द्रा, आलस्य, शरीर-गौरव, मुखका मीठा प्रतीत होना, मुखस्राव, अजीर्ण तथा गलेमें कफका लेप रहना आदि नष्ट होते हैं।

(१४) नासूर—इसे नाडीव्रण भी कहते हैं। इस रोगकी जड़ गहरी होती है तथा शल्यक्रिया करनी पड़ती है। गोमूत्रका सेवन इस व्याधिको समूल नष्ट करनेकी क्षमता रखता है। प्रातः-साय ४-४ चम्मच गोमूत्रके पीने तथा प्रभावित स्थलपर गोमूत्रकी पट्टी रखनेसे एक-दो माहमें रोग-मुक्ति हो जाती है।

(१५) कोलस्टेरोलका बढ़ना—कोलस्टेरोल एक वसामय द्रव्य है, जिसकी रक्तमे सामान्यसे अधिक मात्रा होनेपर विभिन्न विकारोंकी उत्पत्ति होती है। गोमूत्रका २-२ चम्मचकी मात्रामे सुबह-शाम सेवन करनेसे बढ़ा हुआ कोलस्टेरोल कम हो जाता है।

इस प्रकार गोमूत्रका सेवन बहुत-सी व्याधियोंका प्रशमन करता है। स्वस्थ व्यक्तिका स्वास्थ्य-रक्षण करने तथा उसे रोगोसे बचाने-हेतु भी इसका सेवन किया जाता है। राम-वनवासके समय भरत १४ वर्षतक इसी कारण स्वस्थ रहकर आध्यात्मिक उन्नति करते रहे, क्योंकि वे अन्नके साथ गोमूत्रका सेवन करते थे—

गोमूत्रयावकं श्रुत्वा भ्रातरं वल्कलाम्बरम्॥

([illegible])

गोबर

भारतीय संस्कृतिमें पवित्रीकरण-हेतु विभिन्न [illegible] गोबरकी उपयोगिता प्रतिपादित की गयी है। [illegible] गोबर लगाकर स्नान करते समय इस मन्त्रके [illegible] विधान है—

अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने।
तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्॥
तन्मे रोगांश्च शोकांश्च नुद गोमय सर्वदा।

गोबर पोषक, शोधक, दुर्गन्धनाशक, सारक, शोषक, बलवर्धक तथा कान्तिदायक है। अमरीकी डॉ० मैकफर्सनके अनुसार गोबरके समान सुलभ कीटाणुनाशक द्रव्य दूसरा नहीं है। रूसी वैज्ञानिकोके अनुसार आणविक विकिरणका प्रतिकार करनेमें गोबरसे पुती दीवारें पूर्ण सक्षम हैं। भोजनका आवश्यक तत्त्व विटामिन बी-१२ शाकाहारी भोजनमें नहींके बराबर होता है। गायकी बडी आँतमें इसकी उत्पत्ति प्रचुर मात्रामें होती है पर वहाँ इसका आचूषण नहीं हो पाता, अत: यह विटामिन गोबरके साथ बाहर निकल जाता है। प्राचीन ऋषि-मुनि गोबरके सेवनसे पर्याप्त विटामिन बी-१२ प्राप्तकर स्वास्थ्य तथा दीर्घायु प्राप्त करते थे।

गोबरके मुखद्वारा सेवन तथा लेपनसे निम्न व्याधियाँ नष्ट होती है—

(१) हैजा—कीटाणु-विशेषके द्वारा यह रोग जनपदोद्ध्वंसके रूपमें फैलता है। शुद्ध पानीमें गोबर घोलकर पीनेसे इस रोगसे बचाव होता है। मद्रासके डॉ० किंगने गोबरकी, हैजेके कीटाणुओको मारनेकी शक्ति देखकर दूषित जलको गोबर मिलाकर शुद्ध करनेकी सलाह दी है।

(२) मलेरिया—गोबरका सेवन करनेसे शरीरमे प्रविष्ट हुए मलेरियाके कीटाणुओका नाश हो जाता है। इटलीके वैज्ञानिक जी० ई० बिर्गेडने सिद्ध किया है कि गोबरसे मलेरियाके कीटाणु मरते हैं।

(३) खुजली—खाज, खुजली तथा दादका निवारण करने-हेतु गोबरका प्रयोग भारतमें आदिकालसे किया जा रहा है। जलमें घोलकर गोबर पीने तथा गोबरको प्रभावित भागपर मर्दन कर गर्म पानीसे स्नान करनेसे बहुतसे चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं।

(४) अग्निदग्ध—आगसे जल जानेपर गोबरका लेपन रामबाण औषध है। ताजा गोबरका बार-बार लेप करते हुए उसे ठंडे पानीसे धोते रहना चाहिये। यह व्रणरोपण तथा कीटाणुनाशक है।

(५) सर्पदंश—विषधर साँप, बिच्छू या अन्य जीवके काटनेपर रोगीको गोबर पिलाने तथा शरीरपर गोबरका लेप करनेसे विष नष्ट हो जाता है। अति विषाक्तताकी अवस्थामें गोबरका सेवन मस्तिष्क तथा हृदयको सुरक्षित रखता है।

(६) दन्तरोग—गोबरके उपलेको जलाकर पानी डालकर ठंडा करें। तदनन्तर उसे सुखाकर बारीक पीसकर शीशीमें रखें। इस गोबरकी राखका मंजन करनेपर पायरिया, मसूड़ोंसे खून गिरना, दन्तकृमि तथा दाँतोके अन्य रोगोंका भी क्षय होता है।

आयुर्वेदीय ग्रन्थोंमें वर्णित पञ्चगव्य-घृतका चिकित्साकी दृष्टिसे बहुत महत्त्व है। इसके निर्माणमें ताजा गोबरका रस तथा गायका ही मूत्र, दूध, दही और घी प्रयुक्त होता है। पञ्चगव्य-घृतके सेवनसे उन्माद, अपस्मार, शोथ, उदररोग, बवासीर, भगंदर, कामला, विषमज्वर तथा गुल्मका निवारण होता है। सर्पदंशके विषको नष्ट करने-हेतु यह उत्तम औषध है। चिन्ता, विषाद आदि मनोविकारोंको दूर कर पञ्चगव्य-घृत स्नायुतन्त्रको परिपुष्ट बनाता है।

मांसका त्याग श्रेयस्कर है

'हमें उन वस्तुओंका अनुसरण करना चाहिये, जिनसे हमें शान्ति मिल सकती हो और जिनसे हम दूसरोंकी उन्नति कर सकते हों।'

मांसके लिये ईश्वरकी बनायी हुई सृष्टिका संहार नही करना चाहिये।

मांस खाना, मदिरा पीना या अन्य मानवताकी अवनति, अपमान और निर्बलतामें सहायक होनेवाली चीजोंको सर्वथा त्यागना ही श्रेयस्कर है। (रोमान्स १६। १९—२१)

गो-मूत्रकी तुलनामें कोई महौषधि नहीं

(श्रीरामेश्वरजी पोद्दार)

वर्तमान समयमें करोड़ो रुपये दवाओं, डॉक्टरो और अस्पतालोंमें खर्च हो रहे हैं, फिर भी रोग और रोगियोंकी संख्या बराबर बढ़ रही है। मानव-समाज शारीरिक व्याधियोसे ऊब गया है। बहुतसे गरीब परिवार दवा और डॉक्टरोंके पीछे अपना धन भी खो चुके हैं, परंतु शरीरसे नीरोग नहीं हुए। गाँवोंकी गरीब जनता धनहीनताके कारण चिकित्सा करानेमें असमर्थ है।

हमारा प्राचीन साहित्य गो-महिमासे भरा हुआ है। विज्ञान गोमूत्र और गोबरके गुणोंको अब समझने लगा है। जबकि हमारे देशवासी इनका प्रयोग हजारों वर्षसे करते आ रहे हैं।

आयुर्वेदमे अनेक रोगोंपर गोमूत्र और गोबरके प्रयोगका उल्लेख है। धर्मग्रन्थोमें गायको कामधेनु कहा गया है तथा उसकी पाँचों चीजें—दूध, दही, घृत, मूत्र और गोबरको बहुत पवित्र और गुणकारी बताया गया है।

गोमूत्र सर्वरोग-नाशक होनेके कारण इसके सेवन-कालमे शरीरका रोग ढीला होकर, आँतों (मल-मार्गों)से निकलने लगता है। इसलिये आवश्यक परहेजके साथ चिकित्सा चलानेपर किसी एक रोगका नहीं, बल्कि सारे शरीरका इलाज हो जाता है। इसकी विधि अत्यन्त सरल एवं शीघ्र लाभ पहुँचानेवाली है।

आयुर्वेदके प्राचीन आचार्योंने गोमूत्र और गोबरका उपयोग औषधिके रूपमें किया था और इसे बहुत लाभदायक पाया था। शरीरकी रक्षाके लिये आवश्यक क्षार-लवणादिकी कमीसे होनेवाले जितने भी रोग हैं गोमूत्रके सेवनसे दूर हो जाते हैं।

सभी प्रकारके मूत्रोंमे गोमूत्र ही अधिक गुणयुक्त माना गया है। गोमूत्रके प्रयोगसे सूजन शीघ्र ही नष्ट होती है। कुष्ठ-निवारणके लिये गोमूत्र परम औषध है। गोमूत्र पीनेपर उदरके सभी रोग नष्ट होते हैं। यकृत् और प्लीहाके बढ़नेपर गोमूत्र पीने और सेंकनेसे लाभ होता है। ओकोदशालिका (स्नान-गृह) में चालनीके नीचे बालकको बैठाकर चालनीके छिद्रोंसे गोमूत्र डालकर तथा मिट्टी और राखद्वारा रगड़कर स्नान करानेसे बालकके चर्मरोग आदि नष्ट हो जाते हैं। गोमूत्रके साथ पुराना गुड़ और हल्दी-चूर्ण पीनेसे श्लीपद (हाथी-पाँव), दाद और कुष्ठ आदि नष्ट होते हैं। एक मासतक गोमूत्रके साथ एरंड-तेल पीनेपर सन्धि-पीडा और वातव्याधि नष्ट होती है।

गायके मूत्रमे कारबोलिक एसिड होनेसे उसकी स्वच्छता और पवित्रता बढ़ जाती है। वैज्ञानिक रीतिमे गोमूत्रमे फॉसफेट, पोटाश, लवण, नाइट्रोजन, यूरिया, यूरिक-एसिड होते हैं, जिन महीनोमे गाय दूध देती है, उसके मूत्रमे लेक्टोज विद्यमान रहता है, जो हृदय और मस्तिष्कके रोगोमें बहुत लाभदायक होता है। आठ मासकी गर्भवती गायके मूत्रमे पाचक रस (हार्मोन्स) अधिक होते हैं।

गायका दूध २ तोला, गायका मूत्र ५ तोला, गायका दही सवा तोला, गायका घी १० माशा, गायके गोबरका रस ढाई तोला और शहद ४ माशा—इन सबको काँच या मिट्टीके बरतनमे डालकर एक-रस कर ले। स्नान करके सूर्योदयके समय सूर्यकी ओर मुँह करके इसे पीना चाहिये। दो-तीन महीनेतक यह क्रम चलाया जा सकता है। इससे अनेको रोग नष्ट होते हैं।

अमेरिकाके डॉ० क्राफोड हेमिल्टन तथा मैकिन्सनने बहुत पहिले ही यह सिद्ध कर दिया था कि गोमूत्रके प्रयोगसे हृदय-रोग दूर होता है और मूत्र खुलकर आता है।

जरथुश्ती धर्मका एक अत्यन्त महान् और पवित्र उत्सव 'निरग दीन' है। उसमे बैलके मूत्रको इकट्ठा किया जाता है और अभिमन्त्रित करके सँभाल कर रख दिया जाता है। सारे शुद्धि-करणात्मक अवसरोंपर इस मूत्रका उपयोग आवश्यक है। इसका पान किया जाता है तथा इसको [illegible] भी मला जाता है। जैसे हिन्दूधर्ममें गायके प्रति श्रद्धा व मान्यता है वैसे ही पारसी धर्ममें बैल [illegible] है।

वेलफास्टके प्रो० सिमर्स तथा अल्स्टरके प्रो० [illegible]

गोमूत्रके महत्त्वके विषयमें अनेकों प्रयोग किये है और उनका कहना है कि गोमूत्र रक्तमें रहनेवाले दूषित कीटाणुओका नाशक होता है। सजीव मांस-पेशीके लिये यह हानि नहीं पहुँचाता, घावोंकी विषाक्तताको दूर करता है और पुराने दोषसे रक्तद्वारा संक्रान्त घावमें बढ़ते हुए पीवको रोकता है। मलहम-पट्टीकी प्रारम्भिक चिकित्सामें इसके प्रयोगसे बहुत ही आश्चर्यजनक परिणाम देखनेमें आते है।

जिगर और प्लीहाके बढ़नेसे उदर-रोग हो गया हो तो पुनर्नवाके काढ़ेमे आधा गोमूत्र मिलाकर पिलाया जाय। इससे उदर-रोग अच्छा हो जायगा। इस सम्बन्धमें अक्कलकोटके डॉ० चाटी अपना अनुभव इस प्रकार बतलाते हैं—

चालीस वर्षकी अपनी नौकरीमे मैंने कितने ही जलोदर-रोगियोंका इलाज किया और पेट चीरकर २-३-४ बार भी पेटका पानी निकाल दिया, किंतु उनमेंसे अधिकांश रोगियोंकी मृत्यु हो गयी। मैंने सुना और आयुर्वेदिक ग्रन्थोमें पढ़ा भी था कि इस रोगपर गोमूत्रका उपयोग बहुत लाभकारी होता है, फिर भी मुझे विश्वास नहीं होता था। एक बार एक साधु महात्माने गोमूत्रके गुणोंका बहुत वर्णन कर कहा कि इसका जलोदरपर बहुत ही अच्छा उपयोग होता है। मैने गोमूत्रका प्रयोग करके देखा तो विलक्षण लाभ हुआ।

जलोदरमें गुर्दे काम नहीं करते, अतएव मूत्र खुलकर नहीं होता। गोमूत्र पीनेसे गुर्देके विकारको निकलनेमें सहायता मिलती है। मूत्र खुलकर साफ होने लगता है, जिससे रोग दूर हो जाता है। इस विषयमें निम्नलिखित घटना बड़ी ही उद्बोधक है—

बरेलीमे एक भिखारी भीख माँगकर निर्वाह किया करता था। एक बार उसे जलोदर रोग हो गया। पेट फूलकर घड़े-जैसा हो गया, भिखारी सूखकर अस्थि-चर्म मात्र रह गया। वह वहाँके सिविल अस्पतालमे पहुँचा। कम्पाउंडर उसे सिविल सर्जनके पास ले गया। सिविल सर्जनने देखकर कहा—'इसकी चिकित्सा यहाँ नहीं हो सकती। यह तो ऑपरेशन करते-करते ही मर जायगा।' बेचारा निराश होकर नगरके बाहर साधुओंकी एक टोलीमे जा बैठा, एक साधुने उससे पूछा—'क्यों? कैसे आया?' भिखारीने कहा—'ऐसा कोई उपाय बतायें, जिससे यह रोग दूर हो जाय'। साधुने कहा—'एक छटाँक गोमूत्र प्रातः और एक छटॉक सायंकाल प्रतिदिन एक वर्षतक पीओ, खानेके लिये जो मिल जाय वही खाओ।' भिखारीने एक वर्षतक गोमूत्रका सेवन किया। एक वर्ष पश्चात् फिर वह उसी अस्पतालमें पहुँचा। कम्पाउंडरने उसे पहचाना और वह उसे उसी सिविल सर्जनके पास ले गया।

डॉक्टरको बताया गया कि यह वही मनुष्य है जो पिछले वर्ष आया था। डॉक्टर देखकर आश्चर्यमें पड़ गया और उससे पूछने लगा—'बताओ, तुम कैसे अच्छे हुए?' भिखारीने उत्तर दिया—'गोमूत्रने मेरी जान बचा ली।'

देहलीके किशनगंज स्टेशनके गुड्स क्लर्कने अपनी बीती बातें सुनायी। उनकी धर्मपत्नीकी टाँग और पैरोंमें एग्जिमा रोग भयंकर रूपमें था। एलोपैथिक, आयुर्वेदिक आदि अनेक प्रकारकी चिकित्साएँ की गयीं। पर लाभ नहीं पहुँचा। अकस्मात् एक महात्माका उनके पास आगमन हुआ। उन्होंने बताया कि 'गोमूत्रसे पैरोंको प्रतिदिन भिगोते रहो, उससे यह रोग दूर हो जायगा।' उन्होंने तीन मासतक वैसा ही किया और वह रोग दूर हो गया। उसके पश्चात् वह फिर कभी नहीं हुआ।

एक महात्माने ज्ञान-तन्तुओंके रोगों—अपीलत्सी, मिर्गी, हिस्टीरिया तथा पागलपनमें गोमूत्रको बहुत ही उपयोगी माना है।

गोमूत्रमें पुरुषों तथा गर्भवती स्त्रियोंके गुप्त रोगोंका निवारण करनेकी शक्ति विद्यमान है। खुजली, दाद, एग्जिमा तथा अन्य त्वचा-रोगोंमें रोगीको गोमूत्र पीनेसे एवं गोबर तथा गोमूत्रका लेप करनेसे शीघ्र लाभ होता है, शरीरकी गर्मी (ज्वर आदि) और भारीपनमें गोमूत्र लाभप्रद है।

यदि किसी मनुष्यको क्षय हो तो उसे गौके उस बच्चेका मूत्र, जो केवल दूधपर ही रहता है देनेसे रोग दूर होता है।

खूनी बवासीरमें गोमूत्रका एनिमा बहुत लाभप्रद है। कुछ समयतक प्रतिदिन यह एनिमा लेते रहनेसे मस्से सर्वथा सिकुड़ जाते हैं।

गोमूत्र सौम्य और रेचक है। कब्ज हो, पेट फूल गया

हो, डकारें आती हों और जी मिचलता हो तो तीन तोला स्वच्छ और ताजा गोमूत्र छानकर आधा माशा सेंधा नमक मिलाकर पी जाना चाहिये। थोड़ी ही देरमे टट्टी होकर पेट उतर जाता है और आराम मालूम होता है।

छोटे बच्चोका पेट फूलनेपर उन्हें गोमूत्र पिलाया जाता है। उम्रके अनुसार साधारणतया एक वर्षके बच्चेको एक चम्मच गोमूत्र नमक मिलाकर पिला देना चाहिये, तुरंत पेट उतर जाता है। बालकोंके डब्बेका रोग, श्वास, खाँसी तथा लीवर प्लीहादिके अनेको रोग गोमूत्रके सेवनसे जाते रहते हैं। (डब्बा रोगमें बच्चेका पेट फूल जाता है, नाभि ऊपर आ जाती है और श्वास तीव्र गतिसे चलने लगती है।)

पेटके कृमियोको मिटानेके लिये तो गोमूत्रसे बढकर दूसरी औषधि है ही नहीं। चमुने (गुदाके कृमि)के निकलनेमें गोमूत्रमें कुछ चिकनाई मिला दी जाती है।

बच्चेको सूखा रोग हो जाय तो गोमूत्रमे केसर मिलाकर कम-से-कम एक महीनेतक पिलाये, यह औषधि दिनमें दो बार दी जाय, आयुके अनुसार मात्रा एक ड्रामसे चार ड्रामतककी हो।

पेटकी व्याधि विशेषत: यकृत् और प्लीहा बढ रही हो तो पॉच तोला गोमूत्रमें नमक मिलाकर प्रतिदिन पिलाया जाय, थोड़े ही दिनोमें आराम हो जाता है।

यकृत् एवं प्लीहा रोग होनेपर तथा पेट फूलनेपर दर्दके स्थानपर गोमूत्रकी सेक भी की जाती है। एक अच्छी ईटको गरम करके उसपर चिथड़ा लपेट कर गोमूत्र डालकर उसका सेक तथा भाप दी जा सकती है।

शरीरमे खाज अधिक आती हो तो गोमूत्रमे नीमके पत्ते डालकर उसका लेप भी किया जा सकता है।

जीर्ण-ज्वरके रोगीको दिनमें दो बार गोमूत्र पिलाते रहनेसे सात-आठ दिनोंमे बुखार जाता रहेगा।

ऑखोंमे दाह, शरीरमें सुस्ती हो और अरुचि हो तो गोमूत्रमें गुड़ या शक्कर मिलाकर पीना चाहिये।

आध पाव गोमूत्र कपडेसे छानकर पिलानेसे दस्त हो जाता है।

शक्ति और उम्रके अनुसार नित्य [illegible] २१ या ४१ दिनोतक पिलानेसे कामला (पीलिया—[illegible]) रोगमे निश्चय ही आराम हो जाता है।

आँख और कानकी बीमारीमे गोमूत्र डाला [illegible] तथा उसकी सेक और भाप भी दी जाती है। [illegible] रहनेवाला यूरिया कृमिनाशक कार्य करता है।

गोमूत्र शरीरके तन्तुओंके लिये हानिकारक नहीं है। घावोपर यह अविपाक्त पदार्थके रूपमे प्रयुक्त किया जाता है। इसके प्रयोगसे दूसरे प्रकारकी चिकित्सामे लगनेवाले परिश्रम, खर्च और समयकी वचत होती है।

इससे बीमारीके ठीक होनेकी प्रक्रियामे तनिक भी बाधा नहीं पहुँचती है। तात्कालिक चिकित्साके रूपमे इसका प्रयोग बहुत ही अपूर्व सिद्ध होगा। यह घावमें पुगने रक्त-सक्रमणसे उत्पन्न होनेवाले पीबको रोकता है।

गायके मूत्रको गुन-गुना करके कानमे डालनेसे कर्ण-शूल—कानका दर्द दूर होता है।

कान पकनेपर गोमूत्रको बोतलमें भर ले, निथर जानेपर छानकर शीशीमे अच्छा कार्क लगाकर रख दे, रोगीका कान साफ कर ३-४ बूँद कानमे टपका दे। बगला कहावत है—

जे खाय गोरूरचोना, तार देह होय सोना।

अर्थात् जो गोमूत्र पीता है, उसकी देह सोनेकी जैसी (नीरोग) हो जाती है।

गोमूत्रका आन्तरिक प्रयोग आमाशय तथा [illegible] बडा लाभ करता है, उसकी मात्रा पाँच तोलातक है। [illegible] मृदु, रेचक तथा मूत्रल है। ज्वर आदिमे इसका प्रयोग [illegible] दवाकी तरह किया जाता है। कुछ दिनका [illegible] धातुके बरतनोको साफ करनेमें काम आता है।

कुछ दिन गोमूत्रके सेवनसे धमनियाँ [illegible] है, जिससे रक्तका दबाव स्वाभाविक [illegible] गोमूत्रसे भूख बढती है, शोथ आदि [illegible] पुराने वृक्कशोथके लिये उत्तम औषधि है। [illegible] जितनी प्रशंसा की जाय उतनी थोड़ी है।

[प्रेषक—[illegible]

वेद-शास्त्रोंमें गौ

इस संसारमे 'गौ' एक महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद पशु है। गौकी महिमाका उल्लेख वेदादि सभी शास्त्रोंमे मिलता हैं। गौ भगवान् सूर्यदेवकी एक प्रधान किरणका नाम है। सूर्यभगवान्‌के उदय होनेपर उनकी ज्योति, आयु और गौ—ये तीनो किरणे स्थावर-जङ्गम समस्त प्राणियोमे यथासम्भव न्यूनाधिक्यरूपमे प्रविष्ट होती हैं; परंतु इनमे सूर्यभगवान्‌की 'गो' नामकी किरण केवल गो-पशुमें ही अधिक मात्रामें समाविष्ट होती है। अतएव आर्यजाति इस पशुको 'गौ' नामसे पुकारती है।

'गो' नामक सूर्य-किरणकी पृथ्वी स्थावरमूर्ति और गो-पशु जङ्गममूर्ति है। शास्त्रोमे दोनोंको 'गो' शब्दसे व्यवहृत किया गया है। ये दोनो ही अनन्तगुणसम्पन्न भगवान् विराट्‌के स्वरूप हैं। शुक्ल यजुर्वेदमे गौ और पृथ्वी—इन दोनोके सम्बन्धमे प्रश्न किया गया है कि 'कस्य मात्रा न विद्यते?' (किसका परिमाण (उपमा) नहीं है?) [शु० य० २३। ४७]। इसका उत्तर दिया गया है—'गोस्तु मात्रा न विद्यते' (गौका परिमाण (उपमा) नही है) [शु० य० २३। ४८]।

गौ[1] और पृथ्वी—ये दोनों गौके ही दो स्वरूप हैं। इनमे कोई भेद नहीं है। गौ और पृथ्वी—इन दोनोमे अभिन्नता है। ये दोनो ही परस्पर एक-दूसरीकी सहायिका और सहचरी है। मृत्युलोककी आधारशक्ति 'पृथ्वी' है और देवलोककी आधारशक्ति 'गौ' है। पृथ्वीको 'भूलोक' कहते हैं और गौको 'गोलोक' कहते है। भूलोक अधोलोक (नीचे)-मे है और गोलोक ऊर्ध्वलोक (ऊपर)-मे है। भूलोककी तरह गोलोकमें भी श्रेष्ठ भूमि है।

जिस प्रकार पृथ्वीपर रहते हुए मनुष्योके मल-मूत्रादिके त्याग आदिके कुत्सित आचरणोको पृथ्वीमाता सप्रेम सहन करती है, उसी प्रकार गो-माता भी मनुष्योके जीवनका आधार होती हुई मनुष्योके वाहन, निरोध एवं ताड़न आदि कुत्सित आचरणोको सहन करती है। इसीलिये वेदोमे पृथ्वी और गौको 'मही' शब्दसे व्यवहृत किया गया है। मनुष्योंमें भी जो सहनशील अर्थात् क्षमी होते हैं, वे महान् माने जाते हैं। संसारमे पृथ्वी और गौसे अधिक क्षमावान् और कोई नहीं है। अतः ये दोनो ही महान् है।

शास्त्रोमे गौ[2]को सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी[3] कहा गया है। अतः गौके दर्शनसे समस्त देवताओके दर्शन और समस्त तीर्थोकी यात्रा करनेका पुण्य प्राप्त होता है। जहाँ गौका निवास होता है, वहाँ सर्वदा सुख-शान्तिका पूर्ण साम्राज्य उपस्थित रहता है। गो-दर्शन, गोस्पर्श, गोपूजन, गोस्मरण, गोगुणानुकीर्तन और गोदान करनेसे मनुष्य सर्वविध पापोंसे मुक्त होकर अक्षय स्वर्गका भोग प्राप्त करता है[4]। गौओंकी परिक्रमा करनेसे ही बृहस्पति सबके वन्दनीय, माधव (विष्णु) सबके पूज्य और इन्द्र ऐश्वर्यवान् हो गये।

गौके गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोघृत और गोदधि आदि सभी पदार्थ परम पावन, आरोग्यप्रद, तेजःप्रद, आयुवर्द्धक तथा बलवर्द्धक माने जाते है। यही कारण है कि आर्यजातिके

१-(क) गोशव्देनोदिता पृथ्वी सा हि माता शरीरिणाम्। शैशवे जननी माता पश्चात् पृथ्वी हि शस्यते॥

'गो' शब्द पृथ्वीका द्योतक है। वह समस्त देहधारियोकी माता है। बाल्यावस्थामे अपनी माता जन्म देने तथा दुग्ध पिलानेके कारण 'माता' कही जाती है, पश्चात् पृथ्वी जीवनपर्यन्त अन्न आदि विविध पदार्थ देनेके कारण 'पृथ्वी माता' कही जाती है।'

(ख) 'गोरिति पृथिव्या नामधेयम्।' (निरुक्त २। १। १) 'गौ' यह पृथ्वीका वाचक है।

२-(क) 'सर्वे देवाः स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ.' (बृहत्पाराशरस्मृति ३। ३३)

(ख) 'वेश्वदेवी वै गौ॰' 'यद् गा ददाति विश्वेपामेतद् देवाना तेन प्रिय धाम उपैति।' (गोपथब्राह्मण ३। ३। १९)

(ग) अथर्ववेद ९। ७। १—२६।

३-स्कन्दपुराण, आवन्त्यखण्ड, रेवाखण्ड ८३। १०४—११२।

४-पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड ४८। १४५-१४६।

प्रत्येक श्रौत-स्मार्त शुभ-कर्ममे पञ्चगव्य और पञ्चामृतका विधान अनादिकालसे प्रचलित और मान्य है।

गौके जब बछडी-बछडे पैदा होते हैं, तब सर्वप्रथम वे केवल अपनी माताके दुग्धका पान करके ही तत्क्षण वायुके वेगके सदृश दौडने लगते हैं। ससारमे गोवत्सके अतिरिक्त अन्य किसी भी मनुष्यसे लेकर कीट-पतङ्गादितकके प्राणीके नवजात शिशुमे इस प्रकारकी विचित्र शक्ति और स्फूर्ति नहीं पायी जाती, जो कि 'गोवत्स'की तरह उत्पन्न होते ही इतस्ततः दौड़ने लग जाय। इसीलिये मानवजातिमे जब बालक पैदा होते हैं, तब उन्हे सर्वप्रथम मेधाजननके लिये '**मधुघृते प्राशयति घृतं वा**' (पार०, गृ०, सूत्र १। १६। ४) । इस सूत्रके अनुसार मधु और गोघृतमे सुवर्ण घिसकर अथवा केवल गोघृतमे सुवर्ण घिसकर वह पदार्थ बालकको चटाया जाता है। पश्चात् उसे गौका दुग्ध पिलाया जाता है। अतएव गौको 'माता' कहा जाता है।

हमारी माताएँ हमे बाल्यावस्थामे ही अधिक-से-अधिक दो-ढाई सालतक अपना दुग्ध पिलाकर हमारा इहलोकमे ही कल्याण करती हैं, किंतु गोमाता हमे आजीवन अपना अमृतमय दुग्ध पिलाकर हमारा इहलोकमे पालन-पोषण करती है और हमारी मृत्युके बाद वह हमे स्वर्ग पहुँचाती है, जैसा कि अथर्ववेद (१८। ३। ४) मे भी कहा है—

'**अयं ते गोपतिस्तं जुषस्व स्वर्ग लोकमधिरोहयैनम्।**'

'**धनं च गोधनं प्राहुः**'के अनुसार विद्वानोने '**गौ**' को ही असली धन कहा है। महाभारतमे लिखा है—

'**गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धन किञ्चिदिहाच्युत॥**'

(अनुशासनपर्व ५१। २६)

'हे अच्युत! मैं इस ससारमे गो-धनके सदृश और कोई धन नहीं देखता हूँ।'

हिदीके एक पद्यद्वारा सासारिक समस्त वस्तुओकी अपेक्षा 'गोधन'को ही सर्वश्रेष्ठ धन बतलाया गया है—

सोना-चाँदी और रत्न-मणि, सब धन है केवल नामका।
यदि है कोई धन जगतमे, गो-धन है बस कामका॥

गौ स्वर्ग और मोक्षकी सीढी है। यह परम पावन और सबकी कामना पूर्ण करनेवाली मङ्गलदायिनी देवी है। गोमाताकी सेवासे पुरुषार्थ-चतुष्टयकी प्राप्ति और ऐहिक-आमुष्मिक कल्याणकी प्राप्ति होती है। गोसेवासे मनुष्यके अगणित कुलोंका उद्धार और उनकी यम-यातनासे मुक्ति होती है। गोसेवासे पुत्रप्राप्ति, लक्ष्मीप्राप्ति, विद्याप्राप्ति, यशप्राप्ति, ज्ञानप्राप्ति, बलप्राप्ति और दीर्घायुकी प्राप्ति होती है। गोमाताके [illegible] गुण विद्यमान हैं, तभी तो शास्त्रकारोंने—

गावः प्रतिष्ठा भूतानाम्। (अग्निपुराण [illegible])
गाव· प्रतिष्ठा भूतानाम्। (महा०, अनु० ८८। [illegible])
गावः शरण्या भूतानाम्। (महा०, अनु० ६६। ५०)
गावस्तेजो महद्दिव्यम्। (महा०, अनु० ८१। [illegible])
गावो हि सुमहत्तेज । (महा०, अनु० ५१। ३१)
मातर· सर्वभूतानाम् । (महा०, अनु० ६९। ७)
गावो बन्धुर्मनुष्याणाम् । (पद्म०, सृष्टि० ५०। १५०)

गावः प्रतिष्ठा सचराचरस्य।
गावो विश्वस्य जगत प्रतिष्ठा।

—इत्यादि कहकर गौकी महत्ताको स्वीकार किया है और भी देखिये—

गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते।

(महा०, अनु० ५१। २८)

'गौएँ सर्वदा लक्ष्मीकी मूल है। गौओंमे पापकी स्थिति नहीं होती है।'

गाव स्वर्गस्य सोपानं गाव. स्वर्गेऽपि पूजिता ।
गाव· कामदुहो देव्यो नान्यत्किञ्चित्पर स्मृतम्॥

(महा०, अनु० ५१। ३३)

'गौएँ स्वर्गकी सीढी ह, गौओंकी स्वर्गमे भी पूजा होती है। गाएँ समस्त अभिलषित वस्तुओंको देनेवाली हैं, अत· गौओसे बढकर और कोई श्रेष्ठ वस्तु नहीं है।'

मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा ।

(महा० अनु० ६९। ७)

'गौएँ समस्त प्राणियोको माताके सदृश सर्वविध सुखोंको देनेवाली हैं।'

'ईश्वर. स गवा मध्ये।' (महा०, अनु० ७७। २९)

'गाओके मध्यमे ईश्वरकी स्थिति होती है।'

गाव प्रतिष्ठा भृतानां गाव स्वस्त्ययन महत्॥

(महा० अनु० ७८। ५)

'गौएँ मानवोके जीवनका प्रतिष्ठा [illegible] परम धन हैं और गोएँ कल्याणकी परम निधान है।'

गावो महार्थाः पुण्याश्च तारयन्ति च मानवान्।
धारयन्ति प्रजाश्चेमा हविषा पयसा [illegible]॥
न हि पुण्यतम किञ्चिद् गोभ्यो [illegible]।
एताः पुण्या पवित्राश्च त्रिषु लोकेषु [illegible] ॥

([illegible])

'गौएँ महान् अर्थको और पुण्यको देनेवाली हैं। गौएँ मनुष्योका उद्धार करती है। गौएँ घृत और दुग्धसे प्रजाका पालन-पोपण करती हैं। अतः हे युधिष्ठिर! गौओसे बढ़कर और कोई पुण्यतम वस्तु नहीं है। गौएँ तीनो लोकोंमें पुण्य और पवित्र कही गयी हैं।'

गावः प्रतिष्ठा भूतानां तथा गावः परायणम्।
गावः पुण्याः पवित्राश्च गोधनं पावनं तथा॥

(महा०, अनु० ८१। १२)

'गौएँ समस्त प्राणियोंकी प्रतिष्ठा और सबकी आश्रय (रक्षक) है। गौएँ पुण्यप्रद और पवित्र हैं। अतः गोधनको पावन कहा गया है।'

गावः श्रेष्ठाः पवित्राश्च पावनं ह्येतदुत्तमम्॥

(महा०, अनु० ८३। ३)

'गौएँ सर्वश्रेष्ठ तथा पवित्र, पूजन करने योग्य और ससारमे सबसे उत्तम हैं।'

गावस्तेजः परं प्रोक्तमिहलोके परत्र च।
न गोभ्यः परमं किञ्चित् पवित्रं भरतर्षभ॥

(महा०, अनु० ८३। ५)

'इस लोक और परलोकमे गौएँ परम तेजःस्वरूप है। हे भरतर्षभ! गौओसे बढ़कर और कोई वस्तु परम पवित्र नहीं है।'

यज्ञाङ्गं कथिता गावो यज्ञ एव च वासव।
एताभिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथंचन॥

(महा०, अनु० ८३। १७)

'गौओको यज्ञका अङ्ग और साक्षात् यज्ञरूप कहा गया है। गौओके बिना यज्ञ कथमपि नही हो सकते।'

गावो बन्धुर्मनुष्याणां मनुष्या बान्धवा गवाम्।
गौश्च यस्मिन् गृहे नास्ति तद् बन्धुरहितं गृहम्॥

(पद्म०, सृष्टि० ५०। १५५-१५६)

'गौएँ मनुष्योकी बन्धु हैं और मनुष्य गौओके बन्धु है। जिस घरमे गौ नहीं है, वह घर वन्धुशून्य है।'

गां च स्पृशति यो नित्यं स्नातो भवति नित्यशः।
अतो मर्त्यः प्रपुष्टैस्तु सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
गवां रजः खुरोद्भूतं शिरसा यस्तु धारयेत्।
स च तीर्थजले स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

(पद्म०, सृष्टि० ५०। १६५-१६६)

'जो मनुष्य प्रतिदिन गौका स्पर्श करता है, वह प्रतिदिन तीर्थजलमे स्नान करनेका फल प्राप्त करता है। गौके द्वारा मनुष्य सर्वविध घोर पापोसे मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य गौके खुरसे उड़ी हुई धूलिको अपने मस्तकपर धारण करता है, वह समस्त तीर्थोके जलमे स्नान करनेका फल प्राप्त करता है और समस्त पापोसे छुटकारा पा जाता है।'

गावः पवित्रा माङ्गल्या गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः।

(अग्निपुराण २९२। १)

'गौएँ पवित्र और मङ्गलदायिनी हैं। गौओंमें समस्त लोक प्रतिष्ठित है।'

गवां श्वासात् पवित्रा भूः स्पर्शनात् किल्बिषक्षयः।

'गौओके श्वास-प्रश्वाससे भूमि पवित्र होती है और गौओके स्पर्श करनेसे मनुष्यके पापोंका नाश होता है।'

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम्।
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्॥
पावनं सर्वभूतानां क्षरन्ति च वहन्ति च।
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान् दिवि॥
ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमेषु योजिताः।
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्॥
गावः पवित्रं परमं गावो माङ्गल्यमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः॥

(अग्निपुराण २९२। १५—१८)

'गौएँ प्राणियोके जीवनकी प्रतिष्ठा हैं और गौएँ कल्याणका महान् निधान हैं। गौएँ ही अन्नका परम साधन है, गौएँ ही देवताओका उत्तम घृत हैं। गौएँ समस्त प्राणियोको पवित्र करनेवाले दुग्धको देती हैं और गोवत्स भार वहन करते हैं। गौएँ स्वर्गमे ऋषियोके मन्त्रपूत घृतसे देवताओंको तृप्त करती हैं। अतः गौएँ हवनमें प्रतिष्ठित है। गौएँ समस्त प्राणियोकी उत्तम शरण (आश्रय) हैं। गौएँ परम पवित्र और मङ्गलदायिनी हैं। गौएँ स्वर्गकी सीढ़ी हैं और गौएँ धन्य और सत्य-सनातन है।'

सर्वे देवा गवामङ्गे तीर्थानि तत्पदेषु च।
तद्गुह्येषु स्वयं लक्ष्मीस्तिष्ठत्येव सदा पितः॥
गोष्पदाक्तमृदा यो हि तिलकं कुरुते नरः।
तीर्थस्नातो भवेत् सद्यो जयस्तस्य पदे पदे॥
गावस्तिष्ठन्ति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम्।
प्राणांस्त्यक्त्वा नरस्तत्र सद्यो मुक्तो भवेद् ध्रुवम्॥

(ब्रह्मवैवर्त्त०, श्रीकृष्णज० २१। ९१—९३)

'गौके शरीरमे समस्त देवगण निवास करते हैं और गौके पैरोंमें समस्त तीर्थ निवास करते हैं। गौके गुह्यभागमें लक्ष्मी सदा रहती है। गौके पैरोमे लगी हुई मिट्टीका तिलक जो मनुष्य अपने मस्तकमे लगाता है, वह तत्काल तीर्थजलमे स्नान करनेका पुण्य प्राप्त करता है और उसकी पद-पदपर विजय होती है। जहॉपर गौएँ रहती है उस स्थानको तीर्थभूमि कहा गया है। ऐसी भूमिमे जिस मनुष्यकी मृत्यु होती है, वह तत्काल मुक्त हो जाता है, यह निश्चित है।

वेदोमे भी गोमहिमापरक अनेक मन्त्र उपलब्ध हैं, जिनमेसे कुछ मन्त्र उद्धृत किये जाते है—

ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै
यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः
परमं पदमव भाति भूरि॥

(ऋग्वेद १। १५४। ६)

'गोभक्तगण अश्विनीकुमारसे प्रार्थना करते हैं कि—'हे अश्विनीकुमार! हम आपके उस गोलोकरूप निवासस्थानमे जाना चाहते हैं, जहॉ बड़ी-बड़ी सींगवाली सर्वत्र जानेवाली गौएँ निवास करती हैं। वहीपर सर्वव्यापक विष्णु भगवान्‌का परम पद वैकुण्ठ प्रकाशित हो रहा है।'

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि ।

(ऋग्वेद ८। १०१। १५)

गौ एकादश रुद्रोकी माता, अष्ट वसुओकी कन्या और द्वादश आदित्योकी बहन है, जो कि अमृतरूप दुग्धको देनेवाली है।

देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भाग प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात॥

(शुक्लयजुर्वेद १। १)

'हे गौओ! प्राणियोको तत्तत्कार्योमे प्रविष्ट करानेवाले सवितादेव तुम्हे हरित-शस्य-परिपूर्ण विस्तृत क्षेत्र (गोचरभूमि) में चरनेके लिये ले जायँ; क्योकि तुम्हारे द्वारा श्रेष्ठ कर्मोका अनुष्ठान होता है। हे गौओ! तुम इन्द्रदेवके क्षीरमूलक भागको बढाओ अर्थात् तुम अधिक दुग्ध देनेवाली हो। तुम्हारी कोई चोरी न कर सके, तुम्हे व्याघ्रादि हिसक जीव-जन्तु न मार सके, क्योकि तुम तमोगुणी दुष्टोद्वारा मारे जाने योग्य नहीं हो। तुम बहुत संतति उत्पन्न करनेवाली हो, तुम्हारी [illegible] ससारका बहुत बड़ा कल्याण होता है। तुम [illegible] वहॉंपर किसी प्रकारकी आधि-व्याधि नहीं [illegible] यहॉंतक कि यक्ष्मा (तपेदिक) आदि [illegible] भी [illegible] पास नहीं आ सकते। अत· तुम सर्वदा [illegible] सुखपूर्वक निवास करो।'

सा विश्वायु. सा विश्वकर्मा सा विश्वधाया ।

([illegible])

'वह गौ यज्ञसम्बन्धी समस्त ऋत्विजोंकी तथा [illegible] आयुको बढानेवाली है। वह गौ यज्ञके समस्त कार्योंका [illegible] करनेवाली है। वह गौ यज्ञके समस्त देवताओंका [illegible] करनेवाली है अर्थात् दुग्धादि हवि पदार्थ देनेवाली है।'

अन्ध स्थान्धो वो भक्षीय मह स्थ महो वो भक्षीयोर्ज स्थोर्ज वो भक्षीय रायस्पोष स्थ रायस्पोष वो भक्षीय॥

(शुक्लयजुर्वेद ३। [illegible])

'हे गौओ! तुम अन्नरूप हो अर्थात् तुम दुग्ध-घृतादिरूप अन्नको देनेवाली हो, अत. तुम्हारी कृपासे हमे भी दुग्ध-घृतादिरूप अन्न प्राप्त हो। तुम पूजनीय हो, अत. तुम्हारे सेवन (आश्रय) से हम श्रेष्ठता प्राप्त करे। तुम बलस्वरूप हो, अतः तुम्हारी कृपासे हम भी बल प्राप्त करें। तुम धनको बढानेवाली हो, अत. हम भी धनकी वृद्धि प्राप्त करें।'

सꣳहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन।

([illegible])

'हे गौओ! तुम विश्वरूपवाली दुग्ध-[illegible] प्रदान करनेके लिये यज्ञकर्ममे सगतिवाली हो। तुम अपने [illegible] रसोको प्रदान कर हमारा गोस्वामित्व सर्वदा [illegible]।'

इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि व कामधरण भूयात्॥

([illegible])

'हे पृथ्वीरूप गौ! तुम इस स्थानपर [illegible] देवताओको अदितिके सदृश पालन करनेवाली [illegible] तुम इस स्थानपर आओ। हे गौ! तुम [illegible] होनेके कारण सभीकी आदरणीय हो। हे गौ! [illegible] आओ। तुमने हमे देनेके लिये जो अपेक्षित [illegible] है, वह तुम्हारी कृपासे हमे [illegible] अभीष्ट फलोंको धारण करनेवाले [illegible]।'

वीरं विदेय तव देवि [illegible]

([illegible])

'हे मन्त्रपूत दिव्य गौ! तुम्हारे सुन्दर दर्शनके महत्त्वसे म वलवान् पुत्रको प्राप्त करूँ।'

या ते धामान्युश्मसि गमध्यै
यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः
परमं पदमव भारि भूरि॥

(शुक्लयजुर्वेद ६। ३)

'मैं तुम्हारे उन लोकोंमे जाना चाहता हूँ, जहाँ वड़ी-वड़ी सींगवाली वहुत-सी गौएँ रहती हैं। जहाँपर गौएँ रहती हैं, वहाँ विष्णु भगवान्‌का परम प्रकाश प्रकाशित रहता है।'

राया वय ँ्ससवा ँ्सो मदेम
हव्येन देवा यवसेन गावः।
तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो
विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्॥

(शुक्लयजुर्वेद ७। १०)

'जिस प्रकार देवगण गौके हव्य-पदार्थकी प्राप्तिसे और गौ घास आदि खाद्य-पदार्थकी प्राप्तिसे प्रसन्न होती है, उसी प्रकार हम भी वहुत दुग्ध देनेवाली गौको प्राप्त कर प्रसन्न होते हैं। गौके घरमे रहनेसे हम धनादिसे परिपूर्ण होकर समस्त कार्योको करनेमें समर्थ हो सकते हे। अत: हे देवताओ! तुम सर्वदा हमारी गौकी रक्षा करो, जिससे हमारी गौ अन्यत्र न जाने पावे।'

क्षुमन्तं वाज ँ्सहस्त्रिणं मक्षु गोमन्तमीमहे।

(सामवेद, उत्तरार्चिक १। ३)

'हम पुत्र-पौत्रादिसहित सैकडो-हजारोकी सख्यावाले धनोकी ओर गो आदिसे युक्त अन्नकी शीघ्र याचना करते हैं।'

धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते।
गामश्वं पिप्युषी दुहे।

(सामवेद, उत्तरार्चिक २०। ७)

'हे इन्द्र! तुम्हारी स्तुतिरूपा सत्य वाणी गौरूप होकर यजमानकी वृद्धिकी इच्छा करती हुई यजमानके लिये गौ, घोड़े आदि समस्त अभिलषित वस्तुओंका दोहन करती (दुहती) है।'

इमा या गाव· स जनास इन्द्रः.....॥

(अथर्ववेद ४। २१। ५)

'जिसके पास गौएँ रहती हे, वह तो एक प्रकारसे इन्द्र ही हे।'

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं
चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो
बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥

(अथर्ववेद ४। २१। ६)

'हे गौओ! तुम अपने दुग्ध-घृतादिद्वारा दुर्वल मनुष्योको हृष्ट-पुष्ट करती हो और निस्तेजोको तेजस्वी बनाती हो। तुम अपने मङ्गलमय शब्दोच्चारणसे हमारे घरोको मङ्गलमय वनाती हो। इसलिये सभाओमे तुम्हारी कीर्तिका वर्णन होता रहता है।'

वशा देवा उप जीवन्ति वशां मनुष्या उत।
वशेदं सर्वमभवद् यावत् सूर्यो विपश्यति॥

(अथर्ववेद १०। १०। ३४)

'वशा (वशमे रहनेवाली) गौके द्वारा प्राप्त गो-दुग्धादि पदार्थोसे देवगण और मनुष्यगण जीवन प्राप्त करते हैं। जहाँतक सूर्यदेवका प्रकाश होता है, वहाँतक गौ ही व्याप्त है अर्थात् यह समस्त ब्रह्माण्ड गौके आधारपर ही स्थित है।'

धेनुं सदनं रयीणाम्। (अथर्ववेद ११। १। ३४)

'गौ सम्पत्तिका घर है।'

महाँस्त्वेव गोर्महिमा।

(शतपथब्राह्मण ३। ३। ३। १)

'गौकी महिमा महान् है।'

इस प्रकार वेदोसे लेकर समस्त धार्मिक ग्रन्थोमे और समस्त सम्प्रदायवादियोके धर्मग्रन्थोमे एवं प्राचीन-अर्वाचीन ऋषि-महर्षि, आचार्य विद्वानोसे लेकर आधुनिक विद्वानोतक सभीकी सम्मतिमे गोमाताका स्थान सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य है।

गौ एक अमूल्य स्वर्गीय ज्योति है, जिसका निर्माण भगवान्‌ने मनुष्योके कल्याणार्थ आशीर्वाद-रूपमे पृथ्वीलोकमे किया है। अत: इस पृथ्वीमे गोमाता मनुष्योके लिये भगवान्‌का प्रसाद है। भगवान्‌के प्रसादस्वरूप अमृतरूपी गोदुग्धका पान कर मानवगण ही नही, किंतु देवगण भी तृप्त और संतुष्ट होते है। इसीलिये गोदुग्धको 'अमृत' कहा जाता है। यह अमृतमय गोदुग्ध देवताओके लिये भोज्य-पदार्थ कहा गया है। अत: समस्त देवगण गोमाताके अमृतरूपी गोदुग्धके पान करनेके लिये गोमाताके शरीरमे सर्वदा निवास करते हैं।

शतपथब्राह्मण (३। ३। ३। २) मे लिखा है कि गोमाता मानवजातिका वहुत ही उपकार करती है—

'गौर्वै प्रतिधुक्। तस्यै शृतं तस्यै शरस्तस्यै दधि तस्यै मस्तु तस्याऽआतञ्चन तस्यै नवनीतं तस्यै घृतं तस्याऽआमिक्षा तस्यै वाजिनम्॥'

गोमाता हमें प्रतिधुक् (ताजा दुग्ध), शृत (गरम दुग्ध), शर (मक्खन निकाला हुआ दुग्ध), दही, मट्ठा, घृत, खीस, वाजिन (खीसका पानी), नवनीत और मक्खन—ये दस प्रकारके अमृतमय भोजनीय पदार्थ देती है, जिनको खा-पीकर हम आरोग्यता, बल, बुद्धि एव ओज आदि शारीरिक बल प्राप्त करते हैं और गौके दुग्धादि पदार्थोंके व्यापारद्वारा तथा गौके बछड़ा-बछडी एव गोबरद्वारा हम प्रचुरमात्रामे विविध प्रकारके अन्न पैदाकर धनवान् बन जाते हैं। अतः गोमाता हमे बल, अन्न और धन प्रदान कर हमारा अनन्त उपकार करती है। अतः मानवजातिके लिये गौसे बढकर उपकार करनेवाला और कोई शरीरधारी प्राणी नहीं है। इसीलिये हिंदूजातिने गौको देवताके सदृश समझकर उसकी सेवा-शुश्रूषा करना अपना परम धर्म समझा है।

प्राचीन इतिहासोके अवलोकनसे स्पष्ट विदित होता है कि गोजातिके रक्षार्थ समय-समयपर बडे-बड़े शक्तिशाली ऋषि-मुनियोने और राजा-महाराजाओने अपने प्राणोतककी भी परवा न कर गोजातिकी रक्षा की है। राजा दिलीप, छत्रपति शिवाजी और महाराणा प्रताप आदिकी गोरक्षार्थ आत्मसमर्पणकी पवित्र गाथाएँ विश्वविदित ही हैं। अतः हमारा भी परम कर्तव्य है कि हम गोजातिकी सर्वात्मना रक्षा करे। जो गौ हमारा सब प्रकारसे कल्याण करे, जो गौ हमारा सर्वविध दुःख दूर करे और जो गौ हमारी समस्त आवश्यकताओकी पूर्ति करे, उस गोमाताकी हमारे समक्ष दुर्दशा हो और हमारी जानकारीमे निरपराध अगणित गौओंका वध हो, यह हम भारतवासी समस्त हिंदू-समाजके लिये बडी लज्जा और दुःखकी बात है। जो मनुष्य आलस्य, प्रमाद, लोभ अथवा स्वार्थके वशीभूत होकर गौओके रक्षार्थ प्रयत्न नही करते, उन्हे शास्त्रोमे आततायी, महापापी और अहिंदू कहा गया है। अतः समस्त हिंदुओको अपने हिंदुत्वकी रक्षाके लिये सर्वात्मना गोरक्षार्थ पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये।

आज हमारा देश स्वतन्त्र हो चुका है और हम भी स्वतन्त्र कहलाते है, फिर भी हमारे पवित्र भारतमे गोवंशकी रक्षा न होकर उसका उत्तरोत्तर ह्रास होता जा रहा है। आज-लाखोकी संख्यामे निरपराध गौएँ प्रतिदिन [illegible] भारतमे मारी जाती हैं। जबसे भारतभूमिमें गोवध होने लगा है, तभीसे हम भारतीय नाना प्रकारके रोग-शोकादि विविध कष्टोसे पीडित हो रहे हैं। हमे ठीक समयपर वर्षाजल न तो प्राप्त होता है और न पृथ्वीमाताद्वारा उचितरूपसे अन्न ही प्राप्त होता है। गोधन भारतीय संस्कृति और सभ्यताका अन्यतम रक्षक है। अतः गोजातिका ह्रास हिंदूजाति और हिंदूधर्मका ह्रास है। इसलिये सभी दृष्टिसे गोवंशकी रक्षा परमावश्यक है। हमे चाहिये, हम संगठितरूपसे समस्त भारतवर्षमें गोरक्षार्थ रचनात्मक दृढ आन्दोलन उपस्थित करें और प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारसे भी गोरक्षार्थ प्रार्थना करे।

शास्त्रोमे गोरक्षार्थ 'गो-यज्ञ' भी एक मुख्य साधन कहा गया है। वैदिककालमे बडे-बड़े 'गो-यज्ञ' और 'गो-महोत्सव' हुआ करते थे। भगवान् श्रीकृष्णने भी गोवर्द्धन-पूजनके अवसरपर 'गो-यज्ञ' कराया था। गो-यज्ञमें वेदोक्त गोसूक्तोसे गोपुष्ट्यर्थ और गोरक्षार्थ हवन, गोपूजन, वृषभ-पूजन आदि कार्य किये जाते हैं, जिनसे गोसंरक्षण, गोसंवर्द्धन, गोवंशरक्षण, गोवंशवर्द्धन, गोमहत्त्व-प्रख्यापन और गो-सङ्गतिकरण आदिमे विशेष लाभ होता है। आज वर्तमान समयकी विकट परिस्थिति देखते हुए गो-प्रधान भारतभूमिमें सर्वत्र गो-यज्ञकी अथवा गोरक्षा-महायज्ञकी विशेष आवश्यकता है। अत. गोवर्द्धनधारी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रसे प्रार्थना है कि वे भारतवासी धर्मप्रेमी हिंदुओंके हृदयोंमे गोरक्षार्थ 'गो-यज्ञ' करनेकी प्रेरणा करे, जिससे भारतवर्षके कोने-कोनेमें उत्साहके साथ अगणित 'गो-यज्ञ' हो और इन गो-यज्ञोंके [illegible] प्रत्येक हिंदूभाईकी जिह्वामे—

> गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा।
> गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम्॥
>
> (महा०, अनु० [illegible])
>
> गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च।
> गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
>
> (महा० अनु० [illegible])

—इन महाभारतोक्त पुण्यमय [illegible] ध्वनि सर्वदा निःसृत होती रहे, जिससे देश [illegible] कल्याण हो।

वल्लभ-सम्प्रदायमें गोसेवाका स्वरूप

(श्रीप्रभुदासजी वैरागी, एम्० ए०, बी० एड्०, साहित्यालकार)

श्रीकृष्णभक्तिके विभिन्न सम्प्रदायोमे वल्लभ-सम्प्रदायका भी विशेष महत्त्व है। इसमे श्रीकृष्णचन्द्रके स्वरूप प्रभु श्रीनाथजीकी जिस प्रकार सेवा-आराधना की जाती है ऐसी कदाचित् ही कहीं की जाती होगी। प्रातः-कालसे लेकर रात्रिपर्यन्त प्रभुकी सेवाओमे अनेक विविधता और श्रेष्ठ सेवा-भावनाएँ विद्यमान हैं। जिस प्रकार एक माता अपने बालकको प्रातःकाल जगनेसे लेकर रात्रि-शयनपर्यन्त उसके दैनन्दिन-क्रमके प्रति सजग रहकर उसे जो अपना स्नेह और सेवाएँ देती है, उसी प्रकारकी सेवाएँ यशोदोत्संगलालित बालभावसे सेवा स्वीकार करनेवाले वल्लभाधीश प्रभु श्रीनाथजीमे ज्यों-की-त्यों की जाती है। व्रजमण्डलमें गिरि-गोवर्धनपर प्यारे श्रीकृष्णचन्द्रके श्रीविग्रहके रूपमे आपका प्राकट्य है, अतः गौ और गोपालका विरला ही समन्वय इस सम्प्रदायमें दृष्टिगोचर होता है।

सम्प्रदायके ग्रन्थोका अवलोकन करनेसे ज्ञात होता है कि प्रभु श्रीनाथजीका प्राकट्य ही गौ माताके कारण है। एक गौ माता नित्य गिरि-गोवर्धनके ऊपर बने एक टीलेपर जाकर अपने दूधका स्राव करती और वह दूध टीलेके विवरमे प्रविष्ट होकर प्रभुके श्रीविग्रहके ऊपर सीधा ही अभिषेक करता। घर पहुँचनेपर उस गौ माताके स्तनमे दूध नहीं मिलनेपर ग्वालेद्वारा उसके दूधकी वास्तविकताका पता करते समय उसे श्यामसुन्दर प्रभु श्रीनाथजीके इस दिव्य श्रीविग्रहके शुभ दर्शन हुए। ऐसी गौके द्वारा इस भारत-भूतलपर अवतीर्ण हुए वैष्णवोके परमाराध्य प्रभु श्रीनाथजीकी सेवामे आज भी गोसेवाकी प्रधानता है। यहाँकी गोसेवा देखकर अच्छे-अच्छे गोभक्त आश्चर्यचकित हो जाते है और नाथद्वारा आनेपर प्रभु श्रीनाथजीके दर्शनोके साथ-साथ यहाँकी भारतविश्रुत गोशालामे गौ माताओके दर्शन अवश्य करते हे।

वि०स० १५३५ वैशाख मासके कृष्णपक्षकी एकादशीको मध्यप्रदेशके अन्तर्गत चम्पारणमे सम्प्रदायाचार्य महाप्रभु श्रीमद्वल्लभजीका प्रादुर्भाव हुआ, उसी समय उत्तरप्रदेशके मथुरा जिलान्तर्गत गिरि-गोवर्धनपर प्रभु श्रीनाथजीका मुखारविन्द गिरिगुहासे बाहर आया। प्रारम्भमें व्रजके नर-नारी इन्हे कोई देवता मानकर इनकी आराधना करते और गाय आदिके गुम हो जानेपर इनसे प्रार्थना करते तथा अनुनय-विनय करनेपर व्रजवासियोंकी मनःकामनाएँ पूर्ण हो जातीं और उनकी गुम हुई गाय मिल जाती। इस कारण व्रजके लोग इन्हें प्रेमसे 'गोपालजी' ऐसा कहकर सम्बोधित करने लगे। शनैः-शनैः समग्र व्रजमण्डलमें इन भगवान्के चमत्कारोकी धूम मच गयी और लोग इनके दर्शनार्थ दौड़-दौड़कर गिरि-गोवर्धन आने लगे। इसी समय नरो नामकी एक व्रजभक्तासे इन भगवान्ने दूध माँगकर नित्य आरोगना आरम्भ कर दिया। कुछ ही समयमे इन गोपाल भगवान्के आस-पास एक गाँव बस गया और गोपालजीके नामपर ही उस गाँवका नाम गोपालपुर पड़ गया।

आचार्यचरण श्रीमद्वल्लभाचार्यजी भारत-परिक्रमा करते समय चम्पारण पधारे। उस समय उस पुण्यभूमिपर इन्हीं गोपाल-स्वरूप प्रभु श्रीनाथजीने आज्ञा देकर श्रीमहाप्रभुजीको गिरिगोवर्धन बुलवाया। भगवदाज्ञा शिरोधार्य कर श्रीमद्वल्लभ मथुरा आये और वहाँसे गिरिगोवर्धन जाकर व्रजभक्त सद्दू पाडेके घर रुके। रात्रि भर दोनोमे प्रभुके अद्भुत प्राकट्य और उनके अलौकिक चमत्कारोकी चर्चाएँ चलती रहीं। भोरमे श्रीमहाप्रभुजीके गिरि-गोवर्धन पहुँचनेपर कन्दरासे स्वयं बाहर आकर साक्षात् प्रभु श्रीनाथजीने महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यजीको अपने गले लगाया तथा अपनी सेवा-व्यवस्थाएँ सँभालनेकी आज्ञा दी। इसी समय आचार्यचरण महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यजीको 'गर्गसंहिता' में उल्लिखित महर्षि श्रीगर्गाचार्यजीकी भविष्यवाणी याद आयी—

गोवर्धनगिरौ राजन् सदा लीलां करोति यः।
श्रीनाथ देवदमनं तं वदिष्यन्ति सज्जनाः॥

(७। ३०। ३१)

तदनुसार श्रीमद्वल्लभाचार्यजीने वहाँ समस्त व्रजवासियोंको इन गोपालजीका वास्तविक नाम 'श्रीनाथजी' बतलाया। अब तो प्रभु-आज्ञानुसार आचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजी वही रह गये और नन्दनन्दन प्रभु श्रीनाथजीको शुद्ध स्नानादि

कराकर वस्त्र अङ्गीकार कराये तथा प्रथम वार अन्नका नैवेद्य अरोगाया। प्रभु श्रीनाथजीको गौ माता वहुत प्यारी लगती है, अतः आपने सद्दू पांडेको अपनी सोनेकी अँगूठी देकर उसकी गौ माताओमेंसे द्वापरयुगसे श्रीनन्दरायजीके समयसे चले आ रहे गोवंशकी एक 'घूमर' नामवाली गौ माता खरीदी और उसे प्रभु श्रीनाथजीकी सेवामें रखा।

इसी सेवाक्रममें श्रीमहाप्रभुजीने पूरणमल खत्रीको आज्ञा देकर गिरि गोवर्धनपर मन्दिर बनवाया तथा प्रभु श्रीनाथजीके श्रीविग्रहको उसमे पधराया। सेवा-व्यवस्था आगे बढ़ी। सूरदास प्रभृति चार गायक भक्त कवियोको सेवामें नियुक्त किया गया तथा प्रभुकी सेवाके लिये आनेवाली गौ माताओके लिये गोशाला निश्चित की गयी। आगे चलकर श्रीमहाप्रभुजीके यशस्वी सुपुत्र गुँसाईजी श्रीविट्ठलनाथजीने अपनी ओरसे चार गायक भक्त कवियोको और एकत्रित कर अष्टछापकी स्थापना की। आज अष्टछापके अन्तर्गत प्रभु-लीलाके कई प्रसंगोमे गोरस-लीला-माध्यमसे अनेकों स्थलोपर गो-प्रियताका प्रशस्ति-गान किया गया है। कुछ पदोंकी एक-आध पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

'धेनु दुहत देखत हरि ग्वाल',
'दे मैया री दोहनी दुहि लाऊँ गैया',
'धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी',
'मैया! मै नहीं माखन खायो'
(सूरदास)

'ब्याई गाय बछरुआ चाटत, हौं पीबत हो प्रतिखन धैया।
याही देखी धोरी बिझकानी, मारन को दौरि मोहि गैया।'
(परमानन्ददास)

'अरी हम दान लैहे रस गोरस को, यही हमारो काज',
'मथनियाँ आन उतार धरी'
(कुम्भनदास)

'सात दिवस सुरपति पचि हार्‌यो, गोसुत सींग न भीनो'
(कृष्णदास)

'भाजन फोरि, धोरि सब गोरस, लै माखन दधि खात'
(चतुर्भुजदास)

'कोऊ दह्यो, कोऊ मह्यो, कोऊ माखन, जोरि-जोरि आछौ अछूतो ही लाई।
(नददास)

परमानन्ददास और छीतस्वामीने तो [illegible] प्रकट किये हैं—

गोधन पूजें गोधन गावें।
गोधन के सेवक सतत हम, गोधन ही को [illegible]॥
गोधन मात-पिता गुरु गोधन, देव जानि नित [illegible]।
गोधन कामधेनु कल्पतरु, गोधन पै माँग [illegible]॥
गोधन खिरक खोरि गिरि गहवर, रखवारो घर वन [illegible]।
'परमानन्द' भावतो गोधन, गोधन को हमहूं पुनि भावे॥

आगे गाइ पाछे गाइ, इत गाइ, उत गाइ,
गोविद को गाइनि मे बसिवोई भावै।
गाइनि के सग धावै, गाइनि मे सचु पावै
गाइनि की खुर-रज अग लपटावै॥
गाइनि सो व्रज छायौ, वैकुठ बिसरायौ,
गाइनि के हित गिरि कर लै उठावै।
'छीत-स्वामी' गिरिधारी, विट्ठलेस वपु-धारी,
ग्वारिया कौ भेपु धरै गाइनि मे आवै॥

अष्ट सखाओमे श्रीकुंभनदासके लड़के कृष्णदासने तो प्रभु श्रीनाथजीकी गायोकी रक्षाके लिये स्वय [illegible] लडकर अपने प्राणतक न्योछावर कर दिये।

व्रजमण्डलमे जैसे-जैसे प्रभु श्रीनाथजीके [illegible] बढे और श्रीगुँसाईजीका प्रभाव बढा, वैसे-वैसे प्रभु श्रीनाथजीकी सेवामे वृद्धि हुई। प्रभुकी गोशालामें गौ माताओकी सख्या बढने लगी। श्रीगुँसाईजीने व्रजमण्डलमें यत्र-तत्र प्रभु श्रीनाथजीकी गोशालाओंकी स्थापनाएँ की तथा तत्कालीन मुगल सम्राट् अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँसे प्रभु श्रीनाथजीकी गौ माताओंके [illegible] असख्य एकड गोचर-भूमियाँ भेंटमे लीं। आज भी उन भूमियोपर दिये गये पट्टे स्थानीय प्रभु-मन्दिरके [illegible] भण्डारमे अवलोकनीय हैं।

मुगल सम्राट् औरगजेबके समय वि० सं० [illegible] प्रभु श्रीनाथजी गिरिगोवर्धन छोड़कर मेवाड [illegible] वीहडमे अपना वास-स्थान बनाया। [illegible] नामपर ही 'नाथद्वारा' नगरके [illegible] श्रीनाथजी व्रजसे चले तो [illegible] श्रीदाऊजी महाराजके [illegible]

नदरायजीके घर गोवंशकी घूमर गायके वंशकी कतिपय गौ माताएँ भी व्रजमण्डलसे साथ आयीं। पराक्रमी मेवाड-महाराणा राजसिंहकी भक्तिसे तिलकायित श्रीदाऊजी महाराजकी भावनाके अनुसार श्रीहरिराय महाप्रभुकी देख-रेखमें मन्दिर सिद्ध हुआ तो साथ-ही-साथ गोशाला भी नियुक्त हुई। मेवाड़में विराजमान होनेसे समग्र भारतके वल्लभ-सम्प्रदायी वैष्णव नाथद्वारा आने लगे। प्रभु-सेवामे प्रभुता बढ़ने लगी। असंख्य गौ माताएँ भेटमे आने लगीं, अतः नगरसे तीन किलोमीटर दूर नाथूवास नामक स्थलपर एक विराट् गोशालाका निर्माण किया गया। प्रभु श्रीनाथजीकी अनगिनत गौ माताएँ अब यहाँ रहने लगीं। यहाँपर भी गौ माताओके वासस्थानकी संकुचितताको देखकर तिलकायित श्रीमानोने नाथद्वाराके आस-पास बारह गोशालाएँ और बनवा दीं। समयकी अनुकूलता और गोचारणकी सुविधासे सभी गोशालाओमें गौ माताएँ वास करने लगीं। परंतु मुख्य गोशाला नाथूवासकी ही निश्चित रही।

बीचमें ऐतिहासिक क्लेश आ जानेपर प्रभु श्रीनाथजीको उदयपुर और फिर घस्यार जाना पड़ा तो प्रभुके साथ गौ माताएँ भी वहाँ गयीं। आज भी वहाँ गोशाला बनी हुई है और गौ माताएँ निवास करती हैं।

घस्यारसे पुनः प्रभुके नाथद्वारा पधारनेपर मेदपाटेश्वर महाराणाओंने श्रीनाथजीकी गौ माताओके चरने-हेतु कई एकड़ गोचर-भूमि भेट की, वे आज भी बडा बीड़ा और छोटा वीडाके नामसे प्रसिद्ध हैं। जिसमे पुष्कल घास उत्पन्न होती है और वर्षभर उसी घासको खाकर गौ माताएँ पवित्र दूध दुहाकर आनन्दकन्द प्रभु श्रीनाथजीमे अपनी सेवाएँ पहुँचाती हैं। प्रभु श्रीनाथजीकी अष्टयाम-सेवामें दूधकी प्रचुरता तो है ही, लेकिन सभी भोगोंमे गोरसकी प्रधानता रहती है। प्रभुके आरोगनेके सभी कच्चे तथा पक्के पक्वान्न तो शुद्ध गायके घीसे ही निर्मित होते है। आज भी प्रभुकी नित्यकी सेवा, मनोरथ, अन्नकूट और छप्पन भोगमे हजारो मन शुद्ध घी अरोगाया जाता है।

आजके युगमे द्वापरकी छटाको देखना हो तो इस गोशालामे हमे देखनेको मिलेगी। विविध-रंगी, जाति-जातिकी, भिन्न-भिन्न प्रकारके स्वभाववाली, नूपुर-घुँघरुओं तथा गलेमे बँधी घंटियोसे सुसज्जित असंख्य पयस्विनी गौ माताएँ यहाँ विराजती है। गौओको यहाँ बाँधा नहीं जाता है। वे अपने-अपने अहातेमे स्वतन्त्र रूपसे विचरण करती हैं। प्रत्येक अहातेमें पर्याप्त घास तथा बाहर निर्मल जलकी कुँडियाँ भरी रहती हैं। गौ माताएँ जितना चाहे उतना घास खायें और जितना जल पीना चाहे उतना पीयें—उन्हे पूरी छूट है। दुहारीके समय ग्वाला बछड़ोंके निवास-स्थानसे बछड़ा लाकर उसकी माताका नाम लेकर पुकारता है जैसे घूमर, महावन, जमना, काजल, कस्तूरी और नखराली आदि-आदि, तो नाम सुनकर समूहमेंसे वही गाय ग्वालेके पास आती है और अपने वत्सको दूध पिलाकर दुहारी करा करके पुनः अपने समूहमे चली जाती है। इस प्रकार इस गोशालामें चार बार गो-दोहन होता है एवं समस्त दूध सेवकोंद्वारा घडोंमें भरकर प्रभु श्रीनाथजीके मन्दिरमें पहुँचा दिया जाता है। कार्तिक मासकी गोपाष्टमीपर इस गोशालामें गो-दर्शन मेला लगता है। भारतमें शायद ही कहीं गौ माताओके नामपर ऐसा मेला लगता हो। सारे नगरके स्त्री-पुरुष सज-धजकर संध्या-समय इस गोशालामे जाते हैं और ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओ, गवाक्षों, बरामदो तथा चबूतरोपर खड़े होकर गोक्रीडाका आनन्द लेते हैं। इस समय यहाँ खेलनेवाली गौ माताओको ग्वालबाल चर्मकुप्पी बजा-बजाकर खेलाते है और सबके बाद प्रभु श्रीनाथजीकी ओरसे समस्त गौ माताओको गुड़ तथा घीसे बनी थूली खिलायी जाती है। जिस समय गौ माताएँ 'चर' मे थूली खाती है, उस समय कई नर-नारी उन गौ माताओंकी परिक्रमा कर अपने-आपको धन्य-धन्य मानते हैं। इस अवसरपर श्रीनन्दरायजीके गोवंशकी गौ माताके दर्शन भी अत्यन्त आह्लादकारी होते हैं। भावुक भक्त आज भी इस वशकी गौ माताके चरण-स्पर्शकर इसके नीचेसे निकलकर एव इसकी पूँछको सिरपर फिराकर प्रमुदित होते रहते हैं। ऐसा भी सुना जाता है कि कई श्रद्धावान् गोपभक्तोंको रात्रिके समयमे गोशालामे बछड़ोंके साथ खेलते हुए प्रभु श्रीनाथजीके दर्शन हुए हैं।

यहाँकी दीपावली और अन्नकूट विश्व-विख्यात है। तीन किलोमीटर दूरसे चलकर गौ माताएँ प्रभु श्रीनाथजीमे होनेवाली गोवर्धन-पूजाके लिये नाथद्वारा आती हैं। रग-महावरसे सजी-धजी पीतल तथा चाँदीसे सुशोभित-शृंग,

पॉवोमे पायजेब और घुँघरू, गलेमें घंटिका, सिरपर मोरपंखका किरीट पहिने ये गौ माताएँ नगरमे आती हैं, उस समय नर-नारियोका झुंड दर्शनके लिये मार्गोमें उमड़ पडता हे। दीपावलीके दिन सध्या-समय कान्ह-जगाईके अवसरपर ये गौ माताएँ मन्दिरमार्गको अपनी क्रीडाओसे प्रतिध्वनित करती हुई प्रभु श्रीनाथजीके मन्दिरमे प्रवेश करती हैं। उस समयका नयनाभिराम दृश्य देखते ही बनता है। मन्दिर-प्रवेशके पश्चात् वाद्य-यन्त्रोद्वारा गौ माताओका अभिनन्दन किया जाता है तथा प्रभु श्रीनवनीतप्रियजीके समक्ष तिलकायित श्रीमान् श्रीनन्दरायके गोवंशकी गायको आगे बुलाते है और कान्ह-जगाई करते है। कान्ह-जगाईका अभिप्राय होता है गोवर्धन-पूजा-हेतु सपरिवार पधारनेके लिये गौ माताके कानमे दिया हुआ निमन्त्रण। दूसरे दिन दोपहरमें वे ही सब गौ माताएँ बाजारोमें खेलती हुई मुख्य मन्दिरमें प्रवेश करती हैं। उस समय दर्शनार्थियोकी भीडसे बाजार खचाखच भर जाते हैं। मन्दिरके अंदर प्रभुके समक्ष तिलकायित श्रीमान् गोमयसे बने गोवर्धनकी पूजा करते हैं। तदनन्तर उस पवित्र वंशकी गौकी पूजा-तिलककर उसे गोवर्धनपर चढाया जाता है। इसीके साथ समूह-के-समूह गौ माताएँ प्रभु श्रीनाथजीके मन्दिरसे निकलकर मुख्य बाजारसे सभीसे अभिवन्दित होती हुई तीन किलोमीटर स्थित अपनी मुख्य गोशालामे पहुँच जाती है। इस प्रकार सुरभि और श्रीनाथका यह मिलन सर्वत्र सराहा जाता है।

प्रभु श्रीनाथजीके सम्मुख किये जानेवाले दानोमे गोदानका सबसे बडा महत्त्व है। प्रत्येक सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहणपर ग्वाले लोग गौ माताको प्रभु श्रीनाथजीके सामने ऊपर मन्दिरकी डोल तिबारीमे लाते हैं और वहाँ मन्त्रोच्चारणके साथ विधिपूर्वक वह गौ माता मन्दिरके कुलपुरोहितको दान कर दी जाती है। ग्रहणमे प्रभु श्रीनाथजीके राजभोगका सकड़ी महाप्रसाद पूरा-का-पूरा गौ माताओको खिला दिया जाता है।

नन्दराजकुमार प्रभु श्रीनाथजीको वस्त्रालकरणसे शृगारित कर देनेके बाद उनके दोनों ओर चित्रकारीकी पिछवाई लगायी जाती है। पिछवाइयोमें प्रभु श्रीनाथजीका गोप्रेम स्पष्ट झलकता प्रतीत होता हैं। उन [illegible] गोधूलि-वेला, सध्या-आरती, वत्स-द्वादशीपर [illegible] जाने, गो-चारण, गोवर्धनपर दुग्धस्राव, गोवर्धन-[illegible] गोशाला आदिकी गो-प्रधान चित्रयुक्त अनेकों [illegible] हैं, उनमेंसे छप्पन भोग तथा गोपाष्टमीपर [illegible] पूरी-की-पूरी गो माताओकी पिछवाइयाँ हें। इन [illegible] द्वारा गाय और गिरधरके अद्वितीय प्रेमका पता चलता है। वर्षमे एक-दो वार प्रभु श्रीनाथजी अपने [illegible] गोकर्ण भी धारण करते हैं और गोपाष्टमीपर गो-[illegible] भावसे लकुट भी धराते हें। चाँदीके वड़े-वडे [illegible] और कपाटयुक्त सगमरमरी फर्शवाले इस मन्दिरमे [illegible]-पर्वपर गौ माताओके पधारते समय उनके पादपद्मोंमे कोई पीडा नहीं पहुँचे इसलिये मन्दिरके गोवर्धन-पृजा-[illegible] प्राङ्गणको विलकुल कच्चा रखा गया हे।

पञ्चामृत ओर प्रसादमे गोरसकी प्रमुखता रखनेवाले प्रभु श्रीनाथजीके राजभोगके दर्शनोमें उनके [illegible] और काष्ठकी परम सुसज्जित गौ माताओको रखा जाता है। मङ्गलभावन प्रभु श्रीनाथजी उनके सम्मुख [illegible] गो माताओंको निरखते-परखते ससारको अपने शुभ [illegible] रहते हैं। इस प्रकार वेष्णवोको गौ तथा गोविन्दके [illegible] दर्शन करनेका अनायास लाभ मिलता रहता है। [illegible] परमाराध्य प्रभु श्रीनाथजीके समान ही पुष्टिमार्गके [illegible] तथा अन्य मन्दिरोमे विराजमान होनेवाले प्रभु-विग्रहोंकी सेवामे भी गोसेवाका प्राधान्य वना हुआ है।

यह वल्लभसम्प्रदाय गोपाल, गोस्वामी, [illegible] ग्वालवाल-प्रधान सम्प्रदाय हे। जो वैष्णव प्रभु [illegible] सेवाएँ करते हैं, उन्हे गो माताओंकी सेवा [illegible] ही सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। प्रभुचरण [illegible] अपनी गोप्रियताके कारण ही 'श्रीगुसाँईजी' [illegible] विभूषित हुए थे और आगे चलकर [illegible] उनके वंशज 'गोस्वामी' नामसे पुकारे जाने [illegible] इस सम्प्रदायमे पूज्यपाद, धर्मगुरु [illegible] शताब्दियोमे गोविन्दके साथ गौ [illegible] सर्वकालपूजनीय तथा अभिनन्दनीय [illegible]

'स्वामिनारायण'-सम्प्रदायमें गोसेवा और गोसम्बन्धी व्रत

(श्रीहरिजीवनजी शास्त्री)

आदिकालसे गौ, गङ्गा और गीता भारतीय संस्कृतिके तीन आधार-स्तम्भ रहे हैं। सारे विश्वमे धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रोमें गौकी महिमा स्पष्ट है। आज सारी दुनियाका डेयरी-उद्योग प्रायः गायपर ही निर्भर है। गायका दूध, दही, घी आदिका उपयोग केवल भोजनके रूपमें ही नहीं, अपितु आयुर्वेदिक दवाइयों एवं यज्ञ-याग, अभिषेक-जैसे शुभ कार्योमें भी किया जाता है। पञ्चगव्य एवं पञ्चामृतकी महिमा सुविदित ही है। यात्राके अवसरपर घरसे बाहर निकलते समय गौका दर्शन महान् सगुन माना गया है। गोखुरसे उड़ी हुई पवित्र धूलिराशिके स्पर्शसे भूत-प्रेतादिजन्य बाधाओसे मुक्ति होती है। इस प्रकार गायका सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक सभी क्षेत्रोमें विशिष्ट योगदान है। वेदादि शास्त्रों तथा सभी धर्म-सम्प्रदायों आदिमें उसकी महिमा गायी गयी है और उसकी सेवा करनेका विशिष्ट निर्देश भी दिया गया है।

स्वामिनारायण-सम्प्रदायमे भी गोसेवा, गोमहिमा, गोव्रत-विधान आदिका महत्त्वपूर्ण स्थान है। सम्प्रदायके धर्मग्रन्थ—'सत्संगी जीवन' के पञ्चम प्रकरणमें भगवान् स्वामिनारायणने स्वयं गायका बहुलक्षी महत्त्व समझाया है। जब यन्त्रयुगका आगमन ही नहीं हुआ था, तबसे लेकर आजतक गायसे पैदा किये गये बैलसे ही सारे विश्वमे खेतीका कर्म होता रहा है। खेतमें उपयोग किये जानेवाले बैलकी चाकरी या सॅभाल किस तरह करनी चाहिये, उसका निर्देश भी इसमें अच्छी तरह किया गया है। जैसे कि अपंग, दुर्बल, थके हुए, रोगी, भूखे और अंधे बैलको कभी भी खेतमें नहीं जोतना चाहिये। जो हृष्ट-पुष्ट हो, नीरोग हो, बलवान् और भूख-प्यासरहित हो उसीको खेतमें जोतना चाहिये। कभी भी निर्दय होकर बैलको लकड़ी या चाबुकसे नहीं मारना चाहिये।

वनमे रूखा-सूखा घास खाकर गायें हमें अमृत-जैसा दूध देती हैं। जिसके दूध और घीसे यज्ञमे आहुतियाँ देनेसे देवगण प्रसन्न होते हैं। गायके सभी अङ्गोमें देवताका वास हैं, इसलिये गायकी पूजा करनी चाहिये और अनिष्ट तत्त्वोंसे उसकी रक्षा भी करनी चाहिये। गाय और बैलकी रक्षाहेतु स्वामिनारायण भगवान्ने यहाँतक बताया है कि गाय और बैलके बाँधनेके स्थानपर हमेशा एक तेज हँसिया रखना चाहिये, क्योकि रस्सीसे बँधे हुए पशुओंके सींग कभी-कभी एक-दूसरेकी रासमें फॅस जाते हैं, जिससे उन्हें बहुत ही पीड़ा होती है। यदि समयपर उन्हें छुड़ाया न जाय तो वे कभी मर भी जाते हैं। इसलिये उनकी रक्षा-हेतु गौशालामें एक हॅसिया रखना चाहिये।

लोकमे गृहस्थाश्रमियोंका गृहस्थ आश्रम गाय और बैलोसे शोभा देता है; क्योंकि उन्हींसे हव्य और गव्यकी निष्पत्ति होती है। इसलिये गृहस्थोंको चाहिये कि वे गौओं और बैलोंका प्रयत्नसे परिपालन करें।

स्वामिनारायण भगवान् कहते हैं कि 'जब बछड़ा हाजिर न हो या किसी कारणवश गायका गर्भस्राव हो गया हो, वह रोगग्रस्त हो, प्रसूता हो या दो बछड़ेवाली हो तब गायको दूहना नहीं चाहिये।'

जो गृहस्थ बहुत ही भक्तिभावसे गौ माताकी पूजा-वन्दन और पोषण करता है, उसे अश्वमेधादि यज्ञफलकी शीघ्र ही प्राप्ति होती है। इसके विरुद्ध जो पापी पुरुष गायको दुहते समय डंडों आदिसे मारता है या गालियाँ देता है वह पापी कोटि वर्षतक नरककी अग्निमें जलता है।

गोपालनमे जो पुण्य है उससे दस गुना पुण्य वृषभके पालन करनेमें है। वृषभोंकी महिमा गाते हुए स्वामिनारायण भगवान् कहते है कि 'धान, गेहूँ इत्यादि नाना प्रकारके अन्नोंका उत्पादन बैल करता है और अन्नको अपनी खुरसे रौंदता है तथा अन्नसे भरी हुई बैलगाड़ी खींचकर घरपर या बाजारमें ले जाता है। इस प्रकार किसानोंको एवं सभी प्रजाओंको सुख प्रदान करनेसे बैल भी हमारे लिये पूज्य है।

'वृषभोंके बारेमें हमदर्दी प्रदर्शित करना हमारा परम कर्तव्य है। क्योंकि वे सारा दिन कितना सामान ढोते हैं, थक जाते हैं, दुःखी हो जाते है, फिर भी अपने दुःखको, मजबूरीको अपने स्वामीके पास नहीं बता सकते हैं। वे लाचार और बेबस हैं। भगवान्ने उन्हें बोलनेकी शक्ति नहीं

दी है। फिर भी वे रूखा-सूखा घास खाकर प्रसन्न होकर मनुष्योसे भी अच्छी तरह ईमानदारीसे अपना कर्तव्य समझकर सेवाभावसे अपने कार्यमे प्रेमसे जुटे रहते हैं। इसीलिये हमे भी चाहिये कि हम उन्हे पूरा आराम दे, उनका अच्छी तरहसे पोषण करे, समय-समयपर उनकी चिकित्सा करवायें। जो गृहस्थ घरके आँगनमे बँधे हुए गाय और बैलका तृण और जलसे समय-समयपर पोषण नहीं करता, वह रौरव-नरकमें जा गिरता है।

यदि आपकी स्थिति अच्छी न हो तो पशु-पालनकी शक्तिके अभावमे क्या करना चाहिये? इस सम्बन्धमें भगवान् स्वामिनारायणने शिक्षापत्रीमें बताया है कि पशुपालनमें अशक्त गृहस्थोंको चाहिये कि वे अपने गाय आदि पशुओको जो पशु-पालनमें शक्तिमान् हो, उसे सुपुर्द कर देना ही इष्ट है अथवा गृहस्थोको चाहिये कि वह गाय आदि पशुओका घास, पानी आदिसे अच्छी तरहसे पालन न कर सके तो उससे बेहतर है कि पशुओंको घरमें रखना ही नही चाहिये। यहाँतक कहा गया है कि अपनी संतानसे भी अधिक गौको महत्त्व देते हुए तथा पुत्रादिकी अपेक्षा प्रथम गाय और बैलको चारा देना चाहिये। वही किसान सुखी होता है जो गौ आदि पशुओंकी सम्भावना पुत्रकी तरह करता है। किंतु जिसके घरके ऑगनमे भूखे-प्यासे पशु बँधे रहते हों, उसे मच्छर काटते हो तो वह गृहस्थ पशुओंकी हायसे दरिद्र बन जाता है और उसके किये पुण्योका नाश हो जाता है—

तृषिताः पशवो बद्धा कन्या चापि रजस्वला।
देवताश्च सनिर्माल्या घ्नन्ति पुण्यं पुराकृतम्॥

वृषभोको खेतीके कर्ममे जोतनेसे पहले उसकी पूजा करनेकी 'सत्संगी जीवन' में आज्ञा दी गयी है। वृषभोके सींगको सिंदूर आदि रंगसे रँगकर तथा कुकुम और अक्षतसे उसकी पूजा करनेके बाद ही उसको खेतमे जोतना चाहिये। गाय आदि पशुओके लिये अन्न-संग्रहपर भी जोर देते हुए शिक्षापत्री (१४१) मे बताया है—

यथाशक्ति यथाकालं संग्रहोऽन्नधनस्य च।
यावद् व्ययं च कर्तव्यं पशुमद्भिस्तृणस्य च॥

गृहस्थको अपनी सामर्थ्यके अनुसार अन्न और धनका संग्रह अवश्य करना चाहिये। साथ-साथ गाय [illegible] पशुओके लिये अपनी शक्तिके अनुसार [illegible] संग्रह करना आवश्यक है। कम-से-कम [illegible] जितने घास-पातका उपयोग किया जा सके, [illegible] पातका सग्रह जरूरी ह। क्योंकि वर्षाऋतु [illegible] पहले घास-पातका संग्रह न करनेवालेको दुःख उठाना पडता है।

हिन्दू संस्कृतिमे गोदानका महत्त्व भी कम नहीं है। प्राचीन कालमे हमारे यहाँ शुभ अवसरपर गोदान करनेकी रीति है। इसीका समर्थन करते हुए 'सत्संगी जीवन' मे भी शुभ अवसरपर गोदान करनेका उल्लेख मिलता है। [illegible] भगवान् श्रीस्वामिनारायणने भी समझाया ह कि विद्यार्थी एव कथाकारोके लिये, मेधाशक्ति और स्वास्थ्यके हेतु गायका दूध सर्वोत्तम है।

अहिसा-प्रेमी भगवान् स्वामिनारायण और उनके अनुयायियोने आजसे लगभग दो सौ साल पहले गुजरातमे प्रचण्ड अहिसक गोरक्षा-आन्दोलन भी छेडा था। अहिंसाका झडा लेकर भगवान् स्वामिनारायण और संतोने सर्वत्र गोहत्या और हिसायुक्त यज्ञके विरुद्ध प्रचण्ड आवाज उठायी। साथ-साथ राजकोटके अंग्रेज गवर्नर सर मालकमको इस सम्बन्धमे चेतावनी भी दी। तब अंग्रेज अधिकारीने इस बातको स्वीकृत किया और गोहत्या बंद करनेका वचन दिया। सम्प्रदायके धर्मशास्त्र 'सत्संगी जीवन' के पहले प्रकरणके पेतालीसवे अध्यायमे गोवधका प्रायश्चित्त इस प्रकार बताया गया ह—

'जो मनुष्य अज्ञानसे लकडी या [illegible] गायको मारे और वह गाय मर जाय तो [illegible] अन्नका आहार छोडकर एक मासतक [illegible] जब गाय वनमे घास चरने जाय तो वह भी उसके पीछे-पीछे जाय। गाय जहाँ कहीं भी जाय [illegible] पीछे-पीछे बिना जूता पहने फिरता रहे। [illegible] खड़ा रहे, गौ चले तो चले, बैठे तब बैठे, [illegible] वायुको भी सहे, इस प्रकार [illegible] पालन करे गायके [illegible] बिछाये वह सोवे। [illegible] गड्ढे आदिमे गिर [illegible]

लगाकर भी करता रहे। अपने या दूसरेके खेत या खलिहानमे चरती गायको देखकर भी खेतके मालिकको जानकारी न दे। गायके स्तनको पीते हुए बछड़ेको भी कुछ न कहे।

इस प्रकार एक मासतक व्रत पूरा करनेके बाद शास्त्रविधिके अनुसार सुपात्र ब्राह्मणको सुवर्ण-सींगवाली कांस्यपात्र-निर्मित दोहनपात्रके साथ बछड़ेसहित सुन्दर स्वभाववाली बहुत दूध देनेवाली गायको वस्त्र और रत्नसहित दान दे। गोदानके पश्चात् मुक्त-मनसे दक्षिणा देनेके बाद वधकर्ता गोवधके पापसे मुक्त होता है।'

गोव्रत—सम्प्रदायके शास्त्रमें गो-प्रायश्चित्त-सम्बन्धी अनेक व्रत बताये गये है—यथा—सोमायनव्रत, सांतपनव्रत, महासांतपनव्रत, यतिसांतपनव्रत आदि। इसी प्रकार गायके गोबरके साथ निकले हुए जवसे एक मास जीवनयापन करे तो यह उत्तम याचकव्रत कहा गया है। गोमूत्रसे स्नान, गायके गोबरका भक्षण, गौके मध्यमें निवास, गायके गोबरमें शयन, गौके खाने-पीनेपर ही खाना-पीना, गौके बैठने और खड़े रहनेपर बैठना या खड़े रहना—इस प्रकारका एक मासका व्रत 'गोव्रत' कहा गया है।

इन सभी गोसम्बन्धी व्रतोके करनेवालोंको यमपुरीमें जाना नहीं पडता। लक्ष्मीकी कामनावाला, पुष्टिकी इच्छावाला और हरि-प्रसन्नताकी अभिलाषावाला कोई भी भक्त अपनी भक्ति और शक्तिके अनुसार इनमेंसे कोई भी व्रत करे तो उसकी मनः-कामनाएँ गौ माता अवश्य पूर्ण करती हैं। अतः विश्वमें गोहत्या बंद करके ऐसी महिमामयी गौका पालन, गोसेवा और गोभक्तिको बढ़ाना चाहिये।



रामस्नेहि-संत-साहित्यमें गायकी महत्ता एवं बहुला गौका आख्यान

(खेड़ापा पीठाधीश्वर श्री १००८ श्रीपुरुषोत्तमदासजी महाराज रामस्नेही)

वैसे तो रामस्नेही-पद्धतिमें प्राणिमात्रकी भगवद्भावसे सेवा करनेकी प्रेरणा दी जाती है, किंतु मोक्षदायिनी गायके प्रति श्रद्धा विलक्षण ही प्रतीत होती है। इस विषयमे श्रीदयालुदासजी महाराजद्वारा अपनी वाणीमें वर्णित गायकी ओरसे किये जानेवाले भगवन्निवेदनमें गायको मोक्षदायिनी मानते हुए प्रकट किये गये उद्गार कितने प्रेरणादायक हैं—

गौ पुकार इम करत, जाय साहिब के आगे।
पशू जूण हम पाय, जीव किरतब फल लागे।
हिन्दू मूसलमान, दुग्ध सबही कू देऊं।
मेरा जाया वाय, खेत निपजै अन सेऊँ।
कूंप पयाल रसाल जल, रस सुख सब कू देत है।
जनरामा मृतलोक मे, घिरत सुधा मुख लेत है॥
गौ मुत उत्तम लेत, धवल चौके उतमाई।
दोय राह भिन नाय, हमै सब कूं सुखदाई।
पृथमी गऊ सरूप, धवल शिर धरा सुधारी।
खानपान पहरान, सरब रचना सुखकारी।
जीयां जुगत मूवो मुगत, पद उपान रिच्छया करै।
रामा हिन्दू पूज हैं, मुसलमान दण्ड क्यू धरै॥

(श्रीदयालु बाणी, भाग ६)

इन्हीं श्रीदयालुदासजी महाराजने अपने ग्रन्थ 'ग्रन्थश्री गुरुप्रकरण' (दयालु बाणी भाग २) मे बहुला नामक गायके उपाख्यानके माध्यमसे गायकी सत्यनिष्ठाको बड़े विलक्षण-रूपमें उजागर किया है। गुरुवाणीमें वर्णित यह बहुला गौका प्राचीन आख्यान साररूपमें इस प्रकार है—

पूर्वकालमें एक हरिभक्तके यहाँ एक सत्यवादिनी तथा गुरुभक्तिपरायणा बहुला नामक गाय थी। सामान्य गायोंके समान वह भी गायोंके समूहके साथ घास चरने वनमें जाया-आया करती थी। एक दिन बहुला गाय अन्य गायोसे बिछुडकर वनमें बहुत आगे निकल गयी। वहाँ उसे एक सिंह मिल गया। सिंहको देखकर ठिठककर बहुला जहाँ-की-तहाँ खड़ी हो गयी। उसे अपने मरनेका तो कोई भय नहीं था, किंतु उसे अपने असहाय बन जानेवाले बछड़ेकी चिन्ता हो रही थी। इसके निवारणार्थ धैर्य रखते हुए बहुला गायने सिंहसे कहा—

'हे वनराज! मेरी एक प्रार्थना सुनिये। आप आज मुझे मत मारें। मैं सत्यतापूर्वक आपको वचन दे रही हूँ कि 'अपने बछड़ेसे एक बार मिलकर तथा उसे दूसरोंको सुपुर्द कर कल प्रातः मै यहींपर आपके पास लौट आऊँगी। तब

आप मुझे आरामसे खा जाना।' यह सुनकर वनराज बोला—'तुम तो मेरी शिकार हो। तुम्हारी बातका कैसे भरोसा किया जाय?' इसपर बहुलाने कहा—

दरशण भग साथ अपराधक। लेत दीक्षा कर मनै असाधक।
सो पातक भुगतू वनराई। जो पै बहुरि पास तुम नाऽऽई॥

अर्थात् 'हे वनराज! यदि मैं दिये वचनानुसार आपके पास लौटकर न आऊँ तो मुझे वह अपराध लगे जो कि संत और भगवान्‌के दर्शनमें विक्षेप करनेवाले पुरुषको तथा गुरु-दीक्षा लेकर भगवान्‌के सम्मुख होनेवालेको मना करनेवाले दुष्ट पुरुषको हुआ करता है।'

सत्यताकी परीक्षाके लिये सिंहने इस बातको मान लिया और बहुलाको छोडकर उसके पुनः लौट आनेकी प्रतीक्षामें वह वहीं बैठ गया। कुछ रात होते-होते बहुला अपने घर पहुँची। उसने बछड़ेसे कहा—'बेटा! आज भरपेट आखिरी बार दूध पी ले।' घबड़ाया हुआ बछड़ा बोला—'माँ! तुम मुझे क्यों छोड़ देना चाहती हो?' बहुलाने कहा—'वनमे मुझे खानेको उद्यत सिंहका पुनः खाद्य बनने-हेतु उसके पास लौट आनेका वचन देकर मैं केवल तुमसे मिलने आयी हूँ। अतः आज तृप्त होकर दूध पी लो। अब तुमसे वियोग होना अवश्यम्भावी है।'

बछड़ा बोला—'हे माता! यहाँ तुम्हारे सिवाय मेरा कौन आधार है?' बहुलाने कहा—*'सब प्रतिपालक समरथ नियरो'*—बेटा! 'सबके रक्षक परमात्मा सबके साथ रहा करते हैं। उनके रहते हुए किसीको किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। इसपर भी यदि सतोष न हो तो चल मेरी माँकि पास चल। मैं उन्हे तुम्हारी सार-सँभाल सम्हला कर आरामसे वनमें चली जाऊँगी।'

ऐसा कह अपने बछड़ेके साथ बहुला अपनी माँकि पास पहुँचकर बोली—'माँजी! अबसे इस बच्चेकी सार-सँभाल आपके सुपुर्द है।' बहुलाकी माताने कहा—'क्यो! तुम कहाँ जा रही हो?' बहुलाने कहा—'वनमे मुझे खानेको उद्यत सिंहके पास लौट आनेका वचन देकर अपने बच्चेसे मिलने आयी हूँ। अतः मुझे जल्दी ही वहाँ लौटना है।'

बहुलाकी माताने कहा—'तूने ऐसी क्या शपथ उठायी है? क्या वचन दिया है?' बहुला बोली '. .... .. '

जन अपराध पाप [illegible]॥
दीक्षा लेत मनै कर [illegible]।
फिर नाऽऊँ तो अकृत [illegible]॥

अर्थात् 'गुरु-दीक्षा लेकर भगवत्सम्मुख [illegible] संत-दर्शनमे बाधा देनेमें जो अपराध बनता है—[illegible] लौटकर न आऊँ तो मुझे वह दोष लगे' मैंने [illegible] वनराजको यह वचन दिया है।

बहुलाकी माताने कहा—सुनो पुत्री!—

एती ठौड़ कूड़ नहि दोपण। कहूँ धिया [illegible]॥
साम काम पितुमाता कारण। गुरुमेव परपीर [illegible]॥
सज्जन हित कै प्राणहि जावत। पुनि शिशु हेत दोष [illegible]॥
सप्तवातमे कूड़ न पातक। महत पुरुष बरणे [illegible]॥

माताके इस प्रकारके लुभावने तथा नीतियुक्त वचन सुनकर भी सत्य प्रतिज्ञावाली बहुला अपने निश्चयसे नहीं डिगी। वह बोली—

बहुला वचन मातु सुन लीजै। एह बन्धन जग [illegible]॥
झूठ पाप सम पाप न माता। जनम जनम लग [illegible]॥
दीनी शपथ इसी मै केहर। चूकां ठौड़ नरक [illegible]॥
प्रिये एकोत्तर जन्तु हजारा। प्राणी भुगते [illegible]॥
सुगरा होय नुगरता करही। पाप अघोर कहो [illegible]॥
झूठ बोलिये एकहि धानक। गुरुधुम हेत [illegible]॥

यह सुनकर माता और बछडेने कहा—'यदि [illegible] सिंहको खुराक ही देनी है तो (तुम-जैसी परम उपयोगी साध्वी गौकी रक्षाके लिये (हम) (माता और बछड़ा) अपना देह उस सिंहको दे देते हैं।' यह सुनकर [illegible] बोली—'जो वचन दे उसे ही अपना देह सौंपना [illegible]। ऐसा न होनेपर महान् असत्यताका दोष लग जाता है।' [illegible] कहकर बहुला तत्काल वनकी ओर दौड़ चली। [illegible] बछडा विलाप करते पीछे रह गये। गायका [illegible] बहुत उदास हो गया।

बहुत शीघ्र बहुला उसकी प्रतीक्षामें बैठे [illegible] पहुँच गयी और बोली—'हे वनराज! आप [illegible] हैं? जिन्होंने कि अपनी भक्ष्यभूता मेरा [illegible] आपने मेरे लिये प्रतीक्षा करके [illegible] लिये में आपसे क्षमा चाहती हूँ। [illegible] भक्षण कर ले।' ऐसा कहते हुए [illegible]

होकर वैठ गयी। यह सव असम्भव किंतु प्रत्यक्षमें सत्यरूपेण घटित देखकर सिंह वड़े असमंजसमे पड गया। वह सोचने लगा—'पशु यह भी है और पशु मैं भी हूँ ? मेरा तो कितना दूषित विचार है और इस गायका विचार कितना महान् है ? यदि ऐसी दिव्यात्मा गायको मारा या पीडित किया तो मेरी कहीं गति होनेवाली नहीं है।'

फिर कुछ समयतक सोच-विचार करते हुए अन्तर्यामी परमात्माकी प्रेरणासे प्रेरित हो वह सिंह वोला—'हे वहुला! तुम मेरी परम हितैषिणी और आदरणीया माता तथा गुरु हो। अब मैं तुम्हे मार नहीं सकता। मै अपने संदेह-निवारणार्थ तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। मुझे यह बताकर मेरा समाधान करो कि—'तुमने मेरे समक्ष जो शपथ ली और जिसके भयसे तुमने मरनेके लिये अपनी प्यारी देह भी मेरे सामने रख दी—उसके भंग हो जानेमें क्या हानि होती है ?' बहुला वोली—

वहुला कहत सुणो वनराई। कलप अनेक नरक दु खदाई॥
जामण मरण चौरासी जीवा। भरमत नरदेह कदेक सींवा॥
मौसर पाय मिनरव अवतारा। गुरुगम शब्द मिलूँ करतारा॥
एह चूका कहुँ ठाहर नाँई। हरि वेमुख रिपु ताय सदाई॥
तिणचर जलचर अनचर पाहन। पोषण भरण अदेवस कोहन॥
सार सभार करै सवकेरी। तास विसार कहा गत हैरी॥

अर्थात् ऐसा हो जानेसे (वचन-भंग करनेसे) प्राणी पहले तो अनेक कल्पोतक नरकमे दुःख भोगता है। फिर जन्म-मरणके चक्करमे पड़कर चौरासी लाख योनियोंमें भटकता रहता है। भटकते-भटकते उसे चौरासीके अन्तमे आत्मोद्धारका द्वारात्मक मानव-देह प्राप्त होता है। साक्षात् भगवदवतारभूत मानव-तन पाकर जो प्राणी गुरुकृपासे भगवान्के सम्मुख हो मोक्षपद पा लेता है, उसका जीवन सार्थक हो जाता है। जो कल्याणका ऐसा अवसर पाकर भी चूक जाता है अर्थात् मानव-तन पाकर भी हरिसे विमुख वना रह जाता है वह सदैव जन्म-मरण और कालके चक्करमें पड़ा रहता है। प्राणी व्यर्थमें ही अपने भरण-पोषणकी चिन्ता किया करता है। उसे सोचना चाहिये कि जो परमात्मा जलचर, अन्नचर, तृणचर (पशु), पाहनचर आदि समस्त प्राणियोका प्रतिपाल करते रहते हैं, क्या वे मेरा प्रतिपाल नहीं करेगे? जो ऐसे कृपालु परमात्माको भुला देता है, उसकी आगे क्या दशा होगी ?

मैंने सत्पुरुषोके संगसे यही शिक्षा पायी है कि प्राणीको कभी झूठ नहीं बोलना चाहिये। सत्यानुशीलनसे पशु भी चौरासीके चक्करसे निकलकर सीधा मानव-तन प्राप्त कर लेता है। मैं अपने सत्य वचनकी पालना करते हुए मानव-तन पाकर आत्मोद्धार करना चाहती हूँ। इसलिये अपने वचनकी पालना करने-हेतु मैं आपके सम्मुख लौट आयी हूँ।'

गायके मुखसे सत्यानुशीलनकी तथा मानव-तनकी महत्ता सुनकर उस सिंहके मनमें विचार आया—'यदि परमात्मा मुझे भी मनुष्य बना दे तो मैं भी इस गायके समान सदाचारी बनकर भगवद्भक्तिका परम आनन्द प्राप्त कर लूँ। गायरूपी सत्पुरुषके संगसे सिंहके मनमें उत्पन्न हुए इन सद्विचारोंको स्वीकार करते हुए करुणावरुणालय भगवान्ने तत्काल ही उस सिंहकी आयु पूर्ण कर दी। सिंह मृत्युको प्राप्त हो गया। वहुला लौटकर अपने घर आ गयी। बहुलाकी माँ, बछड़े तथा उसके स्वामीके हृदयमें इससे अपार आनन्द छा गया।

सत्संगके प्रभावसे वही सिंह अगले जन्ममें बहुलाके वंशमे (गायके रूपमे) आ गया। अब वह भी पूर्णतया बहुलाके समान सद्गुणी बन गया था। यहाँ दोनों बहुत समयतक साथ-साथ रहे। देहावसान होनेपर उस बहुला तथा गोभूत सिंह दोनोने अगले जन्ममें मनुष्य-तन प्राप्त कर लिया। यहाँ दोनों गुरुमुखी तथा भगवान्के सम्मुख होकर रामभक्तिमे लग गये। अन्तमे दोनो साथ-साथ भगवद्धामको प्राप्त हो गये।

संतवाणीमें उपलब्ध यह बहुला गौका आख्यान केवल एक आख्यानमात्र नहीं है, अपितु यह आख्यान गायकी सत्यनिष्ठा, परोपकारिता, स्वकर्मपरायणता, परम उदारता, परमनिर्भीकता, परगुणग्राहकता आदि अनेक मानवीय सद्गुणोंको प्रकट करनेवाली खान (खदान) है। वर्तमान युगके दिग्भ्रान्त लोगोंको इस आख्यानसे सन्मार्गालोक प्राप्त हो सकता है।

═══※※※═══

प्राणी, पशु और गाय—जैन-दृष्टि

(अणुव्रत-अनुशास्ता, राष्ट्रसंत आचार्य श्रीतुलसीजी)

प्राणी दो प्रकारके होते हैं—सिद्ध और संसारी। सिद्ध वे होते हैं, जो जन्म-मरणकी परम्पराको तोड़कर मुक्त हो जाते हैं। उनका इस संसारसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता। दूसरे संसारमें रहनेवाले संसारी प्राणी अनेक प्रकारके होते हैं।

शाश्वत धर्मका संदेश

संसारमें जितने प्राणी हैं, सबका अपना-अपना महत्त्व है। प्रत्येक प्राणीको जीनेका अधिकार है। जैन-दर्शनकी दृष्टिसे संसारका कोई भी प्राणी वध्य नहीं है। सनातन धर्मकी परिभाषा करते हुए जैन तीर्थकरोंने कहा—सव्वे **पाणा ण हंतव्वा—एस धम्मे धुवे णिइए सासए।'** ध्रुव, नित्य और शाश्वत धर्म यही है कि संसारके किसी भी प्राणीका वध न किया जाय। इसी अवधारणाके आधारपर जैन मुनि प्राणिमात्रकी हिंसासे विरत रहते हैं। जैन श्रावक गृहस्थ होते हैं। वे पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रिय दायित्वोसे बँधे हुए रहते हैं। चाहते हुए भी वे हिंसासे सर्वथा उपरत नहीं हो सकते। पृथ्वी, पानी आदि सूक्ष्म जीवोंकी हिसासे बचना उनके लिये सम्भव नहीं है, फिर भी वे अनावश्यकसे बचनेके लिये जागरूक रहते हैं। चलने-फिरनेवाले निरपराध त्रसकाय-जीवोंकी संकल्पपूर्वक हत्या उनके लिये सर्वथा वर्जित मानी गयी है। मांसाहार उनके लिये पूर्णरूपसे त्याज्य है। मांस तो क्या वे अंडेके मिश्रणसे बने खाद्य पदार्थोंको भी अभक्ष्य मानते हैं। इस दृष्टिसे कहा जा सकता है कि जैन श्रावक प्राणि-जगत्के प्रति बहुत ही करुणाशील और संवेदनशील रहते हैं।

एक चर्चित और अर्चित पशु

तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय जीवोंमें एक बहुत बड़ा जगत् है पशुओंका। पशु-जगत्में गाय एक ऐसा प्राणी है जो बहुचर्चित भी है और बहु अर्चित भी। भारतमें गायको माताके रूपमें देखा जाता है। माँ जितनी पूजार्ह होती है, गायको भी उतना ही पूजार्ह माना जाता है। पशुको पूज्य माननेके भाव केवल भारतमे ही है, ऐसी बात नहीं है। गाय और भैंसके मिश्रण-जैसे रूपवाला एक पशु है 'याक'। तिव्वतमे याकको उतना ही पूज्य माना जाता है जितना भारतवर्षमें गायको। गायको पूज्य माननेके पीछे दो दृष्टिकोण हो सकते हैं—उसके प्रति माँ-जैसी भावना और उसकी उपयोगिता। गाय एक उपयोगी प्राणी है, इसमें कोई संदेह नहीं है। मनुष्य हो या पशु, उपयोगिताके आधारपर उसके आकर्षणमे वृद्धि सम्भव है। सांसारिक सम्बन्धोंमें माँका सम्बन्ध सर्वाधिक पवित्र और विशिष्ट है। जब गायमें माँकी बुद्धिका अध्यारोपण हो जाता है तो उसके प्रति सम्मान और सुरक्षाकी बात सहज प्राप्त है।

प्रश्न एक ही है कि गायको माता माननेकी बात शाश्वत सचाई है या मनुष्यकी स्वार्थी मनोवृत्ति? यदि यह शाश्वत सचाई होती तो गायोंके प्रति भेदभावका व्यवहार नहीं होता। एक आदमी अपनी गायको चारा-पानी देता है, नहलाता है, सहलाता है, उसका सब प्रकारसे ध्यान रखता है, किंतु कोई दूसरी गाय जाकर उसके घरका चारा चरने लगे तो लाठीसे निर्मम प्रहार करनेमे भी संकोच नहीं करता। क्या कोई व्यक्ति अपनी माँको इस प्रकार पीट सकता है? दूसरी गायकी तो बात ही छोड़ें, अपनी गाय भी जब बूढ़ी हो जाती है, दूध देनेमे अक्षम हो जाती है, तब उसकी सेवा कौन करता है? गो-सेवाके नामपर आन्दोलन चलाना और निःस्वार्थ भावसे गौकी सेवा करना—ये दो अलग-अलग बातें हैं। इनके अन्तरको समझनेके लिये निष्पक्ष दृष्टिकोणकी अपेक्षा है।

जैन-श्रावक और गोकुल

वर्तमान व्यवस्थामे गायोंकी सेवा और सुरक्षाके लिये गोशालाएँ बनायी जाती हैं। ये व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनो प्रकारकी होती हैं। प्राचीन कालमें जैन-श्रावक बहुत बड़े गोकुल रखते थे। भगवान् महावीरके प्रमुख [illegible] आनन्द, कामदेव, चूलनीपिता, [illegible] सुरादेव, महाशतक आदिके नाम प्रसिद्ध हैं। '[illegible] उपासक-दशा'मे इनके बारेमें [illegible] इनकी समृद्धिकी आँकड़ोंमें [illegible]

बताया गया है कि इनके गोकुलोंमें हजारों-हजारों गायें थीं। जैन श्रावक सामान्यतः खेती करते थे। खेतीकी दृष्टिसे बैल उनके लिये बहुत उपयोगी थे। पशुपालन उनकी जीवनशैलीका अभिन्न अङ्ग था। पशुओंको पीटना, उनपर अतिभार लादना, उनके खान-पानमें कमी करना, उनको क्रूरतासे बाँधना, उनका अंग-भंग करना आदि कार्य उनके लिये धार्मिक दृष्टिसे निषिद्ध माने गये हैं। इस कारण वे अपने आश्रित पशुओंके प्रति पूरे जागरूक रहते थे। धार्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक सभी दृष्टियोंसे श्रावकोके गोकुलोंमें गायोंकी पूरी देखभाल होती थी।

साहित्यमें कामधेनु

जैन आगमोंमे कामधेनुका भी उल्लेख मिलता है। प्रसिद्धि है कि कामधेनु व्यक्तिकी हर इच्छा पूरी कर देती है। सम्भवतः इसी कारण इसकी पूजा करनेकी परम्परा रही है। यह भी माना जाता है कि कामधेनु स्वर्गकी गाय है। रघुवंशका राजा दिलीप एक बार कामधेनुके निकटसे निकला। शीघ्रताके कारण वह उसके विनयोपचारमें स्खलित हो गया। फलतः उसे कामधेनुकी नाराजगी झेलनी पड़ी। कालान्तरमें उसे अपने प्रमादका बोध हुआ। कामधेनुको प्रसन्न करनेके लिये राजाने उसकी पुत्री नन्दिनीकी अभूतपूर्व सेवा की। महाकवि कालिदासने उस सेवाका वर्णन करते हुए लिखा है—

स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां
निषेदुषीमासनबन्धधीरः।
जलाभिलाषी जलमाददानां
छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्॥

राजा दिलीप नन्दिनी गायकी सेवा कर रहे थे। वह खड़ी रहती तो राजा खड़ा हो जाता। वह गमन करती तो राजा चलता। वह बैठती तो राजा बैठता और वह पानी पीती तभी वह पानी पीनेकी इच्छा करता। जिस प्रकार छाया व्यक्तिका अनुगमन करती है, उसी प्रकार राजा दिलीपने नन्दिनी गायका अनुगमन किया।

गायके प्रति राजाकी भक्ति औपचारिक है या वास्तविक? यह जाननेके लिये कामधेनुने राजाकी परीक्षा ली। जंगलमें भ्रमण कर रही नन्दिनीपर अचानक सिंहका आक्रमण होता है। राजा अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर नन्दिनीको बचानेका प्रयास करता है। सिंह राजासे कहता है—

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्॥

'राजन्! जगत्का एकच्छत्र साम्राज्य, यह युवावस्था और यह सुन्दर शरीर। तू एक गायके लिये इतना सब कुछ खोने जा रहा है। लगता है तू दिङ्मूढ हो गया है।'

सिंहद्वारा ऐसा कहनेपर भी राजा नन्दिनीको बचानेके लिये डटा रहा। उसकी दृढता और सेवासे कामधेनु प्रसन्न भी हो गयी। यह एक पौराणिक घटना है। इसके आधारपर गौ-जातिके प्रति मनुष्यके दृष्टिकोणका बोध किया जा सकता है।

जैनदृष्टिकोण

जैन धर्मका जहाँतक प्रश्न है, यह छोटे-बड़े सभी पशुओंको अवध्य मानता है। जैन-आगमोंमें लिखा है—

जे केइ खुड्डगा पाणा अट्ठवा संति महल्लगा।
सरिसं तेहि वेर ति असरिस ति य णो वए॥

जो कोई छोटे प्राणी हैं अथवा बड़े प्राणी हैं उनको मारनेसे कर्मका बन्ध सदृश होता है या असदृश होता है ऐसा नहीं कहना चाहिये। क्योंकि जीवत्वकी दृष्टिसे सब जीव समान हैं। कर्मबन्धनका अन्तर आसक्तिके आधारपर होता है। आसक्ति जितनी सघन होगी, कर्मका बन्धन उतना ही प्रगाढ होगा। निष्कर्षकी भाषामें यह माना जा सकता है कि धार्मिक दृष्टिसे प्राणिमात्र अवध्य है। सामाजिक दृष्टिसे उपयोगी पशुओंके संरक्षणमें जैनधर्मकी असहमति नहीं है। मनुष्यका दायित्व है कि वह धार्मिक, सामाजिक और पर्यावरणकी दृष्टिसे अपनी जीवनशैलीमें अहिंसाको स्थान दे और गोहत्या-जैसे प्राणिवधके पापसे बचे।

जैनधर्म और गोरक्षा

जैनधर्ममे जैन साधुओके पञ्च महाव्रतोंमें अहिंसाव्रत आद्य माना गया है और उसका पूर्णरूपसे आचरण करानेके

लिये अनेक व्रत और नियम वताये गये हैं। जैन तीर्थङ्कर, सूरी, जैन-मतावलम्वी धनिक और अधिकारी लोग अहिंसा-धर्मके पालनमें बहुत ही आगे बढ़े हुए हैं। इनके प्रयत्नोसे मुसलमान बादशाहोने इनके तीर्थस्थानोमे प्राणि-हत्या न होने देनेके आदेश जारी किये। इन प्रयत्न करनेवालोमें अकबरकालीन हीरविजय सूरिका नाम बहुत ही विख्यात है। बादशाह अकबरपर इनका बड़ा प्रभाव था। शत्रुञ्जय पर्वतपर आदिनाथके मन्दिरके द्वारपर सन् १५९३ मे जो संस्कृत शिलालेख बैठाया गया है, वह इस विषयका साक्षी है। विजयसेनने भी गौ, बैल और भैंसकी हत्याके विरुद्ध अकबरसे आदेश जारी कराये हैं। इन लोगोने इस सम्वन्धमे मुगल बादशाहोंसे जो फरमान प्राप्त किये, उनका विवरण आगे दिया जाता है—

(१) ता० १५ जून १५८४ को हीरविजयजीको दिये हुए अकबरके फरमानमें यह लिखा है कि गुजरातमे रहनेवाले हीरविजयजी और उनके शिष्योंकी अलौकिक पवित्रता और उग्र तपकी ख्याति सुनकर बादशाहने उन्हे दरबारमे बुलाया था। विदा होते समय उन्होंने बादशाहसे जो विनती की थी, उसके अनुसार यह ताकीद की जाती है कि पर्यूषण-उत्सव (भाद्रपद मासमें होनेवाले) के १२ दिनोंमें जैन आबादीके किसी शहरमे किसी भी पशुकी हत्या न की जाय।

(२) सन् १५९२ में हीरविजयजीको दिये गये दूसरे फरमानमें यह लिखा है कि आचार्यजीने यह विनती की है कि मुगल साम्राज्यमें श्वेताम्बर-पन्थियोके जो तीर्थस्थान हैं, वे सब जैनोंके सुपुर्द किये जायँ ताकि वहाँ किसी प्राणीकी हत्या न हो। आचार्यजीकी यह विनती न्याय्य, उचित और इसलामके अविरुद्ध होनेसे ये सब स्थान हीरविजयजीको दिये जाते है।

(३) खास-खास दिनोमे प्राणिहत्या न होने देनेके लिये एक फरमान सन् १६०८ मे बादशाह जहाँगीरसे पण्डित विवेकहर्षने प्राप्त किया।

(४) सन् १६१० मे पण्डित विवेकहर्षने बादशाह जहाँगीरसे पर्यूषण-उत्सवके दिनोमें प्राणिहत्याकी मनाहीका फरमान प्राप्त किया।

शान्तिदासने अहमदावादमें चिन्तामणि पार्श्वनाथका एक बहुत बड़ा मन्दिर बनवाया था। सन् १६४० में औरंगजेबने उसे तोड़-फोड़कर मसजिद बना लिया। उस समय वहाँ एक गौ मारी गयी, इसलिये कि कोई हिन्दू वहाँ पूजा करने न आवे। सन् १६४८ मे शान्तिदासने शाहजहाँसे प्रार्थना कर वह मन्दिर लौटा लिया। पर भ्रष्ट होनेके कारण वह मन्दिर न रहा।

आये दिन काठियावाड़ और गुजरातके बहुत बड़े हिस्सेमे प्राणिहत्या जो नहीं होती और लोग प्रायः मांसाहार नहीं करते, इसका बहुत कुछ यश जैनोंकी शिक्षाको है। 'अहिंसा परमो धर्मः' का व्रत लोग बडी निष्ठासे पालन करने लगे। सच्ची गो-पूजा गुजरातमे ही दीख पड़ती है।

जैन-गोधन

पहले जैनलोग अपनी सम्पत्तिकी गणना गौओंकी सख्यासे करते थे। 'व्रज' और 'गोकुल' उसके माप थे। एक व्रज या गोकुल १० हजार गौओका होता था। विपुल गोधनके धनी दस बडे व्यापारियोंमे राजगृहीके महाशतक और काशीके चूलनिपिता गिने जाते थे। इनमेंसे हर एकके पास आठ-आठ गोकुल अर्थात् अस्सी-अस्सी हजार गौएँ थीं। चम्पाके कामदेव, वाराणसीके सुरदेव, काम्पिल्यके कुण्डकोलिक और आलम्भीयके चूलशतकके पास छः-छः गोकुल अर्थात् साठ-साठ हजार गौएँ थीं। वाणिज्य ग्रामके आनन्द, श्रावस्तीके नन्दिनीपिता और शालिनीपिताके पास चार-चार गोकुल (चालीस-चालीस हजार गौएँ) थे। इनमें सबसे गरीब पोलासपुरके शकडालपुत्र थे, जिनके पास एक ही गोकुल यानी दस हजार गौएँ थीं।

महाशतककी पत्नी रेवतीके लिये उनके पितासे ८ गोकुल (८० हजार गौएँ) दहेजमें मिला था। आनन्दने महावीर स्वामीसे जब श्रावक व्रत लिये, तब ८ गोकुल पालनेकी शपथ की थी।

[प्रस्तुति—[illegible]]

सिक्ख-पंथ और गोभक्ति

(श्रीदशमेशसिहजी)

एक बार जब दशमेश गुरु गोविन्दसिंहजी पुष्कर-तीर्थकी यात्रापर गये थे तो वहाँ पण्डित पृथ्वीराजने उनसे पूछा था कि उनके जीवनका ध्येय क्या है और वह खालसा पंथ क्यों चला रहे हैं?

इसपर गुरु महाराजने उत्तर दिया था—'पण्डितजी! यह खालसा पंथ आर्यधर्म, गौ-ब्राह्मण, साधु-गरीब तथा दीन-दुखियोंकी रक्षाके लिये है। यही सेवा मैं कर रहा हूँ और मेरा खालसा सदा करता रहेगा। (जन्मसाखी)

दशमेशजीके हृदयमें गो-रक्षाके लिये कैसे भाव थे यह उपर्युक्त वार्तासे स्पष्ट है। इसके अलावा नीचे लिखी पंक्तियाँ भी इस विषयमे द्रष्टव्य हैं।

मार्कण्डेयपुराणके देवीमाहात्म्य दुर्गासप्तशतीके आधारपर गुरुजीने 'चण्डी दी वार' की रचना की है। वीररससे भरपूर इस रचनामे अनेकों जगह आपने माता दुर्गा भवानीसे गोरक्षाकी माँग की है—

यही देहु आज्ञा तुर्क गाहै खपाऊं।
गऊ घातका दोष जग सिउ मिटाऊं॥
सकल हिन्द सिउ तुर्क दुष्टां बिदारहु।
धरम की ध्वजा कउ जगत् मे झुला रहु॥
सकल जगत महि खालसा पंथ गाजै।
जगै धर्म हिन्दुन सकल धुंध भाजै॥

दशमेशने देश, धर्म और जातिकी रक्षाके लिये कोटनयना देवीके पर्वतपर संवत् १७५६ वि० में काशीके पण्डित केशवदत्त नामक पुरोहितकी देख-रेखमे महाचण्डी-यज्ञ किया था। यह यज्ञ एक वर्षतक चला। महान् सिक्ख इतिहासकार महाकवि भाई संतोखसिंह चूडामणिने अपनी वृहत्काय कृति 'सूरजप्रकाश' के पृष्ठ ४९६० पर लिखा है कि श्रीरामनवमीके दिन रविवारको जबकि डेढ़ पहर दिन बाकी था, आठ भुजाओवाली माँ दुर्गा भवानीने प्रकट होकर गुरुजीसे कहा—'पुत्र! मैं तुम्हारी श्रद्धा-भक्तिसे प्रसन्न हूँ। तुम अपना मनचाहा वर माँगो।'

तब गुरुजी हाथ जोड़कर खड़े हो गये और बोले—

देओ वर माता पंथ उपावहु।
तुर्क-राजको तेज खपावहुं॥
हिन्दूधर्म नित हो रहा विनाशा।
जेह बचाए पुन करूं प्रकाशा॥

सारांश कि गुरुजीने मुसलमानोंसे हिन्दू-धर्मको बचानेके लिये खालसा पंथको आशीर्वाद देनेकी प्रार्थना की। माता दुर्गाजीने अपने हाथसे गुरुजीको एक तलवार भेंट की।

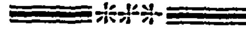
तत्पश्चात् लंकुड़िये (हनुमान्‌जी) ने दशमेशजीको कच्छा भेंट किया तथा कहा कि इसे वह अपने सिंहोंको दे देवें जिसे वे युद्धके समय धारण करें। वह (हनुमान्‌जी) पंथके बलमें वृद्धि करते रहेंगे तथा युद्ध-क्षेत्रमें उनकी सहायताके लिये सदा उपस्थित रहेंगे। (सूरजप्रकाश-१९६५ का संस्करण)।

महाचण्डी-यज्ञके बाद इसी वर्ष वैशाखीके दिन गुरु गोविन्दसिंहजीने खालसा पंथका सृजन किया था। इन्हीं केशधारी वीरोंने बादमे गो-रक्षाके लिये अनगिनत बलिदान दिये। इसी शृंखलामें सन् १८७१ ई० के नामधारी वीरोंका गौरक्षार्थ बलिदान क्या कभी भुलाया जा सकता है? इन कूका वीरों (नामधारियोंका ही एक अन्य नाम) ने पंजाबमें अनेकों जगह अंग्रेजोंके सहपर स्थापित बूचड़खानोंको तोड़कर गोहत्यारोंको मार डाला था। इस मामलेमें अंग्रेजोंने ६५ नामधारी वीरोंको तोपोंसे उड़वा दिया था। अनेकोंको काले पानीकी सजा दी तथा नामधारी पंथके गुरु सतगुरु रामसिंहजीको रंगून निर्वासित कर दिया, जहाँ बादमें उनका निधन हुआ। जब आर्यसमाजने गोरक्षाका आन्दोलन छेड़ा तो सिक्खोंने बहुत अधिक उत्साह दिखाया था। सरदार इन्द्रसिंह अमृतसरवालेने घोषणा की थी कि गो-रक्षा-आन्दोलनमें हिन्दुओंको जरा भी खतरा महसूस हुआ तो दस लाख सिक्ख अपनी कुर्बानी देनेको तैयार खड़े हैं। (बाबा-बन्दाबहादुरजीका जीवन-चरित्र पृ० १९)

गुरु गोविन्दसिंहजीके पूर्वके गुरुगण न केवल गौ अपितु सभी जीवोंकी हत्याके खिलाफ थे—

मास मास सब एक हैं, मुर्गी, हिरणी, गाय।
आँखि देखी नर खात हैं, ते नर नरक हीं जाय॥
क्या बकरी क्या गाय है क्या अपनो जाया।
सबको लहू एक है, यह साहब फरमाया॥

पीर-पैगम्बर औलिया सब [illegible]।
नाहक जीव न मारिये, [illegible]॥
जो रत लागे कापड़, [illegible]।
जे रत पीवे मानुखा, तिन, [illegible]।



बौद्ध-साहित्यमें गौका स्थान

(श्रीजयमगलरायजी सन्यासी)

भगवान् बुद्ध करुणाके अवतार थे। उनके मनमें संसारके समस्त प्राणियोके लिये समान दया थी। वे किसी भी प्राणीके कष्टको देखकर चुप नही बैठ सकते थे। उनका स्नेह सीमाबद्ध नही था, फिर गाय-जैसे उपयोगी और मानवमात्रको बिना किसी भेद-भावके एक-समान सुख देनेवाले प्राणीकी वे कैसे उपेक्षा कर सकते थे? उनकी बहुत-सी बातोमेसे मुख्य बात थी गोमांस-भक्षण न करनेकी। बुद्धने जनताको गौकी और गोवशकी उपयोगिता बतलाकर गोवध न करनेकी शिक्षा दी। भगवान् बुद्ध गायकी उपयोगिताको सर्वोपरि स्थान देते थे।

इसलिये माता-पिताके समान उन्होने पूज्य मानकर गौका सत्कार किया। उन्होने गायको माता-पिताके समान उपकारी बतलाया। वे गायको सुखका मूल स्रोत समझते थे—

यथा माता पिता भाता, अञ्ञे वापि च ञातका।
गावो नो परमा मित्ता, यासु जायन्ति ओसधा॥
अन्नदा बलदा चेता, वण्णदा सुखदा तथा।
एतमत्थवसं ञत्वा नास्सु गावो हनि सु ते॥

जैसे माता-पिता, भाई, कुटुम्ब-परिवारके लोग हैं, वैसे ही गाये भी हमारी परम मित्र, परम हितकारिणी हैं। जिनके दूधसे दवा बनती है। गाय अन्न, बल, रूप-सौन्दर्य तथा सुखको देनेवाली है। इन बातोको जानकर ही पहलेके लोग गौकी रक्षा करते थे। गायके प्रति भगवान् बुद्धकी ऐसी उदात्त एव पवित्र भावना देखकर उनके अनुयायियोंमे भी गायकी बड़ी कदर रही। इसी प्रकार बैल भी सब गृहस्थोंके लिये पोषणदायक है। इसलिये गाय-बैलका अपने माता-पिताकी तरह आदर करना चाहिये।

विदेशोंमे आज जो सर्व-भक्षक बौद्ध[illegible] लोग दीख पडते हैं, उन्हे देखकर हमलोग यह [illegible] हैं कि बौद्धधर्मावलम्बी लोग पहलेसे ही गो-मांस-भक्षक रहे होगे। परंतु यह कल्पना सही नहीं है। [illegible] बौद्धसम्राट् अशोकके शिलालेखोंमें गाय-बैल आदि प्राणियोंकी हत्या न होने देनेकी आज्ञाएँ मिलती हैं। उत्तर [illegible] (बर्मा) के अन्तर्गत विजयपुरमे सन् १३५० के लगभग सीहसूर नामक राजा राज्य करते थे। उनके प्रधान मन्त्री महाचतुरगबलका बनाया हुआ 'लोकनीति' नामक ग्रन्थ है, इसमे कहा है—

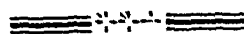
गोणाहि सव्व गिहीन, पोसका भोगदायका।
तस्मा हि माता पितू व, मानये सक्करेय्य च॥१४॥
ये च खादन्ति गोमंसं, मातुमसं व खादये॥१५॥
([illegible])

सब गृहस्थोंको भोग (योग्य पदार्थ) देनेवाले और पोसनेवाले गौ-बैल ही हैं। इसलिये माता-पिताके [illegible] उन्हे पूज्य माने और उनका सत्कार करे। जो गोमांस [illegible] हैं वे अपनी माताका मास खाते हैं।

भगवान् बुद्धके एक शिष्य थे धनञ्जय सेठ। [illegible] अपनी कन्याके विवाहोपलक्ष्यमे इतनी गौएँ [illegible] उन गाओंके खडे होनेके लिये लगभग [illegible] और तीन कोस लबे मैदानकी आवश्यकता हुई।

पश्चात चीनी यात्री हुएनसांगने [illegible] ८ [illegible] शताब्दीमे होनेवाले सम्राट् हर्षवर्धनके [illegible] है—

'उनके राज्यमे प्राणिहिंसा [illegible] दण्ड था। उन्होने अपने राज्यमे [illegible] था।' गो-हत्या और गो-[illegible]



भारतीय गायोंकी विभिन्न नस्लें*

भारत देशकी भारतीय गाये यहाँके निवासियोंकी नित्य और चिर-सहचर हैं। जिस समयतकका भारतवासियोका इतिहास पाया जाता है, उसी समयतक भारतीय गोगणका भी इतिहास पाया जाता है। आरम्भसे ही ये गायें मनुष्योंद्वारा पालित हैं। अन्य देशोंकी गायोंकी भाँति बहुत समयतक जंगलोमें हिंसक पशुके रूपमें घूमते रहनेके बाद ये मनुष्योके घरमे आकर नहीं पलीं। भारतीय गायोका विशिष्ट लक्षण है उनका गलकम्बल और पीठका ककुद्। प्राणितत्त्वविदोके मतसे ककुद्युक्त गाय जेबू (Zebu) श्रेणीके अन्तर्गत है।

आकृति-प्रकृति, गुण, दोष एवं रूप-रंगको ध्यानमे रखते हुए विभिन्न गोजातियोका वर्गीकरण विद्वानोने किया है। गायके समान ही बैल भी तरह-तरहकी जातिके होते हैं। किसीमें कोई गुण विशेष होते है तो किसीमे अन्य कोई विशेषता होती है। भिन्न-भिन्न जलवायु और लालन-पालनका गो और उसकी संतान दोनोपर ही प्रभाव पडता है। एक ही जातिमें अच्छे और बुरे दोनों तरहके पशुओका होना सम्भव है, किंतु आमतौरपर जो विशेषताएँ उनमे मुख्य रूपसे देखी जाती हैं उन्हींसे जाति-भेदकी पहचान होती है।

यद्यपि एक ही जातिकी कई गायोकी शक्ति अलग-अलग किस्मकी होती है, तथापि उनके दूध देनेकी शक्ति और उनके बछडे-बछियोके गुणोपर जातीय प्रभाव पाया जाता है—

१-जो गाये दूध खूब ज्यादा देती है, किंतु जिनके बछड़े खेती तथा गाड़ीके काममे विशेष उपयोगी नही होते, उन्हे 'दुग्ध-प्रधान एकाङ्गी-नस्ल' कहते हैं।

२-जो गाये दूध कम देती हैं, किंतु जिनके बछडे खेती या गाडी आदिके लिये विशेष उपयोगी होते है, वे 'वत्स-प्रधान एकाङ्गी-नस्ल' कही जाती है।

३-जिन गायोका दूध भी अधिक और बछड़े भी बलवान् तथा उपयोगी होते है, वे 'सर्वाङ्गी नस्ल' कहलाती हैं।

विभिन्न विद्वानोंका वर्गीकरणमें कुछ मतभेद हो सकता है तथापि स्थूल दृष्टिसे यहाँ विभाजन किया जा रहा है—

दुग्ध-प्रधान एकाङ्गी	वत्स-प्रधान एकाङ्गी	सर्वाङ्गी
साहीवाल या मान्टगुमरी, लाल-सिन्धी।	पँवार, खैरीगढ, नागौरी, अंगोल, अमृतमहाल, मालवी, नीमारी, दज्जल, भगनाडी, धन्नी, मेवाती, डाँगी, खिल्लारी, बछौर, आलमवादी, बारगुर, हल्लीकर।	हाँसी-हिसार, हरियाना, थारपरकर, काँकरेज, देवनी, गावलाव, कृष्णवल्ली, राठ, लोहानी, सीरी कगायम, गीर।

सर आर्थर आलवरने भारतकी गोजातिको कई वर्गो या भागोंमें बाँटा है। यह विभाजन नस्लोंके जन्म-स्थानके आधारपर किया गया है। मुख्य गो-नस्लें इस प्रकार हैं—

१-मैसूरकी लबे सीगोंवाली गौ।

२-काठियावाड़की गीर जातिकी गौ।

३-उत्तरकी सफेद रंगकी बडी रासकी गौ।

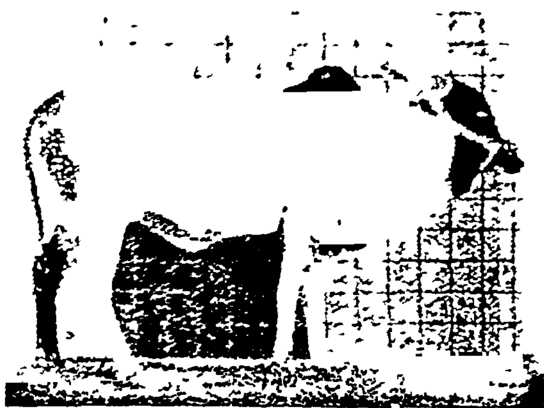
४-पजाबकी मिले हुए सफेद और लाल रंगकी मटगुमरी या साहीवाल जातिकी गौ।

५-धन्नी जातिकी गौ।

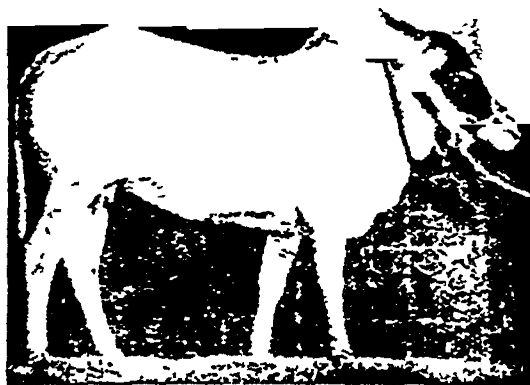
६-छोटी रासकी और छोटे सिरवाली पहाड़ी गौ।

आजकल भारतमें गौओकी जितनी नस्लें पायी जाती

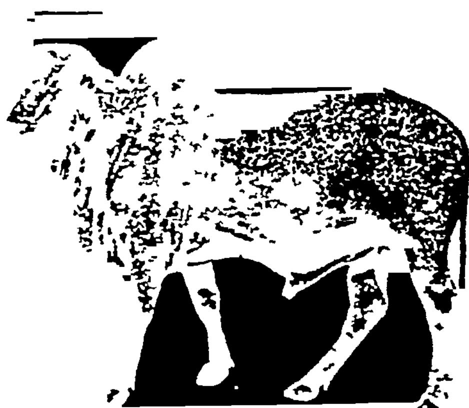
* इस विषयपर एक लेख हमे राष्ट्रिय डेयरी अनुसधान, करनालमे श्री आर० पी० सिहजीद्वारा भी प्राप्त हुआ है। जिसके कुछ अश इस लेखमें समाहित कर लिये गये हैं।



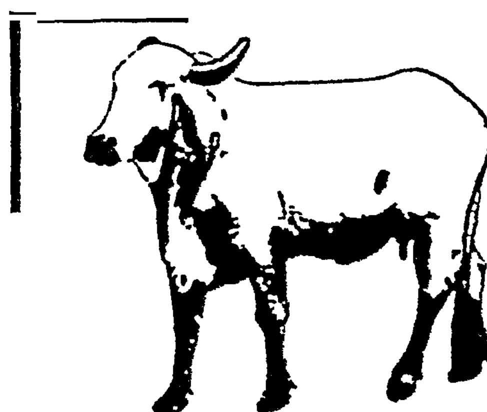
अमृतमहाल गाँ



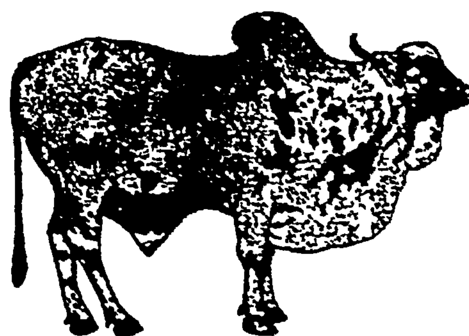
हल्लीकर गा



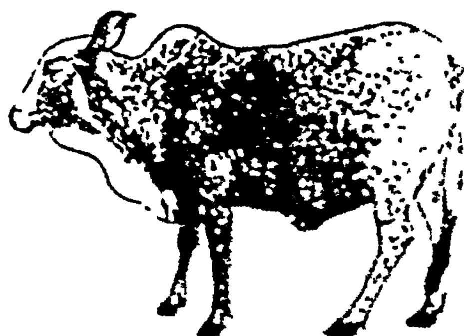
गीर साँड



गीर गाय



देवनी साँड



देवनी गाय

हैं, प्राय: वे सब इन्हीं वर्गोके अंदर आ जाती हैं। यहाँ संक्षेपमे इनका वर्णन किया जा रहा है—

(१) लंबे सींगोंकी मैसूरी गौ

मैसूरी गौएँ अपनी तेजी और श्रम-सहिष्णुताके लिये विशेष प्रसिद्ध हैं। इस जातिकी गायोंमें प्राय: दूध कम होता हैं। इनका सिर काफी लंबा, मुँह और नथुने कम चौड़े और ललाट काफी उभरा हुआ होता है। इस जातिके पशु प्राय: छोटी रासके होते हैं। कुछ मुख्य नस्ले इस प्रकार हैं—

१-अमृतमहाल नस्ल—यह नस्ल मैसूर राज्यमे पायी जाती है। इस जातिके पशुओंका रंग खाकी तथा मस्तक, गला और थूहा काले रंगके होते हैं। इस नस्लके बैल मध्यम कदके और फुर्तीले होते हैं।

२-हल्लीकर नस्ल—इस नस्लके पशु मैसूर राज्यभरमे पाये जाते हैं। यह एक स्वतन्त्र नस्ल है। इनका ललाट उभरा हुआ और बीचमे चिरा हुआ-सा होता है। इस नस्लकी गौएँ अमृतमहाल जातिकी गौओंकी अपेक्षा अधिक दुधार होती हैं। इनके सींग लंबे और नुकीले तथा कान छोटे होते हैं।

३-कंगायम नस्ल—इस नस्लके पशु कोयम्बटूरके दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वके तालुकोमें पाये जाते हैं। इनमें बहुधा दूध कम होता है। कहते हैं, इस जातिकी गौएँ १० से १२ सालतक दूध देती रहती हैं। इनके कान छोटे, मस्तक मध्यम परिमाणका, गर्दन ओछी तथा पूँछ काफी लंबी होती है। यह नस्ल सर्वाङ्गी मानी गयी है।

४-खिल्लारी नस्ल—इस नस्लके पशुओंका रंग खाकी, सिर वड़ा, सींग लंवे और पूँछ छोटी होती है। इनका गलकंवल काफी बड़ा होता है।

५-कृष्णातटकी कृष्णावेली गौएँ—इस जातिके पशु वंवई प्रान्तके दक्षिणी भाग एव हैदरावाद राज्यमें कृष्णा नदीके तटपर पाये जाते हैं। इस नस्लकी गौएँ काफी दूध देती हैं। यह नस्ल कई जातियोके मिश्रणसे वनी है। इनका थूहा काफी वड़ा, सींग और पूँछ छोटे तथा गलकंवल काफी वड़ा होता है।

६-वरगूर नस्ल—इस नस्लकी गौएँ मद्रासके कोयम्बटूरमे वरगूर नामक पहाड़पर वहुतायतसे मिलती हैं। इस नस्लके पशु बड़े दुर्दमनीय होते हैं। सहनशक्ति एवं तेज चालमे कहते हैं ये अद्वितीय होते हैं। इन गौओमे दूध बहुत कम होता है। इनका सिर लंबा, ललाट कुछ उभरा हुआ और पूँछ छोटी होती है।

७-आलमबादी नस्ल—इस नस्लको मैसूरकी हल्लीकर नस्लकी शाखा मानना चाहिये। इस नस्लके बैल बड़े परिश्रमी और तेज होते हैं तथा थोड़ी खुराकपर ही निर्वाह कर सकते हैं। गौओंके दूध कम होता है। इनका ललाट उभरा हुआ और मुँह लंबा तथा सँकरा होता है एवं सींग लंबे होते हैं।

(२) काठियावाड़के जंगलोंकी लंबे कानोंवाली गीर नस्ल

यह नस्ल काठियावाड़के दक्षिणमे गीर नामक जगलमें पायी जाती है। इनका ललाट विशेष उभरा हुआ और चौड़ा होता है, कान लंबे और लटके हुए होते है तथा सींग छोटे होते हैं। गीर नस्लकी गौओंका रंग विशेष प्रकारका होता है। इनका मूल रंग सफेद होता है और उसपर विविध रंगोके धब्बे होते हैं, जो सारे शरीरपर फैले रहते हैं। ये धब्बे कई गौओमे बड़े-बड़े और कई गौओंमें अत्यन्त छोटे होते हैं। इस जातिके पशु मैसूरके पशुओंकी अपेक्षा आकारमें बड़े होते हैं। कुछ नस्लोका विवरण इस प्रकार है—

१-गीर नस्ल—इस नस्लके पशुओंकी पीठ मजबूत, सीधी और समचौरस होती है। कूल्हेकी हड्डियाँ प्राय: अधिक उभरी हुई होती हैं। पूँछ लंबी होती है। शुद्ध गीर नस्लकी गाये प्राय: एक रंगकी नहीं होतीं। वे काफी दूध देती हैं। इस जातिके बैल मजबूत होते है, यद्यपि ये मैसूरके बैलोकी अपेक्षा कुछ सुस्त और धीमे होते है। उनसे बहुधा गाड़ी खींचनेका काम लिया जाता है। गीर नस्लकी गाये बच्चे नियत समयपर देती हैं।

२-देवनी नस्ल—यह नस्ल बबई प्रान्तकी डाँगी नस्लसे मिलती-जुलती है। इसमें गीर नस्लसे भी काफी समानता है। इस नस्लके पशुओंके सिर और सींग गीर नस्लके-से ही होते है। ये अनेक रंगके होते हैं, पर मुख्यत: सफेद और काले तथा सफेद और लाल रंगके अधिक होते हैं। इस नस्लके बैल खेतीमे अच्छा काम देते है तथा गौएँ

निजाम राज्यकी अन्य नस्लोकी तुलनामे काफी दूध देती हैं।

३-डाँगी नस्ल—इस नस्लके पशु मूलतः बंबई प्रान्तके अहमदनगर और नासिक जिलो तथा वांसदा, धर्मपुर, जौहर तथा डाग्स क्षेत्रोमे पाये जाते हैं। वे बड़े परिश्रमी होते है और धानके खेतोंमे लगातार काम करनेसे इनके स्वास्थ्यपर कोई अवाञ्छनीय प्रभाव नहीं पडता। इस नस्लकी गौएँ दूध कम देती है। इन गौओका रंग लाल और सफेद अथवा काला और सफेद होता है। इनकी चमड़ीमे तेलकी बहुत अधिक मात्रा रहती है, जो इनकी वर्षासे रक्षा करती है। इनके खुर विशेषरूपसे कडे, काले रगके और चकमक पत्थरकी आकृतिके होते हैं।

४-मेवाती नस्ल—इस नस्लके पशु बहुत सीधे होते हैं और भारी हलो एव छकड़ोमे जोते जाते है। गौएँ काफी दुधार होती है। उनमे गीर जातिके लक्षण पाये जाते हैं तथा कुछ बातोमें ये हरियाना नस्लके पशुओसे भी मिलते है, जिससे यह पता चलता है कि यह एक मिश्रित जाति है। इनका रंग सफेद और मस्तक काले रगका होता है तथा कुछ पशुओमे गीर जातिका रंग भी पाया जाता है। इनकी टाँगें कुछ ऊँची होती है। इनके कान, ललाट और सॅकरा मुँह गीर जातिके द्योतक हैं।

५-नीमाड़ी नस्ल—इस नस्लके जानवर बहुत फुर्तीले होते है। इनका रग तथा मुँहकी बनावट गीर जातिकी-सी होती है। इनके कान मध्यम परिमाणके होते हैं। सामान्य तौरपर इनका रंग लाल होता है, जिसपर जगह-जगह सफेद धब्बे भी होते है। इस जातिकी गौऐं काफी दूध देती हैं।

(३) क—उत्तरीय भारतकी चौड़े मुँह तथा मुड़े हुए सींगोंवाली बड़े रासकी गौ

गुजरातकी काँकरेज नस्ल इस जातिकी प्रधान नस्ल है। इस नस्लके पशुओका मुँह छोटा, किंतु चौडा होता है। राजपूतानेकी मालवी नस्ल काँकरेज नस्लसे बहुत मिलती-जुलती है।

१-काँकरेज नस्ल—इस जातिके पशु भारतभरमे विशेष मूल्यवान् समझे जाते है। राधनपुर राज्यमे इसका नाम बढियार नस्ल है। यह नस्ल काठियावाड़, बडौदा राज्य एवं सूरततक फैली हुई है। इस नस्लके पशु चलने और गाडी आदि खींचनेमे बहुत तेज होते हैं।

काँकरेज जातिकी गौओंको [illegible] सवल, ललाट चौडा और सींग मुड़े हुए [illegible] कान लंबे और झुके हुए होते हैं। [illegible] गलकंवल साधारण परिमाणका होता है। [illegible] छोटी होती है।

२-मालवी नस्ल—इस जातिकी गौओंको [illegible] गोचरभूमियोमे पाला जाता है और साथ-साथ इन्हें [illegible] भूसी आदि भी दी जाती हैं। सडकोपर इनको [illegible] खींचनेमे तथा खेतीमे इनका विशेष उपयोग होता है। [illegible] रंग खाकी और गर्दन काले रगकी होती है, [illegible] इनका रंग बिलकुल सफेद हो जाता है।

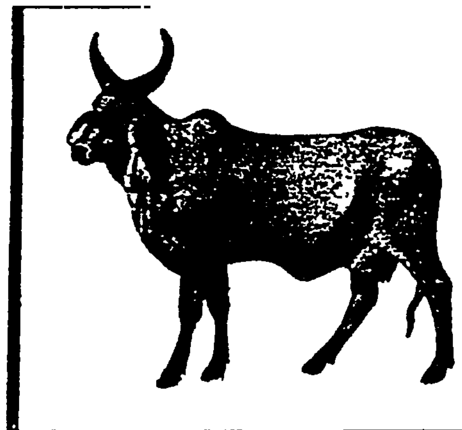
मालवी नस्लके दो अवान्तर भेद होते हैं—(अ) ग्वालियर राज्यके दक्षिण-पश्चिमी भागके बड़ी [illegible] पशु, (ब) इसी भागके दक्षिण-पश्चिममें पाये [illegible] छोटी रासके पशु। इस नस्लकी गौएँ दूध कम देती हैं।

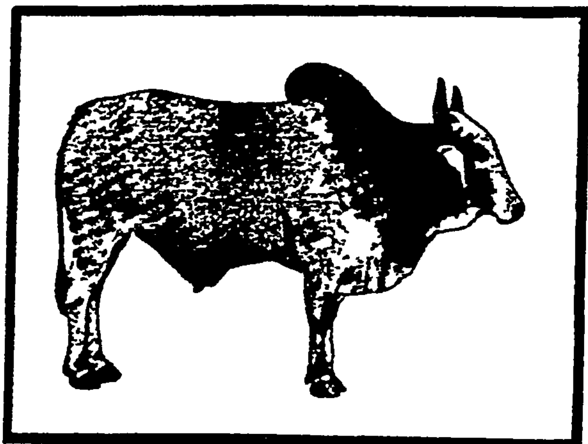
३-नागौरी नस्ल—इस नस्लके पशु जोधपुर ([illegible]) के उत्तर-पूर्वी भागमे पाये जाते हैं। इस जातिके बैल आकारमे बडे होते है और तेज चालके लिये [illegible]। इनका मुँह अपेक्षाकृत सँकरा एव लंबा होता है तथा [illegible] चपटा। इनकी चमड़ी पतली, गलकंवल छोटा और [illegible] भी छोटी होती है। इस नस्लकी गौएँ दूध कम देती हैं।

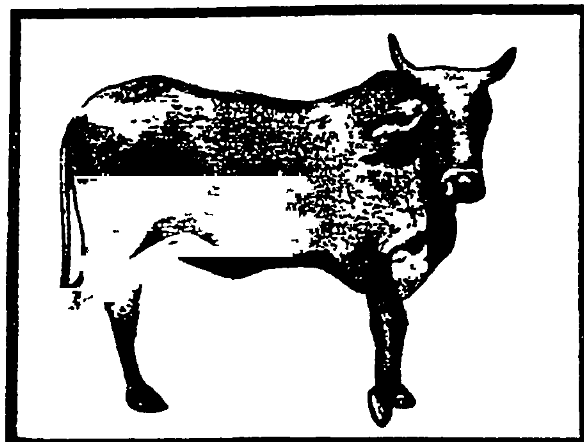
४-थारपरकर नस्ल—कच्छ, जोधपुर एवं [illegible] राज्योमे इस जातिके पशु बडी संख्यामे पाये जाते हैं। [illegible] भू-भागमे बालूके ऊँचे-ऊँचे टीले बहुत पाये जाते हैं और वर्षा कम होती है। ये वहाँके अपर्याप्त [illegible] निर्वाह करते हैं और साथ-साथ इन्हें [illegible] भूसी आदि भी दी जाती है।

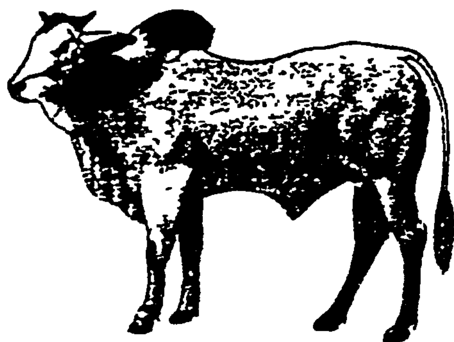
इस जातिके पशु बडे परिश्रमी और [illegible] हैं। इस नस्लकी गौएँ भारतवर्षकी [illegible] गिनी जाती हैं। बैल मध्यम [illegible] खेती एव गाडियोमे जुतनेके काम [illegible] गुण हैं, जिनके कारण इनकी बहुत [illegible] दूध अधिक देती है, बैल परिश्रम [illegible] और थोडी खुराकपर [illegible] काफी लंबा, ललाट [illegible] परिमाणका होता है।

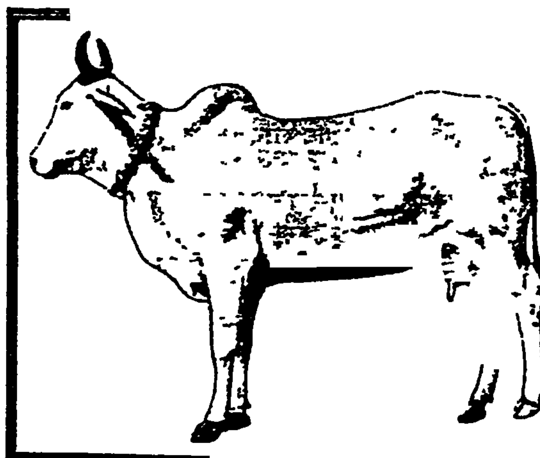

कॉंकरेज सॉंड़


कॉंकरेज गाय


थारपारकर सॉंड


थारपारकर गाय


हरियाना साँड़


हरियाना गाय

५-बचौर नस्ल—इस नस्लके पशु बिहार प्रान्तके अन्तर्गत सीतामढ़ी जिलेके बचौर एवं कोइलपुर परगनोमे पाये जाते हैं। इस जातिके बैल काम करनेमे अच्छे होते हैं। इनका रंग खाकी, ललाट चौडा, आँखे बड़ी-बडी और कान लटकते हुए होते हैं।

६-पँवार नस्ल—यह संयुक्तप्रान्तके पीलीभीत जिलेकी पटनपुर तहसीलमें और खेरीके उत्तर-पश्चिमी भागमें पायी जाती है। शुद्ध पँवार नस्लके गाय-बैलोका मुँह सँकरा तथा सींग लंबे और सीधे होते हैं। इनके सींगोकी लबाई १२ से १८ इंचतक होती है। इनका रंग प्रायः काला और सफेद होता है। इनकी पूँछ लंबी होती है और ये बड़े फुर्तीले तथा क्रोधी होते हैं। ये मैदानमे स्वच्छन्दरूपसे चरना पसद करते हैं। गौएँ दूध कम देती हैं।

(३) ख—उत्तर एवं मध्य भारतकी सँकरे मुँह एवं छोटे सींगवाली सफेद गौ

इस जातिके अन्तर्गत मुख्य ६ नस्ले हैं—

१-भगनारी नस्ल—नारी नदीके तटवर्ती 'भाग' नामक इलाकेमें पाये जानेके कारण इस नस्लको 'भगनारी' कहते हैं। इस नस्लके पशु अपना निर्वाह नदी-तटपर उगनेवाले घास तथा अनाजकी भूसी आदिपर करते हैं।

इस नस्लमें भी दो प्रकारके पशु होते हैं—(१) छोटी रासके तथा (२) बडी रासके। इन पशुओकी गठन अच्छी तथा कद लंबा होता है। इस जातिकी गौएँ अधिक दूध देनेके कारण प्रसिद्ध हैं।

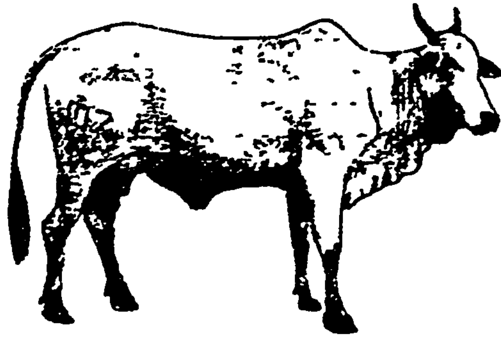
दज्जल नस्ल—भगनारी नस्लका ही यह दूसरा नाम है, इस नस्लके पशु पंजाबके 'देरागाजीखाँ' जिलेमे वडी संख्यामें पाले जाते है। कहते है कि लगभग वहुत वर्षो पूर्व इस जिलेमे कुछ भगनारी साँड खास तौरपर नस्लके लिये भेजे गये थे। यही कारण है कि 'देरागाजीखाँ'में इस नस्लके काफी पशु हैं, यहींसे वे पंजावके अन्य भागोमें भेजे जाते हैं।

२-गावलाव नस्ल—यह नस्ल मध्यप्रान्तकी सर्वश्रेष्ठ नस्ल है। इस जातिके सर्वोत्तम पशु सतपुडाकी तराईके वर्धा जिलेमें, संसार तहसीलमे एवं कुरई परगनेमे, सिवनी तहसीलके दक्षिणी भागमे, नागपुर जिलेके कुछ भागोमे और बइहर तहसीलमे पाये जाते हैं। ये प्रायः मध्यम कदके होते हैं। गौओंका रंग प्रायः [illegible] बैलोका सिर खाकी रंगका होता है। [illegible] और सँकरा, सींग छोटे और [illegible] खिल्लारी जातिके बैलोकी भाँति ये भी [illegible] यात्रा कर सकते हैं। गावलाव जातिकी गौएँ [illegible] जाती हैं, परंतु वर्धाके पास बहुत-से गौएँ [illegible] इस जातिकी गौएँ बहुत थोडा दूध देती हैं। [illegible]-पिलानेकी समुचित व्यवस्था एव सँभालसे [illegible] बढाया जा सकता है।

३-हरियाना नस्ल—इस जातिकी गौएँ [illegible] दूध देनेके लिये प्रतिवर्ष कलकत्ते आदि बड़े नगरोंमें [illegible] जाती हैं। इस नस्लके पशु एक विशाल भू-भागमें [illegible] हैं। जिसमे सयुक्तप्रान्त एवं राजपूतानेके भरतपुर और अलवर राज्य भी सम्मिलित हैं। हरियाना जातिके [illegible] सफेद अथवा खाकी रंगके होते हैं। ये चलनेमें तेज और हल जोतनेमें अच्छे होते हैं। कलकत्तेमें [illegible] इनका खाकी रंग प्रायः सफेद हो जाता है। [illegible] और थूहे काले होते हैं। गाओं और साँडोंके सींग छोटे और मोटे होते हैं, परतु बैलोके सींग प्रायः मुड़े हुए होते हैं।

४-हाँसी-हिसार नस्ल—पजाबके हिसार जिलेमें [illegible] नदीके आस-पास यह नस्ल पायी जाती है, इसीसे इसका नाम 'हाँसी-हिसार' पड़ गया। इस नस्लके पशु [illegible] नस्ल-जैसे ही होते हैं, परंतु उनकी अपेक्षा अधिक [illegible] होते हैं। इनका रग सफेद और खाकी होता है। इस [illegible] बैल यद्यपि परिश्रमी होते हैं, पर गौएँ [illegible] खूबीको नहीं पा सकी है।

५-अंगोल नस्ल—मद्रास प्रान्तका [illegible] इलाका पशुओंके लिये प्रसिद्ध है। [illegible] लोग प्रायः इन पशुओंको पालते हैं। [illegible] सीधे और बल बडे बलवान् होते हैं [illegible] होनेके कारण वे तेज चलनेमें [illegible] जातिके पशु बहुत बड़ी [illegible] सुधारनेके लिये अमेरिका भेजे [illegible] चारा खाकर निर्वाह कर सकते हैं। [illegible] लंबे और गर्दन छोटी होती है। [illegible] शरीरकी गठनके लिये प्रसिद्ध हैं।

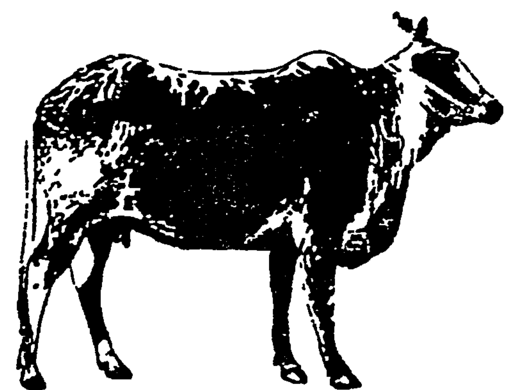

अगोल गाय


साहीवाल गाय


सिंधी साँड़


सिधी गाय


धन्नी साँड़


धन्नी गाय

६-राठ नस्ल—ये मध्यम परिमाणके पशु होते हैं। ये बहुत फुर्तीले और मध्यम परिमाणके हल चलाने एवं सडकपर चलनेमें उपयोगी होते हैं। इनकी गायें भी दुधार होती हैं। इन तीन गुणोके कारण ये निर्धन लोगोके पशु माने जाते हैं, जब कि नागौरी पशु धनवानोके पशु समझे जाते है।

३ (क) और (ख) के मिश्रणसे उत्पन्न हुई जाति

इस जातिके अन्तर्गत दो प्रसिद्ध नस्ले हैं—

१-केनवारिया नस्ल—यह बुंदेलखडकी प्रसिद्ध नस्ल है और संयुक्तप्रान्तके बाँदा जिलेमे केन नदीके तटपर पायी जाती है। इस जातिकी गौएँ दूध कम देती हैं। इनका रग खाकी होता है।

इनका मस्तक ओछा किंतु चौडा और सीग मजबूत एवं तीखे होते हैं। इनके सींगो तथा शरीरकी बनावटसे ऐसा प्रतीत होता है कि यह जाति ३ (क) और (ख) जातियोके मिश्रणसे बनी है। इनके सीग कॉकरेज जातिके पशुओके-से होते हैं और दूसरे अङ्ग ३ (ख) वाली जातिके-से।

२-खेरीगढ़ नस्ल—यह नस्ल सयुक्तप्रान्तके खेरीगढ क्षेत्रमे पायी जाती है। ये पशु प्रायः सफेद रंगके तथा छोटे, सॅकरे मुँहके होते हैं। इनके सींग बड़े और १२ से १८ इंचतक लंबे होते है, वे केनवारिया नस्लके सींगोसे बहुत मिलते होते हैं। इनके सभी लक्षण प्रायः केनवारिया नस्लसे मिलते हैं। ये क्रोधी और फुर्तीले होते हैं तथा मैदानोमे स्वच्छन्दरूपसे चरनेसे स्वस्थ एवं प्रसन्न रहते हैं। इनकी गायें दूध कम देती हैं। ये तराई प्रदेशके उपयुक्त होते हैं।

(४) साहीवाल जाति (जो अफगान-जाति तथा उत्तर भारतकी गौओंके मिश्रणसे बनी है)

इस जातिके पशु अफगानिस्तानके पशुओसे बहुत मिलते हैं। ये बादामी रंगके अथवा चितकबरे होते हैं। और इनकी गणना भारतकी श्रेष्ठ गायोमे है। यह प्रसिद्ध है कि किसी समय राजपूतानेसे बहुत-से लोग अपने पशुओको साथ लेकर मंटगुमरी आये थे और ऐसा माना जाता है कि यह नस्ल गीर नस्लके सम्मिश्रणसे बनी है। इनका रंग अफगान-जातिकी गौओंसे तथा [illegible] मिलता है।

लोगोंका अनुमान है कि लाल [illegible] इन्हीं दो जातियोंके मिश्रणसे बनी है। [illegible] बलूचिस्तानके लास बेला प्रान्तकी [illegible] अनुमान किया जाता है।

१-साहीवाल नस्ल—ये मुख्यतया दूध [illegible] होते हैं, जो प्राचीन कालमे पजाबके मध्य एवं [illegible] भागोमे बहुत बड़ी सख्यामे पाले जाते थे। [illegible] भगनारी, हरियाना, नागौरी एवं धन्नी आदि [illegible] भिन्न होते हैं। दुधार होनेके कारण इस जातिकी [illegible] संख्यामे शहरोमे ले जायी जाती हैं। उनके [illegible] परिमाणसे पता लगता है कि उचित सँभाल [illegible] कहीं भी रह सकती हैं।

२-लाल रगकी सिंधी नस्ल—यह [illegible] कराचीके आस-पास और उसके उत्तर-पूर्वके प्रान्तमे [illegible] जाती है। बलूचिस्तानके लास बेला इलाकेमे [illegible] जातिके पशु पाले जाते हैं। इस जातिमे अफगान-नस्ल [illegible] गीर-नस्लका सम्मिश्रण पाया जाता है। [illegible] गौओकी गणना भारतकी सबसे अधिक दूध [illegible] गौओमे है। ये आकारमे छोटी होती है, किंतु [illegible] देनेकी क्षमता अधिक होती है। ये [illegible] हैं। ये लाल रंगकी होती हैं और मुँहपर [illegible] कुछ सफेद धब्बे बहुधा रहते हैं। [illegible] परिमाणके होते हैं।

इस नस्लके पालनेवाले इसकी भूरि-भूरि [illegible] हैं। उनका कहना है—'छोटे दुग्ध-[illegible] गाय सर्वश्रेष्ठ गायोंमेंसे है। इसका [illegible] और यह अंगोल साहीवाल आदि [illegible] अपेक्षा कम खाती है; इसकी खुराकमे [illegible] और थोडी खुराकमे भी यह [illegible] लेती है।'

(५) धन्नी नस्ल

सर आर्थर [illegible] नस्लको स्वतन्त्र [illegible] मध्यम परिमाणके [illegible]

एक विचित्र प्रकारका होता है और ये पंजाबके अटक, रावलपिंडी एवं झेलम इलाकोंमे तथा उत्तर-पश्चिमी सीमा-प्रान्तोंमें प्रचुर संख्यामें पाले जाते हैं। इस जातिकी गौएँ दुधार नहीं होतीं, इसका कारण कदाचित् यह हो सकता है कि लोग इनकी अधिक सँभाल नहीं रखते। यही कारण है कि उनकी दुग्धोत्पादन-क्षमताको विकासके लिये अवसर ही नहीं मिलता।

(६) प्राचीन भारतकी पहाड़ी गौ

समूचे भारतमें, विशेषकर हिमालय प्रदेश एवं बलूचिस्तानके पर्वतीय प्रदेशमे एक छोटे रासकी गो-जाति पायी जाती है, जिसका रंग, बनावट और सामान्य लक्षणोंको देखनेसे इस विषयमे संदेह नहीं रह जाता कि यह जाति प्राग्-ऐतिहासिक युगसे भारतवर्षमें पायी जाती है। इस जातिके पशुओंके ललाट और गलकंबलमें बहुधा सफेद धब्बा होता है और पूँछका सिरा तथा अन्य अवयवोके अन्तिम भाग भी सफेद होते हैं। ये छोटे जानवर ऐसे स्थानोंमें भी सुखी और स्वस्थ रहते हैं, जहाँ बड़े और अधिक मूल्यवान् पशु जीवित नहीं रह सकते और दूध देकर तथा पहाड़ोंमें काम करके मनुष्यकी बहुत उपयोगी सेवा कर सकते हैं। इस जातिके पशु उत्तरमें लुंडीकोटल तथा दक्षिणमें कन्याकुमारीतक, पश्चिममे बलूचिस्तान और पूर्वमें आसामतक तथा भारतके विभिन्न भागोमें स्थित जंगली एवं पहाड़ी प्रदेशोंमें भी पाये जाते हैं। पूर्व एवं पश्चिमके समुद्रतट, कुग प्रदेशमें, नीलगिरिके पर्वतोंपर तथा राजपूताना एवं मध्यभारतके जंगलों एवं पहाड़ी प्रदेशोंमे भी इनके दर्शन होते हैं। यदि इन्हें अच्छी तरह खिलाया-पिलाया जाय तो ये पशु वास्तवमें मूल्यवान् सिद्ध होते हैं। ये बहुत परिश्रमी, फुर्तीले एवं कामके होते हैं और अपने आकारके अनुसार दूध भी पर्याप्तमात्रामें देते हैं। इनके शरीरमें कोई ऐसी विशेषता नहीं होती, जिनके द्वारा इनकी जल्दी पहचान हो सके; एक बात अवश्य होती है कि इनका सिर शरीरके अनुपातसे बहुत छोटा होता है। हिमालय पहाड़की बहुत ऊँचाईपर जो बहुत छोटी रासके पशु मिलते हैं, उनके सींग बहुधा बिलकुल छोटे होते हैं; परंतु उनसे नीचेके भागोंमें, जहाँ उन्हें अधिक पोषण मिल सकता है, वे काफी लंबे होते हैं। जहाँ उन्हें काफी अच्छा पोषण मिल जाता है, वहाँ इस जातिकी गौएँ अपने आकारके अनुपातसे काफी दूध भी देती हैं।

१-सीरी नस्ल—इस जातिके पशु दार्जिलिंगके पर्वतीय प्रदेशमें तथा सिक्किम एवं भूटानमें पाये जाते हैं। इनका मूलस्थान भूटान ही माना जाता है और भूटानसे ही इस जातिके सर्वोत्तम पशु दार्जिलिंग लाये जाते हैं। ये प्रायः काले और सफेद अथवा लाल और सफेद रंगके होते हैं। इनके शरीर बारहों महीने घने बालोंसे ढके रहते हैं, जो इन पर्वतीय प्रदेशोंमें उनकी कड़ाकेकी सर्दी एवं मूसलाधार वर्षासे रक्षा करते हैं।

सीरी जातिका पशु देखनेमे भारी होता है। उसका मस्तक चौकोर और छोटा, किंतु सुडौल होता है। ललाट चौड़ा और चपटा होता है। थूहा काफी आगे निकला हुआ और कान बहुधा छोटे होते हैं। इस जातिके बैलोंकी बड़ी क़दर होती है।

२-लोहानी नस्ल—इस नस्लका मूलस्थान बलूचिस्तानकी लोरालाई एजेंसी है। जंगली जातियोंके इलाकोंमें भी ये काफी फैली हुई हैं, वहाँ इन्हें 'अच्छाई' जातिके पशु कहते हैं।

लोहानी जातिके पशु आकारमें बहुत छोटे होते है; जवान पशु ४०से ४४ इंचतक ऊँचे होते हैं। इनका रंग लाल होता है, जिसपर सफेद धब्बे होते हैं, यद्यपि ऐसे पशु भी कम नहीं होते जिनका रंग निरा लाल होता है। इस जातिके बैल हल चलाने तथा बोझा ढोनेमें, विशेषकर पर्वतीय प्रदेशोंमें बहुत उपयोगी होते हैं। वे कड़ी सर्दी और गर्मी सह सकते हैं।*

गां पङ्काद् ब्राह्मणीं दास्यात् साधून् स्तेनाद्द्विजं वधात्। मोचयन्ति च ये राजन् न ते नरकगामिनः॥

जो गायको कीचड़से, ब्राह्मणीको दासत्वसे, साधुको चोरसे और ब्राह्मणको वधसे छुड़ाते हैं, वे कभी नरकमे नहीं जाते।

*गायोंके कुछ चित्र चन्द्रावती राधारमणद्वारा लिखित 'सतुलित गोपालन' पुस्तकसे साभार उद्धृत हैं।

समांसमीना गौः

(चक्रवर्ती डॉ० श्रीरामाधीनजी चतुर्वेदी)

गायके विशेष नामोका इतिहास वहुत प्राचीन है। जिनका उल्लेख महर्षि पाणिनिके अष्टाध्यायी ग्रन्थमे हुआ है। उनका विवरण इस प्रकार है—

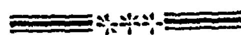
जो गाय प्रतिवर्ष ब्याती है उसे सस्कृत भाषामे 'समांसमीना' कहते हैं। जिसे लोकभाषामें 'धेनुपुरही' गाय कहा जाता है। इसका तात्पर्य है कि जिस गायके थनमें दूसरा बच्चा पैदा करने-समयतक दूध रहता है, कभी सूखता नहीं, वही 'पूर्णधेनु' (धेनुपुरही) है। पाणिनिने 'समांसमीना' पदका विवरण 'समांसमां विजायते'[१] सूत्रसे किया है। अर्थात् 'समायां समाया—वर्षे वर्षे विजायते प्रसूयते' इस निर्वचनसे यह पद निष्पन्न होता है। प्रतिवर्ष बच्चा पैदा करनेवाली गाये वहुत कम होती हैं। ये बहुत सीधी होती हैं, जब जो चाहे तब दूह ले। इसीलिये इस प्रकारकी गायको लोग 'कामधेनु' भी कहते हैं।

महर्षि पतञ्जलिने 'समांसमीना गौः' में भी विशेष गुणकी प्रशंसा करते हुए कहा है—'गौरियं या समां समां विजायते गोतरेयं या समा समां विजायते स्त्री वत्सा च'[२] अर्थात् प्रत्येक वर्ष ब्यानेवाली गाय यदि प्रत्येक बार बछिया पैदा करे तो उसे 'समांसमीना गोतरा' कहते हैं। यहाँ तरप् प्रत्यय उसके विशेष गुणका बोधक है। वस्तुतः बछड़ेकी अपेक्षा बछिया पैदा करनेवाली गाय विशेष लक्षणवती होती है, क्योकि उससे गोधनकी वृद्धि होती रहती है।

इसी प्रकार गायके लिये—गृष्टि, धेनु, वशा, वेहत्, वष्कयणी—इन पदोका भी उल्लेख 'पोटायुवतिस्तोककतिपयगृष्टिधेनुवशावेहद्वष्कयणीप्रवक्तृश्रोत्रियाध्यापकधूर्तैर्जातिः[३]' इस सूत्रमें है। इनमें 'गृष्टि' वह गाय है जो [illegible] ब्यायी हो। जिसे 'प्रष्ठौही' भी कहते हैं। 'प्रष्ठौही' का [illegible] विकसित रूप लोकभाषामे 'पहिलौंठी' है। एक-दो [illegible] ब्यायी हुई गायकी संज्ञा 'धेनु' है। 'धेट्' धातुसे 'धेनु' पद निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है पिलानेवाली। जिसका बच्चा जबतक दूधपर ही निर्भर रहता है, घास नहीं [illegible] तबतक वह गाय धेनु कही जाती है। 'वशा' पद [illegible] गायका बोधक है, जो कभी ब्यायी नहीं वह बाँझ गाय ही 'वशा' है तथा जिसके गर्भ कुछ दिनके बाद गिर जाते हैं, कभी पूरे समयतक ठहरते नहीं, वह 'वेहत्' कहलाती है, जिसे गर्भघातिनी भी कहते हैं।

'वष्कयणी' गाय वह है, जिसका बछड़ा बड़ा हो जाता है। सात-आठ महीनेतक जो गाय दूध देती रहती है, वही 'वष्कयणी' है। जिसे दूसरे शब्दोंमे 'तरुण-वत्सा' भी कहते हैं। लोकभाषामे 'बकेन' गायके नामसे प्रसिद्ध है। जो 'वष्कयणी' का परिवर्तित रूप है। बकेन गायका दूध गाढ़ा होनेसे विशेष लाभप्रद होता है।

गायोके लिये इन अवान्तर नामोंसे ज्ञान होता है कि आजसे करीब तीन-चार हजार वर्ष-पूर्व [illegible] साथ कितना सम्बन्ध था जो कि उनकी प्रत्येक [illegible] लिये अलग-अलग व्यवहार नियत थे। उस समय [illegible] ही मुख्य था। मानव-जीवनका प्रधान साधन गाये थीं। [illegible] पालन-पोषणसे समाज सुखी था, वह [illegible] शान्तिका अनुभव करता था। यदि आज भी [illegible] होने लगे तो भारत पुनः शान्ति और [illegible] करता हुआ वस्तुतः भारत हो जाय।



यथा गौश्च तथा विप्रो यथा विप्रस्तथा हरिः। हरिर्यथा तथा गङ्गा एते न [illegible]।

जैसे गाय है वैसे ही ब्राह्मण है, जैसे ब्राह्मण है वैसे ही भगवान् श्रीहरि हैं और [illegible] भी है। अतएव ये सब पापनाशक हैं। (पद्म०, सृष्टि० ४८। १५५)

(१) अष्टाध्यायी ५। २। १२, (२) महाभाष्य ५। ३। ५५, (३) अष्टाध्यायी २। १। ६५।

उत्तम गायके अवयवोंकी व्याख्या

गायकी पहचान उसके अवयवोंको देखकर करनी चाहिये।

(१) रंग—सर्वाङ्ग-काली श्यामा एवं कपिला गाय सर्वोत्तम मानी जाती है। लाल, वादामी या चितकबरे रंगवाली गाय भी श्रेष्ठ मानी गयी है। सफेद-मोतिया या भूरे आदि रंगकी भी गायें अच्छी होती हैं।

(२) चर्म—पतला, चिकना और रेशम-से नर्म वालोंदार हो।

(३) ऊँचाई—जातिके अनुसार काफी बड़े कदकी हो।

(४) लंबाई—शरीर लंबा और छाती चौड़ी होनी चाहिये।

(५) सिर—छोटा, मस्तक चौड़ा और गर्दन लंबी तथा पतली हो, किंतु साहीवाल आदि जातियोंके पशु भारी और छोटी गर्दनवाले होते है।

(६) सास्ना—भारी तथा झालरदार और ठाटी खूब विकसित हो।

(७) सींग—छोटे और चिकने तथा जातिके अनुसार आकारवाले हो। कपिला गायके सींग हिलते या नीचेकी ओर झुके हुए और चपटे होते हैं।

(८) कान—उभरे हुए और बड़े हो, उनके भीतरकी चमड़ी मुलायम तथा पीले रंगकी हो।

(९) आँखें—साफ, बड़ी, ममतामयी एवं स्निग्ध हो।

(१०) नाक—साफ हो और उससे पानी न बहता हो।

(११) ओठ—कोमल, सटे हुए एवं ताँबेके-से लाल रंगके हो।

(१२) दाँत—सफेद मजवूत एवं कीड़े-रहित हों।

(१३) जीभ—साधारण लंवी, कुछ लाल-सी, मुलायम और काँटेरहित हो।

(१४) गला—साफ, सुरीला और ऊँचे स्वरवाला हो।

(१५) पूँछ—पतली, काली चौंरीवाली और जातिके अनुसार लंबी एवं जमीनको छूती हुई हो। सफेद चौंरीवाला लक्षण किसी नस्लमे ही अच्छा किंतु अधिकतरमें दोष माना जाता है।

(१६) पुट्ठे—चौड़े, खुले हुए, स्थूल और ऊँचे हों।

(१७) धुन्नी—(पेटके नीचेकी चमड़ी) बडी, फैली हुई और मुलायम हो।

(१८) जाँघें—चौड़ी और फासलेपर हों।

(१९) पैर—सुडौल, मजबूत एवं लंबे हों, किंतु चलते समय आपसमे न लगते हों।

(२०) खुर—सटे हुए, गोल एवं मजबूत हों और इनके भीतरकी चमड़ी पीली एवं मुलायम हो।

(२१) ऐन—खुला, चौकोर, चौड़ा तथा बड़ा हो। अगले पैरोकी तरफसे उभरी हुई रस्सीके आकारकी, दूधकी नसें ऐनकी तरफको आती दिखायी पड़ती हों।

(२२) थन—लंबे, मुलायम और दूर-दूर हों। चारों स्तन एक-से और बड़े हो।

(२३) शरीर—नीरोग और भरा हुआ, किंतु मोटा न हो। मोटी गायमें केवल मांस ही ज्यादा बढ जाता है, जिससे उसकी दूध देनेकी शक्ति कम हो जाती है।

(२४) पसमाव—(दूधका बहाव) एक-सा और मोटी धारका हो और बरतनसे टकराकर घर-घरकी-सी गम्भीर ध्वनि करनेवाला हो।

(२५) दूध—पीली झलकवाला और गाढ़ा हो।

(२६) स्वभाव—गम्भीर, सीधा, प्रेममय एवं उत्तेजना-रहित हो। वह ऐनके छूनेपर क्रोध न करनेवाली और सबसे सरलतापूर्वक दुहा लेनेवाली हो।

(२७) चाल—मन्द और सीधी हो।

(२८) ज्ञातवंशज—दुधार गायों तथा बलिष्ठ साँड़ोंके कुलकी हो।

(२९) गुण—जातीय नस्लके सभी गुण शुद्ध एवं पूरे हो।

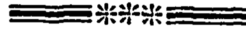
(३०) रुचि—सभी किस्मके अच्छे चारे-दानेको

रुचिपूर्वक खानेवाली हो।

(३१) गर्भ—वह श्रेष्ठ साँड़से गाभिन हुई हो।

उदर, कुक्षि, कूल्हे दोऊ, माथा, छाती, पीठ।
ऊँचे उभरे अंग छै, यह शुभ लच्छन दीठ॥

युगल नेत्र अरु कर्ण [illegible], [illegible]
मस्तक ऊँचो लेखिये, [illegible]
गल-कम्बल गर्दन तथा, पूँछ [illegible]
लम्बे चौड़े अङ्ग सबि, [illegible]



दुधार गौकी परीक्षा

हमलोगोंमेंसे बहुतोंको इसका अनुभव हुआ होगा कि गौ रखनेकी इच्छा होनेपर भी अच्छी गौ न मिलनेसे जैसी-तैसी गौ रखकर पीछे कष्ट ही होता है और यही कहना पड़ता है कि बाज आये इस झगड़ेसे। पर ऐसा इसीलिये होता है कि हम गौ खरीदते समय यह देख नहीं लेते कि गौ दुधार है या नहीं। इस विषयकी कोई जानकारी ही नहीं होती। ग्वाले जानते हैं, परखते हैं, पर खुलकर सब भेद नहीं बतलाते। इसलिये जरूरी है कि हमलोग इसकी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर ले। जानकार लोगोने दुधार गौकी पहचानोंका संग्रह किया है। विशेषज्ञोको अवश्य इसमें कोई नया विशेष ज्ञान नहीं मिलेगा, पर सर्वसाधारणके लिये ये पहचानें उपयोगी होगी, इसलिये यहाँ दी जाती हैं।

गौके बगलमें खड़े होकर देखना

गौके बगलमें खड़े होकर देखनेसे पहले उसका आकार दीख पड़ेगा। कंधोंसे लेकर पूँछतक उसकी लंबाई काफी होनी चाहिये। पीठ लचकी हुई न हो, मेरुदण्ड ऊपर उठा हुआ हो और उसके मनके अलग-अलग दिखायी दे। पेटका घेरा जितना ही बड़ा होगा, उतना ही वह अधिक खानेवाली होगी और उतना ही दूध भी अधिक देगी। यह ध्यानमें रहे कि कम खाकर अधिक दूध देनेवाली गौकी सृष्टि अभीतक नहीं हुई है। पेटकी पसलियाँ जब उठी हुई और फैली हुई होती हैं, तब पेटमे चारा-पानीके लिये अधिक अवकाश होता है। दूध देनेवाली गौके शरीरपर मांस अधिक नहीं होता, क्योकि वह जो कुछ खाती है, उससे दूध ही अधिक निर्माण होता है। हाँ, गाभिन होनेपर पौष्टिक पदार्थ खानेको मिले तो वह अवश्य ही पुष्ट होती है। गौके बदनपर हाथ फेरकर देख लेना चाहिये। यदि खाल मुलायम और पतली हो तो यह अच्छा लक्षण है, [illegible] खाल मोटी हो तो यह समझना चाहिये कि [illegible] ठीक नहीं हो रहा है। और रोएँ घने हो तो समझना चाहिये कि इसकी परवरिश ठीक तरहसे नहीं हो रही है और इसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।

पीठके पीछे खड़े होकर देखना

पीठके पीछे खड़े होकर गाको ओर देखनेसे [illegible] भराव दीख पडता है। पुट्ठों और नितम्बोकी [illegible] आ जाती है। पुट्ठोका चौंडा होना यह [illegible] गर्भाशयमे अर्भकका पोषण ठीक तरहसे होता है। [illegible] थनका पिछला भाग और चूँचियाँ भी यहाँसे देख [illegible] हैं। गौकी जाँघें भरी हुई और दोनो जाँघोंके [illegible] अन्तर होना चाहिये, जिसमे थनके [illegible] अवकाश हो।

पेटके नीचेसे देखना

गाके पेटपर 'दूधवाली शिरा' होती है। [illegible] ओर रक्त पहुँचानेवाली रक्तवाहिनी है। [illegible] ओर बडी होगी, थन उतना ही अधिक [illegible] उतना ही उसमे दूध उत्पन्न होगा। इसीलिये [illegible] 'दूधवाली शिरा' कहते हैं। यह पेटके [illegible] दीख पडे और थनके ऊपरकी नसे भी [illegible] हो, उतना ही यह समझना चाहिये कि [illegible] अगला भाग भी यहाँसे देख लेना चाहिये। [illegible] पेटके बराबरमे हो। लटका [illegible] उसपरकी नसे साफ दीख पड़े। [illegible] थन पेटसे सटा हुआ हो। [illegible] और एक-सी [illegible]

चूँचियोंसे, जो अँगुलियोंमें भी न आयें, दूध भी कितना निकलेगा। अन्य सब लक्षणोंकी अपेक्षा थन और चूँचियोंकी परखमें ही अधिक ध्यान देना चाहिये।

गौके सामने खड़े होकर देखना

सामनेसे गौका मुँह दीख पड़ता है। उसका जबडा और नथुने चौड़े हो, ऑखे पानीदार हो, गौ सीधी है या नहीं, यह उसका मुँह देखनेसे पता चलता है। दॉतोसे उसकी उम्रका अनुमान होता हैं। गायके नीचेवाले जबड़ेमें ८ [दूधिया] दॉत होते है। दो वर्ष बाद बीचके दो [दूधिया] दाँत गिर जाते और उनके स्थानमे दो बड़े [स्थायी] दाँत निकलते हैं। इस तरह हर साल दो-दो बड़े दाँत निकलते और पॉच वर्षमें आठों बडे [स्थायी] दाँत पूरे हो जाते है। पॉच-छः वर्षके बाद ज्यों-ज्यों गौ ढलने लगती है, त्यों-त्यो उसके दॉत भी घिसते जाते है और खूँटी-सरीखे होने लगते है। गायके ऊपरके जबडेमें दाँत नहीं होते। इन नीचेके दॉतोसे घास-चारा काटकर वह पेटमें उतारती है और पीछे दोनों जबडोके किनारेकी मजबूत दाढोसे चबाकर (जुगाली करके) निगल जाती है।

गौके कानोमें यदि कुछ पीली-सी चमक दिखायी दे तो समझना चाहिये कि गौ दुधार है और उसके दूधमें मक्खनका अश अधिक है। गौका गलकंबल पतला होना चाहिये, इससे यथेष्ट वायु अदर खींचनेमें उसे सुविधा होती है और वह नीरोग रहती है। पेटका घेरा भी सामनेसे दीख पडता है। पिछले पैरोकी तरह अगले पैर भी दूर-दूर हो।

पीठपरसे देखना

पीठपरसे नीचे देखनेसे भी पेटका आकार और पुट्ठे दीख पड़ते हैं। पुट्ठा एकदम उतारदार न हो। यदि दुहती गाय खरीदी जाय तो विना अन्तर दिये तीन-चार बार स्वयं दूध निकालकर देख लेना चाहिये। दूध निकालते समय पात्रमे धार गिरनेका जो शब्द होता है, उसके द्वारा भी गाय दुधार है या नहीं, इसकी परीक्षा होती है। थनमें यदि दूध अधिक होगा तो पात्रमें धारके गिरते समय जोरसे शब्द होगा। यदि दूध अधिक न हुआ तो धार पतली होगी और शब्द भी धीमा ही होगा। पाश्चात्त्य पद्धतिसे गौकी परीक्षा करनेकी एक और रीति है। जैसे—

१-पीठपरसे देखनेपर गायका शरीर गलेसे पीछेकी ओर दोनो तरफ चौड़ा होता चला गया हो तो यह लक्षण अच्छा है। ऐसी गायके उदर तथा पाकाशयका पूर्ण विकास हुआ समझा जाता है। वह भरपूर खा सकती है और पचा भी सकती है।

२-बगलसे देखनेपर गायके गलेसे पूँछतकका भाग चढ़ता और गलकंबलसे थनतकका भाग उतरता हुआ चला गया हो। ऐसी गायका थन बड़ा होता है और उसमें दूध भी भरपूर होता है। उसी प्रकार गर्भाशयमें गर्भके विकासके लिये पर्याप्त स्थान मिल जाता है और उससे बच्चा बलिष्ठ होता है।

३-सामनेसे देखनेपर दोनों तरफ गौका शरीर ऊपरसे नीचेकी ओर चौड़ा होता हुआ दीख पड़े। इससे गौका फुफ्फुस और हृदय पूर्ण विकसित तथा बलिष्ठ हुआ समझना चाहिये।

सारांश यह कि ऊपरसे, बगलसे अथवा सामनेसे किसी ओरसे भी देखनेपर गौका शरीर सब ओरसे तिहरे पच्चर (Triple Wedge) की तरह (एक ओरसे दूसरी ओर बारीक होता हुआ) दिखायी देना चाहिये। उसका यह आकार जितना पूर्ण होगा, उतनी ही वह अधिक दुधार होगी।

(गो-ज्ञान-कोश)



गोबरसे प्रार्थना

अग्रमग्रं चरन्ती नामोषधीनां रसं वने। तासामृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम्।
यन्मे रोगाश्च शोकाश्च पापं मे हर गोमय॥

वनमे अनेको ओषधियोके रसको चरनेवाली वृषभपत्नी (गायों)के पवित्र और कायाकी शुद्धि करनेवाले हे गोबर! तू मेरे रोग, शोक और पापोका नाश कर।



साँड़ोंके लक्षण और उनकी परिचर्या

चुनाव—गोशालाके लिये श्रेष्ठ, मूल्यवान् एवं सर्वगुण-सम्पन्न साँड़के चुनावमें अत्यन्त सावधानी और सतर्कता रखनी चाहिये। साँड़ ही शालाका प्राण एवं भविष्य है। साँड़पर ही गायोंके दूध देनेकी शक्ति और आगे आनेवाली नस्ल निर्भर रहती है। एक ही साँड अनेक बछडे और बछियोंका पिता बनता है और इस दृष्टिसे वही शालाका प्रधान पशु है। साधारण गायकी नस्ल भी बढ़िया साँड़के संयोगसे सुधारी जा सकती है।

शालामें एक उत्तम साँड़ अवश्य होना चाहिये। साँडके न होनेसे गायोंका सोया मारा जाता है। बार-बार गरम होनेपर भी गाय यदि बर्धायी न जाय, तो वह निर्बल या मांसल हो जायगी और उसे फिरसे गरम होनेमें समय भी लगेगा। शालामें साँड़के न होनेसे गाय और पालक दोनोकी हानि होगी। पालकके पास केवल एक-दो गाये हों, तो भी किसी अच्छी गोशालाके सुपालित साँडसे ही उनको हरी करना चाहिये। इधर-उधर घूमते हुए, अज्ञात जाति एवं कुलवाले, रोगी, बुड्ढे और रक्षकरहित साँड़से अपनी गायको कदापि हरी न कराये। साँड़का लालन-पालन अन्य सब पशुओसे बढ़कर होना चाहिये। उत्तम साँड़से गाभिन होनेपर गायमें दूध देनेकी शक्ति बढ़ जायगी।

यदि साँड बढ़िया न हो, तो बढ़िया नस्लकी दुधार गाय भी हर-ब्याँतमे कम दूध देने लगेगी और उसके बछड़े-बछिया उससे निर्बल होगे।

साधारणतया यदि काफी दूध चाहिये और साथ ही अच्छे बैल भी चाहिये, तो सर्वाङ्गी नस्लोंके साँड़ तथा स्थानीय नस्लकी गायें सबसे ज्यादा उपयोगी होगी।

अपनी आवश्यकता तथा प्रान्तकी जलवायु और नस्लका ख्याल करके उत्कृष्ट-जातीय गुणवाले देशी साँड़को दूर-देशसे भी मँगाकर नस्ल सुधारी जा सकती है। स्थानीय पशु बढ़िया हो तो उनमेसे ही श्रेष्ठ लक्षणोवाले, ज्ञात-वंशज, और यदि सम्भव हो तो ज्ञात-शक्तिवाले साँड़को छाँटकर उससे गो-वंशको सुधारना चाहिये। हर हालतमे साँड़को गायसे बलवान्, ऊँचे आकारका और भारी होना चाहिये। आगेके लिये गो-जन्म-पत्र जरूर बना लेना चाहिये।

श्रेष्ठ साँड़के लक्षण—

(१) ज्ञात-वंशज—साँड दुधार गायों [illegible] साँड़ोके कुलका हो। जिस साँडकी माता, [illegible] दुधार गाये रही हों और जिसके पिता, [illegible] सद्‌गुणी साँड़ सिद्ध हो चुके हों, वही [illegible] है। कम-से-कम साँड़के माता-पिताको तो [illegible] ही चाहिये।

ऐसे बढ़िया साँडसे गाभिन हुई गाय अधिक दूध [illegible] और उसकी बछिया दुधार गाय एवं बछड़ा [illegible]।

जहाँतक सम्भव हो, साँडके माता-पिताके गुण [illegible] जाति और शक्तिका पता लगाकर शालाके [illegible] पूरे इतिहासको लिख ले। इससे आगामी नस्लको [illegible] तथा किसी विशेष शक्तिको बढ़ानेमे सहायता मिलेगी।

(२) शुद्ध नस्ल—साँड अपनी जातिके [illegible] एवं कुलवाला होना चाहिये। विभिन्न जातिके [illegible] संकर नस्लवाले पशुके शरीरमे नाना प्रकारके [illegible] क्रोमोसोम्स (Chromosomes) का समावेश हो जाता है। गर्भाधानके समय उसमें जो गुण प्रभावशाली होंगे, [illegible] उसकी संततिमे आ जायँगे। किंतु असली [illegible] अधिकतर जाति-विशेषके ही गुण जाग्रत् और [illegible] रहेंगे। अतः अधिकांशमे वह उन्हीं गुणोंका [illegible] संततिमे करेगा। इसलिये वह उत्तम और उपयोगी है।

(३) आयु—साँड़की उम्र ३ वर्षसे कम और [illegible] वर्षसे ज्यादा नहीं होनी चाहिये। [illegible] पक्के दाँत होते हैं। कच्ची उम्रवाले [illegible] पालना और गायके सम्पर्कसे बचाना [illegible] बढ़िया होनेवाला साँड भी क्षीण हो जायगा।

(४) अवधि—४ वर्षसे अधिक [illegible] साँडका उसी गोशालामें रखना अच्छा नहीं है। [illegible] भीतर इस साँड़से उत्पन्न बछिया तीन [illegible] धारण करने योग्य हो जायगी। अतः [illegible] उसे बचाना चाहिये। साधारण [illegible] पीढ़ीमे नये खूनका [illegible]।

(५) संयोग—[illegible]

गायसे अधिक गायें हरी नहीं करानी चाहिये, नहीं तो वह कमजोर हो जायगा। रोगी गायके सम्पर्कसे भी उसे बचाना चाहिये। शालाकी हर ४०-५० गायोंके पीछे एक साँड़का होना जरूरी है।

(६) परिचर्या—गायसे संयोग करानेके बाद सॉड़को पौष्टिक चारा, दाना तथा गुड़ जरूर खिलाना चाहिये। ऋतुके अनुसार साँड़को स्नान कराना और उसपर ब्रुश फेरना चाहिये। गर्मीके मौसममें उसे रोज ही नदी, तालाब या शालामे नहलाना चाहिये। जाड़ोंमें कभी-कभी धूपमें नहलाकर पोंछ देना ठीक रहता है। उसका सारा शरीर खूब सुखा देना चाहिये। सॉड़को सर्वदा स्वच्छ एवं नीरोग रखना चाहिये; उसके शरीरपर किलनी, बग्घी आदि जन्तु कतई न रहने पाये।

(७) व्यवहार—साँड़को छेड़ना तथा चिढ़ाना नहीं चाहिये, वह स्वतन्त्रजीवी है और स्वच्छन्दताको पसंद करता है। अपनी गोशालासे बाहर जानेपर वह स्वतः ही लौट आयेगा।

(८) परिश्रम—साँड़को हमेशा बंद रखकर ज्यादा भारी, मोटा और आलसी नहीं बनाना चाहिये। उसके लिये भी घूमना-फिरना और स्वतन्त्र होकर घास चरना बहुत जरूरी है।

शरीरके अवयव

रंग—जातिके अनुसार काला, लाल, चितकवरा या सफेद और सुन्दर हो।

चर्म—पतला, चिकना और रेशम-से नरम बालों-वाला हो।

कद—ऊँचा, लंवा, सुगठित और भारी हो।

सिर—लंवा, माथा चौड़ा और गर्दन भारी हो।

झूल—मोटी एवं भारी झालरदार, सींग छोटे और गुट्ठल तथा कान बड़े हों।

दृष्टि—तेज, आँखें लाल रंगकी और दाँत तीखे तथा मजवूत हो।

ठाटी—ऊँची, भारी एवं चलते समय हिलनेवाली तथा सीना चौड़ा हो।

कंधे—ऊँचे, पुट्ठे चौडे और पीठ लंवी हो।

पूँछ—सीधी, मोटी, घनी-चौंरीदार और जमीनको छूती हुई लबी हो।

पैर—गठीले तथा मजबूत, नाभि लंबी और मुतान लटकता हुआ किंतु ढीला न हो।

रँभाना—मेघके समान गम्भीर और स्वभाव शान्त किंतु स्वतन्त्र हो। वह छोटे बछड़े-बछियोंसे चिढ़नेवाला न हो।

शेष अवयव उत्तम गायके समान हों।

साँड़ोंकी जाति-व्याख्या

१-श्रेष्ठ—वह है, जिसके सींगोंके आगेका भाग और नेत्र तो लाल रंगके हों, किंतु शेष शरीर सफेद रंगका, खुर चिकने तथा कोमल, मस्तक चौड़ा तथा गर्दन ऊँची हो। रोकनेपर वह दाहिनी ओर घूम जानेवाला हो।

२-विचित्र-सिद्धिदायक—जो ध्वजा, पताका एवं शक्तिके चिह्नोंवाला हो।

३-भाग्यवर्धक—जिसमें कमलकी आकृतिके चिह्न या धब्बे हों।

४-नील-वृषभ—जिसकी टॉगें, मुँह और पूँछ सफेद रंगके, किंतु शेष शरीर लाखके रंगका हो और आगेका धड़ उभरा हुआ तथा पूँछ मोटी एवं जमीनको छूती हुई हो। ऐसे लक्षणोंवाले सॉड़को छोड़नेसे पितरोंको विशेष तृप्ति होती है, ऐसा माना जाता है।

५-नन्दी-मुख—जिसका कानोंतक मुँह सफेद रंगका हो और शेष शरीर लाल रंगका हो।

६-समुद्रक—जिसकी केवल पीठ या पेट ही सफेद रंगका हो और शेष शरीर काले, पीले या लाल रंगका हो।

७-धन्य—जो चितकबरा हो।

८-करट—जिसके दो या सभी पैर सफेद हों और शेष शरीर पीले रंगका हो।

९-निकृष्ट—वह है, जिसके तालु, ओठ एवं मुँह काले रंगके हो, सींग और खुर खुरदरे हों। कद नाटा और ठिगना हो, रंग गीधका-सा भूरा या कौएका-सा काला हो। आँख कानी, भेड़ी या चचल हो। जो रोगी, निर्बल या बूढ़ा हो, जिसके पैर बराबर न पड़ते हों, जो अज्ञात जाति और वशका हो तथा संरक्षक न हो, ऐसे दोषयुक्त साँड़को गोशालाके पास भी नहीं आने देना चाहिये।

***

पाश्चात्त्य-देशीय गायें

संसार भरके सभी देश-देशान्तरोंमे दूधके लिये ही गाय पाली जाती है, जबकि भारतमें गोसेवा दूधके साथ-साथ भावनात्मक भी है। भारतीय गायें मनुष्यकी नित्य सहचरी हैं। प्रारम्भसे ही इन गायोंको मनुष्यका स्नेह एवं प्रेम प्राप्त हुआ। जबकि अन्य देशोंकी गायोका इतिहास यह है कि वे बहुत समयतक जंगलोमें हिंसक पशुके रूपमें घूमते रहनेके बाद मनुष्योके घरमें आकर पाली गयीं। भारतीय गायोका विशिष्ट लक्षण है उनका गलकंबल और पीठपर ककुद्। प्राणितत्त्वविदोंके मतसे ककुद्युक्त गाय जेबू (Zebu) श्रेणीके अन्तर्गत है। भारतीय जेबू गाय अफगानिस्तान, फारस तथा अफ्रीकाके किसी-किसी भागमे पायी जाती है। इसके अतिरिक्त और कहीं भी ये गायें नहीं हैं।

यदि भारत तथा फारस, अफगानिस्तान और अफ्रीकाके कुछ स्थानोंको छोड़कर और कही गाये नहीं पायी जाती तो इग्लैंड, अमेरिका आदिकी २५-३० सेरतक दूध देनेवाली गायें क्या है? अवश्य ही वे असली गाये नही है, वरं गायके समान दूध देनेवाले पशु-विशेष हे। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है उनके गलकंबलका न होना और ककुद्का भी नहींके बराबर-सा ही होना। उनकी आकृति गायकी आकृतिसे मिलती है, इसीसे वहाँकी काउ (Cow) को भ्रमसे भारतीय गायके तुल्य ही समझते है। आकृतिकी सादृश्यतासे जातिकी एकता सिद्ध नहीं होती। कुछ जातिके हिरन, भैंस, गाय और बैलोमे इतनी सादृश्यता रहती है कि एक जातिको देखकर दूसरी जातिका भ्रम होता है। इलांड हिरन (Eland), नू (Gnu), कुडू (Koondo) गायके साथ एवं चिलिंघम कैटिल् (Chillingham Cattle) गायके साथ बहुत मिलते-जुलते है। स्काट्लैंडके हाईलैंड कैटिल् (Highland Cattle) और भैंसकी बाहरी आकृति प्राय: एक समान है। एनो (Anoa) नामक हिरन (Antelope) ओर भैसमें बहुत थोड़ा अन्तर है। जावा, बालीद्वीप, मलक्का एवं बोर्नियो टापू आदिमे वेटेग नामक एक पशु है, जो गायसे विशेष मिलता है। यह वेंटेग वर्मामे भी है, पर वहाँ इसे सिन (Tsiue) कहते है। अपने भारतकी नील गायको ही देखिये, वह गायसे कितनी मिलती-जुलती है, पर गाय नहीं है, एक प्रकारका हिरन है। अ: [illegible] देशोंकी गाये असली गोजातिकी [illegible]।

पाश्चात्त्य देशोंके दूध देनेवाले [illegible] कहकर 'गवय' कह सकते हैं, क्योंकि [illegible] कुछ गायसे मिलती हैं, 'गोसदृश. गवय.'। [illegible] पूर्वज यूरास् (जर्मनमे यूरच्) नामक जगली और [illegible] हे। यह सिह, बाघ, गडा और भालूकी भाँति [illegible] था। यह सात फुटसे अधिक ऊँचा होता था [illegible] तीन फुट लबे होते थे। जूलियस सीजरने [illegible] किया है और इसे हाथीसे कुछ छोटा बताया है। [illegible] शरीरके रोएँ काले अथवा भूरे थे। अब भी [illegible] किसी रक्षित बागकी जगली गाये [illegible] उत्पन्न करती हैं। इस यूराम् पशुको लोग [illegible] पालने लगे और वहाँके विज्ञानविद् एव [illegible] अधिवासियोके विशेष यत्न और चेष्टासे यह [illegible] ऐसे दूध देनेवाले पशुके रूपमे परिणत हो [illegible] सिद्धान्तकी कुछ पुष्टि इस बातसे भी होती है [illegible] गाये भारतीय गायोकी तरह सीधी नहीं होतीं। [illegible] इस बातका प्रमाण मिलता है कि यूरास्-[illegible] योरोपका गृहपालित पशु हुआ। इग्लैंडके [illegible] आदि रोमन स्टेशनोंमे ऐसी गायोंके [illegible] इन सब बातोंसे पता चलता है कि [illegible] हिंस्र एवं मनुष्योंके भीषण शत्रु [illegible] केवल मनुष्योंके यत्न और चेष्टासे [illegible] देनेवाला पशु बन गया है। इसके [illegible] अध्यवसाय और यत्न अवश्य ही [illegible] फल है कि ये गवय, महिष, [illegible] वेंटेग, इलांड नू कुडू और [illegible] पशु दूध देते तथा कृषिकार्यमें [illegible] होते है।

विदेशी गाय और भारतीय [illegible]

विदेशी [illegible] स्वभावमें भिन्न [illegible] प्रकार हैं—

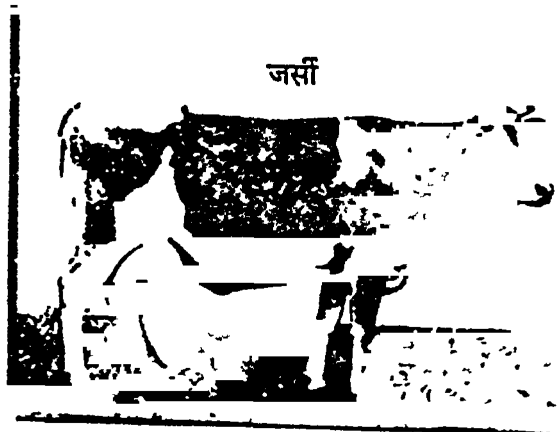
विदेशी गाय	भारतीय गाय
१-पीठ सीधी होती है।	१-भारतीय गायकी पीठ कुछ गोलाकार होती है तथा पीठपर कंधेका हिस्सा गोलाई लिये होता है, जिसे ककुद्, कुहान या ठाटी कहते हैं, बैलों तथा साँड़ोंमे तो यह विशेष रूपसे बड़ा होता है।
२-लंबाई तथा आकार भी बड़ा होता है।	२-दोनो चीजें साधारण होती है।
३-सींग छोटे होते हैं।	३-सींग प्रायः बडे होते हैं।
४-ऐन बड़ा तथा घुटनोतक होता है।	४-ऐन साधारण होता है।
५-दूध अधिक देती हैं।	५-दूध साधारण देती हैं।
६-वैल परिश्रमी नहीं होते।	६-बैल परिश्रमी और उपयोगी होते हैं।
७-वहुत सीधी नहीं होतीं।	७-प्रायः सीधी होती हैं।
८-रँभानेका स्वर दवा हुआ होता है।	८-रँभानेका स्वर ऊँचा होता है।

आगे विदेशोंकी गोजातिका संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है—

(१) इंग्लैंडकी गोजाति

इग्लेड तथा वहाँके द्वीपसमूहोंमे मुख्यरूपसे (१) शाटहार्न (छोटे सींगवाली), (२) लिकनशायर (छोटे सींगकी लाल गाये), (३) हेरीफोर्ट शायर (सफेद मुँह और शरीर लाल), (४) नार्थ डिवन (उज्ज्वल शरीरवाली), (५) लोग हार्न (लंबे सींगवाली), (६) रेड पोल्ड (लाल रंगकी शृंगहीना), (७) डरहम (छोटे सींगवाली), (८) वेल्स (काली गाय), (९) एवार्डिन एंगास, (१०) आयरशायर,

जर्सी



(११) गैलवे, (१२) केरी, (१३) जर्सी तथा गर्नसी आदि गोजातियाँ पायी जाती हैं। इनमें जर्सी, गर्नसी, आयरशायर, शाटहार्न तथा केरी आदि नस्ले विशेष दुधार होती हैं।

इंग्लिश चेनल द्वीपोंमे जर्सी नामका एक द्वीप है। वहाँकी गाये जर्सी नामसे विख्यात हैं। इस जातिकी गायें दूधके लिये विश्वमें प्रसिद्ध हैं और इनमें मक्खन भी अधिक निकलता है। ये प्रायः २-३ वर्षकी उम्रमें ही बच्चा दे देती हैं। इनका रग प्रायः शुभ्र और धूसर होता है।

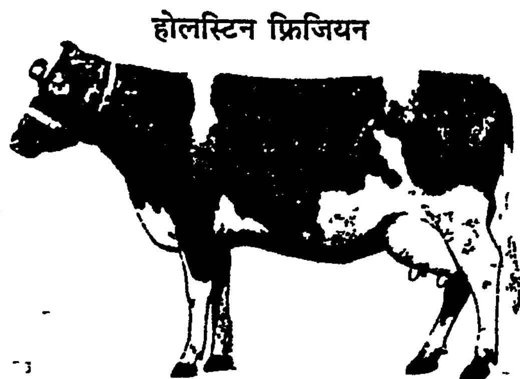
समय-समयपर भारतवर्षसे नाना जातिकी गायें इंग्लैंड जाती रही हैं। उसको वे लोग ईस्ट इण्डियन गाय कहते हैं।

(२) हालैंडकी गायें

गुजरातकी भाँति हालैंड समुद्रके किनारे-किनारे बसा है। यह कृषि-प्रधान देश है। यहाँ गाये बहुतायतसे पाली जाती है। यहाँकी गायोके बराबर पृथ्वीकी किसी जातिकी गाय दूध नहीं देती। यहाँकी गायें बड़े आकारकी, शान्त, धीर और सुन्दर होती हैं। इस देशमे मुख्यतः २ श्रेणीकी गाये हैं—

(क) होलस्टिन फ्रिजियन—फ्रिजिया प्रदेशकी ये

होलस्टिन फ्रिजियन



गाये जर्मनीके होलस्टिन वंदरगाहसे बाहर जाती हैं, इसीसे

अमेरिकावाले इन्हे होलस्टिन फ्रिजियन कहते हैं। फ्रिजियाका अधिकाश भाग नीचा होनेके कारण यहाँ घास खूब होती है। यहाँके गाय-वैल घास खाकर खूब लंवे-चौड़े तथा वलिष्ठ हो जाते हैं। यहाँके गो-स्वामी गो-पालनके सिवा और कोई काम नहीं करते। इसीसे उनका पूरा ध्यान गायोपर रहता है। बहुतसे इन्हे इंग्लैंडकी छोटे सींगवाली गायोंका आदि वीज मानते हैं। ये दूध खूब देती हैं।

(ख) लेकेन फील्ड या डचवेल्ट—इस जातिकी गायोका आदि निवासस्थान हालैंड देश है। ये इग्लैंडकी गैलवे गायकी भाँति होती हैं, पर इनके सींग नहीं होते। यूरोपमे इन्हे डचवेल्ट और हालैंडमे लेकेन फील्ड कहते हैं, जिसका अर्थ है वस्त्रावृत। इनका अगला-पिछला भाग घोर काला और बीचका खूब सफेद होता है, जिससे ऐसा मालूम पडता है कि एक सफेद कवल बीचमें लपेट दिया गया है, इसीसे इसका नाम लेकेन फील्ड पड़ा। ये होलस्टिन गायोसे छोटी होती है। गाये केवल दूधके लिये पाली जाती हैं। इग्लैंड, मेक्सिको, कनाडा तथा अमेरिकामे भी इस जातिकी गाये है, किंतु इनकी संख्या कम है।

बेल्जियमकी गायें—इस देशकी गायें अनेक अशोमे हालैंडकी गायोकी भाँति होती हैं।

स्विटजरलैडकी गायें—स्विटजरलैंडमे दूधका खूब विस्तृत व्यवसाय होता है। इस देशको पृथ्वीका 'गो-गृह' कहते है। यह राज्य ही एक गोचरभूमि है। सन् १९०१ मे यहाँ केवल १,३४० गाये थी, किंतु १९०६ मे १४,९९,८०४ गायें हो गयीं। गर्मीके दिनोमे ये गाये पहाडीपर घास चरती है और जाड़ेमे घर रहती है। इनमे एक विशेष जातिकी गाये है जो अधिक दूध देती हे। खूब मोटी होनेसे ये नाटी मालूम पड़ती है। इनका थन सुगठित होता है और दूधकी शिराएँ स्पष्ट दिखायी देती हे। ये बडी आसानीसे पहाडपर चढ़-उतर सकती हैं। देखनेमे भी ये गाये सुन्दर दीखती हैं।

डेन्मार्ककी गायें—यहाँ आल्डेनवर्ग तथा रेड डेनिस नामक दो जातियोका उत्कृष्ट गो-परिवार है। एक समय यह समस्त यूरोपका गोगृह था और यहाँसे खोवा, मक्खन, पनीर और दूध यूरोपमे जाता था। आज भी यह देश दूध-मक्खनके लिये प्रसिद्ध है।

नार्वे और स्वीडनकी गाये—[illegible] दोनो देशोमें भी अधिक दूध देनेवाली [illegible] डेन्मार्ककी गाये प्राय. एक ही [illegible] अधिक भूभाग शीतकालमें वर्फसे ढका [illegible] घास कम होती है, किंतु गो-पालकोंके सुन्दर [illegible] घासका जरा भी अपव्यय नहीं होता, इसीसे [illegible] पड़ने पाती। यहाँवाले गायोंकी सेवा खूब [illegible] गोशालाओंको खूब साफ-सुथरा रखते हैं और [illegible] अलग-अलग वडे घरोमे रखते हैं। एक [illegible] गायोंकी सेवा करती हैं।

इटलीकी गाये—इस देशमे अच्छी गाये नहीं हैं और न गो-जातिकी उन्नतिके लिये कोई चेष्टा ही होती है। [illegible] गायोके सींग वड़े होते हैं। ये दूध देनेवाली नहीं होतीं। कहीं-कहीं अच्छी गाये भी पायी जाती हैं।

फ्रासकी गाये—फ्रांसके उत्तर भागमे [illegible] किनारेके सिवा सव जगह नार्मेन गो-जाति दिखायी [illegible] है। इनकी देहका रग लाल और जहाँ-तहाँ सफेद दाग होते हैं। इनके छोटे सींग सिरमे ऊपरकी ओर उठे [illegible] हैं और उनका अगला भाग काला होता है। पैर [illegible] और सुन्दर होते हैं। नार्मेडीमे गोचर-भूमि अधिक है। [illegible] स्थूलकाय एवं अधिक दूध देनेवाली होती हैं। [illegible] चेनलकी गाये उन्हींकी एक जातिमेंसे हैं।

अमेरिकाकी गाये—अमेरिकाकी [illegible] जाति नहीं है। उत्तर अमेरिकामे यूरोपसे [illegible] अमेरिकामे भारतसे गाये आयी हैं। [illegible] तथा यूरोपकी प्रायः सभी जातियोंकी गाये [illegible] हैं। इस देशके धनी गोपालक पदर्शनीमें [illegible] तथा साँड़ोंको बहुत बडा [illegible] इस प्रकार अपने देशके गो-समुदाय [illegible] उन्नति करते हैं। यहाँ [illegible] मैदान हैं। यहाँकी गाये [illegible] होती है।

कनाडाकी गाये—[illegible] गायोंके पलनेमे सुविधा है। [illegible]

प्रतिवर्ष यहाँसे स्थूलकाय वैल विभिन्न देशोको जाते है। यहाँकी गाये इंग्लैंडकी गो-जातिसे उत्पन्न हुई हैं। जर्सी-गर्नसी आदि गायोंका यहाॅ विशेष आदर है।

एरीजोनाकी गायें—सयुक्तराज्य अमेरिकाके दक्षिण-पश्चिम भागमें स्थित मेक्सिको और कैलीफोर्निया एरीजोना नामक प्रदेशमें उत्तम गोखाद्य तथा गोचारणके लिये बड़े-बड़े अनेक मैंदान हें।

अर्जेन्टाइनाकी गायें—यहाॅ गायोके खाने लायक घास तथा गोचरभूमि वहुत अधिक है। थोड़े ही दिनोंमें यहाँ गो-जातिकी अच्छी उन्नति हुई है। पहले यहाँ स्पेन देशकी वड़े सींगोवाली मामूली गाये थीं, किंतु क्रमशः डरहम, छोटे सींगोवाली और हेरीफोर्ड जातिकी गाये आ गयीं। अब तो होलस्टिन फ्रीजियन, जर्सी तथा अन्य जातिकी गायें लाकर इस देशमे मक्खन और पनीरका वड़ा व्यवसाय चल रहा है।

आस्ट्रेलियाकी गायें—गत शताव्दीके आरम्भमे यहाँ एक भी गाय नहीं थी, किंतु सन् १९०६ मे ८,१७,८०० गाये हो गयीं। भिन्न-भिन्न जातिकी श्रेष्ठ गाये ऊँचे दामोंपर लाकर इतनी उन्नति की गयी है। डचवेल्ट गोजातिके साथ जर्सी और आयरशायर गोजातिके सम्मिश्रणसे अत्यन्त दुग्धवती सकर जातिकी गाये यहाँ उत्पन्न की गयी है। यहाँ गोचर-भूमि यथेष्ट है। आजकल यहाॅ जर्सी, आयरशायर, डिवनशायर, ससेक्स, एवार्डिन एंगास आदि गाये पायी जाती हैं।

न्यूजीलैंडकी गायें—यहाँकी नदियो और झरनोंमें सदा पानी भरा रहनेसे घास सदा प्रचुर मात्रामे रहती है। यहाँ वहुत-सी स्थायी गोचर-भूमि है। यहाँ चारेका कभी अभाव नहीं होता। सन् १९०६ मे यहाॅ १८,५१,७५३ गाये थीं; जिनमें ५,९३,९२७ गायें दूध देनेवाली थीं। यहाॅ दूध, सूखा दूध तथा पनीरके व्यवसायकी वडी उन्नति हो रही है।

अफ्रीकाकी गो-जाति

(क) मिस्त्रकी गायें—भारतीय गायोंकी भाँति यहाॅकी गायोके ककुद् तथा गलकवल होता है। वर्षाकालमें ये घास खाती हैं और जव अधिक वर्षासे घासके स्थान जलमें डूव जाते हैं तव सूखी घास खाकर जीती हैं। अमृतमहाल गायोके विकनेके समय इजिप्टके खदीव और पाशा मद्रासँसे बहुत-सी गायें खरीदकर ले गये थे। इस देशमे गो-जातिकी उन्नतिके लिये कोई विशेष चेष्टा नहीं की जाती।

(ख) दक्षिण अफ्रीकाकी गायें—दक्षिण अफ्रीका या केप कालोनी प्रदेशमे हालैंडदेशीय और इंग्लिश चैनलकी जर्सी जातिकी दुधार गाये हैं। ये गायें बोस्टोरस जातिकी हैं, किंतु केप कालोनी तथा मेडागास्कर द्वीपोंमें जेबू श्रेणीकी गायें होती हैं। कुछ लोगोके मतसे ये गाये अफ्रीका-प्रवासी भारतीयोंद्वारा लायी गयी हैं।

(ग) कविरेंडोकी गायें—यह अफ्रीकाके पूर्व भागमे है। यहाँके लोग गोपालक है। यहाॅ साॅड़ोकी दौड़ होती है। जिसके पास दौड़नेवाला साॅड होता है, वह देशका प्रधान व्यक्ति समझा जाता है। एक दौड़नेवाले साॅड़का मूल्य एक हजार गायोके मूल्यके बराबर होता है।

(घ) आइलैंड-गोजाति—अफ्रीकाके जंगलोंमे एक प्रकारकी जंगली गायें या मृग होते हैं। इंग्लैंडमें इन्हें आइलैंड गाय या विदेशी गाय कहते है। यद्यपि ये गाय कहलाती हैं, किंतु वास्तवमें गाय नही वरं गो-सदृश मृग हैं। जहाॅ गर्मी-सर्दी अधिक नहीं पड़ती, वहीं ये रहती है। ये कृष्णसार जातिकी है और उन्हींकी भाँति होती भी हैं। ये अधिक दूध नही देतीं।

चामरी गो (Yak)

हिमालय पर्वतके उत्तरी भागोंमें चामरी जातिकी गाये होती हैं। ये जंगली और पालतू दोनों होती हैं। इनका शरीर घने और लंवे रोओसे ढका रहता है। बर्फीले प्रदेशमे रहनेके कारण ही प्रकृतिने शायद इनके शरीरको बालोसे ढक दिया है। इनकी गर्दन और पीठ बराबर, मुँह नीचे और पैर छोटे-छोटे होते हे। सींग पीठकी ओर झुके हुए होते हैं।

जगली गायोका रंग काला तथा पालतू गायोंका काला एवं सफेद मिला हुआ होता है। सफेद रंगकी चामरी गायकी पूँछका चमर वनता है। पालतू गायोके सीग नही होते।

श्राद्धका फल

जिस व्यक्तिके पास श्राद्धके लिये कुछ भी न हो वह यदि पितरोंका ध्यान करके गोमाताको श्रद्धापूर्वक घास खिला दे तो उमको श्राद्धका फल मिल जाता है—'तृणानि वा गवे दद्यात्।' (निर्णयसिंधु)

गोपालन

चरती गायको रोकनेसे नरक-दर्शन

प्राचीन कालकी बात है। राजा जनकने ज्यो ही योगवलसे शरीरका त्याग किया, त्यो ही एक सुन्दर सजा हुआ विमान आ गया और राजा दिव्य-देहधारी सेवकोके साथ उसपर चढकर चले। विमान यमराजकी संयमनीपुरीके निकटवर्ती मार्गसे जा रहा था। ज्यो ही विमान वहाँसे आगे बढ़ने लगा, त्यों ही बड़े ऊँचे स्वरसे राजाको हजारों मुखोसे निकली हुई करुण-ध्वनि सुनायी पडी—'पुण्यात्मा राजन्! आप यहाँसे जाइये नहीं, आपके शरीरको छूकर आनेवाली वायुका स्पर्श पाकर हम यातनाओसे पीडित नरकके प्राणियोको बड़ा ही सुख मिल रहा है।' धार्मिक और दयालु राजाने दुखी जीवोकी करुण पुकार सुनकर दयार्द्र होकर निश्चय किया कि 'जब मेरे यहाँ रहनेसे इन्हें सुख मिलता है तो बस, मैं यहीं रहूँगा। मेरे लिये यही सुन्दर स्वर्ग है।' राजा वहीं ठहर गये। तब यमराजने उनसे कहा—'यह स्थान तो दुष्ट, हत्यारे पापियोके लिये है। हिसक, दूसरोपर कलक लगानेवाले, लुटेरे, पतिपरायणा पत्नीका त्याग करनेवाले, मित्रोको धोखा देनेवाले, दम्भी, द्वेष और उपहास करके मन-वाणी-शरीरसे कभी भगवान्का स्मरण न करनेवाले जीव यहाँ आते है और उन्हे नरकोमें डालकर मैं भयकर यातना दिया करता हूँ। तुम तो पुण्यात्मा हो, यहाँसे अपने प्राप्य दिव्यलोकमे जाओ।' जनकने कहा—'मेरे शरीरसे स्पर्श की हुई वायु इन्हे सुख पहुँचा रही है, तब मै कैसे जाऊँ? आप इन्हे इस दुःखसे मुक्त कर दे तो मैं भी सुखपूर्वक स्वर्गमे चला जाऊँगा।'

यमराजने [पापियोकी ओर इशारा करके] कहा—'ये कैसे मुक्त हो सकते है? इन्होने बड़े-बडे पाप किये हैं। इस पापीने अपनेपर विश्वास करनेवाली मित्रपत्नीपर बलात्कार किया था, इसलिये इसको मैंने लोहशकु नामक नरकमे डालकर दस हजार वर्षोतक पकाया है। अब इसे पहले सूअरकी और फिर मनुष्यकी योनि प्राप्त होगी और वहाँ यह नपुसक होगा। यह दूसरा बलपूर्वक व्यभिचारमे प्रवृत्त था। सौ वर्षोतक रौरवनरकमे पीडा भोगेगा। इन [illegible] चुराकर भोगा था, इसलिये दोनों हाथ कटकर [illegible] शोणित नामक नरकमे डाला जायगा। इस प्रकार ये [illegible] नरकके अधिकारी हैं। तुम यदि इन्हें छुड़ाना चाहते हो तो [illegible] अपना पुण्य अर्पण करो। एक दिन प्रातःकाल [illegible] तुमने मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीरघुनाथजीका [illegible] था और अकस्मात् रामनामका उच्चारण किया था [illegible] पुण्य इन्हे दे दो। उससे इनका उद्धार हो जायगा।'

राजाने तुरत अपने जीवनभरका पुण्य दे दिया और इसके प्रभावसे नरकके सारे प्राणी नरक-यन्त्रणासे [illegible] छूट गये तथा दयाके समुद्र महाराज जनकका [illegible] दिव्य लोकको चले गये।

तब राजाने धर्मराजसे पूछा कि 'जब धार्मिक पुरुषोंका यहाँ आना ही नहीं होता, तब फिर मुझे यहाँ क्यों [illegible] इसपर धर्मराजने कहा—'राजन्! तुम्हारा जीवन तो पुण्योंसे भरा है, पर एक दिन तुमने छोटा-सा पाप किया था।—

एकदा तु चरन्तीं गां वारयामास वै भवान्।
तेन पापविपाकेन निरयद्वारदर्शनम्॥

तुमने चरती हुई गायको रोक दिया था। [illegible] कारण तुम्हें नरकका दरवाजा देखना पड़ा। अब [illegible] पापसे मुक्त हो गये और इस पुण्यदानसे तुम्हारा [illegible] भी बढ़ गया। तुम यदि इस मार्गसे न आते [illegible] यन्त्रणामय नरकसे कैसे उद्धार होता? [illegible] दुःखसे दुखी होनेवाले दया-धाम [illegible] दुःख हरनेमे ही लगे रहते हैं। [illegible] फल भुगतानेके बहाने इन दुःखी [illegible] लिये ही इस संयमनीके मार्गसे इन्होंने [illegible] है।' तदनन्तर राजा धर्मराजको [illegible] चले गये।

(पद्म [illegible])

गो-संवर्धन एवं गोरक्षाके लिये क्या-क्या करना चाहिये?

(१) गोवध भारतका कलङ्क है, अतएव गोवध-वंदीका कानून सव जगह वन जाय, इसके लिये सतत और सवल प्रयत्न करना चाहिये। जवतक सर्वथा गोवध-वंदीका कानून सव राज्योंमें न वन जाय, तवतक शान्तिपूर्ण आन्दोलनको शिथिल न होने दिया जाय।

(२) वूढ़ी, वेकाम गायोके लिये गोसदनोकी स्थापना करना-कराना, जिनमें गायके अपनी मौत मरनेके समयतक उसके लिये आवश्यक चारे-पानी और चिकित्साकी सुव्यवस्था हो। नस्ल न विगड़े, इस दृष्टिसे वहाँ गायोंको वरदाया न जाय।

(३) गायकी नस्ल-सुधारका प्रयत्न करना, जिससे गायें प्रचुर दूध देनेवाली हों, वैल मजवूत हों और मरे हुए गाय-वैलोंकी अपेक्षा जीवित गाय-वैलोंका मूल्य वढ़ जाय। इस प्रकार गायको आर्थिक स्वावलम्वी वनाना।

(४) केरल-कलकत्ते आदि शहरोंमें—जहाँ गायके रखनेके लिये पर्याप्त स्थान नहीं है, जहाँ कृत्रिम और निर्दय उपायोसे दूध निकाला जाता है, बछड़े मरने दिये जाते हैं, दूध सूखते ही गाय कसाईके हाथ वेच दी जाती है, कानूनी प्रतिवन्ध होनेपर म्युनिसिपलिटीकी सीमासे वाहर ले जाकर गाय मार दी जाती है, वहाँ जवतक ये वाते दूर न हो, तवतक गायोको वाहर कतई न जाने दिया जाय। स्थानकी सुविधा कराना तथा सरकारके द्वारा ऐसी व्यवस्था कराना, जिसमें गायोंको दिये जानेवाले ये सव कष्ट दूर हों।

(५) गायको भरपेट चारा-दाना मिले—इसके लिये व्यवस्था करना। गोचरभूमि छोड़ना एवं छुड़वाना। नये-नये चारेकी खेती कराना।

(६) वर्तमान पिंजरापोल, गोशालाओका सुधार करना। और जो पिंजरापोल, गोशाला दयाभावसे केवल वूढ़ी, अपंग गायोंके लिये खोले गये हैं, उन्हे डेरी फार्म न वनाकर उसी कामके लिये रहने देना।

(७) गायोंका गर्भाधान, विशेष दूध देनेवाली गौके पुत्र, वलवान् तथा श्रेष्ठ जातिके देशी साँड़से ही कराना। अच्छी नस्लके देशी साँड़ोका निर्माण तथा विस्तार करना, वूढ़े साँड़ोंसे तथा जर्सी साँड़ोसे गर्भाधानका काम कतई न लिया जाना।

(८) कसाईखानोंमें मारी हुई गायोंके चमडे इत्यादिसे वनी हुई वस्तुएँ—जूते, बटुए, कमरपट्टे, बिस्तरबंद, घड़ीके फीते, चश्मेके घर, पेटियाँ, हैंडबेग आदिका व्यवहार न करनेकी शपथ करना-कराना।

(९) गोवधमें सहायक चमड़े, मांस आदिका व्यापार, जिससे गोवध होता है—बिलकुल न करना।

(१०) गोसदनोमें, पिंजरापोलोंमें और सर्वसाधारणके द्वारा भी मरे हुए पशुओंके चमड़े, हड्डी, सींग, केश आदिसे अर्थ उत्पन्न करना और उसे बूढ़ी अपंग गायोकी सेवामें लगाना।

(११) ट्रैक्टरोका व्यवहार न करके या कम-से-कम करके, हल जोतनेका काम केवल बैलोंसे ही लेना तथा रासायनिक खादका उपयोग न करके गोबर, गोमूत्रकी खादसे ही काम लेना और इनकी उपयोगिताका प्रतिपादन करना।

(१२) जमाये तेलके घीमें मिलावट न हो, इसके लिये उसे अवश्य रंग देनेकी व्यवस्था सरकारसे कराना जिससे शुद्ध घीका महत्त्व अक्षुण्ण रह सके।

(१३) चमडा, चर्बी, रक्त, हड्डी आदि जिन-जिन वस्तुओके लिये गाय मारी जाती है तथा जिन कार्यों, कारखानों, मोटर-गाड़ी आदि वाहनोंमें ये चीजें बरती जाती हैं, उनका पता लगाकर कारखानेवालोंसे तथा उससे सम्बन्ध रखनेवाले अन्य लोगोसे प्रार्थना करना कि वे इन चीजोंको काममे न लावें।

(१४) यथासाध्य गायके ही दूध, दही, घीका व्यवहार करना और कम-से-कम एक गायका पालन करना।

(१५) इन कार्योंकी सम्पन्नताके लिये 'गोरक्षिणी-समितियों'का सर्वत्र संगठन करना।

(१६) गोरक्षाके लिये सभी लोग प्रतिदिन अपने-अपने इष्टदेव भगवान्से आर्त प्रार्थना करें।

गो-प्रतिपालन-विधि

देख-रेख—गोजातिमें भाँति-भाँतिकी नस्ल, शक्ति, लक्षण एवं गुण होते हैं। इनका साधारण ज्ञान पालकको अवश्य होना चाहिये। गो-पालनमे स्वतःके देख-रेखकी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि गृहस्थीके अन्य विशेष कार्योमे। यदि विश्वसनीय तथा चतुर ग्वाले मिल जायँ तो भी संचालककी दिलचस्पी रहनी चाहिये क्योकि स्वतःकी देख-रेखपर गोशालाका भविष्य निर्भर रहता है। यदि पालक स्वतः गोसेवा-प्रेमी होगा तो अन्य सेवक भी सेवा करनेमे विशेष रुचि रखेगे। अतः प्रत्येक पालकका कर्तव्य है कि वह अपनी गोशालाकी व्यवस्था एवं दिनचर्यासे भली-भाँति परिचित रहे और अपनी शालाके पशुओको पहचाने। उनके चारे-दाने और पानीकी उचित व्यवस्था एवं शालाकी स्वच्छतापर ध्यान देता रहे। इससे सेवकोमें सदा तत्परता बनी रहेगी और काम सुचारु रूपसे चलेगा।

सेवकोंपर गोशालाका पूरा भार डालकर स्वयं निश्चिन्त हो बैठ रहना ठीक नहीं है। ऐसा देखा गया है कि गोसेवासे उदासीन होनेसे गौकी नस्ल दिन-पर-दिन हीन होती जाती है और शनैः-शनैः हर ब्याँतमें दूध कम होता जाता है।

सुव्यवस्थित गोशालामें चार वर्षके भीतर ही काफी उन्नति दिखायी देगी, क्योकि तबतक गायके बछडे-बछिया पूरे गाय तथा बैल हो जायँगे। साँड़का चुनाव सतर्कतासे होना चाहिये, जिससे शालाकी होनेवाली नस्ल सुधरती जाय। साँड़का सुप्रबन्ध करनेपर गोवंश अवश्य तरक्की करेगा।

गृहिणी अपने बच्चों तथा परिवारकी जिस तत्परतासे सेवा करती है, उसे उसी तत्परतासे जीवनके मूल पोषक तत्त्वोंको देनेवाली गौकी भी सेवा करनी चाहिये। चाहे जितना भी श्रीसम्पन्न घर क्यो न हो दूध, दही, घी और मट्ठेके बिना वह अपूर्ण-सा ही रहेगा।

सेवा-पद्धति—गोशालाका प्रबन्ध भारतीय पद्धतिसे ही होना चाहिये। देशी दवाएँ सस्ती, सुलभ और फायदेमन्द होती है। अग्रेजी और रासायनिक दवाका प्रयोग करनेके पहले उसका भलीभाँति पूरा ज्ञान होना चाहिये अन्यथा जरा-सी भी कमी-वेशीसे हानि होनेकी सम्भावना रहती है, बिना समझे विदेशी प्रणाली और [illegible] रहकर गोशालाका प्रबन्ध नहीं करना चाहिये [illegible] आधुनिक विज्ञानसे उचित एवं आवश्यक लाभ भी उठाना चाहिये।

'यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्'

([illegible])

'जो जीव जिस देशमे पैदा होता है, उसी देशमें पैदा हुई ओषधि उसका हित करती है।'

जलवायुकी विभिन्नताका प्रभाव गोपर पड़ता है, अतएव सुदूर प्रान्तकी गायको मँगानेके पहले अपने देशकी जलवायु और उपजका ख्याल कर लेना चाहिये। नस्ल-सुधारनेके लिये यदि दूर-देशोंकी गायोंको रखनेका [illegible] हो, तो उनके लिये यथासम्भव वे ही चारे-दाने प्रस्तुत करने चाहिये, जिनपर वे वहाँ पाली गयी थीं। उनके [illegible] लिये उसी देशका उत्तम साँड भी होना चाहिये।

स्थान—स्थान और शालाके बार-बार परिवर्तनसे कुछ दिनोके लिये गाय बिदक जाती है और दूध भी कुछ कम हो जाता है। भलीभाँति परिचित न होनेसे वह मौका पाकर अपनी पूर्व-परिचित शालाको भाग जाती है। [illegible] जब नये स्थानपर गाय लायी जाय तो उसे कम-से-कम ५ या ७ दिनतक बाँधकर ही रखना चाहिये और [illegible] खिला-पिलाकर प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिये, [illegible] वह अपनी नयी शालासे भलीभाँति हिल-मिल [illegible]।

सेवक—गोसेवाके लिये गो-प्रेमी मनुष्य [illegible] ग्वाला शान्त-स्वभाव, स्वच्छ आदतोंका, [illegible] और अनुभवी होना चाहिये। नित्य नये [illegible] सुगमतापूर्वक दूध नहीं दुहाती और न पूरा [illegible] इसलिये सेवकोंको बार-बार नहीं बदलना चाहिये, [illegible] दुर्व्यवहार करनेवाले सेवकको [illegible]।

प्रतिपालन-विधि—[illegible] यहाँ चारे-दानेकी कमी नहीं [illegible] दूध [illegible]

गोपालनमें सफलता अवश्य होगी। गो-पालन-विधिकी सभी प्रधान वातोंका साधारणतया वर्णन नीचे किया जाता है।

(१) नये खूनका आयुप्राप्त सॉंड़, जो ३ वर्षसे ८ वर्पतकका हो, शालामे अवश्य रखना चाहिये। गोशालामें साँड़के न होनेसे गायका सोया[१] मारा जाता है। अतः इससे वड़ी हानि होती है।

(२) वछिया अपने जनक (साँड़) के रूप, गुण एवं जातिके अनुरूप होती है। उपयुक्त साँड़की उपस्थितिसे शालाकी होनेवाली नस्ल तरक्की करती जायगी।

(३) साँड़को सानी (चारा-दाना) से पूर्ण संतुष्ट एवं नीरोग रखना चाहिये।

(४) हीन, पंगु, अनिश्चित जातिवाले और रक्षकरहित साँड़को गोशालाके आस-पास नहीं आने देना चाहिये। ऐसे साँड़का न होना ही अच्छा है।

(५) गाय अपनी तथा सॉडकी गुण-जाति एवं शक्तिके अनुसार वच्चा देती है। वच्चोपर गाय और साँड़ दोनोका ही असर पड़ता है। ज्ञातशक्ति सॉड़ और दुधार गायकी वछिया दुधार गाय वनेगी और उसका वछड़ा वलवान् साँड़ वनेगा।

(६) स्थानीय गायको सुधारनेके लिये गायकी जातिसे उन्नत जाति और गुणोवाला देशी सॉड़ मँगाये और गाभिन होनेपर गायको पुष्टिकारक सानी खिलाये, इस भॉति उत्पन्न वछड़े-वछिया अपनी माताकी जातिसे अधिक उन्नत होंगे।

(७) कभी-कभी साधारण गायसे उत्तम वच्चा और उत्तम गायसे साधारण वच्चेका होना भी सम्भव है। सॉड़ और पोपणका सुप्रवन्ध या कुप्रवन्ध और वंश-परम्परा उपर्युक्त अपवादके मुख्य कारण हैं।

(८) दाने-चारेको ऋतुपर खरीद करके संचित कर रखना चाहिये। हरे चारेके निरन्तर मिलते रहनेके लिये ३ मास पहलेसे ही उसका प्रवन्ध करता रहे। गायके चारेके लिये खेती करना फायदेमन्द होगा, क्योकि—

[१] वर्पभर निरन्तर हरा चारा मिलता रहेगा।

[२] खरीदे हुए चारेसे यह सस्ता पड़ेगा।

[३] अपनी आवश्यकताके अनुसार गोपालक भाँति-भाँतिके चारे उपजा सकेगा।

[४] गायोके गोबरकी खादसे खेत अधिक उर्वर वनाया जा सकेगा और ज्यादा उपज होनेके कारण फसल सस्ती पड़ेगी।

(९) गायके लिये भिन्न-भिन्न ऋतुओंके अनुकूल चारे-दानेका प्रबन्ध करना चाहिये। हमेशा एक-सा चारा-दाना खानेसे वे ऊब जाती है।

(१०) गायके स्वभाव, जाति तथा दूध देनेकी शक्तिके हिसाबसे उसके चारे-दानेकी मात्रा नियत करनी चाहिये।

(११) गाय और ओसर-बछिया ठीक समयपर गाभिन हो, इसका ध्यान रखना चाहिये। दो या ढाई वर्षकी वछियाको और व्यानेके २ से ४ महीनेके बाद गायको गाभिन हो जाना चाहिये। ब्यॉतका ठीक तौरसे नियन्त्रण होनेपर गायें निरन्तर दूध देती रहेंगी। गोशालामे कभी बहुत अधिक और कभी बिलकुल कम दूध नहीं होना चाहिये।

(१२) व्यानेके समय गायका विशेष ध्यान रखना चाहिये। ब्यानेके १० दिन बादतक भी गायको विशेष सेवाकी आवश्यकता होती है, यों तो वह २१ दिनतक प्रसूता ही रहती है।

(१३) गायोको सद्व्यवहारसे सदा प्रसन्न एवं संतुष्ट रखना चाहिये। उन्हें किसी भॉतिसे चिढ़ाना और क्रोध करनेका अवसर देना ठीक नही है। नम्र व्यवहारसे गाये ममतामयी, स्नेहमयी एवं शान्त रहती है। ऐसी अवस्थामें वे सुगमतासे और पूर्ण रूपसे दूध दुहाती हैं।

(१४) कभी-कभी गाय पर्याप्त चारा-दाना खानेपर भी दूध नहीं देती, इसके कारणको यत्नपूर्वक ढूँढ़कर उसका विधिवत् उपचार करना चाहिये। यदि कोई लाभ होनेकी सम्भावना न हो तो उसे शालासे अलग करके केवल चराईपर रहनेवाले पिंजरापोलके पशुओके साथ छोड़ दे।

(१५) रोगी पशुको शालाके अन्य पशुओंसे बचाकर

१-गायके ऋतुमें आनेको सोया कहते हैं। ऐसे समयमे ही पशु गर्भाधानके योग्य होता है, अन्यथा नहीं।

रखना चाहिये और उसको चारा-दाना भी अलग ही खिलाना चाहिये।

(१६) बूढ़ी और दूधसे सूखी हुई गायको निकटवर्ती गोचर-भूमिवाले स्थानोमे भेज देना चाहिये। ऐसे स्थानोंपर गायोंके चरनेके लिये काफी अच्छी व्यवस्था रखनी चाहिये।

गौका इतिहास—सुव्यवस्थित गोशालामें गाय और सॉड़का जन्मपत्र रखना जरूरी है। गायकी नस्ल वैज्ञानिक रीतिसे सुधारने और नयी-नयी किस्मे चलानेके लिये गायका पूरा परिचय एवं बछडे-बछियोका पूरा ब्यौरा एक पुस्तकमें लिखा रहना चाहिये। यह पुस्तक 'गो-जन्मपत्र' भी कही जा सकती है। इसमे गायकी जाति, मूल्य, खरीदकी तारीख, रूप-रंग तथा आयु और नंवर लिखा होना चाहिये। इस परिचयके नीचे कोष्ठक बनाकर गौके ब्यॉतकी संख्या, गर्भाधान-तिथि, सॉँड़-परिचय, संतान-परिचय, जन्मतिथि, इस ब्यॉतका त्रैमासिक एवं सम्पूर्ण दूध और रोग-व्याधि तथा उपचार आदिका विवरण क्रमशः अङ्कित होना चाहिये।

जन्मपत्रसे पालकको बड़ी सहायता मिलती है। हर बातको याददाश्तके ऊपर छोड़ना उचित नहीं है। प्रत्येक सॉड़का पूर्ण परिचय ज्ञात होनेसे चुनावमें सुविधा रहेगी और कुछ वर्ष बाद यह लेखा गौका पूरा इतिहास बतानेमे सहायक रहेगा।

निश्चित रूपसे यह ज्ञात हो सकेगा कि किस सॉँडसे ब्यायी हुई गायकी दूध देनेकी शक्ति कैसी रही। गायको कब हरी होना चाहिये इसका नियन्त्रण सम्भव होगा तथा गायको समयपर हरी करानेका ध्यान रहेगा। गायकी गर्भाधान-तिथि ज्ञात होनेसे ब्यानेके समयके आस-पास उसकी भलीभॉति परिचर्या हो सकेगी। बछडे-बछियोके माता-पिताकी जाति, शक्ति और उमरका परिचय होनेसे उनके लालन-पालनपर यथोचित ध्यान दिया जा सकेगा। और किस दवाने, किस रोगपर, कितना लाभ किया, यह भी निश्चित रूपसे विदित हो सकेगा।

दूध दुहना

आमतौरसे गायोंके थनोमे १२ घंटोंके बाद फिरसे दूध भर आता है। कोई-कोई अच्छी नस्लकी गाये दिनमे ३ बार तक दुही जाती हैं। विदेशोंमें गायोंके दुहनेमें [illegible] प्रयोग होता हैं। भारतमें भी कुछ [illegible] मँगाया हैं, किंतु जनसाधारण [illegible] सकते। ये मशीनें काफी [illegible] गायोंको दुहनेके लिये इनको [illegible] भी [illegible] क्योंकि उनका दूध इतना अधिक [illegible] आदमी उन्हे दुहते-दुहते थक जाय। [illegible] ही ऐसी मशीनोका संचालन करना चाहिये, क्योंकि [illegible] ज्यादा दवाव पड़नेपर इस मशीनसे दूध [illegible] दुहा जा सकता। इन मशीनोका उपयोग विशेष [illegible] ही किया जा सकता है।

दूध दुहते समय निम्नलिखित बातोंपर [illegible] चाहिये—

(१) गायसे सदैव प्रेमपूर्ण [illegible]। दुलारसे पाली गयी गाय शान्त प्रकृतिकी और [illegible] होगी। क्रोधमे रहनेसे उसका दूध कम हो [illegible]। [illegible] दूधमें मक्खनकी मात्रा भी कम हो जायगी। [illegible] ही वात्सल्यमयी हैं, अतएव गायसे हर [illegible] और [illegible] तौरपर दुहते समय अच्छा व्यवहार करना [illegible]।

(२) दूध दुहनेसे पहले हाथोंको [illegible] चाहिये। यदि हाथोंमे किसी भी प्रकारकी [illegible] तो दूधपर उसका असर जरूर पड़ेगा। [illegible] होने चाहिये। पोटेशियम-परमैंगनेटको [illegible] नीमके पत्ते उबाले हुए पानीमें हाथ [illegible]। [illegible] छाननेका कपडा साफ और धुला [illegible]।

(३) आजकल दूध दुहनेके [illegible] वाल्टी बनायी जाती है। इस [illegible] हुआ तिरछा ढक्कन लगा होता है, [illegible] बचाव हो जाता है। खुले हुए [illegible] रहता है।

(४) गायके [illegible] कोमल स्थान हैं। इसलिये [illegible] चाहिये। वह दूध [illegible] भरा हुआ [illegible] है। शीघ्रतापूर्वक [illegible]

पहुँचाकर दूध दुहना चाहिये। दुहते समय थनोपर आवश्यकतासे अधिक दवाव नहीं डालना चाहिये।

(५) गायके वछड़े या वछियाको पहले दूध पीनेके लिये छोड़ दे। असलमे दूध तो वच्चेके पालनके लिये ही वनता है। वच्चेको देखकर ही गाय स्नेहवश दूध प्रवाहित करती हैं। ऐनमे दूधके भर आनेपर गाय प्रायः गोवर या मूत्र करती हैं। कुछ देर दूध पी लेनेके वाद वच्चेको गायके पास ही वाँध देना चाहिये, ताकि वह उसे चाटती और दुलार करती रहे। वच्चेको उसके पाससे हटा देनेपर वह दुखी हो जाती है। दूध दुह लेनेपर बच्चेको फिर छोड़ दे, ताकि वह रहा-सहा दूध पी सके और कुछ देर अपनी मॉके साथ रहकर उसे आनन्द दे सके। यदि बच्चेको अधिक देरतक छोड़ दिया जायगा तो थनोंके कटनेका अंदेशा रहेगा।

(६) गाय व्यवस्थाप्रिय जीव है। वह पहचानी हुई जगहपर एक ही व्यक्तिसे सुगमतापूर्वक दुही जानी चाहिये। नित्य नये ग्वालोके वदलनेसे गाय संकुचित हो जाती है और पूरा दूध नहीं देती।

(७) प्रतिदिन एक नियमित समयपर, ठीक १२ घंटेके वाद, गाय दुही जानी चाहिये। ज्यादातर लोग सूरज उगनेके पहले और दिन छिपनेके लगभग गायको दुहते हैं। अपनी जरूरत देखकर गाय दुहनेका समय बाँध लेना चाहिये। कभी जल्दी और कभी देरमें न दुहे। सभी गायें एक दिनमें दो वार, सुवह और शामको दुही जाती हैं। परंतु कुछ गायें, जो वहुत अधिक दूध देती हैं, वे २४ घंटेके अंदर तीन बारतक दुही जाती हैं।

गर्मियोंमे सूरज उगनेके समय गायको दुहना चाहिये और शामके समय सूर्यास्तसे पहले ही दूध दुह ले। दुहनेके समयमे १२ घंटोका फरक होना चाहिये। दूध बेचनेवाली गोशालाओंमें ३ वजे तड़के और ३ वजे शामको ही गायको दुह लेते हैं, क्योकि उन्हे ग्राहकोंके यहॉ दूध समयपर पहुँचाना होता है।

(८) दुहनेके पूर्व थनोको ऋतुके अनुकूल ठंडे अथवा गरम पानीसे जरूर धो लेना चाहिये। दुहनेके वाद जाड़ोमें कभी-कभी थनोंपर घी और नमक तथा गर्मियोंमें मक्खन मल देना चाहिये। खासकर ओसर गायके थन वड़े नाजुक होते हैं, इसलिये इस प्रकारकी गायके थनोंमें दोनों समय मक्खन और नमक मिलाकर लगा दे। थनोमें दूधका अंश बाकी नहीं रहने देना चाहिये, क्योंकि वहॉ एकत्रित होनेपर वह जम जाता है और रोगको उत्पन्न करता है।

(९) कम-से-कम एक मासतक बच्चेको भर पेट दूध अवश्य पिलाना चाहिये; क्योकि इससे पहले बच्चा घास वगैरह नहीं खा सकता। महीने भर बाद बच्चेके आगे हरी घास रखने लगे। इससे वह जल्दी घास खाना सीख जायगा।

(१०) अच्छा दूध गाढ़ा होता है और दुहते समय उसकी धार सीधी, मोटी एवं बराबर बँधी रहती है। खुराकका असर दूधके गुणोंपर पड़ता है। हल्के दूधमें नीली-सी झलक होती है। बढ़िया दूधमें पीली झलक होगी। दुहते समय दूधकी धार बर्तनसे टकरा कर एक विशेष प्रकारकी ध्वनि करती है। अच्छे दूधकी ध्वनि गम्भीर और सुरीली होती है, किंतु हल्के दूधकी आवाज बहुत कम और धीमी होती है। यह फरक अनुभव करनेपर ही जाना जा सकता है।

(११) दूध दुहनेके पहले गायको सानी खिला देनी चाहिये और उसके लिये पानी पीनेकी भी सुविधा रखनी चाहिये। गायें काफी पानी पीती हैं, अतः पानीका प्रबन्ध अच्छा होना जरूरी है।

(१२) शान्त प्रकृतिकी उत्तम गायको पिछले दोनों पैरोंमें बन्धन लगाकर नहीं दुहना चाहिये। अच्छी जातिकी गायें दुहनेपर लात नहीं चलातीं, इसलिये बन्धनकी कुटेव उन्हे न डाले, वरना वे लात चलाने लगेंगी। लात मारनेवाली गायको ही दौना लगाना चाहिये, प्रेमपूर्वक पाली गयी सूधी गायके दौना बिना लगाये भी दुहा जा सकता है।

(१३) दूधको सीधे अँगूठेसे दुहना चाहिये, ताकि गायको कष्ट न हो। दूध दुहनेके दो तरीके हैं—

क—थनको मुट्ठीमे पकड़कर और अँगूठेको ऊपरकी ओर रखकर एक समान दबाव और गतिसे जल्दी-जल्दी खींचे और छोड़े। किंतु यदि ओसर गायके थन छोटे हों तो तर्जनी और मध्यमा—इन दो अँगुलियों एवं अँगूठेकी पहली पोरसे उनको पकड़कर चूँचीकी पूरी लंबाईतक खींचे। दुहनेकी यही विधि अच्छी है।

ख—गायके थनको चार अँगुलियोसे पकडकर एवं अँगूठेको हथेलीके भीतर मोड़कर थनको खींचते हुए दुहनेमें यदि जरा-सी भी असावधानी होगी तो थनपर दवाव नहीं पडेगा, बल्कि उसके ऊपरी हिस्सेपर दवाव पडेगा। इससे थनके निकटवाली दूधकी नसोंमें गाँठोके पडनेका अंदेशा रहता है। यही तरीका अधिक प्रचलित है, परतु अच्छा नहीं है।

(१४) दूध दुहनेके समय, पहले हर एक थनकी दो-चार बूँदें दुहकर जमीनपर गिरा दे। इससे चूँचीके छिद्रमे बैठे हुए कीटाणु निकल जायँगे।

दूधको बढ़ानेकी रीति—उचित सेवा और व्यवहार पाकर गाय सदैव शक्ति भर दूध देगी। दूध वढांनेके कृत्रिम उपायोसे गायकी पाचनक्रियापर प्रभाव पडता है, जिससे शरीरके भीतरी अवयवोपर विशेष जोर पडता है। उसकी प्रजनन-शक्ति भी क्षीण पड़ जाती है। गाय दूध देना कम कर दे, तो कारणकी खोज करनी चाहिये। यदि कोई खराबी मिले तो उसका उपचार, उचित ओपधिके द्वारा करना चाहिये। दवाओके जरिये दूधको बढानेकी कोशिश करते रहनेसे गायका स्वास्थ्य खराब हो जाता है। एक बार दूधके बढ़ जानेपर भी कमजोर पड़ जानेके कारण भविष्यमे गाय कम दूध देगी।

गायोकी खुराकका समुचित विश्लेषण करके उसमे आवश्यक परिवर्तन करनेसे दूधकी मात्रा अच्छी तरह बढ़ायी जा सकती है। संतुलित चारे-दानेसे यथेष्ट दूध बढ़नेके साथ-ही-साथ गायकी शारीरिक शक्ति भी खुलेगी।

नीचे लिखी बातोका ख्याल रखना चाहिये—

१-सबसे बढ़िया तो यह है कि गाय उस साँडसे बर्धायी[1] जाय, जिसकी माँ बहुत दूध देनेवाली हो एवं जिसकी कुल-परम्परा (Pedigree) ज्ञात हो।

२-यदि गायने चौंकने, घबराने या स्थान-परिवर्तनके कारण दूध देना कम कर दिया हो तो उसे पुचकारकर तथा रुचिकर सानी[2] खिलाकर शारीरिक एवं मानसिक शान्ति देनी चाहिये। [illegible]

३-गायको दुहते समय [illegible] वह प्रसन्न होकर अपनी [illegible] प्राचीन तथा अर्वाचीन दोनों ही [illegible] भगवान् कृष्णकी मोहनी मुरलीमें [illegible] आकर्पण भरा रहता था, यह सभी [illegible] आदि देशोकी वैभवशाली गोशालाओंमें भी [illegible] रहता है।

४-गेहूँ या जौंका पतला दलिया [illegible] गुड़ मिलाकर मौसमके माफिक गुनगुना [illegible] दूध वढ़ जाता हैं, क्योंकि उससे गायकी [illegible]

५-दूव, सेऊँ, ग्वार, सरसों, मटर और [illegible] आदिका हरा चारा समयानुसार गायोंको देना [illegible] नेपियर और हलीम घास भी बढ़िया [illegible] लूसर्न घास गरम तासीरके कारण लाभदायी [illegible] बरसीम घास आश्विनसे चैत्रतक खिलानी [illegible]।

६-गाजरको उबालकर और उसमें गु[illegible] खिलानेसे गायोका दूध खूब बढ़ जाता है।

७-ज्वारकी हरी चरी यदि पूरी तादादमें [illegible] अन्य चारे-दानेकी आवश्यकता नहीं रहती।

८-मसूर या अरहरकी दालको [illegible] या गुड़ मिलाकर १० या १५ दिनतक [illegible] पर्याप्त प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट मिलेगा [illegible] जायगा।

९-गर्मियोंमे दूध दुहनेके पहले [illegible] नहला दे। इससे गाय प्रसन्न हो [illegible] पाकर पूरा दूध देती है।

१०-यदि अजीर्णसे दूध कम [illegible] एक कच्चे फल तथा २ [illegible] थोडा-सा गुड़ या सोरा [illegible] लुगदीके रूपमें प्रतिदिन [illegible] लगातार खिलाये। इससे [illegible]



१-गाभिन करना।   २-चारा या कुट्टी।

गौके साथ व्यवहार और गोपरिचर्या

गाँएँ समस्त प्राणियोंकी माता हैं और सारे सुखोंको देनेवाली हैं, इसलिये कल्याण चाहनेवाले मनुष्य सदा गौओकी प्रदक्षिणा करें। गाँओंको लात न मारे। गौओंके वीचसे होकर न निकले। मङ्गलकी आधारभूता गो-देवियोंकी सदा पूजा करे। (महा०, अनु० ६९। ७-८)

जव गौएँ चर रही हों या एकान्तमें बैठी हों, तब उन्हें तंग न करे। प्याससे पीडित होकर जव गौ क्रोधसे अपने स्वामीकी ओर देखती है तो उसका बन्धु-बान्धवोंसहित नाश हो जाता है।

राजाओंको चाहिये कि गोपालन और गोरक्षण करें। उतनी ही सख्यामे गाय रखे, जितनीका अच्छी तरह भरण-पोपण हो सके। गाय कभी भी भूखसे पीडित न रहे, इस वातपर विशेष ध्यान रखना चाहिये। जिसके घरमें गाय भूखसे व्याकुल होकर रोती है, वह निश्चय ही नरकमें जाता है। जो पुरुप गायोंके घरमे सर्दी न पहुँचनेका और जलके वर्तनको शुद्ध जलसे भर रखनेका प्रबन्ध कर देता है, वह ब्रह्मलोकमें आनन्द भोग करता है।

जो मनुष्य सिंह, बाघ अथवा और किसी भयसे डरी हुई, कीचडमे धँसी हुई या जलमें डूबती हुई गायको वचाता है वह एक कल्पतक स्वर्ग-सुखका भोग करता है। गायकी रक्षा, पूजा और पालन अपनी सगी माताके समान करना चाहिये। जो मनुष्य गायोको ताडना देता है, उसे रौरव नरककी प्राप्ति होती है। (हेमाद्रि)

गोवर और गोमूत्रसे अलक्ष्मीका नाश होता है, इसलिये उनसे कभी घृणा न करे।

जिसके घरमें प्यासी गाय बँधी रहती है, रजस्वला कन्या अविवाहिता रहती है और देवता बिना पूजनके रहते हैं, उसके पूर्वकृत सारे पुण्य नष्ट हो जाते है। गायें जव इच्छानुसार चरती होती हैं, उस समय जो मनुष्य उन्हें रोकता है, उसके पूर्व-पितृगण पतनोन्मुख होकर काँप उठते हैं। जो मनुष्य मूर्खतावश गायोंको लाठीसे मारते हैं उनको बिना हाथके होकर यमपुरीमें जाना पड़ता है। (पद्म०, पाताल० अ० १८)

गायको यथायोग्य नमक खिलानेसे पवित्र लोककी प्राप्ति होती है और जो अपने भोजनसे पहले गायको घास-चारा खिलाकर तृप्त करता है, उसे सहस्र गोदानका फल मिलता है। (आदित्यपुराण)

अपने माता-पिताकी भाँति श्रद्धापूर्वक गायोंका पालन करना चाहिये। हलचल, दुर्दिन और विप्लवके अवसरपर गायोंको घास और शीतल जल मिलता रहे, इस बातका प्रबन्ध करते रहना चाहिये। (ब्रह्मपुराण)

गौको प्रसवकालसे दो मासतक बछड़ेके लिये छोड़ देना चाहिये। तीसरे महीनेमें दो थन दुहने चाहिये और दो बच्चेके लिये छोड़ देने चाहिये। चौथे महीनेमें तीन थन दुहने चाहिये। दुहते समय गायको कष्ट होता हो तो दुहनेका हठ नहीं करना चाहिये। आषाढ़, आश्विन और पौषकी पूर्णिमाको गाय दुहना निषिद्ध माना गया है। (ब्रह्मपुराण)

युगके आदि, युगके अन्त, विषुवत्, संक्रान्ति, उत्तरायण और दक्षिणायन लगनेके दिन, चन्द्र और सूर्यग्रहण, पूर्णिमा, अमावस्या, चतुर्दशी, द्वादशी और अष्टमी—इन दिनोंमें गौकी पूजा करनी चाहिये और उसे क्रमसे एकसे दुगुना नमक, घी, दूध और ठंडा जल पिलाना चाहिये। (ब्रह्मपुराण)

गोपालसे गुहार

आगे चलैं उछरैं वछरा, अरु पीछे सखा करताल बजावैं।
गाइ हुँकारत संग चलैं, मुख नैन दिये थन धार बहावैं॥
आजु जनी वछरी लिये गोदमें, धूरि सनी अलकैं गृहआवैं।
सोई गुपाल गुहार लगैं, अपनो यह गोधन आइ बचावैं॥

—सुदर्शन



गोचारण और गौकी देख-रेख

व्यायाम—हर एक प्राणीकी तरह गायको भी कुछ शारीरिक परिश्रम अवश्य ही करने देना चाहिये। शरीरके संचालनसे उसके प्रत्येक अवयव भलीभाँति काम करते रहेंगे। गाय स्वस्थ रहेगी तो उसका दूध भी अच्छा होगा और बच्चे भी अच्छे होंगे। एक गायको ४-५ मील प्रतिदिन घूम-फिर लेना चाहिये। साँड तथा बछडे-बछियोंको भी घूमना-फिरना इतना ही आवश्यक है। घूमनेसे वे पुष्ट एवं स्वस्थ बने रहते हैं।

बंद शालामें निरन्तर बँधी रहनेसे गायकी पाचनशक्ति क्षीण हो जाती है, इस कारण वह दूध कम देने लगती है। पाचन-शक्तिके ठीक न होनेसे कई तरहके रोगोंके होनेकी भी सम्भावना हो जाती है। बँधी हुई गाय प्रसन्न नहीं रहती।

स्वतन्त्रतापूर्वक धीमी-धीमी गतिसे अपनी रुचिके अनुसार घूम-घूमकर चरनेसे गाय प्रसन्न रहती है। निरन्तर बँधी रहनेसे वह सकुचित हो जाती है। शालाके बाहर घूमनेसे गायको खुली और साफ हवा मिलती है। यदि गोचरभूमि नदीके किनारे हो तो बहुत अच्छा है, क्योंकि वह प्यास लगनेपर बहता हुआ साफ पानी भरपेट पी सकेगी। बहते हुए निर्मल जलमें खनिज-लवण काफी होते हैं।

सूर्यकी किरणे गायको स्वस्थ रखने और उसकी दूध देनेकी शक्तिको विकसित करनेके लिये बहुत जरूरी है। इनसे विटामिन 'डी' का संचार होता है।

गाय धीमी-धीमी गतिसे चलनेवाला एक शान्तिप्रिय जीव है, अतएव उसे भगाना और मोटर गाड़ियोंसे चौंकने देना ठीक नहीं है।

एक बार नियमित रूपसे समय और स्थानकी आदत पड जानेपर वह शालासे निकलकर स्वतः ही वहाँसे चली जायगी और शामको उसी तरह लौट भी आयेगी। किंतु गायोंके साथ एक चरवाहा जरूर रहना चाहिये ताकि वे इधर-उधर भटक न जायँ।

गायोंकी सामूहिक चेतना बहुत होती है, जिस तरफ एक गाय जाने लगेगी, बाकी सब गायें भी उधर ही चल देगी।

बैलको खेती या गाड़ीका काम करनेमें ही काफी परिश्रम पड़ जाता है। इसलिये उसे शालामें बैठकर आराम करने देना चाहिये। जिन दिनों उससे काम न लिया जाय, उन दिनों उसे भी घुमा-फिरा लेना चाहिये।

सारांश यह है कि शालाके सभी पशुओंको नित्य ही टहलाना चाहिये। प्रचण्ड गर्मी, जोरदार बरसात और कडाकेके जाड़ोंसे पशुओंको बचाना बहुत जरूरी है। परंतु साधारणतया सभी मौसमोंमें सुबहसे शामतक उन्हें शालासे बाहर खूब घूमने दें।

स्नान—गाय, बैल तथा साँड़को बहती हुई नदीके पानीमें नहलाना बहुत अच्छा है। गर्मीके दिनोंमें उन्हें रोज नहलाना चाहिये।

उनके शरीरको साफ रखनेसे वे प्रसन्न रहते हैं। कभी-कभी उनपर नारियलकी सींकोंके बने हुए ब्रुश फेर देनेसे उनका चमडा साफ रहता है तथा रक्त-संचालन भी अच्छी तरह हो जाता है।

रीठोंको उबालकर उनके झागको मलनेसे गायका सारा शरीर खूब साफ हो जाता है। नीम या भट्टके पत्ते डालकर उबाले हुए पानीसे नहलानेसे गायके शरीरपर लगे कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। यदि रीठों या नीम आदिके पानीसे गायको १०-१५ दिन बाद नहला दिया जाय तो किलनी आदि कीटाणु नहीं हो पायेंगे। जाड़ोंमें भी गायको धूपमें खड़ा करके ताजे या गुनगुने पानीसे नहलाना चाहिये।

———

जो उच्छृङ्खलतावश मांस बेचनेके लिये गौकी हिंसा करते या गो-मांस खाते हैं तथा जो स्वार्थवश कसाईको गाय मारनेकी सलाह देते हैं, वे सब महान् पापके भागी होते हैं। गौको मारनेवाले, उसका मांस खानेवाले तथा उसकी हत्याका अनुमोदन करनेवाले पुरुष गौके शरीरमें जितने रोएँ होते हैं, उतने वर्षोंतक नरकमें पड़े रहते हैं। (महा०, अनु० [illegible])

———

प्राचीन गोशालाएँ तथा गोपालनकी शास्त्रीय विधि

गोगृह

गोशालाओंकी व्यवस्था कैसी होनी चाहिये, इसका अपने यहाँ प्राचीन ग्रन्थोमें पूरा विवरण मिलता है। 'स्कन्दपुराण'में बतलाया गया है कि गोगृह सुदृढ़, विस्तीर्ण तथा समान स्थलवाला होना चाहिये। उसमे ठंडी, तेज हवा और धूपकी पूरी रुकावट होनी चाहिये और वालूसे उसकी भूमि कोमल बना देनी चाहिये। शरीरकी खुजलाहट मिटानेके लिये उसमे वहुतसे स्तम्भ होने चाहिये। चारा डालनेके लिये उसमे वड़ी-बड़ी नाँदें होनी चाहिये[१]। खूँटोंका ऊपरी भाग नुकीला न होना चाहिये, जिससे उनके स्पर्शसे क्लेश न हो और उनमें मुलायम रस्सियाँ लगी रहनी चाहिये। मच्छर आदि हटानेके लिये धुएँका प्रवन्ध रहना चाहिये और बैठनेके लिये पर्याप्त स्थान होना चाहिये। पानी पीनेके लिये कुएँ, कुंड, जलाशय आदि रहने चाहिये। कूडा साफ करनेके लिये नौकरोका प्रवन्ध रहना चाहिये और उनके निर्वाहयोग्य वृत्तिकी भी व्यवस्था होनी चाहिये। पर्दे, छाया, चारा, पानी आदिका प्रवन्ध रहना चाहिये। सुन्दर प्राकार तथा द्वारोसे वह सुशोभित होना चाहिये। इस तरहके गोगृह वनवाकर जो किसी अच्छे पर्वपर दान करता है, वह भाग्यवान्, नीरोग और सम्राट् होता है।

एवंविधे महारम्यं प्राकारद्वारभूषितम्॥
कृत्वा गृहं गवामर्थे यः पर्वणि निवेदयेत्।
स राजराजो भवति भाग्यारोग्यसमन्वितः॥

महामुनि पराशरकृत 'कृषि-संग्रह' में भी बतलाया गया है कि जिसकी गोशाला सुदृढ़, साफ-सुथरी, गोबरसे रहित होती है, उसके पशु अच्छा भोजन न मिलनेपर भी बढ़ते रहते है। जिस स्थानसे प्रतिदिन बैल गोबर और मूत्रसे सने हुए निकलते हैं, वहाँ अच्छा चारा देनेसे भी क्या लाभ? 'वृष-आय'[२]वाली शाला गौको बढ़ानेवाली होती है। 'सिंह-आय'वाले स्थानमें गोनाश अवश्य होता है। चावलका पानी, गरम मॉड, बिनौले, भूसी आदि उस स्थानपर पड़े रहनेसे गोनाश होता है। झाड़ू, मूसल, जूठन आदि वहाँ इधर-उधर पडे-रखने तथा बकरियोंके बॉधनेसे भी हानि होती है। जहाँ गोमूत्र भरा रहता है और कूड़ा फैला रहता है, वहॉ उनका निवास कैसे हो सकता है? जहॉ थूक, खखार, मूत्र, पुरीष, कीचड़, मिट्टी नहीं गिरते, वहाँ लक्ष्मी स्थिर होती है। जिसमें संध्यासमय दीपक नहीं जलाया जाता, उस स्थानको लक्ष्मीरहित देखकर गोगण रोते हैं—

गोशाला सुदृढा यस्य शुचिर्गोमयवर्जिता।
तस्य वाहा विवर्धन्ते पोषणैरपि वर्जिताः॥
शकृन्मूत्रविलिप्ताङ्गा वाहा यत्र दिने दिने।
निःसरन्ति गवां स्थानात् तत्र किं पोषणादिभिः॥

१-'चरही' का परिमाण इस प्रकार वतलाया गया है—

स्वामिहस्तप्रमाणेन दैर्घ्यविस्तारसयुतौ। वसुभिश्च हरेद्भागं शेपाङ्के फलमादिशेत्॥
पशुहानिः पशोर्नाशः पशुलाभ· पशुक्षयः। पशुरोगः पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुप्रद.॥
पशु-मालिकके हाथ नपाई। लवाई चवडई मिलाई॥
आठ भाग दे जो वचि रहै। भिन्न भिन्न फल ताके कहै॥
एक वचे पशु-हानि करावे। दुइके वचे नाश फल पावे॥
तीन वचे पशु-लाभ कराई। चारि वचे तो क्षय होइ जाई॥
पाँच वचे पशु-रोग वढावै। छ.के वचे वृद्धि उपजावै॥
सात वचे पशुभेदैं जानौ। आठ वचे वहु वृद्धि वखानौ॥
(वृपकल्पद्रुम)

२-इष्ट स्थानकी लंवाईको चौडाईसे गुणा करके गुणनफलमे आठसे भाग देनेपर एक आदि सख्या शेप रहनेपर क्रमशः १ ध्वज, २ धूम, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृप, ६ ग्वर, ७ गज और ८ उष्ट्र—ये आय होते हैं।

× × ×

संध्याकाले च गोस्थाने दीपो यत्र न दीयते।
स्थान तत्कमलाहीनं वीक्ष्य क्रन्दन्ति गोगणाः॥[१]

गो-परिचर्या

पूर्वोक्त गो-गृहोमे गायोको रखकर उनकी बराबर परिचर्या करनी चाहिये। गोष्ठमें रहकर जो गोपाल धुआँ नहीं करता, उसे मक्खियोसे भरे हुए नरकमे मक्खियाँ खाती हैं—

गोपालको गवां गोष्ठे यस्तु धूमं न कारयेत्।
मक्षिकालीननरके मक्षिकाभिः स भक्ष्यते॥

(देवीपुराण)

दुहनेमे भी बड़ी सावधानी रखनी चाहिये। दो मासतक तो बछड़ेको पिलाना चाहिये। फिर तीसरेसे केवल दो थन और चौथेसे तीन थन दुहने चाहिए—

द्वौ मासौ पाययेद्वत्सं तृतीये द्विस्तन दुहेत्।
चतुर्थे त्रिस्तनं चैव यथान्यायं यथाबलम्॥

(हारीत)

जो मृतवत्सा गायको उसके बछड़ेकी खालमें भूसा भरकर या गायका ताड़न करके बराबर दुहता है, वह सदा क्षुधार्त रहता है—

मृतवत्सां तु गां यस्तु दमित्वा पिबते नरः।
वाहिताऽस्याश्चिर तिष्ठेत् क्षुधार्तो वै नराधमः॥

(देवीपुराण)

अनाथ गायोके लिये शिशिर ऋतुमे यत्नपूर्वक मठ बनवाने चाहिये और उनमें घास, पानी तथा ईधन देना चाहिये—

अनाथाना गवा यत्नात् कार्यम्तु शिशिरे मठः।
पुण्यार्थं यत्र दीयन्ते तृणतोयेन्धनानि च॥

([illegible])

क्रमानुसार प्रत्येक मासमें उनका उपचार करना चाहिये। ४ पल लवण, ८ पल घी और दूसरी गायका १६ पल दूध उनको देना चाहिये। ३२ पल शीतल जल और बलानुसार दूधका सेवन कराना चाहिये। प्रतिदिन सबेरे उन्हें लवण और जल देना चाहिये, फिर घास तथा मार्गमें अर्जित भोजन कराना चाहिये। रातमे दीपक अवश्य जलाना चाहिये तथा उन्हे वीणा आदि मधुर वाद्य और पुराणोंकी दिव्य कथा सुनानी चाहिये।[२] ऐसा करनेसे पृथ्वीभर दान देनेका फल प्राप्त होता है। जो पुण्य गोदानमे होता है, वही गो-संरक्षणसे प्राप्त होता है। तृण और जलसे मनुष्योंको सदा उनका पालन करना चाहिये। वे सदा देने योग्य, पूज्या, पोष्या तथा पालनीया हैं—

निशि दीप. सतन्त्रीको दिव्या पौराणिकी कथा॥
एव कृते महीं पूर्णा रत्नैर्दत्त्वा भवेत् फलम्।
गोप्रदानाय यत्पुण्यं गवां संरक्षणाद्भवेत्॥
मनुष्यैस्तृणतोयाद्यैर्गावः पाल्याः प्रयत्नतः।
देयाः पूज्याश्च पोष्याश्च प्रतिपाल्याश्च सर्वदा॥

([illegible])

भीतरमे सतुष्ट होकर इनकी परिचर्या करनी चाहिये। स्वप्नमे भी उनके ताडने या उनके प्रति क्रोध दिखाने या खेद

१-गोगृह कैसा होना चाहिये, इस सम्बन्धमें निम्नलिखित एक हिंदीका पद भी प्रसिद्ध है—

शीत उष्ण अरु वायु बचावै गृहकी रचना कीजै।
जामे रोग निकट नहि आवे सो प्रकार लखि लीजै॥
चारो दिशा दिवाल अनूपम, खिरकी बहुत रखावैं।
शीतल मन्द समीर वायु जहँ सुख पशुको पहुँचावैं॥
ओस नीर आतपहि बचावे, छाया पुष्टि करीजै।
एक झरोखा ऊपर राखे, तेहि दुर्गन्ध हरीजै॥
मल अरु मूत्र साफ बहु राखै, तहाँ रोग नहिं आवै।
वा विधि पशुकी रक्षा कीजै सफल सुक्ख उपजावै॥

(वृषकल्पद्रुम)

२-आजकल यह बात खोजकर निकाली गयी ह कि दुहते समय गायोंको मधुर संगीत सुननेसे दूध अधिक [illegible]
इसीलिये विदेशोकी गोशालाओमे 'रेडियो' लगाये जाते हैं। परतु हमारे यहाँकी यह पुरानी बात है।

करनेका भाव न होना चाहिये। उनके मूत्र-पुरीषसे किसी प्रकारका उद्वेग ठीक नहीं है। उनके रहनेके स्थानको शुष्क क्षारसे बराबर साफ करते रहना चाहिये। गर्मियोमें वृक्षोंकी सघन छाया तथा शीतल जलवाला, वर्षामें कीचडसे रहित और शिशिरमें वातवर्जित एवं सुख देनेवाला गरम स्थान देना चाहिये। वहाँ कूड़ा फेंकना, थूकना, मूत्र-पुरीष डालना कभी ठीक नहीं। रजस्वला, अन्त्यज या पुंश्चलीका भी प्रवेश उनके पास न होने देना चाहिये। बछियाको लाँघना नहीं चाहिये और न गोष्ठके समीप खेल-कूदकर उनको तंग करना चाहिये। जूता या पादुका पहनकर उनके पास जाना उचित नहीं है। रोगी या दुबली-पतली गायोका माता-पिताकी तरह पालन करना चाहिये—

अन्तस्तुष्टैर्यथाशक्त्या परिचर्या यथाक्रमम्।
ताडनाक्रोशखेदाश्च स्वप्नेऽपि न कदाचन॥
तासां मूत्रपुरीषे तु नोद्वेगः क्रियते क्वचित्।
शोधनीयश्च गोवाटः शुष्कक्षारादिकैः सदा॥
ग्रीष्मे वृक्षाकुले वेश्म शीततोये विकर्दमे।
वर्षासु चाथ शिशिरे सुखोष्णे वातवर्जिते॥
उच्छिष्टं मूत्रविट्श्लेष्ममल जह्यान्न तत्र च।
रजस्वला न प्रवेश्या नान्त्यजातिर्न पुंश्चली॥
न लंघयेद्वत्सतरीं न क्रीडेद्गोष्ठसंनिधौ।
न गन्तव्यं गवां मध्ये सोपानत्कैः सपादुकैः॥
गावः कृशतरा. पाल्याः श्रद्धया पितृमातृवत्।

(ब्रह्मपुराण)

गोबरको खादके काममे लाना चाहिये। इसके लिये माघमें गोबरका ढेर लगाकर श्रद्धापूर्वक उसका पूजन करना चाहिये और फिर किसी शुभ दिनमे उसको कुदालसे गोडना चाहिये। फिर उसको सुखाकर गुण्डक (गोला) बनवाकर फाल्गुनमे गड़हेमे गाड देना चाहिये और बीज बोनेके समय उसकी खाद निकालनी चाहिये। बिना खादका अन्न बढ़कर भी फलता नहीं—

माघे गोमयकूटं तु सम्पूज्य श्रद्धयान्वितः।
खादं शुभदिनं प्राप्य कुद्दालैस्तोलयेत्ततः॥
रौद्रे संशोष्य तत्सर्वं कृत्वा गुण्डकरूपिणम्।
फाल्गुने प्रतिकेदारे गर्तं कृत्वा विधापयेत्॥
ततो वपनकाले तु कुर्यात् सारविमोचनम्।
विना सारेण यद्धान्यं वर्धते न फलत्यपि॥

(कृषिसंग्रह)

जो पुरुष गायोंको शीतसे बचानेके लिये छाया डालता है और पीनेके लिये प्याऊ बनवाता है, वह वरुणलोकमें जाकर अप्सराओंके साथ क्रीडा करता है। उन्हें लवण देनेसे बड़ा सौभाग्य एवं रूप-लावण्य प्राप्त होता है। औषध देनेसे रोग नहीं होता। उन्हें औषध, लवण, जल तथा आहार बराबर देना चाहिये। उनको खुजलानेसे 'गोप्रदान' का फल होता है और भय-रोगादिसे रक्षा करनेमें 'गोशत-दान' के समान फल प्राप्त होता है—

शीतत्राणं गवां कृत्वा गृहे पुरुषसत्तम॥
वारुणं लोकमाप्नोति क्रीडत्यप्सरसां गणैः।
गवां पानप्रवृत्तानां यस्तु विघ्नं समाचरेत्॥
ब्रह्महत्या कृता तेन घोरो भवति भार्गव।
गवां लवणदानेन रूपवानभिजायते।
सौभाग्य महदाप्नोति लावण्यं च द्विजोत्तम॥
औषधं च तथा दत्त्वा विरोगस्त्वभिजायते।
औषधं लवणं तोयमाहारं च प्रयच्छति॥
गवां कण्डूयनं धन्यं गोप्रदानफलप्रदम्।
तुल्यं गोशतदानस्य भयरोगादिपालनम्॥

(विष्णुधर्मोत्तर०)

आदर्श तो यह है कि तृणोदकसे पूर्ण वनोंमें बछड़ों एवं साँडोंसहित मतवाली गायें खेल-कूद रही हों। शीत, धूप, व्याधि, भयसे विमुक्त हों और दूध देती हुई सुखसे सोती रहें—

तृणोदकाद्येषु वनेषु मत्ताः
क्रीडन्तु गावः सवृषाः सवत्साः।
क्षीरं प्रमुञ्चन्तु सुखं स्वपन्तु
शीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः॥

(ब्रह्मपुराण)

गो-चिकित्सा

अपने यहाँ सभी कार्योंके लिये दो उपाय बतलाये गये हैं—एक दैवी और दूसरा लौकिक। रोगनिवृत्तिमें भी इन दोनोसे काम लिया जाता है। चिकित्साके साथ ही देव-

पूजन, हवन, अनुष्ठानादि भी चलते रहते हैं। गो-चिकित्सामे भी इन दोनों उपायोंका विधान मिलता है। 'गोभिलीय गृह्यसूत्र' मे इसके लिये कई कर्म बतलाये गये है। गो-पुष्टिके लिये नान्दीमुख-श्राद्ध तथा तीन दिनका उपवास करके प्रातः गायको घरसे अरण्यमे जाते तथा आते समय उनका 'अनुमन्त्रण' करना चाहिये। इसमे बडे भावपूर्ण मन्त्रोका प्रयोग होता है। अरण्यमे प्रातः गायोंके जाते समय प्रार्थना की जाती है—'हे सबसे अधिक पराक्रमशाली भव और इन्द्र! आपलोग मेरी इन गायोकी रक्षा करना। हे पूषा! आप इन्हे सूखपूर्वक लौटा लाना, बिना किसी क्षतिके ये मेरे घरमे लौट आये।'

इमा मे विश्वतोवीर्यो भव इन्द्रश्च रक्षतम्।
पूष॑स्त्वं पर्यावर्त्तयानष्टा आयन्तु नो गृहान्॥

संध्याको लौटते समय प्रार्थना की जाती है—'मेरे लिये मधुर पदार्थ देनेवाली ये गाये दूधसहित बिना किसी क्षतिके लौट आये। मेरे यहाँ ये घृतकी माताएँ बहुत हो—

इमा मे मधुमतीर्मह्यमनष्टाः पयसा सह।
गाव आज्यस्य मातर इहेमाः सन्तु भूयसीः॥

प्रसवकी रात्रिमे गोपुष्ट्यर्थ 'विलयनहोम' का विधान है। इसमे जिस मन्त्रसे हवन किया जाता है, उसका भाव है—'हे संग्रहण नामक देव! मेरे यहाँ जो पशु उत्पन्न हुए है, उनकी रक्षाके लिये आप उनको स्वीकार करे। पूषा देवता इन्हे ऐसा कल्याण प्रदान करे, जिससे ये बिना नष्ट हुए जीवित रहे'—

संग्रहण संगृहाण ये जाताः पशवो मम।
पूषैषा॑ शर्म यच्छत यथा जीवन्तो अप्ययात् स्वाहा॥

'गो-यज्ञ' का भी एक प्रयोग बतलाया गया है, जिसमे गो-पुष्ट्यर्थ हवन, वृषभ-पूजन, ब्राह्मण-भोजन आदिका विधान है[1]। गायको धूप या लू लग जानेसे उसकी शान्तिके लिये लोहचूर्ण, अन्न और घृत मिलाकर 'चीवरहोम' करना चाहिये। 'अग्निपुराण' के गोशान्ति-प्रकरणमे भी ऐसे कई प्रयोग बतलाये गये है। लौकिक उपायोमे सफाई तथा स्वास्थ्यप्रद साधनोका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। 'अग्निपुराण' (अ० २९२) मे विभिन्न रोगोकी भी चिकित्सा बतलायी गयी है। यथा—

गायोंके सींगोमें रोग होनेमे सेंधा नमक सोंठ चूर्ण एवं जटामासीके काढ़ेमे पकाया हुआ तेल गरम मिलाकर लगाना चाहिये। सब प्रकारके कर्णशूलोंमे मजीठ हींग और सेंधा नमकके साथ पकाया हुआ तेल अथवा उनके कल्कका उपयोग करना चाहिये। दाँतोकी पीडामे बेलकी जड़, चिचडा, धव, पाटला और कोरयाका दाँतोपर लेप करना चाहिये। 'दन्तशूलहर' पूर्वोक्त दिव्य ओषधियोंके साथ पकाया हुआ घृत भी मुखरोगका नाशक है। जिह्वा-रोगमे सेंधा नमक देना चाहिये। गलेके रोगमे सोंठ, दोनो हल्दी और त्रिफलाका प्रयोग करना चाहिये। हृच्छूल, बस्तिशूल, वातरोग तथा क्षय-रोग होनेपर त्रिफला घीमे मिलाकर पिलाना चाहिये। अतिसारमे दोनों हल्दी और सोनापाठा देने चाहिये। सभी प्रकारके उदररोग तथा शाखारोगोंमे और कास-श्वासमे सोंठ एवं भारंगी हितकर हैं। टूटे अङ्ग जोडनेके लिये सेंधा नमक और ककुनी देना चाहिये। मुलेठीके साथ पकाया हुआ तैल पित्तरोगमे तथा अकेला तेल वातरोगमे लाभदायक है। कफरोगमे व्योष (पीपल मिर्च तथा सोंठ) शहदके साथ देना चाहिये। चोट लगनेपर तेल, घी और हरताल गर्म करके लगाना चाहिये। उर्द, तिल, गेहूँ, दूध और घीके लड्डू खिलानेसे बछडे पुष्ट होते हैं।

इसी तरह अन्य पुराणो तथा आयुर्वेद-ग्रन्थोंमे गो-चिकित्साके अनेक नुस्खे बतलाये गये हैं।

प्राचीन समयमे पशुओके चिकित्सालय थे। महाराज अशोकके 'गिरनार-शिलालेख' मे कहा गया है कि 'सर्वत्र राज्यमे, सीमाप्रदेशोमे और पडोसके राज्योंमे दो प्रकारकी चिकित्साओका प्रबन्ध होना चाहिये—एक तो मनुष्योंकी और दूसरी पशुओकी। जड़ी-बूटियाँ तथा ओषधियाँ जहाँ नहीं होतीं, वहाँ दूसरी जगहोंसे लाकर लगायी जायँ।

अहीरो तथा वृद्धलोगोको कितने ही नुस्खे मालूम हैं, जो बड़े उपयोगी हैं। यदि उनका संग्रह करके प्रयोग एवं अनुसन्धान किया जाय तो उससे बडा लाभ हो सकता है।

सरकारी व्यवस्था

'कौटिलीय अर्थशास्त्र' के 'गोऽध्यक्ष-प्रकरण' मे

१-कहा जाता है कि गोवर्धन-पूजनके अवसरपर भगवान् श्रीकृष्णने यह 'गो-यज्ञ' भी कराया था।

गोपालन तथा गोरक्षाकी सरकारी व्यवस्था बतलायी गयी है। उसके अनुसार आठ उपाय निश्चित किये गये हैं। गोपालक, पिण्डारक (भैंसोंको पालनेवाले), दोहक (दुहनेवाले), मन्थक (दही आदि मथनेवाले) और लुब्धक (जंगलोंमे हिंसक प्राणियोंसे रक्षा करनेवाले)—ये पाँच-पाँच आदमी मिलकर सौ-सौ गायोका पालन करे। इनका वेतन नकद या अन्न-वस्त्रादिके रूपमें दिया जाय। दूध-दही-घृतादिमे इनका कोई हिस्सा न रहे, क्योंकि ऐसा होनेमे लालचमे पडकर वे लोग बछड़ोको भूखो मार डालेगे। इसको 'वेतनोपग्राहिक' कहते है, क्योंकि इसमें केवल सूखा वेतन दिया जाता है—

गोपालकपिण्डारकदोहकमन्थकलुब्धकाः शतं शतं धेनूनां हिरण्यभृताः पालयेयुः। क्षीरघृतभृता हि वत्सानुपहन्युरिति वेतनोपग्राहिकम्॥

बूढी, दूध देनेवाली, गाभिन, पठोरी (पहले ब्यानकी), वत्सतरी (जिसने हालमे ही दूध चोखना छोड़ा हो)—इन पाँच प्रकारकी गायोंको बराबर-बराबर मिलाकर अर्थात् प्रत्येक २०-२० लेकर पूरा सौ कर दिया जाय और उनका किसी एकको ठेका दे दिया जाय। वह उनके मालिकको प्रतिवर्ष आठ वारक (प्राचीन तौल) घी, प्रत्येक पशुके लिये एक पण और सरकारी मुद्रासे मुद्रित मरे हुए पशुका चमड़ा देता रहे। (सरकारी मुहर इसलिये कि पशु मरा हुआ है, मारा हुआ नहीं) यह उपाय 'करप्रतिकर' कहलाता है—

जरद्धेनुगर्भिणीपष्ठौहीवत्सतरीणां समविभागं रूपशतमेकः पालयेत्। घृतस्याष्टौ वारकान् पणिकं पुच्छमङ्कचर्म च वार्षिकं दद्यादिति करप्रतिकरः॥

बीमार, अङ्ग-भङ्ग, एक ही आदमीको छोड़कर अन्य किसीसे न दुही जानेवाली, मुश्किलसे दुही जानेवाली और जिनका बछड़ा मर गया हो—ऐसी गायोका भी पहलेकी तरह प्रबन्ध कर दिया जाय। परंतु इसमें पूर्वोक्त घीका आधा या तिहाई मालिकको और उतना ही राजकीय अंश देना होता है। इसको 'भग्नोत्सृष्टक' कहते हैं—

व्याधितान्यङ्गानन्यदोहीदुर्दोहापुत्रघ्नीनां च समविभागं रूपशत पालयन्तस्तज्जातिकं भागं दद्युरिति भग्नोत्सृष्टकम्॥

शत्रुओके छल या जगली पुरुषोके भयसे जब गोपालक अपनी गायोको सरकारी बाड़ेमे भरती कर दें, तो आयका दसवॉ हिस्सा सरकारको दिया जाय। इस उपायको 'भागानुप्रविष्टक' कहते है—

परचक्राटवीभयादनुप्रविष्टानां पशूनां पालनधर्मेण दशभागं दद्युरिति भागानुप्रविष्टकम्॥

छोटी तथा बड़ी बछड़ी, पठोरी, गाभिन, दूध देनेवाली, अधेड उम्रकी और बॉझ—ये सात प्रकारकी गायें होती हैं। उनके महीने या दो महीनेके बछडा-बछड़ी लोहे आदिके छल्लेसे चिह्नित कर दिये जायॅ। जो गाये सरकारी चरागाहोमे महीने-दो-महीने रहे, उन्हे भी अङ्कित कर दिया जाय। इनका अङ्कित चिह्न, रङ्ग, सींग आदि पूरा हुलिया सरकारी रजिस्टरोमे दर्ज रखा जाय। यह उपाय 'व्रजपर्यग्र' कहलाता है—

वत्सिकावत्सतरीपष्ठौहीगर्भिणीधेनूश्चाप्रजातावन्ध्याश्च गावो महिष्यश्च, मासद्विमासजातास्तासामुपजा वत्सा वत्सिकाश्च, मासद्विमासजातानङ्कयेत्। मासद्विमास-पर्युषितमङ्कयेत्। अङ्कं चिह्नवर्णं शृङ्गान्तरं च लक्षणमेवमुपजा निबन्धयेदिति व्रजपर्यग्रम्॥

चोरोसे अपहरण किया हुआ, दूसरे गिरोहमे मिल गया हुआ या जगलमे अपने गिरोहसे भटका हुआ 'नष्ट' गोधन कहलाता है और कीचडमे फॅसने, गढेमे गिरने, बीमारी, बुढापा, जल-प्रवाहमे बह जाने, ऊपर वृक्ष गिर जाने, करारके खिसक जाने, भारी शहतीर—शिला आदिसे दब जाने, बिजली गिरने, हिसक व्याघ्र, सॉप, नाक आदिसे काटे जाने या जंगलकी आगसे गाय नष्ट हो तो उसे 'विनष्ट' कहते है। यदि ऐसी हानि ग्वालोकी असावधानीसे हो तो वे उसको पूरा करे—

चौरहृतमन्ययूथप्रविष्टमवलीनं वा नष्टम्। पङ्कविषम-व्याधिजरातोयाधारावसन्नं वृक्षतटकाष्ठशिलाभिहतमीशान-व्यालसर्पग्राहदावाग्निविपन्नं विनष्टं प्रमादादभ्यावहेयुः। एवं रूपाग्रं विद्यात्॥

आठवॉ उपाय 'क्षीरघृतसंजात' है, जिसका निरूपण किसी एक सूत्रमे नही किया गया है। परंतु यह बतलाया गया है कि एक द्रोण गायके दूधमेंसे एक प्रस्थ घी निकलता है। वस्तुतः दहीको मथकर घी निकालनेपर ही

घीके ठीक परिमाणका निश्चय होता है। इसलिये यह परिमाण प्रायिक ही समझना चाहिये। विशेष भूमियो, विशेष प्रकारकी घास या पानी खिलाने-पिलानेसे दूध और घीकी वृद्धि होती है—

क्षीरद्रोणे गवां घृतप्रस्थः। मन्थो वा सर्वेषां प्रमाणम्। भूमितृणोदकविशेषाद्धि क्षीरघृतवृद्धिर्भवति॥

वर्षा, शरद् और हेमन्त ऋतुओमे गायोको प्रातः-साय दोनो समय दुहा जाय और शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्ममे केवल एक ही समय। इन दिनो जो दो बार दुहे, उसका अँगूठा काट दिया जाय। दुहनेवाला यदि ठीक समयपर न दुहे तो उसे उस दिनका वेतन न दिया जाय—

वर्षाशरद्धेमन्तानुभयतः कालं दुह्युः। शिशिरवसन्तग्रीष्मानेककालम्। द्वितीयकाल दोग्धुरङ्गुष्ठच्छेदो दण्ड·। दोहकालमतिक्रामतस्तत्फलहानं दण्डः॥

जो ग्वाला स्वय गायको मारे या किसीसे मरवाये, स्वय हरण करे या किसीसे हरण कराये, उसे प्राणदण्ड दिया जाय। चोरोसे अपहरण की हुई अपने ही देशकी गाय जो लावे, उसे एक पण इनाम दिया जाय और परदेशके पशुओको चोरोसे छुड़ाकर लाने या छुडानेवाला आधा हिस्सा ले सकता है। गोपालोको चाहिये कि छोटे वछडे, बीमार और बूढे पशुओकी विपत्तिका बराबर प्रतीकार करते रहे अर्थात् उन्हे सब कष्टोसे वचाते रहे—

स्वयं हन्ता घातयिता हर्ता हारयिता च वध्यः। स्वदेशीयानां चोरहृतं प्रत्यानीय पणिकं रूपं हरेत्। परदेशीयानां मोक्षयितार्ध हरेत्। बालवृद्धव्याधितानां गोपालकाः प्रतिकुर्युः॥

शिकारियों तथा कुत्तोंको रखनेवाले बहेलियोद्वारा चोर, हिंसक प्राणी तथा शत्रुकी ओरसे होनेवाली बाधाओके भयको सर्वथा दूर करके ऋतुके अनुसार सुरक्षित जंगलोंमें ही सब गोपाल अपनी-अपनी गायोको चराये। सॉप और हिंस्र प्राणियोको डरानेके लिये, चरनेकी जगह पहचाननेके लिये, शब्द सुनकर घबरा जानेवाले पशुओके गलेमें एक लोहेका घट बॉध देना चाहिये। यदि पशुओको कहीं पानी पीने और नहाने आदिके लिये पानीमे उतारना हो तो ऐसे ही स्थानपर उतारे जहॉ बराबर तथा चौडे घाट बने हो, दलदल न हो, नाक आदिका भय न हो। जवतक पशु पानी पियें या नहायें, तबतक वहाँपर गोपाल उनकी [illegible] रक्षा करता रहे। चोर, व्याघ्र, साँप, नाक आदिसे पकड़े [illegible] पशु तथा बीमार और बुढापेके कारण [illegible] तत्काल सूचना देनी चाहिये, नहीं तो गोपालको [illegible] प्रत्येक पशुका पूरा दाम देना होगा। वर्णके अनुसार [illegible] दस गाय आदिकी गणनासे सौ गायोंके झुंडकी [illegible] जाय। सौ गायोंके गोलके पीछे चार साँड रखने चाहिये। गायोके जंगलोमें रहने और चरनेके लिये नियमित [illegible] व्यवस्था, उनके चरनेके सुभीते, उनके गोलकी तादाद और उनकी रक्षाके सौकर्यको देखकर ही होनी चाहिये—

लुब्धकश्वगणिभिरपास्तस्तेनव्यालपरबाधभयमृतुविभक्तमरण्य चारयेयु·। सर्पव्यालत्रासनार्थं गोचरानुपातज्ञानार्थं च त्रस्नूनां घण्टातूर्यं च बध्नीयु.। समव्यूढतीर्थमकर्दमग्राहमुदकमवतारयेयुः पालयेयुश्च। स्तेनव्याघ्रसर्पग्राहगृहीत व्याधिजरावसन्नं चावेदयेयुरन्यथा रूपमूल्य भजेरन्। वर्णावरोधेन दशती रक्षा॥ शत गोवृध कुर्याच्चतुर्वृषम्। उपनिवेशदिग्विभागे गोप्रचारान् बलान्वयता वा गवा रक्षासामर्थ्याच्च॥

इन सब नियमोका यथावत् रीतिसे पालन होता है या नहीं, इसको देखनेके लिये राज्यकी ओरसे एक [illegible] अफसर रहता था, जो 'गोऽध्यक्ष' कहलाता था।

हमारा औदासीन्य

इस तरह प्राचीन गोपालन-व्यवस्थाका [illegible] चित्र हमे अपने यहॉंके साहित्यमें मिलता है। खेद है कि हमारे यहॉके नवयुवक 'डेयरी सिस्टम' सीखनेके लिये अमेरिका, डेन्मार्क, इग्लैंड तथा अन्य देशोंमे भेजे जाते हैं, पर अपने यहॉकी प्राचीन व्यवस्थाकी ओर ध्यान [illegible] जाता। हमारे यहॉकी व्यवस्थाएँ देश-कालके अनुरूप कम खर्चकी, सुगम तथा कहीं अधिक लाभप्रद हैं। [illegible] धन, जितना समय, जितना परिश्रम हम विदेशोंमें [illegible] सीखनेमे खर्च करते हैं, यदि उतना ही हम अपने [illegible] भूले हुए प्रकारोको ढूँढ निकालने [illegible] करने और उन्हे प्रयोगमें लानेमें [illegible] 'गोपालन-विज्ञान' प्रस्तुत कर सकते हैं [illegible] संसार चकित रह जायगा। भगवान् [illegible]

गोपालन, गोसंवर्धन एवं गोसंरक्षण

(महामण्डलेश्वर स्वामी श्रीयोगेश्वर विदेही हरिजी महाराज)

जवतक सम्पूर्ण गोवंश-हत्या वंद नहीं होती, तथा सरकारी कुनीतियाँ सुनीतियोंमें परिवर्तित नहीं होतीं, तवतक गोपालन एवं संवर्धनका पावन कार्य अत्यन्त कठिन है।

मछलीपालन, मुर्गीपालन तथा वृक्षारोपण आदिके लिये सरकार अनेक प्रोत्साहन दे रही है, किंतु गोपालन, गोसंर्वधन एवं गोसंरक्षणके लिये शासन एवं योजना-आयोगकी कोई ठोस योजना नहीं। हमे मिलकर देशकी सुरक्षा एवं समृद्धिके लिये गोपालनके पुनीत कार्यको आगे वढाना होगा। स्वयं तत्पर होकर सरकारपर भी प्रभाव डालना होगा ताकि निम्नाङ्कित सहयोग मिले—

१-जिन राज्योने पूर्णतया 'गोवंश-हत्या-निरोध' कानून वनाये हैं वह गोपालन एवं गोसंवर्धनके लिये भी सुनीतियाँ निर्माण कर सहयोग करे। अन्य राज्य भी उनका अनुकरण करे।

२-वनोंमे गोचारणके लिये निःशुल्क अथवा कम-से-कम शुल्क लेकर गोपालकोको लाइसेंस दिये जायँ। ऐसे ही नहर, रोड एवं रेलवे-सड़को आदिके किनारे खाली भूमिमे भी गोचारण, घास काटने एवं वेकार जा रहे वृक्षोके पत्ते एकत्रित करनेकी सुविधा दी जाय।

३-गरीव गोपालकोंको शासन एक-एक देशी गाय तथा उसकी सेवाके लिये आर्थिक सहायताका अनुदान दे तथा अधिक गोपालनकर्ता, उचित गोसंवर्धनकर्ता तथा गोदुग्ध एवं गोवर-गोमूत्रके अधिक प्रयोगकर्ताको और वैलोसे कृषि करनेवालोको पुरस्कार एवं वृत्तियों आदिसे प्रोत्साहित किया जाय।

४-इन सव कार्योका प्रचार-प्रसार, सरकारद्वारा संचारके माध्यमोंसे तथा अन्य माध्यमोंसे योजनावद्ध ढंगसे कराया जाय।

५-गौ-सेवी धनी एवं दानी सज्जन इन कार्योमें हर भाँतिसे सहयोग करे।

६-धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएँ भी इस ओर उचित ध्यान दे। विदेशी वंश-संकरण (क्रासव्रीडिग) पूर्णतया वंद कर स्वदेशी विशेष वंशोसे संकर (अपग्रेडिंग) पद्धतिको अपनायें।

संकर-कार्यक्रम

स्वदेशी वंश पोषण-रहित आहारसे भी उपयोगी सिद्ध हुआ है। आज भारतके प्रसिद्ध २६ वंशोमेंसे अधिकतर समाप्तिके कगारपर हैं। सर्वश्रेष्ठ थारपारकर-वंशको भी संकरित कर समाप्तिकी ओर धकेला जा रहा है। स्वदेशी वशपालकोंके विश्वासपर कुठाराघातके अनेक कुप्रयास हो रहे हैं। क्रासव्रीडिंग गायोंका दूध रोग-युक्त, शक्तिहीन एवं कम घृतवाला होता है तथा बैल कृषिकार्यके अयोग्य उत्पन्न होते है। यदि स्वदेशी 'राठी' आदि उन्नत वंशोसे कम दुग्ध देनेवाली गायोंका मेल कराया जाय तो दूध पंद्रह किलो दैनिकतक देने लगती हैं, वैल भी कृषि-योग्य देती हैं। यह स्वदेशी वंश अकालमें कम आहारसे भी जीवित एवं उपयोगी बना रहता है जबकि विदेशी वंश मृत्युको प्राप्त होता है।

ऐतिहासिक निर्णय

गत कुम्भ-मेला उज्जैनमें गोभक्त-समूहों, संस्थाओ, साधु-सम्प्रदायो एवं सामाजिक संस्थाओके प्रतिनिधियों तथा अधिकारियोकी गोष्ठीने सुझाव दिया था कि स्वदेशी गोवंशसे कृषि, खाद्य, ऊर्जा, परिवहन, खाद, औषधियाँ आदि अनेक लाभ एक साथ प्राप्त होते है, जबकि इतने लाभ अरवों रुपया लगाकर अन्य उद्योगोसे सम्भव नहीं। गोवंश भारतीय सभ्यता एवं संस्कृतिका मूल स्रोत है। उसकी हत्या देशकी अस्मितापर प्रहार है तथा आर्थिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक पतनके लिये उत्तरदायी है।

गोवंशकी हत्या कर मांस, चर्म, रक्त एवं अस्थियों आदिका निर्यात राष्ट्रिय अपराध है। स्वदेशी गो-वंशका पालन, संवर्धन एवं संरक्षण राष्ट्रिय समरसता, एकता तथा अन्य कार्योंके लिये श्रेयस्कर है। राज्य-सरकारें संविधान, न्यायपालिका तथा भारतीय सम्मानकी सुरक्षाके लिये इस पावन कार्यको अपनायें। जनता ग्राम-ग्राम तथा प्रत्येक

नगरमें गोपालन एवं गोसंरक्षणके कार्यमे जुटे।

महान्यायवादियोंके तर्क

उच्चतम एवं उच्चन्यायालय जवलपुरमें सरकारी अधिवक्ताओने अपने तर्कोंमे समस्त गोवंशको न केवल बहुत उपयोगी खाद देनेवाला अपितु इसके द्वारा महान् ऊर्जा भी प्राप्त होना सिद्ध किया है। इससे वायोगैस-उत्पादनका बढ़ना भी प्रमाणित किया। सन् १९८९ की अ० भा० सांख्यिकीके अनुसार रासायनिक खादसे भूमिकी उर्वरा-शक्ति घटी तथा पानी एवं खादकी खपत बढ़ रही है। इस कारण अनेको संकट उत्पन्न हो रहे है। रासायनिक खाद एवं औषधियोके निमित्त बन रहे कारखानोद्वारा प्रदूषण बढ़ रहा है तथा भोपाल-जैसी त्रासदीका संकट छाया रहता है। जबकि गोबर-गोमूत्रकी खादसे भूमिकी उर्वरा-शक्ति बढ़ती है एवं पानी तथा खादकी खपत कम होती है। भारतको मरुस्थल बननेसे रोकनेके लिये इसी खादका प्रयोग बढ़ाना आवश्यक है। नये-नये वैज्ञानिक-अध्ययन तथा आविष्कारोने प्रमाणित किया है कि पर्यावरण-संतुलन रखने तथा हजारों-हजार करोड़की विदेशी मुद्रा वार्षिक बाहर जानेके प्रवाहको रोकने आदिके लिये न्यायपालिकाने सम्पूर्ण 'गोवंश-हत्या-निरोध' कानूनको आवश्यक वताते हुए गोपालन एवं गोसंवर्धनका मार्ग प्रशस्त किया है।

ऑकड़े

२ एकड़ भूमिसे कम जोतवाले ९० प्रतिशत तथा प्रतिव्यक्ति आधा एकड़से भी कम भूमि भारतमे है। वैल केवल ३ करोड़ शेष है जबकि कृषि, खाद, परिवहन, खरास, कोल्हू एवं रहट आदि कार्योके लिये २१ करोडकी आवश्यकता है। ब्यायी गाये एक करोड़से कम होनेसे जीवन एवं शक्तिदाता घृत, दूध, दही एवं मट्ठा (छाछ) आदिके प्रायः अकालसे घातक रोगोके निवारणार्थ डॉक्टरो, औषधियो एवं यन्त्रोंपर अरबों रुपया व्यय होनेके उपरान्त भी महँगे उपचारकी क्षमता न होनेसे गरीब मृत्युके मुखमें प्रवेश कर रहे हैं।

गोघृत, मक्खन, दूध, दही एवं छाछ तथा गोवर-मूत्रसे अनेको असाध्य रोगोंका उपचार सहजमे होता है। गोबर-मूत्रकी खादसे उत्पन्न अन्न, साग-सब्जी एवं चारा नीरोग तथा शक्तिशाली होता है। जवकि रसायन-खादसे शक्तिहीन एवं रोग-उत्पादक होनेसे पशु और मनुष्योंकी मृत्यु हो जाती है। इन वस्तुओंपर अधिक अनुसंधानसे अन्य अनेक और लाभ भारत एवं मानव-समाजको मिल सकते हैं। रासायनिक खाद एव यन्त्रो कृषिमे अनेक भयंकर हानियाँ तथा गोवर-मूत्रकी खाद एवं वैलोकी कृषिमें अनेक महत्त्वपूर्ण लाभ होते हैं।

महँगे ट्रैक्टर, पुर्जे, डीजल, रासायनिक खाद एव औषधियाँ आदि क्रय करना गरीव किसानके वशकी वात नहीं, इसलिये वेकारी वढ़ती है। यदि आवश्यक सुधार न हुए तो भारतका महान् कृषि-उद्योग शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। क्योकि स्वदेशी गोवंशको समाप्त कर पेट्रोल, डीजल एवं आवश्यक यन्त्रो तथा रासायनिक खाद औषधियो आदिकी सप्लाई वढ़कर भारतको पंगु बनानेका यह विदेशी षड्यन्त्र है। इसका समाधान गोपालन, गोसेवा, गोसंवर्धन एव गोसंरक्षण ही है।

विडम्बना

जिस गोवंशकी सेवा-सुरक्षा महर्षियो, अवतारों एवं वीरोंने अनेक कष्ट सहन कर की, आज उसी गोवंशकी दैनिक ५० हजार हत्याएँ केवल अनुचित मत-प्राप्तिकी लालसामे कराकर भारतको गढ़ेमे धकेला जा रहा है तथा गोपालन, गोसवर्धनके कार्योमे वाधा उपस्थित की जा रही है। यह कैसी विडम्वना है।

समयकी पुकार

अनेक अड़चनोसे सामना करते हुए भगवान् श्रीकृष्णके 'क्षुद्रं हृदयदौर्वल्य त्यक्त्वोतिष्ठ परंतप' घोषको स्मरण कर गोपालन-गोसवर्धन एव गोसंरक्षण-कार्यमें तत्पर होकर मानव समाज एवं भारतके कल्याणके लिये उद्यत हों। देश, समाज-सेवा एवं धर्म आदिके नामपर चल रही सभी सस्थाएँ, आश्रमधारी एव अन्य सभी पूज्य साधु-[illegible] १९६६ की भाँति जनता-जनार्दनको जाग्रत् [illegible] गोपालन-गोसंवर्धन एवं गोसंरक्षणके पावन [illegible] उच्च स्वरसे पुनः घोष करें—

देश-धर्मका नाता है—गौ हमारी माता है।
श्रीगंगा, गीता, गोमाता—[illegible]।
भारत एवं विश्वका [illegible]

गौशालाके प्रति समाजकी दृष्टि

(श्रीसूर्यकान्तजी जालान)

गौंशालाके सम्वन्धमें जिनको जिज्ञासा होती है, वे प्राय: निम्नलिखित प्रश्न पूछते हैं—

(१) गौशालामे कुल कितनी गाये हैं ?

(२) गौंशालामें कितना दूध-उत्पादन होता है ?

(३) गौशालाके पास कुल कितनी भूमि है ?

(४) गौशालाके आयका साधन क्या है?

यदि समाज इन प्रश्नोकी अपेक्षा गौशालाके प्रति अपनी जिज्ञासाको थोड़ा विकसित कर ले तो गौशालाकी स्थितिमें स्वत: परिवर्तन आने लग जायगा। जैसे गौशालामे गायें कितनी है? इस प्रश्नके साथ ही गायोमें दुधार गाय, विना दूधकी गाय, सॉड़ोंकी संख्या तथा नस्ल एवं उनका रिकार्ड, वछियोकी सख्या इत्यादिकी पूरी जानकारी करे तो यह प्रश्न पूर्ण होगा। क्योकि गौशालामे न केवल दुधार गाये रहती हें, बल्कि वैल, वाछे-वाछी तथाकथित अनुपयोगी—सेवा-योग्य गाये—इस प्रकार सम्पूर्ण गोधन रहता है।

इसी प्रकार गौंशालामे दूध पूछते समय दुधार गायोंके साथ दूध दे सकनेवाली गायोका पूरा औसत कितना है, यह जानकारी करनेसे तुलनात्मक अध्ययन स्वत: हो जाता है।

तीसरा प्रश्न पूछा जाता है गौशालाके पास अपनी भूमिके सम्वन्धमें। उस विषयमे यह कहना है कि सम्पूर्ण भूमिके सम्वन्धमे जिज्ञासा होनी चाहिये, जैसे कृषियोग्य भूमि, वन, वृक्षारोपण-सम्वन्धी भूमि, सिंचित-असिचित भूमि। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि कितनी भूमिका उपयोग गायोके लिये चारा लगानेपर हो रहा है, वह पर्याप्त है या अपर्याप्त? यह जानकारी करनेसे ही गौंशालाकी भूमिका पूर्ण विवरण ध्यानमें आयेगा।

गौंशालाकी आयका स्रोत जाननेके लिये पुरुषार्थसे हुई आय या स्वाभाविक क्रमसे आया दान, सरकार एवं संस्थाओसे मिला अनुदान या पूर्वजोके द्वारा संचित निधिसे विना परिश्रमके मिलनेवाला व्याज और भाडेकी आय—इन सभीकी जानकारी आवश्यक है।

इस प्रकार समाज गौशालाको देखनेकी दृष्टि सूक्ष्म कर ले और गौंशालाके प्रति अपने दृष्टिकोणमें परिवर्तन कर ले तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि गौशालाओंका ह्रास हो।

गौशालाओंके विषयमें पिछले कुछ वर्षोंमें कार्य एवं अध्ययन करनेसे बहुत अच्छे अनुभव सामने आये हैं। अपने ऋषि-मुनियों, महापुरुषों एवं संतोंकी कही हुई बात अक्षरश: सत्य है कि गौशालाओंमे सच्चे मनसे काम करनेपर सांसारिक बाधाएँ, साधनोंका अभाव रह ही नहीं सकता। गौशालामें कार्य करनेके पूर्व सर्वप्रथम विचारपूर्वक योजना बनानी चाहिये कि हमें क्या करना है और कैसे करना है?

गौशालाका कार्य अत्यन्त आवश्यक एवं लाभकारी है। यह प्रत्यक्ष देवताकी पूजा है। विज्ञानके इतने आविष्कार होनेके पश्चात् भी आजतक ऐसी कोई तकनीक विकसित नहीं हुई और न हो सकनेकी सम्भावना ही है कि वह घास-फूसको अमृत-जैसे दूधमे परिवर्तित कर सके। जो हमलोग नहीं खाते हैं, उसे खाकर गाय मॉके समान या उससे भी अच्छा पूर्ण आहार—दूध-जैसा पदार्थ देती है। मॉका दूध तो केवल कुछ महीनेतक प्राप्त होता है, परंतु गायका दूध तो हमे जीवनभर मिलता रहता है। अत: गायका दर्जा मॉसे भी ऊपर है। इसीलिये गौ पूजनीय तथा वन्दनीय भी है। परंतु देश,काल एवं परिस्थितियोके अनुसार केवल पूजा करना सार्थक नहीं होगा; बल्कि हमे पूजाके साथ-साथ अपने कर्तव्यों एवं दायित्वोका भी पूरा निर्वाह करना चाहिये।

देशमे समृद्धि लानेके लिये 'पूर्ण गोहत्या-वदी'का केन्द्रीय कानून बनना आवश्यक है। देशमें पूर्ण गोहत्या-वंदीके साथ-साथ गोसंवर्धन और गोपालनपर भी विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है।

गोसंवर्धनका दायित्व गौशालाकी ओर आता है। देशमे लगभग ५०० जनपद हैं, लेकिन गौशालाएँ २,८०० से भी अधिक हें। एक-एक गौशाला एक-एक जिलेके

गोवशको संवर्धित करनेका संकल्प ले तो कुछ ही वर्षोमे परिवर्तन दिखायी देने लग जायँगे और दस-पंद्रह वर्षो बाद देशमे पुन: दूध-दहीकी नदी बहनेवाली कहावत चरितार्थ हो सकती है। इसलिये समाजके लोगोंको गौशालाओके कार्य तथा व्यवस्थापर पुनर्विचार करके उनको विकसित करना चाहिये, ताकि गौशालाएँ अपने दायित्वोंका निर्वाह कर सके। गोसवर्धनके साथ गौशालाके कार्यकर्ताओको इस बातपर पूरा जोर देना चाहिये कि हमारे जिलेसे एक भी गाय कटने-हेतु नहीं जायगी और जो भी व्यक्ति उन्हे पकडेगा उन रोकी हुई गायोको गौशाला स्वयं सँभालेगी।

गोपालन एव गौशालाकी एक सीमा है। उससे अधिक गाय गौशाला नहीं रख सकती। इस समय देशमे सरकारी ऑकडोके अनुसार १९ करोड गोवंश हैं। देशभरकी गौशालाएँ पूर्ण क्षमताके साथ गायोको रखना चाहे तो भी २५ लाखसे ज्यादा गोवश रखना सम्भव नही है। अत: जबतक किसान गाये नहीं पालेगा, तबतक वे पूर्ण सुरक्षित तथा सवर्धित नहीं हो सकती। आज भी भारत भाग्यशाली है कि इसकी ७२% जनसख्या गॉवोंमे रहती है। गायोको पालकर गाँवोको खुशहाल बनाया जा सकता है। इससे बढती हुई नगरीय व्यवस्थामें हम मददगार होंगे तथा दुनियामे बढ़ रहे असंतुलनको संतुलित करनेमे गोवश भी सहायक होगा।

काशीकी 'जीवदया-विस्तारिणी गोशाला' के अन्तर्गत 'रामेश्वर गोशाला'मे हुए कार्योके आधारपर यह सिद्ध हो चुका है कि प्रयत्न करनेके पश्चात् भी गोशालामे सेवायोग्य गायो (तथाकथित अनुपयोगी गायो) की संख्या ५०० भी नहीं हो सकी। जबकि यह गोशाला गोरक्षासे पकडी हुई ५०,००० से भी अधिक गायोको संरक्षण दे चुकी है। गोशालामे आयी हुई गायोकी समुचित व्यवस्था करनेके बाद उसमेसे दूध देनेवाली या दे सकनेवाली गाय, कृषियोग्य बैल, बाछा-बाछी एव सॉडोको किसानोमे वितरित कर दिया जाता है। जिस गोवशको किसान अनुपयोगी मानकर लेनेसे इनकार कर देते है वैसे गोवश गोशालामे रह जाते हैं। इतना सब कुछ होनेके बावजूद भी जब इस गोशालाके पास ५०० सेवा-योग्य गाये नहीं हो सकीं तो पूरे देशमे यदि गायोकी सम्पूर्ण देख-रेख हो तो ५ लाखसे अधिक सेवा-योग्य अथवा तथाकथित अनुपयोगी कही जानेवाली गाये नहीं होंगी। वैसे यहाँपर यह भी प्रमाण सिद्ध हो चुका है कि कोई भी गाय जबतक गोबर-गोमूत्र देती है, तबतक अनुपयोगी नहीं हो सकती। एक वृद्ध गाय लगभग ३-४ किलो भूसा खाती है और १० किलो गोबर एव औसतन १७ लीटर गोमूत्र देती है। एक गायके गोबरसे लगभग दो रुपये प्रतिदिनकी गोबर-गैससे ऊर्जा, १०-१२ किलो खाद और गोमूत्रसे मिलनेवाली यूरिया खाद या कीटनाशक दवाकी कीमत गायके भोजनके मूल्यसे कई गुना अधिक है। इसलिये गाय आर्थिक दृष्टिसे बहुत लाभदायक है। केवल उसकी सार-सँभाल ठीक ढगसे की जाय।

पाश्चात्त्य सस्कृतिके प्रभावमे आकर हमारी सरकार एव तथाकथित वैज्ञानिको तथा डॉक्टरोने खूब जोर लगाकर यह भ्रामक प्रचार किया कि देशमे दुग्धकी आपूर्ति विदेशी गायो (जरसी, होलेस्टीन, फ्रीजियन एव डेविड ब्राउन) को रखनेसे ही हो सकती है, परतु सरकारने भी कई दशक भटकनेके बाद अब यह जान लिया है कि हमारी परिस्थितिमे भारतीय नस्लकी गाये ही ज्यादा उपयोगी हैं। इस कार्यके लिये गुजरात प्रदेशकी सरकारकी सराहना करनी पडेगी कि उसने इतने दबावके बावजूद भी अपने यहाँकी गीर-नस्लपर निरन्तर काम किया, जिसके परिणाम-स्वरूप गुजरातमे अनेक स्थानोपर ४० लीटर दूध देनेवाली भारतीय गाये सुलभ हैं। भारतीय गायोपर विदेशोमे भी शोध चल रहा है और इजराइलने गीर-नस्लकी गायसे १२० लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादन करके दुनियाको दिखा दिया कि भारतीय गाय आज दूधकी सर्वश्रेष्ठ गाय है। हरियाना, शाहीवाल, गंगातीरी गायोपर भी विदेशोमे काफी कार्य हुए है और उसके परिणाम बहुत अच्छे आये हैं। पूरे देशकी आवश्यकता, मानसिकता एव सुलभ साधनोंके आधार हमारे देशके लिये औसतन १० लीटर दूध देनेवाली गाय सर्वाधिक उपयोगी प्रतीत होती है; क्योंकि [illegible] देनेवाली गायोके बछडे कृषि-कार्यके लिये बहुत उपयोगी हैं। २० लीटरसे अधिक दूध देनेवाली गायोके बछडे सुस्त होते हैं, जो किसानोंके लिये बहुत उपयोगी नहीं [illegible]

इसलिये गोसेवाकी दृष्टिसे राष्ट्रिय सोच एवं परिवेशमें हमारा अनुरोध है कि अपनेको २० लीटरसे ऊपर दूध देनेवाली गायोंके बारेमें विचार नहीं करना चाहिये।

देशमे बैलोंको बचानेकी एक विकट समस्या है। कृषिके क्षेत्रमें आज यान्त्रिक दखल बढनेसे देशमें बैलोके काम घट रहे हैं। बैलोके विकल्पके रूपमें आज ट्रैक्टरका उपयोग होता है। जबकि ट्रैक्टर तेल खाता है और धुआँ छोड़ता हे। तेल हमको विदेशसे आयात करना पड़ता है और उससे निकला हुआ धुआँ पूरे वायुमण्डलको दूषित करता है। इसके विपरीत बैल घास खाता है और गोबर तथा मूत्र देता है, जिसकी हमारे खेतोंको नितान्त आवश्यकता है। इसलिये ट्रैक्टरकी तुलना बैलोसे किसी भी प्रकार नहीं की जा सकती।

गोवंशको समाप्त करनेकी दिशामें सरकारने एक नया कुचक्र रचा है। देशमें जगह-जगह यान्त्रिक कतलखाने खोल रही है, जिसमे विदेशी मुद्रा कमानेकी दुहाई देते हुए वह गोवंश कटवा रही है और दूसरी तरफ विदेशी दबावमें आकर गोबरका आयात कर रही है।

कृषि-मन्त्रालयकी एक विज्ञप्तिके अनुसार देशमें १२ करोड ९५ लाख ८० हजार हेक्टेयर भूमि ऊसर हो गयी है। इसको सुधारनेका एकमात्र उपाय गोबर है। कृषि-वैज्ञानिकोंने यह संस्तुति भी दी है कि देशमे गोवंशकी संख्या बढ़ायी जाय और इनका वध नियन्त्रित किया जाय। पूर्वमे भी जो कानून बने हैं वे कहीं भी उपयोगी गोवंशका वध करनेकी इजाजत नहीं देते, परंतु देशमें बिगडी हुई व्यवस्थामें अनुपयोगीके नामपर उपयोगी गोवंश ही ज्यादे काटे जा रहे हैं। इसमें एक विडम्बना यह भी है कि प्रायः बीमार, बूढ़े जानवरोंका भक्षण स्वास्थ्य-विभागके अनुसार वर्जित है और उपयोगी गोवंश कट नहीं सकते। फिर भी देशमे सरकारी आँकड़ोंके अनुसार २९,२०० गोवंश प्रतिदिन काटे जा रहे हैं। जबकि गोसेवामे लगे कार्यकर्ताओंके अनुसार यह संख्या दुगुनी है।

'सुरभि-शोध-संस्थान'का यह निश्चित मत है कि इस देशमे गोवंशको बचाकर उसे विकसित किया जाय और उसमें दसगुनी वृद्धि कर दी जाय तो इस देशका स्वरूप, आर्थिक स्थिति एवं वातावरण निश्चित बदल सकता है।

देशमें गायको बचाने और उसको बचाकर उससे देशकी परिस्थिति बदलनेके लिये एक ठोस कार्य-योजना इस संस्थानने बनायी है, जिसका संक्षिप्त स्वरूप इस प्रकार है—

सम्पूर्ण देशको ५-१० अञ्चलोंमें बाँटकर हर अञ्चलमे एक बडा प्रयोग तथा प्रशिक्षणका महत्त्वपूर्ण केन्द्र स्थापित करना। फिर उस केन्द्रके माध्यमसे सभी मण्डलोमें एक-एक गोशाला तैयार करना। मण्डलके बाद इस स्थितिको जिला तथा खण्ड-स्तरोंतक ले जानेपर ही यह योजना सफल हो पायेगी।

देशमें बढ़ रहे वायु एवं जलके प्रदूषणके कारण गायोमें बीमारियाँ बढ़ रही हैं। यह देखनेमे आया है कि गायोंको बीमार करनेमे सर्वाधिक योगदान विदेशी गायोका है। आजकल होनेवाली प्रचलित बीमारियोंमें ८० प्रतिशत बीमारियाँ उन्हींके द्वारा फैल रही है। ऐसी स्थितिमे गायोकी चिकित्साके लिये हमको ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेदिक एवं घरेलू उपचार—इन चारो पद्धतियोंको विकसित करना चाहिये। सरकार पाश्चात्य प्रभावके कारण अपनी पूरी शक्तिसे ऐलोपैथिक उपचारके विस्तारमें लगी है, यह अव्यावहारिक और त्रुटिपूर्ण सोच है। आज ऐलोपैथिक डॉक्टरोंकी जितनी आवश्यकता है, वह आनेवाले दस वर्षोमें भी पूरी नही हो सकती और यदि पूरी हो भी जाय तो उनका शुल्क और उनकी महँगी-व्यवस्था हमारे साधारण किसानो एवं गोपालकोंके लिये सम्भव नहीं है। इसलिये देशके समाजसेवी संगठनो एव सामाजिक सस्थाओसे यह अनुरोध है कि वे इनकी और विधियोंपर भी निरन्तर शोध-कार्य करते रहे तथा सफल प्रयोगोंके प्रचार-प्रसारपर ध्यान दे।

देशमे खादकी आपूर्तिके लिये बहुत बड़ी पूँजी लगाकर बड़े-बडे कारखाने खोले गये। फिर भी आज बहुत बड़ी मात्रामें खाद विदेशोसे आयात करनी पड़ रही है। यदि इसकी जगह गोमूत्रका प्रयोग यूरिया खादके रूपमें किया जाय तो विदेशी मुद्रा भी बचेगी और लाभ भी होगा। गाय जहाँपर खड़ी होती हे, वहाँपर जो गोमूत्र गिरता है, उस

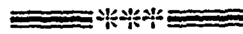
जगहकी मिट्टीको खेतोमे यूरियाकी तरह छींटनेसे वह यूरिया खादका एक बहुत अच्छा और सफल विकल्प है। कीटनाशक दवाओसे स्वास्थ्यपर पडनेवाले विपरीत प्रभावसे पूरा विश्व चिन्तित है। इसलिये अनेक देशोने इसपर पाबंदी लगा रखी है; परंतु भारतमे गोवंशकी हो रही उपेक्षाके कारण सरकार यह हिम्मत नहीं जुटा पा रही है। गोमूत्रमे बराबरका पानी मिलाकर पेड-पौधोंपर छिडकाव किया जाय तो वहाँपर कीड़ोसे होनेवाले नुकसानसे बचाव हो सकता है।

भारतीय गायके गोमूत्रसे कामधेनु-वटी बनाकर १११ रोगोंपर सफलतापूर्वक इलाज किया गया है। यह प्रयोग हमलोग भी अपने स्तरपर कर रहे है, जिससे काफी लाभ हो रहा है। नगरमें बढ़ते हुए कूडेकी समस्याका भी गायका गोबर सफल निदान है। कूडेके ढेरपर गायके गोबरको पानीमें घोलकर छिडकाव कर देनेसे उसकी दुर्गन्ध समाप्त हो जाती है। उसमे पलनेवाले हानिकारक कीडोंकी जगह लाभदायक कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं और यह कूड़ा कुछ ही दिनोमें एक सफल खाद बन जाता है।

देशमे ऊसर भूमिको सुधारनेकी एक विकट समस्या है। इतने बडे पैमानेपर ऊसर भूमि और बढते हुए ऊसर दोनोको ठीक एवं नियन्त्रित करनेका एकमात्र उपाय गोवंशकी रक्षा है। ऊसर भूमिमे गायोको बाँधकर उसके कच्चे गोबर-गोमूत्रकी पर्याप्त मात्रा देनेसे भूमिका ऊसरपन बहुत शीघ्र ही ठीक होने लगता है। इसलिये हमारे ऋषि-मुनियोंने किसी भी परिस्थितिमें गायके वधका निषेध किया है।

गरीब किसानोंकी आर्थिक स्थिति ठीक करनेका एकमात्र उपाय गाय है। किसानोंको गोपालनके बारेमें ठीक प्रकारसे बताया जाय और वह उस गायकी ठीकसे सेवा करे तो एक लीटर दूध देनेवाली गाय भी उसकी आर्थिक स्थितिको परिवर्तित कर सकती है। अपने घरमें बने चावलसे निकले माड, सब्जीके छिलके एवं घास-फूस आदिसे भी उस गायका पोषण हो जाता है। उस गायसे प्राप्त दूधसे उसका भोजन बन जाता है, गायका बछड़ा बच्चोंका खिलौना होता है। इस प्रकार वह गाय उसके परिवारका अविभाज्य अङ्ग बन जाती है और हर डेढ़ वर्षमें गायसे मिलनेवाला बच्चा उसकी पूँजीगत आय होती है।

गायके दूधमे एक अद्भुत औषधीय गुण है। गायके दूधसे बनी छाछ किसी भी प्रकारके नशे जैसे—गाँजा, भाँग, चिलम, तबाकू, शराब, हीरोईन, स्मैक इत्यादिमें हानिकारक प्रभावको ही कम नहीं करती, अपितु इसके नियमित सेवनसे नशेका सेवन करनेकी इच्छा भी धीरे-धीरे कम हो जाती है। गायके दूधमे स्वर्ण-तत्त्व पाये जाते है। यह तत्त्व माँके दूधके अतिरिक्त दुनियामे अन्य किसी भी पदार्थमें नहीं मिलता। यह बुद्धिवर्धक, बलवर्धक एवं स्वास्थ्यवर्धक भी है। इस प्रकार गाय तथा गोवंश हमारे लिये हर दृष्टिसे उपयोगी है। आज इसके व्यावहारिक स्वरूपको समझनेकी विशेष आवश्यकता है।



मानव और गाय

अपनेको अनेक प्रकारसे कष्ट देनेवाले एक मानवसे गाय प्रश्न करती है—'अरे मानव! तुम मुझे क्यों इतना कष्ट देते हो? आखिर तुमसे समाजका क्या प्रयोजन सिद्ध होता है? देखो, मेरे गोबरसे उपले बनते हैं। गोबरसे ईंधन बनता है। गोबर ईंधनके काममें उपयोगी होता है। ईंधनमे उपले भी उपयोगी होते है। मेरे चमडेसे 'भेरी' इत्यादि वाद्य बनाये जाते हैं, लोग पादत्राण बनाते है। मेरी सींगोसे तरह-तरहकी उपयोगी वस्तुएँ बनती है। फिर मेरे मूत्र, गोबर, दूध, दही और दहीसे पञ्चगव्य बनाकर उसे पीकर लोग अपनी देह और मन शुद्ध करते हैं। मेरा दूध सबको प्रिय है। आरोग्यवर्धक है। हवन इत्यादि देवकार्योके लिये घी अनिवार्य है। एक नहीं, दो नहीं अपना वर्णन करती जाऊँ तो उसका अन्त नहीं होगा। मै जीवित रहूँ या मरूँ सब रीतिसे उपयोगी हूँ, तू बोल, तू किस कामका है?'

—डॉ० (श्रीमती) [illegible]

═══ ॐ ॐ ॐ ═══

गोपालनकी समस्याएँ और समाधान

[illegible]

[illegible] श्रीकृष्ण [illegible]

[illegible] कीजिये, जो गौ [illegible] भगवान् [illegible] धेनूनामस्मि कामधुक् [illegible]

[illegible] हुआ।

[illegible]

[illegible] गोवंशमें भैंसें और गोपालक भूखे-प्यासे घूम रहे हैं। [illegible] गोभक्तोंमें [illegible] भी [illegible]। [illegible] जो [illegible] पहले भगवान्‌का [illegible] करते थे। कहीं [illegible] कि गोभक्त कहे जानेवाले [illegible] फौजका [illegible] और उनकी गौमाताएँ सड़कोंपर पानीके लिए [illegible] नहीं है। गगनचुम्बी भव्य अट्टालिकाओंमें शीतकालमें हीटरका प्रयोग कर [illegible] नींद ले रहे हैं और गोमाताएँ सड़कोंपर बैठे हुए शीतमें ठिठुर रही हैं। [illegible] पास नगरोंमें [illegible] स्थान तक नहीं है, हिन्दूकी आज यह विवशता है। जबकि हिन्दूके लिये कहा जाता है—'**गोषु भक्तिर्भवेद्यस्य प्रणये च दृढा मतिः**' जिस व्यक्तिमें हिन्दूके [illegible] गोमाता, भगवान्‌की प्रतिमा, [illegible] न हो वह हिन्दूकी संज्ञामें कैसे आ सकता है? नगरपालिका, निगमोंसे तो दूर रहे, गायोंको कहीं [illegible] स्थान नहीं है।

जिस राष्ट्रकी भौतिक स्वतन्त्रताके साथ मनोमय [illegible] शरीरकी स्वतन्त्रताका पलायन हो जाता है, जिस राष्ट्रकी अस्मिता, गौरव, सभ्यता एवं संस्कृतिके रक्षक शास्त्रों एवं पूर्वजोंके इतिहासोंपर अनादर एवं उपेक्षाका भाव हो जाता है, उस राष्ट्रकी आत्मा मृतप्राय हो जाती है। आज हमारा सनातन गौरवशाली भारत देश इसी संक्रामक स्थितिसे गुजर रहा है। यह धर्म-निरपेक्षताकी देन है। अपने देशमें जब धर्म राष्ट्रकी आदर्श-दृष्टिका केन्द्रबिन्दु था, [illegible] उसके अवलम्बित होनेपर प्रत्येक श्रेणीके स्त्री-पुरुषका [illegible] उठता था और एकजुट होकर सब लोग अनाचार [illegible] मुँहतोड़ उत्तर दे देते थे, पर विडम्बना है कि आज [illegible] नहीं हो पा रहा है। हमारे राष्ट्रमें आज भयावह परिस्थिति है। इस विषम परिस्थितिमें गोपालन किस प्रकार हो [illegible] जटिल समस्या है। शादी-विवाहमें [illegible] अपव्यय करके हम अपना बड़प्पन

प्रदर्शन करनेमे नहीं हिचकिचाते, क्या यही द्रव्य एकत्र कर गोमाताओके लिये गोशालाएँ नहीं खोली जा सकतीं? आज व्याख्यानो, सम्मेलनों, समाचार-पत्रोमें केवल गोमाताकी महिमागान करनेसे कुछ भी प्राप्त होनेवाला नहीं है। इसके लिये गोभक्त महानुभावोंको ठोस कदम उठाने होंगे। द्रव्यको अपव्ययसे बचाकर गोशालाकी स्थापनाके हेतु लगाया जाय। कर्मठ सच्चरित्र व्यक्ति जो आस्थावान् हैं, जिनका गोमाताके प्रति सेवा-भाव है, उनको सेवामे रखा जाय। गोचारणके लिये धनी-मानी श्रेष्ठ महानुभावोको चाहिये कि वे भूमिदान कर इनकी रक्षाकी व्यवस्था करें। बडे कष्टके साथ लिखना पड़ रहा है कि कुछ गोशालाओका नाम 'आदर्श गोशाला' तो है, किंतु उन्हीं गोशालाओसे हजारोंकी सख्यामे गायें कलकत्ते आदि स्थानोको भेजी जाती है। अभी भी ऐसे जीवत मूर्तिमान् गोभक्त हैं, जिन्होने अपनी जमीन बेचकर गोमाताओको वधिकोंसे मुक्त कराया। अनेकों सतोने इन गोमाताओका दर्शन कर बडी प्रसन्नताका अनुभव किया। कई गोशालाओके पास गोचरभूमि नहीं है। गोभक्तोंसे निवेदन है कि ऐसे भयावह समयमे जहाँ महँगाई अपने ताण्डवपर है, अपनी उदारतासे मुक्तहस्त होकर नगर-नगरमें गोशालाएँ और उनके रख-रखावके लिये चरागाह, पीनेके लिये पानीकी व्यवस्था हो तो इन गोमाताओंके आशीर्वादसे हम सशक्त मेधावी राष्ट्रके सच्चे सपूत कहला सकते हैं। गोमाताकी महिमाका वर्णन करनेमें वर्णमालाके अक्षर समाप्त हो जाते है।

अभी कुछ समय पूर्व एक पुस्तक अमेरिकाके कृषि-विभागद्वारा प्रकाशित हुई थी—'The cow is a wonderful laboratary' (गोमाता एक आश्चर्यजनक रसायनशाला है)। समस्त दुग्धधारी चतुष्पाद जीवोमे गोमाता ही, एक ऐसी है, जिसकी आँत १८० फुट लबी होती है। इसकी विशेषता यह है कि जो चारा चबाती है, उससे जो दुग्धका निर्माण होता है, वह माताके दूधसे भी बढ़कर है।

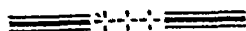
जननी जनकर दूध पिलाती केवल साल छमाहीभर।
गोमाता पय-सुधा पिलाती रक्षा करती जीवनभर॥

मैनपुरी नगरमे एक डॉ० कपूर थे। उन्होंने [illegible] आयुमे पार्थिव शरीर छोड़ा। इस अवस्थामें भी [illegible] बाल भी श्वेत नहीं हुआ था। वे नित्य बालोंमे [illegible] फेनका प्रयोग करते थे। उन्होंने भी एक [illegible] स्थापित की थी, जिसकी आज केवल भग्न [illegible] है। मधुमेहके अनेको रोगी उन्होंने गोमूत्रके प्रयोगसे [illegible] प्रतिशत आरोग्य किये थे।

गोवत्स सहस्रो गायोके बीचमे अपनी माताको [illegible] दुग्धपान करता है, जबकि भैंसका बच्चा अपनी माँको [illegible] नहीं पाता। गोमाताके दुग्धमे केरोटीन नामक पदार्थ [illegible] दूधसे दस गुना अधिक है। भैंसका दुग्ध गर्म करनेपर [illegible] पोषक तत्त्व मर जाते हैं और गायके दुग्धको गरम करनेपर पोषक तत्त्व वैसे ही विद्यमान रहते है। अधिक दुग्ध देनेवाली गायोमे राठी, सांचेर, शाहीवाल, गीर, [illegible] इत्यादि अन्तर्जातियाँ हैं। केवल घास खाकर ये प्राय: २० लीटर [illegible] देती हैं।

अभी कुछ प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुए हैं। गोदोहन-वेलाके पूर्व प्रात:काल वशीकी ध्वनिमे राग ललित, राग विभास, भैरवी, आसावरीके स्वर निकालनेपर [illegible] समयमे अतिशीघ्र दुग्ध निकल आता है। कुछ [illegible] दुहाते समय नेत्र बद कर लेती हैं। इससे [illegible] है कि नन्दनन्दन श्यामसुन्दरकी वंशीसे गोमाता[illegible] सम्बन्ध है। भैरवी और आसावरीके स्वरोंसे [illegible] प्रत्यक्ष देखा और दिखाया है। उत्तर काशीके निकट [illegible] ग्राम है, जहाँ वर्षभर गोमाताओका गोमूत्र [illegible] पाण्डु मृत्तिका मिलाकर घरोकी पुताई होती है, [illegible] प्रभाव तत्क्षण देखनेमे यह आया है कि [illegible] छिपकली, मच्छर, मक्खी इत्यादि विषधारी [illegible] नहीं करते।

अत: मेरी गोमाता-प्रेमियोंसे [illegible] है कि [illegible] व्यामोह त्यागकर सभी प्रकारसे [illegible] रक्षा-सेवा की जाय। इसीमें [illegible] निहित है।



गोसंवर्धनके नामपर पूज्या गोमाताकी नसलका संहार

(गोलोकवासी भक्त श्रीरामशरणदासजी)

आजकल जहाँ इस धर्मप्राण भारतमें नित्यप्रति हजारों प्रातःस्मरणीया गोमाताओंको बड़े-बड़े महान् कष्टों-पर-कष्ट दे-देकर, उन्हें बड़ी-बडी घोर अमानुषिक यातनाएँ दे-देकर, उन्हें तड़पा-तडपाकर मारा जा रहा है, उनकी बोटी-बोटी काटकर उनके मांसको डिब्बोंमे भर-भरकर विदेशोमें भेजा जा रहा है और बदलेमें पैसा कमाया जा रहा है तथा ऐसी निकृष्टतम कमाईके बलबूतेपर देशोन्नतिके स्वप्न देखे जा रहे है; वहीं आज कुछ पाखण्डी गोभक्त बनानेका पाखण्ड रचकर, भोली-भाली हिन्दू जनताकी आँखोमें धूल झोककर, अपनेको गोमाताका परमभक्त सिद्ध कर और मगरमच्छके ऑसू बहाकर गोसंवर्धन करनेके नामपर जो पूज्या गोमाताकी असली नसलका संहार करने जा रहे हैं—यह देखकर जो घोर दुःख होता है, वह वर्णनातीत है। आजकल देशमे गोसंवर्धन करनेके नामपर और गोनसल-सुधार करनेके नामपर इंग्लैंड, अमेरिका आदि विदेशोके सॉड़ोंका वीर्य मॅगाकर कृत्रिम गर्भाधानके द्वारा वीर्यको मुर्गीके अडोका तरल उसमे मिलाकर जो पूज्या गोमाताके गर्भमे प्रविष्ट कराया जाता है, इन अनर्थपूर्ण बातोसे जहॉ पूज्या गोमाताको असह्य और महान् अपार कष्ट होता है, वहॉ साथ ही भारतकी असली पूज्या गोमाताकी नसलका भी संहार होता है। कारण कि इंग्लैंड, अमेरिका आदि विदेशोमे जिस प्रकार कुतिया और भेड़ियेको मिलाकर तीसरी नसल तैयार की गयी है और जिस प्रकार गधे या घोडेको मिलाकर तीसरी नसल खच्चर तैयार की गयी है, इसी प्रकार वहॉपर गाय और भैसेको मिलाकर तीसरी नसल तैयार की गयी हैं जो देखनेमे तो भले ही गाय-जैसी प्रतीत होती है, पर वह वास्तवमे मूलतः गाय नहीं है। इग्लेंड, अमेरिकाके इन नकली वर्णसंकर सॉड़ोके वीर्यको भारतकी असली गौ माताके गर्भमे प्रविष्ट कराकर कृत्रिम गर्भाधानद्वारा गौ माताकी नसलको समाप्त करना यह कोई बुद्धिमानीका कार्य नहीं है। यह महान् घोर भयंकर पाप है और अक्षम्य अपराध है।

जिस प्रातःस्मरणीया गोमाताकी रक्षाके लिये अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक परात्परब्रह्म अर्थात् भगवान् श्रीरामका और भगवान् श्रीकृष्णब्रह्मका अवतार होता है, जिस पूज्या गोमाताके परम पवित्र शरीरमें ३३ करोड़ देवी-देवताओका वास है, वह बस एकमात्र भारतीय नसलकी गोमाता ही है अन्य और कोई नहीं है। जिस प्रकार विदेशोंमे भी नदियाँ तो बहुत मिलेगी, पर उनमें भवसागरसे पार लगानेकी तनिक भी सामर्थ्य नहीं है, यह अद्भुत विशेषता तो बस एकमात्र हमारे देशकी पवित्र नदी श्रीगङ्गा और श्रीयमुना आदि परम पवित्र नदियोमे ही है, जिनके हजारो कोसकी दूरीपर भी नाम लेनेमात्रसे अनन्त जन्मोके पाप-ताप भस्मीभूत हो जाते है। आजकी इन वर्णसंकर नकली गायोका वह अद्भुत महत्त्व कदापि नहीं हो सकता है और इनमें वह अद्भुत विशेषता भी नहीं हो सकती और न वे उस पदके कदापि योग्य ही हो सकती हैं, जो भारतकी असली गोमातामे हुआ करती है।

मृत्युके समय इस भवसागरसे पार लगानेवाली भी हमारी एकमात्र माता गोमाता यह भारतकी असली गोमाता ही है, यह आजकी नकली वर्णसंकर गाये कदापि नहीं हैं। यदि इसी प्रकारसे विदेशी सॉड़ोंके वीर्यद्वारा कृत्रिम गर्भाधान कर भारतकी असली गायोकी नसलको ही समाप्त कर डाला गया तो फिर गोरक्षा-आन्दोलन करना ही व्यर्थ हो जायगा। जिस प्रकार मनुष्योमे पूज्य भूदेव ब्राह्मणोकी अद्भुत विशेषता मानी गयी है, इसी प्रकार पशुओमें पूज्या गोमाताकी अद्भुत विलक्षण विशेषता मानी गयी है। कहा भी गया है—

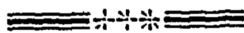
तुलसी वृक्ष न मानिये, गाय न मानिये ढोर।
ब्राह्मण मनुज न मानिये, तीनो नन्दकिशोर॥

इसीलिये प्रत्येक भारतीय हिन्दूमात्रका यह एक परम कर्तव्य है कि वे भूलकर भी कभी न तो स्वयं अपनी गायोको कृत्रिम गर्भाधान करायें और इसे कराना बड़ा घोर पाप समझें तथा न दूसरोंको यह घोर पाप करनेकी सलाह

दें, और जो करते हैं उन्हे भी ऐसा घोर पाप करनेसे रोके। और जो सरकारकी ओरसे इस प्रकार कृत्रिम गर्भाधानके द्वारा पूज्या गोमाताको कष्ट दिया जा रहा है और गोसवर्धन करनेके नामपर गोमाताओकी शुद्ध नसलका संहार किया जा रहा है तथा समाप्त किया जा रहा है, इसका भी घोर विरोध कर अविलम्ब इस महान् घोर भयकर पापको रुकवानेका भरसक प्रयत्न करे।

यह स्मरण रहे कि यदि हम आज कुम्भकर्णी निद्रामे निमग्र रहे और इस ओर हमने तनिक भी ध्यान नहीं दिया तो इस धर्मप्राण भारत देशसे जिस प्रकार असली गोघृतका दर्शन भी महान् दुर्लभ हो गया है और उसकी जगह नकली टी०बी० पैदा करनेवाला घी दिखायी पड रहा है, इसी प्रकार भारतकी असली गोमाताकी नसल भी जडमूलसे समाप्त हो जायगी और फिर यह खाली दूध देनेवाला एक नकली गाय नामका वर्णसकर पशु तो अवश्य दिखलायी देगा, पर पूजने योग्य और भवसागरसे पार लगानेवाली पूज्या गोमाताका दर्शन करना भी महान् दुर्लभ हो जायगा। भारतकी अद्भुत विशेषता-पूज्य गौ-ब्राह्मण इस धर्मप्राण भारत देशसे सदा-सर्वदाके लिये बिदा हो जायँगे। जब इस भारत देशसे पूज्या गोमाता और पूज्य भूदेव ब्राह्मण -ये दोनो अद्भुत रत्न ही मिट जायँगे, तो इनके लिये परब्रह्म परमात्मा जो निराकारसे साकार होकर—*'बिप्र धेनु सुर सत हित लीन्ह मनुज अवतार'* भगवान् श्रीराम-कृष्णके रूपमे आते और श्रीकृष्ण ब्रह्म नगे पॉवो जंगल-जंगल गाये चराने जाते है और अपना गोपाल नाम रखते है, वह फिर किसलिये आयेगे। भगवान् श्रीकृष्ण गोपाल हैं। वह भैंसपाल, बकरीपाल, सूकरीपाल नहीं है।

जिस पूज्या गोमाताकी रक्षाके लिये निरन्तर हजारो वर्षमें गोरक्षकों और गोभक्तोंद्वारा बराबर युद्ध होता रहा और जिस पूज्या गोमाताकी रक्षाके लिये लाखों-करोड़ों धर्मवीर क्षत्रियोंने हँसते-हँसते अपने प्राण तक न्योछावर कर डाले एवं गोमाताके प्राण बचाये आज उसी पूज्या गोमाताको स्वतन्त्र भारतमें लाखोंकी संख्यामें [illegible] काटा जा रहा है और नित्यप्रति बड़ी बेरहमीसे मारा जा रहा है तथा कृत्रिम गर्भाधानके द्वारा गोसंवर्धन करने और नसल सुधार करनेके नामपर जडमूलसे समाप्त किया जा रहा है। क्या यह हिन्दुओंके लिये डूब मरनेकी बात नहीं है? क्या यह अपने पैरोंपर अपने-आप ही कुल्हाड़ी चलाकर अपना सर्वनाश कर डालना नहीं है? क्या यह हमारी मूर्खताकी पराकाष्ठा नहीं है? आज गायोंको कृत्रिम गर्भाधान करा-कराकर अपनी पूज्या गोमाताके भी आप ही परम शत्रु बन रहे है और गोरक्षकसे गोहत्यारे बन रहे है यह कितने घोर दुःखकी बात है? यह कितनी लज्जाकी बात है? गोमाताकी असली नसल समाप्त होनेपर जहाँ हमे असली गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि आदि अमृत पदार्थोंसे एकदमसे सदा-सर्वदाके लिये वञ्चित हो जाना पड़ेगा वहाँ हमे मरनेके समय पापी-से-पापी मनुष्यको भी गोदान करनेपर भवसागरसे पार होनेका अनायास सुअवसर प्राप्त हो जाता था, उस अद्भुत लाभसे भी हाथ धोना पड़ जायगा और हमारे परलोकका अन्तिम सहारा भी छूट जायगा। परलोकमे हमारी गोमाताकी उपेक्षाकर उसकी जगह पाले गये कुत्ते कदापि सहायता नहीं करेंगे। हमारे लोक-परलोककी एकमात्र कोई सहायक है तो वह एकमात्र पूज्या गोमाता ही है। इसलिये प्रत्येक भारतीय हिन्दूका गोमाताकी सेवा करना, गोमाताकी रक्षा करना, परम कर्तव्य है।

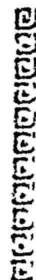




गो-गुहार!

मातु समान अपान बिसारि सदा दधि-दूधकी धार धरी है।
हाय गरीब अबोलन पे असि काढ़ि कसाइन काट करी है॥
दीन दहारत आरत हैं, तऊ 'प्रेम' अवाज न कानपरी है।
कोसत भारतवासिन कौं, तबहीं तौ इतै यह गाज गिरी है॥

—प्रेमनारायण त्रिपाठी 'प्रेम'





गोचरभूमिकी महत्ता

(श्रीगौरीशंकरजी गुप्त)

वह भी एक युग था जब हमारे भारतवर्षमें गोचरभूमिकी प्रचुरता थी और निर्धन-से-निर्धन व्यक्ति भी गायें पाल सकता था। गोचरभूमिमे चरनेवाली गाये हरी घास या वनस्पतिके प्रभावसे नीरोग और हृष्ट-पुष्ट रहतीं और उनका दूध सुपाच्य तथा पुष्टिकारक होता था। उन गायोका मूत्र सर्व रोगो—विशेषकर उदर, नेत्र तथा कर्ण-रोगोंको समूल नष्ट करनेकी क्षमता रखता था। आज गोदुग्ध-गोमूत्रादिमें वैसा चमत्कार न दीखनेका यही मुख्य कारण है कि हमारे देशमे गोचरभूमिकी समुचित व्यवस्था नहीं है। पर, वैदिक युगमें गोचर-भूमिका बडा महत्त्व था। ऋग्वेद (१। २५। १६) में एक मन्त्र है—

परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु। इच्छन्तीरुरुचक्षसम्॥

इसका भाव है कि गाये जिस तरह गोचरभूमिकी ओर जाती हैं, उसी तरह उस महान् तेजस्वी परमात्माकी प्राप्तिकी कामना करती हुई बुद्धि उसीकी ओर दौड़ती रहे। ईश्वरकी ओर बुद्धि लगी रहे, यह भाव व्यक्त करनेके लिये गायोके गोचरभूमिकी ओर जानेका दृष्टान्त दिया गया है। इसी प्रकार ऋग्वेद (१। ७। ३) मे एक दूसरा मन्त्र है—

इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत्॥

भाव यह है कि सुरपति इन्द्रने दूरसे प्रकाश दीख पड़े, इस हेतु सूर्यको द्युलोकमें रखा और स्वय गायोके सग पर्वतकी ओर प्रस्थान किया। दूसरे शब्दोमें—गायोको चरनेके लिये पर्वतोपर भेजना चाहिये। पर्वत भी गोचरभूमिकी श्रेणीमें आते हैं। पर्वतका पर्याय गोत्र है, जिसका एक अर्थ गायोको त्राण देनेवाला भी होता है। पर्वतोपर गौओको पर्याप्त चारा और जल तो सुलभ रहता ही है, उन्हें शुद्ध वायु और व्यायामलाभ भी हो जाता है।

पद्मपुराण, मनु, याज्ञवल्क्य तथा नारदादि स्मृतियोमे भी गोचरभूमिका वर्णन मिलता है। उन सबका साराश संक्षेपमे यही है कि यथाशक्ति गोचरभूमि छोडनेवालेको नित्य-प्रति सौसे अधिक ब्राह्मणभोजन करानेका पुण्य मिलता है और वह स्वर्गका अधिकारी होता है, नरकमे नहीं जाता। गोचरभूमिको रोकने या बाधा पहुँचानेवाले तथा वृक्षोंको नष्ट करनेवाले इक्कीस पीढीतक रौरव नरकमे पड़े रहते हैं। चरती हुई गौओको बाधा पहुँचानेवालोको समर्थ ग्रामरक्षक दण्ड दे, ऐसा पद्मपुराणमे कहा गया है।

पद्मपुराणमें वर्णित एक प्रसंगके अनुसार चरती हुई गायको रोकनेसे नरकमें जाना पड़ता है। स्वयं महाराज जनकको चरती हुई गायको रोकनेके फलस्वरूप नरकका द्वार देखना पड़ा था। सावधान रहकर आत्मरक्षा करना कर्तव्य है, पर चरती गायको ही क्या, आहार करते समय जीवमात्रको रोकना या मारना मनुष्यता नहीं है। धार्मिक दृष्टिसे भी ऐसा करना अनुचित है।

पहले कहा गया है कि हमारे देशमे गोचरभूमिकी प्रचुरता थी। इतना ही नहीं, अपितु राजवर्ग तथा प्रजावर्ग दोनोकी ओरसे गोचरभूमि छोडी जाती थी। पुण्यलाभकी दृष्टिसे धर्मशाला, पाठशाला, कूप और तालाव आदि बनवानेकी प्रथाकी भाँति गोचरभूमि खरीदकर कृष्णार्पण करनेकी उस युगमे प्रथा थी। आज भी वे गोचरभूमियाँ विद्यमान हैं और उनके दानपत्रोमे स्पष्ट अङ्कित है—'इस गोचरभूमिको नष्ट करनेवाले यावच्चन्द्रदिवाकर नरकवास करेगे।'

गाँवके निकट चारो ओर चार सौ हाथ यानी तीन वार फेंकनेसे लकडी जहाँ जाकर गिरे, वहाँतककी भूमि और नगरके निकट चारो ओर इससे तिगुनी भूमि यानी वारह सौ हाथ भूमि गोचारणके लिये छोड़नेका आदेश देते हुए मनुजी कहते हैं कि यदि उतनी भूमिके अंदरकी किसी ऐसी कृषिको, जिसके चारो ओर बाड़ न लगे हो, ग्रामके पशु नष्ट कर दे तो यह उनका अपराध नहीं और इसके लिये उनको राजदण्ड नही मिलना चाहिये। (मनुस्मृति ८। २३७-२३८)

महर्षि याज्ञवल्क्यका भी यही मत है। उन्होने पर्वतकी तराईके गाँवोंके निकट आठ सौ हाथ तथा नगरके निकट सोलह सौ हाथ गोचरभूमि छोडनेकी व्यवस्था दी है। लिखा है—

धनुःशत परीणाहो ग्रामे क्षेत्रान्तरं भवेत्।
द्वे शते खर्वटस्य स्यान्नगरस्य चतुःशतम्॥

(याज्ञवल्क्यस्मृति २। १५७)

यह भी आदेश है कि खेत गाँव तथा शहरसे दूर हो और खेतोमे बाड घनी हो। वाडकी ऊँचाई इतनी हो कि कृपितक ऊँटकी दृष्टि भी न पहुँच सके और न कुत्ते, सूअर आदि ही उसके छिद्रोसे किसी प्रकार अदरकी ओर प्रवेश कर सके। 'नारदस्मृति' के अनुसार बाड़ न लगानेके कारण खेतीको यदि पशु चर जायँ या खेतमे घुसे तो राजा पशुओको दण्ड नहीं दे सकता, वह उन्हे हँकवा सकता है। बाड तोडकर यदि पशु कृषिको नष्ट करे तो वे दण्डके अधिकारी होगे।

मनुका भी यह कथन है कि राहके निकट या गाँवके पड़ोसके बाड लगे खेतोमे यदि पशु किसी प्रकार पहुँचकर अनाज खा जायँ तो राजा पशुपालकपर सौ पण दण्ड लगाये, किंतु यदि पशु बिना रखवालेका हो तो उसे सिर्फ हँकवा दे—

पथि क्षेत्रे परिवृते ग्रामान्तीयेऽथवा पुन ।
सपाल शतदण्डार्हो विपालान् वारयेत् पशून्॥

(मनुस्मृति ८। २४०)

महर्षि याज्ञवल्क्यके वचनानुसार राह, ग्राम और गोचरभूमिके निकटके खेतको यदि रखवालेकी अज्ञातावस्थामे पशु नष्ट कर दे तो वह दोषी नहीं होगा। हाँ, यदि खेतको रखवाला जान-बूझकर चरा दे तो वह अपराधी है और चोरकी भाँति उसे दण्ड मिलना चाहिये—

पथि ग्रामविवीतान्ते क्षेत्रे दोषो न विद्यते।
अकामत कामचारे चौरवद् [illegible]॥

([illegible])

अन्तमे एक अत्यन्त रोचक [illegible] उल्लेख्य है, जिसमे गोचरभूमि हड़पनेवाले [illegible] भयकरतापर प्रकाश पडता है। एक बार [illegible] पत्नी चिताग्निमे नर-कपाल रखकर उसमे [illegible] रही थी और उसको उसने कुत्तेके [illegible] ढँक [illegible] एक व्यक्तिको यह देखकर स्वभावतः [illegible] उसने चाण्डालिनीसे पूछा—'तूने ऐसी घृणित [illegible] क्यो ढँक रखा है?' उसने कितना मार्मिक उत्तर दिया [illegible]— 'मैंने इसे इस भयसे ढँक रखा है कि मेरा [illegible] समीप है। यदि किसी ऐसे महापापी व्यक्तिकी, जिसने गोचरभूमिको अपने खेतमे मिला लिया है, दृष्टि पड [illegible] तो मेरा यह आहार ग्रहण करने लायक नहीं रह जायगा।'

नृकपाले तु चाण्डाली काकमास श्वचर्मणा।
चछाद गोचरक्षोणीकृपिकृद्दृष्टिभीतित ॥

इस प्रकार हम देखते है कि गोचरभूमि [illegible] पुण्य और उसे नष्ट करना या हडपना महापाप है। [illegible] देशमे गोवधकी भाँति गोचरभूमि भी एक [illegible] उपस्थित है। गोचरभूमिका हमारे यहाँ बड़ा [illegible] ओर उसकी बडी दुर्व्यवस्था है।



गोपालनका आधार संतुलित आहार एवं समुचित चिकित्सा

(डॉ० श्रीवीरेन्द्रदत्तजी मुद्गल)

ऋग्वेदके अनुसार कृषि एव पशुपालनके क्षेत्रमे भारत प्राचीन कालसे ही विशेष सचेष्ट था। ऋग्वेदमे अनेकानेक ऐसे संदर्भ मिलते है, जिनमे कृषिके साथ-साथ पशुपालन एव गौओंका विशेष उल्लेख मिलता है। गौओके रख-रखाव एव उनके स्वास्थ्यका वर्णन भी प्राप्त होता है। ऋग्वेदके प्रसिद्ध गोसूक्त (६। २८) के अनुसार उस कालमे गाये ही कृषि एव अर्थव्यवस्थाका मूल आधार थीं।

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीने श्रीरामचरितमानसमे स्पष्ट-रूपसे लिखा है कि त्रेतायुगमे गौएँ मनचाहा दूध देती थीं—

लता विटप मागे मधु चवहीं। [illegible]
ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ [illegible]

([illegible])

किंतु आज स्थिति सर्वथा [illegible] गौओकी संख्यामें कमी हो जाने [illegible] होनेके कारण और भलीभाँति [illegible] दानेकी कमीके कारण आज [illegible] कम हो गया है।

गोओंद्वारा [illegible] दूध [illegible]

उन्हें भरपेट सतुलित आहार मिले। आज देशमें पशुओके लिये आहार-सामग्रीकी भारी कमी है। गोचर-भूमिका क्षेत्रफल सीमित हो गया है। ऐसी स्थितिमे पशुओके लिये चारे-दानेकी कमी होना स्वाभाविक है। यह एक मुख्य कारण है कि हमारा गोधन दुग्ध-उत्पादनमें पिछडा हुआ है। यदि इसके खानपानपर ध्यान दिया जाय तो निश्चित रूपसे गौएँ अधिक दूध देगी और हम स्वस्थ रहेगे।

पशु-आहार

पशु-आहारमें सवसे पहला स्थान स्वच्छ जलका आता है। जल पशुओके आहारको चवाने, पाचन-क्रिया एव अवशोपणमे सहायक होनेके अतिरिक्त पचे हुए आहारको शरीरके भिन्न-भिन्न भागोंमे ले जानेमे सहायक होता है। इसलिये पशुओको स्वच्छ जल प्रचुर मात्रामे मिलना आवश्यक है। दूषित जल पिलानेसे पशुओमें वीमारी फैलती है। इसलिये यह बात ध्यान देनेकी है कि गायको स्वच्छ जल ही पीनेको दिया जाय।

यह सर्वविदित है कि दुधार गायका दुग्ध-उत्पादन वहुत कुछ उसके खान-पानपर भी निर्भर करता है। विशेष कर गर्मीके मौसममे पशुपालक या तो सूखा चारा खिलाते हैं या फिर वंजर भूमिपर चरने भेज देते है। इससे उन्हे पूरे पोषक तत्त्व प्राप्त नहीं हो पाते, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्यपर तथा दुग्ध-उत्पादनपर निश्चित रूपसे पड़ता है।

वास्तवमें हरा चारा ही गायके लिये समुचित भोजन है। पहले समयमे ग्रामोके आसपास गोचरभूमि छोडी जाती थी, गोचर-भूमि छोडनेके धार्मिक महत्त्वका विश्वास भी लोगोके मस्तिष्कमे था। गाये तथा अन्य पशु उस भूमिपर अपने मुँहसे हरी-हरी घास चरते थे और स्वच्छन्द विचरण करनेसे उनका व्यायाम भी हो जाता था। स्वच्छन्द विचरण कर अपने मुँहसे अपनी इच्छासे चरनेवाली गौंसे आजकी वॅधी हुई गायकी कोई तुलना ही नहीं है। दूधकी मात्रा तथा उसकी गुणात्मकतामे भी दोनोमे वहुत अन्तर है।

हरे चारेके पोषक तत्त्व सुपाच्य होते है जो गायोको आसानीसे प्राप्त हो जाते हैं। इनमे विटामिन तथा खनिजोकी प्रचुर मात्रा होती है और स्वादिष्ट होनेके कारण पशु भी चावसे खाते हे।

सूखा चारा तथा हरा चारा मिला-जुलाकर खिलानेसे भी भोजनके तत्त्व भली प्रकार पच जाते हे, बरसातके मौसममे हरा मक्का और लोबियाके चारे उत्तम होते हैं। इनका मिला-जुला हरा चारा ४० किलोग्राम और उसमें ४-५ किलो सूखा चारा देनेसे ५ लीटरतक दूध देनेवाली एक गायको संतुलित आहार प्राप्त हो जाता है। सर्दीके मौसममे बरसीम, जई तथा लूसर्न सर्वोत्तम चारे हैं। ३०-३५ किलो बरसीम-लूसर्नका चारा तथा ४-५ किलो सूखा चारा देनेसे ६ लीटरतक दूध देनेवाली गौको सभी तत्त्व प्राप्त हो जाते हैं। वरसीम तथा लूसर्नमें प्रोटीन एवं कैलशियमकी प्रचुर मात्रा विद्यमान होती है। चारेकी वरवादी रोकने तथा सदुपयोग करनेके लिये कुट्टी बनाकर खिलाना चाहिये।

अनुभवके आधारपर यह माना गया है कि दूध निकालते समय २५० ग्राम दाना चारेपर डालनेसे गाय दूधको आसानीसे अयनमें उतार देती है। इस प्रकार प्रतिदिन ५०० ग्राम दाना देना लाभदायक रहता है। वरसातमे ५ लीटर तथा सर्दीमे ६ लीटरसे अधिक दूध देनेपर १ किलोग्राम दाना प्रति ३ लीटर दुग्ध-उत्पादनपर गायोको देना ठीक होगा। अर्थात् ८ लीटर दूध देनेवाली गायको १½ किलो दाना प्रतिदिन देना चाहिये।

दानेका मिश्रण तैयार करनेके लिये उसमें काम आनेवाली स्थानीय वस्तुओका ध्यान रखना आवश्यक है। आर्थिक दृष्टिसे भी यह उचित है कि दानेका मिश्रण तैयार करनेके लिये उन्हीं वस्तुओंको काममे लाया जाय जो कि आसपासके इलाकेमें मिलती हो। उदाहरणके लिये गेहूँकी भूसी ३० प्रतिशत, चूनी १२ प्रतिशत, नमक २ प्रतिशत तथा खनिज मिश्रण १ प्रतिशत मिलानेसे अच्छा दाना तैयार हो जायगा। दूध देनेवाली गायोके लिये नमक तथा खनिज मिश्रणका विशेष महत्त्व है। एक बारमें कम-से-कम १५-२० दिनके लिये दानेका मिश्रण वनाकर रख लेना चाहिये। दानेके मिश्रणमे जल्दी-जल्दी वदलाव करनेसे दुग्ध-उत्पादनपर विपरीत प्रभाव पड़नेकी आशका रहती है।

पशु-चिकित्सा

दुधार गायोको कुछ ऐसी बीमारियाँ लग जाती हैं, जो संक्रामक होती है और एक पशुसे दूसरे पशुको शीघ्रतासे लग जाती है। इन बीमारियोको छूतकी बीमारी भी कहते हे। इनके टीके समय-समयपर डॉक्टरकी सलाहसे लगवाते रहना चाहिये। खुरपका, मुँहपका एक ऐसी ही छूतकी वीमारी है, जिससे प्राय: पशुकी मृत्यु हो जाती है। यदि वह

जीवित भी रहे तो उसकी दूध देनेकी क्षमता बुरी तरह प्रभावित हो जाती है। प्रतिवर्ष इस बीमारीसे देशको करोडो रुपयोकी हानि होती है। यदि सावधानी बरती जाय और समयसे इसका रोधक टीका लगवा दिया जाय तो बहुमूल्य गायोका बचाव हो सकता है।

खुरपका, मुँहपकाकी बीमारीसे ग्रसित होनेपर गाय सुस्त हो जाती है, बुखार तेज हो जाता है और जीभ, होठ, मसूडो तथा खुरोके बीच छाले निकल आते हैं। मुँहसे झागदार लार लगातार अधिक मात्रामे निकलती है तथा वह होठोको बराबर चलाती रहती है। गाय चारा तथा दाना खाना छोड देती है और धीरे-धीरे लँगड़ाना आरम्भ कर देती है। यह बीमारी काफी दिनोतक रहती है, इसलिये दुधार गाय काफी कमजोर हो जाती है और उसका दूध देना एकदम कम हो जाता है।

अब यह प्रश्न उठता है कि यदि रोग फैल ही जाय तो क्या करे? बीमारीकी आशका होते ही गायको अन्य पशुओसे अलग कर दे और उसकी देख-भाल किसी दूसरे सदस्यसे कराये। साथ ही निकटके पशु-चिकित्सा-केन्द्रसे सम्पर्क करके सहायता प्राप्त करे। सभी स्वस्थ पशुओको बीमारीका टीका लगवा दे। इलाजकी अपेक्षा बचाव कही अधिक लाभदायक रहता है। मुँहपका, खुरपका बीमारीका टीका मार्च-अप्रैलमे प्रतिवर्ष लगवा दे। सबसे पहला टीका लगभग तीन माहकी आयुमें और उसके बाद प्रतिवर्ष लगवाये। इसी प्रकार गलघोटूका टीका मई-जूनमे वर्षा आरम्भ होनेसे पहले लगवाये। सबसे पहला टीका ६ माहकी आयुमे और उसके बाद प्रतिवर्ष लगवाये। जहरबाद बीमारीका टीका भी मई तथा जूनमे ही लगवाये। इसके लिये भी पहला टीका ६ माहकी उम्रमे और उसके पश्चात् प्रतिवर्ष लगवाना चाहिये।

गोशालाकी सफाईपर भी विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है। चूनेसे छतो तथा दीवारोकी समय-समयपर पुताई और कीटनाशक दवाओका छिड़काव लगातार कराना चाहिये। पशुशालाके दरवाजोपर फिनाइल तथा मैलाथियॉनका घोल छिडकना चाहिये। ध्यान रहे कि झाडू तथा यह छिडकाव और सफाई दूध दुहनेसे कम-से-कम १½ घंटा पहले या बादमे करे। अन्यथा धूल आदिके कण दूधमे गिरकर उसे दूषित करेंगे और कीटाणु-नाशक घोलकी दुर्गन्ध दूधमें समा सकती है। यदि दूध निकालनेवाली स्त्री या पुरुष एक ही है तो पहले स्वस्थ पशुको खिलायी-पिलायी करनेके बाद ही अस्वस्थ पशुकी देखभाल करे और स्वस्थ पशुके समीप आनेसे पूर्व अपने हाथ-पैर साफ करके पोटैशियम परमेगनेटके घोलमे डुबोकर स्वच्छ कर ले।

गायमे सूखा काल इसलिये आता है कि वह जितनी शक्ति पिछले ब्याँतमे नष्ट कर चुकी है उसे पूरा कर ले और आगे आनेवाले ब्याँतके लिये पूरी तैयारी कर ले। यदि गाय ब्यानेसे पूर्व अच्छी हालतमे नहीं होगी तो उसका बुरा प्रभाव आनेवाले नवजात तथा दुग्ध-उत्पादनपर निश्चित रूपसे पड़ेगा। गाभिन गायको ब्यानेसे दो माह पूर्वसे एक किलो अतिरिक्त दानेका मिश्रण, हरा चारा या साइलेज, नमक तथा खनिज मिश्रणकी विशेष मात्रा देनी चाहिये। ऐसा देखा गया है कि वर्षके काफी भागमे गाभिन गायोंको हरा चारा प्राप्त नहीं होता। विशेष रूपसे गरमीके मौसममे यह समस्या और भी विकट हो जाती है और बरसातके मौसममे यानी अगस्त या सितम्बरमे जब वह ब्याती है तो उसके दूधमे विटामिन 'ए' की भारी कमीके कारण नवजातोको आवश्यकतानुसार विटामिन 'ए' नहीं मिल पाता, जिसके कारण वे बीमारियोसे रक्षा करनेमे असमर्थ रहते है। इसलिये गरमीके मौसममे गायको विटामिन 'ए' की पूर्तिके लिये थोडा-बहुत हरा चारा अवश्य मिलना चाहिये। एक किलो लहलहाते हरे चारेमे लगभग १५०० अन्तारााष्ट्रिय यूनिट विटामिन 'ए' पाया जाता है। यदि गाभिन-अवस्थामे गायको प्रतिदिन ३ किलोग्राम हरी घास या हरा चारा मिलता रहे तो उनके विटामिन 'ए' की मात्राकी पूर्ति हो सकेगी। यदि हरा चारा नहीं है तो हरी पत्तियाँ भी वही काम करेंगी। अन्यथा विटामिन 'ए' बाजारमे भी उपलब्ध होता है। उससे प्रतिदिनकी पूर्ति की जा सकती है।

इस प्रकार एक सतुलित आहार और उचित देख-रेख तथा चिकित्सा पानेवाली गाय भरपूर दूध देगी [illegible] अमूल्य भोजनके साथ स्वास्थ्य तथा [illegible] करेगी। तभी हमारी गोमाताका दिव्य [illegible] अतः गौओंकी देख-रेखमे विशेष सावधानी [illegible]

गायोंके खुराककी विवेचना

खुराक—

१-चारे-दाने भाँति-भाँतिके होने चाहिये। एक ही प्रकारका चारा-दाना खाते-खाते गाय ऊब जायगी और उसकी रुचि कम हो जायगी। गायके लिये सानी मौसमके अनुकूल बदल-बदलकर करना चाहिये इससे वह खुश और तंदुरुस्त रहेगी।

२-चारे-दानेके मेल करनेमे पशुकी आदतका भी ध्यान रखना चाहिये। हर एक पशु एक ही प्रकारकी सानी नहीं खा पाते। कोई-कोई पशु-जाति किसी विशेष चीजको पसद करती है।

३-यदि उन्हे नयी तरहकी खुराक खिलानी हो, तो धीरे-धीरे और थोड़ी-थोड़ी मात्रामें खिलाकर आदत डालनी चाहिये। साइलेज-कूपके चारे पहले-पहल जानवर नहीं खाते, परंतु एक बार आदत पडनेपर वे उसे रुचिसे खाने लगते है।

४-चारे-दानेकी प्रत्येक खुराकमें नमक और पानीका मिलाना जरूरी है, क्योकि इस प्रकारकी मिलायी हुई सानी सरलतासे पच जाती है। किंतु कई स्थानोमें सूखे दाने और खलीके देनेकी भी प्रथा है।

५-जाड़ोमे दाना देरमे फूलता है, इसलिये छः-सात घंटेतक उसे भिगोना चाहिये। रातमे नमक और खली मिलाकर दाना भिगो दे और इससे सुबहकी सानी करे। सुबहको भिगोया हुआ दाना-खली शामकी सानीके काममे लाये। ठंडके दिनोमें गायको बिनौला उबालकर और उसमे गुड मिलाकर खिलाये। इससे दूधमे मक्खन तथा मिठासका अंश बढ जायगा।

६-गर्मीके दिनोमे अधिक देरतक भिगोनेसे दाने और खलीमें खटास आ जाती है, इसलिये सानी करनेके केवल तीन-चार घंटे पहले ही इन्हे भिगोये।

इस मौसममे गायको बिनौला खिलाना ठीक नही है। किंतु यदि थोड़ा-सा बिनौला ठंडे पानीमे चार-पॉच घंटोंतक भिगोकर, जौके दलियेके साथ दिया जाय तो हानि नहीं करेगा।

७-चारेमें भीगा हुआ दाना-खली-नमक मिलाकर सानीको खूब पलट देना चाहिये, ताकि सभी चीजे भलीभॉति मिल जायँ।

८-चारा अच्छी तरह बारीक कटा होना चाहिये। महीन कटा हुआ चारा जल्दी पचता है और सानी करनेपर वह अच्छी तरह मिल जाता है। मोटा-कटा हुआ चारा इधर-उधर बिखर कर बेकार और खराब हो जाता है।

९-सूखे चारेके बजाय हरा चारा रसीला होनेके कारण जल्दी पचता है और जायकेदार भी होता है। हरे चारेमे विटामिन 'ए' खूब होता है, किंतु सूखे चारेमे यह नहीं होता। इस विटामिनकी कमीका पशुपर बहुत बुरा असर पड़ता है। इससे उसकी रोग-निवारक-शक्ति, आगामी नस्ल और ऑखे कमजोर हो जाती हैं। लूसर्न, बरसीम और दूब आदिकी हरी घासोमे यह विटामिन खूब होता है।

१०-चारेको ठीक समयपर जब कि पौधोमे दूध-भरे बीज भर आये, किंतु पककर सूखनेके पहले ही काट ले और अच्छी तरहसे सुखाकर साफ-सुथरे और ऊँचे स्थानपर रखे। जरा-सा भी गीला रहने या सीलन-भरे स्थानोमे रखनेसे चारा सड जायगा। ध्यान रहे कि चारा कही वहुत ज्यादा न सूख जाय, क्योकि ऐसे चारेमे अधिकांश विटामिन बहुत कम रह जाते हें और वह साररहित हो जाता है।

११-हरे चारेको संचित कर रखनेकी उपयोगी विधि साइलेज-कूपकी है। इस विधिसे सचित चारा हरा बना रहनेके कारण पोषक तत्त्वोवाला होता है। इसको खिलानेके बाद दाना देनेकी खास जरूरत नही पडती।

१२-बीजरहित सूखे चारेमे पोषक तत्त्व तथा विटामिन 'ए' नहीं होते, इसलिये केवल भूसेपर ही रखी गयी गायका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। किंतु आम तौरपर खुराकमे चारेका थोडा-सा सूखा अश भी रहना चाहिये।

१३-खुराककी चीजें अच्छी और बढिया किस्मकी हों। पशुओको सडा-गला दाना-चारा और खराब रोटी कभी न खिलाये। बढिया किस्मका दाना-चारा लाभदायी होनेके कारण ज्यादा महँगा न पडेगा।

१४-पशुको बहुत ज्यादा दाना खिलाना भी ठीक

नहीं, क्योंकि इससे उसकी पाचनशक्तिपर जरूरतसे ज्यादा भार पड जाता है, इस कारण पशुका गोबर और मूत्र दूषित हो जाता है।

१५-आवश्यकतासे अधिक दाना तथा खली खिलानेसे गायकी केवल चर्बी ही विशेष बढ जायगी, इस कारण वह दूध देना कम कर देगी। मोटी और मांसल गाय जल्दी गाभिन भी नहीं हो पाती, क्योंकि उसके शरीरमे हारमोन्स अच्छी तरह विकसित नहीं होते, इसी कारण ऋतुके लक्षण प्रकट होनेमें देर लगती है। ऐसी मोटी गायको मीठी—जैसे गुड़, शीरा और कार्बोहाइड्रेटवाली चीजे—नहीं देनी चाहिये। अधिक मात्रामे मीठी चीजोके खानेसे प्रजनन-शक्तिपर बुरा असर पड़ता है।

१६-कम खुराक पानेके कारण दुबले तथा कमजोर हुए जानवरकी भी दूध देने, प्रजनन तथा काम करनेकी शक्ति कम हो जायगी। कमजोर गाय देरमे गाभिन होगी और उसका बच्चा भी पूर्ण बलवान् न होगा। ऐसे पशुको पौष्टिक चारा-दाना खिलाकर उसकी हालत सुधारनी चाहिये।

१७-गायको ऐसा चारा-दाना देना चाहिये, जिसे वह सहजहीमें लौटा कर जुगाली कर सके। अच्छी तरह जुगाली न की जा सकनेवाली खुराक पचने नहीं पाती।

१८-गायकी खुराक 'चारा-दाना, खली-नमक' की कीमत देश-काल तथा स्थितिके अनुसार कम-ज्यादा होती रहती है, किंतु साधारणतया खुराककी कीमत गायके दूधकी कीमतके $\frac{३}{४}$ या $\frac{२}{३}$ के अनुपातमे होनी चाहिये।

१९-पशुको चरनेके लिये अवश्य भेजना चाहिये। जाड़ा, गर्मी तथा बरसात आदि सभी ऋतुओंमे अपनी रुचिके अनुसार हरियाली चरते हुए पशुका शरीर-सचालन भलीभाँति हो जाता है और इस प्रकार वह स्वस्थ एव प्रसन्न रहता है।

२०-दुहनेके पहले गायको भर-पेट खुराक जरूर ही खिला देनी चाहिये। खाली पेट दूध दुहनेसे गायके अवयवोपर बहुत जोर पड़ता है।

२१-गाय एक स्वच्छताप्रिय जीव है। इसकी नॉद तथा खुराककी चीजें दोनो ही साफ होनी चाहिये। मिट्टी, गोबर या अन्य अशुद्धियाँ मिल जायें तो वह ऐसी सानी नहीं खायगी।

२२-कुत्ते, सूअर, बकरी और मुर्गी आदि जानवरोंको चारा-दानावाले स्थानके निकट नहीं जाने देना चाहिये, क्योंकि वे मुँह डालकर उसे गंदा कर देंगे और बीमारी फैलायेंगे।

दूध देनेवाले पशुओंको खिलाने-योग्य चारे—

१-ज्वारकी चरी—यह चारोंमे मुख्य है, क्योंकि इसे हरी, सूखी या साइलेज-कूपमे भर कर सभी तरहमे खिलाते हैं। किंतु हरी चरी ही उत्तम चारा है।

२-सरसोकी चरी—हरी नरम और सिंगरीदार सरसो दूसरे चारोके साथ मिलाकर खिलानी चाहिये। यह दूध बढानेवाली और गर्म-तासीरकी होती है।

३-जौ तथा जई (सेऊँ)-की चरी—ये पौधे दूधर-दानोंके भर आनेपर हरे-हरे खिलाये जाते है। ये दुग्ध-वर्धक हैं। जौका तो सूखा भूसा भी खिलाया जा सकता है किंतु जई (सेऊँ)-का भूसा बेकार होता है।

४-मटरका पौधा—नर्म फलियोंके भर आनेपर इसे खिलाये। इसमे सडनेवाले कार्बोहाइड्रेट बहुत होते है अतएव इसे जौ आदिके चारे या भूसेके साथमे मिलाकर ही खिलाना चाहिये।

५-हरे मक्केकी करबी—पानीका प्रबन्ध करके मक्काको चैत्रमे बो दे और ज्येष्ठसे भाद्रपदतक ग्वार और लोबियाके पौधोके साथ मिलाकर इसकी हरी करबी खिलाये। गर्मीके दिनोमे—साइलेजके अतिरिक्त यही एक (करबीकी) हरियाली मिल सकती है।

६-हरी ग्वार और लोबियाकी करबी—चैतमे भादोंतक बोये और मक्केकी चरीके साथ खिलाये।

७-उर्द तथा मूँगका हरा पौधा—इसे भादोंमे कार्तिकतक बोये और नरम फली-सहित अन्य चारोंके साथ खिलाये। उपर्युक्त दालके पौधोंके चारोमे प्रोटीनके तत्त्व खूब होते हैं।

८-गेहूँका हरा पौधा—यह दूधर-दानो-सहित खिलाया जाय, तो बहुत लाभकारी होगा। गेहूँ निकालकर इन पौधोंका सूखा भूसा ही प्राय: खिलाया जाता है किंतु यह भूसा पोषक नहीं होता।

९-चना और मसूरका पौधा—इनके पौधोंमे [illegible] बहुत अधिक होता है, इसलिये इसे भी दूसरे चारेके साथ मिलाकर ही खिलाये।

१०-लूसर्न और बरसीम—ये दोनो [illegible] बहुत पोषक हैं। यदि काफी तादादमे [illegible]

दाना देनेकी जरूरत नहीं पडती।

११-दूब, हलीम और झरुआ आदि तरह-तरहकी घासें अच्छी होती हैं। इनमे दूब सर्वश्रेष्ठ है। झरुआ भी एक अच्छी और दानेदार घास है। इसे भरपेट देनेपर दानेकी जरूरत नही पडती।

१२-गाजर और मैंगोल्डकी कद पोषक और दूध बढ़ानेवाली होती है।

१३-मोठका पौधा बहुत गर्म होता है, अतः इसे ऽ२ या ऽ२॥ से ज्यादा न दे और सदा दूसरे चारोके साथ मिलाकर ही खिलाये। ये सभी चारे बैल और सॉड़को भी खिलाये जाते हैं। आवश्यकता पड़नेपर बैलोको तो बाजरेकी हरी चरी या गन्नेके अगौले भी खिलाये जा सकते हैं, परंतु गायोको नहीं।

दूध देनेवाले पशुओंको खिलाने योग्य दाने—

१-गेहूँका दलिया और चोकर बहुत बढ़िया होता है।

२-चनेका दाना और चूनी मिली हुई भूसी। ३-अरहरकी चूनी-भूसी। ४-मूँगकी चूनी-भूसी। ५-मसूरकी चूनी-भूसी।	इन दानोमें प्रोटीन-प्रधान तत्त्व बहुत होते हैं और भूसीमें फासफोरसका काफी अश होता है, अतः इनका खिलाना अच्छा है।

६-जौका दलिया। यह भी बहुत अच्छी चीज है।

७-बिनौले उचित मात्रामे तथा ऋतुका ख्याल करके उबालकर या भिगोकर दे।

८-खली सरसो और लाही, तिल, मूँगफली, अलसी तथा विनौले आदिकी खिलाये।

९-ग्वारका चना दलकर और उबालकर या भिगोकर दे। यह ज्यादा देनेपर कब्ज करता है।

१०-गुड़ और शीरा थोड़ा-सा खिलाये।

११-रॉधी हुई चीजे जैसे—दालका पानी, चावलका मॉड, रोटी और थोडा-सा दलिया दिया जा सकता है।

ऊपर लिखी हुई चीजे सॉड़ो तथा बैलोको भी हितकारी है। उन्हे उर्दकी चूनी-भूसी भी खिलायी जा सकती है। ज्वारका दाना भी उनके लिये बलवर्धक खुराक है। सॉड़को अकुर आये हुए चनोंमें नमक मिलाकर खिलाना गुणकारी है।

दूध देनेवाले पशुओंको न खिलाने योग्य चारे—

१-मक्केकी सूखी चरी।

२-बाजरेकी हरी तथा सूखी चरी।

३-गन्नेकी पत्तियाँ (अगौले)।

४-चनेके पौधोंका भूसा।

५-ग्वारकी सूखी लकड़ीका भूसा।

६-चना और कँगनीकी सूखी पुराली।

७-धानका सूखा हुआ पुआल।

८-हरी या सूखी सनकी पत्ती, जो बहुत गर्म होती है। यह केवल दवाके काममें आती है।

९-ऐसी फसलें जो केवल मात्र शहरके गंदे नालोके पानीसे सींचकर तैयार की गयी हों। ये नाइट्रोजनकी अधिकताके कारण ऊपरसे सुन्दर और पुष्ट दिखायी देती हैं, किंतु पौष्टिक तत्त्वरहित होती हैं और कभी-कभी रोगका कारण भी बन जाती हैं।

उपर्युक्त चीजें बैलोंको भी नहीं खिलानी चाहिये, किंतु उन्हें गन्नेके अगौले और बाजरेकी हरी चरी दी जा सकती है।

दूध देनेवाले पशुओंको न खिलाने-योग्य दाने—

१-उरदकी दाल तथा चूनी और भूसी खिलानेसे यद्यपि एक बार गायका दूध बढ़ जाता है, तथापि दुग्धवाहिनी नाड़ियोंपर विशेष दबाव पड़ जानेके कारण भविष्यमे उसका दूध कम हो जाता है।

२-चनेकी निरी भूसी, जिसमें चूनी या दालका काफी अश न हो, नहीं खिलानी चाहिये। अधिक फासफोरसके कारण यह दूध और खूनको सुखा देती है।

३-मटरका दाना बहुत बादी तथा वायु बढ़ानेवाला होता है। अन्य दानोके साथमें मिलाकर देनेसे यह हानि नहीं करता।

४-बाजरेका दाना गर्म और दूधको सुखा देनेवाला होता है।

५-ज्वारका दाना विशेष गर्म और दूधको सुखानेवाला होता है, किंतु यह बैलोंके लिये बलवर्धक है।

६-सूखी रोटी, सड़ी दाल, गंदी जूठन आदि वस्तुएँ भी कभी न खिलाये।

═══✻✻✻═══

गो-चिकित्सा

गो-चिकित्सा पुण्य है

आज भारत-जैसे निर्धन एवं पिछडे हुए देशमे, जहाँ लाखों-करोडो मनुष्योके स्वास्थ्यकी किसीको चिन्ता नहीं, मूक पशुओकी चिकित्साके विषयमे सोचना कुछ व्यक्तियोंकी दृष्टिमे एक हास्यजनक बात होगी। किंतु विचार करके देखे तो बात ऐसी नहीं है। पशुओके स्वास्थ्यपर ही मनुष्योका स्वास्थ्य निर्भर करता है। कुछ लोग तो ऐसे हैं, जो पशुओके स्वास्थ्यको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखते हैं, परंतु अधिकाश व्यक्ति ऐसे हैं, जो आकाक्षा रहनेपर भी पशुओके बीमार होनेपर या किसी दूसरे समय उन्हे कौन-सी दवा अथवा पथ्य देना चाहिये, किन-किन कारणोसे उनमे भाँति-भाँतिके रोग आते हैं और किस प्रकार वे पूर्ण स्वस्थ रह सकते हैं—यह नहीं जानते।

प्राचीन भारतमे तो पालकाप्य-जैसे महर्षि तथा ऋतुपर्ण, नल एव नकुल-जैसे महाराज गो-चिकित्सक एव पशु-चिकित्सक थे। अग्निपुराण और गरुडपुराण, बृहत्सहिता एव सुश्रुतके चिकित्सा-ग्रन्थोंमे गो-चिकित्सापर बहुत कुछ लिखा गया है। परतु आजकी स्थिति बडी विकट है। कुछ भोले धर्मभीरु भाइयोकी तो यह धारणा हो गयी है कि देवी-तुल्य गोमाताके शरीरमे अस्त्र-प्रयोग करना सबसे बडा पाप है। वैसे चाहे वह सड़-गलकर तडफती रहे और अपने इस भौतिक शरीरको छोड़ भी दे। दूसरे, यह भी एक भय है कि ओषधि करते हुए यदि दुर्भाग्यवश यथायोग्य ओषधि न दी जा सके और कुचिकित्साके कारण गायके प्राण चले जायँ तो चिकित्सकको गो-हत्याका महान् पाप लगेगा। तीसरे, गो-चिकित्साद्वारा अर्थ उपार्जन करना पाप है, पर बिना कुछ लिये चिकित्सा करनेको न तो समय है और न मन ही। इन्हीं भ्रान्त, शास्त्र-असम्मत एव घातक धारणाओके पीछे पड़कर कोई भी भला मनुष्य गो-चिकित्साके क्षेत्रमे प्रवेश नहीं करना चाहता, अतएव गो-चिकित्साका यत्किंचित् भार मूर्खोंके हाथमे भी पडा हुआ है।

उपर्युक्त विषयोपर पूर्णरूपसे विचार करनेपर ज्ञात होता है कि गो-चिकित्साके विषयमे लोगोमे फैली हुई यह धारणा न तो शास्त्रसम्मत है न नीतिसम्मत और न यह बुद्धिवादकी दृष्टिसे ही ठीक है। भला जरा सोचे तो सही—जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त ही नहीं, मृत्युके पश्चात् भी हमारी सब प्रकारसे सेवा करनेवाली माता गौके बीमार होनेपर या आहत होनेपर उसकी चिकित्सा करना पापकी श्रेणीमें गिना जायगा कि महान् पुण्यमे? हमारे विचारसे तो ऐसी गायोंकी चिकित्सा, सेवा एव शुश्रूषा करनेमें पाप होना तो दूर रहा, कतकि जन्म-जन्मान्तरके अनेकों पाप नष्ट हो जाते हैं।

आपस्तम्ब और संवर्त आदि स्मृतियोंके वचनोंसे यह बात और भी पुष्ट हो जाती है कि उपकारकी दृष्टिसे गो-चिकित्सा करते समय यदि कुछ हानि भी हो जाय तो उसमे भली नीयतसे काम करनेवालेको कोई अपराध नहीं लगता—

यन्त्रणे गोचिकित्सार्थे मृतगर्भविमोचने।
यत्ने कृते विपत्तिश्चेत् प्रायश्चित्तं न विद्यते॥
(आपस्तम्ब० १। ३१-३२)

औषध स्नेहमाहारं ददद् गोब्राह्मणेषु च।
दीयमाने विपत्तिः स्यात् पुण्यमेव न पातकम्॥
(संवर्त०, श्लोक १३८)

अर्थात् यत्नपूर्वक गो-चिकित्सा करने अथवा गर्भमें मरा हुआ बच्चा निकालनेमे यदि गायपर कोई विपत्ति भी आ जाय तो प्रायश्चित्त करनेकी आवश्यकता नहीं है। यदि गौ और ब्राह्मणको उनके लाभके लिये कोई औषध, तैल, आहार आदि दिया जाय और उससे उनपर कोई विपत्ति आ जाय तो भी पाप नहीं होता, वर पुण्य ही होता है।

शास्त्रोंके वचनोसे ज्ञात होता है कि पाप और पुण्य मनुष्यकी भावनापर निर्भर है। हम गुस्सेमे आकर किसीके शरीरपर [illegible]-सी चोट लगा देते हैं तो पाप हो जाता है, किंतु डॉक्टर लोग बड़े-बडे ऑपरेशन कर डालते हैं और कइयोंके अङ्ग भी काट डालते हैं, फिर भी वे पुण्यात्मा समझे जाते हैं, इसका कारण यही है कि हमारा कृत्य हिंसा, द्वेष एव परपीडनकी भावनासे भरा होता है और डॉक्टरका काम देखनेमे अत्यन्त दोषपूर्ण होते हुए भी प्रेम, उपकार एव हितकी पवित्र भावनासे प्रेरित है। वस्तुत. [illegible] महत्त्व भावनाके सामने बिलकुल गौण है। बस, गो-चिकित्साके विषयमे हमे इस सिद्धान्तको सामने रखकर बिना किसी [illegible] संकोचके कार्य करना चाहिये। जिस प्रकार मनुष्यकी [illegible] चिकित्सामें काटना, चीरना आदि आवश्यक होनेके [illegible] उसमे घृणा नहीं है और सभी तरहके लोग [illegible] यह कार्य करते हैं, उसी प्रकार गो-चिकित्साके [illegible] तरहके सुयोग्य पुरुषोंको पूरे उत्साहके साथ [illegible]। ऐसा करनेसे ही हम अपने कर्तव्यका पालन कर [illegible]।

गायोंके रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

पशुओंको भी रोग उतना ही कष्ट देते है, जितना कि मनुष्योंको। अन्तर इतना ही है कि हम मनुष्य विवेक-साधन तथा उपायोंद्वारा किसी सीमातक रोग दूर करके कष्टका निवारण कर लेते हैं, किंतु बेचारे मूक, असहाय, विवश तथा केवल पूँछ हिलानेतकका उपाय कर सकनेवाले पशु रोगग्रसित होकर कष्टोंको सहते रहते हैं। पर मनुष्य-जातिकी शोभा इसमे नहीं है। जिसने अपनी बुद्धि तथा सामर्थ्यका उपयोग अपने ही लिये किया, उसने क्या किया? मनुष्यका यह कर्तव्य है कि परिवारके प्राणीके समान एक ही घरमें रहनेवाले अपने पशुओंके भी दुःखको दूर करनेके लिये कुछ उठा न रखे। सोचा जाय तो ऐसा करनेमे वह पशुओंके ऊपर कोई एहसान नहीं करेगा, यह उसका धर्म है, क्योंकि मनुष्यने ही तो उन्हे प्रकृतिकी गोदीसे छीनकर अपने कामके लिये अपने घरमे बॉध रखा है। जगली पशुओंकी दवा करने कौन जाता है? प्रकृति माता स्वय उनकी देख-भाल करती है। अत. यदि मनुष्य प्रकृति माताके इन पशुओंके दुःख-सुखकी परवा नहीं करता तो यह उसकी कृतघ्नता है। और वह प्रकृतिदेवीका कोप-भाजन बनकर दण्डका भागी होगा।

हमारे शास्त्रोंमे कहा हुआ है कि जबतक रोगिणी, भयभीत, (चकित), बाघ अथवा चोर आदिसे सतायी हुई, ऊँचे स्थानसे गिरी हुई, दलदलमे फँसी हुई, सर्दी-गर्मीसे पीडित तथा अन्य किसी प्रकारसे दु:खित गौका उद्धार न कर ले तबतक आर्यसंतान कोई दूसरा कार्य न करे यथा—

आतुरां मार्गत्रस्तां वा चौरव्याघ्रादिभिर्भयैः।
पतितां पङ्कलग्नां वा सर्वोपायैर्विमोचयेत्॥
ऊष्मे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्।
न कुर्वीतात्मनस्त्राण गोरकृत्वा तु शक्तितः॥

तात्पर्य यह कि जिस प्रकार अपने किसी घरवालेको खॉसी-बुखार हो जानेपर हम वैद्यके पास दौड़ने लगते हैं, उसी प्रकार अपने पालित पशुओंके रोगोंको दूर करनेके लिये भी हमें सचेष्ट होना चाहिये।

पशुओंकी रोगावस्थामें पशुशालाका प्रबन्ध

किसी पशुके रोग-ग्रस्त हो जानेपर उसे पशुशालासे हटाकर किसी अलग स्थानमे रखना चाहिये। इस प्रकार दूसरे नीरोग पशुओंकी रक्षा होगी। यदि छूतकी बीमारी न हो, तो भी रोगी पशुको अलग हटा देना ही ठीक है, क्योंकि प्रेम, द्वेष तथा सहानुभूतिका भाव पशुओंमे भी होता है। जब अन्य पशु अपने किसी साथीको दुखी या उदास देखेंगे तो वे भी उदास होकर खाना-पीना छोड सकते हैं। रोगी पशुका दाना-पानी दूसरे पशुओंके दाना-पानीमे न मिलने पाये।

रोगी पशुकी देख-भाल

रोगी पशुकी देख-भाल बडी सावधानीसे करनी चाहिये। उसको ऐसे स्थानपर रखना चाहिये, जहाँ हवा और प्रकाश अच्छी तरह आये-जाये, किंतु पशुके ऊपर न हवाका झोंका सीधा लगे, न तो धूप लगे। मक्खी-मच्छरोंसे बचानेके लिये गूगल, गन्धककी धूप या साधारण धुआँ कर देना चाहिये। पशुको दवा आदि पिलाते समय उसके साथ बहुत जबर्दस्ती करके उसे अधिक कष्ट न दिया जाय। यदि पशु एक दिनसे अधिक एक करवट पडा रहे तो उसे करवट बदलानेकी चेष्टा करनी चाहिये। रोगकी पहचान या निदान जल्दबाजीमे नहीं, वर ठीकसे किसी चतुर व्यक्ति या चिकित्सकसे कराना चाहिये। अच्छे हो जानेपर उसे अन्य पशुओंके साथ मिलानेमे बहुत जल्दी करना ठीक नहीं। कोई तेज या जहरीली दवा लगानी हो तो ध्यान रखना चाहिये कि इधर-उधर न लग जाय। मालिकको ऐसे पशु केवल नौकरोंके भरोसेपर ही न छोडकर स्वय भी देखने चाहिये।

रोग होनेके सामान्य कारण

१-चारा-दाना आवश्यकतासे कम मिलना, २-खुराकमे आवश्यक पौष्टिक तत्त्वोंका मेल न होना, ३-सड़ा-गला दाना-चारा खाना तथा गदा पानी पीना, ४-गदे स्थान, अधिक सर्दी-गर्मी और वर्षासे बचनेका प्रबन्ध न होना तथा ५-छूतकी बीमारियोंसे स्वस्थ पशुओंको बचानेके विषयमे गोपालककी अनभिज्ञता।

रोगी पशुके लक्षण

१-दूध कम देना या न देना, २-उदास रहना, ३-झुडसे अलग रहनेकी इच्छा, ४-चारे-दानेका त्याग, ५-जुगाली न करना, ६-गोबर न करना या पतला करना ७-बार-बार उठना-बैठना, ८-ऑखोंका लाल हो जाना, ९-जल्दी-जल्दी साँस लेना, १०-मुख सूखना और ११-मुख तथा नाकसे पानी गिरना।

स्वस्थ गाय, बैल और भैंसका तापमान प्राय: १०१° से १०४° तक होता है, नाडीकी गति प्रतिमिनट ४५ से ५० बारतक है और सॉस प्रतिमिनटमे १०-१२ बार आती है। इससे विपरीत हो तो पशुको रोगी समझना चाहिये।

दवाकी मात्रा

रोगी पशुओके लिये आगे जो दवाओंकी मात्रा लिखी गयी है, वह पूरे प्रौढ पशुके लिये हे, जिसका वजन १० मनके लगभग हो। अवस्था तथा वजनके अनुसार इस मात्रामे अन्तर पडेगा।

जन्मसे १ मासतक	$\frac{१}{१६}$	मात्रा
२ माससे ४ मासतक	$\frac{१}{८}$	
४　　६	$\frac{१}{४}$	
६　　१२	$\frac{१}{३}$ या $\frac{१}{२}$	
१ सालसे २ सालतक	$\frac{१}{२}$ या $\frac{३}{४}$	
२ सालसे ऊपर	पूरी मात्रा	

एक रोगकी कई-कई दवाइयाँ आगे दी गयी हैं, उनमेसे कोई एक करनी चाहिये। एक लाभ न करे तो दूसरीका प्रयोग करना चाहिये।

छोटे बच्चोंके रोग और उनकी चिकित्सा

मनुष्यके बच्चोकी भाँति गाय-भैसके बच्चे भी मिट्टी चाटनेमे बडे हातिम होते हैं। कभी-कभी वे इतनी मिट्टी चाट जाते हैं कि वह उनके पेटमें सड जाती है और कीडे पड जाते हैं। कीडे पडते ही बच्चा निर्बल होकर प्राय. मर जाता है। पहली रोक तो यह है कि बच्चोके मुँहमे मुसका (जाली) चढा दे, जिससे वे मिट्टी न चाट सके और यदि कीडे पड गये हो तो आधी छटॉक कबीला पीसकर आध पाव दहीमे मिलाकर देनेसे लाभ होता है।

कभी-कभी बच्चोके पेटमे दूध जम जाता है, जिससे पाचनशक्ति मारी जाती है। इस रोगमे मट्ठा एक पाव, सरसोका तेल आध पाव तथा नमक आधी छटॉक मिलाकर बच्चेको पिलाना चाहिये। इसमे एक छटॉक अमकलीको पानीमे भिगोकर और आध पाव सरसोके तेलमे मिलाकर देना भी लाभकारी हे।

यदि सडा-गला दाना-चारा खा लेनेसे अथवा गर्म और गंदा पानी पी लेनेसे बच्चेको पेचिश हो गयी हो और गोबरके साथ खून आता हो, तो आध पाव लिसोढाके पत्तोको पानीमे पीस-छानकर पिलाना चाहिये अथवा आधी छटॉक ईसबगोल एक छटॉक ऑवलेके पानीमे देनेसे बहुत लाभ होता है।

जब बच्चेको खाँसी हो जाय तो केलेके सूखे पत्तोकी राख बना ले और एक पैसेसे दो पैसे भरतक इस राखको आधी छटॉक घीमे मिलाकर एक पाव कच्चे दूधके साथ बच्चेको पिलाना चाहिये।

मूत्रके साथ खून आनेपर [illegible] आधी छटाँकतक एक पाव कच्चे दूध और [illegible] पिला देना चाहिये।

पेटमे दर्द हो तो चौथाईसे आधी [illegible] तमाकू-पानीमे घोल-छानकर पिलाना ठीक है।

खुजलीकी भयकर बीमारी भी बच्चोंको [illegible] है। इसके लिये निम्नलिखित पाँच पकारकी दवा[illegible]—

१-छटाँकभर लहसुनको आध पाव चने या [illegible] आटेमे मिलाकर पाँच दिनतक खिलाये।

२-सूखे नीमके पत्तोका चूरा नमकमे डालकर [illegible] जौके आटेके साथ मिलाकर देना चाहिये।

३-मसूरकी दाल तथा सुपारी दोनोको [illegible] राखको नीमके तेलमे डालकर शरीरमे लेप करे।

४-पीली सरसोको कपडे धोनेवाले साबुनमे मिला[illegible] शरीरमे लेप कर दे और ४-६ घटे-पीछे फिना[illegible] पानीसे नहला देना चाहिये।

५-एक पाव कडुवे तेलमे एक छटॉक गन्धक मिला[illegible] रख ले और शरीरपर लेप करता रहे।

यदि बच्चेके मसूढे फूल गये हो और उनमे घाव [illegible] हो तो उन्हे माँसे अलग करके नीचे लिखी [illegible] चाहिये—

एक पाव घी और एक छटाँक एप्सम साल्ट [illegible] पिलाना चाहिये। घी न मिल सके तो कोई दूसरी जुलाब[illegible] दे देनी चाहिये। बच्चेके मुँहको फिटकिरीके पानीसे [illegible] दिनमे चार बार धोना चाहिये।

रोग साधारणत. तीन प्रकारके होते हैं—(१) [illegible], (२) बिना छूतवाले साधारण और (३) [illegible] साधारण रोग।

छूतके रोग

छूतवाले रोग बडे भयंकर और बडी [illegible] होते है। इनसे अपने पशुओंको सदा [illegible] इन रोगोसे पशुओंको बचानेके लिये [illegible] चाहिये।

१-जिस इलाकेमे छूतकी बीमारी [illegible] पशु न जाने दे न बाहरके पशु अपने [illegible]।

२-अपने पशुओंको [illegible] सडा-गला चारा-दाना न खिलाये।

३-जहाँ सब पशु पानी पीते हो उस तालाब या नदीमे पानी न पिलाकर अपने पशुओको कुएँसे पानी खींचकर पिलाये।

४-छूतकी बीमारीसे मरे हुए पशुको गाड देना चाहिये।

५-पशु-डॉक्टरसे अपने पशुओको टीका लगवा ले।

१-माता (Rinderpest)

इसके कई नाम हैं, पर इसके मुख्य लक्षण हैं—आँखोसे पानी और मुँहसे लार गिरना, शरीर काँपना, कमरका टेढी हो जाना, मुँहमे छाले पडना और अत्यन्त वदबूदार पतला गोवर होना तथा उसमे कुछ खून आना।

इसकी सर्वश्रेष्ठ दवा टीका लगवाना है। अच्छे जानवरोको 'गोट वीरस या सीरम साइमल्टेनियस मेथड' (Goat virus or serum simultaneous method) से रिंडरपेस्टका टीका लगवा देनेपर फिर यह बीमारी नहीं आती। रोग हो गया हो तो उसकी दवाइयाँ ये हैं—

१-रातको मिट्टीके बर्तनमे एक पाव आँवला भिगोकर सवेरे छान ले, फिर उस पानीमे एक पाव दही, एक छटॉक ईसबगोल और आध पाव शक्कर डालकर दिनमे दो वार खिलाये। आँवला न मिले तो धनियाका पानी काममे लाये।

२-वॉसी घासके बीज १ सेर वारीक पिसवाकर रख ले और आधा पाव सवेरे तथा आधा पाव शामको दही या मट्ठाके साथ देनेसे बड़ा लाभ होता है।

२-जहरी बुखार अथवा गड़ी वा सूत (Anthrax)

यह रोग रक्तके विकारसे होता है। पशुको बेचैनी होती है, आँखें बाहर निकल-सी पडती है, ज्वर बहुत हो जाता है और गोबर काले रक्तसे सना हुआ होता है। रोग होनेपर पशुचिकित्सकको शीघ्र वुलाना चाहिये और तवतक नीचे लिखी दवाइयोमेसे कोई पिलानी चाहिये—

१-तारपीनका तेल आधी छटॉक।

२-फिनाइल आधी छटॉक।

३-अलसीका तेल आधी छटॉक।

४-गरम पानी आध सेर।

३-गलघोंटू (Haemorrhagic Septicaemia)

यह रोग क्या है मानो मृत्युकी सूचना है। इससे गलेमे सूजन हो जाती है और पशुका गला घुटने लगता है। प्राय: यह आश्विनके महीनेमे होता है। यह रोग रक्त-दोषसे होता है। नाक-मुँहसे लार टपकती है। मुँहमे दुर्गन्ध और जीभपर घाव हो जाता है। गोबर-मूत्र बद हो जाता है। इसकी दो-तीन दवाइयॉ हैं, सम्भव है लाभ कर जायँ।

१-दो सेर घी, १ सेर एप्सम साल्ट, १ पाव काली मिर्च और १ पाव काला जीरा मिलाकर पिला दे।

२-जमालगोटेका तेल ३० बूँद, मीठा तेल ५ छटाँक और अलसीका तेल ५ छटॉक पिलाये तथा फिटकिरीके पानीसे मुँह धोये।

३-गन्धकका चूर्ण २ तोले तथा सोठका चूर्ण १ तोला आध सेर भातके या तीसीके माँड* के साथ मिलाकर खिलाना चाहिये। इससे दस्त होकर रोग मिट जाता है।

४-फेफड़ेका बुखार या छूतका निमोनिया (Contagious pleuro-pneumonia)

यह रोग रोगी पशुसे छू जाने, उसके फोडा-फुसीकी मवाद लगने या उसके मुँहके सामने साँस लेनेसे होता है। इससे फेफडेपर असर होता है। पशुकी भूख कम हो जाती है, दूध घट जाता है, हल्का ज्वर सदा वना रहता है। धीरे-धीरे पशु अशक्त होकर पैर पीटने लगता है।

बुखारकी दवा ही इसमे देनी चाहिये। नीम, सफेदा, मरुआके पत्ते या तारपीनका तेल पानीमे डालकर उवालिये और उसकी भापमे पशुको साँस लेने दीजिये। १ हिस्सा तारपीनका तेल १० हिस्सा तिलके तेलमे मिलाकर छातीपर मालिश करनी चाहिये।

ऐसे रोगी पशुका दूध नहीं पीना चाहिये। बहुत लाचारी हो तो खूब उबाल लेना चाहिये।

५-खुर तथा मुँहका पकना (Foot and mouth disease)

इस रोगमे पशुके मुँह तथा खुरमे घाव हो जाते हैं, जिससे पशु चारा-पानी छोड देता है और निर्वल हो जाता है। यह रोग हवाके द्वारा भी फैलता है। एक पशुको होते ही वहुतोको हो जाता है। ऐसी स्थितिमे निम्नलिखित उपायोसे लाभ होता है।

१-अमकली आधा पाव, कटेली पीलीका फूल १ छटाँक—इन दोनोको औटाकर काढ़ा बनाकर पिलाये।

२-पुराना गुड १ सेर तथा सौंफ १ पाव १ सेर पानीमें औटाकर पिलाये।

* पाँच सेर जलमे डेढ पाव तीसी डालकर नरम आँचमे घटा भर उवाले। उवालते समय बराबर हिलाते रहना चाहिये, नहीं तो जल जायगी। फिर पतले कपडेसे छान ले। वस, यही तीसीका माँड है।

३-आधा सेर एप्सम साल्ट गर्म पानीमे डालकर पिलाना चाहिये।

उपर्युक्त दस्तावर दवाइयाँ पेट साफ करनेके लिये हैं। इसके बाद और दवा भी करनी चाहिये—

[१] आँवलेके पानी, बबूलकी छाल-उबाले हुए पानी, फिटकिरी या सुहागेके पानी अथवा तूतियाके पानीसे मुँह और पैर धोये। आँवलेका पानी पिलाये। नीमका तेल या कोलतार पैरोंके घावपर लगाये।

[२] खडियामिट्टी २ छटाँक, कोयला आधी छटाँक, फिटकिरी आधी छटाँक, तूतिया (नीलाथोथा) चौथाई छटाँक—इसके चूरनको घावपर भुरभुराना चाहिये।

[३] कपूर, तारपीनका तेल, नीलाथोथा और पत्थरका कोयला मिलाकर घावपर लगाना चाहिये।

[४] बेरके पत्तोको उबालकर उस जलसे खुरोको धोना चाहिये। खानेके लिये सूखी घास, चोकर या सहज पचनेवाली चीज देनी चाहिये।

६-छूतसे गर्भ गिरना (Contagious Abortion)

समयसे पहले ही गाय-भैंसोका बच्चा फेक देना साधारण बात है, किंतु यह भयानक रोग है। आगे चलकर यह अन्य पशुओमे भी फैल जाता है। तेज भागनेसे, छलाँग मारनेसे, गर्भस्थलपर चोट लग जानेसे, तोपके शब्दसे तथा किसी विषेली चीजके खानेसे गर्भपात हो जाता है।

सबसे पहले, गिरे हुए बच्चेको अलग कर देना चाहिये। मरा बच्चा हो तो दूर गड्ढेमे दबवा देना चाहिये। गरम पानीमे पोटाश, फिनाइल अथवा नीमके पत्ते डालकर पशुके गर्भस्थानको पिचकारीद्वारा धो देना चाहिये। ८ बूँद कार्वोलिक एसिड गरम पानीमे डालकर पशुको पिलाना चाहिये। पीनेको गरम पानी दीजिये। पशुको १ महीनेतक साँडके पास न जाने दीजिये। गर्भपातके साथ पशुने जेर न फेका हो तो निम्नलिखित दवाओसे उसे अवश्य निकालनेका प्रयत्न करना चाहिये—

१-पुराना गुड या साफ शीरा २ सेर, अजवाइन २ छटाँक, सोठ २ छटाँक, पीपल १ छटाँक और पीपलामूल आधी छटाँक—सबका काढा बनाकर गर्मीमे केवल रातको और सर्दीमे दो बार देना चाहिये।

२-जंगली तरोई १ पाव, नमक आधा पाव, अजवाइन आधा पाव तथा गरम पानी आधा सेर दिनमे दो बार देना उपयोगी माना गया है।

३-एक सेर मिश्रीके टुकडे-टुकडे करके गायको [illegible] दे, इसके पीछे बहुत-सा पानी पिलानेसे [illegible] निकल जाता है।

४-दो सेर छिलके सहित [illegible] भी [illegible] जाता है।

५-दो सेर तिल खिलाना भी लाभदायक है।

७-खूनी पेशाब (Red Water)

यह रोग भी कीटाणुओंद्वारा खूनमे विकार पैदा [illegible] होता है। बीमार पशुको काटकर मच्छर जब अच्छे पशुको काटता है, तब उसे भी हो जाता है। पशुको तेज बुखार हो जाता है, आँखे पीली पड जाती हैं और पेशाबमे खून आता है।

इस रोगमे एक नीली दवाका—जिसे 'ट्रिपनब्लू' (Trypen blue) कहते हैं—इंजेक्शन दिया जाता है।

८-दूधका ज्वर (Milk-Fever)

इस रोगमे पशुकी आँखे चढ जाती हैं, वह खडा नहीं रह सकता, पैर पेटके नीचे सिकोड लेता है और सिर एक ओर मोड लेता है। गर्दन सीधी करनेपर फिर वैसा ही कर लेता है। थन सूज जाते हैं और पशु घबराता है।

रसकपूरको उडदके बराबर डली [illegible] केलेको चीरकर उसके बीचमे रख दे और पशुको खिला दे। थोडे कपूरयुक्त या सादे तेलकी मालिश करनी चाहिये।

९-माता या चेचक (Cow-Pox)

यह रोग मनुष्योंकी भाँति पशुओंके लिये उतना [illegible] नहीं है, फिर भी सावधान रहना चाहिये क्योंकि [illegible] है। इस रोगमे शरीरमे दर्द होता है, गाय [illegible] कुछ खाती नहीं, उसे निगलनेमे कष्ट होता है। कभी-कभी पेशाब और गोबर रुक जाता है। थन या शरीरपर छोटी-छोटी फुसियाँ निकलती हैं और १०—१५ दिन बाद [illegible] है। ऐसे पशुको अलग रखकर उसको खाना-पानी देना [illegible] सफाईके साथ करना चाहिये। पशुको कोई [illegible] १ सेर एप्सम साल्ट गरम पानीमे मिलाकर [illegible] ऐसी गायका दूध निकालकर फेक देना [illegible] उबालकर दही, घी बनाकर [illegible]

माता पकनेसे [illegible] पहले [illegible] बडा लाभ होता है। पहले दिन तीन [illegible] दूसरे दिन दो [illegible] केवल १०। बहुत कमजोर [illegible]

खिलाना चाहिये।

१०-गजचर्म (Mange)

यह एक प्रकारकी भयकर खुजली है जो पहले थुई और पूँछपर होती हे, फिर धीर-धीर सार शरीरमे फैल जाती हे। पशु खुजलाते-खुजलाते घाव कर लेता है, चमडी मोटी पड जाती है।

जहाँपर खाज हो, वहाँके बाल काटकर गरम पानी और साबुनसे साफ कर देना चाहिये, फिर गोबर और सरसोका तेल मिलाकर तथा पशुको धूपमे खडा करके १०-१५ मिनटतक मालिश करनी चाहिये। मालिशका तेल इस प्रकार वना ले तो और भी अच्छा है। गन्धक १ भाग, घी या तिलका तेल ८ भाग और नीमका तेल चौथाई भाग। गन्धकको महीन पीसकर सब चीजे मिला लीजिये और आगमे भलीभाँति गरम करके मालिश कीजिये। खानेकी दवा भी देनेसे जल्दी लाभ होगा।

खानेका नमक १ छटाँक, महीन पिसी हुई गन्धक आधा तोला आध सेर पानीमे घोलकर पिला देना चाहिये या रोटीमे रखकर खिला देना चाहिये।

खुजली और दाद भी ऐसे ही रोग है, पर गजचर्ममे कम भयकर है। इनकी भी दवा प्राय. वही है।

११-कीड़ोंमें दुंबल या मनिया फूटना
(Warble Flies)

जिन पशुओको खरहरा नही होता या मल-मलकर जो नहलाये नहीं जाते, उनको यह रोग हो जाता ह। वर्षाके अन्तमे इस रोगके कीडे शरीरपर आ जाते ह और गर्मीके आरम्भमे अच्छी तरह वढ जाते है। इस रोगसे पशुको कोई विशेष कष्ट तो नही होता, किंतु उसकी खाल रद्दी हो जाती हे। अत: इस रोगसे पशुकी रक्षा करनी चाहिये।

चूने और तमाकूके गर्म पानीसे पहले पीडित स्थानको धो देना चाहिये, फिर ढाई सेर पानीमे एक छटाँक ताजा चूना मिलाकर उसमे एक पाव महीन पीसी हुई तमाकू खूब मिलाकर घोल लेना चाहिये। २४ घटे रखनेके बाद पतले कपडेसे छान लेना चाहिये और तब चूना पोतनेवाली मूँजकी कूँची बनाकर उससे यह दवा अच्छी तरह उस स्थानपर लगानी चाहिये। ध्यान रखना चाहिये कि दवा छेदोंसे भीतर पहुँच जाय। यह दवा तैयार न हो तो नीमका तेल लगा देना चाहिये। २ तोला खारी नमक और आधा तोला गन्धक एक पाव गुनगुने पानीमे घोलकर पशुको एक सप्ताहतक पिलाना चाहिये। कब्ज करनेवाली खुराक कम देनी चाहिये।

१२-जूँ (Lice)

यह रोग भी स्पर्शमात्रसे एक पशुसे दूसरे पशुको लग जाता है, किंतु यह उतना हानिकारक नहीं होता। यह प्राय: बच्चोको होता है। १ भाग तमाकू और २ भाग हाथ-मुँह धोनेका साबुन ४० भाग पानीमे डालकर उबाल ले, फिर ठडा हो जानेपर १ भाग मिट्टीका तेल मिलाकर मालिश करे।

१३-किलनी (Ticks) लग जाना

थन, पूँछ, कान तथा अन्य स्थानोंमे किलनी चिपट जानेसे पशुको वडा कष्ट होता है और उसका दूध कम हो जाता है। पशुओको किलनियोके कष्टसे वचाना आवश्यक है।

१-एक भाग नील, २ भाग गन्धक या वैसलीन या कडुआ तेल ८ भाग मिलाकर लगानेसे किलनी मर जाती है।

२-नमक ४ भाग, मिट्टीका तेल १ भाग और कडुआ तेल ४ भाग मिलाकर लगानेसे भी किलनियोका नाश होता है।

बिना छूतके साधारण रोग

यद्यपि बिना छूतके रोग उतने भयकर नहीं होते जितने कि छूतवाले, फिर भी इनमेसे कोई-कोई ऐसा हो जाता है, जो आगे चलकर वढ जाता है और पशुको उससे बचाना कठिन हो जाता है। रोगके समय दवाकी अपेक्षा पशुके रहन-सहन तथा खाने-पीनेकी सुन्दर व्यवस्था होनी चाहिये। दवा तो केवल रोगको थामने अथवा पशुको असली हालतमे जल्दी लानेमे सहायक मात्र है, वास्तवमे उचित देखभालसे ही अधिकाश रोग नष्ट हो जाते हैं। पशुके रहनेका स्थान साफ रखना, उसे हल्का, सहजमे पच जानेवाला और स्वादिष्ट भोजन तथा कुएँका स्वच्छ जल पीनेको देना एव उसे अलग रखकर अधिक सर्दी-गर्मीसे वचाना ही उसकी देखभाल करना है। यह जानवर है, इसका रोग यो ही अच्छा हो जायगा—ऐसा न सोचकर उसके रोगकी उचित चिकित्सा करनी चाहिये।

१-अपच

कभी सर्दी-गर्मी लगनेसे या कम-ज्यादा खा लेनेसे पशुको अपच हो जाता है। ऐसी दशामे पशु पूरा खाना नहीं खाता, ठीकसे जुगाली नही करता और सुस्त रहता है। ऐसी स्थितिमे—

खारा नमक आध सेर और २ तोला सोठको कूट-पीसकर आध सेर गुनगुने पानीमे घोलकर पिला देना चाहिये। इससे दस्त होने लगेगे। दस्त न हो तो आधी खुराक फिर देनी चाहिये।

दस्त होनेके अगले दिनसे सोठ १ तोला, राई १ तोला, अजवाइन २ तोला, सेधा या साँभर नमक सवा तोला कूट-पीसकर पावभर गरम पानीके साथ कुछ दिनतक सुबह पिलाना चाहिये। यह दवा पिलानेके २ घटे वादतक पशुको पानी नहीं पिलाना चाहिये।

२-अफरा या पेट फूलना

यह रोग अधिक चरनेसे या वहुत चारा-दाना खा जानेसे होता है। पशुका पेट फूलकर ढोलकी तरह हो जाता है। वायीं ओर सूजन हो जाती है। इसमे नीचे लिखी कोई दवा पिलानी चाहिये।

१-आध सेर एप्सम साल्ट या १ सेर नमक सरसो या रेडीके तेलमें मिलाकर।

२-आमका अचार आध पाव और उसका तेल आध पाव।

३-गाजरकी काँजी १ सेर।

४-आध पाव राई पीसकर गरम पानीके साथ।

५-सोठ १ छटाँक, हींग ४ माशे, काला नमक १ छटाँक, लाहौरी नमक १ छटाँक, सोचल नमक १ छटाँक—सवको पीसकर गरम पानीके साथ।

३-पेटमें कीड़े पड़ जाना (Tape Worms)

कभी-कभी पशुओके पेटमे केचुए (कीडे) पड जाते है, जिससे वह दुर्बल हो जाता है। ये कीडे गोबरके साथ निकलते हैं। गोबरमे कीडे दीख पडे तो इस प्रकार दवा करनी चाहिये।

१-सुपारीका चूर्ण ४ तोला १ सेर दूधमे मिलाकर दिनमे दो बार ३ दिनतक दीजिये।

२-आधी छटाँक तारपीनका तेल और आध सेर अलसीका तेल हर आठवे दिन महीने भरतक पिलाइये।

४-पेचिश या आँव पड़ना (Dysentery)

जब पशु बार-बार रक्त तथा आँव-मिला हुआ गोवर करे, तब समझना चाहिये कि उसे पेचिशका रोग हो गया है। इसमे—

पहले आधा सेर एप्सम साल्ट गरम पानीके साथ दे या सरसो, रेडी, अलसी और तिलमेसे—किसीका आध सेर तेल १ छटाँक सौंफके साथ पिला दे, फिर एक छटाँक बेलगिरी ओर एक छटाँक ईसबगोलके छिलकेको एक सेर चावलके माँडमे मिलाकर पिलाना चाहिये या सूखा आँवला २ तोला, सोठ १ तोला और शक्कर या बताशा २ तोला आध सेर पानीमे पीस-छानकर दे अथवा जस्ता दो आना भर खडिया मिट्टीका चूर्ण ढाई तोले और अफीम चार आना भर भातके [illegible] माँडके साथ दिनमें दो बार दे। बछडे-बछडीके लिये खडिया मिट्टी [illegible] तोला, अफीम दो आना भर और रेवाचीनी १२ आना भर चूर्ण करके तीसीके माँडके साथ देना चाहिये।

५-पेट चलना या दस्त लगना (Diarrhoea)

इस रोगवाला पशु पतला गोवर करता है। यह अजीर्णका चिह्न है। जल्दी दवा न करनेसे रोग बढ जानेसे पशु मर जाता है। इसके बचावके लिये—

१-आधी छटाँक पीसा हुआ काला नमक और एक तोला हीरा कसीस मिलाकर जौके आटेमे चार दिनतक देना गुणकारी है।

२-सौंफ एक तोला, अजवाइन एक तोला, इलायची बडी एक तोला तथा चिरायता तीन तोला कूटकर आध सेर जौके आटेमे चार दिनतक खिलाये।

३-चार आने भर पीसा हुआ नीलाथोथा आध सेर गरम पानीमे घोलकर पिलाना चाहिये।

४-एक छटाँक सूखा या हरा बेलका गूदा तथा खडिया मिट्टी सवा तोला आध सेर गाके मट्ठेमे मिलाकर सवेरे-शाम पिलाये।

५-कत्था आधी छटाँक, ईसवगोल एक छटाँक, खडिया मिट्टी एक छटाँक, अफीम २ माशा, बेलगिरी एक छटाँक और रसौत दो माशे—इन सबको कूट-पीसकर दिनमे दो बार देना चाहिये।

६-पलासका गोद सवा तोला, चिरायता पौन तोला, खडिया मिट्टी ६ आना भर, अफीम १ आना भर भातके माँडके साथ खिलाना चाहिये।

६-गलेमें कुछ अटकना (Throat-Choking)

कभी-कभी कोई कडी या गोल चीज पशुके गलेमे अटक जाती ह, जिससे पशु खाना-पीना छोड देता है। [illegible] गला घुटने लगता हे। यदि शीघ्र ही अटकी हुई चीज निकालनेका पयत्न न किया गया तो पशुकी मृत्यु हो जाती है। इसके लिये—

पहले मुँहमे हाथ डालकर चीज बाहर निकालनेकी [illegible] करनी चाहिये। बाहर न निकले तो लंबी-[illegible] और [illegible] लकडीसे धक्का देकर उसे भीतर ठेल देना चाहिये। [illegible] वेसलीन या तेलकी मालिश करे और [illegible] पशुको पिला दे या थोडे तिलके [illegible]

पिला देना चाहिये।

७-पित्ती उछलना

मनुष्योकी भाँति पशुओको भी कभी-कभी पित्ती उछल आती है। शरीरमे वडे-वडे चकत्ते पड़ जाते हैं और खाज होने लगती हैं। ऐसे पशुको जुलावकी दवाई देकर कम्वल या झूल उढ़ा देना चाहिये फिर नीचे लिखेमेसे कोई एक दवा पिलानी चाहिये।

१-आध पाव गेरू और आध पाव शहद पाव भर गरम पानीके साथ पिलाये।

२-नीमके पत्ते ३ तोला, अडूसा (बासा)के पत्ते ३ तोला, शीशमके पत्ते ३ तोला—इन सबको आध सेर पानीमे उबाल ले, जब डेढ़ पाव रह जाय तब ठडा करके पिला दे।

८-खाँसी (Bronchitis)

पशुओके समस्त रोगोमे यह बहुत बुरा रोग है। इस रोगके अधिक वढ जानेसे गाभिन पशु कभी-कभी बच्चा फेक देता है। इस रोगकी चिकित्सा तुरत करनी चाहिये—

१-नौसादर, सोठ तथा अजवाइन एक-एक तोला लेकर पावभर गरम पानीके साथ पिलाने चाहिये।

२-एक छटाँक नमककी डली लेकर कुछ आकके पत्तोमे लपेटकर रातमे भून लीजिये। सबेरे नमकको पावभर गरम पानीके साथ लगातार ३ दिनतक पिलाइये।

३-एक छटाँक सूखे अनारके छिलकेको पीसकर एक छटाँक मक्खनके साथ खिलाइये।

४-केलेके सूखे पत्तोकी राख २ तोला, मक्खन ४ तोला तथा कच्चा दूध १० तोला ३ दिनतक दीजिये।

५-आध सेर अलसीके तेलके साथ १ तोला तारपीनका तेल पिलाना भी लाभदायक है।

६-कपूर छः माशा, कलमी शोरा एक तोला, अजवाइन २ तोला, सोठ २ तोला, नौसादर १ तोला, अलसी पीसी हुई १ छटॉक—इन सबको कूट-पीसकर गुड़के साथ दिनमे तीन वार खिलाना चाहिये।

९-निमोनिया (Pneumonia)

वहुधा यह रोग शीतकालमे होता है। सर्दी लग जानेसे पशुको ज्वर आ जाता है। नाकसे पानी वहता है और खाँसी भी कुछ-कुछ आने लगती है। इस स्थितिमे पशुको गरम स्थानमे रखना चाहिये और पीठपर कम्वल या झूल डाल देना चाहिये। ओषधियाँ नीचे लिखी हैं—

१-सोठ २ छटॉक, अजवाइन २ छटाँक तथा चायकी पत्ती आधी छटॉक, मेथी २ छटॉक तथा गुड या शीरा आध सेर औटाकर दिनमे २ बार पिलाना चाहिये।

२-आध सेर पीसा हुआ नमक और एक छटाँक अजवाइन लेकर दो बलवान् पुरुषोसे मालिश करा दे।

३-कपूर ४ माशा तथा लहसुन एक पाव—दोनोको मिलाकर खिला दीजिये।

४-खानेको प्याज दे और उसका पानी निकालकर तथा नमक डालकर पिलाये।

५-आध सेर अलसी और एक सेर चावल दोनोको उवालकर गरम पानीमे मिलाकर खिलाये।

१०-पेशाबमें खून आना

बीमारी, चोट लगने या अधिक गर्मीसे यह रोग हो जाता है। इस रोगमे बबूलके पत्ते ४ छटॉक और हल्दी २ तोला पीसकर सुवह-शाम पिलाये अथवा आध सेर दूधमे बारीक पीसी हुई फिटकिरी १ तोला मिलाकर कई दिनतक पिलाये।

११-पेशाब न होना

यह रोग पुट्ठेकी कमजोरी या पथरी हो जानेसे होता है। सूखा चारा खिलाने और कम पानी पिलानेके कारण भी हो जाता है। इसमे शोरा १ तोला, धनिया २ तोला और कपूर ३ माशा घोट-पीसकर ठडे पानीमे घोलकर पिलाना चाहिये। नीमके पत्ते उबालकर और नमक मिलाकर मूत्र-स्थानपर लगाइये।

१२-पेशाब टपकते रहना

यह रोग भी प्रायः पथरी हो जानेसे होता है। अतः पशुओंके डॉक्टरसे ऑपरेशनद्वारा पथरी निकलवा डालनी चाहिये। दवा नीचे लिखी हे—

१-मक्काकी वाल २ छटॉक तथा काली मिर्च एक तोला पीसकर सवेरे-शाम पिलाइये।

२-मक्काकी बाल न मिले तो खरवूजेके छिलके एक पाव एक तोला काली मिर्चके साथ पीसकर पिलाइये।

१३-फोतोंका सूजना

कभी चोटसे, कभी बादीसे या कभी इस रोगके कीटाणुओसे फोते सूज जाते है। पशुको बड़ा कष्ट होता है, वह पिछले पैर फैलाकर चलता है। निम्न उपचार करने चाहिये—

१-गीले कपडेसे बार-बार ठडा पानी फोतोपर डालकर ठडक पहुँचाइये।

२-हल्दी, चूना, फिटकिरी—सबको बारीक पीसकर कड़ुआ तेलमे मिलाकर गरम कर ले और फोतोपर सुहाता हुआ लेप करे।

३-इमलीके पत्ते और नमक पीसकर गरम कर ले और फोतोपर लगा दे।

यदि बादीसे सूज गये हो तो रेडीका तेल ३ छटाँक और त्रिफलाका पानी पावभर मिलाकर पिलाइये तथा तमाकूके पत्ते गरम करके बाँधिये।

१४-मिरगी (Apoplexy)

यह रोग प्राय बच्चोंको होता है या किसी कारणसे सिरकी ओर रक्तका बहाव हो जानेसे वडे पशुओको भी हो जाता है। पशु सहसा काँपने लगता है, गिर जाता हे, नेत्र लाल हो जाते हैं। इसके लिये—

रोगीको दिनमे चार वार ठडे जलसे स्नान कराना चाहिये। दवाएँ नीचे लिखी हैं—

१-बबूल और बेरके आध-आध पाव कोमल पत्ते पीसकर आध सेर ठडे पानीमे पिलाइये।

२-ढाकके वीज एक तोला, अनारकी छाल एक तोला, सौंफ एक तोला, अमलतास १ तोला—इन सबको आध सेर पानीमे पकाये, जव पानी पावभर रह जाय तब गुनगुना पानी पिला देना चाहिये। इसके वाद मीठा सरसो या अलसीका आध सेर तेल तथा आधी छटाँक तारपीनका तेल पिलाये। बेहोशीकी दशामे रीठेका छिलका पीसकर सुँघावे या कडेकी राखमे आकका दूध मिलाकर सुँघाये।

१५-ज्वर (Fever)

खाने-पीनेकी गडबडीसे, मौसम वदलनेसे या मच्छर काटनेसे पशुको ज्वर हो जाता हैं। इसमे निम्न उपचार करे—

१-आठ ऑस एप्सम साल्टमे ४ माशा कुनैन मिलाकर गरम पानीमे घोल ले, फिर ४ माशा कपूर और ८ माशा शोरा मिलाकर दिनमे ३ बार पिलाये।

२-गोमा घासके फूल एक छटाँक ओर काली मिर्च एक तोला आध सेर पानीमे गरम करके पिलाये।

३-शोरा सवा तोला, नमक ढाई तोला तथा चिरायता ढाई तोला आध पाव राव या गुडमे मिलाकर खिला दीजिये।

१६-बिल्ल या सफेद झागवाला कीड़ा

घासमे एक प्रकारका कीडा होता हे, जिसको खा जानेसे पशुका शरीर अकड जाता है, हाथ-पैर न हिलाकर वह चुपचाप पडा रहता है। ऐसी दशामे उसे आरामसे पडे रहने देना चाहिये। उसके ऊपर कम्वल डालकर ऊपर छाया भी कर देनी चाहिये। इसके लिये निम्न उपचारका प्रयोग कर सकते हें।

१-एक सेर प्याज खिलाकर थोडी देरके लिये उसका मुँह बाँध दीजिये।

२-आध पाव मछली पानीमें घोलकर [illegible]।

३-एक तोला पिसी हुई काली मिर्च [illegible] मिलाकर और गरम करके पिला दीजिये।

१७-ताव या घामडा (Sunstroke)

कडी गरमीमे लू लगनेसे या धूपमे अधिक [illegible] काम करनेमे यह रोग हो जाता हैं। पशु छाया या पानीम [illegible] वार वैठता हैं, कम खाता हैं और दुवला होता जाता है। इसके लिये नीचे लिखे उपचारका प्रयोग करे।

१-कच्चे आमका पना सवेरे-शाम पिलाये।

२-पावभर सफेद तिल रातको भिगो दीजिये और [illegible] पीसकर सात दिनतक पिलाइये।

३-शीतकालमे यह रोग हुआ हो तो पुरानी मूँज १ [illegible] काटकर उसे एक सेर गुडमे डालकर अच्छी तरह औटाना चाहिये और दिनमे दो वार ४ दिनतक देना चाहिये या पशुकी पूँछमे थोडा नशतर लगाकर २ रत्ती अफीम भर दे और पट्टी बाँध दे।

४-यदि ग्रीष्म-ऋतु हो तो आध सेर मसूरकी दाल उवालकर ओर ४ तोला नमक डालकर ४ दिनतक [illegible]।

५-शीशम, लिसोडा ओर बबूल—तीनोंकी आध-आध पाव पत्तियाँ लेकर २४ घटे पानीमे पडी रहने दे, फिर निकालकर आध पाव सूखे आँवले और एक पाव [illegible] डालकर पिला दे।

६-पशुकी साँस तेज चलती हो तो थोडी-सी [illegible] कडुवे तेलमे भिगोकर खिलाना लाभदायक है।

१८-विष खा जाना (Poisoning)

कभी-कभी कोई पशु चारके साथ [illegible] कीडा खा जाता ह या कोई दुष्ट मनुष्य विष खिला देता है, [illegible] दशामे नीचे लिखी दवाइयाँ करनी चाहिये—

१-डेढ सेर घीमे एक सेर एप्सम [illegible] चाहिये।

२-कोई जुलाबकी दवा दे देनी चाहिये।

३-एक सेर [illegible] अच्छी तरह मिलाकर पिलाइये और [illegible] एक पाव तथा एक तोला [illegible]

१९-चरीद्वारा विष खा जाना (C[illegible])

[illegible] छोटी हो जाती है, तब इनमे [illegible]

जाता है वही चरी खा लेनेसे पशुको विष चढ जाता है और वह तत्काल गिर पडता है। दॉत-जीभ काले पड जाते हैं। इस स्थितिमे—

पशुको शीघ्र किसी तालाब या नदीमे डाल दे। यह सम्भव न हो तो उसके ऊपर खूब पानी छोडे। गीली जगहसे कीचड लेकर सारे शरीरपर पोत दे। जुलाबकी कोई ओषधि दे।

१-आध सेर सज्जी २ सेर पानीमे घोलकर पिलाये।

२-एक सेर कड़ुआ तेल पिलाये या एक सेर चूल्हेकी (लकडीकी) राख पानीमे घोलकर पिलाये।

३-आध सेर घी और दो सेर दूध पिलाये या आध पाव कत्था एक सेर ठडे पानीमे घोलकर पिलाये।

४-काली मिर्च १तोला, हींग १ तोला, सोंठ १ तोला, अजवाइन १तोला, काला नमक २ तोला—सबको महीन पीसकर आध सेर गुनगुने पानीमे मिलाकर पिलाना चाहिये।

२०-लकवा (Paralysis)

इस रोगमे पशुका आधा या सारा अङ्ग निर्जीव हो जाता है। उस स्थानपर सुई चुभोनेसे दर्द नहीं होता। इसके लिये निम्न उपचारोको काममे लाना चाहिये—

१-शरीरको गरम रखना और लकवा मारे हुए अङ्गपर कपूर तथा मीठे तेलकी मालिश करना।

२-कुचला ४ माशा, सोठ ६ माशा, हीरा कसीस ६ माशा, नमक आधी छटॉक—सबको कूट-पीसकर आध सेर गरम पानीमे घोलकर पिलाइये।

३-आधी छटॉक सरसो पीसकर पानीमे लेप बना लीजिये और लकवेके स्थानपर लगाइये।

२१-गठिया या जोड़का दर्द (Rheumatism)

सर्दीसे, वर्षामे भीगनेसे या रक्त-विकारसे यह रोग हो जाता है। पैरोके जोडोपर सूजन आ जाती है। इसमे निम्न उपचारोंका प्रयोग कर सकते हैं—

१-दो सेर सूखी या ३ सेर हरी गोमाबूटी (मलडोडा) को कतरकर ५ सेर पानीमे औटाये, १ सेर रह जानेपर बूटी निकालकर फेक दे। दो छटॉक पिसी हुई काली मिर्च और एक पाव काला नमक डालकर ७-८ दिनतक पिलाये।

२-एक सेर कड़ुई तरोई ५ सेर पानीमे उबाले, जब पानी एक सेर रह जाय, तब उसे छानकर आध पाव काली मिर्च तथा पावभर काला नमक डालकर दो भाग कर ले और सवेरे-शाम पिलाये।

३-एक सेर पिसी हुई मेथीमे आध सेर गुड और एक छटॉक अजवाइन मिलाकर १५ दिनतक खिलाये।

४-दो घुँघची (सोना तौलनेवाली रत्ती) पीसकर आध सेर गुडमे ४ दिनतक खिलाना चाहिये।

५-एक तोला कपूर, एक छटॉक तारपीनका तेल तथा एक पाव तिलके तेलको खूब मिलाकर मालिश करना चाहिये।

६-एक पाव लहसुन कुचलकर आध सेर तिलके तेलमें पकाये और फिर तेल छानकर मालिश करे।

२२-प्रसूतका ज्वर

यह रोग प्रसूतके दुःख-दर्दसे बच्चेकी उतरी हुई झिल्ली भीतर रहकर सड जानेसे अथवा ब्याते समय ग्वालेके मैले-कुचैले हाथ लगकर नाखूनोंका विष चढनेसे हो जाता है। इस स्थितिमे पहले घी-मिली हुई दस्तावर दवा देनी चाहिये, फिर थोडी गिल्सरीन और जरा-सा कार्बोलिक एसिड पानीमे डालकर पिलाना चाहिये।

सोठ, अलसी तथा काली मिर्च एक-एक तोला एव नौसादर आधा तोला कूट-पीसकर एक पाव गुड़में खिलाइये।

पीनेके लिये एक तोला कलमी शोरा मिलाकर गुनगुना पानी दीजिये।

२३-थन सूजना (Udder Inflammation)

कभी-कभी बच्चेके जोरसे मुँह मार देनेसे, दूसरे पशुके सींग मार देनेसे या दूधका अत्यधिक जोर होनेपर थन सूजकर कडे हो जाते हैं। इसमे—

१-एक छटॉक कलमी शोरा आध सेर गरम पानीमे मिलाकर तीन दिनतक पिलाना चाहिये।

२-नीमके पत्तोके उबले हुए पानीसे सेक करनेके बाद गेरू और अजवाइन पानीमे मिलाकर पकाये और फिर लेप कर दे।

२४-योनिमें कीड़े पड़ना

नीमके पत्ते पानीमे उबालकर उससे पिचकारीद्वारा धोइये, फिर तारपीनका तेल और मीठा तेल मिलाकर रुईके फाहे डुबोकर चिमटीसे अदर कर दीजिये। इस प्रकार सवेरे-शाम कई दिनोतक दवा लगानी चाहिये।

२५-बच्चेदानीका बाहर निकलना

बुढापे या कमजोरीके कारण या जेर गिराते समय जोर लगानेके कारण बच्चादानी बाहर निकल आती है। जब ऐसा अवसर आये, तब उसे फिटकिरीके पानीसे अच्छी तरह धोकर भीतर दबा दे और उस स्थानपर एक मुसका चढा दे। साथ ही निम्न उपाय करे—

१-आध पाव फिटकिरी पानीमे घोलकर पशुको पिलाये।

२-एक पाव सूखा कतीरा गोद सवेरे-शाम खिलाकर आधी छटाँक रसोत २ सेर पानीमे घोलकर पिलाये।

३-आधा तोला सोठ और एक तोला कालीमिर्च पावभर गरम घीमे मिलाकर ३-४ दिनतक पिलाये। बच्चेदानीको भीतर करके पशुको ऐसा खडा करे कि पिछला भाग ऊँचा रहे।

२६-साडू रोग (Garget or Mammitis)

दूधवाले पशुओके लिये यह बहुत बुरा रोग है। इसमे थन सूज जाते हैं। पशु थनोमे हाथ नहीं लगाने देता। यह रोग कुसमयपर या बार-बार दूध निकालनेसे, थनोमे चोट लगनेसे, गोबर करते समय पिछले पुट्ठोपर लाठी मारनेसे, दुहते समय थन जोरसे खींचनेसे या धानका छिलका खा जानेसे होता है। इसमे—

१-रेडीका तेल गरम करके थनोपर मले।

२-पोस्ताके एक डोडेको तथा नीमके पत्तोको सेरभर पानीमे डालकर भापसे सेक करे।

३-आध सेर दही और पावभर मीठा तेल ३ दिनतक शामको देना चाहिये।

४-आध सेर सहजनकी पत्ती घोट-छानकर आधी छटाँक काली मिर्च और एक छटाँक नमक मिलाकर ३ दिनतक देना चाहिये।

५-आध सेर घी, एक छटाँक काली मिर्च और आध पाव नीबूका रस ३ दिनतक पिलाये।

६-जाडेकी ऋतु हो तो नमक, तेल और अजवाइन डालकर काँसीके बर्तनसे पुट्ठेपर मालिश करे।

७-बीमारी अधिक बढ गयी हो तो १ सेर घी, ४ सेर गुड या शीरा, आध सेर काला जीरा तथा आध सेर कालीमिर्च डालकर पिलाना चाहिये।

८-दूध निकालकर फेक देना चाहिये। पीव पड गयी हो तो चिरवाना ठीक है।

२७-मुँहसड़ी या अँगियारी

यह भी थनोका रोग है और इसके भी वे ही कारण हैं, जो साडू रोगके हैं। थनके सोतके ऊपर एक छोटी पीली-सी पपडी जम जाती है और फिर फुसीकी तरह हो जाती है। इसके लिये—

१-रेडीके तेलमे थोड़ा नमक डालकर गर्म करे और दिनमे ४-५ बार मालिश करे।

२-नीमके पत्ते गरम करके भापसे सेके।

३-एक सेर पानीमे एक [illegible] पिलाना चाहिये।

२८-चन्री

यह बहुत बुरा और हानिकारक [illegible] ऊपर छोटी-सी एक गिल्टी होती है, फिर [illegible] पीव पड जाती है। गिल्टी फूटकर थनमे छेद हो [illegible] लिखी दवाइयाँ भर देनी चाहिये—

१-आकका दूध, साँपकी केचुल और [illegible] बराबर पीसकर घावके ऊपर लगा दे और [illegible] बाँध दे।

२-नीमकी कोपलोको पीसकर एक टिकिया [illegible] गायके घीमे लाल करे। फिर टिकिया फेंककर उस [illegible] दिनमे ४-५ बार लगाये।

२९-थनका मारा जाना (Blind Teats)

थनकी किसी बीमारीसे थन मारा जाता है और दूध [illegible] निकलता। यह रोग है तो असाध्य, किन्तु सम्भव है [illegible] दवाइयाँ लाभ कर जायँ।

जब थन मारी हुई गाय गाभिन हो जाय, तब [illegible] सरसोका तेल प्रत्येक शुक्ल पक्षकी दूजको [illegible] बराबर देते रहना चाहिये। बच्चा देनेके [illegible] छटाँक हींग चने या जौकी रोटीमे खिला दे।

यदि किसी पशुका थन जल्दी ही दो-[illegible] हुआ हो तो आध पाव काली जीरी और आध [illegible] पीसकर आध सेर गरम पानीमे मिलाकर [illegible] दिनतक देना चाहिये। अथवा ४-५ [illegible] पाव घीमे मिलाकर दोनो समय दीजिये।

३०-थनोका कट जाना (Sore Teats)

दूध पीते समय बच्चेका दाँत [illegible] लगनेसे थनपर घाव हो जाता है, इसको [illegible] चाहिये—

१-तवा गर्म करके थनके नीचे [illegible] छोडे। उसके भापसे लाभ होगा।

२-थोडा मक्खन या घी [illegible] थोडा नमक डालकर दूध दुहनेके [illegible]

३१-बच्चा देनेके पीछे दूध न उतरना या [illegible]

गाभिन होनेपर [illegible] बंद कर देते हैं, जिससे थनोंमे [illegible] जाता है। अतः धीरे-धीरे [illegible]

१-गरम घी और नमकसे थनों और हवानेपर मालिश करना चाहिये तथा दूध थोडा-बहुत अवश्य निकालना चाहिये।

२-एक सेर सनके बीजका आटा १ सेर शीरेमे मिलाकर ३ भाग करे और दिनमे ३ बार आठ रोजतक दे तो पूरा दूध उतर आता है।

३-गायका दूध २ सेर, गुड या शीरा १ सेर, गेहूँका दलिया १ सेर, मोटा चावल १ सेर—इन सबको २ सेर पानीमे औटाकर आधा सबेरे और आधा शामको देनेसे अच्छी जातिके पशुका दूध अवश्य बढ जाता है।

३२-बॉझपन (Barrenness)

पैदा होते ही पूरा दूध न पानेपर, अच्छी खुराक न मिलनेपर, समयपर सॉंड न मिलनेपर या जुडवाँ बच्चोमेंसे एक नर तथा एक मादा होनेपर उस मादाको प्रायः बाँझपनका रोग होता है। इसमे—

१-आधी छटाँक फास्फेट सोडा गरम पानीमे डालकर योनिको बराबर धोते रहना।

२-किसी निपुण चिकित्सकसे गर्भाशयका मुँह खुलवा देना।

३-गायको बराबर सॉडके साथ रखना।

४-दो सेर सनके हरे पत्ते रोज खिलाना।

५-एक सेर सनके बीजका आटा आध सेर गुडमे मिलाकर १५ दिनतक खिलाना।

६-सात छुहारोकी गुठली बासी जौकी रोटीमे रखकर सात दिनतक खिलाना।

७-दो सेर अङ्कुर निकले हुए गेहूँ या जौ १५ दिनतक खिलाना।

८-ढाई पाव मेथी महीन पीसकर पानीमे लुगदी बनाकर ३-४ दिनतक सवेरे देना।

३३-गायका बार-बार गर्भस्त्राव होना

यह रोग गरम खुराक या गायकी गर्भ-धारणकी शक्ति कम हो जानेसे होता है। गर्म दूर करनेके लिये गायको ठडी खुराक देनी चाहिये। एक बार गाभिन होते ही पावभर घीमे आधा तोला पिसी हुई काली मिर्च मिलाकर दीजिये। इसके बाद नीचेकी दवा दे।

१-गाभिन होनेके बाद दो सेर लिसोडेके हरे पत्ते खिला दीजिये। जिस दिन गाभिन हो, उस दिन खाना न दीजिये और दे तो कम तथा ठडा।

२-गाभिन होनेके २-१ दिन पहले अंकुर निकले हुए ४ सेर गेहूँ या जौ खिला दीजिये। इसे ४-५ दिनतक खिलाइये।

३-पावभर सफेद तिल रातमे भिगो दे, सबेरे घोट-पीसकर गाभिन होनेके दिन और २ दिन बादतक पिला दें। सर्दीके दिनोमे इसे नहीं देना चाहिये।

३४-सर्पका काटना

सर्पके काटनेका विश्वास हो जानेपर ५ भाग परामाग्नेट् पोटाश ९५ भाग पानीमें मिलाकर काटी जगहके भीतर पिचकारीसे भर दे और काटी जगहके ऊपर रस्सीसे कसकर बाँध दे।

३५-कुत्तेका काटना

पशुको कुत्तेके काटनेसे जो घाव हो जाय, उसको कास्टिक पोटाशसे जला देना चाहिये। यह दवा न मिले तो लाल मिर्चके बीज घावमें भर देना चाहिये।

शरीरके ऊपरके साधारण रोग

पशु परस्पर लडते-भिडते रहते हैं, जिससे उनके किसी अङ्गपर चोट आ जाती है। चोट आदि न लगनेपर भी कभी-कभी ऑख, कान आदिमे कोई विकार हो जाता है। रक्तके विकारसे भी कहींपर सूजन हो जाती है। इन सब रोगोंको साधारण समझकर उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। इनको अच्छा कर डालना ही ठीक है, नहीं तो आगे चलकर पशुको भारी कष्ट हो सकता है।

१-सूजन और दर्द

चोट, सर्दी, गर्मी या रक्तके विकारसे शरीरके किसी भागपर सूजन आ जाती है। चोटकी सूजन हो तो नीमके पत्ते उबालकर उस पानीसे सेकना चाहिये, फिर सुहागा तवेपर फुलाकर तिल, घी, वैसलीन या मक्खनके साथ सूजनकी जगहपर चुपड देना चाहिये।

यदि रक्त-विकारसे सूजन हो गयी हो तो नीमके पत्ते उबालकर सेके। फिर १ तोला गेरू, २ तोला मकोयके रसमे मिलाकर लेप कर दे या हल्दी-चूना मिलाकर लेप करे।

भीतरके किसी भागमे दर्द हो तो पंद्रह मिनटसे आधे घटेतक फलानेल या कम्बलको गरम जलमे डुबाकर निचोडकर उसका सेक करना चाहिये। फिर सूखे कपड़ेसे भलीभाँति पोछकर सरसोका तेल ४ भाग और तारपीनका तेल २ भाग खूब मिलाकर मालिश करनी चाहिये।

२-रसौली और मस्सा

कई बार खालके नीचेसे गेद-सी बनकर सूजती या बढ़ती चली जाती है या काले-काले मस्से निकल आते हैं। इनसे

पशुको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं होता, पर उसकी खाल बिगड जाती है। इससे इनको हटाना चाहिये।

रसौलीमे सूजनकी भाँति सेक करना चाहिये। इससे न दबे तो ३ हिस्सा पानी और १ हिस्सा कच्चे पपीतेका दूध मिलाकर रख लीजिये और रुईके फाहेसे दिनमे कई बार लगाइये।

मस्सेपर नाइट्रिक एसिड, पपीतेके दूधमे मिला हुआ पानी या चूना-सज्जीमे थोडा पानी डालकर दिनमे कई बार लगाइये। चूना-सज्जी किसी काँचके बर्तनमे या सीपियामे रखे।

३-फोड़ा-फुंसी और घाव (Abscess)

किसी पशुको फोडा हो जाय तो उसे अच्छी तरह पक जाने दीजिये। फिर चीरकर उसकी पीब निकाल देना चाहिये। इसके बाद नीमके पत्तोको पानीमे उबालकर उस पानीसे घावको धोइये और नीमका तेल लगा दीजिये अथवा सरसोका तेल, तारपीनका तेल और कपूर एक-एक छटाँक लेकर और उसमे चौथाई छटाँक फिनाइल डालकर घावपर लगाते रहिये। अथवा पत्थरका कोयला, खडिया मिट्टी, फिटकिरी और नीलाथोथा—चारोको बराबर लेकर उनका चूर्ण करके लगाइये। घाव बडा हो तो नीमका तेल और मोम मिलाकर लगाना चाहिये।

घावको कभी खुला नहीं छोडना चाहिये, नहीं तो स्याई नामकी मक्खी उसपर बैठती है और घावमे कीड़े पड जाते हैं। यदि कीडे पड गये हो तो आड़ू या मरुएके पत्तोको पीसकर उसकी टिकिया घावपर रख दीजिये और मुल्तानी मिट्टीसे घावके ऊपर लीप दीजिये, जिससे घावको हवा न लगे ऐसा करनेसे कीडे मर जायँगे, तब पीछे घावको अच्छा कर लीजिये। गहरे घावमे कपूर एक भाग, इसका चतुर्थांश तारपीनका तेल और इतना ही तीसीका तेल खूब मिलाकर लगाना चाहिये।

४-हड्डी-पसलीकी चोट

बहुधा लड़ने-भिड़नेसे हड्डीमे चोट पहुँच जाती है या हड्डी टूट जाती है। हड्डी टूट गयी हो या उतर गयी हो तो किसी जानकारसे या पशुओके डॉक्टरसे उसे ठीक कराना चाहिये। किसी जानकार आदमीके मिलनेके पहले नीचे लिखी दवाइयाँ करे—

१-पीपलकी हरी छाल ५ सेर पानीमे उबाले, जब पानी २ सेर रह जाय तो चोटपर सेक करे।

२-भेड़के दूधमें पीली कटेरिया औटावे और चोटकी जगहपर सेक करे तथा लेप कर दे।

३-एक छटाँक फिटकिरी, आधी छटाँक हल्दी तथा १ सेर दूध पशुको तुरंत पिला देना चाहिये।

५-खुरमें कील-काँटोका चुभना

यदि खुरमे कील-काँटा या कोई नुकीली चीज चुभ गयी हो, तो उसे निकालकर कपूर और तारपीन-मिले हुए तिलके तेलमे रुईका फाहा भिगोकर सावधानीसे भीतर भर देना चाहिये और आस-पास भी तेल चुपड देना चाहिये। दो-चार रोज करनेसे आराम हो जायगा।

६-सींग टूटना या सड़ना

लडने-भिडनेसे या लाठीकी चोटसे सींग टूट जाते हैं। सींग दो प्रकारसे टूटते हैं—एक तो जडसे निकल जाते हैं, दूसरे सींगके ऊपरका केवल खोल निकल जाता है।

जडसे टूटनेपर छोटी बेरीके पत्ते पीसकर गड्ढेमें भर दीजिये और ऊपरसे कपड़ा बाँधकर नीमका तेल डालते रहिये। यदि खोल उतर गया हो तो उडदकी पीठीमे आदमीके सिरके बाल सानकर सींगके ऊपर थोप दीजिये और कपड़ा बाँधकर नीमका तेल डालते रहिये। अथवा मुल्तानी मिट्टीसे सींगपर लपेटकर ऊपरसे बाल लपेट दे या सीमेंट अथवा चूना गड्ढेमें भरकर कपडा बाँध दे और नीमका तेल डालता रहे।

सींग टूटनेसे घाव सड गया हो या कीडे पड गये हों तो नीमके पानीसे धोकर तारपीनके तेलमे रुईका फाहा दिनमें दो-तीन बार रखना चाहिये।

७-कानमें मवाद पड़ना या घाव होना

कानमे घाव हो गया हो तो उसे नीमके पानीसे [illegible] १ हिस्सा कपूर, १ हिस्सा सुहागा (भुना हुआ) और २० हिस्सा सरसोका तेल मिलाकर घावपर लगाना चाहिये। [illegible] तेल घावपर लगाकर २-४ बूँदें कानमें भी डाल दे।

८-आँखका रोग (Sore Eyes)

आँखका रोग बहुधा किसी [illegible] या लडने-भिडनेसे होता है। आँखके रोगमें आँखोंसे पानी और कीचड बहता है। इसके लिये निम्न उपचार करें—

१-फिटकिरी पीसकर पानीमें घोल-छान ले और उससे आँख धोये।

२-नमक और महुएके पत्ते पानीमें डाल दें, फिर छानकर उस पानीसे धोये।

३-सहजनके बीजको रगडकर पानीमे डाले और आँख धोये। कुछ दिन रोशनीसे बचाये।

९-बैलका कंधा आना या फार लगना

कंधा आ जानेपर नमक-मिले गरम पानीसे सेक करना चाहिये।

हल जोतते समय बैलके उछलनेसे यदि फार लग जाय तो घावपर तुरत मूत्र लगा देना चाहिये। ३-४ दिन करनेसे अच्छा हो जायगा।

१०-आगसे जल जाना

पशुके जल जानेपर तुरंत चूना या चूनेके पानीको वैसलीनमे मिलाकर लगाना चाहिये। १०० बार फेटा हुआ गायका घी भी बहुत लाभ करता है। चूनेके पानीमे तिल, रेडी या नारियलका तेल मिलाकर फेटनेसे एक मलहम बन जायगा, उसके लगानेसे भी अच्छा होता है।

११-बाबनी अर्थात् पूँछका घाव

पहले पूँछकी चौंरीके बाल खुजलीसे उड़ते हैं और धीरे-धीरे घाव होकर पूँछ गलने लगती है। इसके लिये सल्फ्यूरिक एसिडको चौडे मुँहकी बोतलमे भरकर घाववाले सिरेको ५ मिनटतक उसमे डाले रहे और फिर कपड़ा बाँध दे।

इस प्रकार अपने पशुओकी यथासम्भव चिकित्सा करनी चाहिये। किसी योग्य अनुभवी चिकित्सकका परामर्श अवश्य लेना चाहिये। कभी-कभी ठीक अनुपात एवं प्रयोगका ज्ञान न होनेसे लाभके बदले हानि होनेकी भी आशका रहती है। गोशालामे यथासम्भव साधारण उपयोगमे आनेवाली ओषधियाँ बराबर रखनी चाहिये, ताकि तात्कालिक चिकित्सा की जा सके। पशुओके प्रति प्रेम-भाव रखते हुए उनके दुःख-दर्दकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।



आयु

गाय और बैलकी अधिक-से-अधिक आयु प्रायः २५ वर्षकी होती है। जलवायु, लालन-पालन तथा परिश्रम आदिके कारण इसमें कमी-वेशी भी हो सकती है। आमतौरपर इनकी औसतन आयु १२ वर्षके लगभग होती है। एक बछिया ३ वर्षकी उम्रके आस-पास बिया जायगी। कोई-कोई गाये १२-१४ महीने बाद दुबारा बिया जाती हैं। कम-से-कम गायको १८-२० महीने बाद दुबारा जरूर बिया जाना चाहिये।

१०-१२ वर्षकी उम्रतक गाय ५-७ अच्छे बछड़े-बछिया दे देती है। कोई-कोई गाय १०-१२ बच्चे भी जनती है, परंतु प्रायः १५-१६ वर्षकी उम्रके बाद वह बच्चे देना बंद कर देती है।

दाँत और सींगोके द्वारा इनकी उम्र पहचानी जाती है।

नये बच्चेके दूधके २ दाँत होते हैं।

१५ से २१ दिनतकके बच्चेके दूधके ४ दाँत होते हैं।

एक महीनेके बच्चेके दूधके ८ दाँत होते है।

तीन-चार महीनेके बाद ये दाँत पुष्ट होने लगते हैं और १५ से १८ महीनेकी उम्रतक सब पुष्ट हो जाते है। फिर उम्र पाकर ये उखड़ जाते है और इनके स्थानपर असली पक्के दाँत निकल आते हैं।

दो-ढाई वर्षकी उम्रमें २ पक्के दाँत आ जाते है।

तीन-साढ़े तीन वर्षकी उम्रमें ४ पक्के दाँत आ जाते हैं। (इस समय पशु पूर्ण युवा हो जाता है।)

चार-पाँच वर्षकी उम्रमे ६ पक्के दाँत आ जाते हैं।

पाँच-छः वर्षकी उम्रमे ८ पक्के दाँत आ जाते हैं।

इस प्रकार मुँहमे काफी समयतक रहनेवाले आठों दाँत पूरे हो जाते है। यदि इनमेसे कोई दाँत टूट जायगा तो वह दुबारा नहीं निकलेगा, इसीसे ये स्थायी या पक्के कहलाते है।

गाय-बैलोके निचले जबडेमें दाँत होते हैं और ऊपरके जबडेमे खाली कड़ी हड्डी होती है। वे नीचेके दाँतोंसे चारा कुतर-कुतर कर पहले जल्दी-जल्दी अपना पेट भर लेते हैं। फिर आरामसे बैठनेपर उस खाये हुए चारेको मुँहमें वापिस लाकर दोनो जबड़ोकी किनारेवाली मजबूत दाढ़ोंसे महीन जुगाली करके आमाशयमें पहुँचाते हैं।

दस-बारह वर्षकी उम्रके बाद जैसे-जैसे गाय ढलने लगती है, वैसे-वैसे उसके दाँत भी घिसकर ठुण्टी-सरीखे हो जाते है।



गौके प्रमुख रोग और उनकी चिकित्सा[1]

(डॉ० श्रीराजकुमारजी शर्मा 'दीक्षित' रिटायर्ड पशु-चिकित्सक)

[क]

गौके रोगोंकी होम्योपैथिक चिकित्सा

गाय एक मूक प्राणी है। वह अपने दुःखकी व्यथा कह नहीं सकती। किंतु उसका दुःख-दर्द आपको समझना होगा। वह निरीह प्राणी है, अपनी व्यथा कैसे बतायेगी। उसे तो दर्द सहन करनेकी असीम शक्ति प्राप्त है। पर आपको तो कुछ अवश्य ही करना चाहिये। इसी दृष्टिसे यहाँ जनकल्याणके लिये गोधनके कुछ रोगोंकी औषधियोंको दिया जा रहा है। किसी योग्य चिकित्सकका परामर्श लेकर इनका प्रयोग करनेसे अवश्य लाभ होगा ऐसा हमारा व्यक्तिगत अनुभव है। जहाँ दवाईके सम्मुख उसकी शक्ति लिख दी गयी है उसे ही प्रयोग करे, जहाँ शक्ति नहीं लिखी है ३०या २००शक्तिका जर्मनीका १० एम० एल० सील बंद डायलूशन लेकर एक या दो छोटे बताशे या खाँड़-बूरा आदि प्लेटमें रखकर १०से १५ बूँद उसपर डालकर गायको दिनमे एक बार चटा दे। यह ध्यान रखे गायके मुँहमें खाद्य पदार्थ पहलेसे न हो और बताशा भूमिपर न गिर जाय।

(१) भूख न लगना—(Anorexia) (नक्स १×+) कार्बोवेज १×+ पेप्सिन १× मिलाकर दिनमे ३ बार दे।

(२) मुँहके छाले (Thrush)—घाव जीभपर गालोके अंदर हो तो बोरेक्स दें, लारके साथ घावकी स्थितिमे मर्क्युरियस दें।

(३) कब्ज (Canstipation)—हाइड्रास्ट २× दे।

(४) अतिसार (Diarrhqea) नये रोगमें चाइना और जीर्ण रोगमें फॉस दें।

(५) रक्तमय अतिसार (Dysentery)—नक्स २००की एक मात्रा देकर मर्क्युरियस कारोसाइवस दे।

(६) कमजोरी (Weakness)—एल्फाएल्फा क्यू एवं फोस-एसिड एक दिनके अन्तरसे अलग-अलग दे।

(७) अफारा (Tympenitis)—[illegible] एसाफिटेड़ा कब्ज भी हो तो कार्बोवेज और [illegible] कोलोफाई दे।

(८) खाँसी (Cough)—ड्रोसेरा २००की केवल एक ही मात्रा, यदि दोहरानी पडे तो ४-५ दिन पश्चात् दे।

(९) ज्वर (Fever)—अचानक हुआ हो तो एकोनाइट और धीरे-धीरे हुआ हो तो जेल्सियम देना चाहिये।

(१०) सूखा रोग (Marasmas)—छोटी [illegible] खाती तो यथेष्ट हैं, पर सूखती जाती हैं, ऐसी स्थितिमे एब्रोटेनम देना चाहिये।

(११) बाल झड़ना—(शरीरमे मिनरलकी कमीसे) फ्लोरिक एसिड दे।

(१२) गायका दूध कम हो जाना (Agalactia)—अचानक कम होना या पवास न आना (दूध न उतरना)—एग्नस, सद्यः प्रसूताके थनोंमे दूध न [illegible] अर्टिका क्यू दिनमे तीन बार दे।

(१३) बछड़े-बछियाओके गर्मीके दस्त (Calves cholera) आर्स दे।

(१४) गायका दुर्बल होना या रक्ताल्पता होना (Anemia)—फेरम-मेट दे।

(१५) गायके मूत्रमें रक्तका आ जाना—[illegible]—आर्स, मूत्रके साथ जलन हो, जोर लगाकर बूँद [illegible] तो कैन्थेरिस देना चाहिये।

(१६) गायके मूत्राशयमे जलन (Irritation of bladder)—सार्सापरिला एवं इक्युजर्क एक दिन [illegible] अलग-अलग दिनमे एक बार दे।

(१७) मूत्र कष्टसे आना (Dysuria)—[illegible] कैन्थरिस दे।

(१८) जल जाना, छाला-[illegible] और पश्चात् (Burns)—[illegible] दे।

१-यदि कोई सज्जन इस सम्बन्धमे परामर्शके इच्छुक हों तो डॉ० श्रीराजकुमारजी शर्मा [illegible] ॐ श्रीहरिः धाम, ४३/१, पुरानी मोहनपुरी, मेरठ-२५०००१ (उ० प्र०)-के पतेपर सम्पर्क कर सकते हैं।

(१९) गायके शरीरमें पानी भर जानेसे सूजन (Dropsy)—एपिस अथवा आर्स दें।

(२०) स्तन (थन) की सूजन (Mastitis)—लाल सूजनमें 'एपिसबेलाडोना' दें। पत्थर-जैसी कडी सूजनमें कोनियम, जब पस पडनेवाली हो तो बेलाडोनाके पश्चात् ब्रायोनिया दें।

(२१) स्तनोंका तरेड़ जाना (Nipples cracked)—ऐसी स्थितिमे रेटेन्हिया दे।

(२२) गर्भपात होनेकी आशका (Abortion)—कोलो फाइलम दें।

(२३) प्रसव/प्रसवोत्तरपीड़ा (After Pains)—कोलो फाइलम दें।

(२४) गोबरके साथ मलाशय बाहर निकल जाना (Paralapsis)—एलोय एवं फोड़ो फाइलम पर्याय-क्रमसे दिनमें एक बार देना चाहिये।

(२५) गर्भाशय-भ्रश (Paralapsus uteri)—सीपिया दे।

(२६) बॉझपन (Sterility)—दुर्बल गाय या बछियाको ब्राइटाकार्व तथा स्वस्थको एग्रस दे।

(२७) पेटके कीडे (Worms)—गोल और सूत्र-कृमियाँ आदि समस्त कृमिके लिये चेलोन मूल अर्कको १०से १५ बूँद ५ दिनतक क्रमशः दे।

(२८) चोट (Injuries)—गुम चोटमे अर्निका तथा घाववाली चोटमें हाइपेरिकम दें।

(२९) खून बहनेवाला घाव—कैलेण्डूला मूल अर्क, यह रक्त बहनेको रोक देगा, खानेको भी दें, घावपर भी लगाये।

(३०) टेटनस—होम्योपैथीमें टेटनसका टीका देनेकी जगह लीडमकी एक खुराक पिला दी जाती है।

(३१) घाव भरनेमें (Wounds)—हैक्ला लावा ६ एक्समे तथा घाव सुखाने-हेतु साइलीशिया एक हजारकी एक मात्रा दें।

(३२) बारम्बार गर्भपात होना (Miscarriage, Repeated)—सिफिलिनम १ एम + बैसीलिनम १ एम की एक खुराक दें।

(३३) बछिया या गायका गर्भ न होना (Menstruation)—'जैनोसिया अशोका मूल अर्क' एक सप्ताहतक दिनमें तीन बार दे।

(३४) खुजली (Mamze)—एन्टीपाइरीन २ एक्स दें।

(३५) कानमें मिट्टी-धूल पड़नेसे पीब आना (Ear Discharge)—हीपर अथवा पल्स दे।

[ख]

पशु-चिकित्सकका सिर दर्द—दुधार गायमें कैन्सर

आजकल गायके थनका कार्सिनोमा पशु-चिकित्सकके लिये एक कठिन प्रश्न बन गया है। शोथयुक्त कार्सिनोमा (Inflammatory Carcinoma) गर्भवती या दुधार गायके थनमे तीव्र गतिसे बढ़नेवाला कैन्सर है, जिसका प्रारम्भ एक पिण्डके रूपमें होता है। स्तनके उपरिस्थ उत्तक शोथयुक्त हो जाते हैं और वह सूज जाता है तथा तीव्र स्तनशोथके समान दिखायी देता है। कितनी ही बार अन्य थन यहाँतक कि पूरा अयन (बॉक-Udder) भी रोग-ग्रस्त हो जाता है। शोथयुक्त कार्सिनोमाकी अभीतक कोई विशेष उपयोगी चिकित्सा ज्ञात नही हुई है। निर्मूलक स्तनोच्छेदनसे कोई लाभ नहीं होता और न उसका परामर्श ही दिया जाता है। महिलाओंमें शमनकारी (Palliative) एक्सरे चिकित्सा की जा सकती है और हार्मोन रोध्य उपायोसे उसमे सहायता मिल सकती है, किंतु मूक गौ माताके समक्ष एलोपैथी चिकित्सा भी मूकदर्शक मात्र रह गयी। बेचारी गौ माताका दुःख समझते हुए भी पशु-चिकित्सक अपना समस्त जान एवं सेवा देकर भी कुछ नहीं कर पाता। मुझे इन क्षणोंका प्रत्यक्ष अनुभव है, क्योंकि गत चालीस वर्षोसे भी अधिक समयसे मुझे गौ माताकी चिकित्सा करनेका अवसर मिला है। होम्योपैथी चिकित्सासे मुझे इस दिशामे पर्याप्त सफलता मिली है।

स्तन जब दूध-भरे हो, गायके बैठते समय या बच्चेके दूध पीते समय थन या बाँक (Udder) में उसका सिर या थूथनके प्रहारसे हल्की-सी चोट आ जानेसे या मौसमके प्रभावसे भी हल्की-सी सूजन आ जानेपर यदि उसकी चिकित्सा कर दी गयी तो केवल एकोनाइट या अर्निकाकी

एक मात्रासे ही सब ठीक हो जाता है। हाँ, देर हो जानेपर अन्य ओषधियोंका सहारा लेना पडता है। इसके लिये किसी सुयोग्य चिकित्सकका परामर्श लेना आवश्यक है।

होम्योपैथीकी दवाई बूँदोंमें दी जाती है। १०-१५ बूँद किसी माध्यमसे गायकी जिह्वापर छू जाय बस दवाई कार्य कर जायगी। गाय सीधी है तो एक चम्मच पानीमे दी जा सकती है, प्लेटमें बताशा, बूरा (खाँड) आटेकी हल्की-सी परतपर दवाई टपकाकर चटाई जा सकती है। मठरी-जितनी मोटी रोटी बनाकर ऊपरका पतला पापड़ हटाकर मोटे भागपर दवाई टपकाकर, दवाईवाला भाग भूमिकी ओरकर गायको देनेसे उसकी जीभपर दवाई छू जायगी। महकवाली वस्तु हाथोके छू जानेसे दवाईका प्रभाव नहीं होता, अतः दवाई देनेसे पूर्व हाथ भी साफ कर ले।

गायको अचानक शीतका अनुभव हुआ हो, ज्वर हो, तीव्र स्तनपर प्रदाह (सूजन)-सी दिखायी दे तो 'एकोनाइट' २०० की एक मात्रा दे दी जाय।

यदि थन या बाँक (Udder)-मे किसी चोटके लग जानेका ज्ञान हो, चर्मपर हल्का बैंगनी चोटका चिह्न भी हो, सूजन हो या न हो तो अर्निकाकी एक या दो मात्रा भी यथेष्ट होगी। यदि छिल गया है तो 'कैलेण्डुला' मूल अर्कको वहाँ चुपड़ देनेमात्रसे घाव ठीक हो जायगा। दवाई पिलाई भी जाय तो और लाभ मिलेगा।

यदि सूजन बढती दिखायी दे तो ब्रायोनियाँ दे। लाल धारियाँ-सी, सूजनपर दिखायी दे तो 'बेलाडोना' उसके लिये पर्याप्त होगा। किसी प्रकार भी बेलाडोनासे लाभ न हो रहा हो तो 'मर्क्युरिस' दे, यह उस समय दी जाती है जब लाल-लाल सूजन बडी तेजीसे बढ़ती जा रही हो। दवाईसे तुरंत ही घटनी प्रारम्भ हो जाती है।

यदि लाली नहीं है और सूजन तेजीसे बढ़ रही हो तो केवल 'कैल्केरिया फ्लु ओरिका' देनेसे कड़ापन समाप्त हो जायगा, बढ़ना बंद हो जायगा। यदि ट्यूमर बन गया हो, दर्द होता हो तो उसे 'म्यूरेक्स' ही शान्त कर देता है।

गायकी आँखोमे चमक न हो, कीचड़ या पानी आता हो और दूधकी अनुपस्थिति हो या दूधका प्रवाह कम हो गया हो तो उसे 'पल्साटिला' से लाभ हो जायगा। यदि सूजनके साथ मवाद (पस) आने लगे तो 'हीपर' [illegible] कडेपनको घोलकर, मवाद-रूपमें बाहर निकाल देगा। यदि मवाद नहीं और चिपचिपा शहद-सा घावसे आता हो, स्तन फटकर घाव-सा हो गया हो तो 'ग्रेफाइटिस' देना लाभकारी है।

स्तनोमें जलन-सी प्रतीति हो, पस पड़नेवाला हो तो 'कार्वोवेज' का भी प्रयोग किया जा सकता है। घावको सुखानेके लिये अन्तमे 'साइलीशिया' एक हजारकी एक-एक सप्ताह पश्चात् मात्रा दी जाय।

पत्थरकी भाँति कठोर, चुभनेवाले दर्दयुक्त ट्यूमर जब जरा-सी सर्दीसे ग्रन्थियाँ प्रवाहित हो जाती हो और तीव्र खुजली भी हो तो 'कोनियम' ३० की शक्तिमे दिनमें एक बार ठीक होनेतक दी जाय।

यदि इनमे अभीतक किसी भी उपचारसे लाभ न दिखायी दिया हो तो 'कोनियम' एक हजारसे पहले दिन दे पहली मात्रा, दूसरी १५ दिन पश्चात् दस हजारकी शक्तिका मात्रा दे फिर १५ दिन पश्चात् 'कार्सिनोसिन' की दस हजार शक्तिकी एक खुराक दे।

यदि कैन्सरका ट्यूमर घूमता हुआ प्रतीत हो तो उसके लिये 'कैल्केरिया फ्लोर' एक हजारकी पहले दिन एक मात्रा दे, दस दिन बाद दूसरी मात्रा दे, १० दिन बाद फिर १० हजार शक्तिकी एक मात्रा दे। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इन दवाओके प्रयोगसे रोग-ग्रस्त गौओंको लाभ होगा।

[ग]

आक्सीटोसिन (पवासके इंजेक्शन) से गायको बाँझ न बनायें

गायके बाँक (Udder) मे दूध भरा रहता है, जब उसके बच्चेको दूध पिलानेके लिये छोड़ते हैं तब [illegible] स्तनोमे जा लगता है। आपने देखा होगा कि गाय उसे चाटती है और चूमती है। उस समय [illegible] उठता है। बच्चेके स्तन-चूषणद्वारा [illegible] प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

कुछ गायें अधिक चतुर एवं [illegible] उनका दूध पीता हुआ बच्चा [illegible] वे उत्तेजित हो जाती हैं, जिससे द्वारा [illegible]

है। गायके स्तनमें अवरोधिनी मांसपेशी होती है जिससे गाय अपनी इच्छानुसार दूधका बाहर आना रोक लेती है। जिसे 'गायने दूध चढ़ा लिया' ऐसा कहा जाता है। बच्चेको दूसरी बार छोड़नेपर वह पुनः पवास (पेन्हा) जाती है (थनमें दूध उतर आता है)।

आक्सीटोसिन एक दूध-उत्क्षेपक हार्मोन है और बच्चा न रहनेपर गायका ममत्व नहीं जागता, जिससे वह दूध नहीं उतार पाती। इसके लिये कुछ लोग आक्सीटोसिन हार्मोनका इंजेक्शन क्रयकर गायके शरीरमें प्रविष्टकर दूध निकाल लेते हैं।

पाठकोंसे मेरा सानुरोध निवेदन है कि गायको दूध पवासने (दूध उतारने) के लिये इस हार्मोनका इंजेक्शन कदापि न लगायें और अन्यको भी न लगानेके लिये प्रोत्साहित करें। यह स्तनोंसे ही दूध नहीं उतारता, अपितु गर्भाशयपर भी, बच्चे होने, जेर डालने आदिमे उत्प्रेरकका कार्य करता है। शरीरमें इसकी अनावश्यक मात्रा पहुँचानेसे यह स्तन और गर्भाशयकी प्राकृतिक प्रक्रियाको नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। सगर्भाका गर्भ गिर जाता है। डिम्ब अपरिपक्व-अवस्थामें टूटकर नष्ट होते-होते गाय बाँझ हो जाती है। ऐसा दूध पीनेसे अतिरिक्त हार्मोनमय दूध पीनेवाले व्यक्तिके शरीरपर भी कुप्रभाव पड़ता है। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है, क्रोध-आवेशका सहज ही आना इसका प्रमाण है। अन्य हार्मोन ग्रन्थियोंपर भी इसका प्रभाव पड़ता है, क्योंकि एक हार्मोनकी अन्य हार्मोनोंपर सहज ही क्रिया होती रहती है।

बहुत सस्ते दामोमें आनेवाला यह इंजेक्शन प्रायः सब जगह मिल जाता है। दूध बेचनेवाले पशुपालक धड़ल्लेसे इसका खुलेआम नित्य प्रयोग कर रहे हैं। नवजात गाय-भैंसके बच्चोंको भूखा मारकर मरने दिया जाता है और उसके हिस्सेका भी दूध ले लिया जाता है। उन्हे तो बच्चा नहीं इस हार्मोनकी आवश्यकता है। ताकि दूध अधिक मिले। कृपया उन्हें समझाइये, गौ माताको बॉझ होनेसे बचाइये।

यदि उनके समक्ष किसी कारणवश ऐसी समस्या आ खड़ी हुई कि गाय दूध नहीं उतार रही है तो होम्योपैथिक दवाई 'एग्नस कैक्टस' ६ शक्तिकी सुबह-शाम १०-१५ बूँद एक चम्मच पानी या बताशेपर डालकर देते रहनेसे उन्हें फिर कभी आक्सीटोसिनका इंजेक्शन नहीं लगाना पड़ेगा, वह स्वयं ही दुहते समय दूध उतारती रहेगी।

गोवध बंद हो

(डॉ० श्रीगणेशदत्तजी सारस्वत)

(१)

लोक समस्तकी है हितकारिणी, सिद्धि-समृद्धिकी सुन्दर नींव है।
पावन है शुचि पावन नाम-सी, है सुरभी सुर शान्त अतीव है॥
सेवा अशेषकी साध विशेष ले, संसृतिमें प्रकटी नतग्रीव है।
है वसुधा पै सुधाकी विधायिनी, मूर्तिमती ममता ही सजीव है॥

(२)

है पशु, किंतु न है पशुता, शुचिताका मनोरम भाव लिये है।
अन्तसका रस बाँट रही जग, जाग्रत् जीवन-चाव लिये है॥
मुक्त सभीके लिये उर है, न किसीके लिये भी दुराव लिये है।
गौरी-गिराकी उपासना-सी शुभ, पुण्यदा पुण्य प्रभाव लिये है॥

(३)

दूध पिलाती जिलाती है जीव जो, साथ नहीं उसके छल-छंद हो।
है जिसकी हर श्वास परार्थ, न दे दुख कोई उसे मतिमंद हो॥
पूज्य है जो जननीके समान, नहीं उसके हित घातक फंद हो।
देशकी है ये पुकार अमन्द कि गोवध बंद हो, गोवध बंद हो॥

गोशाला–गोसदन एवं पिंजरापोल

[प्राचीन कालसे भारतमे गोपालनकी दृष्टिसे गोशाला–गोसदन एवं पिंजरापोल आदि संस्थाएँ स्थापित की जाती रही हैं, जिनमें अपंग–बूढ़ी तथा दूध न देनेवाली गायोंका भरण–पोषण तो होता ही है, साथ ही साधनरूपमें दूध देनेवाली स्वस्थ और सुन्दर गायोंका भी संवर्धन किया जाता है। वर्तमान समयमे देशमे कितनी गोशालाएँ हैं यह ठीक–ठीक नहीं कहा जा सकता, परंतु सरकारी अनुमानके अनुसार तीन हजार गोशाला–पिंजरापोल भारतमे बताये जाते हैं। [illegible] प्रमुख गोशालाके विवरण जो हमें उपलब्ध हो सके, उन्हे हम यहाँ पाठकोंकी जानकारीके लिये प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके साथ ही भारतवर्षके गोशाला एवं पिंजरापोलोंकी एक प्राचीन तालिका जो अभी उपलब्ध है, उसे भी यहाँ दिया जा रहा है—]

गोशाला और पिंजरापोलकी आवश्यक बातें

परे वा बन्धुवर्गे वा मित्रे द्वेष्टरि वा सदा।
आपन्ने रक्षितव्यं तु दयैषा परिकीर्तिता॥

(अत्रिसंहिता ४१)

'अपना, पराया, मित्र, द्वेषी और वैरी कोई भी हो, विपत्तिमे पडे हुएकी सदा रक्षा करनेको ही दया कहा जाता है।'

दया उपयोगिताकी अपेक्षा नहीं करती। वह तो मानव-स्वभावका एक सात्त्विक गुण है, जो विना किसी भेदभावके पीडित प्राणिमात्रकी पीडा दूर करनेके लिये मानव-हृदयमे सहानुभूति, परदुःखकातरता, सात्त्विक उत्साह और उत्तेजन तथा उत्कृष्ट उत्सर्गकी भावना उत्पन्न करता है, और मनुष्यको दुखियोके दुःख दूर करनेके पवित्र कार्यमे बरबस लगा देता है। फिर, असहाय और अशक्त गायका पालन–पोषण करने और उसे सुख पहुँचानेकी चेष्टा करनेमे तो दयाका प्रश्न ही नही है। इसमे तो कृतज्ञताजनित विशुद्ध कर्तव्यपालन है। जिस गोमाताने अपनी अच्छी हालतमे हमारी अपार सेवा की, जिसका जन्म ही हमारी भलाईके लिये हुआ और जिसकी उदारतापर ही हमारा जीवन निर्भर रहता है, जिसने हमे अमृत-सा दूध दिया, खेतीके लिये बैल दिये, खेतके लिये खाद दी और अब भी दे रही है, उसका दूध सूख जानेपर या उसके लूली-लँगड़ी, बीमार और असहाय हो जानेपर उसका पालन–पोषण करनेसे मुँह मोड़ लेना तो एक प्रकारकी घोर कृतघ्नता और कर्तव्यसे विच्युति है।

आजकल उपयोगितावादकी लहर वह रही है, इस कारण महत्त्वपूर्ण दयावृत्ति और कर्तव्य-पालनके प्रति [illegible] उपेक्षा होने लगी है। वे कहते हैं—'जो प्राणी [illegible] उपयोगमे नहीं आते, जो न दूध दे सकते हैं और न [illegible] वारीके ही काम आते हैं, ऐसे निकम्मे पशुओंके पेट [illegible] भरते रहना मूर्खता नहीं तो और क्या है? [illegible] निरुपयोगी बनाकर जिनका अन्त कर देना चाहती है [illegible] बचानेमे अपनी शक्ति, समय और धनका उपयोग [illegible] उनका दुरुपयोग ही तो है।' मतलब यह कि [illegible] जडयुगमे मनुष्यकी दृष्टि सब ओरसे हटकर केवल [illegible] आकर टिक गयी है। इसीसे प्रत्येक काममें [illegible] केवल उपयोगिताका प्रश्न रहता है, और [illegible] अपने वृद्ध और बीमार सगे माता-पिता [illegible] स्वजनोकी भी उपेक्षा—उनसे घृणा करने लगा है और [illegible] भरण-पोषणमे समय, शक्ति और [illegible] उससे अपनेको बचाने लगा है। अर्थ[illegible] नामपर आज मनुष्यको केवल देवत्वको [illegible] रोक दिया है, वर मानवतासे भी [illegible] बना दिया है। इसीसे आज वह सहानुभूति [illegible] सुख-शान्तिकी कुछ भी [illegible] सात्त्विकी वृत्तियोको [illegible] रहा है और उन्नतिके नामपर दिनोंदिन [illegible] गिरता जा रहा है। मनुष्यके [illegible] ही बन जाता है, तब उससे [illegible] उसे अपने सुख-शान्ति [illegible]

यहाँ तक कि उससे वह ऐसे कर्म करवाता है जिनसे उसके अपने ही ऐहलौकिक और पारलौकिक जीवनकी सुख-शान्तिका स्रोत भी चिरकालके लिये सूख जाता है। और जब मनुष्य अपने सुख-शान्तिको ही नहीं देखता, तब दूसरेकी सुख-शान्तिकी चिन्ता तो उसे क्यो होने लगी?

यही कारण है कि आजके धनकामी लोग 'व्यर्थ अर्थनाश' बताकर असहाय पशुओका भरण-पोषण करनेवाली उपयोगी संस्थाओकी ओरसे उदासीन होते चले जा रहे है और उनका विरोध करनेमे ही अपने कर्तव्यका पालन समझते हैं। दुःख तो इस बातका है कि केवल आर्थिक दृष्टिकोणसे गो-पालन करनेवाले पाश्चात्त्य देशोकी पद्धतिपर मुग्ध होकर हमारे सम्मान्य अर्थशास्त्री विद्वान् भी आज वृद्ध और अपंग पशुओंको पृथ्वीका भार बताकर उन्हे न पालनेकी सलाह देने और प्रकारान्तरसे उनको कत्ल कर डालनेके लिये प्रोत्साहित करने लगे हैं। ऐसी हालतमें इस प्रकारके विचारवाले लोगोंके द्वारा पिंजरापोल और गोशालाओकी अनुपयोगिता दिखलाया जाना कुछ भी आश्चर्यकी बात नहीं है। अवश्य ही ऐसी सस्थाओंका विरोध मनुष्यकी एक पवित्र, कोमल और मधुर वृत्तिको मारना ही है।

पिंजरापोलोकी स्थापना वस्तुतः उन सहृदय पुरुषोकी विशुद्ध धार्मिक भावनासे हुई थी जिनके हृदयमे बडी सुकोमल-सुमधुर दयाकी वृत्ति थी और जो वृद्ध माँ-बापकी सेवा करनेकी भाँति ही बूढ़ी गोमाताकी सेवाको भी अपना परम कर्तव्य मानते थे। पिंजरापोल नयी संस्था नहीं है। जैन और बौद्धोंके समयमें भी ऐसी संस्थाएँ थीं। मुसल्मानी कालमें भी थीं और उनमें केवल गायोका ही नहीं, बीमार और असहाय अन्यान्य पशु-पक्षियोंका भी इलाज और भरण-पोषण किया जाता था। यह एक ऐसा पवित्र धर्म समझा जाता रहा है कि सारा समाज इसमें हाथ बँटाता है और व्यापारी लोग अपने व्यापारपर 'लाग' लगाकर इस कार्यमें सहायता करते हैं। अपंग प्राणीकी सेवामे एक परम पुण्यकी और पवित्र कर्तव्य-पालनकी श्रद्धा थी और वह सच्ची थी। इसीसे लोग अपने-अपने घरोमें भी अशक्त प्राणियोकी सेवा अपने हाथो करते थे। जब कोई गृहस्थ ऐसी परिस्थितिमे पड़ जाता कि खुद तन और धनसे सेवा नहीं कर सकता था तब उसके पशुको सँभालना पिंजरापोलका काम था। इस प्रकार पिंजरापोल न केवल पशु-पीड़ाका निवारण करता था, वर धार्मिक भावसम्पन्न असमर्थ गृहस्थका बोझ भी हलका करके उसे इस योग्य बना देता था कि वह नया उपयोगी पशु लाकर उससे लाभ उठा सके।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विभिन्न कारणोंसे आज सभी पिंजरापोलोकी दशा संतोषजनक नहीं है और यह भी सत्य है कि युगपरिवर्तनके साथ-साथ पिंजरापोलोंकी कार्य-पद्धतिमे भी उचित परिवर्तनकी आवश्यकता हो गयी है। पर यह कहना सर्वथा असंगत है कि पिंजरापोल और गोशालाएँ सर्वथा व्यर्थ और हानिकारक संस्थाएँ हैं। हाँ, मूल उद्देश्यकी रक्षा करते हुए उनको आर्थिक दृष्टिसे भी जितना उपयोगी और जितना स्वावलम्बी बनाया जा सके, उतना बनाना चाहिये। सुधारके लिये सदा ही तैयार रहना चाहिये, परंतु सुधारके नामपर संहार न हो जाय, इसकी सावधानी रखनी चाहिये। अवश्य ही, नवीनताके मोह-मदमे अंधे होकर प्राचीनता मात्रकी जड उखाड़ने जाना जैसे बड़ी भूल है, वैसे ही प्राचीनताके नामपर अड़कर धर्मसे अविरुद्ध नवीन उपयोगी पद्धतिको स्वीकार न करना भी कम भूल नहीं है।

भारतवर्षमें विद्यमान पिंजरापोलो और गोशालाओंको मुख्यतः तीन श्रेणियोमें विभक्त किया जा सकता है—१-जिनके पास पर्याप्त संगृहीत धन और काफी आमदनी है, जिनका संचालन नियमितरूपसे सम्भ्रान्त सज्जनोंकी कमेटीद्वारा होता है और जिनमे कुछका रजिस्ट्रेशन भी हो चुका है, २-जो आरम्भमे कुछ लोगोंके उत्साहसे स्थापित हो चुकी हैं, पर जिनके पास न तो धन है, न काफी आय है और न उत्तरदायी कार्यकर्ता ही है और ३-जिनकी पेशेवर लोगोंके द्वारा, पैसा कमानेके साधनके रूपमें स्थापना हुई है और इसी उद्देश्यसे जिनका येनकेनप्रकारेण संचालन भी हो रहा है।

इनमे तीसरी श्रेणीकी संस्थाएँ (?) तो सभी दृष्टियोसे सर्वथा अनुपयोगी और हानिकारक हैं। दूसरी श्रेणीकी संस्थाओके लिये कहा जा सकता है कि सुयोग्य कार्यकर्ता मिले और आमदनी हो तो उनका सुधार हो सकता है। वर्तमान स्थितिमे तो वे बहुत उपयोगी नहीं हैं। ऐसी संस्थाओमें इस प्रकारकी हालत देखी जाती है कि जिस समय किसी अच्छे कार्यकर्ताके हाथमें काम हो और व्यापारी वर्गकी स्थिति अच्छी हो, उस समय तो काम ठीक-ठीक चलता है, पर जिन दिनो अच्छे कार्यकर्ता नहीं होते या व्यापार मंदा होता है और आवश्यक चंदा नहीं हो पाता, उन दिनों इनके पशु या तो भूखो मरते हैं या आधे पेट रहते हैं। पिछले अकालके समय कितनी ही गोशालाओंकी ऐसी दशा देखनेमें आयी थी।

परतु पहली श्रेणीकी सस्थाओके लिये भी यह नहीं कहा जा सकता कि उनमे सभीका काम सुचारुरूपसे सचालित होता है। लोग पैसा तो दे देते हैं, पर समय नहीं दे पाते। जो सभापति, मन्त्री और कार्य-कारिणीके सदस्य होते हैं, वे प्रायः केवल नामके ही होते हैं। समयके अभाव, दिलचस्पी न होने तथा गोपालनकी पद्धतिके अज्ञानसे वे कुछ भी नहीं कर पाते। बहुत-से तो जाते ही नहीं। जिनके जिम्मे प्रबन्धका भार रहता है, वे भी न तो अनुभवी होते हैं न क्रियाशील। इससे प्रबन्धमे त्रुटियाँ बनी ही रहती हैं। नयी उन्नतिकी बात तो सोचे ही कौन। पर्याप्त वेतन देकर सुयोग्य अनुभवी पुरुषोको प्रायः नियुक्त किया नहीं जाता और कोई करना भी चाहते हैं तो सुयोग्य सेवाभावी व्यक्ति मिलते नही। कहीं कोई अनुभवी पुरुष रखे भी जाते है तो उनके समक्ष कार्य करनेमे कई प्रकारकी सस्थागत कठिनाइयाँ आती हैं। नियम तथा प्रणालीमे भी समय तथा पशुपालन-विज्ञानकी जानकारीके अभावसे कोई खास सुधार नहीं किया जाता। ऐसी और भी कई बाते होती हैं, जिनके कारण व्यवस्था ठीक नहीं हो पाती और जितना लाभ होना चाहिये, उतना नहीं होता।

कसाइयोके हाथोसे गोवश बचाना, अपग और असहाय गायोके जीवन-निर्वाहकी सुन्दर सुव्यवस्था करना और गायोकी हत्या रोकनेके लिये सब प्रकारके उचित प्रयास करना आदि सभी आवश्यक कार्य है और धर्म हैं। परंतु सार्वजनिक रूपमे गोशालाकी उन्नतिके लिये यह भी आवश्यक है कि गोका दूध पर्याप्त मात्रामे बढ़ जाय और गौमे बहुत मजबूत और बलवान् बछड़ा पैदा करनेकी शक्ति आ जाय। पिंजरापोल और गोशालाएँ—इस दिशामे भी बहुत कुछ कार्य कर सकती हैं। पिंजरापोलो और गोशालाओको अपनी-अपनी परिस्थितिके अनुसार नीचे लिखे कार्य करनेका प्रयत्न करना चाहिये—

(१) वृद्ध, अपग, बीमार, दुर्बल और ठाँठ गाय, असहाय बैल और ऐसे ही बछडे-बछड़ी आदिके पालन-पोषणकी पूरी व्यवस्था हो, जिसमें वे जीवनके अन्तिम श्वासतक सुखपूर्वक खा-पीकर रह सकें। गोजातिका ऋण तो उतर ही नहीं सकता, परतु सच्ची कृतज्ञता प्रकट करने और मानव-हृदयकी बडी कोमल दयावृत्तिकी रक्षा करनेके लिये इसकी बडी आवश्यकता है।

(२) अच्छी जातिकी ऐसी गायोको, जो चारे-दानेकी कमी और देख-रेखके अभावसे कमजोर होकर बिसुक गयी हो, चुनकर और अलग रखकर उन्हे अच्छी तरह खिलाया-पिलाया जाय और उनकी पूरी-पूरी [illegible] जिससे वे बहुत उपयोगी और बड़े [illegible] बन सके। आज भी कई गाये जो [illegible] लिये कम खिलाकर कमजोर कर दी जाती हैं और वे [illegible] जाती हैं उन्हे पकड़ लेनेपर तथा अच्छी तरह खिलाने-[illegible] और सार-सँभाल करनेपर प्रतिदिन १२ से १८ [illegible] दूध देनेवाली बन जाती हैं। ऐसी कई घटनाएँ [illegible] रही हैं।

(३) एक अलग दुग्धालय-विभाग हो, जिसमे [illegible] जातिकी दुधार गायोका—अपनी गायोंमें चुनकर, [illegible] बछड़ियोको उत्तम गाय बनाकर सग्रह किया जाय। [illegible] और हवा-पानीके उचित उपयोग तथा अच्छे बलवान् [illegible] साँडोके संयोगसे उनमें और उनकी सततिमें दूध [illegible] प्रयत्न किया जाय। वैज्ञानिक रीतिसे दूधके दुहनेसे [illegible] उसके रूपान्तर करनेतक सावधानी रखी जाय। [illegible] दूध जनताको—खास करके बीमारी और बच्चोंके लिये [illegible] मूल्यपर बेचा जाय।

(४) विश्वासी सद्‌गृहस्थोंको बैल बनानेके लिये [illegible] देकर बदलेमें बछड़ियाँ ले ली जायँ और उन्हें अच्छी दुधार गाये बनाया जाय।

(५) पिंजरापोलो और गोशालाओंमे अच्छी-बुरी [illegible] जातियोके मजबूत और कमजोर गाय, बछड़े और [illegible] प्रायः साथ-साथ रहा करते हैं। इनमे बिलकुल [illegible] असमर्थ गाये भी बरधायी जाती हैं और बहुत [illegible] निकम्मे साँड बरधानेका काम करते हैं। इसका [illegible] है कि उनके बछडे और बछड़ी बहुत ही कमजोर [illegible] हैं। जो अच्छा चारा-दाना मिलनेपर भी [illegible] कारण अपनी हालत नहीं सुधार सकते। ऐसी [illegible] देरसे गाभिन होती हैं और ब्यानेपर थोड़े-से [illegible] थोडा दूध देती है तथा बछडे इतने दुर्बल [illegible] बनने योग्य तो रहते ही नहीं, अच्छे बैल [illegible] इस प्रकार दोनो गृहस्थके लिये [illegible] दुःख भोगते हैं। ऐसे कमजोर गाय-बैलोंसे [illegible] शक्ति घटती है और [illegible] ऐसी गायोका और साँडोका [illegible] बातका पूरा ध्यान रखना चाहिये।

(६) देशमे अच्छे साँडोंकी [illegible] आजकल दूधके लोभसे [illegible]

वढता जा रहा है। जर्सी सॉड़के द्वारा देशी गायोको बरधानेसे सकरीकरणके द्वारा जर्सी वाछे-वाछी होते है, जो वास्तवमें भारतीय दृष्टिसे गोवंश ही नहीं हे तथा वे यहॉकी जलवायुके पूर्णतः अनुकूल नहीं होते। इनके वाछे तो खेतीके लिये अनुपयोगी होते ही है, दूध भी देशी गायोके मुकाबले पौष्टिक नहीं होता तथा शास्त्रीय दृष्टिसे गौका जो लक्षण होना चाहिये उसका इनमें अभाव होनेके कारण इनकी गणना शुद्ध गोरूपमे नहीं होती। ये वर्णसंकर पशु होते हैं। इसलिये अच्छे-से-अच्छे देशी सॉड़ वनाये जायॅ और पाले जायॅ। उनमेसे कुछको अपने इलाकेकी अच्छी गायोके बरधानेके लिये सुरक्षित रखा जाय, जिससे उनकी नस्लमे सुधार हो। यदि प्रत्येक पिजरापोल दस-बीस अच्छे-से-अच्छे सॉड बनाकर जनताके उपयोगके लिये तैयार कर दे तो गोजातिकी बहुत बडी सेवा हो सकती है। अन्यथा भारतीय नस्लकी गाये ही समाप्त हो जायॅगी, जो देशका दुर्भाग्य होगा।

(७) ऐसे असमर्थ सद्गृहस्थोकी अच्छी जातिकी गाभिन गाये, जिन्होने दूध देना वंद कर दिया है, पालन करनेके लिये कम खर्चपर पिजरापोलोमे ले ली जायॅ और व्यानेके वाद उन्हे वापस दे दिया जाय। इसी प्रकार असमर्थ गृहस्थोके छोटे वछड़े-बछड़ियोका भी पालन किया जाय। ऐसें गाय-बछड़ोको कोई मालिक बेचना चाहे तो उन्हे पिजरापोल अच्छी दुधार गाय और मजवूत बेल बनानेके लिये खरीद ले।

(८) पिंजरापोलोके पास प्रायः जमीन होती ही है। नही तो जमीनका प्रबन्ध किया जाय और उसमे उपयोगी घास-चारेकी खेती की जाय और प्रचुर मात्रामे घास-चारा उपजाया जाय।

(९) गोचरभूमिमे सामान्य-कृपिके आधारपर अन्नादि उपजानेका प्रयास नहीं करना चाहिये, कारण गौशालाकी भूमिमें गायका खाद्य या चारा उपजाना ही उचित है। पर्याप्त चारा हो जानेपर अतिरिक्त भूमिमे कृपि भी की जा सकती है।

(१०) प्रतिवर्ष हरे घास-चारेको ठीक पद्धतिके अनुसार गड्ढोमे दबाकर या कुप्पोमे भरकर रखा जाय-Silage बनाये जायॅ, जिनसे सूखे मौसममे पशुओको पुष्टिकर चीज खानेको मिल सके।

(११) सूखे और हरे चारेका स्टाक किया जाय तथा काफी स्टाक होनेपर कम-से-कम दो वर्षके लिये अपनी आवश्यकताका सामान रखकर शेष उचित मूल्यपर गृहस्थोको वेचा जाय।

(१२) पर्याप्त गोचरभूमि हो, जिसमें सस्थाकी गाये तो चरे ही, उचित कीमतपर दूसरे लोगोंकी भी विसुकी हुई गाये और बछडी-वछडे वहॉ चर सके।

(१३) गोबरको जलानेके काममे न लेकर वैज्ञानिक रीतिसे उसकी खाद बनायी जाय। इसी प्रकार गोमूत्रका भी खादके काममे उपयोग किया जाय। पिंजरापोलकी परती जमीनमें इस खादसे बहुमूल्य घास-चारा पैदा हो सकता है।

(१४) कृषि-सुधारके आवश्यक और सुविधासे काममे लेने लायक तरीकोसे फल-फूल और साग भी उपजाया जाय और उसे बेचा जाय। गोबर-गोमूत्रकी खादसे इस खेतीमे भी वहुत लाभ हो सकता है।

(१५) पशुओकी सफाई तथा स्वास्थ्यका, उनके शरीरपर किलनी-जूॅ आदि कीडे घर न कर सके, इसका पूरा ध्यान रखा जाय। अङ्गहीन, बीमार, निर्बल, बलवान् पशुओके लिये रहने और चरनेके अलग-अलग स्थान हो। ताकि न तो परस्पर रोग संक्रमण कर सके, न बलवान् पशुकी मारके डरसे निर्बल पशु भूखा रहकर मृत्युकी ओर अग्रसर हो। उन्हे धोने, नहलाने, पोछने, उनमे जानवर न पैदा होने देने इत्यादिकी पूरी व्यवस्था रहनी चाहिये। इमारते, मकान इस ढगके बनाने चाहिये जिनमे हवा और प्रकाश आता हो तथा जिनकी अच्छी तरह सफाई की जा सकती हो। कुऍ तथा सिचाई आदिकी व्यवस्था वैज्ञानिक ढगसे हो।

(१६)अच्छे गोचिकित्सक (Veterınary Doctor) को रखा जाय और साथ ही एक अम्पताल या दवाखाना रहे। बीमार पशुओका सावधानीसे इलाज हो, जिस समय पशुओमे कोई सक्रामक रोग फैलने लगे। उस समय यदि उन्हे दवाके जलसे नहलाने, प्रतिषेधक दवा या इजेक्शन देनेकी पूरी व्यवस्था हो तो रोगका विस्तार सहज ही रुक जाय और वहुत-से पशुओके प्राण अनायास ही बच जायॅ।

कोई खास सक्रामक रोगसे पीड़ित गाय पिंजरापोलमे आवे तो उसे अलग रखकर इलाज करना चाहिये, जिससे दूसरी गायोपर उसका असर न हो। गायोंको भर्ती करते समय यदि गोशालाके डॉक्टर गायकी परीक्षा कर लिया करे तो सर्वोत्तम है।

(१७) प्रत्येक सस्थामे पशु-पालन-विज्ञानमे पारगत जिम्मेवार वैतनिक पुरुष रहने चाहिये। पशुओकी पहचान,

उनके रखने और खिलाने-पिलानेकी व्यवस्था, सफल खेतीका प्रबन्ध, घास-चारेका संग्रह, हरे चारेके साइलेज (Silage) बनानेकी व्यवस्था, स्वच्छता और सफाईका प्रबन्ध, सब चीजोका अलग-अलग हिसाब और रजिस्टर रखने आदि सारे काम उन्हींके नियन्त्रण और देख-रेखमें होने चाहिये। वे पशु-चिकित्सामे भी दक्ष हो तो सबसे अच्छी बात है। वैसी हालतमें पशुचिकित्साके लिये अलग डॉक्टर न रखकर एक सुयोग्य सहकारी रखनेसे भी काम चल सकता है।

(१८) पशु, घास-चारा, [illegible] और उनके माता-पिता, पशुओंके [illegible] आय-व्यय आदिका ब्योरेवार [illegible]

(१९) नये पिंजरापोल, [illegible] उनको शहरोमे न बनाकर ऐसे स्थानोंमें [illegible] खुली जगह हो। चारों ओर विस्तृत [illegible] बहुत अच्छा है, नहीं तो, जलका पूरा प्रबन्ध [illegible]

—[illegible]

गोशाला कैसी हो?

जो लोग गौओंको सर्दी और वर्षासे बचानेके लिये घर बनवाते हैं उनके सात कुल तर जाते हैं। (महा०, अनु०, अ० ६६)

गोष्ठं च कारयेत्तस्य किञ्चिद् विघ्नविवर्जितम्।
सदा गोमयमूत्राभ्यां विघसैश्च विवर्जितम्॥
न मलं निक्षिपेद्गोष्ठे सर्वदेवनिकेतने।
आत्मनः शयनीयस्य सदृशं कारयेद्बुधः॥
समं निर्वापयेद् यत्नाच्छीतवातरजस्तथा।
प्राणस्य सदृशं पश्येद् गां च सामान्यविग्रहम्॥

(पद्म०, सृष्टि० ४८। १११—११३)

'गौओंके लिये एक ऐसा गोष्ठ बनाना चाहिये जिसमे कुत्ते, मक्खी, मच्छर, डाँस, चोर आदिका कोई भी विघ्न न हो। गोबर, गोमूत्र तथा बचे-खुचे घास-चारेका कूडा पडा न रह जाय। गौओका गोष्ठ सारे देवताओका निवास-स्थान है। उसमे मल नहीं डालना चाहिये। समझदार आदमीको चाहिये कि गोष्ठको अपने शयन करनेके कमरेकी तरह साफ-सुथरा रखे। इसे सर्दी, वायु और धूलसे समान भावसे प्रयत्नपूर्वक बचाये रखना चाहिये। गौ सामान्य प्राणी होनेपर भी उसे अपने प्राणोके समान देखना चाहिये।'

गोशालामे मक्खी, मच्छर और डॉस इत्यादि न होने पायें, इसलिये रोज सुगन्धित धूनी देनी चाहिये। जो गोपालक गोशालामे इस प्रकार धूनी नहीं देता, वह मक्षिकालीन नरकमे जाता है और नरकमें [illegible] मक्खियाँ उसके चमडेको फाडकर उसका रक्त-पान करती हैं। (देवीपुराण)

गोबर और गोमूत्रसे कभी घृणा न करे। [illegible] गोशालाको सदा साफ रखे। गर्मियोमे ठंडे पेड़ोंकी [illegible] वर्षा और शिशिर-कालमे थोडे गरम और [illegible] आनेवाले घरोमें तथा जाडेमें गर्म और बिना [illegible] गायोको रखे। जूठन, कफ, थूक, मूत्र, विष्ठा आदि [illegible] प्रकारके भी मलको गोशालामें न छोडे। बछडेको कभी [illegible] न जाय। कुलटा स्त्री और नीच मनुष्योंको [illegible] जाने दे। जूता पहनकर अथवा हाथी, घोडा [illegible] पालकीपर सवार होकर गायोंके बीचमे न जाय। [illegible]

प्रातःकाल नमक, इसके बाद [illegible] खानेको देना चाहिये। रातके समय गोशालामें [illegible] चाहिये और बाजे तथा पौराणिक [illegible] चाहिये। उठते-बैठते, खाते-पीते [illegible] लिखे मन्त्रका ध्यान करना चाहिये। [illegible] चाहिये कि गायें ताजे घास-चारे और [illegible] अपने बछडोंके साथ आनन्द करें। [illegible] सर्दी-रोगके भयसे विमुक्त होकर [illegible]

तृणोदकाद्येषु वनेषु मत्ता· [illegible]
क्षीरं प्रमुञ्चन्तु सुखं स्वपन्तु [illegible]

[illegible]

श्रीगोरक्षण-संस्था, अमरावती (महाराष्ट्र)

(ॲड० श्री आर० एम्०, मुँधड़ा, सचिव)

श्रीगोरक्षण-संस्था, अमरावती भारतकी प्राचीनतम गोशालाओंमेसे एक है। इसकी स्थापना हुए आज सौ वर्षसे भी अधिक हो गये हैं। सन् १८९१ ई०मे राष्ट्रनेता श्रीदादासाहेब खापर्डेके सत्प्रयत्नोसे अमरावतीमें इस गोरक्षण-संस्थाकी स्थापना हुई। तबसे निरन्तर यह संस्था गोरक्षण, गोपालन तथा गोसंवर्धनके कार्योंमे लगी हुई है और यहाँका कार्य एवं प्रगति भी संतोषजनक है। इस संस्थाकी स्थापनाका मुख्य उद्देश्य भाकड़ी गोधनका संरक्षण है। दुधार गौ अथवा जोतके लिये समर्थ बैलको तो प्रायः सभी रखना चाहते हैं, किंतु गोधन जब बूढ़ा हो जाता है, अशक्त हो जाता है, उसकी कोई प्रत्यक्ष उपयोगिता नहीं दीखती, ऐसी स्थितिमे वह गोधन असहाय, अनाथ एवं असुरक्षित हो जाता है। ऐसे गोधनको प्रायः गोपालक अपने पास नहीं रखते, अतः ऐसे गोधनके पालन-पोषणके लिये ही मुख्यतः इस संस्थाकी स्थापना हुई। ऐसे गोधनकी सुरक्षा तथा उचित मूल्यपर आवश्यक व्यक्तिके लिये शुद्ध दुग्ध उपलब्ध कराना—यह इस संस्थाका मुख्य उद्देश्य है। यहाँ वर्तमानमे गाय, बैल आदिकी कुल संख्या ३०५ है, जिसका विवरण इस प्रकार है—

गाय, बैल, साँड़ तथा बछड़े-बछड़ियोंकी संख्याका विवरण—

	गायें	बछडे	बछडियाँ	सॉड	बैल	कुल
दुग्धालय-विभाग	५८	३९	५०	६	०	१५३
गोसदन-विभाग	३१	१२	१२	१	९	६५
काँजी-हाऊस	५७	३०	०	०	०	८७
	१४६	८१	६२	७	९	३०५

विभिन्न नस्लकी गायोंका विवरण—

जर्सी	होल्स्टेन	थारपारकर	हरियानगीर	गीर	हरियाना	देशी
२७	१०	१०	५	२	२	९०
						कुल—१४६

संस्थामें जानवरोंकी देखभाल करनेके लिये कर्मचारी हैं तथा पशुचिकित्सा डॉक्टरद्वारा करायी जाती है। दुग्धालय-विभाग और गोसदन-विभागमें २५-३० कर्मचारी काम करते हैं। सभी जानवरोंके लिये कडबा, कुट्टीकी पर्याप्त मात्रामें व्यवस्था की गयी है। संस्थामे पानीकी व्यवस्थाके लिये बावड़ियोंपर्र इलेक्ट्रिक मोटरपंप लगाये गये हैं। जानवरोके पीनेके लिये पानीके टॅकि बनाये गये हैं।

संस्थाके पास ३२० एकड़ २ गुंठा जमीन है, इसमें २१९ एकड़ १९ गुंठा चराई योग्य पहाड है। घास चारा पैदा करने-हेतु संस्थाके पास दस्तूरनगरपर जो जमीन है उसमें विभिन्न प्रकारका मक्का, ज्वार, प्यारा घास, एन०बी० २१का हरा घास पैदा किया जाता है।

संस्थाका हमेशा यह प्रयास रहा है कि शुद्ध निर्मल गायका दूध जनताको प्राप्त हो। संस्थाद्वारा अपंग, छोटे बच्चोंको तथा धार्मिक कार्योंमें एवं मन्दिरोंमें निःशुल्क दूध दिया जाता है। गोबरको इकट्ठा करनेके लिये पक्के टाँके बनाये हैं, जहाँ गोबर एकत्र किया जाता है। यहाँपर ४५ घनमीटर गोबर-गैस प्लांट बनाया गया है। इसका तैयार किया हुआ खाद कास्तकारोंको रियायती दरोंपर दिया जाता है। नॅडेप-पद्धतिसे भी खाद तैयार होती है।

हमारी दृष्टिमें आदर्श गोशालाका स्वरूप

गाय तथा बछडोंको रखनेके लिये पर्याप्त मात्रामें जगह हो तथा उनको रखनेके लिये पर्याप्त मात्रामें कोठे हों। उन्हें अच्छा खाद्य मिले, गायों तथा बछड़ोंकी ठीक तरहसे देखभाल हो। गाय-बछड़ोंको चरानेके लिये पर्याप्त मात्रामें जमीन हो तभी अच्छी गौशाला बन सकती है। व्यवस्थापनका यह कर्तव्य है कि गायोंका दूध उचित मूल्यपर जनताको उपलब्ध करायें, उसी प्रकार किसानोंको उचित मूल्यपर खाद दे और जितना बन सके उतना अनाथ, अपंग व्यक्तियोको बिना मूल्य दूध वितरण करें। किसानोंको गाय-बछड़े उचित मूल्यपर दें तथा समय-समयपर शिविर लगाकर पशुपालन-हेतु लोगोंमें जागृति-निर्माण करे और सबसे बड़े परिमाणमें आज जो हजारो गाय-बछड़े कसाईखानेमें जाते है उन्हे रोकें तथा पशुवध, गोहत्या न हो इसलिये

भरसक प्रयत्न हो। अमरावती गोरक्षण-संस्थाद्वारा इन सभी कार्योंको यथासम्भव विशेष प्रयत्नपूर्वक किया जा रहा है।

गोपालन तथा गोसंवर्धन-हेतु आज किन्हीं कारणोवश जो गोशालाएँ बंद हैं, उन्हे पुनर्जीवित करना बहुत जरूरी है। यह देशव्यापी कार्य है। इसी हेतु 'अमरावती गोरक्षण-संस्था'ने 'विदर्भ गोशाला-पिंजरापोल' नामक एक संघ स्थापित किया है। विदर्भमे ५३ गोशालाएँ हैं। ये सभी गोशालाएँ इस संघसे संलग्न हैं।

इस संस्थाने गोमूत्र नालीद्वारा इकट्ठा करनेके लिये टाँकि बनवाये हैं। यहाँ गोमूत्र चिकित्साद्वारा बीमारोंका इलाज भी किया जाता है। गोमूत्रसे अर्क, वटी और आसव तैयार किया जाता है तथा ये दवाइयाँ बिना मूल्य बीमारोंको दी जाती हैं। इस हेतु आनेवाला सारा खर्च संस्थाद्वारा किया जाता है। संस्थाके आयके स्रोतोंमें दुकानोंका [illegible] किराया, दूध-बिक्री, खाद-बिक्री तथा [illegible] है। इसीके साथ ही संस्थाने 'कार्पस फण्ड' की एक [illegible] भी चलायी है, इस योजनामें जो व्यक्ति [illegible] है वह राशि भारतीय स्टेट बैंकमें फिक्स [illegible] जाती है और उसके ब्याजमें चारा आदि [illegible] संस्थाने गायोंके तथा बछड़े-बछड़ियोंके लिये [illegible] तथा अपंग गायोंका अलग कक्ष बनाया है। जो लोग [illegible] जानवरोंका पालन-पोषण नहीं करते, ऐसे [illegible] संस्था स्वीकार करके उनका पालन-पोषण करती है।

'श्रीविदर्भ-गोशाला-पिंजरापोल-संघ, अमरावती' [illegible] जो गोशालाएँ सदस्यरूपमे हैं उनकी एक सूची भी [illegible] जा रही है—

'श्रीविदर्भ-गोशाला-पिंजरापोल-संघ, अमरावती' के सदस्य-गोशालाओंकी सूची

अनुक्रमाङ्क	गोशालाका नाम	स्थान	जिला
१	श्रीगोरक्षण-संस्था	अमरावती	अमरावती
२	,, ,,	धामणगाँव रेल्वे	,,
३	,, ,,	बनोसा	,,
४	,, ,,	मोर्शी	,,
५	श्रीगुरुदेव-सेवाश्रम-गोशाला	गुरुकुंज मोझरी	,,
६	श्रीगोपाल-गोरक्षण-सस्था	अजनगाँव सुर्जी	,,
७	श्रीविरबाई-गोशाला	अमरावती	,,
८	श्रीश्रीराम-गोशाला	अचलपुर	,,
९	श्रीगोरक्षण-संस्था	रीद्धपुर	,,
१०	,, ,,	अकोला	[illegible]
११	,, ,,	रीसोड	
१२	,, ,,	मुर्तीजापुर	
१३	श्रीपिंजरापोल गोशाला	कारंजालाड	
१४	श्रीगोरक्षण-संस्था	वाशीम	
१५	श्रीसखाराममहाराज-संस्थान	लोणी	
१६	श्रीगोरक्षण-संस्था	शेगाँव	
१७	,, ,,	बालापुर	
१८	,, ,,	देगाँव	
१९	श्रीगोरक्षण-ट्रस्ट	भरतपुर	

'श्रीविदर्भ-गोशाला-पिंजरापोल-संघ, अमरावती' के सदस्य-गोशालाओंकी सूची

अनुक्रमाङ्क	गोशालाका नाम	स्थान	जिला
२०	श्रीगोरक्षण-संस्था	मेहा	अकोला
२१	,, ,,	,,	,,
२२	,, ,,	किनखेडपुर्णा	,,
२३	,, ,,	उकलीबाजार	,,
२४	,, ,,	कुरुम	,,
२५	,, ,,	यवतमाल	यवतमाल
२६	श्रीगोरक्षण-संस्था	वणी	,,
२७	,, ,,	उमरखेड़	,,
२८	श्रीग्रामसेवामंडल-गोशाला	गोपूरी	वर्धा
२९	श्रीगोरक्षण-संस्था	आर्वी	,,
३०	श्रीनयीतालीम-समिति-सेवा-ग्राम-गोशाला	सेवाग्राम	,,
३१	श्रीसर्वसेवासंघ-गोशाला	पीपरी	,,
३२	श्रीगोपूरी-संस्थान	नालवाडी	,,
३३	श्रीगोरक्षण-संस्था	हिंगणघाट	,,
३४	श्रीगोरक्षण-संस्था आनन्दवन	वरोरा	चंद्रपूर
३५	श्रीगोरक्षण-संस्था	नागपूर	नागपूर
३६	श्रीनागपुरव्यापारी-गोरक्षण-संघ	,,	,,
३७	श्रीगोरक्षण-संस्था	काटोल	,,
३८	श्रीबुलढाणा-गोरक्षण-ट्रस्ट	बुलढाणा	बुलढाणा
३९	श्रीगोपालकृष्ण-गोरक्षण-संस्था	जळगाँव जामोद	,,
४०	श्रीगोरक्षण-संस्था	खामगाँव	,,
४१	श्रीवर्धमान-गोरक्षण-संस्था	लोणार	,,
४२	श्रीगोरक्षण-संस्था	मल्कापूर	,,
४३	श्रीश्रीकृष्ण-गोरक्षण-सभा	गोदिया	भंडारा
४४	श्रीगोरक्षण-संस्था	भंडारा	,,
४५	श्रीश्रीकृष्ण-गोशाला	तुमसर	,,
४६	श्रीगोरक्षण-संस्था	तिरोडा	,,
४७	श्रीदिलीपबाबा व्यसनमुक्त संस्थान व गोशाला	लाढी	अकोला
४८	श्रीगोरक्षण-संस्था	माधवनगर	,,

श्रीकाशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी

'श्रीकाशी जीवदया-विस्तारिणी गोशाला एवं पशुशाला, वाराणसी' की स्थापना सन् १८८८ मे पं० मदनमोहन मालवीयजीकी प्रेरणासे हुई थी। जीवमात्रके प्रति दया और उसकी रक्षा इस गोशालाका मुख्य उद्देश्य है। अपने सुदीर्घ-कालीन इतिहासमें इस गोशालाका धीरे-धीरे बहुत विस्तार हुआ और गोरक्षा तथा गोसंवर्धन-सम्बन्धी अनेक संरचनात्मक तथा प्रायोगिक कार्य इस गोशाला तथा इसकी शाखाओंके माध्यमसे होते आ रहे है। गोशालाके पास विभिन्न क्षेत्रोंमे विशाल भूखण्ड तथा अपनी गोशालाएँ भी हैं, जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

(१) बावन बीघा—आजमगढ़के मुख्य मार्गपर नगरसे लगभग ८ कि०मी० की दूरीपर १०० बीघेका भूखण्ड है, जो 'बावन बीघा' के नामसे जाना जाता है।

(२) रामेश्वर गोशाला—काशीकी पंचक्रोशी यात्रा-मार्गमें स्थित 'रामेश्वर गोशाला' अपनी सक्रियताके कारण आज एक चर्चित गोशाला है। यद्यपि बीचमे इसकी कार्य-शैली कुछ शिथिल-सी हो गयी थी, किंतु १९८६के बाद इसे पुनः प्रतिष्ठित कर बहुत विस्तृत किया गया है। गोशालाके कार्यकर्ताओने यह संकल्प लिया है कि 'कसाइयोसे छुडायी गयी या सडकोंपर उपेक्षित घूमती अथवा किसानोद्वारा बोझ समझी जानेवाली कोई भी गाय या गोवंश (गाय, बैल, बाछा, बाछी, सॉड़) इत्यादि गोशालामें आयेगे तो उन्हें संरक्षण दिया जायगा।' इस सकल्पके बाद १९८६से अबतक लगभग ५०,००० से भी अधिक गोवंश बचाये गये, उनमेसे उत्पादक गोवशको गाँववालोको पालनेके लिये वितरित कर दिया गया। जिन गायोंको ग्रामीणों तथा किसानोने अनुपयोगी मानकर नहीं लिया, वैसे १४०० से अधिक गोवंश इस समय गोशालामे है। उन गायोकी समुचित देखभाल हुई, जिससे ८५० लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित हो रहा है। यह गोशाला भिन्न-भिन्न खण्डोमें विभाजित है। कुल लगभग २५० एकड़ भूमि इस शाखाके पास है। क्षेत्र तथा कार्य-सुविधाकी दृष्टिसे इसकी विभिन्न उपशाखाएँ हैं—

(क) मुख्य भवन—रामेश्वर [illegible] मुख्य भवन हैं। यहाँ अधिकतर [illegible] गोवंश रखे जाते हैं।

(ख) पंचशिवाला—मुख्य भवनसे [illegible] दूरीपर पंचशिवालामे चारे आदिका [illegible] अतिरिक्त गोवंशके लिये खटाल है।

(ग) मधुवन—मुख्य भवनसे लगभग [illegible] दूर मधुवनमे कसाइयोसे पकडे गये [illegible] हैं, जिनमे कुछ गाये समुचित देखभालसे [illegible] लगती हैं।

(घ) वृन्दावन—यह मधुवनके निकट है। [illegible] अधिकतर तथाकथित अनुपयोगी गोवंश [illegible]।

(३) सदर—नगरमें दुलहिनजी [illegible] गोशालाका प्रधान कार्यालय है, यहाँ लगभग ८० [illegible] हे, यहाँ बाछीको प्रजनन योग्य बनानेका भी [illegible]।

(४) सारग—पहडिया मार्गपर [illegible] एकड भूमि मुख्य मार्गपर है। यहाँ एक [illegible] स्थापित करनेकी योजना है।

इस प्रकार 'काशी जीवदया-विस्तारिणी [illegible]' अपने अनेक रूपोंमे अनेक स्थानोंपर [illegible] सवर्धनके अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। [illegible] गोमूत्रके अनेक उपयोगोंके साथ ही [illegible] उपजाऊ बनानेका कार्य चल रहा है। [illegible] ऊर्जाके रूपमें तथा नॅडेप-पद्धतिसे [illegible] भी व्यापक स्तरपर हो रहा है। [illegible] भी इस गोशाला तथा इसकी [illegible] है। गोरक्षण, गोसंवर्धन तथा [illegible] मुख्य उद्देश्य है अपने [illegible] योगदानकी उपयोगिताको [illegible] ओर अग्रसर होना और [illegible] भाव रखना। —[illegible]

[स्थानाभावके कारण अन्य गोशालाओंका विवरण सलग्न परिशिष्टमें दिया [illegible]]

गोरक्षा-अभियान

[भारतवर्ष एक अध्यात्मप्रधान देश है। पाश्चात्त्य देशोंके कार्य-कलाप और वहाँकी नीतियाँ स्वार्थसे प्रेरित होती हैं, जबकि भारतमें परमार्थकी प्रधानता है। अपने तुच्छ स्वार्थकी सिद्धिके लिये किसी भी प्राणीको कष्ट देना अथवा उसकी हत्या करना अधर्म माना गया है। भारतीय संस्कृतिने इसे कभी स्वीकार नहीं किया। जहाँतक गायका प्रश्न है, प्रारम्भसे ही हमारे ऋषि-महर्षि और मनीषियोंने गायको संसारका सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना और इसे विश्वकी माता कहकर सम्बोधित किया।

अनादिकालसे वेदोंमें गायको 'अघ्न्या' कहकर यह दर्शाया गया है कि गाय अवध्य है अर्थात् किसी भी स्थितिमे गायका वध नहीं किया जा सकता। 'अघ्न्या' का अर्थ है जो न तो स्वयं किसीको कष्ट पहुँचाये और न अन्य किसीके द्वारा मारी-पीटी और क्लेश पहुँचायी जाय। इसीलिये प्रारम्भसे ही भारतीय शासकोंने गोवंशको राज्यका संरक्षण प्रदान किया और इसे अवध्य माना अर्थात् उन दिनों गोवध करनेवालेको प्राणदण्ड दिया जाता था। हिन्दू सम्राटोंके समय तो गोवधपर पूर्ण प्रतिबन्ध रहा ही, मुगल बादशाहोंके शासनकालमें भी समझदार शासकोंने अपनी दूरदर्शिताके आधारपर प्रजामे परस्पर सौमनस्यता रखनेकी दृष्टिसे गोवधपर पूर्ण प्रतिबन्ध रखा। पर बादके दिनोंमे विदेशियोके शासनकालमे इस प्रतिबन्धपर शिथिलता आने लगी और गोहत्याका पाप प्रारम्भ हो गया जो आजतक हो रहा है। देशमें गोहत्याके कलंकको मिटानेके लिये ही स्वतन्त्रता-संग्रामकी शुरुआत हुई। स्वतन्त्रता-संग्रामके प्रमुख कर्णधारोने यह घोषणा की कि 'स्वराज्य प्राप्त होते ही गोहत्याका काला कलंक सबसे पहले मिटेगा', जबकि आज स्वराज्य प्राप्त किये ४७ वर्ष बीत गये और राम-कृष्ण, बुद्ध तथा गाँधीकी इस पवित्र भूमिपर अभीतक गोरक्त गिरना बंद नहीं हुआ—गोहत्या पूरी बंद नहीं हो सकी।

स्वराज्य-प्राप्तिके बाद गोहत्या-बंदी कानून बननेकी आशा क्षीण होनेपर यहाँकी जनता, बुद्धिजीवियों और संत-महात्माओंने गोवध-बदीके लिये अहिसात्मक आन्दोलन, सत्याग्रह किये, जेलकी यातनाएँ सहीं, बलिदान और कुर्बानियाँ दीं, जो इस देशका एक इतिहास बन गया। गोरक्षाके प्रयत्नकी इस ऐतिहासिक परम्पराका दिग्दर्शन यहाँ संक्षेपमें प्रस्तुत किया जा रहा है, जो गोभक्तोके लिये विशेष प्रेरणादायक है। आशा है, इस देशके कर्णधार शीघ्र ही गोवशकी हत्या-बंदीका केन्द्रीय कानून बनाकर देशको पतनके गर्तमें जानेसे बचायेंगे और भारतीय संस्कृतिकी रक्षा करेगे।]—सम्पादक

भारतमें गोरक्षाकी ऐतिहासिक परम्परा

(प० श्रीजानकीनाथजी शर्मा)

सुदर्शना एव सुमङ्गला गायका वेदोमे मुख्य नाम 'अघ्न्या' आता है—

'अघ्न्यानां नः पोषे कृणोतु' (अथर्व० शौ० ९।४।२, पैप्पलाद० १६। २४। २। ६, यजु० १२। ७३, मैत्रायणी २। ५। १०, तैत्ति०सं० ३। ३। ९। २) इत्यादि। **'अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।'** (ऋग्वेद १। १६४। ४०) **'नहि मे अस्त्यघ्न्या'** (ऋग्वेद ८। १०२। १९) इत्यादि। श्रीअमरसिंहने भी (अमर०२। ९। ६६-६७ में) कहा है—

माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी॥
अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी।

—इस श्लोकमें उन्होंने माता, अघ्न्या, रोहिणी,

सौरभेयी आदि गायके नाम वतलाये हैं तथा रत्नमाला, वैजयन्ती, त्रिकाण्डशेष आदि कोषोके कर्ताओंने भी गायके धेनु, सुदर्शना, माहेयी इज्या, कल्याणी, भद्रा, अनड्वाही, पावनी आदि और भी अनेको नाम दिये हैं।

अघ्न्याकी व्याख्या—जो न तो स्वयं किसीको कष्ट पहुँचाती है और न जो अन्य किसीके द्वारा कभी मारी-पीटी या क्लेश पहुँचायी जाने योग्य है अर्थात् पूज्या, वन्द्या और श्रद्धेया है—इस अर्थमें उज्ज्वलदत्त आदिने 'न हन्यते कैर्वापि', 'न वा हन्ति दातारम्', 'ग्रहीतारं वा' इस व्युत्पत्तिद्वारा 'अघ्न्यादयश्च' (उणादि ४। ११२) सूत्रकी व्याख्यामे यक् प्रत्ययसे इस 'अघ्न्या' पदकी साधुता स्वीकार की है। —'यकः कित्वात्', 'गमहन०' इत्युपधालोपे 'हो हन्तेः' इति कुत्वेन हस्य घः।

'निरुक्त'में भी श्रीयास्कने (११। ४३ मे) स्वयं ही 'अहन्तव्या भवतीत्यघ्नीति वा अघ्न्या' कहकर इसकी व्याख्या लिखी है। निरुक्त निघण्टु २। ११। १ की व्याख्यामे देवराज यज्वाने आगे लिखा है—

'अघस्य दुर्भिक्षादेर्हन्त्री वा अहन्तव्या वेति अघ्न्या'

महाभारत, शान्तिपर्व (२६२। ४७) मे भी तुलाधार तथा भीष्मने सुस्पष्ट रूपसे इसकी व्युत्पत्ति करते हुए कहा था—श्रुतिमे गौओंको अघ्न्या (अवध्य) कहा गया है, फिर कौन उन्हे मारनेका विचार करेगा ? जो पुरुष गाय और बैलोंको मारता है, वह महान् पाप करता है—

अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति।
महच्चकाराकुशल वृषं गां वाऽऽलभेत् तु य·॥

ये अघ्न्या, माता, अर्जुनी, सुरभी, माहेयी, अदिति, इज्या, कल्याणी तथा भद्रा आदि शब्द—गायके नाम ही गोरक्षाकी ऐतिहासिकताका साक्ष्य दे रहे हैं। आजकल अनीश्वरवादकी तरह भारतमें 'गोमांस' की वात कहनेका फैशन चल पडा है, इसका कारण मध्यकालीन कवियोका धार्मिक विनोद है। जैसे हठयोगके ग्रन्थोमे कहा गया है—

गोशब्देनोदिता जिह्वा तत्प्रवेशो हि तालुनि।
गोमांसभक्षणं तत्तु महापातकनाशनम्॥

(हठयोग-प्रदी० ३। ४८)

यहाँ खेचरी-मुद्राको ही गोमास-भक्षण कहा गया है। 'गो'शब्दका अर्थ है जिह्वा और तालु-विवरमें उसका प्रवेश ही मास-भक्षण है। यही खेचरी-मुद्रा है।

वी०ए०स्मिथने अपनी प्रसिद्ध [illegible] पुस्तकके 'फण्डामेण्टल यूनिटी ऑफ [illegible]' [illegible] प्रकरणमें लिखा है—Nearly all Hindu [illegible] Brahmnas and all may be said to [illegible] cow.P.7

कौटिल्यने अपने अर्थशास्त्रके [illegible] राजाको पूर्ण ध्यान देनेके लिये आदेश दिया है। [illegible] शिलालेखोंमे गोहत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध [illegible] नूनिजने विजयनगरके राजाओंके विषयमें [illegible] वे गोमाताकी पूजा करते थे और उनके यहाँ [illegible] सर्वथा निषेध था। (Vijaya Nagar P 315)

वदाउनीने लिखा है कि हिन्दुओं तथा [illegible] प्रभावसे अकवरके राज्यमे कोई भी गोवध नहीं [illegible] था—stringent ristrictions on the eat of flesh meat, imposed by a series of enactments [illegible] to have been mainly due to own influence, [illegible] the idea of Hindu ascetis, may also have [illegible] a part, as Badauny suggests (ibid P 350)

वी०ए० स्मिथने अपने इतिहास १०१ पर [illegible] विषयमे यहाँतक लिखा है कि वह [illegible] गोहत्यारोको फाँसीपर लटकानेमे नहीं [illegible]— Jahangir in the 17th century did not [illegible] to kill or mutilate some unlucky men, who [illegible] accidently spoiled short at a blue [illegible]

सुप्रीम कोर्टके एक फसलेंमे [illegible] हुए 'टुथ' २०-१-७३ की सम्पादकीय [illegible] लिखा है—'In the 15th century the [illegible] so acute that a ruler, like Baber had to [illegible] his successors the duty to stop cow [illegible] not to hurt the feelings of his Hindu [illegible] As late as the 18th century Hyder [illegible] powerful ruler of Mysore issued [illegible] anybody discovered killing a [illegible] his hands cut off'

(Quoted in the Supreme Court [illegible] of 1958)

कांग्रेसके [illegible]

ही मुख्यांश-युक्त भाषण संगृहीत हैं।

स्वामी दयानन्द, महात्मा गाँधी, जमनालाल बजाज, स्वामी करपात्रीजी, ला०हरदेवसहायजी, श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी एवं श्रीभाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारने भी इसी परम्पराका पूर्णतया पालन करते हुए गोरक्षार्थ अनेक तप एवं उत्सर्ग किये। वस्तुतः शुद्ध गोरक्षा-गोसेवा आदिके बिना देशमें आचार, श्री, ऐश्वर्य और शान्ति-स्थापन सम्भव नहीं है। अपितु जैसा कि देखा जा रहा है—निरन्तर अन्न-वस्त्रका अभाव, चोरी, डॉका, हत्या-लूट आदि उपद्रव और सभी प्रकारकी अशान्ति, दुःख तथा क्लेशोंकी परम्परा ही पनपती जा रही है एवं व्याप्त होती चली जा रही है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि जहाँ गायोंको तनिक भी क्लेश होता है वहाँ जप-पूजा-पाठ, यज्ञ, तप आदिमे भी सिद्धि नहीं मिलती, पूर्ण फलकी प्राप्तिकी कल्पना ही दुर्घट है।

ऐसी दशामें सुख-शान्ति, राजनीतिक सफलता, व्यावहारिक सौहार्द और सब प्रकारके कल्याणके लिये एकमात्र उपाय है सच्ची भावनासे गोसेवा-गोपालन और गोपूजा। जबतक भारतमें इसकी परम्परा थी, दूध-दहीकी नदियाँ बहती थीं तबतक शान्ति थी और देवता भी यहाँ जन्म लेनेके लिये तरसते थे। उर्वशी अप्सरा तो केवल घृत-पान करनेके लिये पुरूरवाके साथ भारतमे बहुत दिनोतक रही। ऐसे और अनेक उदाहरण है। राजा मरुत्के यज्ञमे तो मरुद्गण नामक देवगण भी भोजन परोसनेका काम करते थे और विश्वेदेवगण सदा उनके सभासदके रूपमे विराजते थे—

मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः॥

यह परिस्थिति आज भी अभी ही लौट सकती है, यदि हम पूर्ण श्रद्धासे भगवती गौकी अर्चना करनेके लिये तत्पर हो जायँ—प्रवृत्त हो जायँ।



गोरक्षाकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

(ब्रह्मलीन अनन्तश्रीविभूषित स्वामी श्रीपरमानन्द सरस्वतीजी महाराज)

प्राचीनतम कालसे लेकर ईसवी-पूर्व पाँचवीं शताब्दीतक भारतमें वैदिक संस्कृतिका ही प्राधान्य रहा। फिर धार्मिक स्पर्धाका एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। यह था बौद्धधर्मके उद्भवका इतिहास। वैदिक संस्कृतिसे अनुप्राणित सभी हिन्दू सम्राटोंके शासनमे गोवंशको राज्यका सरक्षण प्राप्त रहा। गोवध करनेवालेको प्राण-दण्ड दिया जाता था। गोमेध-यज्ञका नाम लेकर जो प्राचीन भारतमें गोवध और गोमांस-भक्षण सिद्ध करनेका कुप्रयास करते है वे गोमेधके स्वरूपको नहीं जानते, ऐसे ही शास्त्रोंमे नरमेधकी भी बात आयी है। हो सकता है कि इसे लेकर कोई ज्ञान-लव-दुर्विदग्ध यह सिद्ध करने चले कि प्राचीन भारतमे नरवध होता था और हिन्दू लोग नर-मांस-भक्षी थे, किंतु ऐसी बात है नहीं। गाय वस्तुतः भारतमें सदा ही 'अवध्य' मानी गयी है और भारतीयोंने उसका वध कभी सहन नहीं किया।

प्राचीन भारतके शक्तिशाली सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य (३२३ से ३२८ ई० पूर्व) के शासनकालमे गोवंशका वध दण्डनीय अपराध था। चन्द्रगुप्तके महामात्य आचार्य चाणक्यकृत कौटिलीय अर्थशास्त्र (२। २६। ४३) मे समस्त गोवंशको 'अवध्य' कहा गया है। '**वत्सो वृषो धेनुश्चैषामवध्याः। घ्नतः पञ्चाशत्को दण्डः।**' राज्यके विविध कर्तव्योमें गोवंशकी रक्षा और पालन एक प्रमुख कर्तव्य था। राज्य गो-संवर्धनके लिये भी सचेष्ट रहता था और इसके लिये राज्यकी ओरसे 'गो-अध्यक्ष' की नियुक्ति होती थी। गो-अध्यक्षके कर्तव्य विस्तारसे कौटिलीय अर्थशास्त्रमें वर्णित है।

बौद्धधर्म तो पूर्णरूपसे अहिंसा-धर्मपर ही निर्भर रहा है। भगवान् बुद्ध करुणाके ही अवतार कहे जाते है। बौद्धधर्मके 'कुलवग्गसुत्त' नामक ग्रन्थमे जीवोको क्षति पहुँचाना, हिसा करना, काटना, चोरी करना, झूठ बोलना, छल-छद्म करना, असद्-ग्रन्थोका पढना और परस्त्रीगमन करना—ये निषिद्ध कर्म बताये गये है। सभी जीवोंकी

हिंसाका निषेध करनेवाले बौद्धधर्ममे गोवंशके वधका प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिये बौद्धधर्म स्वीकार करनेवाले सम्राट् अशोक (३०४ से २३२ ई० पूर्व) ने उसी धर्म-भावनासे प्रेरित होकर अपने राज्यमें पशुवधको कानूनन बंद कर दिया। इसी प्रकार मौर्य शासन और उससे पूर्व भी गोवशके वधपर पूर्ण प्रतिबन्ध था।

भारतीय सनातन संस्कृतिके नियामक शास्त्र मानवधर्म-शास्त्र अथवा मनुस्मृतिमें महर्षि मनुने मांसके व्यवहारको प्रशस्त नही माना, विहित-अविहित सभी प्रकारके मांसोके परित्यागको ही उत्तम बताया है और भगवत्प्राप्तिके साधनोंमे पूर्ण अहिंसा-व्रतको मुख्य माना है। 'अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते॥' (मनु० ६। ६०) तीसरी शताव्दीमे विष्णु-भक्तिके प्रचारने विशेष रूपसे अहिसा-धर्मको अधिक बल दिया।

दसवीं शताब्दीतक भारत गोवशके लिये स्वर्गभूमिकी भाँति था। महमूद गजनवीके आक्रमण (९९८ से १०३० ई०) से पूर्व मुसलमान सूफी संत भारतमें आकर साधना करने लगे थे। पर वे सब गायको आदरकी दृष्टिसे देखते थे। मुसलमान आक्रान्ताओने विजयके गर्वमे गोवध आरम्भ किया। यह सत्य है कि इस्लाम गोभक्तिका पाठ नहीं पढ़ाता, पर यह भी सत्य है कि इस्लाम धर्मके लिये गोहत्या करना अनिवार्य नहीं। मुसलमानोके आगमनसे पूर्व भारतमे पारसी लोग आ चुके थे। वे गायका आदर करते हैं। गायके गोबर और मूत्रसे पवित्रता प्राप्त होनेमे विश्वास करते हैं। जैन और बौद्ध भी गायका आदर करते हैं। अत: राजा लोग चाहे हिन्दू-धर्मके प्रभावमें रहे हो चाहे जैन बौद्धधर्मके प्रभावमे—भारतमें गोवंशके वधपर प्रतिबन्ध ही रहा। मुसलमान शासकोने स्पर्धावश गोवध आरम्भ किया। युगोसे चली आयी गोभक्तिका समाजपर प्रभाव यह हुआ था कि गोघातक और गोमास-भक्षी हिन्दू ही नहीं माना जाता था। गोभक्षकसे हिन्दूको स्वाभाविक घृणा होती थी। वावर (१५२६ से १५३०ई०) की दूरदर्शिताने बहुसंख्यक समाजकी इस बद्धमूल भावनाको परखा और इस्लामका भी इसमे कोई विरोध न देखकर फरमानद्वारा गोहत्या बंद कर दी। इससे हिन्दू और मुसलमानोमे सौमनस्य स्थापित होने लगा। अकबर ([illegible] दूरदर्शिताको परखा और [illegible] हिन्दूका स्नेह प्राप्त किया। [illegible] समान नागरिकोकी भाँति जीवन [illegible] सौहार्द अधिक कालतक स्थायी न [illegible] मराठा योद्धाओंने मुस्लिम [illegible] शस्त्र ग्रहण किया। प्रतिक्रियामे मुस्लिम [illegible] विरोधी रवैया और उग्र हो गया। [illegible] शक्ति उत्तरोत्तर क्षीण होती गयी। यहाँ तक कि [illegible] बादशाह नाममात्रका शासक रह गया था। [illegible] स्वरूप हिन्दू-राज्य पुन. जहाँ-जहाँ [illegible] गोवध पूर्णरूपसे कानूनन बंद कर दिया [illegible] पुनः उद्धार-सा हुआ। कुछ [illegible] गायका चित्र देना आरम्भ कर दिया।

भारतमे यूरोपियनके आनेमे [illegible] नया पृष्ठ आरम्भ हुआ। वैसे तो [illegible] आगमन १७वीं शताब्दीमे ही आरम्भ [illegible] शताब्दीके उत्तरार्धमे राजनैतिक सत्ता भी [illegible] लगी थी। १८५७ के अनन्तर तो [illegible] गुलावी रगका हो गया। हिन्दू और [illegible] अग्रेजोका आधिपत्य स्थापित हो गया। [illegible] माननेवाले थे। यद्यपि ईसाई धर्ममे [illegible] भ्रातृत्वकी ही प्रधानता है, पर [illegible] होनेसे पूर्व मास-भक्षी था [illegible] भी बना रहा। १९वीं शताब्दीमे [illegible] भक्षणको एक पकारका [illegible] स्थायित्व पदान कर दिया। [illegible] भक्षणको मनुष्य-जीवनके लिये [illegible] स्वाभाविक मानने लगा। [illegible] सैनिक और [illegible] लगी। यह सब इस [illegible] दृष्टिमे नहीं आने पाया। सन् [illegible] अनुभव कर चुके थे कि [illegible] विद्रोहके लिये [illegible] सकती है।

भारतको अपने हितोके अनुकूल ढालनेकी चिन्ता अंग्रेज शासकोको होने लगी। उसके लिये विविध उपाय किये गये। स्थितिकी स्पष्टताके लिये भारतपर अंग्रेजी राज्यके उन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परिणामोपर दृष्टिपात कर लेना उपयोगी होगा, जिनका दुष्परिणाम हम आज भी भोग रहे हैं। अंग्रेजोने जितने अधिक कालतक भारतके जिस भागपर राज्य किया वह उतना ही अधिक गरीब और पिछड़ा भाग है।

गोवशकी दृष्टिसे इसके घातक परिणाम हुए। गोचरभूमियाँ तोडकर खेत बनाये जाने लगे। गोपालनकी व्यवस्था जो महाभारतकाल और मौर्य-शासनकालमें वैज्ञानिक रूप धारण कर चुकी थी, स्वाभाविक ही गडवडाने लगी। खेतीके लिये बैलोकी माँग बढी। उपलब्ध बैलोपर ही बढे हुए कामका बोझ डाला गया। गोचरभूमियोंकी उत्तरोत्तर कमीसे गाय और बैलोकी चराईका स्तर गिर गया। परिणाम यह हुआ कि एक ओर आवश्यकताके दबावमे पशुओंकी सख्या बढायी गयी और दूसरी ओर चराईका स्तर गिर जानेसे पशुओंकी नस्लका ह्रास होने लगा। अंग्रेजोद्वारा भारतके शोषणका यह अनिवार्य परिणाम हुआ।

इधर शिक्षामे भी उन बातोका समावेश किया गया, जिससे गोभक्तिकी भावना समाप्त हो। कृषि-आयोगकी नियुक्ति की गयी, जिसने अपनी यह रिपोर्ट प्रस्तुत की कि पशुओकी संख्या अधिक और पालनके साधन कम हैं। यदि वेकार पशुओ (दूध न देनेवाली गाय और बोझा न ढोनेवाले वैल) की सख्या कम न की गयी तो कामके गाय-बैलोकी भी हालत बुरी हो जायगी। गोवशके विनाशके लिये यह वुद्धिवादका आधार प्रस्तुत किया गया। चारेकी वृद्धि अशक्य तो नहीं थी, पर शायद उसके उपायोको विचारना और प्रस्तुत करना आयोगकी विचारसीमासे बाहर था या उनकी दृष्टिमे अनावश्यक था।

सर्वसाधारण भारतीय जनताकी भावनाएँ गायके प्रति फिर भी वही रहीं। अंग्रेजोने अमृतसरमे बूचडखाना खोलनेका जब प्रयास किया तो उसका भयकर विरोध किया गया। यही हाल लाहौरमें हुआ। सन् १९०५मे जबसे राष्ट्रिय आन्दोलन अपने पैरोंपर खड़ा हुआ—गोरक्षाका प्रश्न राष्ट्रिय प्रश्न बना लिया गया और अंग्रेजोंके विरुद्ध जनताको यही कहकर खडा किया गया कि 'अग्रेज गोमास-भक्षी है, इन्हे निकाल देनेपर गोरक्षा अपने-आप हो जायगी।' गाँधीजीने यहाँतक कहा कि 'हम स्वतन्त्रताके लिये कुछ समयतक रुक भी सकते है, पर गोहत्या होना हमें एक दिन भी सहन नहीं।' गाँधीजीने इन शब्दोंमें बहुसंख्यक भारतीयोंके हृदयकी आवाज उठायी थी। ईसाई धर्म गोहत्याको पुण्य नहीं बताता। गोरक्षा होना इस्लामके भी विरुद्ध नही। शेष सभी धर्मावलम्बी हिन्दू, बौद्ध, जैन, पारसी, सिक्ख—सभी गोरक्षाकी माँग करते हैं। इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे सहज ही समझा जा सकता है कि गोरक्षाका प्रश्न विविध धर्मों और सम्प्रदायोंके इस देशमें राष्ट्रिय एकता और साम्प्रदायिक सौमनस्य सम्पादित करनेका ठोस आधार है।

स्वतन्त्रता-प्राप्तितक सारे प्रयत्न देशसे अंग्रेजोंको निकालनेके लिये ही किये गये और यह आशा की गयी कि स्वतन्त्रता मिलते ही भारतमे गोवधपर प्रतिबन्ध लगा दिया जायगा, किंतु स्वतन्त्रता-प्राप्तिके बाद भी जब यह आशा मूर्तरूप धारण करती नहीं दिखायी दी तो भारतीयोंने विविध संस्थाओंके नेतृत्वमे इसके लिये आवाज उठायी और आन्दोलन आरम्भ किये। अब भी यह समझनेके लिये समय है कि गोरक्षाके बिना भारतकी आत्माको संतोष नहीं होगा। राष्ट्रिय एकता दृढ़ होनेके स्थानपर साम्प्रदायिक विद्वेष बढेगा, जिसके अवान्तर परिणाम भारतकी प्रगतिमें महान् बाधक होंगे।

एक दृष्टिसे देखा जाय तो गाय उपकारकताकी प्रतीक है। उपकारकके प्रति किसी अवस्थामें नृशंस होना कृतघ्नता और असुरता है। लाभका लोभ देकर मनुष्यको कृतघ्न और नृशंस बनानेका पाठ पढ़ाना मोहक हो सकता है, पर मङ्गलदायक नही।

स्वाधीनता-संग्राम और गोरक्षा

(श्रीशिवकुमारजी गोयल)

भारत धर्मप्राण ऋषि-मुनियोका देश होनेके कारण गौमाताके प्रति अनादिकालसे असीम श्रद्धा-भक्ति रखता रहा है। भारतमे गाय तथा गोवशको अवध्य माना जाता रहा है। भारतमे विदेशी-विधर्मी मुसलमानोके आधिपत्य जमानेके बाद यहाँ गोहत्याका कलक जारी हुआ। मुस्लिम शासनकालमे छत्रपति शिवाजी, महाराणाप्रताप, गुरु गोविन्दसिह आदि राष्ट्रवीरोने गोहत्याके कलकके विरुद्ध निरन्तर संघर्ष किया। शिवाजीने तो बाल्यावस्थामे ही एक गोहत्यारे कसाईका वध कर, गायको मुक्त कर अपनी गोभक्तिका परिचय दिया था।

गुरु गोविन्दसिहजी महाराजने तो सिख-पंथकी स्थापना ही गोघात (हत्या) का कलक मिटानेके उद्देश्यसे की थी। उन्होने अपनी इष्टदेवी नैनादेवीसे वर मॉगा था—*'गोघातका दु ख जगतसे मिटाऊँ'।* गुरु तेगवहादुर, गुरु अर्जुनदेव आदि सिख गुरुओके बलिदान हिन्दूधर्म तथा गौमाताकी रक्षाके लिये ही हुए थे।

महाराजा रणजीतसिंहने शासनकी बागडोर सँभालते ही राज्यमें गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगानेका पहला कार्य किया था। महाराजा रणजीतसिहने जब अपनी फौजमे कुछ यूरोपियन जनरलोकी नियुक्ति की थी तो सबसे पहली शर्त यही थी कि वे धर्मप्राण भारतके उनके राज्यमे गोमासका सेवन कदापि नहीं कर पायेगे।

१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य-समर गौमाताकी हत्यासे उत्पन्न आक्रोशका ही परिणाम था। जब अंग्रेज सरकारने कारतूसोमे गायकी चर्बीका प्रयोग शुरू किया तो गोभक्त भारतीय सैनिक यह सहन नहीं कर पाये कि विदेशी विधर्मी अंग्रेज सरकार गायकी चर्बीके माध्यमसे उनका धर्म भ्रष्ट करे। वीर मगल पाण्डेने बैरकपुर छावनीमे गायकी चर्बीसे अपवित्र कारतूसोको छूनेसे इनकार करके खुला विद्रोह किया था। इस विद्रोहकी सजा उस गोभक्त, धर्मप्रेमी ब्राह्मण सैनिकको फॉसीके रूपमे दी गयी थी। स्वातन्त्र्य-वीर सावरकरने अपने '१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य-समर' नामक ग्रन्थमे अनेक तथ्य प्रस्तुत कर यह स्पष्ट किया है कि हिन्दू सैनिक सब कुछ [illegible] चर्बीसे युक्त कारतूसोंको [illegible] विद्रोह कर डाला था।

१८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य-समरके [illegible] शासनको हटानेकी भावना थी, वहीं [illegible] धर्मपर प्रहार किये जानेके कारण भी [illegible] बढ़ता गया था। अंग्रेज पादरी [illegible] हिन्दूधर्म त्यागकर ईसाई-धर्म स्वीकार [illegible] लगे थे। कई जगह गाँवोमे यह भावना [illegible] बेटोको सेनामे भर्ती करानेका परिणाम [illegible] होगा।

इसी दारान अंग्रेज शासकोंने [illegible] निकाले, जिन्हे चिकना करनेके लिये [illegible] उपयोग किया जाता था। इन कारतूसोंको [illegible] खोलना पडता था।

सर्वप्रथम बरकपुर (बगाल) [illegible] पल्टनको २९ मार्च, १८५७ को [illegible] कारतूस प्रयोगके लिये दिये गये। [illegible] यह समाचार फल चुका था कि विदेशी [illegible] हिन्दुस्तानियोंको ईसाई बनाने [illegible] करनेके लिये गामाताकी चर्बी-लगे [illegible] बाध्य करनेवाले हैं। बरकपुर [illegible] चर्बीयुक्त कारतूस दिये गये कि [illegible] खुली परेडमे बदूक लेकर [illegible] सनातनधर्मी हैं। चर्बी-लगे [illegible] अपना धर्म भ्रष्ट कदापि नहीं [illegible]।'

अंग्रेज सार्जेन्ट [illegible] करनेका आदेश दिया। [illegible] लिये तैयार नहीं हुआ। [illegible] अफसरपर गोली दागकर [illegible] आवाज सुनकर लेफ्टिनेन्ट [illegible] गोभक्त मगल पाण्डेने [illegible]

परिणामतः अन्तमे मंगल पाण्डेको ८ अप्रैल, १८५७ को फॉसीपर लटका दिया गया। देश और धर्मके लिये, गो-प्रेमके लिये वीर मंगल पाण्डेकी यह १८५७ के स्वातन्त्र्य-समरकी पहली आहुति थी।

मंगल पाण्डेके बलिदानके बाद पूरे देशकी सैनिक छावनियोंमें यह बात फैल चुकी थी कि नये कारतूसोंमें गाय तथा सूअरकी चर्बी लगवाकर अंग्रेज हिन्दुस्तानियोंका धर्म भ्रष्ट करनेपर उतर आये हैं। मेरठमे १० मई १८५७ को 'सैनिक क्रान्ति' का विस्फोट हुआ था। मेरठ छावनीमे स्थित 'काली पलटनका शिव-मन्दिर (जिसे अब बाबा औघडनाथका मन्दिर कहते हैं) उन दिनों एक राष्ट्रभक्त गोप्रेमी साधुका गुप्त अड्डा बना हुआ था। यह साधुवेशधारी गोभक्त पुजारी भीषण गर्मीमें ठंडा पानी पीनेके लिये आनेवाले हिन्दू सैनिकोंको तरह-तरहसे गोद्रोही अंग्रेज सरकारके विरुद्ध जाग्रत् करता था।

एक दिन मईकी भीषण गर्मीमें जब कुछ सैनिक पानी पीनेके लिये काली पलटनके मन्दिरपर पहुँचे तो उस तेजस्वी पुजारीने सैनिकोको लोटेसे पानी पिलानेसे इनकार कर दिया और बोला—'मैं गौमाताकी चर्बी-लगे अपवित्र कारतूसको अपने मुँहसे खोलनेवाले धर्मभ्रष्ट हुए तुमलोगोंको मन्दिरके पवित्र लोटेसे पानी कैसे पिला सकता हूँ।' सैनिकोंमें जिज्ञासा बढ़ी तथा उनकी गोभक्तिकी भावनाको आघात भी लगा। उन्होने छावनीमे पहुँचकर अपने अन्य साथियोंको यह बताया कि 'विधर्मी अंग्रेज हमें गौमाताकी चर्बी-लगे कारतूस देकर हमारा धर्म भ्रष्ट कर रहे हैं।' अंदर-ही-अंदर गोभक्त हिन्दू सैनिकोमें विद्रोही भावना फैलती गयी। मुस्लिम सैनिकोको संदेह हुआ कि जब अग्रेज हिन्दुओको गायकी चर्बीके कारतूस दे सकते है तो वे मुसलमानोका धर्म भ्रष्ट करनेके लिये सूअरकी चर्बीका भी प्रयोग कर सकते हैं।

अग्रेजोने मंगल पाण्डेके विद्रोहको मामूली समझा तथा ६ मईको मेरठ छावनीमें ९० हिन्दुस्तानी घुड़सवार सिपाहियोको चर्बीयुक्त नये कारतूस दिये गये। ८५ सिपाहियोंने इन्हें छूनेसे भी इनकार कर खुला विद्रोह कर दिया। ९मईको इन ८५ सिपाहियोंका कोर्ट मार्शल कर दस-दस वर्षकी सजा देकर जेल भेज दिया गया।

अगले दिन १० मईको छावनीके सभी हिन्दुस्तानी सैनिकोने खुला विद्रोह कर डाला। देखते-ही-देखते सैनिक अंग्रेजोंपर टूट पडे। पूरा मेरठ आगकी लपटोंमें झुलस गया। उन्होने एक दिन पहले गिरफ्तार किये गये ८५ सैनिकोको जेलसे छुड़ा लिया। एक दर्जनसे ज्यादा अंग्रेज अफसरोको मौतके घाट उतार दिया गया।

इस विद्रोहके बाद जब मेरठ जनपदके राजपूत-बहुल क्षेत्र धौलाना, पिलखुवा, डूहरी, मुकीमपुर आदि गॉवोमें बैठके हुई तो उनमे भी यही कहा गया—'विदेशी विधर्मी अंग्रेज हमारे देशपर राज्यकर, उसे लूटनेके बाद, हमें गुलाम बनानेके बाद अब गोहत्या कराकर, गायकी चर्बी कारतूसोंमे लगाकर हमारे धर्म तथा गोभक्तिको चुनौती दे रहे हैं। हमें इन गोभक्षक अंग्रेजोसे अब जूझना ही होगा।'

धौलानामे पुलिस-थाना जलाने तथा विद्रोह करनेके आरोपमें जब तेरह राजपूतो तथा एक वैश्य (अग्रवाल) लाला झनकूमल सिंहलको पकडकर पीपलके पेड़पर फॉसीपर लटकाया गया था, तब बलिदान देनेसे पूर्व उन्होने यही कहा था—'गौमाताकी हत्याके कारण गोभक्त ग्रामीण जनतामे ब्रिटिश शासनके विरुद्ध अंदर-ही-अंदर क्षोभ फैल रहा था। उसीका परिणाम इस खुली बगावतके रूपमें सामने आया है।'

१८५७ की इस क्रान्तिके दौरान पिलखुवा (गाजियाबाद) के गढीवाले प्राचीन मन्दिरपर रहनेवाले एक गोभक्त नागा बाबाने एक गोरे सैनिकद्वारा गायपर गोली चलाते ही अपनी छाती बंदूकके सामने तान दी थी तथा गायके साथ ही गोभक्त नागा बाबा शहीद हो गये थे।

बिहारमे 'बिहार-केसरी' वीर कुँवरसिंह १८५७ के महान् स्वातन्त्र्य-सेनानी थे। वे जगदीशपुर (शाहाबाद) के राजा थे। वीर कुँवरसिंहने विदेशी-विधर्मी अंग्रेजोंसे डटकर टक्कर ली थी। अतरौलियाके जंगलमे वीर कुँवरसिंहका सेनापति डगलुसनकी सेनासे मुकाबला हुआ था। बलियाके निकट शिवपुरमे कुँवरसिह अपने सैनिकोंके साथ नौकाओसे गङ्गापार कर रहे थे कि अंग्रेज सैनिकोने उनपर गोलियॉ बरसायीं। एक गोली कुँवरसिंहकी दाहिनी कलाईमें घुस

गयी। कुँवरसिंहने अपनी तलवार निकाली और घायल हुई दाहिनी भुजाको काटकर गङ्गा माँको समर्पित करते हुए कहा था—'माँ गङ्गे! गौमाताकी चर्बीसे युक्त अंग्रेजोंकी अपवित्र गोलीने मेरी भुजाको अपवित्र कर दिया है, इसे मैं तुझे समर्पित करता हूँ, जिससे यह पावन हो सके।'

१८५७ की सशस्त्र क्रान्तिके पीछे निश्चय ही अन्य मुद्दोंके साथ-साथ गौमाताकी हत्या, गौमाताकी चर्बीका कारतूसोंमे प्रयोग किया जाना भी था। भले ही अंग्रेजोंने बादमे इस तथ्यपर लीपापोती करने तथा इतिहासमे इसे नकारनेका प्रयास किया।

वीर सावरकरने '१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य-समर' ग्रन्थमें लिखा है—'अंग्रेजोंने कितना ही स्पष्टीकरण दिया कि कारतूसोंमे गाय और सूअरकी चर्बी नहीं लगायी जाती थी, किंतु 'इंडियन म्यूटनी' के प्रथम खण्डके पृष्ठ ३८१ में लिखा हुआ है—'कारतूसोंमे लगायी जानेवाली चर्बीको उपलब्ध करानेवाले ठेकेदारके साथ हुए इकरारनामेसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि कारतूसोंमे लगायी जानेवाली चर्बीमे गायकी चर्बी होती थी, इसमे तनिक भी संदेहकी गुंजाइश नहीं है।'

स्वातन्त्र्य-संग्रामके पुरोधा तथा इतिहासकार वीर सावरकर लिखते हैं—'अंग्रेजोंद्वारा जिस प्रकार अनेक बार भारतीयोंके साथ कपटपूर्ण व्यवहार किये गये, उन्हे सुनकर आज भी रक्तका प्रत्येक बिन्दु खौल उठता है। कारतूसोंमे गाय और सूअरकी चर्बी लगायी जा रही है—इसका हिन्दुस्तानी सैनिकोंने तुरत विश्वास कर लिया। कारतूसोंको लेकर उमडते असंतोषको दबानेके लिये अंग्रेज सरकारने झूठका सहारा भी लिया तथा लिखा कि कारतूसोंमे अब भेडकी चर्बी प्रयोग की जाने लगी है। किंतु वे सचाईपर पर्दा नहीं डाल सके।'

मेरठके बाबा औघड़नाथ मन्दिरपर पानी पिलानेवाले पुजारीने जिस प्रकार हिन्दुस्तानी सैनिकोंको लोटेसे पानी पिलानेसे इनकार कर उन्हे चर्बीयुक्त कारतूसोंको मुँह लगाकर धर्मभ्रष्ट करनेके लिये धिक्कारा था, उसी प्रकार देशके अन्य भागोंमे स्थित छावनियोंमे भी हुआ था। वीर सावरकर '१८५७ का स्वातन्त्र्य-समर' नामक ग्रन्थमें लिखते हैं—'दमदम (कलकत्ता) [illegible] जब एक व्यक्तिको लोटेसे पानी [illegible] है तो वह जवाब देता है—'किस [illegible] बात करते हो महाराज! आपका धर्म [illegible] होता जब आपके सैनिक साथी चर्बी-[illegible] मुँहसे खोलते हैं।'

इन तथ्योंसे यह बिलकुल स्पष्ट [illegible] १८५७ के प्रथम स्वातन्त्र्य-समरके पीछे [illegible] गोभक्तिकी भावना थी।

प्रख्यात स्वाधीनता-सेनानी और [illegible] सुन्दरलालने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ—'भारतमें [illegible]' में लिखा है—'धर्मान्ध या अदूरदर्शी औरंगजेबके [illegible] गोहत्या नहीं हुई। जनता गोहत्यासे [illegible] अंग्रेजोंने गोरी फौजका पेट भरनेके लिये [illegible] विशेषतया हिन्दुओंके पवित्र तीर्थस्थान [illegible] काटना प्रारम्भ कर दिया। इससे अंग्रेजोंके विरुद्ध [illegible] असंतोष उत्पन्न होना स्वाभाविक था। [illegible] मुसलमान सैनिकोंको मालूम हुआ कि नये [illegible] और सूअरकी चर्बी लगी है और ये कारतूस [illegible] पडेंगे, तब असंतोषने क्रान्तिका रूप [illegible] देशकी साधारण जनता, भारतीय सैनिक, [illegible] अंग्रेजी राज्यको बदलनेके लिये [illegible] जगह-जगह 'स्वधर्मकी रक्षाके लिये [illegible]' के लगाये गये उद्घोष इसी धर्म-[illegible] परिचायक थे। भारतीय किसान, [illegible] वर्गके लोगोंमे यह भावना पैदा हो [illegible] विधर्मी अंग्रेज सरकार हमारे धर्म [illegible] गोमातापर आघात कर हमें धर्मभ्रष्ट [illegible] विद्रोहाग्नि चरम सीमापर पहुँच [illegible]

गोहत्याके विरोधमें कूका-[illegible]

कूका नामधारी [illegible] आन्दोलनने [illegible] सम्प्रदायके सद्गुरु [illegible] थे। इन्होंने अपने [illegible] भेणी साहब [illegible]

बीच प्रवचन करते हुए स्पष्ट कहा था—'विदेशी विधर्मी अंग्रेजी सत्ता पूरे देशमे विदेशी परम्पराएँ लागू कर रही है। हमे अपने धर्म तथा संस्कृति और राष्ट्रियताकी रक्षाका व्रत लेना है।' उन्होने गोरक्षाको नामधारी सम्प्रदायका प्रमुख सूत्र बताया। इस बीच अग्रेजोंने 'फूट डालो और राज्य करो' नीतिके अन्तर्गत अमृतसर-जैसे पावन नगरमे, जो सिख-तीर्थ है, गोहत्याकी छूट दे दी। गोभक्त हिन्दुओ (केशधारी सिखोसमेत) मे गोहत्यासे रोष व्याप्त हो गया। गोभक्त नामधारी सिख इस कलंकको सहन नहीं कर सके। १४ जून १८७१ के दिन नामधारी वीरोकी एक टोलीने बूचडखानेपर आक्रमण कर अनेक कसाइयोंको मौतके घाट उतार डाला। अंग्रेजोके शासनने लहनासिंह, हाकिमसिंह, बोहलसिंह तथा फतहसिंह 'माटरन' नामक चार गोभक्त नामधारियोंको फॉसी तथा लालसिंह और लहनासिंहको आजीवन कारावासकी सजा दे दी। इसके बाद गोहत्यारोंके हौसले बढ गये। अमृतसरमे जगह-जगह गोहत्या की जाने लगी।

१५ जुलाई १८७१ को नामधारी गोभक्तोने कस्बा रामकोटके गुरु गोविन्दसिंह गुरुद्वारेके पास स्थित बूचडखानेपर हमला कर दो गोहत्यारे कसाइयोको मौतके घाट उतार डाला तथा गायोंको मुक्त कराया। अंग्रेज कमिश्नरके आदेशपर मंगलसिंह, गुरमुखसिह तथा मस्तानसिंह नामक तीन गोभक्तोको ५ अगस्त १८७१ को रामकोटके बूचडखानेके पास सरेआम फॉसीपर लटका दिया गया।

पंजाबके मलेरकोटला स्थानपर भी अंग्रेज गोहत्या कराते थे। १५ जनवरी १८७२ को नामधारी गोभक्तोकी टोलीने मलेरकोटलाके बूचडखानेपर धावा बोलकर उसे तहस-नहस कर डाला तथा कई गोहत्यारोंकी हत्या कर दी।

अंग्रेज कमिश्नरने ४९ नामधारियोको पकडवाकर १७ जनवरी १८७२ को मलेरकोटलाके मैदानमे सरेआम तोपोसे उडवा दिया। अगले दिन १८ जनवरीको १६ गोभक्त नामधारियोको तोपोसे उड़ाया गया। कुछको कालापानी भेजा गया।

सद्गुरु रामसिंहजी महाराजको उनके सहयोगियोंके साथ पकड़कर जलावतन कर दिया गया। इस प्रकार स्वाधीनता-सग्राम-सेनानी सद्गुरु रामसिंहजी तथा उनके नामधारी सम्प्रदायने गोरक्षार्थ अविस्मरणीय बलिदान दिये।

१८५७ की क्रान्तिके बाद महात्मा गॉधी, महामना पं० मदनमोहन मालवीयजी महाराज, लोकमान्य तिलक, स्वामी श्रद्धानन्द आदिने स्वाधीनता-आन्दोलनको सक्रिय किया था। इन सभी नेताओने स्वाधीन भारतमें गोहत्याका कलंक पूरी तरह मिटानेका संकल्प लिया था।

सन् १९२१ मे असहयोग आन्दोलनके दौरान गोपाष्टमीके पावन पर्वपर दिल्लीके 'पटौदी हाउस' में महात्मा गॉधीकी उपस्थितिमें हुए एक सम्मेलनमे सर्वसम्मतिसे पारित प्रस्तावमे कहा गया था—'अंग्रेजी राज्यमें गोहत्या होती है, अतः इस राज्यसे सहयोग नहीं किया जाय।' इस ऐतिहासिक सम्मेलनके स्वागताध्यक्ष हकीम अजमलखॉ थे तथा अध्यक्षता लाला लाजपतरायने की थी।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी महाराजने देशके कई स्थानोपर आयोजित सभाओंमें घोषणा की थी कि 'देशके स्वाधीन होते ही गोहत्याका कलंक मिटाया जायगा।' महात्मा गॉधीने अपने 'नवजीवन' पत्रके २५ फरवरी १९२५ के अङ्कमें लिखा था—'गोरक्षाका प्रश्न स्वराज्यके प्रश्नसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है।'

महान् स्वाधीनता-सेनानी लाला हरदेवसहायने तो देशके स्वाधीन होनेके बाद भी गोहत्याका कलंक जारी रहते देखकर कांग्रेससे त्यागपत्र देकर अपना जीवन गोहत्या-बंदीके पावन उद्देश्यके लिये समर्पित कर दिया था। इसी तरह प्रख्यात स्वाधीनता-सेनानी तथा साहित्यसेवी सेठ गोविन्ददासने संसद्में हमेशा गोहत्या-बंदीका मामला उठाया तथा काग्रेसके अनुशासनकी भी उन्होंने कभी चिन्ता नहीं की।

इस प्रकार भारतीय स्वाधीनता-संग्रामके पीछे गोभक्ति तथा गौरक्षाकी भावनाका बहुत बडा योगदान रहा।

गोरक्षा एवं गो-संवर्धनके विविध प्रयास

(श्रीराधाकृष्णजी बजाज)

गोसेवा-संघके प्रयासोका इतिहास १८ दिसम्बर, १९२४ से आरम्भ होता है। उस दिन महाराष्ट्रके सत गोभक्त चौडे महाराजके प्रयाससे बेलगाँवमे गोरक्षा-परिषदका अध्यक्ष-पद महात्मा गाँधीजीने सँभाला था। महात्माजीको गोसेवाका काम अत्यन्त प्रिय था। उन्हे लगता था कि जबतक गोहत्या होती है, तबतक मानो उन्हींकी हत्या होती है। गाँधीजी मानते थे कि गोरक्षा हिंदू-धर्मकी मानव-समाजके लिये सबसे बडी देन है। गाँधीजीने अध्यक्षीय भाषणमे कहा था कि 'गोरक्षाका कार्य स्वराज्यसे भी कठिन लग रहा है।' उन्होने कहा—'आजतक स्वराज्यके किसी कार्यका आरम्भ करते समय उनके चित्तमे कोई हिचक नहीं हुई। गोरक्षाका काम आरम्भ करते हुए आज दिल हिचक रहा है, पता नहीं इसमे कहाँतक सफलता हो पायेगी।'

२८ अप्रैल, १९२५ को अ०भा० गोरक्षा-मण्डलकी स्थापना 'माधव-बाग बबई'मे हुई। इस मण्डलका विसर्जन होकर दिनाङ्क २५ जुलाई, १९२८ को साबरमतीमे अ० भा० गोसेवा-सघकी स्थापना की गयी, जिसके अध्यक्ष स्वयं गाँधीजी थे। गोरक्षाकी प्रथम शुरुआत गाँधीजीने गोव्रतसे की। गाँधीजीने सदस्योके लिये 'गोव्रत' रखना आवश्यक रखा था। गोव्रत यानी दूध, दही और घी आदि तथा सभी पदार्थ गौके दूधके ही इस्तेमाल किये जायँ। गोदुग्धके पदार्थ इस्तेमाल होगे तो हमारे घरका चारा-दाना गायको मिलेगा, गायकी सेवा होगी। सदस्योके लिये 'गोव्रत' रखना आवश्यक था। उन दिनो आचार्य काका साहेब कालेलकर, सत विनोबाजी, श्रीबालजीभाई देसाई, माता जानकीदेवी बजाज आदि अनेक सदस्य बनाये गये थे। इस सघकी ओरसे साबरमतीमे गोशाला और चर्मालय भी आरम्भ किये गये थे। परंतु गाँधीजीको उतनेसे कार्यसे पूरा संतोष नहीं था।

गोरक्षामे पूरी शक्ति लगे इसके लिये गाँधीजीने सेठ जमनालालजी बजाजको कहा कि 'मेरे दो काम अत्यन्त प्रिय हैं, हरिजन-सेवा और गोसेवा।' हरिजन-सेवाके लिये ठक्कर बाप्पा-जैसे समर्थ सेवक मिल गये हैं। गोसेवाका कार्य आप उठा सके तो मुझे संतोष होगा। जमनालालजीने तुरंत ही बापूजीकी आज्ञा [illegible] १९४१ विजयादशमीको गोसेवा-संघकी [illegible] मण्डल नालवाडी-वर्धा'की नींव [illegible] अनेक राष्ट्र-नेता उपस्थित थे। [illegible] जीके सुझावपर नालवाडीको नयी [illegible] रखा गया।

गोसेवा-संघकी अध्यक्षताकी जिम्मेदारी [illegible] बजाजपर आयी। सेठजी किसी कामको लेते [illegible] दिन उनका चिन्तन चलता था। उस [illegible] पहली फरवरी, १९४२ को गोसेवा-संघका [illegible] बजाजवाडी वर्धामे हुआ। इस सम्मेलनकी [illegible] मालवीयजी करनेवाले थे। [illegible] इसलिये सम्मेलनकी अध्यक्षता संत [illegible] उद्घाटन स्वय गाँधीजीने किया। [illegible] सम्मेलनमे अष्टविध कार्यक्रम तय किया [illegible] हजार गोव्रतधारी सदस्य बनाना (२) [illegible] गोदुग्ध देना, (३) दूर देहातोंमे गोदुग्ध [illegible] तैयार करना, (४) गोशालाओंका सुधार करना (५) [illegible] विद्यालय चलाना, (६) स्थानीय [illegible] करना, (७) हरे चारेका प्रसार करना और (८) [illegible] स्थापित करना।

विधिका विधान अलग ही था। [illegible] बाद ही ११ फरवरी १९४२ को [illegible] जमनालालजी बजाजका स्वर्गवास [illegible] अरमान अधूरे ही रह गये।

सेठजीके जानेका बापूजीको [illegible] उन्होने महीने भर बाद ही [illegible] करके मार्च १९४२ मे गोसेवा-[illegible] माता जानकीदेवी बजाजको [illegible] विनोबाजी और सेठ [illegible] बनाये गये। [illegible] बिक्रीके लिये [illegible]

गोसेवाकी दृष्टिसे [illegible] गोदुग्धको [illegible]

आक्रमणसे गायको वचाया जाय। सभी जगह भैंसका दूध वढ़ने लगा था और गोका दूध घटता जा रहा था, गोदुग्धकी विक्री भी कम थी और भाव भी कम था। गोसेवा-सघकी नीति थी कि खेती-जोतके लिये बैल-शक्ति और दुग्ध-शक्ति एक हो पशुमे मिले ताकि दो पशुका भार न रहे। दोनो शक्तियाँ सर्वाङ्गी गौ-नसलमे थीं। सर्वाङ्गी यानी जिसकी वछडी अच्छी दुधार हो और जिसका नर खेती-जोतके लिये सक्षम हो। भारतमें सर्वाङ्गी नसले थारपारकर हरियाना, कॉक्रेज, गीर, मेवाती, गंगातीरी, देवनी, कांगायम आदि थीं, जिनका दूध भी काफी वढ सकता था और नर भी उत्तम बैल बन सकते थे। इसलिये प्रथम प्रयास इन नसलोंके अच्छे सॉड़ तैयार करके नसल-सुधारका काम किया जाय ऐसा तय रहा, विड़ला-परिवारकी ओरसे जमनालालजीकी स्मृतिमे १०८ उत्तम सॉड तैयार करके गोशालाओको देनेका संकल्प था, उसके अनुसार साँड तैयार करके बॉटे गये थे।

नसल-सुधारकी दृष्टिसे गोपुरीमे स्थानीय गवलाऊ-नसलके सुधारका प्रयोग किया गया। १० सालके प्रयासमें गवलाऊ-नसलकी गाये जो दिनभरमें २-३ लीटरसे अधिक दूध नहीं देती थीं, वे गाये और उनकी बछड़ियाँ ८—१० लीटर दूध देनेवाली हो गयीं। बछड़े भी बढियॉ बैल निकले। यह सारा सुधार सिलेक्टिव्ह ब्रीडिंग-शुद्ध नसल-सुधारके द्वारा किया गया था। महाराष्ट्र सरकारकी ओरसे चलाये जानेवाले गवलाऊके फार्मसे भी गोपुरीके परिणाम अच्छे थे। भारत सरकारकी टीम भी आयी थी, उसने भी यहाँके सिलेक्टिव्ह ब्रीडके कार्यक्रमको बहुत ही सराहा था। बादमे परिस्थिति बदली, व्यवस्था भी वदली, यह प्रयोग समाप्त हो गया। बीचमे क्रॉस ब्रीडिंगने जोर मारा, संस्थाने क्रॉस ब्रीडिंगको पूरी तरहसे हटाकर शुद्ध गीर-नसलका संवर्धन चलाया।

गोसंवर्धन—गोरस-भंडार

गोसंवर्धनके लिये गोशालाओंका आजतक उपयोग हुआ। परंतु आजकी स्थितिमें गोशालाएँ चलाना बहुत ही कठिन-हो गया है। पिछले ५० सालके अनुभवसे देखा गया है कि गोसंवर्धन—गोरस-भंडारकी योजना बहुत ही सफल रही है। सर्वप्रथम वर्धामे 'गोरस-भंडार' शुरू किया गया। एक लाखसे भी कम आवादीका वर्धा एक छोटा-सा शहर है। यहॉ सर्वत्र भैंसके दूधका बोलबाला रहा है। यहॉ शुरूमे दस लीटर गायका शुद्ध दूध गॉधी-विनोबाके आश्रमोके लिये मिलना मुश्किल था। उस वर्धामें आज करीब ४,०००-४,५०० लीटर दूध रोजाना आ रहा है, यह 'गोरस-भंडार-योजना'का एक परिणाम ही है।

गोरस-भंडारके ग्राहकोके बीच एक बार सर्वे किया गया तो अधिकांश बहनोने बताया कि जबसे 'गोरस-भंडार'का दूध लेने लगे हैं, तबसे बाल-बच्चोका स्वास्थ्य अच्छा रहने लगा है। एक बहनने तो भरी सभामे कहा—'मेरे बच्चेको जो इनाम दिया जा रहा है, वह 'गोरस-भंडार'को दिया जाना चाहिये। वर्धामे 'गोरस-भडार'का दूध पीता है तो बच्चा स्वस्थ रहता है और छुट्टियोमें बाहर जानेपर वह कमजोर हो जाता है।'

'गोरस-भंडार'का दूसरा प्रयोग राजस्थान 'गोसेवा-संघ'ने जयपुरमें किया। इस क्षेत्रमे ७५ प्रतिशत भैंस और २५ प्रतिशत गाये थीं। आज इस क्षेत्रमें ७५ प्रतिशत हरियाना गाये हो गयी हैं और भैंसें कम बची है। इस क्षेत्रमे अच्छे-से-अच्छे सॉड़ रखकर गो-नसलोंका सुधार भी हुआ है, हरे चारेकी खेती भी बढी है। यहाँके किसान इस योजनासे प्रसन्न है। रोजाना लगभग ५ हजार लीटर दूध 'जयपुर-भंडार' मे आता है।

—ये दोनों 'गोरस-भंडार' काफी पुराने ३०—४० सालसे भी पुराने हैं। हालहीमें ३ साल पहले 'रामेश्वर-गोशाला-वाराणसी'के सहयोगसे और 'कृषि-गोसेवा-संघ'की प्रेरणासे 'सुरभि-शोध-संस्थान-वाराणसी'ने 'गोरस-भंडार'की योजना शुरू की। इस समय प्रतिदिन तीन हजार लीटर दूध 'गोरस-भंडार'मे आ रहा है। १६५ गोपालक हैं एवं लगभग १,३०० गायोंका पालन-पोषण होता है। दूध देनेवाले गोपालक खुश हैं। यदि काशी नगरीमे गौके दूधकी मॉग बढ़े तो प्रतिदिन १० हजार लीटर गोदुग्ध आसानीसे उपलब्ध कराया जा सकता है। काशी-क्षेत्रमें सतोको और गोप्रेमियोंको सोचना है कि अपने घरोंमें, मठ-मन्दिरोमे गोदुग्ध ही ले। काशी-क्षेत्रमें गोदुग्धकी खपत बढ़ी तो काशीके चारो ओर गोकुल-ही-गोकुल खडे हो सकते है।

'गोरस-भंडार'की विशेषता इतनी ही है कि ग्राहकसे जिस भावके पैसे मिले, उनमेसे भंडारका खर्च कम-से-कम लेकर अधिक-से-अधिक भाव गोपालकोको दिया

जाय। गोपालकोसे दूध व्यापारी भी खरीदते हैं और शहरोंमे बेचते हैं। सरकारी डेयरी भी खरीदती है और बेचती है, परंतु ये दोनो एजेन्सियाँ व्यवस्था-खर्च बहुत अधिक रख लेती हैं, ग्वालोंको कम-से-कम दाम मिलते हैं। गोपालकोको अधिक-से-अधिक देना एव व्यवस्था-खर्च कम-से-कम रखना यही सच्ची सेवा है। गोशालाओके मुकाबले ग्वालोके पास गायें अच्छी हालतमे रहती हैं। गायोकी देखभाल घरवाले प्रेमसे करते हैं। गाँवोमे गायें कम खर्चमें पलती हैं। धूपमें घूमनेवाली गाँवकी गायोका दूध भी स्वास्थ्यकर होता है। उनके गोबर-गोमूत्रका उपयोग खेतीमे खादके रूपमें उत्तम होता है। कुल मिलाकर भारतमे गोसंवर्धन गोपालनके लिये 'गोरस-भंडार'की योजना ही आजके समयमें सर्वोत्तम है, बशर्ते कि 'गोरस-भडार' चलानेवाले सेवाभावी हों और व्यवस्था-खर्च कम-से-कम लें।

इदौर कस्तूरबा ग्रामकी गोशाला नमूनेकी गोशाला है। वहाँ गीर-नसलकी गायोपर नसल-सुधारका काम हुआ है। यहाँका अनुभव है कि गीर-नसल भारतके लिये सर्वोत्तम नसल है। इसमे क्रॉस-ब्रीडके मुकाबले दूध देनेकी शक्ति कम नही बल्कि अधिक ही है। इसके बैल भी उत्तम होते हैं। दूध भी अच्छा होता है। इसमे क्रॉस-ब्रीडकी तरह बीमारियाँ भी नहीं होतीं। क्रॉस-ब्रीडके बैल कडी धूपमें काम नहीं कर सकते, गीरके बैल कड़ी धूपमे भी काम कर सकते हैं। सब दृष्टिसे गीर-नसल उत्तम है। वहाँ गोबर-गैस-प्लांटका सफल प्रयोग चला है।

गोसदन-पिंजरापोल

अनुभवसे यह देखा गया है कि आजके समयमें दूधके लिये गोशाला चलाना व्यावहारिक नहीं है। व्यवस्था-खर्च, सेवकोंका खर्च भारी पड़ जाता है। दूधके लिये गाये उसीको रखनी चाहिये जो स्वयं भी सेवा करे और उसके घरवाले भी सेवा कर सके। सेवकोके भरोसे गोसेवा सम्भव नहीं। गोशालाओका जन्म दूधकी पूर्तिके लिये नहीं हुआ है। दूधके लिये तो घर-घरमे गाये रखनेका रिवाज था। दूध न देनेवाली या लूली-लॅगड़ी जिनको कोई न सँभाले, ऐसी असहाय गायोके लिये गोशालाओ-पिंजरापोलोकी स्थापना हुई थी। आज भी गोशालाओकी आवश्यकता गोसदनकी गायोके लिये ही है। गोरक्षाके निमित्त शहरोमे 'लागवाग-वित्ती' आदिके रूपमें व्यापारपर जो धर्मादा निकाला जाता था, उसीपर गोशाला-पिंजरापोल चलते थे। इन पिंजरापोलोके कारण शहरमे आवारा गायोका घूमना वंद हो जाता था। आज पिंजरापोलोकी शक्ति वहुत कम रह गयी है। असहाय गायोको सँभालना उनके बूतेके वाहर है।

बिना दूधवाली लूली, लँगड़ी, बूढ़ी और असहाय गायोको बचानेकी बहुत वड़ी समस्या थी, उसको हल करनेका उपाय भगवान्ने सुझाया। रासायनिक खाद एवं कीटनाशकोसे भूमिकी उपजाऊ शक्ति खराब होने लगी, अनाज, साग-सब्जी आदि खाद्य-पदार्थोमे जहर आने लगा, इस बातको गवेषकोने उजागर किया, तब गोवर-गोमूत्रके कम्पोस्ट खादकी ओर देशका ध्यान जाने लगा। यवतमाल पुसदके श्रीपॉढरी पांडेने नेडपके नामसे गोवरके कम्पोस्ट खादका बहुत बड़ा सफल प्रयोग किया है। अन्यत्र भी गोबर-गोमूत्रके खादके प्रयोग चालू हो गये हैं। दिन-दिन स्पष्ट होता जा रहा है कि गोबर-गोमूत्रका मूल्य गायकी खुराकसे बहुत अधिक है। इससे असहाय गायोकी रक्षाका बहुत बड़ा रास्ता मिल रहा है। शास्त्रोमे गोवरमे लक्ष्मीका वास बतलाया गया है, यह बात अब प्रयोगोसे स्पष्ट होने लगी है। आज गवेषक कहने लगे हैं कि दूधसे भी अधिक मूल्य गोबर-गोमूत्रका है। इस तथ्यको जब किसान अच्छी तरह समझेगा और अपनी भूमिकी उपजाऊ शक्तिको बचानेके लिये कम्पोस्ट खादका उपयोग करेगा तो उस समय उसकी बूढी गाये भी उपयोगी हो जायँगी। तव फिर कोई गाय असहाय नहीं रहेगी।

पर्यावरण-विशेषज्ञोंने भी रासायनिक खाद एवं कीटनाशकोंका पूरा विरोध किया है। इससे भूमिमें विष जाता है और वह फसलमे आता है। पानीमे विष मिल जाता है, वह भूमिमें भी जाता है और नदियोमे भी जाता है। इस विषके कारण चारो ओर जहर-ही-जहर फैल रहा है, मनुष्य-जीवन खतरेमे आ गया है। पर्यावरण-शुद्धिके लिये भी गोबर-गोमूत्र अत्यन्त लाभदायी माने गये हैं।

एक्सल इडस्ट्रीने बंबईके कचरेके ढेरको कम्पोस्ट खादके रूपमे बदलनेका भारी पराक्रम किया है। कचरेका ढेर जो सड़ रहा था, उसपर पाइपसे गोवरका पानी छिड़ककर सडनेवाले ढेरोका कम्पोस्ट खाद बना दिया, उनकी सारी सड़ान चली गयी। बंबईमे रोजाना १०० टन कम्पोस्ट खाद

बनता है। ऐसा ही एक कारखाना भोपालमे और एक अहमदाबादमे लगाया है। शहरोके कचरेको गोबरकी सहायतासे कम्पोस्ट खाद बनानेकी यह उपयोगी विधि है।

गोमूत्र महान् ओषधि है। आयुर्वेदकी अनेक दवाइयॉ गोमूत्रकी सहायतासे बनती हैं। गोमूत्रद्वारा फसलोमें कीटनाशकोका काम होता है, कुल मिलाकर ऐसी स्थिति बन रही है कि गोबर-गोमूत्रका खाद बूढी, लूली, लँगडी गायोको बचायेगा। अब किसानके लिये बूढी गाये भाररूप न रहकर उपादेय हो जायँगी।

अभूतपूर्व गोसदन-व्यवस्था

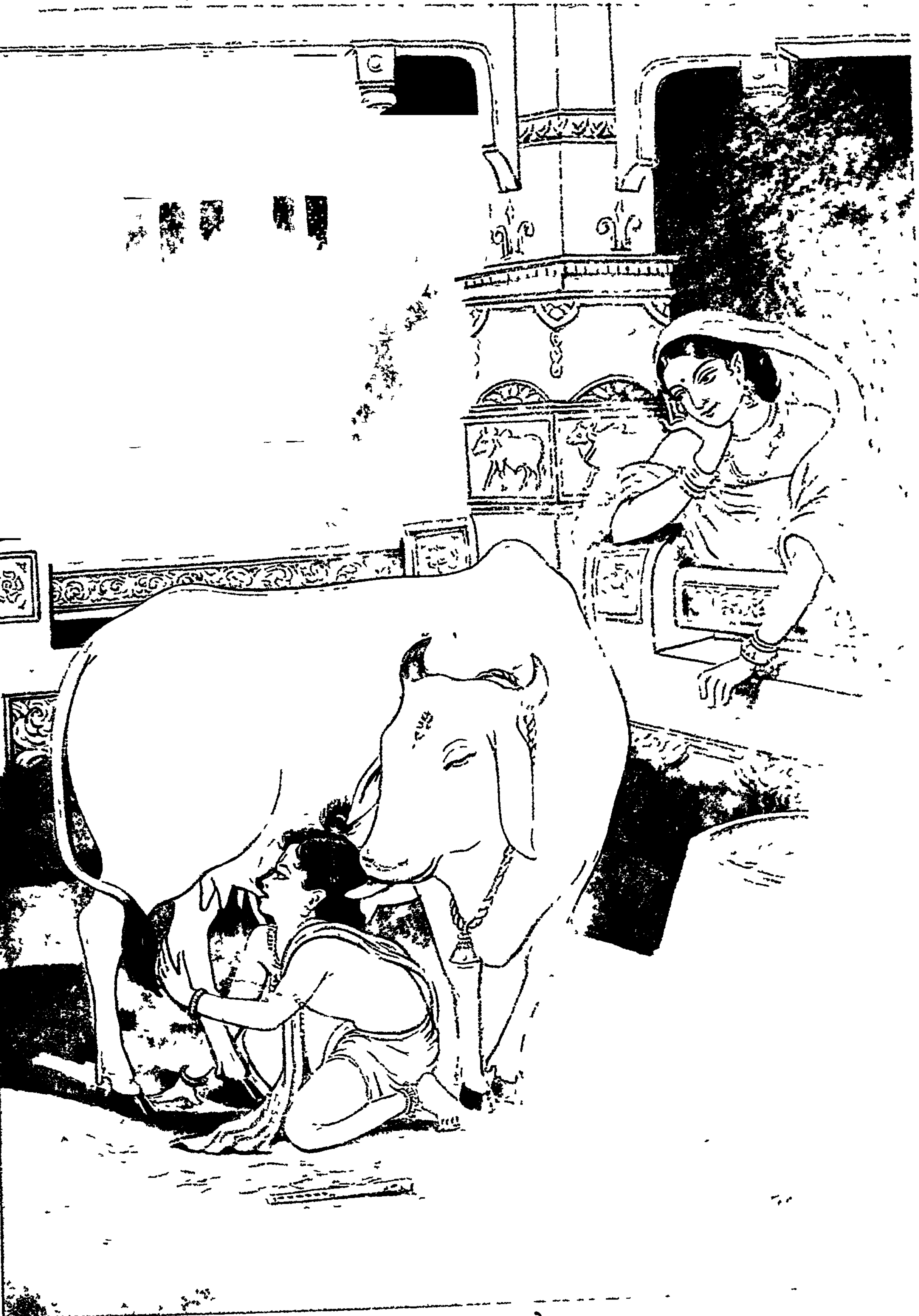
राजस्थानमे आये दिन अकाल पडते ही रहते है। इन अकालोमे दूधवाली गायोको तो किसी प्रकार लोग बचा लेते हैं और कम दूधवाली बूढी गायोको छोड देते है। पिछले अनेक वर्षोसे 'राजस्थान-गोसेवा-संघ'ने अकाल-राहतका कार्य आदर्श-रूपमे किया है। 'राजस्थान-गोसेवा-संघ' केन्द्रीय कृषि-गोसेवा-सघका ही स्वतन्त्र प्रदेश-सगठन हैं। अकालके समयमे सरकारी मददसे अनेक कैम्प चलाये जाते है। सरकारी मदद बद होते ही अच्छी गायोको तो लोग ले जाते है, बेकार गायें कैटल कैम्पोमे रह जाती है। सरकार उनको नीलाम करती थी। बेकार गायोको नीलाम करना यानी कसाइयोको देना है। अकालमें गायोको खिलाया और अकालकी समाप्तिके बाद फिरसे गाये कसाइयोके हाथ चली जायँ इसपर 'राजस्थान-गोसेवा-संघ'ने आपत्ति की। राजस्थान सरकारने कहा—'अकाल-समाप्तिके बाद गायोको सॅभालनेके लिये उनके पास कोई बजट नही है। 'राजस्थान-गोसेवा-सघ' इन असहाय गायोको सॅभालना स्वीकार करे तो राजस्थान सरकार उनको बिना मूल्य दे सकती है।'

'राजस्थान-गोसेवा-संघ'ने किसानोके सहयोगसे इस भारको उठाना स्वीकार किया। बीकानेर और श्रीगगानगर—इन दो जिलोमे छत्रगढ, अनूपगढ, बाजूवाल, रावळा, मुडा, खाजुवाळा आदि कई स्थानोपर गोसदन चल रहे है। इन गोसदनोंको चारा और दाना आस-पासके किसानोने मुफ्तमें देना स्वीकार किया है। इस क्षेत्रके किसान-नेताओके प्रयासोसे किसानोंने कहा है कि गोसदनकी गाड़ी हमारे घर आयेगी तो चारे-दानेसे भर देंगे। खाली नही जाने देंगे। पिछले ५-६ सालसे ३-४ हजार गायोंके गोसदन किसानोके दानपर चल रहे हैं। 'राजस्थान-गोसेवा-संघ'को केवल व्यवस्था-खर्च उठाना पड़ता है। कई बार तो किसानोका दान इतना आ जाता है कि व्यवस्था-खर्च भी निकल जाता है।

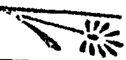
गोवंशकी हत्या-बंदीके प्रयास

'गोसेवा-सघ'की दृष्टि विधायक कार्योकी ओर रही। इस दृष्टिसे उसने नसल-सुधार, गोरस-भडार, गोशाला, गोसदन, हरे चारेके निर्माण आदिमे अपनी शक्ति लगायी, परतु गोहत्या-बदीकी ओर विशेष ध्यान नही दिया। १९६६ मे 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान-समिति'ने गोहत्या-बदीके लिये बहुत बड़ा आन्दोलन किया था। ब्रह्मलीन श्रीकरपात्रीजी महाराज उसके सचालक थे। उस समय पुरीके जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थने ७३ दिनका उपवास किया था। उस आन्दोलनमे सरकारके और सतोके बीच सुलह करानेकी दृष्टिसे 'गोसेवा-संघ'के अध्यक्ष एव उपाध्यक्ष आदिने भी महत्त्वपूर्ण प्रयास किये।

१९७५के अन्तमे पवनारमे 'गोसेवा-सम्मेलन' हुआ। उस समय गोरक्षापर विस्तारसे चर्चा हुई। सम्मेलनकी समाप्तिपर पू० विनोबाजीसे निवेदन किया गया कि बाबा! हमलोग २५ सालमे जितना नसल-सुधार करते है, सरकार साल भरमे कत्ल कर देती है। कलकत्ता, बबई-जैसे बडे शहरोंमे दूधके लिये बढ़िया-से-बढ़िया नसलकी गाये ले जायी जाती हैं और दूध सूखनेपर सभी कत्ल हो जाती है। सत विनोबाजीपर इस बातका गहरा प्रभाव हुआ और उन्होने निश्चय किया कि उनके जन्म-दिन ११ सितम्बर (१९७६) तक सारे देशमें गोहत्या बंद न हुई तो वे आमरण अनशन करेगे। सरकारने विनोबाजीके आमरण अनशनका निवेदन अखबारोंमे नहीं छपने दिया। आश्रमके मैत्री मासिकमें यह निवेदन छपा था। मैत्रीके सारे अङ्क पोस्ट होनेके पूर्व ही सरकार उठा ले गयी। फिर भी विनोबाजीके अनशनकी बात सारे देशमे फैल गयी। 'सर्व-सेवा-सघ' और 'गोसेवा-सघ'की ओरसे संयुक्त 'गोसेवा-समिति' इस कामके लिये बनी थी। हजारो पत्र लिखे गये और छोटे-छोटे अखबारोने निवेदन छापा, इससे जानकारी लोगोतक पहुँची। सबसे अधिक जानकारी पहुँचानेमे निमित्त सरकार ही बनी। सरकारकी तरफसे सी० आई० डी० को देशभरमे सर्क्यूलर गये थे कि



कन्हैयाका दुग्ध-प्रेम



भगवान् श्रीरामका विनोदमें गोदान



गो-भक्तिके आदर्श—महाराज दिलीप एवं भगवान् श्रीकृष्ण



सहस्त्रार्जुनद्वारा महर्षि जमदग्निकी गौका हरण

विनोबाजीका अनशन होगा, सर्वोदयवाले पदयात्राएँ निकालेंगे, उसको रोकना चाहिये। यह आदेश सर्वत्र पहुँचा था। सी०आई०डी० वालोसे ही कार्यकर्ताओको अनशनकी जानकारी मिली।

काफी प्रयासके बाद भी जब प्रधान मन्त्रीजीने देखा कि आन्दोलन रुकनेवाला नहीं है, तब आपसी समझौतेकी बातचीत शुरू हुई। उस समझौतेके तहत असम, मद्रास, आन्ध्र और महाराष्ट्रमे गोहत्या-बदी कानून बने, परतु बगालमे अधूरा कानून है और केरलमे खास कानून है ही नही।

१९७७ मे सरकार बदली। तत्कालीन प्रधान मन्त्रीजीसे मिलनेके लिये पुरीके शंकराचार्यजीके नेतृत्वमे ६०-७० महानुभावोका एक प्रतिनिधि-मण्डल गया था। किंतु तब भी गोरक्षा और सम्पूर्ण गोवध-बंदी कानूनका प्रश्न वैसा ही लटका रह गया।

नवम्बर १९७८ तक जब गोहत्या-बदीका केन्द्रीय कानून नहीं बना एव केरल और बगालमे गोहत्या-कानून नही बना तब विनोबाजीने पुनः दिनाङ्क २२। ४। ७८ से गोरक्षार्थ आमरण अनशन करनेका ऐलान किया। चारो ओरसे जनतामे गोरक्षाकी माँग बढी।

गोहत्या-बंदीका आन्दोलन जोर पकडे, इसलिये कतलखाने जानेवाली गायोको रोकनेका 'रोको भाई रोको' सत्याग्रह १९७९ मे पुनः शुरू किया गया। सर्वप्रथम कोसीकलामे 'रोको भाई रोको' आन्दोलन 'गोसेवा-संयुक्त-समिति'ने आरम्भ किया। कोसीकलासे बहुत बड़ी मात्रामे कतलके लिये गाये कलकत्ता जाती थीं। इस आन्दोलनके परिणामस्वरूप दो महीनेके भीतर ही कोसीकलाके बाजारसे कलकत्ता गायोंका जाना कम हो गया। कोसीकलाके चारो ओर देहातोमे यह विचार फैला तो गाँवोमे ही लोग गायोको रोकने लगे। स्कूलके विद्यार्थियोमे भी जोश आया। एक दिन विद्यार्थियोने बाजारको ही घेर लिया। गोली भी चली।

'रोको भाई रोको' आन्दोलन आज १५ सालसे बराबर चल रहा है। देवनारका सत्याग्रह भी 'रोको भाई रोको' आन्दोलन ही है। 'रोको भाई रोको' आन्दोलन सारे भारतमे अनेक स्थानोपर चल रहा है। आज सैकड़ो स्थानोपर कतलके लिये जानेवाली गाये रोकी जा रही हैं। जिनकी गाये रोकी जाती है, वे लोग कोर्टमे केस करते हैं। ऐसे लगभग १५० केसेज छोटे कोर्टोमे हुए हैं, कुछ केसेज हाईकोर्टमे और ३ केस सुप्रीम कोर्टमे चल रहे हैं। कोर्ट-कचहरीके पीछे जनताका लाखोंका खर्च हो रहा है। न्यायालय ज्यो-ज्यो तारीखे वढाता है, त्यो-त्यो खर्च बढता जाता है। ११ जनवरी, १९८२ से विनोवाजीने बंबईके 'देवनार कतल खाने' पर सत्याग्रह करनेका आदेश दिया, उसके अनुसार १२ सालसे अखण्ड सत्याग्रह चल रहा है। इस सत्याग्रहमे लाखो बहन-भाइयोने हिस्सा लिया है। कई संतोने भी सत्याग्रहमे योग दिया। यह सत्याग्रह प्रतिदिन महाराष्ट्र सरकारको स्मरण दिलाता है कि छत्रपति शिवाजीके वंशजो! गोवंशकी हत्या वंद करो। कम-से-कम अपने कानूनका पालन तो पूरा करो। हालहीमे कानून-सुधारके नामपर महाराष्ट्र सरकारने १२ बरसकी उम्रतकके बैलोकी कतलपर पाबंदी लानेका प्रस्ताव कोर्टमे दिया है।

दिल्लीमें गोरक्षा-सत्याग्रह

'देवनार कतल-खाने' पर गोहत्या-वदी सत्याग्रह शुरु होनेके बाद एक गोभक्तने विनोवाजीको ध्यान दिलाया कि महाराष्ट्र सरकार तो सुप्रीम कोर्टकी मर्यादामे ही कानून बना सकती है। 'गोवंश-हत्या-वदी' का परिपूर्ण कानून बनाना भारत सरकारके हाथमें है। विनोवाजीने कहा- 'दिल्लीमें भी सत्याग्रह करो।'

दिल्लीमें दो-दो दिनके उपवासका सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। वह सत्याग्रह धीरे-धीरे जोर पकड़ रहा था। 'कृषि-गोसेवा-सघ'ने तय किया कि क्रमिक सत्याग्रह व्यापक पैमानेपर हो। दिनाङ्क ३० जनवरीसे २२ फरवरीतक दो-दो दिनका यह उपवास सत्याग्रह ५ लाख लोग करे ऐसा संकल्प किया गया। इस सत्याग्रहका प्रारम्भ विनोवाजीने एक समयका खाना छोडकर किया। इस सत्याग्रहका इतना प्रचार हुआ कि १०-१२ लाख लोगोसे भी अधिक लोगोंने उपवास-सत्याग्रह किया।

'कृषि-गोसेवा-संघ'की ओरसे दिल्लीमे सत्याग्रह शुरू हो इसके लिये भी प्रयास शुरु हुए।

सत्याग्रहका सिंहावलोकन करनेकी दृष्टिसे दिनाङ्क २५-२६ मार्च १९८७ को राजघाटपर बहुत बडा सर्वपक्षीय गोसेवा-सम्मेलन हुआ, जिसमे सारे भारतमे लगभग १,००० प्रतिनिधि आये थे। इसके साथ ही सारे भारतमे 'गोरक्षा-

यात्रा' भी की गयी।

'गोवंश-हत्या-वंदी'का केन्द्रीय कानून बने इसके प्रयास वरावर चालू रहे हैं। इस सम्वन्धमे तत्कालीन सरकारका भी पूरा सहयोग रहा। फलस्वरूप मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और उत्तरप्रदेश—इन चारों प्रदेशोंमें 'गोवंश-हत्या-वंदी'के कानून बना दिये गये थे, किंतु उत्तरप्रदेशके 'गोवंश-हत्या-बंदी कानून' पर राष्ट्रपतिके हस्ताक्षर नहीं हुए, इस कारण वह निरस्त हो गया। लगभग यही स्थिति आज भी है।

गुजरात सरकारने हिम्मतसे 'गोवंश-हत्या' बंद कर दी, उसपर अमल भी कर रही है, किंतु महाराष्ट्र सरकार बंद करेगी ऐसी कम उम्मीद है। आज १२ सालसे बंबईके 'देवनार क़तल खाने'पर अखण्ड सत्याग्रह चल रहा है। महाराष्ट्र सरकारका कानून है, उपयोगी बैलोका कतल न हो, इसके बावजूद ७५-८० प्रतिशत उपयोगी बैल कट रहे हैं। सरकारके नीचेसे ऊपरतकके सभी अधिकारी और मन्त्री इस बातसे परिचित हैं कि उपयोगी बैल कट रहे हैं। परंतु नीयत साफ नहीं है। सारे महाराष्ट्रमें गायोकी बेकानूनी कतल चालू है। नीयत साफ होती तो बेकानूनी क़तल बंद हो ही सकती थी।

अभीतकके सारे प्रयास 'गोवंश-हत्या-बंदी'का केन्द्रीय कानून वने इसके लिये किये गये 'रोको भाई रोको' आन्दोलन भी गाय-बैलोको कतलसे बचानेके लिये ही किया गया। परंतु अनुभवने वताया कि कतलसे वचायी गयी गायोको कहाँ रखे, यह सवाल रहा। मालेगाँवके आसपासके किसानोंमे 'गोसेवा-संघ'के प्रयाससे काफी गाये बाँटी गयीं। जैन-समाजमें जैन-मुनियोने इस काममे दिल खोलकर मदद दी, इस कारण अनेक स्थानोपर कतलसे बचायी गयी गायोको रखा गया।

क़तलके लिये कलकत्ता जानेवाली गायोको रोकनेका वहुत वड़ा प्रयास मुगलसराय स्टेशनपर 'कृषि-गोसेवा-संघ'की ओरसे किया गया। कई गोभक्तोने बहुत मेहनत करके गायोसे लदी अनेक गाड़ियाँ रोकीं। गायोको कहाँ रखा जाय यह सवाल था। वाराणसीकी 'रामेश्वर-गोशाला'ने कतलसे वचायी गयी गायोको 'रामेश्वर-गोशाला'मे रखना शुरू किया। उस क्षेत्रमे २०-२५ हजार गायोको किसानोमें वाँटा होगा। आज भी लगभग १,००० गाये गोशालाके पास होंगी। इन्हीं गायोंके संवर्धनसे इस गोशालामें प्रतिदिन ७०० लीटर दूध हो रहा है। नसल-सुधारका काम हुआ है, खेती-सुधारका काम हुआ है, स्थानीय लोगोंके प्रयाससे यह एक आदर्श नमूनेकी गोशाला हो गयी है।

रोजी-रोटी-अभियान

अनुभवने सिखाया कि कतलसे बचायी हुई गायोंको गाँवोमे ही किसानोके पास रखनेका प्रयास होगा, तभी गाये बचेगी। किसानको लगना चाहिये कि गाय-बैल बोझ नहीं हैं बल्कि आमदनीके—रोजी-रोटीके साधन हैं। गाँवोकी अर्थव्यवस्था गाय-बैलपर आधारित है। ट्रैक्टरके इस युगमे भी ७५ प्रतिशत खेती बैलोसे होती है, किंतु विडम्बना है कि विदेशी ट्रैक्टर-क्रान्तिके कारण जो बैल किसानके लिये जीवनदाता थे वे ही अब भाररूप बन रहे हैं। गाँवोमे बैलोंके पास ४-६ महीनेसे अधिक काम नहीं होता। ६ महीने बेकार बैलको खिलाना सम्भव नहीं, इसलिये किसान बेच देता है। गायोंकी भी यही हालत है। परंतु गोबर-गोमूत्रके कम्पोस्ट खादका महत्त्व ज्यो-ज्यो बढेगा, त्यों-त्यों बूढी असहाय गायोंका प्रश्न हल हो जायगा। दूधवाली गायोका प्रश्न 'गोरस-भंडार'की योजनासे एवं ग्राम-स्वावलम्बनसे हल हो सकता है।

पुनः यह विचार स्थिर हुआ कि 'गोवंश-हत्या-बंदी'का केन्द्रीय कानून अवश्य बने। रासायनिक खादोंपर सब्सीडी बद हो, देशी खादोंका प्रचार हो, गाँववाले गाय-बैलोको रखनेके लिये तैयार हों, परंतु गाँवके लोग बैल आदिको तभी रखेंगे जब वर्षभर उनसे लाभ मिलता रहे, जब बैलोको सालभर काम नहीं मिलेगा तो किसान बैल नहीं रख सकेगा। आज ३० कोटि जनता गरीबीकी रेखासे नीचे है, उसे भी तबतक रोजी-रोटी नहीं मिलेगी, जबतक गाँवोमे ग्रामोद्योग-रोजगारके अवसर खडे न होगे।

गोरक्षा और मानव-रक्षा—इन दोनोंकी दृष्टिसे हमें तो आजकी परिस्थितिमें यही एक मार्ग दीख रहा है—खादी ग्रामोद्योग और कृषि-गोपालन। इनपर राष्ट्र पूरी शक्ति लगायेगा तो हर हाथको काम, हर पेटको रोटी अवश्य मिलेगी। पर्यावरण-शुद्धिका भी बडा प्रश्न है, वह भी ग्रामोमे ग्रामोद्योग बढनेसे ही ठीक होगा।

गोरक्षा-आन्दोलनका संक्षिप्त इतिहास

(प्रो० श्रीविहारीलालजी टाँटिया एम०ए०)

गोवश सदैवसे भारतीय धर्म, कर्म एव सस्कृति-सभ्यताका मूलाधार रहा है। कृषि-प्रधान देश होनेसे गोवश भारतीय अर्थ-व्यवस्थाका भी स्रोत रहा है। भारतीय स्वतन्त्रता-सग्रामके अमर सेनानियो—लोकमान्य बालगगाधरजी तिलक, महामना मालवीय, गोखले प्रभृतिने यह स्पष्ट घोषणा की थी कि 'स्वराज्य मिलते ही गोवध तुरत बद कर दिया जायगा।'

उपर्युक्त नेताओकी घोषणाओको ध्यानमे रखते हुए भारतीय जनताको आशा थी कि अग्रेजी शासन चले जानेके साथ-ही-साथ गोहत्याका घोर कलक भी इस देशसे मिट जायगा, किंतु वह आशा फलीभूत नहीं हुई। इसे राष्ट्रका दुर्भाग्य ही कहा जायगा।

गोरक्षार्थ धर्मयुद्धका सूत्रपात

धर्मप्राण भारतके हृदय-सम्राट् ब्रह्मलीन अनन्तश्री स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजद्वारा सवत् २००१ मे सस्थापित 'अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ'ने अपने जन्मकालसे ही माँ भारतीके प्रतीक गोवंशकी रक्षा, पालन, पूजा एव सवर्धनको अपने प्रमुख उद्देश्योमे स्थान दिया था।

सन् १९४६ मे देशमे काग्रेसकी अन्तरिम सरकार बनी। भारतीय जनताने अपनी सरकारसे गोहत्याके कलकको देशके मस्तकसे मिटानेकी मॉग की। किंतु सत्ताधारी नेताओने पूर्व घोषणाओकी उपेक्षा कर धर्मप्राण भारतकी इस मॉगको ठुकरा दिया।

सरकारकी इस उपेक्षा-वृत्तिसे देशके गोभक्त नेता एव जागरूक जनता चिन्तित हो उठी। उन्हे इससे गहरा आघात लगा। सन् १९४६ के दिसम्बर मासमे देशके प्रमुख नगर बबईमे 'श्रीलक्षचण्डी-महायज्ञ' के साथ ही 'अखिल भारतीय धर्मसघ'के तत्त्वावधानमे आयोजित 'विराट् गोरक्षा-सम्मेलन' मे स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने राष्ट्रके धार्मिक, सामाजिक एव राजनीतिक नेताओ एव धर्मप्राण जनताका आह्वान किया। देशके सर्वोच्च धर्मपीठोके जगद्गुरु शकराचार्य, सत-महात्मा, विद्वान्, राजा-महाराजा एव सद्गृहस्थोने राष्ट्रके समक्ष उपस्थित इस समस्यापर गम्भीर विचार-मन्थन किया। और सम्मेलनके सर्वसम्मत निश्चयकी घोषणा की गयी—'सरकारसे यह सम्मेलन अनुरोध करता है कि राष्ट्रके सर्वविध कल्याणको ध्यानमे रखते हुए भारतीय धर्म और सस्कृतिके प्रतीक गोवशकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगा दे। कदाचित् सरकारने अक्षय तृतीया, २००३ तदनुसार २८ अप्रैल १९४७ तक सम्मेलनके अनुरोधपर ध्यान नहीं दिया तो 'अखिल भारतीय धर्मसघ' देशकी राजधानी दिल्लीमे सम्पूर्ण गोहत्या-बदीके लिये अहिसात्मक सत्याग्रह प्रारम्भ कर देगा।'

उक्त घोषणाके पश्चात् शिष्टमण्डलो, गोरक्षा-सम्मेलनो, जन-सभाओ, हस्ताक्षर-आन्दोलनो एव स्मरण-पत्रोद्वारा सरकारके कर्णधारोको गोहत्या-बदीकी मॉगका औचित्य एव अनिवार्यता समझानेकी भरसक चेष्टा की गयी, किंतु सरकारके कानपर जूँ तक नहीं रेगी।

धर्मसंघद्वारा गोरक्षार्थ धर्मयुद्धका शंखनाद

२८ अप्रैल १९४७ का दिन समीप आ पहुँचा। देशके गोभक्त नेता भारतकी राजधानी दिल्लीमे पुन. एकत्रित हुए। गम्भीर विचार-विमर्शके पश्चात् सर्वसम्मतिसे देशसे गोहत्याके कलकको मिटानेके लिये अहिसात्मक सत्याग्रहके श्रीगणेशका निश्चय हुआ। परम पूज्य श्रीस्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज (ब्रह्मलीन ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्यजी महाराज) को धर्मयुद्धका सचालन-सूत्र सौंपा गया। 'कल्याण' के सम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारने अर्थ-व्यवस्थाका भार सँभाला। धर्मसघ-विद्यालय-निगम बोध घाट दिल्लीमे आन्दोलनको सफल बनानेके लिये देशके विभिन्न अञ्चलोसे आये हुए विद्वानोद्वारा लक्षचण्डी-यज्ञ सम्पन्न हुआ।

अक्षय तृतीयाके पावन पर्वपर प्रात काल ही अनन्तश्री स्वामी करपात्रीजी महाराजके नेतृत्वमे गोभक्त धर्मवीरोने संविधान-निर्मातृ-परिषद्के भवनके समक्ष 'गोहत्या बद हो' के गगन-भेदी नारोके साथ सत्याग्रह किया। सरकारने सभी गोभक्त सत्याग्रहियोसहित श्रीस्वामीजी महाराजको बदी बनाकर पहले दिल्ली-जेल और पश्चात् केन्द्रीय जेल लाहौर स्थानान्तरित कर दिया। धार्मिक जगत्मे एक हलचल-सी मच गयी। देशके कोने-कोनेसे धर्मवीरोके जत्थे आने लगे और सत्याग्रह तीव्र गतिसे चल पडा।

देश-प्रसिद्ध विद्वान् महामहोपाध्याय प० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, शास्त्रार्थ-महारथी पं० श्रीमाधवाचार्यजी शास्त्री

पं० श्रीचन्द्रशेखरजी शास्त्री (पुरीपीठाधीश्वर जगद्गुरु निवृत्त-शंकराचार्य, स्वामी श्रीनिरंजनदेवतीर्थजी महाराज), श्री पं० नन्दलालजी शास्त्री, पं० श्रीसूर्यनाथजी पाण्डेय, श्रीसत्यव्रतजी ब्रह्मचारी, श्रीस्वामी आत्मदेवाश्रमजी महाराज, भक्त रामशरणदास पिलखुवा प्रभृति विद्वानो एव महात्माओके अतिरिक्त विभिन्न सम्प्रदायोंके आचार्यो, साधु-संतो एवं सद्गृहस्थ महानुभावोने लगभग ५-६ सहस्रकी सख्यामे जेल-यात्रा की। प० श्रीश्यामलालजी आचार्य, प० श्रीहीरालालजी शास्त्री, प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता ला० रामगोपाल शालवाले एवं हिन्दुसभाई नेता प्रो० रामसिहने आन्दोलनमे सक्रिय योग दिया।

महात्माओंका बलिदान

पूज्य श्रीस्वामी मुकुन्दाश्रमजी महाराज, श्रीस्वामी कृष्णानन्द तीर्थजी महाराज एव गोस्वामी लक्ष्मणाचार्यजी तो गोरक्षार्थ अपने भौतिक शरीरोका बलिदान कर गोलोकवासी हुए।

मथुरामें सत्याग्रहका श्रीगणेश

दिल्लीमें आन्दोलन तीव्र गतिसे चल रहा था, देशके विभिन्न भागोसे गोभक्त धर्मवीरोके जत्थे राजधानीमे गिरफ्तार हो रहे थे। इसी बीच भारत-विभाजनके फलस्वरूप देशमे साम्प्रदायिक विद्वेषाग्नि भडक उठी। नित्य नये राष्ट्रघातक षड्यन्त्रोका विस्फोट होने लगा। राजधानी दिल्ली भी इन षड्यन्त्रोका केन्द्र बन गयी। राष्ट्रिय संकटको दृष्टिमे रखते हुए धर्मयुद्धके संचालकोने दिल्लीमे आन्दोलनको अस्थायी रूपसे स्थगित कर गोपाल कृष्णकी पवित्र भूमि व्रजमे आन्दोलनको चालू रखनेका निश्चय किया।

मथुरामे धर्मयुद्धका शख बज उठा। निश्चित तिथिसे पूर्व ही श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराज—जो अबतक लाहोर-जेलसे मुक्त हो चुके थे—को बंदी बनाकर पहले मथुरा जेल और तदनन्तर आगरा जेलमे बद कर दिया गया। सत्याग्रह तीव्र गतिसे चलता रहा। मथुरा नगर-परिषद्ने अपनी सीमामे 'गोहत्या-बंदी'का प्रस्ताव पारित किया। फिर तो एकके बाद एक अनेक नगर-पालिकाओं, नगर-परिषदो, नगर-निगमो एव जिला-परिषदोने 'गोहत्या-बंदी' के प्रस्ताव पारित किये। फलस्वरूप व्रजभूमिके चौदह बूचडखाने बद हो गये।

मथुरा आंदोलनमे चित्रकूटके पूज्य स्वामी अखण्डानन्दजी महाराजके शिष्यो एव हाँसी-निवासी प० चैतन्यदेवजी शास्त्रीका सतत योगदान विशेष रूपसे उल्लेखनीय है।

इन आन्दोलनोंसे राष्ट्र-व्यापी जन-जागरण हुआ। देशके कोने-कोनेसे 'गोहत्या-बंदी'की माँग उठने लगी। सरकारसे बराबर पत्रो, तारो, प्रस्तावो, जन-सभाओं एवं शिष्ट मण्डलोंद्वारा अनुरोध किया जाता रहा कि वह जनताकी भावनाओंका सम्मान करते हुए भारत राष्ट्रकी प्रतीक गौ माताकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगाये। फलस्वरूप सविधान-निर्मातृ-परिषद्ने भारतीय सविधानके अध्याय ४ अनुच्छेद ४८ मे 'आधुनिक एव वैज्ञानिक पद्धतिपर कृषि एव पशु-धनकी व्यवस्थाके लिये प्रयत्न करने, विशेषतः पशु-धनकी नस्लोकी रक्षा और सुधारके लिये पग उठाने तथा गौओ, बछडे-बछडियो एवं अन्य दुधार पशुओकी हत्यापर कानूनी प्रतिबन्ध लगानेका भारत सरकारके प्रति नीति-निर्देश (Directive Principle) सर्वसम्मतिसे स्वीकार किया।'

१९ नवम्बर १९४७ को भारत सरकारने गोरक्षण और गोपालनके सम्बन्धमे विचार कर अपनी सम्मति देनेके लिये सरदार दातारसिहकी अध्यक्षतामे एक 'पशुरक्षण और संवर्धन कमेटी' बनायी। समितिने ६ नवम्बर १९४९ को अपनी रिपोर्ट सरकारके समक्ष प्रस्तुत की। रिपोर्टमे गोहत्या-बंदी एवं गौ-सरक्षणके सम्बन्धमे कतिपय महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये गये थे, किंतु सरकारने कमेटीके सुझावोको आशिक रूपमें ही स्वीकार किया और उन्हे भी पूर्ण रूपसे कार्यान्वित नहीं किया।

इसी बीच हमारे पडोसी देशो—लंका और बर्माकी सरकारोने अपने यहाँ गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगाये। पाकिस्तानमे भी कराचीमे दूध देनेवाले पशुओकी हत्यापर रोक लगायी गयी।

'अखिल भारतीय रामराज्य-परिषद्' द्वारा आन्दोलन

सन् १९४९-५०मे 'अखिल भारतीय रामराज्य-परिषद्' ने दिल्लीमे गोहत्याके कलंकको मिटानेके लिये सक्रिय सत्याग्रह-आन्दोलन किया। श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराजके नेतृत्वमे राजस्थानके वीर राजपूतोने लगभग बीस सहस्रकी संख्यामें जेल-यात्रा की। राजा दुर्जनसिंह जावली, ठाकुर मदनसिह दाता, श्रीमोहनसिह भाटी, श्रीरघुवीरसिह जावलीने आन्दोलनके सचालनमे प्रमुख रूपसे भाग लिया। आन्दोलनको सफल बनानेमे सर्वश्री प० नन्दलालजी शास्त्री, पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री एव प्रसिद्ध हिन्दू-नेता सेठ सीतारामजी खेमकाने भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

'राष्ट्रिय स्वयं सेवक-संघ' द्वारा हस्ताक्षर-आन्दोलन

सन् १९५२ में 'राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ'ने देशके लगभग दो करोड लोगोके हस्ताक्षर कराकर देशमें सम्पूर्ण गौ-वंशकी हत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध लगानेकी माँग की। संघके

सरसघचालक श्रीमाधवराव सदाशिव गोलवलकरजी (गुरुजी) ने स्वय इन हस्ताक्षरोके साथ आवेदन-पत्र राष्ट्रपति डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसादजीको भेट किया। परतु प्रधान मन्त्रीजीने इसकी कोई परवाह नहीं की।

प्रयागमें गोरक्षा-सम्मेलन

सन् १९५४ मे प्रयाग-कुम्भके पावन पर्वपर एक विराट् 'गोरक्षा-सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस सम्मेलनमे पूज्य श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीसहित लाला हरदेवसहायजी भी उपस्थित थे। इससे पूर्व लालाजी एव बाबा राघवदास प्रभृति महानुभाव गोरक्षार्थ सक्रिय आन्दोलनको अनावश्यक मानते थे। उनकी धारणा थी कि कांग्रेस सरकार स्वयमेव अथवा समझाने-बुझानेसे राष्ट्रके इस कलकको दूर कर देगी, किंतु इस सम्मेलनके मचसे प्रथम बार उन्होने स्पष्ट घोषणा की कि 'सरकारसे बातचीतद्वारा गोरक्षाकी माँग मनवानेमे मैं पूर्णतया निराश हो चुका हूँ। अब मुझे निश्चित विश्वास हो गया है कि मैं अबतक भ्रममे था। काग्रेस सरकार बिना राष्ट्रव्यापी उग्र आन्दोलनके गोहत्यापर कानूनद्वारा प्रतिबन्ध नहीं लगायेगी।' आपने विशाल जन-समूहके समक्ष अपने सिरसे पगड़ी उतारकर फेक दी थी और शपथ ली कि 'जबतक देशसे गोहत्याका पाप नहीं मिटेगा मैं पुनः पगड़ी धारण नहीं करूँगा।' आपने आजीवन इस शपथका निर्वाह किया।

'गोहत्या-निरोध-समिति' का संगठन एवं आन्दोलन

पूज्य ब्रह्मचारी श्रीप्रभुदत्तजीके सहयोगसे लाला हरदेव-सहायजीने प्रयागमे ही 'गोरक्षा-सम्मेलन' का आयोजन किया, जिसमे देशमे 'गोहत्या-निषेध' के लिये आन्दोलन चलाने-हेतु 'गोहत्या-निरोध-समिति' का गठन किया गया। लाला हरदेवसहायजी इस समितिके प्रधान मन्त्री तथा श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी अध्यक्ष चुने गये।

समितिके निश्चयानुसार दोनो नेताओने पटना और लखनऊमे गोरक्षार्थ सत्याग्रह किये। बिहार सरकारने 'गोहत्या-बदी कानून' बनाना स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात् लखनऊमे भी सत्याग्रह आरम्भ किया गया। पूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज भी इस अवसरपर आन्दोलनमें सक्रिय भाग लेने पहुँचे। सरकारने आपको बदी नहीं बनाया। स्व० श्रीगोविन्दवल्लभ पन्तने राज्य-मन्त्रिमण्डलकी ओरसे आपको सादर आमन्त्रित किया और आश्वासन दिया कि डॉ० सीतारामकी अध्यक्षतामे नियुक्त कमेटीकी रिपोर्ट मिलते ही उत्तरप्रदेशमें 'गोहत्या-बंदी कानून' बना दिया जायगा। इस प्रकार उत्तरप्रदेश और बिहारमें 'गोहत्याबदी-कानून' बने।

भारत-गोसेवक-समाजद्वारा प्रयास

सन् १९४८ मे 'बबई जीवदया-मण्डल' के प्रयत्नसे स्थापित 'भारत-गोसेवक-समाज' ने गोहत्या-निषेधके लिये विशेष प्रयास किया। सेठ गोविन्ददासजी इसके अध्यक्ष एव लाला हरदेवसहायजी तथा श्रीजयन्तीलाल मान्कर दोनो मन्त्री थे।

गोहत्या-बंदीके लिये राष्ट्रव्यापी आन्दोलन

सन् १९५४-५५ मे देशकी गोभक्त-सस्थाओ एव नेताओंके सहयोगसे गोरक्षार्थ राष्ट्रव्यापी आन्दोलन चलानेके लिये भगवती भागीरथीके अचल कानपुरमे 'धर्म-सघ' और 'ब्रह्ममण्डल' की ओरसे लक्षचण्डी-यज्ञका आयोजन हुआ। दक्षिणा-निरपेक्ष होकर विद्वान् ब्राह्मण उस यज्ञमें सम्मिलित हुए और 'अखिल भारतीय गोरक्षार्थ अहिसात्मक धर्म-युद्ध-समिति' का गठन किया गया। प्रसिद्ध गोभक्त सेठ चिरजीलालजी लोयलका इसके अध्यक्ष एवं देशविख्यात हिन्दू-नेता सेठ सीतारामजी खेमका प्रधान मन्त्री चुने गये।

देशके चार प्रमुख नगरो—कलकत्ता, बबई, अहमदाबाद एव राजधानी दिल्लीमे उक्त समितिके आह्वानपर 'गोहत्या-बंदी' की माँगको लेकर जोरदार आन्दोलन चलाये गये। चारो स्थानोपर लगभग ६० हजारसे अधिक गोभक्त धर्मवीरो एव वीराङ्गनाओने जेल-यात्रा की।

कलकत्तेके मोर्चेपर परमपूज्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्दजी सरस्वती, गोभक्त सर्वश्री सेठ सोहनलालजी दुग्गड समितिके प्रधान एव प० सूर्यनाथजी पाण्डेय मन्त्री और सेठ सीतारामजी खेमका आदि प्रमुख सचालकोमे थे। आन्दोलन इतना तीव्र हुआ कि जब सेठ सोहनलालजी दुग्गड़के नेतृत्वमें सत्याग्रही वीरोंका जत्था विधान-सभा-भवनकी ओर जा रहा था तो जनताकी अपार भीड़ने उनका अनुगमन किया। सरकारने शान्तिमय धर्मवीरोंकी भीडको रोकनेके लिये जनतापर घुडसवार पुलिसको आगे बढनेका आदेश दिया। फलस्वरूप घोडोके टापोंके नीचे आकर अनेक धर्मवीर आहत हो गये और धर्मवीर श्रीजसकरण भूराका बलिदान हुआ।

आन्दोलनका उग्र रूप देखकर पश्चिम बंगालकी सरकारने सत्याग्रहमे भाग लेनेवाले प्रायः सभी गोभक्तोंको चुन-चुनकर गिरफ्तार कर लिया तथा आन्दोलनके कार्यालय और अन्य स्थानोपर छापे डाले गये एवं सम्पूर्ण कागजातोंको जब्त कर लिया गया। स्वामी श्रीकरपात्रीजी तथा अन्य सभी नेता जेलमें

बद कर दिये गये। समितिके प्रधान मन्त्री श्रीसीतारामजी खेमकाने सत्याग्रह-समितिने यह सदेश भेजा कि 'वे भूमिगत होकर आन्दोलनका सचालन करें अन्यथा गिरफ्तार हो जानेपर आन्दोलनको क्षति पहुँचनेकी आशका है।' वे तत्काल साधुवेषमें भूमिगत हो गये और छः माहतक भूमिगत रहकर आन्दोलनका सचालन किया। इस बीच वगालकी सरकारने उन्हे गिरफ्तार करनेका भरपूर प्रयत्न किया, पर वह सफल नहीं हो सकी।

आन्दोलनमे 'अखिल भारतीय हिन्दू महासभा' ने सक्रिय सहयोग दिया एवं प्रसिद्ध गोभक्त हिन्दू नेता श्रीरामचन्द्र वीरने ६० दिनका अनशन-व्रत कर आन्दोलनको शक्ति प्रदान की।

बंबईका मोर्चा

यहाँका मोर्चा समितिके अध्यक्ष सर्वश्री सेठ चिरजीलालजी लोयलका, वालाचार्य वरखेडकर, मुकुन्दलालजी पित्ती एव महन्त श्रीदीनवन्धुदासजीके नेतृत्वमे सफलतापूर्वक चला। स्थानीय 'महिला-सघ' की सदस्याओने वडी सख्यामे सत्याग्रहमे भाग लेकर आन्दोलनको विशेष वल प्रदान किया। सभी वर्गोके सहस्रो धर्मवीरोने गोरक्षार्थ जेल-यात्राकर पुण्य-लाभ किया।

अहमदावादमें जोरदार आन्दोलन

गुजरातके प्रसिद्ध कथाकार श्रीशम्भुजी महाराजने धर्मयुद्धका सफलतापूर्वक सचालन किया। गोभक्तके प्रवल उत्साहके कारण आन्दोलनने इतना प्रचण्ड रूप धारण किया कि गुजरात सरकारको वाध्य होकर 'गोहत्या-वदी-कानून' वनाना पडा।

राजधानी दिल्लीका मोर्चा

राजधानी दिल्लीमे धर्मयुद्धका सचालन-सूत्र तरुण तपस्वी पूज्य स्वामी श्रीपरमानन्द सरस्वतीजी एम्०ए० महाराजको सौंपा गया। आपके संचालनमे धर्मयुद्ध तीव्रगतिसे चला। इस मोर्चेपर भी सहस्रोकी सख्यामे गोभक्त स्त्री-पुरुषोने गोमाताकी रक्षाके लिये हँसते-हँसते जेलकी यातनाएँ सहन कीं।

चारो ही मोर्चोपर समय-समयपर पहुँचकर परमपूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एव समितिके प्रधान मन्त्री सेठ सीतारामजी खेमकाने स्वयको भी गिरफ्तारीके लिये समर्पित किया। यह राष्ट्रव्यापी आन्दोलन लगातार पौने दो वर्षतक चलता रहा। इतनी लम्बी अवधिमे एक भी दिन ऐसा नहीं गया जबकि चारोमेसे किसी भी मोर्चेपर सत्याग्रहके लिये धर्मवीरोके जत्थोने गिरफ्तारीके लिये समर्पण न किया हो।

इस राष्ट्रव्यापी आन्दोलनमे वाध्य होकर यद्यपि विभिन्न प्रदेशोकी सरकारोने अपने यहाँ 'गोहत्या-वदी'-कानून वनाये, किंतु ये सभी अधूरे थे। अतः इनसे अभीष्ट लक्ष्यकी प्राप्ति नहीं हो सकी।

भारत सरकारके कतिपय कर्णधारोकी भावना शुद्ध न होनेके कारण गोहत्याका घोर कलंक भारत देशमे वना ही नहीं रहा, प्रत्युत विदेशी शासन-कालकी अपेक्षा कई गुना अधिक वढ गया। मजहवी पर्वो, औषध-निर्माण और चिकित्साके नामपर गोहत्या चालू रखनेका दुराग्रह किया गया। तदनन्तर अनाजकी कमीकी पूर्तिके नामपर जनतामे मास-भक्षणकी प्रवृत्ति वढाने तथा विदेशी मुद्रा प्राप्त करनेके लिये गोमास, चर्म, अस्थि, आन्त्र, चर्वीके निर्यातकी वृद्धि करनेके लिये भारतके चार प्रमुख नगरो—ववई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्लीमें विशाल यान्त्रिक वूचडखाने खोलनेका निश्चय काग्रेस सरकारने किया। एतदर्थ बबई एव कलकत्तामें तो विशाल भूभाग भी सरकारद्वारा अधिकृत किये गये। कलकत्तामे गोभक्तोंके प्रयाससे, कृषको एव जनसामान्यके विरोधपर कलकत्ता उच्च न्यायालयने सरकारद्वारा भूमि-अधिकरणको इस तर्कके आधारपर अवैध घोषित कर दिया कि गोमांस, अस्थि आदि विक्रय जनसामान्य-हितका कार्य नहीं है। अतः सरकारद्वारा व्यक्तिगत भूमि हस्तगत नहीं की जा सकती। परंतु बंबईमे देवनार नामकस्थानपर वृहद् भूभाग अधिकृत करके एक बृहद् यान्त्रिक वूचडखानेके निर्माणकी योजना वनी।

'अखिल भारतीय गोरक्षा-अभियान' का सूत्रपात

भारत सरकारकी उपर्युक्त गोहत्याको निरन्तर प्रोत्साहन देनेकी प्रवृत्तिको दृष्टिगत रखते हुए पूज्य स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने एक बार पुनः संवत् २०१९, अप्रैल सन् १९६२ मे हरिद्वार कुम्भके पावन पर्वपर देशके गोभक्त नेताओ एव जनसाधारणका आह्वान किया। 'अखिल भारतीय धर्मसंघ' के तत्त्वावधानमे एक विशाल 'गोरक्षा-सम्मेलन' हुआ। समस्त भारतके प्रतिष्ठित आचार्य, महात्मा, विद्वान् तथा सद्गृहस्थोकी उपस्थितिमें सम्पूर्ण देशसे गोहत्याके घोर कलंकको मिटानेके सकल्पसे श्रीस्वामीजी महाराजने 'अखिल भारतीय गोरक्षा-अभियान'का सूत्रपात किया। प्रसिद्ध गोभक्त स्व० लाला हरदेवसहायजीने सर्वप्रथम अभियानमे सम्मिलित होनेकी घोषणा की। 'हिन्दू महासभा' के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत पं० रामनाथजी कालियाको उक्त अभियानका सविधान बनानेका भार सौंपा गया। ११ मई १९६२ के अभियानके व्यवस्थित संचालनके लिये एक 'केन्द्रीय संयोजन-समिति' का गठन किया गया, जिसमे प्रसिद्ध गोभक्त श्रीसीतारामजी खेमकाको अभियान-

समितिका प्रधान मन्त्री नियुक्त किया गया। समितिने विजयादशमीसे समस्त भारतमे जनजागरणके लिये अभियान प्रारम्भ करनेका निश्चय किया।

विजयादशमी १८ अक्टूबर १९६२ को उक्त निश्चयानुसार विदर्भके प्रमुख नगर आकोलासे विधिवत् गोपूजनके पश्चात् अपार जनसमूहके गगनभेदी जयघोषो एव हरिसकीर्तनके बीच 'गोरक्षा-अभियान' ने बबईमे बनने जा रहे देवनारके विशाल बूचड़खानेको रोकनेके लिये प्रस्थान किया।

मार्गके नगरो एव गाँवोमे जन-जागरण करता हुआ अभियान २३ अक्टूबर १९६२ को बबई पहुँचा। नगरके विभिन्न भागोंमें जोरदार जनसभाएँ करके उक्त बूचडखानेकी योजनाको रद्द करवानेके लिये जनमत जाग्रत् किया जाने लगा। दुर्भाग्यवश इसी समय चीनी सेनाओने देशकी उत्तरी सीमापर आक्रमण कर दिया। भारतके स्वाभिमानपर यह दुःखद आघात था। गोरक्षा-अभियानको अब राष्ट्र-रक्षा-अभियानके रूपमें परिवर्तित करना अनिवार्य हो गया। यह विचार कर कि भारतीय नेताओंसे तो देर-सबेर गोरक्षाकी आशा की जा सकती है, किंतु यदि दुर्भाग्यसे देश पुनः ऐसे विदेशियोके हाथो पड गया तो गोरक्षा एक स्वप्न बनकर रह जायगा। अतः पं० नेहरूकी अपीलपर गोरक्षा-अभियानको स्थगित कर राष्ट्र-रक्षार्थ जन-जागरणका कार्य प्रारम्भ किया गया।

वृन्दावनमें गोरक्षा-सम्मेलन

श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीके सबल सहयोगसे 'भारत गोसेवक-समाज' ने अगस्त १९६४ मे 'अखिल भारतीय गोरक्षा-सम्मेलन' का वृन्दावनमे आयोजन किया। सेठ गजाधरजी सोमानी सम्मेलनके सभापति थे। सम्मेलनका उद्घाटन 'राष्ट्रिय स्वय सेवक संघ'के (गुरुजी) श्रीगोलवलकरजीने किया। इस सम्मेलनने सरकारको चेतावनी दी कि यदि गोपाष्टमी सवत् २०२२ तक देशमे सम्पूर्ण गोवशकी हत्या बद न की गयी तो इसके लिये शान्तिमय आन्दोलन किया जायगा।

एक उच्चस्तरीय शिष्टमण्डलने २२ फरवरी १९६५ को उक्त माँग सरकारके समक्ष रखी। शिष्टमण्डलने प्रधान मन्त्री स्व० लालबहादुरजी शास्त्रीसे भेट की। राष्ट्रपति तथा खाद्यमन्त्रीसे भी भेट की गयी, किंतु कोई ठोस परिणाम नहीं निकला।

स्व० लालबहादुरजी शास्त्रीसे जगद्गुरु शंकराचार्योकी भेंट

'अखिल भारतीय धर्मसघ' के मेरठ महाधिवेशनके अवसरपर आयोजित 'गोरक्षा-सम्मेलन' के निश्चयानुसार २४ मार्च १९६५ को जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज एवं गोवर्धनपीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी निरजनदेव तीर्थके नेतृत्वमे एक सम्भ्रान्त शिष्टमण्डल प्रधान मन्त्री स्व० लालबहादुर शास्त्रीसे मिला। शिष्टमण्डलने सम्पूर्ण भारतमे अविलम्ब 'गोवश-वध-निषेध'के कानूनकी माँग करते हुए, विशेषतः बबईके देवनार और कलकत्ताके दानकुनी बूचडखानोके निर्माणको अविलम्ब रोकनेके लिये आग्रह किया।

शिष्टमण्डलने आवश्यकता पडनेपर 'गोहत्या-बदी' मे होनेवाली सरकारकी आर्थिक क्षतिकी पूर्ति करनेके लिये गोरक्षा-कर अथवा अन्य प्रकारसे सहायता देनेके लिये जनताको प्रेरित करनेके लिये अपना सहयोग प्रस्तुत किया।

प्रधान मन्त्रीने शिष्टमण्डलसे सहानुभूतिपूर्वक बातचीत की और उक्त दोनो बूचडखानो (कलकत्ता एव बबई) के निर्माणको तुरत रोक देनेका स्पष्ट आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त गोवशके उत्तरोत्तर तीव्र गतिसे हो रहे ह्रासको पूर्णतया कानूनके द्वारा बद करनेका प्रयास करनेका वचन भी दिया। इस अवसरपर गृहमन्त्री श्रीनन्दाजी उपस्थित थे।'

इसी बीच भारत-पाक-सघर्षका सकट राष्ट्रपर आया और समस्त देश एव सरकार सब कुछ भूलकर राष्ट्र-रक्षाके कार्यमे सलग्न हो गये। भगवत्कृपासे सघर्षमे हमारा राष्ट्र विजयी रहा, किंतु ताशकन्दमे श्रीशास्त्रीजीके आकस्मिक निधनके पश्चात् उनके द्वारा प्रदत्त आश्वासनोको सरकारने क्रियान्वित नहीं किया।

गोरक्षार्थ बलिदानी वीरोंका आह्वान

सन् १९६६ मे प्रयागमे माघमेलेके अवसरपर 'अखिल भारतीय धर्मसघ-शिविर' के विशाल प्राङ्गणमे 'गोरक्षा-सम्मेलन' का आयोजन किया गया। सम्मेलनमे जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्तश्री स्वामी निरजनदेव तीर्थजी महाराजने गोरक्षार्थ सन्त-महात्माओ एव धर्मप्राण जनताका आह्वान करते हुए कहा—'यदि हम वास्तवमे राम-कृष्णके सच्चे भक्त हैं और सच्चे साधु-महात्मा हैं तो हमे बडे-से-बडा बलिदान करके भी गोमाताकी रक्षा करनी चाहिये। आपने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि 'सरकारके कर्णधारोंसे अनेक बार पत्र-व्यवहार करके तथा साक्षात् भेंट करके हम इस परिणामपर पहुँचे हैं कि वर्तमान सरकार प्रस्तावोंसे, भाषण देनेसे अथवा शिष्टमण्डलोंद्वारा समझाने-बुझानेसे कदापि गोहत्या बद नहीं करेगी। गोमाताकी रक्षा तभी होगी जब हम लोग सच्चे

हृदयसे अपने प्राणोकी बाजी लगानेको तैयार होगे। अन्तमे आपने घोषणा की कि यदि बलिदानका अवसर आया तो गोरक्षार्थ सर्वप्रथम हम अपना बलिदान देगे।'

ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य अनन्तश्री स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराजने भी गोरक्षाकी माँगके प्रति सरकारकी निरन्तर उपेक्षापर गहरा खेद प्रकट करते हुए जनताको एतदर्थ बलिदानके लिये तैयार हो जानेको प्रेरित किया। इस प्रकार 'गोरक्षा-आन्दोलन' को उग्र रूप देनेके सर्वसम्मत प्रस्तावके साथ गोभक्त नेताओने देशव्यापी प्रचार-यात्राके लिये प्रस्थान किया।

दिल्लीमें महात्माओंद्वारा आन्दोलन

२८ मार्च १९६६ को महात्मा सियाराम, श्रीराममुनि तथा अन्य महात्माओने दिल्लीमे ससद्-भवन तथा गृहमन्त्रीकी कोठीपर गोरक्षार्थ अनशन आरम्भ किया और २२ महात्मा गिरफ्तार कर लिये गये। जेलमे भी इन महात्माओने अनशन जारी रखा। इसके बाद एकके बाद एक साधुओके जत्थे अनशन और धरना देते हुए गिरफ्तार होने लगे।

स्वामी ब्रह्मानन्दजी (राठवालो) ने १४ मईसे ५ सितम्बरतक गृहमन्त्री श्रीनन्दाजीकी कोठीपर धरना दिया। आपके साथ और भी अनेक महात्मा धरना देते थे। धूप, हवा, लू और वर्षाकी चिन्ता किये विना आपने धरना जारी रखा। ५ सितम्बरको १०० साधुओके साथ प्रधान मन्त्रीकी कोठीपर धरना देते हुए आपको बदी बना लिया गया ओर १५ दिनका कारावास-दण्ड दिया गया।

२५ जुलाईसे स्वामी गवानन्द हरिने ३१ अन्य साधुओसहित लोकसभा-भवनपर धरना आरम्भ किया। २७ जुलाईको स्वामी ब्रह्मानन्दजीके शिष्य स्वामी निजानन्दजी त्यागी तथा स्वामी गुप्तानन्दजीके नेतृत्वमे करीब ५२ साधुओने प्रधान मन्त्रीकी कोठीपर धरना आरम्भ किया। स्वामी गवानन्द हरि अपने साथियोसहित ३ अगस्तको गिरफ्तार कर लिये गये।

'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान' का सूत्रपात

साधु-महात्माओने गोरक्षार्थ आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था। नित्य अनेक साधु-महात्मा बदी बनाये जा रहे थे। देशमे जन-जागरण हो रहा था। विशेषकर दिल्लीके गोभक्त कार्यकर्ता एव सस्थाएँ आन्दोलनको व्यवस्थित, सगठित एव प्रभावशाली रूप देनेके प्रयासमे सलग्न थी।

जैन मुनि श्रीसुशीलकुमारजीके प्रोत्साहनसे एक बेठक हुई, जिसमे श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, भारत-साधु-समाजके मन्त्री स्वामी आनन्द, सेठ गोविन्ददास, हिन्दू महासभाके नेता प्रो० रामसिंह, आर्यसमाजी नेता ला० रामगोपाल शालवाले, श्रीविश्वम्भर प्रसाद शर्मा, प० मौलीचन्द्र शर्मा, स्वामी गवानन्द हरि आदि महानुभाव उपस्थित थे। सभामे निश्चय किया गया कि आन्दोलनको प्रभावशाली रूप देनेके लिये सभी गोसेवी सस्थाओका एक सयुक्त मंच स्थापित किया जाय। एतदर्थ श्रीप्रेमचन्द्रजी गुप्त सयोजक मनोनीत किये गये। बैठकमे जगद्गुरुजी महाराजने स्पष्ट शब्दोमें अपना निश्चय व्यक्त करते हुए कहा कि—

'यदि हम वास्तवमे सच्चे हृदयसे गोहत्याका संकट मिटाना चाहते हैं तो सबसे पहले आप स्वयं ही 'गोहत्या' बंद करानेके लिये मैदानमे आओ। गोहत्या बद करानेके लिये हमे समस्त देशमेसे कुल ५-६ व्यक्ति चाहिये और यदि वे मैदानमें आ जायँ और गोहत्या बद करानेके लिये उद्यत हो जायँ तो इसमे तनिक भी संदेह नही कि गोहत्या निश्चय ही बंद हो जायगी। इन ५-६ व्यक्तियोमे हैं—एक जगद्गुरु शंकराचार्य, स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज, राष्ट्रिय स्वय सेवक-सघके गुरु श्रीगोलवलकरजी, सनातन धर्म-प्रतिनिधि सभाके श्रीस्वामी गणेशानन्दजी महाराज, ब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी, जैन-मुनि सुशीलकुमारजी एव सत कृपालसिंहजी। सबसे पहले मैं शकराचार्य स्वय अपना नाम देता हूँ। मैं सबसे पहले गोहत्या बंद करानेके लिये अपना बलिदान दूँगा और अपने प्राणोत्सर्ग करूँगा. .. ।' आपने आगे कहा कि 'यह बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि दो-तीन ऐसे महापुरुष हमारे साथी हमे मिल गये हैं जो हमारे साथ गोहत्या बद करानेके लिये अपने प्राणोकी बाजी लगानेको तैयार हैं। हम उन सबका नाम नहीं बताना चाहते, उनमेसे केवल एक महापुरुषका नाम बताते हैं वे हैं पूज्यपाद जगद्गुरु शकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्त श्रीस्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज।'

कुछ समय पश्चात् अनन्तश्री स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज हरिद्वार जाते हुए दिल्लीमे रुके। 'गोरक्षा-आन्दोलन'-के सचालनमे संलग्न कार्यकर्तागणो एव गोसेवी सज्जनोंने श्रीस्वामीजी महाराजसे 'गोरक्षा-आन्दोलन'को प्रबल बनानेके लिये मार्गदर्शनकी प्रार्थना की। महाराजश्रीने कहा कि 'यदि सभी गोसेवी सस्थाएँ मिलकर पयलशील हो तो सफलताकी आशा हो सकती हे। एतदर्थ प्रयत्न होना चाहिये।' इसके पश्चात् श्रीस्वामीजी महाराज पूर्वकार्य-क्रमानुसार ऋषिकेश चले गये।

श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार एवं पूज्य ब्रह्मचारीजीको साथ लेकर कुछ प्रमुख गोसेवक श्रीकरपात्रीजी महाराजकी सेवामे ऋषिकेश पहुँचे। कोयल घाटी-स्थित श्रीमहाराजजीके शिविरमे बैठक हुई। विचार-विमर्शके पश्चात् श्रीस्वामीजी महाराजने निम्नलिखित आशयका एक शपथ-पत्र तैयार किया—

'मैं शपथपूर्वक 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान' को आश्वासन देता हूँ कि मनसा, वाचा, कर्मणा अपनी पूर्ण शक्तिसे 'गोहत्या-बंदी' के लिये जो भी आवश्यक होगा सब कुछ करूँगा।'

उक्त शपथ-पत्रपर सर्वप्रथम स्वय श्रीस्वामी करपात्रीजी महाराजने हस्ताक्षर किये, तदनन्तर श्रीब्रह्मचारी प्रभुदत्तजी महाराज, ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य अनन्तश्री स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज, गोवर्धनपीठाधीश्वर अनन्तश्री स्वामी निरंजनदेवतीर्थजी महाराज, राष्ट्रिय स्वय सेवक-सघके गुरु गोलवलकरजी, श्रीस्वामी गणेशानन्दजी, सद्गुरु जगजीतसिहजी, भारत साधु-समाजके स्वामी गुरुचरणदासजी, श्रीस्वामी आनन्दजी, जैन मुनि सुशीलकुमारजी, हिन्दू महासभाई नेता महन्त दिग्विजयनाथजी, सत फतहसिंहजी, श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार प्रभृति लगभग ४० गोसेवी नेताओने हस्ताक्षर किये।

अपने-अपने विश्वासानुसार यहींपर गोरक्षार्थ धार्मिक अनुष्ठानादि करनेके लिये सभी सम्प्रदायोके गोभक्तोको प्रेरित करनेके लिये एक वक्तव्य तैयार किया गया जो अविकल-रूपमे 'कल्याण' तथा देशके अनेक पत्र-पत्रिकाओमे प्रकाशित हुआ।

श्रीस्वामीजी ऋषिकेशसे पुनः दिल्ली पधारे और आपने अन्य गोभक्त नेताओ एव कार्यकर्ताओके सहयोगसे 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान'की रूपरेखा तैयार की। तदनन्तर चातुर्मास्यव्रतके लिये श्रीमहाराजजी वाराणसी चले गये तथा 'गोहत्या-बदी' के लिये वहाँ गभस्तीश्वरमें विद्वान् वैदिक ब्राह्मणोंने ११ दिनका अखण्ड रुद्राभिषेक सम्पादित किया।

वाराणसीमे पुनः सभी सम्बन्धित लोगोकी उपस्थितिमे बैठक हुई और परस्पर विचार-विमर्शके पश्चात् सविधानमे अपेक्षित सशोधन किये गये। सर्वोच्च समिति, कार्य-समिति, सरक्षक-मण्डल एवं महाभियान-समितिके सदस्योको मनोनीत किया गया।

'१४ सितम्बर १९६६ को 'भारत गोसेवक-समाज' के कार्यालय, ३ सदर थाना रोड दिल्लीमे शपथ-पत्रपर हस्ताक्षर करनेवाले 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियानसमिति' के सदस्योको एक बैठक हुई। इस सभामे 'महाभियान-समिति' के पदाधिकारियोका निर्वाचन किया गया तथा समितिके पदाधिकारियोका चुनाव हुआ। महाभियानके संचालन और नीति-निर्धारणका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सर्वोच्च समितिको सौंपा गया। निम्नलिखित महानुभाव सर्वोच्च समितिके सदस्य बनाये गये—

(१) जगद्गुरु शकराचार्य अनन्तश्री स्वामी श्रीनिरजनदेव-तीर्थजी महाराज गोवर्धनपीठाधीश्वर (पुरी)।
(२) अनन्तश्री स्वामी करपात्रीजी महाराज।
(३) श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी।
(४) स्वामी गुरुचरणदासजी।
(५) मुनि श्रीसुशीलकुमारजी।
(६) श्रीमाधवराव सदाशिव गोलवलकरजी।
(७) श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार।

स्वामी रामचन्द्र वीरका आमरण अनशन-व्रत

१० अगस्त १९६६ को मध्य प्रदेशके सागर नगरमें महान् तपस्वी प्रसिद्ध गोभक्त हिन्दू-सभाई नेता महात्मा रामचन्द्र वीर, जिन्होने गोहत्याके कलकके निवारणार्थ अनेक बार अनशन-व्रत किये, ने घोषणा की कि यदि भारत सरकारने २० अगस्तसे पूर्व गोहत्या-बदीका केन्द्रीय कानून नहीं बनाया तो वे २० अगस्त १९६६ से भारतकी राजधानी दिल्लीमें अपना अन्तिम आमरण अनशन प्रारम्भ कर देगे।

२० अगस्त १९६६ को प्रातः ७ बजे 'हिन्दू महासभा-भवन, मन्दिर-मार्ग, नई दिल्ली' में वेदमन्त्रोंके उच्चारण एव प्रो० रामसिह आदि गण्यमान्य हिन्दू नेताओकी उपस्थितिमे स्वामी रामचन्द्रजी वीरने अपना कठिन संकल्प प्रारम्भ किया। ३२ दिन तक 'हिन्दू महासभा-भवन' सकीर्तन, भगवत्-स्तुतिसे गुंजायमान होता रहा। छोटे-बड़े सभी गोभक्त नेताओ, कार्यकर्ताओंने हिन्दू-भवनमें पहुँचकर वीरजीके अनशनके प्रति शुभ कामनाएँ प्रकट कीं। स्वामीजीका शरीर उत्तरोत्तर क्षीण होता गया। २० सितम्बरकी सध्याको पुलिस आयी और उन्हे आत्महत्याके तथाकथित अपराधमे गिरफ्तार करके ले गयी। महात्मा रामचन्द्र वीरने जेलमे भी अपना अनशन-व्रत जारी रखा। ७ नवम्बर १९६६ को एक बदीके रूपमे 'गोविन्दवल्लभपंत अस्पताल नयी दिल्ली'मे उनके अनशन-व्रतका ८० वाँ दिन था।

५ सितम्बरका अभूतपूर्व प्रदर्शन

५ सितम्बर १९६६ को दिल्लीमें सम्पूर्ण 'गोहत्या-बदी' के लिये ससद्‌भवनपर एक विराट् प्रदर्शन हुआ। इस प्रदर्शनका आयोजन सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियानपर हस्ताक्षर करनेवाले सभी नेताओके सहयोगसे सनातन धर्म-प्रतिनिधि-सभाके प्रधान मन्त्री स्वामी गणेशानन्दजी महाराजके सयोजकत्वमे हुआ था। लगभग डेढसे दो लाख गोभक्त इसमे सम्मिलित हुए। गोरक्षाके लिये किये गये आजतकके प्रदर्शनोमे यह अभूतपूर्व था।

राजधानीके विभिन्न मार्गोसे होता हुआ यह जुलूस करीव सवा दो बजे ससद्-भवन पहुँचा। इसके बाद सेठ गोविन्ददासके साथ स्वामी गणेशानन्दजी, स्वामी गुरुचरणदासजी और जैन मुनि सुशीलकुमारजीने 'गोहत्या' बद करनेके सम्बन्धमे एक आवेदन-पत्र गृहमन्त्री श्रीगुलजारीलाल नन्दाको ससद्-भवनके द्वारपर दिया।

सत्याग्रहका शङ्खनाद

[७ नवम्बरका गोकुम्भ]

श्रीरामनवमीसे साधु-सतोद्वारा गोरक्षार्थ आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और 'सर्वदलीय गोरक्षा-महाभियान-समिति' के तत्त्वावधानमे ७ नवम्बर १९६६ को दिल्लीमे ससद्‌भवनपर गोभक्तोका विराट् प्रदर्शन हुआ। इस विराट् प्रदर्शनमे सम्मिलित होनेके लिये देशके कोने-कोनेसे आबाल-वृद्ध, नर-नारी, सन्यासी, ब्रह्मचारी, सद्‌गृहस्थ, नेता तथा कार्यकर्ता लाखोकी सख्यामें कई दिन पहलेसे ही दिल्ली पहुँचने लगे। विभिन्न स्थानोपर 'गोरक्षा-आन्दोलन' की सफलताहेतु धार्मिक अनुष्ठान, पूजा-पाठ तथा लक्षचण्डी महायज्ञ भी प्रारम्भ कर दिये गये। ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्‌गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज, पुरीपीठाधीश्वर जगद्‌गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराज, धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा अन्य सत-महात्माओने रात-दिन नगर-नगर, डगर-डगर और ग्राम-ग्राममे घूमकर देशभरमे गोरक्षाके लिये इतना व्यापक प्रचार किया कि ७ नवम्बर १९६६ के इस गोकुम्भ-महापर्वपर सम्पूर्ण भारतकी आत्मा एक-रूप होकर गोहत्याके काले कलकको देशके मस्तकसे मिटानेके लिये ससद्‌भवनपर दृष्टिगोचर हुई। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी सभी जातियो, समुदायों और वर्गोके स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, युवक-युवती अपने-अपने नेताओ तथा धर्मगुरुओके आह्वानपर दिल्ली पधारे थे और गोमाताके प्राणोकी रक्षाके लिये वडे उत्साहसे 'गोहत्या बद हो' के नारे लगाते हुए पूर्ण अहिसक-भावसे ससद्‌भवनकी ओर प्रेमपूर्वक इस विश्वासके साथ वढते जा रहे थे कि आज गोरक्षा-कानून बनानेकी सरकारसे घोषणा करवाकर ही वापिस लौटेगे। इस दिन दिल्लीमे चारों ओर मनुष्य-ही-मनुष्य दिखलायी पड़ रहे थे। समाचारपत्रोके अनुसार इस प्रदर्शनमें लगभग पंद्रह-बीस लाख लोगोने सम्मिलित होकर 'गोकुम्भ-महापर्व' का ऐसा दृश्य उपस्थित किया था जिसके विषयमे 'न भूतो न भविष्यति' कहना ही पर्याप्त होगा। देशकी एकात्मकताका यह दिन कितना महान् था? इसका मूल्याङ्कन तो भावी इतिहास ही करेगा।

इस ऐतिहासिक प्रदर्शनके अवसरपर संसद्‌भवनके सामने वडे विशाल मंचपर विराजमान महान् विभूतियोंमें उल्लेखनीय नाम हैं—सर्वश्रीज्योतिष्पीठके जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज, पुरीपीठके जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराज, धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज, सत प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, जैन मुनि सुशीलकुमारजी, स्वामी श्रीरामेश्वरानन्दजी, भाई श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार, अटलविहारीजी वाजपेयी, प्रकाशवीर शास्त्री तथा सेठ गोविन्ददास आदि। इन महानुभावोके मंचसे स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने घोषणा की कि 'हमारा किसी दल-विशेषसे द्वेष नहीं है। हम किसी राजनीतिक माँगको लेकर नहीं आये हैं। इस समय जो शासनारूढ हैं वे हमारे ही घरके लोग हैं, हम इन सबका कल्याण चाहते हैं। हम तो यहाँ केवल गोरक्षाकी माँग रखने आये हैं।' इसी प्रकार अन्य नेताओके उद्‌बोधन चल रहे थे कि उस समयकी काग्रेसी सरकारने इस महान् ऐतिहासिक प्रदर्शनको असफल करनेके लिये अपने गुडोंद्वारा उपद्रव कराकर प्रदर्शनकारियोपर लाठी प्रहार प्रारम्भ करवा दिया, जिससे भगदड मच गयी और चारो ओर अव्यवस्था मच गयी, सरकारके पूर्वनियोजित षड्‌यन्त्रका शिकार होनेसे यह विराट् प्रदर्शन असफल हो गया। सरकारको वहाना मिल गया। अहिसक ओर निहत्थे लोगोपर आँसू गैसके गोले और राइफलोकी गोलियोकी बौछार करके असंख्य गोभक्तोको पुलिसने जिस क्रूरतासे मारा उसकी मिसाल मिलना सम्भव नहीं। 'जलियाँवाला बाग' का हत्याकाण्ड भी इसके सामने फीका पड गया। ससद्-भवनकी सड़के क्षत-विक्षत शवो तथा रक्तपातसे पट गयीं। सरकारने अपना पाप छिपानेके लिये कर्फ्यू लगाकर सारे शवोको विद्युत्-भट्ठीमे जला दिया। अनेक नेताओको वदी वना लिया। पूरे नगरमें भीषण आतंक व्याप्त हो गया।

स्वामी श्रीकरपात्रीजीद्वारा सत्याग्रह

सरकारी दमनचक्रसे सम्पूर्ण दिल्लीमे भय और आतंकका वातावरण बन गया था। 'गोरक्षा-आन्दोलन' रुकता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था। देशभरसे आये हुए लाखो गोभक्त किकर्तव्यविमूढ हो रहे थे। हजारो गोभक्तोके बलिदानसे सर्वत्र शोक और भय व्याप्त हो जानेके कारण किसीको भी सत्याग्रहके लिये सामने आनेका साहस नही हो रहा था। ऐसी विकट स्थितिमे ८ नवम्बर १९६६ को प्रातःकाल ही अपने प्रातःकृत्योसे निवृत्त होकर धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज राजधानी दिल्लीकी सडकोपर सत्याग्रहके लिये निकल पडे, फिर क्या था, अनेक गोभक्त धर्मवीर उनके पीछे हो लिये। सरकारके दमनचक्रसे उत्पन्न आतकको छिन्न-भिन्न करते हुए श्रीस्वामीजीने एक बार पुनः 'गोरक्षा-आन्दोलन'को नवजीवन प्रदान किया। अपनी गिरफ्तारीके समय भी श्रीस्वामीजीने कहा कि 'अहिसात्मक और शान्तिपूर्ण ढंगसे 'गोरक्षा-आन्दोलन' चलाते रहना चाहिये।' उनके निर्देशानुसार आन्दोलन चलता रहा। प्रतिदिन हजारों गोभक्त बंदी बनाये जाते रहे। अनेक धर्मवीरोने अनशनव्रतमे प्राणोत्सर्ग किये। तिहाड़ जेलमे बंद स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजपर घातक प्रहार हुआ, जबकि वे गोभक्तोको भजनोपदेश कर रहे थे। इस प्राणघातक आक्रमणमे श्रीस्वामीजीका सिर फूट गया, पूरे शरीरपर नीले निशान पड गये तथा वे बेहोश हो गये। एक आँखकी ज्योति भी प्रायः जाती रही। यदि एक वीतराग महात्मा (स्वामी शिवानन्दजी महाराज) ने स्वामीजीके ऊपर लेटकर स्वय उन नम्बरी कैदियोद्वारा लोहेके डंडोसे किये गये प्रहारोको अपने शरीरपर सहन न कर लिया होता तो श्रीस्वामीजीका उसी समय वहीपर प्राणान्त हो जाता। इतना सब होनेपर भी सत-महात्माओ एव सद्गृहस्थ गोभक्तोके जेल जानेका क्रम बराबर चलता रहा, किंतु सरकारकी कुम्भकर्णी निद्रा नही टूटी।

पुरीके शंकराचार्यका अनशनव्रत

सरकारकी दमनकारी नीति और 'गोहत्या-बदी कानून' न बनानेकी हठधर्मीके विरोधमें गोवर्धनपीठाधीश्वर जगद्गुरु शकराचार्य स्वामी श्रीनिरजनदेवतीर्थजी महाराजने २० नवम्बर १९६६ को गोपाष्टमीके पावन पर्वपर अपना ७३ दिवसीय अनशनव्रत प्रारम्भ किया। उनके साथ ही सत प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी, गोभक्त शम्भूजी महाराज, स्वामी श्रीवीर रामचन्द्रजी महाराज आदि अनेक महापुरुषोंने गोरक्षार्थ अनशनव्रत किये। इन महात्माओकी सहानुभूतिमें देशके लाखो गोभक्त महापुरुषो तथा भक्तिमती माताओने भी गोरक्षाकी पुनीत भावनासे प्रेरित होकर उपवास रखे। गोरक्षा-सत्याग्रह बराबर चलता रहा। आन्दोलनमे एक लाखसे अधिक गोभक्तोने जेल-यात्राकी।

अन्ततोगत्वा सरकारने जनताकी इस प्रबल माँगके समक्ष झुकनेका नाटक रचा। गोहत्या-बदीकी मॉगको सिद्धान्ततः स्वीकार करनेकी घोषणा की गयी। आश्वासन दिया गया कि तीन महीनेके भीतर 'गोहत्या-बदी कानून' बना दिया जायगा। पुरीपीठके शकराचार्यने अपने अनशनव्रतके ७३ वे दिन अपनी इस कठोर तपस्याको विराम दिया। 'गोरक्षा-आन्दोलन' भी स्थगित कर दिया गया। सरकारने 'गोरक्षा-समिति' बना दी, जिससे छः महीनेमे अपनी रिपोर्ट देनेको कहा गया, किंतु यह सब सरकारका नाटक ही था जो उसने आन्दोलन तथा अनशन समाप्त करानेके लिये रचा था।

आज धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एव परम वीतराग स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज ब्रह्मलीन है। धर्मसघको स्थापित हुए ५३ वर्ष हो चुके है। इस सुदीर्घकालमे उक्त महान् विभूतियोके नेतृत्वमे धर्मसघने गोरक्षाके लिये केन्द्रीय कानून बनवानेके हेतु जितना प्रबल प्रयास किया है वह भारतीय इतिहासके पृष्ठोमें स्वर्णाक्षरोमे अङ्कित रहेगा। इसे समयकी विपरीतता ही कहा जायगा कि इतना प्रबल प्रयास होनेपर भी देशके मस्तकसे गोहत्याका काला कलक नहीं मिट सका। पर निराश होनेकी आवश्यकता नही है। श्रीमन्नारायणकी कृपासे एक दिन अवश्य ही गोहत्या-बदीका स्वप्न साकार होगा ओर भारतमाताके मस्तकसे गोहत्याका काला कलंक सदाके लिये मिट जायगा।

'........गोरक्षा इस देशके नर-नारी, सबके लिये बड़ा भारी कर्तव्य है। दूध-घीपर ही भारतवासियोंका जीवन निर्भर है। जबसे गाय-बैल बड़ी निष्ठुरतासे मारे जाने लगे है, तबसे हमे चिन्ता हुई है कि हमारे बच्चे कैसे जीयेंगे?'

—[illegible]

गोहत्या-बंदी-सत्याग्रह

(श्रीनरेन्द्रजी दुबे)

जिस प्रकार वैज्ञानिक मनीषियोंने सृष्टिके रहस्योकी खोजकर आधुनिक विज्ञानका विकास किया है, उसी प्रकार भारतीय आध्यात्मिक मनीषियोने जीवनके और सृष्टिके रहस्योकी खोजकर 'गो-विज्ञान'का विकास किया। वस्तुतः गो-विज्ञान सारी दुनियाको भारतकी अनुपम देन है। सारी दुनियामे गो-विज्ञानका प्रचार-प्रसार भारतसे हुआ। सस्कृतमे गायको 'गौ' कहते हैं तो अग्रेजीमे 'काऊ' जो गऊका ही अपभ्रश है और जापानीमे गायको 'ग्यू' कहते हैं जो 'गौ' का ही अपभ्रश है।

भारतीय मनीषियोने सम्पूर्ण गोवशको मानवके अस्तित्व, रक्षण, पोषण, विकास और सवर्धनके लिये अनिवार्य बना दिया था। इसीलिये भारतमे गो-दुग्धने जन-समाजको विशिष्ट शक्ति, बल एवं विशुद्ध बुद्धि प्रदान की। गोबर-गोमूत्रने खेतीको पोषण दिया, बैल-ऊर्जाने कृषि, भारवहन, परिवहन तथा ग्रामोद्योगोके लिये सम्पूर्ण टेक्नॉलोजी विकसित करनेमें मदद की और मृत चर्मने चर्मोद्योग-सहित अनेक हस्तोद्योगोका विकास किया। इस प्रकार गोधन भारतकी समृद्धिका आधार बन गया।

जब भारतमे इस्लामका प्रभाव बढना शुरू हुआ तब गोरक्षाका प्रश्न भी सामने आया। यद्यपि हजरत पैगम्बर मोहम्मद साहबने फरमाया है कि 'गायका दूध अमृत है और गोश्त बीमारी, इसलिये गोश्तसे बचो' तथापि ईदपर गाय-बैलकी कुर्बानी देनेकी प्रथा चल पडी, जिसके कारण हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य भी बढा। इसे मुस्लिम शासकोने विशेषतः सभी मुगल शासकोने समझा, तब उन्होने फरमान जारी करके गाय-बैलोका कतल बंद किया था। जम्मू-कश्मीरमे लगभग पाँच सौ वर्षोसे बडशाहके समयसे ही गाय-बैलका कतल बद है। इस्लाम-धर्मके उलेमाओने भी इसका समर्थन किया और कहा कि गाय-बैलोकी कुर्बानी फर्ज नहीं है।

दुर्भाग्यसे अंग्रेजी राज्यमे गाय-बैलका कतल शुरू हुआ, जिसने एक धधेका रूप ले लिया। अग्रेजी फौजोको गोमासकी पूर्तिके लिये गौ-बैलोका कतल प्रारम्भ हुआ और मुस्लिम कसाइयोको कतलके धधेपर लगाया गया। इससे एक ओर हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य बढा तो दूसरी ओर पश्चिमी सस्कृतिके यन्त्रीकृत जीवन-पद्धतिका प्रभाव बढ़ा। जैसे-जैसे विश्वभरमे औद्योगिक संस्कृतिका प्रचार-प्रसार बढ़ता गया, दुनियाभरमे साम्राज्यवादका भी विस्तार होता गया और अनेक देश गुलाम होते गये। भारत भी गुलाम वना और सतत वढते हुए यन्त्रीकरणने हमारे गाँवोको भी गरीव और गुलाम वना दिया। वस्तुतः हमारी गुलामीका वडा कारण गो-हत्या और ग्रामोद्योगोका विनाश था।

इसीलिये जव स्वराज्यका आन्दोलन शुरू हुआ तव हमारा मुख्य उद्देश्य 'गोहत्या-वंदी' था। सन् १८५७का सैनिक विद्रोह भी गोरक्षाके महान् उद्देश्यसे प्रेरित था। भारतके सभी धर्म-पुरुपो और राजनेताओने स्वतन्त्रता-संग्राममे गोरक्षाको मुख्य प्रश्न माना था और जनताको वचन दिया था कि 'स्वराज्य मिलते ही कानूनसे गोहत्या वंद कर दी जायगी।' महर्पि दयानन्दने 'गोकरुणानिधि' नामसे पुस्तक लिखी और 'गोहत्या-वंदी' के लिये लाखो हस्ताक्षर कराकर महारानी विक्टोरियाको भेजे थे। लोकमान्य तिलकने कहा था कि 'स्वराज्य मिलते ही कलमकी नोकसे भारतभरमे गोहत्या वद कर दी जायगी।' महात्मा गाँधीने कहा था—'भारतमें गाय वचेगी तो ही मनुष्य वचेगा। गाय आज तो मृत्युके किनारे खडी है। यह नष्ट हो गयी तो उसके साथ हम भी यानी हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जायगी। मेरा मतलव हमारी अहिंसा-प्रधान ग्रामीण सस्कृतिसे है।'

भारतमें वैज्ञानिक दृष्टिसे गोसेवा हो इसके लिये गाँधीजीने 'गोसेवा-संघ' स्थापित किया था और अपने निकटस्थ साथी श्रीजमनालालजी वजाजको इसका उत्तरदायित्व सौंपा था। 'गोसेवा-संघ'ने गोपालन, गोसंवर्धन, गोरक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रोंमें उल्लेखनीय कार्य किया। गाँधीजीने सन् १९४२के 'भारत छोडो' प्रस्तावमे भी गोसेवाका उल्लेख किया था। तत्कालीन मैसूर राज्यके प्रधान मन्त्री मिर्जा इस्माइलने राज्यमे 'गोहत्या-बदी' कानून बनानेके लिये गाँधीजीसे सलाह माँगी थी और गाँधीजीने उसको पूरा समर्थन दिया था। भारतके लगभग सभी देशी राज्योमे सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या' बद थी। केवल अंग्रेजी राज्यके क्षेत्रमे ही गोहत्या होती थी। इस प्रकार स्वराज्यके आन्दोलनके समयसे ही 'गोहत्या-बदी'के लिये राष्ट्र वचनवद्ध रहा है। खिलाफतके आन्दोलनमे भी मुस्लिम नेताओने 'गोहत्या-बदी'को अपना समर्थन दिया था। कांग्रेसने भी डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादकी अध्यक्षतामे एक समिति गठित की थी, जिसने

विस्तृत अध्ययन कर 'गोहत्या-बदी'के लिये अपनी रिपोर्ट दी थी।

स्वराज्य मिलनेके पश्चात् जब देशका संविधान बना तब संविधान-सभामे 'गोहत्या-बंदी'के प्रश्नपर विचार किया गया। सविधान-सभामे सभी धर्मो, जातियो, पक्षो और विचारोके लोग थे। सभीने सर्वसम्मतिसे सविधानकी धारा ४८मे इसे राज्योके नीति-निर्देशक सिद्धान्तोमे स्थान दिया।

सन् १९४७मे ही भारत सरकारने सर दातारसिंहकी अध्यक्षतामे पशु-सरक्षण एव संवर्धनके विशेषज्ञोकी एक समिति नियुक्त की थी। इस समितिने पूरे देशमे दो वर्षोंमे सम्पूर्ण 'गोहत्या-बदी'की सिफारिश की थी।

संविधानके निर्देशानुसार और समितिकी सिफारिशोको ध्यानमे रखकर उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और बिहारमें 'गोवंश-हत्या-बंदी' कानून बनाये गये, लेकिन अन्य राज्य सरकारोने इस दिशामे कोई पहल नहीं की। इसका एक कारण यह भी था कि यह विषय राज्यके नीति-निर्देशक सिद्धान्तोमे है, जिन्हे लागू करनेकी कोई समय-सीमा सविधानने निर्धारित नहीं की है और किसी राज्य सरकारको इन्हे लागू करनेके लिये कानूनन बाध्य नहीं किया जा सकता। अतः गोरक्षामे श्रद्धा रखनेवालोके सामने आन्दोलन करनेके अलावा कोई विकल्प नहीं रहा। सन् १९५१मे भारत सरकारने प्रथम पञ्चवर्षीय योजना बनायी और उसपर चर्चाके लिये विनोबाजीको निमन्त्रित किया। विनोबाजीने अत्यन्त आग्रहपूर्वक 'गोहत्या-बदी' कानून बनानेकी बात रखी।

सन् १९५२मे गोप्रेमी श्रीवीर रामचन्द्र शर्माने आमरण अनशन किया जो विनोबाजीके प्रयाससे छूटा। उस समय विनोबाजी बिहारमे भूदान-यज्ञके निमित्तसे पदयात्रा कर रहे थे। बिहारके तत्कालीन मुख्य मन्त्री श्रीकृष्णसिहजीने बिहारमे 'गोवंशहत्या-बंदी' का कानून बनाया।

पटना उच्च न्यायालयमे कसाइयोके प्रतिनिधियोने इस कानूनको चुनौती दी। लेकिन उनकी अपील खारिज कर दी गयी और बिहार सरकारद्वारा पारित कानूनको वैध मान्य किया गया। लेकिन कसाइयोने इस निर्णयके खिलाफ सर्वोच्च न्यायालयमे अपील की। सन् १९५८मे सर्वोच्च न्यायालयने सविधानके ४८वे अनुच्छेदकी व्याख्या करते हुए निम्नाङ्कित निर्णय दिया—

(अ) 'गायोका कतल नहीं किया जा सकता। अगर बूढ़ी, बेकाम गायोके कतलकी छूट दी जाय तो अच्छी गायोको भी नहीं बचाया जा सकता।' गायकी अवध्यताके लिये सर्वोच्च न्यायालयने आर्थिक कारणोका विश्लेषण प्रस्तुत किया।

(आ) बछड़े-बछड़ियोका भी कतल नहीं किया जा सकता।

(इ) जवान और काम करने लायक बैलो, साँडो और दूध देनेवाली भैंसोका भी कतल नहीं किया जा सकता।

(ई) बूढे, बेकाम बैलों, साँडो और बूढी भैंसोका कतल किया जा सकता है।

अन्तिम आशिक छूटका यह नतीजा आया कि अनेक प्रदेशोमे सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून अर्थहीन और निकम्मे हो गये तथा बूढे, बेकामके नामसे स्वस्थ, जवान और सर्वोत्तम बैलोका कतल शुरू हो गया। इस निर्णयका यह भी परिणाम हुआ कि उत्तरप्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेशमे जहाँ सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून बने थे, वहाँ उनमे सशोधन करके आशिक कानून बनाने पडे। यहाँतक कि मेसूरमे जहाँ गाँधीजीकी अनुमतिसे मिर्जा इस्माइलने सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी कानून' बनाया था, वहाँ भी फरक करना पडा। केवल जम्मू-कश्मीर राज्यमें धारा ३७०के कारण सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून लागू रहा। वहाँ गाय-बैलके कतलके लिये दस सालकी सजाका प्रावधान है।

सर्वोच्च न्यायालयका यह फैसला विनोबाजीसहित देशके सभी गोप्रेमियोको ठीक नहीं लगा।

सन् १९५९ मे राजस्थानमे विनोबाजीके सानिध्यमे विशेषज्ञोकी बैठक हुई। इसमे भारत सरकारके कृषि-पशुपालन-मन्त्री, सरकारी विशेषज्ञ और देशके प्रमुख गो-सेवक शरीक हुए थे। इसमे विनोबाजीने पुनः सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बदी' कानून बनानेकी माँग की थी।

सन् १९६२के चीनके हमलेके पश्चात् देशमे आर्थिक सकट शुरू हुआ। उस समय विदेशी मुद्रा कमानेके हेतु सुझाव देनेके लिये एक सरकारी समिति बनायी गयी। इस समितिने यह रिपोर्ट दी कि मास-निर्यातसे विदेशी मुद्रा कमायी जा सकती है। परतु तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्रीलालबहादुर शास्त्रीने इसे अस्वीकार कर दिया।

सन् १९६९ से [जो गाँधी-जन्म शताब्दी वर्ष भी था] भारतसे मांसका निर्यात शुरू हुआ। धीरे-धीरे विदेशी मुद्राका लोभ बढ़ता गया और देशमें कतलके लिये नये-नये आधुनिक कतलखाने बनने लगे। गाय-बैलका कतल जोरोंसे चलने लगा। दिन-प्रति-दिन यह पैमाना बढता ही गया।

सन् १९६६मे 'राष्ट्रिय स्वय सेवक संघ' ने देशभरमें

'गोहत्या-वदी' के लिये जनसमर्थन व्यक्त करनेके वास्ते हस्ताक्षर-अभियान चलाया और लगभग एक करोड हस्ताक्षर सरकारके सिपुर्द किये।

सन् १९६७मे पुरीके शकराचार्य श्रीनिरजनदेवतीर्थजीने आमरण उपवासकी घोषणा की और दिल्लीमे साधु-सतोने प्रदर्शन किया। उस समय विनोवाजीने पूज्य श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारको निम्नाङ्कित पत्र लिखा—

'भारतमे गोवशकी पूरी रक्षा हो इस उद्देश्यसे श्रीशकराचार्यजी और प्रभुदत्तजी महाव्रत कर रहे हैं, उससे मैं बहुत चिन्तित हूँ। उनके इस पवित्र उद्देश्यसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है। मृत्यु जब होती है, तभी होती है। खाता-पीता आदमी भी मर जाता है। ये लोग पवित्र उद्देश्यसे मरने जा रहे है। अतएव उनके मरनेकी चिन्ता नहीं है। मुझे दुःख सरकारके रवैयेपर है। मेरा प्रार्थनापर विश्वास है। मैं प्रार्थना कर रहा हूँ, देखे भगवान् कैसी सुबुद्धि देते है।'

श्रीजयप्रकाशजीने भी रास्ता निकालनेका प्रयास किया। श्रीशकराचार्यजीके उपवासके ७२वे दिन भारत सरकारने 'गोहत्या-वदी' लागू करनेकी पद्धतिपर विचार करनेके लिये विशेषज्ञोकी एक समिति बनायी और इस कमेटीकी सिफारिशे माननेका वचन दिया। तब श्रीशकराचार्यजीने अपना अनशन समाप्त किया।

माँग थी सम्पूर्ण गोवशकी हत्या बद करनेकी, परतु उक्त समितिने अपने अन्तरिम प्रतिवेदनमे लिखा कि सारे देशमे सर्वोच्च न्यायालयके निर्णयकी मर्यादामे तुरत गोरक्षा-कानून बनाना चाहिये। परंतु सरकारने अपने वचनका पालन नहीं किया और कमेटीकी इस अन्तरिम सिफारिशको भी लागू नहीं किया। यद्यपि भारत सरकारने ५-१-६७को तथा बादमे १२-३-७०को ससद्मे समितिकी सिफारिशे लागू करनेका अभिवाचन भी दोहराया था।

सन् १९७४ मे जव प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी विनोबाजीसे पवनार आश्रममे मिली, तब विनोबाजीने उनके समक्ष 'गोहत्या-वदी' की वात रखी।

विनोबाने उपवासकी घोषणा की—प्रतिज्ञा और दिये गये वचनसे सरकार न केवल पीछे हटती गयी, वरन् गोहत्याकी दिशामे आगे बढ़ती गयी। तव मई १९७६मे विनोवाजीने जाहिर किया कि 'देशके सभी राज्योमे सर्वोच्च न्यायालयके निर्णयकी मर्यादामे गोरक्षा-कानून नहीं बन जाते हैं तो वे स्वय ११ सितम्बर १९७६से आमरण उपवास करेगे।' तब प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधीने वचन दिया कि ३१ दिसम्बर १९७६ तक केरल तथा पश्चिम बगालको छोडकर सारे देशमे 'गोरक्षा-कानून' वना दिये जायँगे। केरल तथा बगालके लिये उन्होने एक वर्षकी अवधि माँगी। इन शब्दोपर विश्वास रखकर विनोवाजीने उपवासके निर्णयको रोका।

दिये गये वचनके अनुसार दो राज्योको छोड़कर सभी राज्योमे सर्वोच्च न्यायालयके निर्णयकी मर्यादामे गोरक्षा-कानून बना दिये गये।

परतु बगाल तथा केरलमे कानून न वननेसे सारे देशका गोधन इन प्रदेशोमे जाकर कटने लगा। दोनो प्रदेशोने अपना वचन नहीं निभाया और आशिक कानून भी नहीं वनाये। जव बहुत प्रयास करनेपर भी दोनो प्रदेशोंने कानून नहीं वनाये तव विनोवाजीने सन् १९७९मे जाहिर किया कि वे २२ अप्रैलसे आमरण उपवास करेगे।

भारत सरकारने वचन दिया—

२२ अप्रैल १९७९ से विनोवाजीका अनशन शुरू हुआ। यह अनशन पॉच दिन चला। पाँचवे दिन प्रधान मन्त्रीजीने संसद्मे घोषणा की कि 'संविधान सशोधन कर इस विषयको समवर्ती सूचीमे ले लिया जायगा ओर गोरक्षाका केन्द्रीय कानून बना दिया जायगा।'

इसपर विनोवाजीने अनशन छोडा। तदनुसार संसद्मे सविधान-सशोधन-विधेयक प्रस्तुत किया गया। परंतु उसी सत्रमें अविश्वास प्रस्तावके कारण सरकारमे परिवर्तन हो गया और लोकसभा भग हो जानेसे सशोधन-विधेयक भी पास नहीं हो सका।

सन् १९८० मे श्रीमती इन्दिरा गाधीके नेतृत्वमे कांग्रेस सरकार वनी। उनसे अनेको वार सम्पर्क किया गया और सरकारके वचनकी याद दिलायी, परंतु उन्होने पहल नहीं की।

अन्ततः सन् १९८० मे श्रीज्ञानचन्द्रजी महाराजने दिल्लीमे उपवास-शृखला चलायी और आमरण उपवास शुरू किया, तव सरकारने उन्हे जबरन् आहार देनेका उपक्रम किया। विनोवाजीकी सूचनाके अनुसार उन्होने अपना उपवास छोडा।

देवनार-गोरक्षा-सत्याग्रह

दिसम्बर १९८१मे पवनारमे 'अखिल भारतीय गोरक्षा-सम्मेलन' आयोजित किया गया था। उसमे देशभरसे गोप्रेमी और गोसेवक आये थे। सम्मेलनके पश्चात् गोरक्षा-कार्यमे लगे हुए कुछ सेवकोने विनोबाजीसे चर्चा की। चर्चाके उपरान्त १ जनवरी १९८२को विनोबाजीने लिखा—'किसी भी उमकी गाय

और बैल इस देशमे न कटे इस हेतु बंबईमे सत्याग्रह करो। इसका प्रारम्भ शान्ति सैनिक करे।'

विनोबाजीने अपने आश्रमके अन्तेवासी तथा भारतीय शान्ति-सेनाके सयोजक श्रीअच्युत भाई देशपाण्डेको देशके १७ सेवकोके साथ बबईमे सत्याग्रह करनेका आदेश दिया।

इस प्रकार ११जनवरी १९८२से बबईमे देवनार-स्थित एशियाके सबसे विशाल कतलखानेपर गोरक्षा-सत्याग्रह शुरू हुआ।

विनोबाजीके निर्देशानुसार यह सत्याग्रह सत्य, प्रेम, करुणाकी मर्यादामे अहिंसक, असाम्प्रदायिक और अराजनैतिक दृष्टिसे आज भी चलाया जा रहा है।

देवनार गोरक्षा-सत्याग्रहकी दो माँग है—

(१) कृषि-प्रधान भारतमे किसी भी उम्रके गाय-बैलके कतलपर कानूनी रोक लगायी जाय। इसके लिये केन्द्रीय कानून बने। तथा—

(२) भारतसे विदेशोमे भेजे जानेवाले सभी प्रकारके मासका निर्यात बद हो।

देवनार क़तलखाना

देवनार कतलखाना एशियाका सबसे बड़ा कतलखाना है। यह विशाल क्षेत्रमें फैला आधुनिक यन्त्रोसे सज्जित सार्वजनिक क्षेत्रका कतलखाना है। इसमे प्रतिदिन ग्यारह हजार प्राणी काटनेकी क्षमता है। इसमे आठ हजार भेड, बकरे, एक हजार सूअर, दो हजार बैल और भैस-भैंसे काटनेकी क्षमता है। इसका निर्माण चौथी पञ्चवर्षीय योजनाके समय हुआ। इसका सचालन वबई महानगरपालिका करती है। इसमे लगभग तीन हजार कर्मचारी काम करते है। कतलखानेके अहातेमे ही पशु-बाजार लगता है, जहॉ देशभरसे पशु लाये जाते हैं। मास-चमडेके व्यापारी उन्हे खरीदकर कतलखानेमे कटवा कर उनका मांस-चमड़ा विदेशोमे और देशमे बेचते हैं। कारखानेमे ही शीतीकरण वाहनोकी भी व्यवस्था है। हर रोज काटा हुआ ताजा मांस विशेष मालवाहक हवाई जहाजोसे विदेशोमे भी यहॉसे भेजा जाता है।

महाराष्ट्रमे 'पशु-परिरक्षण' कानून है। यहॉ पशु- चिकित्सक नियुक्त हैं। वे यह जॉचकर प्रमाणपत्र देते है कि अमुक पशु कतल-योग्य है। कानूनमे भारवहन, प्रजनन, खेती और दूधके अनुपयुक्त पशुओका ही कतल किया जा सकता है। परतु इस कानूनका परिपालन बिलकुल नहीं होता है। इसके कारण भ्रष्टाचार भी बहुत होता है।

जब देवनार कतलखाना वन रहा था, तब बंबईके नागरिकोने इसका कडा विरोध किया था। तव उन्हे यह वचन दिया गया था कि 'यहाँ केवल स्थानीय आपूर्तिके लिये ही कतल किया जायगा।' परंतु इस वचनका भी कभी पालन नहीं किया गया। यहाँतक कि बबई महानगरपालिकाने भी इसके लिये प्रस्ताव किया, परतु कानूनमे महापालिका कमिश्नरको, चुने हुए प्रतिनिधियोसे भी ज्यादा अधिकार प्राप्त है और सरकारके सीधे निर्देशोके कारण उन्होने महापालिकाका प्रस्ताव भी लागू नहीं किया। आयुक्त महोदयने यह जवाब दिया कि 'देवनार कतलखानेमे यदि निर्यातके लिये कतल नहीं होगा तो कतलखानेका घाटा बहुत बढ जायगा, इसलिये निर्यातके लिये कतल बद नहीं किया जा सकता।'

देवनार सत्याग्रहका स्वरूप—देवनार गोरक्षा-सत्याग्रह ११जनवरी १९८२से लगातार अखण्ड अनवरत चौबीसो घटे चल रहा है। इसके साथ ही बान्द्रा रेलवे स्टेशनपर और सहार हवाई अड्डेपर भी लबे अर्सेतक सत्याग्रह चला। सत्याग्रहका स्वरूप ऐसा है कि सख्याके अनुसार टोली कतलखानेके उस दरवाजेपर धरना देने जाती है जहाँसे बैल कतलखानेमे भेजे जाते है। यह टोली बैलोको कतलखानेमे ले जानेसे रोकती है। इससे कसाइयोके काममे बाधा पहुँचती है। उनकी सहायतामे पुलिस आकर सत्याग्रहियोको गिरफ्तार करती है और उन्हे पुलिस थानेमे ले जाया जाता है। तव बैल कतलखानेके भीतर भेज दिये जाते हैं।

जब महिला सत्याग्रहियोने सत्याग्रह किया तब महिला पुलिसने उन्हे गिरफ्तार किया।

कभी-कभी बबईके हजारो लोगोने एक साथ प्रदर्शन किया। देशभरसे आये सैकड़ो लोगोने एक साथ सत्याग्रह किया। बडी सख्यामे आये पुलिस बलने उन्हे गिरफ्तार किया।

इस प्रकार गत १२ वर्षोमे सारे देशसे लगभग तीन लाख लोगोने सत्याग्रहमे भाग लिया। सभी धर्मो, पथों, जातियो, भाषाओ और प्रान्तोके लोगोने सत्याग्रहमे भाग लिया।

सत्याग्रहकी उपलब्धियाँ—यद्यपि १२ वर्षके अखण्ड प्रयासके बावजूद 'गोहत्या-बंदी'के लिये केन्द्रीय कानून बनानेका मुख्य लक्ष्य प्राप्त नहीं हो सका है, तथापि सत्याग्रहकी अनेक उपलब्धियाँ हैं।

गत वर्षोमे अनेक राज्य सरकारोने अपने प्रदेशोंके गोरक्षा-सम्बन्धी कानूनोमे सुधार-सशोधन किये हैं। मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात और दिल्लीमे सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बंदी'

कानून बने हैं। उत्तरप्रदेशमे विधानसभामे कानून पारित हो गया है, परतु अभीतक उसे राष्ट्रपतिकी सम्मति नहीं मिली है, इसलिये कानून लागू नहीं हुआ है। इस समय देशके नौ राज्य—जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, हरियाणा, पजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, गुजरात तथा उत्तरप्रदेशमे सम्पूर्ण गोवशके कतल रोकनेके कानून बने है। मध्यप्रदेशके कानूनके विरोधमे कसाइयोने जबलपुर उच्च न्यायालयमे अपील की थी, परतु मध्यप्रदेश, उच्च न्यायालयने उनकी अपील खारिज कर सम्पूर्ण 'गोवश-हत्या-बंदी' कानूनको सविधान-सम्मत मान्य किया है। उच्च न्यायालयने 'अपने निर्णयमे कहा है कि बैलकी उपयोगिताके सम्बन्धमे पुरानी धारणामे बुनियादी अन्तर हो गया है। अब सेन्द्रिय खादका महत्त्व अत्यधिक बढ गया है, क्योकि यह सिद्ध हो गया है कि रासायनिक खादसे भूमिकी उर्वरा-शक्तिको क्षति पहुँचती है। रासायनिक कीटनाशकोसे भूमि, जल और खाद्य पदार्थ प्रदूषित होते हैं। गोबर-गोमूत्रसे प्राप्त खाद और कीटनाशकोका महत्त्व दिन-प्रति-दिन ध्यानमे आ रहा है और बैल अपने जीवनके आखिरी समयतक गोबर-गोमूत्र देते रहते है जो खेतीके लिये अनिवार्य है और भूमिकी उर्वरा-शक्ति कायम रखनेके लिये भी जरूरी है।

अब यह सिद्ध हो गया है कि देशसे गाय-बेलके मासका और कतली चमड़ेका निर्यात कर जितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है उससे कहीं ज्यादा विदेशी मुद्रा उन वस्तुओके आयातपर खर्च करनी पड रही है जो गाय-बैलोको जीवित रखकर कमायी जा सकती है।

गोरक्षा-सत्याग्रहने देशकी जनताको अहिंसक सत्याग्रहकी पद्धतिमे शिक्षित करनेका भी कार्य किया है।

वस्तुतः जितनी सज्जनता, शालीनता, सौम्यता और सातत्य समर्पणसे देवनारका गोरक्षा-सत्याग्रह चल रहा है वह बेमिसाल है। इसीका यह परिणाम है कि आज भी सभी सत्याग्रही इस बातपर दृढ है कि जवतक सारे देशमे 'गोवंश-हत्या-बदी' का कानून नहीं बनता यह सत्याग्रह चलता ही रहेगा। [प्रे०-गोरक्षा-सत्याग्रह-सचालन-समिति]



आधुनिक यान्त्रिक गोवध-केन्द्र—'अल-कबीर'

भगवान् श्रीरामचन्द्र और श्रीकृष्णचन्द्रसे लेकर अनेकानेक ऋषि-मुनियोकी परम्परामे होते हुए दीर्घकालके इतिहासमे महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, जगद्गुरु शकराचार्य और अनेक उच्चकोटिके धर्माचार्योंसे लेकर महामना पडित मदमोहनजी मालवीय, महात्मा गाँधी इत्यादि विभूतियोने हमारे भारतवर्षमे अवतार और जन्म लेकर गऊ-सेवा, गऊ-पालन, गऊ-सरक्षणका आदर्श स्थापित किया है। हमारे भारतमे दूधकी नदियाँ बहती थीं। अलाउद्दीन खिलजीके शासनकालमे एक रुपयेका डेढ मन मक्खन उपलब्ध होनेके आँकडे विदेशी पर्यटकोने गवेषणा करके लिखे हैं और घोषित किया है कि उस समयतक दूध, दही और मक्खन कहींपर भी देशमे बिका नहीं करता था। आज अपने स्वराज्य प्राप्त किये हुए स्वतन्त्र भारतमे इसकी क्या दुर्दशा है यह बात भी किसीसे छिपी नहीं है।

अतः इस विभीषिकासे समाजको बचानेके लिये हम सभी संगठित होकर प्रयास करे। हमारे देशकी आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक विभीषिकाको एक खुली चुनौती है, उसका एक दृश्य है 'अल-कबीर कत्लखाना' जिला मेडक, हैदराबाद।

दुबईके गुलाम मुहम्मद शेखने भारत सरकारकी ४०० करोड रुपयेकी सहायतासे इस 'अल-कबीर गऊ-वधशाला'की स्थापना की। इस 'अल-कबीर वधशाला'मे नित्य लगभग ६ हजार गाये बहुत ही निर्ममतापूर्वक काटी जाती हैं। काटनेसे पूर्व उन्हें ४ दिनतक भूखा रखकर उनपर गर्म पानी डाला जाता है जिससे कि उनका हीमोग्लोबिन पिघल जाय। इस प्रक्रियासे गऊका मास लाल हो जाता है जिसकी कीमत २५० रुपये प्रतिकिलो हो जाती है, जबकि सफेद मास १२० रुपये प्रतिकिलोके हिसाबसे बिकता है। अधिक मुनाफा कमानेके लिये गायोको इतनी निर्ममतासे मारा जाता है और 'अल-कबीर'के मालिक एक गायसे हजारो रुपये कमाई कर लेते हैं। अभी यह विभीषिका और अधिक बढ सकनेकी बात है। २१ जून, १९९४ के एक दैनिक समाचार-पत्रमे यह भी छपा है कि ऐसी ७ और 'गऊ-वधशालाओ'की स्थापनाका प्रस्ताव है।

अल-कबीर क़त्लखानेका एक दृश्य

(१) इस आधुनिक यान्त्रिक-क़त्लखानेमे ६ हजार गाये प्रतिदिन बलि होती है।

(२) २० हजार टन मास-निर्यातका अनुबन्ध ईरान और कुवैतसे हुआ है।

(३) १०,००० लीटर खून प्रतिदिन एकत्रित होता है, जिससे प्लाज्मा, प्रोटीन्स, हीमोग्लोबिन टॉनिक बनता है।

(४) ३०० एकड भूमिमें फैला हुआ है, यह कत्लखाना।

(५) एक गायपर ५०,००० रु० का लाभ होता है, इस कत्लखानेके मालिकोको (चमड़ा, हड्डी, मांस, खून और चर्बीके विक्रयसे)।

(६) मासका निर्यात विदेशी मुद्रा प्राप्त करनेके लिये किया जाता है।

पशु-वध करनेकी विधि

स्वस्थ गोवशको लाये गये ट्रकोसे बाहर लाया जाता है। कत्लगाहमे एक हजार पशु रह सके, ऐसे मौतके कुएँ बने हैं। वहाँ ४ (चार) दिनोतक पशुओको बिना चारे-पानीके रखा जाता है। इसके बाद पशु अशक्त होकर गिर जाता है। गिरनेपर पशुको घसीटकर मशीनोके पास ले जाया जाता है। उसे पीट-पीटकर खड़ा किया जाता है। मशीनकी एक पुली पशुके पिछले पैरको जकड लेती है। पश्चात् २०० डिग्री सेटीग्रेटका गरम पानी ५ मिनट तक गिराया जाता है। मशीनकी पुली पिछले पैरको ऊपर उठाती है। पशु एक पैरपर उल्टा लटका दिया जाता है। फिर पशुकी आधी गर्दन काट दी जाती है ताकि खून बाहर आ जाय और पशु मरे नहीं। खूनकी धाराएँ बह निकलती हैं। तत्काल पशुके पेटमें एक छेद कर हवा भरी जाती है, जिससे पशु फूल जाता है। तत्काल चमडा उतारनेका कार्य होता है। पशु अभी मरा नहीं, मरनेसे पशुका चमड़ा मोटा हो जाता है। अत: उसकी कीमत घट जाती है। जीवित पशुका चमडा पतला और कोमल होनेसे अधिक मूल्यका होता है। चमडा उतरते ही पशुके चार टुकडे किये जाते हैं—गर्दन, पैर, धड और हड्डियाँ।

तत्काल मासके डिब्बे बनकर कारखानेसे बाहर आने प्रारम्भ हो जाते हैं। बछडोका मास तथा चमडा ज्यादा कीमती होता है।

गर्भवती पशु अधिक लाभदायक होते हैं, कसाइयोके लिये।

दुबईमे अमेरिकन मांस १५ रियाल यानी लगभग १२०(एक सौ बीस) रुपये प्रतिकिलो और भारतीय मास ३० से ३२ रियाल यानी लगभग २४० रु० प्रतिकिलो बिकता है।

अमेरिकन मास सफेद होता है और भारतीय मास लाल, क्योकि इसमे हीमोग्लोबीन घुला होनेसे अधिक मूल्यवान् है।

विचारणीय विन्दु

१-आज देशमे ३,६०० कत्लखाने हैं, जिसमे १० बडे यान्त्रिक (मशीनीयुक्त) कत्लखाने हैं, जो प्रतिदिन २, ५०,००० (दो लाख पचास हजार) पशु-धन काटते हैं।

२-५०,००० (पचास हजार) गोवश हैं, जो इसमे कटता है, प्रतिदिन।

३-सन् १९८१ मे लगभग ४०० टन मास अवधानिक रूपसे विदेशोमे जाता था। १९९१-९२ से ६० हजार टन मास प्रतिवर्ष वैधानिक तौरपर निर्यात होता है।

४-सन् १९५१ मे १००० व्यक्तियोपर ४२६ पशु थे (चालीस वर्ष बाद) सन् १९९१ मे १००० व्यक्तियोपर २१६ पशु रह गये (दो वर्ष पश्चात्) सन् १९९३ मे १००० व्यक्तियोपर १७६ पशु रह गये। यही क्रम रहा तो सन् २००० मे भारत पशुविहीन विशेषकर गोधन-विहीन हो जायगा।

पशु-धनके नष्ट होनेसे देशकी आर्थिक स्थितिपर प्रभाव

१-दूधके पाउडरका आयात १९८४ मे ३,८७९ टन था।

२-रासायनिक खादका आयात १९९१-९२ मे २३,५२० टन रहा।

३-भारत सरकारको रासायनिक खादपर आयात तथा निर्यातमे १९९१-९२मे ६२, १९० मिलियन रुपये सब्सिडी देनी पडी है। अर्थात् (२ अरब ३९ करोड ३९ लाख) रासायनिक खादसे भूमिकी ऊर्जा निरन्तर कम होती जा रही है।

४-ऊनका आयात सन् १९९१-९२मे २३,९३७ लाख रुपयेका था।

एक निवेदन

बबईके पास कुख्यात देवनारके महान् गोवध-केन्द्रमे आचार्य विनोबाका चलाया गया सत्याग्रह अब भी चल रहा है।

महात्मा गाँधीजी और आचार्य विनोबाभावेद्वारा सस्थापित 'अखिल भारत कृषि-गो-सेवासघ गोपुरी वर्धा'की बरेली शाखा-द्वारा सुनियोजित 'गऊ-ग्रास-योजना'-अनुसार अपनी रुचि और श्रद्धाके अनुसार कम-से-कम १० पैसे या अधिक प्रतिव्यक्ति प्रतिदिनके हिसावसे कसाइयोसे बचायी गयी गायों—गोधनके चारेकी सेवाके लिये इस गोरक्षाके महायज्ञमें आप भी तन-मन-धनसे सहयोग करे और पुण्यके भागी बने।

[प्रेषक—श्रीरामकुमारजी खण्डेलवाल]

गोवंशपर अत्याचार—जिम्मेदार कौन?

(श्रीकेशरीचंदजी मेहता)

भारतीय सविधानकी धारा ४८ मे गोवशको सरक्षण दिया गया है। परतु सरकार स्वय सविधानका उल्लघन कर रही है। जब भारत गुलामीकी जंजीरोमे जकड़ा हुआ था, तब लोकमान्य तिलकने कहा कि 'भारत स्वतन्त्र होते ही कलमकी एक नोकसे गो-हत्या बंद करवा दी जायगी।' महात्मा गाँधी कहते थे—'गोहत्याको देखकर मुझे ऐसा लगता है कि मेरी आत्माकी हत्या की जा रही है।' उन महान् पुरुषोके सपने आजतक पूर्ण नहीं हो पाये और आज सपनोके पूरा होनेकी बात तो दूर रही उलटे प्रतिवर्ष नये-नये कत्लखाने खुलवाकर गोवशको कटवाकर उसके चमडे तथा मासका निर्यात हो रहा है। आज देशमे हिसाका ताण्डव नृत्य चल रहा है। जनताकी ओरसे गोवंश-रक्षा-हेतु अनशन, मोर्चे, सम्मेलन आये दिन होते रहते हैं, परतु कोई सुननेवाला नहीं। सरकारी नीतिके कारण कत्लखानोमे और घरोमें गोवंशकी अवैध कत्ल बहुत बडी मात्रामे हो रही है।

ससारकी कोई भी डिक्शनरी देखी जा सकती है जहाँ गायकी परिभाषा 'गाय' तथा उसके वशको एक ही माना गया है, किंतु दुर्भाग्यसे भारतमे गायकी परिभाषामे गाय तथा गोवंशको अलग-अलग कर दिया गया है। किसी भी प्राणीके वधपर प्रतिबन्ध लगाया जाता है तो नर तथा मादा प्रतिबन्धित हो जाते हैं, जैसे शेरपर प्रतिबन्ध लगाया तो शेरनीपर प्रतिबन्ध हो ही जाता है। मोरपर प्रतिबन्ध लगाया तो मोरनी प्रतिबन्धित हो ही जाती है, किंतु भारतके अलग-अलग राज्योने गायकी परिभाषा अलग-अलग प्रकारसे की है, जैसे राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल-प्रदेश, पंजाब, हरियाणा—इन प्रदेशोमे बहुत पूर्व ही गायको गोवंश-सहित माना है और उनके कानूनोमे गायके साथ गोवंशपर कानूनी बदी लगायी हुई है। अभी-अभी मध्यप्रदेश तथा गुजरात राज्यने भी अपने कानूनमे सशोधन करके गोवध-प्रतिबन्ध किया है। इन राज्योने गौकी परिभाषामे गोवंशको भी माना है, किंतु महाराष्ट्रमे बिलकुल इसके विपरीत है। महाराष्ट्रमे गायके कतलपर पूर्णतया बदी है, परतु गायके बछड़ेको काटनेपर छूट रखी है और बैल तो सरेआम पूरे प्रदेशमे कतलखानोमें तथा घरोमे काटे जा रहे हैं। महाराष्ट्र सरकारने बछड़ेकी व्याख्या इस प्रकारकी है—'बछडा' एक वर्ष-उम्रतक बछडा माना जाता है, उसके पश्चात् उसे बैलोकी श्रेणीमें माना गया है।' ताकि बैलोके साथ बछड़ेको भी आसानीसे काटा जा सके और उसके मुलायम चमड़े तथा मांससे भरपूर नफा कमाया जा सके। इस प्रकार देशमे क़तलखानोका जाल बिछा दिया गया है।

इस अवैध धधेद्वारा लोग लाखो जीवोको कटवाकर करोडो रुपया कमा रहे हैं, जिससे देशका पशुधन बहुत तेजीसे घटता जा रहा है और गोवशकी संख्या दिनोदिन घटती जा रही है, किंतु सम्बन्धित अधिकारी यह सब देखकर भी अनदेखी कर रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर, हिमाचलप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश तथा गुजरात—इन सात राज्योंने गायकी व्याख्यामें गाय, बैल, बछडे, बछड़ी, साँड़ यानी गायके वशको मानकर उनकी कतलपर रोक लगायी है, किंतु अन्य राज्योमे राज्य सरकारोद्वारा गोहत्या-सम्बन्धी अलग-अलग नियम बनाये गये हैं—

किन्हीं राज्योमे गायकी उम्र १० से १४ वर्षसे ऊपर हो जानेपर काटनेका प्रावधान रखा है। कहीं अनुपयोगी गायको काटनेका प्रावधान रखा है और कहीं असाधारण बीमारी हो जानेपर उसे मार डालनेका प्रावधान भी रखा है, तमिलनाडु, उडीसा, केरल, वेस्ट बगाल, इसके अलावा अरुणाचल प्रदेश, आसाम, गोवा, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा—इन राज्योमे गायोका वध खुले-आम होता है।

जैसा कानून बना हो उसकी परिपालना करवानेकी जिम्मेवारी सरकारपर है, उस कानूनके अन्तर्गत जो भी मान्य किया गया हो, तदनुसार उन प्राणियोके प्राण बचानेका कार्य सरकारका है, परतु किसी भी प्रदेशकी सरकार इस कायदेका पालन करवा रही हो ऐसा दिखायी नहीं देता, कारण अवैध व्यापार इतना अधिक बढ चुका है कि या तो उसे रोकनेकी शक्ति सरकारके पास है ही नहीं अथवा सरकार अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिये अनदेखी करके मौन स्वीकृति दे रही है। उदाहरणके लिये कुछ राज्योकी स्थितिको वर्णित किया जा रहा है—

राजस्थान प्रदेशमे १९५० से 'दि राजस्थान प्रिजर्वेशन ऑफ सरटन एनिमल एक्ट १९५०' बना हुआ है, इस एक्टके

अनुसार राजस्थान प्रदेशमे सम्पूर्ण गोवंश-हत्या-बंदी कानून लागू है, परतु इस एक्टका भंग हो ही रहा है। कुछ माह-पूर्व राजस्थानके सरहदी गॉवोमे जिंदा गायोकी खाल उतार ली गयी, वह भी १०—१२ गायकी नहीं एक साथ १६९ गायोकी। शक्तिशाली असामाजिक तत्त्वोपर सरकारका नियन्त्रण नहीं है। राजस्थानमे पशु-मेले लगते हैं। उन मेलोमे एक-एक मेलेमे ५०—६० लाखसे ज्यादा कीमतके पशुओकी खरीद-विक्री होती है। जो पशु विक्री होते हैं, उन्हे अधिकाश दूसरे राज्योके पशु-व्यापारी खरीदते हैं और उन मवेशियोको खेतीके नामपर पशु-चिकित्सा-अधिकारी प्रमाण-पत्र दे देता है। ये पशु-व्यापारी उन मवेशियोको ट्रकोसे तथा ट्रेनोसे दूसरे प्रदेशोमे बुक करवाकर कतलवाले व्यापारियोको दे देते हैं। उदाहरणके तौरपर अजमेर, जयपुर, स्वरूपगंज—इन रेलवे स्टेशनोंसे निकलकर खेतीके नामपर खरीदे गये ये बैल देवनार-कत्लखानेमे लाखोकी सख्यामे जाकर कटते रहे। इसी प्रकार पशु-मेलोसे ट्रकोमे ठूँसकर बैल-वछडे-गाय बाहरके प्रदेशोमे आज भी जा रहे हैं। राजस्थान प्रदेशसे आज भी गोवंशको दूसरे प्रदेशोमे ले जाकर कसाइयोको बेचा जाता है, जिसका जीता-जागता प्रमाण है, राजस्थानका गोवश प्रतिदिन नीचम मध्यप्रदेशमे जाकर पशुहाटमे विकता है, जबकि प्रदेशसे बाहर ले जानेपर प्रतिबन्ध है, उसके लिये कलेक्टरकी स्वीकृति चाहिये। ये मवेशी राजस्थानी बनजारे ग्रामीण भागसे तथा अकालग्रस्त भागसे रास्तेमे भटकनेवाले गोवशको झुडके रूपमे एकत्रित कर अन्य प्रान्तोमे ले जाते है। 'जुने रेकार्ड'के अनुसार १९८०-८१-८२ के वर्षोंमे ये राजस्थानी बनजारे राजस्थानसे प्रतिदिन १,५००—२,००० गायोको धुलिया महाराष्ट्रकी कृषि-उत्पन्न बाजार-समितिमे कटू गाईके बाजारमे लाकर बेचा करते थे, उसी तरह ये बनजारे गुजरातके बडोदा, भरूच, दाहोद, गोधरा जहॉ प्रतिदिन गाये काटी जाती थीं, वहाँ झुड-के-झुंड लाकर बेच जाते थे, इन बनजारोने लाखो गायोंको कसाइयोके हाथ पहुँचाया।

महाराष्ट्रमे मालेगाँव, धुलिया, औरगाबाद, जालना, परभणी, उस्मानाबाद, नॉदेड़, अकोला, हिवरखेड, परतवाडा, अमरावती, नागपुर आदि स्थानोपर गोवशकी खरीद केवल कतल-हेतु होती आयी है। जिसपर किसीका नियन्त्रण नहीं।

प्राणियोकी रक्षा-हेतु कानून बने हुए हैं। परतु कानूनकी परिपालना करनेवाले गोभक्त जबतक घरको छोड़कर वाहर नहीं आयेगे, समय नहीं देगे तो गायकी रक्षा कैसे होगी? आपको यदि गाये वध-हेतु ले जाते हुए मिले और आप उन्हे कसाईके हाथसे वचाना चाहते हो तो उसके लिये आपको जिस राज्यमे गोवंशको वचाना हो उस स्टेटके कानूनको समझना होगा।

सेंट्रल गवर्नमेंटद्वारा पारित एक कानून है, जिसे 'प्राणी-क्रूरता-निवारण अधिनियम १९६०' कहते हैं। कसाइयोंसे जप्त करनेके पश्चात् गोधनको उनके रख-रखाव-हेतु आपको किसी नजदीकी गोसदन-गोशाला या पिजरापोलके अधीन कर देना चाहिये। आवश्यकतानुसार चारे-पानीकी व्यवस्था वह सस्था करे। यदि सस्था छोटी हो तो आर्थिक मददकी जरूरत पडे तो दूसरे कई ट्रस्ट, संस्था, व्यक्ति हैं जो जरूरतमदोको मदद करते हैं।

एक बार १९९० मे मैं मुवई गया हुआ था। उसी दिन मुवईके स्व० बदरीनारायणजी गाडोदियाका रातको फोन आया। वे वयोवृद्ध सर्वोदयी कार्यकर्ता थे तथा उन्होने दिल्लीमें 'गोवश-हत्या-बदी-हेतु' ६८ दिन उपवास किया था, मैंने उनसे पूछा—क्या बात है? उन्होने कहा कि वसई रोड रेलवे स्टेशनपर बैलोकी भरी हुई बैगनोकी पूरी ट्रेन आयी है। वे बैल देवनार कत्लखानेपर कटने चले जायँगे। उनको रोकने-हेतु कोई कानूनी प्रयास करना चाहिये। मुझे मालेगाँव जाना था, परतु इस महत्त्वपूर्ण कार्यको देखकर मैं रात्रिको मुवईमे रुक गया और दूसरे दिन प्रातःकाल वसई रोड स्टेशनपर पहुँचा तो वे भी वहाँ आ गये थे। स्टेशन-मास्टरसे पूछताछ करनेपर पता चला कि ये सब बैल राजस्थानसे आये हैं। मुझे मालूम था कि राजस्थानसे बैल कत्ल-हेतु बाहर नहीं जा सकते। तलाश करनेपर पता चला कि विल्टीपर 'एग्रीकल्चर परपज्' अर्थात् खेतीके लिये बैल मुबई बुक किये गये हैं, ऐसा लिखा है। जब-कि मुबईमे खेती होती नहीं तथा वसई रोडपर 'कृषि-उत्पन्न-बाजार-समिति' भी नहीं, जहाँ उनकी विक्री होती। जहाँ मुबईमे मनुष्यको खडे रहनेके लिये जगह नहीं मिलती, वहाँ हजारो बैलोको कहाँ खडा करेगे। इस प्रकार उनका उद्देश्य और उनकी नीति स्पष्ट थी कि बैलोको ट्रेनसे उतारना और ट्रकमे भरकर देवनार-कत्लखाना ले जाना। यह कोई प्रथम बारका मामला नहीं था। वहाँ इसी प्रकार प्रतिवर्ष हजारों बैल आते थे और कत्लखाने जाते थे। क्योंकि देवनारमे प्रतिदिन ४०० से ज्यादा बैल काटे जाते हैं जो प्रायः राजस्थान और गुजरातसे ही आते हैं। गुजरात राज्यसे भी कटने-हेतु बैल नहीं लाये जा सकते परतु आज भी गुजरात राज्यसे चोरी-छिपे ट्रकोंमे प्रतिदिन

३००-४०० बैल कटने-हेतु देवनार-कत्लखाने आ ही जाते हैं। अतः रेलवेके पुलिस-अधीक्षक, निरीक्षकसे मिलकर वसई रोड पुलिस-स्टेशनपर लिखित शिकायत की गयी तथा उन बैलोको जप्त करनेका निर्णय लिया गया। एक ट्रेन आयी उसमेसे कुछ बैल रातको ही देवनार चले गये, उसमे १५५ बैल जप्त किये गये। दूसरी ट्रेन आयी, उसमे ६१६ बैल जप्त किये गये, इस प्रकार ७७१ बैल कोर्टद्वारा 'अ० भा० कृ० गोसेवा-संघ'के सुपुर्द किये गये। तीसरी ट्रेनके बैल अहमदाबाद फोन करके उनको वहीं रोकनेको कहा गया, क्योकि इतने बैल रखनेके लिये स्थान आदिकी व्यवस्था चाहिये थी। अतः अहमदाबादके गोप्रेमियोने तीसरी ट्रेनके बैल वहीं उतार लिये। इस प्रकार १,००० से ज्यादा बैलोको अभयदान मिला। उन बैलोको ट्रेनसे उतारनेके लिये वसई रोडपर बड़ी समस्या उठ खडी हुई। बैल बडी साइजके वजन ५०० के० जी० के थे। उनके सींग बहुत बडे-बडे थे और उनका शरीर भी विशाल था—खूब लबे-चौडे। देखते ही भय लगता था। ऐसे बैलोको ट्रेनसे कैसे उतारा जाय? कहीं मार दे तो जान भी जा सकती है, किंतु ऐसी स्थितिमे 'वर्धमान-सस्कृति-धाम' के ५० वीर सैनिकोने इन सारे बैलोको वैगनोसे बाहर निकाला, उन सबको पानी पिलाया। चारा-भूसी खिलाया। 'वर्धमान-जीवदया-केद्र लुणी' तथा 'वीरमडल' के लोगोने बादमे उनको बाजरीकी रोटी, गुड तथा चारा आदि देकर उनकी व्यवस्था की। कई लोगोने सहकार्य किया। इस तरह यह प्राणि-रक्षाका सुन्दर कार्य सम्पन्न हुआ।

भारतके कई प्रदेशोमे 'गोवश-हत्यावदी' का कानून तो बनाया गया है, परतु उस कानूनकी परिपालना कभी नहीं होनेसे कानूनमे क्या कमियाँ हैं, किसीको पता ही नही। सबसे बडी कमी यह है कि किसी भी राज्यने इस कानूनके अन्तर्गत 'जबतक केस चलेगा तवतक कसाईसे जप्त गोवशको कहाँ रखा जाय, उसके चारे-पानीकी व्यवस्था कौन करेगा, खर्चा कौन देगा आदि'—इन बातोकी कानूनमें कोई व्यवस्था नहीं है। इस कारणसे जप्त पशु ४५१ सीआरपीसीके अनुसार उस व्यक्तिको देना चाहिये जिससे जप्त किया गया हो, क्योकि मालिक वही है, खरीदीकी पावती उसके नामकी है। वह सँभालनेके लिये अर्जी देता है और कोर्टमे लिखकर भी देता है कि जब भी कोर्ट कहेगा, मैं हाजिर करूँगा। ऐसी स्थितिमे यदि जप्त पशु उसके ताबेमे चले जायँ तो कसाई उसको जिंदा रखकर क्यो चारा खिलवायेगा। जानवरकी कीमत २००-४००- ५०० रुपये और एक जानवरका खर्च सालभरका ३,००० से भी अधिक है तो कौन पागल है जो खर्च करेगा। उसके ताबेमें जाते ही वह उसे रातको काट डालेगा। एक-एक केसके हल होनेमे कई साल लग जाते हैं, फिर ५—७ साल बाद कौन-सा जानवर था क्या पता चलेगा?

इस कानूनके विरोधमें बडे प्रयत्नोंके बाद कई बार सेशन कोर्ट, कई बार उच्च न्यायालय, कई बार सर्वोच्च न्यायालय जाकर इस ४५१ सीआरपी-सेक्सनपर प्राणीको उसके मालिकको न दिया जाय और गोरक्षण-संस्था सेवाभावी संस्थाके पास रखा जाय—ऐसा डायरेक्शन प्राप्त किया गया। परिणामतः एक लाखसे ज्यादा गोवंशको हत्यारोसे छुडाया गया—बचाया गया। इन कानूनोमे जो त्रुटियाँ हैं उनको निकालने-हेतु तथा नये सशोधन करवाने-हेतु विशेष प्रयत्न करनेकी आवश्यकता हैं।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात राज्यमें 'गोवंश-हत्या-बंदी' कानून तो बन चुके हैं, परतु उपर्युक्त कस्टडी बावत अभीतक सशोधन नहीं होनेसे परेशानियाँ उठानी पड़ रही हें। इसी प्रकार महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान प्रदेशके एक्टमे अभीतक यह व्यवस्था भी नहीं हुई कि अपराध करते समय या करनेकी हालतमे किसीको पशुके साथमे पकड़ ले तो उसके साबित करनेकी जिम्मेवारी सरकारपर है, अपराधीपर नहीं। यह साबित सरकारको करना है कि ये पशु कत्लको ले जाये जा रहे थे। ऐसा साबित करना बहुत ही कठिन हे; क्योंकि पशु रास्तेमें जप्त किये जाते हैं। मध्यप्रदेश तथा पंजाब सरकारने यह साबित करनेकी जिम्मेवारी अपराधीगणपर रखी है, उसको साबित करना है कि 'वह उस पशुको कत्ल-हेतु नहीं ले जा रहा था।'

कानूनमे यह कहीं व्यवस्था नहीं है कि केसके निर्णयतक जिसमे चार-चार, पाँच-पाँच वर्ष कोर्टोंमें लग जाते हैं, उस समय चारेका खर्च करनेकी जिम्मेवारी किसपर है? गोशाला, पिंजरापोलवाले कोर्टसे जिन जानवरोंको ताबेमे लेते हैं, उस दिनसे गोशालावाले चारे-पानीकी व्यवस्था करते हैं। पशु-मालिक एक दिन भी चारा नहीं डलवाता, जबकि पशु-मालिक स्वयको पशुका मालिक बतलाकर कोर्टमे लड़ता है। इसलिये चारेके खर्चेकी जिम्मेवारी उस समयतक पशु-मालिकपर होनी

चाहिये। इस प्रकारका जजमेंट उच्च न्यायालय मुबई, हैदराबादसे मिला हुआ है। एक केसमे सर्वोच्च न्यायालयतक जाना पडा। वह केस अभी भी सुप्रिम कोर्टमें लंबित हैं। गोशाला, पिंजरापोलवाले पशुओका रक्षण करते हैं, वे उसके विश्वस्त हैं, मालिक नहीं। कानूनमें पैसे किससे लेना है? इसकी कोई व्यवस्था नहीं है, इसलिये संशोधन करना चाहिये। अभीतक गोवंशकी रक्षा इस आधारपर की गयी कि जबतक गोवश गोशाला तथा पिंजरापोलमे हैं उनके चारे-पानीका खर्चा संस्था करती रहे, परंतु कभी संयोगसे किसी कोर्टने पशु वापस देनेका आर्डर कर दिया तो चारेका खर्च वसूल करनेका उस संस्थाको पूर्ण अधिकार है। इसलिये अभीतक एक लाखसे ज्यादा गोवंशको इसी आधारपर कतलसे बचा लिया गया और पशु वापस अपराधीके हाथमे नहीं गये।

गाय, बैल बचाने हैं तो उसके दो ही रास्ते हैं—एक तो किसानोको गाय-बैलसे प्राप्त होनेवाले गोबर, गोमूत्र एवं गोबर-खादकी उपयोगिता बतानी होगी और रासायनिक खादके दुष्परिणाम बतलाने होंगे। दूसरा रास्ता यह है कि जहाँ-कहीं गोवंशकी खरीदी-विक्री होकर गोवंश कतल-हेतु ले जाये जाते हो चाहे पैदल हो या ट्रकमे हो या रेलमें हो उनको कानूनके अन्तर्गत रोकनेका काम करनेवाले व्यक्तियोकी गाँव-गाँवमे समितियाँ बनानी होगी। इस ओर ध्यान दिये बिना गोवश कतलसे नहीं बच सकेगा। इन दोनो माध्यमोका प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। कर्मठ व्यक्तियोकी जरूरत है, जिसे कानूनी जानकारी देकर प्रशिक्षित किया जा सके, तभी गोवंशकी रक्षा हो सकेगी। अन्यथा दिन दुगुनी रात चौगुनी गोवंशकी कतल बढ़ती ही रहेगी।

भारतके इतिहासमे १९५८ का वर्ष गोवंशके लिये काला दिन माना जायगा, जब सुप्रिम कोर्टने बूढ़े-अनुपयोगी बैलोकी कत्लको मान्यता दे दी। परिणामत: तबसे बूढ़े बैलोंकी जगह अच्छे सुदृढ बैल भी कटने लगे तथा गाये भी कटने लगीं और देशका गोवंश बडी मात्रामे कत्लखाने पहुँचने लगा।

वर्तमान भारतमे अधिकृत ३,६०० कत्लखाने सरकारकी स्वीकृतिसे खुल चुके हैं और प्रतिदिन उन कत्लखानोमे ४०,००० से ५०,००० के लगभग गोवश कट रहा है। भारतके आजादीके समय प्रति एक हजार व्यक्तिके पीछे ४५३ गोवंश और भैंस-वश भारतमे था जो घटते-घटते अभी २३० के भी लगभग नहीं रहा। जबकि दुनियाके अलग-अलग देशोमे एक हजार व्यक्तिके पीछे अर्जेटीनामे २०८९, आस्ट्रेलियामे १,३६५, कोलम्बियामे ९१९, ब्राजीलमे ७२६ है। इससे स्पष्ट हैं कि भारत-जैसा कृषि-प्रधान देश आज पशुधनमें सबसे पीछे है।

आज गोवशकी रक्षा करना अति कठिनतम कार्य बन गया है। सरकार कत्लखानोके निर्माणमे प्रोत्साहन दे रही है, मास तथा चमडेके निर्यातमे वृद्धि कर रही है तो गोवश कैसे बचेगा? इस देशमे घी-दूध-दहीकी नदियाँ बहती थीं, जहाँ दूध बेचना पूत बेचनेके समान माना जाता था, वहीं आज पशुओके खून तथा मासकी नदियोमे बाढ आ रही हैं।

दुग्ध-वृद्धिके नामपर देशकी उन्नत जातिकी गायोको सकरित कर उस जातिको नष्ट करनेका अभियान जोरोपर है। पश्चिमी देशोसे साँडोका वीर्य मँगवाकर गायोको गर्भ धारण करवाया जा रहा है। देशमे साँड़ कहाँसे तैयार होगे जबकि छोटे-छोटे बछडोको ही काट डाला जाता है। गाय तथा साँडके नैसर्गिक-मिलनकी योजना ही नष्ट की जा रही है। गायोके साथ जो अन्याय हो रहा है, वह देशकी बरबादीका कारण बनेगा। इसे इतिहास कभी माफ नहीं करेगा। वर्तमान नीतियोको देखते हुए लगता है कि सरकारने 'पशुरक्षण-एक्ट' मानो पशुवधको प्रोत्साहन-हेतु ही बनाया है। बगालमे बकरीदके अवसरपर तीन दिनके लिये हर उम्रकी गाय, बछडे, बल खुलेआम धर्मके नामपर काटे जाते हैं, उसपर प्रतिबन्ध लगे इसलिये सुप्रिम कोर्टमें केस १२ वर्षसे लम्बित पड़े हैं ओर गाये बे-रोक-टोक काटी जा रही हैं।

गोवंशको रेलवेद्वारा कलकत्ता खेतीके नामपर ले जाया जाता था। उन बैलोको रेलवेसे ले जानेपर प्रतिबन्ध लगाया गया, किंतु कसाई, पशु-व्यापारी इसको पूर्ववत् रेलवेसे ले जाना चाहते हैं। दिल्ली हाईकोर्टमे केस चल रहा हैं।

'अखिल भारत कृषि-गोसेवा-संघ' भारतके अलग-अलग राज्योके उच्च न्यायालयोमे तथा दिल्लीके सर्वोच्च न्यायालयमे 'गोवंश-रक्षण-हेतु' रात-दिन प्रयत्नशील हैं और भगवान्ने चाहा तो इस कार्यमे सफलता भी मिलेगी। अतः सभी लोगोको इस पुण्य कार्यमे अपने-अपने स्तरसे अवदान [illegible] करना चाहिये।

जब मालवीयजीने त्रिवेणीका जल लेकर गोरक्षाकी प्रतिज्ञा की

महामना पण्डित मदनमोहनजी मालवीय महाराज गोसेवाकी साकार प्रतिमा थे। जनवरी सन् १९२८ में प्रयागमें त्रिवेणीके पावन तटपर 'अखिल भारतवर्षीय सनातन धर्मसभा'का अधिवेशन था। व्याख्यान-वाचस्पति प० दीनदयालजी शर्मा शास्त्री भी अधिवेशनमे महामनाके साथ उपस्थित थे।

महान् गोभक्त हासानन्दजी वर्मा गोहत्याके विरोधमे काला कपड़ा पहने तथा मुँहपर कालिख पोते हुए अधिवेशनमे उपस्थित हुए।

मालवीयजी महाराजको सम्बोधित कर गोभक्त हासानन्दजीने कहा—'गऊ माता भारत तथा हिन्दुत्वका मूल है। आप 'गोहत्या-बंदीके' लिये कोई ठोस योजना बनाइये।'

इसपर महामना बोल उठे—'हासानन्द! तुम मुखमें कालिख लगाकर फिर मेरे सामने आ गये। अरे गोहत्याके कारण केवल तुम्हारा मुँह ही काला नहीं हो रहा है, हम सब भारतवासियोके मुखपर कालिख है। आओ, गोरक्षाके भीम! गङ्गाजलसे तुम्हारे मुखकी कालिमाको धो दूँ।' महामनाने त्रिवेणीके पावन जलसे गोभक्त हासानन्दजीके मुँहकी कालिख धो डाली तथा उसी समय त्रिवेणीका पावन गङ्गाजल हाथमें लेकर प्रतिज्ञा की 'हम जीवनभर गोरक्षा तथा गोसेवाके लिये प्रयासरत रहेगे।'

इसी समय पण्डित दीनदयालजीने 'गो-सप्ताह' मनानेका प्रस्ताव रखा तथा 'अखिल भारतीय गोरक्षा-कोष'की स्थापनाकी घोषणा की गयी।

महामना मालवीयजी महाराजने सन् १९२८ में कलकत्तामें हुए कांग्रेसके अधिवेशनमें स्पष्ट कहा था—'गौ माता भारतवर्षका प्राण है। उसकी हत्या धर्मप्राण भारतमें सहन नहीं की जानी चाहिये।'

गोरक्षाका सर्वोत्तम साधन—भगवत्प्रार्थना

भगत भूमि भूसुर सुरभि सुर हित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु सुनत मिटहिं जग जाल॥

गोसाधुदेवताविप्रवेदानां रक्षणाय वै।
तनुं धत्ते हरिः साक्षाद् भगवानात्मलीलया॥

'गोसेवा-अङ्क' में गौकी दुर्दशा और इस दुर्दशासे गौको उबारनेके साधनोपर विशिष्ट विद्वानो और सूक्ष्मदर्शी विशेषज्ञोंद्वारा भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणसे बहुत विचार किया गया है और अपने-अपने स्थानमें वे सभी विचार महत्त्वपूर्ण है और उनसे यथायोग्य लाभ उठानेकी बड़ी आवश्यकता है। आशा है कि गो-प्रेमी तथा देशप्रेमी पुरुष भलीभाँति मनन करके उनको यथायोग्य काममे लायेगे। एक साधन और भी है, और वह है—भगवान्से कातर प्रार्थना। जब-जब पृथ्वीपर संकट आया (पृथ्वीपर संकट आनेका अर्थ ही है—गो-ब्राह्मणपर संकट आना), तभी तब ऋषि-देवताओने गोरूपधारिणी या गोरूपा पृथ्वीके पीछे-पीछे जाकर भगवान्से करुण प्रार्थना की, भगवान्को पुकारा और फलतः उनका संकट टला। भगवान् अवतीर्ण हुए। *'बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।'*

भगवान्की कृपा और भगवान्के बलसे असम्भव भी सम्भव हो जाता है। अतः गौकी रक्षाके लिये सबसे बढ़कर साधन है—हृदयकी सच्ची, अनन्य, करुण प्रार्थना। अतएव सबसे आवश्यक है—भगवान्के मङ्गलमय विधानकी मङ्गलमय व्यवस्थाके नीचे आना, अपनेको भगवान्के कल्याणमय चरणोंमें पूर्णतया समर्पित कर देना। जिनका भगवत्प्रार्थनामें विश्वास है, उनको चाहिये कि वे श्रद्धापूर्वक नित्य भगवान्से कातर प्रार्थना किया करें। यदि प्रार्थना सत्य होगी और हृदयसे होगी तो ऐसे संयोग अपने-आप बनेंगे जिनसे गोरक्षाका मार्ग सुगम हो जायगा।

'गोवध-बंदी' के लिये महापुरुषों एवं गोभक्तोंकी वाणी

(श्रीश्रीकिसन कावरा)

गोवंशकी रक्षामें देशकी रक्षा समायी हुई है। —महामना मालवीयजी

गोवंशकी रक्षा ईश्वरकी सारी मूक सृष्टिकी रक्षा करना है। भारतकी सुख-समृद्धि गौके साथ जुड़ी हुई है।

—महात्मा गाँधीजी

समस्त गोवंशकी हत्या कानूनन बंद होनी चाहिये। —गोप्राण स्वामी करपात्रीजी महाराज

गोका समस्त जीवन देश-हितार्थ समर्पित है। अतः भारतमें गोवध नहीं होना चाहिये। —गोधामवासिनी माता आनन्दमयी माँ

मै हिन्दू और मुसलमानसे इस्तदुआ करता हूँ कि यह सबका फर्ज है कि इस हमारी माँ गायकी हिफाजत करे। खुदा बरकत करेगा।

—शेख खुद्दीन शाह

यही आस पूरन करो तुम हमारी,
मिटे कष्ट गौअन, छुटै खेद भारी। —गोभक्त गुरुगोविन्दसिहजी

जैसे कोई अपनी मातापर किये गये अत्याचारको सहन नहीं करेगा, उसी प्रकार गोमाताकी हत्याको सहन नहीं करेगा।

—गोलोकवासी श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका

कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाका दारोमदार गोवंशपर निर्भर है। जो लोग यन्त्रीकृत 'फार्मो' के और तथाकथित वैज्ञानिक पद्धतियोंके सपने देखते है, वे एक अवास्तविक संसारमें रहते हैं। हमारे लिये गोहत्या-बंदी अनिवार्य है।

—स्व० जयप्रकाशनारायणजी

भारतमें गोवंशके प्रति करोडों लोगोंमें आस्था है, उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिये।

—भू०पू० प्रधान मन्त्री स्व० लालबहादुरजी शास्त्री

सम्पूर्ण गोवंश परम उपकारी है। सबका कर्तव्य है कि तन-मन-धन लगाकर गोहत्या पूर्णरूपसे बंद करावें।

—गोप्रेमी स्व० सेठ जुगलकिशोरजी विडला

गोवंशके तीन बड़े दुश्मनोंको दूर भगाओ-१-ट्रैक्टर, २-बछडे-बछियोंको मारकर निकाला गया कॉफ लेदर और ३-गोमांसके व्यापारीको। —काशीनिवासी श्रीअब्दुल रज्जाक

जबतक भारतकी भूमिपर गोरक्त गिरेगा, तबतक देश सुख-शान्ति और धन-धान्यसे वञ्चित रहेगा।

—गोप्राण हनुमानप्रसादजी पोद्दार

कृषि-प्रधान भारतमें किसी भी उम्रके गाय-बैलोंकी हत्या कानूनन नहीं होनी चाहिये। गोहत्या मातृहत्या है। सविधानमें आवश्यक संशोधन किया जाकर सम्पूर्ण गोवश-हत्या-बदीका केन्द्रीय कानून बने। उसमें कोई अपवाद न हो। एक भी अपवाद रहा तो पूरा गोवश कटेगा। गोवशके मासका निर्यात पूर्णत. बद हो। इसके लिये सत्याग्रह करना पडे तो सत्याग्रह करो।

—सत विनोबाजी

सम्पूर्ण गोवंश-हत्या बंद करके राष्ट्रकी उन्नतिके लिये 'गौ' को 'राष्ट्र-पशु' घोषित कर भारत-सरकार यशोभागी बने।

—जगदुर शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज

आज गोवंशका हनन हो रहा है। गोरक्षण आजका सर्वोत्त राष्ट्रहित है। —स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी सरस्वती

गोरक्षासे बढ़कर कोई धर्म नहीं है और गोहत्यासे बढ़कर कोई पाप नही है। —स्वामी श्रीसीतारामशरणजी, अयोध्या

गोवध-बंदी-हेतु प्रत्येक व्यक्ति नित्य एक हजार मधुसूदन-नामका जाप करे। —स्वामी श्रीसीतारामदास ओंकारनाथजी

'गौ' के बिना भारत-भूमिकी सत्ता अक्षुण्ण नहीं रह सकती। —श्रीशरद्वल्लभा 'बेटी जी'

महर्षि आपस्तम्बकी गो-भक्ति और उनका गो-प्रेम

(श्रीखेमचद्रजी सैनी)

पूर्वकालमें आपस्तम्ब नामसे प्रसिद्ध एक महर्षि हो गये हैं, जो ब्राह्मणोमें श्रेष्ठ एवं उपवास-व्रतमे तत्पर रहनेवाले थे। उन्होने काम, क्रोध, लोभ और मोहको सदाके लिये त्यागकर नर्मदा और मत्स्याके संगमके जलमे प्रवेश किया था। जलके भँवरमें बैठे हुए महातपस्वी आपस्तम्बको मल्लाहोंने मछलियोसहित जाल उठाते समय जलके बाहर खींच लिया। उन्हें इस दशामें देखकर वे निषाद भयसे व्याकुल हो उठे और मुनिके चरणोंमे प्रणाम करके इस प्रकार बोले—'ब्रह्मन्! हमने अनजानमें बडा भारी अपराध कर डाला है, आप क्षमा करे। इसके सिवा इस समय आपका प्रिय कार्य क्या है, उसके लिये आज्ञा दें।'

मुनिने देखा कि इन मल्लाहोद्वारा यहॉकी मछलियोंका बड़ा संहार हो रहा है। यह देखकर उनका हृदय करुणासे भर आया। वे दु:खी होकर बोले—'भेददृष्टि रखनेवाले जीवोंके द्वारा दु:खमे डाले हुए प्राणियोंकी ओर जो अपने सुखकी इच्छासे ध्यान नहीं देता उससे बढकर क्रूर इस संसारमे दूसरा कौन है। अहो! स्वस्थ प्राणियोंके प्रति यह निर्दयतापूर्ण अत्याचार तथा स्वार्थके लिये उनका व्यर्थ बलिदान कैसे आश्चर्यकी बात है? ज्ञानियोमे भी जो केवल अपने ही हितमे तत्पर है, वह श्रेष्ठ नहीं है, क्योकि यदि ज्ञानी पुरुष भी अपने स्वार्थका आश्रय लेकर ज्ञानमे स्थित होते है तो इस जगत्के दु:खातुर प्राणी किसकी शरणमें जायँगे। जो मनुष्य स्वयं अकेला सुख भोगना चाहता है उसे मुमुक्षु पुरुष पापीसे भी महापापी बताते है। मेरे लिये वह कौन-सा उपाय है, जिससे मै दु:खी चित्तवाले सम्पूर्ण जीवोके भीतर प्रवेश करके अकेला ही सबके दु:खोंको भोगता रहूँ। मेरे पास जो कुछ भी पुण्य है, वह सभी दीन-दुखियोंके पास चला जाय और उन्होने जो कुछ पाप किया हो, वह सब मेरे पास आ जाय। इन दरिद्र, विकलाङ्ग तथा रोगी प्राणियोंको देखकर जिसके हृदयमें दया उत्पन्न नहीं होती, वह मेरे विचारसे मनुष्य नहीं राक्षस है। जो समर्थ होकर भी प्राण-संकटमे पड़े हुए भयविह्वल प्राणियोंकी रक्षा नहीं करता, वह उसके पापको भोगता है। अत: मैं इन दीन-दु:खी मछलियोंके दु:खसे मुक्त करनेका कार्य छोड़कर मुक्तिको भी वरण करना नहीं चाहता, फिर स्वर्गलोककी तो बात ही क्या है?'

मुनिका यह वचन सुनकर मल्लाह लोग बहुत घबराये। उन्होंने महाराज नाभागके पास जाकर सारी बाते यथार्थरूपसे बतलायीं। नाभाग भी वह वृत्तान्त सुनकर अपने मन्त्रियों तथा पुरोहितोके साथ मुनिका दर्शन करनेके लिये वहाँ आये और बोले—'भगवन्! आज्ञा दीजिये, मैं आपकी कौन-सी सेवा करूँ?'

आपस्तम्ब बोले—राजन्! ये मल्लाह बड़े दु:खसे जीविका-निर्वाह करते हैं। इन्होने मुझे जलसे बाहर निकालकर बड़ा भारी परिश्रम किया है। अत: तुम मेरा जो उचित मूल्य समझो वह इन्हे दे दो।

नाभाग बोले—भगवन्! मैं इन निषादोको आपके बदलेमें एक लाख स्वर्ण-मुद्रा देता हूँ।

आपस्तम्बने कहा—राजन्! मेरा मूल्य एक लाख ही नियत करना उचित नही है। मेरे योग्य जो मूल्य हो वह इन्हें अर्पण करो। इस सम्बन्धमे अपने मन्त्रियोके साथ विचार कर लो।

नाभाग बोले—द्विजश्रेष्ठ! यदि पूर्वोक्त मूल्य उचित नहीं है तो इन निषादोको एक करोड़ दे दिया जाय और यदि यह भी आपके योग्य न हो तो आज्ञा होनेपर और

अधिक भी दिया जा सकता है।

आपस्तम्ब बोले—राजन्! मैं एक करोड़ या इससे अधिक मूल्यके योग्य नहीं हूँ। मेरे योग्य मूल्य चुकाओ। ब्राह्मणोसे सलाह ले लो।

नाभागने कहा—यदि ऐसी बात है तो मेरा आधा या पूरा राज्य इन निषादोको दे दिया जाय। मेरे मतमे यह मूल्य आपके योग्य होगा, किंतु आप किस मूल्यको पर्याप्त मानते हैं, यह स्वय बतानेकी कृपा करे।

आपस्तम्ब बोले—राजन्! तुम्हारा आधा या पूरा राज्य भी मेरे लिये उचित मूल्य नहीं है। मूल्य वह दो जो मेरे योग्य हो। समझमे न आता हो तो ऋषियोके साथ विचार कर लो।

महर्षिका यह वचन सुनकर मन्त्रियो और पुरोहितोके साथ विचार-विमर्श करते हुए धर्मात्मा राजा नाभाग बडी चिन्तामें पड़ गये। इसी समय महातपस्वी लोमश ऋषि वहाँ आ गये, उन्होने नाभागसे कहा—'राजन्! भय न करो। मै मुनिको सतुष्ट कर लूँगा।'

राजा बोले—'महाभाग! आप ही इनका मूल्य बता दे अन्यथा ये महर्षि क्रोधमे आकर मेरे कुटुम्ब, कुल, बन्धु-बान्धव तथा समस्त चराचर त्रिलोकीको भस्म कर सकते हैं, फिर मुझ-जैसे अत्यन्त तुच्छ, दीन और विषयी मनुष्यकी तो बात ही क्या है?'

लोमशने कहा—'महाराज! तुम उनका मूल्य देनेमे समर्थ हो। श्रेष्ठ द्विज जगत्के लिये पूजनीय है और गौएँ भी दिव्य एव पूजनीय मानी गयी है। अत: तुम उनके लिये मूल्यके रूपमे 'गौ' ही दो।'

लोमशजीका यह वचन सुनकर राजा नाभाग मन्त्री और पुरोहितोके साथ बहुत प्रसन्न हुए और हर्षमे भरकर बोले—भगवन्! उठिये-उठिये! मुनिश्रेष्ठ! यह आपके लिये योग्यतम मूल्य प्रस्तुत कर दिया गया है।

आपस्तम्बने कहा—अब मै प्रसन्नतापूर्वक उठता हूँ। राजन्! तुमने उचित मूल्य देकर मुझे खरीदा है। मै गौओसे बढकर दूसरा मूल्य कोई ऐसा नही देखता जो परम पवित्र एव पापोका नाश करनेवाला हो। गौओकी परिक्रमा करनी चाहिये। वे सदा सबके लिये वन्दनीय है। गौएँ मङ्गलका स्थान हैं, दिव्य है। स्वयं ब्रह्माजीने इन्हे दिव्यगुणोंमे विभूषित बनाया है। जिनके गोबरसे ब्राह्मणोके घर और देवताओके मन्दिर भी शुद्ध होते हैं, उन गौओंमे बढकर अन्य किसको बताये। गौओके मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी—ये पाँचो वस्तुएँ पवित्र है और सम्पूर्ण जगत्को पवित्र करती हैं। गाये मेरे आगे रहे, गाये मेरे पीछे रहे, गाये मेरे हृदयमें रहे और मैं गौओंके मध्यमे निवास करूँ—

गाव· प्रदक्षिणीकार्या वन्दनीया हि नित्यश·।
मङ्गलायतन दिव्या सृष्टास्त्वेता स्वयम्भुवा॥
अप्यागाराणि विप्राणा देवतायतनानि च।
यद्गोमयेन शुद्ध्यन्ति किं ब्रूमो ह्यधिकं ततः॥
गोमूत्रं गोमयं क्षीर दधि सर्पिस्तथैव च।
गवा पञ्च पवित्राणि पुनन्ति सकलं जगत्॥
गावो मे चाग्रतो नित्य गाव. पृष्ठत एव च।
गावो मे हृदये चैव गवा मध्ये वसाम्यहम्॥

(स्कन्द, आ०, रेवा० १३। ६२—६७)

जो प्रतिदिन तीनो संध्याओके समय नियम-परायण एव पवित्र होकर 'गावो मे चाग्रतो नित्य०' इत्यादि श्लोकका पाठ करता है, वह सब पापोसे मुक्त होकर स्वर्गलोकमे जाता है। प्रतिदिन भक्तिभावसे गौओंको गोग्रास देनेमे श्रद्धा रखनी चाहिये। जो प्रतिदिन गोग्रास अर्पण करता है उसने अग्निहोत्र कर लिया, पितरोको तृप्त कर दिया और देवताओकी पूजा भी सम्पन्न कर ली—

तेनाग्नयो हुता· सम्यक् पितरश्चापि तर्पिता·।
देवाश्च पूजितास्तेन यो ददाति गवाह्निकम्॥

(स्कन्द०, आ०, रेवा० १३। ६८)

गोग्रास देते समय प्रतिदिन इस मन्त्रार्थका चिन्तन करे। सुरभिकी पुत्री गोजाति सम्पूर्ण जगत्के लिये पूज्य है, वह सदा विष्णुपदमें स्थित है और सर्वदेवमयी है। मेरे दिये हुए इस ग्रासको गौ माता देखे और ग्रहण करे—

सौरभेयी जगत्पूज्या नित्य विष्णुपदे स्थिता।
सर्वदेवमयी ग्रासं मया दत्त प्रतीक्षताम्॥

(स्कन्द० आ०, रेवा० १३। ६९)

ब्राह्मणोकी रक्षा करने, गौओको खुजलाने और

सहलाने तथा दीन-दुर्बल-दुःखी प्राणियोका पालन करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमे प्रतिष्ठित होता है। यज्ञका आदि-अन्त और मध्य गौओको ही बताया गया है। वे दूध, घी और अमृत सब कुछ देती हैं। इसलिये गौओका दान करना चाहिये और उनकी प्रतिदिन पूजा करनी चाहिये। ये गौएँ स्वर्गलोकमे जानेके लिये सीढी बनायी गयी है।

गौओके इस उत्तम माहात्म्यको सुनकर निषादोने महाभाग आपस्तम्बजीको प्रणाम करके कहा—'प्रभो! हमने सुना है कि साधु पुरुषोके सम्भाषण, दर्शन, स्पर्श, श्रवण और कीर्तन सभी पवित्र करनेवाले हैं। हमने यहाँ आप-जैसे महात्माके साथ वार्तालाप किया और आपका दर्शन भी कर लिया। अब हम आपकी शरणमे आये हैं, आप हमारे ऊपर अनुग्रह कीजिये।' आपस्तम्बजी बोले—'इस गौको तुमलोग ग्रहण करो। इससे तुम सब लोग पापमुक्त हो जाओगे। निषाद निन्दित कर्मसे युक्त होनेपर भी प्राणियोके मनमें प्रीति उत्पन्न करके इन जलचारी मत्स्योके साथ स्वर्गलोकमे जायँ। मैं नरकको देखूँ या स्वर्गमें निवास करूँ, किंतु मेरे द्वारा मन, वाणी, शरीर और क्रियासे जो कुछ भी पुण्यकर्म बना हो, उससे ये सभी दुःखार्त प्राणी शुभ गतिको प्राप्त हो।'

तदनन्तर शुद्ध चित्तवाले गोप्रेमी महर्षि आपस्तम्वकी सत्यवाणीके प्रभावसे वे सभी मल्लाह मछलियोंके साथ स्वर्गलोकमे चले गये।



गुजरातके गौरवशाली गो-सेवक—दाना भगत

(डॉ० श्रीकमलजी पुजाणी)

सौराष्ट्र—गुजरातके सुविश्रुत गो-सेवकोमें दाना भगतका नाम विशेष स्मरणीय है। वे जीवनभर गायोंका झुंड लेकर सौराष्ट्रके गाँव-गॉव घूमते रहे और गोमाताकी जय-जयकार करते रहे। लोग उन्हें 'घुमक्कड गोभगत' कहते थे।

दाना भगतका जन्म विक्रम-सवत् १७८४ मे सौराष्ट्रके अमरेली जिलेके चलाला नामक गॉवमे हुआ था। वे जन्मसे अधे थे। प्रकृतिने उन्हें सुमधुर कण्ठ दिया था। उनके पिता गोपालनका व्यवसाय करते थे। बचपनमे वे अपने पिताके साथ गायोको चराने जाते और पेडके नीचे बैठकर भजन-कीर्तन किया करते। कभी-कभी दोपहरके समय गाये भी उनके आस-पास आकर बैठ जातीं और भजन-कीर्तन सुनतीं।

कहते है कि एक बार किसी सत पुरुषने बालक दानाको गायोके बीच कीर्तन करते देखा। वे कुछ समय वहॉ रुक गये और भजन सुनने लगे। जब उन्हें पता चला कि वालक देख नहीं पाता, तब वे दयार्द्र हो गये। उन्होने वालकके पिताको अपने पास बुलाया और एक गायकी ओर सकेत करते हुए उसे दुह लानेका आदेश दिया। फिर महात्माजी उस दूधसे बालक दानाकी आँखे धोने लगे। कुछ ही क्षणोमे बालक चिल्ला उठा—'मैं देख सकता हूँ। मुझे सब कुछ दिखायी देता है।'

बस, उस दिनसे दानाने अपना जीवन गो-सेवाके लिये समर्पित कर दिया। गो-चारण-व्रत उनके जीवनका मुख्य ध्येय बन गया। गौ माताकी सतत सेवा और गो-दुग्धके सतत सेवनसे उन्हे अलौकिक सिद्धि प्राप्त होने लगी। गायोंको लेकर वे सौराष्ट्र—गुजरातमे घूमने लगे।

एक बार दाना भगत गायोके साथ गिरनार पर्वतके आस-पास घूम रहे थे। गाये चरती-चरती ऐसे स्थलपर पहुँच गयीं, जहाँ पानीका नितान्त अभाव था। दाना भगत पानीकी खोजमें भटकने लगे। कुछ लोगोने बताया—'भगतजी! यहाँ पानी मिलना कठिन है, आप गायोंको लेकर शीघ्र ही पर्वतीय प्रदेशके बाहर निकल जाइये, नहीं तो ये प्याससे मर जायॅगी।'

भगतजीने लोगोंकी बातोंपर ध्यान न दिया। वे पानीकी खोज करते रहे। लोग भी कुतूहलवश उनके साथ चलने लगे।

कुछ देर बाद भगतजी एक बड़े पत्थरके पास आकर रुक गये और लोगोसे कहने लगे—'आप लोग 'गोमाताकी जय' बोलकर यह पत्थर हटा दे। इसके नीचे पानीका सोता छिपा हुआ है।'

लोगोंने पत्थर हटाया तो उस गड्ढेमे धीरे-धीरे पानी ऊपर आने लगा। कुछ ही देरमे पूरा गड्ढा पानीसे भर गया। लोग हर्ष-विभोर होकर गोमाताकी जय-जयकार करने लगे। भगतजीने गायोको पानी पिलाया और दूसरे गाँवकी ओर चल पड़े। गिरनार पर्वतके जंगलोमे आज भी वह सोता पानीसे भरा पड़ा है और दाना भगतकी गोसेवाकी साक्षी दे रहा है।

गोसेवासे इन्हे कई प्रकारकी सिद्धियाँ प्राप्त थीं और अनेको चमत्कारकी घटनाएँ इनके जीवनसे जुड़ी थीं। सौराष्ट्रमे आज भी गोसेवक दाना भगतका नाम बड़ी ही श्रद्धासे लिया जाता है।

कुछ बलिदानी गोभक्त

(श्रीशिवकुमारजी गोयल)

(१)

कटारपुरके गोभक्त शहीद

गाय अनादिकालसे हिन्दुत्वका मानबिन्दु रही है। मुसलमानोंके आक्रमण तथा देशके पराधीन होनेसे पूर्व गोरक्तकी एक बूँद भी पृथ्वीपर नहीं गिरती थी, किंतु मुसलमानोंद्वारा देशको पराधीन किये जानेके बाद गोहत्याका कलंक चालू हो गया।

आज 'गोहत्या-बंदी-आन्दोलन' करनेवालोको यह दलील दी जाती है कि मुसलमानों तथा अग्रेजोके समय गोभक्त कहाँ थे? किंतु अपने ही गौरवमय इतिहाससे सर्वथा अनभिज्ञ तथाकथित राजनेतागण यह भी नहीं जानते कि भारतका इतिहास इस बातका साक्षी है कि हिन्दूने कभी भी गोहत्याके कलकको सहन नहीं किया। छत्रपति शिवाजीने अल्प आयुमें ही गोहत्यारेको मौतके घाट उतारा और आजन्म गोभक्षकोको मिटाकर 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापनाके लिये औरंगजेबसे टक्कर लेते रहे। महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह, बन्दा वीर वैरागी, गुरु तेगबहादुर आदिने गोहत्याका कलंक मिटानेके लिये जीवनभर संघर्ष किया तथा अपने प्राणोकी आहुति दी। मुगलकालमे एक नहीं हजारो व्यक्तियोंने गोरक्षार्थ अपना जीवन होम दिया।

अंग्रेजोके शासनकालमें भी हिन्दू जनता गोहत्याके विरुद्ध समय-समयपर संघर्ष करती रही। १८५७ मे वीर मंगल पांडे आदिने गोहत्याके कलंकके विरुद्ध ही बंदूक उठायी थी।



मगल पाडे

सन् १९१८ की वात है। हरिद्वारके निकट कटारपुर नामक ग्राममे वकरीदके दिन मुसलमानोंने गोहत्या करनेकी घोषणा की।

इस क्षेत्रके हिन्दुओंने एक स्वरमें निश्चय किया कि

'हमारे जीवित रहते इस पावन तीर्थकी भूमिपर गोमाताके रक्तकी एक बूँद भी नहीं गिरने दी जायगी।' उन दिनो ज्वालापुरमें थानेदार मुसलमान था। उसके संकेतपर मुसलमानोंने १८ सितम्बरको गायोका कत्ल करनेके लिये सजाकर जुलूस निकाला। हनुमान्-मन्दिरके महन्त रामपुरीजीके नेतृत्वमे हिन्दुओने डटकर गोहत्यारोका प्रतिरोध किया। कसाई जिस गायको हत्याके लिये सजा कर ले जा रहे थे, महात्मा रामपुरीजीने झपटकर रस्सा काटकर उस गायको मुक्त करा लिया। गौमाता भाग गयी तथा मुक्त हो गयी। गोहत्यारे महात्मा रामपुरीजीपर टूट पड़े। उनके शरीरपर जगह-जगह छुरोके ४८ घाव लगे। इससे हिन्दू जनता गोहत्यारोपर टूट पड़ी। परिणामस्वरूप अनेक गोहत्यारोको प्राणोसे हाथ धोना पडा। हिन्दू जनताने प्राणोपर खेलकर कालके गालमे जानेवाली गायोंको बचा लिया।

अग्रेज मुसलमानोके साथ षड्यन्त्र करके हिन्दुओका दमन करना चाहते थे, अत: अग्रेज अधिकारियोने कटारपुरके हिन्दुओंपर अमानुषिक अत्याचार एवं अंधाधुंध गिरफ्तारियाँ प्रारम्भ कर दीं। १७२ हिन्दुओको गिरफ्तार कर लिया गया।

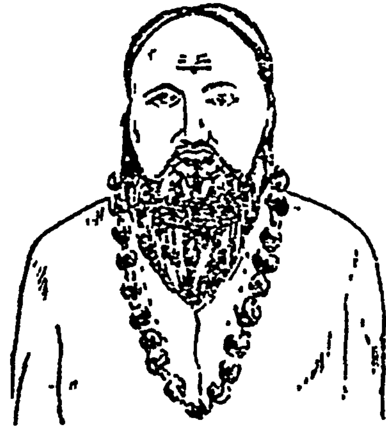
अदालतमे मुकद्दमेका नाटक रचा गया और ८ अगस्त १९१९ को अंग्रेज जजोके ट्रिब्यूनलने महन्त ब्रह्मदास उदासीन, चौ० जानकीदास, डॉ० पूर्णप्रसाद तथा श्रीमुखा चौहानको फॉसी और १३५ गोभक्तोंको काला पानीका दण्ड दिया। हरिद्वारके थानेदार श्रीशिवदयालसिहको भी आजन्म कारावासका दण्ड दिया गया।

महामना पं० मदनमोहन मालवीयजीने गोभक्तोकी मुक्तिके लिये भारी प्रयास किया, किंतु अग्रेज सरकारके कानपर जूँ नही रेगी।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुरके छात्रोको भी इस काण्डमे फँसानेका प्रयास किया गया। गुरुकुल महाविद्यालयके आचार्य तथा प्रख्यात विद्वान् आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थने उन दिनो अमृतसरमे हो रहे कांग्रेस अधिवेशनमे पहुँचकर महात्मा गाँधीको कटारपुर-काण्डकी घटनासे अवगत कराया था तथा गोभक्तोको बचानेके लिये आवाज उठानेकी प्रार्थना की।

अंग्रेज सरकार गोभक्तोको फाँसीपर लटकानेपर तुली हुई थी। अन्तमें गोभक्त महन्त ब्रह्मदास (आयु ४५ वर्ष) एवं चौधरी जानकीदास (आयु ६० वर्ष) को फाल्गुन सुदी २, सन् १९२० को इलाहाबाद जेलमें फॉसीपर लटका दिया गया। दोनों गोभक्त हुतात्मा हँसते-हँसते तथा 'गोमाताकी जय' का उद्घोष करते हुए फॉसीपर झूल गये। उस दिन इलाहाबाद नगरमे पूर्ण हडताल रही। डॉ० पूर्णप्रसाद (आयु ४८ वर्ष) को लखनऊमे तथा कटारपुरके श्रीमुखा चौहान (आयु ३२ वर्ष) को बनारस जेलमे फॉसीपर लटकाया गया।

गोभक्त शहीद महन्त ब्रह्मदासजी पंचायती उदासीन



अखाड़ेके महन्त थे। वे अत्यन्त निर्भीक गोभक्त थे। उदासीन सम्प्रदायके हजारो लोग उनके शिष्य थे।

दर्जनो गोभक्तोने इस काण्डमे कालापानीमे अमानवीय यातनाएँ सहन कीं। सरदार जगदत्त, श्रीनन्दा, लाला खूवचन्द पंसारी, पं० आसाराम, श्रीलक्ष्मीनारायण भक्त, लाला दौलतराम, लाला देवीचन्द, प० नारायणदत्त, चौ० रघुवीरसिंह, चौ० फतहसिंह, पं० माखनलाल, लाला प्यारेलाल, श्रीसादी आदि अन्यान्य गोभक्तोने कालापानी (अंडमान)मे गोरक्षार्थ यातनाएँ सहन कीं।

कटारपुरमें अब भी प्रतिवर्ष बलिदानियोकी पावन स्मृति मनायी जाती है। गोरक्षा-आंदोलनके प्रणेता लाला हरदेवसहायजीकी प्रबल इच्छा थी कि कटारपुरमें उन गोभक्त बलिदानियोंकी स्मृतिमे एक विशाल संस्मरण बनाया

जाय। कटारपुरकी पावन भूमि आज भी हमे गोरक्षाकी प्रेरणा देती है।

(२)

अनशन करते हुए दो गोभक्त बलिदानी

[क] श्रीऋषिस्वरूप ब्रह्मचारी

सन् १९६६में गोहत्याके कलकको मिटानेके लिये पूज्य संत श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी महाराज तथा पुरीके जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीनिरंजनदेवतीर्थजी महाराजने क्रमशः वृन्दावन तथा पुरीमें अनशन किया था।

श्रीऋषिस्वरूप ब्रह्मचारी धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा शंकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजके अनन्य भक्त थे। वे धर्मसंघके एक सक्रिय कार्यकर्ता तथा गोसेवक प्रचारक थे। जगह-जगह हाथमे झडा लेकर पहुँच जाते तथा नगर या कस्बेको 'गोमाताकी जय हो' 'गोहत्या बंद हो'के नारोसे गुंजा डालते थे। उन्होने दिल्लीके यमुना-तटपर स्थित 'धर्मसंघ-भवन'मे २० नवम्बर, १९६६को गोहत्या-बंदीकी माँगको लेकर अनशन किया तथा १० दिन बाद ३० नवम्बरको गौ माताकी रक्षाके लिये बलिदान दे दिया।

[ख] श्रीमेहरचन्द पाहूजा

उधर वृन्दावनमे पूज्य प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीके साथ गोभक्त मेहरचन्द पाहूजा भी २० नवम्बर १९६६को अनशनपर बैठे। जब उनकी शारीरिक स्थिति बहुत कमजोर हो गयी तो अनेक गोभक्त संतोने उनसे अनशन त्यागनेकी अपील की, किंतु उन्होंने उत्तर दिया—'गौ माताके लिये प्राणोत्सर्गसे बढकर मैं दूसरा धर्म नहीं मानता।' अन्तमे ३१ दिसम्बरको उन्होंने अपने प्राणोका उत्सर्ग कर दिया।

गौ माताकी रक्षाके लिये अनशन करते हुए बलिदान देनेवाले ये दोनों महान् गोभक्त 'गोरक्षा-आन्दोलन'के इतिहासमें अविस्मरणीय रहेगे।

(३)

गोभक्त लाला हरदेवसहायजी

परम गोभक्त लाला हरदेवसहायजी 'गोरक्षा-आन्दोलन'के अग्रणी सूत्रधारोंमेंसे थे। गोवंशकी रक्षा तथा गोसंवर्धनके लिये उन्होने अपना जीवन ही समर्पित कर दिया था। उन्होंने राष्ट्रकी स्वाधीनतासे लेकर राष्ट्रभाषा हिन्दीके प्रचार तथा राष्ट्रमाता गायकी रक्षाके लिये जो कार्य किया वह अविस्मरणीय रहेगा।

लालाजीका जन्म संवत् १९४९, मार्गशीर्ष मासके पञ्चमी तिथिको हरियाणाके हिसार जिलेके मातरोड गाँवमे लाला मुसद्दीलालजीके घर हुआ था। लालाजी बचपनमे ही राष्ट्रभक्तिके रंगमे रँग गये थे। उन्हे देववाणी-सस्कृत भाषासे विशेष प्रेम था तथा इसीलिये वेदो, उपनिषदो और पुराणोके प्रति उनके मनमे बचपनसे ही अनन्य श्रद्धा थी। स्वदेशी वस्तुओके प्रति निष्ठा होनेके कारण उन्होने विदेशी कपडेकी जगह हाथसे बुने सूतके कपड़े पहननेका संकल्प ले लिया था।

उन्हे लाला लाजपतराय, महामना मालवीयजी तथा लोकमान्य तिलकने विशेष प्रभावित किया था। लालाजी अंग्रेजी शिक्षाकी जगह हिंदी तथा संस्कृतमे शिक्षा दिये जानेके प्रबल समर्थक थे। उन्होने हरियाणाके ६५ गाँवोमे विद्यालय खुलवाकर हिदी तथा संस्कृतका प्रचार किया।

लालाजीने 'स्वाधीनता-संग्राम' मे सक्रिय भाग लिया। सन् १९२१ तथा १९४२ के 'भारत छोडो' आन्दोलनमे वे सत्याग्रह करते हुए जेल गये थे। सन् १९२१मे निमावली (पंजाब) की जेलमे वे स्वामी श्रद्धानन्दजीके साथ रहे। स्वामी श्रद्धानन्दजी गीताके प्रति अनन्य निष्ठा रखते थे। लालाजीको गीताके प्रति लगाव स्वामीजीके प्रवचनको सुनकर ही हुआ था।

सन् १९३९ में हिसार जिलेमे भीषण अकाल पडा तथा गोवश भूखा मरने लगा तो लालाजीने प्रख्यात गोभक्त ज० ना० मानकरजीके साथ मिलकर गोवशकी सेवाके लिये अपनेको समर्पित कर दिया। उन्होने गाँव-गाँव जाकर गायोके लिये चारा इकट्ठा किया तथा दुर्भिक्ष-पीडित महिलाओके लिये 'सूत-कताई-केन्द्र' भी स्थापित किया।

लालाजीका सपना था कि देश स्वाधीन होते ही गोवंशकी हत्याका कलक तुरंत दूर कर दिया जायगा किंतु जब उन्होंने देखा कि स्वाधीनताके बाद गोहत्याको और ज्यादा प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा नये-नये कत्लखाने खोलकर गोमासका निर्यात तक शुरू कर दिया गया है तो उनकी आत्मा कराह उठी। उन्होंने प्रधान मन्त्री नेहरूजी, राष्ट्रपति डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसाद आदिसे मिलकर तथा पत्र-व्यवहार कर गोहत्यापर प्रतिबन्ध लगानेकी माँग की। किंतु

प्रधान मन्त्रीके हठके कारण गोहत्यापर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सका।

लालाजी 'भारत-सेवक-समाज' तथा सरकारी सस्थानोके माध्यमसे गोरक्षाका कार्य करते थे। सन् १९५४ में वे महान् संत स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा संत श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारीके सम्पर्कमें आये। ब्रह्मचारीजीके साथ मिलकर उन्होने कलकत्ता हत्याके लिये जानेवाली गायोंको बचाया। इसके बाद उन्होंने ४ फरवरी १९५४ को प्रयाग-कुम्भपर 'गोहत्या-निरोध-समिति' की स्थापना की। संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारीजीके साथ मिलकर उन्होने मथुराके कसाईखानेपर सत्याग्रह किया। धर्मसघके तत्त्वावधानमे स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराजने पावन व्रजभूमिको गोहत्याके कलंकसे मुक्त करानेके लिये आन्दोलन चलाया तो लालाजीका उन्हे सक्रिय सहयोग मिला। पूज्य ब्रह्मचारीजीके साथ लालाजीने लखनऊमें विधान-सभाके सामने सत्याग्रह कर उत्तरप्रदेशमे 'गोहत्या-बंदी'की मॉग की। यह आन्दोलन तवतक जारी रहा, जबतक 'गोहत्या-बदी'का कानून [भले ही वह आगे चलकर लचर सिद्ध हुआ] बन नहीं गया। इसी तरह सन् १९५५मे बिहारमे 'गोहत्या-बंदी'की मॉगको लेकर चलाये आन्दोलनमे लालाजी ब्रह्मचारीजीके साथ बाँकीपुर जेलमे रखे गये। बिहारके जेलसे ये दोनो तभी मुक्त हुए जब 'गोहत्या-बंदी कानून' बना दिया गया।

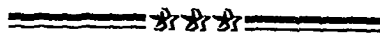
लालाजीने प्रतिज्ञा की थी कि 'जबतक पूरे देशमे गोहत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगेगा मैं न पगड़ी पहनूँगा न चारपाईपर सोऊँगा' इस प्रतिज्ञाका उन्होंने जीवनपर्यन्त पालन किया।

लालाजीने 'गाय ही क्यों' तथा गोसम्बन्धी दर्जनो पुस्तके लिखी थीं। 'गाय ही क्यो' पुस्तककी भूमिका तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० श्रीराजेन्द्रप्रसादजीने लिखी थी। उन्होने स्वीकार किया था कि 'गोवंशके बारेमें लालाजीका ज्ञान अगाध है।'

लालाजी धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज तथा शकराचार्य स्वामी श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराजके प्रति अनन्य श्रद्धा रखते थे। उधर 'राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ' के सरसंघचालक श्रीमाधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्रीगुरुजी) के प्रति भी उनकी श्रद्धा-भावना थी। श्रीगुरुजी भी लालाजीकी गोसेवासे बहुत प्रभावित थे।

लालाजी 'कल्याण'-सम्पादक पूज्य भाईजी (श्री-हनुमानप्रसादजी पोद्दार) के प्रति अनन्य श्रद्धा-भावना रखते थे। उन्होने कई वार कहा था कि 'श्रीभाईजी तथा 'कल्याण' ने गोरक्षाकी भावना पैदा करनेमें अविस्मरणीय योगदान किया है।'

लालाजी जीवनभर गोरक्षा तथा गोसेवाका प्रचार करते रहे। उनके अथक प्रयासोंसे कई राज्योमे 'गोहत्या-बदी कानून' भी बने।



लाला लाजपतरायजीकी गोसेवा

(श्रीफतहचदजी शर्मा 'आराधक')

पजाव-केसरी लाला लाजपतराय आज हमारे बीचमे नहीं है, किंतु जिस दिन २८ जनवरीकी पुण्य तिथि आती है, तब हमारे सामने एक ऐसी विराट् आत्माका चित्र सामने आ जाता है, जिसने सोते हुए पंजाब तथा देशको अपने त्यागसे जगा दिया था। वे केवल यहीं नहीं बल्कि सुदूर अमेरिकामे भी बैठकर भारतीय चिन्तन करते रहे। अमेरिकाके प्रवासमें उन्होने दु:खी भारतकी जो करुणा-पूर्ण कहानी लिखी थी वह भारतकी एक मूल्यवान् सम्पत्ति है।

लालाजी केवल साधारण व्यक्ति नहीं थे वरन् वे देशकी उन महान् शक्तियोंमेसे एक है जिन्होने देशको आगे बढाने, दासतासे मुक्ति दिलाने और देशकी आवाज सारे देशमे गुँजानेके लिये शंखनाद किया था और उनका अन्त भी 'साइमन कमीशन लौट जाओ' के नारे लगाते हुए हुआ। इस प्रकार लालाजीका सारा जीवन देशपर मर-मिटनेकी चाह रखनेवाला इतिहास है। जब उनके सिरपर 'साइमन कमीशन' का विरोध करते समय पुलिसकी लाठी लगी,

तब उनके मुँहसे निकला था कि 'मेरे सिरपर पड़ी-पडी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्यके कफनमे कीलका काम देगी।' लालाजीकी भविष्य-वाणी सत्य हुई। देश स्वतन्त्र हुआ, उनके बलिदानका फल देशके पुत्रोने भोगा, किंतु लालाजी केवल देशको सूखी हड्डियोंका ढेर ही नहीं देखना चाहते थे, उनका यह दृष्टिकोण था कि बिना हृष्ट-पुष्ट हुए देशकी रक्षा नहीं हो सकती। इसीलिये उन्होने भारतवासियोको अपना जीवन शुद्ध दूध-घीपर बितानेके लिये जोर दिया था। वे बडे चिन्तित थे कि हमारे देशमे अंग्रेजशाही जो भीषण गोवध करा रही है, उससे भय है कि देशकी भावी पीढ़ी किस प्रकार जीवन प्राप्त कर सकेगी। एक प्रकारसे लालाजीकी देशभक्ति आजके नेताओंको यह चेतावनी दे रही है कि डिब्बोके अंदर बद हुआ दूध पीनेसे देशके लोग जिंदा नहीं रह सकते, इसलिये इस देशमे सरकारको गाय-बैलोके कतल रोकने, उनके सरक्षण और संवर्धन करनेका काम करना चाहिये।

लालाजी केवल कहनेवाले ही नहीं थे, करके दिखलानेवाले भी थे। दिल्लीके शहीदी हालमें सन् १९२१ मे एकता स्थापित करनेके लिये जो हिन्दू-मुसलमानोंका संयुक्त गोरक्षा-सम्मेलन हुआ था, उसमे लालाजीका सबसे बडा हाथ था। वे स्वय उस सम्मेलनके अध्यक्ष थे और उन्होने जोरदार शब्दोमे इस बातको कहा था कि 'अग्रेजी-राज्यमें गोवध होता है और गाय सबको घी-दूध देकर बलवान् बनाती है, इसलिये हम सब लोगोंको जो अपने देशको स्वतन्त्र करानेके लिये तैयार हैं और अंग्रेजोको यहाँसे खदेडना चाहते हैं उन्हे अंग्रेजोसे असहयोग करना चाहिये।' इस दृष्टिसे यह विचारणीय प्रश्न हैं कि लालाजी यदि आज जीवित होते तब वर्तमान सरकारके प्रति उनका क्या रुख होता? इसका निर्णय पाठकोंको स्वय विचारना चाहिये।

गोभक्त देवसिंह हाड़ा

(श्रीकान्तिचन्द्रजी भारद्वाज)

राजस्थानमे हाडा राज्यके संस्थापक देवसिंह हाडाकी २२वीं पीढीमे राजा रघुवीरसिंह हाडा गद्दीपर बैठे। इनका शासनकाल ईसवी सन् १८८९ से १९२७ रहा। राजा रघुवीरसिह हाडा न्यायप्रिय कुशल प्रशासक थे। धर्म तथा सत्यमे निष्ठा रखनेवाले थे। राजा रघुवीरसिंह महान् गोभक्त थे। वे जगलमे जाकर गायोको चराते थे। स्वयं अपने हाथो गोसेवा करते थे। उनके राज्यमे प्रतिवर्ष एक दिन बडे ही हर्ष-उल्लासके साथ गो-महोत्सव मनाया जाता था। यह उत्सव वनमे होता था तथा सभी गायोको वनमे ले जाकर चराया जाता था और गायोंकी पूजा होती थी। राजाज्ञा थी कि 'उस दिन कोई भी नगरमे धुआँ नही करेगा तथा घरमे भोजन भी नहीं करेगा। सभीको गोचारण-महोत्सवमे उपस्थित होना अनिवार्य है।'

राजाज्ञाके अनुसार सभी नागरिक जगलमे जाकर अपने-अपने समूहमे भोजन बनाते थे। गरीबोके लिये और राजपरिवारके सदस्योके लिये भोजन-व्यवस्था राजाकी ओरसे होती थी। राजाजी जंगलमे लाठी लेकर गायोको चराते थे, दोपहरमे महारानी अपने सिरपर जुवारकी रोटी, छाछ, सब्जी, गुड़ आदि लेकर राजाके पास पहुँचती, राजा-रानी इन्द्र देवताकी पूजा करते तथा साथ बैठकर छाछ-रोटी खाते। ऐसा विश्वास था कि इस गोचारण तथा वन-महोत्सव एवं इन्द्रपूजनसे अनावृष्टि दूर होकर निश्चित रूपसे भारी वर्षा होती है। इस उत्सवमे रुद्राभिषेक कराया जाता तथा ब्राह्मण-भोजन और गायोको घास खिलाया जाता था और उनकी पूजा होती थी।

हाडा राज्यका यह वन-महोत्सव व्रजमे नन्दराय आदि गोपोद्वारा वृष्टिके लिये की गयी इन्द्रपूजा तथा पुनः भगवान् श्रीकृष्णद्वारा किये गये गोवर्धन-पूजन, गोपूजन तथा गोमहोत्सवका ही प्रतिरूप जान पड़ता है।

'व्रज'में गो-सेवा

(श्रीअनुरागजी कपिध्वज)

ब्रह्ममयी व्रजभूमिमें भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाएँ सदा होती रहती हैं। कृष्णकी प्रिय वस्तु, जिनके साथ वे क्रीडा करते हैं मुख्यत: तीन है—गौएँ, गोपियाँ और ग्वाल-बाल। 'व्रज' मे भगवान् कृष्ण अपने साथी ग्वाल-बालोके साथ गो-सेवा कर गोपियोंको आनन्दित करते रहते है। गायें श्रीकृष्णकी प्रिय निधि हैं। गो-सेवाकी प्रमुखताके कारण ही उनका लोक 'गोलोक' कहलाता है। गोलोककी लीला प्रभुकी वास्तविक लीला है, जिसमे गौएँ, गोपियाँ एवं ग्वाल-बाल सब सच्चिदानन्दरूप होकर विहार करते हैं।

मानवकी तो बात ही क्या? देवराजकी समझमे भी भगवान् कृष्णकी व्यावहारिक एवं वास्तविक लीला नहीं आ पाती। वे भी जब गो-सेवासे वञ्चित करनेके लिये ग्वाल-बालोंको भ्रमित करनेका प्रयास करते है तो उन्हे अपनी पराजय स्वीकार करनी पडती है। इसी प्रकार गोचारणकी वास्तविक और व्यावहारिक लीलाको समझनेका प्रयास जब ब्रह्माजीके द्वारा होता है, तब भगवान् कृष्ण अपनी वास्तविक लीलाका रहस्य उनके सामने प्रकट कर उन्हे आश्चर्यचकित कर देते हैं। ब्रह्माजी गौएँ और ग्वाल-बालोको कृष्णरूपमे देखकर व्रजभूमिमें जन्म लेनेकी कामना करते हैं, जिससे कि गौएँ और उनकी सेवा करनेवाले ग्वाल-बालोकी चरण-रज उन्हें मिल सके। भगवान् कृष्णकी गो-सेवा मनको मोहित कर उनकी व्यावहारिक लीलाको समझनेमें सहायक होती है।

भगवान् कृष्ण स्वयं अपनेको गो-रूपमे परिणत कर अपनी ही सेवा अपने गोरूपमे करते हैं। जिस तरह बालक अपनी ही परछाईसे क्रीडा करता है, उसी तरह स्वरूप-स्थित भगवान् कृष्ण स्वयंमें ही निर्लिप्त-भावसे रमण करते हैं। गो-महिमाकी वास्तविकताका प्रत्यक्ष दर्शन हमे उस समय होता है, जब पूतना-मोक्षके बाद गोप-कन्याएँ गायकी पूँछसे कृष्णजीका मार्जन करती है। भगवान् गौ एवं विप्रकी-रक्षाके हेतु अवतार धारण करते हैं। भगवान्के अवतरणकी क्रिया तीन प्रकारके भक्तोके द्वारा पूर्ण होती है—एक वे भक्त हैं, जिनका कृष्णसे कभी वियोग नही होता, वे अन्तरङ्ग पार्षद कहे जाते हैं तथा जिनका गोचारण-लीलाको समझने और पूर्ण करनेमे विशेष सहयोग रहता है। दूसरे वे भक्त है जो प्रभुके साथ सदैव रहने एवं उनकी गोचारण-लीलाके दर्शनके इच्छुक हैं। भगवान् कृष्ण जब गौओको लेकर गोवर्धन पर्वतपर जाते है, विशेष नामोके द्वारा उन्हे पुकारते है तथा वे चरना छोड़कर उनके पास आती है—इस लीलाको देख ये भक्त प्रभुकी अन्तरङ्ग-लीलामे प्रवेश पानेके लिये लालायित होते हैं। तीसरे वे भक्त है जिनकी प्रार्थनासे भगवान् पृथिवीपर अवतार लेते हैं। वे गौके प्रत्येक अङ्ग और उसके रोम-रोममें देवताओंका निवास होनेके कारण गो-सेवाके रूपमे भगवान्की भक्ति करते है।

'गो' शब्दका एक अर्थ इन्द्रिय भी होता है। कृष्णका सच्चा सेवक जब भगवान्के नामका अधिक-से-अधिक जप करता है, तब इस जपका प्रभाव भक्तके मानस-पटलपर स्थायी और सुदृढ हो जाता है। ऐसी स्थितिमे भक्त जाने-अनजाने 'कृष्ण-कृष्ण' पुकारने लगता है। उसके मनका स्वरूप सत्त्व हो जाता है। समस्त इन्द्रियाँ मनके अधीन हैं, अत: मनके सत्त्व-रूपमे परिणत होते ही इन्द्रियाँ भगवद्रूप हो जाती हैं। वे विषयोंको भगवत्प्रसाद मानकर ग्रहण करती है। वह समझता है कि तीनों लोकोंमें यथार्थ आत्म-दर्शन इतना ही है कि 'यह सब जगत् परमात्मा ही है।' यह निश्चय कर भक्त पूर्णताको प्राप्त हो जाता है। भक्त अपने-आप निर्विकल्प हो जाता है, क्योकि मनको प्रभुके

रूपमें मानना ही निर्विकल्पता है। भक्त सदा-सर्वदा सब नाम-रूपोंमे कृष्णको देखनेका अभ्यासी हो जाता है। उसके अन्तःकरणमें छाये ब्रह्मप्रकाशके अन्तर्गत कृष्ण प्रकट हो उसे आनन्दित करने लगते हैं। सर्वत्र सब समय उसकी वृत्तियाँ 'गोपी' बनकर और उनके भाव 'ग्वाल-बाल' बनकर शुद्ध हृदय-पटलपर कृष्ण-सेवामें तत्पर हो जाते हैं। सर्वात्मभावकी भावनासे प्रकृतिके प्रत्येक क्रिया-कलापमें उसे कृष्णके दर्शन होते रहते हैं।

प्रभुकी वास्तविक लीलाके बिना व्यावहारिक लीला नहीं हो सकती और व्यावहारिक लीलाका वास्तविक लीलामें कोई स्थान नहीं है। अनेक जन्मोंकी साधनाके पश्चात् साधकके हृदयाकाशमे कृष्ण-तत्त्वपर पड़ा मायाका पर्दा जब दूर होता है, तब वह समझता है कि गौओंको चराकर वनसे जब श्रीकृष्ण लौटते हैं, उस समय व्रजकी गोपियाँ गो-रजसे रँगे हुए कृष्णके मुखको देखकर किस सुखका अनुभव करती हैं। भागवतधर्मके पालनके बाद 'कृष्ण-कृष्ण' की रट लगाकर अपने हृदयमें प्रस्फुरित ब्रह्मप्रकाशमे जब साधक कृष्णके अतीव सुकोमल, सौन्दर्यमण्डित श्यामल चरणोको देख उन्हे हृदयसे लगानेके लिये दौड़ता है और लाल-लाल तलवोको जब नेत्रोंसे लगा कृष्णको अपनी ओर मुस्कुराते हुए देखता है, तब व्रजमे गो-सेवाकी वास्तविकता समझमे आती है।

बुंदेलखंडका 'गोचारण-महोत्सव'

(आचार्य श्रीबलरामजी शास्त्री)

बुंदेलखंड वीरोंकी भूमि है। वीरता-प्रदर्शनके अतिरिक्त बुंदेलोंकी अनेकों विशेषताएँ हैं। कार्तिकके महीनेमे बुंदेलखंडमे अनेको प्रकारके सांस्कृतिक, धार्मिक और पारम्परिक उत्सव मनाये जाते हैं। बुंदेलखंडीय उत्सव बहुत प्राचीन कालसे अपने परम्परागत रूपमें उसी प्रकार मनाये जाते आ रहे हैं जैसे भगवान् श्रीकृष्णके समयमें मनाये जाते थे। स्थानीय लोगोंका विश्वास है कि ये उत्सव भगवान् श्रीकृष्णके समयसे ही मनाये जा रहे है और आज भी उसी हर्ष, उल्लासके साथ मनाये जाते हैं। बुंदेलखंडका 'गोचारण-महोत्सव' भगवान् श्रीकृष्णद्वारा गोचारण-परम्पराका प्रतिरूप ही है। इसी प्रकार यहाँका 'दीपावली-महोत्सव' भी कंसादि दुष्टोके विरुद्ध संघर्ष करनेके नामपर गोकुलके ग्वाल-बालोंको संघटित करनेके लिये बालक कृष्णके द्वारा संचालित परम्पराका रूप है। भगवान् श्रीकृष्णकी गोवत्स-चारणलीला तो प्रसिद्ध ही है। भगवान् जब ग्वाल-बालोके साथ वत्सोंको चराकर लाते थे तो गौएँ अपने वत्सोसे मिलने दौड़ पड़ती थी। ऐसी ही कुछ लीलाएँ बुंदेलखंडमे भी प्रचलित हैं। यहाँ संक्षेपमें कुछ उत्सवोंका परिचय दिया जा रहा है—

बुंदेलखंडीय गोचारण-महोत्सव

बुंदेलखंडका 'गोचारण-महोत्सव' कार्तिक मासके शुक्ल पक्षकी देवोत्थान एकादशीको मनाया जाता है। 'गोचारण-उत्सव' मनानेकी तैयारी पहले दिनसे ही होने लगती है। शुक्ल पक्ष प्रारम्भ होते ही गोचारक प्रातः अपने-अपने हरे-भरे खेतोमे या चरागाहोमे गायोको ले जाकर चराते हैं। कार्तिकके शुक्ल पक्षके गोचारणमे कोई चरवाहा लाठी या पैनेसे किसी गायको नहीं हाँकता। गाये अगर समूहसे बिछुडकर किसी भी कृपकके हरे-भरे खेतोंमे चली जाती है या चरने लगती हैं तो वह किसान या कोई भी दर्शक जाकर बिना किसी लाठी-डंडेके सहारे ही गायको खेतसे दूर कर देता है या कर सकता है। चोट नहीं पहुँचा सकता।

देवोत्थान-एकादशीके दिन गोचारक निर्जल-व्रत रखता है। प्रातः स्नान करके नया वस्त्र धारण करता है और एक हाथमे मोरपंख तथा एक हाथमे बाँसुरी लेकर गोशालामें जाता है। गायोकी पूजा करता है और सभी गाँवके गोचारक एक साथ गायोको छोडकर उनके पीछे-पीछे चलते हैं। सजी-धजी गायोका बडा भारी जुलूस निकल पड़ता है। गोचारक उस दिन निर्जल-व्रत रहकर [illegible] है। सभी गोचारक मौन रहकर आपसमें संकेतसे ही बातचीत करते हैं। मोरपंखसे ही गायोको हाँकते हैं। [illegible] कृषक एकादशीके दिनको गायोंके चरनेके लिए [illegible]

अपने हरे-भरे खेतोका कुछ भाग उसी दिनके लिये छोडे रहते हैं और मौनव्रती गोचारक मोरपंखोंसे गायोको हाँकते हुए उसी सुरक्षित खेतमें ले जाते हैं। गाये वहाॅ पहुँचकर सुखपूर्वक चरने लगती हैं। सुरक्षित खेततक पहुँचनेके पूर्व यदि गाये किसी भी किसानके हरे-भरे खेतमे चरने लगेंगी तो उस खेतका स्वामी कुछ भी नही बोल सकता। मौनव्रती गोचारक मोरपंखेके सहारे गोमाताको हॉकते हुए अपने पूर्व निर्धारित खेतपर ले जाता है। ऐसी परम्परा गाँवोके अतिरिक्त उपनगरोमे भी प्रचलित है। इस गोचारण-महोत्सवको देखकर भगवान् श्रीकृष्णकी गोचारण-लीलाका स्मरण हो उठता है। श्रीकृष्णचन्द्र गायोंको आगे करके स्वयं मध्यमे हो जाते थे। उनके पीछे गायोंका दल हो जाता था। वे लोग खेलते-कूदते और वंशी बजाते चलते थे। श्रीमद्भागवतमें यही प्रसग निम्न प्रकारसे आया है—

तन्माधवो वेणुमुदीरयन् वृतो
गोपैर्गृणद्भिः स्वयशो बलान्वितः।
पशून् पुरस्कृत्य पशव्यमाविशद्
विहर्तुकाम कुसुमाकरं वनम्॥
(श्रीमद्भा० १०। १५। २)

'यह वन गौओके लिये हरी-हरी घाससे युक्त एवं रंग-बिरंगे पुष्पोकी खान हो रहा था। आगे-आगे गौएँ, उनके पीछे-पीछे बॉसुरी बजाते हुए श्यामसुन्दर, तदनन्तर वलराम और फिर श्रीकृष्णके यशका गान करते हुए ग्वाल-बाल—इस प्रकार विहार करनेके लिये उन्होंने उस वनमे प्रवेश किया।'

बुदेलखडीय गोचारक हाथमे वशी अवश्य रखते हैं, किंतु सभी गोचारक बॉसुरी नहीं बजा पाते। श्रीकृष्णके मस्तकपर मोरपंख रहता था। बुंदेलखंडके गोचारक अपने हाथोमे ही मोरपख रखते है। उससे गायोको झाडते रहते है। मौनव्रती होनेके कारण गोचारक बोलकर किसी गायको अन्य किसानोके खेतोमे चरनेसे रोक नहीं पाता।

इस प्रकार हर्षोल्लासपूर्वक दिनभर गोचारक गाय चराते हैं। यदि किसी गोचारकको प्यास लग जाती है और प्यास सहन नहीं हो पाती तो वह गोचारक हाथसे या किसी पात्रसे जलपान नहीं कर सकता। प्यासा गोचारक जमीनपर लेट जाता है और जैसे गायें पानी पीती हैं, वैसे ही तालावमें मुँहसे ही पानी पीता है। व्रती गोचारक यदि सयोगसे बोल देता है, अर्थात् उसका मौन-भंग हो जाता है तो उसे प्रायश्चित्तमें दूसरे (आगामी) वर्षमे पूर्वविधिसे गोचारण करना पडता है। कितनी अटूट श्रद्धा रहती है। कितना अटूट विश्वास सॅजोये रहते हैं ये गोचारक।

जब गाये चरने लगती है तब गोचारक एक स्थानपर बैठ जाते हैं। गाये निर्बाधरूपसे हरी-भरी फसलें चरने लगती है। गोचारक जब यह समझ लेता है कि गायोको प्यास लग गयी होगी तब प्यासी गायोको मोरपंखके सहारे किसी सरोवरके पास ले जाते हैं, वहाँ प्यासी गायें पानी पीती हैं। पानी पीनेके बाद गाये कुछ विश्राम भी करती हैं। गोचारक उस समय गायोके आस-पास ही वैठ जाते हैं। विश्रामके बाद गायें पुनः चरने लगती हैं और सायंकाल सूर्यास्तसे पूर्व ही अपने आवासकी ओर चल देती हैं। गोचारक गायोके पीछे-पीछे एक हाथमें वंशी और दूसरे हाथमे मोरपंख लिये चलते हैं।

गायों और गोचारकोंका स्वागत

गायोके गोशालामें पहुॅचनेके पूर्व गॉवके सभी लोग—स्त्री-पुरुष, बच्चे एक नियत स्थल या मुख्य मार्गपर एकत्रित रहते है। स्त्रियाँ हाथोंमे थालीमे सजायी पूजन-सामग्रीके साथ आगे बढ़ती हैं। गायोंकी आरती उतारी जाती है। मालाएँ पहनायी जाती हैं और इसके बाद सूखे मेवेका प्रसाद वितरित किया जाता है। प्रसाद ग्रहण करके गोचारक अपना मौन-भंग कर सकता है। मौनव्रत-भंग करके गोचारक अपने बडे-बूढोंका पॉव छूकर अभिवादन करते है। गोचारकोका यह गोचारण-व्रत बारह वर्षोंतक चलता है। रात्रिमे गोचारक व्यक्तिगत या सामूहिक रूपमे गोदुग्धसे बनी खीर बडे-बूढो या ब्राह्मणोको खिलाते है। सायंकाल वापस होनेपर गायोके स्वामी अपनी-अपनी गायोका नाम ले-लेकर पुकारते हैं। गाये तुरंत ही उनके पास आ जाती हैं और तब वे अपनी-अपनी गोशालाओमें ले जाकर उन्हे सुरक्षित कर देते हैं। जिनके घर गायें नही रहतीं, ऐसे लोग दूसरोकी गायें ही चराते है। अपनी-अपनी मनौती पूरा करते हैं। यहाँके लोगोका विश्वास है कि इस प्रकारकी गोसेवा

तथा गोचारण-व्रतसे सभी अभिलषित पदार्थ प्राप्त हो जाते है और जीवनमें सुख-शान्ति रहती है। गोचारण-समाप्तिके समय सायंकाल वापसीके बाद गोचारक और नर्तक मिलकर गाते हैं, नाचते हैं। बाजा भी बजता रहता है। कुछ गीतोकी पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

कातिक मास धरम के मास,
दिया जरै सारी रात।
कैऽजौर तुलसी के घड़ा,
कैऽपण्डन की चौपाल॥
चलो सखी! वहाँ चलै,
जहाँ बसै 'बृजराज'।
दधि बेचै दरशन करै,
एक पन्थ दो काज॥
वृन्दावन वसियो युरो,
होन लगी अनरीत।
तनिक दही के कारनें,
बहियाँ गहे अहीर॥

इस लोकगीतमे भगवान् श्रीकृष्णकी रास-लीलाका कुछ भाव स्पष्ट प्रतीत होता है। '*एक पन्थ दो काज*'मे दही बेचना और भगवान् कृष्णके दर्शनकी बात भी स्पष्ट होती है। एक दूसरा पद्य भी गाया जाता है, इसमे गायोंके गोशालामें जानेका संकेत है—

गइयाँ (गाये) गईं गगवारे (गोशाला)
भैंसे गईं बड़ी दूर।
अहीर के बालक ने लाठी मारी,
झरैं कमल के फूल॥



प्राचीन महाराष्ट्रकी गो-सेवा

(डॉ० श्रीभीमाशकरजी देशपांडे, एम्० ए०, पी-एच्०डी०, एल्-एल्० बी०)

महाराष्ट्रके प्राचीन कालका इतिहास गो-सेवाके विषयमे महत्त्वपूर्ण है। संत नामदेव, ज्ञानेश्वर, संत एकनाथजी, रामदासजी तथा अन्य संतोने गोसेवाका कार्य महत्त्वपूर्ण माना है। भागवतधर्ममें इस सेवाका विशेष स्थान है। संत एकनाथजी अपने भावार्थ रामायणमे कहते है—

गाई ब्राह्मण करावया घातु।
स्वप्नी नुपजे मनोरथु॥
त्यावरी उचली शरड हातु।
ऐसा सूर्य वंशात शूर नाही॥८२॥
गाई ब्राह्मणापुढे।
आमुचे शौर्य बापुडे॥

गौ-ब्राह्मणका घात करनेका साहस हमारे सूर्यवशमे किसीने नहीं किया। गौ और ब्राह्मणके सम्मुख हमारा शौर्य नष्ट प्रतीत होता है।

भगवान् परशुरामसे भेंट होते ही प्रभु रामचन्द्रका यह वचन नाथजी सुनाते हैं। वे और भी कहते हैं—

जो राजा गो-ब्राह्मणकी सहायता करता है, उसका गुणगान स्वर्गमे भी होता है।

समर्थ रामदासजीके मार्गदर्शनसे ही छत्रपति शिवाजी महाराजने हिंदूराज्यकी स्थापना की। यावनी आक्रमण-कालमे देशमे धर्मभावना जाग्रत् की। गुरुकी कृपासे ही उन्हें 'गोब्राह्मण-प्रतिपालक'की उपाधि प्राप्त हुई। शिवाजी महाराजको लिखे हुए पत्रमे रामदासजी कहते हैं—

सकल तीर्थे मोडिली।
ब्राह्मण स्थाने भ्रष्ट झाली।
सकल पृथ्वि आदोव्ळली।
धर्म गेला॥७॥
देवधर्म गो ब्राह्मण।
करावयासि सरक्षण॥
हृदयस्थ झाला नारायण।
प्रेरणा केली॥८॥

सभी तीर्थोंका नाश हुआ। ब्राह्मण-स्थानोंको नष्ट किया गया। सम्पूर्ण पृथ्वी अस्थिर बन गयी और धर्मका विनाश हुआ। देव, धर्म और गौ-ब्राह्मणकी रक्षा करने-हेतु हृदयमे स्वयं नारायण ही प्रकट हुए हैं। उनकी ही प्रेरणा हुई। इस धर्मस्थापना-कार्यको तुम्हें सँभालना है।

रामदास आदि संतोके गौ माताके लिये जीवनदान देने तथा भक्तोपर कृपा करनेके अनेक प्रसग प्राप्त होते हैं। समर्थजीके मठ दक्षिण प्रदेशोमे यवन-व्याप्त क्षेत्रोमें ही अकसर पाये जाते है। धर्म-प्रसारमे उनकी वह योजना थी। इस विभागके अपचंद मठमे दो सौ धेनु-सम्पदा थी। वहाँ आनेवाले भक्तोंको छॉछ और जवारी भूनकर बनाये आटेका प्रसाद मिलता था। वे एक कुशल संघटक संत थे। उनके आदेशसे बने हुए श्रीशिवा छत्रपतिके हिन्दूराज्य आनन्दभवनमे गोमाताका आदर था। शिवा छत्रपतिजीके राज्यकी यह अवस्था कवि भूषणकी रचना श्रीशिवराजभूषणसे भी ज्ञात होती है। दक्षिण भारतका यह भूप्रदेश सनातन कालसे ही गो-सेवामे योगदान देता आया है।



'कुमाऊँ' की गोपालन-परम्परा

(डॉ० श्रीबसन्तवल्लभजी भट्ट, एम्० ए०, पी-एच्० डी०)

हिमालय प्रदेशका एक पर्वतीय भाग-विशेष कूर्माचल अथवा कुमाऊँके नामसे जाना जाता है। इसीका पौराणिक नाम मानस-खण्ड किवा उत्तर कुरुदेश भी है। वर्तमानमें कुमाऊँसे अल्मोडा, पिथौरागढ़ तथा नैनीताल—इन तीन जनपदोका बोध होता है। अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य-रचनाके लिये यह विख्यात है। हरे-भरे वन-प्रदेशों तथा सुरम्य हरी-भरी घाटियोके लिये यह क्षेत्र अत्यन्त प्रसिद्ध है। यहाँका प्राकृतिक जीवन अत्यन्त सौम्य, शान्त एवं सादगीपूर्ण है। प्रकृतिका अत्यन्त सानिध्य होनेसे यहॉके प्राणिजगत्-जीवजगत्में भी अत्यन्त सहजता एव स्वाभाविकता है। प्रस्तुतमे तो केवल गायकी बात करनी है। अस्तु, हरे-भरे जंगल तथा विस्तृत घास-भरे चरागाह यहॉके गोवंशके लिये प्रकृति-प्रदत्त वरदान है। पहाड़ोंकी तलहटीमें बसे यहॉके ग्राम्य-जीवनका मुख्य आधार गौ ही है। जंगलके बाहुल्यसे हरा चारा वर्षभर विद्यमान रहता है। प्रातः ही दूध दुहनेके बाद गोष्ठसे निकालकर गौओंको कुछ दूर जंगलकी ओर चरने छोड दिया जाता है। और शामको स्वतः गाये चरकर लौट आती हैं। प्रत्येक घरसे निकली हुई पृथक्-पृथक् गौएँ आगे चलकर एक विस्तृत समूहके रूपमे हो जाती हैं और समूहके रूपमें ही चरनेके लिये जाती हैं।

प्रत्येक गॉवके आस-पास विस्तृत गोचर-भूमि रहती है, जहॉ गौएँ स्वच्छन्द-रूपसे हरी-हरी घास चरती हैं और प्राकृतिक झरनों तथा नदी-नालोंका जल पीती हैं। शामको लौटनेपर फिर उन्हें चारेकी विशेष अपेक्षा नहीं रहती। केवल थोडा-सा चारा दे दिया जाता है। वर्षमें प्रायः ९-१० महीने हरा चारा उपलब्ध रहता है, केवल गर्मीके कुछ दिनोके लिये सूखे चारेका प्रवन्ध रहता है। खेतीसे प्राप्त धानके पुआल (फसल लेनेके बाद बचा पौधा)-को सुखाकर सुरक्षित रख लिया जाता है, यह चारेका मुख्य साधन है। मैदानी भागोकी तरह यहाँ चारा काटकर नहीं खिलाया जाता, अपितु समूचा ही गायके सामने रख दिया जाता है। इसके अतिरिक्त यहॉके पहाड़ोमें एक 'गाज्यो' नामकी घास स्वतः उगती है, जो लगभग ३-४ फुट लंबी होती है। जब यह घास लगभग डेढ़ फुटकी होती है तो 'दाब्' कहलाती है। यह हरे चारेके रूपमे इस क्षेत्रमे प्रचुरतासे प्राप्त होती है जो गायोंको अत्यन्त ही प्रिय है। गायको जंगलमे इधर-उधर विचरण करते हुए 'दाव्'का चरना अत्यन्त ही भाता है। लंबी होनेपर इसी घासको काटकर सुखाकर सुरक्षित कर लिया जाता है और गर्मीके दिनोंमें गौओको खानेके लिये दिया जाता है। इस घासको अपने-अपने घरोंके आस-पास सूखी जमीनपर अथवा आस-पासके पेड़ोंपर गुम्बदके रूपमें एकत्रकर एक विशेष तरीकेसे सुरक्षित किया जाता है। इस ढेरको यहॉकी भाषामें 'लुट्' कहा जाता है। आज भी इन्हें वहाँ देखा जा सकता है। इसी प्रकार विस्तृत वन-प्रदेशोमें बॉझ नामक एक ईधनकी लकडी यहाँ विपुलतासे प्राप्त होती है। यह एक सघन पत्तोवाला वृक्ष है, जो शीत प्रदेशका प्रमुख वृक्ष है। इसकी कोमल-कोमल पत्तियॉ गायोको बहुत ही प्रिय हैं तथा दुग्धवर्धक भी है, ग्रामीण स्त्रियॉ इन्हें जगलसे काटकर लाती हैं और गायोको खिलाती हैं। ये कोमल पत्ते 'पालौ'

(पल्लव) कहलाते हैं। इसी प्रकार 'भेकुल' नामक एक पेड़ भी यहाँ बहुतायतसे होता है। उसकी पत्तियाँ भी गायोका मुख्य आहार है, यह भी दुग्धवर्धक है।

यहाँ सिसुण या 'सिन्' नामक एक काँटेदार पत्तियोंवाला छोटा पौधा होता है, जो कदाचित् छू जाय तो पूरे शरीरमे झनझनाहट पैदा कर देता है, इसीलिये यहाँकी माताएँ उनके बच्चे जब शैतानी करते हैं तो सिसुण घास छुआनेका भय दिखलाती हैं, बच्चे डरकर शैतानी छोड़ देते हैं। यह सिसुण बड़ा ही दुग्धवर्धक है। जब यह मुलायम रहता है तो इसे किसी कपड़े या लकड़ीके सहारे तोड़कर एकत्र कर लिया जाता है और ओखलीमे कूटकर किसी बडे बर्तनमें पानी छोड़कर पका लिया जाता है। उसमें कुछ आटा तथा हलका नमक छोड़ दिया जाता है। वह गाढा-गाढा पेय पदार्थ स्थानीय भाषामे 'दौ' कहलाता है जो गौओके लिये बड़ा ही प्रिय और पुष्टिकारक भी होता है। इससे दूध भी बढ़ता है।

इस प्रकार यहाँ प्राकृतिक चारा पर्याप्त मात्रामे होता है, अत: दाना, खली-भूसा आदि देनेकी कोई परम्परा नहीं है और न उपलब्ध चारेको काटकर ही खिलाया जाता है, जैसा उत्पन्न होता है वैसा ही गाय-बैलोके सामने सायंकाल दूध दुहनेके पश्चात् डाल दिया जाता है। गाय यथेच्छ उसे ग्रहण करती है और फिर फैलकर वही गायका गुदगुदा बिछौना भी हो जाता है। बरसातके दिनोमे जमीनकी नमीसे बचानेके लिये 'रणेल' नामक एक हरे पौधे-विशेषकी पत्तियोंको गोठ (गोष्ठ) में बिछा दिया जाता है और प्रात:-काल गायोके चरने जानेके पश्चात् एकत्र कर लिया जाता है। गोमूत्र-गोबरके संयोगसे वह बहुत अच्छी खादका रूप धारण कर लेता है। प्रात: नित्य गोष्ठकी सफाई की जाती है और उसे एक स्थानपर एकत्र कर लिया जाता है, वही खाद बन जाती है। बादमें उसे खेतोमे छोड़ा जाता है।

गाभिन गाय तथा गायके छोटे बछड़े घरमें रहते हैं। शेष गाय-बैल प्राय: नित्य ही चरने जगलमे जाते हैं। प्रत्येक ग्रामके पास अपनी गोचरभूमि है, जहाँ वर्षभर प्राय: हरी-हरी घास उपलब्ध रहती है। ब्यायी हुई गायका विशेष ख्याल रखा जाता है। प्राय: १० दिनतक उसका दूध आशौचजन्य मानकर प्रयोगमे नहीं लिया जाता। कोई-कोई लोग २२ दिनतक प्रयोगमे नहीं लेते। बछड़ेसे बचे उस दूधसे घी वनाकर नैवेद्य वनाया जाता है फिर उसी नैवेद्यसे भगवान्का भोग लगाया जाता है। तव फिर ग्रहण करते हैं। ग्यारहवें दिन वछड़े-वछियोका नामकरण-संस्कार करनेकी परम्परा है। प्राय: रंगके आधारपर नाम रखा जाता है, जैसे काले रंगकी गाय 'काली' लाल रंगकी गाय 'रतुली', धूमर रंगकी गाय 'धुमरि'। इसी प्रकार अत्यन्त सीधी एव दुधार गायको लछिमी (लक्ष्मी) नाम दिया जाता है। वैलोंको भी 'कल्वा', 'लहार' आदि नाम दिये जाते हैं। नाम सुनते-सुनते गाय-वैल भी अभ्यस्त हो जाते हैं और पुकारनेपर पास चले आते हैं।

गायोके प्रति यहाँ अत्यन्त ही आदर एवं पूज्य-भाव है। गोग्रासकी सुदीर्घ परम्परा है। प्राय: प्रत्येक दिन घरकी स्त्रियाँ प्रात: नहा-धोकर गेहूँ अथवा जौके आटेके चार ग्रास बनाकर रोली-चन्दन तथा जलका लोटा लेकर गोष्ठमे पहुँच जाती हैं। गायके चरण पखारती हैं, मुँह धोती हैं, टीका लगाती हैं और गोग्रास खिलाकर परिक्रमा करके घरमे आती हैं और अपना गृहकार्य प्रारम्भ करती हैं। सद्गृहिणियोंके दैनिक जीवनका प्रारम्भ गोग्राससे ही होता है। विशेष तिथि-उत्सवों एवं पर्वोपर तो और भी उत्साह एवं श्रद्धासे गाय-बैलोकी पूजा तथा शृंगार किया जाता है। श्राद्धके दिन पितरोको परोसा गया अन्न गोमाताको ही दिया जाता है।

जगलोमे पानीकी नमीवाली जगहोमे जोक नामक एक काला कीडा यहाँ वहुत मिलता है, जिसे यहाँके लोग 'जुगु' कहते हैं। गाये जव चरनेके लिये मुँह नीचे करती हैं तो यह उनके नाकमे चला जाता है और धीरे-धीरे खून चूसता रहता है। गायें दुर्वल हो जाती हैं। इससे गायोंको वड़ा कष्ट होता है। वादमें गाये जव घरमे पानी पीनेके लिये वर्तनमे मुँह डालती हैं तो यह भी नाकसे थोडा बाहर निकलता है। इसकी पकड़ वड़ी मजवूत होती है। उस समय कोई व्यक्ति कपड़ेके सहारे इसे खींच लेता है या किसी तरह नाकमे नमक इत्यादि छोडकर इसे छुडाया जाता है। इसी प्रकार खुरोमे भी कभी-कभी वीमारी हो जाती है। खुर पक जाते हैं, इसे 'खुर्याँत' कहते हैं, यह संक्रामक रोग है। कुछ घरेलू औषधियोंद्वारा इसका उपचार किया जाता है।

प्राकृतिक चारेका सेवन करनेसे यहाँकी गायोंका दूध वडा ही स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है। इसमें एक [illegible]

स्वाभाविक मिठास होती है। ऐसे ही गायके घीको यहाँ सभी रोगोकी दवा माना जाता है। कुछ भी शारीरिक या मानसिक रोग हो 'गायका घी दो' यही कहा जाता है। छोटे बच्चों तथा रोगियो एवं दुर्बल व्यक्तियोको धारोष्ण दूध पिलाया जाता है। दही कच्चे दूधका जमाया जाता है। उसे एक विशेष प्रकारकी लकड़ीके बर्तनमें ही जमाया जाता है। जिसमें दही जमाया जाता है वह बर्तन छोटे-बड़े नापका होता है, जो यहाँकी भाषामें 'ठेकी' कहलाता है। दहीको कुमाऊँमें सगुनका सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ पदार्थ माना जाता है। शादीमें बरातके आगे-आगे एक व्यक्ति 'दहीकी ठेकी' या 'सगुनकी ठेकी' लेकर चलता है। मट्ठेके लिये जिस लकड़ीके बडे बर्तनमे दही जमाया जाता है, वह वर्तन 'विंडा' कहलाता है और नौनी (नवनीत-मक्खन) जिस लकड़ीके बर्तनमें रखा जाता है उसे 'फरुवा' कहते है तथा जिसमे बिलोकर घी रखा जाता है उस लकडीके बर्तनको 'हड़पी' कहा जाता है। दूध-दहीका गिर जाना अशुभ माना जाता है।

सामान्यतः यहाँकी गायोंका जीवन १०-१२ वर्षका होता है। बैलोकी भी प्रायः यही आयु रहती है। २-३ सालकी बछिया ब्याने योग्य हो जाती है। गाये दूध तो कम देती हैं, पर दूध बडा ही मधुर एवं स्वादिष्ट होता है। दूध दनेवाली गाय 'धिनुवा' (धेनु) कहलाती है तथा जब गायका दूध छूटने लगता है या वह एक ब्यॉतमें ८-९ महीने दूध दे चुकी होती है तो बाखड़ी (वाष्कयिणी) कहलाती है। ऐसी गायका दूध बड़ा ही गाढ़ा और मीठा होता है। सामान्यतः गायको 'गोरु' और बैलको 'बल्द' कहा जाता है।

प्रायः प्रत्येक घरमे एक-दो गाय तथा एक बैल या बैलकी जोड़ी रहती है। वैलोंसे खेती की जाती है। गाय-बैलसे घरकी समृद्धिका अनुमान लगाया जाता है और गायोंका पालना शुभ माना जाता है। लोग आपसमें जब कुशल-क्षेमका समाचार पूछते हैं तो उसी क्रममें 'धिनालि कतुक् छ' अर्थात् दूध देनेवाली गाये कितनी हैं?—यह प्रश्न अवश्य पूछा जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक घरमें गाय अवश्य रखी जाती है। शामको जंगलसे गाये जव समूहमे घर लौटती हैं, उस समयका दृश्य बड़ा ही मनोरम दीखता है। गाये अपना-अपना घर पहचानती हैं। गोष्ठमे भी अपने ही स्थानपर जाकर खड़ी हो जाती हैं। ब्यायी हुई गाये रँभाती हुई, दौड़ती हुई आती हैं और अपने बछडेको चाटती हुई अपना वात्सल्य-स्नेह प्रकट करती हैं।

यहाँके लोगोंका विश्वास है कि भैंसके दूधसे बुद्धि भैंस-जैसी ही मोटी हो जाती है। गायोमे एक दिव्य ज्ञानशक्ति होती है। जब वे घनघोर जंगलोमे चरने जाती हैं तो कभी-कभी बाघकी शिकार भी वन जाती हैं। कहीं आस-पास बाघ हो तो गायोंको पता नहीं किस शक्तिसे उसका भान हो जाता है। सब गायें रँभाती हुई एक समूहमे एकत्र हो जाती हैं, उनके कान खड़े हो जाते हैं। समूहमें बाघ आक्रमण नहीं कर पाता, किंतु एक-दोको अकेले पाकर मार देता है।

यद्यपि यहाँ कोई बड़ी गोशाला नही तथापि यहाँका प्रत्येक घर गोशाला है। प्रत्येक गोष्ठ पूजास्थल है, तीर्थ है। फिर भी कहीं-कहीं गायोंकी बड़ी दुर्दशा भी दीखती है। मुख्य समस्या उनके निवासस्थान गोष्ठकी है। कुमाऊँके ग्रामीण अंचलोमे प्रायः पत्थरके तीन मंजिले ढालूदार छतवाले मकान वनते है। जिसके मध्यभागमें लोग रहते हैं, ऊपरकी मजिलमे रसोई इत्यादिका कार्य होता है तथा निचली मंजिलमे गायोंका स्थान रहता है। जो यहाँकी भाषामे गोठ (गोष्ठ) कहलाता है। इसमें प्रकाशका अभाव रहता है तथा इसकी ऊँचाई भी बहुत अधिक नहीं रहती। प्रायः बरसातमें सीलन भी रहती है। कोई-कोई लोग अलगसे एक दुमंजिला मकान बना लेते है, जो यहाँकी भाषामे 'छान्' कहलाता है। ऊपरके मंजिलमे गायोका सूखा चारा रहता है और नीचे गाये रहती हैं।

देशके मैदानी भागोकी तरह अभी यहाँ कसाइयोका आतक नहीं है। किसी गायका वध हुआ या गाय वधके लिये बेच दी गयी, कहीं भी ऐसा नहीं सुना जाता। इसका मुख्य कारण यहाँकी भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति है, जो गायोको सुरक्षित रखती है। यहाँका जो भी गोवंश है वह अपनी स्वाभाविक आयु स्वाभाविक ढंगसे पूर्ण करता है। यहाँका गोवश पूर्ण सुरक्षित है। यहाँके सीधे-साधे ग्रामीण गोचारक 'गायका वध किया जाता है' इस बातको कोई कितना ही जोर देकर कहे, किसी भी तरह विश्वास

नहीं कर सकते, न ऐसी कल्पना ही कर सकते हैं। गौके प्रति इतनी अटूट धार्मिक आस्था, इतना आस्तिक भाव उनके रोम-रोममे प्रविष्ट है कि वे इस बातको सुनकर ही काँप उठते हैं।

पञ्चगव्य तथा पञ्चामृतका यहाँके धार्मिक जीवनमें तो जो स्थान है, सो तो है ही, अभी कुछ दिनों पूर्वतककी बात है, प्रत्येक घरके आँगनमें एक सुरक्षित स्थानमें एक बर्तनमे गोमूत्र रखा रहता था। कहीं बाहरसे घरमें प्रवेश करनेसे पूर्व गोमूत्र छिड़कना तथा उसका पान करना बहुत ही आवश्यक समझा जाता था। सारा घर गोबर-मिट्टीसे ही लीपा जाता था। प्रत्येक शुभ पर्व एवं उत्सवोपर घरकी देहलीको अनिवार्य-रूपसे गोबरसे लीपा जाता था। ऐसा न करनेपर बड़ा ही अमंगल तथा अशुभ समझा जाता था। जननाशौच, मरणाशौच आदिमें भी गोमूत्र-गोबरके छिड़काव एवं पञ्चगव्यके पानके विना शुद्धि नहीं समझी जाती। धार्मिक अवसरो तथा विवाहित उत्सवोमे गोदान तथा बछियाके दानकी परम्परा है। यहाँकी धार्मिक आस्थामे बछियाके दानको विशेष प्रशस्त माना गया है। दोषकारक नक्षत्रोमे उत्पन्न शिशुके तथा माता-पिताके अरिष्ट-निवारणके लिये गोमुख-प्रसव-शान्ति की जाती है। जिसमे उत्पन्न शिशुको एक नवीन सूर्पमें रक्त वस्त्र बिछाकर उसमे तिलोके ऊपर लिटाकर पुनः रक्त सूत्रसे लपेटकर उसे आचार्यद्वारा गौके मुखके समीप ले जाया जाता है और गौके शरीरमें स्पर्श कराकर गौके पृष्ठभागमे बैठी माताको दे दिया जाता है। इससे उस बालकको गोमुखसे उत्पन्न समझा जाता है और उसके सारे दोष-पापोंकी शान्ति भी समझी जाती है। इस प्रकार कुमाऊँके पर्वतीय प्रदेशमे गौ जन-जनके जीवनमे अनुस्यूत-सी है।



विदेशोंमें गाय

विदेशोंमें गायका महत्त्व—कुछ संस्मरण

(श्रीलल्लनप्रसादजी व्यास)

गोदुग्ध-पान और गोमांस-भक्षणके बारेमें भारत और विदेशोंके चिन्तन तथा व्यवहारमे विचित्र विडम्बना या विरोधाभास दिखायी पड़ता है। भारत आदिकालसे गोपूजक देश रहा है। जहाँ *'बिप्र धेनु सुर संत हित'* भगवान्का अवतार हुआ तथा जहाँ दूधके उत्पादनमें अधिकता होनेसे ऐसा माना जाता रहा कि कभी यहाँ दूधकी नदियाँ बहती थीं, वहीं इस देशमे आज स्थिति यह हो गयी है कि धड़ल्लेसे गायें कटती हैं और गोवध बंद करानेके लिये गोभक्तोंद्वारा आन्दोलन तथा आमरण अनशन होते हैं। जहाँतक गोदुग्धका प्रश्न है, कुछ क्षेत्रोंको छोड़कर अधिकांशमे गोदुग्ध एक दुर्लभ वस्तु हो गयी है। गौके दूधका स्थान भैंसके दूधने ले लिया है। फलस्वरूप गोपालक भारत देशमे गोवंशका दिन-प्रति-दिन ह्रास हो रहा है। दूसरी ओर विदेशोमे चाहे वे पश्चिमके देश हों या पूर्वके, दूधकी बहुतायत है और कुछ देशोमें गौके दूधका उत्पादन वहाँके प्रमुख उत्पादनमे-से है और वे देश गौके दूधकी बनी वस्तुएँ संसारभरको निर्यात करते है, जबकि इन सभी देशोंमें गोमांस-भक्षण भोजनकी एक आम आदत है। इन देशोंमें दूधका मतलब गौका दूध ही माना जाता ह, भैंसका दूध नहीं। कुछ देशोमे तो भैंस अजायबघरमे रहनेवाले पशुके समान है।

कई वर्ष पूर्वकी वात है, फारमोसा (तैवान) की यात्राके दौरान रास्तेमे पड़नेवाले गाँवमे कहीं-कहीं भैंस दिखायी पडी तो एक अधिकारीसे पूछा गया कि इसके दूधका आपके देशमे क्या उपयोग है? तो उन्होंने सहज भावसे उत्तर दिया कि 'इसका बच्चा पीता है।' इसके आगे कोई प्रश्न करनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई, किंतु मनमें यह प्रश्न कौंधता रहा कि क्या यहाँ भैंसके दूधका उसके बच्चेके पीनेके अलावा और कोई उपयोग नहीं है? कुछ समय बाद जब पुनः उस देशकी यात्राका संयोग उपस्थित हुआ और उसी प्रकार फिर ग्रामीण क्षेत्रोंसे गुजरते हुए भैंसें दीख पड़ीं तो पूछनेपर पता चला कि भैंसके दूधका उपयोग 'केवल इसके बच्चेके पीनेके लिये होता है।' दोनों बार ऐसा उत्तर सुनकर इसी निष्कर्षपर पहुँचना पड़ा कि यहाँ कोई मनुष्य भैंसका दूध पीता ही नहीं है। कोई भैंसके दूधको पिये, इसकी कल्पना ही नहीं उठती।

कुछ वर्ष पूर्वतक थाईलैंडमें भी यही स्थिति थी, किंतु वहाँ पूर्वी भारतीय लोगोने पहुँचकर गायके बजाय भैंस पालना शुरू किया और भैंसके दूधका प्रचार किया।

इस प्रकार गायके दूधका मानव-जीवनमें अनिवार्य उपयोग होनेके बावजूद भी गाय अधिकांश देशोंमे पूजनीय नहीं है और गोमांस-भक्षणका व्यापक प्रचार है। विदेशोंमें कोई गोवध-निषेधका प्रश्न भी नहीं उठाता। उन्हे अभी यह ज्ञान प्राप्त होना है कि गाय और अन्य पशुओंमे बड़ा अन्तर है तथा गायका दूध ही मनुष्यका स्वास्थ्य बढ़ाता है, उसका मांस मानव-स्वास्थ्यका सबसे बड़ा शत्रु है तथा अनेक रोगोको जन्म देता है। पश्चिमी देशोकी अनेक बीमारियोके मूलमे यदि खोज की जाय तो अत्यधिक मात्रामें गोमांस-भक्षण ही कारण दिखायी पड़ेगा। इधर कुछ वर्षोमें विभिन्न कारणोंसे विदेशियोंमे शाकाहार बढ़नेकी प्रवृत्तिको देखते हुए नये अनुसंधान किये जा रहे हैं और यह निष्कर्ष निकाले जा रहे हैं कि शाकाहार मनुष्यके स्वास्थ्य और दीर्घ जीवनके लिये बहुत जरूरी है।

बालीमे गोमांस-भक्षण-सम्बन्धी विडम्बना सबसे अधिक विचित्र है। यह इंडोनेशियाका हिन्दू-बहुल द्वीप है। यहाँकी ९० प्रतिशतसे अधिक जनसंख्या हिन्दू है। वे अपनेको हिन्दू कहनेमे गौरवका अनुभव करते है। साथ ही वहाँ वर्ण-व्यवस्था भी विद्यमान है और इसके लिये भी उन्हें गौरवका बोध होता है। किंतु यह जानकर बड़ा कष्ट हुआ कि वहाँके हिन्दू केवल मासभक्षी ही नहीं, अपितु गोमासभक्षी भी हैं। वहाँ अधिकतर श्यामा गाये होती हैं, जिनका कद छोटा होता है और मुख तथा आँखें हिरनी-जैसी होती हैं, वे बड़ी सुन्दर दिखायी पड़ती है। वहाँके जीवनमें गौका इतना महत्त्व है कि मृत्युके बाद शवको एक कागजकी गाय बनाकर उसमें रखकर अग्निको समर्पित किया जाता है, ताकि गायकी सहायतासे स्वर्गमें जाना सम्भव हो सकेगा।

इधर कुछ वर्षोमे बालीके कुछ विद्वान् हिन्दी, संस्कृत एव हिन्दू शास्त्रोका अध्ययन करनेके लिये भारत आये और उन्हे प्रेरणा हुई कि बालीमे हिन्दुओको सही अर्थोमे हिन्दू बनानेके लिये गोमांस-भक्षण छोड़ देना चाहिये और उन्होने वहाँकी भाषामें इसके बारेमें पुस्तकें लिखकर यह प्रचार करनेका प्रयास किया है कि गोमांस-भक्षण हिन्दू-धर्मके विरुद्ध आचरण है। इसका असर धीरे-धीरे हो रहा है।

ऐसे ही विद्वानोसे कुछ अन्य तथ्योंकी जानकारी मिली है, जिसके मुख्य विवरण इस प्रकार हैं—

१-बालीमें एकमात्र क्षेत्र 'तरो' है, जहाँ सफेद गाय मिलती है। इस गायको 'लम्बू' कहते हैं और लोग इसकी पूजा करते हैं।

२-भारतकी तरह बालीके श्रद्धालु भी गोबर और गायका मूत्र पूजनमें शुद्धिके रूपमें इस्तेमाल करते हैं।

३-बालीकी राजधानी देनपसारमे एक छोटा-सा द्वीप है, जिसका नाम 'नूसापनिदा' है। प्राचीन कालमें यह वैष्णव-क्षेत्र था, यहाँके लोग गोमांस नहीं खाते थे। यदि कोई खाता था तो उसे गाँवसे निकाल दिया जाता था या जो परिवार गोमांस-भक्षी थे वे गाँवमे नहीं, अपितु वनमे जाकर खाते थे।

४-बालीमे जो लोग अज्ञानवश गोमांस खाते थे या गाय मारनेवाले कसाईखानेसे होकर गुजरते थे तो उन्हें नदीमें स्नान करके गाँवमे प्रवेश मिलता था। इसके बाद माता या वृद्ध लोग गङ्गा-जलका आवाहन करके उसके मुँहपर छींटे मारते थे।

५-बालीके वृद्ध लोग कहते हैं कि प्राचीन कालमे जो लोग गोमांस खाते थे, उन्हे कुत्तेसे ज्यादा नीच समझा जाता था।

६-बालीके प्राचीन ग्रन्थोंमें कुछ श्लोक और दूसरे ऐसे उल्लेख मिलते हैं, जिनमें पञ्चगव्यके महत्त्वके बारेमे बताया गया है। इसका उपयोग वे पूजामे और प्रायश्चित्तके समय भी करते थे।

७-इंडोनेशियाकी प्रसिद्ध रामायण 'काकविन' के महाकवि योगेश्वरने गायका महत्त्व दिग्दर्शित करनेवाले कई श्लोकोंका उल्लेख किया है। इन श्लोकोके माध्यमसे महाकविने बताया है कि ससारमें पशुकी स्थिति बहुत दयनीय है और उसमे भी गायकी और भी अधिक। महाकविने अच्छे और बुरे व्यक्तियोकी यह पहचान भी बतायी है कि बुरे व्यक्ति गायपर अधिक सामान लाद देते हैं और ऊपरसे मारते भी हैं तथा उसके शरीरको केवल भक्षण करनेवाले मासके रूपमें देखते हैं, किंतु अच्छे लोग गायके प्रति करुणाका भाव रखते हैं और गायको कोई कष्ट नहीं देते।

८-बालीमें मनुष्योंकी तरह गायका भी दाह-सस्कार होता है। वह भी श्मशानपर नहीं बल्कि बाग-बगीचे-जैसे पवित्र स्थानपर।

थाईलैंडमें तो गायके महत्त्वको देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँके अनेक बौद्ध-मन्दिरोमे गायकी मूर्तियाँ मिलती हैं। बैंकाकके संसार-प्रसिद्ध बुद्ध-मन्दिरमे, जिसमे नीलमकी बुद्धमूर्ति रखी है, गायकी प्रतिमा भी स्थापित है और यह अत्यन्त प्रमुख स्थानपर है, जहाँ सभीकी दृष्टि जाती है। इसी मन्दिरके बगलमें एक और बुद्ध-मन्दिर है जिसके अंदर शिवलिंग और नदी दोनो बने हैं।

कम्बोडियाके अगकोर नामकी अनेक भग्न प्रतिमाओमे भी गऊकी प्रतिमा विद्यमान है। दो मन्दिर क्रमशः भगवान् विष्णु और शिवजीको समर्पित हैं तथा इनकी दीवालोपर रामायण और महाभारतके अनेक प्रसंग उत्कीर्ण हैं। न केवल वियतनाम, थाईलैंड और कम्बोडिया अपितु अन्य अनेक देशोने भी गौको पर्याप्त महत्त्व दिया है। ईसा पशुवधके विरोधी थे। बाइबिलमे वृषभको देवता माना गया है। फिलस्तीनमें खुदाईके उपरान्त गौकी मिट्टीकी कुछ मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई थीं। यहूदी लोगोंमे गौका बड़ा आदर था। उनकी कुछ कथाओके पढ़नेसे ज्ञात होता है कि वे बहुत ही निपुण गोपालक थे। यहूदियोके धर्मशास्त्रकी आज्ञा थी कि दवाई करते समय बैलके मुँहमे जाली मत लगाओ। यहूदी भक्तोकी धारणा थी कि याकूबने एक बछड़ेको मारकर उसकी माता गौको दुःख पहुँचाया था, इसलिये उसका बेटा यूसुफ मर गया।

मेसोपोटामियाँमे सुमेरियन नामके लोग रहते थे। गौके लिये सुमेरियन भाषाका शब्द 'गु' है। उनके प्राचीन सिक्कोंपर भी गौके चिह्न अङ्कित रहते थे। कुछ वर्ष पूर्व सुमेरियामे खोजका कार्य हुआ था। तेलेलओबीद मन्दिरकी दीवालपर गाय-बैल और ग्वालोके कई चित्र मिलते हैं, जिनमे कही गोदोहन हो रहा है तो कहीं दूध बह रहा है आदि। एक चित्रमें बैलोका जुलूस है। इन चित्रोसे यह अनुमान किया जा सकता है कि सुमेरियन लोग गौका कितना आदर करते थे। सुमेरी और बेबीलोन प्रदेशोंमें कुछ वर्ष पूर्व गोवध-विरोधी कानून बना दिया गया था।

मिस्रमे भी गाय-बैलोकी पूजा होती थी। उनकी हथोर नामक देवी गौ ही है। हथोरके समान आपिस वृषभकी भी उपासना की जाती है। पिरामिड और खुदाईमें प्राप्त मन्दिरो और शिला-लेखोसे यह ज्ञात होता है कि प्राचीन मिस्रकी संस्कृतिमें गाय और बैलकी उपासना होती थी, मिस्रमे गोहत्या नहीं होती थी। गोहत्या करनेवालेको प्राणदण्ड मिलता था। जिस प्रकार हिन्दू वैतरणी पार करनेके लिये गायकी पूँछ पकडते हैं, उसी प्रकार मिस्रवासी गायकी पूँछ पकड़कर नील नदी पार करते हैं।

यूनानियोंके गौ-प्रेमके बारेमें कहा जाता है कि जब सिकन्दर भारतसे लौटकर यूनान जाने लगा था तो वह अपने साथ एक लाख उत्तम जातिकी गाएँ यहाँसे ले गया था।

पूर्वी देशो, विशेष रूपसे जापानमे मानव-स्वास्थ्यको लेकर जो नयी-नयी जागरूकता पैदा हो रही है, उसमें गौके दूधका सेवन व्यापक रूपसे बढ़ रहा है। जिस तरहसे अनेक देशोमे जगह-जगह मशीनोंके माध्यमसे सिक्के डालकर शीतल पेय प्राप्त किये जा सकते हैं, वैसे वहाँ मशीनोंके माध्यमसे जगह-जगह दूधकी व्यवस्था उपलब्ध है।

हालैंड, जर्मनी, बेल्जियम, डेन्मार्क, आस्ट्रेलिया आदि देश गौके दूधके उत्पादनमे इतने आगे बढ गये हैं कि इनमेंसे कुछ देशोंमे यदि यह कहा जाय कि यहाँ दूधकी नहरें बहती हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वर्तमान युगमे यह कैसी विडम्बना उभर कर सामने आयी है कि गो-भक्षक देश गायके दूधके उत्पादन और उपयोगको महत्त्व दे रहे हैं और गोपूजक देश गौके दूध और उसकी बनी हुई वस्तुओंकी अनिवार्यता समाप्त करके गोवंशके ह्रासको जान-बूझकर प्रश्रय दे रहे हैं, भारतके लिये तो यह बहुत लज्जाजनक बात है। यदि गौके दूधकी माँग और खपत नहीं होगी और कृषिके लिये बैलोंकी जरूरत [illegible] नहीं होगी तो गोवंशकी वृद्धि किस सम्भावनाके [illegible] होगी?

अतः आज सभीको गोरक्षण और [illegible] और विशेष सचेष्ट रहते हुए गोहत्या बंद करानेके [illegible] प्राणपणसे जुट जाना चाहिये।

गाय और इस्लाम

देशमें विद्वेषपूर्ण और भ्रामक प्रचार किया जाता रहा है कि इस्लाम गोवधकी इजाजत देता है। निम्नलिखित उद्धरणों और तथ्योसे यह स्पष्ट है कि इस्लाम और उसके पैगम्बर तथा प्रतिष्ठित नेता गायको सदा आदरकी दृष्टिसे देखते आये हैं।

[१] 'गायका दूध और घी तुम्हारी तंदुरुस्तीके लिये बहुत जरूरी है। उसका गोश्त नुकसानदेह और बीमारी पैदा करता है, जबकि उसका दूध भी दवा है।'—हज़रत मुहम्मद (नासिहाते हादौ)

[२] 'गायका दूध बदनकी खूबसूरती और तंदुरुस्ती बढ़ानेका बड़ा जरिया है।'—हज़रत मुहम्मद (बेगम हज़रत आयशासे)

[३] 'बिला शक तुम्हारे लिये चौपायोंमें भी सीख है। उनके (गायके) पेटकी चीजोंमेंसे गोबर और खूनके बीचमेंसे साफ दूध, जो पीनेवालोंके लिये स्वादवाला है, हम तुम्हे पिलाते हैं।'—कुरानशरीफ १६-६६

[४] 'अच्छी तरह पली हुई ९० गायें १६ वर्षोंमे न सिर्फ ४५० गायें और पैदा करती हैं, बल्कि उनसे हजारों रुपयेका दूध और खाद भी मिलते हैं। गाय दौलतकी रानी है।—हज़रत मुहम्मद (मौला फारुखीद्वारा संकलित, 'बरकत' और सरक़तमें)

इन राजाओं और बुजुर्गोंने गोहत्या बंद करवायी थी—

[५] मुगल बादशाह बहादुरशाहके खास पीर मौलवी कुतुबुद्दीन साहबने फतवा दिया था कि 'हदीस'में कहा है कि जाबेहउलबकर (गायकी हत्या करनेवाला) कभी नहीं बख्शा जाना चाहिये।

—इस फतवेपर इन बुजुर्गवारोके दस्तखत हैं—

मुहम्मद शाह गाजी शाह आलम बादशाह।

सैयद उताउल्लाखान फिदवी।

पीर मौलवी कुतुबुद्दीन।

काजी मियाँ असगर हुसैन दस्तखत खास वल्द मुन्शी इलाही खान।

दरोगा आतिशखान हुजूरपुरनूर।

[६] बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, मुहम्मदशाह आलम-जैसे शासकोंके अलावा अब्दुलमुल्क इब्ने मरदान सूबेदार ईराक, वाली हुकुमत अफगानिस्तानने सौसे ज्यादा उलेमा अहले सुन्नतके फतवाके मुताविक गायकी कुर्बानी बंद करायी।

[७] ब्रिटिश-कालमें जिन मुसलमान शासकोंने अपनी इन रियासतोंमें गोहत्याको बंद कराया था, वे थे—नवाव रावनपुर, नवाब मंगरौल, नवाव दुजाना (करनाल), नवाव गुड़गाँव और नवाब मुर्शिदावाद।

[८] मौलाना फरुखी लिखित 'खैर व वरकत' से पता चलता है कि शरीफ मक्काने भी गोहत्यापर पाबंदी लगवायी थी।

[९] लखनऊके छह उलमाएँ सुन्नतने गोहत्या-बंदीका फतवा दिया था।

[१०] इमाम जाफर साहबने इरशाद फरमाया था, 'गायका दूध दवा है, इसके मक्खनमें शिफा (तंदुरुस्ती) है और मांसमें बीमारी।'

[११] 'मुसलमानको गाय नहीं मारना चाहिये। ऐसा करना हदीसके खिलाफ है।' (मौलाना हयात साहब खानखाना हाली समद साहब)

[१२] 'गायकी बुजुर्गी इहतराम किया करो, क्योंकि वह तमाम चौपायोंकी सरदार है।' (तफसीर दर मन्सूर)

आधुनिक इस्लामी नेताओंकी दृष्टिमें गाय

[१३] भारतीय स्वातन्त्र्य संग्रामके प्रसिद्ध सेनानी हकीम अजमलखानका कहना है, 'न तो कुरान और न अरबकी प्रथा ही गायकी कुर्बानीकी इजाजत देती है।'

[१४] जब १९२२ में मौलाना अब्दुलवारी साहब मरहूम फिरंगी महलीने जब गायकी कुर्बानीको बंद करनेके लिये फतवा शाया किया था तो महात्मा गाँधीने उनका शुक्रिया अदा किया था। [प्रेषक—श्रीपीला रामकृष्णजी]

भारतीय सिक्कोंपर गाय और वृषभ

(डॉ० मेजर श्रीमहेशकुमारजी गुप्ता)

प्राचीन कालसे ही भारतीय समाजमे गायको गोमाताके नामसे ही सम्बोधित किया जाता है। भारत मूलतः कृषि-प्रधान देश है और गाय एवं बैल (वृषभ) का कृषिमे प्रमुख स्थान है। छठी सदी ईस्वी-पूर्वसे भारतके स्वतन्त्र होनेतक गौ तथा वृषभको प्रायः अधिकाश शासकोद्वारा सिक्कोपर स्थान मिला है, जो इनकी महत्ता एव उपयोगिताको दर्शाता है। गायका सबसे अच्छा अङ्कन प्राचीन भारतके लिच्छवी गणराज्यके शासक अंशुवर्माके सिक्कोपर मिलता है। वृषभका अङ्कन पञ्चमार्क, एरण, औदुम्बर, अयोध्या, कौशाम्बी, सातवाहन, उज्जयिनी, क्षत्रप, यौधेय, कृष्णराज (कलचुरी), सामन्तदेव, जहॉगीर, इन्दौर रियासत तथा स्वतन्त्र भारतके प्रथम सिक्कोंपर मिलता है। यहॉ तत्तत् कालोमे मान्य उन सिक्कोका संक्षेपमे विवरण दिया जा रहा है।

(१) लिच्छवी गणराज्य—प्राचीन भारतका प्रमुख गणराज्य लिच्छवी गणराज्य था, जो अब नेपाल कहलाता है। जिस प्रकार भारतवर्षमे चन्द्रगुप्त मौर्यके कालको प्रामाणिक मानते हैं, उसी प्रकार नेपालके इतिहासकार अशुवर्माके कालको आधार मानकर चलते हैं। वह सिहके समान बलवान् था। राजा अशुवर्माने जो सिक्का प्रचलित किया वह उन्हींके नामसे प्रसिद्ध हुआ, इसका विवरण इस प्रकार है—

धातु—तॉबा, वजन ११ ५ ग्राम, आकार २ से०मी०, काल ५०० ई०।

अग्रभाग—गाय खडी है, उसके गलेमें घटी बॅधी है। बछडा गायका दूध पी रहा है तथा ऊपर ब्राह्मी लिपिमे लेख है 'का मे देहि' (कामधेनु)। चारो तरफ बिन्दु बने है।

पृष्ठभाग—गर्वीला सिह अगला पंजा उठाये खडा है। उसके पंख लगे है, ऊपर ब्राह्मीमें 'अंशुवर्मा' लिखा है।

(२) गुहिला शासक बप्पा (मेवाड़)—मेवाडके गुहिला शासकोमे बप्पा प्रमुख थे। उनके अभीतक कुल तीन सिक्के ही मिले हैं।

धातु—सोना, वजन ७ ५ ग्राम, आकार २.४ से०मी०, समय २००ई०।

अग्रभाग—सिक्केके अग्रभागमे बिन्दु, छतरी तथा गायका दूध पीते हुए बछड़ा बना है और नीचे मछली बनी हुई है।

पृष्ठभाग—सिक्केके पृष्ठभागमें शिवलिंगके सामने बैठा हुआ नन्दी, नीचे लेटा हुआ मनुष्य और ऊपर 'श्रीबप्पा' लिखा हुआ है।

(३) पञ्चमार्क—ईसा-पूर्व छठी सदीसे दूसरी सदीतक सारे भारतवर्षमे पञ्चमार्क सिक्के चलते थे। इनपर किसी राजाका नाम नहीं पाया जाता, केवल पाँच अलग-अलग चिह्न पाये जाते हैं। इन सिक्कोपर अभीतक ५०० से अधिक प्रकारके चिह्न पहचाने जा चुके हैं। विवरण इस प्रकार है—

धातु—चॉदी, वजन ३.२ ग्राम, आकार २ ० से०मी०, समय ६ ई०पूर्व।

अग्रभाग—खड़ा हुआ वृषभ, सूर्य, हाथी, डमरू दोनो तरफ 'मकार' बना है।

पृष्ठभाग—मेरु पर्वत दिखाया गया है।

(४) एरण—मध्यप्रदेशमे सागर-बीना रेलवे लाइनपर एरण नामका एक नगर स्थित है। प्राचीन कालमे यह एक प्रमुख नगर था। यहॉके सिक्के बहुत ही अच्छे माने जाते हैं। विदिशा, अवन्ती तथा एरणके सिक्कोंमे काफी समानता है, जिससे मालूम पड़ता है कि इनमे राजनैतिक सम्बन्ध था। इनका समय ३०० ई० पू० से १५० ई०पूर्व है।

धातु—ताँबा, वजन ७ ५ ग्राम, आकार चौकोर १ ६ से०मी०, समय ३०० ई०पूर्व।

अग्रभाग—पाँच चिह्न ऊपर, दाये वृषभ, बाये शेर, नीचे दाये हाथी, बाये चिह्न। मध्यमे नदी। पृष्ठभागमे ऊपर बायी ओर कोनेमे चिह्न बना है।

(५) औदुम्बर—पाणिनिके गणपाठ-प्रकरणके अन्तर्गत उल्लिखित राजन्यसमूहमे उदुम्बर नामका उल्लेख है। इनके वंशजोको औदुम्बर कहा जाता है। महाभारतमें जितने गणोका वर्णन मिलता है, उनमे औदुम्बरका भी नाम आया है। विष्णुपुराणमें कुणिन्द जातिके साथ इनका नाम आता है। यह जाति कॉंगड़ा और अम्बाला प्रान्तमें निवास करती थी, उन्हींके वशज गुजरातमे औदुम्बर ब्राह्मण (गुजराती) के नामसे विख्यात हैं। औदुम्बरके सिक्कोंपर ब्राह्मीमें भी मुद्रा-लेख है। यह मुद्रा रुद्रवर्माकी है।

धातु—ताँबा, वजन ६० ग्राम, आकार २ से०मी०, समय २००-१०० ई०पूर्व।

अग्रभाग—दाहिनी ओर मुँह किये वृषभ खडा है, कमलका फूल बना है तथा खरोष्ठीमें लेख है—'रानो वामासिका रुद्रवर्मासा विजियता।'

पृष्ठभाग—हाथी, त्रिशूल तथा ब्राह्मीमें खरोष्ठीवाला लेख ही अङ्कित है।

(६) अयोध्या—प्राचीन कोसल राज्य वर्तमानकालमें अवधके नामसे विख्यात है। सरयू नदीके किनारे इसकी राजधानी अयोध्या साकेतके नामसे प्रसिद्ध थी। अयोध्याके सिक्के सर्वथा भारतीय शैलीके हैं। मित्रवंशके दस राजाओके सिक्के मिले हैं। चित्रमें प्रदर्शित सिक्का आर्य मितासाका है।

धातु—ताँबा, वजन ७०० ग्राम, आकार १८ से०मी०, समय २०० ई० पू०।

अग्रभाग—खड़ा हुआ नन्दी, नीचे ब्राह्मीमें लिखा हुआ—'आर्य मितासा'।

पृष्ठभाग—ताडका वृक्ष तथा वृक्षको देखता हुआ मोर अङ्कित है।

(७) कौशाम्बी—आधुनिक इलाहाबादसे ३७ कि०मी० दक्षिण-पश्चिम यमुनाके समीप वत्स नामक जनपद था, जिसका उल्लेख बौद्ध-ग्रन्थोंमें भी मिलता है। वर्तमान कोसाम (कौशाम्बी) उस राज्यकी राजधानी थी। यह प्रधान सैनिक केन्द्र था तथा यहाँ व्यापारिक मार्ग पश्चिमकी ओर जाता था। शुंग-कालके बाद यहाँके राजा अपने नामका स्वतन्त्र रूपसे सिक्का चलाने लगे। बृहस्पति मित्रके सिक्के अधिक मिले हैं।

धातु—ताँबा, वजन ६५ ग्राम, आकार गोल २५ से०मी०, समय ३०० ई०पूर्व।

अग्रभाग—बायीं ओर मुँह किये वृषभ खड़ा है। ध्वज-दंड तथा अन्य चिह्न अङ्कित है।

पृष्ठभाग—घेरेमें वृक्ष, स्वस्तिक, चक्र, मेरु पर्वत आदि चिह्न बने है।

(८) सातवाहन—मौर्य साम्राज्यके पतनके बाद भारतमे अनेक राज्योका उदय हुआ। दक्षिण भारतमें मौर्योके उत्तराधिकारी सातवाहन नरेश माने जाते है। इनका नाम पुराणोंमे आन्ध्रजातीयके रूपमें उल्लिखित है। इस वंशको अभिलेखोमे सातवाहन-कुलके नामसे वर्णित किया गया है। सातवाहन सिक्केका विवरण इस प्रकार है—

धातु—लेड (सीसा), वजन १०.५ ग्राम, आकार गोल २ से०मी०, समय १६० ई०पू०।

अग्रभाग—दाये मुँह किये खड़ा हुआ वृषभ, पीठके ऊपर मेरु पर्वत, ब्राह्मीमें 'रानो सरासात वाहन सा' अग्रभागमें लिखा हुआ है।

पृष्ठभाग—पाँच शाखाओवाला पेड़, श्रीवत्स तथा मकार बना हुआ है।

(९) आन्ध्र—सातवाहन शासकोका आन्ध्रप्रदेशमे राज्य विस्तृत होनेपर ही पुराणोमे इस वंशको आन्ध्रजातीय कहा गया। प्राचीन हैदराबाद (वर्तमान आन्ध्र प्रदेश) रियासतके कोडंपुर नामक स्थानसे ताँबे तथा सीसेके अनेक सिक्के उपलब्ध हुए है।

धातु—सीसा, वजन १३ ग्राम, आकार गोल १.२ से०मी०, समय १५० ई० पू०।

अग्रभाग—अग्रभागमें दायीं ओर मुँह किये वृषभ खड़ा है।

पृष्ठभाग—शाखाओवाला वृक्ष पृष्ठभागमे बना है।

(१०) विदिशा—बेसननगर (विदिशा, भिलसा) मुख्य राजकीय मार्ग मथुरासे उज्जैनपर स्थित है। अशोक महान्‌की ससुराल विदिशा थी। मौर्य शासन-कालसे ही यह महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँके सिक्कोपर उज्जैन एरणके सिक्कोंका प्रभाव दीखता है।

धातु—ताँबा, वजन ६.५ ग्राम, आकार चौकोर २ से०मी०, समय २०० ई०पू०।

अग्रभाग—दायें मुँह किये वृषभ खड़ा है, सामने चैत्यमें वृक्ष बना है।

पृष्ठभाग—विदिशाका चिह्न अङ्कित है।

(११) उज्जयिनी—आधुनिक मालवाका नाम अवन्ति (उज्जयिनी) था। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी। यह स्थान मौर्यकालसे ही महत्त्वपूर्ण रहा है। यहाँके सिक्कोंपर एक विशेष चिह्न मिलता है, जिसे उज्जयिनी-चिह्न कहते हैं। कुछ सिक्कोपर उज्जयिनी भी लिखा मिला है।

धातु—ताँबा, वजन ७.० ग्राम, आकार गोल २ से०मी०, समय २०० ई०पू०।

अग्रभाग—दाहिने मुँह किये हुए वृक्षके सामने वृषभ खड़ा है तथा खड़े हुए पुरुषकी आकृति बनी है।

अग्रभाग	पृष्ठभाग	अग्रभाग	पृष्ठभाग	अग्रभाग	पृष्ठभाग
१		२		३	
४		५		६	
७		८		९	
१०		११		१२	
१३		१४		१५	
१६		१७		१८	
१९		२०		२१	

पृष्ठभाग—उज्जयिनीका चिह्न अङ्कित है।

(१२) क्षत्रप—पहले कुषाण साम्राज्य कई प्रान्तोंमें वँटा था और प्रान्तीय शासकोको 'क्षत्रप' कहा जाता था। क्षत्रप युगका अधिकांश इतिहास सिक्कोपर लेखद्वारा ही जाना गया है। क्षत्रपोकी पॉच शाखाएँ थीं—(१)तक्षिला पाटिक नामका शासक, (२) मथुरा रंजुबाल नामका शासक, (३) वाराणसी खरपासलाना, (४) मालवा क्षहरातवंशी नहापना, (५) सौराष्ट्र चेष्टन। मालवा-उज्जैनमे पश्चिम क्षत्रपोने चॉदी, तॉबा, पोटिनके सिक्के निकलवाये। इन सिक्कोपर एक तरफ राजाकी मुखाकृति रहती है। यह सिक्का वृषभवाला है, जो महाक्षत्रप रुद्र दमनका है। इस सिक्केका विवरण इस प्रकार है—

धातु—पोटिन, वजन २ २ ग्राम, आकार गोल १ ५ से०मी०, समय १३० ई०।

अग्रभाग—इस सिक्केके अग्रभागमे दाहिने मुँह किये खडा वृषभ तथा खरोष्ठी लिपिमें चारो तरफ 'महाक्षत्रप रुद्र दमन' लिखा हुआ है।

पृष्ठभाग—बायीं ओर चॉद, दायीं ओर सूर्य, ब्राह्मीमें वही अग्रभागका लेख तथा बीचमे मेरु पर्वत बना है।

(१३) विष्णु कुण्डी (पल्लव)—इन शासकोंकी अभीतक पूर्ण जानकारी नहीं मिली है, क्योकि इनपर कोई लेख नहीं है। ये सिक्के आन्ध्रप्रदेश तथा दक्षिणमें काफी मिले हैं। इनमे शेर और वृषभ दो प्रकारके सिक्के पाये जाते हैं। इनका समय ३२० से ७०० ईस्वीतक माना जाता है।

धातु—हल्की चॉदी, वजन ९ ५ ग्राम, आकार गोल १ ८ से०मी०, समय ३२०-७०० ई०।

अग्रभाग—दाये मुँह किये खड़ा हुआ वृषभ बना है।

पृष्ठभाग—स्टेंडपर रखा हुआ घड़ा बना है तथा दोनों तरफ त्रिशूल अङ्कित है।

(१४) नरवरके नाग—विष्णुपुराणमे नौ नाग-राजाओका वर्णन है, जिनका पद्मावती-मथुरातक राज्य था। ग्वालियरके पास नरवर नामक स्थानपर इनकी राजधानी थी।

धातु—तॉबा, वजन २.५ ग्राम, आकार ०.५ से०मी०, समय २००-४०० ई०।

अग्रभाग—मध्यमें बायीं ओर मुँह किये वृषभ खडा है।

पृष्ठभाग—पीछे ब्राह्मीमें 'महाराज श्री वृषभ' अङ्कित है।

(१५) यौधेय—बहुत प्राचीन समयसे यौधेय जाति व्यास नदीके पार भारतके उत्तर-पश्चिमी प्रान्तमें रहती थी। इस जातिका प्रधान कार्य युद्ध करना था। इनका अस्तित्व मौर्य-शासन, क्षत्र तथा कुषाण-कालमें ज्यों-का-त्यों बना रहा। दूसरी सदीमें यौधेय जाति उन्नतिके शिखरपर थी। मौर्य-शासनकी समाप्तिपर उन्होने अपना सिक्का निकाला। वर्तमान समयमें यह प्रान्त रोहतक नामसे प्रसिद्ध है, आठ सौ वर्षोंतक यौधेय शासकोंका शासन स्थिर रहा। प्राप्त सिक्केका विवरण इस प्रकार है—

धातु—ताँबा, वजन ६.० ग्राम, आकार गोल २ से०मी०, समय ३०० ईस्वी।

अग्रभाग—चैत्यमें वृक्ष वना है तथा वृक्षकी ओर मुँह किये वृषभ खडा है, ब्राह्मीमें 'बहुधान्यक/भूमि धनुष' लिखा है।

पृष्ठभाग—हाथी तथा नन्दीका पाद-चिह्न वना है।

(१६) कृष्णराज (कलचुरी)—कलचुरी-वंशके शुरूमे चॉदीके सिक्के निकले हैं, जो गुप्त सम्राट् स्कन्दगुप्तके चॉदीके सिक्कोके अनुकरण हैं। इन सिक्कोंपर कृष्णराजका नाम पढा है। सिक्केपर क्षत्रपोके समान ही मूँछ-सहित राजाकी आकृति है तथा गुप्तलिपिमे मुद्रालेख लिखा है।

धातु—चाँदी, वजन ३.५ ग्राम, आकार गोल १.५ से०मी०, समय ५५० ईस्वी।

अग्रभाग—मध्यमें वृषभ तथा चारों ओर मुद्रालेखमें 'परम माहेश्वर मातृ-पितृ-पादानुध्याती कृष्ण राज' लिखा हुआ है।

पृष्ठभाग—राजाका सिर और मूँछे दिखायी पडती हैं।

(१७) सामन्तदेव—प्राचीन समयमें काबुलका भूभाग ईरानी राजाओके अधिकारमे था। सातवीं सदीके बाद उस क्षेत्रके शासकको शाहकी पदवी प्राप्त थी। वे क्षत्रिय थे, परंतु बौद्ध मतानुयायी थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग (६३० ई०) ने लिखा है कि काबुलका राजा शाह कहा जाता था। ७ वींसे ११वीं सदीतक काबुल शाहने शासन किया और सिक्के प्रचलित किये। अरब-आक्रमणके बाद काबुल इस्लामके अधिकारमे चला गया और अरबके खलीफाको कर देने लगा। काबुलके क्षत्रिय शाही नरेशोंके स्थानको

ब्राह्मण ललिलयने ग्रहण किया, जो पिछले शाही वंशका संस्थापक था। इन राजाओंके सिक्कोमें एक तरफ नन्दी तथा दूसरी तरफ घुड़सवार अङ्कित है।

धातु—चाँदी, ताँबा, वजन ३ ५ ग्राम, आकार गोल १.५ से०मी०, समय ७-११ वीं सदी।

अग्रभाग—बायें मुँह किये बैठा हुआ वृषभ तथा ऊपर 'श्री सामन्त देव' लिखा है।

पृष्ठभाग—घोड़ेपर बैठा हुआ राजा हाथमे भाला लिये है।

(१८) कौथकुल—कौथकुल शासकोका कुषाण नरेशोंसे कुछ सम्बन्ध जरूर रहा है, क्योकि इन्होने सिक्केके अग्रभागपर कुषाण शासकोंकी तरह शिव तथा नन्दीको मुद्रित किया। ये सिक्के हरियाणा सुनेतमें या तो वासुदेव सिक्कोके साथ मिले हैं या यौधेयके साथ। इनका समय २-३ सदी है। सिक्कोंसे शैव धर्मका असर उस भू-भागमें मालूम पड़ता है।

धातु—ताँबा, वजन ५ ०० ग्राम, आकार गोल १.७ से०मी०, समय २००-३०० ईस्वी।

अग्रभाग—दो भुजाधारी खड़े हुए शिव हैं, हाथमें त्रिशूल है, पीछे खड़ा हुआ नन्दी बना है।

पृष्ठभाग—त्रिशूल तथा चारो तरफ बिन्दु बने हैं। बीचमें चिह्न है (कुछ विद्वानोंने इसे 'कोट' पढ़ा है)।

(१९) जहाँगीर—मुगल बादशाह जहाँगीर, जो मुगल पिता अकबर तथा हिन्दू माता जोधाबाईका पुत्र था, ने अपने शासनकालमें बारह राशियोंके सिक्के चलाये, जो सोने तथा चाँदीमें बनाये गये। चित्रमें प्रदर्शित सिक्का वृषभ राशिका है। शाहजहाँके शासनकालमें यह फरमान जारी किया गया कि जिस किसीके पास इस राशिके सिक्के हों उन्हे खजानेमें जमा कर दे, अन्यथा ऐसा सिक्का रखनेपर मृत्यु-दण्ड दिया जायगा। अत: ये सभी सिक्के चलनसे बाहर कर दिये गये। इसलिये आजके संग्रहकर्ताओके लिये ये सिक्के दुर्लभ हैं। यह सिक्का आगरा टकसालका है।

धातु—चाँदी, वजन ११.५ ग्राम, आकार गोल २ से०मी०, समय १०२७ हिजरी, १६१७ ईस्वी।

अग्रभाग—बाये मुँह खड़ा हुआ वृषभ तथा पीछे सूर्य अङ्कित है।

पृष्ठभाग—पृष्ठभागमे 'अकबर शाह अज जहाँगीर शॉह सने जुलूस बाफत दर आगरा'—लिखा हुआ है।

(२०) इन्दौर रियासत (तुकोजीराव द्वितीय)—मराठा राज्य मल्हार राव होल्करद्वारा स्थापित किया गया। पेशवाद्वारा मल्हाररावको उनकी सेवाओसे खुश होकर १२ परगना नर्मदाके उत्तरमें दिये गये, जो बादमे इन्दौर रियासत बनी। इन्दौरको अहिल्याबाईके शासनकालमे राजधानी बनाया गया। अहिल्याबाईके शासन-कालसे ही इन्दौर तथा महेश्वर टकसालसे सिक्के निकलने शुरू हो गये थे। तुकोजीराव द्वितीयद्वारा शिवलिंग तथा नन्दीवाला ताँबेका सिक्का निकाला गया।

धातु—ताँबा, वजन १२ ग्राम, आकार गोल १ ७ से०मी०, समय १८४४ ई०।

अग्रभाग—सिक्केके अग्रभागमें शिवलिंगके सामने बाये मुँह किये बैठा हुआ नन्दी है तथा शिवलिगके ऊपर सर्प बना है।

पृष्ठभाग—सिक्केके पृष्ठभागमे हिन्दीमे 'आधा आना' लिखा हुआ है। ऊपर उर्दूमे 'शाह आलम', नीचे 'बेलपत्र' अङ्कित है।

(२१) भारत सरकार—भारत १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हुआ, परंतु १९५० ई० तक भारत सरकारने कोई नये सिक्के नहीं ढलवाये और वह पुरानी ब्रिटिश मुद्राको ही चलनमे लाती रही। बंबई, कलकत्ता टकसालके साथ ही तीसरी टकसाल हैदराबाद भी १९५० के बाद शामिल हो गयी।

स्वतन्त्र भारतके सबसे पहले सिक्कोमे सारनाथका शेर (अशोकको लाट), वृषभ और घोडा अङ्कित किये गये।

धातु—क्यूपोनिकल, वजन ५ ८ ग्राम, आकार चौकोर २ ३ से०मी०, समय १९५४ ई०।

अग्रभाग—बाये मुँह किये खडा हुआ वृषभ बना है। एक तरफ अंग्रेजीमे 'टू आनाज' तथा दूसरी तरफ हिन्दीमें 'दो आना' लिखा है तथा नीचे १९५४ ई० सन् बना है।

पृष्ठभाग—अशोक-स्तम्भके तीन शेर [illegible] चारो तरफ अंग्रेजीमे 'गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया' लिखा है तथा नीचे तारा अङ्कित है।

गौसे प्रेय और श्रेयकी प्राप्ति

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेत-
स्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।

(कठोपनिषद् १। २। २)

आधुनिक जगत्में लौकिक सुखोकी सर्वथा उपेक्षा कर केवल परमार्थके पथपर विचरण करनेवाले मनुष्य विरले ही है। अधिकांश लोगोंकी महत्त्वाकांक्षा और प्रयत्न सांसारिक सुख-सुविधाओतक ही सीमित हैं। जिनके मनमे श्रेयके प्रति महत्त्वबुद्धि है, वे भी प्रेयको छोड़ना नहीं चाहते। प्रेय और श्रेय दोनोंको हस्तगत करना चाहते है। उनके मनमे लोक और परलोक दोनोके लाभ उठानेकी इच्छा है। वे '**भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव**' कर देनेवाला उपाय ढूँढते हैं। क्या ऐसा होना सम्भव है? क्या ऐसा कोई साधन है, जिससे स्वार्थ और परमार्थ दोनों सधें? प्रेय और श्रेय—भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त हो सके? उत्तरमें निवेदन है—हॉ, ऐसा होनेके लिये दो साधन हैं—'भगवान्‌का भजन और गौओकी सेवा।' गौओसे प्रेय और श्रेयकी प्राप्तिमें किस प्रकार सहायता मिलती है, यही यहॉ विचारणीय विषय है।

श्रीमद्भगवद्गीतामे बतलाया गया है कि लोकपितामह ब्रह्माजीने जब आदिकालमें समस्त प्रजाओंको उत्पन्न किया, तब उनके सामने यज्ञका आदर्श रखा और कहा—इसके द्वारा तुम सब लोग अपनी-अपनी उन्नति करो। यह तुम्हे अभीष्ट कामनाओ—मनोवाञ्छित भोगोंको देनेवाला होगा। इससे तुम्हे 'इष्ट काम' अर्थात् प्रेयकी प्राप्ति होगी—'**अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्**।' (गीता ३। १०) इतना ही नहीं, तुम लोग इस यज्ञके द्वारा देवताओकी उन्नति करो और देवता भी तुम्हें उन्नत अवस्थामें पहुँचावे। इस प्रकार स्वार्थ छोड़कर एक-दूसरेकी उन्नतिके लिये प्रयत्न करते हुए तुम सब लोग परम श्रेय (मोक्ष) को प्राप्त होओगे—

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ॥

(गीता ३। ११)

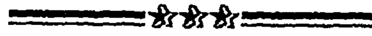
इस प्रकार यज्ञको प्रेय और श्रेय दोनोंकी प्राप्तिका साधन बताया गया है। यज्ञके दो स्वरूप हैं—एक तो भगवत्प्रीत्यर्थ किये जानेवाले सभी कर्मोको यज्ञ कहते हैं और दूसरा वेदोक्त विधिके अनुसार किया जानेवाला यजनरूप कर्म भी यज्ञ कहलाता है। यहाँ 'यज्ञ' शव्दसे दोनों ही प्रकारके कर्म अभीष्ट हैं। गोमाताकी सहायतासे हम दोनों ही प्रकारके यज्ञ करनेमें सफल हो प्रेय और श्रेयके अधिकारी बन सकते है।

ब्राह्मण और गौ दोनो ब्रह्माजीकी संतान हैं। ब्रह्माजीकी संतति होनेसे ही उनकी 'ब्राह्मण' संज्ञा हुई है। इसी प्रकार गौएँ भी ब्रह्माजीकी ही पुत्री है। इसीलिये शास्त्रोमे 'नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च' कहकर उनकी वन्दना की गयी है। इन दोनोके सहयोगसे वैदिक यज्ञकी सिद्धि होती है। ब्राह्मणोमे वेदमन्त्र प्रतिष्ठित हैं और गौओमे हविष्यकी स्थिति है[१]।

यहाँ 'गौ' कहनेसे गोमाताका ग्रहण तो होता ही है, धरती माताका भी ग्रहण होता है। ये दोनों ही गोशव्दके वाच्यार्थ हैं। इसके सिवा धरती भी ब्रह्माजीकी ही पुत्री है और इसका आधिदैविक रूप भी गौ ही है। राजा पृथुने गोरूपमें ही पृथ्वीका दोहन किया था। असुरभावापन्न राजाओंके भारसे पीडित होकर पृथ्वीने गोरूपसे ही भगवान्‌को पुकारा था और महाराज परीक्षित्‌ने दिग्विजयके समय गोरूपमें ही पृथ्वीका दर्शन किया था। वस्तुतः धेनु और धरतीमें कोई भेद नही है। इन दोनों रूपोंमे प्रतिष्ठित हुई गौसे हविष्य (हवनीय पदार्थ) की उत्पत्ति होती है। धेनुसे दूध और धरतीसे अन्न होता है। यो दोनों हवि हैं। अन्नका संस्कार करके नाना भाँतिके हवनोपयोगी पदार्थ तैयार किये जाते है। इसी प्रकार दूधसे भी दही, घी आदि

१-ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधाकृतम्। एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति॥

अनेक प्रकारके हविष्य बनते हैं। ब्राह्मणोद्वारा उच्चारित वेदमन्त्रसे गौके द्वारा प्रस्तुत किये हुए हवनीय पदार्थोंकी जो अग्निमें आहुति दी जाती है, उससे भाँति-भाँतिके विभिन्न यज्ञ सम्पन्न होते हैं। इस यज्ञरूप धर्मके दो फल हैं—अभ्युदय और निःश्रेयस। दूसरे शब्दोमे प्रेय और श्रेय। गीता तो इसका समर्थन करती ही है, वैशेषिक दर्शनमें भी धर्मके ये ही दो फल माने गये हैं। इन्हींमें अन्य सारे फलोंका समावेश हो जाता है। इन्हीं दो फलोंके आधारपर धर्मकी परिभाषा निश्चित की गयी है—'यतोऽभ्युदय-निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।' अभ्युदय अथवा प्रेय लौकिक सुखका नाम है। इसमे राज्य, धन, स्त्री, पुत्र, गृह, परिवार, दास, दासी, शय्या, वाहन तथा वस्त्राभूषण आदि सभी वस्तुओका अन्तर्भाव है। निःश्रेयस या श्रेय भगवत्प्राप्ति और मोक्षके ही नामान्तर हैं। यही मानव-जीवनका चरम एव परम पुरुषार्थ है। इसे पाकर फिर और कुछ पाना शेष नहीं रहता।



गोदान तथा गोपूजन

(क) गोदानकी सामान्य बातें

गोदान एवं गोपूजनका फल

गौएँ प्राणियोको दूध पिलानेके कारण प्राण कहलाती हैं। इसलिये जो दूध देनेवाली गौका दान देता है, वह मानो प्राण-दान करता है। वेदके विद्वान् कहते हैं कि गौएँ समस्त प्राणियोको शरण देनेवाली है, इसलिये जो धेनुदान करता है, वह सबको शरण देनेवाला है।[१]

गोदान करनेसे मनुष्य अपनी सात पीढी पहलेके पितरोंका और सात पीढी आनेवाली संतानोंका उद्धार करता है। (महा०, अनु० ७४। ८)

जो एक गाय और एक बैल दान करता है, उसे वेदाध्ययनके फलकी प्राप्ति होती है तथा जो विधिपूर्वक गौओंका दान करता है, उसे उत्तम लोक मिलते हैं। (महा०, अनु० ७६। २०)

न्यायसे प्राप्त की हुई एक भी कपिला गौका दान देनेसे पुरुष पापोसे छूट जाता है। (महा०, अनु० ७१। ५१)

वात्सल्य-गुणसे युक्त एव उत्तम लक्षणोवाली जवान गौको वस्त्र ओढ़ाकर ब्राह्मणको दान करनेसे मनुष्य सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त हो जाता है और उसे असुर्य नामक अन्धकारमय लोको (नरको) मे नहीं जाना पड़ता। (महा०, अनु० ७७। ४-५)

जो मनुष्य प्रतिदिन जौ आदिके द्वारा गौकी पूजा करता है, उसके पितृगण और देवता सदा तृप्त होते हैं। जो सदाचारी पुरुष नियमपूर्वक प्रतिदिन गायोंको खिलाता है, वह सच्चे धर्मके बलसे सारे मनोरथोको प्राप्त करता है। जो व्यक्ति गौओंके शरीरसे गदगी, मच्छर आदि हटा देता है, उसके पूर्वज कृतार्थ होते हैं। यहाँतक कि 'यह भाग्यवान् सतान हमारा उद्धार कर देगा' यह सोचकर वे उस अत्यन्त उत्सवमय कार्यके लिये आनन्दसे नाचने लगते हैं। (पद्म०, पाताल० अ०, १८)

जो मनुष्य सवेरे उठकर हाथमे जलका पात्र लेकर गौओमे जाता है, उनके सींगोको सींचता है और फिर उस जलको अपने मस्तकपर धारण करके उस दिन उपवास करता है, उसे वहुत पुण्य होता है। तीनो लोकोंमें सिद्ध, चारण और महर्षियोके द्वारा सेवित जितने तीर्थ हैं, गौओंके सींग-जलका अभिषेक उन सव तीर्थोमे स्नान करनेके समान है। (पद्म०, सृष्टि०, अ० ४८)

दानके योग्य गौ

दुग्धवती, खरीदी हुई, विद्याके प्रभावसे पायी हुई, प्राणोकी भी अपेक्षा न कर पराक्रमसे पायी हुई, विवाहमें [illegible] आदिसे मिली हुई, दु.खसे छुडायी हुई और अपने [illegible] लिये आयी हुई गौ प्रशंसनीय मानी जाती है। [illegible] शीलसम्पन्न तथा तरुण और उत्तम [illegible] गौ [illegible] प्रशंसनीय मानी जाती हैं, परंतु जैसे नदियोंमें [illegible] मानी जाती है, इसी प्रकार गौओंमे कपिला गौ उत्तम [illegible] है। (महा०, अनु० ७३। ४१-४२)

जो गौ सीधी-सूधी हो दुहते [illegible]

१-प्राणा वै प्राणिनामेते प्रोच्यन्ते भरतर्षभ। तस्माद् ददाति यो धेनु प्राणानेव प्रयच्छति॥
गाव. शरण्या भूतानामिति वेदविदो विदुः। तस्माद् ददाति यो धेनु शरणं सम्प्रयच्छति॥ (महा०, अनु० [illegible])

जिसका वछड़ा सुन्दर हो, जो वन्धन तोडकर भागती न हो—ऐसी गौका दान करनेसे उसके शरीरमे जितने रोएँ होते हैं, उतने वर्षोतक दाता परलोकमे सुख भोगता है।[१]

सुन्दर स्वभाववाली, घास आदि चरनेमे अभ्यस्त, जवान, वछडेवाली, न्यायसे प्राप्त की हुई, दुधार गाय ब्राह्मणको देनी चाहिये। (स्कन्दपु०, प्रभासखण्डश्रेत्रमा० २०८)

जिसके बछडेका मुख बाहर न आया हो, केवल दो पैर वाहर निकले हो, इस प्रकारकी अवस्थामे गाय पृथ्वीरूपा होती है। ऐसी गायको जो मनुष्य सोनेके सींग, चाँदीके खुर, ताँवेकी पीठ, काँसीका दुहनेका बर्तन और गहने-कपडोसे सजाकर तथा गन्ध-पुष्पादिसे पूजकर वेदज्ञ ब्राह्मणको दान करता है, वह नित्य विष्णुलोकमे निवास करता है। (पद्मपु०, सृष्टि० ४८। १७३-१७५)

ऐसे ही वचन याज्ञवल्क्यस्मृति, अत्रिस्मृति, संवर्तस्मृति, बृहस्पतिस्मृति, मत्स्यपुराण, स्कन्दपुराण, महाभारत तथा अन्यान्य स्मृतियो और पुराणोमे बहुत जगह मिलते हैं।

दानके अयोग्य गौ

बिना सींगकी तथा बूढी गौका दान करनेसे दाताके भोग नष्ट होते हैं। लँगडी, लूली और कानी गौका दान करनेसे दाताका अधःपतन होता है और हानि होती है। अत्यन्त दुवली गौका दान करनेसे घर-बार नष्ट हो जाते हैं। (अथर्ववेद १२। ४। ३)

जो गौएँ पानी नहीं पी सकतीं, घास-चारा नहीं खा सकतीं, जिनकी इन्द्रियाँ क्षीण हो चुकी है, जो दूध नहीं दे सकतीं ऐसी गौओका दान करनेवाला पुरुष सुखहीन लोकोको प्राप्त होता है।[२]

जिसका घास खाना और पानी पीना समाप्त हो चुका हो, जिसका दूध नष्ट हो गया हो, जिसकी इन्द्रियाँ काम न दे सकती हो, अर्थात् जो बूढी और रोगिणी होनेके कारण जीर्ण-शीर्ण शरीरवाली हो गयी हो, ऐसी गौका दान करनेवाला मनुष्य, ब्राह्मणको व्यर्थ कष्टमे डालता है और स्वयं भी घोर नरकमे पड़ता है। क्रोध करनेवाली, मरकही, रुग्णा, दुबली-पतली तथा जिसका दाम न चुकाया गया हो, ऐसी गौका दान करना कदापि उचित नहीं है। (महा०, अनु० ७७। ५-७)

बाँझ, बीमार, अङ्गहीन, दुष्ट स्वभाववाली, बूढ़ी, जिसकी संतान मर गयी हो तथा अन्यायसे प्राप्त की हुई गायका दान नहीं करना चाहिये। जो मनुष्य देवताके लिये ऐसी गायका दान करता है, वह उलटा बहुत-से क्लेशोको भोगकर नीची गतिको प्राप्त होता है। भडकी हुई, क्लेश भोगती हुई, कमजोर और रोगिणी तथा जिसका मूल्य नहीं चुकाया गया है, ऐसी गायका दान नहीं करना चाहिये। जिस गायसे लेनेवाले ब्राह्मणको क्लेश हो, वैसी गाय दाताके सभी लोकोको विफल कर देती है, वह किसी भी उत्तम लोकमे नहीं जा सकता। (स्कन्द०, प्रभासक्षेत्रमा० २७८। २३-२५)

जो दुबली हो, जिसका वछडा मर गया हो तथा जो ठाँठ, रोगिणी, अङ्गहीन और वूढी हो, ऐसी गौ ब्राह्मणको नहीं देनी चाहिये। (महा०, अनु० ६६। ५३)

इसी प्रकारके वचन अधिकांश पुराणो और स्मृतियोमें भी मिलते हैं।

गोदानके पात्र और अपात्र

जिसके बहुत-सी सताने हो ऐसे याचक, श्रोत्रिय तथा अग्निहोत्री ब्राह्मणको दस गौ दान करनेसे दाताको अत्यन्त उत्तम लोकोकी प्राप्ति होती है। (महा०, अनु० ६९। १६)

जो स्वाध्यायसम्पन्न, शुद्धयोनि (कुलीन), शान्तचित्त, यज्ञपरायण, पापसे डरनेवाला, बहुज्ञ, गौओपर क्षमाका भाव रखनेवाला, मृदुलस्वभाव, शरणागतवत्सल और जीविकाहीन हो, ऐसे ब्राह्मणको गो-दानका उत्तम पात्र वताया गया है। जो जीविकाके बिना वहुत कष्ट पा रहा हो तथा जिसको खेती या यज्ञ-होम करने, प्रसूता स्त्रीको दूध पिलाने तथा गुरु-सेवा अथवा बालकका लालन-पालन करनेके लिये गौकी आवश्यकता हो, उसको साधारण देश-कालमे भी दूध देनेवाली गौका दान करना चाहिये।[३]

गौ, भूमि, तिल, सोना आदि जो कुछ भी दान देने हों, वह सुपात्र ब्राह्मणको दे, कुपात्रको नहीं। (याज्ञवल्क्य-स्मृति)

पास रहनेवाले मूर्ख ब्राह्मणको छोडकर दूर रहनेवाले वेदज्ञ ब्राह्मणको बुलाकर दान देना चाहिये। (कात्यायन-स्मृति)

१-दत्त्वा धेनुं सुव्रता साधुदोहा कल्याणवत्सामपलायिनीं च। यावन्ति रोमाणि भवन्ति तस्यास्तावन्ति वर्षाणि भवन्त्यमुत्र॥ (महा०, अनु० ७३। ४४)

२-पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः। अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥ (कठ० १। १। ३)

३-स्वाध्यायाढ्य शुद्धयोनि प्रशान्त वैतानस्थ पापभीरु बहुज्ञम्। गोपु क्षान्त नातितीक्ष्णं शरण्य वृत्तिग्लान तादृश पात्रमाहुः॥
वृत्तिग्लाने सीदति चातिमात्र कृष्यर्थे वा होम्यहेतोः प्रसूते·। गुर्वर्थं वा बालसवृद्धये वा धेनु दद्याद् देशकालेऽविशिष्टे॥ (महा०, अनु० ७३। ३९-४०)

गोभिल, व्यास, शातातप, बृहस्पति और वसिष्ठादि स्मृतियोंमें भी ऐसे ही वचन मिलते हैं।

जो ब्राह्मण स्वाध्यायपरायण, कुलीन, प्रशान्त, अग्निहोत्री, पापसे डरनेवाला, बहुत विषयोका जानकार, स्त्रियोमे क्षमाशील, धर्मात्मा, गो-सेवामे तत्पर और व्रतोका पालन करते-करते थक गया है, उसीको सुपात्र कहते हैं। (वसिष्ठस्मृति)

दुराचारी, पापी, लोभी, असत्यवादी तथा देवयज्ञ और श्राद्धकर्म न करनेवाले ब्राह्मणको किसी तरह गौ नहीं देनी चाहिये। (महा०, अनु० ६९। १५)

जो मनुष्य वध करनेके लिये गौ माँग रहा हो उसको और नास्तिकको तथा कसाई और गौसे जीविका चलानेवालेको भी गौ नहीं देनी चाहिये। वैसे पापियोको देनेवाला पुरुष अक्षय नरकमे पडता है। (महा०, अनु० ६६। ५१-५२)

जैसे कच्चे मिट्टीके बर्तनमे रखनेसे दूध, दही, घी और मधु पात्रकी दुर्बलतासे नष्ट हो जाते हैं और साथ ही वह पात्र भी नष्ट हो जाता है, वैसे ही गौ, स्वर्ण, वस्त्र, अन्न आदिका दान लेनेसे मूर्ख ब्राह्मण और दानका फल—ये दोनो नष्ट हो जाते हैं। (बृहस्पतिस्मृति)

ऐसे ही वचन वसिष्ठस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, वृद्ध-पराशरस्मृति और मनुस्मृति आदिमे मिलते हैं।

तप और वेदाध्ययनसे रहित ब्राह्मण दान [illegible] नाव जैसे चढनेवालेको साथ लेकर डूब जाती है, [illegible] दाताको साथ लेकर डूब जाता है।

गोदानसे कौन-कौन लोग श्रेष्ठ लोकोंको प्राप्त हुए ?

उशीनरो विष्वगश्वो नृगश्च भगीरथो विश्रुतो यौवनाश्व.।
मान्धाता वै मुचुकुन्दश्च राजा भूरिद्युम्नो नैषध. सोमकश्च॥
पुरूरवो भरतश्चक्रवर्ती यस्यान्ववाये भरताः सर्व एव।
तथा वीरो दाशरथिश्च रामो ये चाप्यन्ये विश्रुता· कीर्तिमन्त ॥
तथा राजा पृथुकर्मा दिलीपो दिवं प्राप्तो गोप्रदानैर्विधिज्ञ ।
(महा०, अनु० ७६। २५—२७)

उशीनर, विष्वगश्व, नृग, भगीरथ, प्रसिद्ध यौवनाश्व-मान्धाता, मुचुकुन्द, भूरिद्युम्न, नैषध, सोमक, पुरूरवा, चक्रवर्ती भरत, जिसके वशके सभी राजा भारत कहलाये, शूरवीर दशरथपुत्र रामचन्द्र, प्रसिद्ध कीर्तिवाले अन्य नरेन्द्र और विशालकर्मा राजा दिलीप—ये सभी गोदान करके दिव्य लोकोंको प्राप्त हुए।

(ख) गोदानके लिये गौओंके भेद

जन्म, विवाह और मृत्यु तथा अन्य विभिन्न शुभ अवसरोपर तथा प्रायश्चित्तके लिये गोदानकी विशेष रूपसे महिमा बतायी गयी है। शास्त्रोमे गौके कई प्रकारके भेद बताये गये हैं। विभिन्न कामनाओसे विभिन्न प्रकारकी गायोके दानका वर्णन है।

मरणासन्न-अवस्थामे अथवा इससे पहले किसी भी समय निम्नलिखित पाँच प्रकारकी धेनुओका दान करना चाहिये—(१) ऋणधेनु, (२) पापापनोदनधेनु, (३) वैतरणीधेनु, (४) मोक्षधेनु और (५) उत्क्रान्तिधेनु।

यदि पाँच प्रत्यक्ष गौ देनेकी सामर्थ्य न हो तो कम-से-कम एक गौ प्रत्यक्ष रूपमे देते हुए अन्य गौओके लिये अपनी सामर्थ्यानुसार निष्क्रयीभूत द्रव्यका सकल्प कर दान करना चाहिये।[1]

प्रत्येक गौके दानके समय निम्न प्रकारसे प्रार्थना करनी चाहिये—

(१) ऋणधेनु-दान

अनेक जन्मोके ऋणके नाशके लिये ऋणधेनुका दान किया जाता है। इससे देव, ऋषि, पितृ, मनुष्य तथा अन्य सभी सामान्य ऋणोसे मुक्ति हो जाती है और उनपर कोई ऋण [illegible] नहीं रह जाता।

ऐहिकामुष्मिकं यच्च सप्तजन्मार्जितं त्वृणम्।
तत्सर्वं शुद्धिमायातु गामेतां ददतो मम॥

ऐहलौकिक तथा पारलौकिक सात जन्मोंमें अर्जित [illegible] जो ऋण है, वह सब इस ऋणधेनुके दानसे दूर हो जाय और मैं ऋणमुक्त होकर शुद्ध हो जाऊँ।

(२) पापापनोदनधेनु-दान

अनेक जन्मोपार्जित ज्ञाताज्ञात, कायिक, वाचिक, मानसिक तथा सांकल्पिक पापकी निवृत्तिके लिये पापापनोदनधेनुका दान किया जाता है।

आजन्मोपार्जितं पापं मनोवाक्कायसम्भवम्।
तत्सर्वं नाशमायातु गोप्रदानेन केशव॥

हे केशव! जन्म-जन्मान्तरोंका [illegible] मन, वाणी तथा शरीरसे हो गया है [illegible]

१-प्रत्यक्ष गौके उपलब्ध न होनेपर तन्निमित्तक निष्क्रयभूत द्रव्य भी दिया जा सकता है। इस अवस्थामें [illegible] पर गौका आवाहन कर पूजन करना चाहिये।

धेनुके दानसे नष्ट हो जाय।

(३) मोक्षधेनु-दान

जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त होकर भगवत्सायुज्य प्राप्त करना ही मोक्ष है, अतः मोक्ष-प्राप्तिके लिये मोक्षधेनुका दान किया जाता है।

मोक्षं देहि हृषीकेश मोक्षं देहि जनार्दन।
मोक्षधेनुप्रदानेन मुकुन्दः प्रीयतां मम॥

हे हृषीकेश! हे जनार्दन! मुझे आप जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्तकर मोक्ष प्रदान करे। इस मोक्षधेनुके दानसे भगवान् मुकुन्द मुझपर प्रसन्न हो जायँ।

(४) वैतरणीधेनु-दान

यमद्वारस्थित महाभयंकर वैतरणी नदीके सुखपूर्वक संतरणकी कामनासे कृष्णवर्णकी वैतरणीधेनुका दान किया जाता है।

धेनुके त्वं प्रतीक्षस्व यमद्वारे महाभये।
उत्तितीर्षुरहं देवि वैतरण्ये नमोऽस्तु ते॥
यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी।
तां तर्तुकामो यच्छामि कृष्णां वैतरणीं तु गाम्॥
या सा वैतरणी प्रोक्ता पूयशोणितवाहिनी।
हेलया तर्तुकामस्तां कृष्णां गां विधिवद्ददे॥

हे वैतरणी गौ! महाभयकर यमद्वारपर तुम मेरी प्रतीक्षा करना। हे देवि! मैं वैतरणीको पार करना चाहता हूँ, तुम्हें नमस्कार है। इसी उद्देश्यसे मैं कृष्णा वैतरणी-रूप धेनुका दान करता हूँ। वह वैतरणी नदी पीब एव खूनसे भरी हुई है, अतः मैं उसे सुखपूर्वक पार करनेके लिये इस कृष्णा गौका विधिवत् दान करता हूँ।

(५) उत्क्रान्तिधेनु-दान

प्राण निकलते समय बहुत कष्ट होता है। कभी-कभी कई दिनतक प्राण अटके रह जाते हैं, इसमे कारणरूप जो प्रतिबन्धक बनता है, उस प्रतिबन्धककी निवृत्तिके लिये उत्क्रान्तिधेनुका दान किया जाता है।

अप्युत्क्रान्तौ प्रवृत्तस्य सुखोत्क्रमणसिद्धये।
तुभ्यमेनां सम्प्रददे धेनुमुत्क्रान्तिसंज्ञिकाम्॥

मरणासन्न-अवस्थामें सुखपूर्वक एवं शीघ्र प्राण निकल जायँ, इस उद्देश्यसे हे उत्क्रान्तिधेनु! मैं तुम्हें दानमे देता हूँ।

विभिन्न रंगोंकी गायोंके दानका फल

गोदानके प्रकरणमे विभिन्न रगोंकी गौओके दानका विभिन्न फल बताया गया है। कृष्ण वर्णकी गाय स्वर्गको प्राप्त कराती है, श्वेत गौ कुलकी वृद्धि करती है। रक्त गौ सुन्दर रूप प्रदान करती है और पीत वर्णकी गौ दुःख-दारिद्र्यका नाश करती है। कृष्णसारा (सफेद तथा कृष्णवर्ण-मिश्रित) गौका दान पुत्रकी प्राप्ति कराता है, नील वर्णकी गौ धर्मकी अभिवृद्धि करती है। कपिला गौ सभी पापोका नाश करती है और अनेक रंगोंवाली गौ मोक्षको प्राप्त कराती है।[१]

उभयमुखीधेनु-दान

उभयमुखी गौके दानका शास्त्रोमे बड़ा महत्त्व बताया गया है और उसका फल भी अनन्त बताया गया है। ब्याती हुई गौ ही 'उभयमुखी गौ' कहलाती है। जबतक बछडा योनिके भीतर रहता है एवं जबतक गर्भ नहीं छोड़ता अर्थात् योनिसे बछडेका कोई भी किचित् भी अङ्ग बाहर दिखलायी पडता है उस समय वह गोमाता उभयमुखी कहलाती है। उस समय उस गौको पृथ्वीका रूप कहा गया है। उस समय ऐसी गौका जो दान करता है, उसे सम्पूर्ण पृथ्वीके दानका फल प्राप्त होता है और उस बछडेके तथा गौके शरीरमें जितने रोएँ होते हैं, उतने युगोतक दाता देवलोकमे पूजित होता है और अपने पितरोंका उद्धार कर देता है। उसे गोलोक और ब्रह्मलोक सुलभ हो जाते हैं।[२]

उभयमुखी गोदानमें सभी सामग्रियाँ पहलेसे तैयार रहनी चाहिये और ज्यो ही वत्सका किंचित् भी अङ्ग बाहर दिखलायी दे, बिना गौको स्पर्श किये ब्राह्मणको दानका संकल्प दे

१-कृष्णा स्वर्गप्रदा ज्ञेया गौरी च कुलवर्धिनी। रक्ता रूपप्रदा ज्ञेया पीता दारिद्र्यघातिनी॥
पुत्रप्रदा कृष्णसारा नीला धर्मविवर्धिनी। कपिला सर्वपापघ्नी नानावर्णा च मोक्षदा॥ (ब्रह्मपुराण)

२-प्रसूयमाना गा दत्त्वा महत्पुण्यफल लभेत्। यावद्वत्सो योनिगतो यावद्गर्भं न मुञ्चति॥
तावद् वै पृथिवी ज्ञेया सशैलवनकानना। प्रसूयमाना यो दद्याद् धेनु द्रविणसयुताम्॥
ससमुद्रगुहा तेन सशैलवनकानना। चतुरन्ता भवेद् दत्ता पृथिवी नात्र सशयः॥
यावन्ति धेनुरोमाणि वत्सस्य च नराधिप। तावत्सख्य युगगणं देवलोके महीयते॥
पितॄन् पितामहाश्चैव तथैव प्रपितामहान्। उद्धरिष्यत्यसदेहं नरकाद् भूरिदक्षिणः॥
गोलोकः सुलभस्तस्य ब्रह्मलोकश्च पार्थिव॥ (मत्स्यपुराण अ० २०५)

देना चाहिये।

दशधेनु-दान

शास्त्रोंमे प्रत्यक्ष धेनु अथवा स्वरूपधेनुके अतिरिक्त निम्नलिखित द्रव्य-निर्मित धेनुओके दान और उसके विशिष्ट फलका भी वर्णन मिलता है—

(१) गुडधेनु, (२) घृतधेनु, (३) तिलधेनु, (४) जलधेनु, (५) क्षीरधेनु, (६) मधुधेनु, (७) शर्कराधेनु, (८) दधिधेनु, (९) रसधेनु और (१०) प्रत्यक्ष धेनु (स्वरूपधेनु)। द्रव (वहनेवाले पदार्थो) से बननेवाली गौओंका स्वरूप घट है और अद्रव पदार्थोंसे बननेवाली गौओका स्वरूप उन-उन पदार्थोंकी राशि है*। यथाविधि इन वस्तुओंके द्वारा गो-आकृति बनाकर उनमें धेनुकी भावना करते हुए आवाहन-पूजन करना चाहिये। श्रद्धापूर्वक इन गौओके दानसे सभी भोग और मोक्षरूप फलकी प्राप्ति होती है।

उपर्युक्त दश धेनुओके अतिरिक्त रत्नधेनु, सुवर्णधेनु, कार्पासधेनु, लवणधेनु, कर्पूरधेनु, सप्तव्रीहिधेनु तथा गोसहस्रदान आदिका भी विवरण प्राप्त होता है।

यहाँ सर्वसाधारणके लिये गोदानकी सामान्य विधि प्रस्तुत की जा रही है—

गोदान-विधि

गोदानकर्ता स्नानादिसे निवृत्त होकर शुभासनपर पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठे और तिलक लगाकर आचमन तथा पवित्रीकरणसे शुद्ध होकर माङ्गलिक स्वस्ति-पाठ करे तथा दाये हाथमे जल, कुश, अक्षतादि ग्रहणकर निम्नलिखित संकल्प पढे—

संकल्प—ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे... क्षेत्रे[1] नगरे/ ग्रामे... नामसंवत्सरे[2].... मासे[3] [शुक्ल/ कृष्ण] पक्षे.... तिथौ[4] ... वासरे[5] ...गोत्र:[6] ....शर्मा/ वर्मा/ गुप्तोऽहम्[7] ममात्मना सह एकविंशतिपुरुषोत्तारणपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीतिकामो गोदानं करिष्ये। तदङ्गं ब्राह्मणवरणं तत्पूजनं गोपूजनं च करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपत्यादीन् पूजयिष्ये।

सकल्पके अनन्तर गोपूजनसे पूर्व कार्यकी निर्विघ्नतापूर्वक सिद्धिके लिये श्रीमहागणपति, गौरी, नवग्रह आदि पञ्चाङ्ग-पूजन करे। अनन्तर गोदान ग्रहण करनेवाले सपत्नीक ब्राह्मणका वरण-पूजन करे और फिर उत्तम लक्षणोंसे युक्त, सुशील सवत्सा गौको निम्न मन्त्रसे जल छिडककर प्रोक्षण करे—

गौका प्रोक्षण—

इरावती धेनुमती हि भूत्ँसूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥

(यजु० ५। १६)

प्रोक्षणके अनन्तर निम्न मन्त्रसे पुष्प लेकर गौ [illegible] ध्यान करे—

---

*प्रथमा गुडधेनुः स्याद् घृतधेनुस्तथापरा। तिलधेनुस्तृतीया तु चतुर्थी जलसञ्ज्ञिता॥
क्षीरधेनुश्च विख्याता मधुधेनुस्तथापरा। सप्तमी शर्कराधेनुर्दधिधेनुस्तथाष्टमी॥
रसधेनुश्च नवमी दशमी स्यात् स्वरूपतः॥
कुम्भाः स्युर्द्रवधेनूनामितरासा तु राशय.। यथाश्रद्ध प्रदातव्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदाः॥ (मत्स्यपुराण अ० ८२)

१-यदि किसी तीर्थमे गोदान कर रहे हो तो उस रिक्त स्थानमे तीर्थका नाम, नगरमे हो तो उस नगरका नाम और गाँवमें हों तो उस गाँवका नाम जोड दे।

२-पञ्चाङ्गोमे पहले पृष्ठपर ही सवत्सरका नाम लिखा रहता है। रिक्त स्थानमे सवत्सरका वह नाम जोड दे। वर्षके आरम्भवाला [illegible] सकल्पादिमें जोडा जाता है, बादवाला नहीं।

३-चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन—इन शब्दोंमें [illegible] रिक्त स्थानमें जोड़ दे।

४-प्रतिपद्, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, [illegible] पूर्णिमा—इन शब्दोको तिथिके पहले रिक्त स्थानमे जोड दे।

५-रवि, सोम, मगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि—इन दिनोमेसे एकको दिनके अनुसार रिक्त स्थानमे जोड दे।

६-कश्यप, भरद्वाज आदि अपना गोत्र रिक्त स्थानमे जोड दे।

७-ब्राह्मण अपने नामके अन्तमे शर्मा, क्षत्रिय अपने नामके अन्तमे वर्मा और वैश्य अपने नामके अन्तमें गुप्त [illegible]

ध्यान-मन्त्र—

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्य· सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च॥

ॐ सुरभ्यै नमः, ध्यानार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (ऐसा कहकर गौके चरणोमे पुष्प चढा दे।)

श्रीमती गौओको नमस्कार, कामधेनुकी सतानोको नमस्कार, ब्रह्माजीकी पुत्रियोको नमस्कार और पावन करनेवाली गौओको नमस्कार। गौओके अङ्गोमे चौदहो भुवन स्थित हैं अतः मेरा इस लोकमे एव परलोकमे भी कल्याण हो।

फिर नीचेके मन्त्रसे सर्वदेवमयी गौका तथा गौके अङ्गोमे स्थित देवताओका अक्षत छोडते हुए आवाहन करे—

आवाहन—

आवाहयाम्यह देवीं गां त्वां त्रैलोक्यमातरम्।
यस्याः स्मरणमात्रेण सर्वपापप्रणाशनम्॥
त्वं देवी त्वं जगन्माता त्वमेवासि वसुन्धरा।
गायत्री त्वं च सावित्री गङ्गा त्वं च सरस्वती॥
आगच्छ देवि कल्याणि शुभां पूजां गृहाण च।
वत्सेन सहितां त्वाहं देवीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ सुरभ्यै नमः, सुरभीमावाहयामि। आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत छोडे।)

जिस गौ माताके स्मरण करनेमात्रसे सम्पूर्ण पापोका नाश हो जाता है, ऐसी तीनो लोकोकी माता हे गौ देवि! मैं तुम्हारा आवाहन करता हूँ। हे देवी! तुम ससारकी माता हो, तुम्हीं वसुन्धरा, गायत्री, सावित्री, गङ्गा तथा सरस्वती हो। हे कल्याणमयी देवि! तुम आकर मेरी शुभ पूजाको ग्रहण करो। बछडेके सहित देवीस्वरूपा तुम्हारा मैं आवाहन करता हूँ।

इसी प्रकार गौके अङ्गोमे स्थित सभी देवताओका भी आवाहन करे—

[१] शृङ्गमूलयोर्ब्रह्मविष्णुभ्या नमः, ब्रह्मविष्णू आवाहयामि।

(गौ माताके शृग-मूलमे स्थित ब्रह्मा-विष्णुको नमस्कार है, मैं ब्रह्मा और विष्णुका आवाहन करता हूँ।)

[२] शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः, सर्वतीर्थानावाहयामि।

(शृगके अग्रभागमे स्थित समस्त तीर्थोको नमस्कार है, मैं समस्त तीर्थोका आवाहन करता हूँ।)

[३] शिरोमध्ये महादेवाय नमः, महादेवमावाहयामि।

(सिरके मध्य-भागमे स्थित महादेव भगवान् शकरको नमस्कार है, मैं भगवान् महादेवका आवाहन करता हूँ।)

[४] ललाटाग्रे गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि।

(ललाटके अग्रभागमें स्थित भगवती गौरीको नमस्कार है, मैं भगवती गौरीका आवाहन करता हूँ।)

[५] नासावंशे षण्मुखाय नमः, षण्मुखमावाहयामि।

(नासावंशमें स्थित भगवान् कार्तिकेयको नमस्कार है, मैं कार्तिकेयका आवाहन करता हूँ।)

[६] नासापुटयोः कम्बलाश्वतराभ्यां नमः, कम्बलाश्वतरौ आवाहयामि।

(नासापुटोमे स्थित कम्बल एव अश्वतर नागोको नमस्कार है, मैं इनका आवाहन करता हूँ।)

[७] कर्णयोरश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि।

(दोनो कानोमे स्थित अश्विनीकुमारको नमस्कार है, मैं अश्विनीकुमारोका आवाहन करता हूँ।)

[८] नेत्रयो· शशिभास्कराभ्यां नमः, शशिभास्करौ आवाहयामि।

(गौके दोनो नेत्रोंमें स्थित सूर्य और चन्द्रमाको नमस्कार है, मैं सूर्य और चन्द्रमाका आवाहन करता हूँ।)

[९] दन्तेषु सर्ववायवे नमः, वायुमावाहयामि।

(दाँतोमे स्थित सम्पूर्ण वायुओको नमस्कार है, मैं वायुदेवताओका आवाहन करता हूँ।)

[१०] जिह्वायां वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि।

(जिह्वामे स्थित वरुणदेवको नमस्कार है, मैं वरुणदेवका आवाहन करता हूँ।)

[११] हुंकारे सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि।

(गौके हुंकारमे स्थित सरस्वतीको नमस्कार है, मैं भगवती सरस्वतीका आवाहन करता हूँ।)

[१२] गण्डयोर्मासपक्षाभ्यां नमः, मासपक्षौ आवाहयामि।

(दोनो गण्डस्थलोंमे स्थित मास और दोनों पक्षोको नमस्कार है, मैं मास और पक्षोका आवाहन करता हूँ।)

[१३] ओष्ठयोः सध्याद्वयाय नमः, संध्याद्वयम् आवाहयामि।

(दोनो ओष्ठोमे स्थित दोनो सध्याओको नमस्कार है, मैं दोनो सध्याओका आवाहन करता हूँ।)

[१४] ग्रीवायामिन्द्राय नमः, इन्द्रम् आवाहयामि।

(ग्रीवामे अवस्थित इन्द्रको नमस्कार है, मैं इन्द्रदेवताका आवाहन करता हूँ।)

[१५] गलकम्बले रक्षोभ्यो नमः, रक्षांसि आवाहयामि।

(गलकम्बलमें अवस्थित रक्षोगणोको नमस्कार है, मैं इनका आवाहन करता हूँ।)

[१६] उरसि साध्येभ्यो नमः, साध्यान् आवाहयामि।

(वक्षःस्थलमे स्थित साध्यदेवगणोको नमस्कार है, मैं साध्योका आवाहन करता हूँ।)

[१७] जंघयोर्धर्माय नमः, धर्मम् आवाहयामि।

(दोनों जघाओमे स्थित धर्मको नमस्कार है, मैं धर्मदेवताका आवाहन करता हूँ।)

[१८] खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः, गन्धर्वम् आवाहयामि।

(गौके खुरोके बीचमें विराजमान गन्धर्वोको नमस्कार है, मैं गन्धर्वोंका आवाहन करता हूँ।)

[१९] खुराग्रेषु पन्नगेभ्यो नमः, पन्नगान् आवाहयामि।

(खुरोके अग्रभागमे स्थित पन्नगोको नमस्कार है, मैं पन्नगोका आवाहन करता हूँ।)

[२०] खुरपार्श्वे अप्सरोगणेभ्यो नमः, अप्सरोगणान् आवाहयामि।

(खुरोके पार्श्वभागमे स्थित अप्सरागणोको नमस्कार है, मैं अप्सरागणोका आवाहन करता हूँ।)

[२१] पृष्ठे एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रान् आवाहयामि।

(गौके पीठमे स्थित ग्यारह रुद्रोको नमस्कार है, मैं ग्यारह रुद्रोका आवाहन करता हूँ।)

[२२] सर्वसन्धिषु वसुभ्यो नमः, वसून् आवाहयामि।

(समस्त जोडोमे स्थित वसु नामक देवताओको नमस्कार है, मैं वसुदेवताओका आवाहन करता हूँ।)

[२३] श्रोणीतटे पितृभ्यो नमः, पितॄन् आवाहयामि।

(श्रोणीतट (नाभिके अगल-बगल कटि-भाग) मे स्थित पितरोंको नमस्कार है, मैं पितरोका आवाहन करता हूँ।)

[२४] पुच्छे सोमाय नमः, सोमम् आवाहयामि।

(पूँछमे स्थित सोमदेवताको नमस्कार है, मैं सोमदेवका आवाहन करता हूँ।)

[२५] अधोगात्रेषु द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यान् आवाहयामि।

(गौ माताके शरीरके निचले भागोंमें स्थित द्वादश आदित्योंको नमस्कार है, मैं द्वादश आदित्योका आवाहन करता हूँ।)

[२६] केशेषु सूर्यरश्मिभ्यो नमः, सूर्यरश्मीन् आवाहयामि।

(केशोंमे स्थित सूर्यरश्मियोको नमस्कार है, मैं सूर्यरश्मियोका आवाहन करता हूँ।)

[२७] गोमूत्रे गङ्गायै नमः, गङ्गाम् आवाहयामि।

(गौके मूत्रमे स्थित भगवती गङ्गाको नमस्कार है, मैं गङ्गादेवीका आवाहन करता हूँ।)

[२८] गोमये यमुनायै नमः, यमुनाम् आवाहयामि।

(गोमयमे स्थित यमुनाको नमस्कार है, मैं देवी यमुनाका आवाहन करता हूँ।)

[२९] क्षीरे सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि।

(दूधमे स्थित सरस्वतीदेवीको नमस्कार है, मैं सरस्वतीदेवीका आवाहन करता हूँ।)

[३०] दध्नि नर्मदायै नमः, नर्मदाम् आवाहयामि।

(दहीमे स्थित नर्मदादेवीको नमस्कार है, मैं नर्मदादेवीका आवाहन करता हूँ।)

[३१] घृते वह्नये नमः, वह्निम् आवाहयामि।

(घृतमे स्थित वह्निदेवको नमस्कार है, मैं वह्निदेवका आवाहन करता हूँ।)

[३२] रोमसु त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवेभ्यो नमः, त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवान् आवाहयामि।

(गौ माताके रोमोमे स्थित तैंतीस कोटि देवताओंको नमस्कार है, मैं तैंतीस कोटि देवताओंका आवाहन करता हूँ।)

[३३] उदरे पृथिव्यै नमः, पृथिवीम् आवाहयामि।

(उदरमें स्थित पृथिवीदेवीको नमस्कार है, मैं पृथिवीदेवीका आवाहन करता हूँ।)

[३४] स्तनेषु चतुर्भ्यः सागरेभ्यो नमः, चतुरः सागरान् आवाहयामि।

(स्तनोमें स्थित चारो सागरोको नमस्कार है, मैं चारो सागरोका आवाहन करता हूँ।)

[३५] सर्वशरीरे कामधेनवे नमः, कामधेनुम् आवाहयामि।

(गौ माताके सम्पूर्ण शरीरमें [illegible] नमस्कार है, मैं कामधेनुका आवाहन करता हूँ।)

—इस प्रकार सर्वदेवमयी गौका [illegible]

निम्न मन्त्रोंसे पूजन करे। सर्वप्रथम गौदेवीको निम्न मन्त्रसे आसन प्रदान करे—

आसन— नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
आसनं ते मया दत्तं गृहाण जगदम्बिके॥

ॐ सुरभ्यै नमः, आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। (पुष्प चढ़ाये।)

हे जगज्जननी! नाना रत्नोंसे जटित एवं स्वर्णसे विभूषित यह आसन मैंने तुम्हे दिया है, इसे स्वीकार करो।

[फिर पाद्यके लिये जल अर्पण करे]

पाद्य— सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि।
प्रतिगृहाण मया दत्तं पाद्यं त्रैलोक्यवन्दिते॥

ॐ सुरभ्यै नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढाये।)

हे सर्वहितकारिणी पापनाशिनी, पावनकारिणी, त्रैलोक्य-वन्दिता कामधेनुपुत्री! मेरे द्वारा अर्पित इस पाद्य-जलको ग्रहण करो।

[तदनन्तर निम्न मन्त्रसे अर्घ्य प्रदान करे]

अर्घ्य— देहे स्थितासि रुद्राणि शंकरस्य सदा प्रिया।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

ॐ सुरभ्यै नमः, अर्घ्य समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

हे रुद्राणी गौ! तुम भगवान् शंकरको सदा प्यारी हो तथा उनकी आधी देहमे स्थित रहती हो, वही तुम गौके रूपमे मेरे पापका नाश करो।

[तदनन्तर आचमनके लिये जल दे]

आचमन—

या लक्ष्मीः सर्वभूतेषु या च देवेष्ववस्थिता।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु॥

ॐ सुरभ्यै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। (जल चढ़ाये।)

जो लक्ष्मीदेवी समस्त प्राणियोमे व्याप्त हैं और जिनका देवताओमें निवास है, वही देवी गौके रूपमे मेरे पापको नष्ट करे।

[फिर निम्न मन्त्रसे स्नान कराये]

स्नान—

सर्वदेवमयी मातः सर्वदेवनमस्कृते।
तोयमेतत् सुखस्पर्शं स्नानार्थं गृह्ण धेनुके॥

ॐ सुरभ्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि। (जल समर्पण करे।)

समस्त देवताओद्वारा वन्दित हे कामधेनु माँ! तुम सर्वदेवमयी हो। स्पर्शमात्रसे आनन्द प्रदान करनेवाले इस जलको स्नानके लिये ग्रहण करो।

आचमन देनेके पश्चात् सम्भव होनेपर पञ्चामृत तथा शुद्धोदक आदिसे स्नान कराकर 'आ गावो अग्मन्०' इत्यादि सूक्तसे अथवा श्रीसूक्त या पुरुषसूक्तसे महाभिषेक करे।

[अभिषेकके बाद वस्त्र अर्पित करे]

वस्त्र—

आच्छादनं गवे दद्यां सम्यक् शुद्धं सुशोभनम्।
सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरी॥

ॐ सुरभ्यै नमः, वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र अर्पित करे।)

मैं गोमाताको अत्यन्त शुद्ध एव सुन्दर वस्त्र अर्पित करता हूँ, इस वस्त्रदानसे परमेश्वरी सुरभिदेवी प्रसन्न हो।

[आचमनके अनन्तर चन्दन अर्पित करे]

चन्दन—

सर्वदेवप्रियं देवि चन्दनं चन्द्रसंनिभम्।
कस्तूरीकुङ्कुमाढ्यं च सुगन्धं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सुरभ्यै नमः, चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन चढाये।)

हे देवि! चन्द्रमाके समान शीतलता एवं आह्लाद प्रदान करनेवाले, सम्पूर्ण देवताओको प्रिय, कस्तूरी और केसरसे युक्त इस सुगन्धित चन्दनको स्वीकार करो।

[फिर तिलरूप अक्षत प्रदान करे]

अक्षत—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठे कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥

ॐ सुरभ्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत समर्पित करे।)

हे सुरश्रेष्ठे! हे परमेश्वरि! भक्तिपूर्वक मेरे द्वारा निवेदित कुङ्कुमसे सुशोभित अक्षतोको ग्रहण करो।

इसके अनन्तर निम्न मन्त्रोसे सींगोके आभूषणके लिये सोनेका सींग, कण्ठके आभूषणके रूपमे घटी, दोहनके लिये कास्यपात्रकी दोहनी तथा सम्पूर्ण अलंकारोके निमित्त अपनी शक्तिके अनुसार द्रव्य प्रदान करे और कहे—

ॐ सुरभ्यै नमः, शृंगभूषणार्थं स्वर्णशृङ्गम्, कण्ठभूषणार्थं घण्टाम्, दोहनार्थं कांस्यपात्रम्, सर्वालंकारार्थं यथाशक्ति

द्रव्यम् समर्पयामि।

[अनन्तर गौ माताको निम्न मन्त्रद्वारा पुष्प एवं पुष्पमालासे अलंकृत करे]

पुष्प और पुष्पमाला—

पुष्पमालां तथा जातिपाटलाचम्पकानि च।
पुष्पाणि गृह्ण धेनो त्वं सर्वविघ्नप्रणाशिनि॥

ॐ सुरभ्यै नमः, पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि। (पुष्प और पुष्पमाला चढ़ाये।)

सम्पूर्ण विघ्नोंको नष्ट करनेवाली हे धेनो! तुम मेरे द्वारा प्रदत्त चमेली, गुलाब, चम्पक आदि पुष्पोसे बनी हुई इस पुष्पमालाको ग्रहण करो।

[अनन्तर धूपसे आप्यायित करे]

धूप—

देवद्रुमरसोद्भूतं गोघृतेन समन्वितम्।
प्रयच्छामि महाभागे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सुरभ्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप दे।)

हे महाभाग्यवती गोमाता! देवदारुवृक्षकी गोंदसे बनी हुई तथा गौके घीसे मिश्रित यह धूप मैं तुम्हे अर्पण करता हूँ, इसे स्वीकार करो।

[तदनन्तर दीप दिखलाये]

दीप—

आनन्ददः सुराणां च लोकानां सर्वदा प्रियः।
गौस्त्वं पाहि जगन्मातः दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ सुरभ्यै नमः, दीपं दर्शयामि। (दीप दिखलाये।)

हे जगन्माता गौ! यह दीपक समस्त लोकोको आनन्द देनेवाला और देवताओको सदा ही प्रिय है, इसे स्वीकार करो और मेरी रक्षा करो।

[तदनन्तर गोग्रासके रूपमे नैवेद्य निवेदित करे]

नैवेद्य (गोग्रास)—

सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदे स्थिता।
ग्रासं गृह्णातु सा धेनुर्याऽस्ति त्रैलोक्यवासिनी॥

ॐ सुरभ्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करे।)

हे जगदम्बे! तुम पालनी-शक्तिसे सम्पन्न हो तथा तुम्हीं स्वर्गमे रहनेवाली कामधेनु हो। तीनो लोकोमे रहनेवाली हे गोमाता! तुम मेरे द्वारा अर्पित इस ग्रासको ग्रहण करो।

[नैवेद्य निवेदित करके शुद्ध जल प्रदान करे और कपूरकी आरतीकर नमस्कार करे तथा निम्न मन्त्रसे पुष्पाञ्जलि प्रदान करे]

पुष्पाञ्जलि—

ॐ गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः।
गोभ्यो वेदाः समुत्कीर्णाः सपडङ्गपदक्रमाः॥

ॐ सुरभ्यै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।)

यज्ञोंका प्रवर्तन गौओंसे ही होता है तथा देवता भी गौसे ही प्रकट हुए हैं; पद, क्रम आदिसे युक्त समस्त वेद गौसे उत्पन्न हैं।

पूजाकी साङ्गता-सिद्धिके लिये 'ॐ सुरभ्यै नमः, दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि'—ऐसा कहकर दक्षिणाद्रव्य निवेदित करे। आरती करे।

इस प्रकार यथाविधि यथालब्धोपचारसे भक्तिभावपूर्वक गोमाताका पूजन करके 'ॐ अनेन पूजनेन गोदेवता प्रीयताम्' कहकर नमस्कार करे। इसके बाद गौकी पूँछ पकड़कर तर्पण करे।

गोपुच्छतर्पण

सव्य होकर पूर्वमुख बैठकर चावल, कुश-जलके साथ गौकी पूँछको दाहिने हाथसे पकडकर, पूँछके नीचे भागमे जलपात्रको स्थापित करके निम्न मन्त्रोंद्वारा देवतीर्थसे एक-एक अञ्जलि जल दे—

देवतर्पण—ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्, ॐ विष्णुस्तृप्यताम्, ॐ रुद्रस्तृप्यताम्, ॐ मनवस्तृप्यन्ताम्, ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्, ॐ रुद्रातिपुत्रास्तृप्यन्ताम्, ॐ साध्यास्तृप्यन्ताम्, ॐ मरुद्गणास्तृप्यन्ताम्, ॐ ग्रहास्तृप्यन्ताम्, ॐ नक्षत्राणि तृप्यन्ताम्, ॐ योगास्तृप्यन्ताम्, ॐराशयस्तृप्यन्ताम्, ॐ वसुधा तृप्यताम्, ॐ अश्विनौ तृप्येताम्, ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्, ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्, ॐ मातरस्तृप्यन्ताम्, ॐ रुद्रास्तृप्यन्ताम्, ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्, ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्, ॐ [illegible] ॐ दानवास्तृप्यन्ताम्, ॐ योगिनस्तृप्यन्ताम्, ॐ [illegible]-स्तृप्यन्ताम्, ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्, ॐ [illegible] ॐ देवगणास्तृप्यन्ताम्, ॐ देवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्, ॐ लोकपालास्तृप्यन्ताम्, ॐ नारदस्तृप्यताम्, ॐ [illegible] ॐ स्थावरास्तृप्यन्ताम्, ॐ जङ्गमास्तृप्यन्ताम्।

दिव्य मनुष्य-तर्पण—उत्तर मुख करे। [illegible] गलेमे मालाकी भाँति धारणकर [illegible] यवसहित दो-दो अञ्जलि जल दे—

ॐ सनकस्तृप्यताम् (२), ॐ [illegible] (२) ॐ सनातनस्तृप्यताम् (२), ॐ [illegible] (२)

ॐ आसुरिस्तृप्यताम् (२), ॐ वोढुस्तृप्यताम् (२), ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् (२)।

दिव्य पितृ-तर्पण एवं यम-तर्पण—दक्षिणकी ओर मुख करके बैठे। अपसव्य हो जाय। तिलोदकसे पितृतीर्थसे तीन-तीन अञ्जलि जल दे—

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यताम् (३), ॐ सोमस्तृप्यताम् (३), ॐ यमस्तृप्यताम् (३), ॐ अर्यमा तृप्यताम् (३), ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्ताम् (३), ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् (३), ॐ बर्हिषदस्तृप्यन्ताम् (३)।

ॐ यमाय नमः (३), ॐ धर्मराजाय नमः (३), ॐ मृत्यवे नमः (३), ॐ अन्तकाय नमः (३), ॐ वैवस्वताय नमः (३), ॐ कालाय नमः (३), ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (३), ॐ औदुम्बराय नमः (३), ॐ दध्नाय नमः (३), ॐ नीलाय नमः (३), ॐ परमेष्ठिने नमः (३), ॐ वृकोदराय नमः (३), ॐ चित्राय नमः (३), ॐ चित्रगुप्ताय नमः (३)।

मनुष्य-पितृ-तर्पण—पूर्वकी भाँति पितरोको तीन-तीन अञ्जलि दे—

अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।

अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।

अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुकी देवी रुद्ररूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

यदि सौतेली माँ मर गयी हो तो उसको भी तीन बार जल दे—

अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नमाता अमुकी देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

द्वितीय गोत्र-तर्पण—इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहालके) मातामह (नाना) आदिका तर्पण करे। यहाँ भी पहलेकी भाँति निम्नलिखित वाक्योको तीन-तीन वार पढ़कर तिलसहित जलकी तीन-तीन अञ्जलियाँ पितृतीर्थसे दे—

अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः (नाना) अमुकः वसुरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः (परनाना) अमुकः रुद्ररूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रः अस्मद् वृद्धप्रमातामहः (वृद्ध परनाना)। अमुकः आदित्यरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रा अस्मन्मातामही (नानी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

अमुकगोत्रा अस्मत्प्रमातामही (परनानी) अमुकी देवी दा आदित्यरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः (३)।

पत्न्यादितर्पण—इसके आगे पत्नीसे लेकर आप्तपर्यन्त जो भी सम्बन्धी मृत हो गये हो, उनके गोत्र और नाम लेकर एक-एक अञ्जलि जल दे—

अमुकगोत्रा अस्मत्पत्नी (भार्या) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सुतः (बेटा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्कन्या (बेटी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्पितृव्यः (पिताके भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मन्मातुलः (मामा) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मद्भ्राता (अपना भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्पितृभगिनी (बूआ) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मन्मातृभगिनी (मौसी) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदात्मभगिनी (अपनी बहन) अमुकी देवी

दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मत्सापत्नभगिनी (सौतेली बहन) अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छ्वशुरः (श्वशुर) अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जल तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मद्गुरुः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रा अस्मदाचार्यपत्नी अमुकी देवी दा वसुरूपा तृप्यताम् इदं सतिलं जल तस्यै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मच्छिष्यः वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जल तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मत्सखा अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः। अमुकगोत्रः अस्मदाप्तपुरुषः अमुकशर्मा वसुरूपस्तृप्यताम् इदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा नमः।

फिर नीचे लिखे श्लोकोको पढते हुए पितृतीर्थसे मोटक लेकर तिलाञ्जलि दे—

ॐ मातृपक्षाश्च ये केचिद् ये केचित् पितृपक्षकाः।
गुरुश्वशुरबन्धूनां ये कुलेषु समुद्भवाः॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः।
क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥
वृक्षयोनिगता ये च पर्वतत्वं गताश्च ये।
पशुयोनिगता ये च ये च कीटपतङ्गकाः।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥
नरके रौरवे ये च महारौरवसंस्थिता।
असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाकस्थिताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥
स्वार्थबद्धा मृता ये च शस्त्राघातमृताश्च ये।
ब्रह्महस्तमृता ये च नारीहस्तमृताश्च ये।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥
पाशमध्ये मृता ये च स्वल्पमृत्युवशंगताः।
सर्वे च मानवा नागाः पशवः पक्षिणस्तथा।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः।
तृप्यन्तु सर्वदा सर्वे गोपुच्छोदकतर्पणैः॥

तर्पण करनेके बाद गोदान करनेवाला सव्य हो जाय। तदनन्तर सवत्सा गौको रस्सीसे खोलकर गौका मुख पूर्वको और करे और स्वयं पूँछकी तरफ पूर्वमुख [illegible] गोदान ग्रहण करनेवाला ब्राह्मण गौके [illegible] मुख करके बैठे। अनन्तर गोदान [illegible] जल लेकर गोदानका सङ्कल्प करे—

गोदानका बृहत्संकल्प—हरिः ॐ तत्सत् ([illegible]) [illegible] पृथिव्यां जम्बूद्वीपे भारतवर्षे कुमारिकाखण्डे आर्यावर्तै [illegible] अमुक[1]— क्षेत्रे श्रीभागीरथ्याः गङ्गायाः अमुक दिग्भागे इत्यादिदेशं समनुकीर्त्य ॐ ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगस्य प्रथमचरणे बौद्धावतारे अमुक- नाम्नि संवत्सरे अयने- ऋतौ- मासे- पक्षे- तिथौ- वारे- नक्षत्रे योगे- करणे अमुक- राशिस्थिते चन्द्रे अमुक- राशिस्थिते सवितरि अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथास्थानस्थितेषु सत्सु एव गुणविशिष्टे देशे काले अमुक- गोत्र अमुक नामा मम श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासोक्तफलावाप्तये ज्ञाताज्ञातानेक- जन्मार्जितमनोवाक्कायकर्मजन्यपापापनुत्तये [illegible] दौर्भाग्यदुःस्वप्नदुर्निमित्तदुष्टग्रहबाधाशान्तिपूर्वकं [illegible] धान्यायुरारोग्यद्विपदचतुष्पदसततिचतुर्वर्गादिनिखिल [illegible] सिद्धये गोरोमसङ्ख्यकदिव्यवत्सरावच्छिन्नस्वर्गलोक [illegible] कामश्च पितॄणां निरतिशयानन्दब्रह्मलोकावाप्तये [illegible] श्रीपरमेश्वरप्रीतये इमां सुपूजितां [illegible] रुद्रदैवताम् अमुक- गोत्राय अमुक- शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यम् सम्प्रददे।

—ऐसा कहकर सङ्कल्प ब्राह्मणके हाथमें [illegible] ब्राह्मण 'द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु' [illegible] करे। सकल्प ग्रहण करनेके अनन्तर ब्राह्मण [illegible]—

कोऽदात्कस्मा अदात्कामोऽदात्कामायादात्।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्॥

अनन्तर गोदानकर्ता गोदान-कर्मकी [illegible] तुलसीदलके साथ यथाशक्ति सुवर्ण [illegible] करे—

प्रतिष्ठा—अद्य कृतैतद्गोदानकर्मणः [illegible] सतुलसीदलं हिरण्यम् अग्निदैवतम् अमुक [illegible] शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।

[illegible]

प्रार्थना— ॐ यज्ञसाधनभूता या [illegible]
विश्वस्याघप्रणाशिनी [illegible]।

१-रिक्त स्थानोमे पूर्वसकल्पकी भाँति योजना कर ले।

जो गौ यज्ञकी साधनभूता है और ससारके समस्त पापसमूहोका नाश करनेवाली है, उस गौके दानकर्मसे संसारमें सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणदेव प्रसन्न हों।

इसके अनन्तर बन्धु-बान्धवोके साथ यजमान ब्राह्मण तथा बछड़ेके सहित गायकी चार प्रदक्षिणा करे।

प्रदक्षिणा—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि नाशय धेनो त्वं प्रदक्षिणपदेपदे॥

हे धेनो! जन्म-जन्मान्तरोमें जो भी पाप मेरे द्वारा हुए हो, उन सभीको प्रदक्षिणाके पद-पदपर नष्ट कर दे।

इस प्रकार चार परिक्रमा करनेके बाद हाथ जोडकर प्रार्थना करे—

प्रार्थना—

ॐ गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः सनातनाः।
सर्वे देवास्तनौ यस्याः सा धेनुर्वरदाऽस्तु मे॥

गौएँ मेरे आगे रहे, गौएँ मेरे पीछे रहे, गौएँ मेरे हृदयमें निवास करे और मैं सदा गौओके बीचमे निवास करूँ। श्रीमती गौओंको नमस्कार। कामधेनुकी संतानोको नमस्कार। ब्रह्माजीकी पुत्रियोंको नमस्कार। पावन करनेवाली गौओको नमस्कार। जो गौएँ स्वर्गकी सोपानरूपा हैं, सदासे ही समस्त धन-समृद्धिकी मूलभूता सनातन कारण हैं और जिस गायके शरीरमे सम्पूर्ण देवताओंका निवास है, वह धेनु मेरे लिये वरदायिनी हो।

इसके बाद गौके कानमे निम्न मन्त्रका जप करे—

मन्त्र-जप—ॐ ह्रीं नमो भगवत्यै ब्रह्ममात्रे विष्णुभगिन्यै रुद्रदेवतायै सर्वपापप्रमोचिन्यै।

इसके बाद ब्राह्मण गौकी पूँछके द्वारा जलसे यजमानके सिरपर अभिषेक करे, तिलक लगाये और आशीर्वाद प्रदान करे। तदनन्तर ब्राह्मण गौका विसर्जनकर कुछ दूरतक उसे छोडने जाय। फिर सूर्यको अर्घ्य प्रदान करे और निम्न मन्त्रसे भगवान्से क्षमा-प्रार्थना करे—

क्षमा-प्रार्थना—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

अनन्तर समस्त कर्म '**ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः**' कहकर भगवान्को अर्पित कर दे। और फिर अवशिष्ट गोपुच्छोदकको पीपलके मूलमें अथवा किसी तालाब आदिमें विसर्जित कर दे।

वृषभ-दानका फल

बैल पवित्र है, सुन्दर पुण्यका दाता और पवित्र करनेवाला है, इसलिये बैलके दानका विशेष फल है। एक ही बैलके दानको दस गायोके दानके समान समझना चाहिये, अवश्य ही वह बैल—

मेदो मांसविपुष्टाङ्गो नीरोगः कोपवर्जितः।
युवा भद्रः सुशीलश्च सर्वदोषविवर्जितः॥
धुरं धारयति क्षिप्रं..........................॥[1]

'मेद-माससे परिपुष्ट अङ्गोवाला हो, नीरोग हो, क्रोधरहित—सीधा हो, जवान हो, देखनेमे बडा सुन्दर, स्वभावसे सुशील और सारे दोषोसे रहित हो तथा झट्से धुरेको धारण करनेमें समर्थ हो।' ऐसा बैल ब्राह्मणको देनेसे दाता महातेजस्वी होकर चिरकालतक गोलोकमे पूजित होता है।

जो पुरुष धुरीको धारण करनेवाले दो बैलोका वेदज्ञ सदाचारी गरीब ब्राह्मणको दान करता है, उसे एक हजार गायोके दानका उत्तम फल मिलता है और वह भगवान्के लोकोमे जाता है तथा दोनो बैलोके शरीरपर जितने रोम हैं, उतने हजार वर्षोतक भगवान्के लोकमे पूजित होता है, पर दान करना चाहिये गरीबको ही, धनीको नहीं, क्योकि वर्षाका फल तालाबोमे बरसनेसे ही है, समुद्रोंमें बरसनेसे नहीं—

दरिद्रायैव दातव्यं न समृद्धाय पाण्डव।
वर्षाणां हि तडागेषु फलं नैव पयोधिषु॥

(महा०, आश्व० १००। १२)

जो पुरुष एक बैल दान करता है, वह देवव्रती (सूर्यमण्डलको भेदन करके जानेवाला ब्रह्मचारी) होता है। (महा०, अनु० ७६। २०)

बैल स्वर्गका मूर्तिमान् स्वरूप है। जो गुणवान् ब्राह्मणको बैल दान करता है, उसका स्वर्गलोकमें सम्मान होता है। (महा०, अनु० ६६। ४८)

धुरीको धारण करनेवाले एक उत्तम बैलके दानमे दस गायोके दानका और सौ बैलोके दानमें हजार गायोके दानका

१-ठीक ऐसे ही श्लोक भविष्यपुराण, उत्तर०, अध्याय १६० मे तथा अन्यान्य पुराणोमे मिलते हैं।

फल होता है। (पद्म०, सृष्टि० ४८। १८०-१८१)

वैलकी जोड़ीके दानका फल

यश्च दद्यादनुडुहौ द्वौ युक्तौ च धुरन्धरौ।
सुवृत्ताय दरिद्राय श्रोत्रियाय विशेषतः॥
सहस्रगोप्रदानेन यत्प्रोक्तं फलमुत्तमम्।
तत्पुण्यफलमाप्नोति याति लोकान् स मामकान्॥
यावन्ति चैव रोमाणि तयोरनडुहोर्नृप।
तावद्वर्षसहस्राणि मम लोके महीयते॥

(महा०, अनु० [illegible])

जो मनुष्य जुएको भलीभाँति ढो [illegible] जोडीको सदाचारी श्रोत्रिय गरीब ब्राह्मणको [illegible] देता है, वह एक हजार गोदानके उत्तम फलको [illegible] फिर मेरे दिव्य लोकमें जाता है तथा उन दोनों [illegible] रोम हैं, उतने हजार वर्षोंतक वह मेरे लोकमें पूजित [illegible]

गोसेवासे भगवत्प्राप्ति

गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम्।

श्रीमद्भागवत (२। ३। १०) मे एक श्लोक आता है—

अकामः सर्वकामो वा मोक्षकाम उदारधीः।
तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम्॥

'उदार बुद्धिवाला पुरुष निष्काम हो या समस्त भोगोका इच्छुक अथवा वह मोक्षकी ही अभिलाषा रखनेवाला क्यो न हो, उसे तीव्र भक्तियोगके द्वारा केवल परम पुरुष भगवान् वासुदेवकी आराधना करनी चाहिये।'

यही बात गौओके लिये भी कही जा सकती है। स्वार्थ या परमार्थ कोई भी ऐसी वस्तु नहीं, जो गौदेवीकी कृपासे सुलभ न हो सके। संसारमें कौन ऐसा विवेकशील प्राणी होगा, जो भगवान्को पानेके लिये लालायित न हो। युग-युगसे, जन्म-जन्मान्तरोसे जीव अपने बिछुड़े हुए प्रियतम परमात्मासे मिलनेके लिये न जाने कहॉ-कहाँ भटकता है, कितने-कितने साधन करता है। किंतु अबतक बहुतोको सफलता नहीं मिली। साधनका ठीक-ठीक ज्ञान न होनेसे लक्ष्यकी प्राप्तिमे विलम्ब होना स्वाभाविक ही है। भगवत्प्राप्तिके अन्यतम साधनोमेसे गौकी सेवा भी एक ऐसा ही साधन है, जिससे भगवान् शीघ्र ही सुलभ हो जाते हैं। भगवान् हमारे इष्टदेव हैं, परंतु ये गौएँ उनकी भी इष्टदेवी है। वे इन्हींकी सेवाके लिये गोपाल-शिरोमणि बनकर इस भूतलपर अवतीर्ण होते हैं। भगवान् भी जिनके सेवक हैं, उनकी सेवासे भगवत्प्राप्तिमे क्या संदेह हो सकता है। जैसे गङ्गाजीके तटपर रहकर भी कोई प्यासो मरे और पानीके लिये दर-दर भटकता फिरे, वही दशा हमारी है। हम घरमे कामधेनुके होते हुए भी उसकी सेवासे मुँह मोड़के और स्वार्थ एवं परमार्थ दोनोमे वञ्चित रह जाते हैं।

गोमाता किस प्रकार हमें भगवान्के निकट [illegible] है, यह थोडा-सा विचार करनेपर ही [illegible] सकता है। उदाहरणके लिये किसी भी [illegible] रखिये, वह दो प्रकारकी सन्तानोंको जन्म देगी—[illegible] और बछिया। पहले बछड़ेकी उपयोगिताका विचार [illegible] बछड़ा हृष्ट-पुष्ट होनेपर एक अच्छा साँड [illegible] सकता है। साँडसे दो लाभ होंगे। एक तो [illegible] विधिके अनुसार वृषोत्सर्ग करनेसे वह [illegible] उद्धार करेगा और दूसरे उससे गोवंशकी वृद्धि [illegible] पितरोका उद्धार और गोवंशकी वृद्धि—ये दोनों [illegible] हैं। अतः इनसे धर्मका सम्पादन होगा। यदि [illegible] बना लिया जाय तो उससे भी अनेक लाभ [illegible] एक तो वह वाहनके काम आता है, [illegible] बैलगाडियोको खींचता है तथा [illegible] इससे अन्न आदि वस्तुओंके व्यापारसे [illegible] व्यापारसे सम्पत्ति बढ़ेगी और उससे [illegible] इस प्रकार आनुषङ्गिक रूपसे 'अर्थ' [illegible] सिद्धि होती रहेगी। [illegible] अनुसार [illegible] अनुरूप यथेष्ट दान करनेसे [illegible] दान भी धर्मके ही [illegible] एक लाभकी [illegible]

अब दूसरे [illegible]

उत्तम बैल होनेसे अच्छी खेती हो सकती है। खेतीसे पर्याप्त अन्नकी प्राप्ति होगी। फिर अन्नसे भी कई प्रकारके लाभ हो सकते हैं। एक तो उससे हमारा जीवन-निर्वाह होगा, और हम स्वस्थ तथा सबल बनेंगे। स्वास्थ्य ठीक रहनेपर मनुष्य उत्तम पुत्र उत्पन्न कर सकता है, जो श्राद्ध और तर्पण करके पितरोका उद्धार करे और इस प्रकार धर्मके सम्पादनमें कारण बने। अन्नसे दूसरा लाभ यह है कि हम स्वयं भी उसके द्वारा श्राद्ध करेंगे। उस श्राद्धसे पितरोंका उद्धार होनेके साथ ही हमें भी धर्मकी प्राप्ति होगी। तीसरा लाभ यह है कि अन्नके व्यापारसे प्रचुर धनराशिका उपार्जन किया जा सकता है। वह धन लौकिक सुखका साधन तो बनेगा ही, यज्ञ एवं दानमें लगाये जानेपर धर्मवृद्धिका भी कारण हो सकता है। इस प्रकार यहाँ गायकी एक संतान—केवल बछड़ेद्वारा होनेवाले लाभोका दिग्दर्शन कराया गया।

गायकी दूसरी संतान है—बछिया। उसका समुचित-रूपसे पालन करनेपर आगे चलकर वह भी एक अच्छी गाय बन सकती है। गायसे दो प्रकारके लाभ होते है—लौकिक और पारलौकिक। पारलौकिक लाभ होता है उसके दानसे। शास्त्रोक्त रीतिसे गौका दान करके मनुष्य अत्यन्त भयंकर वैतरणी नदीको सहज ही पार कर सकते हैं। यदि दूसरोंके लिये गोदान किया गया तो वे भी वैतरणी पार तो होंगे ही, उनके उद्धाररूप पुण्यकर्मसे हम भी धर्मके भागी हो सकते हैं। लौकिक लाभ भी आगे चलकर पारलौकिक लाभमें परिणत हो जाता है। गाय घरपर रहेगी तो हमारे लिये दूध देगी—यह लौकिक लाभ है। उस दूधका दो प्रकारसे उपयोग हो सकता है—एक तो दही जमाकर या दूधसे ही घी बना लिया जाय अथवा दूधके द्वारा ही नाना प्रकारके खाद्य पदार्थ—दुग्धान्न तैयार कराये जायँ। घी और दुग्धान्न दोनो ही मानव-जीवनके लिये अत्यन्त उपयोगी वस्तुएँ हैं। घी परम पवित्र एवं सात्त्विक वस्तु है। इसके सेवनसे शरीर और मन दोनो शुद्ध होंगे। फिर शुद्ध विचारसे सदाचारकी वृद्धि होगी और सदाचारसे अन्तःकरणकी पवित्रताके साथ-ही-साथ आयुकी भी वृद्धि होगी। इस तरहके शुद्ध, सात्त्विक एवं सदाचारपूर्ण जीवनमें सदा अधिकाधिक धर्मका सम्पादन होता रहेगा। घीके द्वारा यज्ञ करके भी हम धर्मोपार्जन कर सकते है। तीसरा लाभ है व्यापार। घीका व्यापार करके सुख-सम्पत्तिका उपार्जन होगा, उससे फिर यज्ञ और दान होंगे और उन दोनोंसे पूर्ववत् धर्मकी वृद्धि होती रहेगी।

घीकी ही भाँति दुग्धान्नसे भी व्यापार, धनोपार्जन, यज्ञ, दान और धर्म-प्राप्तिकी परम्परा सुस्थिर रह सकती है। वह श्राद्धमे भी उपयोगी है। श्राद्धसे पितरोंका उद्धार और उससे धर्मका सम्पादन भी होगा ही। दुग्धान्नका दान भी धर्मके एक अङ्गकी पुष्टि कर सकता है। जीवन-निर्वाहमें भी दुग्धान्नका बहुत बड़ा उपयोग है। स्वास्थ्य-सम्पादन तो उसकी खास विशेषता है ही। स्वस्थ शरीरसे योग्य संतानका उत्पादन और उसके द्वारा पितरोंके उद्धाररूपी धर्मका पालन भी अवश्यम्भावी है। इस तरह गाय अनेक शाखाओं तथा परम्पराओंसे हमें अर्थ और कामकी प्राप्ति करानेके साथ ही धर्मके सम्पादनमें भी अत्यधिक सहायता पहुँचाती है। निष्काम धर्मके प्रभावसे मनुष्यमें भगवच्छरणा-गतिकी योग्यता आती है। वह—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

(गीता० ९। २७)

—इस भगवदाज्ञाके अनुसार अपने समस्त धर्म-कर्म भगवान्‌को भेंट करके स्वयं भी उनके चरणोमें समर्पित हो जाता है। पूर्णरूपसे शरणागत हो जानेपर भक्तको भगवान्‌की प्राप्तिमे तनिक भी विलम्ब नहीं होता। इस प्रकार गोमाता सम्पूर्ण जगत्‌के मानवोंको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष-रूपसे भगवान्‌के निकट पहुँचनेमे सहायता करती रहती है। गौके समान मनुष्यमात्रकी सच्ची हितकारिणी दूसरी कोई नहीं है; अतः हम सब लोगोंको तन, मन, धनसे गोमाताकी सेवा और रक्षामें तत्पर रहना चाहिये।



नम्र निवेदन और क्षमा-प्रार्थना

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः॥

सर्व प्रकारसे पवित्र करनेवाली, लक्ष्मीस्वरूपिणी, कामधेनु सुरभिकी संतान ब्रह्मपुत्री गौओंको बारंबार प्रणाम करते हुए आज हम पाठकोकी सेवामे इस वर्ष 'कल्याण' के विशेषाङ्कके रूपमें 'गोसेवा-अङ्क' प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस संसारमे गौ एक अद्भुत प्राणी है, जो वास्तवमे सबके लिये महनीय, अमूल्य और कल्याणप्रद है। भारतीय संस्कृतिमे मानव-जीवन प्राप्त करनेका परम उद्देश्य है—अपना कल्याण करना अर्थात् अक्षय सुखकी प्राप्ति। इसके लिये अपने शास्त्रोमे 'गो-सेवा' से सरल कोई दूसरा साधन नहीं है। शुक्ल यजुर्वेदमे एक प्रश्न किया गया है—'कस्य मात्रा न विद्यते'—'किसका परिमाण (उपमा) नहीं है?' (२३। ४७)। इसका उत्तर भी दिया गया है—'गोस्तु मात्रा न विद्यते'—'गौका परिमाण (उपमा) नहीं है।' (२३। ४८)

गौ और पृथ्वी—ये दोनो गौके ही स्वरूप (पर्याय) है। गौ और पृथ्वी—इन दोनोमे अभिन्नता है। ये दोनो ही परस्पर एक दूसरेकी सहायिका और सहचरी हैं। मृत्युलोककी आधारशक्ति 'पृथ्वी' और देवलोककी आधारशक्ति 'गौ' है। पृथ्वीको भूलोक और 'गौ' को गोलोक कहते हैं। भूलोक—अधोलोक (नीचे)-मे है और गोलोक—उर्ध्वलोक (ऊपर)-में है। यह अत्युत्तम श्रेष्ठ लोक है। जन्म-जन्मान्तरकी परम साधनाके उपरान्त मानव-जीवनके लक्ष्यको पूर्ण कर लेनेवाले प्राणियोको गोलोककी प्राप्ति होती है, जहाँ पहुँचकर प्राणी इस मृत्युलोकमे वापस नहीं लौटता, इसीका नाम है जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त होना अथवा स्वयंका कल्याण करना। इस गोलोकमे ही गौओका निवास है।

एक बार देवराज इन्द्रने ब्रह्माजीसे यह प्रश्न किया कि गौएँ देवता और लोकपालोके लोकोसे भी अति उच्चतम गोलोकमे क्यो रहती हैं? ब्रह्माजीने इसका उत्तर देते हुए कहा—'गौओको यज्ञका अङ्ग और साक्षात् यज्ञ ही कहा गया है। इनके बिना किसी प्रकार भी यज्ञ नहीं हो सकता। ये अपने दूध और घीसे प्रजाका धारण-पोषण करती है और इनके पुत्र बैल खेतीके काममें [illegible] प्रकारके अन्न एवं बीज पैदा करते हैं। [illegible] और हव्य-कव्यका कार्य सम्पादन होता है। [illegible] दही और घी मिलता है। ये गौएँ बड़ी ही पवित्र [illegible] और बैल बेचारे भूख-प्यासका कष्ट [illegible] भाँतिका बोझ ढोते रहते है। इस प्रकार गौएँ अपने [illegible] प्रजाओका और मुनियोका धारण-पोषण करती [illegible] हैं। इनके व्यवहारमे शठता, कपटता नहीं होती [illegible] कर्ममे ही लगी रहती हैं। इसीसे देवराज! ये गौएँ [illegible] लोगोके ऊपर (गोलोकमे) निवास करती हैं। ([illegible] ८३। १७—२२)

अभ्युदय और निःश्रेयसकी प्राप्तिके लिये [illegible] आवश्यकता है। यज्ञ-दान-तप-रूप कर्मको [illegible] अवश्य-कर्तव्य—अनिवार्य बतलाया है। 'यज्ञदानतप कर्म न त्याज्य कार्यमेव तत्।' यज्ञकी पूर्णाहुतिके लिये [illegible] आवश्यकता होती है और हविकी प्रदाता [illegible] इसीलिये हमारे शास्त्रोमे गौको 'हविर्दुघा' ([illegible]) कहा गया है। गोघृत देवताओका परम प्रिय [illegible] यज्ञके लिये भूमिको जोतकर तैयार करने [illegible] जौ, तिल आदि हविष्यान्न पैदा करनेके लिये [illegible]— बैलोकी परम आवश्यकता है। [illegible] परिष्कृत एव शुद्ध करनेके लिये उसे [illegible] है और गोबरसे लीपा जाता है तथा [illegible] यज्ञाग्निको प्रज्वलित किया जाता है। [illegible] प्रत्येक यजमानको देहशुद्धिके लिये [illegible] करना होता है और यह गायके दूध [illegible] और गायके ही गोबरसे तैयार किया [illegible] 'पञ्चगव्य' कहते हैं। [illegible] चावल (खीर) को '[illegible]' [illegible] है और गोघृतको '[illegible]' [illegible] 'आयुर्वै घृतम्।' [illegible] [illegible] हैं। अतः [illegible] गौकी सर्वोपरि [illegible]

कहते हैं कि इस मनुष्यलोकमे जीवोंके कल्याणके लिये ही गौ-जैसी पवित्र और मङ्गलमय प्राणीका प्रादुर्भाव हुआ।

शास्त्रोंमें गौको सर्वदेवमयी और सर्वतीर्थमयी कहा गया है। अतः गौके दर्शनसे समस्त देवताओंके दर्शन तथा समस्त तीर्थोंकी यात्रा करनेका पुण्य प्राप्त होता है। जहाँ गौका निवास होता है, वहाँ सर्वदा सुख-शान्तिका पूर्ण साम्राज्य उपस्थित रहता है। गोदर्शन, गोस्पर्श, गोपूजन, गोस्मरण, गोगुणानुकीर्तन और गोदान करनेसे मनुष्य सर्वविध पापोसे मुक्त होकर अक्षयलोकका भोग प्राप्त करता है। गौकी परिक्रमा करनेसे सम्पूर्ण पृथ्वीकी परिक्रमा हो जाती है। इस प्रकार गौ भारतवासियोंकी परम आराध्या है। यह तो हुई हमारी आध्यात्मिक एवं आधिदैविक दृष्टि।

अधिकांश लोग आजकल भौतिक और स्थूल दृष्टिसे गौकी आर्थिक उपयोगितापर भी विचार करते हैं। इस दृष्टिसे भी यदि विचार किया जाय तो गाय-जैसा उपयोगी प्राणी कोई अन्य नहीं है। किसी भी प्रकारका गोवंश—बूढ़ा-अपंग, अनुत्पादक—लूला-लँगड़ा, अधा—देश और गोपालकपर भारस्वरूप नहीं है। उसे अनुपयोगी कहना ठीक नहीं। स्थूल दृष्टिसे भारतमें गौके तीन प्रकारके उपयोग हो सकते हैं— (१) गायके दूधका उपयोग, (२) गोवंशके द्वारा कृषि-कार्य तथा (३) गोबर और गोमूत्रका उपयोग।

आहारके रूपमें दूधका सर्वाधिक वैज्ञानिक महत्त्व सर्वत्र स्वीकार किया गया है। जिन उपादानोंसे शरीरका यन्त्र चालू रह सकता है वे सब दूधमे पाये जाते हैं। बच्चोके भोजनके लिये दूध ही प्रकृतिकी पहली देन है।

भारतीय औषधिविज्ञानके सुप्रसिद्ध संस्थापक चरकने अपने ग्रन्थमें लिखा है कि 'दूध सामान्य रूपसे मनुष्य तथा समस्त चतुष्पद प्राणियोंके स्वास्थ्य और विकासके लिये आवश्यक होता है। गायका दूध सर्वश्रेष्ठ है, यह बच्चोंको जीवन, जवानोको स्वास्थ्य तथा बूढ़ोंको शक्ति प्रदान करता है।' इसी प्रकार ब्रिटिश मेडिकल रिसर्च कौंसिलने घोषित किया है—'गायका विशुद्ध और ताजा दूध सर्वापेक्षा हितकर और विश्वस्त पोषक तत्त्वोसे भरा होता है और उसमे लाभदायक जीवाणु तथा दूसरे स्वास्थ्यप्रद उपकरण होते हैं।'

गोवंश भारतीय कृषि-विकासकी आधारशिला है, जिसका अति प्राचीन कालसे महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन कालसे बैलोंका उपयोग कृषिभूमिको जोतकर तैयार करना, कुओसे पानी खींचना तथा परिवहन-सम्बन्धी आवश्यकताओंकी पूर्तिमे होता रहा है। आजकल नये वैज्ञानिक अनुसंधानके अनुसार जमीन जोतनेमें ट्रैक्टरोंका उपयोग किया जा रहा है, जिसके कारण भूमिकी उर्वरा-शक्तिके क्षीण होनेका खतरा उत्पन्न हो गया है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक अलबर्ट आइनस्टाइनने भारतको यह संदेश भेजा था—'भारत ट्रैक्टरके द्वारा यन्त्रीकृत खेतीकी पद्धतिको न अपनाये, क्योकि इनसे चार सौ वर्षकी खेतीमे ही अमेरिकाके जमीनकी उर्वरा-शक्ति काफी हदतक समाप्त हो चली है, जबकि भारतका उपजाऊपन दस हजार वर्षकी खेतीके बाद भी आज कायम है। अतः देशके किसानोंको इस बातपर विशेष ध्यान देना चाहिये कि आनेवाली पीढ़ीके लिये देशकी भूमिकी उर्वरा-शक्ति समाप्त न हो, इसके लिये हमारी प्राचीन परम्परापर आधारित खेतीके कार्यमें गोवंशका ही अधिकाधिक उपयोग होना चाहिये।

प्राचीन कालसे ही गोबर और गोमूत्रका अन्य उपयोगोके साथ-साथ धरतीको उर्वरा-शक्ति प्रदान करनेके लिये खादके रूपमें मुख्य उपयोग किया जाता रहा है, परंतु आजकल यान्त्रिक खेतीके साथ-साथ रासायनिक खाद और कीटनाशक जहरीली ओषधियोंका उपयोग अत्यधिक रूपसे किया जा रहा है, जिससे स्वास्थ्यपर तो असर पड ही रहा है, साथ-साथ भूमिकी उर्वरा-शक्ति भी कमजोर होती जा रही है। रासायनिक खाद धरतीका प्राकृतिक आहार नहीं है, इससे शुरूमे तो उत्पादन बढता है, पर बादमे उत्पादन घटता ही जाता है। कुछ समय बाद धरती पूर्णतः बंजर हो जाती है। गोबरकी खाद धरतीका प्राकृतिक आहार है। इससे धरतीकी उर्वरा-शक्ति बनी रहती है। गोबरसे गैस मुफ्तमें प्राप्त होती है, इसकी जानकारी जनसाधारणको हो चुकी है। गैसका उपयोग ईंधन और रोशनीके लिये किया जाता है। गॉवोमें यदि गोबर-गैसके संयन्त्र लगा दिये जायँ तो ग्रामीण जनताको ईंधन और रोशनी सुविधापूर्वक प्राप्त हो सकती है। गोबरकी तरह गोमूत्र भी खेतीके लिये बहुत उपयोगी होता है, उसमें धरतीको बिना किसी प्रकार हानि पहुँचाये कीटाणुनाशक

शक्ति होती है, गोमूत्रका उपयोग मानवकी कई बीमारियोमे औषधिके रूपमे और पेटमें कृमिनाशकके रूपमे किया जाता है।

गोबर और गोमूत्रका समुचित उपयोग करनेसे जो आय होती है, उससे गाय-बैलके भरण-पोषणका खर्च निकालनेके पश्चात् भी बचत ही रहेगी। ऐसी स्थितिमे गायका दूध और कृषि आदि कार्योमे बैलका उपयोग एक प्रकारसे बिना किसी खर्चके प्राप्त हो जाता है, जो गोपालकोकी समृद्धिका कारण बन सकता है। इसमें एक बात और ध्यान देनेकी है कि यह सारी समृद्धि भारतीय नस्लकी गायोसे ही प्राप्त होती है। आजकल दूधके लोभमे जर्सी आदि विदेशी गायोका पालन जोरसे बढ़ रहा है। यहाँ तक कि भारतीय नस्लकी गायोंको भी विदेशी साँडोसे गर्भाधान कराकर वर्णसकरी गाये उत्पन्न कर रहे हैं। साथ ही कृत्रिम गर्भाधानकी प्रक्रिया भी अपनायी जाती है, जिसमे गायोकी भारतीय नस्ले धीरे-धीरे नष्टप्राय हो रही हैं। यह अत्यन्त गम्भीर और विचारणीय विषय है। शास्त्रीय दृष्टिसे विदेशी गायोमे गायके लक्षण घटित नहीं होते। उपयोगकी दृष्टिसे भी इनका आवास विशेष स्वास्थ्यप्रद नहीं है। अत: आवश्यकता इस बातकी है कि अच्छी नस्लके देशी साँड़ तैयार किये जायँ, जिससे गायोकी भारतीय नस्लकी संतति अधिकाधिक रूपमे तैयार हो सके।

उपर्युक्त विवेचनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गोवश किसी भी स्थितिमे अनुपयोगी है ही नहीं। अत: मांसका निर्यात करनेके लिये गायकी हत्या करना कितनी बडी अज्ञानता है, यह कहा नहीं जा सकता।

भारतीय सस्कृति और अन्य देशोंकी संस्कृतिमे बहुत बड़ा अन्तर है। विदेशोंमें गायकी आर्थिक उपयोगिताके आधारपर सेवा-शुश्रूषा की जाती है। अनुपयोगी होनेपर इसे मारनेमे वे हिचकते नही, जिसका अन्धानुकरण हमारे देशके कर्णधार भी आज धडल्लेसे कर रहे हैं। यह स्वार्थपरायणताकी पराकाष्ठा है। भारतमे गौके भौतिक उपयोगके साथ-साथ गायका आध्यात्मिक महत्त्व भी है। हम अपनी सर्वोपरि श्रद्धाका केन्द्र माँके रूपमे गौको सम्बोधित करते हैं और अपने शास्त्र तथा मान्यताके अनुसार लोग गौ माताको लोक-परलोक दोनोका जीवनसाथी समझते हैं। अत: गौकी हत्या [illegible] लिये कभी भी सह्य नहीं हो [illegible]। [illegible] आजतक यह जघन्य कार्य बंद नहीं [illegible] भारतके शासकोंको परमात्मप्रभु [illegible] जिसमे यह देशका कलक मिट [illegible]। [illegible] गोरक्षण और गोसंवर्धनके लिये, जनता और [illegible] कुछ आवश्यक कर्तव्य हैं, जिनका कार्यान्वयन [illegible] होना चाहिये। जिसमे भारतकी गोसम्पदा बचायी [illegible]—

(१)सुदृढ केन्द्रीय कानून बनाकर [illegible] तुरंत बंद की जाय तथा गोमांसका निर्यात [illegible] बद किया जाय।

(२)विभिन्न प्रदेशोंकी सरकार गौ-[illegible] चरागाहके निमित्त गोपालनसे सम्बन्धित [illegible] अधिकाधिक भूमि प्रदानकर उनको सुचारु[illegible] करे तथा चरागाहके लिये पहले छोड़ी गयी [illegible] लोग अन्य उपयोगमे लाये उनको कड़ाईसे पुन: [illegible] उपयोगमे लाया जाय।

(३)विभिन्न स्थानोंमे पशुचिकित्सा[illegible] की जाय तथा पशुचिकित्सक तैयार किये जायँ।

(४)अच्छी नस्लके देशी साँड़ तैयार किये [illegible] विभिन्न स्थानोके गोसदन और गोशालाम [illegible]।

(५)विभिन्न स्थानोंमे ऐसे गोशाला और [illegible] चाहिये जो अपने क्षेत्रके बीमार और [illegible] भरतीकर उनके पालन-पोषणकी समुचित [illegible]

(६)अच्छी नस्लकी देशी गाये [illegible] गोपालनके इच्छुक जनताको वितरण [illegible]

(७)गोदुग्धका गोशाला और [illegible] क्षेत्रमे समुचित वितरणकी व्यवस्था [illegible]

(८)कृषि आदि कार्योंमे [illegible] उपयोग किया जाय।

यदि उपर्युक्त [illegible] जनता और हमारी [illegible] शीघ्र कार्यान्वित किया जाय [illegible] समृद्धिको [illegible]

आजसे लगभग [illegible] के विदेश[illegible]

उन दिनो 'कल्याण'की ग्राहक-संख्या सीमित होनेके कारण थोड़े ही लोग लाभान्वित हो सके। अतः बहुत दिनोंसे गोभक्तो एवं प्रेमी पाठकोंका गौ-सम्बन्धी विशेषाङ्क पुनः प्रकाशित करनेका अत्यधिक आग्रह चलता रहा। भगवत्प्रेरणासे मनमें यह विचार आया कि मनुष्य-जीवनके लक्ष्यको प्राप्त करनेका परम साधन अभीके समयमे गो-सेवासे बढ़कर कोई दूसरा नहीं। अतः यह निर्णय लिया गया कि तात्त्विक विवेचनोंसे युक्त यथासम्भव गोसेवाकी समस्त विधाओपर प्रकाश डालनेवाला गायसे सम्बन्धित समग्र सामग्रियोका एक संकलन 'कल्याण'-विशेषाङ्क' के रूपमे लोक-कल्याणार्थ यथाशीघ्र प्रकाशित किया जाय। फलस्वरूप आनन्दकन्द लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीगोपाल कृष्णके अनुग्रहसे इस वर्ष कल्याणमयी भगवती गोमाताके स्तवन-अर्चनके रूपमें 'गोसेवा-अङ्क' जनता-जनार्दनकी सेवामे प्रस्तुत है।

इस अङ्कमे भगवती गौसे सम्बन्धित आध्यात्मिक एवं तात्त्विक निबन्धोके साथ-साथ गौका विश्वरूप, गोसेवाका स्वरूप, गोपालन एव गो-सवर्धनकी मुख्य विधाएँ, विविध धर्मो एवं सम्प्रदायोमें गायका महत्त्व, गोवंशके विभिन्न रूपोका विवेचन, गौका आर्थिक दृष्टिसे महत्त्व, हमारे स्वास्थ्यको सुरक्षित रखनेमे गौका योगदान, भारतके विभिन्न गोशाला एव गोसदनोके विवरण, देशमे गोहत्या-बंदीके लिये गोरक्षा-अभियान, गोसेवी सतो, साधको और भक्तोंका परिचय एव आख्यान तथा घटनाओंका विवरण देनेका प्रयास किया गया है। इसके साथ ही विभिन्न संस्कृतियोमें गो-आराधन और गोसेवाका स्वरूप तथा गोदान एव गो-सेवासे भगवत्प्राप्ति आदि विभिन्न विषयोको इस विशेषाङ्कमे प्रस्तुत करनेकी चेष्टा की गयी है।

'गोसेवा-अङ्क'के लिये लेखक महानुभावोंने उत्साहपूर्वक जो सहयोग प्रदान किया है, उसे हम कभी नहीं भूल सकते। हमे आशा नहीं थी कि वर्तमान समयमें गौसे सम्बन्धित आध्यात्मिक और आर्थिक पहलुओपर प्रकाश डालनेवाले उच्चकोटिके लेख हमें सुलभ हो सकेगे, किंतु सुरभि माताकी असीम कृपासे इतने लेख और अन्य सामग्रियाँ प्राप्त हुई कि उन सबको इस अङ्कमे समाहित करना सम्भव नहीं था, फिर भी विषयकी सर्वाङ्गीणतापर ध्यान रखते हुए अधिकतम सामग्रियोंका संयोजन करनेका नम्र प्रयत्न अवश्य किया गया है। गौ माताके विशिष्ट भक्त, सेवक और संत-विद्वान् जो आज हमारे बीच नहीं हैं, उन महानुभावोंके कतिपय अति महत्त्वपूर्ण लेख भी पूर्व-प्रकाशित अङ्कोसे संगृहीत कर लिये गये हैं। जिससे हमारे पाठकोको उन विशिष्ट भक्तों, संत-महात्माओं और गोसेवकोके अनुभवोका भी लाभ प्राप्त हो सकेगा। विषय और सामग्रीकी अधिकताके कारण इस वर्ष दूसरे तथा तीसरे मासके दो अङ्क 'परिशिष्टाङ्क' के रूपमें विशेषाङ्कके साथ भेजे जा रहे हैं। दूसरा अङ्क तो सुविधाकी दृष्टिसे विशेषाङ्कके साथ एक जिल्दमें ही समायोजित किया गया है तथा तीसरा अङ्क अलगसे इसके साथ आपकी सेवामें प्रेषित है।

उन लेखक महानुभावोके हम अत्यधिक कृतज्ञ हैं जिन्होने कृपापूर्वक अपना अमूल्य समय लगाकर गोसेवासे सम्बन्धित सामग्री तैयारकर यहाँ प्रेषित की। हम उन सबकी सम्पूर्ण सामग्रीको विशेषाङ्कमें स्थान न दे सके, इसका हमें खेद है, इसमें हमारी विवशता ही कारण है; क्योकि हम निरुपाय थे। इनमेंसे कुछ तो एक ही विषयपर अनेक लेख होनेसे छप नहीं सके तथा कुछ विचारपूर्ण अच्छे लेख विलम्बसे आये, जिनमें कुछ लेखोको स्थानाभावके कारण पर्याप्त संक्षेप करना पड़ा और कुछ नहीं भी दिये जा सके। यद्यपि साधारण अङ्कोंमें इनमेंसे कुछ अच्छे लेखोको देनेका प्रयत्न किया जा सकता है, फिर भी बहुतसे लेख अप्रकाशित ही रह सकते हैं, इसके लिये हम लेखक महानुभावोसे हाथ जोडकर विनीत क्षमा-प्रार्थी हैं।

'विशेषाङ्क'के प्रकाशनके समय कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ और समस्याएँ भी आती हैं, पर उन्हें सहन कर पानेकी शक्ति भी भगवान् विश्वेश्वर ही प्रदान करते हैं। इस वर्ष भी विभिन्न कठिनाइयाँ आयीं, परंतु सुरभिदेवीकी कृपासे सबका शमन हुआ।

प्रसन्नताकी बात है कि पिछले कुछ वर्षोंसे 'कल्याण'-की ग्राहक-संख्यामे वृद्धि हो रही है। दो वर्ष-पूर्व २० हजार ग्राहक 'कल्याण'के बढ़े थे। भगवत्कृपासे पिछले वर्ष भी इसी प्रकार ग्राहकोकी संख्यामें लगभग २० हजारकी वृद्धि हुई, जिसके कारण 'विशेषाङ्क' के संस्करण दो बार पुनः छापने पड़े। फिर भी सम्पूर्ण माँग पूरी नहीं

की जा सकी। हम भी 'कल्याण'का प्रकाशन-वितरण अधिक संख्यामें करना चाहते है, जिससे अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें तथा सर्वसाधारणकी आध्यात्मिक रुचिमें वृद्धि हो, पर इस कार्यमे आपके सहयोगकी भी अत्यधिक आवश्यकता है, हम यह चाहते हैं कि प्रत्येक पाठक 'कल्याण' का कम-से-कम एक ग्राहक अवश्य बनायें, इससे आप इस आध्यात्मिक पत्रिकाके प्रचार-प्रसारमें सहायक हो सकेगे। इस वर्ष भी गोभक्तोके उत्साहको देखते हुए यह प्रतीत होता है कि 'कल्याण' की मॉग बढ़ेगी। स्वभावत: इसके प्रचार-प्रसारसे जन-जीवनमें आध्यात्मिक चेतनाका विकास होगा और जन-सामान्य कल्याणके मार्गपर अग्रसर होगे।

हम अपने उन सभी पूज्य आचार्यो, परम सम्मान्य पवित्र-हृदय संत-महात्माओ, गोभक्त-सेवक और गोपालक महानुभावोके श्रीचरणोंमें श्रद्धा-भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं, जिन्होंने 'विशेषाङ्क'की पूर्णतामें किंचित् भी योगदान किया। गोसेवा और गोभक्तिके प्रचार-प्रसारमें वे ही मुख्य निमित्त भी हैं, क्योंकि उन्हींके सद्भावपूर्ण एवं उच्च विचारपूर्ण लेखोसे जन-सामान्यको गौके वास्तविक स्वरूपका दिग्दर्शन होगा। हम अपने विभागके तथा प्रेसके अपने उन स गी सम्मान्य साथी-सहयोगियोंको भी प्रणाम करते है, जिनके स्नेहभरे सहयोगसे यह पवित्र कार्य सम्पन्न हो सका है। हम अपनी त्रुटियो तथा व्यवहार-दोषके लिये उन सबसे क्षमा-प्रार्थी है।

'गोसेवा-अङ्क' के सम्पादनमे जिन भक्तों, गोपालको, संतो और विद्वान् लेखकोसे हमें सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ है, उन्हें हम अपने मानस-पटलसे विस्मृत नहीं कर सकते। समादरणीय गोभक्त श्रीराधाकृष्णजी बजाज, श्रीलक्ष्मी-नारायणजी मोदी, श्रीपुरुषोत्तमलालजी झुनझुनवाला, श्रीपरमानन्दजी मित्तल तथा श्रीसीतारामजी साबू आदि महानुभावोंके प्रति मैं हृदयसे आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होने 'गोसेवा-अङ्क'के प्रकाशनमे अपना प्रेरणापद सहयोग प्रदानकर उत्साह-वर्धन किया। इस संदर्भमें हमे सर्वाधिक सहयोग 'गोधन'के सम्पादक भाई शिवकुमारजी गोयलसे प्राप्त हुआ, जिन्होंने गोरक्षाके विभिन्न सेनानी, सेवक और भक्तोके चरित्र, उनकी कथाएँ और घटनाएँ तथा अपने पूज्य पिता श्रीरामशरणदासजीके संग्रहालयसे प्राप्त कई दुर्लभ सामग्रियोको उपलब्ध कराया। इनके प्रति हम अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। अपने सम्पादकीय विभागके वयोवृद्ध विद्वान् पं० श्रीजानकीनाथजी शर्मा तथा कुछ अन्य सहयोगियोके अथक परिश्रमसे ही यह विशेषाङ्क इस रूपमे प्रस्तुत हो सका है। इसके सम्पादन तथा प्रूफ-संशोधन चित्र-निर्माण आदि कार्योंमे जिन-जिन लोगोसे हमे सहायता मिली है, वे सभी हमारे अपने हैं, उनको धन्यवाद देकर हम उनके महत्त्वको घटाना नहीं चाहते। वास्तवमे 'कल्याण'का कार्य परमात्मप्रभुका कार्य है। भगवान् अपना कार्य स्वयं करते हैं, हम तो केवल निमित्त मात्र है।

इस बार 'गोसेवा-अङ्क' के सम्पादन-कार्यके अन्तर्गत प्रकाशनके निमित्त जो सामग्री प्राप्त हुई, उसके अध्ययन, मनन और चिन्तनसे यह अनुभव हुआ कि गौ माता हमारी सर्वोपरि श्रद्धाका केन्द्र है और भारतीय संस्कृतिकी आधारशिला है। वस्तुत: गोमाता सर्वदेवमयी है। अपने शास्त्रोंमे तैंतीस कोटि देवताओका वर्णन मिलता हे। यदि अपने सम्पूर्ण तैतीस कोटि देवी-देवताओंका षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार-पूजन करना हो तो यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है? *'सर्वे देवा: स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ.'* केवल एक गौ माताकी पूजा और सेवा करनेसे एक साथ सम्पूर्ण देवी-देवताओंकी पूजा सम्पन्न हो जाती है, अत: प्रेय और श्रेय अथवा समृद्धि और कल्याण—दोनोंकी प्राप्तिके लिये गोसेवासे बढ़कर कोई दूसरा परम साधन नहीं है। आशा है 'कल्याण' के पाठकगण भी इससे पूर्ण लाभान्वित होगे।

अन्तमें हम अपनी त्रुटियोके लिये आप सबसे क्षमा-प्रार्थना करते हुए दीनवत्सला करुणामयी सुरभि गोमाताके श्रीचरणोमे प्रणतिपूर्वक यह प्रार्थना करते है कि 'गाये ही हमारे आगे हों, गायें ही हमारे पीछे हो, सब ओर गाये हो तथा गायोंके मध्यमें ही हमारा निवास हो'—

गावो ममाग्रत: सन्तु गाव: पृष्ठत एव च।
गाव: सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

—राधेश्याम खेमका
सम्पादक

गीताप्रेस, गोरखपुरके प्रकाशनोंका सूचीपत्र

ध्यान देने योग्य कुछ आवश्यक बातें

(१) पुस्तकोके आर्डरमे पुस्तकका कोड न०, नाम, मूल्य तथा मँगानेवालेका पूरा पता, डाकघर, जिला, पिन-कोड आदि हिन्दी या अँग्रेजीमे सुस्पष्ट लिखे। पुस्तके यदि रेलसे मँगवानी हो तो निकटतम रेलवे-स्टेशनका नाम अवश्य लिखना चाहिये।

(२) कम-से-कम रु० ५०० मूल्यकी कुल पुस्तकोके आर्डरपर डिस्काउन्ट देनेकी व्यवस्था है। डिस्काउन्टकी दर मूल्यके वाद ▲ चिह्नवाली पुस्तकोंपर ३०% एव ■ चिह्नवाली पुस्तकोपर १५% है। अन्य खर्च—पैकिंग, रेलभाडा आदि अतिरिक्त देय होगा। रु० १००० से अधिककी पुस्तके एक साथ चलान करनेपर पैकिंग-खर्च नहीं लिया जाता तथा रेलभाड़ा बाद दिया जाता है।

(३) डाकसे भेजी जानेवाली पुस्तकोपर कम-से-कम ५% (न्यूनतम रु० १) पैकिंग-खर्च, अङ्कित डाकखर्च तथा रजिस्ट्री/वी० पी० खर्च पुस्तकोके मूल्यके अतिरिक्त देय है। डाकसे शीघ्र एव सुरक्षित मिलनेके लिये वी० पी०/रजिस्ट्रीसे पुस्तके मँगवाये। रु० २०० से अधिक मूल्यकी पुस्तकोके साथ अग्रिम राशि भेजनेकी कृपा करे।

☞ (४)सूचीमे पुस्तकोके मूल्यके सामने वर्तमानमे लगनेवाला साधारण डाकखर्च (बिना रजिस्ट्री-खर्चके) ही अकित है। वडी पुस्तकोको रजिस्ट्री/वी० पी० पी० से ही मँगाना उचित है। वर्तमानमे अकित डाकखर्चके अतिरिक्त रजिस्ट्री-खर्च रु० ६ ०० प्रति पैकेट (५ किलो वजनतक) दरसे लगता है।

(५) 'कल्याण' मासिक या उसके विशेषाङ्कके साथ पुस्तके नहीं भेजी जा सकतीं। अतएव पुस्तकोके लिये गीताप्रेसपुस्तक-विक्रय-विभागके पतेपर 'कल्याण'के लिये 'कल्याण'-कार्यालय, पो० गीताप्रेसके पतेपर अलग-अलग आर्डर भेजना चाहिये। सम्वन्धित राशि भी अलग-अलग भेजना ही उचित है।

(६) आजकल डाकखर्च बहुत अधिक लगता है। अत: पुस्तकोका आर्डर देनेसे पहले स्थानीय पुस्तक-विक्रेतासे सम्पर्क करे। इससे समय तथा धनकी वचत हो सकती है।

(७) विदेशोमे निर्यातके मूल्य तथा नियमादिकी जानकारी हेतु पत्राचार करे।

विशेष—जो पुस्तके इस समय तैयार नहीं है उनके मूल्य इस सूचीपत्रमे अङ्कित नहीं है, अतएव कृपया उन्हे वादमे मँगाये। पुस्तकोके मूल्य, डाकखर्च आदिमे परिवर्तन होनेपर परिवर्तित राशि देय होगी।

व्यवस्थापक—गीताप्रेस, गोरखपुर-२७३००५ फोन नं० (०५५१) ३३४७२१

पुस्तक-सूची (नवम्बर १९९४)

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
	श्रीमद्भगवद्गीता			
1	गीता-तत्त्व-विवेचनी— (टीकाकार श्रीजयदयालजी गोयन्दका) गीता-विपयक २५१५ प्रश्न और उनके उत्तर-रूपमे विवेचनात्मक हिन्दी टीका, वृहदाकार, सचित्र, सजिल्द	६० ००	■	१९ ००
2	„ „ ग्रन्थाकार	३० ००	■	९ ००
3	„ „ नवीन सस्करण	२० ००	■	८ ००
4	„ „ गुटका वाइवल पेपर	१५ ००	■	७ ००
457	„ „ अँग्रेजी अनुवाद	२५ ००	■	८ ००
5	गीता-साधक-सजीवनी— (टीकाकार स्वामी श्रीरामसुखदासजी) गीताके मर्मको समझने-हेतु व्याख्यात्मक शैली एव सरल, सुवाध भापामे हिन्दी टीका वृहदाकार, सचित्र, सजिल्द	८० ००	■	२२ ००
6	„ „ ग्रन्थाकार	५० ००	■	१२ ००
512	„ „ पाकेट साइज (दो खण्डोमें)	४० ००	■	५ ००
7	„ „ मराठी अनुवाद	६० ००	■	१० ००
467	„ „ गुजराती अनुवाद	६० ००	■	१० ००
458	„ „ अँग्रेजी अनुवाद	३५ ००	■	८ ००
595	„ „ अँग्रेजी (दो खण्डोंमे)	४० ००	■	५ ००
540	„ „ वँगला (अध्याय १ से ६ तक)	२० ००	■	५ ००
8	गीता-दर्पण—(स्वामी रामसुखदासजीद्वारा) गीताके तत्त्वोपर प्रकाश, लेख, गीता-व्याकरण और छन्द-सम्वन्धी गूढ विवेचन सचित्र, सजिल्द	२५ ००	■	५ ००
504	„ „ (मराठी अनुवाद) सजिल्द	२० ००	■	५ ००
556	„ „ (वँगला अनुवाद)„	२५ ००	■	५ ००
468	„ „ (गुजराती अनुवाद)„	२५ ००	■	५ ००
493	„ „ (अँग्रेजी पाकेट साइज)„	२० ००	■	२ ००
10	गीता-शाकर-भाष्य—	३० ००	■	६ ००
581	„ रामानुज-भाष्य—	२५ ००	■	५ ००
11	गीता-चिन्तन—(श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके गीता-विपयक लेखो, विचारो, पत्रो आदिका सग्रह)	१५ ००	■	३ ००
17	गीता—मूल, पदच्छेद, अन्वय, भापा-टीका, टिप्पणी-प्रधान और सूक्ष्म विपय एव 'त्यागसे भगवत्प्राप्ति' लेखसहित, सचित्र, सजिल्द	१० ००	■	३ ००
12	„ „(गुजराती)	१५ ००	■	४ ००
13	„ „(वँगला)	१० ००	■	४ ००
14	„ „ (मराठी)	१५ ००	■	४ ००
16	गीता—प्रत्येक अध्यायके माहात्म्यसहित, सजिल्द, मोटे अक्षरोंमे	१० ००	■	३ ००
15	„ „ (मराठी अनुवाद)	१५ ००	■	३ ००
18	„ „ भापा-टीका, टिप्पणी-प्रधान विपय, मोटा टाइप	७ ५०	■	२ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
502	गीता—मोटे अक्षर, सजिल्द	१० ००	■	३ ००
19	गीता—केवल भाषा	४ ००	■	१ ००
20	गीता—भाषा-टीका	२ ५०	■	१ ००
455	„ „ (अँग्रेजी)	२ ५०	■	१ ००
21	श्रीपञ्चरत्नगीता—गीता, विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, अनुस्मृति, गजेन्द्रमोक्ष (मोटे अक्षरोंमें)	८ ००	■	२ ००
22	गीता—मूल, मोटे अक्षरोवाली	५ ००	■	२ ००
538	गीता-मूल मोटा (सजिल्द)	६ ००	■	२ ००
23	„ मूल, विष्णुसहस्रनाम-सहित	१ ००	■	१ ००
488	नित्यस्तुति —गीता मूल, विष्णुसहस्रनाम-सहित	२ ५०	■	१ ००
24	गीता—ताबीजी (माचिस आकार)	१ ००	■	१ ००
566	गीता—तावीजी एक पन्नेमे सम्पूर्ण गीता (कम-से-कम ५०० प्रति)	० १०	■	
288	गीताके कुछ श्लोकोपर विवेचन—	० ७५	▲	१ ००
289	गीता-निबन्धावली—	२ ००	▲	१ ००
297	गीतोक्त सन्यास या साख्ययोगका स्वरूप—	० ७५	▲	१ ००
388	गीता-माधुर्य—स्वामी रामसुखदासजीद्वारा सरल प्रश्नोत्तर-शैलीमें (हिन्दी)	६ ००	▲	१ ००
389	„ „ (तमिल)	८ ००	▲	२ ००
390	„ „ (कन्नड)	४ ५०	▲	१ ००
391	„ „ (मराठी)	६ ००	▲	१ ००
392	„ „ (गुजराती)	५ ००	▲	१ ००
393	„ „ (उर्दू)	६ ००	▲	२ ००
394	„ „ (नेपाली)	५ ००	▲	२ ००
395	„ „ (बँगला)	५ ००	▲	१ ००
487	„ „ (अँग्रेजी)	६ ००	▲	१ ००
470	गीता—रोमन गीता मूल, श्लोक एव अँग्रेजी अनुवाद	६ ००	■	२ ००
503	गीता दैनन्दिनी (1995)—पुस्तकाकार- प्लास्टिक कवर	२० ००	■	४ ००
615	„ „ पाकेट साइज „	१० ००	■	३ ००
506	„ „ पाकेट साइज (साधारण)	८ ००	■	३ ००
464	गीता-ज्ञान-प्रवेशिका-	१० ००	■	२ ००
464A	„ „ (सजिल्द)	१२ ००	■	२ ००
508	गीता सुधा तरगिनी—गीताका पद्यानुवाद	४ ००	■	१ ००
	रामायण			
237	* जय श्रीराम-चित्र	१० ००	■	
80	श्रीरामचरितमानस-वृहदाकार, मोटा टाइप, सजिल्द आकर्षक आवरण, राजसस्करण	१३० ००	■	१९ ००
81	„ „ सटीक, मोटा टाइप, आकर्षक आवरण	७० ००	■	१० ००
82	„ „ मझला साइज, सजिल्द	३० ००	■	५ ००
456	„ „ अँग्रेजी अनुवाद-सहित	६० ००	■	९ ००
83	„ „ मूलपाठ, मोटे अक्षरोमें, सजिल्द	३५ ००	■	६ ००
84	„ „ मूल, मझला साइज	२० ००	■	४ ००
85	„ „ मूल, गुटका	१२ ००	■	२ ००
94	„ „ बालकाण्ड-सटीक	१० ००	■	२ ००
95	„ „ अयोध्याकाण्ड- „	८ ००	■	१ ००
96	„ „ अरण्यकाण्ड— „	२ ००	■	१ ००
97	„ „ किष्किन्धाकाण्ड- „	१ ५०	■	१ ००
98	„ „ सुन्दरकाण्ड- „	२ २५	■	१ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
101	„ „ लकाकाण्ड- सटीक	३ ५०	■	१ ००
102	„ „ उत्तरकाण्ड-„	४ ५०	■	१ ००
99	„ „ सुन्दरकाण्ड-मूल, गुटका	१ ५०	■	१ ००
100	„ „ सुन्दरकाण्ड-मूल, मोटा टाइप	२ ५०	■	१ ००
86	मानसपीयूष-(श्रीरामचरितमानसपर सुप्रसिद्ध तिलक, टीकाकार—श्रीअञ्जनीनन्दनशरण (सातों खण्ड)			
87	„ „ बालकाण्ड खण्ड-१			
88	„ „ „ खण्ड-२			
89	„ „ „ खण्ड-३			
90	„ „ अयोध्याकाण्ड खण्ड-४			
91	„ „ अरण्य, किष्किन्धाकाण्ड खण्ड-५			
92	„ „ सुन्दर तथा लकाकाण्ड खण्ड-६			
93	„ „ उत्तरकाण्ड खण्ड-७			
75	श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण—सटीक, सजिल्द (प्रथम खण्ड)	४५ ००	■	८ ००
76	„ „ (द्वितीय खण्ड)	४५ ००	■	८ ००
77	„ „ केवल भाषा	५५ ००	■	१० ००
583	„ „ (मूलमात्रम्)	६५ ००	■	११ ००
78	„ „ सुन्दरकाण्ड, मूलमात्रम्	१० ००	■	२ ००
452	„ „ (अँग्रेजी अनुवाद-सहित भाग-१)	६० ००	■	८ ००
453	„ „ („ „) भाग-२	६० ००	■	८ ००
454	„ „ („ „) भाग-३	६५ ००	■	९ ००
74	अध्यात्मरामायण—सटीक, सजिल्द	३० ००	■	५ ००
223	मूल रामायण—			
	अन्य तुलसीकृत साहित्य			
105	विनयपत्रिका—सरल भावार्थ-सहित	१३ ००	■	२ ००
106	गीतावली— „ „	१२ ००	■	२ ००
107	दोहावली—सानुवाद	६ ००	■	१ ००
108	कवितावली— „	६ ५०	■	१ ००
109	रामाज्ञाप्रश्न—सरल भावार्थ-सहित	२ ००	■	१ ००
110	श्रीकृष्णगीतावली— „ „	३ ००	■	१ ००
111	जानकीमंगल— „ „	२ ००	■	१ ००
112	हनुमानबाहुक—सानुवाद	१ ५०	■	१ ००
113	पार्वतीमगल—सरल भावार्थ-सहित	१ ५०	■	१ ००
114	वैराग्यसदीपनी— „ „	० ५०	■	१ ००
115	बरवै रामायण— „ „	१ ००	■	१ ००
	पुराण, उपनिषद् आदि			
28	श्रीमद्भागवत-सुधासागर—सम्पूर्ण श्रीमद्भागवतका भाषानुवाद, सचित्र, सजिल्द	५५ ००	■	९ ००
25	„ „ बृहदाकार, बड़े टाइपोमे „	१५० ००	■	२५ ००
26	श्रीमद्भागवत-महापुराण—सटीक—सचित्र, सजिल्द (प्रथम खण्ड)	६० ००	■	१० ००
27	„ „ „ (द्वितीय खण्ड)	६० ००	■	१० ००
564	„ „ „ अँग्रेजी (प्रथम खण्ड)		■	
565	„ „ „ „ (द्वितीय खण्ड)	२० ००	■	५.००
29	„ „ „ मूल मोटा टाइप	५० ००	■	६ ००
30	श्रीप्रेम-सुधासागर—श्रीमद्भागवत, दशम स्कन्धका भाषानुवाद, सचित्र, सजिल्द	२० ००	■	४ ००
31	भागवत एकादश स्कन्ध—सचित्र, सजिल्द			

* चित्र २५०/१००की पेटी/कार्टूनमे ही भेजे जा सकते हैं। फुटकर भेजनेमें चित्रोंके खराव होनेकी सम्भावना है।

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
32	महाभारत—हिन्दी टीका-सहित, सजिल्द, सचित्र प्रथम खण्ड [आदिपर्व और सभापर्व]	७५ ००	■	१० ००
33	,, ,, द्वितीय खण्ड [वन और विराटपर्व]	८५ ००	■	१० ००
34	,, ,, तृतीय खण्ड [उद्योग और भीष्मपर्व]	८५ ००	■	१० ००
35	,, ,, चतुर्थ खण्ड [द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक और स्त्रीपर्व]	१०० ००	■	१२ ००
36	,, ,, पञ्चम खण्ड [शान्तिपर्व]	८० ००	■	१२ ००
37	,, ,, षष्ठ खण्ड [अनुशासन, आश्वमेधिक, आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक और स्वर्गारोहणपर्व]	८५ ००	■	११ ००
38	महाभारत-खिलभाग हरिवंशपुराण—हिन्दी टीका	७० ००	■	११ ००
39	संक्षिप्त महाभारत—(प्रथम खण्ड) केवल भाषा, सचित्र, सजिल्द	५५ ००	■	९ ००
511	,, ,, (द्वितीय खण्ड)	५५ ००	■	८ ००
44	संक्षिप्त पद्मपुराण-सचित्र, सजिल्द	६५ ००	■	८ ००
45	संक्षिप्त शिवपुराण-सचित्र, सजिल्द			
613	,, ,, बडा टाइप ,,	६० ००	■	८ ००
539	संक्षिप्त मार्कण्डेय-ब्रह्मपुराणाङ्क	६५ ००	■	९ ००
46	संक्षिप्त श्रीमद्देवीभागवत-केवल भाषा	६० ००	■	७ ००
48	श्रीविष्णुपुराण-सानुवाद, सचित्र, सजिल्द	४५ ००	■	६ ००
47	पातञ्जलयोग-प्रदीप-पातञ्जलयोग-सूत्रोंका वर्णन	५० ००	■	७ ००
517	गर्गसंहिता-भगवान् कृष्णकी दिव्य लीलाओंका वर्णन, सचित्र, सजिल्द	४५ ००	■	७ ००
279	स्कन्दपुराण-सचित्र, सजिल्द	८० ००	■	११ ००
66	ईशादि नौ उपनिषद्-अन्वय-हिन्दी व्याख्या	२५ ००	■	५ ००
67	ईशावास्योपनिषद्-सानुवाद, शांकरभाष्य	२ ००	■	१ ००
68	केनोपनिषद्- ,, ,,	५ ५०	■	१ ००
578	कठोपनिषद्- ,, ,,	६ ५०	■	१ ००
69	माण्डूक्योपनिषद्- ,, ,,	११ ००	■	१ ००
513	मुण्डकोपनिषद्- ,, ,,	५ ००	■	१ ००
70	प्रश्नोपनिषद्- ,, ,,	५ ००	■	१ ००
71	तैत्तिरीयोपनिषद्- ,, ,,	९ ५०	■	१ ००
582	छान्दोग्योपनिषद्- ,, ,,	४५ ००	■	७ ००
577	बृहदारण्यकोपनिषद्- ,, ,,	६० ००	■	१० ००
72	ऐतरेयोपनिषद्- ,, ,,	४ ००	■	१ ००
73	श्वेताश्वतरोपनिषद्- ,, ,,	१० ००	■	२ ००
65	वेदान्त-दर्शन-हिन्दी व्याख्या-सहित, सजिल्द	१८ ००	■	४ ००
135	पातञ्जलयोगदर्शन- ,, ,,	५ ५०	■	२ ००
201	मनुस्मृति दूसरा अध्याय सानुवाद-			

भक्त-चरित्र

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
40	भक्तचरिताङ्क-सचित्र, सजिल्द	६० ००	■	९ ००
51	श्रीतुकाराम-चरित-जीवनी और उपदेश			
53	भागवतरत्न प्रह्लाद-	७ ५०	■	२ ००
123	चैतन्य-चरितावली-सम्पूर्ण एक साथ	५५ ००	■	१० ००
167	भक्त भारती-			
168	भक्त नरसिंह मेहता-	५ ५०	■	१ ००
169	भक्त बालक-गोविन्द-मोहन आदिकी गाथा	२ ५०	■	१ ००
170	भक्त नारी-मीरा, शबरी आदिकी गाथा	३ ००	■	१ ००
171	भक्त पञ्चरत्न-रघुनाथ-दामोदर आदिकी भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
172	आदर्श भक्त-शिबि, रन्तिदेव आदिकी गाथा	३ ५०	■	१ ००
173	भक्त सप्तरत्न-दामा, रघु आदिकी भक्तगाथा	३ ००	■	१ ००
174	भक्त चन्द्रिका-सखू, विट्ठल आदि छ भक्तगाथा	३ ००	■	१ ००
175	भक्त-कुसुम-जगन्नाथ आदि छ भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
176	प्रेमी भक्त-बिल्वमंगल, जयदेव आदि पाँच भक्तगाथा	३ ००	■	१ ००
177	प्राचीन भक्त-मार्कण्डेय, उत्तङ्क आदि १५ भक्तगाथा	५.००	■	१ ००
178	भक्त सरोज-गङ्गाधरदास, श्रीधर आदि दस भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
179	भक्त सुमन-नामदेव, राँका-बाँका आदि भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
180	भक्त सौरभ-व्यासदास, प्रयागदास आदि भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
181	भक्त सुधाकर-रामचन्द्र, लाखा आदि भक्तगाथा	४ ००	■	१ ००
182	भक्त महिलारत्न-रानी रत्नावती, हरदेवी आदि भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
183	भक्त दिवाकर-सुव्रत, वैश्वानर आदि आठ भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
184	भक्त रत्नाकर-माधवदास, विमलतीर्थ आदि चौदह भक्तगाथा	३ ५०	■	१ ००
185	भक्तराज हनुमान्-हनुमान्‌जीका जीवनचरित्र	२ ५०	■	१ ००
608	,, ,, (तमिल)	४ ००	■	२ ००
186	सत्यप्रेमी हरिश्चन्द्र-	२ ००	■	१ ००
187	प्रेमी भक्त उद्धव-			
188	महात्मा विदुर-	२ ००	■	१ ००
189	भक्तराज ध्रुव-	२ ००	■	१ ००
537	बालचित्रमय बुद्धलीला-चित्रोंमें	३ ००	■	१ ००
194	,, चैतन्यलीला- ,,	३ ००	■	१ ००
292	नवधा भक्ति-भरतजीमें नवधा भक्ति-सहित	२ ५०	▲	१ ००
385	नारदभक्तिसूत्र-सानुवाद	१ २५	▲	१ ००
330	नारदभक्तिसूत्र-सानुवाद (बँगला)	१ २५	▲	१ ००
499	,, ,, ,, (तमिल)	१ ००	▲	१ ००
121	एकनाथ-चरित्र-	८ ००	■	२ ००
516	आदर्श चरितावली-पृष्ठ-सं० ६४	२ ५०	■	१ ००
396	आदर्श ऋषिमुनि- (,, ,,)	२ ५०	■	१ ००
397	आदर्श देशभक्त- (,, ,,)	२ ५०	■	१ ००
398	आदर्श सम्राट- (,, ,,)	२ ५०	■	१ ००
399	आदर्श संत- (,, ,,)	२ ५०	■	१ ००
402	सुधारक संत- (,, ,,)	२ ५०	■	१ ००
136	विदुरनीति-पृष्ठ-सं० १४४	५ ००	■	२ ००
138	भीष्मपितामह-पृष्ठ-सं० १३६	४ ५०	■	१ ००

परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दकाके शीघ्र कल्याणकारी प्रकाशन

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
527	प्रेमयोगका तत्त्व-(हिन्दी)	६ ००	▲	२ ००
521	प्रेमयोगका तत्त्व-(अँग्रेजी अनुवाद)	४ ००	▲	२ ००
528	ज्ञानयोगका तत्त्व-(हिन्दी)	६ ००	▲	२ ००
520	,, ,, (अँग्रेजी अनुवाद)	५ ००	▲	२ ००
266	कर्मयोगका तत्त्व-(भाग-१)	४ ००	▲	१ ००
267	,, ,, (भाग-२)	४ ००	▲	१ ००
303	प्रत्यक्ष भगवद्दर्शनके उपाय-(भ०यो०त०भाग १)	४ ००	▲	१ ००
298	भगवान्‌के स्वभावका रहस्य-(भ०यो०त०भाग २)	३ ५०	▲	१ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
242	महत्त्वपूर्ण शिक्षा-पृष्ठ ३५८	६ ००	▲	२ ००
243	परम साधन-भाग-१, पृष्ठ १९२	४ ००	▲	२ ००
244	,, ,, भाग-२, पृष्ठ १६०	३ ५०	▲	२ ००
245	आत्मोद्धारके साधन-भाग-१ पृष्ठ ४६४	४ ००	▲	२ ००
335	अनन्यभक्तिसे भगवत्प्राप्ति-(आ० सा० भाग-२)	३ ५०	▲	२ ००
579	अमूल्य समयका सदुपयोग-	३ ००	▲	१ ००
246	मनुष्यका परम कर्तव्य-भाग-१ पृष्ठ १९२	४ ००	▲	२ ००
247	,, ,, भाग-२ ,,	४ ००	▲	२ ००
611	इसी जन्ममे परमात्मप्राप्ति	४ ००	▲	१ ००
588	अपात्रको भी भगवत्प्राप्ति-	४ ००	▲	१ ००
248	कल्याणप्राप्तिके उपाय-तत्वचिन्तामणि भाग-१	५ ००	▲	२ ००
275	,, ,, ,, (बँगला)	६ ००	▲	२ ००
249	शीघ्र कल्याणके सोपान- भाग-२, खण्ड-१	४ ००	▲	२ ००
250	ईश्वर और ससार- ,, भाग-२, खण्ड-२	४ ५०	▲	२ ००
519	अमूल्य शिक्षा- ,, भाग-३, खण्ड-१	३ ५०	▲	१ ००
253	धर्मसे लाभ अधर्मसे हानि-त० चि० भाग-३, खण्ड-२	३ ५०	▲	२ ००
251	अमूल्य वचन- तत्वचिन्तामणि भाग-४, खण्ड-१	४ ००	▲	२ ००
252	भगवद्दर्शनकी उत्कण्ठा- ,, खण्ड-२	४ ००	▲	२ ००
254	व्यवहारमे परमार्थकी कला-त०चि०भाग-५, खण्ड-१	४ ००	▲	२ ००
255	श्रद्धा-विश्वास और प्रेम-,, भाग-५, खण्ड-२	४ ००	▲	२ ००
258	तत्त्वचिन्तामणि- ,, भाग-६, खण्ड-१	३ ५०	▲	२ ००
257	परमानन्दकी खेती- ,, भाग-६, खण्ड-२	३ ५०	▲	२ ००
260	समता अमृत और विषमता विष- ,, भाग-७, खण्ड-१	४ ००	▲	२ ००
259	भक्ति-भक्त-भगवान्-त०चि०भाग-७, खण्ड-२	४ ००	▲	२ ००
256	आत्मोद्धारके सरल उपाय-पृष्ठ २१४	४ ००	▲	२ ००
261	भगवान्के रहनेके पाँच स्थान-पृष्ठ ५४	२ ००	▲	१ ००
262	रामायणके कुछ आदर्श पात्र-पृष्ठ २१४	२ ५०	▲	१ ००
264	मनुष्य-जीवनकी सफलता-भाग-१, पृष्ठ १४४	४ ००	▲	२ ००
265	,, ,, ,, भाग-२, पृष्ठ १४४	३ ५०	▲	२ ००
268	परमशान्तिका मार्ग-भाग-१, पृष्ठ १७६	४ ००	▲	२ ००
269	,, ,, भाग-२, पृष्ठ १९२	४ ००	▲	२ ००
599	हमारा आश्चर्य	३ ५०	▲	१ ००
272	स्त्रियोके लिये कर्तव्य शिक्षा-पृष्ठ १६०	३ ००	▲	१ ००
273	नल-दमयन्ती-पृष्ठ ७२	२ ००	▲	१ ००
263	महाभारतके कुछ आदर्श पात्र-पृष्ठ १९२	२ ५०	▲	१ ००
274	महत्त्वपूर्ण चेतावनी-पृष्ठ ११२	२ ५०	▲	१ ००
276	परमार्थ-पत्रावली-बँगला, प्रथम भाग	२ ५०	▲	१ ००
277	उद्धार कैसे हो? -५१ पत्रोंका सग्रह, पृष्ठ ११२	२ ५०	▲	१ ००
278	सच्ची सलाह-८० पत्रोंका सग्रह, पृष्ठ १७२	३ ००	▲	१ ००
280	साधनोपयोगी पत्र-७२ पत्रोंका सग्रह	४ ००	▲	१ ००
281	शिक्षाप्रद पत्र-७० पत्रोका सग्रह	४ ००	▲	२ ००
282	पारमार्थिक पत्र-९१ पत्रोंका सग्रह, पृष्ठ २१४	४ ००	▲	२ ००
284	अध्यात्म-विषयक पत्र-५४ पत्रोंका सग्रह	३ ००	▲	१ ००
283	शिक्षाप्रद ग्यारह कहानियाँ-११ कहानियोंका सग्रह	२ ५०	▲	१ ००
480	,, ,, (अँग्रेजी)	२ ५०	▲	२ ००
320	वास्तविक त्याग-पृष्ठ ११२	२ ५०	▲	१ ००
285	आदर्श भ्रातृप्रेम-पृष्ठ ९६	२ ००	▲	१ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
286	बालशिक्षा-पृष्ठ ६४	१ ५०	▲	१ ००
287	बालकोंके कर्तव्य-पृष्ठ ८८	२ ००	▲	१ ००
290	आदर्श नारी सुशीला-पृष्ठ ४८	१ २५	▲	१ ००
312	,, ,, (बँगला)	१ २५	▲	१ ००
291	आदर्श देवियाँ-पृष्ठ १२८	१ २५	▲	१ ००
293	सच्चा सुख और उसकी प्राप्तिके उपाय-	० ७५	▲	१ ००
294	सत-महिमा-पृष्ठ ६४	० ७५	▲	१ ००
295	सत्सगकी कुछ सार बाते-(हिन्दी)	० ७५	▲	१ ००
296	,, ,, (बँगला)	० ५०	▲	१ ००
466	,, ,, (तमिल)	० ७५	▲	१ ००
299	ध्यानावस्थामे प्रभुसे वार्तालाप-पृष्ठ ६०	२ ००	▲	१ ००
300	नारीधर्म-पृष्ठ ४०	१ ५०	▲	१ ००
301	भारतीय सस्कृति तथा शास्त्रोमें नारीधर्म	१ ००	▲	१ ००
310	सावित्री और सत्यवान-पृष्ठ २८	१ ००	▲	१ ००
607	,, ,, (तमिल)	१ ००	▲	१ ००
302	श्रीप्रेमभक्ति प्रकाश-पृष्ठ १६	१ ००	▲	१ ००
304	गीता पढनेके लाभ-	० ५०	▲	१ ००
536	सत्यकी शरणसे मुक्ति-(तमिल)	१ ५०	▲	१ ००
305	गीताका तात्त्विक विवेचन एव प्रभाव-	१ २५	▲	१ ००
309	भगवत्प्राप्तिके विविध उपाय-पृष्ठ ९६ (कल्याण प्राप्तिकी कई युक्तियाँ)	१ ००	▲	१ ००
311	वैराग्य, परलोक और पुनर्जन्म-	१ ००	▲	१ ००
317	अवतारका सिद्धान्त-पृष्ठ ६४	० ७५	▲	१ ००
306	भगवान् क्या हैं?-पृष्ठ ४८	० ५०	▲	१ ००
307	भगवान्की दया-पृष्ठ ४८	० ५०	▲	१ ००
308	सामयिक चेतावनी-	० ५०	▲	१ ००
313	सत्यकी शरणसे मुक्ति-	० ५०	▲	१ ००
314	व्यापार-सुधारकी आवश्यकता मुक्ति-	० ५०	▲	१ ००
315	चेतावनी-	० ५०	▲	१ ००
316	ईश्वर-साक्षात्कार-नाम-जप सर्वोपरि साधन है-			
318	ईश्वर दयालु और न्यायकारी है-	० ५०	▲	१ ००
270	हेतुरहित भगवान्का सौहार्द-पृष्ठ ३२	० ५०	▲	१ ००
271	भगवत्प्रेमकी प्राप्ति कैसे हो?-पृष्ठ ३२	० ५०	▲	१ ००
319	हमारा कर्तव्य-पृष्ठ ३२	० ५०	▲	१ ००
321	त्यागसे भगवत्प्राप्ति-(गजलगीतासहित)	० ५०	▲	१ ००
326	प्रेमका सच्चा स्वरूप-	० ५०	▲	१ ००
329	शोक-नाशके उपाय-	० ५०	▲	१ ००
322	महात्मा किसे कहते है ?-			
323	ज्ञानयोगके अनुसार विविध साधन-			
324	श्रीमद्भगवद्गीताका तात्त्विक विवेचन	० ४०	▲	१ ००
328	चतु श्लोकी भागवत-	० ३०	▲	१ ००
327	तीर्थोंमे पालन करनेयोग्य कुछ उपयोगी बाते-			

परम श्रद्धेय श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार (भाईजी) के अनमोल प्रकाशन

कोड		मूल्य		डाकखर्च
50	पदरत्नाकर-पृष्ठ-स० ९७६	३५ ००	■	५ ००
49	श्रीराधा-माधव-चिन्तन-	३५ ००	■	६ ००
58	अमृत-कण-	१२ ००	■	३ ००
332	ईश्वरकी सत्ता और महत्ता-पृष्ठ-४४८	१२ ००	■	३ ००
333	सुख-शान्तिका मार्ग-पृष्ठ ३०४	८ ५०	■	२ ००
343	मधुर-	९ ००	■	२ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
56	मानव-जीवनका लक्ष्य-पृष्ठ २४०	८००	■	२००
331	सुखी बननेके उपाय-पृष्ठ २५६	८००	▲	२००
334	व्यवहार और परमार्थ-पृष्ठ २९६	८००	▲	२००
336	नारीशिक्षा-पृष्ठ १५२	४५०	▲	१००
514	दु खमें भगवत्कृपा-पृष्ठ-स० २२४	७५०	▲	२००
386	सत्सग-सुधा-पृष्ठ २२४	७००	▲	२००
342	सतवाणी-ढाई हजार अनमोल बोल	८००	▲	२००
347	तुलसीदल-पृष्ठ २९४	८००	▲	२००
337	दाम्पत्य-जीवनका आदर्श-पृष्ठ १४४	५००	▲	१००
339	सत्सगके विखरे मोती-	६५०	▲	२००
340	श्रीरामचिन्तन-पृष्ठ १८४	५५०	▲	२००
338	श्रीभगवन्नाम-चिन्तन-पृष्ठ २३२	७५०	▲	२००
345	भवरोगकी रामबाण दवा-पृष्ठ १४४	४५०	▲	१००
346	सुखी बनो-पृष्ठ १२८	४५०	▲	१००
349	भगवत्प्राप्ति एव हिन्दू-सस्कृति-	१२००	■	३००
350	साधकोका सहारा-पृष्ठ ४४०	१२००	■	३००
351	भगवच्चर्चा भाग-५	५००	▲	१००
352	पूर्ण समर्पण-	१०००	■	२००
341	प्रेमदर्शन-पृष्ठ-स० १७६	६००	▲	२००
353	लोक-परलोकका सुधार-(कामके पत्र भाग-१)	२००	▲	१००
354	आनन्दका स्वरूप-पृष्ठ २६०	२५०	▲	१००
355	महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर-पृष्ठ २९२	३००	▲	१००
356	शान्ति कैसे मिले ?-(लो०प० सुधार भाग-४)	८००	▲	२००
357	दु ख क्यों होते हैं ?-	३००	▲	१००
358	कल्याण-कुज- (क० कु० भाग-१)	४५०	▲	१००
359	भगवान्‌की पूजाके पुष्प (,, भाग-२)	५००	▲	१००
360	भगवान् सदा तुम्हारे साथ है (,, भाग-३)	५५०	▲	२००
361	मानव-कल्याणके साधन- (,, भाग-४)	८००	▲	२००
362	दिव्य सुखकी सरिता- (,, भाग-५)	३५०	▲	१००
363	सफलताके शिखरकी सीढियाँ- (,, भाग-६)	४००	▲	१००
364	परमार्थकी मन्दाकिनी- (,, भाग-७)	३५०	▲	१००
387	प्रेम-सत्सग-सुधा-माला-पृष्ठ २०८	७००	▲	१००
365	गोसेवाके चमत्कार-(तमिल)	३५०	▲	१००
366	मानव-धर्म-पृष्ठ ९५	३५०	▲	१००
367	दैनिक कल्याण-सूत्र-पृष्ठ ८२	३००	▲	२००
368	प्रार्थना-इक्कीस प्रार्थनाओका सग्रह	२००	▲	१००
369	गोपीप्रेम-			
370	श्रीभगवन्नाम-	१००	▲	१००
371	राधा-माधव-रस-सुधा-सटीक, व्रजभाषामे			
372	,, ,, गुटका	१००	▲	१००
373	कल्याणकारी आचरण-(जीवनमें पालन करने योग्य)	१५०	▲	१००
374	साधन-पथ-सचित्र	२५०	▲	१००
375	वर्तमान शिक्षा-			
376	स्त्री-धर्म-प्रश्नोत्तरी-पृष्ठ-स० ४८	२००	▲	१००
377	मनको वश करनेके कुछ उपाय-	०८०	▲	१००
378	आनन्दकी लहरें-	१००	▲	१००
379	गोवध भारतका कलक एव गायका माहात्म्य-	१००	▲	१००
380	ब्रह्मचर्य-			
381	दीनदुखियोके प्रति कर्तव्य-	०८०	▲	१००
382	सिनेमा मनोरजन या विनाशका साधन	१००	▲	१००
384	विवाहमे दहेज-			
348	नैवेद्य-	२५०	▲	१००
344	उपनिषदोंके चौदह रत्न-	२००	▲	१००
383	भगवान् श्रीकृष्णकी कृपा-			
	परम श्रद्धेय स्वामी रामसुखदासजीके कल्याणकारी प्रवचन			
400	कल्याण-पथ- पृष्ठ १६०	५५०	▲	२००
605	जित देखूँ तित तू—	५.००	▲	२००
406	भगवत्प्राप्ति सहज है	४००	▲	२००
535	सुन्दर समाज का निर्माण	५००	▲	२००
401	मानसमे नाम-वन्दना-पृष्ठ १६०	५.००	▲	१००
403	जीवनका कर्तव्य- पृष्ठ १७६	५००	▲	१००
436	कल्याणकारी प्रवचन-(हिन्दी)	४००	▲	१००
404	,, ,, (गुजराती)	४००	▲	१००
405	नित्ययोगकी प्राप्ति-पृष्ठ १२८	४५०	▲	१००
407	भगवत्प्राप्तिकी सुगमता-पृष्ठ १३६	४५०	▲	१००
408	भगवान्‌से अपनापन-पृष्ठ ९६	३५०	▲	१००
409	वास्तविक सुख-पृष्ठ ११२	४००	▲	१००
411	साधन और साध्य-पृष्ठ ९०	३५०	▲	१००
412	तात्त्विक प्रवचन-(हिन्दी) पृष्ठ ९६	३५०	▲	१००
413	,, ,, (गुजराती) पृष्ठ १२०	४००	▲	१००
414	तत्त्वज्ञान कैसे हो ?-पृष्ठ १२०	४००	▲	१००
415	किसानोके लिये शिक्षा-	१२५	▲	१००
416	जीवनका सत्य-पृष्ठ ९६	३५०	▲	१००
417	भगवन्नाम-पृष्ठ ७२	२५०	▲	१००
418	साधकोके प्रति-पृष्ठ ९६	३५०	▲	१००
419	सत्सगकी विलक्षणता-पृष्ठ ६८	२५०	▲	१००
420	मातृशक्तिका घोर अपमान-पृष्ठ ४०	२००	▲	१००
421	जिन खोजा तिन पाइयाँ-पृष्ठ १०४	३५०	▲	१००
422	कर्मरहस्य- (हिन्दी)	३००	▲	१००
423	,, (तमिल)	३००	▲	१००
424	वासुदेव सर्वम्-पृष्ठ ६८	२५०	▲	१००
425	अच्छे बनो-पृष्ठ ८८	३००	▲	१००
426	सत्सगका प्रसाद-पृष्ठ ८८	३००	▲	१००
431	स्वाधीन कैसे बने-पृष्ठ ४८	२००	▲	१००
427	गृहस्थमे कैसे रहे ?-(हिन्दी)	४००	▲	१००
589	भगवान् और उनकी भक्ति	४००	▲	१००
603	गृहस्थोके लिये-(कल्याणवर्ष-६८३-४ से)	१००	▲	१००
428	गृहस्थमे कैसे रहे ?-(बँगला)	३००	▲	१००
429	,, ,, (मराठी)	६००	▲	१.००
128	,, ,, (कन्नड)	२७५	▲	१००
430	,, ,, (उड़िया)	३५०	▲	१००
472	,, ,, (अँग्रेजी)	३००	▲	१००
553	,, ,, (तमिल)	६००	▲	१००
432	एकै साधे सब सधै-पृष्ठ ८०	३००	▲	१००
607	सबका कल्याण कैसे हो ? -(तमिल)	१५०	▲	१००
433	सहज साधना-पृष्ठ ६४	२५०	▲	१००
617	देशकी वर्तमान दशा तथा उसका परिणाम	२५०	▲	१००
434	शरणागति-(हिन्दी)	२५०	▲	१००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
568	शरणागति-(तमिल)	३ ००	▲	१ ००
435	आवश्यक शिक्षा-	१ ५०	▲	१ ००
515	सर्वोच्चपदकी प्राप्तिका साधन-	१ २५	▲	१ ००
606	,, ,, (तमिल)	१ ५०	▲	१ ००
438	दुर्गतिसे बचो-(हिन्दी)	१ ००	▲	१ ००
449	,, (बँगला) (गुरुतत्त्व-सहित)	२ ००	▲	१ ००
439	महापापसे बचो (हिन्दी)	१ ००	▲	१ ००
451	,, ,, (बँगला)	० ८०	▲	१ ००
549	,, ,, (उर्दू)	१ २५	▲	१ ००
591	संतानका कर्तव्य (तमिल)	२ ००	▲	१ ००
440	सच्चा गुरु कौन ?-	१ ००	▲	१ ००
441	सच्चा आश्रय-	० ८०	▲	१.००
442	संतानका कर्तव्य- (हिन्दी)	० ८०	▲	१ ००
443	,, ,, (बँगला)	० ८०	▲	१ ००
444	नित्य-स्तुति.-	० ८०	▲	१ ००
445	हम ईश्वरको क्यो माने ?(हिन्दी)	० ८०	▲	१ ००
450	,, ,, (बँगला)	१ २५	▲	१ ००
554	,, ,, (नेपाली)	२५	▲	१ ००
510	मनकी खटपट कैसे मिटे (उर्दू)	० ८०	▲	१ ००
446	आहार-शुद्धि-(हिन्दी)	० ८०	▲	१ ००
551	आहार-शुद्धि-(तमिल)	१ ००	▲	१ ००
447	मूर्तिपूजा-(हिन्दी)	० ८०	▲	१ ००
469	,, (बँगला)	० ८०	▲	१ ००
569	,, (तमिल)	१ ००	▲	१ ००
448	नाम-जपकी महिमा-(हिन्दी)	० ८०	▲	१ ००
550	,, ,, (तमिल)	१ ००	▲	१ ००

नित्यपाठ साधन-भजन-हेतु

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
610	व्रत परिचय-	१६ ००	■	३ ००
52	स्तोत्ररत्नावली-सानुवाद	१० ००	■	२ ००
117	दुर्गासप्तशती-मूल, मोटा टाइप	८ ००	■	२ ००
118	,, ,,सानुवाद	९ ००	■	२ ००
489	,, ,, सजिल्द	१२ ००	■	२ ००
206	विष्णुसहस्रनाम-सटीक	२ ००	■	१ ००
226	,, ,, मूलपाठ	० ७५	■	२ ००
207	रामस्तवराज और रामरक्षास्तोत्र-			
211	आदित्य-हृदयस्तोत्रम्-हिन्दी-अँग्रेजी-अनुवाद-सहित	० ७५	■	१ ००
224	श्रीगोविन्ददामोदरस्तोत्र-भक्त बिल्वमंगलरचित सानुवाद	२ ००	■	१ ००
524	ब्रह्मचर्य और सध्या-गायत्री-पृष्ठ-स० ४८	१ ५०	■	१ ००
231	रामरक्षास्तोत्रम्-	० ७५	■	१ ००
235	सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्र-			
202	गगासहस्रनामस्तोत्र-	१ ००	■	१ ००
495	दत्तात्रेय-वज्रकवच-सानुवाद	१ ५०	■	१ ००
229	नारायणकवच-सानुवाद	० ७५	■	१ ००
230	अमोघशिवकवच-सानुवाद	१ ००	■	१ ००
563	शिवमहिम्नस्तोत्र-	० ७५	■	१ ००
54	भजन-सग्रह-पाँचो भाग एक साथ	१५ ००	■	४ ००
63	पद-पद्माकर-			
140	श्रीरामकृष्णलीला-भजनावली-३२८ भजनसग्रह	९ ५०	■	२ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
142	चेतावनी-पद-सग्रह-(दोनों भाग)	९ ५०	■	२ ००
144	भजनामृत-६७ भजनोका सग्रह	३ ५०	■	१ ००
153	आरती-सग्रह-१०२ आरतियोंका संग्रह	३ ००	■	१ ००
208	सीतारामभजन-	१ ००	■	१ ००
221	हरेरामभजन-दो माला (गुटका)			
222	,, ,, १४ माला	५ ००	■	२ ००
225	गजेन्द्रमोक्ष-सानुवाद, हिन्दी पद्य, भाषानुवाद	० ७५	■	१ ००
227	हनुमानचालीसा-	० ७५	■	१ ००
600	,, ,, (तमिल)	१ ५०	■	१ ००
228	शिवचालीसा-	० ७५	■	१ ००
203	अपरोक्षानुभूति-	१ ००	■	१ ००
204	गीताप्रेस-लीला-चित्रमन्दिर-दोहावली-	१ ००	■	१ ००
205	गीताभवन-दोहा-सग्रह-	१ ००	■	१ ००
139	नित्यकर्म-प्रयोग-	६ ००	■	२ ००
592	,, पूजाप्रकाश-	१८ ००	■	३ ००
210	सन्ध्योपासनविधि-मन्त्रानुवादसहित	१ २५	■	१ ००
220	तर्पण एवं बलिवैश्वदेवविधि-मन्त्रानुवादसहित	१ ००	■	१ ००
232	श्रीरामगीता-			
233	दोहावलीके चालीस दोहे-			
61	सूरविनयपत्रिका-			
509	सूक्ति-सुधाकर-			
567	विनयपत्रिकाके ३५ पद-	१ ५०	■	१ ००
234	बलिवैश्वदेवविधि-	० १०	■	१ ००
236	साधकदैनन्दिनी-	१ ००	■	१ ००
0614	सन्ध्या	० ७५	■	१ ००

बालकोपयोगी, स्त्रियोपयोगी एवं सर्वोपयोगी प्रकाशन

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
209	रामायण-मध्यमा-परीक्षा-पाठ्यपुस्तक-	० ७५	■	१ ००
116	लघुसिद्धान्तकौमुदी-	१० ००	■	२ ००
154	ज्ञानमणिमाला-	२ ००	■	१ ००
196	मननमाला-	१ २५	■	१ ००
461	हिन्दी बालपोथी-(भाग-१)	१ २५	■	१ ००
212	हिन्दी बालपोथी-(भाग-२)	२ ५०	■	१ ००
197	सस्कृतिमाला -भाग-१	२ ००	■	१ ००
198	,, ,, भाग-२	१ ५०	■	१ ००
199	,, ,, भाग-३			
200	,, ,, भाग-४			
59	जीवनमें नया प्रकाश-(ले० रामचरण महेन्द्र)	८ ००	■	२ ००
60	आशाकी नयी किरणें- (,,)	९ ००	■	२ ००
119	अमृतके घूँट- (,,)	७ ००	■	२ ००
132	स्वर्णपथ- (,,)	६ ५०	■	२ ००
55	महकते जीवनफूल- (,,)	१२ ००	■	३ ००
57	मानसिक दक्षता-पृष्ठ-स० २६४	१० ००	■	३ ००
62	श्रीकृष्ण-बाल-माधुरी-	६ ००	■	२ ००
64	प्रेमयोग-	४ ००	■	१ ००
103	मानस-रहस्य-	८.००	■	२ ००
104	मानस-शका-समाधान-पृष्ठ-स० १६०	६ ००	■	२ ००
501	उद्धव-सन्देश-पृष्ठ-स० २०८	७ ५०	■	२ ००
460	रामाश्वमेध-	१० ००	■	२ ००
191	भगवान् कृष्ण-पृष्ठ-स० ७२	२ ५०	■	१ ००
601	,, ,, -(तमिल)	४ ००	■	१ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च
193	भगवान् राम-पृष्ठ ६४	२ ५०	■ १ ००
195	भगवान्पर विश्वास-	१ २५	■ १ ००
120	आनन्दमय जीवन-	६ ५०	■ २ ००
133	विवेक-चूड़ामणि-	६ ००	■ २ ००
130	तत्त्वविचार-		
131	सुखी जीवन-	३ ५०	■ १ ००
190	बाल-चित्रमय कृष्णलीला-	५ ००	■ २ ००
192	बालचित्र-रामायण-(दोनों भाग)	३ ००	■ १ ००
238	कन्हैया-(धारावाहिक चित्रकथा)	५ ००	▲ २ ००
239	गोपाल- (,, ,,)	५ ००	▲ २ ००
240	मोहन- (,, ,,)	५ ००	▲ २ ००
241	श्रीकृष्ण- (,, ,,)	५.००	▲ २ ००
122	एक लोटा पानी-पृष्ठ-सं० १६०	६ ००	■ २ ००
134	सती द्रौपदी- पृष्ठ-सं० १३६	४ ५०	■ २ ००
137	उपयोगी कहानियाँ- पृष्ठ-सं० ९६	४ ००	■ १ ००
157	सती सुकला-	१ ५०	■ १ ००
158	महासती सावित्री-	१ ५०	■ १ ००
145	बालकोकी बाते- पृष्ठ-सं० ९८	४ ००	■ १ ००
146	बड़ोके जीवनसे शिक्षा- पृष्ठ-सं० ११२	४ ००	■ १ ००
147	चोखी कहानियाँ- पृष्ठ-सं० ८०	३ ००	■ १ ००
148	वीर बालक- पृष्ठ-सं० ८०	३ ००	■ १ ००
149	गुरु और माता-पिताके भक्त बालक- पृष्ठ-सं० ८०	३ ००	■ १ ००
150	पिताकी सीख- पृष्ठ-सं० १२४	४ ५०	■ २ ००
152	सच्चे-ईमानदार बालक- पृष्ठ-सं० ७२	२ ५०	■ १ ००
155	दयालु और परोपकारी बालक-बालिकाएँ-	२ ५०	■ १ ००
156	वीर बालिकाएँ-	२ ५०	■ १ ००
213	बालकोकी बोलचाल-	१ ५०	■ १ ००
214	बालकके गुण—	२ ००	■ १ ००
215	आओ बच्चो तुम्हे बताये-	२ ००	■ १ ००
216	बालककी दिनचर्या-	२ ००	■ १ ००
217	बालकोकी सीख-	२ ००	■ १ ००
218	बाल-अमृत-वचन-	१ ००	■ १ ००
219	बालकके आचरण-	२ ००	■ १ ००
159	आदर्श उपकार- (पढो, समझो और करो)	४ ५०	■ २ ००
160	कलेजेके अक्षर- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
161	हृदयकी आदर्श विशालता- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
162	उपकारका बदला- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
163	आदर्श मानव-हृदय- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
164	भगवान्के सामने सच्चा सो सच्चा- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
165	मानवताका पुजारी- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
166	परोपकार और सच्चाईका फल- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
510	असीम नीचता और असीम साधुता- (,, ,,)	४ ५०	■ २ ००
129	एक महात्माका प्रसाद-	५ ००	■ २ ००
151	सत्सगमाला- पृष्ठ-सं० ७२	३ ००	■ १ ००
	'कल्याण' के पुनर्मुद्रित विशेषाङ्क		
40	भक्त-चरिताङ्क-(कल्याणवर्ष २६)	६० ००	■ ९ ००
41	शक्ति-अङ्क-(,, ,, ९)	६० ००	■ ८ ००
572	परलोक एव पुनर्जन्माङ्क-(,, ,, ४३)	६५ ००	■ ८ ००
587	सत्कथा-अङ्क- (,, ,, ३०)	६५ ००	■ ८ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य	डाकखर्च
42	हनुमान-अङ्क- (कल्याणवर्ष ४९)	४० ००	■ ६ ००
43	नारी-अङ्क- (,, ,, २२)	५० ००	■ ८ ००
44	सक्षिप्त पद्मपुराण- (,, ,, १९)	६५ ००	■ ८ ००
613	,, शिवपुराण-(बडा टाइप)(,, ,, ३९)	६० ००	■ ६ ००
279	,, स्कन्दपुराण- (,, ,, २५)	८० ००	■ १० ००
539	मार्कण्डेय-ब्रह्मपुराणाङ्क-(,, ,, २१)	६५ ००	■ ७ ००
511	हिन्दू-सस्कृति-अङ्क- (,, ,, २४)	७५ ००	■ ९ ००
517	गर्ग-सहिता- (,, ४४ एव ४५) [भगवान् श्रीराधाकृष्णकी दिव्य लीलाओका वर्णन]	४५ ००	■ ७ ००
573	बालक-अङ्क- (कल्याणवर्ष २७)	७० ००	■ ९ ००
46	सक्षिप्त श्रीमद्देवीभागवत- (,, ३४)	६० ००	■ ८ ००
28	श्रीभागवत-सुधासागर- (,, १६)	५५ ००	■ ९ ००
574	सक्षिप्त योगवासिष्ठाङ्क- (,, ३५)	६५ ००	■ ९ ००
604	साधनाङ्क- (,, १५)	६५ ००	■ ९ ००
616	योगाङ्क - (,, १०)	६० ००	■ ९ ००
586	शिवोपासनाङ्क- (,, ६७)	४५ ००	■ ८ ००
	कल्याण एवं कल्याण कल्पतरुके पुराने मासिक अंक		
0525	कल्याण मासिक अक	२ ५०	■ १ ००
0602	Kalyana Kalpataru (Monthly Issues)	2 00	■ 1 00
	गीताप्रेस गोरखपुरके अन्य भारतीय भाषाओके प्रकाशन		
	बँगला		
540	साधकसजीवनी-(प्रथम खण्ड १-६ अध्याय)	२० ००	■ ५ ००
556	गीता-दर्पण-	२५ ००	■ ५ ००
13	गीता-पदच्छेद-	१० ००	■ ४ ००
275	कल्याण-प्राप्तिके उपाय-(तत्व-चिन्ता० भाग-१)	६ ००	▲ २ ००
395	गीतामाधुर्य-	५ ००	▲ २ ००
428	गृहस्थमे कैसे रहे ? -	३ ००	▲ १ ००
276	परमार्थ-पत्रावली- भाग-१	२ ५०	▲ १ ००
449	दुर्गतिसे बचो गुरुतत्त्व	२ ००	▲ १ ००
450	हम ईश्वरको क्यो माने-	१ २५	▲ १ ००
312	आदर्श नारी सुशीला-	१ २५	▲ १ ००
330	नारद-भक्ति-सूत्र-	१ २५	▲ १ ००
451	महापापसे बचो-	० ८०	▲ १ ००
469	मूर्तिपूजा-	० ८०	▲ १ ००
296	सत्सगकी सार बातें-	० ५०	▲ १ ००
443	सतानका कर्तव्य	० ८०	▲ १ ००
	मराठी		
7	साधकसजीवनी टीका-	६० ००	■ १० ००
504	गीता-दर्पण-	२० ००	■ ५ ००
14	गीता-पदच्छेद-	१५ ००	■ ४ ००
15	गीता माहात्म्यसहित-	१५ ००	■ ४ ००
391	गीतामाधुर्य-	६ ००	▲ २ ००
429	गृहस्थमे कैसे रहे ?-	५ ००	▲ २ ००
	गुजराती		
467	साधकसजीवनी-	६० ००	■ १० ००
468	गीता-दर्पण-	२५ ००	■ ५ ००
12	गीता-पदच्छेद-	१५ ००	■ ४ ००
392	गीतामाधुर्य-	५ ००	▲ २ ००
404	कल्याणकारी प्रवचन-	४ ००	▲ २ ००

कोड	[रजिस्ट्रीसे मँगाने हेतु नियम न० ४ देखें]	मूल्य		डाकखर्च
413	तात्त्विक प्रवचन	४ ००	▲	२ ००
	तमिल			
389	गीतामाधुर्य	८ ००	▲	२ ००
553	गृहस्थमे कैसे रहे ?	६ ००	▲	२ ००
536	गीता पढनेके लाभ, सत्यकी शरणसे मुक्ति	१ ५०	▲	१ ००
591	महापापसे बचो, सतानका कर्तव्य	२ ००	▲	१ ००
466	सत्सगकी सार बाते	० ७५	▲	१ ००
365	गोसेवाके-चमत्कार	३ ५०	▲	१ ००
423	कर्मरहस्य	३ ००	▲	१ ००
568	शरणागति	३ ००	▲	१ ००
569	मूर्तिपूजा	१ ००	▲	१ ००
551	आहारशुद्धि	१ ००	▲	१ ००
550	नाम-जपकी महिमा	१ ००	▲	१ ००
499	नारद भक्ति-सूत्र			
600	हनुमानचालीसा	१ ५०	■	१ ००
601	भगवान् श्रीकृष्ण	४ ००	■	२ ००
606	सर्वोच्चपदकी प्राप्तिके साधन	१ ५०	▲	१ ००
609	सावित्री और सत्यवान	१ ००	▲	१ ००
607	सबका कल्याण कैसे हो ?	१ ५०	▲	१ ००
608	भक्तराज हनुमान्	४ ००	■	१ ००
	कन्नड़			
390	गीतामाधुर्य	४ ५०	▲	२ ००
128	गृहस्थमे कैसे रहे ?	२ ७५	▲	२ ००
	उड़िया			
430	गृहस्थमें कैसे रहे ?	३ ५०	▲	१ ००
	नेपाली			
394	गीतामाधुर्य	५.००	▲	२ ००
	उर्दू			
549	महापापसे बचो	१ २५	▲	१ ००
510	मनकी खटपट कैसे मिटे	० ८०	▲	१ ००

Our English Publications

457	Shrimad Bhagavadgita-Tattva-Vivechani (*By Jayadayal Goyandka*) Detailed Commentary, Pages 736	25 00	■	8 00
458	Shrimad Bhagavadgita-Sadhak-Sanjivani (*By Swami Ramsukhdas*) (English Commentary) Pages 896	35 00	■	8 00
0459	„ „ Pocket size, Vol I	20 00	■	2 00
0490	„ „ „ Vol II	20 00	■	3 00
0493	Shrimad Bhagavadgita-The Gita-A Mirror (Pocket size) Pages 700	20 00	■	3 00
0455	Bhagavadgita (With Sanskrit Text and English Translation) Pocket size	2 50	■	1 00
0470	Bhagavadgita-Roman Gita (With Sanskrit Text and English Translation)	6 00	■	2.00
0487	Gita Madhurya-English (*By Swami Ramsukhdas*) Pages 155	6 00	▲	1 00
0452	Shrimad Valmiki Ramayana (With Sanskrit Text and English Translation) Part I	60 00	■	8 00
0453	„ „ Part II	60 00	■	8 00
0454	„ „ Part III	65 00	■	8.50
0456	Shri Ramacharitamanas (With Hindi Text and English Translation)	60 00	■	8 50
	by Jayadayal Goyandka			
0477	Gems of Turth [Vol I] Pages 204	4 00	▲	1 00
0478	„ [Vol II]	3 50	▲	1 00
479	Sure Steps to God-Realization	5 00	▲	2 00
481	Welts of Clean & The Divine Bliss	1 50	▲	1 00
482	What is Dharma? What is God? Pages 64	0 75	▲	1 00
480	Instructive Eleven Stories Pages 104	2.50	▲	1 00
520	Secret of Jnana Yoga Pages 272	5 00	▲	1 00
521	„ „ Prem Yoga „ 184	4 00	▲	1 00
522	„ „ Karma Yoga „	5 00	▲	2 00
0523	„ „ Bhakti Yoga „	5 50	▲	2.00
	by Hanuman Prasad Poddar			
484	Look Beyond the Veil Pages 208	7 00	▲	1 00
496	How to Attain Eternal Happiness ?	6 00	▲	2.00
483	Turn to God Pages 240			
486	The Divine Message			
485	Path to Divinity Pages 166	6 00	▲	1 00
	by Swami Ramsukhdas			
498	In Search of Supreme Abode Pages 146	4 00	▲	1 00
471	Benedictory Discoures Pages 192	3.50	▲	1 00
473	Art of Living Pages 124	3 00	▲	1 00
472	How to Lead A Household Life Pages 72	3 00	▲	1 00
570	Let us Know the Truth Pages 92			
0620	The Divine Name and its Practice	2.50	▲	1 00
474	Be Good			
497	Truthfulness of Life			
476	How to be Self-Reliant	1 00	▲	1.00
552	Way to Attain the Supreme Bless	0 80	▲	1 00
494	The Immanence of God (*By Madanmohan Malaviya*)	0 30	■	1 00
0562	Ancient Idealism for Modernday Living	2.00	▲	1 00
0619	Ease in God-Realization	4 00	▲	1.00

१०० चित्रोंके कार्टूनमें उपलब्ध

	मूल्य	(आकार सेमीमे)
जयश्रीराम-(भगवान् रामकी सम्पूर्ण लीलाओका चित्रण	१० ००	९० X ४८
हनुमानजी (भक्तराज हनुमान)	५ ००	५८ X ४५
भगवान् विष्णु	५ ००	५८ X ४५
लड्डू गोपाल (भगवान् श्रीकृष्णका बालरूप) सामान्य सस्करण	५ ००	५८ X ४५
कल्याण चित्रावली (कल्याणमें पूर्व प्रकाशित १५ चित्रोका सग्रह)	८ ००	५८ X ४५

नये प्रकाशन

परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दकाके

		मूल्य	डाकखर्च
0611	इसी जन्ममे परमात्मप्राप्ति	४ ००	१ ००
0599	हमारा आश्चर्य	३ ५०	१ ००

परम श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजीके

		मूल्य	डाकखर्च
605	जित देखूँ तित तू	५ ००	२ ००
617	देशकी वर्तमान् दशा तथा उसका परिणाम	२ ५०	१ ००

नये संस्करण

		मूल्य	डाकखर्च
592	नित्यकर्म-पूजाप्रकाश	१८ ००	३ ००
617	सक्षिप्त शिवपुराण-बडे अक्षरोमे	६० ००	८ ००
610	व्रत परिचय	१६ ००	३ ००
123	चैतन्य चरितावली (सभी खण्ड एक साथ)	५५ ००	८ ००

जीवनके उत्कर्ष-हेतु गीताप्रेसका सत्साहित्य मँगाइये

यदि आप अपनी सब प्रकारकी उन्नतिसहित मनुष्य-जीवनके एकमात्र लक्ष्य और परम प्राप्तव्य-'भगवत्प्राप्ति' या 'आत्मकल्याण' की ओर अग्रसरित होना चाहते हैं तो कृपया गीताप्रेस, गोरखपुरका लोक-परलोक-सुधारक आध्यात्मिक साहित्य अवश्य पढ़ें। इन सस्ती, सचित्र, शुद्ध और आत्मकल्याणकारी पुस्तकोंको आप अपने लिये अथवा दूसरोंके वितरणार्थ मँगाकर सत्साहित्यके प्रचार-प्रसारमें सहयोगी बन सकते हैं। एतदर्थ सूचीपत्रमें अङ्कित निर्देशोंको कृपया एक बार ध्यानपूर्वक अवश्य पढ़नेका कष्ट करें। सम्भवतः इन पुस्तकोंके मँगानेकी सदिच्छा अथवा सत्साहित्यके प्रचारका शुभ संकल्प भगवत्कृपासे कभी सहज उदय होकर आपकी आवश्यकता बन जाय।

गीताप्रेसकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

कलकत्ता- पिन-७००००७	गोविन्दभवन-कार्यालय १५१, महात्मा गाँधीरोड	✆(०३३) २३८६८९४ २३८०२५१
दिल्ली- पिन-११०००६	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान, २६०९, नयी सडक	✆(०११) ३२६९६७८
पटना- पिन-८००००४	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान, अशोकराजपथ, वडे अस्पतालके सदर फाटकके सामने	✆(०६१२) ६६२८७९
कानपुर- पिन-२०८००१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान, २४/५५, विरहाना रोड	✆(०५१२) ३५२३५१
वाराणसी- पिन-२२१००१	गीताप्रेस, कागज-एजेन्सी, ५९/९, नीचीवाग	✆(०५४२) ३५३५५१
हरिद्वार- पिन-२४९४०१	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान, सब्जीमण्डी, मोतीवाजार	
ऋषिकेश- पिन-२४९३०४	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम	✆(०१३६४) ३०१२२

स्टेशन-स्टाल

(१) दिल्ली जक्शन, प्लेटफार्म न० १ (२) नयी दिल्ली, प्लेटफार्म न० ८-९ (३) अन्तर्राज्यीय वस-अड्डा-दिल्ली (४) हजरत निजामुद्दीन (दिल्ली), प्लेटफार्म न० ४-५ (५) कानपुर, प्लेटफार्म न० १ (६) गोरखपुर, प्लेटफार्म न० १ (७) वाराणसी, प्लेटफार्म न० ३ (८) हरिद्वार, प्लेटफार्म न० १ (९) कोटा (राजस्थान), प्लेटफार्म न० १ (१०) पटना-जक्शन, पुस्तक-ट्राली (११) हावडा, न्यू कॉम्पलेक्स, प्लेटफार्म न० १८ के पास (१२) मुगलसराय ज०, प्लेटफार्म न० ३-४ (१३) लखनऊ (N E.Railway) (१४) सिकन्दराबाद, प्लेटफार्म न० १ (१५) सियालदा मेन, प्लेटफार्म न० ८

अन्य अधिकृत पुस्तक-विक्रेता— श्रीगीताप्रेस पुस्तक-प्रचारकेन्द्र, 'बुलियन बिल्डिग', जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३ ✆ (०१४१) ५६३३७९

अँग्रेजी एव दक्षिण भारतीय भाषा प्रकाशनके प्रमुख विक्रेता

गोपाल सेवा ट्रस्ट-८२ कृष्णा टाकीज रोड, इरोड-६३८००३ ✆ (०४२४) २१३९७६

Subscribe our English Monthly

THE KALYAN-KALPATARU

Oct to Sept Subscription Rs 40 00

October-1994 (VOL XXXX)

"GANESH-NUMBER"

AVAILABLE

ALSO AVAILABLE

FOLLOWING EARLIER ISSUES

OF

THE KALYAN-KALPATARU

SHIVA-NUMBER (YEAR-36)	Rs 30 00
VISHNU-NUMBER (YEAR-37)	Rs 40 00
HANUMAN-NUMBER (YEAR-38)	Rs 40 00
SANATAN DHARM-NUMBER (YEAR-39)	Rs 40 00

Manager-'Kalyan'-Kalpataru, P.O Gita Press, Gorakhpur-273005

कल्याणका वर्तमान वर्ष (सन् १९९५ ई०) का

विशेषाङ्क

'गोसेवा-अङ्क'

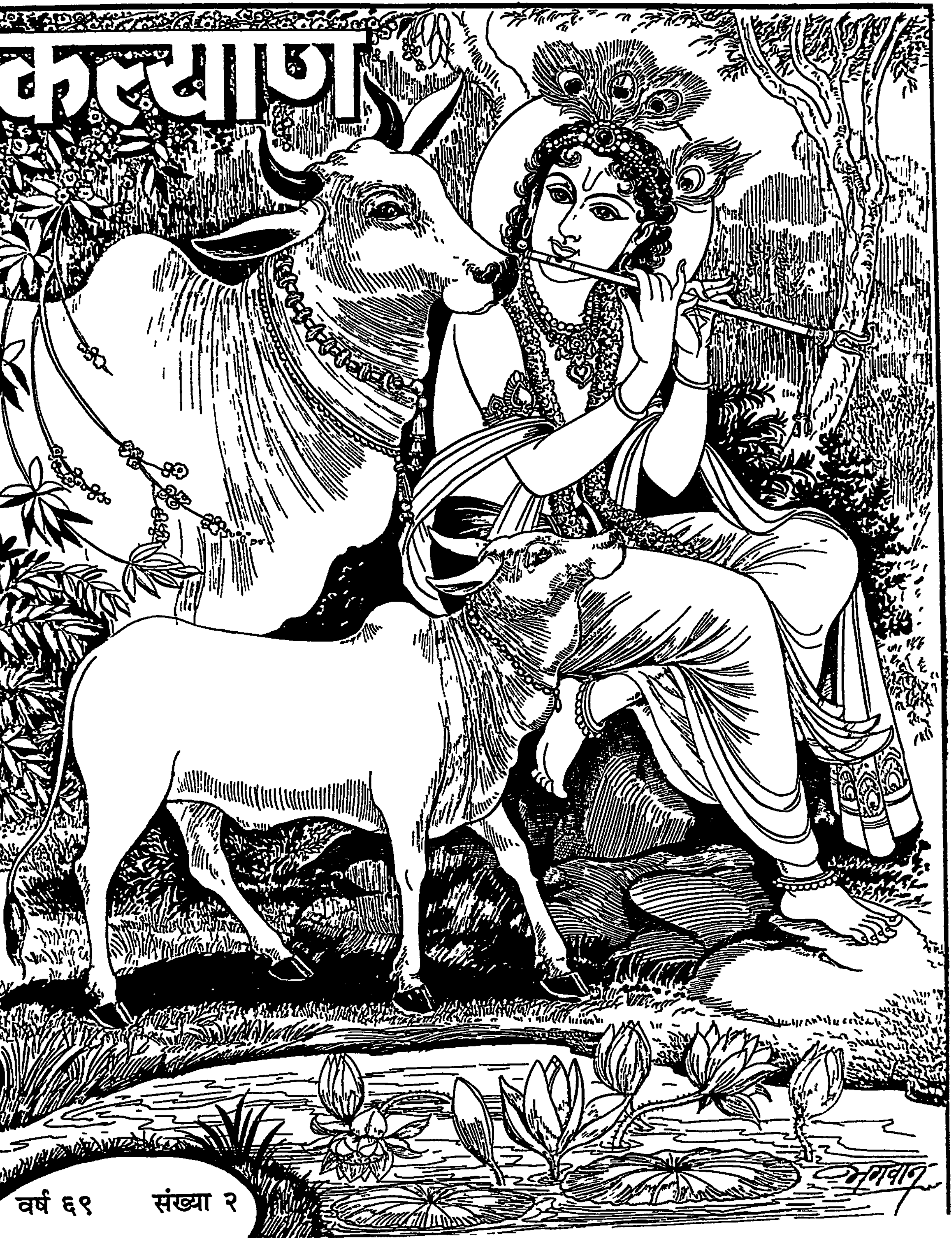
वार्षिक शुल्क - रु० ६५.०० (सजिल्द रु० ७२.००)

पंद्रह वर्षीय शुल्क-रु० ५००, सजिल्द रु० ६०० मात्र

(डाकखर्चसहित)

स्वयं ग्राहक बनिये एवं अन्य स्नेहीजनोंको बनाइये !

व्यवस्थापक—'कल्याण' गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५



[परिशिष्टाङ्क—१]

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

विषय-सूची

(संस्करण २,२५,०००)

कल्याण, सौर फाल्गुन, वि० सं० २०५१, श्रीकृष्ण-सं० ५२२०, फरवरी १९९५ ई०

इस अङ्कका मूल्य ३ रु०
विदेशमें—US$0 25
वार्षिक शुल्क (भारतमें) डाक-व्ययसहित ६५ रु० (सजिल्द ७२ रु०)
विदेशमें—US$10

संस्थापक—ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका
आदिसम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार
सम्पादक—राधेश्याम खेमका
केशोराम अग्रवालद्वारा गोविन्दभवन-कार्यालयके लिये
गीताप्रेस, गोरखपुरसे मुद्रित तथा प्रकाशित

पन्द्रहवर्षीय शुल्क डाक-व्ययसहित (भारतमें) ५०० रु० (सजिल्द ६०० रु०)

'गावः पवित्रं माङ्गल्यम्'

(श्रीरामचन्द्रजी तिवारी, एम्०ए० (संस्कृत), धर्मविशारद)

हमारा देश भारत सदासे धर्म-प्रधान रहा है। इसके कल्याणके लिये गो-रक्षा अनिवार्य धर्म्य कर्तव्य है। संसारके जो उपकार गोमाताने किये हैं, उनके महत्त्वको जानते हुए भी जो लोग गौकी उपेक्षा करते हैं, गो-रक्षाके प्रश्नपर ध्यान नहीं देते, वे कर्तव्य-रहित और अन्यायी हैं। जो लोग गोवध करके स्वधर्म-निर्वाहका स्वॉग रचते हैं, उनके अज्ञानका तो ठिकाना ही नहीं। गो-सदृश उपकारी प्राणीका वध करना कभी भी न्यायसंगत अथवा धर्म-संगत नहीं कहा जा सकता।

गो-माहात्म्यका वर्णन हमारे धर्मशास्त्रोमे प्रचुर मात्रामे विद्यमान है। गाये पवित्र, मङ्गलकारक होती हैं, इनमे समस्त लोक प्रतिष्ठित हैं। गायें यज्ञका विस्तार करती हैं। वे समस्त पापोका विनाश करती हैं। 'विष्णुस्मृति'का वचन है—

गावः पवित्रं माङ्गल्यं गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः।
गावो वितन्वते यज्ञं गावः सर्वाघसूदनाः॥

गोमूत्र, गोमय, गोघृत, गोदुग्ध, गोदधि और गोरोचन—ये गायके छः पदार्थ सर्वदा माङ्गलिक होते हैं—

गोमूत्रं गोमयं सर्पिः क्षीरं दधि च रोचना।
षडङ्गमेतत् परमं मङ्गल्यं सर्वदा गवाम्॥

गायोको नियमित ग्रास मात्र देनेसे भी मनुष्य स्वर्गलोकमें सम्मानित होता है—

गवां ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते॥

(विष्णुस्मृति)

यमस्मृति (७१-७२) में भी गायको रंग-भेदपूर्वक गो-पदार्थ-भेदसे समस्त पापोंका नाश करनेवाली बताया गया है, जैसे—श्वेत रंगकी गायका मूत्र, श्याम रंगकी गायका गोबर, ताम्र-वर्णकी गायका दूध, सफेद गायका दही और कपिला गायका घृत ये सभी ग्राह्य हैं तथा समस्त पापोंका नाश करनेवाले हैं—

शुक्लाया मूत्र गृह्णीयात् कृष्णाया गोशकृत् तथा।
ताम्रायाश्च पयो ग्राह्यं श्वेताया दधि चोच्यते॥
कपिलाया घृतं ग्राह्यं महापातकनाशनम्।

स्मृतियोंमे गो-दानका महत्त्व विस्तारसे बतलाया गया है, जैसे—बक-(बगुला)की हत्या करनेसे नाक लंबी होती है, अतः उसकी शुद्धिके लिये श्वेत रंगकी गायके दानका विधान है। काकघाती पुरुष कर्णहीन होता है, अतः उसे श्यामा गौका दान करना चाहिये—

वकघाती दीर्घनसो दद्याद् गा धवलप्रभाम्।
काकघाती कर्णहीनो दद्याद् गामसितप्रभाम्॥

(शातातपस्मृति ८७)

धूर्तता करनेवाला मृगीका रोगी होता है। उसे ब्रह्मकूर्चमयी धेनु और दक्षिणासहित गो-दान करना चाहिये—

धूर्तोऽपस्माररोगी स्यात् स तत्पापविशुद्धये।
ब्रह्मकूर्चमयीं धेनु दद्याद् गां च सदक्षिणाम्॥

(शातातपस्मृति ९९)

परायी निन्दा करनेवाला सिरका गंजा होता है, उसे स्वर्णसहित धेनुका दान करना चाहिये। दूसरेकी हँसी उड़ानेवाला काना होता है, पाप-प्रायश्चित्तके लिये उसे मोतियोसे युक्त गौका दान करना चाहिये—

खल्वाटः परनिन्दावान् धेनुं दद्यात् सकाञ्चनाम्।
परोपहासकृत् काणः स गा दद्यात् समौक्तिकाम्॥

(शातातपस्मृति १०९)

सम्यक् आत्मशुद्धिके लिये गोमूत्र, गोमय, क्षीर, दधि तथा घृतका पॉच दिनतक आहार करनेका विधान वसिष्ठस्मृतिमें किया गया है—

गोमूत्रं गोमयं चैव क्षीर दधि घृतं तथा।
पञ्चरात्रं तदाहारः पञ्चगव्येन शुध्यति॥

(वसिष्ठस्मृति ३७०)

स्मृतिकारोका कथन है कि गाय यदि बछड़ेको पिला रही हो तो न तो उसे रोके और न यह बात उसके मालिकको बताये—

'नाचक्षीत धयन्तीं गाम्' (याज्ञ० १। १४०)
'गां धयन्तीं परस्मै नाचक्षीत न चैनां वारयेत्।'

(गौतमस्मृति)

मार्गमे गौ, ब्राह्मण, राजा और अन्धोंको निकल जानेके लिये रास्ता स्वय छोड़ देना चाहिये—

पन्था देयो ब्राह्मणाय गवे राज्ञे ह्यचक्षुषे।

(बौधायनस्मृति, स्नातकव्रतानि ३०)

—इस प्रकार हम देखते हैं कि धर्मशास्त्रोंमे गायका अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि गाय हमारे समस्त पापोको नष्ट करनेवाली है। जिस गायसे दूध ग्रहण करके हम शक्तिशाली बनते हैं, जिस गायके बछड़े हमारे क्षेत्रोको जोतकर प्रचुर मात्रामे हमे जीवित रहनेके लिये खाद्य-सामग्री प्रदान करते हैं, उसी, मर्त्यलोकका ही नहीं, अपितु स्वर्गलोकका भी ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली गोमाताका वध करनेवाले जो लोग स्वयं धार्मिक बननेका स्वाँग रचते है वे निश्चितरूपसे निन्दनीय हैं। धर्मके वास्तविक स्वरूपको उन्होने जाना ही नहीं है। कोई भी धर्म किसी भी प्राणीका प्राण लेनेकी अनुमति नहीं देता है। अपार खेदका विषय है कि गो-संरक्षण एवं गो-सेवाभाव दिन-प्रति-दिन लुप्त होते जा रहे हैं। गौका अपमान होनेके कारण ही हमारा देश, जहाँ घी-दूधकी नदियाँ बहती थीं, आज दूधके लिये तड़प रहा है। कुछ दिनोमें देव-पितृकार्यार्थ भी दूध मिलना कठिन हो सकता है। अतः गोपालन-रक्षण अत्यावश्यक है। कहा गया है कि जिस घरमें गाय नहीं है, जहाँ वेद-ध्वनि नहीं होती और जो घर बालकोंसे भरा-पूरा न हो वह घर घर नहीं है, अपितु श्मशान है—

यन्न वेदध्वनिध्वान्तं न च गोभिरलंकृतम्।
यन्न बालैः परिवृतं श्मशानमिव तद् गृहम्॥

(अत्रिसंहिता ३१०)

हम अपने घरको श्मशान न बनायें। गो-पालन करें, घी, दूधकी नदियाँ प्रवाहित करें, जिससे हमारा परिवार, हमारा गाँव, हमारा प्रदेश, हमारा देश भारतवर्ष पुनः पूर्वप्रतिष्ठाको प्राप्त कर सके। गोसंरक्षण, गोपालन और गोसंवर्धन सर्वथा सर्वत्र होना चाहिये। जब ऐसा होगा तभी हमारा देश कल्याण प्राप्त कर सकेगा और राष्ट्रकी प्रतिष्ठा ऊँची हो सकेगी।

वेदमें गौकी पूज्यता

(पं० श्रीलालबिहारीजी मिश्र)

वेदमे गौकी बहुत महिमा गायी गयी है। गौकी उत्पत्ति भी इसकी महिमाकी कम अभिव्यञ्जक नहीं है। तैत्तिरीय ब्राह्मणमे एक आख्यायिका आती है—'ब्रह्माजीने प्रजाकी सृष्टिमें अपनी सारी शक्ति लगा दी। अब वे अपनेको अशक्त पा रहे थे। प्रजाओके भरण-पोषण आदिकी समस्या उनके सामने खड़ी थी। इसके लिये उन्होंने फिर तपस्या प्रारम्भ कर दी। इस बार ब्रह्माजीकी इस तपश्चर्यासे इतनी शक्ति उमड़ी कि उसका धारण कर पाना उनके लिये कठिन हो गया। अन्तमे वह असीम शक्ति उनके देहसे बाहर निकलकर गौके रूपमे परिणत हो गयी। वह इतनी मनोरम थी कि उसे लेनेके लिये सभी देवता लालायित हो गये।' (तैत्तिरीय ब्राह्मण १। १। १०)

—इस आख्यायिकासे व्यक्त होता है कि प्रजाओंके भरण-पोषणके लिये गौका आविर्भाव हुआ। इसके दूध, दही और घीसे देवता, पितर और मनुष्योका आहार मिलने लगा और इसके गोमय तथा गोमूत्रसे अन्नकी उत्पादन-क्षमता बढ गयी। इस तरह गौसे विश्वभरका कल्याण हो गया। इसीलिये वेदने गौको विश्वरूप और सर्वरूप भी कहा है—'**एतद्वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्।**'

(अथर्ववेद ९। ७। २५)

यजुर्वेदने एक मन्त्र (८। ४३) में गौके बहुतसे गुणोंका अभिव्यञ्जन कर दिया है—

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिते सरस्वति महि विश्रुति।
एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्॥

—इस श्रुतिने गौके लिये इडा और विश्रुति '**विविधं श्रूयते स्तूयते इति विश्रुतिः।**' (यजु० ८। ४३ महीधर-भाष्य)—इन दो पदोंका प्रयोग कर यह सूचित किया है कि गौ स्तुत्य है, उसकी स्तुति की जानी चाहिये। '**काम्या**' पदसे सूचित किया कि गौ सबकी कामनाओंको पूर्ण करनेवाली है। एक अन्य श्रुतिने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया है

कि 'मनुष्याणाँह्येतासु कामाः प्रविष्टाः' (महीधर-भाष्य)। अर्थात् मनुष्योकी सारी कामनाएँ गौमें प्रविष्ट हैं। श्रुतिने 'चन्द्रा' शब्दसे सूचित किया है कि गौ सबको आह्लाद प्रदान करनेवाली होती है। 'ज्योता' पदसे व्यक्त होता है कि गौ नरक आदि अन्धकारसे निकालकर प्रकाशमें ला देती है। इस तरह वेदकी दृष्टिमे गौ देवता है, पूज्य है—

(क) 'देवीं........गां०' (ऋग्वेद ८। १०१। १६) तथा (ख) 'उदस्थात् देवी अदितिः (गौः)' (तैत्तिरीय ब्राह्मण १।४३)।

वेदने गौके सम्बन्धमे विविध दृष्टिसे विविध महत्त्व बताये हैं। यहाँ केवल गौकी पूज्यतापर ही सक्षिप्त विचार प्रस्तुत किया जा रहा है—

मनन

उपर्युक्त श्रुतिके वचनोंसे ज्ञात हो जाता है कि 'गौ' कोई साधारण वस्तु नहीं है, अपितु देवता है, पूज्य है। श्रुति-वाक्योंके श्रवणके बाद मनन अपेक्षित हो जाता है—

श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।

प्रश्न उठता है कि गौ तो प्रत्यक्ष ही पशु है। मनुष्य पशुके स्तरसे ऊपर उठा हुआ प्राणी है, फिर मनुष्य पशुकी पूजा क्यों करता है? आखिर गौमें मनुष्यसे क्या अच्छाई है, जिससे मनुष्य इसके सामने झुके? सच तो यह है कि गौमे मनुष्यकी अपेक्षा ज्ञानकी कमी, धर्मका अभाव और खान-पान भी विचित्र ही है, मनुष्यका सात बरसका बच्चा भी किसी विदेशीको किसी स्थानका ठीक पता बता सकता है, जबकि बूढ़ी भी गौ किसी स्थानका कोई पता नहीं बता पाती। मनुष्य चाहे जितना भी भ्रष्ट हो गया हो, कम-से-कम वह माता और बहनका ख्याल अवश्य रखता है, किंतु गोजातिमे न माताका ख्याल रखा जाता है, न बहनका। अतः मनुष्य गौके सामने क्यों सिर झुकाये, क्यों इसकी स्तुति करे और क्यों इसे माने?

यह प्रश्न उस व्यक्तिके लिये हौआ बन जाता है जो वेदकी अपौरुषेयता और अज्ञातार्थ-ज्ञापकतासे अपरिचित है। प्रत्यक्ष और अनुमानसे जो तथ्य हम नहीं जान पाते, उस तथ्यको बतलाना ही वेदका वेदत्व है। वेद पूज्यवर्गमे दैवीशक्तिकी धाराका संचार मानता है। वह पूज्यवर्ग उस दैवी धारासे भले ही स्वय प्रकाशित न हो, किंतु पूजनसे सम्बद्ध अपने पूजकको प्रकाशित कर ही देता है। जैसे बिजलीके तारमे विद्युत्की धाराएँ प्रवाहित होती रहती हैं, इन धाराओसे वह भले ही स्वयं प्रकाशित न होता हो लेकिन अपनेसे सम्बद्ध बल्वको प्रकाशित कर ही देता है। इस तरह वेदका सिद्धान्त है कि पूज्य अपने कर्तव्यसे मरकर भले नरकमें जाय, किंतु अपने पूजकका कल्याण कर ही देता है।

इस लेखके छोटेसे कलेवरमे वेदकी अपौरुषेयता और इसकी अज्ञातार्थ-ज्ञापकता—इन दोनो तथ्योंका साङ्गोपाङ्ग विवेचन सम्भव नहीं है, किंतु प्रत्येक ईश्वरवादीको इतना तो मान ही लेना पडता है कि ईश्वरका ज्ञान नित्य हुआ करता है और वह ज्ञान शब्दको छोडकर नहीं रहा करता। अर्थात् प्रत्येक ज्ञानमे शब्दानुवेद अवश्य रहता है—'अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भाषते' (वाक्यपदीय)। इसी ईश्वरीय ज्ञानको प्रकट करनेवाले शब्दराशिको वेद कहते हैं। जैसे ईश्वर नित्य है, उसी तरह उसके नित्य-ज्ञानके प्रतिपादक शब्दराशि-रूप वेद भी नित्य हैं। उस वेदमें कोई पुरुष दखल नहीं दे सकता, इसलिये वेद अपौरुषेय है। इस वेदने गौको पूज्य माना है, इसलिये यह सिद्धान्त मान्य है और वेदने यह भी बताया है कि गौकी पूजा करनेसे ऐहिक और आमुष्मिक अभ्युदय प्राप्त होता है। तैत्तिरीय ब्राह्मणमे एक आख्यायिका आती है—'एक बार ब्रह्माजीने अचेतन जगत्की सृष्टि कर दी थी। इसके बाद वे चाहते थे कि जीवात्मासे युक्त चेतन-वस्तु उत्पन्न हो, इसी कामनासे उन्होने होम किया। उस होमसे अग्नि, वायु और आदित्य-रूप तीन चेतन-देवता उत्पन्न हुए। इन तीनो देवताओने भी चेतन-जगत्के विस्तारके लिये होम किया। उन तीनोके होम करनेके बाद एक गौ उत्पन्न हुई—'तेषाँ हुतादजायत गौरेव।' (तैत्तिरीय ब्राह्मण २। १। ६)। उसे देखकर तीनों देवताओने उसे अपनाना चाहा। प्रत्येकका कहना था कि मेरे होमसे यह गौ उत्पन्न हुई है, इसलिये यह मेरी है। निर्णयके लिये तीनो देवता ब्रह्माजीके पास गये। ब्रह्माजीने उनसे पूछा कि आप तीनोमेसे किसने किस देवताको आहुति दी? अग्निदेवताने बताया कि मैंने प्राण देवताके लिये आहुति दी। वायुदेवताने शरीराभिमानी देवताको

और आदित्यने नेत्राभिमानी देवताको आहुति देनेकी बात कही। तब प्रजापतिने निर्णय लिया कि शरीर और चक्षु—ये दोनो प्राणके अधीन है, इनमें प्राण ही मुख्य है, इसलिये प्राणदेवताके होमसे ही गौ उत्पन्न हुई और वह गौ अग्निको समर्पित कर दी गयी। तभीसे गौका नाम 'अग्निहोत्र' पड़ गया। 'गौर्वा अग्निहोत्रम्।' (तैत्ति० ब्राह्मण ३। १। ६)

इसके बाद इसी श्रुतिने बताया है कि इस अग्निहोत्री धेनुकी जो पूजा करता है, वह इस लोकमें अभ्युदय तो प्राप्त करता ही है, मरनेके बाद उसे स्वर्ग मिलता है—'तृप्यति प्रजया पशुभिः। प्र सुवर्ग लोकं जानाति। पश्यति पुत्रम्। पश्यति पौत्रम्।' (३। १। ८) 'देहपातादूर्ध्वं स्वर्ग प्रजानाति। तत· पूर्व दीर्घायुष्येण युक्तः पुत्रं पौत्रं च पश्यति।' (सायण-भाष्य)

वेदके इस प्रमाणसे स्पष्ट हो जाता है कि पूज्यवर्गमे जो दैवीशक्तिकी धारा बहती रहती है, उससे पूजक तो प्रकाशित हो ही जाता है, किंतु अनास्थारूपी तिमिररोग लग जानेसे अपौरुषेय वेदके इस पुनीत प्रकाशको मनुष्य देख नहीं पाता। प्रत्यक्ष घटनासे इस रोगकी चिकित्सा हो जाती है और फिर ऑखे स्वस्थ होकर उस पुनीत प्रकाशको देख पाती हैं। इसलिये इस सम्बन्धमें एक सत्य घटना प्रस्तुत की जा रही है—

कुऑ बनानेवाला एक मजदूर अपनी पत्नीके साथ आम रास्तेपर एक कुऑ खोद रहा था। उसकी पत्नी मिट्टी फेकनेका काम करती थी और मजदूर कुऑ खोदनेका। शामको घर लौटनेके पहले छोटी नदीसे नित्यक्रिया सम्पन्न कर घर लौट जाते थे। नदी छोटी थी। उस दिन उसमे अचानक पानी बढ़ गया। अँधेरा बढ़ता जा रहा था। उसे सुनायी पड़ा कि कोई प्राणी जोर-जोरसे साँस खींच रहा है। नजदीक जानेपर एक गौको उसने कीचड़में फँसी हुई पाया। वह जल पीने आयी होगी, उसका पॉव दलदलमें फँस गया और इसी बीचमें पानीका बढ़ाव हो गया। पानी उसके थुँथनेतक पहुँच चुका था। थोड़ा पानी और बढ़ता तो वह डूब जाती। गायकी यह दुर्दशा उससे देखी नहीं गयी। गॉवसे लोगोको बुलाकर उसने उसका उद्धार किया। इसके कुछ दिनोंके बाद जब वह कुआँ खोद रहा था, कुऑ भहरा गया और वह करोड़ो मन मिट्टीसे दब गया। किंतु उसने देखा कि उसके सिरपर वही गाय खड़ी है, जिसे उसने डूबनेसे बचाया था। मिट्टीका बहुत बड़ा बोझ गायके पीठपर था और उसके नीचे वह अपनेको सुरक्षित अनुभव कर रहा था। गायके इशारेसे उसने उसका दूध पीया और उसीके इशारेसे वह एक खोहमे घुसता हुआ दूसरे कुएँमे निकल गया। वहॉ वह आवाज देने लगा कि हमको कोई निकालो। लोगोने उसे निकाल दिया।

इस घटनासे स्पष्ट हो जाता है कि जिस गौको उस मजदूरने बचाया था, वह अपने मालिकके यहॉ भूसा खा रही थी, दूध दे रही थी, उसको इस तथ्यका ज्ञान भी न था कि मैं किसीको बचा रही हूँ, किंतु वेदसे प्रतिपादित गौकी आधिदैविक शक्तिने गोरूपमे परिणत होकर मजदूरको बचा लिया। तैत्तिरीय श्रुतिके उदाहरणमें यह एक प्रत्यक्ष घटना है, जिसमे बतलाया गया है कि गौकी आधिदैविक शक्ति उसे गोलोकतक पहुँचा देती है।

गाय रक्षा करती है

गाय मनुष्यका सर्वश्रेष्ठ हितैषी है। तूफान, ओला, अनावृष्टि या बाढ आवे और हमारी फसलोंको नष्ट करके हमारी आशाओंपर पानी फेर दे, किंतु फिर भी जो बच रहेगा उसीसे गाय हमारे लिये पौष्टिक और जीवन धारण करनेवाला आहार तैयार कर देगी। उन हजारों बच्चोंके लिये जो गाय-जीवन ही है, जो दूधरहित वर्तमान नारीत्वकी रेतीपर पड़े हुए हैं।

हम उसकी सिधाई, उसके सौन्दर्य तथा उसकी उपयोगिताके लिये उसे प्यार करते हैं। उसकी कृतज्ञतामें कभी कमी नहीं आयी। हमारे ऊपर दुर्भाग्यका हाथ तो होना ही चाहिये, क्योकि हमलोग सालोंसे अपने कर्तव्यसे गिर गये है। हम जानते हैं कि गाय हमारे एक मित्रके रूपमे है, जिससे कभी कोई अपराध नही हुआ, जो हमारी पाई-पाई चुका देती है और घरकी—देशकी रक्षा करती है।—ई० जी० बेनेट

श्रीमद्भागवतमें गोसेवाका आदर्श

(श्रीचतुर्भुजजी तोषनीवाल)

यद्यपि हिंदू वेदोकी भाँति गायको भी धर्मका अन्यतम प्रतीक मानते हैं, किंतु कालके फेरसे गायके प्रति सच्ची श्रद्धामे कमी आ जानेसे आज गोसेवा एक आडम्बर मात्र बनकर रह गयी है, उसमे आन्तरिक श्रद्धाका अभाव-सा होता दीखता है। अतः गोसेवाके प्राचीन आदर्शको पुनः प्रतिष्ठित करनेके लिये हमे योगेश्वरेश्वर भगवान् श्रीकृष्णद्वारा प्रस्तुत आदर्शका अनुशीलन करके उसे व्यवहारमें लाना होगा, तभी हम सच्चे गोभक्त, सच्चे गोसेवक कहलाये जा सकेगे। इसी महदुद्देश्यसे यहाँ श्रीमद्भागवतमें वर्णित गोमहिमा एव गोसेवाके कुछ प्रसगोको सक्षेपमे प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्रीमद्भागवतमे महाप्रतापी दैत्यराज हिरण्यकशिपुके राज्यका वर्णन करते हुए कहा गया है कि उसके राज्यमे पृथ्वी बिना जोते-बोये यथेच्छ अन्नादि देती थी—'अकृष्टपच्या तस्यासीत् सप्तद्वीपवती मही' (७। ४। १६)। इसी प्रकार खाने, आकाश, समुद्र, ऋतुएँ—सभी उसके मनोऽनुकूल पदार्थ उपलब्ध कराते थे, किंतु अजितेन्द्रिय होनेके कारण उसे फिर भी तृप्ति नहीं मिलती थी एव उस मदोन्मत्तके उच्छृंखल व्यवहारसे देवता, ऋषि, मनुष्य आदि सभी सत्रस्त रहते थे। देवताओके द्वारा श्रीभगवान्‌को अपनी व्यथा निवेदन किये जानेपर यह भविष्यवाणी हुई—

यदा देवेषु वेदेषु गोषु विप्रेषु साधुषु।
धर्मे मयि च विद्वेषः स वा आशु विनश्यति॥
(७। ४। २७)

'कोई भी प्राणी जब देवता, वेद, गाय, ब्राह्मण, साधु, धर्म एवं मुझसे द्वेष करने लगता है तब शीघ्र ही उसका विनाश हो जाता है।' यह सार्वकालिक दैवी विधान है। पृथ्वी और गाय अभिन्न हैं। जब-जब पृथ्वी दुष्टोके भारसे पीडित हुई है, तब-तव वह गौका रूप धारण करके ही श्रीभगवान्‌को अपनी दुःखगाथा सुनाती है।

राजा परीक्षित्‌ने राज्य-निरीक्षण करते समय एक दिन एक पैरवाला वृष तथा एक अत्यन्त दु.खित गायको देखा, जिसकी आँखोसे आँसुओकी झडी लग रही थी, मानो उसका बच्चा मर गया हो। इस दृश्यसे व्यथित होकर राजाने अपनी विचक्षण बुद्धिसे इसके कारणका पता लगा लिया और उन्हे आश्वासन देते हुए राजाका कर्तव्य-निरूपण करनेवाले सुन्दर वचन कहे—

मा सौरभेयानुशुचो व्येतु ते वृषलाद् भयम्।
मा रोदीरम्ब भद्रं ते खलानां मयि शास्तरि॥
यस्य राष्ट्रे प्रजाः सर्वास्त्रस्यन्ते साध्व्यसाधुभिः।
तस्य मत्तस्य नश्यन्ति कीर्तिरायुर्भगो गतिः॥
(१। १७। ९-१०)

'हे धेनुपुत्र! अब आप शोक न करे। इस शूद्रसे निर्भय हो जायँ। गोमाता! मैं दुष्टोको दण्ड देनेवाला हूँ अब आप रोये नहीं। आपका कल्याण हो। देवि! जिस राजाके राज्यमे दुष्टोके उपद्रवसे सारी प्रजा त्रस्त रहती है, उस मतवाले राजाकी कीर्ति, आयु, ऐश्वर्य और परलोक—सभी नष्ट हो जाते हैं।' यहाँ तक भी कहा गया है कि गौ और ब्राह्मणके हितके लिये एव किसीको मृत्युसे बचानेके लिये असत्यभाषण भी निन्दनीय नहीं है—

गोब्राह्मणार्थे हिंसाया नानृत स्याज्जुगुप्सितम्॥
(८। १९। ४३)

किंतु भगवान् व्यासको इतनेसे ही कहाँ सतोष था। गाय तो श्रीभगवान्‌का स्वरूप ही है एव श्रीभगवान्‌ने गायोको विशेषरूपसे अपना ही माना है—'मदीयाः'। श्रीभगवान् सनकादि ऋषियोसे कह रहे हैं—

ये मे तनूर्द्विजवरान् दुहतीर्मदीया
भूतान्यलब्धशरणानि च भेदबुद्ध्या।
द्रक्ष्यन्त्यघक्षतदृशो ह्यहिमन्यवस्तान्
गृध्रा रुषा मम कुषन्त्यधिदण्डनेतुः॥
(३। १६। १०)

तात्पर्य यह है कि 'ब्राह्मण, मेरी गाये एव आश्रयहीन अनाथ प्राणी—ये तीनो मेरे ही शरीर हैं। पापोके कारण विवेकहीन हुए जो लोग उन्हे भेददृष्टिसे देखते हैं, उन्हे मेरे द्वारा नियुक्त यमराजके गृध्ररूपी दूत—जो सर्पोके समान क्रोधी हैं—अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर चोचोसे नोचते हैं।' सब प्राणियोंमे समदृष्टि नहीं रखनेवालोके प्रति इतना कठोर दण्डविधान अन्यत्र उपलब्ध नहीं होता। मनुपुत्र पृषध्र (जो गुरुजीद्वारा गायोकी रक्षामे नियुक्त था) द्वारा घनघोर अँधेरी रातमे गायको बाघसे बचानेके प्रयत्नमे भूलसे गाय मारी गयी। इस अनसोचे अपराधके लिये भी उसे गुरुशाप भोगना पड़ा और कठोर तपस्याद्वारा ही उसे ब्रह्मकी प्राप्ति हुई। गायके प्रति किये गये किसी भी अपराधके लिये क्षमा नामकी कोई वस्तु प्राचीन कालमें नहीं थी।

उपर्युक्त प्रतिपादित सिद्धान्तको ध्यानमे रखकर अब श्रीमद्भागवतमें वर्णित भगवान् श्रीकृष्णकी व्रजलीलाके कुछ प्रसंगोपर ध्यान दे। प्रायः सभी अध्यायोमें किसी-न-किसी रूपमें गोवशका प्रसंग आया ही है। दशम स्कन्धके प्रथम अध्यायके अठारहवें श्लोकमे वर्णन आया है कि पृथ्वी दुष्ट राजाओके अत्याचारोसे पीडित होकर ब्रह्मादि देवताओंके साथ गौका रूप धारण करके श्रीभगवान्‌की शरणमें जाती है—

'गौर्भूत्वाश्रुमुखी खिन्ना क्रन्दन्ती करुणं विभोः।'

भाव यह है कि उसके नेत्रोसे आँसुओकी झडी लग रही थी, वह कृश हो गयी थी, करुण स्वरसे डकरा रही थी। भगवान् श्रीकृष्णने गौको अपना अभिन्न स्वरूप ही माना है और व्रजकी सारी लीलाओका केन्द्रबिन्दु गाये और गोपियाँ ही हैं। श्रीकृष्ण उनके रक्षक, सेवक और सखा—सभी कुछ बने हैं। व्रजमे कोई भी उत्सव गाय अथवा उसके द्वारा दिये गये पदार्थोंके बिना सम्पन्न नहीं होते। मथुरामे श्रीवसुदेवजीके घर जन्म ग्रहण करनेपर भी उनका जन्मावधि कैशोरतकका समय गोपराज नन्दबाबाके यहाँ गायोके सानिध्यमें ही बीता है। जन्मोत्सवपर नन्दबाबाद्वारा सवत्सा साभूषणा अनेकों गाये दानमे दी गयीं और खुशीमे गायों, बैलो, बछडोको खूब सजाया गया—'**गावो वृषा वत्सतरा हरिद्रातैलरूषिताः.........**' (१०। ५। ७)।

उधर दैत्योद्वारा भी योजना बनायी गयी कि चूँकि ब्राह्मण, गौ आदि भगवान् विष्णुके शरीर ही हैं और उनकी पुष्टि गव्य पदार्थोसे ही होती है (१०। ४। ४१), अतः हमे हविष्य पदार्थ देनेवाली गायोका नाश कर देना चाहिये—'**गाश्च हन्मो हविर्दुघाः**' (१०। ४। ४०)। पूतनावधके पश्चात् गोपियोने बालक श्रीकृष्णकी बाधा उनके मस्तकपर गोपुच्छ फिराकर, गोमूत्रसे स्नान कराकर, अङ्गोमे गोरज और गोबर लगाकर उतारी ।'

'गोपुच्छभ्रमणादिभिः॥
गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।
रक्षां चक्रुश्च शकृता ..॥'

(१०। ६। १९-२०)

तृणावर्तद्वारा अपहृत बालक कृष्णकी यादमे बिलखती माँ यशोदाकी उपमा मृतवत्सा गौसे करके—'**मृतवत्सका यथा गौः**' (१०। ७। २४)—गायको भी माँका पद दिया गया है। कृष्ण और बलरामके नामकरण-संस्कारका स्थान गर्गाचार्यजीद्वारा गोशालाको चुना जाना भी महत्त्वपूर्ण है। गोवत्सोकी पूँछ पकड़-कर घसीटे जानेकी बाललीला उनके 'गोविन्द' बननेकी भूमिका ही तो है। '**प्रगृहीतपुच्छैः**।' '**वत्सैरितस्तत उभावनुकृष्यमाणौ**' (१०। ८। २४)।' तथा '**वत्सान् मुञ्चन्.....**' (१०। ८। २९) द्वारा बछडोके प्रति सख्यभाव प्रदर्शित है और वे भी अपनी माताओका दूध पेट भरकर पी सकें, इसलिये यह लीला है। टीकाकारोने इस श्लोककी अनेक रोचक एव आध्यात्मिक व्याख्याएँ की हैं, जैसे वत्सरूपी जीवोको तत्क्षणात् मुक्ति प्रदान करनेकी निरोध-लीला आदि। दामोदर-लीलाका आशय है—माता यशोदाके दूध एवं गायोंके दूध-दही-मक्खनका कृष्ण-सेवामे अर्पित होनेकी प्रतियोगिता-कथा! गायों और गोपियोकी श्रीकृष्णको अपना स्तन्य-पान करानेकी आन्तरिक कामना पूर्ण करने-हेतु—अर्थात् उनको भी माँ यशोदाके समान ही वात्सल्य-रसका आनन्द प्रदान करने-हेतु ही श्रीकृष्णने ब्रह्माद्वारा गोपबालक एवं गोवत्स चुरा लिये जानेपर उन सबका रूप धारण करके पूरे वर्षभर गोपियों और गायोका स्तन्य-पान किया। '**मुदं कर्तुं तन्मातृणां**', —'**सर्वस्वरूपो बभौ॥**' (१०। १३। १८-१९)। इस लीलाका गूढाशय निर्भ्रान्तरूपसे समझानेके लिये प्रायः एक वर्ष-पश्चात् गोवर्धनकी चोटीपर चरती हुई गायोंकी नीचे बहुत दूर अपने पूर्व बिआनके बछडोको देखते ही दुर्गम कँटीले ऊबड-खाबड रास्तेके सब अवरोधोको अमान्य करके दौड़ते हुए पहुँचकर अपूर्व वात्सल्य-प्रदर्शनकी लीला वर्णित हुई है। कारण था, श्रीकृष्ण स्वयं ही उन बछडोंके रूपमे जो थे, '**मुक्तस्तनेष्वपत्येषु**. ' (१०। १३। ३५)। यही हाल पीछे भागते हुए आये उन ग्वालोका अपने बालकोंको देखकर हुआ। ब्रह्माजीने इस लीलापर मुग्ध होकर कहा है—

अहोऽतिधन्या व्रजगोरमण्यः
स्तन्यामृतं पीतमतीव ते मुदा।
यासां विभो वत्सतरात्मजात्मना
यत्तृप्तयेऽद्यापि न चालमध्वराः॥

(१०। १४। ३१)

आपने व्रजकी गायो और ग्वालिनोके बछड़े तथा बालक बनकर उनके स्तनोंका दूध पिया है। उनका जन्म ही सफल है, वे ही धन्य हैं। कितु श्रीकृष्ण सृष्टिके सर्वोच्च पदाधिकारी ब्रह्माद्वारा नाना प्रकारसे क्षमायाचना करनेपर भी उनसे बोले तक नहीं, क्योकि वे ब्रह्माद्वारा गोपबालको और बछड़ोके अपहरण (श्रीकृष्णके सामीप्यसे दूर करना) के अपराधको क्षमा नहीं कर पाये। गोपबालको और गो-वत्सोके साथ कितना आदर्श सख्यभाव है श्रीकृष्णका।

जगत्‌को गोसेवाका श्रेष्ठ आदर्श श्रीकृष्ण-बलरामने ही बताया है—

तौ वत्सपालकौ भूत्वा सर्वलोकैकपालकौ।

सप्रातराशौ गोवत्सांश्चारयन्तौ विचेरतुः॥

(१०। ११। ४५)

सारे लोकोके एकमात्र पालनकर्ता श्याम और बलराम अब बछड़ोके चरवाहे बने हुए हैं। तडके ही कलेवेकी सामग्री लेकर बछड़ोंको चराते हुए वे वन-वन घूमते हैं। स्मरणीय है कि कृष्ण-बलराम नगे पैर ही गाये चराने जाया करते थे। नन्द-यशोदाद्वारा उपानह् (जूते) धारण करनेके सारे आग्रह उन्होने अस्वीकार कर दिये, कारण उनके प्रिय बछडे भी तो बिना पदत्राण ही विचरते हैं—

'कृष्णस्त्वानीते उपानहौ नहि नहिकारेण बहिश्चकार।

(श्रीगोपालचम्पू)

इसीलिये गोपियोने इन चरणोका वर्णन किया है—'तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्' (१०।३१।७)। जिन चरणोका श्रीलक्ष्मी अत्यन्त सावधानीसे सवाहन करती हैं, वे ही चरण बछडोके पीछे-पीछे उनकी सेवामे चल रहे हैं। अधिक क्या कहा जाय, गोपियाँ गोचारणकी लीलाका स्मरण करके अत्यन्त मर्माहत हो जाती है—

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दर नाथ ते पदम्।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति॥

(१०। ३१। ११)

'हे प्यारे! जब तुम गायोको चरानेके लिये वनमे विचरण करते हो, तब यह सोचकर कि तुम्हारे सुन्दर सुकोमल चरणोमे ककड, काँटे, कुश आदि गड जानेसे तुम्हे कितनी पीडा होती होगी, हमारा हृदय आकुल-व्याकुल हो जाता है।

गोवत्सोके साथ भी श्रीकृष्णने अगणित कौतुक किये, अपने स्पर्शसुखदानसे उन्हे परम सुखी बनाकर नाना क्रीडाएँ कीं। कभी गोवत्सोका मुख-चुम्बन करते, कभी हरी-हरी सुकोमल दूब अपने श्रीहस्तोसे चुनकर उन्हे प्यारसे खिलाते, अपनी अञ्जलिसे उन्हे पानी पिलाते आदि-आदि। उनकी इन मोहिनी लीलाओका मर्म जान ले, ऐसा जगत्मे कोई नहीं है। श्रीमद्भागवतमे इसका सूत्ररूपमे उल्लेखमात्र है—

न वेद कश्चिद् भगवश्चिकीर्षितं
तवेहमानस्य नृणां विडम्बनम्।

(१। ८। २९)

उधर गाये, वैल-बछडे भी श्रीकृष्णसे कितना प्रेम करते हैं, यह तो तव प्रकट होता है जव वे श्रीकृष्णको कालियनागके पाशमे जकडा हुआ देखते हैं। उस समय—

गावो वृषा वत्सतर्यः क्रन्दमानाः सुदुःखिताः।
कृष्णे न्यस्तेक्षणा भीता रुदत्य इव तस्थिरे॥

(१०। १६। ११)

तात्पर्य यह कि गाय, बैल, वछिया और वछडे आदि सभी व्यथित होकर डकराने लगे और डरे हुए-से अचल होकर रोते हुए-से एकटक उनकी तरफ असहाय-से देखने लगे।

जब कभी गायो एव अन्य व्रजवासियोपर कोई विपत्ति आयी है, श्रीकृष्णने सर्वदा उनकी रक्षा की है। उनका लक्ष्य सर्वदा यही रहा है कि गायें और व्रजवासी सुखी रहें। अघासुरके मुखसे गोपबालको एवं बछडोका उद्धार, कालियनागको ह्रदसे भगाकर जलको एव तत्संलग्न गोचरभूमिके घासको विषमुक्त करना, दो-दो बार दावाग्निका पान करके सबको मृत्युमुखसे निकालकर पुनः जीवनदान देना, इसके प्रकृष्ट उदाहरण हैं—'गोनृभिर्भुज्यतां नदी' (१०। १६। ६०), 'गावो वृषा वत्सा लेभिरे परमां मुदम्' (१०। १७। १६)।

श्रीकृष्णने वैश्योके लिये—विशेषतः व्रजवासियोके लिये जो सदासे केवल गोपालन ही करते आये हैं— गोसेवाको परम कर्तव्य बताया—

कृषिवाणिज्यगोरक्षा कुसीदं तुर्यमुच्यते।
वार्ता चतुर्विधा तत्र वयं गोवृत्तयोऽनिशम्॥

(१०। २४। २१)

इसी युक्तिके आधारपर इन्द्रयज्ञका निवारण करके उन्होने गिरिराज गोवर्धनकी पूजाका प्रवर्तन किया। अपने अपमानसे कुपित हुए इन्द्रने व्रजमे प्रलयकारी तूफानी वर्षा करवायी, जिससे व्रजके पशु, गोप-गोपी सभी पीडित होकर ठिठुरने लगे और श्रीकृष्णकी शरणमे गये। श्रीकृष्णने योगवलसे खेल-खेलमे गिरिराजको अपनी बायीं अगुलिपर धारण करके व्रजके समस्त गोप-गोपियोको गोधन तथा उनके सामानके साथ गिरिराजके नीचे आश्रय दिया ताकि वे वर्षा-तूफानसे वच सकें—

यथोपजोषं विशत गिरिगर्त सगोधनाः॥

(१०। २५। २०)

भगवान् श्रीकृष्ण गोवंशसे कितने एकात्म थे, गाये-वछडे उनकी एक पुकार (श्रीमुखसे हो या वशीरवमे)-पर प्रेम-परवश हुए दौडे आते। कुछेक स्थलोका आनन्द-आस्वादन करें—

मेघगम्भीरया वाचा नामभिर्दूरगान् पशून्।
क्वचिदाह्वयति प्रीत्या गोगोपालमनोज्ञया॥
धेनवो मन्दगामिन्य ऊधोभारेण भूयसा।
ययुर्भगवताऽऽहूता द्रुतं प्रीत्या स्नुतस्तनीः॥

(१०। १५। १२, १०। २०। २६)

जब वनमे दूर गये हुए गाय और बछडोको श्रीकृष्ण मेघगम्भीर वाणीसे बडे प्रेमसे उनके नाम ले-लेकर पुकारते, तब गायो आदिका चित्त भी उनके वशमे नहीं रहता। उनके स्तनोसे दूध झरने लगता और वे दौडती हुई भगवान्‌के पास आ जातीं। वंशीपर श्रीभगवान्‌का आह्वान सुनकर गायोके साथ-साथ नदी-वृक्ष आदिकी जो दशा हो जाती है उसका वर्णन युगलगीतमे मनन योग्य है—

वृन्दशो व्रजवृषा मृगगावो वेणुवाद्यहृतचेतस आरात्।
दन्तदष्टकवला धृतकर्णा निद्रिता लिखितचित्रमिवासन्॥

× × ×

वनचरो गिरितटेषु चरन्तीर्वेणुनाऽऽह्वयति गाः स यदा हि॥

(१०। ३५। ५,८)

वेणुगीत श्रवण करके गायोकी जो अद्भुत दशा होती है वही तो हर प्राणीके लिये स्पृहणीय है—

गावश्च कृष्णमुखनिर्गतवेणुगीत-
पीयूषमुत्तभितकर्णपुटैः पिबन्त्यः।
शावाः स्नुतस्तनपयःकवलाः स्म तस्थु-
र्गोविन्दमात्मनि दृशाश्रुकलाः स्पृशन्त्यः॥

(१०। २१। १३)

जब हमारे प्यारे कृष्ण अपने मुखसे बाँसुरीमे स्वर भरते हैं और गाये उनका मधुर सगीत सुनती हैं, तब ये अपने दोनों कानोके दोने खडे कर लेती हैं और मानो उनसे अमृत पी रही हो, इस प्रकार उस सगीतका रस लेती हैं। मानो वे प्यारे कृष्णको हृदयमे आवद्ध करके उनका आलिगन कर रही हो, उनके नेत्रोमे आनन्दाश्रु छलकने लगते हैं। बछडोकी दशा तो और भी निराली हो जाती हे, यद्यपि गायोके स्तनोसे दूध अपने-आप झरता रहता है और वे दूध पीते-पीते हठात् वशीध्वनि सुनते हैं, तब मुँहमे लिया हुआ दूध न तो वे निगल पाते है, न उगल पाते हैं। अपने हृदयमे भगवान्‌का सस्पर्श अनुभव करते हुए उनकी ऑखोसे अश्रुधारा वहने लगती है। वे ठिठके-से ही खडे रह जाते है।

वंशीकी मधुर तानको सुनकर और श्रीकृष्णके त्रिभुवनसुन्दर मोहिनीरूपको देखकर गौ, पक्षी, हरिण आदि भी रोमाञ्चित तथा पुलकित हो जाते हे—

यद् गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यबिभ्रन्॥

(१०। २९। ४०)

केवल गाये-बछडे ही आत्मविभोर होते हो ऐसा नहीं है। गाये चराते हुए जब खुरोसे उडी हुई गोरज श्रीकृष्णकी घुँघराली अलकोपर जम जाती है, तब उनके सौन्दर्यमे ऐसी अभिवृद्धि होती है कि गोपियॉ उनके इस रूपके दर्शनकी अभिलाषा करती हैं—

तं गोरजश्छुरितकुन्तलबद्धबर्ह-
वन्यप्रसूनरुचिरेक्षणचारुहासम्।

(१०। १५। ४२)

कैसी सुन्दर झाँकी है। दिनभर गोचारण करके व्रज लौटते हुए श्रीकृष्णकी मधुरतम झाँकीका चित्रण युगलगीतमे भी दर्शनीय है (१०। ३५। २२-२३)। श्रीकृष्णका अभीष्ट ही है गायो और गोपियोके सर्वविध तापको मिटाना—**'मोचयन् व्रजगवां दिनतापम्'** (१०। ३५। २५)। व्रजमे श्रीकृष्ण गायोकी सर्वविध सेवा अपने हाथसे ही करते थे। उन्हे चराना, नहलाना, गोष्ठकी सफाई इत्यादिके अतिरिक्त गाये दुहनेका कार्य भी दोनो भाई स्वय ही करते थे—**'व्रजे गोदोहनं गतौ'** (१०। ३८। २८)। देखिये तो, गोसेवामें नियुक्त होनेके कारण ही गिरिराजको भक्तश्रेष्ठ एवं पूजनीय माना गया—

हन्तायमद्रिरबला हरिदासवर्यो
यद् रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः।
मानं तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत्
पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः॥

(१०। २१। १८)

गायो और कृष्ण-बलरामके लिये विश्राम-हेतु कन्दराएँ, खानेके लिये कन्दमूल, जल तथा हरी-हरी घासकी व्यवस्था करनेवाला गिरिराज गोवर्धन धन्य है।

इस प्रकार व्रजलीलामे श्रीकृष्णद्वारा गोवंशकी अत्यन्त आन्तरिकताके साथ की गयी सर्वविध सेवा, क्रीडा, रक्षाकी लीलाएँ स्पष्ट ही गायो-बछडोको उनके अन्तरङ्ग परिकरोकी श्रेणीमे प्रतिष्ठित कर देती हैं। गायो-बछडोका श्रीकृष्णके प्रति प्रतिव्यवहार भी परिकरो-जैसा ही है। वह परस्पर 'अपनत्व' ही सेवा-धर्मकी कुजी है।

भगवान् श्रीकृष्णने गोसेवाका जो आदर्श प्रस्तुत किया है, हमे अपने सर्वविध उत्कर्ष-कामनासे उसे अपनाना ही होगा। जय गोपाल, जय गोविन्द।

***

प्राचीन इतिहासमें गौओंका स्थान

(श्रीधर्मलालसिहजी)

हिदू गौको बहुत ही पूज्य मानते हैं। इसकी तहमे बडा गहरा कारण है। चारों वेदोमे एक स्वरसे गौओका गुणानुवाद है। वेदोमे वर्णित गो-सम्बन्धी मन्त्रोको उद्धृत करके विचार किया जाय तो बृहत् ग्रन्थ तैयार हो जायगा। यही दृष्टिकोण स्मृति एवं पुराणग्रन्थोंका है। सबमें गोप्रशसक वाक्योका भण्डार भरा पड़ा है।

सायणाचार्यने ऋग्वेदकी व्याख्या की है। अपने भाष्यमे वे लिखते हैं कि 'सृष्टिके आदिमे मनुष्य और गाय दोनो आये। दोनो चुप थे। पहले गाय मुँह खोलकर बोली। उसीके सहारे मनुष्यने मुँह खोला और वह बोला, अतः गायसे मनुष्यको बोली मिली।'

इसीसे मिलता-जुलता उद्धरण आदम और ईबके जीवनके सम्बन्धमे मिलता है। दोनो स्वर्गसे निकाले गये। भगवान्ने उनको एक मुट्ठी गेहूँ और एक जोड़ी बैल दिये।

हिंदुओंका विश्वास है कि गोलोक सभी लोकोके ऊपर, सबसे पवित्र और सर्वोत्तम है।

गौकी उत्पत्तिके सम्बन्धमे तीन प्रकारके प्रसग आते हैं—(१) ब्रह्मदेव एक मुँहसे अमृत-पान कर रहे थे, दूसरे मुँहसे फेन निकला, जिससे सुरभिकी उत्पत्ति हुई। (२) दूसरे स्थलपर कहा है कि हमलोगोके आदि पिता दक्षप्रजापति हैं। उनके साठ लडकियाँ थीं। उनमे सबसे प्यारी सुरभि थी। (३) आगे चलकर बतलाया गया है कि संसारके कल्याणार्थ देव, दनुज—इन दोनोने मिलकर समुद्रमन्थन किया। उससे चौदह रत्न निकले, उन रत्नोमे एक सुरभि है। सुरभिसे सुनहरे रंगकी कपिला उत्पन्न हुई, उसके थनके दूधसे क्षीर-समुद्र बना। कपिलाके बच्चे कैलासपर चरते तथा धूम मचाते थे। नीचे भगवान् महादेव ध्यानमग्न थे। उन बच्चोके मुँहका ठडा फेन लगनेसे महादेवजीका ध्यान भङ्ग हो गया। हरने अपने तीसरे नेत्रसे उनको देखा। उसी घडीसे गौका रंग, जो पहले सुनहरा था, नाना प्रकारका हो गया।

'गोत्र' शब्द 'गो' से बना है। पीछे चलकर हिदुओके विभिन्न वंशोके परिचयके लिये इसका सार्वत्रिक व्यवहार होने लगा। ऋषिगण झुंड-की-झुंड गौएँ रखते थे, यही इस 'शब्द' के व्यवहारका मूल है। उस समय लड़कियोका प्रधान कार्य गोसेवा था। इसीलिये वे दुहिता कहलाती थीं।

कहते हैं कि एक दिन भगवान् शकर ब्रह्मदेवके घर गये। पितामहने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया। प्रसन्न होकर स्रष्टाने बहुत-सी गौएँ दीं। उनके आगे स्वर्गकी सम्पदा तुच्छ थी। उन्हें पाकर शकर बडे प्रसन्न हुए, तभीसे उनका नाम 'पशुपति' पडा। महादेवने अन्य शीघ्रगामी सवारियोको त्याग कर अपनी सवारीके लिये नन्दी नामक बैलका वरण किया।

शोणितपुर (वर्तमान नैपाल) के राजा बाणासुर शकरजीके महान् भक्त थे। एक बार महादेवजीने प्रसन्न होकर उन्हे अपने गोकुलमेंसे विशिष्ट जातिकी एक दर्जन ऐसी गाये दीं, जिनके आगे ससारकी सम्पदा तुच्छ मालूम पडती थी। उन गायोको पाकर बाण अत्यन्त प्रतापी और शक्तिशाली हुए। बाणासुरकी लावण्यवती पुत्री ऊषाका भगवान् श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धके साथ गुप्त प्रेम हो गया। भेद खुलनेपर बाणने अनिरुद्धको कैद कर लिया। नारदजीसे यह सवाद पाकर भगवान् श्रीकृष्ण अपनी विशाल विजयी सेनाके साथ शोणितपुर चढ आये। समाचार पाकर बाणने अपने मन्त्रियोको एकत्रित करके मन्त्रणा की। राज्यका चला जाना वे सहन कर सकते थे, परतु उन गायोका चला जाना उनको बरदाश्त नहीं था। सबकी रायसे गाये कुबेरके यहाँ थातीरूपमे इस शर्तपर रख दी गयीं कि वे बाणके सिवा किसीको गाये नहीं देगे। बाण लडाईमे हार गये, सधि हुई। दान-दहेज लेकर श्रीकृष्ण द्वारकाके लिये प्रस्थित हुए। किसीने कानमे धीरेसे कहा—'भगवन्! आपको असली चीज हाथ नहीं लगी। ससारकी सम्पदाको लजानेवाली इनकी बारह गाये कुबेरके यहाँ छिपाकर रखी गयी हैं।' श्रीकृष्ण ठिठक गये। कुबेरको गाय वापस करनेके लिये कहलाया गया। उन्होने नाहीं कर दिया। फिर लड़ाईके बाजे बजे। युद्धकी तैयारी हुई। देवता डर गये। शान्ति-दूत दौडे। बड़ी कठिनतासे उन्होने श्रीकृष्णको समझा-बुझाकर घर भेजा।

जब-जब पृथ्वीपर घोर अन्याय एव पाप होने लगता है, तब-तब वह गौका रूप धारण कर ब्रह्मदेवको शरणमे आ...

करती है और पितामह उसका दुःख दूर किया करते हैं। इसीसे मिलता-जुलता आख्यान पारसी जातिके इतिहासमे भी पाया जाता है।

द्वापरके अन्तमें कलिने वृषरूप धर्मके तीन पैर काट लिये। जब चौथा काटने लगा, तब वह भागा और महाराज परीक्षित्‌ने उसकी रक्षा की।

राक्षसराज रावण नियमितरूपसे रोज गौओंकी प्रदक्षिणा किया करता था।

इक्ष्वाकुके पौत्रने बैलके ककुद् (डील) पर चढ़कर युद्ध किया, इसलिये रामजीके वंशका नाम 'काकुत्स्थ' पड़ा। वे विजयी हुए।

गीतामे श्रीकृष्ण भगवान्‌ने कहा है कि 'गौओमें कामधेनु मैं हूँ।' महाराज दिलीपने एक दिन मार्गमें जाती हुई कामधेनुको देखकर प्रणाम नहीं किया। उसके शापसे महाराज अपुत्र हो गये। महाराज अपने गुरु वसिष्ठके आश्रमपर गये। अपुत्र होनेका अपना सारा हाल गुरुजीको कह सुनाया और शापसे मुक्ति पानेके लिये मार्ग-प्रदर्शनके हेतु बड़ी विनती की। गुरुने उन्हे नन्दिनी दे दी और उसकी सब तरहसे पूजा करनेके लिये कहा तथा सेवा-शुश्रूषामें किसी प्रकारकी त्रुटि न होने पावे—इस बातकी पूरी सतर्कता रखनेका उपदेश दिया। गुरुके आदेशानुसार राजा-रानी प्रेमपूर्वक उस दिव्य गायकी परिचर्या करने लगे। राजा गायको वनमें चरानेके लिये ले गये। वे नन्दिनीके चलनेपर चलते थे, बैठनेपर बैठते थे, उसके पानी पीनेपर पानी पीते थे। एक दिन राजा वनके दृश्य देखनेमें लग गये। इतनेमे नन्दिनी जोरसे चिल्लायी। एक सिंह नन्दिनीको दबोचे जा रहा था। राजा नन्दिनीकी प्राण-रक्षाके लिये धनुष उठाकर सिंहसे लडनेके लिये तैयार हो गये। परंतु सिंहसे जब किसी प्रकार भी राजा गौकी रक्षा नही कर सके, तब अन्तमे राजाने अपना शरीर सिंहको अर्पण कर दिया और मास-पिंडवत् इस प्रतीक्षामे पड़े रहे कि सिंह अब खायेगा, तब खायेगा। बहुत देरके पश्चात् मस्तक उठाकर देखा तो सिह नहीं दिखायी दिया, केवल नन्दिनी खडी-खड़ी हँस रही थी। राजाकी इस अनुपम सेवासे नन्दिनी प्रसन्न हुई।' राजाको पुत्र हुआ।

प्रसिद्ध देशभक्त महादेव गोविन्द रानाडेके सम्बन्धमें भी इसी प्रकारकी कथा प्रचलित है। उनके माता-पिताके कोई पुत्र नहीं था। वे वृद्ध हो चले थे, बहुत दुखी रहते थे। एक दिनकी बात है, उनके दरवाजेपर एक दिव्य साधु आये। दम्पतिने उनकी बड़ी सेवा की। आदर-सत्कार, सेवा-शुश्रूषासे साधु बहुत प्रसन्न हुए। जिज्ञासा करनेपर ज्ञात हुआ कि दम्पति पुत्र-रत्नके बिना चिन्तित रहा करते है। साधुने प्रयोग बतलाया—'दूध देनेवाली सवत्सा काली गाय रखो। उसको साबित पूर्ण गेहूँ खिलाओ, जो गोबरके साथ निकल आयेगा, उन्हीं दानोंको धो-धाकर साफ-सुथरा करके उसीका आटा तैयार करो। ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर उसीकी रोटी खाओ। छः मासतक ऐसा करो।' दम्पतिने वैसा ही किया। अन्तमें उनको पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। काली गायसे पुत्र प्राप्त होनेकी बात भारतवर्षके प्रत्येक गृहस्थको ज्ञात है।

हिंदुओंका विश्वास है कि गायके शरीरमें सभी देवता वास करते हैं, इस प्रसंगमे एक कथा है कि अन्य सभी देवताओंके गो-देहमे प्रवेश कर जानेके पश्चात् अन्तमें लक्ष्मी आयीं। गायने उनको अपने गोबर और मूत्रमें रहनेका स्थान दिया। कहना न होगा कि गोबर और गोमूत्रके बराबर खाद संसारमें दूसरी नहीं है।

महर्षि वसिष्ठकी शबला नामक होम-धेनुकी महत्ता सभीको मालूम है। एक दिन महाराज विश्वामित्र अपनी विशाल सेनाके साथ उन्हींके तपोवनके रास्तेसे जा रहे थे। ऋषिने उनको रोककर उनका आतिथ्य किया। शबलाकी कृपा तथा दूधसे सारी सेनाने संतुष्ट होकर भोजन किया। गायकी महिमा और चमत्कार देखकर विश्वामित्र अचम्भेमे पड़ गये। उन्होंने शबलाको ऋषिसे अपने लिये माँगा। ऋषिने देना अस्वीकार कर दिया। राजा इसपर नाराज हो गये और उन्होंने बलपूर्वक गायको ले जाना चाहा। दोनोमें लड़ाई छिड गयी। गौकी कृपासे राजाको ऋषिने परास्त कर दिया।

एक बार अपनी विशाल सेनाके साथ कार्तवीर्य अर्जुन तपोवनमे जमदग्नि ऋषिके अतिथि बने। ऋषिने कामधेनुकी दया और दूधसे सेनासहित राजाका भलीभाँति आतिथ्य किया। राजा गायपर लट्टू हो गये। उन्होंने ऋषिसे गाय माँगी। ऋषिने देनेसे इनकार किया। राजाने अपने आदमियोंको बलपूर्वक गाय ले चलनेके लिये कहा। वे ले चले। ऋषिने उन्हे रोका। राजाज्ञासे ऋषिका मस्तक काट लिया गया। ऋषि-पत्नी रेणुका जोर-जोरसे चिल्लाने लगी। जमदग्निके ख्यातनामा

पुत्र परशुराम निकटके पर्वतपर तपस्या कर रहे थे। उन्होने जब माताका रोना सुना, तब उनका आसन डोल गया। वे शीघ्र घर लौटे। पिताकी दशा देखकर अत्यन्त कुपित हुए। उन्होने क्षत्रियोके साथ भयंकर लड़ाई लगातार कई वर्षोंतक लड़ी। इक्कीस बार पृथ्वीको क्षत्रियोसे शून्य कर दिया।

पृथ्वीका कक्ष बारह भागोमे बँटा है। हर एक भाग एक-एक राशि है। दूसरी राशिका नाम वृष है।

जहाँसे गङ्गाकी धारा निकलती है, उसका नाम गङ्गोत्तरी है, क्योकि उसका मुँह गोमुखके समान है।

धनकी देवी लक्ष्मी पहले-पहल पृथ्वीपर गायके रूपमें आयीं, उन्होने जो गोबर त्यागा, उससे बिल्व-वृक्षकी उत्पत्ति हुई।

गङ्गाजीको पहले-पहल जब ससारमे आनेके लिये कहा गया, तब वे बहुत आनाकानी करने लगीं। उन्होने बतलाया कि 'पृथ्वीपर पापी लोग मुझमे स्नानादि करके मुझे अपवित्र कर दिया करेगे, इसलिये मैं न जाऊँगी।' पितामहने किहा कि 'लोग तुम्हें कितना भी अपवित्र करे, गायके पैर लगनेसे तुम पवित्र होती रहोगी।'

महर्षि दत्तात्रेय अपनी गाय, कुत्ते और हिरनके साथ बराबर घूमा करते हैं।

याज्ञवल्क्यको पुरोहित बनाकर महाराज जनकने एक हजार गायोका दान किया था, जिनके आगे स्वर्गकी सम्पदा भी तुच्छ थी। भगवान् गणेशके जन्मके सम्बन्धमे मनोहर सच्ची आख्यायिका है। गणेशजी ज्यो ही उत्पन्न हुए, भूलसे महादेवजीने उनका मस्तक काट दिया, जो किसी अदृश्य स्थानमे चला गया। पार्वती बहुत रोयीं-धोयीं, देववैद्य अश्विनीकुमार बुलाये गये। पार्वतीसे मुँहमाँगा वरदान मिलेगा—इस शर्तपर उन्होने बालकका मस्तक जोड दिया। वरदानमे उन्होने स्वय महादेवको ही माँगा। बडी जटिल समस्या उपस्थित हुई। देवताओंके साथ विष्णुने पंचायत की। महादेवका दाम एक गाय रखा गया और वही देकर पार्वतीने छुटकारा पाया। अश्विनीकुमार बड़े प्रसन्न हुए।

योगिराज भगवान् श्रीकृष्णके विषयमे भी विचित्र-विचित्र आख्यान कहे-सुने जाते हैं, जो उनके 'गोपाल' नामको चरितार्थ करते है। लडकपनमे बछडे चराना, कुछ बडे हो जानेपर गाये चराना, गायपर आघात करनेवाले आततायीको मार डालना, ब्रह्मदेवका मान-मर्दन करना, गोवर्धन धारण कर गोरक्षा करना, रासलीलाके समय अत्यन्त श्रान्त होनेपर अपने बाये अङ्गसे गायको उत्पन्न करना—जिससे दुग्ध-कुण्ड तैयार हुआ और गोप-गोपिकाओने उस दुग्धको पीकर अपनी क्लान्ति दूर की—इत्यादि अनेक कथाएँ सविस्तर रूपसे हमारे पुराणोमे वर्णित हैं। नटवरका सारा ज्ञान-कोष गो-चारणसे ही प्राप्त हुआ था। जिससे आगे चलकर ससारका उद्धार करनेवाली गीताका ज्ञान निकला।

गुरु नानक बचपनमे गाये चराते थे। एक दिन जेठकी दुपहरीमे गायोको बटोरकर वे एक घने वृक्षके नीचे सो गये। उधरसे निकलनेवाले बटोहीने देखा कि एक विषधर सर्प फन किये नानकके मस्तकके पास खडा है। उन लोगोने ढेला मारकर नानकको जगाया। उनके उठते ही साँप जगलकी तरफ नौ-दो ग्यारह हो गया। कहते हैं कि उसी समयसे नानक ध्यानमग्न रहने लगे। आगे चलकर वे शक्तिशाली सिख-सम्प्रदायके सस्थापक बने।

भगवान् बुद्धके जीवन-चरित्रमे भी एक इसी प्रकारकी मनोहर घटना घटी थी। उन्होने उनचास दिनतक उपवास किया, फिर भी उनको ज्ञान एव मुक्ति नहीं मिली, जिसकी खोजमे वे राज-पाट त्याग कर भटक रहे थे। गयाके पास बोधि वृक्षके नीचे वे उदास बैठे थे। उसी इलाकेके उरूवेला नामक स्थानके सरदारकी लावण्यवती बेटी सुजाताने वट-वृक्षके अधिष्ठातृ-देवकी मन्नत मानी थी कि यदि 'मेरी मनः कामना पूरी हो जायगी तो मैं १६०० गायोके दूधकी खीर वटदेवके भेट चढ़ाऊँगी।' उसकी अभिलाषा पूरी हो गयी। उसने १६०० गायोको जेठी मधुके वनमे चराया। उनको दूहकर उनका दूध आठ सौ गायोको पिलाया। फिर उनको दूहकर उनका दूध चार सौको पिलाया, इसी प्रक्रियासे अन्तमें उसने १६ गायोको दूहा और उनका दूध ८ गायोको पिलाया। फिर आठ गायोका दूध लेकर उसने प्रेमपूर्वक खीर तैयार करवायी और उसको सोनेके थालमे परोस, खीर लेकर वह वट-वृक्षके सामने उपस्थित हुई। यह देखकर कि वटदेव मनुष्यरूप धारण कर उसका उपहार ग्रहण करनेके लिये पहलेसे बैठे हैं,—सुजाता आनन्दमे निमग्न हो गयी। गौतमने खीर खायी और तुरत उनको ज्ञान और मुक्तिका मार्ग मिल गया, जिसके लिये वे उतने दिनोसे व्यग्र थे।

महात्मा ख्रीष्ट भी बचपनमे पशु चराते थे। उन्हीं दिनो उनको ससारकी, पापसे रक्षा करनेका ज्ञान प्राप्त हुआ।

महान् शीशोदिया-वशके संस्थापक बाप्पा रावल वचपनमे गाये चराया करते थे। एक दिनकी बात है, एक गायने गोष्ठमें आकर दूध नहीं दिया। मालिकने बाप्पाको खूब पीटा। मालिकको ख्याल हुआ कि बाप्पाने ही सारा दूध दुहकर पी लिया है, वेकसूर बाप्पाको इससे मर्मान्तक पीडा हुई। दूसरे दिन भी वह गाय चराने गया। प्रतिहिसाके भाव उसके मनमे उठ रहे थे। सध्याका आगमन हुआ। गाय गोष्ठकी तरफ चल पडी। बाप्पा एक झाड़ीमे छिप गया। देखता है कि एक गाय झुंडसे अलग होकर एकलिङ्ग महादेवके मस्तकपर दूध ढाल रही है। बाप्पासे अब न रहा गया। वह एकलिङ्गके पास दौड़ा गया, लाठी मार-मारकर महादेवके नाको दम कर दिया। भोलेबाबा प्रसन्न हुए। बाप्पाको वरदान मिला। उनका प्रताप बढा। वे शीशोदिया वशके महान् संस्थापक हुए, जिस वंशके राणा सॉगा तथा प्रतापने मुसलमानी कालमे अपने प्रभावसे ससारको चकित कर दिया।

इसीसे मिलती-जुलती आख्यायिका पारसी जातिके इतिहासमे भी मिलती है। इससे पता लगता है कि प्रत्येक महापुरुपका सम्बन्ध किसी-न-किसी रूपमे गायोके साथ रहा है। सबका वचपन गो-सेवामे बीता है। उसीके प्रतापसे सब महान् बने हैं।

महाराज नृगने एक करोड गाये ब्राह्मणोको दान दी थी। राजा विराटके पास उत्तम जातिकी एक लाख गाये थी। उन गायोकी प्रशसा सुनकर कौरव बड़ी भारी सेना लेकर उनकी राजधानीपर चढ आये, किंतु पाण्डवोकी सहायतासे विराटने उनको मार भगाया। महाराज नन्दके पास नौ लाख गाये थी।

जैन-युगमे भी एक-एक महाजनके पास लाखो गाये रहती थीं। विशाखाके विवाहमे उसके पिता धनदृष्टिने अपनी वेटीको इतनी गाये दहेजमे दी थी जिनकी गणना नहीं हो सकी।

महाराज नल, ऋतुपर्ण, सहदेव तथा नकुल प्रसिद्ध गो-चिकित्सक थे। पाण्डवोमे यह नियम था कि उनकी स्त्री द्रौपदी जितने समयतक एक भाईके पास रहे, उतने समयतक दूसरा भाई उस महलमे न जाय और यदि चला जाय तो बारह वर्षतक वनवासी होकर रहे। हालमे ही अर्जुनकी पारी बीती थी और युधिष्ठिरकी पारी आयी थी। अर्जुन अपना गाण्डीव उसी महलमे भूल आये थे। किसी ब्राह्मणने आकर उनके सामने पुकार की कि 'लुटेरे मेरी गायको हरण किये जा रहे हैं।' अर्जुनको गाण्डीवकी याद आयी। बारह वर्षोतक वनमे रहनेकी तनिक भी परवा न करके वे भीतर जाकर धनुष ले आये, क्योकि गायकी रक्षासे बढकर ससारमे कोई दूसरा धर्म नहीं है। उन्हे बारह वर्षोतक वनमे रहना मंजूर था, परंतु गायकी रक्षासे मुँह मोडना मंजूर नहीं था।

च्यवन-ऋषिके विषयमे एक बहुत ही रोचक कथा है। वे एक बार गङ्गाजीके गर्भमे तपस्या कर रहे थे। मछुए मछली मारने आये। जालमे मछलीके बदले मुनिजी आ गये। मछुए उनको नहुषके दरबारमे ले गये। महाराजने मुनिजीके बदले एक थैली सोना दिया; परतु मुनिजी कहने लगे कि 'इतना कम हमारा दाम नहीं होगा।' राजाने और भी बहुत-सा सोना, अन्तमे समस्त राज्य मुनिजीके मूल्यमें देना चाहा। इसपर भी मुनिजी बोले—'हमारा मूल्य इतना कम नहीं होगा।' राजाने विनती करके पूछा कि 'महाराज! आप ही वतलाये कि आपका मूल्य क्या होगा?' मुनिने कहा कि 'हमारा मूल्य एक गाय है। आप एक गाय दे दीजिये। बस, यही हमारा मूल्य है।' राजाने ऐसा ही किया। इससे पता लगता है कि पूर्वकालमे एक गायका दाम समूचे राज्यसे भी अधिक माना जाता था।

जब भरत रामजीसे मिलने गये, उस समय उन्होने पूछा कि 'भाई! तुमपर गोपगणका प्रेम है न? तथा गोरक्षा होती है या नही?'

प्राच्य जगत्मे पहले गायका बडा मान था। जैसे हमलोग गो-पूजा करते है, उसी प्रकार पारसी लोग सॉडकी पूजा किया करते थे। मिश्रमे सुनहले बाछेकी पूजा हुआ करती थी। वहॉके प्राचीन सिक्कोपर बैलोंकी मूर्ति अङ्कित रहती थी। ईसासे कई हजार वर्ष पूर्वके बने हुए पिरामिडमें बैलोकी मूर्तियॉ अङ्कित है। आज भी केलटिक जातिके लोग जहॉ-कही है, गो-पूजक हैं। उस समय तमाम मुसलमानी देशोमे भी गायकी पूजा हुआ करती थी तथा उनका मारना दण्डनीय था। पैगम्बर मूसाके समयसे गो-वधका प्रचलन हुआ और विरोधके बहुत प्रयत्नोंके बाद भी भारतमे आज गोहत्याका कलक बना हुआ है। देखे गोमाता कब सद्बुद्धि प्रदान करती है।

आर्थिक समृद्धिमें गोवंशका योगदान

(श्रीबाबूलालजी वर्मा)

भारतीय कृषि-सस्कृतिमें गो, गोरस और गोवश ही नहीं वरन् गोमय तथा गोमूत्रको भी सर्वोपरि महत्त्व दिया गया है। इसका यह कारण नहीं कि भारत कृषि-प्रधान देश है और कृषि-विकासमें गोवंशका विशेष योगदान है, बल्कि धर्म, संस्कृति और सार्वजनिक स्वास्थ्यके साथ भी गाय जुड़ी रही है। यही नहीं सृष्टि-रचनामे भी गायको प्रथम स्थान प्राप्त है। अमृत-तुल्य दुग्ध पेय देनेके अतिरिक्त अपनी पवित्रता, शालीनता, निष्काम-सेवा और धर्मरक्षामे भी गाय पुरोगामिनी रही है।

भारतकी परम पावन धरती माता गोवंशसे ही अनुप्राणित है। वैदिक परम्परामें गाय अनेक अर्थोमे भारतीय जीवनसे जुडी है। गो एक व्यापक अर्थवाला शब्द है और 'गो' शब्दके जितने भी अर्थ-नाम हैं वे सब अवध्य अर्थपरक हैं, क्योकि उनका सम्बन्ध जीवनसे नहीं प्रत्युत जीवनके संचारसे है, जीवनकी गतिसे है, जीवनके लाभसे है और जीवनके आधारसे है।

भारतीय कृषि और अर्थ-व्यवस्थाका आधार—गोवंश

गोपाष्टमीके पर्वपर देशभरमे गोभक्त जनता गोमाताकी पूजा करती है। वास्तवमे गाय हमारी कृषि-विकास एवं भारतीय अर्थ-व्यवस्थाकी आधार-शिला है, अति प्राचीन कालसे ही इसका महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। प्राचीन परम्परा और भारतीय कृषि-संस्कृतिमे गायका विशेष और पूजनीय स्थान रहा है। गो-भक्ति और गो-सेवाको उच्च स्थान प्राप्त है। सभी धर्मग्रन्थों एवं प्राचीन साहित्यमे गायके महत्त्वको बतलाया गया है और यह अनुभवजन्य सत्य है कि गाय हमारी कृषि-विकास और आर्थिक सम्पन्नताकी रीढ है। गौएँ सर्वश्रेष्ठ, पवित्र तथा पूजा करने योग्य और ससारभरमे सबसे उत्तम ईश्वरीय देन हैं, क्योकि अमृत-तुल्य दूध-दही, घी आदि हव्यके बिना ससारका कोई यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता। गाय अपने दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र, हड्डी, चमडा, बालो और सींगोसे हमारा सब प्रकारका हित—कल्याण करती है। गोधनके बराबर जगत्मे अन्य कोई धन नहीं है, क्योकि गोवंश सदा लक्ष्मीका मूल है, इसलिये गोमाता प्राणिमात्रके लिये माताके समान सुख देनेवाली है। किंतु आज अपनी ही इस गोमाताकी कितनी दुर्दशा की जा रही है, उसपर कितने अत्याचार किये जा रहे है, यह भी किसीसे छिपा नहीं है।

गोवशके ह्रासकी क्या स्थिति होती जा रही है? इसे कौन समझेगा? कलकत्ता, मद्रास, बबई, केरल तथा देवनारके बूचडखानोंमे गर्म पानीके फौव्वारोसे गायको नहलाया जाता है, फिर उसे बिजलीके चाबुकसे पीटकर चारा खाते समय मशीनसे उसका चमड़ा उतारा जाता है, फिर स्वचालित मशीनोंसे उसका मास काटकर डिब्बोमे भरकर बाहर भेजा जाता है, इसके बदलेमे दुग्ध-चूर्ण और पेट्रोलियम पदार्थ आयात किया जाता है। पजाब, हरियाणा और उत्तरप्रदेशसे स्वस्थ गाय-बैलो और बछडोको लाकर उन्हे चारा खिलाकर मोटा किया जाता है। गाभिन गायको बच्चा देनेके दो-चार दिन पूर्व गर्भपातके लिये साबुनका पानी पिलाकर उसका पेट मशीनसे दबाकर अप्राकृतिक रूपसे सुकोमल नवजात शिशुको पेटसे बाहर निकाला जाता है। बछडेकी खाल उतारी जाती है। इस नरम चमडेको 'क्रूम' कहते है। नवजात बछडेके मासको 'बीफ' कहते हैं। बीफ और क्रूम निर्यात किया जाता है। अज्ञानवश ही सही इनसे बनी वस्तुओका प्रयोग करनेवाले भी गोहत्याके भागीदार हैं। गोवशकी दुर्दशासे व्यथित होकर राष्ट्रकविके मुँहसे बरबस ये पंक्तियाँ फूट पडी थीं—

दाँतों तले तृण दाब कर हैं दीन गाये कह रही,
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुमको यही?
हमने तुम्हें माँ की तरह, है दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया॥
क्या वश हमारा है भला, हम दीन हे, बल हीन हैं,
मारो कि पालो, कुछ करो तुम हम सदैव आधीन हैं।
प्रभु के यहाँ से भी कदाचित्, आज हम असहाय हैं,
इससे अधिक अब क्या कहे, हा! हम तुम्हारी गाय हैं॥
जारी रहा क्रम यदि यहाँ, यो ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।

जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायगी,
यह स्वर्ण-भारत-भूमि बस, मरघट-मही बन जायगी॥
(श्रीमैथिलीशरण गुप्त)

अमेरिकी कृषि-विशेपज्ञ 'इकलसन' ने अपनी पुस्तक 'दुधारु पशु और उत्पादन' मे लिखा है—तीन करोड रुपयेसे अधिककी खाद प्रतिदिन गायोके गोबर और मूत्रसे ही प्राप्त हो सकती है। गायके मूत्र और गोबरमे भूमिको उपजाऊ बनानेवाले पदार्थ मौजूद है और अन्न उत्पादन अधिक बढ सकता है। भारतमें जहाँ रेलगाडियोपर ४ हजार करोड़ रुपया और सडक-परिवहनपर एक हजार करोड रुपया विनियोजित है, वहीं बैलगाडियोपर ३ हजार करोड़ रुपयेकी पूँजी लगी है। भारत सरकारके भू० पू० पशु-विशेषज्ञ 'सर अलबर्ट हावर्ट' ने 'एग्रीकल्चरल टेस्टामेन्ट' नामक अपने ग्रन्थमे कहा है कि—'रासायनिक खाद कृषि-योग्य भूमिको जीवाश (ह्यूमस) प्रदान नही करती। गोवरकी कम्पोस्ट खाद और हरी खाद ही प्राकृतिक खाद है, जिसमे असख्य जैविक और ह्यूमस (बीजाणु और जीवाणु) पाये जाते हैं।' सर अलबर्टने आगे लिखा है—'देशके करीब १७ करोड गाय-बैल, भैंस-भैसा वस्तुत: विना ईंधन और अन्य सहायताके ५ करोड हार्सपावर पैदा कर सकते है। इतनी शक्ति पैदा करनेके लिये ५० लाख कीमती ट्रैक्टरो और मूल्यवान् ईंधनकी भारी मात्रामे आवश्यकता पडेगी, फिर भी ये ट्रैक्टर कृषि-भूमिकी उर्वरा-शक्ति बढानेवाले गोवर और गोमूत्र नहीं दे सकते। उल्टे उनके तेल और धुएँसे प्रदूषण फैलनेके साथ भूमिकी उर्वरा-शक्तिको क्षति पहुँचती है। भारतकी कृषि-भूमि छोटे-छोटे टुकडोमे वॅटी हुई है। अत: ऐसे खेतोके लिये बैल ही उपयोगी होगे।

विश्वविख्यात वैज्ञानिक डॉ० अलबर्ट आइनस्टाइनने स्व० डॉ० अमरनाथ झाके द्वारा भारतको संदेश भेजा था—'भारत ट्रैक्टर, उर्वरक, कीटाणुनाशक (पेस्टीसाइड्ल) और यन्त्रीकृत खेतीकी पद्धति न अपनाये, क्योकि इनसे चार सौ वर्पकी खेतीमे ही अमेरिकाके जमीनकी उर्वराशक्ति काफी हदतक समाप्त हो चली है, जबकि भारतका उपजाऊपन कायम है, जहाँ कि दस हजार सालसे खेती हो रही है।' इतना होनेपर भी वडे दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रदेशोमे जमीन जोतनेके लिये बैल नहीं मिल रहे है। ग्राम्य-जीवन उखड़ रहा है। थोड़े ही दिनोमे सारे देशमे बैलोकी कमी होगी, हलमे मनुष्यको जुतना पड़ेगा। आज इडोनेशियामे यही हो रहा है और भारतके कुछ हिस्सेमे ऐसा देखा भी जा रहा है।

जिन प्रदेशोमे गोवध-निषेध कानून बने हैं, वहाँ दूध देने तथा कृषि और भारवाहनमे अनुपयुक्त पशुओंको डॉक्टरके प्रमाणपत्रपर बूचड़खानोमें कटनेकी छूट दी गयी है, जिसके कारण उपयोगी और स्वस्थ गोवश भी कटने चले जाते हैं। कृत्रिम गर्भाधानसे ८० प्रतिशत बछड़े होते हैं जो भारतकी गर्म जलवायु सहन नहीं कर सकते तथा विदेशी नस्लके बछड़ोंके कधा (ठिल्ला) नहीं होता, जिससे कृषि-कार्यके लिये अनुपयोगी होते है। ऐसे बछडोको डॉक्टर बेकार घोषित कर कटनेके लिये प्रमाणपत्र जारी कर देते हैं। फलतः कृत्रिम गर्भाधानसे गोहत्याको प्रोत्साहन मिलता है। कुछ समयसे सरकारी तन्त्रद्वारा यह धारणा भी पैदा की गयी है कि 'देशी गाये दूध कम देती है, इसलिये 'जर्सी', 'फ्रीजियन', 'होल्सटिंग्स' प्रजातिकी विदेशी गायोके पालनको सरकारी अनुदानपर प्रोत्साहित किया जाता है और इसमे विदेशी सॉडोसे प्रजनन कराना अनिवार्य है।'

ध्यान देनेकी बात है कि विदेशी गो-नस्लें वास्तवमे गायोकी नस्ल नहीं है बल्कि जगली पशु हैं और संकरित की गयी हैं, इनके दूधमे स्वदेशी प्रजातिकी गायोके दूधके समान गुणवत्ता और पौष्टिकता नहीं है। इनकी शक्ल-सूरत, आकार-प्रकार, रंग-रूप भारतीय गायोके समान नहीं होता। बोली भयानक लगती है, विषाणुसे ग्रस्त रहती हैं, इन्हें नित्य साबुनसे नहलाना आवश्यक है। जल्दी बीमार होती हैं। इनके लिये पौष्टिक आहार तथा हरे चारेका प्रबन्ध कर पाना सर्वसाधारण किसानके बसका नहीं है। प्रतिकूल जलवायुके कारण दूध घटेगा ही, भारतीय गोवंशके पतनका कारण बनेगा। भारतीय गोवशकी नस्ल सुधारके लिये अच्छी नस्लके भारतीय सॉड़ ही उपयुक्त हैं। पहले देशी सॉडोसे प्रजननकी नीति अपनायी गयी थी, जिसके सतोषजनक परिणाम सामने आये थे और भारतीय गोवशकी नस्लका उत्साहवर्धक सुधार भी दिखायी दिया था। कम दूध देनेवाली देशी गायोका प्रजनन कराया गया जिसमे मुख्य थी—हरियाणा, साहीवाल, गिरि, काकरेजी, थारपारकर, गो, हल्दीकर, मालवी, राठी,

देवनी, गवलाऊ और नागौरी आदि। विदेशी साँड़ोसे या कृत्रिम गर्भाधानसे प्रजनित गायोंके दूधमे चिकनाई बहुत कम होती है। पर इनमे विदेशी प्रजननकी अपेक्षा अधिक चिकनाई पायी गयी। 'डॉ० परसाई' ने उत्तम नस्लके मालवी, राठी सॉड़ोद्वारा देशी गायोंपर प्रजनन-प्रयोगकर अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। डॉ० परसाईके प्रयोगसे अन्तिम रूपसे यह सिद्ध हो गया है कि देशी सॉडोसे प्रजनित स्वदेशी गाये हमारे देशके लिये अधिक उपयुक्त हैं।

यह धारणा सही नहीं है कि स्वदेशी प्रजातिकी गाये दूध कम देती हैं। कुछ वर्ष-पूर्व स्वदेशी प्रजातिकी भारतीय नस्लकी करीब ५०० बछिया इजराइल भेजी गयी थीं। वहाँ उनका अच्छा विकास किया गया। ये सभी गाये विदेशी गायोकी अपेक्षा अधिक दूध देती हैं। भारतीय नस्लकी एक गायने दुग्ध-उत्पादनमे विश्वका रिकार्ड तोड दिया है, वह प्रतिदिन ६० लीटर दूध देती है, एक औरने तो कमाल ही कर दिया है जो २४ घटेमे चार बार दुही जाती है और चारो बारमें १२० लीटर दूधका उत्पादन होता है। यह गाय 'गिनीज वुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड' में दर्ज की गयी है।

श्वेत क्रान्ति सफेद झूठ—'विश्व-बैक-संयुक्त पुनर्मूल्याङ्कन मिशन'ने भारतमे ऑपरेशन फ्लड (श्वेत क्रान्ति) द्वितीयके अन्तर्गत जो रिपोर्ट प्रस्तुत की है सही मायनेमे नेशनल डेरी डेवलपमेन्ट बोर्ड (एन० डी०डी०बी०) तथा इंडियन डेरी कारपोरेशन (आई० डी०सी०) ने जान-बूझकर उसे भारतीय जनतासे छिपाया है। संक्षेपमें विश्व-बैंकने भारतको किसी प्रकारकी दुग्ध-सहायता (मिल्क एड) यूरोपसे दिये जानेसे इनकार कर दिया था तथा यह भी कहा था कि भारतमें कहीं भी दूधकी डेरी लाभमे नहीं चल रही है। अत: श्वेत क्रान्तिके सम्बन्धमे अधिकारियोके सभी दावे दिखावटी और सफेद झूठ साबित हुए। भारत सरकारका भारतीय दूध डेरीका आर्थिक विकास दिवास्वप्न साबित हुआ है। सहकारी दुग्ध-डेरियोमें राजनैतिक हस्तक्षेपसे व्याप्त भ्रष्टाचार और कुप्रवन्धके कारण करोड़ोका घाटा हुआ है। 'फ्रीडमफार हंगरकैम्पेन' योजना सरकारी दुग्ध-संघकी बडी महत्त्वाकाक्षी योजना बतायी गयी थी। पर सरकारी तन्त्रके भ्रष्टाचारके कारण यह असफल रही। १९७६ मे ब्रिटिश सरकारकी सहायतासे 'फ्रीडमफार हगरकैम्पेन' योजना शुरू की गयी थी। इस योजनाके तहत गायोके दूधके उत्पादन बढानेके उद्देश्यसे विदेशी जर्सी सॉड़ोके हिमीकृत वीर्यद्वारा स्वदेशी गायोका सकरण करनेकी एक सघन पशु-विकास-योजना शुरू की गयी थी। परियोजनाके अन्तर्गत जव कृत्रिम गर्भाधानका वर्ष-वार लक्ष्य और उपलब्धियोकी समीक्षा की गयी तो उपलब्धियाँ नगण्य रहीं। नियन्त्रक महालेखा-परीक्षककी रिपोर्ट प्रकाशित होनेपर उपलब्धियोके परिणाम उलट गये। उदाहरणके लिये एक रिपोर्टके अनुसार १९७६-७७ में यदि लक्ष्य था १७,७५० तो उसके विपरीत १७७ गायोका ही हिमीकृत कृत्रिम गर्भाधान सफल हो पाया। शेष गाये जिन्होने गर्भाधान 'कन्सीव' नहीं किया वे हमेशाके लिये बॉझ हो गयीं। भारतमे डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन आदि विदेशी साँडोका मूल्य आयात-खर्चसहित १६ हजार रुपये प्रति सॉड़ बैठता है। भारतीय जलवायु अनुकूल न होनेके कारण उनके रख-रखावपर करोडो रुपये खर्च करनेके बावजूद हजारो सॉड मर गये। जर्सी, फ्रीजियन गायो और बछियोका मूल्य भी ५ से ११ हजार रुपयेतक है। यहॉकी गर्म जलवायु उनके लिये विपरीत होनेके कारण विदेशी नस्लकी गाये पनप नहीं पातीं। पशु-चिकित्सकोकी एक अध्ययन-रिपोर्टके अनुसार इनके पालकोके पूरे परिवार कई असाध्य रोगोसे पीडित पाये गये। चिकित्सकोके अनुसार जर्सी या फ्रीजियन गायोके शरीरसे, उनके खुरोसे और गोबर-मूत्रमे वैक्टीरिया (विषैले कीटाणु) विकसित होकर फैलते हैं, जिससे आस-पासका पर्यावरण विषाक्त हो जाता है। उसमे साँस लेनेवालोके फेफडोमे वे विषाणु प्रवेश कर नयी-नयी वीमारियॉ पदा करते हैं, जिसमे मस्तिष्क-ज्वर सबसे प्रमुख है। इस आयातित नयी आधुनिक बीमारीसे हजारो लोगोकी मौत हो चुकी है। दूधका उत्पादन भी १६ करोड लीटर दैनिक लक्ष्यकी अपेक्षा घटकर ८-१० करोड लीटर रह गया है। भारतमे श्वेत क्रान्ति लानेके बहाने-गोहत्याको वढावा देनेका यह विदेशी कुचक्र है, जिसके जालमे भारत वुरी तरह फॅस गया है।

गोधन और ट्रैक्टर—गॉधीजीने अपने पत्रोंमे अपने भावोको व्यक्त करते हुए कहा है—'देशमे लर्चा और भारी खर्चीली तथा विदेशी नकलपर दीर्घगामी योजनाओंको लागू

करके दोहरी अर्थव्यवस्था कायम न की जाय, यह नितान्त *अलोकतान्त्रिक होगा।*' पर देशका दुर्भाग्य है कि विदेशी चकाचौंधसे प्रभावित, विदेशी विचार और मानसिकताके माहौलमे पालित-पोपित तत्कालीन नीतिविशारदोको यह बात जँची नहीं, जिसका परिणाम यह हुआ कि विदेशी निगमो और पूँजीपतियोकी घुसपैठ देशमे बढ़ने लगी। राष्ट्रिय पूँजी कुछ हाथोमे सिमटकर रह गयी। विदेशी कम्पनियोसे अनुबन्ध और विदेशी पूँजी-निवेशसे विदेशी तकनीकका प्रवाह भारतकी पावन धरतीपर बढने लगा। इस प्रकार विदेशी प्राविधिकी (बासी जूठन) आयातकी खुली छूट देकर बहुराष्ट्रिय निगमोके लिये शोषणके द्वार खोल दिये गये। 'ईस्ट इडिया कम्पनी'ने अपनी कूटनीतिके व्यावसायिक बुद्धिसे देशको २०० वर्षतक गुलाम बनाये रखा और अव सैकड़ो ऐसी वहुराष्ट्रिय कम्पनियाँ भारतको आर्थिक गुलामीके जालमे फॅसानेका कुचक्र कर रही हैं। देश गरीबी, अभाव, कंगाली तथा बेकारीके कगारपर खडा हो गया है।

जव दक्षिण-पूर्व एशियाके विकासशील देशोमे आधुनिक टेक्नालॉजी और नयी वैज्ञानिक कृषिका पश्चिमी देशोंकी नकलपर कृपि-विकासका 'हल्लाबोल' प्रचार शुरू हुआ तो १९६१-६२ मे भारतमे भी इसकी ऑधी आयी। नयी तकनीकके नामपर सबसे पहले ऐसे नये बीजोंकी प्रजातियोका ढोल पीटा गया, जिसके लिये खेतीका मशीनीकरण, सिंचाईके आधुनिक प्रणालीके साथ आयातित मशीनें, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशकोका प्रयोग आवश्यक बताया गया। कृपि-विकासकी इस नयी प्रक्रियाने बहुराष्ट्रिय कम्पनियो और विश्ववैंकके लिये भारी लाभ कमाने तथा देशके किसानोका आर्थिक शोषण करनेका मार्ग खुल गया। क्या विदेशी कर्जकी विपुल धनराशि पानीकी तरह वहाकर 'हाहाहूती' मशीने तथा कृपि-उपकरण किसानके खेत-खलिहानपर खड़ाकर, जल-प्रवन्धकी विदेशी पद्धतिपर अव्यावहारिक तथा गलत पद्धति अपनाकर प्रतिवर्ष ९० लाख टन उर्वरकोको तथा ६० हजार टन कीटनाशकोको प्रतिवर्ष झोककर, स्वदेशी और परम्परागत वीजोकी गुणवत्ता समासकर भारतीय मिट्टी, जलवायु एव परिस्थितिके विपरीत विदेशी सकरित वीजोका प्रयोगकर आज ३०-३२ साल बाद उत्पादनमे आशातीत सफलता मिली? क्या हर पञ्चवर्षीय योजनामें ५ प्रतिशत कृषि-विकासका लक्ष्य प्राप्त किया जा सका? प्रति हेक्टेयर १ ७ टनसे आगे उपज नहीं बढ़ पायी—क्यो? यदि देशमे २ टन प्रति हेक्टेयर उपज कर पाते तो करीव ३० करोड़ टन खाद्यान्न पैदा हो सकता था। १९६७ से ८० के बीच ३ करोड़ ५४ लाख टन उर्वरकोंका आयात हुआ, अर्थात् इस अवधिमे खादका प्रयोग सात गुना अधिक हुआ। पहले कीटनाशक दवाओका प्रयोग नहींके बराबर था, पर जबसे अमेरिका आदि पश्चिमी देशोंमे विषैली कीटनाशक दवाओका प्रयोग प्रतिबन्धित किया गया, तभीसे कीटनाशक दवा-निर्माता कम्पनियोने भारी कमीशन देकर भारतमे फैलाना शुरू किया। कमीशनकी लालचमें फसल-सुरक्षा (?) के नामपर भारत सरकारने कीटनाशकोका आयात भारी मात्रामे किया। इन विषैली दवाओका प्रयोग ५०० टनसे प्रारम्भ हुआ और आज इसकी वार्षिक खपत लगभग ६० हजार टनतक पहुँच गयी है।

१९६०-६१ में 'हरित-क्रान्ति' अभियानके प्रारम्भके समय देशमें ६३ हजार ट्रैक्टर थे जो १९७३ मे बढ़कर ३ लाख ६६ हजार, १९८७ तक ५५ लाखसे ऊपर और अब ८५ लाखसे अधिक हो गये। इनका मूल्य १७ खरब रुपया हुआ अर्थात् १७ खरबका विश्व-बैंकका कर्जा हमपर लादा गया। यह अपार धनराशि विदेशी कम्पनियोकी तिजोरीमे बद हो गयी। ४२ लाख ट्रैक्टर १० सालके बाद कवाड़ा हो गये। डीजलसे चलनेवाले इंजन १९६३ में ५ लाख थे जो अब बढ़कर ८५ लाख हो गये, जिनका मूल्य करीब ८५ अरब ५० करोड़ रुपया हुआ। इनमेंसे आधेसे अधिक बेकार हो गये। विजलीसे चलनेवाले पपिंग-सेट ६६ मे ४ लाख थे जो ७६ मे २८ लाख और अब ६८ लाखसे अधिक हैं। इनपर भी किसानोका करीब ७० अरब रुपया खर्च हुआ। कृषि-अनुसंधान और कृषि-शिक्षापर ५७० करोड़से अधिक खर्च हो गया। ये ऑकड़े बोलते हैं कि कृपिकी नयी तकनीकके नामपर अरबों-खरबों रुपया स्वाहा हो गया, पर इसका क्या नतीजा निकला? इस विपुल पूँजीनिवेशसे कृषि-उपजपर ठीक-ठीक क्या प्रभाव पडा? 'हरित-क्रान्ति'-अभियानके दौरान १९६० से ८० के बीच २० वर्षोके अन्तरालमे करीब

३५०० करोड़ रुपये मूल्यका विदेशी गेहूँ आयात करना पडा और खरबोंका खनिज तेल भी। नयी तकनीकके प्रभावसे लाखों एकड़ कृषि-भूमि ऊसर बन गयी। यह अत्यन्त खेदजनक गम्भीर प्रश्न है, जिसपर राजनेताओ, अर्थशास्त्रियों, कृषि-विशेषज्ञो और देशभक्त वैज्ञानिकोंको राष्ट्र-हितमे ठंडे दिमागसे विचार करना चाहिये। नयी तकनीक आनेके बाद जिस अनुपातमें पूँजी-निवेश हुआ, उसकी तुलनामे निश्चित ही पैदावार नहीं बढ़ सकी।

उपर्युक्त सरकारी आँकड़ोंसे स्पष्ट है कि विदेशी विज्ञान और कृषि-तकनीकका सीधा मतलब है अधिक खर्चपर उत्पादकताके क्षेत्रमे अधिक हानि और नाम-मात्रके लाभपर खेतीका धधा करना। इतनी खर्चीली विदेशी तकनीकके आयातमें आशाके विपरीत परिणाम क्यो भोगने पडे? क्या विदेशी धुनके पीछे हमारे नीति-नियामकोंका लगाव पागलपनकी निशानी नहीं है? क्या हमारे पास विदेशी तकनीकके अलावा कोई स्वदेशी विकल्प नहीं है? अथवा कड़वा घूँट पीकर अंधे होकर इसीका अनुकरण करते जाना है?

गोधनकी समस्या—भारतवर्ष ५ लाख ७६ हजार गाँवोंमे बसा है। इसीलिये भारत माताको 'ग्रामवासिनी' कहा गया है। भारत कृषि-प्रधान देश है और हमारी 'कृषि-संस्कृति' ही मूल सस्कृति है। १९२८ मे जब सरदार पटेल 'बारदोली' सत्याग्रह-आन्दोलनमें जेलमे बद थे—एक अंग्रेज पत्रकार उनसे मिलने गया। पत्रकारने व्यग्यात्मक लहजेमे उनसे पूछा—'ह्वाट इज योर कल्चर' (आपकी संस्कृति क्या है?) पटेलजीने तपाकसे सटीक उत्तर दिया—'माई कल्चर इज एग्रीकल्चर' (मेरी संस्कृति कृषि-संस्कृति है) अंग्रेज पत्रकार ऐसा निर्भीक उत्तर सुनकर दग रह गया।

कृषि-विकासका आधार गोवशका विकास है। गाय हमारी माता है। ऐसी ममत्व और मातृत्व स्नेहकी भावना चिरकालसे है। गौ माताके अन्तर्गत सभी देवताओका वास है। यह आदिशक्ति 'ॐ' और 'श्री' का प्रतीक है। गोहत्या करना भारतसे देवत्व-भावको समाप्त करना है। जब-जब भारतमें गोवंशका ह्रास हुआ—देवत्व-ममत्व-स्नेह-भावका विनाश हुआ है, तब-तब पुनः देवत्व-भाव पैदा करनेके लिये, गोवशकी रक्षाके लिये कोई-न-कोई देवीशक्ति भारतमे अवतरित हुई है।

ऐसे ही समय जब गोवंशका तेजीसे ह्रास हुआ, सोना उगलनेवाली धरती रेत-रेह-क्षार उगलने लगी, चारो ओर हाहाकार मच गया, तभी नररत्न हलधर-बलराम और गोपाल-श्रीकृष्ण युगपुरुषोने जन्म लेकर भारत-वसुन्धराका उद्धार किया। दोनो हरित-क्रान्ति और श्वेत-क्रान्तिके महानायक बन गये। हलधर बलरामने, जो महान् कृषि-वैज्ञानिक थे—सारी ऊसर और बाँझ हो गयी धरतीको कृषि-योग्य भूमि बनाकर हरा-भरा कर दिया, खाण्डवप्रस्थ (पथरीली भूमि) को इन्द्रप्रस्थमे बदल दिया। गोपाल श्रीकृष्णने गोवश-विकासका आन्दोलन चलाया। ग्वाल-बालों-गोपालकोको संगठित किया और देशमे श्वेत-क्रान्तिकी लहर पैदा कर दी। इन्हीं दो महापुरुषोकी घोर तपस्या—पुरुषार्थ और पौरुष तथा पुण्य-प्रतापसे भारत पुनः धन-धान्य-सम्पन्न और वैभव-पूर्ण बन गया। उस समय 'गाय' और 'स्वर्णमुद्रा' वस्तुओके मूल्याङ्कनका मानक माना गया। उस समय सम्पत्ति-मूल्याङ्कनकी कुछ पदवियाँ निर्धारित की गयीं। जैसे १० हजार गाये अथवा १० हजार स्वर्णमुद्रा-धारकको 'गोप' कहा गया तथा एक लाख गाये अथवा एक लाख स्वर्णमुद्रा धारकको 'नन्द'की पदवीसे विभूषित किया गया।

पर अत्यन्त खेदका विषय है कि आजादीके ४७ वसन्त बीतनेके बाद भी गोवशकी हत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सका। गुलामीकालमे १४ सरकारी बूचडखाने थे, जो अब बढकर २१ हो गये हैं। कुछ वर्ष-पूर्व केन्द्र-सरकारने निजी क्षेत्रमे नये बूचडखानोके लाइसेस जारी किये थे जो अब बढकर ३,००० हो गये हैं। सभी सरकारी बूचडखाने स्वचालित विद्युत्-संयन्त्रोसे सचालित हैं, जिनमे ३० हजार गोवश रोज काटा जाता है। इस प्रकार १२० लाख गोवश प्रतिवर्ष काटकर गोमांस, बीफ तथा क्रूम विदेशोको निर्यात कर ३ अरब डालर विदेशी मुद्रा अर्जित की जाती हैं।

निर्यात-सवर्धन और डालर-प्राप्तिकी ललकमें बदर-कछुआ और मेढक-जैसे जीवत प्राणियोंके निर्यातके साथ भारी मात्रामे गोमांसका निर्यात कर भारत सरकार खाद्यान्न, दूधका पाउडर, रासायनिक खाद, मशीनके पुर्जे, रेपसीड

आयल और पेट्रोलियम पदार्थ मँगाती रही है। गोमांस-निर्यातमे वृद्धिके लिये अत्याधुनिक तकनीकपर आटोमेटिक प्लाट लगानेकी विदेशी कम्पनियोको अनुमति मिल गयी है। उसके तहत हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) के 'अल कबीर' में तथा हरियाणाके गुड़गाँव जिलेमे आधुनिक संयन्त्रोसे बूचडखाने स्थापित किये जायँगे। इन कारखानोकी चार हजार टन गोमास-उत्पादनकी दैनिक क्षमता है। भारत सरकारने गोमास-उत्पादनको भी भेड़-बकरी, सुअर, मछली, मुर्गी आदिके साथ कृषि-उत्पादनमे शामिल कर लिया है। ये सभी पदार्थ निर्यात-सूचीमे शामिल किये गये हैं।

१९५५-५६ मे जब भारत सरकारने भारी उद्योगोके नामपर भारी भरकम विदेशी कर्ज सशर्त स्वीकार किया तभी व्यापारिक अनुबन्ध पी०एल० ४८० के तहत २० वर्षीय व्यापारिक समझौता हुआ, जिसके अन्तर्गत कर्ज-प्राप्तिकी कठिन शर्तोके साथ गोमास, बीफ तथा क्रूम आदि निर्यातकर खाद्यान्न, रेपसीड आयल, खनिज तेल, सूखा दूध, मशीने, कल-पुर्जे आदि आयात किया जाता रहा। १९८० मे इस समझौतेको १० सालके लिये बढ़ाया गया फिर १९९० मे २,००० ई० तकके लिये विदेशी कर्ज प्राप्त करनेकी ललकमे अनुबन्ध किया गया। यदि यही गति जारी रही तो शायद २१ वीं सदीका प्रथम सूर्य जब उदय होगा तो भारत गोवंशके दर्शन करनेसे भी वचित रह जायगा।

१९४७ मे देशमे ७० करोड गोवंश था। इनमेसे ३६ करोड दुधार गाये और सात करोड जोड़ी बैल थे। पर १९८१ की गणना (पशु-गणना) के आधारपर २४ करोड गोवंश रह गया, जिसमेसे दूध देनेवाली गाये घटकर ३६ करोड़के बजाय ६ करोड रह गयीं और बैलोकी जोड़ी सात करोड़से घटकर एक करोड़ रह गयी। १९९१ की गणना-रिपोर्टमें विदेशी गायोकी सख्या बढ़ी, पर भारतीय परम्परागत स्वदेशी प्रजातिका गोवंश काफी घट गया। बैलोकी सख्या करोडोके स्थानपर लाखोमे और दुधार गायोकी संख्या एक करोड़ रह गयी। गोवश-विनाशकी यही गति जारी रही तो सचमुच २००० ई०तक यह संख्या शून्यतक पहुँच जायगी।

किसानोंकी दशा—भारतमें आज भी ८३ ८६ प्रतिशत किसानोकी सख्या है। देशके ८३ करोड़ एकड क्षेत्रफलमेसे केवल ३५ करोड एकड़ कृषि-भूमि बची है और इसीपर ८७ करोड़ जनताका भरण-पोषण होना है। देशमे १२५० लाख किसान-परिवार और ३५० लाख भूमिहीन खेतिहर श्रमिक हैं, जिनके पास एक एकडसे कम भूमि है या बिलकुल भूमिहीन हैं। ग्रामीण जनसंख्या करीब ७० करोड़ है, जिसमेंसे ४८.४ प्रतिशत (३६ करोड़) गरीबीकी रेखासे नीचे जी रहे हैं, जिन्हे दो जून भरपेट भोजन नहीं मिलता। २१ करोड़ भूमिके खातेदार हैं। १७ करोड़ एकड़ भूमि आज भी ऊसर-परती-बजर-बीहड़-रेतीली और दलदली है। उक्त सारी भूमि कृषि-योग्य बनाकर भूमिहीनोको आवटित की जाय तो हर एकको पॉच एकड़ भूमि हिस्सेमें आयेगी। फिर कोई भूमिहीन नहीं रहेगा और बेरोजगारीके कलंकको मिटाया जा सकेगा। इनके पास 'हीरा-मोती' बैलोंकी जोड़ी भी होनी चाहिये।

दस एकड़से अधिक कृषि-भूमि-धारकोंकी कुल चार प्रतिशत यानी ८० लाखके करीब है। बैलोंके अभावमे विकल्पके रूपमे ८५ लाख ट्रैक्टर जरूर खड़े किये गये, किंतु अबतक ४२ लाख ट्रैक्टर पुराने हो गये है, जो बेकार हैं। इन्हे भारतभूमिपर खड़ा करनेके लिये १७ खरब रुपयेका पूँजी-निवेश विदेशी कर्जसे किया गया। विदेशी आर्थिक सहायताका ऐसा मायाजाल है कि इस षड्यन्त्रमे फँसकर अपार धनराशि विदेशी कम्पनियोकी तिजोरियोंमे पुनः बंद होकर रह गयी। यदि आजादी मिलनेके साथ ही विदेशी जालमें न फँसकर स्वदेशी योजना बनायी गयी होती और कुल ५२ करोड एकड़ (३५+१७) भूमिके लिये २० करोड़ जोडी बैलोकी जरूरत पूरी करनेके लिये १७ खरब रुपया गोवंशके विकासपर खर्च किया गया होता तो आज हर किसानके पास एक जोड़ी बैल खड़े हो जाते। यदि प्रारम्भमे ही गो-हत्यापर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर गोवंशका समुचित विकास किया जाता तो भरपूर दुग्ध-उत्पादनके साथ देशका आर्थिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान भी सहज ही सम्भव हो जाता। देर ही सही, यदि अभी भी सद्‌बुद्धि आ जाय तो इस देशमें दूध-दहीकी नदियॉ बह सकती है। निराश होनेकी जरूरत नही, इस ओर दृढ़ सकल्प कर अग्रसर हो सतत प्रयत्नशील रहनेकी आवश्यकता है।

———

गोवंशकी रक्षा कैसे हो?

(पञ्चखड पीठाधीश्वर आचार्य श्रीधर्मेन्द्रजी महाराज)

हमारा देश संसारका सबसे बड़ा लोकतन्त्र है, किंतु जनताकी इच्छाकी अपरिमित शक्तिका अनेक बार प्रत्यक्ष साक्षात्कार करनेपर भी सत्तारूढ़ शासकोद्वारा जनताकी इच्छाकी जितनी अवहेलना हमारे इस अद्भुत लोकतन्त्रमें होती रही है, वह भी अपनेमे एक अद्वितीय उदाहरण है। भारत ही विश्वका वह एकमात्र महादेश है जो भावनाओंपर जीता है और भारत ही वह एकमात्र अभागा लोकतन्त्र है, जिसमें जन-भावनाओंका जनताके द्वारा चुने गये शासकोंने कभी भी आदर नहीं किया। यह विसंगति न होती तो कोई कारण न था कि स्वाधीनता-प्राप्तिके पूरे ४७ वर्ष पश्चात् आज भी देशके भावुक गोभक्त-समुदायको गोवंशके निर्मम संहारपर विवशतापूर्ण अश्रुपात करना पड़ता या गोहत्याके विरुद्ध आज भी सत्याग्रहों, उपवासों और आन्दोलनोंका आश्रय लेना पड़ता। गोपाल और गोविन्दके रूपमे भगवान्‌की पूजा करनेवाले और 'गोमाताकी जय' बोलनेवाले ८० प्रतिशत गोभक्त मत-दाताओके मतोंसे चुनी गयी जो सरकार सम्पूर्ण तर्को और सामाजिक न्यायकी अपेक्षाओकी उपेक्षा करके साम्प्रदायिकताके आगे आत्मसमर्पण करती देखी जा सकती है, वह निरपराध, निरीह गोवशके बहुमूल्य गोधनके निर्मम संहारको रोकनेके लिये बहुसंख्यक समाजके किसी भी आन्दोलन, अनुनय-विनय या अनुरोधपर किंचित् भी ध्यान देनेको तत्पर नहीं है, इससे बड़ी लज्जाजनक विडम्बना क्या हो सकती है?

इस देशकी सरकार मगरमच्छोकी लुप्त होती प्रजातियोकी रक्षाके लिये चिन्तित है, इस देशके तथाकथित बुद्धिजीवी सिंहों, बाघो और चीतोके वंश-लोपकी सम्भावनापर व्याकुल हो उठते हैं। हिसक जीव-जन्तुओकी रक्षाके लिये इस देशमें अभयारण्योकी व्यवस्था की जाती है, कितु भारतकी मानव-हितकारिणी अद्वितीय उत्कृष्ट गो-प्रजातियोंका सर्वथा उच्छेद होने जा रहा है, इसमें न तो इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिको रोकनेके लिये सरकार उत्सुक है न तथाकथित बुद्धिजीवियोंको इस ओर ध्यान देनेका अवकाश है।

राजस्थानके मरुप्रदेशमे एक पक्षी होता है—'गोडावण'। कुछ वर्षों-पूर्व उसका शिकार करनेको उद्यत अरब शाहजादोको रोकनेके लिये कुछ पक्षीप्रेमी दयालुओने पत्र-पत्रिकाओमें आन्दोलन चलाया और सौभाग्यसे अत्यल्प संख्यामें पाया जानेवाला वह पक्षी नष्ट—निर्मूल होनेसे बच गया। वैसे तो सभी प्राणियोंकी रक्षा होनी उचित है, सो 'गोडावण' की प्राण-रक्षासे सभीका प्रसन्न होना स्वाभाविक है, कितु शोकपूर्ण स्थिति तो यह है कि जिन दूरदर्शियोको वालुकाके अनन्त प्रसारमे छिपा हुआ 'गोडावण' भी दिखायी दे गया, उन्हे उसी राजस्थानका प्रत्यक्ष नष्ट हो रहा वहुमूल्य 'गोवश' क्यो नहीं दिखायी देता? राजस्थानके बेजोड़ राठी गाय, बैल, थारपारकर, सांचेरी और नागोरी-वंशके गोपशु अब सर्वनाशके कगारपर खड़े हैं। प्राकृतिक अकाल और गोहत्यारोका विस्तृत जाल—ये दोनो मिलकर उन्हे नष्ट—निर्मूल करनेपर तुले हैं, कितु देशके तथाकथित बुद्धिजीवी वर्गमे या शासकोंमे कहीं कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखायी देती।

गोवंशकी दुर्लभ प्रजातियाँ हरियाणवी और गिर कलकत्ता-बंबई और केरलके कसाईखानोमें कट-कटकर नष्ट होती जा रही हैं। इस अद्भुत देशमे सिंहो, वाघो, वनमानुषो और मगरमच्छोतकको वकील मिल जाते हैं, कितु 'गोवंश' की रक्षाके नामपर स्वयको पढ़ा-लिखा और प्रगतिशील कहनेवाला वर्ग नाक-भौं सिकोड़ता है और गोरक्षाके प्रयत्नोको तिरस्कारपूर्ण दृष्टिसे देखता है। जो देश-हितैषी गोभक्त गोवशकी रक्षाके लिये आन्दोलन करते रहे हैं, उन्हे साम्प्रदायिक ओर पोगापंथी कहना तथाकथित प्रबुद्ध-वर्गमे फैशन बन गया हे। सत्तामे बैठे लोग या तो उसी तथाकथित प्रबुद्ध-वर्गसे सम्बद्ध हैं या गोकशी-साम्प्रदायिक वोटोके हाथो विके हुए हैं।

ऐसी अन्धकारपूर्ण स्थितिमे निरपराध निरीह गोवशकी रक्षा कैसे हो? यह प्रश्न आज देशके करोड़ो गोभक्तोंके हृदयोको व्याकुल कर रहा है।

गोहत्यापर पूर्ण प्रतिवन्ध लगवानेके लिये १९४७मे ही यत्र-तत्र आन्दोलन, अनशन, प्रदर्शन और प्रयत्न होते रहे, किंतु १९६६ मे दिल्लीमे जो सत्याग्रह हुआ वह अभूतपूर्व था। उस आन्दोलनका विवरण देना या उसकी विराटताके प्रमाण प्रस्तुत करना अभीष्ट नहीं हे। उस आन्दोलनके व्यापक प्रभावका सबसे बड़ा प्रमाण है कि १९६७ मे पूरे हिन्दी-भाषी प्रदेशोमे सरकारको पराजयका मुख देखना पड़ा और गोहत्या-विरोधी आन्दोलनसे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष जुड़े विपक्षी दलोंकी सविद् सरकारे सत्तारूढ़ हुईं।

गोरक्षाकी भावनासे भारतीय मतदाताका मानस कितना अभिभूत है, इसका यह स्पष्ट प्रमाण था, किंतु फिर भी

गोहत्या बंद नहीं हुई और गोभक्षक साम्प्रदायिकताके आगे समर्पित अवसरवादी राजनीति टस-से-मस नहीं हुई।

आज गोरक्षा-आन्दोलन बिखरा पडा है। १९८०मे संत विनोबाके द्वारा नैतिक प्रभाव डलवाकर गोवंश-रक्षाकी अभीष्ट-सिद्धि करनेका प्रयत्न दुर्भाग्यसे विफल रहा। १९८२से निष्ठावान् गोभक्त बंबईके गोहत्या-गृहके द्वारपर अखण्ड सत्याग्रह कर रहे हैं, दिल्लीमे भी उस सत्याग्रहकी भावनाको जाग्रत् करनेके लिये साप्ताहिक सत्याग्रह चलाया गया। सम्पूर्ण देशमे गोहत्या-निषेध-आन्दोलनकी चेतना फिरसे फैलानेकी आवश्यकता है।

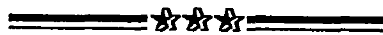
आज यह भी बात उठायी जाती है कि देश अनेक गम्भीरतम समस्याओ और वैदेशिक नीतियोके उलझनोंमें फँसा हुआ है, ऐसी स्थितिमे गोहत्याके प्रश्नको उठाना कहाँतक सगत है, बात कुछ हदतक ठीक भी लगती है, किंतु ये समस्याएँ भी उत्पन्न हमींने की हैं। तो इसके लिये जिम्मेदार भी हम खुद स्वय हैं। देशकी जनताकी भावनाओकी उपेक्षा ही अभिशापके रूपमे शासकोके सामने खड़ी है। इसका हल राष्ट्रिय नीतियोमे परिवर्तनसे ही सम्भव है। तभी देशको पतनके मार्गसे बचाया जा सकता है।

गोवशकी रक्षाका प्रश्न इतना तुच्छ या महत्त्वहीन नहीं है कि उसके समाधानके लिये देशकी शेष समस्याओके हलतक प्रतीक्षा की जाय। भारतकी ग्रामीण अर्थव्यवस्था और संस्कृतिकी रीढ गोवशके अस्तित्वकी रक्षाका रचनात्मक आन्दोलन अप्रासगिक कैसे हो सकता है?

निश्चय ही देशकी बहुसंख्यक जनता आज भी गोवंशको नष्ट होते देखकर दुखी है, ८० प्रतिशत ग्रामीण भारतके गोभक्त नर-नारी, गाय और उसके वंशको बचाना चाहते हैं, किंतु इतने विपुल बहुमतकी भावनाको एक संगठित शक्तिके रूपमें जाग्रत् करके गोहत्याका प्रचण्ड प्रतिरोध करनेके लिये जैसे सुयोग्य, कर्मठ और सुदृढ़ नेतृत्वकी आवश्यकता है, उसका आज नितान्त अभाव है।

केवल कानून बना दिये जानेसे गोवंशके प्रति देश और देशवासियोका कर्तव्य पूरा हो जायगा ऐसा नहीं है। प्रबल राष्ट्रिय संकल्प और शासकीय कानूनद्वारा पहले गोवंशको कटने और मिटनेसे बचाया जाय और उसके पश्चात् व्यापक गोसंवर्धन-गोपालन-योजना बनाकर उसे कार्यान्वित किया जाय तो २१ वीं शताब्दीके आगमनतक देशकी कृषि, ग्रामोद्योग और अर्थव्यवस्थाके क्षेत्रमे चमत्कारपूर्ण क्रान्ति आ जायगी।

पृथ्वी और स्वर्गके देवताओंकी रक्षा गाय और संत करते हैं, किंतु इन दोनोमेंसे किसीपर संकट आये तो कौन रक्षा करेगा? सतोकी रक्षा गाय करेगी और गायोकी रक्षा संत करेंगे। संत-संस्कृतिकी संरक्षिका गोमाता है। गोमाता नष्ट हो गयी तो संत भी नष्ट—निर्मूल हो जायँगे। इसलिये गोमाताके भक्तो एवं संतोको जगाओ और उन्हें गोमाताकी रक्षाके युद्धकी अग्रिम पंक्तिमे लगाओ। आगे संत हो पीछे संत-पूजक सारा भारतीय समाज हो, गाय तभी बचेगी, अन्यथा नहीं।



गोशाला कैसी हो?

समुचित गोपालनके लिये गोशाला सुन्दर, स्वच्छ और विचारपूर्वक बनायी जानी चाहिये, क्योकि अच्छे स्थानमें रहनेपर पशु सुखी और स्वस्थ रहते हैं। विदेशोंमे बड़ी-बड़ी धनराशि लगाकर भव्य गोशालाओका निर्माण किया जाता है। वहाँकी गोशालामे तो कहीं-कहीं बिजली तथा रेडियो तकका भी प्रबन्ध होता है।

गोशाला खूब हवादार बनानी चाहिये, क्योकि गायोको प्राणवायु (ऑक्सीजन) की काफी आवश्यकता होती है। इमारत पक्की बनायी जाय तो अच्छा है। साधारण फूस छाकर विधिवत् बनायी गयी कच्ची और सस्ती गोशालामें भी पशु आरामसे रह सकते हैं।

स्थान—जहाँतक सम्भव हो गायोंके रहनेकी जगह शान्त, खुली हुई और बस्तीसे दूर हो तो अच्छा है। इससे गाडी आदिके आने-जाने, बस्तीके नालोंकी गंदगी तथा संक्रमणका भय न रहेगा। यहाँ वे स्वच्छन्दतापूर्वक आ-जा सकेंगी।

गोशाला समतल तथा ऊँची भूमिपर होनी चाहिये, ताकि वहाँ आस-पासका पानी आकर इकट्ठा न हो पाये। इसके आस-पास गंदे पानी या कूड़ा-करकटसे भरे गड्ढे न होने चाहिये। अन्यथा गंदी वायु और मच्छर-मक्खीके

प्रकोपसे गायोको कष्ट पहुँचेगा तथा उनका दूध भी दूषित हो जायगा। गोशालाको हमेशा साफ रखना चाहिये।

गोशालासे एक-दो मीलके फासलेपर बहती हुई नदीका होना बहुत सुविधाजनक है, क्योकि वहाँ जाकर पशु अच्छी तरह नहा सकेगे और पानी पी सकेगे। बडी गोशालाओके लिये उपयुक्त स्थान वह है जो बस्तीसे दूर, ऊँचे समतलपर तथा नदीके निकट हो।

कच्ची गोशाला—शालाके चारो तरफ बाड़ मिट्टीकी दीवार उठाकर बना ले। काँटोकी बाडसे पशुओके खरोच लगनेका भय रहता है। पशुओकी संख्याके हिसाबसे लंबा-सा बरामदा बना ले तथा ऊपर सीमेटकी पक्की छत ढलवा दे। यदि धनाभाव हो तो वहाँ लकड़ीके गोल खंभोके सहारे फूसका छप्पर बना दिया जाय। इस बरामदेके एक ओर या बीचमे नाँद बनी होनी चाहिये। जहाँतक हो सके, कम-से-कम नाँद तो पक्की ही बनवाये, अन्यथा मिट्टी और भूसेको मिलाकर बनायी गयी कच्ची नाँदसे भी काम चल सकता है। कुम्हारद्वारा बनाये हुए मिट्टीके बडे-बडे कुडे भी नॉदके लिये अच्छे होते हैं।

फर्शपर निरी मिट्टी ही होगी तो वहॉ कीचड शीघ्र हो जाया करेगा। कुछ ईटके टुकडे और रोडे आदि कूटकर फर्शको पक्का तथा समतल बना देना चाहिये। हर दूसरे दिन नयी मिट्टी और पत्ते आदि बिछाकर पहले दिनकी विछी हुई इन चीजोको 'कम्पोस्ट खाद' बनानेके काममे लाये।

दूध-पीते छोटे बछडे-बछियोको रखनेके लिये बॉस लगाकर बाड़ा बना ले। उनके लिये कम ऊँची नाँदोमे सानी तथा पानीका प्रबन्ध करना चाहिये। भूसा, दाना, खली और गोरस रखनेके लिये अलग-अलग कोठरियॉ बना ले। ग्वालेके रहनेके लिये एक कुटिया भी अलग हो।

पक्की गोशाला—इसके बनानेमे काफी खर्च करना होता है, पर इससे बहुत समयके लिये सुविधा हो जाती है। इसे चतुर राजमिस्त्रियोंसे बनवाना चाहिये। इसकी चहारदीवारी छ: या सात फुट ऊँची हो, ताकि बाहरसे आने-जानेवालोकी दृष्टि गोशालाके भीतरी कार्यक्रमपर न पडे। दरवाजा खूब चौडा-सा हो और सुडौल हो। यहॉ कोई भी चीज पैनी और नुकीली नहीं होनी चाहिये। गोशालाके बीचमे खुला हुआ ऑगन होना चाहिये, जहॉ सुबह-शाम गाये बैठ सके। गायोकी सख्याके हिसाबसे बरामदे आठ-नौ फुट चौडे और लंबे बना लिये जायॅ। एक गायको बॉधनेके लिये ५×१० फुट जगह काफी होती है। एक ओर नाँद वनी हो तथा फर्श पीछेकी ओर ढलवाँ हो, जहाँ कि नालीसे गोमूत्र तुरत ही वहकर वाहर निकल जाय।

टीनकी छत धूपसे तप जानेके कारण अच्छी नहीं रहती। कड़ियोकी छतमे साँप आदि जीव-जन्तु घर वना लेते है, अत: वह भी ठीक नहीं। डाट, लिंटर या ऐजबेस्टासकी नालीदार छत सबसे अच्छी रहेगी।

नाँद दो फुट लबी, डेढ फुट चौडी और ढाई फुट ऊँची होनी चाहिये। इसमे ऐसी नाली बनी होनी चाहिये, जो डाट लगाकर बद कर दी जा सके तथा साफ करते समय खोल ली जाय। नॉदको हर रोज धोकर साफ कर देना चाहिये। फर्शपर पत्थर या सीमेट बिछाकर उसे चिकना कर देना ठीक नहीं है, क्योकि फिसलन हो जानेसे गायके गिरनेका डर रहता है। कंकरीट और चूनेकी रोडी मिला ले तथा फर्शपर भली-भाँति कूटकर उसे मजबूत एव समतल बना दिया जाय। वह ऊँचा-नीचा और गड्ढेदार न हो। जगह-जगहपर सीमेटसे पक्की नालियाँ बनवा लेनी चाहिये। जरूरतकी जगहपर ईटे लगवा ले। गोशालामे भूसा भरने, खली-दाना रखने, चारा काटनेकी मशीन लगाने तथा गोरस रखनेके लिये अलग-अलग, सुगमतापूर्वक पहुँचवाले, भण्डार होने चाहिये। साइलेज-कूपका वनवाना वहुत लाभदायी होगा।

एक-दो कमरे जरा अलग हटकर ऐसे वने हो, जहाँ बीमार जानवर रखे जा सके। उसके पास ही दवा सुरक्षित रखनेके लिये एक कोठरी भी होनी चाहिये।

अडगडा (Cattle Crush)—यह लकडीका बना होता है। दवावाले कमरेके पास इसका होना भी जरूरी है। इसके भीतर जानवरको फॉसकर सहूलियतसे खड़ा किया जा सकता है और उसकी वीमारीकी जाँच करनेमे सहूलियत रहती है।

प्रसूतिका कमरा—गायके ब्यानेके लिये वडा और साफ हवादार एक कमरा होना चाहिये, उसमे नरम, साफ और सूखी घास आदि विछा दी जाय, ताकि ब्याते समय गायको आराम मिले। वादमे उसे उठाकर खाद बनानेके कूपमे डाल दे।

गोरस-भण्डार—दूध रखने, तोलने और किनाये रखनेके लिये एक छोटा-सा कमरा होना चाहिये। इसमें जालीदार किवाड और खिड़की होनी चाहिये, ताकि मच्छर-मक्खी न घुसने पाये।

सॉड़के रहनेके लिये काफी जगह अलग होनी चाहिये। छोटे बच्चोके लिये भी बाड़ेदार बरामदे अलग बने हों।

नाप—गोशाला आवश्यकताके अनुसार लंबी-चौड़ी और खूब फैली हुई हो। एक पशुको खडे रहनेके लिये कम-से-कम ५'×१०' फीट जगह चाहिये। पौराणिक मतके अनुसार चौड़ाईको लंबाईसे गुणा करके गुणनफलको ८ से भाग देनेपर यदि ५ बच रहे तो वह वृष-आयवाली गोशाला शुभ मानी जाती है।

सिंह अथवा सर्पके मुखवाली गोशाला बनाना अच्छा नहीं माना जाता।

पानी—सबसे पहले पशुओंके लिये जलका प्रबन्ध करना आवश्यक है। नलके द्वारा जमीनसे हर समय साफ पानीके खींचनेका प्रबन्ध होना चाहिये। यदि साफ पानीका झरना, सोता या नल बराबर २४ घंटे ही झरता रहे तो बहुत अच्छा है। कुएँसे भी काम चल सकता है, परंतु वह ढका हुआ और ऊँचा होना चाहिये। पशुओंकी नाँदके पास एक हौजमे साफ पानी सदैव भरा रहना चाहिये, ताकि प्यास लगनेपर पशु भर-पेट पानी पी सके।

गोशालामे पानीकी जरूरत निरन्तर बनी रहती है, इसलिये उसके प्रबन्ध करनेका विशेष ध्यान रखना चाहिये।

कुछ सुव्यवस्थित गोशालाओमें छोटा और दो तरफसे खुला हुआ एक हौज (Cattle dip) बना होता है, जिसमें पानी भरा और निकाला जा सकता है। इस पानीमें कृमिनाशक दवाएँ डालकर गायोको तैरा दिया जाता है, जिससे किलनी आदि व्याधियाँ दूर हो जाती हैं। गायोंको नदीमें नहलाना भी बहुत लाभदायक है।

सफाई—गोशाला हमेशा साफ-सुथरी रहनी चाहिये। वहाँ बकरी, कुत्ते और मुर्गी आदि जानवरोको न जाने दे, क्योंकि ये गायकी सानीकी चीजोको अशुद्ध कर देते हैं। वहाँकी दीवारोंपर हर साल एक बार चूनेकी सफेदी करा देनी चाहिये।

पशुओंको मक्खियोसे बचानेके लिये शालामें नीमके पत्तों या लोबान आदिकी धूपका धुआँ जरूर करना चाहिये। गोशालाकी नालीको सुबह-शाम पानीसे धोकर साफ रखना चाहिये। गोशालाके बाहरकी ओर जहाँ मुख्य एवं बडी नाली गिरती हो, वहाँ एक बड़ा-सा हौज बनाकर उसमे एक बर्तन रख दे, जिसमे पशुओंका मूत्र और शालाके धोवनका पानी इकट्ठा होता रहे। बरतनके भर जानेपर कम्पोस्ट खादके बनानेमे इस पानीको डालना लाभदायी होगा। शाला कभी-कभी फिनैलसे धुलवा दी जानी चाहिये।

गोशालामें रातके समय दीपक जलाना अच्छा माना जाता है। गोशालाके आँगनमें नीम या पीपलके एक सघन छायादार पेड़का होना बहुत स्वास्थ्यकारी और उपयोगी होता है। पेड़की छाया जाड़े और गर्मियोंमें हमेशा ही पशुओंको आराम पहुँचाती है।

गोशाला ऐसी हो कि जहाँ सूर्यकी रोशनी अच्छी तरह पहुँच सके, ताकि हानिकर कीटाणु वहाँ पैदा न हो पायें। खुली हुई हवादार जगहमें रहनेसे गाय-बैल प्रसन्न रहते हैं।

बर्तन—दूध दुहने और रखनेके लिये खास तौरकी बनी बाल्टी आदि बरतन गोशालामे रहने चाहिये। दाना-खली भिगोनेके लिये एक बड़ा-सा बर्तन हो या एक हौज ईट-सीमेटका बनवा लिया जाय। कुछ बाल्टियों और टोकरियोंकी भी जरूरत पडेगी। दवा पिलानेके लिये छोटी-बड़ी बॉसकी बनी हुई २-३ नालें भी रखी रहे।

किताबें—गोशालामे हर एक पशुका जन्मपत्र, दाना-खलीका लेखा और दूधका ब्योरा लिखी हुई पुस्तके होनी चाहिये। महीने भरकी आमदनी और खर्च भी लिखा रहे। यदि नुकसान नजर आये तो उसके कारणकी तुरंत खोज करे। व्यवस्था रखनेसे नुकसान न हो पायेगा।

ओषधि—व्यवस्थित गोशालामे साधारणतया काम आनेवाली सारी ओषधियाँ तैयार करके रखनी चाहिये ताकि जरूरत पडनेपर इधर-उधर भटकना न पड़े।

अन्य हिदायतें—गायको बाँधनेकी रस्सी चिकनी और सनकी बनी होनी चाहिये, क्योंकि सूतकी रस्सी बड़ी जल्दी मैली हो जाती है। लोहेकी जंजीरसे भी काम लिया जाता है। रस्सी बाँधनेके खूँटे नुकीले न हों, बल्कि गोल हों।

पशुओंकी गिनती करनेकी सुविधाके लिये उनके कानो या पुट्ठोंपर अंक दाग दिये जाते हैं, जो सदा बने रहते हैं। पशुओको नाम या संख्याके द्वारा सहज ही पहचाना जा सकेगा।

साधारण तौरपर काममें आनेवाले औजार यथा—चाकू, हँसिया, कैंची, सुई, सूजा, सॅडासी आदिका होना जरूरी है। इन्हे काममे लानेके पहिले सदा साफ कर लेना चाहिये और कृमिनाशक जलमे उबाल कर कीटाणु-रहित कर लेना चाहिये। उपचार करते समय हाथ तथा नाखूनोंको भी साफ करके कृमिनाशक घोलसे धो लेना चाहिये।

गोशालाओंका विवरण

(१) श्रीकृष्ण गौशाला कैलाशनगर, (गाजियाबाद)

'श्रीकृष्ण गौशाला' अत्यन्त प्राचीन गौशाला है। इसकी स्थापना आजसे लगभग ९० वर्ष-पूर्व सन् १९०४ ई० में कैलाशनगर, गाजियाबादमें हुई। यह गौशाला एक आदर्श गौशालाके रूपमें मान्य रही है। इसने जिला तथा प्रान्त-स्तरपर हुई प्रतियोगिताओंमें सर्वोत्तम गाय तथा सर्वोत्तम सॉड़के लिये अनेक पुरस्कार भी प्राप्त किये हैं। बीचमें इस गौशालाकी व्यवस्था कुछ अनियमित-सी हो गयी थी, किंतु अब पुनः इसे सुव्यवस्थित कर लिया गया है। गौशाला-परिसर तथा गोष्ठोका जीर्णोद्धार भी हो गया है। इस गौशालाके प्रयत्नोंसे समय-समयपर अनेक गायोंको कसाइयोके चंगुलसे मुक्ति प्राप्त हुई और उन्हें उचित संरक्षण भी प्राप्त हुआ है।

इस समय गौशालामें गाय, बैल, बछिया तथा बछड़ोंकी कुल संख्या मिलाकर ३०१ है। जिनमें मुख्य रूपसे हरियाणा, साहीवाल, जर्सी, रेडडेन तथा देशी नस्ले हैं। किंतु आस-पास सघन आबादी होनेसे गोचरभूमि नहीं है। चारा आदिकी व्यवस्था अन्यत्रसे करनी पड़ती है। गायोंसे प्राप्त दूधकी विक्री तथा गोबर-गैस-सयन्त्र और गौशालाको प्राप्त दानराशिसे सभी कार्य सम्पन्न होते हैं। गायोंकी चिकित्साके लिये चिकित्सक भी नियुक्त हैं। गौ माताकी कृपासे गौशालाका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है।

गोपालन एवं गोसंवर्धनके लिये आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग कितने उपयोगी अथवा अनुपयोगी हैं तथा गोपालनमें कौन-कौन-सी कठिनाइयाँ आती हैं और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है, इसके साथ ही एक आदर्श गोशालाका स्वरूप कैसा होना चाहिये?—इस सम्बन्धमे इस 'श्रीकृष्ण गौशाला'के अनुभवों, मान्यताओ, विचारों तथा सुझावोंको यहाँ दिया जा रहा है—

आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग

कृत्रिम गर्भाधान तथा भ्रूण-प्रत्यारोपण और इजेक्शन लगाकर अधिक दूध प्राप्त करनेको 'आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग' कहा जाता है, कितु यह 'श्रीकृष्ण गौशाला' उसके पक्षमे नहीं है। साथ ही हम अपनी भारतीय नस्लोको पूर्णतः सुरक्षित रखते हुए उन्नत देशी सॉडोके माध्यमसे गर्भाधान कराकर नसल-सुधार करना चाहते हैं, क्योकि गोवंशकी संकर-नस्ले हमारे देशकी जलवायुके लिये उपयुक्त नहीं हैं। उनका रख-रखाव महँगा है। वे बहुत अधिक खाती हैं। अधिक बीमार होती हैं। उनमें मृत्यु-दर भी ज्यादा है। गर्मी उन्हे सहन नहीं हो पाती। अतः भारतीय उत्तम नस्लको ही बढावा देना चाहिये।

गोपालनमें कठिनाइयाँ तथा उन्हें दूर करनेके उपाय

(क) प्रशिक्षित एव समर्पित कर्मचारियो तथा प्रवन्धकोका अभाव दूर करनेके लिये गोशाला-प्रवन्धन तथा गोसेवा-प्रशिक्षण-शिविर लगाये जायँ और वहाँ इन विषयोपर विस्तारसे विचार करके उन्हें व्यावहारिक रूप दिया जाय, इससे यह समस्या दूर हो सकती है।

(ख) हमारे देशमे लार्ड मैकाले-प्रणीत शिक्षा-पद्धति लागू रहनेके कारण हमारी नयी पीढी गोवशके महत्त्वके सम्बन्धमे कुछ भी नहीं जानती। फलस्वरूप पढ़े-लिखे युवकोमे गोपालन एवं गोसेवाके प्रति कोई रुचि नहीं है। इतना ही नहीं, वे लोग गोपालनको गदा एवं निकृष्ट कार्य समझते है। गोबरको मल समझकर उससे घृणा करते हैं। इस अज्ञानको दूर करनेके लिये गोवंशके महत्त्वका व्यापक प्रचार-प्रसार करनेकी आवश्यकता है।

(ग) गोपालनके आरम्भमे धनाभावकी भी कठिनाई आती है। जबतक हम अपने गोवंशकी देशी प्रजातियोको उन्नत नहीं कर पाते हैं, तबतक इस कार्यके लिये आर्थिक सहयोगकी आवश्यकता है। जो राज्य सरकारो तथा 'भारतीय जीव-जन्तु-कल्याण-बोर्ड' मद्राससे अनुदान प्राप्त करके तथा गोप्रेमी सम्पन्न परिवारोसे दान प्राप्त करके पूरी की जा सकती है।

(घ) चरागाहोंका लगभग समाप्त हो जाना तथा ग्वालोका गोचारणके लिये न मिलना गोपालनमे सबसे बड़ी कठिनाई है। इसके लिये गोचरभूमि फिरसे आरक्षित करनी होगी तथा ग्वालोकी व्यवस्था फिरसे करनी होगी। गोशालाएँ प्राय: उन स्थानोंपर स्थापित की जायँ, जहाँ चरागाह उपलब्ध रहे, पानीकी सुविधा हो तथा जीव-जन्तुओंसे कोई भय न हो।

आदर्श गोशाला

भारतमें स्थापित गोशालामें गोवंशकी भारतीय प्रजातियोंकी गाय होनी चाहिये और उनके पालनेके लिये निम्नलिखित व्यवस्था होनी चाहिये—

(१) चारा—भूसा, हरा चारा, खल-चूरी-छिलका, दलिया, नमक तथा अन्य खनिजकी नियमित व्यवस्था होनी चाहिये। चारा काटनेकी मशीन तथा पिसाई-चक्की भी गोशाला-परिसरमें गोशालाकी अपनी होनी चाहिये। चारा विभिन्न आयुके गोवंशको उसकी आवश्यकताके अनुसार मात्राओंमें दिया जाना चाहिये। गर्भवती गायोको तथा दूध देनेवाली गायोंको विशेष पौष्टिक चारा दिया जाना चाहिये। दूध बढ़ानेके लिये हरा चारा, जई, बरसीम, बिनौलेकी खली, चनेका छिलका, जौ अथवा गेहूँका दलिया विशेष उपयोगी है।

(२) गायोंके पीने तथा नहानेके लिये पानी—गोशालाके पास गायोंके पीने तथा नहानेके लिये पानीकी अपनी व्यवस्था होनी आवश्यक है। उसके लिये ट्यूबवेल, भूमिगत जलाशय तथा ओवर हैड टैंक होने चाहिये।

(३) आवास—गोशालामें सभी गायोंके लिये आच्छादित आवास, जिसमें गर्मी-सर्दी तथा वर्षासे बचाव हो सके, होना चाहिये। आवासमें उनके चारेके लिये खोर तथा पानी पीनेके लिये पक्की चरई होनी चाहिये। गायोंको बिना पक्के फर्श लगी भूमिपर बैठना सुखद है। इसलिये गायोंके आवासोंमें पक्के फर्श नहीं लगाये जायँ और यदि लगाये भी जायँ तो ऐसे हों कि उनपर गाय फिसल न सके और साथमें कुछ स्थान कच्चा भी छोड दिया जाय।

(४) गोशालामें गोवंशका वर्गीकरण—गोवंशका वर्गीकरण करके प्रत्येक वर्गके गोवंशको अलग-अलग आवास तथा बाड़ोंमें रखा जाना चाहिये। बछिया अलग, बाछे अलग, गर्भवती गाय तथा दूध देनेवाली गाय अलग, दूधसे सूखी गाय, सॉड़ और बीमार गोवंश-ये सब अलग-अलग आवास तथा बाड़ोंमें रखे जाने चाहिये।

(५) नामकरण अथवा क्रमाङ्कन—आदर्श गोशालामें गोवंशका नामकरण अथवा क्रमाङ्कन अवश्य होना चाहिये। यह देखा गया है कि गाय अपना नाम पुकारे जानेपर दौड़ती आती है। नामकरण होनेसे उसे अपने साथ आत्मीयताका भी अनुभव होता है। नामकरण न हो सके तो क्रमाङ्कन (Numbering) कर दिया जाय। इससे भी पहचानमे सुविधा होती है।

(६) गर्भाधान—गर्भाधानका समय होनेपर गाय रँभाती है। उस समय उसका गर्भाधान करवा देना चाहिये। समय निकल जानेपर वह पुनः १४ दिन या २१ दिन बाद रँभाती है। गर्भाधानके लिये गायको उत्तम जातिके ही उत्तम देशी साँड़से प्राकृतिक गर्भाधान कराना सर्वोत्तम है। ज्यादा दूध देनेवाली देशी गायके बछड़ोंको अच्छी तरह खिला-पिलाकर अच्छे साँड तैयार किये जाने चाहिये। उनकी माताके दूधका रिकार्ड भी रखा जाना चाहिये।

(७) चिकित्सा-व्यवस्था—फैलनेवाली छूतकी बीमारियों-जैसे 'खुरपका', 'मुँहपका' की रोक-थाम तथा बीमार पडनेवाली गायोंकी चिकित्साके लिये एक नियमित चिकित्सक तथा औषधालय होना चाहिये। अनुभवी गोपालकका परामर्श लेकर घरेलू दवाओंके प्रयोगसे गायको विशेष लाभ होता है।

(८) स्वच्छता—गायको स्वच्छता पसंद है। वह स्वयं स्वच्छ रहना चाहती है और स्वच्छ स्थानपर ही बैठना चाहती है। गोशालाको स्वच्छ रखनेसे गोवंश बीमारीसे भी बचा रहता है। अतः गोशालाको स्वच्छ रखना बहुत ही आवश्यक है। गायोंके पानी पीनेके चरई, चारेकी खोर तथा आवास सभी स्वच्छ रहने चाहिये। गायोंको प्रतिदिन नहलाया जाना चाहिये। इसके लिये फव्वारा-स्नानकी व्यवस्था हो तो सर्वोत्तम है।

(९) गोबर-गैस संयन्त्र—गोशालामें गोबर प्रचुर मात्रामें होता है, इसलिये वहॉपर गोबर-गैस संयन्त्र लगाने और चलानेसे कई लाभ होते हैं। गोबर-गैस मिलती है, उससे भोजन बनानेके लिये गैसका चूल्हा तथा प्रकाशकी व्यवस्था हो सकती है। इसके अतिरिक्त गोबर-गैससे जेनेरेटर सेट चलाकर विद्युत्-उत्पादन भी किया जा सकता है। जिससे बिजलीके पंखे, चारा काटनेकी मशीन, बिजलीके मोटरसे चलनेवाली आटाचक्की—ये सब चल सकते हैं। साथ ही गोबर-संयन्त्रसे बने हुए खादकी गुणवत्ता भी बढ़ जाती है।

(१०) कृषि-भूमि—गोशालाके पास अपनी कृषि-भूमि होनी चाहिये। जिसमें गोवंशके लिये हरा चारा, भूसा तथा मोटे अनाज उत्पन्न किये जा सकें। एक गायके लिये एक एकड़ भूमि होना आदर्श स्थिति है।

(११) चरागाह— गोशालाके निकट एक चरागाह होना चाहिये, जिसमें गोशालामें रहनेवाला गोवंश चरनेके लिये जा सके। गायको चरना तथा भ्रमण करना बहुत पसंद है। इससे वह स्वस्थ रहती है और उसके दूधकी श्रेष्ठता तथा गुणवत्ता भी बहुत बढ़ जाती है।

(१२) निष्ठावान् प्रबन्ध-समिति—गोशालाको आदर्श

गोशाला बनानेमे तथा आदर्श गोशालाके रूपमे चलानेके लिये निष्ठावान् लोगोकी प्रबन्ध-समिति होनी चाहिये और ऐसे ही निष्ठावान् सेवक भी होने चाहिये, जो निःस्वार्थ एवं निष्कामभावसे ईश्वरकी प्रसन्नता तथा गोमाताका आशीर्वाद पानेके लिये गोशालाके प्रबन्धमें कार्यरत हो। इससे कम व्यय होनेसे वह गोशाला स्वावलम्बी भी हो जायगी।

(१३) छायादार वृक्ष—गोशालामे छायादार वृक्ष होनेसे गायोको बैठनेके लिये छाया मिल जाती है। यह वृक्ष ऐसे होने चाहिये जिनसे वायुकी भी शुद्धि होती रहे। इस दृष्टिसे नीमका वृक्ष सर्वाधिक उपयोगी है।

(१४) गोवंश-संरक्षणकी व्यवस्था—गोशालाके द्वार कसाइयोंसे छुड़ाये गये गोवंश तथा असहाय, बीमार, वृद्ध और दुर्घटनाग्रस्त गोवंशके लिये सदैव खुले रहने चाहिये।

(१५) गोवंश-संवर्धनकी व्यवस्था—गोशालामें गोवंशके पालन एवं रख-रखावकी ही नहीं, बल्कि उसके विकासकी भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिये। जो बछिया दूध देनेवाली अच्छी गाय बन सकती है, उसका गर्भाधान उन्हींकी नसलके अच्छे साँड़ोसे करवाकर, उनको अच्छा पौष्टिक चारा देकर अधिक दूध देनेवाली गाय बनाने, बछड़ोंको अच्छे सॉड़ बनाने अथवा अच्छे बैल बनानेका प्रयास लगातार होते रहना चाहिये।

इस प्रकार इन उपायोंके अमलमे लानेसे निश्चित ही गोवंशकी अभिवृद्धि होगी, गोसंरक्षणको प्रोत्साहन मिलेगा तथा गोमाता भी नृशस-हत्यासे बच सकेगी। अतः अधिक-से-अधिक लोगोंको प्रयत्नपूर्वक इस दिशामे अवश्य लगना चाहिये, यह एक पुण्यका कार्य है, परोपकारका कार्य है, इससे न केवल लौकिक समृद्धि ही प्राप्त होगी, बल्कि सच्चा सुख-संतोष भी प्राप्त होगा और बुद्धि शुद्ध होकर उनका अध्यात्मपथ भी प्रशस्त हो जायगा।

—श्रीपरमानन्दजी मित्तल



(२) गोशाला, हरिधाम-आश्रम, बिठूर (कानपुर)

इस गोशालाकी स्थापना ब्रह्मलीन स्वामी श्रीप्रकाशानन्द सरस्वतीजी महाराजके सत्प्रयासोसे सन् १९७४ ई० मे सम्पन्न हुई। वर्तमानमे गोशालामें ८ गाये, एक साँड, २ बाछे तथा ५ बाछी हैं, जो साहीवाल, जर्सी तथा हरियाणा नस्लके हैं। गोमाताकी कृपासे हमारी इस गोशालामे उचित गोपालनके लिये प्रायः सभी साधन उपलब्ध हैं। निकटमे गङ्गाजी होनेसे गायोको पानी आदिकी बड़ी सुविधा है। गोशालासे संलग्न लगभग आधा बीघा भूमि है, जिससे प्रायः ८ महीने हरा चारा उपलब्ध होता रहता है। चारेका भण्डारण उपयुक्त समयपर कर लिया जाता है। गायोके उपचारके लिये घरेलू-देशी ओषधियाँ दी जाती है और आवश्यकता पड़नेपर विशेषज्ञ भी बुलाये जाते है।

मुख्यतः यह 'गोशाला' हरिधाम-आश्रमसे ही सम्बद्ध है। आश्रममें साधु-सत, महात्मागण पधारते रहते हैं। गोशालाका गोदुग्ध आदि साधु-संतोकी सेवामे प्रयुक्त होता है। आश्रमका अपना गोबर-गैस संयन्त्र भी है, उसीमे गोमयका प्रयोग हो जाता है। धर्मात्मा दान-दाताओसे प्राप्त धनराशिसे यहॉका प्रबन्ध होता है।

हमारी यह मान्यता है कि गोशालामे उतना ही गोधन रखना चाहिये, जितनेका ठीकसे पालन-पोषण-संरक्षण हो सके। गौको भूखी, प्यासी या चिकित्साके लिये लालायित रखे रहना महान् पापका भागी बनना है। अतः जितनी गौओको ठीकसे खिला-पिला सके उतनी ही गौओंको अपनी गोशालामे रखना चाहिये। बाकी गोधनको किसी अन्य गोशाला या गोपालकको समर्पित कर देना चाहिये। इसी दृष्टिसे इस गोशालामे गोधनकी सख्या कम रखी गयी है। अतः गौओकी देख-रेख आदिमे कोई विशेष कठिनाई हमे नहीं होती।

हमारा यह अनुभव है कि गोपालन किंवा गोसंवर्धनमे आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोग अधिक सफल नहीं हो रहे हैं, अतः पूर्णतः भारतीय पद्धतिका अनुसरण करना चाहिये। एक आदर्श गोशालाके लिये आवश्यक है कि उसमे उत्तम चारा, पौष्टिक दाना, शुद्ध जल, सफाई, चिकित्सा तथा सरदी-गरमीसे बचावकी व्यवस्था होनी चाहिये।

ईश्वरकी सृष्टिमे गौका प्रमुख स्थान है, अतः गोपालन हमारा परम धर्म है, वैज्ञानिक दृष्टिसे भी यही बात सिद्ध होती है। कई बार ऐसा होता है कि मन बडा उद्विग्न हो जाता है, ऐसी स्थितिमे यदि गौका दर्शन कर लिया जाय तो मनमे बडी शान्ति प्राप्त होती है, ऐसा हमारा व्यक्तिगत अनुभव है।

हमारी जानकारीमे एक उत्तम गोशाला गोहाना (हरियाणा) मे है, जहाँ रुग्ण तथा अपाहिज गायो, बछियों तथा बछड़ोंकी बड़ी तन्मयतासे सेवा-शुश्रूषा की जाती है।

—स्वामी श्रीश्यामस्वरूपानन्दजी सरस्वती



(३) अवध-प्रान्तकी कुछ गोशालाएँ

[भारतीय गोवंश-रक्षण, गोसंवर्धन एवं अनुसंधान-परिषद्, नयी दिल्लीके शाखा-कार्यालय, कानपुरसे अवध-प्रान्तकी चार गोशालाओंका विवरण तथा अवध-प्रान्तकी गोशालाओंकी एक संक्षिप्त सूची गोरक्षा-प्रमुख अवधप्रान्तद्वारा प्राप्त हुई है, जिसे यहाँपर दिया जा रहा है—]

(क) श्रीकानपुर गोशाला सोसाइटी

जरनलगज, कानपुरमे सन् १८८८ ई० में 'श्रीकानपुर गोशाला सोसाइटी' नामसे एक गोशालाकी स्थापना हुई। इमलिया खुर्द कालपीमें भी इस गोशालाकी शाखा है। इस समय इस गोशालामे कुल गोधन ७३ है, जिसमें ४९ गायें हैं। इस क्षेत्रकी विशेष नस्ल देशी फ्री क्रास है। गोशालाके पास गायोके लिये पर्याप्त स्थान है। लगभग ८४० गौओंभरका स्थान है। गोशालाकी व्यवस्था तथा गोधनकी देख-रेख चंदा, किराया तथा खेतीद्वारा प्राप्त आयसे होता है। अपना बहुत बड़ा गोबर-गैस संयन्त्र भी है। किंतु खेद है कि गोशालाकी लगभग ३५० बीघा जमीनपर अधिग्रहण हुआ है। अभी गोशालाके पास जो गायें हैं, उनमें अधिकतर दानमे प्राप्त अनुपयोगी गाये है, जो बूढ़ी तथा कमजोर हैं। इनकी देख-रेखपर विशेष ध्यान देना पड़ता है। उपयोगी एवं दुधार गौओके साथ ऐसी गौओंका संरक्षण भी अत्यन्त आवश्यक है। हमारा यह अनुभव है कि अच्छे एवं सेवाभावी कर्मचारियोके अभावमें ठीकसे गोशालाका कार्य नहीं हो पाता है। आजकल कुछ ऐसी प्रवृत्ति पनप गयी है कि जो अच्छे कार्यकर्ता है, उनकी राजनैतिक तथा सामाजिक संस्थाओंमें कार्य करनेकी अधिक रुचि रहती है, अपेक्षाकृत धार्मिक संस्थाओके। इसलिये कार्यकी व्यवस्था एवं गुणवत्तामे अन्तर आ जाता है, अतः यथासम्भव गोशालाओके लिये सेवाभाव तथा गायमें प्रेम रखनेवाले कुशल सेवकोकी आवश्यकता होती है।

—श्रीपुरुषोत्तमलालजी

(ख) गो-गंगा-कानन, शिवाजीनगर, (कानपुर)

गोसेवा, गोपालन, पर्यावरण-सुरक्षा, वृक्ष-सेवा, स्वस्थ प्राकृतिक जीवनकी शिक्षा इत्यादि उद्देश्योंको लेकर 'गो-गंगा-कानन' नामक इस संस्थाकी स्थापना सन् १९८७ ई० मे शिवाजीनगर, कानपुरमे की गयी है। मुख्य रूपसे गोमाता, गङ्गामाता तथा धरतीमाताकी सेवा करना इस संस्थाका प्रमुख ध्येय है। संस्थाके पास इस समय लगभग २० एकड़ भूमि है, जिसमें जंगल भी है। इसीमें गायें विचरण करती हैं। गोधनके विकासके लिये कृषि, वानिकी तथा ग्राम्य संस्कृतिका पुनर्जीवित होना बहुत आवश्यक है। इसी दृष्टिसे संस्थाने इससे सम्बद्ध अनेक कार्यक्रमोंको प्रारम्भ करनेकी योजना बनायी है।

—श्रीप्रेमचन्द्रजी पाल

(ग) जय श्रीकृष्ण गौशाला, सहार (इटावा)

कुछ ही समय पूर्व (२१ नवम्बर, १९९३ ई०) गोपाष्टमीके पावन पर्वपर सहार (इटावा) में एक गौशाला स्थापित की गयी। यह गौशाला 'विवेकानन्द आश्रम'के एक अङ्गके रूपमें कार्यरत है। यहाँ एक बूचड़खाना है। उसी बूचड़खानेसे स्थानीय गोवंशकी रक्षा-हेतु गोभक्तोंके सहयोगसे यह गौशाला स्थापित हुई। गौशालाका अपना भवन भी है। इस समय गौशालामे १७ गायें, ३ बछड़े तथा ३ बछड़ियाँ हैं। अधिकतर देशी नस्लकी गायें हैं। स्थानीय लोगों तथा दानदाताओंके सहयोगसे गौशालाका कार्य सुचारु रूपसे चल रहा है। आश्रममें एक ऐसी गाय है, जो एक तरफ अपनी बाछीको दूध पिलाती है तथा दूसरी तरफ एक वृद्ध गायके बछड़ेको भी दूध पिलाती है। एक दूसरी गाय ऐसी है, जिसके एक तरफ उसका बछड़ा दूध पीता है तथा दूसरी तरफ दूधकी दुहाई होती है।

—श्रीआशुतोषजी शुक्ल

(घ) गोधाम (गोशाला), नयी झूसी (प्रयाग)

सन् १९८५ ई० में नयी झूसी, प्रयागमें 'गोधाम' नामसे एक गोशालाकी स्थापना हुई। इस समय गोशालाके पास ४ एकड़का सीमित क्षेत्र है और गोशालामें गोधनकी संख्या लगभग १५ के आस-पास है। गायोंसे प्राप्त दूधकी विक्री की जाती है। प्रायः देशी नस्लकी गायें हैं। कुछ हरा चारा पैदा किया जाता है, शेष क्रय करना पड़ता है। खादका उपयोग खेतीके लियें किया जाता है।

—श्रीशिवमंगल सिंहजी

(ङ) अवधप्रान्तकी गोशालाओंकी सूची

लखनऊ—(१) अवध गोशाला, (२) नदौली गोशाला निगोहा, तहसील-मोहनलालगंज, (३) गोशाला असर्फाबाद, तखास।

हरदोई—(१) गोपाल गोशाला धियर महोलिया, (२) कृष्ण गोशाला, माधोगंज, (३) राधा कृष्ण गोशाला शाहाबाद।

लखीमपुर—(१) गोरक्षणी सभा गोशाला निघासन रोड, (२) धर्मार्थ गोशाला गोकरननाथ, (३) हिन्दुस्तान सुगर मिल गोशाला गोला, (४) पाराशर नाथ गोशाला मैकलगंज।

सीतापुर—(१) पिंजरापोल गोशाला सोसाइटी, (२) हनुमंत मंशाराम गोशाला बिसवाँ, (३) नैमिशारण्य गोशाला, मिश्रिख।

फैजाबाद—(१) साकेत गोशाला अयोध्या, (२) भगवंत गोशाला डुहिया, टांडा, (३) नरसिंह गोशाला बीकापुर।

गोंडा—(१) हनुमान गोशाला भगवतीगंज, बलरामपुर, (२) बलरामपुर गोशाला सोसाइटी नीलगॉव, (३) गायत्री तपोभूमि गोशाला बड़गॉव, (४) सरजू गोशाला नवावगंज, (५) देवीपाटेश्वरी गोशाला, (६) गोपाल गोशाला, कर्नलगंज।

बहराइच—(१) राजलक्ष्मी गोशाला निन्दीपुर भंडारा, (२) जुगलीना गोशाला नानपारा।

फतेहपुर—नंदगोशाला बिन्दकी।

कानपुर—(१) कानपुर गोशाला सोसाइटी भौंती, (२) पंचमुखी हनुमान गोशाला पनकी कटरा, (३) कृष्ण गोशाला पुखरायाँ।

झाँसी—गोपाल गोशाला पंचकुइया, नई वस्ती।

बाँदा—(१) गोपाल गोशाला, (२) नरसिंह गोशाला पेलानी, (३) मुकुन्द गोशाला मुजौली, डाकखाना-तिन्दवारी।

जालौन—जिला जालौन गोशाला समिति, कालपी।

बाराबंकी—नागेश्वर नाथ गोपाल गोशाला।

बिल्हौर—(१) गो-गंगा कानन गोशाला गुमटी-४९, दरियापुर तहसील, (२) हरिधाम-आश्रम गोशाला विठूर, (३) आरोग्यधाम आश्रम गोशाला विठूर।

[प्रेपक—श्रीदिनेशचन्द्रजी गुप्त]



(४) श्रीसूर-श्याम सेवा-संस्थान परासौली (मथुरा)

(पूज्यपाद बाबा श्रीगणेशदासजी भक्तमाली)

व्रजधाममें स्थित श्रीगिरिराज-गोवर्धनकी सुरम्य तलहटीमें भगवान् श्रीकृष्णकी महारास-स्थली चन्द्रसरोवर—परासौली नामक एक स्थान है। यह परासौली गोवर्धन कस्बेसे सोख भरतपुरको जानेवाले राजमार्गपर दो किलोमीटर दूर स्थित है। इस पावन स्थलीके निकट स्थित ग्रामोके गण्यमान्य सदस्योके संयोगसे आश्विनशुक्ला शरद्-पूर्णिमा संवत् २०४५ वि० को 'श्रीसूर-श्याम सेवा-सस्थान' की स्थापना हुई। संस्थानने सर्वदेवमयी गौ तथा उसके वंशके संवर्धन एवं रक्षार्थ 'सूर-श्याम गोशाला' की स्थापना भी की। इस सूर-श्याम गोशालामे गोवंशकी वर्तमान संख्या ३५५ है।

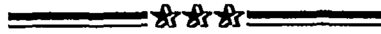
इनमे दूध देनेवाली गौएँ ३४, दूध पीनेवाले बछडे-बछियोकी संख्या ३०, बैलोकी सख्या ८, अशक्त-वृद्ध विकलाङ्गकी सख्या १२ और साँडोकी सख्या ५ है। गोशालाके दूध तथा गोवंशका विक्रय नहीं किया जाता। दूध 'सूर-श्याम बाल-विद्यामन्दिर' के शिशुओको तथा अतिथियोको पिला दिया जाता है और आर्थिक दृष्टिसे कमजोर गोप्रेमीको उसकी इच्छाके अनुसार एक या दो गौ सेवाके लिये नि.शुल्क भी दे दी जाती है। उसके द्वारा वह गौ लौटानेपर पुनः गोशालामे प्रवेश करा ली जाती है।

गोशालाको आत्मनिर्भर बनानेके लिये 'सूर-श्याम सेवा-सस्थान' गौके गोबर तथा मूत्रसे नॅडेप कम्पोस्ट खाद, गो-देव-दर्शन धूप एवं अगराग नामक स्नान-साबुनका निर्माण कराती है, जिससे आयमे वृद्धि हुई है।

भारतवर्षमे ही नहीं, अपितु विदेशोमे बहुधा गोशालाएँ ऐसी हैं जो उत्तम नस्लकी दुधार गायें ही रखती हैं। दूध न देनेवाली अवस्थामे या अशक्त-वृद्ध होनेपर उन गायोंको हटा देती हैं। ऐसी गोशालाएँ आर्थिक लाभ लेनेके लिये ही खोली गयी हैं, गोवंशके रक्षार्थ या उसके संवर्धनके लिये नहीं, परन्तु

'सूर-श्याम गोशाला' को एक आदर्श रूपमे प्रस्तुत करनेके प्रयास किये जा रहे हैं। मौसम एवं ऋतुके अनुसार प्रत्येक गोवशको हरा चारा, भूसा, अनाज, दूध, जल आदि दिया जाता है, गिरि-गोवर्धनकी तलहटीमें ग्वालोकी देख-रेखमे उन्हे चरनेके लिये ले जाया जाता है, जहाँ वे स्वतन्त्र रूपसे आहार-विहार करते हैं। गर्मी, वर्षा, शीतके बचाव-हेतु कच्चे फर्शवाले हवादार पक्के वडे-वड़े कमरे है। गायके प्रसवके समय समुचित आहार, औषधि आदिका विशेष ध्यान रखा जाता है। रुग्णावस्थामें पशु-चिकित्सकसे चिकित्सा कराकर उसे पूर्ण स्वस्थावस्थामे लानेका पूरा प्रयत्न किया जाता है। किसी भी अवस्थामे आयु पूर्ण होनेपर—गोलोक पधार जानेपर उस गोवशके पार्थिव शरीरको विधिवत् व्रजरजका लेपन कर फूल-मालाओसे सजाया जाता है, उचित पवित्र स्थानपर गड्ढा खोदकर उसमे शवको रखकर औषधि-नमक डालकर भूमिगत किया जाता है। इस अन्तिम सस्कार करनेकी अवधिमे श्रीहरिनाम-संकीर्तन उच्च स्वरसे होता रहता है और अन्तमे भी दिवंगत आत्माकी शान्तिहेतु सकीर्तन किया जाता है।

[प्रेषक—श्रीरामलखनजी शर्मा 'राम']



(५) श्रीगोरखनाथ गोशाला (गोरखपुर)

भगवान् गोरखनाथके मन्दिर-परिसरमे स्थित यह गोशाला एक प्राचीन गोशाला है। ऐसी प्रसिद्धि है कि इसकी स्थापना शताब्दियोपूर्व गोरखनाथ-पीठके तत्कालीन प्रमुख एक-नाथयोगीद्वारा की गयी थी। मन्दिरके आलेखोमे गोशालाके स्थापनकालका कोई यथार्थ उल्लेख उपलब्ध न होनेसे इसकी प्राचीनताकी निश्चित तिथि ज्ञात नहीं हो सकी है।

गोरखनाथ-मन्दिरद्वारा संचालित और सुव्यवस्थित इस गोशालाका उद्देश्य आरम्भसे ही गोरक्षण, गोसेवा और गोसवर्धन रहा है। तदनुरूप आज भी यह एक आदर्श गोशालाके रूपमे 'गोसेवा' का संदेश दूर-दूरतक (सर्वत्र) प्रसारित कर रही है। इस गोशालामे नियमतः देशी गाये ही रखी जाती हैं। वर्तमानमे यहाँ गाय तथा गोवंशकी कुल सख्या लगभग १२५ है। इनमे बूढ़ी, अपंग, युवा और बच्ची—सभी अवस्थाकी गाये हैं। इनकी देख-रेख और सेवाके लिये २५ से ३० व्यक्ति नियुक्त हैं। गायोके रहनेका स्थान वहुत स्वच्छ, हवादार और हर मौसमके लिये उपयुक्त बनाया गया है। यहाँ गायोके लिये शुद्ध, सुपुष्ट आहार तथा पीनेके लिये स्वच्छ जलकी व्यवस्था है। समय-समयपर पशु-चिकित्सक और विशेषज्ञोद्वारा गायोका स्वास्थ्य-परीक्षण होता है। गायोसे प्राप्त दूधका उपयोग गोरखनाथ-पीठमें रहनेवाले योगियो, साधुओ, कर्मचारियों एवं आगन्तुक अतिथियोके सेवार्थ किया जाता है। भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है। गाय और गायसे प्राप्त बछड़ो तथा बैलोका कृषि-कार्यमे महत्त्वपूर्ण योगदान होनेसे हमारे यहाँ गोपालनको सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। हमारी तुष्टि-पुष्टि और सुख-समृद्धिसहित आध्यात्मिक चेतनाका सुदृढ आधार गाय ही है, अतएव गोरक्षण, गोपालन और गोसवर्धनके लिये सतत सनद्ध और समर्पित गोरक्षपीठका यह गोसदन दीर्घकालसे जन-जनको गोसेवाका सुसंस्कार और शुभ प्रेरणा दे रहा है तथा आगे भी देता रहेगा, ऐसा विश्वास है।

[प्रेषक—श्रीश्यामसुन्दरजी श्रोत्रिय, 'अशान्त']



(६) श्रीलक्ष्मी गोशाला, बदनावर (मध्यप्रदेश)

'श्रीलक्ष्मी गोशाला बदनावर' की स्थापना आजसे लगभग ८० वर्ष पूर्व यहाँके नगरसेठ श्रीनंदरामजी चोपड़ाके द्वारा की गयी। बदनावर बसस्टैंडपर गोशाला चलानेके लिये एक भवनका निर्माण कराया। उस आमदनीसे गोशालाका खर्च आज भी चलता है।

इस समय गोशालामे १५ गाय, १५केड़ा, ८ केडी कुल ३८ पशु हैं। इस गोशालाका मुख्य उद्देश्य गोवंशकी रक्षा तथा सेवा करना है और लूले-लँगडे, अपाहिज पशु रखना तथा उनकी सेवा करना है, साथ ही कत्लखानेमे जानेवाले पशुओको रोकना है। गोशालामे मालवी नस्लका गोवंश है।

—श्रीमांगीलालजी अवस्थी



(७) श्रीगौशाला पिंजरापोल, राजनांदगाँव (म० प्र०)

(श्रीदेवीशरणजी खण्डेलवाल)

श्रीकृष्णके उपासक वैरागियोंकी रियासत नंदग्राम आज भक्ति, क्रीडा एव साहित्यकी त्रिवेणीमे नया कलेवर प्राप्त कर छत्तीसगढ अञ्चलमे राजनादगाँवके नामसे सुविख्यात है।

रियासतकालीन एक अग्रेज दीवानद्वारा एक पागल घोडेको गोली मार देनेके हुक्मसे उद्वेलित यहॉकी धर्मप्राण जनताकी भावनाओको मुखर करते हुए रियासतके सेठ श्रीरामलालजी चोपडा एवं श्रीसाहिबराम सूरजमल ओस्तवाल-परिवारने शहरके मध्य गोशालाके लिये भूमि क्रयकर गोशालाकी स्थापनाका उपक्रम प्रारम्भ किया।

इस प्रकार सवत् १९६१ (सन् १९०५) मे संस्थापित यह सस्था अपने लबे इतिहासमे अनेक उतार-चढाव देख चुकी है और अनेक संस्मरण सँजोये हुए निरन्तर प्रगति-पथपर अग्रसरित है।

सन् १९६० मे शासनद्वारा तीस एकड भूमि गौशाला-हेतु मिली। इस ऊसरभूमिको परिवर्तित कर जी० ई० रोडपर गौ-सदनका निर्माण हुआ। इस तीस एकड भूमिमेसे २० एकड भूमि शासनको प्रदान की गयी, जिसके बदलेमे जिलाध्यक्षद्वारा चालीस एकड़ भूमि सस्थाको प्रदान की गयी, जहाँपर कृषि-कार्य होता है। १९७० मे नगरके मध्य स्थित गौशालामेसे लगभग १० हजार वर्गफुट भूखण्डपर गौशाला सुपर मार्केटका निर्माण कर गौशालाको ठोस आर्थिक आधार प्रदान किया गया। इससे अर्जित आयसे शहरके मध्यमे गो-सदनका पक्का निर्माण किया गया।

नगरमे सार्वजनिक श्मशान-गृहका भी सफल सचालन गोशालाद्वारा किया जा रहा है। यहॉपर धर्मशाला, जलाऊ लकडी, पानी, स्नानागारकी व्यवस्था है। निम्न आय-वर्गके तपेदिकसे पीडित बच्चोको संस्था निःशुल्क दूध भी प्रदान करती है।

वर्तमानमे संस्थाके पास १७७ गाये, १० बैल, ५ साँड, ४६ बाछे, ५ भैंसा, १२८ बाछियाँ हैं। जिनमे साहीवाल, गीर, जर्सीक्रास, देशी एव हरियाणवी नस्ले हैं।

चारा-व्यवस्था—कृषिद्वारा उपजका चारा एव पशु-आहार चूनी-भूसी, खली आदिका बाजारसे क्रय होता है। पेयजल-हेतु दो कुआँ, दो बोरिंग एवं नलका साधन उपलब्ध है। गोचरभूमिकी समुचित व्यवस्था नहीं है।

आयके परम्परागत साधनोमे प्रमुख रूपसे गोपाष्टमी-अनुदान, किरायासे अर्जित आय, कृषि-आय, शहरमे दूधकी विक्री आदि है।

गोधनका नियमित स्वास्थ्य-परीक्षण पशु-चिकित्सको-द्वारा किया जाता है। गोबरका उपयोग देशी पद्धतिसे खादका निर्माण करके किया जाता है।

वर्तमानमे हरे चारोकी कमी एवं श्रम-अधिनियमसे गोसदनोको मुक्त करना जरूरी है। पशु-आहार-हेतु प्रयुक्त तिलहनके किस्मोमे शासनद्वारा अन्य मदोके अनुरूप सब्सिडी (शासन-अनुदान) देकर गोपालनको सहज बनाया जा सकता है।

समय-समयपर अवैध रूपसे ले जाये जा रहे गोवशका सरक्षण किया गया है। जनताके तन-मन-धनके सहयोगसे हमारा यह पावन सस्थान आज नगरके सस्कारका अङ्ग बन चुका है। शायद यही विश्वास इस सस्थाका आधार है जो सदैव पुख्ता होता रहेगा एव भगवान् श्रीकृष्णका गोवश अपने आशीषसे जन-जनका कल्याण करता रहेगा।

[प्रेषक—श्रीनथमलजी अग्रवाल]

---

(८) श्रीलक्ष्मी-गोशाला, धार (म० प्र०)

सन् १९१५ ई० मे मध्यप्रदेशके मालवा अञ्चलकी तत्कालीन धार रियासतकी महारानी लक्ष्मीबाई पँवार साहिबाके नामसे 'श्रीलक्ष्मीबाई गोशाला' नामक एक गोशाला ४६ बीघा जमीनपर स्थापित की गयी थी, जिसमे आज गोचारण-हेतु खुली भूमि, कर्मचारियोके आवास, कार्यालय तथा घास-गोदामकी समुचित व्यवस्था है। वर्तमानमे यहाँ ७५ पशु हैं। वास्तवमे यह गोशाला न होकर इस क्षेत्रके लँगडे-लूले, अपाहिज और वृद्ध पशुओ तथा मध्यप्रदेश गोरक्षण-कानूनके अन्तर्गत जब्त पशुओंका शरणस्थल है। यहाँ उन्हे पर्याप्त मात्रामे चारा-पानी और आश्रय मिलता है।

गोशालाकी ४६ बीघा खुली भूमिके सिवाय ग्राम [illegible] दक्षिणमे ६२ बीघाकी एक बीड (चक) है, जिससे लगभग एक लाख घास-पिडी (बोझा) प्रतिवर्ष प्राप्त होती हैं। यही इनके अपने अच्छे स्रोत हैं। गोशालाका रख-रखाव तथा व्यवस्था

आदिका खर्च दान एव गोवर-खाद और कडोकी विक्रीसे प्राप्त धनराशिसे गोशाला-कमेटीके माध्यमसे होता है। यहाँ दूधका उत्पादन और विक्रय नहीं किया जाता; क्योकि अच्छी नस्लके पशु और उनपर होनेवाला व्यय गोशाला-कमेटीकी आर्थिक स्थितिसे ऊपर है।

इस गोशालाके इतिहासमें एक महत्त्वपूर्ण घटना दिनाङ्क १६-१२-८८ की है, जव श्रीमेहताजी, मालेगाँव (महाराष्ट्र) के सहयोगसे वधके लिये ले जायी जा रही ४८८ गायोंके झुडको मध्यप्रदेश पुलिसकी सहायतासे पकडकर इस गोशालामे काफी समयतक रखा गया। न्यायालयके आदेश और संस्थाके नियमके अनुसार बादमें इन गायोंको गोभक्तोमें वितरित कर दिया गया। यह प्रकरण सुप्रीमकोर्ट दिल्लीतक चला और अन्तमे गोभक्तोंकी विजय हुई। इस घटनाके बादसे पुलिसद्वारा जब्त किये गये सैकड़ो गाय-बैलोंको और कृषकोंद्वारा उपेक्षित बहुत-से गाय-बैलोको इस गोशालाद्वारा जीवनदान देनेका क्रम चालू है। गोवशके संरक्षणमें यह संस्था मालवा क्षेत्रमें अग्रणी है।

वर्तमानमे गोशालाका भवन, गोदाम, आवासीय कमरे आदि अत्यन्त पुराने और जीर्ण-शीर्ण-अवस्थामें हो गये हैं।

—प्रो० श्रीउमाकांतजी शुक्ल

(९) श्रीगोपाल गोशाला, महिदपुर (उज्जैन)

महिदपुर, जिला उज्जैनमे 'श्रीगोपाल गोशाला' नामक एक गोशाला है। यह गोशाला सन् १९१९ ई०मे स्थापित हुई। इस गोशालामें ४० गाये, १७ बछडे तथा एक साँड़ है। मुख्य रूपसे यहाँ मालवी नस्लकी गायें हैं। गोशालाके पास ३० बीघा गोचर-भूमि है। इसलिये गोपालन आदिमे सुविधा है, चारे आदिकी कठिनाई नहीं रहती। गोशालाकी एक धर्मशाला भी है, उससे भी गोशालाको आयकी प्राप्ति होती है। यहाँ न कोई वैज्ञानिक प्रयोग किये गये है और न गोशालामें चिकित्साकी कोई समुचित व्यवस्था है। स्थानीय चिकित्सालयमें चिकित्सा करायी जाती है। गोशालाके आदर्श स्वरूपके विषयमे अच्छी जानकारी उपलब्ध हो जाय तो हम उसे अमलमें लानेकी ओर विशेष सचेष्ट होनेका प्रयत्न करेंगे। इस ओर हमारा प्रयत्न है। फिर भी इस गोशालाकी वर्तमान स्थिति अच्छी है। हमारे आस-पास उज्जैन, आगर, रतलाम तथा आलोटमे भी कुछ गोशालाएँ हैं।

—श्रीमधुसूदनजी आचार्य, अध्यक्ष

(१०) श्रीमाधव गौशाला, उज्जैन

श्रीभगवान् महाकालकी पावन नगरी एव भगवान् श्रीकृष्ण तथा सुदामाकी विद्यास्थली उज्जैनमें सन् १८९० में 'श्रीमाधव गौशाला' स्थापित हुई। संस्था लगभग १०४ वर्ष प्राचीन है। गौशालाद्वारा गोपालन एव गोसंवर्धनका पुनीत कार्य सम्पन्न हो रहा है।

गौशालामे २३ दुधार गायें, १४ दूधरहित केड़ी-केड़े तथा २ साँड हैं। घास-वीडकी व्यवस्था नहीं होनेसे वर्तमानमे सीमित सख्यामे अनुपयोगी गोधनका पालन-पोषण हो रहा है। संस्थामें अधिक संख्यामे वृद्ध गोधनका पालन-पोषण हो सके, इसके लिये गम्भीरतासे हम प्रयत्नशील हैं।

गौशालामे दैनिक दूधका अनुपात लगभग ११० लीटर है। गौशालाकी ग्राम भूतिया, पण्डयाखेड़ी तथा सुरासाचकमें कृषि-भूमि एवं सुरासा ग्राममें चरागाहकी भूमि है। प्रभु-कृपासे गौशाला एक आत्मनिर्भर संस्था है। गायोंके लिये आधुनिक आरामदायक आर० सी० सी० के ३० फुट ×२०० फुट आकारके पक्के शेड-निर्माणकी योजनाको शीघ्र ही कार्यान्वित किया जा रहा है, इनमें गोवंशकी सुविधाके लिये बिजली, पंखे, नल आदिकी आधुनिक व्यवस्था की जायगी।

गौशाला केन्द्रीय एवं राज्य-सहायता-अनुदानके लिये एक मान्यता-प्राप्त संस्था है।

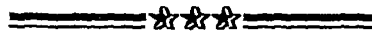
[प्रेषक—श्रीमुरलीधरजी गुप्ता, उपाध्यक्ष]

(११) गोपाल-इफ्तखार गोशाला, जावरा (मध्यप्रदेश)

वर्तमान मध्यप्रदेशके मालवा-अञ्चलमे एक जावरा रियासत थी। यहाँ मुस्लिम-जनसंख्या बड़ी संख्यामें थी और शासन भी नवाब साहबका था। यहाँ लगभग २०० गौओंका वध प्रतिमाह होता था। इससे स्थानीय और पास-पड़ोसकी अन्य रियासतों, जैसे—रतलाम, सैलाना, मन्दसौर (ग्वालियर), आलोट (होल्कर)-की हिन्दू-जनता अत्यन्त दुखी थी।

संवत् १९७८ विक्रमीमें 'श्रीरतलाम-गौरक्षा-मण्डल' की तरफसे सेठ केशरीमलजी झालानी और सेठ नारायणदासजी पोतदारने नवाब साहब श्रीमेजर इफ्तखार अली खाँ साहबसे उनके राज्यमें गोवध-बंदीके लिये निवेदन किया तथा गोशाला आदिके लिये जमीनके वास्ते भी प्रार्थना की। इसपर नवाब साहबने सहर्ष तत्कालीन पचीस हजार रुपये-मूल्यकी खुली भूमि गोशाला, धर्मशाला बनाने-हेतु प्रदान की। यह एक घट मात्र नहीं है, अपितु यह श्रीमत नवाब साहबकी उदारत समभाव और गोभक्तिकी बेजोड मिसाल है। शिष्टमण्डल अपनी कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए गोशालाका नामकरण 'श्रीइफ्तख गोपाल गोशाला जावरा' रखनेका प्रस्ताव नवाब साहबके सम रखा, किंतु नवाब साहबने 'गोपाल' का नाम पहले हो चाहिये, ऐसा कहते हुए मजूरी प्रदान की। यह उनकी उदार और महानता है। आज भी यह गोशाला गोमाताकी सेवामे ल है। इसके साथ ही मालवा क्षेत्रमे उज्जैन, इन्दौर, धा रतलाम,मदसौर, सैलाना, ताल तथा आलोट आदि स्थानोमे गोशालाएँ हैं।

—प्रो० श्रीउमाकातजी शुव



(१२) स्वामी राधाकृष्ण गौशाला, सेन्धवा (मध्यप्रदेश)

दक्षिण-पश्चिम मध्यप्रदेशके महाराष्ट्र प्रान्तकी सीमा-रेखापर सेन्धवा नामका एक नगर स्थित है। प्राकृतिक दृष्टिसे यह क्षेत्र अत्यन्त रमणीय एव भव्य है। इस नगरके उत्तर-पूर्वकी ओर विशाल वटवृक्षकी शाखा-प्रशाखाओसे आच्छादित एक सुरम्य पर्वत-श्रेणीके नीचे एक जलकुण्ड है, जो इस वनप्रदेशमे श्रीदेवझिरी तीर्थस्थलके नामसे सुविख्यात है। यहाँ भगवान् शिव एवं श्रीहनुमन्तरायजीका अति सुन्दर मन्दिर एवं यज्ञशाला है।

इसी पुण्यमय पवित्र स्थलको श्रीस्वामी राधाकृष्ण बाबाजीने अपनी भक्तिमय सगीत-साधनासे चैतन्यमय बना दिया था। पूज्य स्वामीजी महान् गोभक्त भी थे। आपके आश्रममे अनेक गौएँ रहती थीं। वे स्वयं अपने हाथोसे गो-सेवाके सभी कार्य करते थे। श्रीबाबाजीके महाप्रयाणके बाद आपकी स्मृतिको चिरस्थायी बनानेके लिये सेन्धवा नगरके प्रबुद्ध धार्मिक गोभक्तोंने सन् १९४९ मे स्थानीय साधनसम्पन्न लोगोके सहयोगसे एक समितिका गठन किया और स्वामीजीद्वारा स्थापित गोशालाका कार्य और आगे बढ़ानेका निर्णय लिया। प्रारम्भमें अर्थ-व्यवस्था-सम्बन्धी कठिनाइयाँ आयीं, किंतु गौ माताकी कृपासे सारे कार्य सम्पन्न होते गये और वर्तमानमे यहाँ गोसेवाका कार्य अच्छी दशामे चल रहा है। आज यहाँ गायोके लिये भवन तथा चारा-भंडार-गृह भी है। बछड़ोके आवास-हेतु अलग भवन हैं। संत-निवास तथा अतिथिशाला भी है। गौशालासे सलग्न ही ४४ एकड कृषिभूमि है, कुएँ हैं। यहाँसे हरा चारा तथा पा गौओको उपलब्ध कराया जाता है। गौशालासे उपलब्ध गोबरव खाद खेतीके काम आती है, जिससे अन्नकी गुणवत्ता बनी हु है। गौओंसे प्राप्त दूध उपभोक्ताओको उपलब्ध कराया जाता है वर्तमानमे गोधनकी सख्या ९७ है।

बाबे-आगरा-मार्गके सनिकट होनेसे इस मार्गसे वध हेतु पशुओका निकास होता रहता है। ऐसे पशुओको पकडव गौशालाद्वारा सरक्षण दिया जाता है, किंतु कानूनी कमजोरियोंव लाभ उठाकर असामाजिक तत्त्व—कसाई दडित नहीं हो पा और वे गोवंशको छुड़ाकर ले जाते हैं। ऐसी स्थिति देखकर ब दुःख होता है तथापि इस ओर सतत चेष्टा की जाती रही है

यह सस्था केवल गोशाला, गो-सवर्धनतक ही सीमि नहीं है, बल्कि गोपाष्टमी आदि विशेष पर्वोपर जनसाधारणव इस ओर बढनेके लिये प्रोत्साहित किया जाता है। गोसेवाके साथ ही सत-सेवा तथा सत्सग आदिके कार्य भी यहाँ चल रहते हैं। अनेक संत-महात्माओंके आशीर्वाद इस गोशालाको प्राप्त हैं।

गोधन, गोवश एव गोसवर्धन तथा गोपालनके लि सबसे मुख्य बात यह है कि गोशालाके पास अधिक-से-अधिक गोचरभूमि हो। गोधनका उपचार स्थानीय देशी चिकित्सापद्धतिसे किया जाय। स्थानीय देशी नस्लके पशुनस

प्रोत्साहन देकर गोदुग्धके उत्पादनमे पर्याप्त वृद्धि की जा सकती है। अच्छी नस्लके संकरणके नामपर गौओंपर होनेवाले अमानुषिक अत्याचार वंद किये जायँ। कृषिमें गोबरके खादके उपयोग-हेतु कृषकोंको प्रोत्साहितकर रासायनिक खादसे खेतीको वचाया जाय। विदेशोसे गोवरका आयात और गोमांसका निर्यात—भारतीय पशुधन एवं अर्थव्यवस्थाको चौपट ही करेगा, अतः गोवध-निषेध-हेतु केन्द्रीय सरकारपर दवाव डालकर प्रभावी कानून बनवाकर देशको गोहत्याके कलंकसे मुक्त किया जाय। वस्तुतः गोसेवाका वास्तविक स्वरूप भी यही है। —श्रीहरीलाल गुलजारीलालजी

(१३) श्रीगोपाल गौशाला, शिवपुरकलाँ (मध्यप्रदेश)

पूर्व-ग्वालियर-राज्यके तत्कालीन शासकोद्वारा यहाँ प्रत्येक जिलोमे गोशालाएँ स्थापित की गयी थीं। उसी समय शिवपुरकलाँ (म० प्र०) मे भी सन् १९२५ई० मे एक गौशाला बनायी गयी, साथ ही २९ बीघा भूमि भी इसे प्राप्त हुई। पहले तो बहुत समयतक गौशालाका कार्य प्रगतिपर चलता रहा, किंतु बीचमे कुछ अव्यवस्था हो गयी थी, पुनः सन् १९७१ ई० से इसका कार्य ठीक कर लिया गया है। वर्तमानमे कुल गोवंशकी संख्या ८२ है। इस समय दुधार १५ गाये हैं, बिन ब्यायी २६ हैं। बछड़ा-बछडी, वाखरे २४ तथा बछडा-बछडी दुधवारे १५ हैं, २ साँड़ हैं। गौशालामे देशी तथा माडवारी नस्लकी गायें हैं। एक बीघा भूमिमें पक्की गौशाला बनी है। चारा-भूसा आदि कुछ क्रय किया जाता है। दिनमे गाये चरनेके लिये जंगलमें जाती हैं। हमारी जानकारीमे कुछ गोशालाएँ इस प्रकार हैं—श्रीगोपाल गौशाला डोली बुआका पुल, लश्कर (ग्वालियर), श्रीगोपाल गौशाला, मुरैना, शिवपुरी तथा गुना (म० प्र०) आदिमें भी गोशालाएँ स्थापित हैं। —श्रीमुरारीलालजी गुप्त

(१४) मध्यप्रदेश गोशाला-संघ, भोपाल

५ दिसम्वर १९५० को स्व० बाबू तख्तमल जैनकी प्रेरणासे 'मध्यभारत गोशाला-सघ'की स्थापना हुई। नया मध्यप्रदेश बननेके बाद महाकौशल और मध्यभारतकी गोशाला-सघोका विलीनीकरण होकर १९ मार्च १९६२ मे 'मध्यप्रदेश गोशाला-संघ भोपाल'का नया गठन हुआ।

संघने गोरक्षण और गोसंवर्धनका महत्त्वपूर्ण कार्य किया और शासनसे गोशालाओको विकास-कार्योंके लिये आर्थिक सहयोग दिलाया। सघको शिवपुरी और ओखला नगरोमे गोसदन चलानेके लिये सरकारसे अनुदान प्राप्त हुआ। सघने दोनो गोसदनोको बड़ी कुशलता और मितव्ययतासे वर्षोंतक चलाया। सघको शासनने निवारी तथा भूतिया ग्रामोमे गोसंवर्धन-केन्द्र चलानेका भी उत्तरदायित्व सौंपा। इन दोनो केन्द्रोमे प्रमाणित नस्लोके साँड रखे गये और उनके द्वारा गायोसे अच्छी संतति प्राप्त की गयी। इसी प्रकार विदिशामे भी 'गाँधी-गोशाला' नामक एक गोशाला दुग्ध-उत्पादन तथा गोवश-संरक्षणका कार्य कर रही है।

संघके प्रयत्नसे प्रदेशमे अनेक कार्यकर्ताओको गोशाला-व्यवस्थाका प्रशिक्षण दिलाया गया। संघके निर्देशनमे गोशालाओमे दो विभाग वनाये गये—एकमे अच्छी प्रमाणित नस्लकी गाये रखी गयीं ताकि उनके द्वारा गोवंशकी नस्ल सुधरे और गोसवर्धन-कार्य अग्रसर हो। दूसरे विभागमे अपंग और वृद्ध गौएँ रखी गयीं ताकि उनकी समुचित सेवा हो और उन्हे कसाईकी छुरीसे बचाया जा सके। संघके प्रयासोसे छत्तीसगढ़ अञ्चलकी इंदौर और उज्जैनकी कई गोशालाएँ इस समय उन्नत स्थितिमे हैं, जहाँ दुग्ध-उत्पादन, नस्ल-सुधार और हरा चारा आदिके कार्य होते हैं।

मध्यप्रदेशमे पजीकृत ४३ गोशालाएँ तथा ९ साधारण गोशालाएँ हैं। प्रतिवर्ष लगभग कुछ गोशालाओको शासकीय अनुदान नियमानुसार मिलता है। मध्यप्रदेशके गोसेवी कार्यकर्ताओके प्रयासोसे मध्यप्रदेशके मुख्य मन्त्रीने आचार्य विनोबाभावेकी जन्मशतीपर उन्हे श्रद्धाञ्जलिके रूपमे गोवंशकी रक्षाहेतु 'गोसेवा-आयोग' के गठनका निर्णय किया है। इस गोसेवा-आयोगका मुख्य कार्य गोवंशका परिरक्षण-संवर्धन और विकास होगा तथा यह गोशालाओ और अन्य पशु-कल्याण-सस्थाओके माध्यमसे वृद्ध, अपग और अनुपयोगी पशुओंकी देख-भालकी व्यवस्था करेगा। शासकीय गोसदन भी इसे सौंपे जायँगे और गोवश-सम्बन्धी जो विधान लागू है, उसके क्रियान्वयनके लिये आयोगकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होगी, ऐसा हमारा पूरा विश्वास है।

—डॉ० श्रीक्रान्तिकुमारजी शर्मा, मन्त्री

(१५) श्रीटाटानगर गोशाला, जमशेदपुर (बिहार)

आजसे लगभग ७५ वर्ष पूर्व सन् १९१९ ई० में तत्कालीन गोप्रेमी समाजके जागरूक बन्धुओं तथा समाज-सेवियोने गौके प्रति अपने कर्तव्यका पालन करते हुए गोवंशके संरक्षण, उसकी सेवा और संवर्धनके लिये 'सनातन-धर्म-गोरक्षिणी-सभा' के नामसे एक गोशालाकी स्थापना की, जो आज 'श्रीटाटानगर गोशाला' के नामसे प्रसिद्ध है। उस समय दानमे प्राप्त एक भूखण्डपर कुछ अपंग, अनाथ गायोंको साथ लेकर गोसेवाका व्रत लिया गया और इस तरह एक लोकोपकारी संस्थाका प्रारम्भ हुआ जो अपनी सेवाओंद्वारा इस समय बिहारकी प्रमुख गोशालाओंमे परिगणित की जाती है।

इस गोशालामें मुख्य रूपसे सूखी, बूढी, बीमार, अपाहिज और अनुपयोगी गायोंका पालन-पोषण होता है तथा उनकी निःस्वार्थ सेवा की जाती है। शुद्ध दूधकी विशेष आपूर्तिके लिये भी यह सतत चेष्टित है। इस समय गोशालामे दूधका उत्पादन लगभग ११००-१२०० लीटर प्रतिदिन हो रहा है। अपने ७५ वर्षोके पूर्व-इतिहासमे इस गोशालाने अनेक उतार-चढ़ाव देखे है और गोपालनकी अनेक कठिनाइयोका अनुभव किया है। इस सम्बन्धमे हमारा कहना है कि गायोके हितमे किये जानेवाले कार्योंमे देशभरके सभी गोप्रेमियो तथा अनुभवी जनोका सहयोग मिलना आवश्यक है। बिना अनुभवी व्यक्तिके रहते गायोंकी देख-रेख तथा सार-सँभालमे कठिनाई पड़ती है। अतः सभीको गोसेवाके लिये जागरूक रहना चाहिये।

—व्यवस्थापक
श्रीटाटानगर गोशाला



(१६) श्रीकृष्ण गोशाला—झालरापाटन सिटी (राजस्थान)

आज देशमे अंधाधुंध गोवशकी हत्या हो रही है। सरकार गोवधपर प्रतिबन्ध लगानेमे सक्षम नहीं है। कसाइयोपर कोई रोक-टोक नहीं है। यह बात सबकी जानकारीमे है, सबके सामने है, किंतु गोभक्तोंद्वारा प्रबल विरोध किये जानेपर भी कोई आशाजनक परिणाम सामने नहीं आ रहा है और न सरकारद्वारा गोपालनकी कोई विशेष प्रेरणा, प्रोत्साहन ही प्राप्त हो रहा है। यहाँतक कि गोशालाके नामपर भूमि प्राप्त करना और भी कठिन हो गया है। राजस्थानके झालरापाटनमे भी यही स्थिति है।

इसी दृष्टिसे हालहीमे आजसे लगभग २ वर्ष-पूर्व एक गोशाला खोली गयी, जिसमे कसाइयोद्वारा छुड़ाये गये गोधनको सरक्षण दिया जाता है। वर्तमानमे गोशालाके गोधनकी सख्या १०० के आस-पास है। किंतु दूध देनेवाली गौएँ नहीं है। सहायताराशिसे गोशालाका कार्य चलता है। दूध उपलब्ध न होनेपर भी गोधनके गोमूत्रसे विशेष लाभ प्राप्त हो रहा है। कई बीमारियाँ इसकी गन्धसे ही दूर हो जाती है। बीमारीवाले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं और आस-पासका वातावरण शुद्ध रहता है। सुबह-सुबह गायका मुँह देखनेसे दिन शुभ बीतता है तथा मङ्गल होता है।

अभी इस गोशालाके पास अपनी कोई गोचरभूमि नहीं है। क़तलखाने जानेवाला गोधन जो भूखा-प्यासा, बीमार अथवा अपग रहता है, उसके इलाज तथा देख-रेख आदिमें बडी कठिनाई होती है। काफी देख-भालके बाद भी गोधनको बचाना बडा मुश्किल होता है। ऐसा गोधन तो केवल सेवा करनेके लिये होता है। इस असहाय गोधनसे कोई प्रत्यक्ष लाभ तो दीखता नहीं, किंतु जो पुण्यार्जन होता है, उसकी कोई तुलना नहीं। गायको जीवनदान देनेसे अधिक और क्या पुण्य कार्य हो सकता है। अतः सभी लोगोको इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

—श्रीकृष्ण गोशाला एवं जनकल्याण-ट्रस्ट



(१७) राजस्थान-गोसेवा-संघ, दुर्गापुरा (जयपुर)

(श्रीमाणिकचन्दजी वोहरा, अध्यक्ष)

'राजस्थान-गोसेवा-संघ' की स्थापना १९५४ मे हुई। गायके विषयमे परम्परागत सास्कृतिक भावना और वैज्ञानिक दृष्टिका समन्वय करते हुए गोरक्षण, गोपालन और गोसवर्धनके कार्यक्रमोद्वारा भारतीय समाजमे गोवशकी पुनःस्थापना करना इसका मुख्य उद्देश्य रहा है। प्रथमतः यह कार्य 'अखिल भारत-गो-सेवा-संघ, वर्धा' की शाखाके रूपमे प्रारम्भ हुआ और १९५४ मे एक स्वतन्त्र सस्थाके रूपमे इस संघका गठन हुआ।

राजस्थानका सौभाग्य है कि यहाँ भारत-प्रसिद्ध गो-नस्ले पायी जाती हैं और यहाँके निवासियोकी गायके प्रति असीम भक्ति है। किंतु बार-बार वर्षाका अभाव तथा अकाल भी राजस्थानकी नियति है। अकालके वर्षमें गोपालक अपनी गायोको लेकर चारेकी तलाशमे मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश आदि समीपवर्ती प्रदेशोमे जाते थे और 'गोसेवा-संघ' ने भी १९५१-५२ के अकालमे यही नीति अपनायी, किंतु अनुभव यह रहा कि गये हुए गोधनमेसे मुश्किलसे एक तिहाई गोधन वापिस आ पाता था। अतएव बादके अकालोमे सघद्वारा बाहरसे चारा लाकर सस्ते दामोपर गोपालकोको उपलब्ध कराने तथा पशु-शिविर एव 'चारा-दाना-केन्द्र' खोलनेका कार्यक्रम बनाया। १९५१-५२ से प्रारम्भ करके १९८९-९० तकके अकालोमे 'राजस्थान-गोसेवा-सघ' ने हर बार अपनी शक्तिके अनुसार दान-दाताओके सहयोगसे लाखों गोधनको बचानेका प्रयत्न किया। अकालकी समाप्तिके वाद भी संघके पशु-शिविरोमे ऐसा गोधन रह जाता है, जैसे कमजोर, बूढी, अपंग गाय, बैल, वछिया आदि, जिन्हे कोई सँभालनेके लिये तैयार नहीं होता और अकालकी स्थिति न होनेके कारण राजकीय सहायता भी प्राप्त नहीं होती। ऐसे गोधनको वर्षोतक पालना भी एक व्ययसाध्य किंतु मानवीय कर्तव्य है। १९८७-८८ मे पड़े भयकर अकालकी समाप्तिके वाद 'गोसेवा-सघ' के पास लगभग ६ हजार अनुपयोगी गोधन वच गया। जिसे सघके विभिन्न गोसदनोमे रखा गया। उपयोगी पशुधन विश्वस्त गोपालकोमे वितरण भी किया जाता है। फिर भी काफी गोधन वचा रहता है।

राजस्थानकी पाकिस्तानसे लगी हुई लबी सीमाएँ हैं और पाकिस्तानमे गोमासकी पूर्तिके लिये काफी गाये चोरी-छिपे ले जायी जाती हे। अकालसे वची गाये रखनेके लिये एव कत्लसे छुडायी गायोको रखनेके लिये श्रीगंगानगरसे जैसलमेरतक संघके निम्न गोसदन हैं—

(१) छत्तरगढ़—यहाँपर 'राजस्थान भूदान-यज्ञ-बोर्ड'-की ओरसे प्राप्त २००० बीघा ऊबड़-खाबड़ टीबोंवाली असिंचित भूमि (बादमें कुछ सिंचित बनायी गयी) उपलब्ध है। गोसेवा एवं वृक्षपालनके लिये यहाँपर व्यापक प्रयत्न होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। यहाँ संघकी बडी गोशाला एवं गोसदन है। कुल गोवश ४७५ है, जिसमें अधिकांश अनुत्पादक हैं।

(२) अनूपगढ़—यहाँ सघकी एक बड़ी गोशाला है और १३१ बीघा सिंचित-असिंचित जमीन है। यहाँपर गोधनकी संख्या २३२ है।

(३) भादराराय—यह गोसदन जैसलमेर जिलेमें है। इनमे पलनेवाला १,१०० गोधन गर्भित होनेपर गोपालकोमे वितरित किया जाता रहेगा। गत अकालोमें जैसलमेर जिलेका गोवश काफी कम हो गया है। इस कमीको पूरा करनेमें इस केन्द्रका महत्त्व है। पहले भी काफी गोधन वितरित किया है।

(४) बाजूवाला—यहाँपर संघकी बड़ी गोशाला एवं गोसदन है। स्थानीय सहयोगसे यहाँ आज ५८७ गोधन पल रहा है।

(५) खाजूवाला—यहाँ गोधनकी सख्या आज केवल ९३ है। ५०० तककी व्यवस्था है।

(६) रावला—गोधनकी सख्या आज केवल १४३ है। ५०० तककी व्यवस्था है।

(७) मुण्डा—इसमे गोधन-संख्या आज ४०१ है। ७०० तककी व्यवस्था है। इस तरह कुल गोधन-संख्या ३०३१ है। कुछ गोसदनोमे स्थानीय चारा-दानाका सहयोग है। परंतु साधन, सयोजन एवं व्यवस्था-खर्च संघको उठाना ही पडता है।

पाकिस्तानके अलावा बबईकी ओर भी कत्लके लिये गोधन जाता है। इसकी रोकथामके लिये उदयपुरके समीप कडिया ग्राममें उपयुक्त स्थानपर 'बडगाँव प्रखण्ड सेवा-मण्डल' को आर्थिक सहयोग देकर गोसदन प्रारम्भ किया गया है।

'गोसेवा-संघ' को इन गोसदनोंकी सहायतासे काफी गोधनको पाकिस्तानकी ओर जानेसे रोकनेमें सफलता मिली है। किंतु परिस्थिति और समस्या जितनी विकट है उसके सामने

साधन बहुत सीमित है।

गोपालन-गोसदन-योजना

एक बड़ी चिन्ताका विषय है, देशी नस्लकी गायोका निरन्तर ह्रास। गोसदनोमे जो गाये आती हैं, उनमे बड़ी संख्या बछियोंकी रहती है। शहरोमें सड़कोपर डोलनेवाले आवारा पशुओसे बछियोकी सख्या काफी रहती है। देशमें शहरीकरणकी प्रवृत्ति बढ़ी है, तबसे गोशालाओपर अनुपयोगी गाये लेनेका भार बहुत बढा है। सघकी ओरसे १९५० में सवाईमाधोपुरमे इण्डाला गोसदन प्रारम्भ किया, जिसमे चराईकी खूब सुविधा थी और हजारो पशु रखे जा सकते थे। कितु वह सारा क्षेत्र 'बाघ-परियोजना' मे आ जानेके कारण छोडना पड़ा और आज ऐसे बड़े गोसदनकी आवश्यकता और भी बढ गयी है, जहाँ गोशालाएँ अपना ऐसा पशुधन भेज सके।

जैसलमेर जिलेके सीमावर्ती जगलोमें संघद्वारा वर्ष ८४-८५ मे अछूते खडे सेवण घासको कटवाकर अकाल-ग्रसित जिलोमे पहुँचाया गया था। जो अपने-आपमे अभूतपूर्व कार्य था।

सघद्वारा इन गोसदनोमें अच्छी नस्लोके साँड भी रखे जानेकी व्यवस्था है ताकि अनुपयोगी पशुधन उत्पादन-योग्य बन सके।

जैसलमेर फॉडर बैंक (चारा-संग्रहण)-योजना

जैसलमेर जिलेमे मोहनगढ नाख सेवण घासका बहुत बडा क्षेत्र है। जहाँ हमने गत वर्षोंमे फॉडर बैंकके द्वारा हजारो मन सेवण घासकी कलारे लगार्यी। यह घास अकालके दिनोमे बहुत उपयोगी साबित हुई। उस योजनाको हम पुनः शुरू करना चाहते हैं।

गो-विकासकी स्वावलम्बी योजना—गोरस भंडार

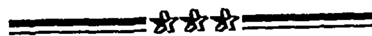
अकालमे गोरक्षणसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है गायके प्रति पशुपालकोमे रुचि जाग्रत् करना, ताकि घर-घर गोपालन हो सके। इस दृष्टिसे गोरस-भंडारका प्रयोग काफी सफल रहा है।

'राजस्थान गोसेवा-सघ'ने जयपुर चोमू रोडपर बांडी नदीके क्षेत्रमे अपना दूध-सग्रह-क्षेत्र बनाया और जयपुरमे घर-घर गायके दूधका वितरण किया। बाडी क्षेत्रके ४० गाँवोमे ८० प्रतिशत भैंस तथा २० प्रतिशत गाये थीं। आज ३० वरसके अथक प्रयत्नोके बाद अनुपात उलट गया है—८० प्रतिशत गाये हैं और २० प्रतिशत भैंसे हैं। उस क्षेत्रमे घर-घर गाय पलती देखकर गोप्रेमी मुग्ध हो जाते हैं।

जयपुर बांडी क्षेत्रके प्रयोगसे उत्साहित होकर 'श्रीकृष्ण-जन्म-स्थान मथुरा'मे गोरस-भडार विकसित करनेकी जिम्मेदारी भी 'राजस्थान गोसेवा-सघ'ने ली है।

'राजस्थान गोसेवा-सघ'की योजना है कि राजस्थानके अनेक क्षेत्रोमे गोरस-भडार कायम करके गोपालनके क्षेत्र विकसित किये जायँ। अभी बीकानेर, जोधपुर और दौसा—इन तीन स्थानोपर कार्य प्रारम्भ करनेकी इच्छा है।

राजस्थानकी गोशालाएँ एव गोपालनमे रुचि रखनेवाली सस्थाएँ सुयोग्य भावनाशील कार्यकर्ताओकी कमी महसूस करती है। सघके प्रधान कार्यालयमे कृषि-गोपालन-केन्द्र तो है ही जहाँ गोनस्ल-सुधारका कार्य हो रहा है, कितु साथ ही प्रशिक्षण-केन्द्रकी व्यवस्था भी है। इन योजनाओंके निष्ठापूर्वक कार्यान्वियनसे हम गायको बचानेके साथ जीव-दया, शाकाहार, पर्यावरण एव गोबर-खादके जरिये, अग्रेजी खादद्वारा होती अपनी बरबादीको तथा देश और मानवताको बचा सकेगे। तेल खत्म होते ही ट्रैक्टर जोत खत्म होगी तब हम बची गायोसे बैल ले सकेंगे। गाय बचेगी तो हम बचेगे, हमारे बच्चे पोषित होंगे और खेत बचेगे।



(१८) श्रीपंचायत गोशाला, सूरजगढ़ (राजस्थान)

राजस्थानके शेखावाटी अञ्चलके उत्तर-पूर्वमे हरियाणा सीमाके संनिकट सूरजगढ़ नामक एक नगर है। लगभग दो सौ वर्ष पूर्वकी बात है, एक दिन तत्कालीन बिसाऊ नरेश स्व० सूरजसिहजी अपने परिकरोसहित भ्रमण कर रहे थे। इस स्थानपर पहुँचनेपर रात्रि हो गयी, अतः राजाने ससैन्य वहींपर विश्राम किया। उसी रात वहाँ एक गौ माता अपने नवजात बछड़ेकी रक्षा-हेतु पूरी रात हिंसक जानवरसे मुकाबला करती रही। सूर्योदय होनेपर इस विस्मयकारी घटनाकी जब ठाकुर साहबको जानकारी हुई तो वे भावविभोर हो गये और उस क्षेत्रको विलक्षण वीरभूमि मानकर उन्होंने अपने नामपर 'सूरजगढ़' स्थापनाका श्रीगणेश किया—ऐसी जनश्रुति है। धीरे-धीरे यहाँ नगर बस गया।

धर्मपरायण, सदाचारी लोगोंने सर्वसाधारणके कल्याणके लिये मन्दिर, धर्मशाला, पाठशाला, [illegible]

गोशाला आदिकी स्थान-स्थानपर स्थापना की। उसी क्रममे स्वनामधन्य गोलोकवासी श्रीरामनारायणजी कायाँने विक्रम-संवत् १९६० मे उक्त गोशालाकी स्थापना की।

एक बार विसाऊ दरवार विशनसिंहजीको कोई असाध्य रोग हो गया था। उसके दोष-निवारणके लिये उन्होने फरट गाँवके पास लगभग ७५० बीघा गोचरभूमि गोशालाको प्रदान की। कहते हैं, इससे ठाकुर साहवको उस रोगसे मुक्ति मिली थी। रजवाडोके समयमे क्षेत्रके शासकोका गोशालाको विशेष सहयोग प्राप्त होता रहा, वे स्वय गोपालक थे। उनकी ओरसे भवनके लिये भूमि एवं लगभग २५०० बीघा गोचरभूमि (चरागाह) गौ माताओके लिये प्राप्त हुई, जिसपर इस समय पूर्ण स्वामित्व गोशालाका है। इसमे गोशाला एवं गाँवकी गाये चरती हैं।

भगवान् गोविन्द गोपालकी असीम अनुकम्पा एवं व्यापक जन-सहयोगसे भयंकर दुर्भिक्ष तथा विषम परिस्थितियोका भी गोशालाने दृढतासे मुकाबला किया। गोशालाका मुख्य उद्देश्य लूली-लँगडी तथा असहाय गायोकी सेवा-शुश्रूषा करना और गोधनकी निरन्तर वृद्धि करना ही रहा है जो भगवत्कृपासे अनवरत चल रहा है। सचमुच आज यह गोशाला झुँझुनू जिलेकी सर्वाधिक भाग्यशाली गोशाला है। इसके पास कृषि-भूमि पर्याप्त है, जिससे हरा चारा, घास, गुँवार, कडबी, पाला आदि गोमाताओको सुलभ होता है। समीपवर्ती ग्राम काजडामें भी गोचरभूमि (चरागाह) है, जहाँ गौएँ चरती हैं। भगवत्कृपासे इस समय गोशालामे दूध देनेवाली लगभग ४० गायें हैं और अच्छी नस्लके साँड भी हैं। गोशाला निरन्तर प्रगतिके पथपर अग्रसर होकर गौ माताओकी सेवा करे—यही व्रजनन्दन गोपालसे करबद्ध प्रार्थना है। —श्रीभालचन्द्रजी शर्मा 'गीतेश'



(१९) श्रीकलीकुंड मेनालक्ष्मी गौशाला एवं स्व० जोरमल लक्ष्मीचन्द पिंजरापोल, धोलका (गुजरात)

'श्रीकलीकुड मेनालक्ष्मी गौशाला' एव 'स्व० जोरमल लक्ष्मीचन्द पिंजरापोल' की स्थापना मकरसक्रान्ति १९८८ ई० को वावला-खेडा हाइवे धोलकाके पास अहमदाबादमे हुई। इसमे 'गौशाला-विभाग' तथा 'पिंजरापोल-विभाग'—ये दो विभाग हैं। गौशाला-विभागमे २६ गाये, २९ बाछे-बाछी, ५साँड तथा ५ बैल हें, इस कुल गोधनकी सख्या ६५ है। इसी प्रकार पिंजरापोल-विभागमे ६ गाये, १० बैल तथा अन्य जानवर हैं। मुख्यतः यहाँ काँकरेज, गीर तथा मिश्र नस्लका गोधन है। गौशालाके पास अपनी कोई गोचरभूमि नहीं है, किंतु ३ बीघा क्षेत्रफल होनेसे उसीमे गाये घूमती-फिरती हैं। उपलब्ध शुद्ध दूध गरीब मरीजोको निःशुल्क दिया जाता है, कुछ मन्दिरके कार्यमे प्रयुक्त होता है तथा कुछ विक्री कर दिया जाता है। शेषका घी बनाया जाता है। गोधनकी चिकित्साके लिये स्वयंका चिकित्सालय है। अनुपयोगी गोधनकी संख्या बढ जानेपर उसे 'अहमदाबाद पिंजरापोल' में भेज दिया जाता है और बाछे-बाछीको इस शर्तके साथ गरीब पशुपालकको वितरित कर देते हैं कि वह किसी भी हालतमे उन्हे बेचे नहीं और जब अनुपयोगी लगें तो पुनः सस्थामे वापस कर दे।

मूलतः इस सस्थाकी स्थापना गोसेवाकी दृष्टिसे तथा गोमाताके ऋणसे उऋण होनेके लिये हुई। हमारा यह मानना है कि यदि गायको मातृतुल्य समझकर भक्तिपूर्वक गायकी सेवा होगी तो वही स्वयमे एक आदर्श गोशाला बन जायगी। अतः गोशालाओ या पिजरापोलोमें मूलतः कर्तव्य और सेवाका ही भाव होना चाहिये। —डॉ० सुरेश एस्० झवेरी



(२०) श्रीगोपालक-संघ (गोरक्षण-संस्था), सोलापुर

'श्रीगोपालक-सघ (गोरक्षण-संस्था)' की स्थापना सन् १९३२-३३ ई० मे सोलापुरमे हुई। इस सस्थाकी स्थापनाका मुख्य उद्देश्य है—जीवदया, अहिसा और गोवध-बदी तथा कतलखानेसे गोवशका बचाव करना एव गोपालन तथा गोसवर्धन करना, गोदुग्धकी महत्ता समझाकर अधिकाधिक उत्पादन करना तथा उसका प्रचार-प्रसार करना, खेतीके लिये जुताई आदिके हेतु अच्छी नसलके बछडोको तैयार करके उन्हे गरीब किसानोको वितरित करना। हमारी इस संस्थाने शुरूसे आजतक लगभग तीन हजारसे भी अधिक बछड़ोंका वितरण किया है।

इस संस्थामे कुल गोधनकी वर्तमान संख्या १०२ है, जिनमे ६५ गाये, ८ बैल, १ साँड तथा २८ बछडे हैं। मुख्य रूपसे देशी, गीर और संकरित नसलें हैं। तीन गोसदन हैं।

पानीके लिये एक बड़ा हौद है। चारेमे कडवी, मकई तथा हरी घास दी जाती है। जानवर खेतमे लगभग ५ घंटेतक चरते हैं। गायोके लिये एक चरागाह भी है और लगभग ९५ एकड गोचरभूमि है। हम अपनी गायोसे प्राप्त दूधको उचित दामोमे गरीबो, छोटे बालको, बीमार व्यक्तियो तथा वयोवृद्धजनोको उपयोगके लिये देते हैं। हमारी गोशाला तथा सस्थाके लोगोका गायोपर इतना प्रेम है कि उनकी आवाज सुनकर गाये वहीं खडी हो जाती हैं।

हमारा यह अनुभव है कि गोपालनमे आर्थिक कठिनाइयाँ आडे आती हैं, अतः गोपालन तथा गोसवर्धनके लिये आयके स्रोतोको ठीक रखना चाहिये तथा स्थानीय सक्रिय कार्यकर्ताओ एव सस्थाओके सहयोगके साथ ही सरकारकी ओरसे भी विशेष प्रोत्साहन एवं सहयोग मिलना चाहिये। अलग-अलग गायो-बैलो आदिके लिये अलग-अलग हवादार गोसदन होने चाहिये। हमारी जानकारीमे बीजापुर तथा वार्शीमे दो पिजरापोल सस्थाएँ हैं।—मन्त्री, श्रीगोपालक-सघ

(२१) श्रीपाँजरापोल-संस्था, साँगली (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्रके साँगली शहरमे श्रीगणपति-मन्दिरके पास श्रीपॉजरापोल-सस्था स्थापित है। यह एक प्राचीन गोशाला है। इसकी स्थापना सन् १९१९ ई० मे हुई। संस्थाके पास कुल १०५ छोटे-बडे सॉड, बछडे तथा गाये हैं। दुधार गाये साँगलीमे हैं तथा अन्य बूढी-अपग, अपत्यहीन गाये कवठेपिरानमे हैं। सॉगलीके पास पॉच एकड जमीन है। इसके अतिरिक्त सॉगलीसे लगभग १५ कि० मी० की दूरीपर कवठेपिरानकी सस्थामे ९० एकड जमीन नदीके किनारे है। अतः दोनो स्थानोसे चारे आदिकी व्यवस्था हो जाती है। कुछ घास-चारा बाजारसे भी खरीदा जाता है, और खेती भी की जाती है। मुख्य रूपसे इस सस्थाके पास गीर, देहाती और खिलार नस्लकी गायें हैं।

एक आदर्श गोशालाके लिये आवश्यक है कि गोशालामे भरसक मात्रामे प्रकाश और प्रदूषणमुक्त शुद्ध हवा होनी चाहिये। साधारणतया एक गायके लिये १०×५ फुटकी जगह होनी चाहिये। चारे-पानीकी पर्याप्त सुविधा हो। गोशाला एव गायोकी रोज सफाई होनी चाहिये। सेवक-वर्ग कुशल एव कर्मठ तथा गोप्रेमी हो। हर हफ्तेमे योग्य चिकित्सकसे गायोंकी देख-भाल करानी चाहिये और गोशालाकी प्रत्येक गायका अलग रेकार्ड, दर्शक-कार्ड तथा रजिस्टर हो, जिसमे उसका प्रत्येक दिनका विवरण हो।—व्यवस्थापक श्रीपाँजरापोल-सस्था—साँगली

(२२) श्रीगौरक्षण-संस्था, धामनगाँव रेलवे, अमरावती (महाराष्ट्र)

अपाहिज, बूढे तथा भाखड जानवरोको उचित सरक्षण देनेके लिये सन् १८८७ ई० मे 'श्रीगौरक्षण-सस्था'की स्थापना की गयी। महाराष्ट्रकी गोशालाओमे इस 'श्रीगौरक्षण-सस्था'का विशिष्ट स्थान है। आज सस्थाको लगभग सौ वर्षसे ऊपर हो चुके हैं, यह निरन्तर प्रगतिपर है। सस्थाके पास आज अपनी खुदकी इमारत है, जहाँ जानवरोका आवास, कार्यालय, कर्मचारी-निवास, बगीचा तथा जानवरोका दवाखाना है। सस्थाके पास १७२ एकड जमीन है, जिसका उपयोग हरा चारा, घास-चारा आदिके लिये होता है। कुछ जमीन चरागाह-हेतु भी प्रयुक्त होती है। गायोके आवास-हेतु सस्थाकी इमारतमे गोठे बने हुए हैं और गायोको सरकी ढेप, फल्ली ढेप, गेहूँ, चोकर, मक्का, चुरी आदि सतुलित आहार दिया जाता है तथा वर्षभर हरा चारा मिलता रहे, ऐसी व्यवस्था भी की गयी है।

सस्थामे प्रतिदिन लगभग १७५ लीटर शुद्ध पौष्टिक दूध होता है। वह संस्थाके कर्मचारियोद्वारा उचित दामोमे घर-घर वितरित किया जाता है तथा जनहितको ध्यानमे रखते हुए अस्पतालोमे मरीजो और सद्यःप्रसूता माताओको निःशुल्क वितरित किया जाता है।

इस 'श्रीगौरक्षण-सस्था'मे गोधनकी कुल सख्या इस समय १९३ है, जिनमेसे ६३ गाये, ८ बैल, ४५ बाछे तथा ७७ बाछी हैं। गायोकी मुख्य नस्लोमे जर्सी २८, होस्टन १८, गीर १० तथा गावरानी ७ हैं।

आदर्श गोशालाके सम्बन्धमे हमारा कहना है कि आदर्श गोशालाको यथासम्भव पूर्णतया स्वावलम्बी होना चाहिये, उनके आयके स्रोत अपने होने चाहिये, तभी ठीकसे गायोंका पालन-पोषण और व्यवस्था-सम्बन्धी कार्य हो पाता है। यदि वह कुछ बचत कर सके तो जरूरतमन्द गोशालाओंको वितरित कर दें। इसके साथ ही योग्य, कुशल, प्रशिक्षित कामगारोंका होना भी एक अच्छी गोशालाके लिये बहुत आवश्यक है। क्योंकि सब साधन रहनेपर योग्य कामगारोके अभावमे गोशाला ठीक चल नहीं पाती।

—श्रीकुंवरलाल गटो, [illegible]

(२३) गोसेवा-समिति, कामठी, नागपुर (महाराष्ट्र)

सन् १९८० मे कामठीमे गोरक्षा तथा गोहत्या-बंदीके लिये विशाल सत्याग्रह हुआ था। उसी समय गोधनके संरक्षण तथा पालन-पोषणके लिये एक समिति बनानेका निर्णय लिया गया। इसके फलस्वरूप १९८२ ई० मे समिति गठित हुई और समितिको गोशालाके लिये ४.७० एकड़ भूमि लीजपर प्राप्त हुई और निर्माण आदि कार्य प्रारम्भ हो गया तथा गोशालाका ठीकसे संचालन १९९२से प्रारम्भ हुआ।

इस समय इस गोशालामे कुल गोधनकी सख्या ३८ है, जिनमें २१ गाय, १ बैल, ३ साँड़ ६ बाछे तथा ७ बाछियाँ है। सभी गायें गॉवरानी नस्लकी हैं। सहयोग-राशिसे गायोंके लिये आवास तथा पानीकी व्यवस्था है। अभी गोशालाके पास कोई चरागाह या गोचर-भूमि नहीं है। जिससे चारे आदिकी व्यवस्थामें कठिनाई होती है। गायोसे प्राप्त शुद्ध दूधको विक्री कर दिया जाता है।

आज गोधनकी हत्या देशकी सबसे बड़ी समस्या है। गोहत्याको रोकनेके लिये सभी लोगोंको मिलकर प्रयत्न करना चाहिये। कतलखाने बद होने चाहिये। जिस राज्यमें गोवंश-वध-सम्बन्धी कानून नहीं है, वहाँ ऐसा कानून बनना चाहिये और लोगोको कानूनकी जानकारी भी करानी चाहिये।

— पं० श्रीमनोहरलालजी शर्मा



(२४) श्रीगौरक्षण-संस्था, यवतमाल (महाराष्ट्र)

यवतमालमे 'श्रीगौरक्षण-संस्था' के नामसे एक गोशाला है। यह अत्यन्त प्राचीन गोशाला है। यह संस्था १९०५ ई० से आजतक सुव्यवस्थित रूपमे चल रही है। प्रारम्भमें इस 'गौरक्षण-सस्था' के पास लगभग १६० एकड़ जमीन थी, किंतु वह सब सीलिंगमे चली गयी, जिससे काफी कठिनाई हुई। शहरमे जमीन है, जहॉपर अभी गोशाला आदि चलती है। जगह तो बहुत है, कितु गायोके लिये कोठा बहुत छोटा है और वह भी प्रायः जीर्ण हो चुका है, इसे बनानेके लिये हम सचेष्ट है।

गोशालामे इस समय गाय-बैल, बछड़ोकी संख्या ९३ है। सभी गायें देशी नस्लकी हैं। गायोके लिये चारा खरीदा जाता है। गोपालनमे मुख्य समस्या आर्थिक रहती है। सरकारको चाहिये कि गोरक्षण-गोशाला आदिकी जमीन-जायदाद आदिको सीलिंग-एक्टसे मुक्त रखे, क्योकि गोरक्षण किसीका व्यक्तिगत कार्य न होकर परोपकारका कार्य है, जीव-दयाका कार्य है। इसपर सरकारको ध्यान देना चाहिये तथा गोपालनको विशेष महत्त्व देना चाहिये।

हमारी जानकारीमे अमरावती, नागपुर, धामनगॉव तथा भद्रावतीमे भी कई गोशालाएँ हैं।

—एस्० बी० अटल



(२५) श्रीपाँजरापोल गोरक्षण-संस्था, पनबेल (महाराष्ट्र)

आजसे बहुत वर्ष पूर्व हमारे यहाँ गाँवमें कुछ गोप्रेमी सज्जनोने गोसेवाके उद्देश्यको ध्यानमें रखकर विचार-विमर्श किया और उस निर्णयके अनुसार सन् १९०८ ई०मे पनबेलमें 'श्रीपाँजरापोल गोरक्षण-संस्था' की स्थापना हुई। आज इस संस्थाको स्थापित हुए लगभग ८६ वर्ष हो गये है और यह धीरे-धीरे प्रगतिकी ओर ही जा रही है।

इस समय संस्थामे गोधनकी कुल संख्या ९८ है, जिसमे ३३ गायें, ३६ बछड़े, २७ बाछी और २ साँड़ है। गाँवडी, गीर, जर्सी, किलारी तथा देशी नस्लके गोधन हैं। संस्थाके पास २७५ एकड़ जमीन है, गोचर-भूमि भी है। गोचरभूमिके घास-चारेका उपयोग होता है। सभी व्यवस्थाएँ ठीक है, कितु सेवाभावी कुशल कर्मचारियोंके अभावमें गायोंकी देख-रेख ठीकसे नहीं हो पाती है। एक अच्छी गोशालाके लिये आवश्यक है कि उसमे जो भी काम करें वे प्रायः गौके प्रति श्रद्धा एवं प्रेम रखें, तभी सच्ची गोसेवा हो सकती है। गोपालन एवं गोसंवर्धनके लिये लोगोंको

अधिक-से-अधिक प्रेरणा देनी चाहिये और गोदुग्धकी विशेष उपयोगिताको समझाते हुए गायों-सम्बन्धी विवरण तथा गोपालन आदिकी बातोके लिये कोई पत्र-पत्रिका प्रकाशमें आनी चाहिये। उसमे ऐसी सामग्री हो जिससे अधिक-से-अधिक लोग इस ओर उन्मुख हो, जिसके पास समय हो, वह समय दे और जिसके पास साधन हो वह साधन उपलब्ध कराये। इस प्रकार पारस्परिक सहयोगसे गोधनकी सेवा तो होगी ही साथ ही गोवशकी रक्षा भी की जा सकेगी।

—व्यवस्थापक
श्रीपॉजरापोल गोरक्षण-सस्था,
पनवेल

(२६) श्रीगोपाल-कृष्ण गोरक्षण-संस्था—मानवत (महाराष्ट्र)

मानवतमें १९७०में इस 'श्रीगोपाल-कृष्ण गोरक्षण-संस्था' की स्थापना हुई। इस समय गोशालामें २१ गाय, ९ बैल, २ सॉड़, १४ बाछे तथा २१ बछिया हैं। गोशालाके पास अपनी थोड़ी-सी गोचर-भूमि होनेसे चारे आदिकी व्यवस्था है, किंतु फिर भी हरी घास आदि खरीदनी पडती है। गायोसे प्राप्त दूध तथा गोवर आदिकी विक्री की जाती है। थोडी खेती भी होती है। नासिक तथा निजामावादमे भी गोशालाएँ हैं। —गोरक्षण-संस्था, मानवत

(२७) गुरुनानक गोशाला, कवंर नगर, जलगाँव (महाराष्ट्र)

जलगॉवके 'गुरुनानक गोशाला' की स्थापनाका एक रोचक इतिहास है, जिसे यहॉपर दिया जा रहा है। मैं 'कल्याण' पत्रका बहुत दिनोंसे पाठक रहा हूँ और इस 'गोशाला' की स्थापनाकी मूल प्रेरणा भी मुझे 'कल्याण' पत्रके पढ़नेसे ही मिली। हुआ यह कि कुछ वर्ष पहले 'कल्याण' के एक साधारण अङ्कके 'पढो, समझो और करो' स्तम्भमे 'दो पैसेका स्कूल' शीर्षकसे एक घटना छपी थी। शीर्षक पढ़ते ही मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि दो पैसेका कैसा स्कूल होगा? जिज्ञासावश पूरा लेख पढ गया। मनमे उमंग हुई कि मैं भी क्यों न दो पैसेसे गोरक्षाका कार्य शुरू करूँ। गौके प्रति प्रेम तो मेरा था ही। बस, फिर मैंने मनमें संकल्प कर लिया कि गोसेवाके लिये एक गोशाला खोलनी चाहिये।

यहॉ गुरुद्वारेमे सत्सगका कार्य चलता रहता है। अत: मुझे अपनी योजनाके प्रचारका अवसर मिल गया। मैंने गोमाताकी महिमा बताते हुए गोरक्षार्थ केवल दो पैसे प्रतिदिन निकालनेकी लोगोसे अपील की। उस अपीलके परिणाम-स्वरूप एक रुपया मासिक चंदा गोरक्षाके लिये देनेवाले कुछ सदस्य बन गये। इससे मेरे मनमे उत्साह बढने लगा।

यहॉ शनिवारको पशु-वाजार लगता है, जिसमे गोवश विक्रीके लिये आता है। उस वाजारसे जो गोवश अनुपयोगी होता था, उसे स्थानीय पिंजरापोलद्वारा खरीदकर सुरक्षित रखा जाता था। कुछ दिन इसी रूपमे गोरक्षाके कार्यमे लगा रहा। बादमें लोगोके सहयोगसे थोडी-सी जमीन भी गोशालाके लिये मिल गयी। पर अव गौएँ कहॉसे आये। अपने दरबार साहबमे दो गौएँ थीं। उनमेसे एक गाय गोशालामें रखी गयी। एक गाय एक अन्य सज्जनने दे दी। इस प्रकार दौ गौओसे इस गोशालाका शुभारम्भ हुआ और गुरुजीके नामपर ही 'गुरुनानक गोशाला' नामकरण किया गया। पिंजरापोलके एक सज्जनके सत्परामर्शद्वारा गोशालाका उद्घाटन हुआ और अक्षय तृतीयाको सन् १९६९ ई० में गोशालाकी स्थापना भी हुई।

इस गोशालाका मुख्य उद्देश्य गोवशको कसाइयोंके हांथसे बचाकर गोशालामे उचित सरक्षण देना है। अनुपयोगी गोवशकी भी यहॉ पालना होती हैं। कई लोग अपने वृद्ध बैल जो खेती करने योग्य नहीं रहते, गोशालामें दे जाते हैं, पहले तो उनके लिये कुछ नहीं लिया जाता था, किंतु अब आर्थिक कठिनाईके कारण स्वल्प धनराशि उनसे ली जाती

है, जो गोधनकी जीवन-रक्षा, चारे-पानी, औषधि आदिके काम आता है। इन प्राणियों—असहाय गोधनोंकी रक्षा करना हमारा मुख्य प्रयोजन है।

इस समय इस छोटी-सी गोशालामे ५०-६० तक गोवंश है और अधिकांश गोवंश जनतासे प्राप्त वृद्ध बैल तथा आर्थिक दृष्टिसे अनुपयोगी गाय आदि हैं। वैसे इस समय गोशालाके पास लगभग १६-१७ एकड़ खेती है, किंतु सिंचाईकी कोई खास व्यवस्था नही है, इसलिये चारा आदि प्राय: खरीदना पड़ता है और सुयोग्य कर्मठ सच्चे गोसेवकों एव गोभक्तोकी हमें आवश्यकता भी है। वैसे यहाँका प्राय: सारा कार्य सेवाभावमें ही होता है। धनके अभावमें भी गो-गोविन्दकी ऐसी कृपा है कि सभी कार्य सुचारु रूपसे चल रहे है। मुझे तो लगता है कि गोसेवा प्रभुकी लीला है और उनकी लीलामें सभी कुछ होता रहता है। उनकी लीलामें सहभागी बननेके लिये यह आवश्यक है कि हमें गोरक्षा एवं गोसेवाके पुण्य कार्यके लिये आगे आना होगा और तभी हम सच्चे गोसेवक एवं सच्चे गोविन्दके उपासक कहे जा सकेगे।

—स्वामी परशुराम गोविंदराम हंस



गोशाला सन्तोषगढ़, ऊना (हिमाचल प्रदेश)

इस गोशालाकी स्थापना सन् १९११-१२ मे हुई थी। श्रीभोलानाथजीने गोभक्तिके वशीभूत हो यह गोशाला वनवायी थी। इस गोशालाकी समुचित व्यवस्थाके लिये एक कमेटीका गठन हर वर्ष किया जाता है। इस कमेटीके पॉच सदस्य हैं।

वर्तमानमें गोशालामें कुल ४७ गाय, ४ साँड़, १४ वछड़े तथा १५ बछिया इस प्रकार ८० पशु हैं। पशुओंके खानेके लिये भूसा-तूड़ी आदि खरीदी जाती है। गोशालाके पास १५० कनाल चरागाह भूमि है। कुछ चरागाह प्रतिवर्ष किरायेपर भी लिये जाते है। पानीकी व्यवस्था गोशालामें है और सोभद्रा नदीका पानी भी वर्ष भर उपलब्ध रहता है। गोमय विक्रय कर दिया जाता है। सन्तोषगढमें सरकारी पशु-चिकित्सालयकी सेवाएँ उपलब्ध हैं, जिससे चिकित्सामें कोई कठिनाई नहीं होती।

इस क्षेत्रकी दो-एक गोशालाओंकी सूचना इस प्रकार है—एक गोशाला 'शिव आश्रम' के नामसे लगभग १० वर्ष पूर्व भोजोआल (जिला-रोपड़, पंजाब) में स्थापित की गयी थी। वह गोशाला सन्तोषगढ़से ६ कि० मी० की दूरीपर है।

इसी प्रकार एक गोसदन खज्जीयॉ, जिला-कॉगड़ा (हि०प्र०) में पशु-पालन-विभाग (हि०प्र०) द्वारा चलाया जा रहा है। इस गोसदनमें १०० से अधिक पशु हैं।

—डॉ० वी०बी० जोशी



मैं गौकी प्रशंसा करूँगा; किंतु यों ही साधारण दृष्टिसे नहीं, वरं इसलिये कि वह इसकी अधिकारिणी है और ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। मैं गायको भगवत्-सृष्टिके चर प्राणि-समाजमें एक ऊँचे आदरणीय स्थानपर खड़ी देखना चाहूँगा। गायसे बढ़कर अन्य कोई भी पशु मनुष्यका मित्र नहीं है और न गाय-ऐसा कोई मधुर स्वभाववाला है। अपने दीप्त, शान्त और ध्यानमग्न नेत्रोंसे संसारको देखनेवाली गायके सौम्य रूपमें सचमुच देवत्व भरा है। उसमें एक महानता और भव्यता है, जो ग्रामदेवताके उपयुक्त है। उसमें शत-प्रतिशत मातृत्व है और उसका मनुष्य-जातिसे यही माताका सम्बन्ध है।

मैं यह नहीं मानता कि गाय एक उदास, अबोध और व्यक्तित्वशून्य प्राणी है; किंतु ऐसा न माननेवाले किसी सशययुक्त मनुष्यको यह मनाना भी मेरे लिये कठिन है। जबतक मनुष्य अपने पशु-मित्रोंके प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार न करेगा तवतक वह उनकी अत्यन्त प्रिय तथा मनोरम विशेषताओंके विषयमें सदा अँधेरेमें ही रहेगा। —श्रीवाल्टर ए० डामर



गोशालाओं और पिंजरापोलोंकी एक प्राचीन तालिका

पंजाब

१. अबोहर मंडी (फीरोजपुर), २ अम्बाला छावनी, ३ अहमदगढ (लुधियाना), ४ अगरोहा (हिसार), ५. अलावलपुर (गुड़गाँवा), ६ अब्दुल्लापुर (गुजराँवाला), ७ अम्बाला, ८ अमृतसर, ९ अजनाला (अमृतसर), १०. बेरी (रोहतक), ११. बहदपुर (काँगडा), १२ बंगा नावनशहर (जलंधर), १३ बयिराबाद (गुजराँवाला), १४ बटाला (गुरदासपुर), १५ बबिआर (अम्बाला), १६ भिवानीसघ (हिसार), १७ भिवानी गोपाल-गोरस (हिसार), १८ चुनियान (लाहौर), १९ दहूबाला (हिसार), २० देघोट (गुडगावाँ), २१ दसुआह (होशियारपुर), २२ दत्ता—शाला डेयरी (हिसार), २३. फर्रुखनगर (गुड़गावाँ), २४ फीरोजपुर, २५. फाजिलका (फीरोजपुर), २६ गुडगावाँ, २७ गीदड़बाह (फीरोजपुर), २८ हिसार, २९ हाँसी (हिसार), ३० होशियारपुर, ३१ इस्माइलाबाद (करनाल), ३२ जंडियाला (अमृतसर), ३३ जलधर, ३४ जरनवाला (लायलपुर), ३५. जगराँव (लुधियाना), ३६ जगाधरी (अम्बाला), ३७ झेलम, ३८ जैजो (होशियारपुर), ३९ झग, ४० करनाल, ४१ कैथल (करनाल), ४२ कसूर (लाहौर), ४३ काद्राबाद फलिया (मुल्तान), ४४ कीरतपुर (होशियारपुर), ४५ लाहौर, ४६ लुधियाना, ४७. लायलपुर, ४८ मुल्तान, ४९ मच्छीवाडा (लुधियाना), ५० मुक्तसर (फीरोजपुर), ५१ मूली (काँगडा), ५२ नयागाँवकसूर (लाहौर), ५३ नरुसुई (गुडगावाँ), ५४. नरबहा (गुडगावाँ), ५५ पानीपत (करनाल), ५६ पहाड़ी (गुडगावाँ), ५७ रोहतक हरियाना, ५८ रोहतक व्यायामशाला, ५९ रेवाड़ी (गुडगावाँ), ६० रावलपिंडी, ६१ राजकोट (लुधियाना), ६२ रूपड (अम्बाला), ६३ सिरसा (हिसार), ६४ सगला (लायलपुर), ६५ संतोषगढ (होशियारपुर), ६६ सियानपुर लोरा (काँगडा), ६७ तलाजा (करनाल), ६८ जीरा (फीरोजपुर), ६९ खरगोधा, ७० कोट निक्का पिंडी भट्टिआन (गुजराँवाला)।

संयुक्त-प्रान्त

१. अजितमाल (इटावा), २ अलीगढ, ३ अलीगढ़-पञ्चायती, ४ अडैल (इलाहाबाद), ५ अछनेरा (आगरा), ६ अम्बाला (सहारनपुर), ७ अलीगज (एटा), ८ अकबरपुर (कानपुर), ९ अमरोहा (अलीगढ), १० अलीपुर (मुजफ्फरगढ), ११ आवागढ (एटा), १२ अयोध्या (फैजाबाद), १३ आगरा, १४ आनन्दपुर (मेरठ), १५ इलाहाबाद, १६ अमेमजा (इटावा), १७ बनारस, १८. बस्ती, १९ बिलग्राम (बाँदा), २० वृन्दावन (मथुरा), २१ बाँदा, २२ बरहज (गोरखपुर), २३ बलिया, २४ बैराना (इलाहाबाद), २५ बिसानो (अलीगढ), २६ बैकुठपुर बावा विहारीजीका (गोरखपुर), २७ बैबर (फर्रुखाबाद), २८ बक्सर (मेरठ), २९ बेढ (गोरखपुर), ३० बेरारी (इटावा), ३१ भरथना (इटावा), ३२ भादन (आगरा), ३३ भरौली (बस्ती), ३४ बेगमाबाद (मेरठ), ३५ बरसूर्ली (अलीगढ), ३६ बिलासी (बदायूँ), ३७ बनसूली (मेरठ), ३८. बुढाना (मुजफ्फरनगर), ३९ बरेली, ४० भटनी (अलीगढ), ४१ भगवाननगर (हरदोई), ४२ भगमाधियानी (मथुरा), ४३ बाराबकी, ४४ बक्सर (नवाबगज), ४५ बदायूँ, ४६ बावली (मेरठ), ४७ भरोतिया (बस्ती), ४८ बल्लार—गोकुल (मथुरा), ४९ बेराडी (इटावा), ५० बुलदशहर, ५१ चँदौसी (मुरादाबाद), ५२ चाँदपुर (बिजनौर), ५३ चिपरामन (फर्रुखाबाद), ५४ छपरा, ५५ चौरी (गोरखपुर), ५६. चिरगाँव (झाँसी), ५७ कानपुर, ५८ डिबाई (बुलदशहर), ५९ डिडवरगज (इटावा), ६० डालमऊ (रायबरेली), ६१ दनकौर (बुलदशहर), ६२ धनस्वा (झाँसी), ६३ देहरादून, ६४ देववद (सहारनपुर), ६५ देवरिया (गोरखपुर), ६६ इटावा, ६७ एटा, ६८ एचना (अलीगढ), ६९ इर्वाह (इटावा), ७० एरच (झाँसी), ७१ गढमुक्तेश्वर (मेरठ), ७२ गोतम (अलीगढ), ७३ गाजियाबाद (मेरठ), ७४ गोलाबाजार (गोरखपुर), ७५ गगेसरी (मुरादाबाद), ७६ गोकुल (मथुरा), ७७ गोरखपुर, ७८ गाजीपुर, ७९ गढीपारसोली (मथुरा), ८० गोपालगढ (इटावा), ८१ गणेशपुर (बस्ती), ८२ गूलपुर (इलाहाबाद), ८३ गायघाट (बनारस), ८४ गाजीपुर (कानपुर), ८५ हँसवा (फतेहपुर), ८६ हरद्वार (सहारनपुर), ८७ हापुड (मेरठ), ८८ हरदोई, ८९ हरदुआ (अलीगढ), ९० हाथरस, ९१ हरदुआगज (अलीगढ), ९२ हमीरपुर, ९३. [illegible] (फतेहपुर), ९४ होलीपुर (आगरा), ९५ हरनौत (अलीगढ), ९६ हस्तिनापुर (मेरठ), ९७ हरछना (बुलंदशहर), ९८ [illegible] (मुजफ्फरनगर), ९९ जेगड़ा (आगरा), १००. जौनपुर १०१ जगलकठार (बस्ती), १०२. जलेसर (एटा), १०३ [illegible] (कानपुर), १०४ जरार (आगरा), १०५ [illegible] (मथुरा), १०६ झाँसी, १०७ झडीबिल्खी (अलीगढ), १०८ [illegible]

(फर्रुखाबाद), १०९ कासगंज (एटा), ११० कादिरगंज (एटा), १११. कवरारी (उन्नाव), ११२ कालाकाँकर (प्रतापगढ़), ११३ कछलाघाट (वदायूँ), ११४ कपसर (मेरठ), ११५ कर्णवास (बुलदशहर), ११६. कमालगज (फर्रुखाबाद), ११७ कोरियासी (मथुरा), ११८ कन्नौज (फर्रुखाबाद), ११९ काशीपुर (नैनीताल), १२० कसानगंज (गोरखपुर), १२१ कुहनेरा (मेरठ), १२२ खुरजा (बुलंदशहर), १२३ खागा स्टेशन (इलाहावाद), १२४ कालपी (झाँसी), १२५ केउँच (झाँसी), १२६ कचेहरी (कन्नौज), १२७ खड्डा (अलीगढ), १२८. खतौली (मेरठ), १२९ खैर (अलीगढ़), १३०. कीडगंज (इलाहाबाद), १३१ लालढाँक (बिजनौर), १३२ लीसामऊ (कानपुर), १३३ लियो (इटावा), १३४ लखनऊ (अवध गोशाला-समिति), १३५ लखीमपुर खीरी, १३६ मोहाली (प्रतापगढ), १३७ मडी डिप्टीगंज (बुलंदशहर), १३८ मथुरा, १३९ मिर्जापुर, १४० महोबा (हमीरपुर), १४१ मेरठ, १४२ मवाना (मेरठ), १४३ मेनागपुर (सहारनपुर), १४४ मुरादावाद, १४५ महलवाला (मेरठ), १४६. मेहदावल (वस्ती), १४७ महाराजगंज (गोरखपुर), १४८ मेहुआ (कानपुर), १४९ मोतीकटरा (आगरा), १५० मरिहा (जौनपुर), १५१. महाराजपुर (मेरठ), १५२ मोहनाल बाजार (बस्ती), १५३ नयागाँव छावनी (बुदेलखंड), १५४ निनौहरा (कानपुर), १५५ नन्दपुर (मेरठ,) १५६ नीमसार (सीतापुर), १५७. नजीवावाद (विजनौर), १५८ नवाबगंज (गोडा), १५९ नगीना (विजनौर), १६० नहाटी (अलीगढ), १६१ नारायणगंज (इटावा), १६२ नीजाबाद (बिजनौर), १६३ उरई (झाँसी), १६४. औरैया (इटावा), १६५ परसोतीगढी (मथुरा), १६६ पिपराइचबाजार (गोरखपुर), १६७ पीलीभीत, १६८ पटियाली (एटा), १६९ पाली (इटावा), १७० पँचरा (बनारस), १७१ पोखरायाँ (कानपुर), १७२ परखेउना (गोरखपुर), १७३ प्रतापगढ, १७४ पाकीपुरा (आगरा), १७५ पिपरा (बस्ती), १७६ पयकालीवाड़ा पौहारीजीका (गोरखपुर), १७७ पीनाहट (आगरा), १७८ पनवाड़ा (मेरठ), १७९ फीरोजाबाद (आगरा), १८० फूलपुर (कानपुर), १८१. पेशावरस्टेट (अलीगढ), १८२ ऋषिकेश (देहरादून), १८३ साकोई (बुलंदशहर), १८४ सम्भल (मुरादावाद), १८५ सिकदरपुर (फतेहगढ़), १८६ शामली (मुजफ्फरनगर), १८७ शाहजादपुर (इलाहाबाद), १८८ सोख (मथुरा), १८९. शाहजहाँपुर, १९०. सरानी (अलीगढ़), १९१. सुरारियर (मथुरा), १९२ शाहवाद (हरदोई), १९३ सहारनपुर, १९४. शक्तिपुर (बस्ती), १९५. सीकरी फतेहपुर (आगरा), १९६ शंकरपुर (बस्ती), १९७ सीतापुर, १९८ सोरोंघाट (एटा), १९९ सकूराबाद (मैनपुरी), २०० सहसबन (हरदोई), २०१ सिकन्दराराउ (एटा), २०२ सतईकी कुटी (मुरादाबाद), २०३ सैथाकलाँ (जौनपुर), २०४. सिकरौरा (हमीरपुर), २०५ शाहगज (जौनपुर), २०६. सीसामऊ (कानपुर), २०७ टीकमपुर सचनी (अलीगढ), २०८. तनकपुर मंडी (नैनीताल), २०९. तुलसीपुर (गोंडा), २१० तारीनध (फर्रुखाबाद), २११ उद्धवकुण्ड (मथुरा), २१२. उन्नाव, २१३ ऊआँली (सहारनपुर), २१४ फतेहपुर, २१५. करनैलगंज (गोंडा), २१६. करवीमण्डी (बाँदा), २१७ अमेठी (सुल्तानपुर), २१८ चुनार (मिर्जापुर), २१९ कैराना (मुजफ्फनगर)।

बम्बई, काठियावाड़ एवं गुजरात

(अ) गोशाला—

१ श्रीभारतवर्षीय गोपाल गोरक्षक-मण्डल, बम्बई, २. श्रीगोग्रास-भिक्षा-संस्था, बम्बई, ३—(अ) बम्बई गो-रक्षक-मण्डली, ३—(आ) गो-रक्षक-मण्डली, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई, ४ गो-रक्षा-लीग, बम्बई, ५ गोग्रास गो-जीव-दान-मण्डल, बम्बई, ६ श्रीगोवर्द्धन-सस्था बम्बई, ७ नत्थूलालजी चैरिटी-ट्रस्ट गोशाला, बम्बई, ८ डोम्बिवली लोकमान्य गोशाला, बम्बई, ९ गोधड़ा, १० दोहद, ११. बडौदा, १२ उपलेटा (काठियावाड), १३ खम्भालिया (काठियावाड), १४ बगसरा (ककावाव), १५ जडिया (काठियावाड), १६ कुंडला (काठियावाड), १७ मूली (काठियावाड), १८ अटकोट (काठियावाड), १९ बाबरा (काठियावाड़), २० धराफा (काठियावाड़), २१ श्रीद्वारकापुरी (काठियावाड), २२ मंडवा (काठियावाड), २३ सलाया (काठियावाड़), २४ खडबा (काठियावाड), २५ श्रीगोवर्धन-सस्था, वाई (सतारा), २६ सङ्गमनेर, २७ धुलिया, २८ येवला, २९. गो-जीवदान कमेटी, वेतलपेठ, पूना, ३० पंढरपुर, ३१ श्रीगोवर्द्धन-सस्था, पूना, ३२ लाटूर, ३३ बारामती, ३४ निपानी, ३५. बगलकोट, ३६ शिवयोगमन्दिर, ३७. केरूर, ३८ मन्दिर गोशाला, डाकोर, ३९ धामनगर (काठियावाड़), ४० हलवाद (काठियावाड), ४१ कराड (सतारा), ४२. लोनन्द (काठियावाड), ४३ सतारा, ४४. जभखंडी (संस्थान), ४५. बार्शी (शोलापुर), ४६ मुलुद, ४७ कल्याण, ४८ चलाला (काठियावाड), ४९ करभाले (शोलापुर), ५०. हल्याल (कारवार), ५१. बरौली स्टेशन (बम्बई)।

(आ) पिंजरापोल—

१ श्रीबम्बई पिंजरापोल, २ श्रीपशु-रक्षक-मण्डली, बम्बई, ३ सार्वजनिक जीव-दया खाता, घाटकोपर, ४ अहमदाबाद, ५ धोलका (काठियावाड), ६ धधूका, ७ घोघा (काठियावाड़), ८ सानन्द, ९ मण्डल, १० खम्भात, ११ बोरसद, १२ डाकोर, १३ मऊधा (कैरा), १४ कैरा, १५ नड़ियाद, १६ जूनागढ, १७ राजकोट, १८ भडौच, १९ सूरत, २० मेहसाना, २१ विसनगर, २२ ध्राँगध्रा (काठियावाड), २३ पाटन, २४ बीजापुर, २५ सिद्धपुर, २६ पालनपुर, २७ वीरमगाम, २८ पाटडी (वीरमगाम तालुका), २९ भावनगर (काठियावाड), ३० विसावदर (काठियावाड), ३१ धोराजी (काठियावाड), ३२ जामनगर (काठियावाड), ३३ गोडल (काठियावाड), ३४ जेतपुर (काठियावाड), ३५ कुटिआना (काठियावाड़), ३६ लिंबडी (काठियावाड), ३७ माँगरोल (काठियावाड), ३८ महुवा (काठियावाड), ३९ मोरवी (काठियावाड़), ४० पालीताना (काठियावाड), ४१ वेरावल (काठियावाड), ४२ वढवान (काठियावाड), ४३ भायावदर (काठियावाड), ४४ वोटाड (काठियावाड), ४५ चूडा (काठियावाड), ४६ तालजा (काठियावाड), ४७ धरोल (काठियावाड), ४८ गोधडा (काठियावाड), ४९ हलवाद (काठियावाड), ५०. जस्दान (काठियावाड), ५१ जाफराबाद, ५२. लाठी (काठियावाड), ५३ सिहोर (काठियावाड), ५४ वाँकानेर (काठियावाड), ५५ बिल्खा (काठियावाड), ५६ चीतल (काठियावाड़), ५७ लखतर (काठियावाड), ५८ मेदरदा (काठियावाड), ५९ सायला (काठियावाड), ६० वाला (काठियावाड), ६१ अमरेली (काठियावाड), ६२ आरामदा (काठियावाड), ६३ बखराल (काठियावाड), ६४ बालम्भा (काठियावाड), ६५ बेट (काठियावाड़),६६ भन्वाद (काठियावाड), ६७ दामनगर (काठियावाड), ६८ देदन (काठियावाड), ६९ धारी (काठियावाड), ७० ढासा (काठियावाड), ७१ डूँगर (काठियावाड), ७२ जाम जोधपुर (काठियावाड), ७३ कोध (काठियावाड), ७४ ककावाव (काठियावाड), ७५ मलिया (काठियावाड), ७६ पनेली (काठियावाड), ७७ प्रभासपाटन (काठियावाड), ७८ राज-सीतापुर, ७९ सोनगड (काठियावाड), ८० बरवाल (काठियावाड), ८१ कलावद (काठियावाड), ८२ केशोद (काठियावाड), ८३ कराची (काठियावाड), ८४ टट्टा (काठियावाड), ८५ परली (सतारा), ८६ कुंड (सतारा), ८७ तासगाँव (सतारा), ८८ लोनद (सतारा), ८९ अहमदनगर, ९० जलगाँव, ९१ चालीसगाँव, ९२ नन्दुरबार, ९३ नवपुर, ९४ नासिक, ९५ मालेगाँव, ९६ शोलापुर, ९७ बीजापुर, ९८ घोडनदी, ९९ गुलेदगड्ड (बदामी), १०० हुबली, १०१ गडाग, १०२ नवेल, १०३. भोर, १०४ साँगली, १०५ कोल्हापुर, १०६ माँडवी, १०७ भुज (कच्छ), १०८ अंजार (कच्छ), १०९ मूँदडा (कच्छ), ११० राधनपुर (गुजरात), १११ पूना, ११२ माँडवी (कच्छ), ११३ डभोई (बड़ौदा), ११४ पोरबदर (काठियावाड), ११५ सगोला (शोलापुर), ११६ वडनगर (वडौदा), ११७ वरवाला (काठियावाड), ११८ भरनबार, ११९ वधेलियन सिटी, १२० वखरेला (ध्राँगध्रा स्टेट), १२१ धानली, १२२ जरिजावदर (काठियावाड), १२३ जामकडोरना (काठियावाड), १२४ लरधार (काठियावाड), १२५ मोरैल (काठियावाड), १२६ धनराजी (ध्राँगध्रा स्टेट), १२७. इचारच (वडौदा स्टेट), १२८ खेतड वाई (सतारा), १२९ शकेश्वर (बेलगाँव), १३० डाकोर (खोडदादपुर), डाकोर।

मध्य-प्रदेश

१ आकोला (बरार), २ अमरावती, ३ आर्वी (वर्धा), ४ अजनगाँव सुरजी तालुका (अमरावती), ५ विजयराघोगढ़ (जबलपुर), ६ भडारा, ७ बगलकटा (बिलासपुर), ८ भाटापाडा, ९ चालीशगाँव (खानदेश), १० छिंदवाडा, ११ चोला (छिंदवाडा), १२ चाँदा, १३ धूलिया (खानदेश), १४ धमतरी, १५ गणेशपुर, १६ गढा (जबलपुर), १७ गोंडा, १८ गिरमा, १९ गोंदिया (नागपुर), २० होशंगाबाद, २१ हींगनघाट २२ इच्छापुर (नीमाड), २३ जबलपुर, २४ जनगाँव (खानदेश), २५ कटरा (सागर), २६ कटोल, २७ कटनी, २८ बाँदा, २९ खाँमगाँव (बरार), ३० लखनादोंन (सिवनी), ३१ नागपुर धनतोली, ३२ नरसिंहपुर (नागपुर), ३३ मुरवाडा कटनी (जबलपुर), ३४ मुताई (बेतूल), ३५ नकोरदर (खानदेश) ३६ राजगढ (बिलासपुर), ३७ राजनाँदगाँव स्टेट (रायपुर), ३८ रायपुर (होशंगाबाद), ३९ साम्लपुर (रायपुर), ४० वर्धा, ४१ यवतमाल (अमरावती), ४२ [illegible] ४३ [illegible] (भंडारा), ४४ तिरोरा, ४५ वालोद, ४६ बिलासपुर, ४७ [illegible] चरपा (बिलासपुर), ४८ सिलेरा (सागर) ४९ [illegible] (होशंगाबाद), ५० हरदा, ५१ [illegible] ५२ [illegible]

५३ बुढ़ानपुर, ५४ बनोसा (अमरावती), ५५ धामनगाँव, ५६ मोरसी (अमरावती), ५७ पंढरकवडा (यवतमाल), ५८ पुसाद (यवतमाल), ५९ वून, ६० उमरखेड (यवतमाल), ६१ खेरकेड (आकोला), ६२ अकोलवी बालापुर, ६३ मुर्तिजापुर (आकोला), ६४ करजा (आकोला), ६५ रिसोड (आकोला), ६६ बुलोलेक (बरार), ६७ चिखली (बरार), ६८ काले (बुल्डाना), ६९ मलकापुर, ७० नदूरा, ७१ लोनार (बुल्डाना), ७२ देउलगाँव राजा, ७३ शेगाँव (बुल्डाना)।

बंगाल

१. कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, २ बरिया (बर्दवान), ३ दूधरा (मुर्शिदाबाद), ४ दार्जलिङ्ग, ५ रानीगंज, ६ रामकुमार रक्षित लेन (कलकत्ता), ७ लिलुआ (कलकत्ता पिजरापोल सोसाइटी), ८ ताहिरपुर (रानीगंज), ९ रामपुर डेयरी फार्म, १० पञ्चानन तल्ला लेन, हवडा, ११ तालकरघर रोड, हवडा, १२ म्युनिसिपल मार्केट, हवडा, १३ लिलुआ—(अ) मारवाडी गो-रस कंपनी, (आ) फ्रेन्ड्स डेयरी फार्म, (इ) दि शर्मा डेयरी फार्म, (ई) दि रेलवे डेयरी फार्म, १४ रगपुर डेयरी फार्म, लोकनाथ चटर्जी लेन, शिवपुर।

मद्रास

१ कोयम्वीपुर (मद्रास), २ मद्रास।

बिहार और उड़ीसा

१ आरा, २ बिहार, ३ बेगूसराय (मुगेर), ४ भागलपुर, ५ वगहा बाजार (चम्पारन), ६ बरगाम (चम्पारन), ७ चैवासा, ८ चतुरबाजार (हजारीबाग), ९ कोलगाँव (भागलपुर), १० चौकुलिया, ११ दलसिंहसराय (दरभंगा), १२ दरभगा, १३ देवघर, १४ गया, १५ गोगरी जमालपुर (मुगेर), १६ हजारीबाग, १७ हाजीपुर (मुजफ्फरपुर), १८ इस्लामपुर (पटना), १९ झल्दा, पुरलिया (मानभूम), २० झरिया (मानभूम), २१ खगड़िया (मुगेर), २२ किशनगंज, २३. कटिहार, २४ केडुली (मुजफ्फरपुर), २५. कम्तुल डेयरी फार्म (दरभगा), २६. लक्खीसराय, २७ मधुवनी (पुरनिया), २८ मुगेर, २९ मुजफ्फरपुर, ३० मोतिहारी, ३१ मिराजगंज (हजारीवाग), ३२ मेहसी (चम्पारन), ३३ मधुवनी (दरभंगा), ३४ मोहम्मदपुर (छपरा), ३५ नौगछिया (भागलपुर), ३६ पटना, ३७ पुरलिया (मानभूम), ३८. पंचम्धा (हजारीवाग), ३९ रक्सौल, ४० रसड़ा (दरभंगा), ४१. पुरी श्रीजगन्नाथ, ४२ राँची (छोटा नागपुर), ४३. राजगिर (पटना), ४४ ससराम (आरा), ४५ सिवान, ४६ सिगिया, ४७ समस्तीपुर (दरभगा), ४८ सारन (छपरा), ४९ सिलाव (पटना), कटक।

सिंध

१ अलिअरकोटैंटो (हैदराबाद), २. अदमाकनंटो (हैदराबाद), ३ हैदराबाद, ४. हाला (हैदराबाद), ५. जल्लन (हैदराबाद), ६ जैकोबाबाद (हैदराबाद), ७ कम्बर (लरकाना), ८ खैरपुर (सक्खर), ९ खानपुर (हैदराबाद), १० कराची, ११ कधकोट, १२. लरकाना, १३ मीरपुर (हैदराबाद), १४ मेहर (हैदराबाद), १५ नगरथला, १६ रोहड़ी (सक्खर), १७. राबदेसी, १८ शिवदरीकुँवर (लरकाना), १९ सक्खर, २० शिकारपुर, २१ टाँडोमुहमदखान (हैदराबाद), २२. टट्टा।

दिल्ली

१ नजफगढ़ (दिल्ली), २ सोनपत (दिल्ली), ३ दिल्ली पिजरापोल।

हैदराबाद रियासत

१. हैदराबाद।

मैसूर रियासत

१. बंगलोर।

सीमान्त-प्रदेश

१. नौशेरा (पेशावर), २ पेशावर, ३. कोहाट, ४ मर्दान, ५ देरा इस्माइल खाँ।

बलोचिस्तान

१ थाडर।

मध्य-भारत

१ इदौर, २ मऊ छावनी (इदौर), ३. रतलाम, ४ सनावद (इंदौर), ५ अनूपशहर (ग्वालियर), ६. उज्जैन (ग्वालियर), ७ कोसरपुरा (ग्वालियर), ८. शाहजहाँपुर (ग्वालियर), ९ खाचरोद (मालवा), १०. बड़ानगर स्टेशन (मालवा), ११. रोहरच (मालवा), १२ जावरा, १३. तल्ल (जावरा), १४ टीकमगढ (ओड़छा), १५ जैथारी (रीवाँ रियासत), १६ छतरपुर, १७. सिमथर।

राजपूताना

(अ) अजमेर मेरवाड़ा—

१. अजमेर, २ ब्यावर, ३. नसीराबाद, ४. केकडी, ५. पुष्कर, ६ किशनवास।

(आ) रियासतें—

जयपुर—१ जयपुर, २ लक्ष्मणगढ, ३ मॅंडावा, ४ चौसा, ५ रामगढ, ६ फतेहपुर, ७ नवलगढ।

जोधपुर—१ जोधपुर, २ डीडवाना, ३ नावॉं, ४ रिसालपुर, ५ लाडनूँ, ६ खारची।

बीकानेर—१ बीकानेर गोशाला, २ बीकानेर पिंजरापोल, ३ रतनगढ, ४ चूरू, ५ सुजानगढ, ६ सरदारशहर, ७ सादुलपुर, ८ हनुमानगढ़, ९ नोहर, १० रेनी (तारानगर), ११ डूँगरगढ़, १२. भीनासर।

जैसलमेर—१ जैसलमेर, २ बाडमेर।

भरतपुर—१ भरतपुर, २. बैरभुसावर, ३ बयाना, ४ कामबन, ५. खेलरी, ६ पहाडी, ७ रूपवास, ८ श्रीगढी।

अलवर—१ अलवर २ राजगढ, ३ चटोंठरा, ४ रामगढ।

धौलपुर—१ धौलपुर।

पजावकी रियासते

पटियाला—१ पटियाला, २ धूडो, ३ बरनाला, ४ भादुल, ५ भटिंडा, ६ मनसा, ७ धेलीवली।

नाभा—१ नाभा, २ भावल भोजाकी, ३ जतूल।

भावलपुर—१ अहमदपुर, २ अहमदपुर लवा।

फरीदकोट—१ कोटकपूरा।

कपूरथला—१ कपूरथला, २ फगवाडा।

जींद—१ जींद, २ दादरी चर्खी, ३ मोतिया।

मंडी—१. मडी।

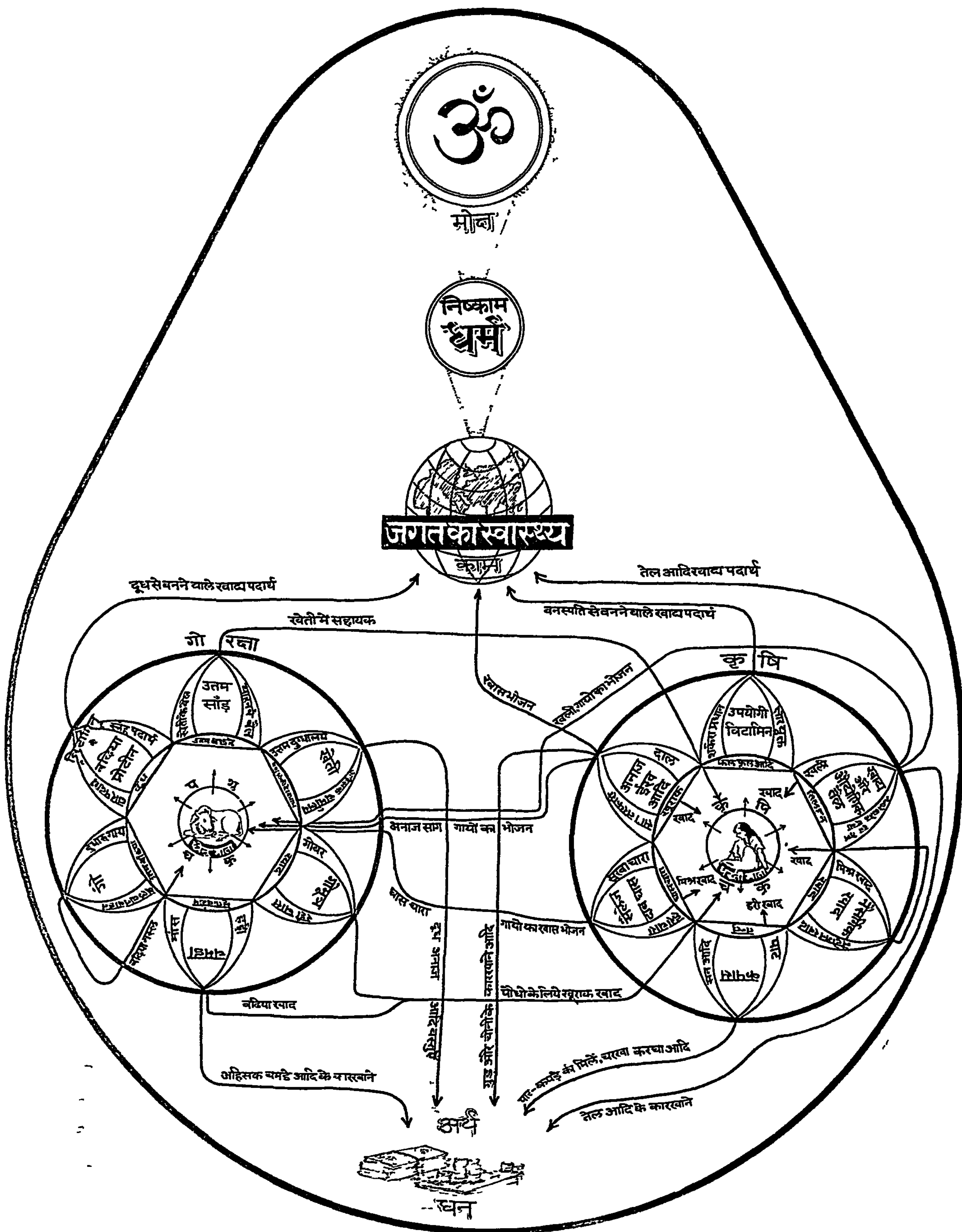


गायसे पुरुषार्थ-चतुष्टयकी सिद्धि

सस्कृत साहित्यमे पृथ्वी, जल, तेज (सूर्य, चन्द्रमा, किरण), वायु, दिशा, माता, इन्द्रिय और वाणी आदि अनेक अर्थोमें 'गो'शब्दका प्रयोग देखा जाता है। इनमेसे कोई भी अर्थ लाक्षणिक नहीं है, सभी 'गो'शब्दके वाच्यार्थ है। इन सभी रूपोमे गोमाता सम्पूर्ण जगत्का कल्याण कर रही है। भगवद्विभूतियोकी भॉंति गौकी विभूतियाँ भी सर्वत्र व्यापक हैं। हम गोमाताके ही अङ्कमे रहते, चलते-फिरते और खेलते हैं। गौसे ही हमे जीवन और जीवन-निर्वाहके साधन प्राप्त होते है। गौ ही सुमधुर अन्न, अमृतोपम दूध, शीतल जल और स्वच्छ हवा प्रदान करके हमारे प्राणोका पोषण तथा शक्ति और स्वास्थ्यका संवर्धन करती है। हमारी आधारशक्ति, प्राणशक्ति और वाक्-शक्ति सब कुछ गौ ही हैं। इस महिमामयी गौकी सम्पूर्ण विभूतियोका वर्णन तथा उनका गौरव-गान हम जीवनभर करते रहे तो भी पार नहीं पा सकते। यहॉं केवल धेनु और धरतीके रूपमे प्रतिष्ठित गोविभूतिकी किंचित् महिमापर प्रकाश डाला जायगा।

मूर्खसे लेकर विद्वान्तक सम्पूर्ण जगत्के मानव जो कुछ चाहते है तथा जिसकी प्राप्तिके लिये जीवनभर अनेक उपायोका अवलम्बन एव अथक परिश्रम करते हैं, उसका नाम है पुरुषार्थ। यह पुरुषार्थ चार भागोमें विभक्त है—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। विश्वके अखिल जन-समुदायकी समस्त इच्छाएँ इन्हीं चारोमे केन्द्रीभूत हैं। अपने-अपने अधिकार और योग्यताके अनुसार कोई इनमेसे एककी, कोई दोकी, कोई तीनकी, कोई चारोकी और कोई केवल अन्तिम पुरुषार्थकी अभिलाषा रखते हैं। उक्त पुरुषार्थोमें दो लौकिक हैं और दो पारमार्थिक। अर्थ और काम लौकिक है तथा धर्म और मोक्ष पारमार्थिक। जिसने क्रमशः लौकिक और पारलौकिक चारो पुरुषार्थोको हस्तगत किया है उसीका जीवन सभी दृष्टियोसे परिपूर्ण माना गया है। जीवनकी इस परिपूर्णताको प्राप्त करनेके लिये गो-सेवा एक प्रधान साधन है। पहले इस वातपर विचार किया जायगा कि गो-सेवासे लौकिक पुरुषार्थोकी—अर्थ और कामकी प्राप्ति कहाँतक और किस प्रकार सम्भव होती है।

ऊपर यह सकेत किया जा चुका है कि धेनु और धरती एक ही गो-शक्तिकी दो स्थूल विभूतियाँ हैं। [illegible] इनमे वस्तुतः कोई भेद नहीं है। शास्त्र कहते हैं—[illegible] भीतर सम्पूर्ण देवताओका वास है और [illegible] धरतीपर टिका हुआ है, यह वात सबको [illegible] मानवलोककी आधार-शक्तिका नाम धरा [illegible] देवलोककी आधारशक्तिको हम गो [illegible]



गायसे पुरुषार्थ-चतुष्टयकी सिद्धि

'गोलोक' ऊपर है और 'भूलोक' नीचे। परंतु गोलोकमें भी दिव्यभूमि है और भूलोकमे भी दिव्य शक्तिसम्पन्न गौएँ हैं। इन दोनोमे घनिष्ठ साहचर्य है। दोनो ही एक-दूसरेको सहयोग प्रदान करती हैं। दूसरे शब्दोमे हम यह भी कह सकते हैं कि गौएँ ही भूमि हैं और भूमि ही गौएँ। दोनो एक-दूसरीके प्राण हैं। परस्परके सख्य और सहयोगसे ही दोनो कार्य-क्षम होती हैं। एकके क्षीण होनेपर दूसरीका क्षय होना अनिवार्य है। यदि दोनोंके सख्य और सहयोगमें कोई बाधा न पडे, तभी ये स्वय समुन्नत होकर जगत्के लिये अर्थ और काम प्रस्तुत कर सकती हैं। शास्त्रोमे भूदेवीको श्रीदेवीकी सहचरी बताया गया है तथा गोदेवीके भीतर भी लक्ष्मीका निवास माना गया है, अत: इनके सेवनसे अर्थ या धन-सम्पत्तिका विस्तार होना स्वाभाविक ही है।

अन्नपर ही जगत्के प्राणियोंका जीवन निर्भर है। वह अन्न गेहूँ, धान, फल-मूल, पत्र-पुष्प, घास-चारा, दूध-दही आदि किसी भी रूपमे क्यो न हो, उसके उत्पादनकी आधार-भूमि गौ ही है। 'गौ' से धेनु और धरती दोनोकी ओर लक्ष्य है। और इसी व्यापक दृष्टिकोणसे गोधनकी अधिक महिमा गायी गयी है। सब प्रकारके अन्नोको केवल दो भागोंमे विभक्त किया जा सकता है—दुग्धान्न और कृष्यन्न। दूध तथा उससे तैयार होनेवाले खाद्य पदार्थोका नाम 'दुग्धान्न' है। शेष सब अन्न 'कृष्यन्न' के अन्तर्गत समझे जाते है। इन दोनोंका पृथक्-पृथक् मण्डल है। जिस मण्डलसे दुग्धान्नका प्रादुर्भाव होता है, उसका नाम 'पशुचक्र' है तथा 'कृष्यन्न' के उत्पादक मण्डलको 'कृषिचक्र' कह सकते हैं। पशुचक्रकी अधिष्ठात्री देवी धेनु माता हैं और कृषिचक्रकी धरती माता। पशुचक्रसे प्राप्त होनेवाले लाभ गोरक्षापर निर्भर हैं और कृषिचक्रसे होनेवाले लाभ कृषिके विकासपर। ये दोनो चक्र सदा एक-दूसरेको शक्ति पहुँचाते हुए विश्वकी सर्वाङ्गीण उन्नतिमे योग देते रहते है।

चित्रमे जो 'गोरक्षा' और 'कृषि' नामक दो वृत्त हैं, उनके भीतर ध्यानपूर्वक दृष्टिपात करनेसे पशुचक्र और कृषिचक्रके उपयोग एव पारस्परिक सहयोगका रहस्य स्पष्टरूपसे समझमें आ जायगा। उक्त दोनो चक्र षड्दल कमलके रूपमे अङ्कित किये गये है। पहले पशुचक्रके छहों दलोका विवरण उपस्थित किया जाता है। ऊपरवाले दलमे धेनु मातासे होनेवाले बछडेका उपयोग दिखाया गया है। गायका समुचित रूपसे पालन-पोषण होनेपर वह उत्तम बछड़ा पैदा कर सकती है। बछडा आगे चलकर यदि बनाया जाय तो उत्तम सॉड़ बन सकता है, जिससे गोवंशकी रक्षा और वृद्धि होगी। यदि बछड़ेको बैल बना लिया गया तो वह खेती और वाहनके काम आ सकता है। इस प्रकार खेतीमे सहायक होकर पशुचक्रके बछडेसे कृषिचक्रकी उन्नतिमे योग प्राप्त होता है। दूसरे दलमे पशुओंकी देख-भालका लाभ बताया गया है। पशुओके आरामसे रहने और पालन आदिकी सुव्यवस्था होनेसे तीन प्रकारके लाभ होंगे एक तो अच्छा दुधार गायोके रहनेसे उत्तम दुग्धालयकी स्थापना हो सकती है। देख-भालसे उसमे किसी प्रकारकी गडबड़का भय नहीं रहता। दूसरे अच्छे बलिष्ठ पशु तयार होकर खेतीको अच्छे पैमानेपर बढा सकते हैं। तीसरा लाभ यह है कि जो पशु स्वय अपनी मृत्युसे मरेंगे, उनके चमडोका सग्रह करके एक अहिंसक चर्मालयकी व्यवस्था की जा सकती है। दुग्धालयसे दूधका, खेतीसे अनाजका और चर्मालयसे चमडेकी बनी हुई वस्तुओका व्यापार हो सकता है, जिससे अर्थकी प्राप्ति होगी। तीसरे दलमे खादकी उपयोगिता दिखायी गयी है। पशुओके गोबर, गोमूत्र और रद्दी घास आदिको एकत्र संग्रह करके उससे अच्छी खाद तैयार की जा सकती है, जो धरतीकी उत्पादनशक्तिको बढ़ाकर और पौधोके लिये खूराक पहुँचाकर कृषिकी उन्नतिमे योग देगी। चौथे दलमें मृत पशुओंके शरीरके अवशिष्ट भागकी उपयोगिताकी ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। अक्सर लोग मरे हुए पशु चमार आदिको दे डालते हैं या फेक देते हैं। यह उसका बहुत बडा दुरुपयोग है। मृतावशेष हड्डी और मासको जमीनमे गाड देनेसे बहुत अच्छी खाद तैयार हो सकती है, जो खेतीकी उपजको बढानेमे विशेष सहायक सिद्ध होगी और चमडोंका संग्रह करके अहिसक चमडे आदिके कारखाने खोले जा सकते हैं, जो आर्थिक उन्नतिके प्रधान साधन हैं। गोरक्षाका व्रत लेनेवाले प्रत्येक विचारशील मनुष्यको ऐसे ही कारखानोंके जूते आदि पहनने चाहिये। पाँचवे दलमे उत्तम [illegible] होनेवाले लाभकी ओर संकेत है। धेनु माताकी दो सन्तानें हैं—बछड़ा और बछिया। इनमे बछडेके उपयोगकी चर्चा

प्रथम दलके वर्णनमे की जा चुकी है। अब वछियाका उपयोग वताया जाता है। उत्तम वछिया आगे चलकर वहुत अच्छी 'गाय' वन सकती है। वह दुधार गाय होकर दूध देगी। स्वयं भी वछिया और वछड़ा पैदा करेगी और उसका दिया हुआ बछडा वलवान् वाहन होकर जगत्को सदा लाभ पहुँचाता रहेगा। इस प्रकार वह 'काम' का साधन प्रस्तुत करती हुई पशुचक्रकी उत्तरोत्तर उन्नतिमे लगी रहेगी। छठे दलमे दूधके चमत्कारोंका दिग्दर्शन कराया गया है। वैज्ञानिक अन्वेषक खूब छानवीन करके इस निश्चयपर पहुँचे हैं कि दूधकी जोडका दूसरा कोई खाद्य पदार्थ ससारमे नहीं है। शरीरको स्वस्थ, सबल और सुपुष्ट वनानेवाले सभी आवश्यक तत्त्व गोदुग्धमे पर्याप्त रूपसे पाये जाते हैं। उसमे ऊँचे दर्जेका विटामिन, स्नेह-पदार्थ, क्षार-पदार्थ और वढिया प्रोटीन मौजूद है। ऐसे सुधोपम गुणोंसे युक्त दूध या दूधसे वननेवाले खाद्य पदार्थोका सेवन करनेसे जगत्के स्वास्थ्यकी रक्षा हो सकती है। स्वास्थ्य-सुधार कौन नहीं चाहता। इस प्रकार धेनु माता पशुचक्र और कृपिचक्रकी उन्नतिके साथ-साथ मनुष्यके 'अर्थ' और 'काम'-रूपी लौकिक पुरुषार्थोको सिद्ध करती है।

अब कृपिचक्रपर दृष्टिपात कीजिये। इसके भी पूर्ववत् छः दल है। ऊपरवाले दलमे, जिसे प्रथम दल समझना चाहिये, धरतीसे उत्पन्न होनेवाले फल-फूल आदिकी उपयोगिता वतायी गयी है। फल-फूल और शाक-आदिमे उपयोगी विटामिनका अश मौजूद रहता है। उनमे शर्कराकी प्रधानता होती है तथा क्षार-पदार्थकी भी कमी नहीं रहती। इस प्रकार उन्हे बहुत उपयोगी खाद्य माना गया है। ये वनस्पतिसे वननेवाले खाद्य पदार्थ भी ससारके स्वास्थ्य-सम्पादनमे विशेष सहायक सिद्ध होते हैं, इस रूपमे इनसे 'काम' की सिद्धि होती है। दूसरे दलमे तिलहनके लाभोंका उल्लेख है। धरती माता हमारे लिये जो दूसरी उपयोगी वस्तु उत्पन्न करती है, वह तिलहन है। तिलहनसे तेल तैयार होता है। यह खाने और जलानेके भी काममे आता है। इससे इत्र और दवा आदि भी बनते हैं। तिलहनमे जो स्निग्धता है, उसे तेलके रूपमे पृथक् कर लिया जाता है और सीठी वच जाती है। सीठीको खली कहते है, जो पशुओके खानेके काम आती है। तेल आदि खाद्य पदार्थ उचित रूपसे उपयोगमें लेनेपर जगत्के स्वास्थ्यकी रक्षा करते हैं। दूसरी ओर तेलसे उद्योग-धंधोंको प्रोत्साहन मिलता है। तेल आदिके कारखाने चलते हैं। इस प्रकार तिलहनसे अर्थ और काम दोनोकी सिद्धि होती है। साथ ही यह खलीके रूपमे परिणत होकर पशुचक्रकी भी पुष्टि करता है, क्योकि खली पशुओंका बहुत उत्तम टानिक खाद्य है। खली खादके काम भी आती है। तीसरे दलमें खादकी चर्चा है। धरतीसे तीन प्रकारकी खाद तैयार होती है—नैसर्गिक खाद, नाइट्रोजन खाद और मिश्र खाद। ये तीनो ही खादें धरतीको अधिक उर्वरा बनाती हैं, इसकी उपजाऊ शक्तिको बढ़ाती है और इस प्रकार कृषिचक्रकी उन्नतिमें योग देती है। चौथे दलमे तन्तुके गुण दिखाये गये है। पाट, कपास और सन आदि तन्तुके अन्तर्गत समझे जाते हैं। इनसे पाट-कपडेकी बडी-बड़ी मिलो और चरखा-करघा आदि गृहउद्योगोको प्रश्रय मिलता है, जिससे महान् अर्थलाभकी सम्भावना रहती है। दूसरा फायदा यह है कि पाटसे हरी खाद तैयार होती है, जिससे कृषिचक्रको बल मिलता है। पाँचवे दलमे घास-चारेका उल्लेख है। धरती माता जो घास-चारा आदि उत्पन्न करती है, वह गौओ तथा अन्यान्य पशुओका खास भोजन है। कुछ कालतक तो हरा चारा पशुओके उपयोगमें आता है, फिर सूखनेपर भूसा, पुआल या सूखे चारेके रूपमे उसका संग्रह किया जाता है, जो सालभर गौओके उपयोगमे आता है। साइलेज—दाबघाससे भी पशुओका पोषण होता है। साथ ही घासचारेसे मिश्र खाद भी तैयार होती है। इस प्रकार ये घास-चारे पशुचक्र और कृषिचक्र दोनोके समान रूपसे पोषक होते है। छठे या अन्तिम दलमे खुराककी चर्चा की गयी है। धरतीसे गेहूँ, धान आदि अनाज, अरहर, चने आदि दालके काम आनेवाले अन्न, साग-तरकारी और ईख आदि उत्पन्न होते है, जो मनुष्योके तो खास भोजन हैं ही, पशु आदिके भी उपयोगमे आते है। अतः एक ओर तो ये पशुचक्रकी पुष्टि करते है, दूसरी ओर उत्तम भोज्य प्रस्तुत करके मानव-जगत्का स्वास्थ्य सुधारते और सब तरहकी कामनाओकी सिद्धिमे सहायक होते हैं। तीसरा लाभ यह होता है कि ईखसे गुड और चीनीके कारखाने चलते है और अन्नकी मडीमे अनाजका भी व्यापार होता है, इस प्रकार इन

व्यवसायोसे महान् 'अर्थ' की सिद्धि होती है।

उपर्युक्त विवेचनसे यह स्पष्ट है कि गोदेवी और भूदेवी परस्परकी सहायतासे सुपुष्ट हो प्राणिमात्रके लिये अन्न और धन प्रस्तुत करती है। अन्नसे जगत्का स्वास्थ्य, जो सबको अभीष्ट है, सुरक्षित रहता है और धनसे अर्थ-सुलभ 'काम' की भी सिद्धि होती है। अत: गौ हमारे लिये लौकिक पुरुषार्थोका—अर्थ और कामका अमोघ साधन है, इस बातमे तनिक भी संदेह नहीं रह जाता। अब पारमार्थिक पुरुषार्थ—धर्म और मोक्षकी सिद्धिमें गौका कहाँतक हाथ है, इस विषयपर विचार किया जाता है। गोदेवीकी कृपाद्वारा स्वास्थ्य और शक्तिसे सम्पन्न जगत् निष्कामधर्मके अनुष्ठानमें समर्थ होता है और उसके द्वारा परम मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इस विषयको कुछ अधिक स्पष्ट करनेकी आवश्यकता जान पडती है। धर्मका प्रधान साधन है स्वस्थ और नीरोग शरीर[1]—'**शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।**' यहाँ धर्म उपलक्षणमात्र है। वास्तवमे सभी पुरुषार्थ स्वस्थ शरीरद्वारा ही साध्य है। अत: गोमाता जगत्को स्वस्थ बनाकर अप्रत्यक्षरूपसे सभी पुरुषार्थोके साधनमे योग देती है। उक्त चार पुरुषार्थोमे धर्मका ही महत्त्व सबसे अधिक है। उसके साधनसे सभी कुछ सध जाते हैं। वही सकामभावसे करनेपर अर्थ और कामका साधक होता है—'**धर्मादर्थश्च कामश्च**' तथा वही निष्कामभावसे पालित होकर मोक्षकी प्राप्ति कराता है। धनके प्रमुख साधनोमे कृषि, गोरक्षा और वाणिज्यका ही नाम लिया जाता है। इन तीनोकी सफलता गोसेवापर ही निर्भर है। आज संसारके सामने सबसे बडी समस्या है अन्न और वस्त्रकी। गोदेवीकी उपेक्षासे ही यह जटिल समस्या हमारे सम्मुख उपस्थित हुई है। रूई और अनाज दोनो धरतीसे ही होनेवाली वस्तुएँ है, इनकी उत्पत्ति गोपुत्रो—बलिष्ठ बैलोके ही अधीन है। जिन देशोमे मशीनोसे खेती की जाती है, वहाँकी चर्चा हम नहीं करते। भारतवर्षमे तो कितने ही युगोसे गो-जाति ही अन्न-वस्त्रकी समस्याको हल करती आ रही है। इस मशीनोके युगमे जब संसारकी व्यापारिक उन्नति बहुत बढ़ी हुई समझी जाती है, सोने-चाँदी सपने हो रहे हैं। किंतु प्राचीन कालमे जब गोधनकी अधिकता थी, प्रतिदिन लाखो गौओके सींगों और खुरोमे सोने-चाँदी मढकर उन्हे दान कर दिया जाता था। उस समय धर्ममूलक अर्थका ही बाहुल्य था। कामकी प्राप्तिमे भी धर्मका बहुत बड़ा हाथ है। कामनाएँ दो प्रकारकी हैं—अर्थाधीन और दैवाधीन। बाजारोमे बिकनेवाली सासारिक सुख-भोगकी वस्तुएँ ही अर्थसे प्राप्त हो सकती है। धन किसीको पुत्र नहीं दे सकता, दैवी प्रकोपसे किसीकी रक्षा नहीं कर सकता। ये सब कामनाएँ धर्मसाध्य है। धर्मद्वारा उत्तम प्रारब्धका निर्माण करके अथवा कामनासिद्धिके प्रतिबन्धकोको हटाकर अभीष्ट कामना प्राप्त की जा सकती है। गोसेवासे 'अर्थ' और 'धर्म' दोनोकी प्राप्ति होती है, अत: उसके द्वारा दोनो तरहकी कामनाएँ सिद्ध हो सकती हैं।

शास्त्रोमे धर्मका आधिदैविक स्वरूप वृषभ बताया गया है। इस दृष्टिसे गौएँ धर्मकी जननी हैं। भगवान् श्रीकृष्णने तो इन्द्रकी पूजा बद कराके गो-पूजाका प्रचार किया था, जो अबतक प्रचलित है। उन्होने स्पष्ट कहा था—'गावोऽस्मद्दैवत तात' (गौएँ हमारे लिये देवता हैं)।' जिन्हे भगवान् भी देवता माने, उनकी महत्ताके विषयमे अधिक क्या कहा जा सकता है। देवपूजाका महत्त्व अधिक है। देवपूजासे किसी एक ही देवताको—जिसकी पूजा की जाती है, उसीको हम प्रसन्न कर सकते हैं, परंतु गौओंकी सेवा और पूजासे सम्पूर्ण देवताओ तथा साक्षात् भगवान्की भी प्रसन्नता प्राप्त होती है, क्योंकि गौओंके प्रत्येक अवयवमे—रोम-रोममे देवताओका निवास है। गोसेवाके अनेक प्रकार हैं। गौओंके रहनेके लिये उत्तम स्थानका प्रबन्ध करे, जहाँ सर्दी, गर्मी, आँधी और पानीसे उनकी भलीभाँति रक्षा हो सके। भूमि ऐसी हो, जहाँ वे आरामसे बैठ सके। उन्हे डाँस-मच्छरोसे बचानेका भी पूरा ध्यान रखे। मौसमके अनुकूल उनके खान-पानकी अच्छी व्यवस्था करे। उनकी प्रत्येक सेवामे स्वार्थको छोड़कर धर्मको ही आगे रखे। ऐसा न हो कि दूध कम देनेके कारण उनकी

१-प्रत्यक्ष गो-सेवा तथा गो-सेवा-मूलक (गौ और भूमि तथा उनकी प्रजा समस्त प्राणीकी सेवा करनेसे) [illegible] होते हैं, उनसे चित्त-शुद्धिरूप मानसिक स्वास्थ्य तथा मनकी सर्वसिद्धिपदायिनी एवं परमपुरुषार्थ मोक्षकी [illegible] होती है—यह शास्त्रसिद्ध है।

खूराक ही कम कर दी जाय, उन्हें भूखों रखकर कष्ट दिया जाय। ऐसा करना महान् पाप है। उनके घूमने और चरनेकी अच्छी व्यवस्था हो। उन्हे ठीक समयपर घास-भूसा, दाना और पानी मिलते रहे—इस बातकी ओर पूर्ण ध्यान रखा जाय। उनके शरीरको सहलावे, प्रतिदिन सबेरे-शाम उन्हें प्रणाम करे। रातमें गौओंके ही पास सोये, वहॉ दीपक जलाये। प्रतिदिन रसोईमेंसे पवित्र अन्न निकालकर उन्हें ग्रास अर्पण करे, देवबुद्धिसे उनकी पूजा करे। उन्हे जूँठी अपवित्र वस्तुएँ खानेको न दे। उनके रहने और खाने-पीनेके स्थानको झाड़-बुहारकर साफ रखे। जहॉ गोशाला होती है, गौएँ रहती हैं, वहाँ सभी तीर्थों और देवताओंका वास होता है, अतः उसे देवस्थान समझकर स्वच्छ एवं पवित्र रखे। गौओंको लात न दिखाये, कभी उनपर प्रहार न करे। उनकी ओर थूके नहीं। गौओके स्थानके समीप मल-मूत्र न करे, गंदगी न फेंके। गौओंकी ओर पैर करके न सोये। पुण्यपर्वके दिन फूल-मालासे अलंकृत करके गौओंकी पूजा करे। उन्हे इतना न दुहे, जिससे बछड़ेको दूध ही न मिले। इस प्रकार सावधानीके साथ गोसेवा करनेवाला मनुष्य धर्मके उत्तम फलको पाता है।

जो लोग स्वार्थ या लोभके वशीभूत होकर गौओंके कष्टकी ओर ध्यान नहीं देते, वे महापापी हैं। जिनके सहयोग या प्रेरणासे गौएँ कसाइयोके घर पहुँचती हैं, वे अनन्त कालतक नरकोके कष्ट भोगते हैं। वे कसाई, जो धर्मान्धताके कारण या मोहवश आजीवन इस क्रूरकर्मके द्वारा जीविका चलाते है, उनकी परमात्माके दरबारमे कैसी भयंकर दुर्गति होती है—इस बातकी ओर उनका ध्यान नहीं जा रहा है। हिंदू, मुसलमान, ईसाई—कोई भी क्यो न हो, गौएँ सबकी माता हैं। गौओसे सबका जीवन चलता है। गौओका दूध सभी पीते हैं और गौओंकी कमाई सब खाते हैं। इतना होनेपर भी जो गोमाताके पालन और रक्षाकी ओर ध्यान नहीं देते, उलटे उनका वध करके उन्हें उदरस्थ कर लेते है, वे राक्षसो तथा पिशाचोंसे भी गये-बीते हैं। उन्हे उस ईश्वरीय कोपका सामना करना पड़ेगा, जिससे बढ़कर भयंकर कुछ है ही नहीं। जो लोग फैशनके पुजारी हैं और पैरोंमे मुलायम जूते ही पहनना पसद करते है, उन्हे स्मरण रखना चाहिये कि उन्हींके कारण आज जूतोकी फैक्ट्रियोके लिये अनगिनत बछड़ोंके प्राण इतनी निर्दयताके साथ लिये जाते हैं जिनकी चर्चा करने मात्रसे हृदय काँप उठता है, लेखनी शिथिल हो जाती है। उन्हें इस महापापमे पूरा-पूरा हिस्सा बँटाना पड़ेगा। परलोकमें जब भयानक यमयातना भोगनी पड़ेगी, उस समय यह फैशन उनकी रक्षा नहीं कर सकेगा। अतः गौओंकी सब प्रकारसे सेवा और रक्षा करना ही मनुष्यमात्रका परम कर्तव्य एवं उत्तम धर्म है। वेदों और स्मृतियोंमे गौओंकी बड़ी भारी महिमा गायी गयी है। उनके सेवन और संरक्षणजनित धर्मकी भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है।

ऊपर जो कुछ कहा गया है, उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गो-सेवासे अर्थ और कामकी प्राप्तिके साथ ही परम दुर्लभ धर्मकी भी सिद्धि होती है। वह धर्म यदि निष्कामभावसे युक्त हो तो वही चित्त-शुद्धिके द्वारा परम मोक्ष या परमानन्दकी प्राप्ति करा देता है। कोई भी शुभकर्म किया जाय, यदि उसमें आसक्ति, फलेच्छा, अहंता और ममताका अभाव है तो वह गीतोक्त प्रणालीके अनुसार 'कर्मयोग' बन जाता है। तथा उसका अनुष्ठान करनेवाले मनीषी पुरुष जन्म-मृत्युरूपी बन्धनसे मुक्त हो अनामय परम पदको प्राप्त हो जाते हैं—**'जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्।'** जब सभी शुभकर्मोकी यह स्थिति है, तब गोसेवाके द्वारा मोक्ष होनेमे क्या संदेह हो सकता है? गोसेवा वेदशास्त्रानुमोदित सर्वोत्कृष्ट दिव्य कर्म है। साक्षात् भगवान्ने भी गौओंकी सेवा तथा आराधना करके उनका महत्त्व बढ़ाया है। उन्होंने उपदेश और आचरण दोनोके द्वारा गोसेवाका आदर्श हमारे सामने उपस्थित किया है। गोसेवासे भगवदाज्ञाका पालन होता है, अतः गौओंके साथ-साथ भगवान्की भी प्रसन्नता प्राप्त होती है। भगवान्के प्रसन्न होनेपर मुक्तिकी क्या बिसात है जो न मिले। वह तो गोभक्त तथा भगवद्भक्त पुरुषके चरणोकी दासी बन जाती है। वास्तवमें गोसेवा स्वभावसे ही भगवत्प्रीत्यर्थ कर्म है। उसका अनुष्ठान करनेवाला साधक **'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।'** के अनुसार निश्चय ही भगवान्का सांनिध्य प्राप्त करता है। इस प्रकार गोमाता मानव-जगत्को पुरुषार्थ-चतुष्टयकी प्राप्ति करानेमे सर्वाग्रगण्य है, यह जानकर सबको सदा उसकी सेवा तथा रक्षामें संलग्न रहना चाहिये।

॥ श्रीहरिः ॥

'कल्याण' का उद्देश्य और इसके नियम

उद्देश्य

भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म और सदाचारसमन्वित लेखोद्वारा जन-जनको कल्याणके पथपर अग्रसरित करनेका प्रयत्न करना इसका एकमात्र उद्देश्य है।

नियम

-भगवद्भक्ति, भक्तचरित, ज्ञान, वैराग्यादि ईश्वरपरक, कल्याण-मार्गमे सहायक, अध्यात्मविषयक, व्यक्तिगत आक्षेपरहित लेखोंके अतिरिक्त अन्य विषयोके लेख 'कल्याण' मे प्रकाशित नहीं किये जाते। लेखोको घटाने-बढाने आर छापने-न-छापनेका अधिकार सम्पादकको है। अमुद्रित लेख बिना माँगे लौटाये नहीं जाते। लेखोमे प्रकाशित मतके लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

-'कल्याण' का वार्षिक शुल्क (डाक-व्ययसहित) भारतवर्षमे ६५ ०० (सजिल्दका ७२ ००) और भारतवर्षसे बाहरके लिये (नेपाल, भूटानको छोडकर) US $ 10 (दस डालर) नियत है।

-**'कल्याण' का नया वर्ष जनवरीसे आरम्भ होकर दिसम्बरतक रहता है, अतः ग्राहक जनवरीसे ही बनाये जाते हैं।** यद्यपि वर्षके किसी भी महीनेमे ग्राहक बनाये जा सकते हैं, तथापि जनवरीसे उस समयतकके प्रकाशित (पिछले) उपलब्ध अङ्क उन्हे दिये जाते है। 'कल्याण' के बीचके किसी अङ्कसे ग्राहक नहीं बनाये जाते, छ या तीन महीनेके लिये भी ग्राहक नहीं बनाये जाते हैं।

-**ग्राहकोंको वार्षिक शुल्क मनीआर्डर अथवा बैंकड्राफ्टद्वारा ही भेजना चाहिये।** वी० पी० पी० से ग्राहकोको वी० पी० पी० डाकशुल्कके रूपमे ५ ०० रुपये अधिक भी देने पडते हैं।

-'कल्याण' के मासिक अङ्क सामान्यतया ग्राहकोको सम्बन्धित मासके प्रथम पक्षके अन्ततक मिल जाने चाहिये। अङ्क दो-तीन बार जाँच करके भेजा जाता है। यदि किसी मासका अङ्क समयसे न मिले तो डाकघरसे पूछताछ करनेके उपरान्त हमे सूचित करे।

-पता बदलनेकी सूचना कम-से-कम ३० दिनोके पहले कार्यालयमे पहुँच जानी चाहिये। पत्रोमे 'ग्राहक-सख्या', पुराना और **नया पूरा पता स्पष्ट एवं सुवाच्य अक्षरोंमें लिखना चाहिये। यदि कुछ महीनोंके लिये ही पता बदलवाना हो तो अपने पोस्टमास्टरको ही लिखकर प्रबन्ध कर लेना चाहिये।** पता बदलनेकी सूचना समयसे न मिलनेपर दूसरी प्रति भेजनेमे कठिनाई हो सकती है। यदि आपके पतेमे कोई महत्त्वपूर्ण भूल हो या आपका 'कल्याण' के प्रेषण-सम्बन्धी कोई अनियमितता/ सुझाव हो तो अपनी स्पष्ट 'ग्राहक-सख्या', लिखकर हमे सूचित करे।

-रग-बिरगे चित्रोवाला बडा अङ्क (चालू वर्षका विशेषाङ्क) ही वर्षका प्रथम अङ्क होता है। पुनः प्रतिमास साधारण अङ्क ग्राहकोंको उसी शुल्क-राशिमे (विना मूल्य) वर्षपर्यन्त भेजे जाते हैं। किसी अनिवार्य कारणवश यदि 'कल्याण' का प्रकाशन बद हो जाय तो जितने अङ्क मिले हो उतनेमे ही सतोष करना चाहिये, **क्योंकि मात्र विशेषाङ्कका ही शुल्क ६५ ०० रुपये ह।**

आवश्यक सूचनाएँ

-ग्राहकोको पत्राचारके समय अपना नाम-पता सुस्पष्ट लिखनेके साथ-साथ अपनी **ग्राहक-सख्या** अवश्य लिखनी चाहिये। पत्रमें अपनी आवश्यकता और उद्देश्यका उल्लेख सर्व-प्रथम करना चाहिये।

-एक ही विषयके लिये यदि दोबारा पत्र देना हो तो उसमे पिछले पत्रका दिनाङ्क तथा पत्र-सख्या अवश्य लिखनी चाहिये।

-**'कल्याण' मे व्यवसायियोके विज्ञापन किसी भी दरमे प्रकाशित नहीं किये जाते।**

-कोई भी विक्रेताबन्धु विशेषाङ्ककी कम-से-कम ५० प्रतियाँ हमारे कार्यालयसे एक साथ मँगाकर इसके प्रचार-प्रसारमें सहयोगी बन सकते है। ऐसा करनेपर ६ ०० रुपये प्रति विशेषाङ्ककी दरसे उन्हे कमीशन दिया जायगा। जनवरी मासका विशेषाङ्क [illegible] फरवरी मासका साधारण अङ्क रेल-पार्सलसे भेजा जायगा एव आगेके मासिक अङ्क (मार्चसे दिसम्बरतक) डाकद्वारा भेजनेकी व्यवस्था है।

'कल्याण' की पंद्रहवर्षीय ग्राहक-योजना

पद्रहवर्षीय सदस्यता-शुल्क ५०० ०० (सजिल्द विशेषाङ्कका ६०० ००) है। इस योजनाके अन्तर्गत [illegible] प्रतिष्ठान आदि संस्थागत ग्राहक भी हो सकते हैं। यदि 'कल्याण' का प्रकाशन चलता रहा तो १५ वर्षोंतक इन ग्राहकोंको [illegible] जाते रहेगे।

व्यवस्थापक—'कल्याण', पत्रालय—गीताप्रेस-२७३००५ (गोरखपुर)

प्र० ति० २०-१२-९४
पंजीकृत-संख्या—जी० आर०—१३

गोसेवाका यथार्थ स्वरूप

वन्दनीयाश्च पूज्याश्च गावः सेव्यास्तु नित्यशः।
गवां गोष्ठे स्थितानां तु यः करोति प्रदक्षिणम्। प्रदक्षिणीकृतं तेन जगत् सदसदात्मकम्॥
शृङ्गोदकं गवां पुण्यं सर्वाघविनिषूदनम्। गवां कण्डूयनं चैव सर्वकल्मषनाशनम्॥
गवां ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते।
लवणं च यथाशक्त्या गवां ये वै ददन्ति च। तेषां पुण्यकृतां लोका गवां लोकं व्रजन्ति ते॥
योऽग्रं भक्त्या किंचिदप्राश्य दद्याद् गोभ्यो नित्यं गोव्रती सत्यवादी।
शान्तो बुद्धो गोसहस्रस्य पुण्यं संवत्सरेणाप्नुयाद्धर्मशीलः॥
गोकुलस्य तृषार्तस्य जलान्ते वसुधाधिप। उत्पादयति यो विघ्नं तमाहुर्ब्रह्मघातकम्॥
कृत्वा गवार्थे शरणं शीतवातक्षमं महत्। आसप्तमं तारयति कुलं भरतसत्तम॥
मनुष्यैस्तृणतोयाद्यैर्गावः पाल्याः प्रयत्नतः। देयाः पूज्याश्च पोष्याश्च प्रतिपाल्याश्च सर्वदा॥
घासग्रासादिकं देयं निशि दीपः सुभास्वरः। इतिहासपुराणानां व्याख्यानं सोपवीजनम्॥
अन्तस्तुष्टैर्यथाशक्त्या परिचर्या यथाक्रमम्। ताडनाक्रोशखेदाश्च स्वप्नेऽपि न कदाचन॥
तासां मूत्रपुरीषे तु नोद्वेगः क्रियते क्वचित्। शोधनीयश्च गोवाटः शुष्कक्षारादिकैः सदा॥
ग्रीष्मे वृक्षाकुले वेश्म शीततोये विकर्दमे। वर्षासु चाथ शिशिरे सुखोष्णे वातवर्जिते॥
उच्छिष्टं मूत्रविट्श्लेष्ममलं जह्यात्र तत्र च। रजस्वला न प्रवेश्या नान्त्यजातिर्न पुंश्चली॥
न लङ्घयेद्वत्सतरीं न क्रीडेद्गोष्ठसंनिधौ। न गन्तव्यं गवां मध्ये सोपानत्कैः सपादुकैः॥
हस्त्यश्वरथयानैश्च सवितानैः कदाचन। दक्षिणोत्तरगैः प्रह्वैर्गन्तव्यं च पदातिभिः॥
गावः कृशातुराः पाल्याः श्रद्धया पितृमातृवत्।

गाये प्रतिदिन वन्दनीय, पूज्य तथा सेवा-उपासनाके योग्य हैं। जो गोशालामें स्थित गौओंकी प्रदक्षिणा करता है, उसने मानो सम्पूर्ण चराचर विश्वकी परिक्रमा कर ली। गायोके सींगका जल परम पवित्र है, वह सम्पूर्ण पापोका शमन कर डालता है, साथ ही गायोके शरीरको खुजलाना-सहलाना भी सभी दोष-पापोका शमन करता है—धो डालता है। गायोको गोग्रास देनेसे दाता स्वर्गलोकमे पूर्ण प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जो अपनी शक्तिके अनुसार गायोंको लवण प्रदान करता है उन्हे श्रेष्ठ पवित्र पुण्यात्माओके लोकोकी प्राप्ति होती है और फिर साक्षात् भगवद्धाम—गोलोक भी प्राप्त हो जाता है। जो सत्यवादी, शान्त, गौओंका भक्त व्यक्ति भोजन करनेके पहले नित्य थोड़ा-बहुत गोग्रास सालभरतक गौओको देता है—भोजन कराता है और उसके बाद स्वयं भोजन करता है, वह अत्यन्त ज्ञानी बन जाता है और उस धर्मशीलको हजार गोदानका पुण्यफल प्राप्त हो जाता है। जो भूख-प्याससे व्याकुल गायोंको जलाशयमें पानी पीनेसे रोकता है, विघ्न उपस्थित करता है, उसे ही शास्त्रकारोने असली ब्रह्महत्यारा कहा है। गौओके लिये सर्दी तथा गर्मीमे धूप और ठडसे बचानेवाली गोशालाका जो निर्माण करता है, वह अपने सात कुलका उद्धार कर देता है। मनुष्यको जैसे बन पडे घास-फूस आदि खिलाकर प्रयत्नपूर्वक गायोका अवश्य पालन करना चाहिये। गौएँ सदा ही पालनीय, पोषणीय, पूज्य और दान देनेके योग्य हैं। गायोको श्रद्धापूर्वक तृण, गोग्रास आदि सदा देना चाहिये। रातमें तेजोमय दीप भी गोशालामे प्रज्वलित करना चाहिये। गायोको थोडा पंखा आदि झलकर इतिहास-पुराणोंके प्रसंग भी सुनाने चाहिये। अन्तर्हृदयसे प्रसन्नतापूर्वक गायोकी यथाशक्ति क्रमपूर्वक शुश्रूषा-परिचर्या करनी चाहिये। उनपर क्रोध, मार-पीट, दुर्व्यवहार आदि तो भूलकर स्वप्नमे भी नहीं करना चाहिये। उनके मल-मूत्रके परित्यागके समय तनिक भी बाधा पहुँचाकर उन्हे उद्विग्न नहीं करना चाहिये। गायोके रहनेकी जगहको सूखे खार-पदार्थ आदिसे झाड़-बुहारकर पूरी तरह स्वच्छ रखना चाहिये। ग्रीष्ममें गायोकी गोशाला वृक्ष-समूहोंकी छाया एवं शीतल जलवाले स्थानमे, बरसातमे कीचड़से विवर्जित स्थानमे और शिशिर ऋतुमे जहाँ थोडी गर्मी हो, धूप आवे, सुख हो तथा ठंडी हवाका भय न हो ऐसे स्थानमे बनानी चाहिये। गोशालामे अथवा उसके आस-पास भूलकर भी किसी प्रकारका जूठन, थूक, खखार, मल, मूत्र आदिका परित्याग नहीं करना चाहिये। गोशालामें रजस्वला, पुंश्चली या चाण्डाली स्त्रीका प्रवेश नही होने देना चाहिये। छोटी बछियाके ऊपरसे लाँघकर पार नहीं होना चाहिये (उनके गलेमे बँधी रस्सीका भी उल्लङ्घन नहीं करना चाहिये)। गोशालाके सामने कोई खेल-कूद भी नहीं खेलना चाहिये। जूता या खडाऊँ पहनकर भी गायोके बीचमे नहीं जाना चाहिये। हाथी, घोडा तथा किसी यानपर चढ़कर या पालकी आदिपर छाता आदि लगाकर भी गायोके बीच नहीं जाना चाहिये। सदा ही पैदल चलकर गायोंको दाहिने रखकर नम्रतापूर्वक जाना चाहिये। जो गाये भूख-प्याससे आतुर तथा दुबली-पतली अथवा किन्हीं रोग-दुःखसे व्याकुल हों, उनकी माता-पिताके समान श्रद्धापूर्वक सेवा करनी चाहिये, किसी प्रकार भी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।